

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

# सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

## जिनवाणी-महोत्सव

# सहस्रग्रन्थसंग्रह

❊ जन्मदिवस 19–03–1971 ❊ मुनिदीक्षा–11–05–1989 ❊ आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

# हिन्दी शब्द सागर

भाग -१०

सम्पादक
श्याम सुन्दर दास

प्रकाशक
नागरी प्रचारिणी सभा
वाराणसी (उत्तरप्रदेश)

(परम्परानायक)



परम पूज्य चारित्र-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)



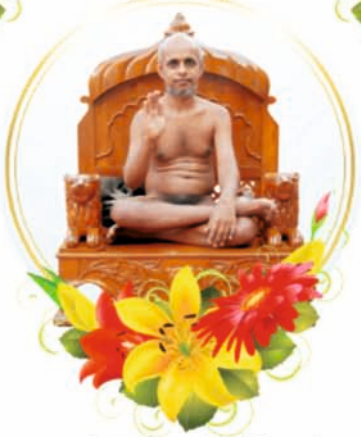
परम पूज्य तीर्थभक्त-शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)



परम पूज्य सिद्धान्त-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)



परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि-परिवार

# हिंदी शब्दसागर

## दसवाँ भाग

[ 'स' से 'सौह्य' तक, शब्दसख्या–२१,००० ]


मूल संपादक

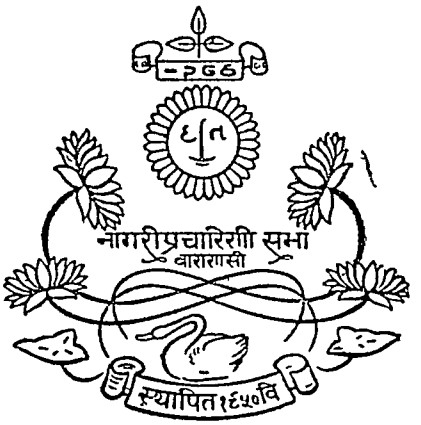
श्यामसुंदरदास

मूल सहायक संपादक

बालकृष्ण भट्ट — रामचंद्र शुक्ल

अमीरसिंह — जगन्मोहन वर्मा

भगवानदीन — रामचद्र वर्मा



संपादकमंडल

कमलापति त्रिपाठी

धीरेद्र वर्मा — हरवंशलाल शर्मा

नगेद्र — शिवनंदनलाल दर

रामधन शर्मा — सुधाकर पांडेय

करुणापति त्रिपाठी ( सयोजक सपादक )

सहायक संपादक

विश्वनाथ त्रिपाठी

हिंदी शब्दसागर के संशोधन संपादन का संपूर्ण तथा प्रथम एवं द्वितीय भाग के प्रकाशन का साठ प्रतिशत व्ययभार भारत सरकार के शिक्षामंत्रालय ने वहन किया।

परिवर्धित, संशोधित, नवीन संस्करण

शकाब्द १८९५ सं० २०३० वि० १९७३ ई०

पूर्ण एकादश भागों का २७५ ००

नागरीप्रचारिणी सभा
वाराणसी
मूल्य ...२५०/

शंभुनाथ वाजपेयी
द्वारा
नागरी मुद्रण, वाराणसी
में मुद्रित

# प्रकाशिका

'हिंदी शब्दसागर' अपने प्रकाशनकाल से ही कोश के क्षेत्र मे भारतीय भाषाओ के दिशानिर्देशक के रूप में प्रतिष्ठित है। तीन दशक तक हिंदी की मूर्धन्य प्रतिभाओ ने अपनी सतत तपस्या से इसे सन् १९२८ ई० मे मूर्त रूप दिया था। तब से निरंतर यह ग्रथ इस क्षेत्र मे गभीर कार्य करनेवाले विद्वत्समाज में प्रकाशस्तभ के रूप में मर्यादित हो हिंदी की गौरवगरिमा का आख्यान करता रहा है। अपने प्रकाशन के कुछ समय बाद ही इसके खड एक एक कर अनुपलब्ध होते गए और अप्राप्य ग्रथ के रूप में इसका मूल्य लोगो को सहस्र मुद्राओ से भी अधिक देना पडा। ऐसी परिस्थिति में अभाव की स्थिति का लाभ उठाने की दृष्टि से अनेक कोशो का प्रकाशन हिंदी-जगत् में हुआ, पर वे सारे प्रयत्न इसकी छाया के ही बल जीवित थे। इसलिये निरतर इसकी पुन अवतारणा का गभीर अनुभव हिंदी-जगत् और इसकी जननी नागरीप्रचारिणी सभा करती रही, किंतु साधन के अभाव मे अपने इस कर्तव्य के प्रति सजग रहती हुई भी वह अपने इस उत्तरदायित्व का निर्वाह न कर सकने के कारण मर्मातक पीडा का अनुभव कर रही थी। दिनोत्तर उसपर उत्तर-दायित्व का ऋण चक्रवृद्धि सूद की दर से इसलिये और भी बढता गया कि इस कोश के निर्माण के बाद हिंदी की श्री का विकास बडे व्यापक पैमाने पर हुआ। साथ ही, हिंदी के राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित होने पर उसकी शब्दसपदा का कोश भी दिनोत्तर गतिपूर्वक बढ़ते जाने के कारण सभा का यह दायित्व निरतर गहन होता गया।

सभा की हीरक जयती के अवसर पर, २२ फाल्गुन, २०१० वि० को, उसके स्वागताध्यक्ष के रूप मे डा० सपूर्णानद जी ने राष्ट्रपति राजेंद्रप्रसाद जी एव हिंदीजगत् का ध्यान निम्नाकित शब्दो मे इस ओर आकृष्ट किया—'हिंदी के राष्ट्रभाषा घोषित हो जाने से सभा का दायित्व बहुत बढ गया है।' हिंदी मे एक अच्छे कोश और व्याकरण की कमी खटकती है। सभा ने आज से कई वर्ष पहले जो हिंदी शब्दसागर प्रकाशित किया था उसका वृहत् सस्करण निकालने की आवश्यकता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि इस काम के लिये पर्याप्त धन व्यय किया जाय और केंद्रीय तथा प्रादेशिक सरकारो का सहारा मिलता रहे।'

उसी अवसर पर सभा के विभिन्न कार्यों की प्रशसा करते हुए राष्ट्रपति ने कहा—'वैज्ञानिक तथा पारिभाषिक शब्दकोश सभा का महत्वपूर्ण प्रकाशन है। दूसरा प्रकाशन हिंदी शब्दसागर है जिसके निर्माण मे सभा ने लगभग एक लाख रुपया व्यय किया है। आपने शब्दसागर का नया सस्करण निकालने का निश्चय किया है। जब से पहला सस्करण छपा, हिंदी में बहुत बातो में और हिंदी के अलावा ससार मे बहुत बातो मे बडी प्रगति हुई है। हिंदी भाषा भी इस प्रगति से अपने को वचित नही रख सकती। इसलिये शब्दसागर का रूप भी ऐसा होना चाहिए जो यह प्रगति प्रतिबिंबित कर सके और वैज्ञानिक युग के विद्यार्थियो के लिये भी साधारणत पर्याप्त हो। मैं आपके निश्चयो का स्वागत करता हूँ। भारत सरकार की ओर से शब्दसागर का नया सस्करण तैयार करने के सहायतार्थ एक लाख रुपए, जो पाँच वर्षों मे बीस बीस हजार करके दिए जाएँगे, देने का निश्चय हुआ है। मैं आशा करता हूँ कि इस निश्चय से आपका काम कुछ सुगम हो जाएगा और आप इस काम मे अग्रसर होगे।'

राष्ट्रपति डा० राजेंद्रप्रसाद जी की इस घोषणा ने शब्दसागर के पुन सपादन के लिये नवीन उत्साह तथा प्रेरणा दी। सभा द्वारा प्रेषित योजना पर केंद्रीय सरकार के शिक्षामत्रालय ने अपने पत्र स० एफ।४—३।५४ एच० दिनाक ११।५।५४ द्वारा एक लाख रुपया पाँच वर्षों मे, प्रति वर्ष बीस हजार रुपए करके, देने की स्वीकृति दी।

इस कार्य की गरिमा को देखते हुए एक परामर्शमडल का गठन किया गया, इस सबध मे देश के विभिन्न क्षेत्रो के अधिकारी विद्वानो की भी राय ली गई, किंतु परामर्शमडल के अनेक सदस्यो का योगदान सभा को प्राप्त न हो सका और जिस विस्तृत पैमाने पर सभा विद्वानो की राय के अनुसार इस कार्य का सयोजन करना चाहती थी, वह भी नही उपलब्ध हुआ। फिर भी, देश के अनेक निष्णात अनुभवसिद्ध विद्वानो तथा परामर्शमडल के सदस्यो ने गभीरतापूर्वक सभा के अनुरोध पर अपने बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत किए। सभा ने उन सबको मनोयोगपूर्वक मथकर शब्दसागर के सपादन हेतु सिद्धात स्थिर किए जिनसे भारत सरकार का शिक्षामत्रालय भी सहमत हुआ।

उपर्युक्त एक लाख रुपए का अनुदान बीस बीस हजार रुपए प्रति वर्ष की दर से निरतर पाँच वर्षों तक केंद्रीय शिक्षा मत्रालय देता रहा और कोश के सशोधन, सवर्धन और पुन सपादन का कार्य लगातार होता रहा, परतु इस अवधि मे सारा कार्य निपटाया नहीं जा सका। मत्रालय के प्रतिनिधि श्री डा० रामधन जी शर्मा ने बड़े मनोयोगपूर्वक यहाँ हुए कार्यों का निरीक्षण परीक्षण करके इसे पूरा करने के लिये आगे और ६५००० ) अनुदान प्रदान करने की सस्तुति की जिसे सरकार ने कृपापूर्वक स्वीकार करके पुन. उक्त ६५०००) का अनुदान दिया। इस प्रकार सपूर्ण कोश का सशोधन सपादन दिसबर, १९६५ मे पूरा हो गया।

इस ग्रथ के सपादन का सपूर्ण व्यय ही नही, इसके प्रकाशन के व्ययभार का ६० प्रतिशत बोझ भी दो खडो तक भारत सरकार ने वहन किया है, इसीलिये यह ग्रथ इतना सस्ता निकालना सभव हो सका है। उसके लिये शिक्षामत्रालय के अधिकारियो का प्रशसनीय सहयोग हमे प्राप्त है और तदर्थ हम उनके अतिशय आभारी हैं।

जिस रूप मे यह ग्रथ हिंदीजगत् के समुख उपस्थित किया जा रहा है, उसमे यथतव विकसित कोशशिल्प का यथासामर्थ्य उपयोग और

# संकेतिका

[ उद्धरणो मे प्रयुक्त संदर्भग्रथो के इस विवरण मे क्रमश ग्रथ का सकेताक्षर, ग्रथनाम, लेखक या सपादक का नाम और प्रकाशन के विवरण दिए गए हैं ]

| | |
|---|---|
| अँधेरे० | अँधेरे की भूख, डा० रागेय राघव, किताब महल, इलाहाबाद, प्रथम सस्करण |
| अविकादत्त (शब्द०) | अविकादत्त व्यास |
| अकबरी० | अकबरी दरबार के हिंदी कवि, डा० सरजूप्रसाद अग्रवाल, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, सं० २००७ |
| अखबार | 'आज' दैनिक, वाराणसी |
| अखिलेश (शब्द०) | अखिलेश कवि |
| अग्नि० | अग्निशस्य, नरेंद्र शर्मा, भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| अजात० | अजातशत्रु, जयशकर प्रसाद, १६वाँ सं० |
| अणिमा | अणिमा, पं० सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', युग मदिर, उन्नाव |
| अतिमा | अतिमा, सुमित्रानंदन पत, भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| अधखिला (शब्द०) | अधखिला फूल ( उपन्यास ), अयोध्यासिह उपाध्याय |
| अनामिका | अनामिका, प० सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', प्र० स० |
| अनुराग० | अनुरागसागर, सपा० स्वामी युगलानद बिहारी, वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, प्र० स० |
| अनुराग बाग (शब्द०) | अनुराग बाग |
| अनेक (शब्द०) | अनेकार्थ नाममाला |
| अनेकार्थ० | अनेकार्थमजरी और नाममाला, सपा० बलभद्र-प्रसाद मिश्र, युनिवर्सिटी आव इलाहाबाद स्टडीज, प्र० स० |
| अपरा | अपरा, प० सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग |
| अपलक | अपलक, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजकमल प्रकाशन, प्र० स०, १९५३ ई० |
| अभिशप्त | अभिशप्त, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४४ ई० |
| अमिट० | अमिट स्मृति, महावीरप्रसाद द्विवेदी, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९३० ई० |
| अमृतसागर (शब्द०) | अमृतसागर |
| अयोध्या (शब्द०) | अयोध्यासिह उपाध्याय 'हरिऔध' |
| अरस्तू० | अरस्तू का काव्यशास्त्र, डा० नगेंद्र, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०, २०१४ वि० |
| अर्चना | अर्चना, प० सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', कला-मदिर, इलाहाबाद |
| अर्थ० | अर्थशास्त्र, कौटिल्य (५ खड), संपा० आर० शाम शास्त्री, गवर्नमेंट आच प्रेस, मैसूर, प्र० स०, १९१९ ई० |
| अर्ध० | अर्धकथानक, सपा० नाथूराम प्रेमी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, प्र० स० |
| अष्टाग (शब्द०) | अष्टांगयोग सहिता |
| अष्टांग० | अष्टागयोग सहिता |
| आँधी | आँधी, जयशकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पचम सं० |
| आ० अ० रा० | आज की अतर्राष्ट्रीय राजनीति, रामनारायण यादवेंदु, आर्यावर्त प्रकाशन मदिर, पटना, १९५१ ई० |
| आकाश० | आकाशदीप, जयशकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पचम सं० |
| आचार्य० | आचार्य रामचद्र शुक्ल, चद्रशेखर शुक्ल, वाणी वितान, वाराणसी, प्र० स० |
| आत्रेय अनुक्रमणिका (शब्द०) | आत्रेय अनुक्रमणिका |
| आदि० | आदिभारत, अर्जुन चौबे काश्यप, वाणी विहार, बनारस, प्र० स०, १९५३ ई० |
| आधुनिक० | आधुनिक कविता की भाषा |
| आनदघन (शब्द०) | कवि आनदघन |
| आ० रा० शुक्ल | आलोचक रामचद्र शुक्ल |
| आराधना | आराधना, सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', साहित्यकार समद, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| आर्द्रा | आर्द्रा, सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०, १९८४ वि० |
| आर्य भा०, आ० भा० | आर्यकालीन भारत |
| आर्यों० | आर्यों का आदिदेश, सपूर्णानद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९९७ वि०, प्र० स० |
| इंद्र० | इद्रजाल, जयशकर प्रसाद लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स० |
| इंद्रा० | इद्रावती, सपा० श्यामसुदरदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं० |

प्रयोग किया गया है, किंतु हिंदी की और हमारी सीमा है। यद्यपि हम अर्थ और व्युत्पत्ति का ऐतिहासिक क्रमविकास भी प्रस्तुत करना चाहते थे, तथापि साधन की कमी तथा हिंदी ग्रथो के कालक्रम के प्रामाणिक निर्धारण के अभाव मे वैसा कर सकना सभव नही हुआ। फिर भी यह कहने मे हमे सकोच नही कि अद्यतन प्रकाशित कोशो मे शब्दसागर की गरिमा आधुनिक भारतीय भाषाओ के कोशो मे अतुलनीय है, और इस क्षेत्र मे काम करनेवाले प्राय सभी क्षेत्रीय भाषाओ के विद्वान् इससे आधार ग्रहण करते रहेगे। इस अवसर पर हम हिंदीजगत् को यह भी नम्रतापूर्वक सूचित करना चाहते हैं कि सभा ने शब्दसागर के लिये एक स्थायी विभाग का सकल्प किया है जो बराबर इसके प्रवधन और सशोधन के लिये कोशशिल्प सबधी अद्यतन विधि से यत्नशील रहेगा।

शब्दसागर के इस सशोधित प्रवर्धित रूप मे शब्दो की सख्या मूल शब्दसागर की अपेक्षा दुगुनी से भी अधिक हो गई है। नए शब्द हिंदी साहित्य के आदिकाल, सत एव सूफी साहित्य ( पूर्व मध्यकाल), आधुनिक काल, काव्य, नाटक, आलोचना, उपन्यास आदि के ग्रथ, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, वाणिज्य आदि और अभिनदन एव पुरस्कृत ग्रथ, विज्ञान के सामान्य प्रचलित शब्द और राजस्थानी तथा डिंगल, दक्खिनी हिंदी और प्रचलित उर्दू शैली आदि से सकलित किए गए है। परिशिष्ट खड मे प्राविधिक एव वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दो की व्यवस्था की गई है।

हिंदी शब्दसागर का यह सशोधित परिवर्धित सस्करण कुल दस खडो मे पूर्ण होगा। इसका पहला खड पौष, सवत् २०२२ वि० मे छपकर तैयार हो गया था। इसके उद्घाटन का समारोह भारत गणतत्र के प्रधान मत्री स्वर्गीय माननीय श्री लालबहादुर जी शास्त्री द्वारा प्रयाग मे ३ पौष, स० २०२२ वि० (१८ दिसबर, १९६५) को भव्य रूप से सजे हुए पडाल मे काशी, प्रयाग एव अन्यान्य स्थानो के वरिष्ठ और सुप्रसिद्ध साहित्यसेवियो, पत्रकारो तथा गण्यमान्य नागरिको की उपस्थिति मे सपन्न हुआ। समारोह मे उपस्थित महानुभावो मे विशेष उल्लेख्य माननीय श्री प० कमलापति जी त्रिपाठी, हिंदी विश्वकोश के प्रधान सपादक श्री डा० रामप्रसाद जी त्रिपाठी, पद्मभूषण कविवर श्री प० सुमित्रानदन जी पत, श्रीमती महादेवी जी वर्मा आदि हैं। इस सशोधित सवर्धित सस्करण की सफल पूर्ति के उपलक्ष्य मे इसके समस्त सपादको को एक एक फाउंटेन पेन, ताम्रपत्र और ग्रथ की एक एक प्रति माननीय श्री शास्त्री जी के करकमलो द्वारा भेट की गई। उन्होने अपने सक्षिप्त सारगर्भित भाषण मे इस सभा की विभिन्न प्रवृत्तियो की चर्चा की और कहा 'सार्वजनिक क्षेत्र मे कार्य करनेवाली यह सभा अपने ढग की अकेली सस्था है। हिंदी भाषा और साहित्य की जैसी सेवा नागरीप्रचारिणी सभा ने की है वैसी सेवा अन्य किसी सस्था ने नही की। भिन्न भिन्न विषयो पर जो पुस्तके इस सस्था ने प्रकाशित की है वे अपने ढग के अनूठे ग्रथ है और उनसे हमारी भाषा और साहित्य का मान अत्यधिक बढा है। सभा ने समय की गति को देखकर तात्कालिक उपादेयता के वे सब कार्य हाथ मे लिए हैं जिनकी इस समय नितात आवश्यकता है। इस प्रकार यह निस्सकोच कहा जा सकता है कि भाषा और साहित्य के क्षेत्र मे यह सभा अप्रतिम है'।

प्रस्तुत दसवें खड मे 'ज' से लेकर 'सोह्म' तक के शब्दो का सचयन है। नए नए शब्द, उदाहरण, यौगिक शब्द, मुहावरे, पर्यायवाची शब्द और महत्वपूर्ण ज्ञातव्य सामग्री 'विशेष' से सवलित इस भाग की शब्दसख्या लगभग २१,००० है। अपने मूल रूप मे यह अश कुल ३५० पृष्ठो मे था जो अपने विस्तार के साथ इस परिवर्धित सशोधित सस्करण मे लगभग ४९६ पृष्ठो मे आ पाया है।

सपादकमडल के प्रत्येक सदस्य ने यथासामर्थ्य निष्ठापूर्वक इसके निर्माण मे योग दिया है। स्व० श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड नियमित रूप से नित्य सभा मे पधारकर इसकी प्रगति को विशेष गभीरतापूर्वक गति देते थे और प० करुणापति त्रिपाठी ने इसके सपादन और सयोजन मे प्रगाढ निष्ठा के साथ अस्वस्थ होते हुए भी घर पर, यहाँ तक कि यात्रा पर रहने पर भी, पूरा कार्य किया है। यदि ऐसा न होता तो यह कार्य सपन्न होना सभव न था। हम अपनी सीमा जानते हैं। सभव है, हम सबके प्रयत्न मे त्रुटियाँ हो, पर सदा हमारा परिनिष्ठित यत्न यह रहेगा कि हम इसको और अधिक पूर्ण करते रहे क्योकि ऐसे ग्रथ का कार्य अस्थायी नही, सनातन है।

अत मे शब्दसागर के मूल सपादक तथा सभा के संस्थापक स्व० डा० श्यामसुदरदास जी को अपना प्रणाम निवेदित करते हुए, यह सकल्प हम पुन दुहराते है कि जबतक हिंदी रहेगी तबतक सभा रहेगी और उसका यह शब्दसागर अपने गौरव से कभी न गिरेगा। इस क्षेत्र मे यह नित नूतन प्रेरणादायक रहकर हिंदी का मानवर्धन करता रहेगा और उसका प्रत्येक नया सस्करण और भी अधिक प्रभोज्वल होता रहेगा।

ना० प्र० सभा, काशी
दीपमालिका, २०३० वि०

**सुधाकर पाडेय**
**प्रधान मंत्री**

# संकेतिका

[ उद्धरणो मे प्रयुक्त संदर्भग्रथो के इस विवरण मे क्रमश· ग्रथ का सकेताक्षर, ग्रथनाम, लेखक या सपादक का नाम और प्रकाशन के विवरण दिए गए है ]

| | |
|---|---|
| अँधेरे० | अँधेरे की भूख, डा० रागेय राघव, किताब महल, इलाहाबाद, प्रथम सस्करण |
| अबिकादत्त (शब्द०) | अबिकादत्त व्यास |
| अकबरी० | अकबरी दरबार के हिंदी कवि, डा० सरजूप्रसाद अग्रवाल, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, सं० २००७ |
| अखबार | 'आज' दैनिक, वाराणसी |
| अखिलेश (शब्द०) | अखिलेश कवि |
| अग्नि० | अग्निशस्य, नरेंद्र शर्मा, भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| अजात० | अजातशत्रु, जयशकर प्रसाद, १६वाँ सं० |
| अणिमा | अणिमा, पं० सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', युग मदिर, उन्नाव |
| अतिमा | अतिमा, सुमित्रानंदन पत, भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० स० |
| अधखिला (शब्द०) | अधखिला फूल ( उपन्यास ), अयोध्यासिह उपाध्याय |
| अनामिका | अनामिका, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', प्र० सं० |
| अनुराग० | अनुरागसागर, सपा० स्वामी युगलानद बिहारी, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, प्र० स० |
| अनुराग बाग (शब्द०) | अनुराग बाग |
| अनेक (शब्द०) | अनेकार्थ नाममाला |
| अनेकार्थ० | अनेकार्थमजरी और नाममाला, सपा० बलभद्रप्रसाद मिश्र, युनिवर्सिटी आव इलाहाबाद स्टडीज, प्र० स० |
| अपरा | अपरा, प० सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग |
| अपलक | अपलक, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजकमल प्रकाशन, प्र० सं०, १९५३ ई० |
| अभिशप्त | अभिशप्त, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४४ ई० |
| अमिट० | अमिट स्मृति, महावीरप्रसाद द्विवेदी, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९३० ई० |
| अमृतसागर (शब्द०) | अमृतसागर |
| अयोध्या (शब्द०) | अयोध्यासिह उपाध्याय 'हरिऔध' |
| अरस्तू० | अरस्तू का काव्यशास्त्र, डा० नगेंद्र, लीडर प्रेस इलाहाबाद, प्र० स०, २०१४ वि० |
| अर्चना | अर्चना, प० सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', कला-मदिर, इलाहाबाद |
| अर्थ० | अर्थशास्त्र, कौटिल्य (५ खंड), सपा० आर० शाम शास्त्री, गवर्नमेंट ब्राच प्रेस, मैसूर, प्र० सं०, १९१९ ई० |
| अर्ध० | अर्धकथानक, सपा० नाथूराम प्रेमी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, प्र० स० |
| अष्टाग (शब्द०) | अष्टांगयोग सहिता |
| अष्टाग० | अष्टागयोग सहिता |
| आँधी | आँधी, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, इलाहाबाद, पचम स० |
| आ० अ० रा० | आज की अतर्राष्ट्रीय राजनीति, रामनारायण यादवेंदु, आर्यावर्त प्रकाशन मदिर, पटना, १९५१ ई० |
| आकाश० | आकाशदीप, जयशकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पचम सं० |
| आचार्य० | आचार्य रामचद्र शुक्ल, चद्रशेखर शुक्ल, वाणी वितान, वाराणसी, प्र० सं० |
| आत्रेय अनुक्रमणिका (शब्द०) | आत्रेय अनुक्रमणिका |
| आदि० | आदिभारत, अर्जुन चौबे काश्यप, वाणी विहार, बनारस, प्र० स०, १९५३ ई० |
| आधुनिक० | आधुनिक कविता की भाषा |
| आनदघन (शब्द०) | कवि आनदघन |
| आ० रा० शुक्ल | आलोचक रामचद्र शुक्ल |
| आराधना | आराधना, सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', साहित्यकार ससद्, इलाहाबाद, प्र० स० |
| आर्द्रा | आर्द्रा, सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०, १९८४ वि० |
| आर्य भा०, आ० भा० | आर्यकालीन भारत |
| आर्यों० | आर्यों का आदिदेश, सपूर्णानद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९९७ वि०, प्र० स० |
| इंद्र० | इद्रजाल, जयशकर प्रसाद लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स० |
| इंद्रा० | इद्रावती, सपा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं० |

| | |
|---|---|
| इंशा० | इंशा, उनका काव्य तथा रानी केतकी की कहानी, सपा०, ब्रजरत्नदास, कमलमणि ग्रंथमाला, बुलानाला, काशी, प्र० सं० |
| इशाअल्ला (शब्द०) | इशा अल्ला खाँ (रानी केतकी की कहानी) |
| इति० | इतिहास और आलोचना, नामवर सिंह, प्र० सं० |
| इतिहास | हिंदी साहित्य का इतिहास, प० रामचंद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, नवाँ स० |
| इत्यलम् | इत्यलम्, 'अज्ञेय,' प्रतीक प्रकाशन केंद्र, दिल्ली |
| इनशा (शब्द०) | इनशा अल्ला खाँ |
| इरा० | इरावती, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, इलाहाबाद, चतुर्थ सं० |
| उत्तर० | उत्तररामचरित नाटक, अनु०प० सत्यनारायण कविरत्न, रत्नाश्रम, आगरा, पचम स० |
| एकात० | एकांतवासी योगी, अनु० श्रीधर पाठक, इडियन प्रेस, प्रयाग, प्र० सं०, १९८६ वि० |
| कंकाल | कंकाल, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सप्तम स० |
| कठहार | कठहार ऋषभचरण जैन, हिंदी साहित्य मंडल बाजार सीताराम, दिल्ली, द्वि स० |
| कठ० उप० (शब्द०) | कठवल्ली उपनिषद् |
| कढ़ी० | कढ़ी में कोयला, पाडेय बेचन शर्मा 'उग्र', गऊघाट, मिर्जापुर, प्र० स० |
| कबीर ग्रं० | कबीर ग्रंथावली, सपा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, काशी |
| कबीर० बानी | कबीर साहब की बानी |
| कबीर बीजक | कबीर बीजक, कबीर ग्रंथ प्रकाशन समिति, बाराबकी, २००७ वि० |
| कबीर बी० (शिशु०) | कबीर बीजक, सपा० हसदास, कबीर ग्रंथ प्रकाशन समिति, बाराबकी, २००७ वि० |
| कबीर मं० | कबीर मसूर ( २ भाग ), वेंकटेश्वर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, बबई, सन् १९०३ ई० |
| कबीर० रे० | कबीर साहब की ज्ञानगुदडी व रेख्ते, बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद |
| कबीर० श० | कबीर साहब की शब्दावली (४ भाग), बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद, सन् १९०८ |
| कबीर(शब्द०) | कबीरदास |
| कबीर सा० | कबीर सागर (४ भा०), सपा० स्वा० श्री युगलानद बिहारी, वेंकटेश्वर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, बंबई |
| कबीर सा० सं० | कबीर साखी सग्रह, बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद, १९११ ई० |
| कमलापति (शब्द०) | कवि कमलापति |
| करुणा० | करुणालय, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, तृ० स० |
| कर्ण० | सेनापति कर्ण, लक्ष्मीनारायण मिश्र, किताब महल, इलाहाबाद, प्र० स० |
| कर्पूर मजरी (शब्द०) | कर्पूरमंजरी नाटक, भारतेंदु लिखित |
| कविद (शब्द०) | 'कविद' उपनाम के कवि |
| कविता कौ० | कविता कौमुदी (१–४ भा०), संपा० रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मदिर, प्रयाग, तृ० स० |
| कवित्त० | कवित्तरत्नाकर, सपा० उमाशकर शुक्ल, हिंदी परिषद्, विश्वविद्यालय, प्रयाग |
| कादंबरी (शब्द०) | कादबरी ग्रंथ अनुवाद |
| कानन० | काननकुसुम, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, पचम स० |
| कामायना | कामायनी, जयशकर प्रसाद, नवम स० |
| काया० | कायाकल्प, प्रेमचद, सरस्वती प्रेस, बनारस, ९वाँ स० |
| काले० | काले कारनामे, 'निराला,' कल्याण साहित्य मदिर, प्रयाग, २००७ वि० |
| काव्य कलाधर(शब्द०) | काव्य कलाधर |
| काव्यकलाप (शब्द०) | काव्यकलाप |
| काव्य० | काव्यशास्त्र |
| काव्य० निबध | काव्य और कला तथा अन्य निबध, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, चतुर्थ स० |
| काव्य० प्र० | काव्य प्रभाकर 'भानु' विरचित |
| काव्य० य० प्र० | काव्य यथार्थ और पगति, डा० रागेय राघव, विनोद पुस्तक मदिर, आगरा, प्र० स०, २०१२ वि० |
| काशीराम (शब्द०) | काशीराम कवि |
| काश्मीर० | काश्मीर सुषमा, श्रीधर पाठक, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स० |
| काष्ठजिह्वा (शब्द०) | काष्ठजिह्वा स्वामी |
| कासीराम (शब्द०) | कासीराम कवि |
| किन्नर० | किन्नर देश में, राहुल साकृत्यायन, इडिया पब्लिशर्स, प्रयाग, प्र० स० |
| किशोर (शब्द०) | किशोर कवि |
| कीर्ति० | कीर्तिलता, स० बाबूराम सक्सेना, ना० प्र० सभा, वाराणसी, तृ० स० |
| कुकुर० | कुकुरमुत्ता, 'निराला', युगमदिर, उन्नाव |
| कुणाल | कुणाल, सोहनलाल द्विवेदी |
| कृषि० | कृषिशास्त्र |
| केशव (शब्द०) | केशवदास |
| केशव ग्रं० | केशव ग्रंथावली, संपा० पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स० |
| केशव० अमी० | केशवदास की अमीघूँट |
| केशवराम (शब्द०) | केशवराम कवि |
| कोई कवि (शब्द०) | अज्ञातनाम कोई कवि |
| कुलार्णव तत्र(शब्द०) | कुलार्णव तत्र |
| कौटिल्य अ० | कौटिल्य का अर्थशास्त्र |
| क्वासि | क्वासि, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजकमल प्रकाशन, बंबई, १९५३ ई० |
| खानखाना (शब्द०) | अब्दुर्रहीम खानखाना |
| खालिक० | खालिकबारी, सपा० श्रीराम शर्मा, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०, २०२१ वि० |
| खिलौना | खिलौना ( मासिक ) |

| | |
|---|---|
| खुदाराम | खुदाराम और चंद हुसैनी के खतूत, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', गऊघाट, मिर्जापुर, आठवाँ सं० |
| खुमरो (शब्द०) | अमीर खुसरो |
| खेती की पहली पुस्तक (शब्द०) | खेती की पहली पुस्तक |
| खेती विद्या (शब्द०) | खेती विद्या |
| गंग क० | गंग कवित्त (ग्रंथावली), संपा० बटेकृष्ण, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं० |
| गदाधर० | श्रीगदाधर भट्ट जी की बानी |
| गदाधर सिंह (शब्द०) | गदाधर सिंह |
| गबन | गबन, प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, २६वाँ स० |
| गर्ग संहिता (शब्द०) | गर्ग संहिता |
| गालिब० | गालिब की कविता, सं० कृष्णदेवप्रसाद गौड, वाराणसी, प्र० सं० |
| गि० दा०, गि० दास गिरिधरदास (शब्द०) | गिरिधरदास (बा० गोपालचंद्र) |
| गिरिधर (शब्द०) | गिरिधर राय (कुंडलियावाले) |
| गीतिका | गीतिका सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० स० |
| गुजन | गुंजन, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| गुघर (शब्द०) | गुघर कवि |
| गुमान (शब्द०) | गुमान मिश्र |
| गुरुदास (शब्द०) | गुरुदास कवि |
| गुलाब (शब्द०) | कवि गुलाब |
| गुलाल० | गुलाल बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९१० ई० |
| गोकुल (शब्द०) | कवि गोकुल |
| गोदान | गोदान, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस, बनारस, प्र० सं० |
| गोपाल उपासनी (शब्द०) | गोपाल उपासनी |
| गोपाल० (शब्द०) | गिरिधर दास (गोपालचंद्र) |
| गोपालभट्ट (शब्द०) | गोपालभट्ट, वाल्मीकि रामायण के अनुवादक |
| गोरख० | गोरखबानी, सं० डा० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, द्वि० स० |
| गोल० (शब्द०) | गोलविनोद (ग्रंथ) |
| ग्राम० | ग्राम साहित्य, संपा० रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मंदिर, प्रयाग, प्र० स० |
| ग्राम्या | ग्राम्या, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० सं० |
| घट० | घट रामायण (२ भाग), सतगुरु तुलसी साहिब, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, तृ० सं० |
| घनानंद | घनानंद, संपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, प्रसाद परिषद्, वाणीवितान, ब्रह्मनाल, वाराणसी |
| घाघ० | घाघ और भड्डरी, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद |
| घासीराम (शब्द०) | घासीराम कवि |
| चद० | चंद हुसैनी के खतूत 'उग्र', हिंदी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, प्र० स० |
| चंद्र० | चंद्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग नवाँ स० |
| चक्र० | चक्रवाल, रामधारी सिंह दिनकर', उदयाचल, पटना प्र० स० |
| चरण (शब्द०) | चरणदास |
| चरणचंद्रिका (शब्द०) | चरणचंद्रिका |
| चरण० बानी | चरणदास की बानी बेलवेडियर प्रेस इलाहाबाद, प्र० स० |
| चाँदनी० | चाँदनी रात और अजगर उपेंद्रनाथ अश्क नीलाभ प्रकाशन गृह, प्रयाग, प्र० स० |
| चाणक्य नीति (शब्द०) | चाणक्य नीति |
| चाणक्य (शब्द०) | चाणक्य नीति दर्पण |
| चिंता | चिंत; जेय सरस्वती प्रेस, प्र० स० सन १९४० ई० |
| चिंतामणि | चिंतामणि (२ भाग), रामचंद्र शुक्ल, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग |
| चिंतामणि (शब्द०) | कवि चिंतामणि त्रिपाठी |
| चित्रा० | चित्रावली, स० जगन्मोहन वर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं० |
| चुभते० | चुभते चौपदे, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध,' खड्गविलास प्रेस, पटना, प्र० स० |
| चोखे० | चोखे चौपदे, ,, ,, ,, |
| चोटी० | चोटी की पकड, 'निराला,' किताब महल इलाहाबाद, प्र० सं० |
| छंद० | छंद प्रभाकर, भानु कवि, भारतजीवन प्रेस, काशी, प्र० सं० |
| छत्र० | छत्रप्रकाश, स० विलियम प्राइस, एजुकेशन प्रेस, कलकत्ता, १८२९ ई० |
| छिताई० | छिताई वार्ता, संपा० माताप्रसाद गुप्त, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स० |
| छीत० | छीत स्वामी, संपा० ब्रजभूषण शर्मा, विद्या विभाग, अष्टछाप स्मारक समिति, कांकरोली, प्र० स०, संवत् २०१२ |
| जंतुप्रबंध (शब्द०) | जंतुप्रबंध ग्रंथ |

| | |
|---|---|
| जग० बानी | जगजीवन साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०९, प्र० स० |
| जग० श० | जगजीवन साहब की शब्दावली |
| जगन्नाथ (शब्द०) | जगन्नाथप्रसाद 'भानु', काव्य प्रभाकर और छद प्रभाकर के रचयिता |
| जगन्नाथ शर्मा (शब्द०) | जगन्नाथ शर्मा (लेखक) |
| जनमेजय० | जनमेजय का नागयज्ञ, जयशकर 'प्रसाद' भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, पचम स० |
| जनानी० | जनानी ड्योढी, अनु० यशपाल, अशोक प्रकाशन, लखनऊ |
| जमाना (शब्द०) | जमाना अखबार |
| जय० प्र० | जयशकर प्रसाद, नददुलारे वाजपेयी, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०, १९९५ वि० |
| जयसिंह (शब्द०) | जयसिंह कवि |
| जरासधवध (शब्द०) | जरासधवध नाम का काव्य |
| जायसी ग्र० | जायसी ग्रथावली, सपा० रामचद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, द्वि० स० |
| जायसी ग्र० (गुप्त) | जायसी ग्रथावली, सपा० माताप्रसाद गुप्त, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५१ ई० |
| जायसी (शब्द०) | मलिक मुहम्मद जायसी, पद्मावत के रचयिता |
| जिप्सी | जिप्सी, इलाचद्र जोशी, सेंदूल बुक डिपो, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५२ ई० |
| जुगलेश (शब्द०) | जुगलेश कवि |
| ज्ञानदान | ज्ञानदान, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ १९४२ ई० |
| ज्ञानरत्न | ज्ञानरत्न, दरिया साहब, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद |
| झरना | झरना, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, सातवाँ स० |
| झाँसी० | झाँसी की रानी, वृदावनलाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झाँसी, द्वि० स० |
| टैगोर० | टैगोर का साहित्यदर्शन, अनु० राधेश्याम पुरोहित, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं० |
| ठडा० | ठडा लोहा, धर्मवीर भारती, साहित्य भवन लि०, प्रयाग, प्र० स०, १९५२ ई० |
| ठाकुर प्र० | ठाकुरप्रसाद |
| ठाकुर० | ठाकुर शतक, सपा० काशीप्रसाद, भारत-जीवन प्रेस, काशी, प्र० स०, सवत् १९६१ |
| ठेठ० | ठेठ हिंदी का ठाठ, अयोध्यासिंह उपाध्याय, खड्गविलास प्रेस, पटना, प्र० सं० |
| ढोला० | ढोला मारू रा दूहा, सपा० रामसिंह, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० स० |
| तितली | तितली, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, सातवाँ स० |
| तिथितत्व (शब्द०) | तिथितत्व निर्णय |
| तुलसी | तुलसीदास, 'निराला', भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, चतुर्थ स० |
| तुलसी ग्र० | तुलसी ग्रथावली, सपा० रामचद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, काशी, तृतीय स० |
| तुलसी सुधाकर (शब्द०) | तुलसी सुधाकर |
| तुरसी श०, तुलसी श० | तुलसी साहब (हाथरसवाले) की शब्दावली, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०९, १९११ |
| तेग अली (शब्द०) | तेग अली, बदमाश दर्पण के रचयिता |
| तेग० तेगबहादुर (शब्द०) | गुरु तेगबहादुर |
| तेज० | तेजबिंदूपनिषद् |
| तोप (शब्द०) | कवि तोप |
| त्याग० | त्यागपत्र, जैनेंद्रकुमार, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बबई, प्र० स० |
| द० सागर | दरिया सागर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९१० ई० |
| दखिनी० | दखिनी का गद्य और पद्य, सपा० श्रीराम शर्मा, हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद, प्र० स० |
| दयानंद (शब्द०) | स्वामी दयानंद जी |
| दयानिधि (शब्द०) | दयानिधि कवि |
| दरिया० बानी | दरिया साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, द्वि० स० |
| दश० | दशरूपक, सपा० डा० भोलाशकर व्यास, चौखभा विद्याभवन, वाराणसी, प्र० सं० |
| दशम० (शब्द०) | भाषा दशम स्कध, भागवत |
| दहकते० | दहकते अगारे, नरोत्तमप्रसाद नागर, अभ्युदय कार्यालय, इलाहाबाद |
| दादू० | (श्री) दादूदयाल की बानी, सपा० महामहोपाध्याय प० सुधाकर द्विवेदी, ना० प्र० सभा, वाराणसी |
| दादूदयाल ग्रं० | दादूदयाल ग्रथावली |
| दादू० (शब्द०) | दादूदयाल |
| दिनेश (शब्द०) | कवि दिनेश |
| दास (शब्द०) | कवि भिखारीदास |
| दिल्ली | दिल्ली, रामधारी सिंह 'दिनकर,' उदयाचल, पटना, प्र० स० |
| दिव्या | दिव्या, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४५ ई० |
| दीन० प्र० | दीनदयाल गिरि ग्रथावली, संपा० श्यामसुदरदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं० |
| दीनदयाल (शब्द०) | कवि दीनदयाल गिरि |

| | |
|---|---|
| दीप० | दीपशिखा, महादेवी वर्मा, किताबिस्तान, इलाहाबाद, प्र० स०, १९४२ ई० |
| दी० ज०, दीप ज० | दीप जलेगा, उपेंद्रनाथ 'अश्क,' नीलाभ प्रकाशन गृह, प्रयाग |
| दुर्गाप्रसाद मिश्र (शब्द०) | दुर्गाप्रसाद मिश्र |
| दुर्गाप्रसाद (शब्द०) | दुर्गाप्रसाद कवि |
| दुर्गेशनदिनी (शब्द०) | दुर्गेशनदिनी, उपन्यास, मूल लेखक बंकिमचंद्र चटर्जी (अनुवाद) |
| दूलह (शब्द०) | कवि दूलह |
| देवकीनंदन (शब्द०) | देवकीनदन खत्री |
| देव० ग्र० | देव ग्रथावली, ना० प्र० सभा, काशी, प्र०स० |
| देव (शब्द०) | देव कवि |
| देव (शब्द०) | देव कवि (मैनपुरीवाले) |
| देवदत्त (शब्द०) | देवदत्त कवि |
| देवीप्रसाद (शब्द०) | मुशी देवीप्रसाद |
| देशी० | देशी नाममाला |
| दैनिकी | दैनिकी, सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०, १९९९ वि० |
| दो सौ बावन० | दो सौ बावन वैष्णवो की वार्ता ( दो भाग ), शुद्धाद्वैत एकेडमी, कांकरोली, प्रथम स० |
| द्वद्व० | द्वद्वगीत, रामधारी सिह 'दिनकर,' पुस्तक भडार, लहेरियासराय, पटना, प्र० स० |
| द्वि० अभि० ग्रं० | द्विवेदी अभिनदन ग्रथ, ना० प्र० सभा, वाराणसी |
| द्विज (शब्द०) | द्विज कवि |
| द्विजदेव (शब्द०) | अयोध्यानरेश महाराजा मानसिह 'द्विजदेव' |
| द्विवेदी (शब्द०) | आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी |
| धरनी० बानी | धरनी साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९११ ई० |
| धरम० शब्दा०, धरम० | धरमदास की शब्दावली |
| धीर (शब्द०) | 'धीर' कवि |
| धूप० | धूप और धूआँ, रामधारीसिह 'दिनकर,' अजता प्रेस, लि०, पटना ४ |
| ध्रुव० | ध्रुवस्वामिनी, प्रसाद, भारती भडार, प्रयाग |
| नद० ग्रं०, नददास ग्रं० | नददास ग्रथावली, सपा० ब्रजरत्नदास, ना०प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| नई० | नई पौध, नागार्जुन, किताब महल, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५३ |
| नकछेदी (शब्द०) | नकछेदी तिवारी, कवि भडौआ सग्रह या मदन-मजरी के सपादक |
| नट० | नटनागर विनोद, सपा० कृष्णबिहारी मिश्र, इडियन प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स० |
| नदी० | नदी के द्वीप, 'अज्ञेय,' प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, प्र० स०, १९५१ ई० |
| नया० | नया साहित्य नए प्रश्न, नददुलारे वाजपेयी, विद्यामदिर, वाराणसी, २०११ वि० |
| नरेश (शब्द०) | 'नरेश' कवि |
| नागयज्ञ | जनमेजय का नागयज्ञ, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, सप्तम स० |
| नागरी (शब्द०) | नागरीदास कवि |
| नागरी० उर्दू० | नागरी और उर्दू का स्वाँग अर्थात् नागरी और उर्दू का एक नाटक, पं० गौरीदत्त, देवनागरी प्रचारिणी सभा, विद्यादर्पण यत्रालय, मेरठ, प्र० स० |
| नाथ (शब्द०) | नाथ कवि |
| नाथसिद्ध० | नाथसिद्धो की बानियाँ, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स० |
| नानक (शब्द०) | सत नानक गुरु |
| नाभादास (शब्द०) | नाभादास सत |
| नारायणदास (शब्द०) | नारायणदास |
| निबधमालादर्श (शब्द०) | निबधमालादर्श (म० प्र० द्विवेदी), निबंधसग्रह |
| निश्चलदास (शब्द०) | सत निश्चलदास जी |
| नील० | नीलकुसुम, रामधारीसिह 'दिनकर', उदयाचल पटना, प्र० स० |
| निहाल (शब्द०) | निहाल कवि |
| नूतनामृतसागर (शब्द०) | नूतनामृतसागर नाम का ग्रथ |
| नूर (शब्द०) | 'नूर' उपनाम के कवि |
| नृपशभु (शब्द०) | शिवाजी के पुत्र महाराज शभाजी |
| नेपाल० | नेपाल का इतिहास, प० बलदेवप्रसाद, वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, १९६१ वि० |
| पचवटी | पचवटी, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स० |
| पजनेस० | पजनेस प्रकाश, सपा० रामकृष्ण वर्मा, भारत जीवन यत्रालय, काशी, प्र० स० |
| पदमावत | पदमावत, स० वासुदेवशरण अग्रवाल, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स० |
| पदु०, पदुमा० | पदुमावती, सपा० सूर्यकात शास्त्री, पजाब विश्वविद्यालय, लाहौर, १९३४ ई० |
| पद्माकर ग्र० | पद्माकर ग्रथावली, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स० |
| पद्माकर (शब्द०) | पद्माकर भट्ट |
| पन्नालाल (शब्द०) | पन्नालाल कवि |
| प० रा०, प० रासो | परमाल रासो, सपा० श्यामसुदरदास, ना०प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| परमानद० | परमानदसागर |
| परमेश (शब्द०) | परमेश कवि |

| | |
|---|---|
| परिमल | परिमल, 'निराला', गगा ग्रथागार, लखनऊ, प्र० स० |
| पर्दे० | पर्दे की रानी, इलाचद्र जोशी, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०, १९९९ वि० |
| पलटू० | पलटू साहब की बानी ( १-३ भाग ), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०७ ई० |
| पल्लव | पल्लव, सुमित्रानदन पत, इडियन प्रेस लि०, प्रयाग, प्र० स० |
| पाणिनि० | पाणिनिकालीन भारतवर्ष, वासुदेवशरण अग्रवाल, मोतीलाल बनारसीदास, प्र० स० |
| पारिजात० | पारिजातहरण, बगाल और बिहार रिसर्च सोसायटी, प्र० सं० |
| पार्वती | पावती, रामानद तिवारी शास्त्री, भारतीभवन, मगलभवन, नयापुरा कोटा (राजस्थान), प्र० स०, १९५५ ई० |
| पा० सा० सि० | पाश्चात्य साहित्यालोचन के सिद्धात, लीलाधर गुप्त, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५२ ई० |
| पिजरे० | पिजरे की उडान, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४६ ई० |
| पीतल० | पीतल की मूर्ति (जार्ज विलियम रेनाल्ड के ब्रान्ज स्टैच्यू का अनुवाद), पांच भाग, वर्मन प्रेस कलकत्ता, प्र० स०, सं० १९७४ वि० |
| पूर्ण (शब्द०) | पूर्ण कवि |
| पू० म० भा० | पूर्वमध्यकालीन भारत, वासुदेव उपाध्याय भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं०, २००९ वि० |
| पृ० रा० | पृथ्वीराज रासो ( ५ खड ), सपा० मोहनलाल विष्णुलाल पडया, श्यामसुदर दास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| पृ० रा० (उ०) | पृथ्वीराज रासो (४ खड), स० कविराज मोहनसिंह, साहित्य सस्थान, राजस्थान विश्वविद्यापीठ, उदयपुर, प्र० स० |
| पोद्दार अभि० ग्र० | पोद्दार अभिनदन ग्र०, सपा० वासुदेवशरण अग्रवाल, अखिल भारतीय ब्रज साहित्यमडल, मथुरा, स० २०१० वि० |
| प्र० सा० | प्रगतिशील (वादी) साहित्य |
| प्रताप ग्र० | प्रतापनारायण मिश्र ग्रथावली, सपा० विजयशकर मल्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स० |
| प्रताप (शब्द०) | व्यग्यार्थ कौमुदी के रचयिता प्रताप कवि |
| प्रताप सिंह (शब्द०) | प्रताप सिंह |
| प्रबध० | प्रबधपद्म, 'निराला', गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ, प्र० स० |
| प्रभावती | प्रभावती, 'निराला,' सरस्वती भडार, लखनऊ, प्र० स० |
| प्राण० | प्राणसगली, सपा० सत शरणसिंह, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स० |
| प्रा० भा० प० | प्राचीन भारतीय परपरा और इतिहास डा० रागेय राघव, आत्माराम ऐंड सस, दिल्ली, प्र० स०, १९५३ ई० |
| प्रिय० | प्रियप्रवास, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, षष्ठ सं० |
| प्रिया० (शब्द०) | प्रियादास |
| प्रेम० | प्रेमपथिक, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, तृ० स० |
| प्रेम० और गोर्की | प्रेमचद और गोर्की, सपा० शचीरानी गुर्टू, राजकमल प्रकाशन लि०, बबई, १९५५ ई० |
| प्रेमघन० | प्रेमघन सर्वस्व, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्र० स०, १९९६ वि० |
| प्रे० सा० (शब्द०) | प्रेमसागर, लल्लूलाल कृत |
| प्रेमाजलि | प्रेमाजलि, ठा० गोपालशरण सिंह, इडियन प्रेस लि०, प्रयाग, १९५३ ई० |
| फिसाना० | फिसाना ए आजाद (चार भाग), प० रतननाथ सरशार', नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, चतुर्थ सं० |
| फूलो० | फूलो का कुर्ता, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, प्र० स० |
| बंगाल० | बंगाल का काल, हरिवश राय 'बच्चन,' भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० स०, १९४६ ई० |
| बदन० | बदनवार, देवेद्र सत्यार्थी, प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, १९४९ ई० |
| बद० | बदमाश बपण, तेगअली, भारतजीवन प्रेस, बनारस, प्र० स० |
| बलवीर (शब्द०) | बलवीर कवि |
| बलभद्र (शब्द०) | बलभद्र कवि |
| बाँकी० ग्र०, बाँकीदास ग्र० | बाँकीदास ग्रथावली (तीन भाग), सपा० रामनारायण दूगड़, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| बाँगेदरा | बाँगेदरा |
| बापू | बापू, कवितासग्रह, सियारामशरण गुप्त, प्र० सं० |
| बालकृष्ण ( शब्द० ) | बालकृष्ण |
| बालमुकुद (शब्द०) | बालमुकुद गुप्त |
| बिरहा ( शब्द० ) | प्रचलित बिरहा गीत |
| बिल्ले० | बिल्लेसुर बकरिहा, निराला, युगमदिर, उन्नाव, प्र० स० |
| बिसराम (शब्द०) | बिसराम कवि |
| बिहारी र० | बिहारी रत्नाकर, सपा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर', गगा ग्रथागार, लखनऊ, प्र० स० |
| बिहारी (शब्द०) | कवि बिहारी |

| | |
|---|---|
| बी० रासो | बीसलदेव रासो, सपा० सत्यजीवन वर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| बीसल० रास | बीसलदेव रास, सपा० माताप्रसाद गुप्त, प्र० स० |
| बी० श० महा० | बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य, डा० प्रतिपालसिंह, ओरिएंटल बुकडिपो, देहली, प्र० स० |
| बुद्ध च० | बुद्धचरित, रामचद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स० |
| बृहत्० | बृहत्सहिता |
| बृहत्सहिता (शब्द०) | बृहत्सहिता |
| बेनी (शब्द०) | कवि बेनी प्रवीन |
| बेला | बेला, 'निराला,' हिंदुस्तानी पब्लिकेशस, इलाहाबाद, प्र० स० |
| बेलि० | बेलि क्रिसन रुक्मिणी री, सपा० ठाकुर रामसिंह, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०, १९३१ ई० |
| बैताल (शब्द०) | बैताल कवि |
| बोधा (शब्द०) | कवि बोधा |
| ब्रज० | ब्रजविलास, सपा० श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, तृ० स० |
| ब्रज० ग्रं० | ब्रजनिधि ग्रंथावली, सपा० पुरोहित हरिनारायण शर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| ब्रज चरित्र० | ब्रज चरित्र वर्णन |
| ब्रजमाधुरी० | ब्रजमाधुरी सार, सपा० वियोगी हरि, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, तृ० स० |
| ब्रह्म ( शब्द० ) | ब्रह्म कवि (बीरबल) |
| भक्तमाल (प्रि०) | भक्तमाल, टीका० प्रियादास, वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, १९५३ वि० |
| भक्तमाल (श्री०) | भक्तमाल, श्रीभक्तिसुधाविंदु स्वाद, टीका० सीतारामशरण, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, द्वि० स०, १९८३ वि० |
| भक्ति० | भक्तिसागरादि, स्वामी चरणदास, वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, सवत् १९६० वि० |
| भक्ति प० | भक्ति पदार्थ वर्णन, स्वामी चरणदास, वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, सवत् १९६० |
| भगवतरसिक (शब्द०) | भगवत रसिक |
| भजन (शब्द०) | भजन |
| भट्ट (शब्द०) | बालकृष्ण भट्ट |
| भस्मावृत० | भस्मावृत चिनगारी, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४६ ई० |
| भा० इ० रू० | भारतीय इतिहास की रूपरेखा, जयचद्र विद्यालकार, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०, १९३३ वि० |
| भा० प्रा० लि० | भारतीय प्राचीन लिपिमाला, गौरीशंकर हीराचद ओझा, इतिहास कार्यालय, राजमेवाड़, प्र० स०, १९५१ वि० |
| भारत० | भारतभारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्यसदन, चिरगाँव, झाँसी, नवम स० |
| भा० भू०, भारत० नि० | भारत भूमि और उसके निवासी, जयचद्र विद्यालकार, रत्नाश्रम, आगरा, द्वि० स०, १९८७ वि० |
| भारतीय० | भारतीय राज्य और शासनविधान |
| भारतेंदु ग्र० | भारतेंदु ग्रथावली ( ४ भाग ), सपा० ब्रजरत्नदास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| भा० सैन्य० | भारत का सैन्य इतिहास, सर जदुनाथ सरकार, अनु० सुशील त्रिवेदी, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रथ अकादमी, भोपाल, प्र० स० |
| भा० शिक्षा | भारतीय शिक्षा, राजेंद्रप्रसाद, आत्माराम ऐंड सस, दिल्ली, १९५३ ई० |
| भाषा शि० | भाषाशिक्षण, प० सीताराम चतुर्वेदी |
| भिखारी ग्रं० | भिखारीदास ग्रंथावली ( दो भाग ), सपा० प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, काशी |
| भीखा श० | भीखा शब्दावली, प्र० स० |
| भुवनेश (शब्द०) | भुवनेश कवि |
| भूधर (शब्द०) | भूधर कवि |
| भूपति (शब्द०) | भूपति कवि |
| भूमि० | भूमि की अनुभूति ( कवितासग्रह) |
| भूषण ग्रं० | भूषण ग्रंथावली, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, साहित्य सेवक कार्यालय, काशी, प्र० सं० |
| भूषण (शब्द०) | कवि भूषण त्रिपाठी |
| भोज० भा० सा० | भोजपुरी भाषा और साहित्य, डा० उदयनारायण तिवारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र०स० |
| मतपरीक्षा (शब्द०) | मतपरीक्षा (पुस्तक) |
| मति० ग्र० | मतिराम ग्रंथावली, सपा० कृष्णविहारी मिश्र, गगा पुस्तकमाला, लखनऊ, द्वि० स० |
| मतिराम (शब्द०) | कवि मतिराम त्रिपाठी |
| मधु० | मधुकलश, हरिवशराय 'बच्चन,' सुषमा निकुज, इलाहाबाद, द्वि० स०, १९३९ ई० |
| मधुज्वाल | मधुज्वाल, सुमित्रानदन पंत, भारती भडार, इलाहाबाद, द्वि० स०, १९३९ ई० |
| मधु मा० | मधुमालती वार्ता, सपा० माताप्रसाद गुप्त, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स० |
| मधुशाला | मधुशाला, हरिवश राय 'बच्चन,' सुषमा निकुज, इलाहाबाद, प्र० स० |
| मधुसूदन (शब्द०) | मधुसूदनदास कवि |
| मनविरक्त० | मनविरक्तकरन गुटका सार ( चरणदास ) |
| मनु० | मनुस्मृति |
| मन्नालाल (शब्द०) | कवि मन्नालाल |
| मलूक० बानी | मलूकदास की बानी, वेलवेडियर प्रेस, प्रयाग |

| | |
|---|---|
| मलूक० (शब्द०) | मलूकदास |
| महा० | महाराणा का महत्व, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, चतुर्थ सं० |
| महावीरप्रसाद (शब्द०) | प० महावीरप्रसाद द्विवेदी |
| महाभारत (शब्द०) | महाभारत |
| महाराणा प्रताप (शब्द०) | महाराणा प्रताप, पुस्तक |
| माधव० | माधवनिदान, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, चतुर्थ सं० |
| माधवानल० | माधवानल कामकंदला, बोधा कवि, नवल-किशोर प्रेस, लखनऊ, प्र० सं०, १८९१ ई० |
| मान० | मानसरोवर, प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद |
| मानव | मानव, कवितासंकलन, भगवतीचरण वर्मा |
| मानव० | मानवसमाज, राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, इलाहाबाद, द्वि० सं० |
| मानस | रामचरितमानस, सपा० शंभुनारायण चौबे, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं० |
| मा० सं०, मा० सं० रू० | मानवसमाज या मानव समाज की रूपरेखा |
| मिट्टी० | मिट्टी और फूल, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९९९ वि० |
| मिलन० | मिलनयामिनी, हरिवंश राय 'बच्चन,' भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र० सं०, १९५० ई० |
| मिश्रबंधु (शब्द०) | 'मिश्रबंधु' नाम से व्यवहृत |
| मीर हसन (शब्द०) | मीर हसन |
| मीरा (शब्द०) | भक्त मीरा बाई |
| मुंशी अभि० ग्र० | मुंशी अभिनंदन ग्रंथ, सपा० डा० विश्वनाथ-प्रसाद, हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ आगरा विश्वविद्यालय, आगरा |
| मुकुंदलाल (शब्द०) | मुकुंदलाल कवि |
| मुबारक (शब्द०) | कवि मुबारक अली |
| मुरारिदान (शब्द०) | कवि मुरारिदान |
| मृग० | मृगनयनी, वृंदावनलाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झाँसी |
| मैला० | मैला आँचल, फणीश्वरनाथ 'रेणु,' समता प्रकाशन, पटना–४, प्र० सं० |
| मोहन० | मोहनविनोद, सं० कृष्णबिहारी मिश्र, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, प्र० सं० |
| यमुना (शब्द०) | यमुनाशंकर |
| यशो० | यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० सं० |
| यामा | यामा, महादेवी वर्मा, किताबिस्तान, प्रयाग, प्र० सं० |
| युग० | युगवाणी, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| युगपथ | युगपथ ,, ,, ,, |
| युगलेश (शब्द०) | कवि युगलेश |
| युगांत | युगांत, सुमित्रानंदन पंत, इंद्र प्रिंटिंग प्रेस, अल्मोड़ा, प्र० सं० |
| योग० | योगवाशिष्ठ (वैराग्य मुमुक्षु प्रकरण), गंगा-विष्णु श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर छापा-खाना, कल्याण, बंबई, सं० १९६७ वि० |
| रंगभूमि | रंगभूमि, प्रेमचंद, गंगा ग्रंथागार, लखनऊ, प्र० सं०, १९८१ वि० |
| रघु० रू० | रघुनाथ रूपक गीतावली, सपा० महताबचंद खारेड, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं० |
| रघु० दा०, रघुनाथदास (शब्द०) | रघुनाथदास |
| रघुनाथ (शब्द०) | रघुनाथ |
| रघुनाथ बंदीजन (कौ०) | रघुनाथ बंदीजन |
| रघुराज, रघुराज सिंह (शब्द०) | रीवाँनरेश महाराज रघुराजसिंह, सं० १८८०-१९३६ वि० |
| रजत० | रजतशिखर, सुमित्रानंदन पंत, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, २००८ वि० |
| रजिया० | रजिया की बेटी, (अनु०) नरोत्तम नागर, साहित्य प्रकाशन, माली बाड़ा, दिल्ली, प्र० सं० |
| रज्जब० | रज्जब जी की बानी, ज्ञानसागर प्रेस, बंबई, १९७५ वि० |
| रतन० | रतनहजारा, सपा० श्री जगन्नाथप्रसाद श्रीवास्तव, भारतजीवन प्रेस, काशी, प्र० सं०, १९८२ ई० |
| रति० | रतिनाथ की चाची, नागार्जुन, किताब महल, इलाहाबाद, द्वि० सं०, १९५३ ई० |
| रत्न० (शब्द०) | रत्नसार |
| रत्नपरीक्षा (शब्द०) | रत्नपरीक्षा |
| रत्नाकर | रत्नाकर [ दो भाग ], ना० प्र० सभा, काशी, चतुर्थ, द्वि० और प्रथम सं० १९८० |
| रत्नावली (शब्द०) | रत्नावली नाटिका |
| रश्मि० | रश्मिबंध, सुमित्रानंदन पंत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली |
| रस० | रसमीमांसा, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० सं० |
| रस क० | रसकलश, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध,' हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, तृतीय सं० |
| रसखान० | रसखान और घनानंद, सपा० अमीरसिंह, ना० प्र० सभा, द्वि० सं० |
| रसखान (शब्द०) | सैयद इब्राहीम रसखान |
| रस र०, रसरतन | रसरतन, सपा० पुहकर कवि कृत, शिवप्रसाद सिंह, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं० |
| रसनिधि (शब्द०) | राजा पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' |
| रसिया (शब्द०) | रसिया कवि ? रसिया गीत ? |
| रहिमन (शब्द०) | रहीम कवि |

| | |
|---|---|
| रहीम (शब्द०) | अब्दुर्रहीम खानखाना |
| रहीम० | रहीम रत्नावली |
| रा० कृ० वर्मा (शब्द०) | रामकृष्ण वर्मा |
| राज० इति० | राजपूताने का इतिहास, गौरीशकर हीराचद ओझा, अजमेर, १९९७ वि०, प्र० स० |
| राज० | राजतरंगिणी |
| रा० रू० | राजरूपक, सपा० प० रामकर्ण, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| रा० वि० | राजविलास, सपा० मोतीलाल मेनारिया, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स० |
| राजनीतिक० | राजनीतिक विचारधाराएँ |
| राज्यश्री | राज्यश्री, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सातवाँ स० |
| राम० | रामचरितमानस, सपा० विजयानद त्रिपाठी, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं० १९७३ वि० |
| राम, रामकवि (शब्द०) | राम कवि |
| रामकृष्ण (शब्द०) | रामकृष्ण |
| राम० च० | सक्षिप्त रामचद्रिका, सपा० लाला भगवानदीन, ना० प्र० सभा, वाराणसी, षष्ठ स० |
| राम० धर्म० | रामस्नेह धर्मप्रकाश, सपा० मालचद जी शर्मा, चौकसराम जी ( सिंहथल ), बडा रामद्वारा, बीकानेर । |
| राम० धर्म० स० | रामस्नेह धर्मसग्रह, सपा० मालचद जी शर्मा, चौकसराम जी ( सिंहथल ), बडा रामद्वारा, बीकानेर । |
| रामरसिका० | रामरसिकावली (भक्तमाल) |
| रामसहाय (शब्द०) | रामसहाय कवि कृत सतसई |
| रामानद० | रामानद की हिंदी रचनाएँ, संपा० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, ना० प्र० सभा, प्र० स० |
| रामाश्व० | रामाश्वमेध, मन्नालाल द्विज, त्रिपुरा भैरवी, वाराणसी, १९३९ वि० |
| रिखिनाथ (शब्द०) | कवि रिखिनाथ |
| रेणुका | रेणुका, रामधारी सिंह 'दिनकर,' पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, पटना, प्र० सं० |
| रै० बानी | रैदास बानी, वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद |
| लक्ष्मणसिंह (शब्द०) | राजा लक्ष्मणसिंह |
| लल्लू, लल्लूलाल (शब्द०) | लल्लूलाल |
| लवकुश चरित्र (शब्द०) | लवकुश चरित्र |
| लहर | लहर, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, इलाहाबाद, पचम स० |
| लाल (शब्द०) | लाल कवि (छत्रप्रकाशवाले) |
| वर्ण०, वर्णरत्नाकर | वर्णरत्नाकर |
| वल्लभ पु० (शब्द०) | वल्लभपुष्टिमार्ग, ग्रथ |
| वाल्मीकीय० (शब्द०) | वाल्मीकीय रामायण |
| विद्यापति | विद्यापति, सपा० खगेंद्रनाथ मिश्र, यूनाइटेड प्रेस, लि०, पटना |
| विनय० | विनयपत्रिका, टीका० प० रामेश्वर भट्ट, इडियन प्रेस लि०, प्रयाग, तृ० स० |
| विशाख | विशाख, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, तृ० स० |
| विश्राम (शब्द०) | विश्रामसागर |
| विश्वनाथसिंह (शब्द०) | रीवाँ नरेश महाराज विश्वनाथसिंह जी (सं० १८४६ १९११ वि०) |
| विश्वप्रिया | विश्वप्रिया, 'अज्ञेय' स० ही० वात्स्यायन |
| विश्वास (शब्द०) | विश्वास ? |
| वीणा | वीणा, सुमित्रानदन पत, इडियन प्रेस, लि० प्रयाग, द्वि० स० |
| वेणी (शब्द०) | वेणी (या वेनी) कवि |
| वेनिस (शब्द०) | वेनिस का बाँका |
| वैशाली०, वै० न० | वैशाली की नगरवधू, चतुरसेन शास्त्री, गौतम बुकडिपो, दिल्ली, प्र० स० |
| वो दुनिया | वो दुनिया, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४१ ई० |
| व्यंग्यार्थ० | व्यग्यार्थ कौमुदी प्रताप कवि कृत, बाबू रामकृष्ण वर्मा, भारत जीवन प्रेस, काशी, प्र० सं०, सवत् १९५७ |
| व्यग्यार्थ (शब्द०) | व्यग्यार्थ कौमुदी |
| व्यास (शब्द०) | अबिकादत्त व्यास |
| ब्रज (शब्द०) | ब्रज विलास |
| श० दि० (शब्द०) | शकरदिग्विजय |
| शकर (शब्द०) | शकर कवि |
| शंकर० | शकरसर्वस्व, सपा० हरिशकर शर्मा, गयाप्रसाद ऐंड सस, आगरा, प्र० स० |
| शंभु ( शब्द० ) | शभु कवि |
| शकु० | शकुतला, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी |
| शकुंतला | शकुतला नाटक, अनु० राजा लक्ष्मणसिंह, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, चतु० सं० |
| शब्द चंद्रिका (शब्द०) | शब्दचद्रिका (सस्कृत) |
| शब्द रत्नावली (शब्द०) | शब्दरत्नावली |
| शब्दावली (शब्द०) | शब्दावली ग्रथ |
| शाहजहाँनामा (शब्द०) | शाहजहाँनामा |
| शार्ङ्गधर सं० | शार्ङ्गधर सहिता, टी० सीताराम शास्त्री, मुबई वैभव मुद्रणालय, सवत् १९७१ |
| शिखर० | शिखर वशोत्पत्ति सपा० पुरोहित हरिनारायण शर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०, १९८५ |
| शिरमौर (शब्द०) | कवि शिरमौर |
| शिवप्रसाद (शब्द०) | राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद |

| | |
|---|---|
| शिवराम (शब्द०) | शिवराम कवि |
| शिवशंभु (शब्द०) | शिवशंभु का चिट्ठा |
| शुक्ल० अभि० ग्रं० | शुक्ल अभिनंदन ग्रंथ, मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन |
| शृं० सत० (शब्द०) | शृंगार सतसई |
| शृंगार सुधाकर (शब्द०) | शृंगार सुधाकर |
| शेखर (शब्द०) | शेखर कवि |
| शेर० | शेर ओ सुखन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र स |
| शैली | शैली, प० करुणापति त्रिपाठी, प्र० स० |
| श्यामबिहारी (शब्द०) | श्यामबिहारी मिश्र ('मिश्रबंधु') |
| श्यामा० | श्यामास्वप्न, सपा० डा० कृष्णलाल, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| श्रद्धानंद (शब्द०) | स्वामी श्रद्धानंद |
| श्रद्धाराम (शब्द०) | श्रद्धाराम फुल्लौरी |
| श्रीकृष्णसदेश (शब्द०) | श्रीकृष्णसदेश |
| श्रीधर (शब्द०) | श्रीधर कवि |
| श्रीधर पाठक (शब्द०) | श्रीधर पाठक |
| श्रीनिवास ग्र० | श्रीनिवास ग्रंथावली, सपा० डा० कृष्णलाल, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| श्रीपति (शब्द०) | श्रीपति कवि |
| सतति० | चद्रकाता सतति, देवकीनंदन खत्री, वाराणसी |
| सचिता | सचिता ( कवितासग्रह ) |
| सत तुरसी० | सत तुरसीदास की शब्दावली, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद। |
| स० दरिया, सत० दरिया | सत कवि दरिया, सं० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र० स० |
| सं० दा० (शब्द०) | सगीत दामोदर |
| सं० शा० (शब्द०) | सगीत शाकुतल |
| सत र० | सत रविदास और उनका काव्य स्वामी रामानद शास्त्री, भारतीय रविदास सेवासघ, हरिद्वार, प्र० स० |
| संतवाणी०, सत०सार० | सतवाणी सार संग्रह (२ भाग), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद |
| सन्यासी | सन्यासी, इलाचद्र जोशी, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स० |
| सपूर्णा० अभि० ग्र० | सपूर्णानद अभिनदन ग्रंथ, सपा० आचार्य नरेंद्रदेव, ना० प्र० सभा, वाराणसी |
| स० दर्शन | समीक्षादर्शन, रामलाल सिंह, इडियन प्रेस, प्रयाग, प्र० स० |
| सत्य० | कविरत्न सत्यनारायण जी की जीवनी, श्री बनारसीदास चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, द्वि० स० |
| सत्यार्थप्रकाश (शब्द०) | सत्यार्थप्रकाश, स्वामी दयानंद |
| सबल (शब्द०) | सबलसिंह चौहान (महाभारत) |
| सभा० वि० (शब्द०) | सभाविलास |
| सरस्वती (शब्द०) | सरस्वती मासिक पत्रिका |
| सर्पाघातचिकित्सा (शब्द०) | सर्पाघात चिकित्सा |
| स० शास्त्र | समीक्षाशास्त्र, प० सीताराम चतुर्वेदी, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी, प्र० स० |
| स० सप्तक | सतसई सप्तक, सपा० श्यामसुंदरदास, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, प्र० स० |
| सरलाबाई (शब्द०) | सरलाबाई, कवयित्री |
| सहजो० | सहजो बाई की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०८ वि० |
| साकेत | साकेत, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्यसदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स० |
| सागरिका | सागरिका, ठा० गोपालशरण सिंह, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स० |
| सात सतक | हस्तलेख, छत्रपति संभा जी, उपनाम शभु, नृपशभु कवि |
| साम० | सामधेनी, रामधारी सिंह 'दिनकर,' उदयाचल, पटना, द्वि० स० |
| सा० दर्पण | साहित्यदर्पण, सपा० शालिग्राम शास्त्री, श्री मृत्युंजय औषधालय, लखनऊ, प्र० स० |
| सा० द० | साहित्य दर्शन |
| सा० लहरी | साहित्यलहरी, सपा० रामलोचनशरण बिहारी, पुस्तक भडार, लहेरियासराय, पटना |
| सा० समीक्षा | साहित्य समीक्षा, कालिदास कपूर, इडियन प्रेस, प्रयाग |
| साहित्य० | साहित्यालोचन, श्री श्यामसुंदर दास, इडियन प्रेस, इलाहाबाद |
| सिद्धातसग्रह (शब्द०) | सिद्धातसग्रह |
| सीतल (शब्द०) | कवि सीतल |
| सीताराम ( शब्द० ) | सीताराम कवि |
| सुंदर० | सुंदरदास ग्रंथावली ( दो भाग ), सपा० हरिनारायण शर्मा, राजस्थान रिसर्च सोसायटी, कलकत्ता |
| सुंदरीसिंदूर (शब्द०) | सुंदरी सिंदूर, कवितासग्रह |
| सुकवि (शब्द०) | सुकवि उपनाम के कवि |
| सुखदा | सुखदा, जैनेंद्रकुमार, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, प्र० स० |
| सुखदेव (शब्द०) | कवि सुखदेव |
| सुधाकर (शब्द०) | महामहोपाध्याय प० सुधाकर द्विवेदी |
| सुजान० | सुजानचरित (सूदनकृत), सपा० राधाकृष्ण, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी, प्र० स० |

| | |
|---|---|
| सुधानिधि | कवि तोष और सुधानिधि, सं० सुरेंद्र माथुर, ना० प्र० स० काशी, प्र० सं० |
| सुनीता | सुनीता, जैनेंद्रकुमार, साहित्यभवन, बाजार सीताराम, दिल्ली, प्र० सं० |
| सुंदर (शब्द०) | सुंदर कवि, सुंदरदास जी |
| सूत० | सूत की माला, पंत और बच्चन, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| सूदन (शब्द०) | सूदन कवि (सुजानचरित के रचयिता, भरतपुरवाले) |
| सूर० | सूरसागर (दो भाग), ना० प्र० सभा, द्वितीय सं० |
| सूर० (शब्द०) | सूरदास |
| सूर० (राधा०) | सूरसागर, संपा० राधाकृष्णदास, वेंकटेश्वर प्रेस, प्र० सं० |
| सेवक (शब्द०) | 'सेवक' कवि |
| सेवक श्याम (शब्द०) | सेवक श्याम कवि |
| सेवासदन | सेवासदन, प्रेमचंद, हिंदी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता द्वि० सं० |
| सैर कु० | सैर कुहसार, पं० रतननाथ 'सरशार', नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ च० सं०, १९३४ ई० |
| सौ अजान० (शब्द०) | सौ अजान और एक सुजान, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' |
| स्कंद० | स्कंदगुप्त, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० सं० |
| स्वर्ण० | स्वर्णकिरण, सुमित्रानंदन पंत, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० सं० |
| स्वाधीनता (शब्द०) | स्वाधीनता |
| स्वामी रा०, स्वामी राम कृष्ण (शब्द०) | स्वामी रामकृष्ण |
| स्वामी हरिदास (शब्द०) | स्वामी हरिदास |
| हस० | हंसमाला, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० सं० |
| हंसराज (शब्द०) | हंसराज |
| हकायके० | हकायके हिंदी, ले० मीर अब्दुल वाहिद, प्र० संपा० 'रुद्र' काशिकेय, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं० |
| हनुमन्नाटक (शब्द०) | हनुमन्नाटक |
| हनुमान (शब्द०), हनुमान कवि (शब्द०) | हनुमान कवि |
| हम्मीर० | हम्मीरहठ, संपा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर,' इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग |
| ह० रासो० | हम्मीर रासो, संपा० डा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं० |
| हरिजन (शब्द०) | कवि हरिजन |
| हरिदास (शब्द०) | स्वामी हरिदास |
| हरिश्चंद्र (शब्द०) | भारतेंदु हरिश्चंद्र |
| हरिसेवक (शब्द०) | हरिसेवक कवि |
| हरी घास० | हरी घास पर क्षण भर, अज्ञेय, प्रगति प्रकाशन, नई दिल्ली, १९४९ ई० |
| हर्ष० | हर्षचरित एक सांस्कृतिक अध्ययन, वासुदेवशरण अग्रवाल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र० सं०, १९५३ ई० |
| हाल'हल | हालाहल, हरिवंशराय बच्चन, भारती भंडार, प्रयाग, १९४६ ई० |
| हिंदी आ० | हिंदी आलोचना |
| हिं० क० का० | हिंदी कवि और काव्य, गणेशप्रसाद द्विवेदी हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| हिंदी का० | हिंदी काव्य की आत्मचेतना |
| हिं० का० प्र० | हिंदी काव्य पर अंग्रेज प्रभाव, रवींद्रसहाय वर्मा, पद्मजा प्रकाशन, कानपुर, प्र० सं० |
| हिंदी काव्य० | हिंदी काव्य में प्रकृतिचित्रण |
| हिं० ना० | हिंदी के नाटक |
| हिंदी प्रदीप (शब्द०) | हिंदी प्रदीप |
| हिंदी प्रेमगाथा० | हिंदी प्रेमगाथा काव्यसंग्रह, गणेशप्रसाद द्विवेदी, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, १९३९ ई० |
| हिंदी प्रेमा० | हिंदी प्रेमाख्यानक काव्य, डा० कमल कुलश्रेष्ठ, चौधरी भानसिंह प्रकाशन, कचहरी रोड |
| हिं० प्र० चि० | हिंदी काव्य में प्रकृतिचित्रण, किरणकुमारी गुप्त, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग |
| हिं० सा० भू० | हिंदी साहित्य की भूमिका, हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, तृ० सं०, १९४८ |
| हिंदु० सभ्यता | हिंदुस्तान की पुरानी सभ्यता, बेनीप्रसाद, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, प्र० सं० |
| हित हरिवंश (शब्द०) | वैष्णव संत हित हरिवंश दास |
| हिम कि० | हिमकिरीटिनी, माखनलाल चतुर्वेदी, सरस्वती प्रकाशन मंदिर इलाहाबाद, तृ० सं० |
| हिम त० | हिमतरंगिणी, माखनलाल चतुर्वेदी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| हिम्मत० | हिम्मतबहादुर विरुदावली, लाला भगवानदीन, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० सं० |
| हिल्लोल | हिल्लोल, शिवमंगल सिंह 'सुमन', सरस्वती प्रेस, बनारस, द्वि० सं० |
| हुमायूं० | हुमायूंनामा, अनु० ब्रजरत्नदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, द्वि० सं० |
| हृदय० | हृदयतरंग, सत्यनारायण कविरत्न |
| हृदयराम (शब्द०) | कवि हृदयराम |

[ व्याकरण, व्युत्पत्ति आदि के संकेताक्षरों का विवरण ]

| | |
|---|---|
| अ० | अंग्रेजी |
| अ० | अरबी |
| अक० रूप | अकर्मक रूप |
| अनु० | अनुकरण शब्द |
| अनुध्व० | अनुध्वन्यात्मक |
| अनु० मू० | अनुकरणार्थमूलक |
| अनुर० | अनुरणनात्मक रूप |
| अप० | अपभ्रंश |
| अर्ध मा० | अर्धमागधी |
| अल्पा० | अल्पार्थक |
| अव० | अवधी |
| अव्य० | अव्यय |
| इता० | इतालवी |
| इब० | इबरानी |
| उ० | उदाहरण |
| उच्चा० | उच्चारण सुविधार्थ |
| उड़ि० | उड़िया |
| उप० | उपसर्ग |
| उभय० | उभयलिंग |
| एकव० | एकवचन |
| कनाडी | कन्नड भाषा |
| कहावत | कहावत |
| काव्यशास्त्र | काव्यशास्त्र |
| [कौ०], (कौ०) | अन्य कोश |
| ? | संभाव्य व्युत्पत्ति |
| ?? | अनिश्चित व्युत्पत्ति |
| कोंक० | कोंकणी |
| क्रि० | क्रिया |
| क्रि० अ० | क्रिया अकर्मक |
| क्रि० प्र० | क्रिया प्रयोज |
| क्रि० वि० | क्रिया विशेषण |
| क्रि० स० | क्रिया सकर्मक |
| ध्व० | ध्वनित् |
| गीत | लोकगीत |
| गुज० | गुजराती |
| चीं० | चीनी भाषा |
| छं० | छंद |
| जापा० | जापानी |
| जावा० | जावा द्वीप की भाषा |
| जी०, जीवन | जीवनचरित |
| ज्या० | ज्यामिति |
| ज्यो० | ज्योतिष |
| डिं | डिंगल |
| त० | तमिल |
| तर्क० | तर्कशास्त्र |
| ति० | तिब्बती भाषा |
| तु० | तुर्की |
| तुल० | तुलनीय |
| दू० | दूहा या दूहला |
| दे० | देखिए |
| देश० | देशज |
| देशी | देशी शब्द |
| धर्म० | धर्मशास्त्र |
| नाम० | नामधातु |
| ना० धा० | नामधातुज क्रिया |
| नामिक धातु | नामिक धातु |
| ने० | नेपाली |
| न्याय० | न्याय या तर्कशास्त्र |
| प० | पंजाबी |
| परि० | परिशिष्ट |
| पा० | पाली |
| पु० | पुंलिंग |
| पुर्त० | पुर्तगाली |
| पु० हिं० | पुरानी हिंदी |
| पू० हिं० | पूर्वी हिंदी |
| पृ० | पृष्ठ |
| प्र० | प्रकाशकीय या प्रस्तावना |
| प्रत्य० | प्रत्यय |
| प्रा० | प्राकृत |
| प्रे० | प्रेरणार्थक रूप |
| फ० | फ्रांसीसी भाषा |
| फकीर० | फकीरों की बोली |
| फा० | फारसी |
| बंग० | बंगला भाषा |
| बरमी० | बरमी भाषा |
| बहुव० | बहुवचन |
| बु० ल० | बुंदेलखंड की बोली |
| बुंदेल० | " " |
| बोल० | बोलचाल |
| भाव० | भाववाचक संज्ञा |
| भू० | भूमिका |
| भू० कृ० | भूत कृदंत |
| मरा० | मराठी |
| मल० | मलयाली या मलयालम भाषा |
| मला० | मलाया की भाषा |
| मि० | मिलाइए |
| मुसल० | मुसलमानों द्वारा प्रयुक्त |
| मुहा० | मुहावरा |

| | | | |
|---|---|---|---|
| यू० | यूनानी | सयो० क्रि० | संयोजक क्रिया |
| यौ० | यौगिक | स० | सकर्मक |
| राज० | राजस्थानी | सक० रूप | सकर्मक रूप |
| लश० | लशकरी | सधु० | सधुक्कडी भाषा |
| ला० | लाक्षणिक | सर्व० | सर्वनाम |
| लै० | लैटिन | सिंहली | सिंहली भाषा |
| व० कृ० | वर्तमान कृदत | स्पे० | स्पेनी भाषा |
| वर्ण वि० | वर्णविपर्यय | स्त्रि० | स्त्रियो द्वारा प्रयुक्त |
| वि० | विशेषण | स्त्री० | स्त्रीलिंग |
| वि० द्वि० मू० | विषमद्विरुक्तिमूलक | हिं० | हिंदी |
| वै० | वैदिक | Ⓟ | काव्यप्रयोग, पुरानी हिंदी |
| व्या० | व्याकरण | > | व्युत्पन्न |
| व्यग्य | व्यग्यार्थ मे प्रयुक्त | † | प्रातीय प्रयोग |
| (शब्द०) | शब्दसागर प्र० स० | ‡ | ग्राम्य प्रयोग |
| सं० | सस्कृत | √ | धातुचिह्न |
| सयो० | सयोजक अव्यय | | |

# हिंदी शब्दसागर

## स

स—हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन। यह ऊष्म वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान दंत है, इसलिये यह दंती 'स' कहा जाता है।

स[1]—अव्य० [सं० सम्] १ एक अव्यय जिसका व्यवहार शोभा, समानता, सगति, उत्कृष्टता, निरंतरता, औचित्य आदि सूचित करने के लिये शब्द के आरंभ मे होता है। जैसे,—सभोग, सयोग, सताप, सतुष्ट आदि। कभी कभी इसे जोडने पर भी मूल शब्द का अर्थ ज्यो का त्यो बना रहता है, उसमे कोई परिवर्तन नही होता। २ से।

स(पु)[2]—प्रत्य० [हिं०] करण कारक और अपादान कारक का चिह्न। से। उ०—नै एते स तनु गुण हरयौ। न्याइ वियोगु विधाता करयौ।—छिताई०, पृ० ९३।

सक(पु)[1]—सज्ञा स्त्री० [सं० शङ्का] दे० 'शका'। उ०—(क) जलधि पार मानस अगम रावण पालित लक। सोच विकल कपि भालु सबु दुहु दिस सकट सक।—तुलसी (शब्द०)। (ख) श्रीफल कनक कदलि हरपाही। नेकु न सक सकुच मन माही। मानस, ३।२४।

सकट[1]—वि० [सं० सम+कृत, सङ्कट, प्रा० सकट] १ एकत्र किया हुआ। २ घनीभूत। ३ तग। क्षीण। ४. दुर्गम। दुर्लघ्य। ५ भयानक। कष्टप्रद। दु खदायी। ६ सकीर्ण। सँकरा। तग। ७ पूर्ण। भरा हुआ (को०)।

सकट[2]—सज्ञा पुं० १ विपत्ति। आफत। मुसीबत। उ०—लालन गे जब ते तब ते बिरहानल जालन ते मन डाढे। पालत हे ब्रजगायन ग्वाल हुतो जब आवत सकट गाढे।—दीनदयाल (शब्द०)। २ दु ख। कष्ट। तकलीफ। ३ भीड। समूह। ४ सँकरी राह। ५ वह तग पहाडी रास्ता जो दो बडे और ऊँचे पहाडो के बीच से होकर गया हो। जैसे, गिरिसकट।

यौ०—सकटचतुर्थी = दे० 'सकटचौथ'। सकटनाशन = विपत्तियो का नाश करनेवाला। सकटमुख = तग या सँकरे मुँह का। सकटमोचन = (१) काशी मे गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा स्थापित हनुमानजी की एक प्रसिद्ध मूर्ति। (२) सकट से मुक्त करनेवाला। सकटनाशन।

सकट[3]—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।

सकट चौथ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सकट+चौथ] माघ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी।

विशेष—इस दिन सकट दूर करनेवाले गणेश देवता के उद्देश्य से व्रत आदि रखा जाता है। कुछ लोग श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को भी सकट चौथ कहते है।

सकटस्थ—वि० [सं० सङ्कटस्थ] १ सकट मे पडा हुआ। विपद्ग्रस्त। २ दु खी।

सकटा—सज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कटा] १ एक प्रसिद्ध देवी मूर्ति जो वाराणसी मे है और सकट या विपत्ति का निवारण करनेवाली मानी जाती है। २ ज्योतिष के अनुसार आठ योगिनियो मे से एक योगिनी।

विशेष—बाकी सात योगिनियाँ ये हैं—मगला, पिंगला, धन्या, भ्रमरी, भद्रिका, उल्का और सिद्धि।

सकटाक्ष[1]—सज्ञा पुं० [सं० सङ्कटाक्ष] धौ का पेड। धव।

सकटापन्न—वि० [सं० सङ्कटापन्न] सकट या विपत्ति मे पडा हुआ। उ०—छुरे की धार के समान दुर्गम और सकटापन्न है।—सत० दरिया, पृ० ५९।

सकटी—वि० [सं० सङ्कटिन्] विपद्ग्रस्त। दुखी। सकटापन्न (को०)।

सकटोत्तीर्ण—वि० [सं० सङ्कटोत्तीर्ण] जो सकट को पार कर गया हो (को०)।

सकत(पु)—सज्ञा पुं० [सं० सङ्केत] दे० 'सकेत'।

सकथन—सज्ञा पुं० [सं० सकथन, सङ्कथन] १ वार्ता। बातचीत। २. वर्णन। व्याख्या (को०)।

सकथा—सज्ञा स्त्री० [सं० सकथा, सङ्कथा] १ वार्ता। बातचीत। २. व्याख्या। प्रतिपत्ति (को०)।

सकथित—वि० [सं० सकथित, सङ्कथित] कहा हुआ। वर्णित। व्याख्यात (को०)।

सकना(पु)[1]—क्रि० अ० [सं० शङ्कन] १ शका करना। सदेह करना। २ डरना। भयभीत होना। उ०—पाँड परे पनिका पै परी जिय सकति सोनिन होति न सोही।—देव (शब्द०)।

सकनी[1]—सज्ञा स्त्री० [सं० शाकिनी] दे० 'शाकिनी'। उ०—डकनी सकनी घेरि मारी।—रामानद०, पृ० ४।

सकर[1]—सज्ञा पुं० [सं० सङ्कर] १ वह धूल जो झाड़ देने के कारण उडती है। २ आग के जलने का शब्द। ३. दो पदार्थों का परस्पर मिश्रण। दो चीजो का आपस मे मिलना। ४ न्याय के अनुसार किसी एक स्थान या पदार्थ मे अत्यताभाव और समानाधिकरण का एक ही मे होना। जैसे,—मन मे मूर्त्तत्व

तो है, पर भूतत्व नहीं है, और आकाश मे भूतत्व है, पर मूर्त्तत्व नहीं है। परतु पृथ्वी मे भूतत्व भी है और मूर्त्तत्व भी है। ५ वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न वर्ण या जाति के पिता और माता से हुई हो। दोगला। ६ मल। विष्ठा (को०)। ७ काव्यशास्त्र के अनुसार एक वाक्य मे दो या अधिक अलकारो का मिश्रण (को०)। ८ ऐसी वस्तु जो किसी वस्तु से छू जाने पर दूषित हो जाय (को०)। ९ भिन्न जाति या वर्ण का मिश्रण। दो भिन्न वर्णों का एक मे (विवाहादि द्वारा) मिलना (को०)।

यौ०—वर्णसकर=दोगला।

**सकर**[2]—सज्ञा पुं० [स० शङ्कर, प्रा० सकर] दे० 'शकर'। शिव। उ०—करेहु सदा सकर पद पूजा। नारि धरम पतिदेव न दूजा।—मानस, १।१०२।

**सकर**(पु)[3]—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खल, प्रा० सकल] दे० 'सकल''। उ०—सकर सिंघ कि छुट्टि, छुट्टि इद्रह कि गरुअ गज।—पृ० रा०, ५।५६।

**सकरक**—वि० [स० सङ्करक] मिश्रण करनेवाला।

**संकरकारक**—वि० [स० सङ्करकारक] मिश्रण या घालमेल करनेवाला।

**सकरकारी**—वि० [स० सङ्करकारिन्] १ किसी अन्य वर्ण की स्त्री से अवैध सबध रखनेवाला। २ दे० 'सकरकारक' [को०]।

**सकरघरनी**(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कर+गृहणी] शकर की पत्नी, पार्वती।

**संकरज**—वि० [स० सङ्करज] जो दो विभिन्न वर्णों के सयोग से उत्पन्न हो। मिश्र जाति से उत्पन्न (को०)।

**संकरजात**—वि० [सं० सङ्करजात] दे० 'सकरज' [को०]।

**सकरजाति, सकरजातीय**—वि० [स० सङ्करजाति, सङ्करजातीय] दे० 'सकरज' [को०]।

**सकरता**—सज्ञा स्त्री० [सं० सङ्करता] १ सकर होने का भाव या धर्म। २ साकर्य। मिलावट। घालमेल।

**सकरपन**(पु)—सज्ञा पुं० [स० सङ्कर्षण] १ शेषनाग। सकर्षण। उ०—सकरपन फुकरै काल हुकरै उतल्लै।—हम्मीर०, पृ० १३। २ बलराम।

**सकरा** सज्ञा पु० [स० शङ्कर] एक राग। दे० 'शकरा'।

**सकराश्व**—सज्ञा पुं० [स० सङ्कराश्व] खच्चर।

**सकरित**—वि० [स० सङ्करित] जिसमे मिलावट हो। मिला हुआ।

**संकरिया**—सज्ञा पु० [स० सङ्कर+हिं० इया (प्रत्य०)] एक प्रकार का हाथी जो कमरिया और मिरगी के बीच की श्रेणी का होता है। इसका मूल्य कमरिया से कम होता है।

**सकरी**[1]—सज्ञा पु० [स० सङ्करिन्] १ वह जो भिन्न वर्ण या जाति के पिता और माता से उत्पन्न हो। सकर। दोगला। २ मिला हुआ। मिश्रित। ३ अवैध सबध रखनेवाला (को०)।

**सकरी**[2]—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्करी] दे० 'शकरी'।

**सकरीकरण**—सज्ञा पुं० [स० सङ्करीकरण] १. नौ प्रकार के पापो मे से एक प्रकार का पाप जो गधे, घोडे, ऊँट, मृग, हाथी, बकरी, भेड, मीन, साँप या भैंसे का वध करने से होता है। इसके प्रायश्चित्त के लिये कृच्छ्र या अतिकृच्छ्र व्रत करने का विधान है। २ दो पदार्थों को एक मे मिलाने की क्रिया। ३ वर्णसकरता करना। दो विभिन्न वर्ण या जातियो मे सबध करना।

**सकर्ष**—सज्ञा पु० [स० सङ्कर्ष] अपनी ओर खीचना। नजदीक लाना। समीप लाना [को०]।

**सकर्षण**—सज्ञा पुं० [स० सङ्कर्षण] १ खीचने की क्रिया। २ हल से जोतने की क्रिया। ३. कृष्ण के भाई बलराम का एक नाम। ४ एकादश रुद्रो मे से एक रुद्र का नाम। ५ वैष्णवो का एक सप्रदाय जिसके प्रवर्तक निबार्काचार्य थे। ६. आकर्षण (को०)। ७ छोटा करना (को०)। ८ शेषनाग (को०)। ९ गर्व घमड। अहकार। (को०)।

**सकर्षण विद्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की विद्या जिससे किसी स्त्री के गर्भ को दूसरी स्त्री मे स्थापित किया जाता था। (देवकी के सातवें गर्भ को इसी विद्या द्वारा रोहिणी मे स्थापित किया गया था। इसी से बलराम का एक नाम सकर्षण है)।

**सकर्षी**—वि० [स० सङ्कर्षिन्] १ खीच लेनेवाला। पास मे कर लेनेवाला। २ छोटा करनेवाला। सकुचित करने या सिकोड लेनेवाला [को०]।

**सकल**†[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खला, प्रा० सकल] १ दरवाजे मे लगाने की सिकडी या जजीर। २ पशुओ को बाँधने का सिकड। ३ सोने या चाँदी की जजीर जो गले मे पहनी जाती है। जजीर। ४ शृखला। बधन। उ०—सकल ही ते सब लहै माया इहि ससार। ते क्यूँ छूटै बापुडे बाँधे निरजनहार।—कबीर ग०, पृ० ३४।

**सकल**[2]—सज्ञा पुं० [स० सङ्कल] १ बहुत सी चीजो को एक स्थान पर एकत्र करना। सकलन। एकत्रीकरण। २ योग। मिलाना। ३ गणित की एक क्रिया जिसे जोड कहते हैं। योग। दे० 'सकलन'। ४. राशि। ढेर (को०)।

**सकलन**—सज्ञा पु० [स० सङ्कलन] [स्त्री० सकलना] [वि० सकलित] १ एकत्र करने की क्रिया। सग्रह करना। २ सग्रह। ढेर। ३ गणित की योग नाम की क्रिया। जोड। ४ अनेक ग्रथो से अच्छे अच्छे विषय चुनने की क्रिया। ५ वह ग्रथ जिसमे ऐसे चुने हुए विषय हो। ६. सपर्क। सबध। ७ योग (को०)। ८ टक्कर। धक्का। मुठभेड (को०)। ९ योजन। मिलाना। लपेटना (को०)।

**सकलना**—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्कलना] दे० 'सकलन' [को०]।

**सकलप**—सज्ञा पु० [स० सङ्कल्प] दे० 'सकल्प'। उ०—जाइ उपाय रचहु नृप एहू। सवत भरि सकलप करेहू।—मानस, १।१६८।

**सकलपना**(पु)†[1]—क्रि० स० [स० सङ्कल्प+हिं० ना (प्रत्य०) अथवा सकल्पना] १ किसी बात का दृढ निश्चय करना। उ०—जैसो पति तेरे लिये में सकलप्यो आप। तैसो तै पायो सुता अपने पुन्न प्रताप।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)। २. किसी धार्मिक कार्य के निमित्त कुछ दान देना। सकल्प करना।

**सकलपना**[2]—क्रि० अ० विचार करना। इच्छा करना। इरादा करना।

**सकला**[1]—सज्ञा पु० [सं० शाक्] शक द्वीप।

सकला[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला, प्रा० सकला] दे० 'सकल'। उ०—मनो सकला हेम ते सिघ छुट्ट।—पृ० रा०, २।५०३।

सकला[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कला] एकत्रीकरण। जोडना। मिलाना (को०)।

सकलित[१]—वि० [सं० सङ्कलित] १ चुना हुआ। संगृहीत। २ जोड लगाया हुआ। योजित। ३ इकट्ठा किया हुआ। एकत्र किया हुआ। ४. गृहीत। पुन प्राप्त किया या पकडा हुआ (को०)।

सकलित[२]—संज्ञा पु० जोड। योग (को०)।

संकलुष—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कलुष] कालुष्य। अशुद्धता (को०)।

सकल्प—संज्ञा पु० [सं० सङ्कल्प] १ कार्य करने की वह इच्छा जो मन मे उत्पन्न हो। विचार। इरादा। २ दान, पुण्य या और कोई देवकार्य आरभ करने से पहले एक निश्चित मत्र का उच्चारण करते हुए अपना दृढ निश्चय या विचार प्रकट करना। ३ वह मत्र जिसका उच्चारण करके इस प्रकार का निश्चय या विचार प्रकट किया जाता है।

विशेष—इस मत्र मे प्राय सवत्, मास, तिथि, वार, स्थान, दाता या कर्ता का नाम, उपलक्ष और दान या कृत्य आदि का उल्लेख होता है।

४ दृढ निश्चय। पक्का विचार। जैसे,—मैंने तो अब यह सकल्प कर लिया है कि कभी उसके साथ कोई व्यवहार न रखुँगा। ५ उद्देश्य। लक्ष्य (को०)। ६. विमर्श। ऊहा। कल्पना (को०)। ७. मन। हृदय (को०)। ८. पति के साथ सती होने की आकाक्षा (को०)।

यौ०—सकल्पज। सकल्पजन्मा। सकल्पजूति = सकल्प या कामना द्वारा प्रेरित। सकल्पप्रभव। सकल्पभव। सकल्पमूल = विचार या दृढ इच्छाशक्ति जिसके मूल मे हो। सकल्पयोनि। सकल्परूप = इच्छा के अनुरूप। सकल्पसपत्ति = कामना की पूर्ति। सकल्पसभव = (१) सकल्प या विचार से उत्पन्न। (२) कामदेव। सकल्पसिद्ध = विचार मात्र से पूर्ण होनेवाला। सकल्पसिद्धि = उद्देश्य की वह सिद्धि जो सकल्प द्वारा पूर्ण हो।

संकल्पक—वि० [सं० सङ्कल्पक] विचार करनेवाला। इच्छा करनेवाला। सकल्प करनेवाला (को०)।

संकल्पज[१]—वि० [सं० सङ्कल्पज] इच्छा, विचार या सकल्प से उत्पन्न होनेवाला (को०)।

सकल्पज[२]—संज्ञा पुं० १ इच्छा। काम। २ कामदेव (को०)।

सकल्पजन्मा—संज्ञा पु० [सं० सङ्कल्पजन्मन्] दे० 'सकल्पज'।

सकल्पन—संज्ञा पु० [सं० सङ्कल्पन] उद्देश्य। अभिलाषा। इच्छा (को०)।

सकल्पना[१]—क्रि० स०, क्रि० अ० [सं० सकल्प + हिं० ना (प्रत्य०)] दे० 'सकलपना'। उ०—सकल्पि सिय रामहि समर्पी सील सुख सोभामई।—तुलसी ग्र०, पृ० ५८।

सकल्पना[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कल्पना] १ सकल्प करने की क्रिया। २. वासना। इच्छा। अभिलाषा।

सकल्पनीय—वि० [सं०] १ कामना करने योग्य। जिसकी कामना या चाह की जाय। २. प्रतिज्ञा करने योग्य। जिसके लिये निश्चय किया जाय (को०)।

सकल्पप्रभव—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव (को०)।

सकल्पभव—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

संकल्पयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव। मदन। २. आकाक्षा। इच्छा। कामना (को०)।

सकल्पा—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कल्पा] दक्ष की एक कन्या जो धर्म की भार्या थी।

सकल्पात्मक—वि० [सं० सङ्कल्पात्मक] जिसमे सकल्प या दृढ इच्छाशक्ति निहित हो। जिसका निश्चय किया गया हो (को०)।

सकल्पित—वि० [सं० सङ्कल्पित] १ कल्पित। जिसकी कल्पना की गई हो। २ जिसका दृढ निश्चय किया गया हो। जिसके लिये प्रतिज्ञात हो। ३. इच्छित। विचारित। लक्षित (को०)।

सकष्ट—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कष्ट] दुख। कष्ट। दे० 'सकट'। उ०—भक्त सकष्ट अवलोकि पितुवाक्य कृत गमन किय गहन वैदेहिभर्ता।—तुलसी ग्र०, पृ० ४८८।

सकसुक—वि० [सं० सङ्कसुक] १. जो स्थिर न हो। चचल। २. सदिग्ध। सदेहास्पद। अनिश्चित। ३. बुरा। बदमाश। ४. कमजोर। बलहीन (को०)।

सका—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्का] दे० 'शका'। उ०—देखि प्रताप न कपि मन सका। जिमि अहिगन महँ गरुड असका।—मानस, ५।२०।

सकार[१]—संज्ञा पु० [सं०] १. कूडा करकट या धूल जो झाडू देने से उडे। २ आग के जलने का शब्द।

यौ०—सकारकूट = कूडे कचरे की राशि।

सकार[२]†—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्केत, या हिं० सनकार ?] इशारा। सकेत।

सकारना†—क्रि० स० [हिं० सकार + ना (प्रत्य०), या हिं० सनकारना] सकेत करना। इशारा करना।

सकारी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कारी] वह कन्या जिसका कौमार्य सद्य भग हुआ हो (को०)।

सकारी[२]—वि० [सं० सङ्कारिन्] १. सकीर्ण। मिश्रित। सकर। २ मिश्रित या सकर जाति से उत्पन्न (को०)।

सकाश[१]—अव्य० [सं० सङ्काश] १ समान। सदृश। मिलता जुलता। (समासात मे)। उ०—नुपारादि सकाश गौर गभीर।—मानस, ७।१०८। २ समीप मे। निकट या पास मे (को०)।

सकाश[२]—अव्य० समीप। निकट। पास।

सकाश[३]—संज्ञा पु० १. उपस्थिति। मौजूदगी। २ पडोस। प्रतिवेश। सकास (को०)।

सकाश[४]—संज्ञा पुं० [सं० सम् + काश् (= चमकना)] प्रकाश। चमक। दीप्ति।

सकास(५)—अव्य० [सं० सङ्काश] दे० 'सकाश'। उ०—(क) देव-रिक्ष मर्कट विकट सुभट उद्भट समर सँल सकास रिपु त्रासकारी। बद्ध पाथोधि सुर निकर माचन सकुल दलन दस-सीस भुज बीस मारी —तुलसी (शब्द०)। (ख) स्वन गैल सकास कोटि रवि तरुन तेज घन।—तुलसी (शब्द०)।

सकित(५)—वि० [सं० शङ्कित] दे० 'शकित'। उ —(क) साहिब महेस सदा सकित रमेस मोहि, महातप साहस विरंचि लोन्हे मोल है।—तुलसी ग्र०, पृ० १७६। (ख) तेवरी को देख उन्हें सकित सराहिए।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २०१।

सकिल—संज्ञा पु० [स० साङ्किल] लुकारी। जलती हुई लकड़ी या मशाल (को०)।

सकिस्त†—वि० [स० सङ्कृष्ट या सङ्कष्ट=सकट (=सकरा)] जो अधिक चौड़ा न हो। सँकरा। तग।

सकीरन‡—वि० [स० सङ्कीर्ण] दे० 'सकीर्ण'।

सकीर्ण'—वि० [स० सङ्कीर्ण] १ जो अधिक चौड़ा या विस्तृत न हो। सकुचित। तग। सँकरा। २ मिश्रित। मिला हुआ। ३ क्षुद्र। छोटा। ४ नीच। तुच्छ। ५ वर्णसकर। ६ बिखरा हुआ। छिटकाया हुआ (को०)। ७ मदमत्त (हाथी) (को०)। ८ अव्यवस्थित। क्रमहीन। अस्पष्ट (को०)।

यौ०—सकीर्णजाति = (१) वर्ण की सकरता से उत्पन्न व्यक्ति। (२) दोगली नस्ल का। जैसे, खच्चर। सकीर्णयुद्ध = वह युद्ध जिसमे अनेक प्रकार के अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग किया जाय। सकीर्णयोनि = दे० सकीर्णजाति।'

सकीर्ण'—संज्ञा पुं० १ वह राग या रागिनी जो दो अन्य रागों या रागिनियो को मिलाकर बने।

विशेष—इसके १६ भेद कहे गए हैं—चैत्र, मगलक, नगनिका, चर्च्चा, अतिनाठ, उन्नवी, दोहा, बहुला, गुरुबला, गीता, गोवि, हेम्ना, कोपी, कारिका, क्षिपदिका, और अधा।

२ सकट। विपत्ति। ३ अतर्जातीय सबध से उत्पन्न या सकर जाति का व्यक्ति (को०)। ४ मतवाला हाथी (को०)।

सकीर्ण'—संज्ञा पु० साहित्य मे एक प्रकार का गद्य जिसमे कुछ वृत्तिगधि और कुछ अवृत्तिगधि का मेल होता है।

सकीर्णता—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कीर्णता] १ सकीर्ण होने का भाव। २ तगी। सँकरापन। ३ नीचता। ४ क्षुद्रता। ओछापन।

सकीर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कीर्णा] पहेली का एक भेद (को०)।

सकीर्तन—संज्ञा पुं० [स० सङ्कीतन] [स्त्री० सकीर्तना] [वि० सकीर्तित] १ भली भाँति किसी की कीर्ति का वर्णन करना। प्रशसा करना। २ किसी देवता की सम्यक् रूप से की हुई वदना या भजन नाम आदि जपना। ३ किसी देवता की स्तुति। स्तवन (को०)।

सकीर्तित—वि० [स० सङ्कीर्तित] १ जिसका सकीर्तन किया गया हो। स्तुत। प्रशसित (को०)।

सकील—संज्ञा पुं० [स० सङ्कील] पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सकुचित—वि० [सं० सङ्कुचित] मुड़ा हुआ। वक्र। टेढ़ा (को०)।

सकु'—संज्ञा पु० [सं० सङ्कु] विवर। सूराख। छिद्र (को०)।

सकु(५)'—संज्ञा पु० [सं० शङ्कु] १ काई नोकदार वस्तु। २ भाला। बरछा।

सकुचन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कुचन] १ सकुचित होने की क्रिया। सिकुड़ना। २ बालकों का एक प्रकार का रोग जिसको गणना बालग्रह मे होती है। ३ लज्जित होने की क्रिया (को०)।

सकुचित—वि० [सं० सङ्कुचित] १ सकोचयुक्त। लज्जित। जैसे, सकुचित दृष्टि। २ सिकुड़ा हुआ। सिमटा हुआ। ३ तग। सँकरा। सकीर्ण। ४ उदार का उलटा। अनुदार। क्षुद्र। ५. मुँदा हुआ। बद (को०)। ६ नम्र। नत। झुका हुआ (को०)।

सकुट—संज्ञा पु० [सं० सङ्कट] दे० 'सकट'। उ०—(क) सकुट सगा नरक न नाँहु, तातो कबहूँ काल न खाइ। कपन तणै भै भ्रम भागै, सब विधि तेनी गया लगाइ।—दादू०, पृ० ६६२।

सकुटि'—संज्ञा पु० [सं० शाकट, हिं० शाकल, गाकट] मालभोग केला। उ०—स्वादै हि सकुटि पनसा खेजड़ी नर अधो है। मूरखि मूठी छाडि दे होड रसो निरबधो है।—दादू०, पृ० ५८६।

सकुपित—वि० [सं० सङ्कुपित] क्रुद्ध। नाराज। उत्तेजित (को०)।

सकुल'—वि० [सं० सङ्कुल] १ सकुचित। सकीर्ण। पना। २. भरा हुआ। परिपूर्ण। ३. अव्यवस्थित (को०)। ४ विकृत (को०)। ५ असगत (को०)। ६. उग्र। प्रबल। प्रचड (को०)। ७ घबड़ाया हुआ (को०)।

सकुल'—संज्ञा पु० १. युद्ध। समर। लड़ाई। २ समूह। झुड। ३. भीड़। ४. जनता। ५ परस्पर विरोधी वाक्य। ६ ऐसे वाक्य जिनमे परस्पर किसी प्रकार की सगति न हो। असगत वाक्य। ७ नाश (को०)।

सकुलता—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कुलता] १ सकुचित होने का भाव। परिपूर्णता। २ गड़बड़ी। असगति। अव्यवस्थिति। ३. घनता। घनापन। ४ जटिलता (को०)।

सकुलित—वि० [सं० सङ्कुलित] १. जो सकुल या पूर्ण हो। भरा हुआ। २ एकत्र। ३ घना। ४ अव्यवस्थित। घबराया हुआ (को०)। ५ बँधा हुआ। उ०—शिरसि सकुलित कलकूट पिगला जटा, पटल शत कोटि विद्युच्छटाभम्।—तुलसी ग्र०, पृ० ४६०।

सकुश—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कुश] एक प्रकार की मछली जिसे शकु भी कहते हैं।

सकूजित—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कूजित] १ चकवा पक्षी की आवाज। २. पक्षियो का कूजन (को०)।

सकृति'—वि० [स० सङ्कृति] १ इकट्ठा करनेवाला। २ ठीक करनेवाला। ३ तैयार करनेवाला (को०)।

सकृति'—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छद (को०)।

सकृति'—संज्ञा पुं० एक साम (को०)।

सकृत्त—वि० [सं०] टुकडे टुकडे काटा हुआ। काटकर टुकडे टुकडे किया हुआ (को०)।

**सकृष्ट**—वि० [स०] १. खीचकर पास लाया हुआ। खीचा हुआ। २ एक साथ किया हुआ (को०)।

**सकेत**—सज्ञा पु० [स०] १ अपना भाव प्रकट करने के लिये किया हुआ कायिक परिचालन या चेष्टा। इशारा। इगित। २ प्रेमी प्रेमिका के मिलने का पूर्वनिर्दिष्ट स्थान। वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलना निश्चित करे। सहेट। ३ कामशास्त्र सबधी इगित। शृगार चेष्टा। ४ प्रेमी और प्रेमिका द्वारा किया गया निश्चय (को०)। ५ परपरा। करार। ठहराव (को०)। ६ व्यवस्था। विधान। शर्त (को०)। ७ चिह्न। निशान। ८ पते की बाते। उ०—सरुप जानकी जानि कपि कहे सकल सकेत। दीन्हि मुदिका लीन्हि सिय प्रीति प्रतीति समेत।—तुलसी (शब्द०)। ९ न्याय, व्याकरण आदि मे एक वृत्ति। यह शब्द या पद इस प्रकार का अर्थबोधन करे यह सकेत या इच्छा (को०)।

यौ०—सकेतकेतन, सकेतगृह, सकेतनिकेत, सकेतनिकेतन, सकेतभूमि, सकेतस्थल, सकेतस्थान = प्रेमी प्रेमिका का मिलन स्थान। सहेट।

**सकेतक**—सज्ञा पु० [स०] १ निर्धारण। सहमति। निश्चय। २ सकेतस्थल। ३ मिलन का निश्चय करनेवाली नायिका या नायक (को०)।

**सकेतग्रह, सकेतग्रहण**—सज्ञा पुं० [स० सङ्केतग्रह, सङ्केतग्रहण] शब्दार्थ ग्रहण करने की क्रिया। शब्द की अर्थ बोध कराने की शक्ति का आधारभूत धर्म। सकेत या अभिप्राय का ग्रहण। उ०—शब्द की अर्थबोधन शक्ति, शब्द और अर्थ का सबध अथवा सकेतग्रहण भाषाज्ञान के लिये आवश्यक है।—भाषा शि०, पृ० १८।

विशेष—वक्ता द्वारा कहे गए शब्द सुनने पर श्रोता जिस क्रिया से वक्ता के शब्द का ठीक ठीक अभिप्राय आत्मगत करता है उसे सकेतग्रह या सकेतग्रहण कहते है।

**सकेतन**—सज्ञा पु० [स० सङ्केतन] १ आपसी निश्चय। २ सहेट। मिलने का स्थान (को०)।

**सकेतवाक्य**—सज्ञा पु० [स०] स्वपक्ष के व्यक्ति का परिचायक विशिष्ट शब्द (को०)।

**सकेतित**—वि० [स० सङ्केतित] १ निश्चित किया हुआ। ठहराया हुआ। २ आहूत। निमत्रित। ३ इशारा किया हुआ। इगित (को०)।

यौ०—सकेतितार्थ = वह अर्थ जो सकेतित या इगित हो।

**सकोच**—सज्ञा पु० [स० सङ्कोच] १ सिकुडने की क्रिया। खिचाव। तनाव। जैसे, अगसकोच, गात्रसकोच। २ लज्जा। शर्म। ३ भय। ४ आगा पीछा। पसोपेश। हिचकिचाहट। ५ कमी। ६ एक प्रकार की मछली। ७ केसर। कुमकुम। ८ एक अलकार जिसमे 'विकास अलकार' से विरुद्ध वर्णन होता है या किसी वस्तु का अतिशय सकोच वर्णन किया जाता है। ९ बहुत सी बातो को थोडे मे कहना। १० बद होना। मुँदना। जैसे, कमलसकोच, नेत्रसकोच (को०)। ११ शुष्क होना। सूखना। उ०—जलसकोच विकल भइ मीना।—मानस, ४। २०। १२ बधन। बद (को०)। झुकना। नम्र होना (को०)।

यौ०—सकोचकारी = (१) नम्र होनेवाला। (२) लज्जालु। शरमीला। सकोचपत्रक। सकोचपिशुन। सकोचरेखा = सिकुडन की रेखा। झुर्री।

**सकोचक**—वि० [स० सङ्कोचक] जो सकुचित करे। सकोचन करनेवाला (को०)।

**सकोचन**[1]—सज्ञा पु० [स० सङ्कोचन] १ सिकुडने की क्रिया। २ एक पर्वत का नाम (को०)।

**सकोचन**[2]—वि० १ लज्जा करनेवाला २ सिकुडनेवाला (को०)।

**सकोचनी**—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्कोचनी] लजालू नाम की लता।

**सकोचपत्रक**—सज्ञा पु० [स० सङ्कोचपत्रक] वृक्षो का एक प्रकार का रोग जिसमे उनके पत्तो के ऊपर कुछ दाने से निकल आते है और पत्ते सिकुड जाते है।

**सकोचपिशुन**—सज्ञा पु० [स० सङ्कोचपिशुन] कुकुम। केसर।

**सकोचित**[1]—वि० [स० सङ्कोचित] १ सकोचयुक्त। जिसमे सकोच हो। २ जो विकसित या प्रफुल्लित न हो। अप्रफुल्लित। ३ लज्जित। शर्मिंदा।

**सकोचित**[2]—सज्ञा पुं० तलवार के बत्तीस हाथो मे से एक हाथ। तलवार चलाने का एक ढग या प्रकार।

**सकोची**—सज्ञा पु० [स० सङ्कोचिन्] १ सकोच करनेवाला। २. सिकुडनेवाला। ३. जिसे सकोच या लज्जा हो। शर्म करनेवाला।

**सकोपना**Ⓤ—क्रि० अ० [स० सम्+कोप+हिं० ना० (प्रत्य०)] क्रोध करना। क्रुद्ध होना। गुस्सा करना।

**सक्रद**—सज्ञा पु० [स० सङ्क्रन्द] १ युद्ध। लडाई। २ कालाहल। शोरगुल। ३. रोना। आक्रदन। विलपना। ४ सोमरस को निकालने या निचोडने का साधन। अभिषवण (को०)।

**सक्रदन**—सज्ञा पुं० [स० सङ्क्रन्दन] १ शक्र। इद्र। सुरपति। उ०—सक्रदन कृपाल सुरत्राता। वज्री मुक्ति मुक्ति के दाता।—गिरिधर (शब्द०)। २ पुराणानुसार भौत्य मनु के पुत्र का नाम। ३ लडाई। युद्ध। सग्राम (को०)। ४. दे० 'क्रदन'।

यौ०—सक्रदननदन, सक्रदनपुत्र = (१) वालि नामक वानर। (२) अर्जुन। पार्थ।

**सक्रम**—सज्ञा पु० [स० सङ्क्रम] १ कष्ट या कठिनतापूर्वक बढने की क्रिया। सप्रवेश। २ पुल आदि बनाकर किसी स्थान मे प्रवेश करना। ३ पुल। सेतु। ४ प्राप्ति। ५ सक्रमण। सक्राति। ६ साथ गमन करना। साथ जाना (को०)। ७ गमन। गति (को०)। ८ भ्रमण। सचलन (को०)। ९ दुर्गम रास्ता। तग राह (को०)। १० उल्कापात। तारा टूटना (को०)। ११ विभिन्न राशियो मे आकाशीय पिंड वा ग्रहो के सचरण की कक्षा या मार्ग (को०)। १२ सोपान। सीढी (को०)। १३ किसी लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन या मार्ग (को०)।

**सक्रमण**—सज्ञा पुं० [स० सङ्क्रमण] १ गमन। चलना। २ अतिक्रमण। ३ सूर्य का एक राशि से निकलकर दूसरी राशि मे प्रवेश करना। ४ घूमना। फिरना। पर्यटन। ५ मिलन। सयोग (को०)। ६ एक अवस्था से दूसरी अवस्था मे प्रवेश। ७ सूर्य के उत्तरायण होने का दिन (को०)। ८ परलोक यात्रा। मृत्यु (को०)। ९ सगमन। सहमति (को०)। १० मार्ग (को०)। ११ हस्तातरण (को०)।

**सक्रमणिका**—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्क्रमणिका] दीर्घिका। गैलरी (को०)।

**सक्रमित**—वि० [स० सङ्क्रमित] १ परिवर्तित। २ प्रविष्ट (को०)।

**सक्रमिता**—वि० [स० सङ्क्रमितृ] १ सक्रमण करनेवाला। २ गमन करनेवाला। ३ प्रवेश करनेवाला (को०)।

**सक्रात**[1]—सज्ञा पु० [स० सङ्क्रान्त] १ दायभाग के अनुसार वह धन जो कई पीढियो से चला आया हो। २ सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि मे जाना। विशेष दे० 'सक्राति'। ३ वह सपत्ति जो पति द्वारा स्त्री को प्राप्त हो। पति से प्राप्त स्त्री की सपत्ति (को०)।

**सक्रात**[2]—वि० १ मिला हुआ। प्राप्त। २ बीता हुआ। गत। ३ प्रविष्ट (को०)। ४ स्थानातरित। न्यस्त (को०)। ५ ग्रस्त। गृहीत (को०)। ६ प्रतिफलित। प्रतिबिबित (को०)। ७ चित्रित (को०)। ८ सक्रातियुक्त (को०)।

**सक्राति**—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्क्रान्ति] १ एक राशि से दूसरी राशि मे गमन। २ सूर्य का एक राशि से दूसरी मे प्रवेश करने का समय।

विशेष—प्राय सूर्य एक राशि मे ३० दिन तक रहता है। और जब वह एक राशि से निकलकर दूसरी राशि मे जाता है, तब उसे सक्राति कहते है। वास्तव मे सक्राति काल वही होता है जब सूर्य दो राशियो की ठीक सीमा पर या बीच मे होता है। यह सक्राति काल बहुत थोडा होता है। पुराणानुसार यह काल बहुत पुनीत माना जाता है और इस समय लोग स्नान, दान, पूजन इत्यादि करते है। इस समय का किया हुआ शुभ कार्य बहुत पुण्यजनक माना जाता है।

३ वह दिन जिसमे सूर्य एक राशि से दूसरी राशि मे जाता है। ३, सगमन। मेल (को०)। ४ एक बिदु से दूसरे बिदु तक का मार्ग (को०)। ५ हस्तातरण (को०)। ६ प्रतिबिंब। ७ अकन। चित्रण (को०)। ८ विद्या दान की शक्ति (को०)।

**सक्रातिचक्र**—सज्ञा पु० [स० सङ्क्रान्तिचक्र] फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्यो के शुभ अशुभ जानने के हेतु बनाया हुआ मनुष्य के आकार का नक्षत्रो से अकित एक प्रकार का चक्र जिससे यह जाना जाता है कि मनुष्य के लिये किस सक्राति का फल शुभ और किसका अशुभ होगा।

**सक्राम**—सज्ञा पुं० [स० सङ्क्राम] कष्ट या कठिनाई से युक्त प्रगति। सप्रवेश। दे० 'सक्रम'।

**सक्रामक**—वि० [स० सङ्क्रामक] जो (रोग या दोष आदि) ससर्ग या छूत आदि के कारण एक से औरो मे फैलता हो। जैसे,—चेचक, प्लेग, महामारी, क्षयी आदि रोग सक्रामक होते है।

**सक्रामयितव्य**—वि० [स० सङ्क्रामयितव्य] सक्रामित कराने के योग्य (को०)।

**सक्रामित**—वि० [स० सङ्क्रामित] १ हस्तातरित। दिया हुआ। २ बतलाया हुआ (को०)।

**सक्रामी**—सज्ञा पु० [स० सङ्क्रामिन्] १ वह जो लोगो मे रोगो का सक्रमण कराता हो। रोग फैलानेवाला। २ वह जो सक्रमण करे या फैले। अन्य के पास जानेवाला (को०)।

**सक्रीड**—सज्ञा पुं० [स० सङ्क्रीड] १ परिहास। हँसी ठट्ठा। क्रीडा। विनोद। २ एक साम का नाम।

**सक्रीडन**—सज्ञा पु० [स० सक्रीडन] १ खेल क्रीडा। विनोद। २ बहुतो का एक साथ क्रीडा, हास परिहास आदि करना (को०)।

**सक्रीड़ित**[1]—सज्ञा पु० [स० सङ्क्रीडित] रथ चलने के समय होनेवाली आवाज (को०)।

**सक्रीडित**[2]—वि० क्रीडित। खेला हुआ (को०)।

**सक्रुद्ध**—वि० [स० सङ्क्रुद्ध] बहुत अधिक क्रुद्ध (को०)।

**सक्रोन**Ⓢ†—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्क्रमण] सक्रमण। सक्राति। विशेष दे० 'सक्राति'। उ०—तिय तिथि तरनि किसोर वय, पुन्य काल सम दोन। काहू पुन्यनि पाइयत, वँस सधि सक्रोन।—बिहारी (शब्द०)।

**सक्रोश**—सज्ञा पु० [स० सङ्क्रोश] १ जोर से शब्द करना। एक साथ चिल्लाना। २ एक साम का नाम। ३ क्रोध आदि के आवेश मे बोलना (को०)।

**सक्लिन्न**—वि० [स० सङ्क्लिन्न] गीला। तरबर। आर्द्र। (को०)।

**सक्लिष्ट**—वि० [स० सङ्क्लिष्ट] १ मर्दित। कुचला हुआ। २ दब्बेदार (जैसे—आईना)। ३ कठिनाइयो से भरा हुआ। जो क्लिष्ट हो (को०)।

यौ०—सक्लिष्टकर्मा = वह जो किसी काम को बडी कठिनाई से करता हो।

**सक्लेद**—सज्ञा पुं० [स० सङ्क्लेद] १ नमी। गीलापन। २ गर्भाशय से स्रवित होनेवाला वह द्रव पदार्थ जो गर्भाधान के बाद उत्पन्न होता है और जिससे भ्रूण को पोषण प्राप्त होता है (को०)।

**सक्लेश**—सज्ञा पु० [स० सङ्क्लेश] कष्ट। पीडा (को०)।

यौ०—सक्लेशनिर्वाण = कष्ट से मुक्ति। पीडा से छुटकारा।

**सक्लेशन**—सज्ञा पुं० [स० सङ्क्लेशन] क्लेश देना (को०)।

**सक्षय**—सज्ञा पुं० [स० सङ्क्षय] १ सम्यक् प्रकार से नाश। पूरी तरह बरबादी। २ विनाश। ध्वस। बरबादी। ३ प्रलय। ४ आश्रय। गृह। ५ हानि। क्षति (को०)। ६ समाप्ति। अत। लोप (को०)। ७ मृत्यु। मौत। ८ एक मरुत्वान् (को०)।

संक्षर—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गार] १ वह स्थान जहाँ दो नदियाँ आदि मिलती हों। संगम। २ साथ साथ बहना (को०)। ३ एक साम का नाम।

संक्षालन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्षालन] १ नहाने धोने के काम आनेवाला जल। २. प्रक्षालन। धोना (को०)।

संक्षालना—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्क्षालना] १ धोने की क्रिया। संक्षालन। २ मज्जन। स्नान (को०)।

संक्षिप्त—वि० [सं० संक्षिप्त, सङ्क्षिप्त] १ जो संक्षेप में कहा या लिखा गया हो। जो संक्षेप में किया गया हो। खुलासा। २ थोड़ा। अल्प। छोटा। ३ छोड़ा या फेंका हुआ। ४ पुंजीकृत। राशीकृत (को०)। ५. क्षीण किया हुआ। घटाया हुआ (को०)। ६ संयत। नियन्त्रित (को०)। ७ अधिगृहीत (को०)।

संक्षिप्तत्व—संज्ञा पुं० [सं० संक्षिप्तत्व] संक्षिप्त होने का भाव (को०)।

संक्षिप्तदैर्घ्य—वि० [सं० संक्षिप्त दैर्घ्य] जिसकी दीर्घता कम की गई हो। जो कम लंबा हो (को०)।

संक्षिप्तलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लेखनप्रणाली। संकेत लिपि।

विशेष—इसमें ध्वनियों के लिये ऐसे संक्षिप्त चिह्न या रेखाएँ नियत रहती हैं जिनके द्वारा लिखने से थोड़े काल और स्थान में बहुत सी बातें लिखी जा सकती हैं। व्याख्यान आदि के लिखने में यह अधिक सहायक होती है। व्यापारिक कार्यालयों में भी इसका प्रयोग होता है।

संक्षिप्ता—संज्ञा स्त्री० [सं० संक्षिप्ता] ज्योतिष में बुध ग्रह की सात प्रकार की गतियों में से एक प्रकार की गति।

विशेष—बुध जिस समय पुष्य, पुनर्वसु, पूर्व फल्गुनी और उत्तर फल्गुनी नक्षत्र में होता है, उस समय उनकी गति संक्षिप्ता होती है। यह गति २२ दिन तक रहती है।

संक्षिप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक में चार प्रकार की आरभटियों में से एक प्रकार की आरभटी, जहाँ क्रोध आदि उग्र भावों की निवृत्ति होती है (जैसे,—रामचन्द्रजी की बातों से परशुराम के क्रोध की निवृत्ति होना) वहाँ यह वृत्ति मानी जाती है। विशेष दे० 'आरभटी'। २ साथ साथ फेंकने की क्रिया (को०)। ३ संक्षेपीकरण। घटाना। ठोस या घना करना (को०)। ४. प्रेषण। भेजना (को०)। ५ ध्यान में रहना। किसी गुप्त स्थान में छिपना (को०)।

संक्षेप—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्षेप] १ थोड़े में कोई बात कहना। २ संकोचन। घटाना। कम करना। ३ समाहार। संग्रह। समास। ४ मुष्टक। ५ एक साथ फेंकना। ६ प्रेषण। भेजना (को०)। ७ संक्षिप्त करने का साधन (को०)। ८ अपहरण। ले जाना (को०)। ९ किसी दूसरे व्यक्ति के कार्य में सहायता पहुँचाना (को०)। १० संसार (को०)।

संक्षेपक—वि० [सं० सङ्क्षेपक] १. संक्षेप करनेवाला। २ फेंकनेवाला। ३ संक्षेप करानेवाला। छोटा रूप देनेवाला (को०)।

संक्षेपण—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्षेपण] १ कम करना। संक्षेप करना। २ काट छाँट करने की क्रिया। ३. संग्रह करना। ढेर करना। ढेर लगाना (को०)। ४ प्रेषण। भेजना (को०)।

संक्षेपणीय—वि० [सं० सङ्क्षेपणीय] १. फेंकने योग्य। २ संक्षेप करने योग्य (को०)।

संक्षेपत—अव्य० [सं० सङ्क्षेपतस्] संक्षेप में। थोड़े में। सारांशतः।

संक्षेपतया—अव्य० [सं० सङ्क्षेपतया] थोड़े में। संक्षेप में।

संक्षेपदोष—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्षेप दोष] साहित्य में एक प्रकार का दोष। जिस बात को जितने विस्तार से कहने या लिखने की आवश्यकता हो, उसे उतने विस्तार में न कह या लिखकर कम विस्तार में कहना या लिखना, जिससे प्रायः सुनने या पढ़नेवाले की समझ में उसका ठीक ठीक अभिप्राय न आवे।

संक्षोभ—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्षोभ] १ चंचलता। २ कंपन। काँपना। ३. विप्लव। ४ उलट पुलट। ५ गर्व। घमंड। अभिमान। शेखी।

संख—संज्ञा पुं० [सं० शङ्ख, प्रा० संख] दे० 'शंख'। उ०—झाँक्कि मृदंग संख सहनाई।—मानस, १।२६३।

संखड़ी†—संज्ञा पुं० [देशी] कलह। झगड़ा। संकट (को०)।

संखनारी—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खनारी] एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक पद में दो यगण (य, य) होते हैं। इसे सोमराजी वृत्त भी कहते हैं।

संखला(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला, प्रा० संखला संखला] दे० 'शृंखला'। उ०—आनँदघन कुलकानि संखला जरी तोरि महा मदमातौ।—घनानंद, पृ० ३६६।

संखहुली—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'संखपुष्पी'।

संखा—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कु] चक्की के ऊपरी पाट में लगी हुई लकड़ी की खूँटी जिसमें एक ओर छोटी लकड़ी जड़ी रहती है। हत्थेवट। हत्था।

संखार—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी जिसका रंग अबलक होता है और जिसकी चोंच चिपटी होती है।

संखाज†—संज्ञा पुं० [देशी] मृग की एक जाति। साँभर मृग (को०)।

संखिया—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गिका या शृङ्गिय] १ एक प्रकार की बहुत जहरीली प्रसिद्ध उपधातु या पत्थर।

विशेष—यह उपधातु कुमाऊँ, चित्राल, स्याल कोट (कश्मीर), उत्तरी बरमा और चीन आदि में पाई जाती है। प्रायः इसका रंग सफेद या मटमैला होता है और यह चिकना तथा चमकीला होता है। जिस समय यह खान से निकलता है, उस समय बहुत कड़ा होता है और कठिनता से गलता है। पाश्चात्य वैज्ञानिक संखिया और पैनसिन को भी इसी के अंतर्गत मानते हैं। भारतवासी प्रायः यही समझते हैं कि पत्थर पर बहुत जहरीले बिच्छू के डंक मारने से यह संखिया बनता है।

२ उक्त धातु का तैयार किया हुआ रूप जो देखने में सफेद होता है और विषाक्त भी।

विशेष—यह बाजारो मे सफेद, पीले, लाल, काले आदि कई रगो का मिलता है और प्राय ओषधो मे काम आता है। कुछ लोग कृत्रिम रूप से भी सखिया बनाते हैं। यह बहुत विकट विष होता है और प्राय हत्या आदि के लिये काम मे आता है। वैद्यक के अनुसार यह वीर्य तथा बलवर्धक, कान्ति जनक, लोहभेदक, दाहजनक, वमनकारक, रेचक, त्रिदोषघ्न तथा सब प्रकार के दोषो का नाश करनेवाला माना जाता है। वैद्यक के अतिरिक्त हिकमत और डाक्टरी मे भी इसका व्यवहार होता है और उनमे भी इसे बहुत बलवर्द्धक माना गया है।

पर्या०—आखुपाषाण। शखविष। शृगिक। गौरीपाषाण। मोमल। सवुल। ममुलजार।

**सखोली**ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सख+ओली (प्रत्य०)] छोटा शख। उ०—दीनी एक सखोली हाथ। पूजा की सामग्री साथ। —अर्घ०, पृ० २१।

**सख्य**¹—सज्ञा पु० [स० सङ्ख्य] युद्ध। समर। लडाई।

**सख्य**²—वि० दे० 'सख्येय'।को०]।

**सख्यक**—वि० [स० सङ्ख्यक] जिसमे सख्या हो। सख्यावाला (समासात मे प्रयुक्त) जैसे, बहुसख्यक।

**सख्यता**—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्ख्यता] सख्या का भाव या गुण। सख्यत्व।

**सख्यत्व**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सख्यता'।

**सख्या**—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्ख्या] १ वस्तुओ का वह परिमाण जो गिनकर जाना जाय। एक, दो, तीन, चार, आदि की गिनती। तादाद। शुमार। २ गणित मे वह अक जो किसी वस्तु का, गिनती मे, परिमाण बतलावे। अदद। ३ वैद्यक मे सप्राप्ति के पाँच भेदो मे से एक भेद। अन्य चार भेद विकल्प, प्राधान्य बल और काल है। ४ बुद्धि। ५ विचार। ६ रीति। पद्धति। ढग (को०)। ७ योग। जोड (को०)। ८ नाम। सज्ञा। मजा (को०)। ९ समाचार पत्रो पर दिया गया क्रमाक (को०)। १० किसी सामयिक पत्र आदि की विशिष्ट सख्यावाली प्रति (को०)। ११ रेखागणित मे कोणमान (को०)। १२ सग्राम। युद्ध (को०)।

यौ०—सख्यापद = अक। सख्यापरित्यक्त = असख्य। सख्यातीत। सख्यामगलार्थि = वरसगाँठ समारोह। सख्यालिपि। सख्यावाचक = (१) सख्यासूचक। सख्या बतानेवाला। (२) अक। सख्याविधान = गणना करना। सख्याशब्द = अक। सख्याविधान सख्यासमापन = शिव। सख्यासूचक = सख्यावाचक।

**सख्याक**—वि० [स० सङ्ख्याक] सख्यावाला। सख्यक। जैसे, शतसख्याक।

**सख्यात**¹—वि० [स० सङ्ख्यात] १ परिगणित। गिना हुआ। २ गिनती मिलाया हुआ। विचारित (को०)।

**सख्यात**²—सज्ञा पुं० १ सख्या। २ राशि। समूह [को०]।

**सख्याता**¹—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्ख्याता] एक प्रकार की पहेली [को०]।

**सख्याता**²—वि० [स० सङ्ख्यातृ] परीक्षक। जाच पडताल करनेवाला। गणक। जैसे, गो सख्याता [को०]।

**सख्यातिग**—वि० [सं० सङ्ख्यातिग] दे० 'सख्यातीत' [को०]।

**सख्यातीत**—वि० [स० सङ्ख्यातीत] जिसकी गिनती न की जा सके। जो गणना से परे हो। अनगिनत [को०]।

**सख्यान**—सज्ञा पु० [स० सङ्ख्यान] १, सख्या। गिनती। २. गिनने की क्रिया। शुमार। ३ ध्यान। ४ प्रकाश। ५ माप (को०)।

**सख्यालिपि**—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्ख्यालिपि] एक प्रकार की लेखन-प्रणाली जिसमे वर्णों के स्थान पर सख्यासूचक चिह्न या अक लिखे जाते है।

**सख्यावान्**¹—वि० [स० सङ्ख्यावत्] १ सख्यावाला। गिना हुआ। २ हेतु या तर्क से युक्त [को०]।

**सख्यावान्**²—सज्ञा पु० विद्वान् व्यक्ति [को०]।

**सख्येय**—वि० [स० सङ्ख्येय] १ जिसकी गणना की जा सके। गिना जाने के योग्य। गण्य। २ विचारणीय (को०)।

**सग**¹—सज्ञा पु० [स० सङ्ग] १ मिलने की क्रिया। मिलन। २ ससर्ग। सहवास। सोहबत। जैसे,—बुरे आदमियो के सग में अच्छे आदमी भी बिगड जाते हैं।

क्रि० प्र०—करना।—छोडना।—टूटना।—रखना।

मुहा०—सग सोना = सहवास करना। समागम करना। उ०—सग सोई तो फिर लाज क्या (कहा०)। (किसी के) सग = साथ होलेना। पीछे लगना। (किसी को) सग लगना लेना = अपने साथ लेना या ले चलना। जैसे,—जब चलने लगना, तब हमे भी सग ले लेना।

३ विषयो के प्रति होनेवाला अनुराग। विषयवासना। ४ वासना। आसक्ति। ५ वह स्थान जहाँ दो नदियाँ मिलती हो। नदियो का सगम। ६ मैत्री। सपर्क। साथ (को०)। ७ योग। सगम (को०)। ८ मुठभेड। लडाई (को०)। ९ बाधा (को०)।

यौ०—सगकर = आसक्त करनेवाला। सगत्याग = विराग। सगरहित, सगवर्जित = अनासक्त। आसक्तिरहित। सगविच्युति = विषयो से विराग।

**सग**²—क्रि० वि० साथ। हमराह। सहित। जैसे,—(क) उनके सग चार आदमी आए है। (ख) मरने पर क्या कोई हमारे सग जायगा? (ग) हम भी तुम्हारे सग चलेगे।

**सग**³—सज्ञा पु० [फा०] पत्थर। पाषाण। जैसे,—सगमूसा, सगमरमर, सग असवद।

यौ०—सग अदाज = (१) ढेला फेंकने का यत्र। गोफन। ढेलवास। (२) पत्थर फेकनेवाला व्यक्ति। (३) किले की दीवारो मे बने हुए छेद जिनसे शत्रु पर गोली तीर, पत्थर आदि फेकते है। सग आसिया = चक्की का पाट। सगखारा। सगबार = शुतुरमुर्ग। सगचीनी = एक तरह का पत्थर। सगजराहत। सगतराज = वह। बटखरा। सगदिल। सगपुश्त। सगफर्श = पत्थर का फर्श। सगबसरी। सगवार = पत्थर फेकनेवाला।

सगबारान = ढेलो की वर्षा। सग मरमर = दे० 'सगमर्मर'। सगमुरदार = मुरदासख। सगयशब। सगमार। सग सुर्ख = एक प्रकार का लाल रग का पत्थर। सग सुलेमानी।

सग[५]—वि० पत्थर की तरह कठोर। बहुत कडा।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग प्राय यौगिक शब्द बनाने मे उनके आरभ मे होता है। जैसे,—सगदिल = पाषाण हृदय। कठोर हृदय।

सग अंगूर—सज्ञा पु० [सग[२] हिं० अगूर] एक प्रकार की वनस्पति।

विशेष—यह हिमालय पर पाई जाती है और ओषधि के काम मे आती है। इसे अगूरशेफा, गिरी बूटी या पेवराज भी कहते हैं।

सग असवद—सज्ञा पुं० [फा० सग + अ० असवद] काले रंग का एक बहुत प्रसिद्ध पत्थर।

विशेष—यह काबा की दीवार मे लगा हुआ है और इसको हज करने के लिये जानेवाले मुसलमान बहुत पवित्र समझते तथा चूमते है। मुसलमानो का यह विश्वास है कि यह पत्थर स्वर्ग से लाया गया है, और इसे चूमने से पापो का नष्ट होना माना जाता है।

संगकूपी—सज्ञा स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की वनस्पति जो ओषधि के काम मे आती है।

सगखारा—सज्ञा पुं० [फा० सग + खार] एक प्रकार का पत्थर जो कुछ नीलापन लिए भूरे रग का और बहुत कडा होता है। चकमक पत्थर।

सगजराहत—सज्ञा पु० [फा० सग + अ० जराहत] एक प्रकार का सफेद चिकना पत्थर जो घाव भरने के लिये बहुत उपयोगी होता है।

विशेष—इसे पीसकर वारीक चूर्ण बनाते हैं जिसे 'गच' कहते हैं और जो साँचा बनाने के काम मे भी आता है। इसका गुण यह है कि पानी के साथ मिलने पर यह फूलता है और सूखने पर कडा हो जाता है। इसलिये इससे मूर्तियाँ आदि भी बनाते हैं। इसे कुलगार, कारमी, सफेद सुरमा या सिल खडी भी कहते हे।

सगट(पु)—सज्ञा पु० [स० सङ्कट] दे० 'सकट'। उ०—सगट तैं हरि लेह उबारी। निसदिन सिवरौं नॉव तुमारी।—रामानद०, पृ० २६।

सगठन—सज्ञा पु० [स० सघटन, सङ्घटन या सम् + हिं० गठना] १ बिखरी हुई शक्तियो, लोगो या अगो आदि को इस प्रकार मिलाकर एक करना कि उनमे नवीन जीवन या बल आ जाय। किसी विशिष्ट उद्देश्य या कार्यसिद्धि के लिये बिखरे हुए अवयवो को मिलाकर एक और व्यवस्थित करना। एक मे मिलाने और उपयोगी बनाने के लिये की हुई व्यवस्था।

विशेष—वास्तव मे यह शब्द शुद्ध सस्कृत नही है, गलत गढा हुआ है, पर आजकल यह बहुत प्रचलित हो रहा है। कुछ लोग इससे, सस्कृत व्याकरण के नियमो के अनुसार 'सगठित', 'सगठनात्मक' आदि शब्द भी बनाते है, जो अशुद्ध है। कुछ लोगो ने इसके स्थान पर 'सघटन' शब्द का व्यवहार करना आरभ किया है, जो शुद्ध सस्कृत है।

२ वह सस्था या सघ आदि जो इस प्रकार की व्यवस्था से तैयार हो।

सगठित—वि० [सघटित हिं० सगठन] जो भलीभाँति व्यवस्था करके एक मे मिलाया हुआ हो। जो व्यवस्थित रूप मे और काम करने के योग्य मिलाकर बनाया गया हो।

सगणक—सज्ञा पु० [स० स + गणक] उच्च कोटि की सूक्ष्मतम एव जटिलतम गणना करनेवाला आधुनिक यत्र विशेष। (अ० कप्यूटर)।

सगणिका—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्गणिका] अप्रतिरूप कथा। सुदर वार्ता।

सगत[१]—वि० [स० सङ्गत] १ मिला या जुडा हुआ। सयुक्त। २ एकत्र किया हुआ। एक मे मिलाया हुआ। ३ शादीशुदा। विवाहित। ४ मैथुन सबध मे ससक्त। सभोग मे लगा हुआ। ५ समुचित। युक्तियुक्त। उपयुक्त। ठीक। ६ कुचित। सिकुडा हुआ [को०]।

यौ०—सगतगात्र = सकुचित शरीरवाला।

संगत[२]—सज्ञा पुं० १ मिलन। २ साथ। साहचर्य। ३ मित्रता। दोस्ती। अतरगता। ४ सामजस्यपूर्ण या उपयुक्त वाणी। युक्तियुक्त टिप्पणी (को०)।

सगत[३]—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्गति] १ सग रहने या होने का भाव। साथ रहना। सोहबत। सगति। २ सग रहनेवाला। साथी। ३ वेश्याओ या भाँडो आदि के साथ रहकर सारगी, तबला, मँजीरा आदि बजाने का काम।

क्रि० प्र०—बजाना।—मे रहना।

मुहा०—सगत करना = गानेवाले के साथ साथ ठीक तरह से तबला, सारगी, सितार आदि का बजाना।

४ वह जो इस प्रकार किसी गाने या नाचनेवाले के साथ रहकर साज बजाता हो। ५ वह मठ जहाँ उदासी या निर्मले आदि साधु रहते हे। ६ सबध। ससर्ग। ७ प्रसग। मैथुन। ८ दे० 'सगति'।

सगतसधि—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्गतसन्धि] १ कामदक नीति के अनुसार अच्छे के साथ सधि जो अच्छे और बुरे दिनो मे एक सी बनी रहती है। काचन सधि। २ मित्रता के अनतर होनेवाली सधि या सुलह (को०)।

संगतरा—सज्ञा पुं० [पुर्त्त० > फा०] एक प्रकार की बडी और मीठी नारगी। सतरा।

संगतराश—सज्ञा पुं० [फा०] पत्थर काटने या गढनेवाला मजदूर। पत्थरकट। २ एक औजार जो पत्थर काटने के काम मे आता है।

संगतार्थ[१]—वि० [सं०] ठीक ठीक अर्थ देनेवाला। उपयुक्त अर्थ का बोधक [को०]।

सगतार्थ[२]—सज्ञा पुं० वह अर्थ जो ठीक या सगत हो [को०]।

सगति—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गति] १ मिलने की क्रिया। मेल। मिलाप। २ साथ। सोहबत। संगत। ३ प्रसंग। मैथुन। ४ परिचय। ताल्लुक। ५ ज्ञान। ६ किसी विषय का ज्ञान प्राप्त करने के लिये बार बार प्रश्न करने की क्रिया। ७ युक्ति। ८ पहले लिखी या कही हुई बात के साथ बाद में लिखी या कही हुई बात का मेल। आगे पीछे कहे जानेवाले वाक्यों आदि का मिलान।

क्रि० प्र०—बैठना।—मिलना।—लगना।—लगाना।

९ दे० 'संगत'। १० योग्यता। उपयुक्तता (को०)। ११ दैवयोग। संयोग (को०)। १२ संघ (को०)। १३ अधिकरण के पाँच अवयवों में से एक (को०)।

सगतिया—संज्ञा पु० [हिं० सगत+इया (प्रत्य०)] १ वह जो किसी गाने या नाचनेवाले के साथ रहकर सारंगी, तबला या और साज बजाता हो। मार्जिदा। २ दे० 'सगाती'।

सगती—संज्ञा पुं० [हिं० सगत+ई (प्रत्य०)] १ वह जो साथ में रहता हो। संग रहनेवाला। २ दे० 'सगतिया'।

सगय—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गय] संग्राम। युद्ध।

सगया—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गया] नदियों का संगम (को०)।

सगदिल—वि० [फा०] जिसका हृदय पत्थर की तरह कठोर हो। कठोर-हृदय। निर्दय। दयाहीन।

सगदिली—संज्ञा स्त्री० [फा०] सगदिल होने का भाव। कठोर हृदयता। निर्दयता।

सगपुश्त—संज्ञा पु० [फा०] पत्थर की तरह कड़ी पीठवाला, कच्छप। कछुआ। कमठ।

सगबसरी—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की मिट्टी जिसमें लोहे का अंश अधिक होता है और जो इसी कारण दवा के काम में आती है। यह फारस में होती है और वहीं से आती है।

संगम—संज्ञा पु० [सं० सङ्गम] १ दो वस्तुओं के मिलने की क्रिया। मिलाप। संमेलन। संयोग। समागम। मेल। उ०—आपुहिं ते उठि धौ चलैं तिय पिय के संकेत। निसिदिन तिमिर प्रकास कहुँ गनैं न संगम हेत।—देव (शब्द०)। २ दो नदियों के मिलने का स्थान। जैसे,—गंगा यमुना का संगम प्रयाग में होता है। उ०—ज्योति जगै यमुना सी लगै जग लाल विलोचन पाप निसाहे। दूर सुना शुभ संगम तुंग तरंग तरंगिणि गंग सी माहे।—केशव (शब्द०)। ३ साथ। संग। सोहबत। उ०—बड़भागिन सो कहौ विहंगम। कत लुभाय रह जेहि संगम।—जायसी (शब्द०)। ४ स्त्री और पुरुष का संयोग। मैथुन। प्रसंग।

यौ०—संगम कालिक=संयोग काल की घबराहट।

५ ज्योतिष में ग्रहों का योग। कई ग्रहों आदि का एक स्थान पर मिलना या एकत्र होना। ६ उपयुक्त होने का भाव (को०)। ७ लड़ाई। समर (को०)। ८ संपर्क। स्पर्श (को०)।

संगमक—वि० [सं० सङ्गमक] मागदर्शक (को०)।

संगमन—संज्ञा पु० [सं० सङ्गमन] १ संयोग। मेल। संगम। २ यमराज का एक नाम (को०)।

संगमर—संज्ञा पु० [देश०] वैश्यों की एक जाति।

संगमर्मर—संज्ञा पुं० [फा० संग+अ० मर्मर] एक प्रकार का बहुत चिकना, मुलायम और सफेद प्रसिद्ध पत्थर जो बहुत कीमती होता है।

विशेष—यह पत्थर मूर्ति, मंदिर तथा महल इत्यादि बनाने में काम आता है। आगरे का ताजमहल इसी पत्थर का बना है। भारत में यह जयपुर में अधिक पाया जाता है। इसके अतिरिक्त अजमेर, किशनगढ़ और जोधपुर में भी इसकी कुछ खानें हैं।

संगमित—वि० [सं० सङ्गमित] मिलाया हुआ। संयुक्त या इकट्ठा किया हुआ (को०)।

संगमूसा—संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का काला, चिकना, कीमती पत्थर जो मूर्ति आदि बनाने के काम आता है।

संगयशब—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का कीमती पत्थर जिसका रंग कुछ हरापन लिए हुए होता है। इसे घो या घिसकर पीने से दिल का धड़कना कम हो जाता है। इसकी तावीज भी लोग पहनते हैं। हौल दिली।

संगर'—संज्ञा पु० [सं० सङ्गर] १ युद्ध। समर। संग्राम। २ आपद्। विपत्ति। ३ अंगीकार। स्वीकार। ४ प्रतिज्ञा। ५ प्रश्न। सवाल। ६ नियम। ७ विष। जहर। ८ शमी वृक्ष का फल। ९ निगल जाना (को०)। १० ज्ञान (को०)।

यौ०—संगरक्षम=युद्ध योग्य। युद्ध करने में समर्थ या शक्त। संगरभूमि=लड़ाई का मैदान। युद्धभूमि। संगरस्थ=युद्धभूमि में स्थित। युद्धलिप्त।

संगर'—संज्ञा पु० [फा०] १ वह धुस या दीवार जो ऐसे स्थान में बनाई जाती है, जहाँ सेना ठहरती है। रक्षा करने के लिये सेना के चारों ओर बनाई हुई खाई, धुस या दीवार। २ मोरचा।

संगरण—संज्ञा पु० [सं० सङ्गरण] किसी के पीछे चलना। पीछा करना।

संगराम ⓢ—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्राम] दे० 'संग्राम'।

संगरासिख—संज्ञा पु० [हिं० या फा० हिं० का मिश्रण] ताँबे की मैल जो खिजाब बनाने के काम में आती है।

संगरेजा—संज्ञा पु० [फा०] पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े। ककड़। बजरी।

संगल—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का रेशम जो अमृतसर से आता है।

विशेष—यह दो तरह का होता है—बरदवानी और बंशीरी। यह बारीक और मजबूत होता है, इसलिये गोटा, किनारी आदि बनाने के काम में बहुत आता है।

संगव—संज्ञा पु० [सं० सङ्गव] वह समय जब चरवाहा बछड़ों को दूध पिलाकर और गौओं को दुहकर चराने के लिये ले जाता है। प्रातःकाल के बाद तीन मुहूर्त का समय।

**सगविनी**—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्गविनी] वह बाडा या खरका जहाँ गाएँ दुहने के लिये एकत्र की जाती है (को०)।

**संगसार**[1]—सज्ञा पुं० [फा०] प्राचीन काल का एक प्रकार का प्राणदड।

विशेष—यह दडविधान प्राय अरब, फारस आदि देशों में प्रचलित था। इस दड में अपराधी भूमि में आधा गाड दिया जाता था और लोग पत्थर मार मारकर उसकी हत्या कर डालते थे।

**सगसार**[2]—वि० नष्ट। चौपट। ध्वस्त।

**सगसाल**—सज्ञा पुं० [फा०] अफगानिस्तान की उत्तरी सीमा पर एक पहाडी में कटी हुई पत्थर की बहुत बडी मूर्ति का नाम।

विशेष—अफगानिस्तान की उत्तरीय सीमा पर तुर्किस्तान के मार्ग में समुद्र से आठ हजार फुट की ऊचाई पर हिंदुकुश की घाटी में बहुत सी पुरानी इमारतों के चिह्न हैं। वहीं पहाड में बनी हुई दो बडी मूर्त्तियाँ भी हैं जिनमें से एक १८० और दूसरी ११७ फुट ऊँची है। वहाँवाले इन्हें सगसाल और शाहयम्मा कहते हैं।

**सगसी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सँडसी] दे० 'सँडसी'।

**सगसुरमा**—सज्ञा पुं० [फा०] काले रंग की वह उपधातु जिसे पीसकर आँखों में लगाने का सुरमा बनाया जाता है। विशेष दे० 'सुरमा'।

**संग सुलेमानी**—सज्ञा पुं० [फा० सग+अ० सुलेमानी] एक प्रकार के रंगीन पत्थर के नग जिनकी मालाएँ आदि बनाकर मुसलमान फकीर पहना करते हैं।

**सगाती**—सज्ञा पुं० [हिं० सग+आती (प्रत्य०)] १ वह जो सग रहता हो। साथी। सगी। २ दोस्त। मित्र।

**सगाम**—सज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्राम] दे० 'सग्राम'। उ०—राउत्ता पुत्ता चलए बहुत्ता अतरे पटरे सोहता। सगाम सुहव्वा जनि गधव्वा रूवें परमत मोहता।—कीर्ति०, पृ० ४८।

**सगायन**—सज्ञा पुं० [सं० सङ्गायन] बहुतों का एक साथ गाना या स्तवन करना।

**सगाव**—सज्ञा पुं० [स० सङ्गाव] वार्तालाप। बातचीत (को०)।

**सगिनी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सगी का स्त्री० रूप] १ साथ रहनेवाली स्त्री। सहचरी। २ पत्नी। भार्या। जोरू।

**सगी**[1]—सज्ञा पुं० [स० सङ्गिन्, हिं० सग+ई (प्रत्य०)] १ वह जो सदा सग रहता हो। साथी। २ मित्र। बधु।

**सगी**[2]—वि० १ सयुक्त। मिला हुआ। २ अनुरक्त। आसक्त। ३ कामुक। ४ अविच्छिन्न। सतत। ५ चाहा करनेवाला। स्पृही (को०)।

**सगी**[3]—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कपडा जो विवाह आदि में वर का पाजामा तथा स्त्रियों के लहँगे इत्यादि के बनाने के काम में आता है।

**संगी**[4]—वि० [फा० सग (=पत्थर)] पत्थर का। सगीन। जैसे,—सगी मकान।

**सगीत**[1]—सज्ञा पु० [सं० सङ्गीत] १ नृत्य, गीत और वाद्य का समाहार। वह कार्य जिसमें नाचना, गाना और बजाना तीनों हो।

विशेष—सगीत का मुख्य उद्देश्य मनोरजन है, और भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न प्रकार से मनोरजन के लिये गाना बजाना हुआ करता है। सभवत भारतवर्ष में ही सबसे पहले सगीत की ओर लोगों का ध्यान गया था। वैदिक काल में ही यहाँ के लोग मत्रों का गान करते और उसके साथ साथ हस्तक्षेप आदि करते और बाजा बजाते थे। धीरे धीरे इस कला ने इतनी उन्नति की कि 'सामवेद' की रचना हुई। इस प्रकार मानो सामवेद भारतीय सगीत का सबसे प्राचीन और पूर्व-रूप है। पीछे सगीत का बडा प्रचार हुआ। सुर, नर सभी इससे प्रेम करने लगे। रामायण और महाभारत के समय में इस देश में इसका बडा आदर था। नाचने, गाने और बजाने का अभ्यास सभी सभ्य लोग करते थे। सगीत शास्त्र के प्रथम आचार्य 'भरत' माने जाते हैं। इनके पश्चात् कश्यप, मतग, पार्ष्टि, नारद, हनुमत् आदि ने सगीत शास्त्र की आलोचना की। कहते हैं कि प्राचीन यूनान, अरब और फारसवालों ने भारतवासियों से ही सगीत शास्त्र की शिक्षा ग्रहण की थी।

कुछ लोगों का मत है कि स्वर, ताल, नृत्य, भाव, लोक और हस्त इन सातों के समाहार को सगीत कहते हैं, पर अधिकाश लोग गान, वाद्य और नृत्य को ही सगीत मानते हैं, और यदि वास्तविक दृष्टि से देखा जाय तो शेष चारों का भी समावेश इन्हीं तीनों में हो जाता है। इनमें से गीत और वाद्य को 'श्राव्य सगीत' तथा नृत्य को सगीत कहते हैं। सगीत के और भी दो भेद किए गए हैं—मार्ग और देशी। कहते हैं कि किसी समय महादेव के सामने भरत ने अपनी सगीतविद्या का परिचय दिया था। उस सगीत के पथप्रदर्शक ब्रह्मा थे और वह सगीत मुक्तिदाता था। वही सगीत 'मार्ग' कहलाता था। इसके अतिरिक्त भिन्न भिन्न देशों में लोग अपने अपने ढग पर जो गाते बजाते और नाचते हैं, उसे देशी कहते हैं। कुछ लोग केवल गाने और बजाने को ही और कुछ लोग केवल गाने को ही, भ्रम से, सगीत कहते हैं।

२ सामूहिक गान। सहगान। एक साथ मिलकर गाया हुआ गान (को०)। ३ कई वाद्यों वा एक स्वर ताल में बजना।

**संगीत**[2]—वि० जो साथ मिलकर गाया गया हो (को०)।

**सगीतक**—सज्ञा पुं० [सं० सङ्गीतक] १. विभिन्न स्वरों या वाद्यों का पारस्परिक मेल। २ गीत, नृत्य और वाद्य द्वारा सामूहिक मनोरजन (को०)।

**सगीतज्ञ**—सज्ञा पु० [सं० सङ्गीतज्ञ] वह जो सगीतविद्या का ज्ञाता हो।

**सगीतविद्या** सज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गीत+विद्या] दे० 'सगीत शास्त्र'। विशेष दे० 'सगीत'[१]।

**सगीतवेश्म**—सज्ञा पुं० [सं० सङ्गीतवेश्मन्] दे० 'सगीतशाला' [को०]।

**सगीतशाला**—सज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गीतशाला] वह भवन जहाँ सगीत होता हो [को०]।

**सगीतशास्त्र**—सज्ञा पुं० [स०] वह शास्त्र जिसमे गाने, बजाने, नाचने और हाव भाव आदि दिखलाने की कला का विवेचन हो।

**सगीति**—सज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गीति] १ वार्तालाप। बातचीत। २ दे० 'सगीत'। ३ बौद्धो की धर्मसभा (को०)। ४ आर्या गीति का एक भेद (को०)।

**सगीन**[१]—सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का अस्त्र जो लोहे का बना हुआ तिफला और नुकीला होता है। यह बदूक के सिरे पर लगाया जाता है। इससे शत्रु को भोककर मारते है।

**सगीन**[२]—वि० १ पत्थर का बना हुआ। जैसे,—सगीन इमारत। २ गफ। मोटा। जैसे,—सगीन कपडा। ३ टिकऊ। पायदार। मजबूत। जैसे,—कलावत्तू का काम सगीन होता है। ४ विकट। असाधारण। जैसे,—सगीन जुर्म। सगीन मामला। ५ पेचीदा। ६ कठोर। जैसे,—सगीन दिल।

यौ०—सगीन जुर्म = विकट अपराध। असाधारण अपराध। सगीनदिल = कठोर हृदयवाला। बेरहम। सगीनदिली = बेरहमी।

**सगीनी**—सज्ञा स्त्री० [फा० सगीन] १ असाधारणता। २. कठोरता। कडापन। मजबूती।

**सगीर्ण**—वि० [स० सङ्गीर्ण] १ समर्थित। स्वीकृत। २. जिसका वादा किया हुआ हो। प्रतिज्ञात [को०]।

**सगुप्त**[१]—सज्ञा पुं० [स० सङ्गुप्त] एक बुद्ध का नाम।

**सगुप्त**[२]—वि० १ जो छिपाकर रखा गया हो। छिपाया हुआ। २ भलीभाँति सवर्धित या सुरक्षित [को०]।

**संगुप्ति**—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्गुप्ति] १ गोपनता। छिपाव। दुराव। २ त्राण। रक्षण। सुरक्षा [को०]।

**सगूढ**[१]—सज्ञा पुं० [स० सङ्गूढ] १ रेखा या लकीर आदि खीचकर निशान की हुई राशि या ढेर।

विशेष—प्राय लोग अन्न या और किसी प्रकार की राशि लगाकर उसे रेखाओ से घेर या अकित कर देते हैं, जिसमे यदि कोई उस राशि मे से कुछ चुरावे, तो पता लग जाय। इसी प्रकार अकित की हुई राशि को सगूढ कहते है।

**सगूढ**[२]—वि० १ पूर्णत गुप्त या छिपाया हुआ। २ सकुचित। सक्षिप्त। ३. मिला हुआ। सयुक्त। ४ एकत्रित। राशीकृत [को०]।

**सगृभित**—वि० [स० सङ्गृभित] एकाग्र किया हुआ। समाहित किया हुआ [को०]।

**सगृहीत**—वि० [स० सङ्गृहीत] सग्रह किया हुआ। एकत्र किया हुआ। जमा किया हुआ। सकलित। २ ग्रस्त। जकडा हुआ (को०)। ३ निग्रहीत या सयत किया हुआ। शासित (को०)। ४ आगत। प्राप्त। स्वीकृत (को०)। ५ सकोचित या सक्षिप्त किया हुआ (को०)।

यौ०—सगृहीतराष्ट्र = जिसने राज्यशासन सुव्यवस्थित कर लिया हो। सुशासित राज्यवाला (राजा)।

**सगृहीता**—सज्ञा पुं० [स० सङ्गृहीतृ] वह जो सग्रह करता हो। एकत्र करनेवाला। जमा करनेवाला।

**सगृहीति**—सज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गृहीति] नियत्रण। वशीभूत करना। निगृहीत करना [को०]।

**सगृहीतृ**—वि० [स० सङ्गृहीतृ] १ जो पकड या काबू मे रखे अथवा शासित करे। २ अश्वशिक्षक। सारथी [को०]।

**सगोतरा**—सज्ञा पु० [हिं० सगतरा] एक प्रकार की नारगी। सगतरा। सतरा।

**सगोपन**[१]—सज्ञा पुं० [स० सङ्गोपन] छिपाने की क्रिया। पोशीदा रखना। छिपाना।

**सगोपन**[२]—वि० गुप्त रखने या छिपानेवाला [को०]।

**संगोपनीय**—वि० [स० सङ्गोपनीय] छिपाने के योग्य। पोशीदा रखने के लायक।

**सग्रथन**—सज्ञा पुं० [स० सङ्ग्रन्थन] एक साथ बाँधना या एक मे बाँधना।

**सग्रथन**—सज्ञा पुं० [स० सङ्ग्रथन] १ एकत्र बाँधना। २ व्यवस्थित करना या मरम्मत करना [को०]।

**सग्रथित**—वि० [सं० सङ्ग्रथित] एक साथ नत्थी किया हुआ, पिरोया हुआ या बँधा हुआ [को०]।

**सग्रसन**—सज्ञा पुं० [स० सङ्ग्रसन] १ बहुत अधिक भोजन करना। २ दबोच लेना। दबा देना (को०)।

**सग्रह**—सज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रह] १ एकत्र करने की क्रिया। जमा करना। सकलन। सचय। २ वह ग्रथ जिसमे अनेक विषयो की बाते एकत्र की गई हो। ३ भोजन, पान, औषध इत्यादि खाने की क्रिया। ४ मत्र बल से अपने फेके हुए अस्त्र को अपने पास लौटाने की क्रिया। ५ सोम याग। ६ सूची। फेहरिस्त। ७ निग्रह। सयम। ८ रक्षा। हिफाजत। ९ कब्ज। कोष्ठबद्धता। १० शिव का एक नाम। ११ पाणिग्रहण। विवाह। १२ जमघट। जमाव। १३ सभा। गोष्ठी। १४ मैथुन। स्त्री प्रसग। १५ ग्रहण करने की क्रिया। १६ स्वीकार। मजूरी। उ०—तेहि ते कछु गुन दोष बखाने। सग्रह त्याग न बिनु पहिचाने। —मानस, १। १७ चगुल। पकड (को०)। १८ जोड। राशि। समष्टि (को०)। १९ भडारगृह (को०)। २० बडप्पन (को०)। २१ वेग (को०)। २२ हवाला। उल्लेख (को०)। २३ प्रयत्न। चेष्टा (को०)। २४ सयोजन (को०)। २६ वह जो सरक्षक हो (को०)। २७ कल्याण। मगल (को०)।

यौ०—सग्रहकार = सग्रह करनेवाला। सग्रहग्रहणी। सग्रह-वस्तु = सग्रह के योग्य वस्तु। सग्रह श्लोक = पूर्वकथित प्रसग को सक्षिप्त रूप मे बतानेवाला श्लोक।

**सग्रहग्रहणी**—सज्ञा स्त्री० [सं० सङ्ग्रहग्रहणी] दे० 'सग्रहणी'।

**सग्रहण**—सज्ञा पुं० [स० सङ्ग्रहण] १ स्त्री को हर ले जाने की क्रिया। २ ग्रहण। ३ प्राप्ति। ४ नगो को जडने की क्रिया। ५ मैथुन। सहवास। ६ व्यभिचार। ७ स्त्री के स्तन, कपोल, केश, जघा आदि वर्ज्य स्थानो का स्पर्श।

विशेष—स्मृतियो मे इस अपराध के लिये कठोर दड लिखा गया है।

८. सहारा देना। प्रोत्साहन। बढावा (को०)। ९ सकलन। सचय करना (को०)। १०. नियत्रण। वशीभूत या अपनी ओर करना (को०)। ११ आज्ञा करना (को०)। १२ उल्लेख करना (को०)। १२ मिलावट। मिश्रण (को०)।

**संग्रहणी**—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्ग्रहणी] १ एक प्रकार का रोग जिसमे भोजन किया हुआ पदार्थ पचता नही, बराबर पाखाने के रास्ते निकल जाता है। ग्रहणी।

विशेष—इसमे पेट मे पीडा होती है और दस्त दुर्गंधयुक्त, कभी पतला कभी गाढा होता है। शरीर दुर्बल और निस्तेज हो जाता है। यह रोग चार प्रकार का होता है—वातज, कफज, पित्तज और सन्निपातज। रात की अपेक्षा दिन के समय यह रोग अधिक कष्ट देता है। यह रोग प्राय अधिक दिनो तक रहता और कठिनता से अच्छा होता है।

**सग्रहणीय**—वि० [सं० सङ्ग्रहणीय] १ सग्रह योग्य। २ ग्रहण करने या लेने योग्य। ३ सेवन करने योग्य (रोग शाति के लिये दवा आदि)। ४ नियत्रणीय (को०)।

**सग्रहना**Ⓤ—क्रि० स० [सं० सङ्ग्रहण] १ सग्रह करना। सचय करना। जमा करना। उ०—सग्रहै सनेह बस अधम असाध को। गिद्ध सेवरी को कहो करिहै सराध को।—तुलसी (शब्द०)। २ ग्रहण करना। पकडना। उ०—बायौ सु धरह विन सोसधार। सग्रह्यौ बाँह बामे कटार।—पृ०, रा०, ६१।१२८७।

**सग्रहालय**—सज्ञा पुं० [स० सङ्ग्रहालय] वह स्थान जहाँ विशिष्ट प्रकार की अलभ्य प्राचीन वस्तुओ का सग्रह किया जाय। अजायबघर।

**सग्रही**—सज्ञा पुं० [स० सङ्ग्रहिन्] १ सग्रह करनेवाला। जो एकत्र या जमा करता हो। उ०—नहिं जाचक नहि सग्रही सीम नाइ नहिं लेइ। ऐसे मानी माँगनेहिं को वारिद बिनु देइ।—तुलसी ग्र०, पृ० १२७। २ महसूल या लगान आदि उगाहनेवाला कर्मचारी। कर एकत्र करनेवाला।

**सग्रहीता**—सज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रहीतृ] १ वह जो सग्रह करता हो। जमा करनेवाला। एकत्र करनेवाला। २ स्वीकार या ग्रहण करनेवाला (को०)। ३ घोडे आदि का नियमन करनेवाला। सारथी (को०)।

**संग्राम**—सज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्राम] युद्ध। लडाई। समर।

यौ०—सग्राम अगन(पु) = दे० 'सग्रामागण'। उ०—सग्राम अगन राम अग अनग बहु सोभा नही।—मानस, ६।१०२। सग्रामकर्म = लडाई। सग्रामतुला = युद्ध की कसौटी (हार जीत के रूप मे)। सग्रामतूर्य = लडाई या युद्ध का बिगुल। रणतूर्य। सग्रामपटह। सग्राममूर्धा = युद्धभूमि मे अगला मोर्चा। सग्राममृत्यु = युद्धभूमि मे मरना। वीरगति।

**सग्रामजित्**[1]—सज्ञा पुं० [स० सङ्ग्रामजित्] सुभद्रा के उदर से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

**सग्रामजित्**[2]—वि० युद्ध मे विजयी (को०)।

**सग्रामपटह**—सज्ञा पुं० [स० सङ्ग्रामपटह] रण मे बजनेवाला एक प्रकार का बाजा। रणभेरी। रण डिमडिम।

**सग्रामभूमि**—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्ग्राम भूमि] वह स्थान जहाँ सग्राम होता हो। लडाई का मैदान। युद्ध क्षेत्र। उ०—सग्रामभूमि-विराज रघुपति अतुलबल कोसल धनी।—मानस, ६।७०।

**सग्रामागण**—सज्ञा पुं० [स० सङ्ग्रामाङ्गण] युद्धभूमि (को०)।

**सग्रामार्थी**—वि० [स० सङ्ग्रामार्थिन्] लडाई चाहनेवाला। युद्धेप्सु (को०)।

**सग्रामी**—वि० [स० सङ्ग्रामिन्] युद्ध करनेवाला। सग्रामलिप्त (को०)।

**सग्राह**—सज्ञा पुं० [स० सङ्ग्राह] १ ढाल का दस्ता या मूठ। २ पकडना। बलपूर्वक पकडना। बलात् पकडना। ३. हाथ की बँधी हुई मुट्ठी। मुष्टिबध। मुक्का। ४ मुट्ठी बाँधना। मुक्का बाँधना (को०)। ५. घोडे के उत्प्लवन का एक प्रकार। घोडे का हिनहिनाते हुए अगले पैरो से कूदना (को०)।

**सग्राहक**—सज्ञा पुं० [स० सङ्ग्राहक] १ वह जो सग्रह करता हो। एकत्र या जमा करनेवाला। सग्रहकारी। सकलन करनेवाला (को०)। २ रथ का सारथी (को०)। ३ कब्ज करनेवाला (को०)। ४ वह जो अपनी ओर खीचता या आकृष्ट करता हो (को०)।

**सग्राहित**—वि० [स० सङ्ग्राहित] सग्रह किया हुआ। जो ग्रहीत या ग्रस्त हो।

**सग्राही**—सज्ञा पुं० [स० सङ्ग्राहिन्] १ वह पदार्थ जो कफादि दोष, धातु, मल तथा तरल पदार्थों को खीचता हो। २ वह पदार्थ जो मल के पेट से निकलने मे बाधक होता है। कब्जियत करनेवाली चीज। ३ कुटज वृक्ष। ४ दे० 'सग्राहक' (को०)।

**सग्राह्य**—वि० [स० सङ्ग्राह्य] १ सग्रह करने योग्य। जो सग्रह या एकत्र करने योग्य हो। २ जमा करने लायक। ३ ग्रहण या स्वीकरण योग्य (को०)। ४. किसी कार्य मे लगान, या रखने योग्य। ५. जिसे समझा जा सके। जिसे हृदयगम किया जा सके। (शब्द शक्ति)। ६. जिसका अवरोध किया जा सके। रोकने ...ाव आदि)।

...सङ्घ] १. समूह। समुदाय। दल। गण। ...वह समुदाय जो किसी विशेष उद्देश्य से एकत्र

हुआ हो। समिति। सभा। समाज। ३, प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य जिसमे शासनाधिकार प्रजा द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियो के हाथ मे होता था। ४ इसी सस्था के ढग पर बना हुआ बौद्ध श्रमणो आदि का धार्मिक समाज।

**विशेष**—इसकी स्थापना महात्मा बुद्ध ने की थी। पीछे से यह बौद्ध धर्म के त्रिरत्नो मे से एक रत्न माना जाता था। शेष दो त्रिरत्न बुद्ध और धर्म थे।

५. साधुओ आदि के रहने का मठ। सगत। ६ अतरगता। घनिष्ठ सपर्क (को०)।

**सघक**—सज्ञा पु० [स० सङ्घक] दल। झुड। समूह। समुदाय (को०)।

**सघगुप्त**—सज्ञा पुं० [स० सङ्घगुप्त] वाग्भट के पिता का नाम।

**सघचारी**—सज्ञा पु० [स० सङ्घचारिन्] १ जो अधिकाश लोगो का साथ दे। बहुमत, बहुपक्ष का अनुसरण करनेवाला। बहुमत के अनुसार आचरण करनेवाला। २ वे जो झुड या समुदाय मे चलते हो। जसे,—वृक, मृग, हाथी इत्यादि। ३ मछली।

**सघजीवी**—सज्ञा पुं० [स० सङ्घजीवी] १. वह जो समूह के साथ रहता हो। दल या वर्ग के रूप मे रहनेवाला। २ मजदूर। कुली (को०)।

**सघट**[1]—सज्ञा पु० [स० सङ्घटन] १ सघटन। मिलन। सयोग। उ०—यह सघट तब होइ जब पुन्य पराकृत भूरि।—मानस, १।२०२। २. परस्पर सघर्ष। युद्ध। लडाई। झगडा। ३. समूह। उ०—सुभट मर्कट भालु कटक सघट सजत नमत पद रावणानुज निवाजा।—तुलसी (शब्द०)। ४ राशि। ढेर।

**सघट**[2]—वि० [स० सङ्घट] [वि० स्त्री० सघटा] ढेरी लगाया हुआ। राशीकृत (को०)।

**सघटन**—सज्ञा पु० [स० सङ्घटन] [स्त्री० सघटना] १ मेल। सयोग। २ सघर्ष। सघर्षण। ३ साहित्य मे नायक नायिका का सयोग। मिलाप। ४ उपकरणो के द्वारा किसी पदार्थ का निर्माण। रचना। ५ बनावट। दे० 'सगठन'।

**संघटना**—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्घटना] १ दे० सघटन'। २ स्वरो या शब्दो का सयोजन (को०)।

**संघटबिघाई**Ⓤ—वि० [हिं० सघट+विधान] समूहबद्ध करनेवाला। जो समूह या दलबद्ध करे। उ०—जयति सौमित्रि रघुनदनानंद कर रिच्छ कपि कटक सघटविधाई।—तुलसी ग्र०, पृ० ४३७।

**संघटित**—वि० [स० सङ्घटित] १ एक जगह किया हुआ। एकत्रित। मिला या जुडा हुआ (को०)। २ (वाद्य आदि) जो बजाया हुआ हो। अभिघातित। वादित (को०)। ३ टकराया हुआ। सघट्टित। उ०—सुर विमान हिमभानु भानु सघटित परस्पर।—तुलसी ग्र०, पृ० १५७।

**सघट्ट**—सज्ञा पुं० [स० सङ्घट्ट] १ रचना। बनावट। गठन। २ सघर्ष। ३ मुठभेड। स्पर्धा (को०)। ४ आघात। चोट। ५ सघर्षण। रगड (को०)। ६ आलिगन (को०)। ७ मिलन। सयोग (को०)।

**सघट्ट चक्र**—सज्ञा पु० [स० सङ्घट्टचक्र] फलित ज्योतिष मे युद्धफल विचारने का नक्षत्रो का एक चक्र।

**विशेष**—इस चक्र के द्वारा यह जाना जाता है कि युद्ध मे जीत होगी या हार। यदि युद्धार्थ प्रस्थान करनेवाले का जन्मनक्षत्र इस चक्र मे शुभ होता है, तो वह युद्ध मे विजय लाभ करता है, और यदि अशुभ होता है, तो पराजय। स्वरोदय मे इस चक्र का विवरण इस प्रकार दिया है—एक त्रिकोण चक्र बना कर इस चक्र मे टेढी रेखाए खीचकर उसमे अश्विनी आदि २७ नक्षत्र अकित करने चाहिए। नौ नक्षत्रो का एक साथ वेध होता है। वेध क्रम इस प्रकार होता है। अश्विनी का रेवती के साथ, चित्रा नक्षत्र का श्लेषा और मूल के साथ, और ज्येष्ठा का मूल के साथ वेध होता है। यदि राजा का जन्म नक्षत्र इस चक्रवेध मे न हो, या सौम्य ग्रह सहित वेध हो, तो उस समय युद्ध नही होगा। यदि क्रूर नक्षत्र के साथ वेध हो, तो उस समय भीषण युद्ध होगा। सौम्य, स्वामी, मित्रामित्र आदि ग्रहगणो से युक्त तथा अतिचार प्रभृति गति द्वारा भी शुभाशुभ का निर्णय होता है।

**सघट्टन**—सज्ञा पुं० [स० सङ्घट्टन] [स्त्री० सघट्टना] १ बनावट। रचना। गठन। २ मिलन। सयोग। ३ घटना। ४ दे० 'सघटन'।

**सघट्टा**—सज्ञा स्त्री० [स०] लता। वल्ली। बेल।

**सघट्टित**—वि० [सं० सङ्घट्टित] १ एकत्र किया हुआ। २ गठित। निर्मित। बना हुआ। रचित। ३ चलाया हुआ। चालित। ४ घर्षित। रगडा हुआ। ५ (आटा आदि) जो साना या गूँधा हुआ हो (को०)।

**सघट्टितपाणि**—सज्ञा पुं० [सं० सघट्टितपाणी] वर और वधू के आपस मे जुडे हुए हाथ (को०)।

**सघट्टी**—सज्ञा पु० [स० सङ्घट्टिन्] वह जो साथ लगा रहे। अनुगामी। माननेवाला। जैसे, कृष्णसघट्टी, रामसघट्टी (को०)।

**सघतल**—सज्ञा पुं० [स० सङ्घतल] अजलि (को०)।

**सघती**†—सज्ञा पुं० [स० सङ्घ, हि० सग, सँघाती, सँगाती] साथी। सहचर। उ०—तुम्ह अस हित सघती पियारी। जियत जीउ नहि करौ निनारी।—जायसी (शब्द०)।

**सघपति**—सज्ञा पुं० [स० सङ्घपति] वह जो किसी सघ या समूह का प्रधान हो। दलपति। नायक।

**सघपुरुष**—सज्ञा पु० [स० सङ्घपुरुष] बौद्ध सघ का परिचारक सघ का सेवक (को०)।

**सघपुष्पी**—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्घपुष्पी] धातकी। धव। धौ।

**सघभेद**—सज्ञा पुं० [स० सङ्घभेद] बौद्ध सघ मे मतभेद पैदा करना जो पाँच प्रकार के अक्षम्य अपराधो मे एक माना गया है (को०)।

**सघभेदक**—वि० [स० सङ्घभेदक] सघ मे फूट पैदा करनेवाला (को०)।

सघरना(पु)—क्रि० स० [स० सहार+हिं० ना (प्रत्य०)] १ सहार करना। नाश करना। २ मार डालना। उ०—गरगज चूर चूर होइ परही। हस्ति घोर मानुप सघरही।—जायसी (शब्द०)।

सघर्प—सज्ञा पु० [सं० सङ्घर्ष] १ एक चीज का दूसरी चीज के साथ रगड खाना। सघर्पण। रगड। घिस्सा। २ दो विरोधी व्यक्तियो या दलो आदि मे स्वार्थ के विरोध के कारण होनेवाली प्रतियोगिता या स्पर्धा। ३ वह अहकारसूचक वाक्य जो अपने प्रतिपक्षी के सामने अपना बडप्पन जतलाने के लिये कहा जाय। ४ किसी चीज को घोटने या रगडने की क्रिया। रगडना। घिसना। ५ असूया। ईर्ष्या। डाह (को०)। ६ कामोद्दीपन। कामोत्तेजना (को०)। ७ शत्रुता। वैर भाव (को०)। ८ धीरे धीरे चलना। टहलना। ९ शर्त लगाना। बाजी लगाना।

संघर्षण—सज्ञा पुं० [स० सङ्घर्षण] १ दे० 'सघर्ष'। २ अभ्यजन। अनुलेपन। उबटन (को०)।

सघर्षजनन—वि० [स० सङ्घर्षजनन] सघर्ष पैदा करनेवाला। जिसमे सघर्ष हो।

सघर्षशाली—वि० [स० सङ्घर्षशालिन्] १ द्वेष करनेवाला। द्वेष्टा। २ होड करनेवाला [को०]।

सघर्षा—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्घर्षा] तरल या गीली लाह [को०]।

सघर्षी—सज्ञा पुं० [स० सङ्घर्षिन्] १ वह जो किसी प्रकार का सघर्ष करता हो। २ वह जो किसी के साथ प्रतियोगिता करता हो। प्रतिस्पर्धा करनेवाला। ३ रगडने या घिसनेवाला।

सघवृत्त—सज्ञा पुं० [स० सङ्घवृत्त] कौटिलीय अर्थशास्त्र के अनुसार श्रेणी, समूह, सघ की आचारविधि या व्यवहार [को०]।

सघवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्घवृत्ति] साथ कार्य करने के निमित्त एकत्र होने या समिलित होने की क्रिया। सहयोग।

सघस—सज्ञा पु० [स० सम् (उप०)+√घस्(=खाना)] भोजन की वस्तु। आहार [को०]।

सघाट—सज्ञा पु० [स० सङ्घाट] १ दल, समूह या सघ आदि मे रहनेवाला। वह जो दल बाँधकर रहता हो। २ लकडी आदि को जोडना या मिलाना। जोडने का काम। बढईगिरी (को०)।

सघाटि—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्घाटि] दे० 'सघाटी' [को०]।

सघाटिका—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्घाटिका] १ स्त्रियो का प्राचीन काल का एक प्रकार का पहनावा। २ वह स्त्री जो प्रेमी प्रेमिका को मिलावे। दूती। कुट्टिनी। कुटनी। ३ युग्म। जोडा। ४ सिंघाडा। ५ कुभी। ६ गध। महक। वास (को०)। ७ घ्राणेंद्रिय। नाक (को०)।

सघाटी—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्घाटी] बौद्ध भिक्षुओ के पहनने का एक प्रकार का वस्त्र।

सघाणक—सज्ञा पुं० [स० सङ्घाणक] श्लेष्मा। कफ जो नाक से निकलता है।

सघात[1]—सज्ञा पु० [स० सङ्घात] १ जमाव। समूह। समष्टि। २ आघात। चोट। ३ हत्या। वध। ४ इक्कीस नरको मे से एक नरक का नाम। ५ कफ। ६ नाटक मे एक प्रकार की गति। ७ शरीर। उ०—सो लोचन गोचर सुखदाता। देखत चरण तमहुँ सघाता।—स्वामी रामकृष्ण (शब्द०)। ८ निवास-स्थान। उ०—हो मुखराते सत्य के बाता। जहाँ सत्य तहँ धर्म सघाता।—जायसी (शब्द०)। ९ युद्ध। सघर्ष (को०)। १० यात्रियो का दल। कारवाँ (को०)। ११ अस्थि। हड्डी (को०)। १२ कठोर अश (को०)। १३ ओघ। गति। प्रवाह (को०)। १४ (व्या०) समास (को०)। १५ घनीभूत करना। ठोस बनाना (को०)। १६ समिश्रणो का निर्माण (को०)।

सघात[2]—वि० सघन। निविड। घना।

यौ०—सघातकठिन=(१) एक साथ मिलने पर कठिन हो जानेवाला। (२) जो जम जाने से कठोर हो जाय।

सघातक—सज्ञा पु० [स० सङ्घातक] १ घात करनेवाला। प्राण लेनेवाला। २ वह जो बरबाद करता हो। नष्ट करनेवाला। ३ एक प्रकार का नाटकीय अभिनय (को०)।

सघातचारी—सज्ञा पुं० [स० सङ्घातचारिन्] वह जो अपने वर्ग के और प्राणियो या लोगो के साथ मिलकर, या उनका सघ बनाकर रहता हो।

सघातज—वि० [सं० सङ्घातज] त्रिदोष से उत्पन्न। सान्निपातिक। सनिपातवाला [को०]।

सघातपत्रिका—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्घातपत्रिका] १ शतपुष्पा। सोआ। २ सौफ। मिश्रेया।

सघातन—सज्ञा पु० [स० सङ्घातन] मारना। वध करना। नाश करना [को०]।

सघातबलप्रवृत्त—सज्ञा पु० [स० सङ्घातबल प्रवृत्त] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का आधिभौतिक और आगतुक रोग।

सघातमृत्यु—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्घातमृत्यु] सामूहिक मृत्यु। बहुतो की एक साथ मौत होना [को०]।

सघातशिला—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्घातशिला] १ पत्थर जैसा कडा पिंड। २ ठोस या बहुत कडा पत्थर [को०]।

सघातिका—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्घातिका] अरणि की लकडी। अरणि-काष्ठ जिससे आग पैदा की जाती है [को०]।

सघाती[1]—सज्ञा पु० [स० सघ, हिं० सग+आती (प्रत्य०)] १ साथी। सहचर। २ मित्र।

सघाती[2]—सज्ञा पु० [स० सङ्घातिन्] सघातक। प्राणनाशक।

सघात्य—सज्ञा पुं० [स० सङ्घात्य] दे० 'सघातक'।

सघाधिप—सज्ञा पु० [स० सङ्घाधिप] सघ का स्वामी या प्रधान भिक्षु (जैन)।

सघार(पु)†—सज्ञा पु० [स० सहार] दे० 'सहार'।

सघारना(पु)—क्रि० स० [सं० सहार] १ सहार करना। नाश करना। २ मार डालना। हत्या करना। उ०—तहँ निपाद इक

कौ च सघारयौ। किय विलाप ताकी तिय मारयौ।—पद्माकर (शब्द०)।

**सघाराम**—सज्ञा पुं० [सं० सङ्घाराम] बौद्ध भिक्षुओ तथा श्रमणो आदि के रहने का मठ। विहार।

**सघावशेष**—सज्ञा पु० [स० सङ्घावशेष] बौद्ध मत के अनुसार एक प्रकार का पाप।

**संघुषित**[1]—वि० [स०] १ ध्वनित। २ घोषणा किया हुआ। घोषित [को०]।

**सघुषित**[2]—सज्ञा पु० आवाज। ध्वनि। शोरगुल। हल्ला [को०]।

**सघुष्ट**[1]—सज्ञा पुं० [स० सङ्घुष्ट] आवाज। ध्वनि [को०]।

**सघुष्ट**[2]—वि० १ जो घोषित किया गया हो। २ ध्वनित। ३ जिसे बेचने के लिये उपस्थित या घोषित किया गया हो [को०]।

**सघृष्ट**—वि० [स० सङ्घृष्ट] घिसा हुआ। रगडा हुआ [को०]।

**सघेला**†—सज्ञा पुं० [स० सङ्ग+एला (प्रत्य०)] १ साथी। सहचर। सगी। २ मित्र। दोस्त।

**सघोष**—सज्ञा पु० [स० सङ्घोष] १ जोर का शब्द। २ गोप ग्राम। घोष। आभीर पल्ली।

**सच**Ⓤ†[1]—सज्ञा पुं० [स० सञ्चय] १ सग्रह करने की क्रिया। सचय। एकत्रीकरण। २ रक्षा। देखभाल। उ०—जननि जनक ते अधिक गाधि सुत करिहै सच तिहारो। कौशिक शासन सकल शीश धरि सिगरो काज सिधारो।—रघुराज (शब्द०)। ३ शाति। कुशल।

**सच**[2]—सज्ञा पुं० [स० सञ्च] १ लिखने की स्याही। मसी। २ ग्रथ आदि लिखने के निमित्त पत्रो का सचयन (को०)।

**सच**Ⓤ[3]—सज्ञा पुं० [स० सत्य, प्रा० सच्च, सच] सत्य। सत्र। उ०—सच तेता करि मान्यौ।—पृ० रा०, २६।१३।

**सचक**[1]—सज्ञा पुं० [स० सञ्चय, हिं० सच+क (प्रत्य०)] दे० 'सचकर'।

**सचक**[2]—सज्ञा पुं० [स० सञ्चक] साँचा जिसमे कोई वस्तु ढाली जाती है [को०]।

**संचकर**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० सञ्चय+कर] १ सचय करनेवाला। २ कृपण। कजूस।

**संचकित**—वि० [स० सम्+चकित, सञ्चकित] [वि० स्त्री० सचकिता] १ आश्चर्यग्रस्त। २ भौचक। भयभीत। ३ बुरी तरह डरा हुआ [को०]।

**सचक्ष**—सज्ञा पु० [सं० सञ्चक्षस्] ऋषि। आचार्य। पुरोहित [को०]।

**सचत्**—सज्ञा पुं० [स० सञ्चत्] १ वचक। ठग। प्रतारक। २ ठगी। वचना [को०]।

**सचना**Ⓤ†—क्रि० स० [स० सञ्चयन] १ एकत्र करना। सग्रह करना। सचय करना। उ०—निरधन के धन अहे स्याम अरु स्यामा दोऊ। सुकवि तिनहि हम गह्यो और को सचहु कोऊ।—अबिकादत्त (शब्द०)। २ रक्षा करना। देखभाल करना।

**सचय**—सज्ञा पुं० [स० सञ्चय] १ राशि। समूह। ढेर। २ एकत्र या सग्रह करने की क्रिया। एकत्रीकरण। सकलन। जमा करना। ३ अधिकता। ज्यादती। बहुतायत। ४. ग्रथि। काड। जोड। सधि (को०)।

**संचयन**—सज्ञा पु० [सं० सञ्चयन] १ सचय करने की क्रिया। एकत्र या सग्रह करने की क्रिया। जमा करना। २ जले हुए मुर्दे की अस्थियाँ बटोरना। अस्थिसचय [को०]।

**सचयिक**—सज्ञा पु० [स० सञ्चयिक] वह जो सचय करता हो। एकत्र करनेवाला। जमा करनेवाला।

**सचयिता**—सज्ञा पु० [स० सञ्चयितृ] दे० 'सचयिक'।

**सचयी**—सज्ञा पु० [स० सञ्चयिन्] १ सचय करनेवाला। जमा करनेवाला। २ कृपण। कजूस। ३ धनवान्। धनी (को०)।

**सचर**[1]—सज्ञा पु० [स० सञ्चर] १ गमन। चलना। २ सेतु। पुल। ३ जल के निकलने का मार्ग। ४ मार्ग। पथ। रास्ता। ५ स्थान। जगह। ६ देह। शरीर। ७. साथी। सहायक। ८ ग्रहो का एक से दूसरी राशि मे सक्रमण (को०)। ९ पतला रास्ता। सँकरा मार्ग (को०)। १० प्रवेशद्वार (को०)। ११ वध। मार डालना (को०)। १२ विकास (को०)।

**सचर**[2]—वि० इतस्तत घूमने या चलनेवाला [को०]।

**सचरण**—सज्ञा पुं० [सं० सञ्चरण] १ सचार करने की क्रिया। चलना। गमन। २. प्रसारण। फैलाना। ३. गतिशील करना। प्रयोग मे लाना (को०)। ४ काँपना।

**सचरणी**—सज्ञा स्त्री० [स०] रथ्या। वीथी। राह [को०]।

**सचरना**Ⓤ†—क्रि० अ० [सं० सञ्चरण] १ घूमना। फिरना। चलना। उ०—पवन न पावै मचरै भँवर न तहाँ बईठ।—पदमावत, पृ० १६२। २ फैलना। प्रसारित होना। उ०—सरद चाँदनी सचरत चहुँ दिसि आनि। विधुहि जोरि कर विनवति कुल गुरु जानि।—तुलसी (शब्द०)। ३. चल निकलना। व्यवहृत होना। प्रचलित होना।

**संचरिष्णु**—वि० [स० सञ्चरिष्णु] सचरण वा गमन के लिये व्यवस्थित [को०]।

**सचर्वण**—सज्ञा पु० [स० सञ्चर्वण] चबाना। चर्वण करना [को०]।

**सचल**[1]—सज्ञा पुं० [सं० सञ्चल] सौवर्चल लवण। साँचर नमक।

**सचल**[2]—वि० कपित। हिलता हुआ। भ्रमित [को०]।

**सचलन**—सज्ञा पु० [स० सञ्चलन] १ हिलना डोलना। २. चलना फिरना। ३ काँपना।

**सचलनाडी**—सज्ञा स्त्री० [स० सञ्चलनाडी] धमनी। रग। नस।

**सचा**Ⓟ—सज्ञा पुं० [हिं० साँचा] दे० 'साँचा'। उ०—कुच सिरिफल सचा पूरि। कुदि बइसाओल कनक कटोरि।—विद्यापति, पृ० २६९।

**सचान**—सज्ञा पु० [स० सञ्चान] श्येन नामक पक्षी। बाज। शिकरा।

सचाय्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ।

सचार—संज्ञा पुं० [स० सञ्चार] १ गमन। चलना। २ फैलने या विस्तृत होने की क्रिया। ३ कष्ट। विपत्ति। ४ मार्ग प्रदर्शन। नेतृत्व। रास्ता दिखलाने की क्रिया। ५ चलाने की क्रिया। संचालन। ६ साँप की मणि ७ देश। ८ ग्रहों या नक्षत्रों का एक राशि से दूसरी राशि में जाना।

विशेष—ज्योतिष के अनुसार सचार समय में चंद्र जिस रूप का होता है, उसी प्रकार का फल भी होता है। यदि चंद्र शुद्ध होता है, तो साथ में जिस ग्रह का शुभ भाव होता है, उस ग्रह के शुभ फल की वृद्धि होती है। यदि सचार काल में इंदु शुद्ध नहीं होता, तो शुभ भाववाले शुभ ग्रह के शुभ फल में न्यूनता होती है। यदि कोई अशुभ ग्रह शुद्ध चंद्र के साथ होता है, तो अशुभ फल की कमी होती है। फलित ज्योतिष में सचार के संबंध में इसी प्रकार की और भी बहुत सी बातें दी हुई हैं।

९ उत्तेजन। बढ़ावा देना। १० कष्टमय यात्रा (को०)। ११ मार्ग। पथ। राह (को०)। १२ दूत। गुप्तचर। संदेशवाहक (को०)। १३ दर्शन एवं श्रवण द्वारा दूसरे का मोहन करना। १४ रतिमंदिर की अवधि।

यौ०—सचारजीवी = खानाबदोश। सचारपथ = घूमने टहलने की जगह। सचारव्याधि = संक्रामक रोग।

सचारक—वि०, संज्ञा पुं० [स० सञ्चारक] १ सचार करनेवाला। फैलानेवाला। २ वक्ता। ३ चलानेवाला। ४ दलपति। नायक। नेता। ४ स्कंद का एक अनुचर (को०)।

सचारण—संज्ञा पुं० [स० सञ्चारण] १ साथ लाना या करना। २ मिलाना। एक में करना। ३ (संदेश) कहना (को०)।

सचारणी—संज्ञा स्त्री० [स० सञ्चारिणी] बौद्धों की एक देवी (को०)।

सचारना†—क्रि० स० [स० सञ्चारण] १ सचार का सकर्मक रूप। किसी वस्तु का सचार करना। २ प्रचार करना। व्यवहार में प्रवृत्त करना। फैलाना। उत्पन्न करना। जन्म देना। उ०—नूर मुहम्मद देखि तौ मा हुलास मन सोइ। पुनि इबलिस सचारेउ उरत रहे सब कोइ।—जायसी (शब्द०)।

सचारयिता—संज्ञा पुं० [स० सञ्चारयितृ] नायक। नेता (को०)।

सचारिका—संज्ञा स्त्री० [स० सञ्चारिका] १ संदेशवाहिका। दूती। २ कुट्टनी। कुटनी। ६ नाक। नासिका। ४ युग्म। जोड़ा। ५ गंध। महक (को०)। ६ वह दासी जो रुपये पैसे की व्यवस्था करती हो (को०)।

सचारिणी'—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चारिणी] १ हंसपदी नाम की लता। २ लाल निसोथ।

सचारिणी'—वि० स्त्री० १ हिलती या काँपती हुई। २ भटकती हुई या घूमती हुई। ३ परिवर्तनशील। अस्थिर। ४ प्रभाव डालनेवाली। ५ आनुवंशिक रूप से संक्रमण करनेवाली या सम्पर्क द्वारा उत्पन्न होनेवाली बीमारी। ६ प्रवृत्त करनेवाली (को०)।

सचारित'—वि० [स० सञ्चारित] १ जिसका सचार किया गया हो चलाया या फैलाया हुआ। २ उकसाया हुआ। बढ़ाया हुआ (को०)। ३ (व्याधि या रोग) जो संक्रमित किया जाय (को०)।

सचारित'—संज्ञा पुं० वह व्यक्ति जो अपने स्वामी की आकांक्षाओं को कार्यान्वित करता हो (को०)।

सचारी'—संज्ञा पुं० [स० सञ्चारिन्] १ धूप नामक गंध द्रव्य। २ धूप का उठा हुआ धूम्र (को०)। ३ वायु। हवा। ३ साहित्य में वे भाव जो रस के उपयोगी होकर जल की तरंगों की भाँति उनमें संचरण करते हैं।

विशेष—ऐसे भाव मुख्य भाव की पुष्टि करते हैं और समय समय पर मुख्य भाव का रूप धारण कर लेते हैं। स्थायी भावों की भाँति ये रससिद्धि तक स्थिर नहीं रहते, बल्कि अत्यंत चंचलतापूर्वक सब रसों में संचरित होते रहते हैं। इन्हीं को व्यभिचारी भाव भी कहते हैं। साहित्य में नीचे लिखे ३३ संचारी भाव गिनाए गए हैं—निर्वेद, ग्लानि, शंका, असूया, श्रम, मद, धृति, आलस्य, विषाद, मति, चिंता, मोह, स्वप्न, विबोध स्मृति, आमर्ष, गर्व, उत्सुकता, अवहित्था, दीनता, हर्ष, व्रीडा, उग्रता, निंदा, व्याधि, मरण, अपस्मार, आवेग, त्रास, उन्माद, जडता, चपलता और वितर्क।

४ अस्थिरता। चंचलता। क्षणस्थायित्व। ५ संगीत शास्त्र के अनुसार किसी गीत के चार चरणों में से तीसरा चरण। ६ आगंतुक।

सचारी'—वि० [वि० स्त्री० सञ्चारिणी] १ संचरण करनेवाला। गतिशील। अस्थिर। २ संक्रामक। जैसे, रोग (को०)। ३ चढ़ने उतरनेवाला। जैसे, ज्वर (को०)। ४ दुर्गम (को०)। ५ वंशपरंपरागत। आनुवंशिक (को०)। ६ क्षणस्थायी (को०)। ७ संलग्न। लगा हुआ (को०)। ८ प्रवेश करनेवाला (को०)। ९ घूमनेवाला। भ्रमण करनेवाला (को०)।

सचाल—संज्ञा पुं० [स० सञ्चालन] १ कंपन। काँपना। २ चलन। चलना।

सचालक—संज्ञा पुं० [स० सञ्चालक] १ वह जो संचालन करता हो। चलाने या गति देनेवाला। परिचालक। २ वह जो किसी प्रकार के उद्योग या संस्था आदि के ठीक से चलते रहने का प्रबंध करता हो (को०)।

सचालन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चालन] १ चलाने की क्रिया। परिचालन। २ काम जारी रखना या चलाना। प्रतिपादन। ३ नियंत्रण। ४. देखरेख।

सचाली—संज्ञा स्त्री० [स० स्रञ्चाली] गुंजा। घुँघची।

सचिंतन—संज्ञा पुं० [स० सञ्चिन्तन] चिंतन करना। विचारना (को०)।

सचिंतित—वि० [स० सञ्चिन्तित] १ सम्यक् विचारित। सुविचारित। २. निश्चित किया हुआ। व्यवस्थित। ३ आकांक्षित। इच्छित (को०)।

सचित—वि० [स० सञ्चित] १. संचय किया हुआ। २ ढेर लगाया हुआ। ३ गिना हुआ। गणना किया हुआ (को०)। ४. भरा

हुआ। सुसपन्न। युक्त (को०)। ५ बाधित। अवरुद्ध (को०)। ६ घना। सघन (को०)।

यौ०—सचितकर्म = पूर्वजन्म के वे एकत्रित कर्म जो वर्तमान जीवन मे प्रारब्ध के रूप मे प्राप्त होते है और जिनका फल भोगना पडता है। सचितकोष, सचितनिधि = (१) जमापूँजी। (२) वेतनभोगी कर्मचारियो के वेतन से हर महीने कटकर जमा होनेवाली वह निश्चित रकम जो उन्हें नौकरी मे अलग होने पर मिल जाती है। वेतन देनेवाला सस्थान भी कर्मचारियो की उस जमा रकम मे अपनी ओर से उतनी ही रकम मिलाता है। प्राविडेट फड (अ०)।

सचिता—सज्ञा स्त्री० [स० सञ्चिता] एक प्रकार की वनस्पति।

सचिति—सज्ञा स्त्री० [स० सञ्चिति] १ एक पर एक रखना। तहो लगना। २ सग्रह। सचय (को०)। ३ शतपथ ब्राह्मण के नवम खड की आख्या (को०)।

सचित्रा—सज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चित्रा] मूषाकर्णी। मूसाकानी।

सचु—सज्ञा पुं० [स० सञ्चु] टीका। व्याख्या (को०)।

सचूर्णन—सज्ञा पुं० [स० सञ्चूर्णन] अच्छी तरह चूर करना, टुकडे टुकडे करना या पीसना (को०)।

सचूर्णित—वि० [स० सञ्चूर्णित] पिसा हुआ। टुकडे टुकडे किया हुआ। चूर्ण किया हुआ (को०)।

सचेय—वि० [स० सञ्चेय] इकट्ठा करने योग्य। सग्रहणीय (को०)।

सचोदक—सज्ञा पुं० [स० सञ्चोदक] १ ललितविस्तर के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

सचोदन—सज्ञा पुं० [स० सञ्चोदन] प्रेरित करना। बढावा देना या उत्तेजित करना (को०)।

सचोदना—सज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चोदना] १ वह वस्तु जो प्रेरणा वा उत्तेजना प्रदान करती हो। २ उत्तेजना। प्रेरणा (को०)।

सचोदित—वि० [स० सञ्चोदित] उत्तेजित। आदिष्ट। प्रेरित (को०)।

सछन्न—वि० [स० सम्+छन्न] १ पूर्णत ढँका हुआ। आवृत। वस्त्राच्छादित। २ छिपा हुआ। छन्न। गुप्त। अज्ञात (को०)।

सछर्दन—सज्ञा पुं० [स० सञ्छर्दन] ग्रहण मे एक प्रकार का मोक्ष।

विशेष—राहु यदि ग्राह्यमडल मे पूर्व भाग से ग्रसना आरभ करके फिर पूर्व दिशा को ही चला आवे, तो उसको सछर्दन मोक्ष कहते है। फलित ज्योतिष के अनुसार इससे ससार का मगल और धान्य की वृद्धि होती है।

सछादन—सज्ञा पु० [सं० सञ्छादन] आच्छादित करना। छिपाना। ढँकना (को०)।

संछादनी—सज्ञा स्त्री० [स० सञ्छादनी] १ वह जो सछादन करे। २ त्वचा। खाल (को०)।

सछिदा—सज्ञा स्त्री० [स० सञ्छिदा] विध्वस। नाश (को०)।

सछिन्न—वि० [स० सञ्छिन्न] टुकडे टुकडे किया हुआ। छिन्न। काटा हुआ (को०)।

सछेत्ता—सज्ञा पुं० [स० सञ्छेत्तृ] वह जो सशय आदि को दूर करता या मिटाता हो (को०)।

सछेत्तव्य—वि० [स० सञ्छेत्तव्य] जो छेदन के योग्य हो। भद्य (को०)।

सछेद—सज्ञा पु० [स० सञ्छेद] १ काटना। अलग करना। २ हटाना। दूर करना (को०)।

सछेद्य—सज्ञा पु० [स० सञ्छेद्य] १ छेदने के योग्य। २ दो नदियो का साथ बहना अथवा सगम (को०)।

सज'—सज्ञा पुं० [स० सञ्ज] १. शिव का एक नाम। २. ब्रह्मा का एक नाम।

सज'—वि० [फा०] तौलनेवाला। वया (को०)।

सज[3]—सज्ञा पु० झाझ या मजीरा नामक वाद्य (को०)।

सजन—सज्ञा पु० [स० सञ्जन] १ बाँधने की क्रिया। २. बधन। ३ बिखरे हुए अगो आदि को मिलाकर एक करना। सघट्टन।

सजनन[1]—वि० [स० सञ्जनन] उत्पादक। उत्पन्न करनेवाला (को०)।

सजनन[2]—सज्ञा पु० १ निर्माण। उत्थान। २ बढाव। विकास (को०)।

सजनित—वि० [स० सञ्जनित] उत्पन्न किया हुआ। निर्मित। रचित (को०)।

सजनी—सज्ञा स्त्री० [स०] वैदिक काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे वध या हत्या की जाती थी।

सजम ⓤ—सज्ञा पुं० [सं० सयम] दे० 'सयम'। उ०—राम करहु सब सजम आजू। जौं बिधि कुसल निबाहइ काजू। —मानस, २।१०।

सजमना ⓤ—क्रि० स० [स० सयमन] एकत्र करना। बटोरना। सयमित करना। व्यवस्थित करना। उ०—पलटि पट सजमत केसनि मृदुल अग अँगोछि।—घनानद, पृ० ३०१।

सजमनी—सज्ञा स्त्री० [स० सयमनी] यमराज की नगरी। (डिं०)।

सजमनीपति—सज्ञा पुं० [स० सयमनीपति] यमराज। यमदेव। (डिं०)।

सजमी—सज्ञा पु० [स० सयमिन्] १ नियम से रहनेवाला। सयमी। २. व्रती। ३ जितेंद्रिय।

सजय—सज्ञा पुं० [स० सञ्जय] १ धृतराष्ट्र का मत्री जो महाभारत के युद्ध के समय धृतराष्ट्र को उस युद्ध का विवरण सुनाता था।

विशेष—कहते है कि इसे दिव्य दृष्टि प्राप्त थी, अत यह हस्तिनापुर मे बैठा हुआ कुरुक्षेत्र मे सारी घटनाएँ देखता था और उनका वर्णन अधे धृतराष्ट्र को सुनाता था।

२ सुपार्श्व का पुत्र। ३ राजन्य के पुत्र का नाम। ४ ब्रह्मा। ५ शिव। ६ विजय। जीत (को०)। ७ एक प्रकार का सैनिक व्यूह (को०)।

सजर—सज्ञा पुं० [फा०] १ एक शिकारी पक्षी। २ बादशाह। उ०—यक तौ सरपजर कियौ अतन तनै सर सूल। दूजे यह सिसिरौ भयौ खजर सजर तूल।—स० सप्तक, पृ० २४६।

सजल्प—सज्ञा पु० [स० सञ्जल्प] १ वार्तालाप। बातचीत। २ बकवाद। ऊटपटाँग वार्ता। ३ हल्ला गुल्ला (को०)।

सजवन—संज्ञा पु० [सं० सञ्जवन] १ चार अट्टालिकाओं की वह विशिष्ट चतुष्कोण स्थिति जिससे उनके बीच में आँगन बन जाय। २ मार्गदर्शक चिह्न (को०)।

सजा'—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्ञा] बकरी।

सजा'—संज्ञा पु० [फा० सजह्] बाट। तौलने का बटखरा (को०)।

सजात'—वि० [सं० सञ्जात] १ उत्पन्न। २ प्राप्त। ३ व्यतीत। बीता हुआ (को०)।

यौ०—सजातकोप = कुपित। क्रुद्ध। सजातकौतुक = विस्मित। चकित। सजातनिर्वेद = विरक्त। उदासीन। सजातविश्रंभ = आश्वस्त। संतुष्ट। सजातवेपथु = काँपनेवाला। काँपता हुआ। कंपित।

सजात'—संज्ञा पुं० पुराणानुसार एक जाति का नाम।

सजाफ'—संज्ञा स्त्री० [फा० सजफ या सजाफ] १ झालर। किनारा। कोर। २ चौडी और आडी गोट जो प्राय रजाइयों और लिहाफों आदि के किनारे किनारे लगाई जाती है। गोट। मगजी।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

सजाफ'—संज्ञा पु० एक प्रकार का घोडा जिसका रंग या तो आधा लाल, आधा सफेद होता है या आधा लाल, आधा हरा।

सजाफी'—वि० [हिं० सजाफ + ई (प्रत्य०)] जिसमें सजाफ लगी हो। किनारेदार। झालरदार।

यौ०—सजाफी गंजा = खल्वाट व्यक्ति जिसकी खोपडी के किनारे पर बाल हों।

सजाफी'—संज्ञा पुं० वह घोडा जिसका रंग सजाफी हो। आधा लाल आधा हरा घोडा।

सजाब'—संज्ञा पुं० [फा० सजाफ] १ एक प्रकार का घोडा। दे० 'सजाफ'। उ०—पचकल्यान सजाब बखानी। महि सायर सब चुन चुन आनी।—जायसी (शब्द०)। २ एक प्रकार का चमडा।

सजाब'—संज्ञा पुं० [फा०] चूहे के आकार का एक जंतु जो प्राय तुर्किस्तान में होता है।

विशेष—इस जंतु का मांस वक्षस्थल की पीडा, कास और व्रण के लिये उपकारक माना जाता है। इसकी खाल पर बहुत मुलायम रोएँ होते हैं, और उससे पोस्तीन बनाते हैं।

सजावन—संज्ञा पुं० [सं०] जमाने के लिये गरम दूध में जामन डालना (को०)।

सजिंदा—वि० [फा० सजिंदह] तौलनेवाला। बयाई करनेवाला (को०)।

सजिहानि—वि० [सं० सञ्जिहानि] (शय्या) त्याग करनेवाला। (बिस्तर) छोडनेवाला (को०)।

सजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] तराजू पर तौलना। वजन करना।

सजीदगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ विचार या व्यवहार आदि की गंभीरता। २ सहिष्णुता। शिष्टता। ३ सजीदा होना (को०)।

सजीदा—वि० [फा० सजीदह्] १ जिसके व्यवहार या विचारों में गंभीरता हो। गंभीर। शांत। २ समझदार। बुद्धिमान्। ३ सहिष्णु (को०)। ४ संतुलित। तौला हुआ (को०)।

सजीव'—संज्ञा पु० [सं० सञ्जीव] १ मरे हुए को फिर से जिलाना। पुन जीवन देना। २ वह जो मरे हुए को जिलावे। फिर से जीवन दान करनेवाला। ३ बौद्धों के अनुसार एक नरक का नाम।

यौ०—सजीवकरण = फिर से जीवित करना। पुनर्जीवन देना। सजीवकरणी।

सजीव'—वि० जीवित। प्राणवान् (को०)।

सजीवक—संज्ञा पु० [सं० सञ्जीवक] वह जो मरे हुए को जीवनदान देता हो। मुर्दे को जिलानेवाला।

सजीवकरणी—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्जीवकरणी] १ एक प्रकार की विद्या जिसके प्रभाव से मृत मनुष्य जीवित हो जाता है। (महाभारत में लिखा है कि शुक्राचार्य यह विद्या जानते थे)। २ एक प्रकार की कल्पित ओषधि जिसके सेवन से मृत व्यक्ति का जीवित होना माना जाता है।

सजीवन'—संज्ञा पु० [सं० सञ्जीवन] [वि० सजीवित] १ भलीभाँति जीवन व्यतीत करने की क्रिया। २ जीवन दान करना। पुन जिलाना। ३ मनु के अनुसार इक्कीस नरकों में से एक नरक का नाम। ४ दे० 'सजवन' (को०)।

सजीवन'—वि० जिलानेवाला। जीवन देनेवाला (को०)।

संजीवनी'—वि० स्त्री० [सं० सञ्जीवनी] जीवनप्रदायिनी। जीवनदायिनी। जीवन देनेवाली।

सजीवनी'—संज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की कल्पित ओषधि। कहते हैं कि इसके सेवन से मरा हुआ मनुष्य जी उठता है। २. वैद्यक के अनुसार एक औषध का नाम।

विशेष—इसके लिये पहले बायविडंग, सोंठ, पिप्पली, हड का छिलका, आँवला, बहेडा, बच, गिलोय, भिलावाँ, सशोधित सिंगी मोहरा इन सबके चूर्ण को एक दिन गोमूत्र में खरल करके एक रत्ती की गोलियाँ बनाते हैं। कहते हैं कि इसकी एक गोली अदरक के रस के साथ खिलाने से अजीर्ण, दो गोलियाँ खिलाने से विसूचिका, तीन गोलियाँ खिलाने से सर्पविष और चार गोलियाँ खिलाने से सन्निपात नष्ट होता है।

३ अन्न। खाद्य वस्तु (को०)। ४ कालिदास के महाकाव्य कुमारसंभव पर मल्लिनाथ सूरि की टीका का नाम।

सजीवनी विद्या—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्जीवनी विद्या] एक प्रकार की कल्पित विद्या।

विशेष—कहते हैं कि इस विद्या के द्वारा मरे हुए व्यक्ति को जिलाया जा सकता है। महाभारत में लिखा है कि दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य यह विद्या जानते थे, और इसी के द्वारा वे उन दैत्यों को फिर से जिला देते थे जो देवताओं के साथ युद्ध करने में मारे जाते थे। देवताओं के कहने से बृहस्पति के पुत्र कच यह विद्या सीखने के लिये शुक्राचार्य के पास जाकर रहने लगे,

और अनेक कठिनाइयाँ सहने के उपरात अत मे उनसे यह विद्या सीखकर आए।

**सजीवित**—वि० [स० सञ्जीवित] फिर से जिलाया हुआ [को०]।

**सजीवी**—सज्ञा पु० [सं० सञ्जीविन्] वह जो मृतको को जीवनदान देता हो। मुरदो को जिलानेवाला।

**सजुक्त** ⓤ—वि० [स० सयुक्त] दे० 'सयुक्त'। उ०—जय प्रनतपाल दयाल प्रभु सजुक्त सक्ति नमामहे।—मानस, ७।१३।

**सजुग** ⓤ—सज्ञा पुं० [स० सयुग] सग्राम। युद्ध। लडाई। उ०—जोतेहु जे भट सजुग माहो। सुनु तापस मै तिन्ह सम नाही। —मानस, ६।८६।

**सजुत** ⓤ—वि० [स० सयुत] सयुक्त। मिश्रित। मिला हुआ। उ०—(क) उहँई कीन्हेउ पिंड उरेहा। भइ सजुत आदम कै देहा। —जायसी (शब्द०)। (ख) श्रुति समत हरिभक्ति पथ सजुत विरति विवेक।—मानस, ७।१००।

**सजुता**—सज्ञा स्त्री० [स० सयुक्ता] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे स, ज, ग, होते है। इसे 'सयुत' या 'सयुता' भी कहते है।

**सजोग** ⓤ—सज्ञा पुं० [सं० सयोग] अवसर। मौका। सयोग।

**सजोगिता**—सज्ञा स्त्री० [हि०] जयचद की कन्या का नाम जिसका पृथ्वीराज चौहान ने हरण किया था।

**सजोगिनी** ⓤ—सज्ञा स्त्री० [सं० सयोगिनी] वह स्त्री जो अपने पति या प्रेमी के पास अथवा साथ हो। सयोगिनी। वह स्त्री जो वियोगिनी न हो।

**सजोगी**[1]—सज्ञा पुं० [सं० सयोगिन्] १. वह जो सयुक्त या मिला हुआ हो। २ वह जो भार्या सहित हो। प्रिया के सहित व्यक्ति। दे० सयोगी'। ३ दो जुडे हुए पिंजडे जो बहुधा तीतर पालनेवाले रखते है।

**सजोगी**[2]—वि० दे० 'सयोगी'।

**सज्ञ**[1]—सज्ञा पु० [सं० सज्ञ] १ वह जो सब बातें अच्छी तरह जानता हो। वह जो सब विषयो का अच्छा जानकार हो। २ पीतकाष्ठ। झाऊँ।

**सज्ञ**[2]—वि० १ सज्ञा का। नाम का। नामवाला। नामक। २ होश मे आया हुआ। चेतनायुक्त। ३ जिसके दोनो घुटने परस्पर टकराते हो। ४ पूर्णत जानकार। पूरी तौर से जानने वाला [को०]।

**सज्ञक**—वि० [सं० सज्ञक] १ सज्ञावाला। जिसकी सज्ञा हो। २ विनाशक (को०)।

**विशेष**—इस शब्द का प्रयोग प्राय यौगिक बनाने मे शब्द के अत मे होता है।

**सज्ञपन**—सज्ञा पुं० [स० सज्ञपन] १ मार डालने की क्रिया। हत्या। बलि देना। २ कोई बात लोगो पर प्रकट करने की क्रिया। विज्ञापन। ३ प्रतारणा। धोखाधडी (को०)।

**सज्ञपित**—वि० [सं० सज्ञपित] १ बलि चढा हुआ। जिसकी बलि कर दी गई हो। २ ससूचित। जो ज्ञापित किया गया हो [को०]।

**सज्ञप्त**—वि० [स० सज्ञप्त] दे० सज्ञपित' [को०]।

**सज्ञप्ति**—सज्ञा स्त्री० [स० सज्ञप्ति] दे० 'सज्ञापन'।

**सज्ञा**—सज्ञा स्त्री० [स० सज्ञा] १ चेतना। होश। २ बुद्धि। अक्ल। ३ ज्ञान। ४ किसी पदार्थ आदि का बोधक शब्द। नाम। आख्या। ५ व्याकरण मे वह विकारी शब्द जिससे किसी यथार्थ या कल्पित वस्तु का बोध होता है। जैसे,—मकान, नदी, घोडा, राम, कृष्ण, खेल, नाटक आदि। ६ हाथ, आँख या सिर आदि हिलाकर कोई भाव प्रकट करना। सकेत। इशारा। ७ गायत्री। ८ सूर्य की पत्नी का नाम जो विश्वकर्मा की कन्या थी। मार्कडेय पुराण के अनुसार यम और यमुना का जन्म इसी के गर्भ से हुआ था। विशेष दे० 'छाया'—७। ९ पदचिह्न (को०)। १० आज्ञा। आदेश (को०)।

**यौ०**—सज्ञाकरण = (१) नामकरण। नाम धरना। (२) चेतना लाना। होश मे लाना। सज्ञापुत्र = यम। सज्ञापुत्री। सज्ञा विपर्यय = होश गायब होना। सज्ञासुत। सज्ञाहीन।

**सज्ञाकरणरस**—सज्ञा पुं० [स० सञ्ज्ञाकरणरस] वैद्यक के अनुसार चेतना लानेवाली एक औषध का नाम।

**विशेष**—इस औषध मे शुद्ध सिंगीमुहरा, सेधा नमक, काली मिर्च रुद्राक्ष, कटाली, कायफल, महुआ और समुद्र फल आदि पडते है। इनकी मात्रा बराबर होती है। कहते है कि इसके सेवन से मनुष्य का सन्निपात रोग दूर हो जाता है।

**सज्ञात**—वि० [स० सञ्ज्ञात] ठीक ढग से जाना या समझा हुआ। सुज्ञात [को०]।

**यौ०**—सज्ञातरूप = जिसका आकार प्रकार या रूपरेखा सर्वविदित हो।

**सज्ञान**—सज्ञा पु० [स० सञ्ज्ञान] १ सकेत। इशारा। २ सम्यग् अनुभूति। ३ ज्ञान। समझ। बोध [को०]।

**सज्ञापन**—सज्ञा पुं० [स० सञ्ज्ञापन] १ दूसरो पर कोई बात प्रकट करना। विज्ञापन। २ कथन। ३ शिक्षित करना। बतलाना। सिखाना (को०)। ४. मारना। वध (को०)।

**सज्ञापुत्री**—सज्ञा स्त्री० [स० सञ्ज्ञापुत्री] यमुना का एक नाम। उ०—सज्ञापुत्री स्फुरच्छाया चद्रावलि चद्रलेखया। तापकारिनी नयनी चद्र कातिका स्मृता।—गिरधर दास (शब्द०)।

**सज्ञासुत**—सज्ञा पुं० [सं० सञ्ज्ञासुत] शनि का एक नाम।

**सज्ञासूत्र**—सज्ञा पुं० [स० सञ्ज्ञासूत्र] व्याकरण के अनुसार वे सूत्र जो सज्ञा का विधान करते हैं।

**सज्ञावान्**—वि० [सं० सञ्ज्ञावत्] १ नामवाला। २ सचेत। होश मे आया हुआ। चेतनायुक्त [को०]।

**सज्ञाहीन**—वि० [स० सञ्ज्ञाहीन] जिसे सज्ञा या चेतना न हो। चेतनारहित। बेहोश। बेसुध।

सज्ञिका—सज्ञा स्त्री० [स० सज्ञिका] अभिधान। आख्या [को०]।

सज्ञित—वि० [स० सज्ञित] १. विज्ञप्त। सूचित। २ सज्ञायुक्त। नामक। नामधारी।

सज्ञी'—वि० [स० सज्ञिन्] १ नाम धारण करनेवाला। २ ज्ञानवान्। जानकारी रखनेवाला। सज्ञान। ३ जिसका नाम रखा जाय [को०]।

सज्ञी'—सज्ञा पु० वह जिसमे सज्ञा हो। चेतन। (जैन)।

सज्ञु—वि० [स० सज्ञ] जिसके घुटने आपस मे टकराते हो। दे० 'सज्ञ'' [को०]।

सज्वर—सज्ञा पु० [स० सञ्ज्वर] [वि० सज्वरी] १ बहुत तीव्र ज्वर। बहुत तेज बुखार। २ किसी प्रकार का बहुत अधिक ताप। बहुत तेज गर्मी। ३. क्रोध आदि का बहुत अधिक आवेग।

सज्वरी—वि० [स० सञ्ज्वरिन्] ज्वर या तापयुक्त [को०]।

सज्वलन—सज्ञा पु० [स० सञ्ज्वलन] इधन। ईंधन [को०]।

सझल‡—वि० [स० सन्ध्या, प्रा० सझा+ल (प्रत्य०)] सध्या सबधी। सध्या का।

सझवाती'—सज्ञा स्त्री० [स० सन्ध्या+हि० वाती] १ सध्या के समय जलाया जानेवाला दीपक। शाम का चिराग। उ०—चद देख चकई मिलान सर फूले ऐसे, विपरीत काल है सुदेह कहियत है। वाती सझवाती घनसार नीर चदन सो वारि लीजियत न अनल चहियत है।—हृदयराम (शब्द०)। २. वह गीत जो सध्या समय गाया जाता है। प्राय यह विवाह के अवसर पर होता है।

सझवाती'—वि० सध्या सबधी। सध्या का।

सझा†—सज्ञा स्त्री० [स० सन्ध्या, प्रा० सझा] सूर्यास्त का समय। सध्या। शाम। उ०—सग के सकल अग अचल उछाह भग ओज बिन सूझत सरोज वन सझा सो।—देव (शब्द०)।

सड'—सज्ञा पुं० [सं० सण्ड] पढ। हीजडा। नपुसक [को०]।

सड'—सज्ञा पुं० [सं० शण्ड] साँड।

यौ०—सडमुसड।

सडमुसड—वि० [स० शण्ड, हि० सड+मुसड (अनु०)] हट्टा कट्टा। मोटा ताजा। बहुत मोटा।

सडा'—वि० [सं० शण्ड] मोटा ताजा। हृष्ट पुष्ट।

सडा'—सज्ञा पु० मोटा और बलवान् मनुष्य।

यौ०—सडा मुसडा = दे० 'सडमुसड'।

सड़ाई†—सज्ञा स्त्री० [हि० साँड] मशक की तरह बना हुआ भैंस आदि का वह हवा भरा हुआ चमडा जिसे नदी आदि पार करने के लिये नाव के स्थान पर काम मे लाते है।

सडास—सज्ञा पु० [स० सम्+न्यास (=त्याग, विसर्जन)] १. कूएँ की तरह का एक प्रकार का गहरा पाखाना। शौचकूप।

विशेष—यह जमीन के नीचे खोदा हुआ एक प्रकार का गहरा गड्ढा होता है जिसका ऊपरी भाग ढँका रहता है। केवल एक छिद्र बना रहता है जिसपर बैठकर मल त्याग करते है। मल उसी मे जमा होता जाता है। अधिक दुर्गध होने पर उसमे खारी, नमक आदि कुछ ऐसी चीजें छोडते है जिनमे मल गलकर मिट्टी हो जाता है। इसका प्रचार अधिकतर ऐसे नगरो मे है, जिनमे नल नही होता और नित्य मल बाहर फेकने मे कठिनता होती है। पर जबसे नल का प्रचार हुआ तबसे इस प्रकार के पाखाने बद होने लगे है।

२. सडास से मिलता जुलता वह पाखाना जिसका आकार ऊँचे खडे नल का सा होता है और जिसका नीचे का भाग पृथ्वी तल पर होता है। इसमे नीचे मकान से बाहर की ओर एक खिडकी रहती है जिसमे से मेहतर आकर मल उठा ले जाता है।

सडासी—सज्ञा स्त्री० [स० सम्+दशिका, हि० सँडसी] दे० 'सँडसी'। उ०—एक बार ए दोऊ कथा। सडासी लोहार की जथा। —अर्ध०, पृ० ४।

सडिश—सज्ञा पु० [स० सण्डिश] सँडसा। सँड़सी [को०]।

सडीन—सज्ञा पुं० [स० सण्डीन] पक्षियो की एक तरह की सुदर गति या उडान [को०]।

सढिका—सज्ञा स्त्री० [सं० सण्ढिका] ऊँटनी। साँडिनी [को०]।

सत'—सज्ञा पुं० [स० सन्त] सहतल। अजलि। अँजुरी [को०]।

सत'†—वि० [स० शान्त] दे० 'शात'। उ०—राए बधिअउँ सत हुअ रोस, लज्जाइअ निअ मनहि मन।—कीर्ति०, पृ० १८।

सत'—सज्ञा पु० [सं० सत् शब्द के कर्ताकारक का बहुवचन] १. साधु, सन्यासी, विरक्त या त्यागी पुरुष। महात्मा। उ०—या जग जीवन को है यहै फल जो छल छाँडि भजै रघुराई। शोधि के सत महतनहूँ पदमाकर बात यहै ठहराई —पदमाकर (शब्द०)। २. हरिभक्त। ईश्वर का भक्त। धार्मिक पुरुष। ३ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे २१ मात्राएँ होती हैं। ४ साधुओ की परिभाषा मे वह सप्रदायमुक्त साधु या सत जो विवाह करके गृहस्थ बन गया हो।

सतक्षण—सज्ञा पुं० [सं० सन्तक्षण] चुभने या लगनेवाली बात। व्यग्य [को०]।

सतत'—अव्य० [स० सन्तत] सदा। निरतर। बराबर। लगातार। उ०—सतत मोपर कृपा करेहू। सेवक जानि तजेहु जनि नेहूँ। मानस, ३।६।

सतत'—वि० १ विस्तृत। फैलाया हुआ। २ हमेशा रहनेवाला। ३ बहुत। अधिक। ४. अविकल। अटूट [को०]।

सतत—सज्ञा स्त्री० [स० सन्तति] दे० 'सतति'।

सतत ज्वर—सज्ञा पुं० [स० सन्तत ज्वर] वह ज्वर जो आठो पहर रहे। सदा बना रहनेवाला ज्वर।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यदि ऐसा ज्वर वायु की प्रबलता के कारण होता है तो लगातार सात दिनो तक, यदि पित्त की प्रबलता के कारण हो तो दस दिनो तक रहता है। इसकी गणना विषम ज्वर मे की जाती है।

**सतत द्रुम** -वि० [स० सन्ततद्रुम] घने वृक्षोवाला (जगल)। (वन) जो सघन वृक्षयुक्त हो [को०]।

**सततवर्षी**—वि० [स० सततवर्षिन्] अविरल या अटूट वृष्टि करनेवाला [को०]।

**सतति**—सज्ञा स्त्री० [स० सन्तति] १ बच्चे। सतान। औलाद। २ प्रजा। रिआया। ३ गोत्र। ४ विस्तार। प्रसार। फैलाव। ५ समूह। दल। झुड। ६ किसी बात का लगातार होते रहना। अविच्छिन्नता। ७ मार्कंडेय पुराण के अनुसार ऋतु की पत्नी का नाम जो दक्ष की कन्या थी। ८. अनुभूति (को०)।

**सततिक**—सज्ञा पु० [स० सन्ततिक] सतान। औलाद [को०]।

**सततिनिग्रह**—सज्ञा पु० [स० सन्तति निग्रह] दे० 'सततिनिरोध'।

**सततिनिरोध**—सज्ञा पुं० [स० सन्ततिनिरोध] जनसख्या की वृद्धि रोकने के लिये प्रजनन रोकना। प्राकृतिक अथवा कृत्रिम उपायो से गर्भाधान न होने देना।

**सततिपथ**—सज्ञा पु० [स० सन्ततिपथ] योनि, जिसके मार्ग से सतान उत्पन्न होती है। स्त्री की जननेंद्रिय। भग।

**सतितहोम**—सज्ञा पुं० [सं० सन्तति होम] वैदिक काल का एक प्रकार का यज्ञ जो सतान की कामना से किया जाता था।

**सततीⓅ†**—सज्ञा स्त्री० [स० सन्तति] दे० 'सतति'। उ०—सो वा कायस्थ के और कोऊ सततो नाही—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १९४।

**सततेयु**—सज्ञा पु० [स० सन्ततेयु] भागवत के अनुसार रौद्राश्व के एक पुत्र का नाम।

**सतनु**—सज्ञा पु० [स० सन्तनु] पुराणानुसार राधा के साथ रहनेवाले एक बालक का नाम।

**सतपन**[1]—सज्ञा पु० [स० सन्तपन] १ अच्छी तरह तपने की क्रिया। २ बहुत अधिक सताप या दु ख देना।

**सतपन**[2]—सज्ञा पुं० [हिं० सत+पन (प्रत्य०)] सत का भाव। सतई। साधुता।

**सतपना†**—सज्ञा पुं० [हिं० सत+पना (प्रत्य०)] दे० 'सतपन[2]'।

**सतप्त**[1]—वि० [स० सम्+तप्त, सन्तप्त] १ बहुत अधिक तपा हुआ। अत्यत तप्त। २ जला हुआ। दग्ध। ३ जिसे बहुत अधिक सताप हो। दु खी। पीडित। ४ विमनस्। मलीन मन। ५ बहुत थका हुआ। श्रात। ६ शुष्क। मुरझाया हुआ (को०)। ७ ताप की अधिकता से द्रवीभूत या पिघला हुआ।

यौ०—सतप्तचामीकर=तपाया हुआ या ताप की अधिकता से द्रवीभूत स्वर्ण। सतप्तवक्षा=जिसे साँस लेने मे हृदयपीडा होती हो। सतप्तहृदय=मानसिक पीडा से युक्त।

**सतप्त**[2]—सज्ञा पुं० कष्ट। दु ख। शोक [को०]।

**सतप्तायस्**—सज्ञा पुं० [सं० सन्तप्तायस्] तप्त लोह। तपने के कारण लाल रग का लोहा [को०]।

**सतमक**—सज्ञा पुं० [स० सन्तमक] श्वासकष्ट [को०]।

**सतमस्**—सज्ञा पुं० [स० सन्तमस्] १ अधकार। तम। अधेरा। २ मोह।

**सतरण**[1]—सज्ञा पु० [स० सन्तरण] अच्छी तरह से तरने या पार होने की क्रिया।

**सतरण**[2]—वि० १ तारनेवाला। पार करनेवाला। तारक। २. नष्ट करनेवाला। नाशक।

**सतरा**—पज्ञा पुं० [पुर्त० मगतरा] एक प्रकार का बडा और मीठा नीबू। बडी नारगी। दे० 'सगतरा'।

**सतरी**—सज्ञा पु० [अ० सैंटरी] १ किसी स्थान पर पहरा देनेवाला सिपाही। पहरेदार। उ०—जब पहरा तिनके हूँ गयो। द्वितीय सतरी आवत भयो।—रघुराज (शब्द०)। २. द्वार पर खडा होकर पहरा देनेवाला। द्वारपाल। दौवारिक।

**सतर्जन**—पज्ञा पुं० [स० सन्तर्जन] १ डाँट उपट करना। भर्त्सना करना। डराना धमकाना। २ कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

**सतर्जना**—सज्ञा स्त्री० [सं० सन्तर्जना] सतर्जन की क्रिया। धमकी [को०]।

**सतर्दन**—पज्ञा पुं० [स० सन्तर्दन] भागवत के अनुसार राजा धृष्टकेतु के एक पुत्र का नाम।

**सतर्पक**—वि० [स० सन्तर्पक] सतुष्ट या प्रसन्न करनेवाला। तृप्त करनेवाला।

**सतर्पण**—सज्ञा पु० [स० सन्तर्पण] १. जो भली भाति तृप्त करता हो। वह जो प्रसन्नता एव सतोषदायक हो। २ अच्छी तरह तृप्त करना। प्रसन्न एव सतुष्ट करना। ३ वह पदार्थ जो शक्ति एव ओज का वर्धन करता हो। शक्तिवर्धक पदार्थ। ४ एक प्रकार का चूर्ण जिसमे दाख, अनार, खजूर, केला, शक्कर, लाजा (लाई) का चूर्ण, मधु और घृत पडता है।

**सतर्पित**—वि० [सं० सन्तर्पित] सतुष्ट एव तृप्त किया हुआ [को०]।

**सतस्थान**—पज्ञा पु० [स० सन्तस्थान] सतो के रहने का स्थान। साधुओ का निवास स्थान। मठ।

**सतान**—सज्ञा पुं० [स० सन्तान] १. बालबच्चे। लडके बाले। सतति। औलाद। २ कल्पवृक्ष। देवतरु। ३ वश। कुल। ४ विस्तार। फैलाव। ५. वह प्रवाह जो अविच्छिन्न रूप से चलता हो। धारा। ६ प्रबध। इतजाम। ७ महाभारत के अनुसार प्राचीनकाल के एक प्रकार के अस्त्र का नाम। ८ विचारो का अविच्छिन्न क्रम। विचारधारा। ९ रग। स्नायु नस [को०]।

यौ०—सतानकर्म=सतति उत्पादन। सतानकर्ता=सतान पैदा करनेवाला। सतानगणपति। सतानगोपाल। सतानिग्रह=दे० 'सततिनिरोध'। सतानवर्धन=(१) वश बढाना। (२) सतान को बढानेवाला। सतानसधि।

**सतानक**[1]—वि० [सं० सन्तानक] १ जो दूर तक व्याप्त हो। फैला हुआ। विस्तृत। २ सतान करनेवाला। विस्तार करनेवाला। ३ प्रबधक। इतजाम या व्यवस्था करनेवाला (को०)।

**सतानक**[2]—सज्ञा पुं० १ कल्पवृक्ष। देवतरु। २ पुराणानुसार एक लोक जो ब्रह्मलोक से परे कहा गया है।

सतान गणपति—सज्ञा पुं० [स० सन्तान गणपति] पुराणानुसार एक प्रकार के गणपति का नाम।

सतान गोपाल—सज्ञा पुं० [स० सन्तान गोपाल] सतति देनेवाले कृष्ण। वासुदेव कृष्ण जिनकी पूजा सतानप्राप्ति के लिये की जाती है (को०)।

सतानसधि—सज्ञा स्त्री० [स० सन्तानसन्धि] कामदकीय नीति के अनुसार वह सधि जो अपना लडका या लडकी देकर की जाय। (कामदक)।

सतानिक—वि० [सं० सन्तानिक] [वि० स्त्री० सतानिका] कल्पवृक्ष के पुष्पो से निर्मित। जैसे, हार, माला आदि (को०)।

सतानिका—सज्ञा स्त्री० [स० सन्तानिका] १ क्षीर सागर। २ चाकू का फल। ३. फेन। ४ साढी। मलाई। ५ मर्कटजाल। सुश्रुत के अनुसार व्रणबधन मे प्रयुक्त एक द्रव्य। ६. पाकराजशेखर मे वर्णित एक प्रकार का मिष्ठान्न (को०)। ७ स्कद की एक मातृका (को०)।

सतानिनी—सज्ञा स्त्री० [सं० सन्तानिनी] मलाई। साढी (को०)।

संतानी—सज्ञा पुं० [स० सन्तानिन्] अविच्छिन्न विचारप्रवाह का विषय या वस्तु (को०)।

सताप—सज्ञा पुं० [स० सन्ताप] अग्नि या धूप आदि का ताप। जलन। आँच। २ दुख। कष्ट। व्यथा। ग्लानि। ३. मानसिक कष्ट। मनोव्यथा। पछतावा। ४. ज्वर। ५. शत्रु। दुश्मन। ६ दाह नाम का रोग। विशेष दे० 'दाह'-४। ७ आवेश। रोष (को०)।

यौ०—सतापकर, सतापकारक, सतापकारी = सताप देनेवाला। कष्टदायक। सतापहर, सतापहारक, सतापहारी = व्यथा या ताप का शमन करनेवाला।

सतापन[1]—सज्ञा पु० [स० सन्तापन] १. सताप देने की क्रिया। जलाना। २ बहुत अधिक कष्ट या दुख देना। ३ कामदेव के पाँच बाणो मे से एक बाण का नाम। ४ पुराणानुसार एक प्रकार का अस्त्र जिसके प्रयोग से शत्रु को सताप होना माना जाता है। ५ आवेग। उत्तेजन। रोष (को०)। ६ शिव का एक अनुचर (को०)। ७. एक बालग्रह (को०)।

सतापन[2]—वि० १ ताप पहुँचानेवाला। जलानेवाला। २ दुख देनेवाला। कष्ट पहुँचानेवाला।

सतापना Ⓤ†—क्रि० स० [स० सन्तापन] सताप देना। दुख देना। कष्ट पहुँचाना। सताना। उ०—जाको काम क्रोध नित व्यापै। अरु पुनि लोभ सदा सतापै। ताहि असाधु कहत कवि सोई। साधु भेष धरि साधु न होई।—सूर (शब्द०)।

सतापवत्—सज्ञा पु० [सं० सन्तापवत्] सताप या कष्ट से युक्त। जिसे सताप हो (को०)।

सतापित—वि० [स० सन्तापित] १ जिसे बहुत सताप पहुँचाया गया हो। पीडित। सतप्त। २. तपाया हुआ। जलाया हुआ (को०)।

सतापी—सज्ञा पु० [स० सन्तापिन्] वह जो सतप्त करता हो। सताप देनेवाला। दुखदायी।

सताप्य—वि० [स० सन्ताप्य] १ जलाने के योग्य। २. कष्ट या दुख देने के योग्य। तकलीफ देने के लायक।

सतार—संज्ञा पु० [स० सन्तार] १ पार करना। पार जाना। २ नदी आदि का वह छिछला स्थान जहाँ से हलकर नदी पार की जा सके। घाट। तीर्थ (को०)।

सतावना Ⓤ—स० क्रि० [हिं० सतापना] दे० 'सतापना'। उ०—जिव दे जिव सतावते पलटू उनकी टेक।—पलटू०, भा० १, पृ० १८।

यौ०—सतार नौ = वह नौका जिससे नदी आदि पार की जाय। घटहा।

सति—सज्ञा स्त्री० [स० सन्ति] १. दान। भेट। अँकोर। २ अवसान। अत। समाप्ति।

सतो[1]—अव्य० [स० सन्ति ? प्रा० सतिअ, सतिग < स० सत्क ?] बदले मे। एवज मे। स्थान मे। उ०—उसने उसकी पसलियो मे से एक पसली निकाली और उसको सती मास भर दिया।—दयानद (शब्द०)।

सतो Ⓤ†[2]—अव्य० [प्रा० सुन्तो] से। द्वारा। उ०—सो न डोल देखा गजपती। राजा सत्त दत्त दुहुँ संती।—जायसी (शब्द०)।

सतुलन—सज्ञा पु० [स० सन्तुलन] १. तौल। वजन। २. आपेक्षिक भार बराबर होना। ठीक अनुपात होना। वजन ठीक कायम रहना। ३ तौलने की क्रिया।

सतुलित—वि० [स० सन्तुजित] १. ठीक ढग से तौला हुआ। २ समान अनुपात का। पूर्ण नियत्रित। जैसे,—सतुलित व्यवहार। ३. सयत। सुस्थिर। जसे,—सतुलित व्यक्ति।

सतुषित—सज्ञा पुं० [स० सन्तुषित] ललितविस्तर के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

सतुष्ट—वि० [स० सन्तुष्ट] १ जिसका सतोष हो गया हो। जिसकी तृप्ति हो गई हो। तृप्त। २ जो मान गया हो। जो राजी हो गया हो। जैसे,—इन्हे किसी तरह समझा बुझाकर सतुष्ट कर लो, फिर सब काम हो जायगा। ३ प्रसन्न। खुश (को०)।

सतुष्टि—सज्ञा स्त्री० [स० सन्तुष्टि] सतुष्ट होने का भाव। २ इच्छा की पूर्ति। तृप्ति। २. प्रसन्नता (को०)।

सतृण—वि० [स० सम्+तृण] १ परस्पर बँधा हुआ या सलग्न। जुडा हुआ। २. आच्छादित। ढँका हुआ (को०)।

सतृप्त—वि० [स० सम्+तृप्त] पूर्ण रूप से तृप्त या अघाया हुआ।

सतृप्ति—सज्ञा स्त्री० [सं० सम्+तृप्ति] पूर्ण सतुष्ट होने का भाव। सतुष्टि।

संतोख Ⓤ†—सज्ञा पुं० [सं० सन्तोष] दे० 'सतोष'।

सतोखी†—वि० [स० सन्तोषिन्] दे० 'सतोषी'।

**सतोष**—सज्ञा पु० [स० सन्तोष] १ मन की वह वृत्ति या अवस्था जिसमे मनुष्य अपनी वर्तमान दशा मे ही पूर्ण सुख का अनुभव करता है, न तो किसी बात की कामना करता है और न किसी बात की शिकायत। हर हालत मे प्रसन्न रहना। सतुष्टि। सब्र। कनायत। उ०—गोधन, गजधन, वाजिधन और रतन धन खान। जब आवत सतोष धन सब धन धूरि समान। तुलसी (शब्द०)।

**विशेष**—हमारे यहाँ पातजल दर्शन के अनुसार 'सतोष' योग का एक अग और उसके नियम के अर्तगत है। इसकी उत्पत्ति सात्विक वृत्ति से मानी गई है, और कहा गया है कि इसके पैदा हो जाने पर मनुष्य को अनत और अखड सुख मिलता है। पुराणानुसार धर्मानुष्ठान से सदा प्रसन्न रहना और दु ख मे भी आतुर न होना सतोष कहलाता है।

**क्रि० प्र०**—करना।—मानना।—रखना।—होना।

२ मन की वह अवस्था जो किसी कामना या आवश्यकता की भली-भाँति पूर्ति होने पर होती है। तृप्ति। शाति। इतमीनान। जैसे,—पहले मेरा सतोष करा दीजिए, तब मैं आपके साथ चलूँगा। ३ प्रसन्नता। सुख। हर्ष। आनद। जैसे,—हमे यह जानकर बहुत सतोष हुआ कि अब आप किसी से वैमनस्य न करेंगे। ४ अगूठा और तर्जनी (को०)।

**सतोषक**—वि० [स० सन्तोषक] सतोष देनेवाला। सतोषदायक [को०]।

**सतोषण**—सज्ञा पु० [सं० सन्तोषण] सतुष्ट या प्रसन्न करने का भाव। दे० 'सतोष'।

**सतोषणीय**—वि० [स० सन्तोषणीय] १ सतोष करने योग्य। २ सतोष कराने योग्य।

**सतोषन**†—वि० स्त्री० [स० सन्तोषिन्] जो सतोष करती हो। सतोष करनेवाली। उ०—गरीबिनी है। अच्छा बोलती बतलाती है और सतोषन भी है।—त्याग०, पृ० ६०।

**सतोषना** १)†—क्रि० स० [स० सन्तोष + हिं० ना (प्रत्य०)] सतोष दिलाना। सतुष्ट करना। तबीयत भरना। उ०—मेघनाद ब्रह्मा वर पायो। आहुति अगिनि जिवाइ सतोषी निकस्यो रथ बहु रतन बनायो। आयुध धरे समेत कवच सजि गरजि चढयो रणभूमिहि आयो। मनो मेघनायक ऋतु पावस बाण वृष्टि करि सैन खपायो।—सूर० (शब्द०)।

**सतोषना**२—क्रि० अ० सतुष्ट होना। प्रसन्न होना।

**सतोषित**१—वि० [स० सन्तोषित] प्रसन्न किया हुआ। इतमीनान कराया हुआ। सतोष कराया हुआ।

**सतोषित**२—वि० [स० सतोष, स० सन्तुष्ट] जिसका सतोष हो गया हो। सतुष्ट। उ०—नामदेव कह इतनहिं लैहौं। इतने महँ सतोषित जैहौ।—रघुराज (शब्द०)।

**विशेष**—यह रूप अशुद्ध है, शुद्ध रूप सतुष्ट है। पर 'सतोषित' शब्द का भी प्रयोग कहीं कहीं हिंदी कविता मे पाया जाता है।

**सतोषी**—सज्ञा पुं० [स० सन्तोषिन्] १ वह जो सदा सतोष रखता हो। जिसे बहुत लालसा न हो। २ सब्र करनेवाला। सतुष्ट रहनेवाला।

**सतोष्य**—वि० [स० सन्तोष्य] सतोष करने के योग्य।

**सत्य**—सज्ञा पुं० [सं० सत्य] अग्निदेव का एक नाम जो सब प्रकार के फल देनेवाले माने जाते हैं।

**सत्यक्त**—वि० [स० सम्त्यक्त] १ पूर्णत परित्यक्त या छोडा हुआ। त्यक्त। २ वचित या रहित किया हुआ [को०]।

**सत्यजन**—सज्ञा पुं० [स० सन्त्यजन] त्याग करना। छोडना [को०]।

**सत्याग**—सज्ञा पुं० [स० सन्त्याग] छोड देना। त्यागना [को०]।

**सत्याज्य**—वि० [स० सन्त्याज्य] परित्याग करने योग्य। छोड देने लायक [को०]।

**सत्रस्त**—वि० [स० सत्रस्त] अत्यत भयभीत। डर से कपित [को०]।

**यौ०**—सत्रस्तगोचर = जिसे देखकर डर लगे।

**सत्राण**—सज्ञा पु० [स० सत्राण] रक्षा। उद्धार [को०]।

**सत्रास**—सज्ञा पुं० [स० सन्त्रास] भय। डर। त्रास [को०]।

**सत्रासन**—सज्ञा पुं० [स० सन्त्रासन] [वि० सत्रासित] भयभीत या आतकित करना [को०]।

**सत्रासित**—वि० [स० सन्त्रासित] त्रस्त किया हुआ। भयभीत किया हुआ [को०]।

**सत्री**—सज्ञा पु० [अ० सेन्ट्री, हिं० सतरी] दे० 'सतरी'।

**सत्वरा**—सज्ञा स्त्री० [स० सन्त्वरा] शीघ्रता। तत्परता। हडबडी। जल्दबाजी [को०]।

**सथा**—सज्ञा पु० [स० सहिता या सस्था] १ चटसार। पाठशाला। २ एक बार मे पढाया हुआ अश। पाठ। सबक। उ०—किसने कहा कि हम लोग धर्म के मर्मज्ञ हैं? हम लोग गाने बजाते नहीं थे, सथा बोलते थे।—दुर्गाप्रसाद मिश्र (शब्द०)।

**क्रि० प्र०**—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

**सथान**)—सज्ञा पुं० [स० सस्थान] दे० 'सस्थान'। उ०—आनोजै गनिग राव परवत बेहान। सोभत गिरि सथान साथ सामत सिवानै।—पृ० रा०, १२।५४।

**सथाल**—सज्ञा स्त्री० [देश०] १ बिहार का एक परगना। २ वहाँकी एक आदिवासी जाति और उसका मनुष्य।

**सथाली**१—वि० [हिं० सथाल + ई० (प्रत्य०)] सथाल जाति, देश या भाषा से सबद्ध। सथाल का।

**सथाली**२—सज्ञा स्त्री० १ सथाल जाति की स्त्री। २ सथालो की भाषा।

**सदश**—सज्ञा पु० [स० सन्दश] १ सँडसी नाम का लोहे का औजार। २ न्याय या तर्क के अनुसार अपने प्रतिपक्षी को दोनो ओर से उसी प्रकार जकड या बाध देना जिस प्रकार सँडसी मे कोई बरतन पकडते हैं। ३ सुश्रुत के अनुसार सँडसी के आकार का, प्राचीन काल का एक प्रकार का औजार जिसकी सहायता से शरीर मे गडा हुआ काँटा आदि निकालते थे।

कंकमुख । ४ स्वर वा व्यजन आदि के उच्चारण के लिये जोर से दाँतो का सवरण, सपीडन या भीचना (को०) । ५ नरक-विशेष का नाम (को०) । ६ पुस्तक का कोई परिच्छेद (को०) । ७ गाँव का किनारा या पार्श्व (को०) । ८ शरीर के उन अगो का नाम जिनसे कोई वस्तु पकडने का काम लेते है (को०) ।

**सदशक**—सज्ञा पुं० [स० सन्दशक] १ सँडसी । २ चिमटा (को०] ।

**सदशिका**—सज्ञा पु० [स० सन्दशिका] १ सँडसी । २ चिमटी । ३ कैंची । ४ (चोच से) काटना, नोचना या पकडना (को०) ।

**सदशित**—वि० [स० सन्दशित] जो कवच धारण किए हो । कवच-युक्त ।

**सद**[1]—सज्ञा पु० [स० सन्धि] दरार । छेद । बिल ।

**सद**[2]—सज्ञा पु० [स० (उप०) सम् + √दश्, दश् (=दबाना) अथवा सन्दान (=एक साथ बाँधना ?)] दबाव । उ०—बोलि लिए यशुमति यदुनदहि । पीत झगलिया की छवि छाजति विज्जुलता सोहति मनौ कदहि । बाजापति अग्रज अवाते अरजथान सुत माला गदहि । मनो सुरग्रह ते मुरिरपु कन्या सौतै आवति ठुरि सदहि ।—सूर (शब्द०) ।

**सद(ऊ)**[3]—सज्ञा पु० [स० सनन्दन] एक ऋषि । सनदन ऋषि ।

**सदर्प**—सज्ञा पुं० [स० सन्दर्प] घमड । गरूर (को०] ।

**सदर्भ**—सज्ञा पुं० [स० सन्दर्भ] १ रचना । बनावट । २. साहित्यिक रचना या ग्रथ । प्रबध । निबंध । लेख । ३ वह ग्रथ जिसमे किसी और ग्रथ के गूढ वाक्यो आदि का अर्थ या स्पष्टीकरण आदि हो । ४ कोई छोटी पुस्तक । ५ वह पुस्तक जिसमे अनेक प्रकार की बातो का सग्रह हो । ६ विस्तार । फैलाव । ७ एक साथ क्रमबद्ध करना नत्थी करना । गूँथना (को०) । ८ प्रसग । संबध । जैसे—इस बात का सदर्भ क्या है ? इस सदर्भ मे हमे कुछ नही कहना है । ९ सगीत । निरतरता (को०) । १० बुनना (को०) ।

यौ०—सदर्भविरुद्ध = असबद्ध । प्रसगरहित । सदर्भशुद्ध = जिसका सदर्भ या सबध ठीक हो । सदर्भशुद्धि = काव्यनिर्माण मे पूर्वापर क्रम से सबध निर्वाह की शुद्धता ।

**सदर्श**—सज्ञा पु० [स० सन्दर्श] झलक । दृश्य (को०] ।

**सदर्शन**—सज्ञा पुं० [स० सन्दर्शन] १ अच्छी तरह देखने की क्रिया । अवलोकन । २ घूरना । अपलक देखना । टकटकी लगाकर देखना (को०) । ३ दृष्टि । निगाह । नजर (को०) । ४ परीक्षा । इम्तहान । जाँच । पर्यवेक्षण । ५ ज्ञान । ६ आकृति । सूरत । शक्ल । ७ रामायण के अनुसार एक द्वीप का नाम । ८ व्यवहार (को०) । ९ दिखाना । प्रदर्शित करना (को०) ।

यौ०—सदर्शनद्वीप = एक द्वीप का नाम । सदर्शनपथ = दृष्टिपथ । आँख ।

**सदर्शयिता**—वि० [स० सन्दर्शयितृ] दिखाने या व्यक्त करने-वाला (को०] ।

**सदर्शित**—वि० [स० सन्दर्शित] दिखाया हुआ । व्यक्त किया हुआ ।

**सदल**—सज्ञा पुं० [फा०] श्रीखड । चदन । विशेष दे० 'चदन' ।

**सदलित**—वि० [स० सन्दलित] विद्ध । निर्भिन्न । छिद्रित, कुचला या दला हुआ । दलित (को०] ।

**सदली**[1]—वि० [फा० सदल] सदल के रग का । हलका पीला (रग) । २ सदल का । चदन का । जैसे,—सदली कलमदान ।

**सदली**[2]—सज्ञा स्त्री० १ तिपाई । कुर्सी । चौघडिया । २ सदल की बनी हुई वस्तु (को०] ।

**सदली**[3]—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का हलका पीला रंग ।

विशेष—यह रग कपडे को चंदन के बुरादे के साथ उबालने से आता है । इससे कपडे मे सुगधि भी आ जाती है । आजकल कई तरह की बुकनियो से भी यह रग तैयार किया जाता है ।

२ एक प्रकार का हाथी जिसे दाँत नही होते । ३ घोडे की एक जाति ।

**सदष्ट**[1]—वि० [स० सन्दष्ट] १ आपस मे मिलाकर दबाया हुआ । २ जिसे दाँतो से काटा गया हो । ३ चर्वित । चबाया हुआ (को०] ।

**सदष्ट**[2]—सज्ञा पु० उच्चारण सबधी एक प्रकार का विशेष दोष जो दाँतो को दबाकर बोलने से होता है (को०] ।

**सदाता**—वि० [स० सन्दात] बाँधनेवाला (को०] ।

**सदान**[1]—सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार की निहाई जिसका एक कोना नुकीला और दूसरा चौडा होता है । अहरन । घन ।

**सदान**[2]—सज्ञा पु० [स० सन्दान] १ बधन । रस्सी । २ बाँधने की सिकडी आदि । ३ बाँधने की क्रिया । ४ हाथी का गंडस्थल जहाँ से उसका मद बहता है । ५ हाथी के पैरका वह भाग जिसमे साँकल बाँधी जाती है (को०) । ६ काटना । विभक्त करना (को०) ।

**सदानक**—सज्ञा पु० [स० सन्दानक] कबूतर का घोसला (को०] ।

**सदानिका**—सज्ञा स्त्री० [स० सन्दानिका] १ दुर्ग ध खैर । विट खदिर । बबूरी । २ एक प्रकार की मिठाई (को०) ।

**सदानित**—वि० [स० सन्दानित] १ बाँधा हुआ । बद्ध । २ पाशबद्ध । निगडित (को०] ।

**सदानितक**—सज्ञा पु० [स० सन्दानितक] एक वाक्य मे निबद्ध तीन श्लोको या पद्यो का नाम ।

**सदानिनी**—सज्ञा स्त्री० [स० सन्दानिनी] गौओ के रहने का स्थान । गोशाला ।

**सदाय**—सज्ञा पुं० [स० सन्दाय] ग्रहण । पगहा । बलगा (को०] ।

**सदाव**—सज्ञा पु० [स० सन्दाव] भागने की क्रिया । पलायन ।

**सदास**—सज्ञा पु० [देश०] सफेद डामर धूप । मरहम । कहरुवा ।

विशेष—इसका वृक्ष प्राय पच्छिमी घाट मे पाया जाता है । यह सदा हरा रहता है ।

**सदाह**—सज्ञा पु० [स० सन्दाह] १ वैद्यक के अनुसार मुख, तालु और होठो की जलन । २ जलना (को०) ।

सदि पु०—पद्मा स्त्री० [सं० सन्धि] मेल। मधि। उ०—रूप सँवर सदि सो वहु आपुयो अनयास। पाइ पूरण रूप को रमि भूमि केशवदास।—केशव (शब्द०)।

सदिग्ध'—वि० [सं० सन्दिग्ध] १ जिसमे किसी प्रकार का सदेह हो। सदेहपूर्ण। सशयजनक। मुश्तवह। २ सना हुआ। ढका हुआ। ३ श्रात। विह्वल। ४ सशक (को०)। ५ अव्यवस्थित। अस्पष्ट। जैसे,—वाक्य। ६ खतरनाक। असुरक्षित (को०)। ७ विष से भरा हुआ। विषाक्त (को०)।

सदिग्ध'—सज्ञा पुं० १ उत्तराभास। मिथ्या उत्तर का एक लक्षण। २ एक प्रकार का व्यग्य जिसमे यह नही प्रकट होता कि वाचक या व्यजक मे व्यग्य है। ३ वह जिसपर किसी अपराध का सदेह किया जाय। जैसे,—राजनीतिक सदिग्ध। ४ सशय। अनिश्चय (को०)। ५ अनुलेपन। लेपन (को०)।

सदिग्धता—सज्ञा स्त्री० [स० सन्दिग्धता] दे० सदिग्धत्व' (को०)।

सदिग्धत्व—सज्ञा पु० [स० सन्दिग्धत्व] १ सदिग्ध होने का भाव या धर्म। सदिग्धता। २ अलकार शास्त्रानुसार एक प्रकार का दोष जो उस समय माना जाता है जब कि किसी उक्ति का ठीक ठीक अर्थ प्रकट नही होता। अर्थ के सबध मे कुछ सदेह बना रहता है।

संदिग्धनिश्चय—वि० [स० सन्दिग्ध निश्चय] किसी बात या कार्य पर दृढ न हो सकनेवाला (को०)।

संदिग्धफल—वि० [स० सन्दिग्धफल] १ विषाक्त बाण रखनेवाला। २ जिसकी नोक विषबुझी हो। जैसे,—तीर, गाँसी (को०)।

सदिग्धबुद्धि—वि० [स० सन्दिग्धबुद्धि] सदेही। शकी (को०)।

सदिग्धमति—वि० [सं० सन्दिग्धमति] दे० 'सदिग्धबुद्धि' (को०)।

सदिग्धार्थ'—वि० [स० सन्दिग्धार्थ] सदिग्ध अर्थवाला। जिसका मतलब सदेहास्पद हो (को०)।

सदिग्धार्थ'—सज्ञा पुं० वह विषय जिसपर मतैक्य न हो। २ वह अर्थ जो सदेहास्पद हो (को०)।

सदिग्धीकृत—वि० [स० सन्दिग्धीकृत] जिसे सदिग्ध किया गया हो जिसे सशय युक्त या सदेहास्पद किया गया हो।

संदित—वि० [स० सन्दित] बाँधा हुआ। ग्रस्त। निगडित (को०)।

सदिष्ट'—वि० [सं० सन्दिष्ट] १ कथित। कहा हुआ। बताया हुआ। २ सकेतित। इगित (को०)। ३ वादा किया हुआ। प्रतिज्ञात (को०)। ४ निर्दिष्ट (को०)।

सदिष्ट'—सज्ञा पु० १ वार्ता। बातचीत। २ समाचार। खबर। ३ सदेशवाहक। चर (को०)।

सदिष्टार्थ—सज्ञा पु० [स० सन्दिष्टार्थ] वह जो एक का समाचार दूसरे तक पहुँचाता हो। सँदेसा ले जानेवाला दूत। कासिद।

सदिहान—वि० [स० सन्दिहान] सदिग्ध। सशयपूर्ण (को०)।

सदी—सज्ञा स्त्री० [स० सन्दी] शय्या। पलग। खाट।

सदीपक—वि० [स० सन्दीपक] उद्दीपन करनेवाला। उद्दीपक।

सदीपन'—सज्ञा पुं० [सं० सन्दीपन] १ उद्दीप्त करने की क्रिया। उद्दीपन। प्रज्वलित करना। २ कृष्ण के गुरु का नाम। विशेष दे० 'सादीपनि'। ३ कामदेव के पाँच बाणो मे से एक बाण का नाम।

सदीपन'—वि० १ उद्दीपन करनेवाला। उत्तेजन करनेवाला। २ सुलगानेवाला। प्रज्वलित करनेवाला (को०)।

सदीपनी'—सज्ञा स्त्री० [स० सन्दीपनी] सगीत मे पचम स्वर की चार श्रुतियो मे से तीसरी श्रुति।

सदीपनी'—वि० सदीपन करनेवाली। उद्दीप्त करनेवाली।

सदीपित—वि० [स० सन्दीपित] १ जिसका सदीपन किया गया हो। सदीप्त। उद्दीप्त। २ जलाया हुआ। प्रज्वलित।

सदीप्त—वि० [सं० सन्दीप्त] १ प्रज्वलित। २ उद्दीप्त। ३ उत्तेजित। उकसाया हुआ (को०)।

सदीप्य'—सज्ञा पुं० [स० सन्दीप्य] मयूरशिखा नामक वृक्ष।

सदीप्य'—वि० सदीपन करने के योग्य। सदीपनीय।

सदुष्ट—वि० [स०] १ कलुषित किया हुआ। खराब। २ नीच। दुष्ट। ३ विकृत। कुरूप (को०)।

सदूक—पद्मा पु० [अ० सदूक] [अल्पा० सदूकचा, सदूकची] लकडी, लोहे, चमडे आदि का बना हुआ चौकोर पिटारा जिसमे प्राय कपडे, गहने आदि चीजें रखते है। पेटी। बकस।

सदूकचा—सज्ञा पु० [अ० सदूक+चह् (प्रत्य०)] छोटा सदूक। छोटा बकस। छोटी पेटी।

सदूकची—सज्ञा स्त्री० [अ० सदूक+ची (प्रत्य०)] छोटी पेटी या सदूक।

सदूकडी—सज्ञा स्त्री० [अ० सदूक+डी (प्रत्य०)] छोटा सदूक। छोटा बकस।

सदूकिया‡—पद्मा स्त्री० [अ० सदूक+हिं० इया (प्रत्य०)] सदूक। बकस। पेटी।

सदूकी—वि० [अ० सदूक] सदूक सा। बकसनुमा। सदूक के आकार का। जैसे, सदूकी कब्र।

सदूख—सज्ञा पु० [हिं० सदूक] दे० 'सदूक'।

सदूर पु०—सज्ञा पुं० [स० सिन्दूर] दे० 'सिदूर'। उ०—नवल सिंगार बनाइत कीन्हा। सीस पसारहि सदुर दीन्हा।—जायसी (शब्द०)।

सदूषण—सज्ञा पुं० [स० सन्दूषण] सदुष्ट करना। कलुषित या खराब करना (को०)।

सदूषित—वि० [स० सन्दूषित] १ दूषित किया हुआ। २ (रोग) जो असाध्य हो गया हो। जिसकी हालत और भी खराब हो उठी हो (मर्ज)। ३ जिसकी निंदा की गई हो।

सदृब्ध—वि० [स० सन्दृब्ध] परस्पर गुँथा हुआ (को०)।

सदृश्य—वि० [स० सन्दृश्य] १ किसी के अनुरूप या समान देख पडनेवाला। २ दे० 'सदृष्ट'।

सदृष्ट—वि० [स० सन्दृष्ट] १ पूर्ण रूप से अवलोकित। भली भाँति देखा हुआ। २ निर्दिष्ट (को०)।

सदेग्धा—वि० [स० सन्देग्धृ] शक्की स्वभाव का। सदेहालु।

सदेव—सज्ञा पु० [स० सन्देव] हरिवश के अनुसार देवक से एक पुत्र का नाम।

सदेवा—सज्ञा स्त्री० [स० सन्देवा] वसुदेव की स्त्री और देवक की कन्या का नाम। इनका दूसरा नाम श्रीदेवा या सुदेवा भी है।

संदेश—सज्ञा पुं० [स०] १ समाचार। हाल। खबर। सवाद। २ एक प्रकार की बँगला मिठाई जो छेने और चीनी के योग से बनती है। ३ वाचिक कथन। सँदेसा। ४ दे० 'सदश'। ५ आज्ञा। आदेश (को०)।

यौ०—सदेशपद=समाचार के शब्द। सदेशवाक्=समाचार। हाल। सदेशवाहक, सदेशहारक, सदेशहारी=सदेश ले जानेवाला।

सदेशहर—सज्ञा पु० [स० सन्देशहर] सदेसा या समाचार ले जानेवाला। वार्तावाह। दूत। कासिद।

सदेशा—सज्ञा पु० [स० सन्देश] दे० 'सदेश'।

सदेशी—सज्ञा पु० [स० सन्देशिन्] सदेश लानेवाला। समाचार वाहक। बसीठ। दूत।

सदेस—सज्ञा पु० [स० सन्देश] दे० 'सदेश'।

सदेसड़ा पु०—सज्ञा पु० [हिं० सदेस+राज० डा (प्रत्य०)] सदेश। हालचाल। समाचार। कथन। उ०—अवसर जे नहिं आविया, वेला जे न पहुत्त। सज्जण तिण सदेसडइ, करिजइ राज वहुत्त। —ढोला०, दू० १७६।

सदेसरा पु०—सज्ञा पु० [हिं० सदेस+रा (प्रत्य०)] दे० 'सदेशडा'।

सदेसी†—पज्ञा पु० [स० सन्देशिन्] सदेशी। बसीठ। दूत।

सदेह—सज्ञा पु० [स० सन्देह] १ वह ज्ञान जो किसी पदार्थ की वास्तविकता के विषय मे स्थिर न हो। किसी विषय मे ठीक या निश्चित न होनेवाला मत या विश्वास। मन की वह अवस्था जिसमे यह निश्चय नही होता कि यह चीज ऐसी ही है या और किसी प्रकार की। अनिश्चयात्मक ज्ञान। सशय। शका। शक। उ०—तव खगपति विरचि पहि गएऊ। निज सदेह सुनावत भएऊ।—मानस, ७।६०।

क्रि० प्र०—करना।—डालना।—मिटना।—मिटाना।—होना।

यौ०—सदेहगध=सदेह का आभास या झलक। सदेहच्छेदन=शक दूर करना। सदेह न रहना। सदेहदायी=शका उत्पन्न करनेवाला। शक धरानेवाला। सदेहदोला=दुवधा की स्थिति। अनिश्चय की अवस्था। सदेहनाश=सशय मिटना। सदेहपद=सशय की जगह। सदेह का स्थान। सदेहभजन=शक या शका दूर करना।

२. एक प्रकार का अर्थालकार।

विशेष—यह उस समय माना जाता है जब किसी चीज को देखकर सदेह बना रहता है, कुछ निश्चय नही होता। 'भ्रांति' मे और 'सदेह' मे यह अतर है कि भ्रांति मे तो भ्रमवश किसी एक वस्तु का निश्चय हो भी जाता है, पर इसमे कुछ भी निश्चय नही होता। कविता मे इस अलकार के सूचक प्राय धौ, किधौ, आदि सदेहवाचक शब्द आते हैं। जैसे,—(क) को तुम हरिदासन महँ कोई। मोरे हृदय प्रीति अति होई। को तुम राम दीन अनुरागी। आए मोहि करन बडभागी। —तुलसी (शब्द०)। (ख) सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है कि सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है। कुछ आचार्यो ने इसके निश्चयगर्भ, निश्चयांत और शुद्ध ये तीन भेद माने है।

३ जोखिम। खतरा। डर (को०)। ४ शरीर के भौतिक उपकरणो का उपचयन (को०)।

सदेहात्मक—वि० [स० सन्देहात्मक] सदिग्ध (को०)।

सदेहास्पद—वि० [स० सन्देहास्पद] सदेह का स्थान। सदिग्ध।

सदेही—वि० [स० सन्देहिन्] १ सदेहवाला। शक्की। २ अनिश्चयात्मक (को०)।

सदोल—पज्ञा पु० [स० सन्दोल] कान मे पहनने का कर्णफूल नाम का गहना।

सदोह—सज्ञा पु० [स० सन्दोह] १ समूह। झुड। उ०—जयति निर्भरानद सदोह कपि केसरी सुप्रन भुवनैक भर्ता।—तुलसी (शब्द०)। २ दूध दुहना (को०)। ३. गायो आदि के झुड का सारा दूध (को०)।

सद्रव—सज्ञा पुं० [स० सन्द्रव] १ गूँथने की क्रिया। गुथन। २. पलायन। भागना (को०)।

संद्राव—पज्ञा पुं० [स०] १ युद्ध क्षेत्र से भागने की क्रिया। पलायन। २ चाल। गति (को०)। ३ दौडने का स्थान (को०)।

सध पु०१—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धि] दे० 'सधि'।

सध२—वि० [सं० सन्ध] १ रखनेवाला। धारण करनेवाला। २. मिला-हुआ। युक्त (को०)।

सध३—सज्ञा पुं० योग। लगाव। सबध (को०)।

सधना पु०—क्रि० अ० [स० सन्धि] सयुक्त होना। मिलना। उ०—पक्ष दू सधि सध्या सधो हे मनो।—केशव (शब्द०)।

सधा—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धा] १ स्थिति। २ प्रतिज्ञा। करार। ३. सधान। सधि। मिलन। ४ सध्या काल। साँझ।

यौ०—सधा भाषा=अस्पष्ट भाषा जो साफ न व्यक्त हो। सधाभाष्य, सधावचन=अस्पष्ट कथन। घुमाफिरा कर कही हुई उलझन भरी उक्ति।

५ अनुसधान। तलाश। ६ सीमा। हद (को०)। ७ घनिष्ट या प्रगाढ सबध (को०)। ८ स्थिरता। स्थैर्य (को०)। ९. शराब चुवाना। मद्यसधान (को०)।

सधातव्य—वि० [स० सन्धातव्य] १. एक मे मिलाने या युक्त करने के योग्य। २. जिससे सधान या सधि की जाय (को०)।

**सधाता**—सज्ञा पुं० [स० सन्धातृ] १ शिव। २ विष्णु।

**सधान**—सज्ञा पुं० [स० सन्धान] १ धनुष पर बाण चढाने की क्रिया। लक्ष्य करने का व्यापार। निशाना लगाना। २ शराब बनाने का काम। ३ मदिरा। शराब। ४ सघट्टन। योजन। मिलाना। मिश्रण (ओषधि या अन्य पदार्थो का)। ५ अन्वेषण। खोज। ६ मुरदे को जिलाने की क्रिया। पुनर्जीवन। सजीवन। ७ एक मिश्रित धातु। काँसा। कास्य। ८ सधि। जोड। ९ अच्छे स्वाद की चीज। १० काँजी। ११ मैत्री। मेल। दोस्ती (को०)। १२ अवधान (को०)। १३ निदेशन (को०)। १५ सँभालना। सहारा देना (को०)। १६ अँचार आदि बनाना (को०)। १७ रक्तस्राव का अवरोध करनेवाली ओषधियो के द्वारा चमडे की सिकुडन (को०)। १८ सौराष्ट्र या काठियावाड का एक नाम।

यौ०—सधानकर्ता=सधान करनेवाला। सधानतान=सगीत मे एक तान। सधानभाड=अचार आदि बनाने का पात्र। सधानभाव=दे० 'सधानताल'।

**सधानना**†—क्रि० स० [स० सन्धान+ना (प्रत्य०)] १ धनुष चढाना। धनुष पर बाण चढाकर लक्ष करना। निशाना लगाना। २ बाण छोडना। तीर चलाना। ३ किसी अस्त्र को प्रयोग करने के लिये ठीक करना।

**संधाना**—सज्ञा पु० [स० सन्धानिका] अचार। खटाई। उ०—पुनि सधाने आए बर्साधे। दूह दही के मुरडा बाँधे।—जायसी ग्र०, पृ० १२४।

**सधानिका**—सज्ञा स्त्री० [सं० सन्धानिका] प्राचीन काल का एक प्रकार का आम का अचार।

**सधानित**—वि० [स० सन्धानित] १ मिलाया हुआ। साथ साथ नत्थी किया हुआ। २ बाँधा हुआ। कसा हुआ। ३ जिसका सधान किया गया हो (को०)।

**सधानिनी**—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धानिनी] गौओ के रहने का स्थान। गोशाला।

**सधानी**[1]—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धानी] एक मे मिलने या मिश्रित होने की क्रिया। मिलन। २ प्राप्ति। ३ बधन। ४ अन्वेषण। तलाश। ५ पालन। ६ काँजी। ७ अचार। खटाई। ८ वह स्थान जहाँ ढलाई की जाती है। ९ वह स्थान जहाँ मदिरा बनाई जाती है। १० दे० 'सधान'। ११ मदिरा बनाना। शराब चुआना (को०)।

**सधानी**[2]—वि० [स० सन्धानिन्] १ निशाना लगाने मे प्रवीण। २ मदिरा तैयार करनेवाला। ३ एक साथ मिलाने या मुक्त करनेवाला (को०)।

**सधापगमन**—सज्ञा पुं० [स० सन्धापगमन] कामदकीय नीति के अनुसार समीपवर्ती शत्रु से सधि कर दूसरे शत्रु पर चढाई करना।

**संधारण**—सज्ञा पुं० [स० सन्धारण] [स्त्री० सधारणा] [वि० सधारणीय] १ रोक रखना। धारण करना। २ बरदाश्त करना। सहन करना। ३ अस्वीकार करना (प्रार्थना आदि)। ४ अनुसरण करना। अनुवर्तन करना (को०)।

**सधारणीय**—वि० [स० सन्धारणीय] धारण करने योग्य (को०)।

**सधार्य**—वि० [स० सन्धार्य] १ धारण या वहन करने लायक। २ अस्वीकृति के योग्य। ३ (नौकर) रखने योग्य (को०)।

**सधालिका**—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धालिका] एक प्रकार का भोजन (को०)।

**सधि**—सज्ञा [सं०] १ दो चीजो का एक मे मिलना। मेल। सयोग। २ वह स्थान जहाँ दो चीजें एक मे मिलती हो। मिलने की जगह। जोड। ३ राजाओ या राज्यो आदि मे होनेवाली वह प्रतिज्ञा जिसके अनुसार युद्ध बद किया जाता है, मित्रता या व्यापार सबध स्थापित किया जाता है, अथवा इसी प्रकार का और कोई काम होता है।

विशेष—पहले केवल दो योद्धा राज्यो मे ही सधि हुआ करती थी, पर अब बिना युद्ध के ही मित्रता का बधन दृढ करने, पारस्परिक व्यवसाय वाणिज्य मे सहायता देने और सुगमता उत्पन्न करने अथवा किसी दूसरे राज्य मे राजनीतिक अधिकारो की प्राप्ति अथवा रक्षा के लिये भी सधि हुआ करती है। आजकल साधारणत राज प्रतिनिधि एक स्थान पर मिलकर सधि का मसौदा तैयार करते है, और तब वह मसौदा अपने अपने राज्य के प्रधान शासक अथवा राजा आदि के पास स्वीकृति के लिये भेजते है, और जब प्रधान शासक अथवा राजा उसपर स्वीकृति की छाप लगा देता है, तब वह सधि पूरी समझी जाती है और उसके अनुसार कार्य होता है। जिस पत्र पर सधि की शर्तें लिखी जाती हैं, उसे 'सधिपत्र' कहते है। मनु भगवान् ने सधि को राजा के छह् गुणो मे से एक गुण बतलाया है, (शेष पाँच गुण ये हैं—विग्रह, यान, आसन, द्वैध और आश्रय)। हमारे यहाँ प्राचीन काल मे किसी शत्रु राज्य पर आक्रमण करने के लिये भी दो राजा परस्पर मिलकर सधि किया करते थे। हितोपदेश मे सधि सोलह प्रकार की कही गई है—कपाल, उपहार, सतान, सगत, उपन्यास, प्रतीकार, सयोग, पुरुषातर, अदृष्टतर, आदिष्ट, आत्मादिष्ट, उपग्रह, परिक्रय, ततोच्छिन, परभूषण और स्कधोपनेय। जब सधि करनेवालो मे से कोई पक्ष उस सधि की शर्तो को तोडता या उनके विरुद्ध काम करता है, तो उसे सधि का भग होना कहते है।

४ सुलह। मित्रता। मैत्री। ५ शरीर मे कोई वह स्थान जहाँ दो या अधिक हड्डियाँ आपस मे मिलती हो। जोड। गाँठ। जैसे,—कुहनी, घुटना, पोर आदि।

विशेष—वैद्यक के अनुसार ये सधियाँ दो प्रकार की है। चेष्टावान् और निश्चल। सुश्रुत के अनुसार सारे शरीर मे सब मिलाकर २१० सधियाँ है।

६ व्याकरण मे वह विकार जो दो अक्षरो के पास पास आने के कारण उनके मेल से होता है।

विशेष—सधि हिंदी मे नही होती, सस्कृत के जो सामासिक शब्द आते हैं, उन्ही के निरूपण के लिये हिंदी में सधि की आवश्यकता होती हे। सस्कृत मे सधि तीन प्रकार की होती ह—(१) स्वर सधि (जैसे,—राम + अवतार = रामावतार), (२) व्यजन सधि (जैसे,—जगत् + नाथ = जगन्नाथ), और (३) विसर्ग सधि (जैसे,—नि + अतर = निरतर)।

७ नाटक मे किसी प्रधान प्रयोजन के साधक कथाशो का किसी एक मध्यवर्ती प्रयोजन के साथ होनेवाला सबध। ये सधियाँ पाँच प्रकार की कही गई है—मुख सधि, प्रतिमुख सधि, गर्भ सधि, अवमर्श या विमर्श सधि और निर्वहण सधि। ८. चोरी आदि करने के लिये दीवार मे किया हुआ छेद। सेंध। ९ एक युग की समाप्ति और दूसरे युग के आरभ के बीच का समय। युगसधि। १० किसी एक अवस्था के अत और दूसरी अवस्था के आरभ के बीच का समय। वय सधि। जैसे—शैशव और बाल्य अवस्था की सधि। ११ स्त्री की जननेंद्रिय। भग। १२ सघट्टन। १३. दो चीजो के बीच की खाली जगह। अवकाश। १४ भेद। १५ साधन। १६ वस्त्र आदि की तह। पर्त (को०)। १७ उपयुक्त अवसर (को०)। १८ सकट का समय (को०)। १९ मद्य सधान। मद्य निष्कर्ष (को०)। २०. वह भूमि आदि जो मदिर के लिये धर्मार्थ दी गई हो (को०)। २१. प्रबध करना (को०)। २२ सध्या। गोधूली। साँझ (को०)। २३ दो स्तरो या पर्तो के बीच की विभाजन रेखा (को०)। २४ लव और आधार का मिलन-स्थल। वह स्थान जहाँ लव आधार से मिलता हे (को०)। २५ दो त्रिभुजो की उभयनिष्ठ भुजा (को०)।

**सधिक**—सज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार सन्निपात रोग का एक भेद।

विशेष—इस रोग मे शरीर की सधियो मे वायु के कारण अधिक पीडा होती है और कफ, सताप, शक्तिहीनता, निद्रानाश आदि उपद्रव होते है। इसका वेग एक सप्ताह तक रहता है।

**सधिकर्म**—सज्ञा पुं० [स० सन्धिकर्म] सधि करना। सुलह करना।

विशेष—सधि के मुख्य दो भेद है—चालसधि और स्थावरसधि। चालसधि वह है जिसे दोनो पक्ष शपथ करके करते हे, और स्थावर सधि वह है जो कुछ दे लेकर की जाती हे। कौटिल्य मे चालसधि को बहुत ही स्थायी कहा है, क्योकि शपथ खाकर की हुई सधि राजा लोग कभी नही तोडते थे। कामदक ने १६ प्रकार की सधियाँ कही है।

**सधिका**—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धिका] मद्य आदि चुवाना (को०)।

**सधिकाल**—सज्ञा पुं० [सं०] सधि का समय। दो के मिलने का क्षण। दो तिथियो, मुहूर्तो आदि के योग का काल। जैसे,—दिन और रात का सधिकाल।

**सधिकाष्ठ**—सज्ञा पुं० [सं० सन्धिकाष्ठ] प्रासादशिखर के नीचे लगाई जानेवाली लकडी (को०)।

**सधिकुशल**—वि० [सं० सन्धिकुशल] जो सधि करने मे प्रवीण हो।

**सधिकुसुमा**—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धिकुसुमा] त्रिसधि नामक फूलदार पौधा।

**सधिग**—सज्ञा पु० [स० सन्धिग] एक प्रकार का ज्वर। विशेष दे० 'सधिक'।

**सधिगुप्त**—सज्ञा पुं० [स० सन्धिगुप्त] वह स्थान जहाँ शत्रु की आनेवाली सेना पर छापा मारने के लिये सैनिक लोग छिपकर बैठते है।

**सधिगृह**—सज्ञा पुं० [स० सन्धिगृह। मधुमक्खी का छत्ता (को०)।

**सधिग्रथि**—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धिग्रन्थि] शरीरावयवो के जोड पर की ग्रथि या गाँठ (को०)।

**सधिचोर, सधिचौर**—सज्ञा पु० [स० सन्धिचोर, सन्धिचौर] सेध लगाकर चोरी करनेवाला। सेधिया चोर।

**सधिच्छेद**—सज्ञा पु० [स० सन्धिच्छेद] १ वह (पक्ष) जो सधि के नियमो का भग करता हो। अहदनामे की शर्तें तोडनेवाला। २ सेध लगानेवाला (को०)।

**सधिच्छेदक**—सज्ञा पु० [स० सन्धिच्छेदक] १ सधि तोडनेवाला। २. सधिचोर। सेधियाचोर।

**सधिच्छेदन**—सज्ञा पु० [स० सन्धिच्छेदन] दे० 'सधिच्छेद (को०)।

**सधिज**[1]—सज्ञा पु० [स० सन्धिज] १. (चुआकर तैयार किया हुआ) मद्य, आसव आदि। २. वह फोडा जो शरीर की किसी सधि या गाँठ पर हो।

**सधिज**—वि० १ सधि द्वारा उत्पन्न। सधान द्वारा निर्मित (मद्य आदि)। २ ग्रथि या गाँठ पर होनेवाला। जैसे,—सधिज व्रण। ३. व्याकरण मे दो शब्दो की सधि से बना हुआ। जैसे,—सधिज शब्द (को०)।

**सधिजीवक**—सज्ञा पुं० [स० सन्धिजीवक] वह जो स्त्रियो को पुरुषो से मिलाकर जीविका चलता हो। कुटना। टाल।

**सधित**[1]—वि० [स० सन्धित] १. जिसमे सधि हो। सधियुक्त। २ एक मे मिलाया हुआ (को०)। ३ बद्ध। बँधा हुआ (को०)। ४. सधान किया हुआ। स्थिर किया हुआ। रखा हुआ। जैसे,—धनुष पर तीर (को०)। ५ अचार डाला हुआ (को०)। ६ जिसने सधि किया हो या जिससे सधि हुई हो (को०)।

**सधित**[2]—सज्ञा पुं० १ आसव। अर्क। २ अचार (को०)। ३. अलग हुए वालो को एक मे बाँधना (को०)।

**सधितस्कर**—सज्ञा पुं० [स० सन्धितस्कर] दे० 'सधिचोर' (को०)।

**सधितटी**—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धितटी] सधि का स्थान। दो वस्तुओ के मिलने का स्थान। उ०—सोभा सुमेरु की सधितटी किधौ मान मवास गढास की घाटी।—घनानद, पृ० ३३।

**सधिदूषण**—सज्ञा पुं० [सं० सन्धिदूषण] सधि या शर्त तोडना (को०)।

**सधिनाल**—सज्ञा पु० [सं० सन्धिनाल] नख या खुर (को०)।

**सधिनी**—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धिनी] १. गाभिन गौ। २ वह गौ जो गाभिन होने पर भी दूध दे। ३ वह गौ जो बिना बछडे के दूध दे। ४. वह गौ जो बेसमय या दिन रात मे एक समय दूध दे।

सधिपूजा—सज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिपूजा] शारदीय नवरात्र मे अष्टमी और नवमी के सधिकाल मे दुर्गा की अर्चना।

सधिप्रच्छादन—सज्ञा पु० [स० सन्धिप्रच्छादन] सगीत मे स्वर साधन की एक प्रणाली जो इस प्रकार होती है। आरोही—सा रे ग, रे ग म, ग म प, म प ध, प ध नि, ध नि सा। अवरोही—सा नि ध, नि ध प, ध प म, प म ग, म ग रे, ग रे सा।

सधिप्रबधन—सज्ञा पु० [स० सन्धिप्रबन्धन] दे० 'सधिबधन'।

सधिबध—सज्ञा पु० [स० सन्धिबन्ध] १ भुइँ चपा। २ स्नायु। नस (को०)। ३ दराज या सधि को जोड़नेवाली वस्तु। चूना या सीमेंट (को०)।

सधिबधन—सज्ञा पुं० [स० सधिबन्धन] शिरा। नाडी। नस।

सधिभग—सज्ञा पुं० [स० सन्धिभङ्ग] १ वैद्यक के अनुसार हाथ या पैर आदि के किसी जोड का टूटना। २ सधि की शर्तों की अवहेलना करना (को०)।

सधिभग्न—सज्ञा पु० [स० सन्धिभग्न] एक प्रकार का रोग जिसमे अग की सधियो मे अत्यत पीडा होती है।

सधिमुक्त—सज्ञा पु० [स० सन्धिमुक्त] दे० 'सधिभग'।

सधिमुक्ति—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धिमुक्ति] जोड खुल जाना (को०)।

सधिमोक्ष—सज्ञा पु० [स० सन्धिमोक्ष] पुरानी सधि तोडना। सधिभग। विशेष दे० 'समाधि मोक्ष'।

सधिरध्रका—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धिरन्ध्रका] सुरग। सेंध।

सधिराग—सज्ञा पुं० [स० सन्धिराग] १ सिंदूर। सेंदुर। २ साँझ या सवेरे की लाली (को०)।

सधिला—सज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिला] १ सुरग। सेंध। दरार। २. गर्त। गड्ढा। ३ नदी। ४ मदिरा। शराब। ५ एकसाथ अनेक वाद्यो के बजने से उठनेवाली जोर की आवाज (को०)।

सधिविग्रह—सज्ञा पुं० [स० सन्धिविग्रह] राजशासन की परराष्ट्र सबधी दो नीतियाँ शाति और युद्ध। मैत्री और लडाई या शत्रुता।

सधिविग्रहक—सज्ञा पुं० [स० सन्धिविग्रहक] दे० 'सधिविग्रहिक'।

सधिविग्रहाधिकार—सज्ञा पु० [स० सन्धिविग्रहधिकार] विदेश विभाग या परराष्ट्र सबधी मत्रालय (को०)।

सधिविग्रहिक—सज्ञा पुं० [स० सन्धिविग्रहिक] परराष्ट्रो के साथ युद्ध या सधि का निर्णय करनेवाला मत्री या अधिकारी।

सधिविग्रही—सज्ञा पुं० [सं० सन्धिविग्रहिन्] दे० 'सधिविग्रहिक'।

सधिविचक्षण—सज्ञा पु० [स० सन्धिविचक्षण] वह व्यक्ति जो सधि करने मे चतुर हो (को०)।

सधिविच्छेद—सज्ञा पुं० [स० सन्धिविच्छेद] १. समझौता तोडना या टूटना। २ व्याकरण मे सधिगत शब्दो को अलग अलग करना (को०)।

सधिविद्—सज्ञा पु० [स० सन्धिविद्] सधि की वार्ता करनेवाला (को०)।

सधिविद्ध—सज्ञा पु० [स० सन्धिविद्ध] एक प्रकार का रोग जिसमे हाथ पैर के जोडो मे सूजन और पीडा होती है।

सधिविपर्यय—सज्ञा पुं० [स० सन्धिविपर्यय] मैत्री और शत्रुता। शाति और युद्ध (को०)।

सधिवेला—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धिवेला] १ सध्या का समय। सायकाल। शाम। २ कोई भी सधिकाल। वह समय जिसमे दो काल-विभागो का मेल हो (को०)।

सधिशूल—सज्ञा पुं० [सं० सन्धिशूल] एक रोग। दे० 'आमवात' (को०)।

सधिसभव—सज्ञा पुं० [स० सन्धिसम्भव] सयुक्त स्वर या सधि से बना वर्ण। जैसे, आ = अ + अ, ए = अ + इ, क्ष = क् + ष, ज्ञ = ज् + ञ आदि।

सधिसितासित—सज्ञा पुं० [सं० सन्धिसितासित] आँख का एक प्रकार का रोग।

सधिस्थल—सज्ञा पु० [सं० सन्धिस्थल] १ वह स्थल जहाँ राष्ट्रो मे सधि हो। २ किन्ही दो के मिलन का स्थान। ३ सेंध लगाने का स्थान।

सधिहारक—सज्ञा पुं० [सं० सन्धिहारक] वह चोर जो सेंध लगाकर चोरी करता हो। सेंधिया चोर।

सधी—सज्ञा पुं० [सं० सन्धिन्] सधि का काम देखनेवाला मत्री। सुलह समझौता करनेवाला मत्री। परराष्ट्र मत्री (को०)।

सधुक्षण'—सज्ञा पुं० [सं० सन्धुक्षण] [वि० सधुक्षित] १ जलाना। प्रदीप्त करना। २ उकसाना। उत्तेजित करना (को०)।

सधुक्षण'—वि० उद्दीपक। उत्तेजक (को०)।

सधुक्षित—वि० [स० सन्धुक्षित] प्रज्वलित या उद्दीप्त किया हुआ (को०)।

सधेय—वि० [स० सन्धेय] १ जो सधि करने के योग्य हो। जिसके साथ सधि की जा सके। २ जिसे शात किया जा सके। शात करने या मनाने योग्य (को०)। ३ लक्ष्य साधने के योग्य (को०)। ४ जो पुन जोडा या मिलाया जा सके। फिर से मिलने, जुडने या एक होने योग्य (को०)।

सध्यग—सज्ञा पुं० [स० सन्ध्यङ्ग] नाटक मे मुखादि सधियो के अग, उपाग (को०)।

सध्य—वि० [सं० सन्ध्य] १ सधि सबधी। सधि का। २. सधि पर आद्धृत (को०)। ३ जिसकी सधि होनेवाली हो (को०)। ४ विचारयुक्त। सोचता हुआ (को०)।

सध्यर्क्ष—सज्ञा पुं० [सं० सन्ध्यर्क्ष] वह नक्षत्र जिसमे दो राशियाँ हो। दो राशियो के बीच का नक्षत्र। जैसे,—कृतिका नक्षत्र, जिसके पहले पाद मे मेष राशि और तीनो पादो मे वृष राशि है।

सध्याश, सध्याशक—सज्ञा पुं० [स० सन्ध्याश, सन्ध्याशक] युगात काल। दो युगो का सधिकाल। वह काल जिसमे एक युग की समाप्ति और दूसरे का आरभ हो (को०)।

सध्या—सज्ञा स्त्री० [सं० सन्ध्या] १ दिन और रात दोनो के मिलने का समय। सधिकाल।

विशेष—दिन और रात के मिलने के दो समय है—प्रात काल और सायकाल। शास्त्रो मे कहा है कि रात का अतिम एक

दड और दिन का पहला एक दड ये दोनो मिलाकर प्रात सध्याकाल होते हे, और दिन का अतिम एक दड और रात का पहला एक दड ये दोनो मिलकर साय सध्याकाल होते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ लोग ठीक दोपहर के समय एक और सध्या मानते हे, जिसे मध्याह्न सध्या कहते है।

२ दिन का अतिम भाग। सूर्यास्त के लगभग का समय। शाम। सायकाल। ३ आर्यो की एक विशिष्ट उपासना।

विशेष—यह उपासना प्रतिदिन प्रात काल, मध्याह्न और सध्या के समय होती हे। इसमे स्नान और आचमन करके कुछ विशिष्ट मत्रो का पाठ, अगन्यास, और गायत्री का जप किया जाता है। द्विजातियो के लिये यह उपासना अवश्य कर्तव्य कही गई है।

४ दूसरे युग की सधि का समय। दो युगो के मिलने का समय। युगसधि। ५ एक प्राचीन नदी का नाम। ६ सीमा। हद। ७ सधान। ८ एक प्रकार का फूल। ९ प्रतिज्ञा। वादा (को०)। १० चिंतन। मनन (को०)। ११ योग। मेल (को०)। १२ ब्रह्मा की पत्नी (को०)। १३ दिन का कोई भी प्रभाग, जैसे पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न (को०)। १४ काल या सूर्य की स्त्री (को०)।

यौ०—सध्याकार्य, सध्यावदन = दे० 'सध्योपासन। सध्याकाल = (१) गोधूलि। झुटपुटा। (२) शाम। सायकाल। सध्याकालिक = शाम से सबधित। सध्यापयोद = सायकालीन वर्षा के बादल। शाम की बदली। सध्यापुष्पी। सध्यावल। सध्यावलि सध्यासगल = साँझ के धार्मिक कृत्य।

सध्याचल—सज्ञा पुं० [सं० सन्ध्याचल] अस्ताचल [को०]।

सध्यानाटी—सज्ञा पु० [स० सन्ध्यानाटिन्] शिव। महादेव।

सध्यापुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स० सन्ध्यापुष्पी] १ जातीफल। जायफल। २ एक प्रकार की जूही या चमेली [को०]।

सध्यावधू—सज्ञा स्त्री० [स० सन्ध्यावधू] रात्रि। रात। निशि।

सध्यावल—सज्ञा पु० [स० सन्ध्यावल] निशाचर। राक्षस। निश्चर।

सध्यावलि—सज्ञा पु० [स० सन्ध्यावलि] १ शिव के मदिर मे बनी हुई नदी की प्रतिमा। २ सायकालीन बलिप्रदान आदि पूजा [को०]।

सध्याराग—सज्ञा पुं० [स०] १ श्यामकल्याण नाम का एक राग जिसका वर्ण सगीत शास्त्र के अनुसार काला माना गया है। २ सिंदूर। सेंदुर।

सध्याराम—सज्ञा पु० [स० सन्ध्याराम] ब्रह्मा।

सध्यासन—सज्ञा पु० [स० सन्ध्यासन] कामदक नीति के अनुसार आपस मे लडकर शत्रुओ का कमजोर होकर बैठ जाना।

सध्योपासन—सज्ञा पु० [स० सन्ध्योपासन] सुबह, शाम और मध्याह्न के समय की जानेवाली उपासना। विशेष दे० 'सध्या'—३।

सध्वान—वि० [स० सन्ध्वान] सन् सन् की आवाज या ध्वनि उत्पन्न करनेवाला [को०]।

सनिक्षेप्ता—सज्ञा पु० [स० सम्+निक्षेप्तृ] कौटिल्य के अनुसार श्रेणी या सघ के धन को रखनेवाला। खजानची।

सन्यसन—सज्ञा पु० [स० सन्न्यसन] दे० 'सन्यसन'।

सन्यस्त—वि० [स० सन्न्यस्त] दे० 'सन्न्यस्त'।

सन्यास—सज्ञा पु० [स० सन्न्यास] १ भारतीय आर्यो के चार आश्रमो मे से अतिम आश्रम। वानप्रस्थ आश्रम के पश्चात् का आश्रम।

विशेष—प्राचीन भारतीय आर्यो ने जीवन के चार विभाग किए थे, जो आश्रम कहलाते हैं। (दे० 'आश्रम') इनमे से अतिम आश्रम सन्यास कहलाता है। पचीस वर्ष तक वानप्रस्थ आश्रम मे रहने के उपरात ७५वें वर्ष के अत मे इस आश्रम मे प्रवेश करने का विधान है। इस आश्रम मे काम्य और नित्य आदि सब कर्म किए तो जाते हे, पर बिलकुल निष्काम भाव से किए जाते है, किसी प्रकार के फल की आशा रखकर नही किए जाते। विशेष दे० 'सन्यासी'।

२ भावप्रकाश के अनुसार मूर्च्छा रोग का एक भेद।

विशेष—यह बहुत ही भयानक कहा गया है। यह रोग प्राय निर्बल मनुष्यो को हुआ करता है और इसमे रोगी के मर जाने की भी आशका रहती हे। साधारण मूर्छा से इसमे यह अतर हे कि मूर्च्छा मे तो रोगी थोडी देर मे आप से आप होश मे आ जाता है, पर इसमे बिना औषध और चिकित्सा के होश नही होता।

३ जटामासी। (अन्य अर्थों के लिये दे० 'सन्यास' शब्द)।

सन्यासी—सज्ञा पुं० [स० सन्न्यासिन्] वह जो सन्यास आश्रम मे हो। सन्यास आश्रम मे रहने और उसके नियमो का पालन करनेवाला।

विशेष—सन्यासिया के लिये शास्त्रो मे अनेक प्रकार के विधान है, जिनमे से कुछ इस प्रकार है—सन्यासी को सब प्रकार की तृष्णाओ का परित्याग करके घर बार छोडकर जगल मे रहना चाहिए, सदा एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करना चाहिए, कही एक जगह जमकर न रहना चाहिए, गैरिक कौपीन पहनना चाहिए, दड और कमडलु अपने पास रखना चाहिए, सिर मुडाए रहना चाहिए, शिखा और सूत्र का परित्याग कर देना चाहिए, भिक्षा के द्वारा जीवन निर्वाह करना चाहिए, एकात स्थान मे निवास करना चाहिए, सब पदार्थों और सब कार्यो मे समदर्शी होना चाहिए, और सदुपदेश आदि के द्वारा लोगो का कल्याण करना चाहिए। आजकल सन्यासियो के गिरि, पुरी, भारती आदि अनेक भेद पाए जाते है। एक प्रकार के कौल या वाममार्गी सन्यासी भी होते है जो मद्य मास आदि का भी सेवन करते हे। इनके अतिरिक्त नागे, दगली, अघोरी, आकाशमुखी, मौनी आदि भी सन्यासियो के ही अर्तगत माने जाते है।

२ वह जो छोड देता है या जमा करता हे (को०)। ३. वह जो पृथक् या अलग कर देता है (को०)। ४ भोजन का त्याग करनेवाला। त्यक्ताहार व्यक्ति (को०)।

सप—संज्ञा पुं० [सं० सम्प] छोड़ना। त्यागना। अलग करना (को०)।

सपक्व—वि० [सं० सम्पक्व] १ अच्छी तरह पकाया हुआ। २ पका हुआ (फल)। ३ बूढ़ा। मरने के करीब पहुँचा हुआ (को०)।

सपत्—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पत्] दे० 'सपद्'।

सपति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पत्ति] दे० 'सपत्ति'। उ०—(क) सपति सब रघुपति कै आही।—मानस, २।१८६। (ख) जगत विदित बूँदी नगर सुख सपति को धाम।—मतिराम (शब्द०)। (ग) तहाँ कियो भगवत बिन सपति शोभा साज।—केशव (शब्द०)।

सपत्कुमार—संज्ञा पुं० [सं० सम्पत्कुमार] विष्णु का एक रूप।

सपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पत्ति] १ ऐश्वर्य। वैभव। २ धन। दौलत। जायदाद। मिलकियत। ३ सफलता। पूर्णता। सिद्धि। ४ प्राप्ति। लाभ। ५ अधिकता। बहुतायत। ६ सौभाग्य। अच्छे दिन (को०)। ७ एक जड़ी। वृद्धि (को०)।

सपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पत्नी] वह स्त्री जो अपने पति के साथ हो (को०)।

सपत्नीय—संज्ञा पुं० [सं० सम्पत्नीय] पितरों को जल देने का एक भेद।

सपत्प्रदा—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पत्प्रदा] १ सौभाग्य देनेवाली एक भैरवी का नाम। २ एक बौद्ध देवी (को०)।

सपद्—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पद्] १ सिद्धि। पूर्णता। २ ऐश्वर्य। वैभव। गौरव। ३ सौभाग्य। अच्छे दिन। भले दिन। सुख की स्थिति।

यौ०—सपद्वर। सपद्वसु। सपद् विपद्=सुख दुख।

४ प्राप्ति। लाभ। फायदा। ५ अधिकता। प्रचुरता। बहुतायत। ६ मोतियों का हार। ७ वृद्धि नाम की ओषधि। ८ धन। दौलत। ९ कोश। खजाना (को०)। १० सद्गुण की वृद्धि (को०)। ११ सजावट। अलंकरण (को०)। १२ ठीक ढंग। सही ढंग (को०)। १३ सौंदर्य। शोभा। कांति (को०)।

सपद[1]—वि० [सं० सम्पद] सपन्न। पूर्ण (को०)।

सपद[2]—संज्ञा पुं० पैरों को एक समान या एक साथ करके खड़ा होना।

सपदा—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पद्] धन दौलत। ऐश्वर्य। वैभव।

सपदी—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पदिन्] अशोक के एक पौत्र का नाम।

सपदूर—संज्ञा पुं० [सं० सम्पदूर] भूभृत्। राजा (को०)।

सपद्वसु—संज्ञा पुं० [सं० सम्पद्वसु] सूर्य की सात प्रमुख रश्मियों में से एक का नाम जिससे भौम ग्रह को ताप की प्राप्ति होती है (को०)।

सपन्न[1]—वि० [सं० सम्पन्न] १ पूरा किया हुआ। पूर्ण। सिद्ध। साधित। मुकम्मल। २ सहित। युक्त। भरा पूरा। उ०—ससिसपन्न सोह महि कैसी।—तुलसी (शब्द०)। ३ जिसे कुछ कमी न हो। धन धान्य से पूर्ण। खुशहाल। ४ धनी। दौलतमंद। ५ ठीक। उचित। सही (को०)। ६ पूर्ण विकसित। परिपक्व (को०)। ७ प्राप्त। हासिल (को०)। ८ घटित। जो हुआ हो (को०)। ९ भाग्यशाली (को०)।

सपन्न[2]—संज्ञा पुं० १ सुस्वादु भोजन। व्यंजन। २ शिव (को०)। ३ धन दौलत (को०)।

सपन्नक—वि० [सं० सम्पन्नक] दे० 'सपन्न' (को०)।

सपन्नक्रम—संज्ञा पुं० [सं० सम्पन्नक्रम] एक प्रकार की समाधि। (बौद्ध)।

सपन्नक्षीरा—वि० [सं० सम्पन्नक्षीरा] अधिक दूध देनेवाली जो अधिक दूध देती हो। दुधारू (को०)।

सपन्नतम—[सं० सम्पन्नतम] जो पूरी तौर से ठीक हो अथवा पूरा हो चुका हो (को०)।

सपन्नतर—वि० [सं० सम्पन्नतर] अपेक्षाकृत सम्पन्नतर (को०)।

सपन्नता—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पन्नता] भरा पूरा या सपन्न होने का भाव। पूर्णता (को०)।

सपराय—संज्ञा पुं० [सं० सम्पराय] १ मृत्यु। मौत। २ अनादि काल से स्थिति। ३ युद्ध। लड़ाई। झगड़ा। ४ आपत्ति। दुर्दिन। ५ अविद्या।

सपरायक, सपरायिक—संज्ञा पुं० [सं० सम्परायक, सम्परायिक] युद्ध। संग्राम। लड़ाई (को०)।

सपरिग्रह—संज्ञा पुं० [सं० सम्परिग्रह] १ सौजन्यपूर्ण स्वीकार। दयालुता के साथ स्वीकार करना। २ धन दौलत। वैभव। सपत्ति (को०)।

सपरेत—वि० [सं० सम्परेत] १ जो मरनेवाला हो। आसन्न मृत्यु। २ मृत। मरा हुआ (को०)।

सपर्क—संज्ञा पुं० [सं० सम्पर्क] [वि० सपृक्त] १ मिश्रण। मिलावट। २ मेल। मिलाप। संयोग। ३ लगाव। संसर्ग। वास्ता। ४ स्पर्श। सटना। ५ योग। जोड़। (गणित)। ६ संभोग। मैथुन (को०)।

सपर्की—वि० [सं० सम्पर्किन्] संपर्क युक्त। संसर्ग विशिष्ट।

सपर्कीय—वि० [सं० सम्पर्कीय] संपर्क विशिष्ट। सपर्की (को०)।

सपवन—संज्ञा पुं० [सं० सम्पवन] शुद्ध करना। परिशोधन (को०)।

सपा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पा] विद्युत्। बिजली। उ०—सपा घन बीच ऐसी परा बन बीच फूली, टारि सो दुँवरि कुमिलनि फूली डार गहैं।—भिखारी० ग्र०, भा० १, पृ० १६८। २ साथ साथ पान करना या पीना (को०)।

सपा[2]—संज्ञा स्त्री० [देश०] काछी। मेखला। करधनी (को०)।

सपाक[1]—संज्ञा पुं० [सं० सम्पाक] १ अच्छी तरह पकना। परिपाक होना। २ आरग्वध वृक्ष। अमलतास। ३ वह जो ठीक ढंग से तर्क करे। ठीक तर्क करनेवाला।

सपाक[2]—वि० लंपट। २ धूर्त। ३ अल्प। कम। ४ तर्कक। तर्क में प्रवीण। तर्क करनेवाला (को०)।

सपाचन—संज्ञा पुं० [सं० सम्पाचन] १ अच्छी तरह पकाना। २ पका कर मुलायम करना। ३ सुश्रुत के अनुसार सेंककर फोड़े आदि को मुलायम करना (को०)।

सपाट—पद्मा पु० [स० सम्पाट] १ किसी त्रिभुज की बढी हुई भुजा पर लंब का गिरना। २ तकला। तकुआ।

सपाठ—पद्मा पु० [स० सम्पाठ] वह पाठ जो सिलसिलेवार हो (को०)।

सपाठ्य—वि० [स० सम्पाठ्य] एक साथ पढने योग्य। लगातार पढने योग्य (को०)।

सपात—सद्मा पु० [स० सम्पात] १. एक साथ गिरना या पडना। २ समागम। मेल। मिलान। ३ संगम। समागम। ४ संगम स्थान। मिलने की जगह। ५, कुदान। उडान। टूट पडना। झपट। ७, युद्ध का एक भेद। ८ प्रवेश। पहुँच। पैठ। ९. घटित होना। होना। १० द्रव पदार्थ के नीचे बैठी हुई वस्तु। तलछट। ११ अवशिष्ट अंश। व्यवहार से बचा हुआ भाग। १२ अधःपतन। उतरना (को०)। १३ अस्त्रशस्त्रों का प्रहार होना। बाण आदि का चलना (को०)। १४. भेजना। प्रेषित करना। जैसे, दूतसपात (को०)। १५ चलना। गमन। गतिशील होना (को०)। १६ हटाना। दूर करना (को०)। १७ गरुड के पुत्र का नाम (को०)।

यौ०—सपातपाटव = झपटने या कूदने मे पटुता।

सपाति—सद्मा पु० [स० सम्पाति] १ एक गीध जो गरुड का ज्येष्ठ पुत्र और जटायु का भाई था। २ माली नाम राक्षस का उसकी वसुदा नामक भार्या से उत्पन्न चार पुत्रों मे से एक पुत्र, यह विभीषण का मंत्री था। ३ राम की सेना का एक बंदर।

सपातिक—सद्मा पुं० [स० सम्पातिक] दे० 'सपाति' (को०)।

सपाती[१]—वि० [स० सम्पातिन्] [वि० स्त्री० सपातिनी] १ एक साथ कूदने या झपटनेवाला। २. एक साथ उडनेवाला (को०)। ३. उडने मे स्पर्धा करनेवाला (को०)।

सपाती[२]—सद्मा पु० [स० सम्पाति] १ जटायु का भाई। उ०—गिरि कंदरा सुनी सपाती।—मानस, ४।२७। २ दे० 'सपाति'।

सपाद—पद्मा पु० [स० सम्पाद] १ समाप्ति। पूर्ति। निष्पन्नता। सिद्धि। २ प्राप्ति। अधिग्रहण (को०)।

सपादक—सद्मा पु० [स० सम्पादक] १ संपन्न करनेवाला। कोई काम पूरा करनेवाला। काम का अंजाम देनेवाला। २ प्रस्तुत करने-तैयार करनेवाला। ३ प्रदान करनेवाला। लाभ करनेवाला। वाला। ४ किसी समाचारपत्र या पुस्तक को क्रम से लगाकर निकालनेवाला। एडिटर। ५. उत्पादक। उत्पन्न करने वाला (को०)।

सपादकत्व—सद्मा पु० [स० सम्पादकत्व] सपादन करने का भाव या अवस्था।

सपादकीय[१]—वि० [स० सम्पादकीय] सपादक संबंधी। सपादक का।

सपादकीय[२]—पद्मा पु० वह लेख या टिप्पणी जो सपादक द्वारा लिखा गया हो। अग्रलेख। (अं० एडिटोरियल)।

सपादन—पद्मा पुं० [सं० सम्पादन] [वि० सपादनीय, सपादी, सपाद्य] १ किसी काम को पूरा करना। अंजाम देना। २ प्रस्तुत करना। प्रदान करना। ३ ठीक करना। तैयार करना। ४ किसी पुस्तक या संवादपत्र आदि को क्रम, पाठ आदि लगाकर प्रकाशित करना। ५ उत्पन्न करना (को०)।

सपादना(पु)—क्रि० स० [स० सम्पादन] संपादित करना। प्रस्तुत करना। सपादन करना।

सपादयिता—वि०, सद्मा पु० [स० सम्पादयितृ] [स्त्री० सपादयित्री] १. सपादन करनेवाला। २ पूरा करने या प्रस्तुत करनेवाला। ३ ठीक करनेवाला। ४. उत्पादन करनेवाला। उत्पन्न करनेवाला (को०)

सपादित—वि० [स० सम्पादित] १ पूर्ण किया हुआ। अंजाम दिया हुआ। २ तैयार। प्रस्तुत। ३. क्रम, पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ। (पत्र, पुस्तक आदि)।

सपादी—वि० [स० सम्पादिन्] [वि० स्त्री० सपादिनी] १. सपादन करनेवाला। २ प्रस्तुत करनेवाला। ३. जो सपादन कर सकता हो। उपयुक्त (को०)।

सपिंडित—वि० [स० सम्पिण्डित] १ एक साथ किया हुआ। ढेर लगाया हुआ। २. सिकुडा हुआ। संकुचित (को०)।

सपित—सद्मा पु० [देश०] एक प्रकार का बाँस जिसका टोकरा बनता है। यह खसिया की पहाडियों मे होता है।

सपिधान—पद्मा पुं० [स० सम्पिधान] आच्छादन। ढकना। पिधान। ढक्कन (को०)।

सपिष्ट—वि० [स० सम्पिष्ट] चूर किया हुआ। अच्छी तरह पीसा हुआ (को०)।

सपीड़—पद्मा पुं० [स० सम्पीड] १. पीडा देना। २. दलना, दबाना या निचोडना। ३ विक्षोभण। मथना। ४. भेजना। निर्देशन (को०)।

सपीडन—पद्मा पुं० [स० सम्पीडन] १ खूब दबाना या निचोडना। खूब मलना। खूब पीडा देना। ३ अतिशय पीडा। दंड। ४ शब्दोच्चारण का एक दोष। ५. भेजना। प्रेषण (को०)। ६ क्षुब्ध करना (को०)।

सपीडा—पद्मा पु० [स० सम्पीडा] अत्यधिक व्यथा या कष्ट (को०)।

सपीडित—वि० [स० सम्पीडित] १ जो पकड लिया गया हो। ग्रस्त। २ दबाया हुआ। ३ निचोडा हुआ (को०)।

सपीति—पद्मा स्त्री० [स० सम्पीति] मिलाकर पीना। साथ साथ पान करना (को०)।

सपुंज—पद्मा पु० [स० सम्पुञ्ज] राशि। ढेर (को०)।

सपुट'—पद्मा पु० [सं० सम्पुट] १ पात्र के आकार की वस्तु। कटोरे या दोने की तरह चीज जिसमे कुछ भरने के लिये खाली जगह हो। २ खप्पर। ठीकरा। कपाल। ३ दोना। ४ ढक्कनदार पिटारी या डिबिया। डिब्बा। मंजूषा। ५ अंजली। ६ फूल के दलों का ऐसा समूह जिसके बीच खाली जगह हो। कोश। ७ कपडे और गोली मिट्टी से लपेटा हुआ वह बर्तन जिसके भीतर कोई रस या औषधि फूँकते हैं। ८. कटसरैया का फूल। कुरबक। ९ हिसाब मे बाकी या उधार। १० एक तरह का रतिबंध (को०)। ११ गोलार्ध (को०)। १२ घूँघरू (को०)।

सपुट ⓤ[2]—वि० ढका हुआ। मुँदा हुआ। बद। आवृत। जैसे, सपुट पाठ।

सपुटक—सज्ञा पु० [स० सम्पुटक] १ गोल डब्बा या पिटारी। आवरण। आच्छादन। ढक्कन। ३ एक प्रकार का रतिबध [को०]।

सपुटका, सपुटिका—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पुटका, सम्पुटिका] १ मजूषा। पिटारी। २ सगह। निधि। ३ एक प्रकार का कवल। ऊर्णायु। ४ आच्छादन। ढक्कन [को०]।

सपुटी—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पुट] छोटी कटोरी या तश्तरी जिसमे पूजन के लिये घिसा हुआ चदन, अक्षत आदि रखते हैं।

सपुटीकरण—सज्ञा पु० [स० सम्पुटीकरण] सपुट करना। आवृत करना। ढकना [को०]।

सपुष्ट—वि० [स० सम्पुष्ट] १ पूर्णत पुष्ट। भरा पूरा। २ पूरी तरह समर्थित।

सपुष्टि—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पुष्टि] १ पूर्ण समृद्धता। २. सपुष्ट या समर्थन करना।

सपूजक—वि० [स० सम्पूजक] समान करनेवाला। आदर देनेवाला [को०]।

सपूजन[1]—वि० [स० सम्पूजन] [वि० स्त्री० सपूजनी] श्लाघ्य। वद्य। प्रशस्तियुक्त [को०]।

सपूजन[2]—सज्ञा पुं० १ समादृत करना। पूजित करना। प्रशसन। वदन। २ उपस्थित होना। समुख होना।

सपूजनीय—वि० [स० सम्पूजनीय] दे० 'सपूज्य'।

सपूजा—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पूजा] समान। स्तुति। प्रशसा। वदना।

सपूजित—वि० [स० सम्पूजित] जिसका भव्य रूप से आदर हुआ हो।

सपूज्य—वि० [स० सम्पूज्य] पूजनीय। मान्य। आदरणीय [को०]।

सपूयन—सज्ञा पुं० [स० सम्पूयन] पूर्णत शुद्ध करना। पवित्र करना [को०]।

सपूरक—वि० [स० सम्पूरक] पूरी तरह भरनेवाला। तृप्त या तुष्ट करनेवाला [को०]।

सपूरण[1]—सज्ञा पु० [स० सम्पूरण] पुष्टिकर भोजन से उदर पूरी तरह भरना [को०]।

सपूरण ⓤ[2]—वि० [सं० सपूर्ण, सम्पूर्ण] दे० 'सपूर्ण'।

सपूरन ⓤ[1]—वि० [सं० सपूर्ण, सम्पूर्ण] दे० 'सपूर्ण'।

सपूर्ण[1]—वि० [स० सम्पूर्ण] १ खूब भरा हुआ। पूरी तौर से भरा हुआ। २ सब। बिलकुल। समस्त। पूरा। ३ समाप्त। खत्म। सपन्न।

यौ०—सपूर्णकाम = (१) जिसकी सभी कामनाएँ पूर्ण हो चुकी हों। (२) आकाक्षाओं से युक्त। सपूर्णकालीन = जो उचित या पूरे समय पर हो। समय की पूर्णता या ठीक समय पर होनेवाला। पूरे समय का। सपूर्णपुच्छ = पूँछ फैलानेवाला—मयूर। मोर। सपूर्ण फलभाग् = पूर्ण फल प्राप्त करनेवाला। सपूर्णमूर्च्छा। सपूर्णलक्षण = सख्या या लक्षणों मे पूर्ण। सपूर्णविद्य = जो विद्याओं से पूर्ण हो। प्राप्तविद्य। सपूर्णस्पृह् = जिसकी आकाक्षा पूरी हो गई हो।

४ पूर्ण रूप से युक्त। ५ अत्यधिक। अतिशय।

सपूर्ण[2]—सज्ञा पु० १ वह राग जिसमे सातो स्वर लगते हों। २ आकाश भूत।

सपूर्णत —क्रि० वि० [स० सम्पूर्णतस्] पूरी तरह से। पूर्ण रूप से।

सपूर्णतया—क्रि० वि० [स० सम्पूर्णतया] पूरी तरह से। भली भाँति। अच्छी तरह।

सपूर्णतर—वि० [स० सम्पूर्णतर] पूर्णत भरा हुआ। भलीभाँति भरा हुआ। अधिक भरा हुआ।

सपूर्णता—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पूर्णता] १ सपूर्ण होने का भाव। पूरापन। २ समाप्ति।

सपूर्णत्व—सज्ञा पुं० [स० सम्पूर्णत्व] दे० 'सपूर्णता' [को०]।

सपूर्णमूर्च्छा—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पूर्णमूर्च्छा] युद्ध करने की एक कला या रीति [को०]।

सपूर्णा—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पूर्णा] एकादशीविशेष।

सपूर्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] पूर्णत भर जाना। पूर्ण हो जाना [को०]।

सपृक्त—वि० [स० सम्पृक्त] १ ससर्ग मे आया हुआ। छूआ हुआ। २ मिला हुआ। मिश्रित। ३ मेल मे आया हुआ। ४. सयुक्त। सबद्ध (को०)। ५ पूर्ण। भरा हुआ (को०)। ६ खचित। जटित (को०)।

सपृष्ट—वि० [स० सम्पृष्ट] जिससे पूछताछ की गई हो। जो पूछा गया हो [को०]।

सपेष—सज्ञा पुं० [स० सम्पेष] दे० 'सपेषण'।

सपेषण—सज्ञा पु० [स० सम्पेषण] पीसना। पीसने की क्रिया। चूर्ण करना [को०]।

सपै ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पत्ति] वैभव। बढती।

सपोषण—सज्ञा पुं० [स० सम्पोषण] १ सवर्धन। पालन पोषण। २ समर्थन।

सपोषित—वि० [स० सम्पोषित] १ सवर्धित। पालित पोषित। २ जिसकी पुष्टि की गई हो। समर्थित [को०]।

सपोष्य—वि० [स० सम्पोष्य] १ सपोषण या पालन के योग्य। २ समर्थन करने योग्य [को०]।

सप्रकल्पित—वि० [सं० सम्प्रकल्पित] १ प्रतिष्ठित। व्यवस्थित। २. स्थापित। जिसकी प्रकल्पना की गई हो [को०]।

सप्रकाश—सज्ञा पु० [स० सम्प्रकाश] १ देदीप्यमान उदय। तेजयुक्त आविर्भाव। २ विशद या निर्मल रूपाकृति [को०]।

सप्रकाशक—वि० [स० सम्प्रकाशक] व्यक्त करनेवाला। प्रकाशित करनेवाला [को०]।

सप्रकाशन—सज्ञा पुं० [सं० सम्प्रकाशन] व्यक्त वा प्रकाशित करना। समक्ष करना। सामने लाना [को०]।

सप्रकाशित—वि० [स० सम्प्रकाशित] अभिव्यक्त। प्रकाशित [को०]।

सप्रकाश्य—वि० [स० सम्प्रकाश्य] जो संप्रकाशन के योग्य हो अथवा जिसका सप्रकाशन किया जाय [को०]।

सप्रकीर्ण—वि० [स० सम्प्रकीर्ण] जो एक मे मिला हो। मिश्रित [को०]।

सप्रकीर्तित—वि० [स० सम्प्रकीर्तित] १ अभिहित। उक्त। कथित। २. वर्णित [को०]।

सप्रक्षालक—सज्ञा पु० [स० सम्प्रक्षालक] १ पूर्ण विधि से स्नान करनेवाला। २. एक प्रकार के यति या साधु। ३ प्रजापति के पैर धोए हुए जल से उत्पन्न एक ऋषि।

सप्रक्षालन—सज्ञा पु० [स० सम्प्रक्षालन] १ अच्छी तरह धोना। खूब धोना। २ पूर्ण स्नान। ३ जलप्रलय। जलप्लावन।

सप्रक्षालनी—सज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रक्षालनी] एक प्रकार की जीविका या वृत्ति। (बौद्ध)।

सप्रक्षुभित—वि० [स० सम्प्रक्षुभित] जो विशेष रूप मे उत्तेजित या क्षुब्ध हो [को०]।

यौ०—सप्रक्षुभितमानस=जिसका मन क्षुब्ध हो। व्याकुल।

सप्रगर्जित—सज्ञा पु० [स० सम्प्रगर्जित] जोरो की चिल्लाहट। जोर से चिल्लाने की आवाज [को०]।

सप्रचोदित—वि० [स० सम्प्रचोदित] १ प्रेरित। उत्साहित। आगे किया हुआ। २. आकाक्षित। इच्छित। अभीष्ट [को०]।

सप्रजात—वि० [स० सम्प्रजात] उत्पन्न। उद्भूत। आविर्भूत। प्रकट। जात [को०]।

सप्रजाता—सज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रजाता] वह (गाय) जिसने बछडा जनन किया हो [को०]।

सप्रज्ञात[1]—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रज्ञात] योग मे समाधि के दो प्रधान भेदों मे से एक। वह समाधि जिसमे आत्मा विषयो के बोध से सर्वथा निवृत्त न होने के कारण अपने स्वरूप के बोध तक न पहुँचो हो।

विशेष—ध्यान या समाधि की पूर्व दशा मे चार प्रकार की समापत्तियाँ कही गई है जिनमे शब्द, अर्थ, विषय आदि मे से किसी न किसी का बोध अवश्य बना रहता है। इन चारो मे से किसी समापत्ति के रहने से समाधि सप्रज्ञात कहलाती है। सप्रज्ञात समाधि या समापत्ति के चार भेद है—सवितर्क, निर्वितर्क, सविचार और निर्विचार।

सप्रज्ञात[2]—वि० अच्छी तरह विवेचित, ज्ञात या बोधयुक्त [को०]।

यौ०—सप्रज्ञात योगी=वह योगी जिसका विषयबोध बना हुआ हो। सप्रज्ञात समाधि=दे० 'सप्रज्ञात[1]'।

सप्रज्वलित—वि० [स० सम्प्रज्वलित] १ जलता हुआ। जिसमे से खूब लौ निकल रही हो। २ द्योतित। प्रकाशित। दीप्त [को०]।

सप्रणर्दित—वि० [स० सम्प्रणर्दित] चिल्लाया हुआ। शोर किया हुआ। नर्दित [को०]।

सप्रणाद—सज्ञा पुं० [सं० सम्प्रणाद] [वि० सप्रणादित] आवाज। शोर गुल [को०]।

सप्रणादित—वि० [स० सम्प्रणादित] जो ध्वनित किया हुआ हो [को०]।

सप्रणीत—वि० [सं० सम्प्रणीत] १ एक साथ किया हुआ या उपस्थापित। २. विरचित। रचित। निबद्ध। जैसे, कविता, रचना आदि [को०]।

सप्रणेता—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रणेतृ] १. नायक (सेना आदि का)। २. विचारपति। शासक। ३ प्रणेता। विधान करनेवाला (दड, सजा आदि का)। ४ वह जो धारण, पालन या भरण करता हो [को०]।

सप्रतर्दन—वि० [स० सम्प्रतर्दन] चुभनेवाला। भेदन या विदारण करनेवाला।

सप्रतापन—सज्ञा पु० [स० सम्प्रतापन] १ प्रतप्त करना। तपाना। जलाना। २ कष्ट देना। पीडन। उत्पीडन। ३ मनु द्वारा उक्त एक नरक का नाम [को०]।

सप्रति[1]—अव्य० [स० सम्प्रति] १ इस समय। अभी। आजकल। २ मुकाबले मे। ३ ठीक तौर से। ठीक ढग से। ४. उपयुक्त समय पर। ठीक समय पर।

संप्रति[2]—सज्ञा पुं० १ पूर्व अवसर्पिणी के २४ वे अर्हत् का नाम। (जैन)। २ अशोक का पोता। कुनाल का एक पुत्र।

सप्रतिनदित—वि० [स० सम्प्रतिनन्दित] पूर्णत सत्कृत [को०]।

संप्रतिपत्ति—सज्ञा पु० [स० सम्प्रतिपत्ति] १ पहुँच। गुजर। २ प्राप्ति। लाभ। ३ सम्यक् बोध। ठीक ठीक समझ मे आना। ४ समझ। बुद्धि। ५ मतैक्य। एकमत होना। एक राय होना। ६ स्वीकृति। मजूरी। ७ अभियुक्त का न्यायालय मे सत्य बात स्वीकार करना। (स्मृति)। ८. सपादन। सिद्धि। कार्य की पूर्णता। ९ प्रत्युत्पन्नमतित्व (को०)। १० सहयोग (को०)। ११. हमला। आक्रमण (को०)। १२. मौजूदगी। उपस्थिति (को०)।

सप्रतिपन्न—वि० [स०] १ पहुँचा हुआ। गया हुआ। उपस्थित। २. स्वीकृत। मजूर। ३. उपस्थित बुद्धि का। तेज समझनेवाला। ४ सपन्न। पूर्ण किया हुआ (को०)।

संप्रतिपादन—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रतिपादन] १ प्राप्त कराना। २. देना [को०]।

सप्रतिप्राण—सज्ञा पु० [स० सम्प्रतिप्राण] शरीरस्थ प्राणवायु [को०]।

सप्रतिभास—सज्ञा पु० [स० सम्प्रतिभास] वह उपलब्धि या अनुभव जो समिलन की ओर अभिमुख करता हो [को०]।

सप्रतिमुक्त—वि० [स० सम्प्रतिमुक्त] पूर्ण बद्ध। अच्छी तरह से कसा या बाँधा हुआ [को०]।

सप्रतिरोधक—सज्ञा पु० [स० सम्प्रतिरोधक] पूर्णत अवरोध, रोक या बधन। २ विघ्न। बाधा [को०]।

सप्रतिष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स० सम्प्रतिष्ठा] [वि० सप्रतिष्ठित] १. सुरक्षण। २ सातत्य। नैरतर्य (शुरू होने या अत का उलटा)। ३ उच्च पद या श्रेणी [को०]।

सप्रतिष्ठित—वि० [स० सम्प्रतिष्ठित] १ दृढतापूर्वक स्थित। अच्छी तरह जमा हुआ। सुस्थिर। २ जो सप्रतिष्ठा से युक्त हो। ३. अस्तित्व युक्त। सत्तात्मक [को०]।

सप्रतीक्षा—सज्ञा स्त्री० [स० सम्प्रतीक्षा] अपेक्षा। आशा [को०]।

सप्रतीत—वि० [सं० सम्प्रतीत] १ प्रत्यावर्तित। वापस आया हुआ। २ पूरी तरह विश्वस्त। पूर्ण विश्वासवाला। ३. पूर्णत विश्लेषित या निर्णीत। कृतनिश्चय। ४ पूर्ण ज्ञात। जिसे सब जानते हो। समान्य। ५ विनम्र। विनययुक्त [को०]।

सप्रतीति—सज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रतीति] १ पूर्ण विश्वास या प्रतीति। पूर्ण निर्णय या ज्ञान। ३ ख्याति। प्रसिद्धि। ४ विनय [को०]।

सप्रत्ति—सज्ञा स्त्री० [स० सम्प्रत्ति] पूर्ण रूप से दे देना। पूरी तरह दे देना [को०]।

यौ०—सप्रत्तिकर्म = पूर्णत प्रदान करने की क्रिया।

सप्रत्यय—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रत्यय] १ स्वीकृति। मजूरी। मानने की क्रिया या भाव। २ दृढ विश्वास। पूरा यकीन। ३ ठीक ठीक समझ। सम्यक् बोध। ४ भावना। विचार।

सप्रत्यागत—वि० [स० सम्प्रत्यागत] वापस। लौटा हुआ [को०]।

सप्रथित—वि० [स० सम्प्रथित] जो लोगो मे पूर्णत ज्ञात वा प्रसिद्ध हो [को०]।

सप्रद—वि० [सं० सम्प्रद] उदार। दानशील।

सप्रदत्त—वि० [सं० सम्प्रदत्त] १ हस्तातरित किया हुआ। जिसे पूर्ण रूप से प्रदान कर किया गया हो। २ विवाह मे दिया हुआ [को०]।

सप्रदा‡—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रदाय] दे० 'सप्रदाय'।

सप्रदातन—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रदातन] इक्कीस नरको मे से एक।

सप्रदाता—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रदातृ] देने अथवा हस्तातरित करनेवाला व्यक्ति [को०]।

सप्रदान—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रदान] १ दान देने की क्रिया या भाव। २ दीक्षा। मत्रोपदेश। शिष्य को मत्र देना। ३ उपहार। भेट। नजर। ४ विवाह मे देना [को०]। ५ हस्तातरित करना या पूरी तौर से दे देना (को०)। ६ वह जो दान को ग्रहण करे। आदाता (को०)। ७ व्याकरण मे एक कारक जिसमे शब्द देना क्रिया का लक्ष्य होता है।

विशेष—हिंदी मे इस कारक के चिह्न 'को' और 'के लिये' है। जैसे,—राम को दो। उसके लिये लाया।

सप्रदानीय—सज्ञा पु० [स० सम्प्रदानीय] १ वह जो प्रदान करने के लिये हो। २ भेट। उपहार। दान [को०]।

सप्रदाय—सज्ञा पु० [स० सम्प्रदाय] [वि० साम्प्रदायिक] १ देनेवाला। दाता। २ गुरुपरपरागत उपदेश। गुरुमत्र। ३ कोई विशेषधर्म सबधी मत। ४ किसी मत के अनुयायियो की मडली। फिरका। ५ मार्ग। पथ। ६ परिपाटी। रीति। चाल। ७ भेट। दान (को०)।

सप्रदायी—सज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदायिन्] [स्त्री० सप्रदायिनी] १ देनेवाला। २ करनेवाला। सिद्ध करनेवाला। ३ किसी सप्रदाय से सबध रखनेवाला। मत का माननेवाला। मतावलबी।

सप्रदिष्ट—वि० [सं० सम्प्रदिष्ट] १ पूर्णत ज्ञात। जाना हुआ। २ पूर्ण रूप से निर्दिष्ट। प्रदर्शित [को०]।

सप्रधान—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रधान] विचार। निर्णय। निश्चय [को०]।

सप्रधारण—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रधारण] १ विचार विवेचना। २ किसी वस्तु के औचित्य अनौचित्य के विषय मे निश्चय करना। निर्णय [को०]।

सप्रपद—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रपद] १ पादाग्र पर खडा होना। पादाग्र स्थिति। २ पर्यटन। भ्रमण [को०]।

सप्रपन्न—वि० [स० सम्प्रपन्न] १ पहुँचा हुआ। २. पठा हुआ। प्रविष्ट। ३ सयुक्त। युक्त [को०]।

सप्रभग्न—वि० [स० सम्प्रभग्न] तितर बितर। बिखरा हुआ। जैसे, सप्रभग्न सेना [को०]।

सप्रभव—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रभव] उदय। प्रादुर्भाव [को०]।

सप्रभिन्न—वि० [स० सम्प्रभिन्न] १ विदीर्ण। फटा हुआ। मदस्रावी (हाथी)। मतवाला [को०]।

सप्रमत्त—वि० [स० सम्प्रमत्त] १ मदमत्त। मस्त (हाथी)। २ अत्यधिक लापरवाह [को०]।

सप्रमापण—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रमापण] वध। हत्या [को०]।

सप्रमार्ग—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रमार्ग] शुद्धि। शोधन। माजन [को०]।

सप्रमुखित—वि० [स०] जो प्रमुख हो।

सप्रमुग्ध—सज्ञा पु० [स० सम्प्रमुग्ध] अस्तव्यस्तता। विशृखलता [को०]।

सप्रमोद—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रमोद] हर्षातिरेक। अत्यत आनद।

सप्रमोह—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रमोह] पूर्ण विमूढता। विमुग्धता [को०]।

सप्रयाण—सज्ञा पु० [स० सम्प्रमापण] गमन। प्रयाण [को०]।

सप्रमोष—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रमोष] हानि। नाश [को०]।

सप्रयुक्त—वि० [स० सम्प्रयुक्त] १ जोडा हुआ। एक साथ किया हुआ। २ जोता हुआ। नधा हुआ। ३ सबद्ध। मिला हुआ। ४ भिडा हुआ। ५ व्यवहार मे लाया हुआ। वर्ता हुआ। ६ मैथुनरत। सभोगलग्न (को०)। ७ प्रेरित। प्रात्साहित (को०)। ८ युक्त। सलग्न (को०)। ९ अवलबित। निर्भर (को०)। १० सपर्कित। सपर्क मे आगत (को०)।

सप्रयुक्तक—वि० [स० सम्प्रयुक्तक] सहयोगी [को०]।

सप्रयुद्ध—वि० [स० सम्प्रयुद्ध] युदधरत। युद्धचमान [को०]।

सप्रयोग—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रयोग] १ जोडने की क्रिया या भाव। समागम। एक साथ करना। २ मेल। मिलाप। सयोग। ३. रति। रमण। ४ धनादि का विनियोग। ५ नक्षत्र मे चद्रमा का योग। ६ इद्रजाल। ७ वशीकरण प्रभृति कार्य। ८ व्यवहार। प्रयोग (को०)। ९ सहयोग (को०)। १० क्रमबद्ध विधान। क्रमिक व्यवस्था (को०)। ११ पारस्परिक सबध (को०)।

सप्रयोगी'—सज्ञा पुं० [सं० सम्प्रयोगिन्] [स्त्री० सप्रयोगिनी] १ कामुक। लपट। २ इद्रजालिक। इद्रजाल दिखानेवाला। ३ जोडने-

वाला। मयोजक (को०)। ४ गुदाभजन करनेवाला। चुल्ली। गाड् (को०)।

सप्रयोगी[2]—वि० १ आपस मे जोडनेवाला। २ अत्यधिक कामवासनायुक्त। कामुक। लपट (को०)।

सप्रयोजन—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रयोजन] [वि० सप्रयोजनीय, सप्रयोज्य, सप्रयोजित, सप्रयुक्त, सप्रयोक्तव्य] अच्छी तरह जोडना या मिलाना।

सप्रयोजित—वि० [सं० सम्प्रयोजित] १ जोडा या मिलाया हुआ। २ प्रयुक्त या प्रयोग मे आया हुआ। ३ जो प्रस्तुत किया गया हो। ४ उचित। उपयुक्त (को०)।

सप्रवदन—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रवदन] १ बातचीत। वार्तालाप। कथोपकथन (को०)।

सप्रवर्तक—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रवर्तक] [वि० सप्रवर्ती] १ चलानेवाला। आगे बढानेवाला। २ जारी करनेवाला। चालू करनेवाला। ३ वह जो निर्माण करता हो। निर्माता (को०)।

सप्रवर्त्तन—[सज्ञा पुं० [स० सम्प्रवर्तन] [वि० सप्रवर्त्तिनी, सप्रवृत्त] १ चलाना। गति देना। २ घुमाना। ३ जारी करना। आरभ करना।

सप्रवर्ती—वि० [स० सम्प्रवर्ती] व्यवस्थित करनेवाला (को०)।

सप्रवाह—सज्ञा पु० [स० सम्प्रवाह] १ अटूट धारा। २ लगातार क्रम या सिलसिला (को०)।

सप्रवृत्त—वि० [स० सम्प्रवृत्त] १ आगे गया हुआ। बढा हुआ। अग्रसर। २ उपस्थित। मौजूद। प्रस्तुत। ३ जारी किया हुआ। आरभ किया हुआ। ४ सलग्न। आसक्त (को०)। ५ बीता हुआ। व्यतीत। गत (को०)। ६ पार्श्वस्थित। समीपस्थित (को०)।

सप्रवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स० सम्प्रवृत्ति] १ आसक्ति। २ अनुकरण करने की इच्छा। ३ उपस्थिति। मौजूदगी। ४ सघटन। मेल।

सप्रविष्ट—सज्ञा पुं० [सं० सम्प्रवृष्ट] खूब पानी बरसना।

सप्रशात—वि० [सं० सम्प्रशान्त] १ मरा हुआ। मृत। २ अलक्षित। लुप्त (को०)।

सप्रश्न—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रश्न] १ आश्रय। २ पूरी जाँच पडताल। ३ पूछताछ (को०)।

सप्रश्रय—सज्ञा पुं० [सं० सम्प्रश्रय] शिष्टता। विनम्रता (को०)।

सप्रश्रित—वि० [स० सम्प्रश्रित] शिष्ट। नम्र। विनयी (को०)।

सप्रसक्ति—सज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रसक्ति] दे० 'सप्रसाद'।

सप्रसाद—सज्ञा पुं० [अ० सम्प्रसाद] २ प्रसन्न करना। तुष्टीकरण। २ अनुग्रह। कृपा। ३ शाति। सौम्यता। ४ विश्वास। भरोसा। ५ आत्मा। ६ सुषुप्त अवस्था की पूर्ण शाति। निद्रा मे मानसिक विश्राति (को०)।

सप्रसादन—वि० [स० सम्प्रसादन] प्रसन्न या शात करनेवाला।

सप्रसाधन—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रसाधन] १ अगराग, आभूषण आदि शृगार का प्रसाधन। २ पूर्ण करना। पूरा करना (को०)।

सप्रसारण—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रसारण] १ फैलाना। विस्तार करना। २ सस्कृत व्याकरण मे य, व्, र, ल् का इ, उ, ऋ और लृ मे परिवर्तन।

सप्रसिद्ध—वि० [स० सम्प्रसिद्ध] १ भली भाँति पकाया हुआ। २ अतीव ख्यात या प्रसिद्ध (को०)।

सप्रसिद्धि—सज्ञा स्त्री० [स० सम्प्रसिद्धि] १ सफलता। कृतकार्य होना। २ सौभाग्य (को०)।

सप्रस्थान—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रस्थान] कूच करना। आगे बढना (को०)।

सप्रहर्षण[1]—वि० [सं० सम्प्रहर्षण] कामोत्तेजक (को०)।

सप्रहर्षण[2]—सज्ञा पु० प्रोत्साहन। प्रेरणा। उत्तेजना (को०)।

सप्रहार—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रहार] १ परस्पर चोट करना। २ मुठभेड। सग्राम। ३ गमन। गति (को०)।

सप्रहास—सज्ञा पु० [स० सम्प्रहास] हँसी उडाना। चिढाना (को०)।

सप्रहित—वि० [सं० सम्प्रहित] फेका हुआ। धकेला हुआ। २ भेजा हुआ (को०)

सप्राप्त—वि० [स० सम्प्राप्त] १ पहुँचा हुआ। उपस्थित। २ पाया हुआ। ३ उत्पन्न (को०)। ४ प्रस्तुत (को०)। ५ घटित। जो हुआ हो।

यौ०—सप्राप्तयौवन = जवान। सप्राप्तविद्य = पडित।

सप्राप्ति—सज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्राप्ति] १ प्राप्ति। लाभ। २ पहुँचना। उपस्थिति। ३ घटित होना। होना। ४ रोग का सन्निकृष्ट कारण। यह पाच प्रकार का होता है—(१) सख्या, (२) विकल्प, (३) प्राधान्य, (४) बल और (५) काल।

सप्रिय—सज्ञा पुं० [सं० सम्प्रिय] परितोष। तृप्ति (को०)।

सप्रीणन—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रीणन] परितुष्ट करना। प्रसन्न करना। प्रसादन (को०)।

सप्रीणित—वि० [स० सम्प्रीणित] जो पूरी तरह सतुष्ट या प्रसन्न किया गया हो (को०)।

सप्रीत—वि० [स० सम्प्रीत] सतुष्ट। प्रसन्न (को०)।

यौ०—सप्रीतमानस = जिसका मन सतुष्ट हो। प्रसन्नमन।

सप्रीति—सज्ञा [सं० सम्प्रीति] १ अनुराग। स्नेह। २ सद्भावना। मित्रतापूर्ण सद्भाव। ३. हर्ष। उल्लास आनद। ४ पूर्णत परितृप्ति (को०)।

सप्रीतिमत्—वि० [स० सम्प्रीतिमत्] सतुष्ट। प्रसन्न। हर्षित।

सप्रेक्षक—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रेक्षक] दर्शक। देखनेवाला।

सप्रेक्षण—सज्ञा पुं० [सं० सम्प्रेक्षण] [वि० सप्रेक्षित, सप्रेक्ष्य] १ अच्छी तरह देखना। २. खूब देखभाल करना। जाच करना। गवेषणा करना। निरीक्षण करना।

सप्रेप—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रेप] दे० सप्रैप'।

**सप्रेषण**—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रषण] [वि० सप्रेषित, सप्रेष्य] १ अच्छी तरह भेजना। प्रेषण करना। २ छुडाना। बरखास्त करना। काम से हटाना।

**सप्रेषणी**—सज्ञा स्त्री० [स० सम्प्रेषणी] मृतक का एक कृत्य जो द्वादशाह को होता है।

**सप्रेषित**—वि० [स० सम्प्रेषित] १ भेजा हुआ। जिसका प्रेषण किया गया हो। २ आहूत (को०)।

**सप्रैष**—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रैष] १ यज्ञादि मे ऋत्विजो को लगाना। नियुक्ति। २ आमत्रण। आह्वान। ३ प्रेषण। भेजना (को०)। ४ हटना (को०)।

**सप्रोक्त**—वि० [स० सम्प्रोक्त] १ कथित। कहा हुआ। बताया हुआ। जिसे घोषित किया गया हो। २ जिसे पुकारा गया हो। सबोधित (को०)।

**सप्रोक्षण**—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रोक्षण] [वि० सप्रोक्षित, सप्रोक्ष्य] १ खूब पानी छिडकना। अभिषेचन। सिचन। २ खूब पानी छिडक कर (मदिर आदि) साफ करना। धोना।

**सप्रोक्षणी**—सज्ञा स्त्री० [स० सम्प्रोक्षणी] अभिषेचन या सप्रोक्षण के निमित्त उपकल्पित जल (को०)।

**सप्लव**—सज्ञा पु० [स० सम्प्लव] [वि० सप्लुत] १ जल से तराबोर होना। जल की बाढ। बहिया। २ भारी समूह। घनी राशि। ३ हलचल। शोरगुल। हल्ला। ४ जलप्लावन। जलप्रलय (को०)। ५ महोर्मि। कल्लोल। लहर (को०)। ६ अत। समाप्ति (को०)। ७ वर्षा। वृष्टि (को०)। ८ व्यतिक्रम। क्रम से न होना (को०)। ९ उच्छेद। विध्वस (को०)।

**सप्लुत**—वि० [स० सम्प्लुत] जल मे तराबोर। डूबा हुआ।

**सप्लुति**—सज्ञा स्त्री० [स० सम्प्लुति] पीछे से हाथी पर कूदना (को०)।

**सफल**—सज्ञा पु० [स० सम्फल] १ वह जो फल या बीज से युक्त हो। २ दे० 'सफाल' (को०)।

**सफाल**—सज्ञा पुं० [स० सम्फाल] मेष। भेड।

**सफुल्ल**—वि० [स० सम्फुल्ल] जो पूर्णत विकसित हो। भली भाँति खिला हुआ (को०)।

**सफेट**—सज्ञा पुं० [स० सम्फेट] १ क्रोध मे परस्पर भिडना। भिडत। लडाई। २ झगडा। कहासुनी। तकरार। ३ नाट्य मे विमर्श सधि के तेरह भेदो मे से एक का नाम। ४ नाट्य मे आरभटी का एक भेद।

विशेष—नाट्यशास्त्र मे विमर्श के तेरह भेदो मे से एक सफेट भी है। रोष भरे भाषण को सफेट कहा गया है। जैसे,—राजसभा मे शकुतला और दुष्यत को कहा सुनी, वेणी सहार मे दुर्योधन और भीम की रोषपूर्ण कहासुनी जो धृतराष्ट्र की राजसभा म हुई थी। आरभटी के चार भेदो मे से भी एक सफेट है जिसम दो पात्र परस्पर भिडते और एक दूसरे को दबाने का प्रयत्न करते ह। जैसे,—मालती माधव नाटक मे माधव और अघोरघट की मुठभेड।

**सबध**[1]—सज्ञा पु० [स० सबन्ध सम्बन्ध] १ एक साथ बँधना, जुडना या मिलना। २ लगाव। सपर्क। वास्ता।

विशेष—दर्शन मे सबध तीन प्रकार के कहे गए हैं—समवाय, सयोग और स्वरूप।

३ एक कुल मे होने के कारण अथवा विवाह, दत्तक आदि सस्कारो के कारण परस्पर लगाव। नाता। रिश्ता। ४ गहरी मित्रता। बहुत मेलजोल। ५ सयोग। मेल। ६ विवाह। सगाई। ७ ग्रथ। पोथी। ८ एक प्रकार की ईति या उपद्रव। ९ किसी सिद्धान का हवाला। १० व्याकरण मे एक कारक जिससे एक शब्द के साथ दूसरे शब्द का सबध या लगाव सूचित होता है। जसे,—राम का घोडा।

विशेष—बहुत से वैयाकरण 'सबध' को शुद्ध कारक नही मानते। हिंदी मे सबध के चिह्न 'का', 'की' 'के' हैं।

१० योग्यता। औचित्य (को०)। ११ समृद्धि। सफलता (को०)। १२ नातेदारी। रिश्तेदारी (को०)।

**सबध**[2]—वि० १ समर्थ। योग्य। २ उचित। उपयुक्त। ठीक (को०)।

**सबधक**[1]—सज्ञा पुं० [स० सम्बन्धक] १ मेल जोल। लगाव। मैत्री। २ जन्म या विवाहजन्य सबध। ३ मित्र। सखा। ४ वह जिससे रिश्ता या सबध हो। सबधी। ५ एक प्रकार की शाति-सधि। मैत्री सधि (को०)।

**सबधक**[2]—वि० १ सबद्ध। विषयक। २ उपयुक्त। योग्य। ठीक (को०)।

**सबधयिता**—वि० [स० सम्बन्धयितृ] सबध करने या जोडनेवाला (को०)।

**सबधवर्जित**—सज्ञा पुं० [स० सम्बन्धवर्जित] १ ससक्ति या अन्वय का अभाव। २ वह जो किसी से लगाव या सबध न रखता हो। ३ एक प्रकार का रचनागत दोष (को०)।

**सबधातिशयोक्ति**—सज्ञा स्त्री० [स० सम्बन्धातिशयोक्ति] अतिशयोक्ति अलकार का एक भेद जिसमे असबध मे सबध दिखाया जाता है। विशेष—दे० 'अतिशयोक्ति'।

**सबधिभिन्न**—वि० [स० सम्बन्धिभिन्न] सबधियो मे विभक्त। जो रिश्तो मे बँटा हुआ हो (को०)।

**सबधिशब्द**—सज्ञा पुं० [स० सम्बन्धिशब्द] वह शब्द जो दो व्यक्तियो या वस्तुओ मे सबध का द्योतन करे। सबध सूचित करनेवाला शब्द (को०)।

**सबधी**[1]—वि० [स० सम्बन्धिन्] [वि० स्त्री० सबधिनी] १ सबध रखनेवाला। लगाव रखनेवाला। २ विषयक। सिलसिले या प्रसग का। ३ सद्गुण सपन्न (को०)। ४ जिसके साथ विवाहादि सबध हो (को०)।

**सबधी**[2]—सज्ञा पु० १ रिश्तेदार। २ जिनके पुत्र या पुत्री से अपनी पुत्री या पुत्र का विवाह हुआ हो। समधी। ३ वह जिसका सबध या लगाव हो (को०)।

**सबधु**—सज्ञा पुं० [स० सम्बन्धु] १ आत्मीय। भाई बिरादर। २ नातेदार। रिश्तेदार।

**सब**—सज्ञा पुं० [स० सम्ब] १ खेत की दुहरी जुताई। दे० शब'। २. जल। पानी (को०)।

सवत्—सज्ञा पुं० [स० सम्वत्] दे० 'सवत्'।

सवत ⑨—सज्ञा पु० [स० सम्वत्] दे० 'सवत्'। उ०—सवत सोरह सै एकतीना। करो कथा हरिपद धरि सीसा।—मानस, १।३४।

सवद्ध—वि० [स० सम्बद्ध] १ बँधा हुआ। जुडा हुआ। लगा हुआ। २ सम्बधयुक्त। मिला हुआ। ३ बद। ४ सयुक्त। सहित। ५ अनुरक्त (को०)। ६ विषयक (को०)।

सवद्धदर्प—वि० [स० सम्बद्धदर्प] अभिमानी। घमडी। दर्पयुक्त (को०)।

सवर—सज्ञा पु० [स० सम्वर] १ निग्रह। निरोध। प्रतिबध। रोक। २. सेतु। बाँध। पुल (को०)। ३ दे० 'शवर'।

यौ०—सवररिपु = मनसिज। कामदेव।

सवरण—सज्ञा पु० [स० सवरण] रोकना। दे० 'सवरण'।

सबल—सज्ञा पु० [स० सम्बल] १ शाल्मली। सेमल का वृक्ष। २ रास्ते का भोजन। सफर खर्च। ३. गेहूँ की फसल का एक रोग जो पूरब की हवा अधिक चलने से होता है। ४ सेतु। बाँध (को०)। ५ सखिया। आखु पाषाण। सोमलक्षार। शेष अर्थ के लिये दे० 'शवर' और 'शबल'।

सवाद ⑨—सज्ञा पु० [स० सम्वाद] दे० 'सँवाद'। उ०—सो सवाद उदार जेहि बिधि भा आगे कहब।—मानस, १।१२०।

सबाध[1]—सज्ञा पु० [स० सम्बाध] १ बाधा। अडचन। कठिनता। २ भीड। सघर्ष। ३ भग। योनि। ४. कष्ट। पीडा। दबाव। पीडन। ५ नरक का पथ। ६ डर। भय (को०)। ७ सँकरा रास्ता। तग राह (को०)।

सवाध[2]—वि० १ सकीर्ण। तग। २ जनपूर्ण। भीड से भरा हुआ। ३ भरा। पूर्ण। सकुल।

सवाधक—सज्ञा पु० [स० सम्बाधक] १ दबानेवाला। सतानेवाला। २ बाधा पहुँचानेवाला। ३ भीड करनेवाला (को०)।

सवाधन—सज्ञा पुं० [स० सम्बाधन] १ दबाव। रेलपेल। २ रोकना। बाधा देना। ३ अवरोध। रोक। फाटक। ४ योनि। भग। ५ शूलाग्र। ६ द्वारपाल।

सवाधना—सज्ञा स्त्री० [स० सम्बाधना] रगडने या घिसने की क्रिया। घर्षण (को०)।

सबी—सज्ञा स्त्री० [स० शिम्बी] फली।

सबुक—सज्ञा पुं० [स० शम्बुक, शम्बूक] १ दे० 'शबुक', 'शबूक'। उ०—सबुक भेक सेवार समाना। इहाँ न विषय कथा रस नाना। —मानस, १।३८। २ दे० 'शबूक'।

सबुद्ध[1]—वि० [स० सम्बुद्ध] १ जाग्रत। ज्ञानप्राप्त। सचेत। २. ज्ञानी। ज्ञानवान्। ३ पूर्ण रूप से जाना हुआ। ज्ञात।

सबुद्ध[2]—सज्ञा पु० १ बुद्ध। २ जिन।

सबुद्धि—सज्ञा स्त्री० [स० सम्बुद्धि] १ पूर्ण ज्ञान। सम्यक् बोध। २ बुद्धिमानी। होशियारी। ३ दूर से पुकार। आह्वान। ४ पदवी। उपाधि (को०)। ५ (व्याकरण मे) सबोधन कारक तथा उसकी विभक्ति का चिह्न (को०)। ६ पूर्ण चेतना (को०)।

सबुल—सज्ञा पु० [फा० सुबुल] १ एक सुगधित वनौषधि। बालछड। उ०—नकली नदियो के किनारो पर पत्थर के नकली टीले बने हुए थे, जिनपर छोटे छोटे पानी के हौज तथा चारो ओर सबुल के घने जगल लगे हुए थे।—पीतल०, भा० २, पृ० ३७। २ गेहूँ अथवा जौ की बाल। ३ केश। अलक। जुल्फ।

सबुल खताई—सज्ञा पुं० [फा०] तुर्किस्तान का एक पौधा जो औषध के काम मे आता है और जिसकी पत्तियो की नसे मिठाई मे पडती है।

सबेसर—सज्ञा पुं० [सं० सम्+हि० बसेरा] निद्रा। नीद। (डिं०)।

सबोध—सज्ञा पुं० [स० सम्बोध] १ सम्यक् ज्ञान। पूरा बोध। २ पूर्ण तत्वबोध। पूरी जानकारी। ३ धीरज। सात्वना। ढारस। ४ समझाना। व्याख्यान करना। सूचित करना (को०)। ५ प्रेषण। क्षेपण (को०)। ६ हानि। विनाश (को०)।

सबोधन—सज्ञा पुं० [स० सम्बोधन] [वि० सबोधित, सबोध्य] १ जगाना। नीद से उठाना। २ पुकारना। आह्वान करना। ३ व्याकरण मे वह कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारने या बुलाने के लिये प्रयोग सूचित होता है। जैसे,—हे राम! ४ जताना। ज्ञान कराना। विदित कराना। ५ नाटक मे आकाशभाषित। ६ समझाना बुझाना। समाधान करना। ७ सबोधन मे प्रयुक्त किया जानेवाला शब्द (को०)। ८ जानकारी करना। समझना (को०)।

सबोधना ⑨—क्रि० स० [सं० सम्बोधन] समझाना। प्रबोध देना। सात्वना देना। उ०—(क) बाजी सत दीने बगसि सबोधे सात भ्रात।—पृ० रा०, ५।३१। (ख) ज्यो ज्यो ऐसी बातन मँदोदरी सबोधै त्यो त्यो, देव दुख पाये कहे कैसे समुझाइए। याकी बात माने सिय लैके जाइ मिले यह औरन बिमारि याको सौगुन बढाइए।—हृदयराम (शब्द०)।

सबोधि—सज्ञा स्त्री० [सं० सम्बोधि] (बौद्ध दर्शन मे) पूर्ण ज्ञान (को०)।

सबोधित—वि० [सं० सम्बोधित] १ जिसे चेताया गया हो। बोध कराया हुआ। २ जिसका ध्यान आकृष्ट किया गया हो। आहूत। पुकारा हुआ (को०)।

सबोध्य—सज्ञा पुं० [स० सम्बोध्य] १ वह जिसको सबोधन किया जाय। २ जिसे समझाया या जताया जाय।

सबोसा—सज्ञा पुं० [फा० सबोसह्?] एक पकवान जो सिंघाडे के आकार का होता है। दे० 'समोसा'।

सबौधिया—सज्ञा पुं० [देश०] वैश्यो की एक जाति।

सबृहण—सज्ञा पुं० [स० सम्बृहण] १ अच्छी प्रकार से पुष्ट या तेजस्वी करना। २ वह जो पुष्टिकारक हो। शक्तिप्रद (को०)।

सभक्त—वि० [सं० सम्भक्त] १ विभक्त। जो बाँट दिया गया हो। २ [illegible] भाग लेनेवाला। ३ अत करण मे किसी [illegible] भक्त। ४ उपभोग करनेवाला (को०)।

सभक्ति [illegible] [सं० सम्भक्ति] १ प्रदान करने का भाव। दे [illegible] भाग या हिस्सा लेना। ३ श्रद्धा या [illegible] (को०)।

स [illegible] सम्भक्त] १ एक साथ भोजन [illegible] ता हो। ३ भक्षण। भोजन

**सभग्न[1]**—वि० [स० सम्भग्न] १ बहुत टूटा हुआ। बिलकुल खंडित। २ हारा हुआ। ३ विफल।

**सभग्न[2]**—संज्ञा पु० शिव का एक नाम।

**सभर**—संज्ञा पु० [स० सम्भर] १ भरण करनेवाला। पोषण करनेवाला। २ साँभर झील। ३ शाकंभरी प्रदेश।

**सभरण**—संज्ञा पुं० [स० सम्भरण] [वि० सभरणीय, सभृत] १ पालन पोषण। २ एकत्र करना। संचय। जुटाना। ३ योजना। विधान। ४ तैयारी। सामान। ५ एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी में लगती थी।

**सभरणी**—संज्ञा स्त्री० [स० सम्भरणी] सोमरस रखने का एक यज्ञपात्र।

**सभरना** ⓤ—क्रि० स० [स० √सम्भालय् (=सुनना)] १ सँभारना। ग्रहण करना। श्रवण करना। उ०—सभरिय वत्त सभरि नरेस, आभासि चित्त अप्पा असेस।—पृ० रा०, १।६१६। २ सँभालना।

**सभरना** ⓤ—क्रि० अ० दे० 'सँभलना'।

**सभरवै** ⓤ—संज्ञा पु० [स० सम्भर+पति, प्रा० वइ शाकंभरी प्रदेश का राजा, पृथ्वीराज।

**सभरि, सभरी**—संज्ञा पु० [स० सम्भर] १ शाकंभरी प्रदेश। २ पृथ्वीराज चौहान।

यौ०—सभरिधनी=पृथ्वीराज। उ०—चल्यो व्याहि सभरिधनी।—पृ० रा०, १४।१२८। सभरिवै=दे० 'सभरवै'। सभरीराव=सोमेश्वर। उ०—सभरी राव सभारि छल।—पृ० रा०, १।६५६।

**सभरेस** ⓤ—संज्ञा पु० [स० सम्भर+ईश] पृथ्वीराज। सभर का राजा।

**सभल**—संज्ञा पुं० [स० सम्भल] १ कन्यार्थी पुरुष। किसी लड़की से विवाह की इच्छा रखनेवाला व्यक्ति। २ चेटक। दलाल। ३ एक स्थान जहाँ विष्णु का दसवाँ कल्कि अवतार होनेवाला है। इसे कुछ लोग मुरादाबाद जिले का 'संभल' नाम का कस्बा बतलाते हैं।

**सभली**—संज्ञा स्त्री० [स० सम्भली] कुटनी। दूती। शंभली।

**सभव**—संज्ञा पुं० [स० सम्भव] १ उत्पत्ति। जन्म। पैदाइश। जैसे,—कुमारसंभव। २ एक साथ होना। मेल। संयोग। समागम। ३ सहवास। प्रसंग। ४ अँटना। आ सकना। समाई। ५ हेतु। कारण। ६ होना। घटित होना। ७ हो सकने के योग्य होना। मुमकिन होना। जैसे,—उसका सुधरना संभव नहीं। ८ परिमाण का एक होना। एक ही बात होना। जैसे,—एक रुपया कहो या सोलह आने। (दर्शन)। ९ उपयुक्तता। समीचीनता। मुनासिबत। १० वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे अर्हन् (जैन)। ११ एक लोक का नाम। (बौद्ध)। १२ नाश। ध्वंस। १३ युक्ति। उपाय। १४. उत्पादन। पालन पोषण (को०)। १५ जान पहचान। परिचय (को०)। १६ धन। दौलत। संपत्ति (को०)। १७ विद्या (को०)। १८ अस्तित्व। उपस्थिति (को०)।

**सभवत**—अव्य० [स० सम्भवतस्] हो सकता है। मुमकिन है। शायद।

**सभवन**—संज्ञा पुं० [स० सम्भवन] [वि० संभवनीय, संभव्य, संभूत] १ उत्पन्न होना। पैदा होना। २ हो सकना। मुमकिन होना। ३ धारण। पालन। पोषण। ४ होना। घटित होना।

**सभवना** ⓤ[1]—क्रि० स० [स० सम्भव+हिं० ना (प्रत्य०)] उत्पन्न करना। पैदा करना।

**सभवना** ⓤ[2]—क्रि० अ० १ उत्पन्न होना। पैदा होना। २ संभव होना। हो सकना। उ०—धर्म स्थापन हेतु पुनि धारयो नर अवतार। ताको पुत्र कलत्र सो नहिं संभवत पियार।—सूर (शब्द०)।

**सभवनाथ**—संज्ञा पुं० [स० सम्भवनाथ] वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे तीर्थंकर (जैन)।

**सभवनीय**—वि० [स० सम्भवनीय] जो हो सकता हो। मुमकिन।

**सभविष्णु**—संज्ञा पुं० [स० सम्भविष्णु] उत्पादक। स्रष्टा। निर्माण-कर्ता। निर्माता (को०)।

**सभवी**—वि० [स० सम्भविन्] १ हो सकनेवाला। मुमकिन। २ होने-वाला। जैसे, स्वत संभवी।

**सभव्य[1]**—संज्ञा पुं० [स० सम्भव्य] कपित्थ। कैथ।

**सभव्य[2]**—वि० जो हो सकता हो। संभवनीय। मुमकिन।

**सभार**—संज्ञा पुं० [स० सम्भार] १ संचय। एकत्र करना। इकट्ठा करना। २ तैयारी। सामान। साज। सामग्री। रसद वगैरह। ३ धन। संपत्ति। वित्त। ४ पूर्णता। ५ समूह। दल। राशि। ढेर। ६ पालन। पोषण। ७ अधिकता। अतिशयता। प्राचुर्य (को०)।

**सभारना** ⓤ—क्रि० स० [हिं० सँभालना] १ स्मरण करना। याद करना। उ०—सभारि श्रीरघुवीर धीर प्रचारि कपि रावन हन्यो।—मानस, ६।९४।२०। २ दे० 'सँभालना'।

**सभाराधिप**—संज्ञा पुं० [स० सम्भाराधिप] शुक्रनीति के अनुसार राज-कोष पदार्थों का अध्यक्ष। तोशाखाने का अफसर।

**सभारी**—वि० [स० सम्भारिन्] [वि० स्त्री० सभारिणी] भरा हुआ। पूर्ण।

**सभार्य**—वि० [स० सम्भार्य] १ आश्रय देने योग्य। सहारा देने योग्य। २ जिसे उपयोग करने लायक बनाया जा सके। ३, जिसके हिस्सों को बटोर कर एक साथ संघटित रखा जा सके (को०)।

**सभावन**—संज्ञा पुं० [स० सम्भावन] [वि० संभावनीय, संभावित, संभावितव्य, संभाव्य] १ कल्पना। भावना। अनुमान। २ जुटाना एकत्र करना। योग करना। ३ उपस्थित करना। संपादन। ४ आदर। सम्मान। पूजा। ५ पूज्यबुद्धि। प्रतिष्ठा का भाव। ६ योग्यता। पात्रता। अधिकार। काबिलीयत। ७ ख्याति। प्रसिद्धि। नाम। ८ स्वीकरण। स्वीकार। ९ संदेह (को०)। १० एक अलंकार। दे० 'संभावना'—७। ११ प्रेम। लगाव। संबंध (को०)। १२ दे० 'संभावना'।

**संभावना**—पञ्चा स्त्री० [सं० सम्भावना] १ कल्पना। भावना। अनुमान। फर्ज। २ पूजा। आदर। सत्कार। ३ किसी बात के हो सकने का भाव। हो सकना। मुमकिन होना। ४ योग्यता। पात्रता। काबिलीयत। ५ ख्याति। प्रसिद्धि। नामवरी। ६ प्रतिष्ठा। मान। इज्जत। ७ एक अलंकार जिसमे किसी एक बात के होने पर दूसरी बात का होना निर्भर कहा जाता है। उ०—(क) एहि बिधि उपजै लच्छि जब होइ सीय समतूल। (ख) सहस जीभ जौ होय, तौ बरनै जस आप को। ८ संदेह (को०)। ९ प्रेम (को०)। १० प्राप्ति। उपलब्धि (को०)।

**संभावनीय**—वि० [सं० सम्भावनीय] १ जो हो सकता हो। मुमकिन। २ कल्पना के योग्य। ध्यान मे आने लायक। ३ भाग लेने लायक। जिसमे भाग लिया जा सके। ४ आदर के योग्य। सत्कार के योग्य।

**सभावयितव्य**—वि० [स० सम्भावयितव्य] दे० 'सभावितव्य'।

**सभावित**[1]—वि० [स० सम्भावित] १ कल्पित। विचारा हुआ। मन मे माना हुआ। २ जुटाया हुआ। उपस्थित किया हुआ। ३ पूजित। आदृत। ४ विख्यात। प्रसिद्ध। ५. योग्य। उपयुक्त। काबिल। ६ सभव। मुमकिन। ७ उत्पादित। गृहीत। प्राप्त (को०)। ८ तुष्ट (को०)। ९ जिसका आदर होनेवाला हो। १० अपेक्षित। आकांक्षित। समर्थित।

**संभावित**[2]—पञ्चा पुं० अनुमान। ऊहा। कल्पना (को०)।

**सभावितव्य**—वि० [स० सम्भावितव्य] १ कल्पना या अनुमान के योग्य। २ सत्कार के योग्य। ३ जिसका सत्कार होनेवाला हो। ४ सभव। मुमकिन।

**सभाव्य**[1]—वि० [स० सम्भाव्य] १ जो हो सकता हो। मुमकिन। २ प्रशसनीय। श्लाघ्य। ३. पूजा या सत्कार के योग्य, अथवा जिसका सत्कार होनेवाला हो। ४ कल्पना या अनुमान के योग्य। ध्यान मे आने लायक।

**संभाव्य**[2]—सञ्चा पुं० १ मनु के एक पुत्र का नाम। २ उपयुक्तता। काबिलियत। योग्यता। पात्रता (को०)।

**सभाष**—पञ्चा पुं० [स० सम्भाष] १ कथन। समापण। बातचीत। २ वादा। करार। ३ नमस्कार। प्रणाम (को०)। ४ पहरा-देनेवाले आपसी पहचान के लिये जिस गुप्त शब्द का सकेत रूप मे व्यवहार करते है वह शब्द (को०)। ५ काम सबध। अवैधानिक मैथुन सबध (को०)।

**सभाषण**—पञ्चा पु० [स० सम्भाषण] [वि० सभाषणीय, सभाषित, सभाष्य] १ कथोपकथन। बातचीत। २ सभोग। मैथुन (को०)। ३ पहरुओ का सकेत शब्द (को०)। ४ करार। वादा (को०)। ५ अभिवादन (को०)।

**सभाषणीय**—वि० [स० सम्भाषणीय] जो बातचीत करने योग्य हो। जिससे भाषण करना उचित हो।

**सभाषा**—पञ्चा स्त्री० [सं० सम्भाषा] दे० 'सभाष', 'सभाषण' (को०)।

**संभाषित**[1]—वि० [स० सम्भाषित] १ अच्छी तरह कहा हुआ। २. जिससे बातचीत हुई हो।

**सभाषित**[2]—पञ्चा पुं० बातचीत। वार्तालाप (को०)।

**सभाषी**—वि० [स० सम्भाषिन्] [वि० स्त्री० सभाषिणी] कहनेवाला। बोलनेवाला। बातचीत करनेवाला।

**सभाष्य**—वि० [स० सम्भाष्य] भाषण करने योग्य। जिससे बातचीत करना उचित हो।

**सभिन्न**[1]—वि० [स० सम्भिन्न] १ भली भाँति अलग। २ पूर्ण भग्न। बिलकुल टूटा हुआ। ३ सक्षोभित। चालित। ४ गठा हुआ। ठोस। ५ प्रस्फुटित। खिला हुआ। ६ सपर्क मे आया हुआ (को०)। ७ युक्त। मिला हुआ (को०)। ८ अविश्वस्त। अविश्वास्य (को०)। ९ सकुचित। सिकुडा या सिकोडा हुआ (को०)। १० छोडा हुआ। त्यक्त। परित्यक्त (को०)।

यौ०—सभिन्न प्रलाप। सभिन्नप्रलापिक = व्यर्थ प्रलाप करनेवाला। सभिन्नबुद्धि = जिसकी बुद्धि नष्ट हो गई हो। सभिन्नमर्याद = जिसने मर्यादा का उल्लघन किया हो। सभिन्नवृत्त = सदाचार-रहित। दुराचारी। सभिन्नसर्वांग = जिसने अपने सभी अगो को सकुचित किया हो या कस लिया हो।

**सभिन्न**[2]—सञ्चा पु० शिव (को०)।

**संभिन्नप्रलाप**—सञ्चा पु० [स० सम्भिन्न प्रलाप] व्यर्थ की बातचीत जो बौद्धशास्त्रो मे एक पाप कहा गया है।

**सभीत**—वि० [स० सम्भीत] बेहद डरा हुआ। अत्यधिक भयभीत (को०)।

**सभु**[1]—पञ्चा पुं० [सं० शम्भु, प्रा० सभु] शिव। महादेव। दे० 'शभु'। उ०—जनम कोटि लगि रगरि हमारी। बरौ सभु नतु रहौं कुआरी।—मानस, १।८१।

यौ०—सभुगन(ण) = शिव के गण। उ०—सिवहिं सभुगन करहिं सिंगारा।—मानस, १।९२। सभुसुतसभूत सुत = शिव के औरस पुत्र, स्कद।

**सभु**[2]—वि० [स० सम्भु] उत्पन्न। निर्मित। जात (को०)।

**सभु**[3]—सञ्चा पुं० १ जनयिता। जनक। पिता। २. एक छद (को०)।

**सभुक्त**—वि० [स० सम्भुक्त] १ भोगा हुआ। भुक्त। २ खाया हुआ। ३ प्रयोग मे लाया हुआ। प्रयुक्त। व्यवहृत। ४ पार किया हुआ। जिसका अतिक्रम किया गया हो। अतिक्रात (को०)।

**सभुग्न**—वि० [स० सम्भुग्न] पूर्णत झुका हुआ। बल खाया हुआ (को०)।

**सभूत**—वि० [स० सम्भृत] १ एक साथ उत्पन्न या आगत। किसी के साथ जात, रचित या निर्मित। २ उत्पन्न। उद्भूत। जात। पैदा। ३ युक्त। सहित। ४ कुछ से कुछ हो गया हुआ। ५ उपयुक्त। योग्य। ६ तुल्य। बराबर। सदृश। समान (को०)।

**सभूति**—सञ्चा स्त्री० [स० सम्भूति] १ उत्पत्ति। उद्भव। २ बढती। विभूति। बरकत। ३ योग की विभूति। करामात। ४ क्षमता। शक्ति। ५ उपयुक्तता। योग्यता। ६ दक्ष प्रजापति

की एक कन्या जो मरीचि की पत्नी थी। ७ ज्ञान। विद्या (को०)। ८ सयोग। योग (को०)।

**सभूय**—अव्य० [स० सम्भूय] एक मे। एक साथ। साथ मे। मिलकर। साझे मे।

**सभूयकारी**—सज्ञा पुं० [स० सम्भूयकारिन] स्मृति के अनुसार सघ मे मिलकर व्यापार करनेवाला व्यक्ति। वह जो किसी कपनी का हिस्सेदार हो।

विशेष—बृहस्पति (स्मृति) के अनुसार यदि सघ को दैवी कारण से या राजा के कारण हानि पहुँचे तो उसके भागी सब हिस्सेदार हैं, पर यदि किसी हिस्सेदार की भूल या गलती से हानि पहुँचे तो उसका जिम्मेदार अकेला वही है।

**सभूयक्रय**—सज्ञा पु० [स० सम्भूयक्रय] कौटिल्य के अनुसार थोक माल बेचना या खरीदना।

**सभूयगमन**—सज्ञा पु० [स० सम्भूयगमन] १ कामदक नीति के अनुसार पूरी चढाई जिसमे सामत और मौल (तअल्लुकेदार) सब अपने दलबल के साथ हो। २ एक साथ जाना। समूह या दल के साथ जाना।

**सभूययान**—सज्ञा पुं० [स० सम्भूययान] दे० 'सभूयगमन' [को०]।

**संभूयसमुत्थान**—सज्ञा पु० [स० सम्भूयसमुत्थान] १ मिलकर किया हुआ व्यापार। साझे का कारबार। २ वह विवाद या मुकदमा जो साझेदारो मे हो।

**सभूयसमुत्थापन**—सज्ञा पुं० [सं० सम्भूयसमुत्थापन] कपनी खोलना। साझे का कारबार करना। सहकारी समिति द्वारा व्यापार करना।

**सभूयासन**—सज्ञा पुं० [स० सम्भूयासन] कामदक नीति के अनुसार शत्रु से मेल करके और उसे उदासीन समझकर चुपचाप बैठ जाना।

**सभृत**[1]—वि० [स० सम्भृत] १ एकत्र। इकट्ठा। जमा किया हुआ। बटोरा हुआ। २ पूर्ण। भरा हुआ। लदा हुआ। ३ युक्त। सहित। ४ पाला पोसा हुआ। ५ समादृत। समानित। जिसकी इज्जत की गई हो। ६ प्रस्तुत। तैयार। ७ निर्मित। बना हुआ। ८ प्राप्त। लब्ध। अवाप्त (को०)। ९ ले जाया गया हुआ। वहन किया हुआ (को०)। १० उत्पादित। पैदा किया हुआ (को०)। ११ शोभा से भरा हुआ। १२ उच्च। जैसे, स्वर (को०)।

यौ०—सभृतबल = जिसने सेना इकटठी कर ली हो। सेना इकट्ठा करनेवाला। सभृतश्री = अत्यत सुदर। सभृतश्रुत = विद्वान्। कृतविद्य। विज्ञ। सभृतसभार = कार्य के लिये प्रस्तुत। तैयार। सभृतस्नेह = प्रेमयुक्त। प्रेमपूर्ण।

**सभृत**[2]—सज्ञा पुं० उच्च स्वर। चीख।

**सभृताग**—वि० [स० सम्भृताङ्ग] १ पोषित शरीरवाला। पुष्ट अगोवाला। २ जिसका शरीर आवृत या ढका हो [को०]।

**सभृतार्थ**—वि० [स० सम्भृतार्थ] अधिक धन एकत्रित कर लेनेवाला।

**सभृताश्व**—वि० [स० सम्भृताश्व] जिसके पास पुष्ट और दमदार अश्व हो [को०]।

**सभृतौषध**—वि० [स० सम्भृतौषध] जिसके पास अनेक औषधियो का सचय हो [को०]।

**सभृति**—सज्ञा स्त्री० [स० सम्भृति] १ एकत्र करने की क्रिया या भाव। २ सामान। सामग्री। ३ समूह। भीड। जमावडा। ४ राशि। ढेर। ५ अधिकता। बहुतायत। ६ सम्यक् भरण पोषण। खूब पालना पोसना।

**सभृष्ट**—वि० [स० सम्भृष्ट] १ खूब भुना या तला हुआ। २ कुरकुरा। करारा। ३ सुखाया हुआ (को०)। ४ क्षीण। दुर्बल। दुबला पतला (को०)।

**सभेद**—सज्ञा पुं० [स० सम्भेद]। १ खूब छिदना या भिदना। २ शिथिल होना। ढीला होकर खिसकना। ३ वियोग। जुदाई। अलग होना। ४. मिले हुए शत्रुओ मे परस्पर विरोध उत्पन्न करना। भेदनीति। ५ किस्म। प्रकार। ६ मिटना। जुटना। मिलना। ७ नदियो का सगम या नदी समुद्र का सगम। ८ तोडना। टुकडे टुकडे करना (को०)। ९ एकीभवन। मिलाप। मिश्रण (को०)। १० विकसित होना। खिलना (को०)। ११ सारूप्य। साम्य। एकरूपता (को०)। १२ मुष्टि-बध। मुट्ठी बाँधना (को०)।

**सभेदन**—सज्ञा पुं० [स० सम्भेदन] [वि० सभेदनीय, सभेद्य, सभिन्न] १ खूब छेदना या आर पार घुसना। धँसना। विदीर्णन। २ जुटाना। मिलाना। भिडाना। ३ तोडना। टुकडे टुकडे करना (को०)।

**सभेद्य**—वि० [स० सम्भेद्य] १ भेदने या छेदने योग्य। ३ जो सपर्क मे लाने योग्य हो। मिलाने योग्य [को०]।

**सभोक्ता**—सज्ञा पु० [स० सम्भोक्तृ] १ खानेवाला। भक्षक। २ उपभोग करने या भोगनेवाला [को०]।

**सभोग**—सज्ञा पुं० [स० सम्भोग] १ किसी वस्तु का भली भाँति उपयोग। सुखपूर्वक व्यवहार। २ सुरत। रति क्रीडा। मैथुन। ३ शृगार रस के तीन भेदो मे से एक। सयोग शृगार। मिलाप की दशा। ४ हाथी के कुभ या मस्तक का एक भाग। ५ स्थायित्व। सातत्य (को०)। ६ आनद। विनोद (को०)। ७ अधिकृति। प्रयोग। व्यवहार (को०)।

यौ०—सभोगकाय = बुद्ध के तीन शरीर मे से एक। भोग शरीर। सभोगक्षम = उपभोग लायक। सभोगयक्षिणी = एक योगिनी जिसे वीणा भी कहते है। सभोगवत् (वान्) = आनदयुक्त। हर्षयुक्त। मोजमस्ती की जिंदगी बितानेवाला। सभोगवेश्म = खेल का घर।

**सभोगी**[1]—वि० [स० सम्भोगिन्] [वि० स्त्री० सभोगिनी] १ सभोग करनेवाला। २ व्यवहार का आनद लेनेवाला। ३ कामुक (को०)।

**सभोगी**[2]—सज्ञा पुं० लपट पुरुष। कामी व्यक्ति [को०]।

**सभोग्य**—वि० [स० सम्भोग्य] १ जिसका व्यवहार होनेवाला हो। जो काम मे लाया जानेवाला हो। २ उपभोग करने योग्य। व्यवहार योग्य। वर्तने लायक।

**सभोज**—सज्ञा पुं० [स० सम्भोज] भोजन। खाना।

**सभोजक**—सज्ञा पुं० [स० सम्भोजक] १. भोजन करनेवाला। भक्षक।

खानेवाला। स्वाद लेनेवाला। २ भोजन परसनेवाला। रसोइया।

**सभोजन**—संज्ञा पु० [सं० सम्भोजन] [वि० सभोजनीय, सभोज्य, सभुक्त] १ सामूहिक भोज। दावत। २ खाने की वस्तु। खाना।

**सभोजनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भोजनी] १. एक साथ मिलकर या सामूहिक रूप से भोजन करना। २. भोज के अंत में दी जानेवाली दक्षिणा [को०]।

**सभोजनीय**—वि० [सं० सम्भोजनीय] १ जो खाया जानेवाला हो। जिसे खिलाया जाय। २. खाने योग्य। भक्षणीय।

**सभोज्य**—वि० [सं० सम्भोज्य] १ जो खाया जानेवाला हो। खिलाने योग्य। २ खाने योग्य। भक्षणीय।

**सभ्रम**[1]—संज्ञा पु० [सं० सम्भ्रम] १ घूमना। चक्कर। फेरा। २. उतावली। हड़बड़ी। आतुरता। ३ घबराहट। व्याकुलता। चकपकाहट। ४ हलचल। धूम। ५ सहम। सिटपिटाना। ६ उत्कंठा। गहरी चाह। शौक। हौसला। उत्साह। उमंग। ७. पूज्य भाव। आदर। मान। गौरव। ८ भूल। चूक। गलती। ९ श्री। शोभा। छवि। सौंदर्य। १० शिव के एक प्रकार के गण। ११ मोह। भ्रम। भ्रांति (को०)। १२ अबोधता। नादानी। गँवारपन (को०)।

**सभ्रम**[2]—वि० १ क्षुब्ध। २. इधर उधर घूमता हुआ। जैसे नेत्र [को०]।

यौ०—सभ्रमज्वलित = उतावली के कारण क्षुब्ध। सभ्रममृत् = व्याकुल उद्विग्न। घबराया हुआ।

**सभ्रम**[1]—क्रि० वि० आतुरता के साथ। उतावली में। उ०—(क) सुनि सिसुरुदन परम प्रिय बानी। सभ्रम चलि आई सब रानी।—मानस, १।१९३। (ख) सहित सभा सभ्रम उठेउ रविकुल कमल दिनेसु।—मानस, २।२७३।

**सभ्रांत**—वि० [सं० सम्भ्रान्त] १ घुमाया हुआ। चक्कर दिया हुआ। २ घबराया हुआ। उद्विग्न। चकपकाया हुआ। स्फूर्तियुक्त। तेजस्वी। ४ समानित। प्रतिष्ठित। ५ उत्तेजित (का०)।

यौ०—सभ्रांतजन = (१) वह जिसके साथी उद्विग्न हों। (२) आदरणीय व्यक्ति। सभ्रांतमना = व्याकुल। उद्विग्नहृदय।

**सभ्रांति**—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भ्रान्ति] १. घबराहट। उद्वेग। आतुरता। हड़बड़ी। ३. चकपकाहट।

**सभ्राजना**†—क्रि० अ० [सं० सम्भ्राज्] पूर्णत सुशोभित होना। उ०—राम सभ्राज सेपा सहित सर्वदा, तुलसि मानस रामपुर विहारी।—तुलसी (शब्द०)।

**समत**—वि० [सं० सम्मत] दे० 'सम्मत'।

**समान**—संज्ञा पुं० [सं० सम्मान] दे० 'सम्मान'।

**समित**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्मिति] दे० 'सम्मिति'।

**समित**[2]—वि० दे० 'सम्मित'।

**समेलन**—संज्ञा पुं० [सं० सम्मेलन] दे० 'सम्मेलन'।

**सयता**—संज्ञा पुं० [सं० सयन्तृ] १ संयम करनेवाला। रोकनेवाला। निग्रही। २. शासक। अधिकारी। नेता।

**सयत्रित**—वि० [सं० सन्यन्त्रित] १ बँधा हुआ। जकड़ा हुआ। बद्ध। २ बद। ३ रोका हुआ। दबाया हुआ।

**सयर**—संज्ञा पुं० [सं०] ककाल। पंजर।

**सयत्**[1]—वि० [सं०] १ संबद्ध। लगा हुआ। २ अखंडित। लगातार।

**सयत्**[2]—संज्ञा पुं० १ नियत स्थान। बंदी हुई जगह जहाँ मिला जाय। २ वादा। करार। ३ झगड़ा। लड़ाई। संघर्ष। ४ एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी बनाने के काम आती थी।

**सयत**[1]—वि० [सं०] १ बद्ध। बँधा हुआ। जकड़ा हुआ। २ पकड़ में रखा हुआ। दबाव में रखा हुआ। ३ रोका हुआ। दमन किया हुआ। काबू में लाया हुआ। वशीभूत। ४ बंद किया हुआ। कैद। ५ क्रमबद्ध। व्यवस्थित। नियमबद्ध। कायदे का पाबंद। ६ उद्यत। तैयार। सन्नद्ध। ७ जिसने इंद्रियों और मन को वश में किया हो। चित्तवृत्ति का निरोध करनेवाला। निग्रही। ८ हद के भीतर रखा हुआ। उचित सीमा के भीतर रोका हुआ। जैसे,—संयत आहार।

यौ०—संयतचेता = संयत चित्तवाला। संयत प्राण। संयतमना = संयत चित्तवाला। संयतमुख = दे० 'संयतवाक्'। संयतमैथुन = जो मैथुन का त्याग कर चुका हो। संयतवस्त्र = चुस्त कपड़े पहिननेवाला। संयतवाक् = कम बोलनेवाला।

**सयत**[2]—संज्ञा पु० १ शिव का एक नाम। २ योगी।

**सयतप्राण**—वि० [सं०] जिसने प्राण वायु या श्वास को वश में किया हो। प्राणायाम करनेवाला।

**सयताजलि**—वि० [सं० संयताञ्जलि] बद्धांजलि।

**सयताक्ष**—वि० [सं०] जिसकी आँखें खुली न हों। बंद या मुँदी आँखवाला [को०]।

**संयतात्मा**—वि० [सं० संयतात्मन्] जिसने मन को वश में किया हो। चित्तवृत्ति का निरोध करनेवाला।

**संयताहार**—वि० [सं०] भोजन में संयम रखनेवाला। अल्पाहारी [को०]।

**संयति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वश में रखना। निरोध। रोक।

**संयतेंद्रिय**—वि० [सं० संयतेन्द्रिय] जिसने इंद्रियों को वश में कर रखा हो [को०]।

**संयतोपस्कर**—वि० [सं०] व्यवस्थित घरवाला। जिसके घर की साजसज्जा व्यवस्थित हो [को०]।

**संयत्त**—वि० [सं०] १ तत्पर। तैयार। उद्यत। २ अवहित। सावधान। सतर्क [को०]।

**संयत्ता**—वि० [सं० संयत्तृ] संयमन करनेवाला। नियंता [को०]।

**संयत्वर**—वि० [सं०] १ मौन। चुप। २ पशुसमूह [को०]।

**संयद्वसु**[1]—वि० [सं०] बहुत धनवाला। धनवान।

**संयद्वसु**[2]—संज्ञा पु० सूर्य की सात किरणों में से एक।

**संयद्वाम**—वि० [सं०] १ अभिमत। सुखकर। २ प्रिय को एकत्र करने अथवा मिलानेवाला [को०]।

**संयम**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संयमी, संयमित, संयत] १ रोक। दाब। वश में रखने की क्रिया या भाव। २ इंद्रियनिग्रह। मन और

इद्रियो को वश मे रखने की क्रिया। चित्तवृत्ति का निरोध। ३ हानिकारक या बुरी वस्तुओ से बचने की क्रिया। परहेज। जैसे,—सयम से रहो तो जल्दी अच्छे हो जाओगे। ४ बाँधना। बधन। जैसे,—केश सयम। ५ बद करना। मुँदना। ६ योग मे ध्यान, धारणा और समाधि या उनका साधन। ७ प्रयत्न। उद्योग। कोशिश। ८ धूम्राक्ष के एक पुत्र का नाम। ९ प्रलय। १० धार्मिक व्रत, अनुष्ठान आदि (को०)। ११ तपश्चरण। तपस्या (को०)। १२ मनुष्यता। मानवता। आदमियत (को०)। १३ व्रत, अनुष्ठान आदि करने के पूर्व किया जानेवाला धार्मिक कृत्य (को०)। १३ विनाश (को०)।

**सयमक**—वि० [सं०] १ नियता। नियत्रण करनेवाला। २ सयम करनेवाला। वृत्तियो का निरोध करनेवाला। सयमी (को०)।

**सयमन**[१]—सज्ञा पुं० [सं०] १ रोक। २ दमन। दबाव। निग्रह। ३ आत्मनिग्रह। मन को वश मे रखना। ४ बद रखना। कैद रखना। ५ बधन मे बाँधना। जकडना। कसना। ६ खीचना। तानना (लगाम आदि)। ७ यमपुर। ८ वह प्रागण जो चारो ओर चार मकान होने मे बन जाय (को०)। २ वह जो सयमन करता हो (को०)।

**सयमन**[२]—वि० नियता। नियामक (को०)।

**सयमनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] यमराज की नगरी। यमपुरी जो मेरु पर्वत पर मानी गई है। उ०—इतनी बात के सुनते ही अर्जुन धनुष बाण ले वहाँ से उठा और चला चला सयमनी पुरी मे धर्मराज के पास गया।—लल्लू (शब्द०)।

**सयमित**[१]—वि० [स०] १ रोक मे रखा हुआ। काबू मे लाया हुआ। २ दमन किया हुआ। ३ बँधा हुआ। कसा हुआ। ४ पकड मे लाया हुआ। कसकर पकडा हुआ। ५ जो मन को रोके हो। इद्रियनिग्रही। ६ बदी। कैदी (को०)। ७ धार्मिक प्रवृत्तिवाला (को०)। ८ एकत्रित (को०)।

**सयमित**—सज्ञा पुं० स्वरो का नियत्रण [को०]।

**सयमिनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सयमनी' (को०)।

**सयमी**[१]—वि० [सं० सयमिन्] १ रोक या दबाव मे रखनेवाला। काबू मे रखनेवाला। २ मन और इद्रियो को वश मे रखनेवाला। आत्मनिग्रही। योगी। ३ जो बँधा हुआ या बधन मे हो। बद्ध (को०)। ४ बुरी या हानिकारक वस्तुओ से बचनेवाला। परहेजगार।

**सयमी**[२]—सज्ञा पुं० १ शासक। राजा। २ यति। ऋषि (को०)।

**सयम्य**—वि० [स०] जो सयमन करने लायक हो। नियत्रण या दमन करने के योग्य [को०]।

**सयात**—वि० [स०] १ एक साथ गया हुआ। साथ साथ लगा हुआ। २ आगत। पहुँचा हुआ। प्राप्त। दाखिल।

**सयाति**—सज्ञा पुं० [स०] १ नहुष के एक पुत्र का नाम। २ बहुगव या प्रचिन्वान् के पुत्र का नाम।

**सयात्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ साथ साथ जाना। सहयात्रा। २ समुद्री यात्रा (को०)।

**सयान**—सज्ञा पुं० [स०] [वि० सयात, सयायी] १ सहगमन। साथ जाना। २ यात्रा। सफर।

यौ०—उत्तम सयान = मुरदे को ले चलना।

३ प्रस्थान। रवानगी। ४ गाडी। शकट। ५ घोडे को नियत्रण मे रखना (को०)। ६ आकार। आकृति। साँचा (को०)।

**सयाम**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सयम' (को०)।

**सयाव**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का पकवान या मिठाई। पिराक। गोझिया।

**सयुक्**—वि० [सं० सयुज्] १ सबद्ध। जडा हुआ। २ गुणवान् (को०)।

**सयुक्त**—वि० [स०] १ जुडा हुआ। लगा हुआ। २ मिला हुआ। जैसे,—सयुक्त अक्षर। ३ सबद्ध। लगाव रखता हुआ। ४ सहित। साथ। ५. पूर्ण। लिए हुए। समन्वित। ७ सबधी (को०)। ८ विवाहित (को०)। ९ सम्मिलित रूप मे करनेवाला। १०. जडा हुआ (को०)।

यौ०—सयुक्त कुटुब, सयुक्त परिवार = वह कुटुब जिसमे परिवार के सभी लोग साथ मिलकर रहते है।

**सयुक्ता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ भगवतवल्ली। आवर्तकी लता। २ एक छद का नाम। ३ जयचद की कन्या।

**सयुग**—सज्ञा पुं० [स०] १ मेल। मिलाप। सयोग। समागम। २ भिडना। भिडत। ३ युद्ध। लडाई। उ०—रोप्यो रन रावन, बोलाए बीर बानइत जानत जे रीति सब सयुग समाज की। चली चतुरग चमू, चपरि हने निसान, सेना सराहन जोग राति-चरराज की।—तुलसी (शब्द०)।

**सयुगगोष्पद**—सज्ञा पुं० [सं०] मामूली झगडा। सामान्य बात पर कलह [को०]।

**सयुगमूर्द्धा**—सज्ञा पुं० [सं० सयुगमूर्धन्] युद्ध का अग्रिम मोरचा [को०]।

**सयुज्**—वि०, सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सयुक्'।

**सयुजा**—सज्ञा स्त्री० [स०] मेल। मिलान। जोड (को०)।

**सयुत**[१]—वि० [स०] १ जुडा हुआ। मिला हुआ। बँधा हुआ। २ सबद्ध। एक साथ लगा हुआ। ३ सहित। साथ। ४ समन्वित।

**सयुत**[२]—सज्ञा पुं० एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण, दो जगण और एक गुरु होता है।

**सयुति**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ (गणित मे) दो या दो से अधिक सख्याओ का योगफल। २ ज्योतिष शास्त्र के अनुसार दो नक्षत्रो का योग (को०)।

**सयोग**—सज्ञा पुं० [सं०] १ दो वस्तुओ का एक मे या एक साथ होना। मेल। मिलान। मिलावट। मिश्रण। २ समागम। मिलाप।

विशेष—यह शृगार रस के दो भेदो मे से एक है। इसी को सभोग शृगार भी कहते है।

३ लगाव। सबध। ४ सहवास। स्त्री पुरुष का प्रसग। ५ विवाह सबध। ६ दो राजाओ की किसी बात के लिये सधि। ७ किसी विषय पर भिन्न व्यक्तियो का एकमत होना।

मतैक्य। 'भेद' का उलटा। ८ दो या अधिक व्यजनो का मेल। ९ जोड। योग। मोजान। १० दो या कई बातो का इकट्ठा होना। इत्तफाक। जैसे—(क) जब जैसा सयोग होता है, तब वैसा होता है। (ख) यह तो एक सयोग की बात है। ११ न्याय के २४ गुणो मे से एक (को०)। १२ सचय। समान या पूरक वस्तुओ का समुदाय (को०)। १३ शिव (को०)। १४ भौतिक सपर्क (को०)।

मुहा०—सयोग से = बिना पहले से निश्चित हुए। इत्तफाक से। दैववशात्। जैसे,—यदि सयोग से वे आ जाते, तो झगडा हो जाता।

**सयोगपृथक्त्व**—पद्धा पु० [सं०] न्याय के अनुसार ऐसा पृथक्त्व या अलगाव जो नित्य न हो।

**सयोगमत्र**—सद्धा पु० [स० सयोगमन्त्र] विवाह के समय पढा जानेवाला वेदमत्र।

**सयोगविरुद्ध**—पद्धा पुं० [स०] वे पदार्थ जो परस्पर मिलकर खाने योग्य नही रहते, और यदि खाए जायँ तो रोग उत्पन्न करते है। जैसे,—बराबर मात्रा मे घी और मधु, मछली और दूध।

**सयोग शृगार**—सद्धा पु० [स० सयोग शृङ्गार] शृगार रस का एक भेद जिसमे नायक नायिका के मिलन आदि का वर्णन होता है (को०)।

**सयोग सधि**—सद्धा स्त्री० [स० सयोगसन्धि] कामदकीय नीति शास्त्र के अनुसार वह सधि जो किसी उद्देश्य से चढाई करने के उपरात उसके सबध मे कुछ तै हो जाने पर की जाय। (कामदक)।

**सयोगित**—वि० [स०] सयोगयुक्त। सयोजित (को०)।

**सयोगिनी**—पद्धा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो अपने पति के साथ हो। वह स्त्री जो प्रिय से वियुक्ता न हो (को०)।

**संयोगी**—सद्धा पु० [स० सयोगिन्] [स्त्री० सयोगिनी] १ मेल का। मिला हुआ। २ सयोग करनेवाला। मिलनेवाला। ३ वह पुरुष जो अपनी प्रिया के साथ हो। ४ ब्याहा हुआ। विवाहित।

**सयोजक**—वि०, सद्धा पुं० [स०] १ मिलानेवाला। २ व्याकरण मे वह शब्द जो शब्दो या वाक्यो के बीच केवल जोडने के लिये आता है। ३ किसी सभा, समिति या किसी प्रकार के कार्य की योजना करनेवाला (को०)। ४ घटित या निर्मित करनेवाला (को०)।

**सयोजन**—सद्धा पु० [स०] [वि० सयोगी, सयोजनीय, सयोज्य, सयोजित] १ जोडने या मिलाने की क्रिया। २. सहवास। स्त्री पुरुष का प्रसग। ३. ससार के बधन मे रखनेवाला। भवबधन का कारण (बौद्ध)। ४ आयोजन। व्यवस्था। प्रबध। इतजाम।

**सयोजना**—सद्धा स्त्री० [स०] १ आयोजन। व्यवस्था। इतजाम। तैयारी। २ मेल। मिलान। ३ सहवास। स्त्री पुरुष का प्रसग। ४ भवबधन का कारण। जन्म मरण के चक्र मे बद्ध रखनेवाली बाते (बौद्ध)।

विशेष—कामराग, रूपराग, अरूपराग, परिघ, मानस, दृष्टि, शीलव्रतपरामर्ष, विचिकित्सा, औद्धत्य और अविद्या इन सबकी गणना सयोजना मे होती है।

**सयोजनीय**—वि० [सं०] जिसका सयोजन किया जा सके। सयोजन करने के योग्य।

**सयोजित**—वि० [सं०] मिलाया हुआ। जोडा हुआ।

**सयोज्य**—वि० [स०] १ सयोजन के योग्य। मिलाने योग्य। २ जो मिलाया या जोडा जानेवाला हो।

**सयोध**—पद्धा पु० [स०] युद्ध। सग्राम (को०)।

**सयोधकटक**—सद्धा पुं० [सं० सयोगकण्टक] १ युद्ध का काँटा। २ एक यक्ष का नाम।

**सरजन**[1]—वि० [स० सरञ्जन] १ प्रसन्न करने या रजन करनेवाला। आनद देनेवाला (को०)।

**सरजन**[2]—सद्धा पुं० मन को प्रसन्न करना। रजन करना (को०)।

**सरभ**—सद्धा पुं० [स० सरम्भ] १ ग्रहण करना। पकडना। २ आतुरता। आवेग। क्षोभ। उद्विग्नता। ३ खलबली। बेकली। ४ उत्कठा। लालसा। शौक। उत्साह। ५ क्रोध। कोप। ६ शोक। ७ ऐठ। ठसक। गर्व। ८ फोडे या घाव का सूजना या लाल होना (सुश्रुत)। ९ घनत्व। अधिकता। अतिरेक। बहुतायत। १० आरभ। शुरू। ११ एक अस्त्र का नाम। १२ गर्हा। जुगुप्सा। घृणा (को०)। १३ आक्रमण की प्रचडता (को०)।

यौ०—सरभताम्र = जो क्रोध या क्षोभ से लाल हो। सरभदृक् = क्रोध से जिसकी आँखे लाल हो गई हो। सरभपरुष = जो क्रोध के कारण कठोर या परुष हो। सरभरस = अत्यत क्रुद्ध। क्रोधपूर्ण। सरभरूक्ष = क्रोध के कारण अत्यत कठोर। सरभवेग = क्रोध का आवेश। क्रोधावेश।

**सरभो**—वि० [स० सरम्भिन्] १ क्रुद्ध। कोपाविष्ट। २ उत्तेजित। विक्षुब्ध। ३ घमडी। अहकारी। ४ उद्योगी। व्यवसायी (को०)।

**सरक्त**—वि० [सं०] १ अनुरक्त। आसक्त। प्रेममग्न। २ सुदर। मनोहर। ३ कुपित। क्रोध से लाल। ४ रगीन। लाल (को०)। ५ आवेश से भरा हुआ (को०)।

**सरक्ष**—पद्धा पु० [सं०] देखभाल। रक्षण। (को०)।

**सरक्षक**—सद्धा पुं० [स०] [स्त्री० सरक्षिका] १ रक्षा करनेवाला। रक्षक। २ देखरेख और पालन पोषण करनेवाला। ३. सहायक। ४ आश्रय देनेवाला।

**सरक्षकता**—सद्धा स्त्री० [स०] सरक्षक होने का भाव। देखरेख करना (को०)।

**सरक्षण**—सद्धा पु० [सं०] [वि० सरक्षी, सरक्षित, सरक्ष्य, सरक्षणीय] १ हानि या नाश आदि से बचाने का काम। हिफाजत। २. देखरेख। निगरानी। जैसे,—बालक उनके सरक्षण मे है। ३ अधिकार। कब्जा। ४ रोक। प्रतिबध। ५ रख छोडना।

**सरक्षणीय**—वि० [स०] [वि० स्त्री० सरक्षणीया] १ रक्षा करने योग्य। हिफाजत के लायक। २. रख छोडने लायक।

**सरक्षा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'संरक्षा'।

**सरक्षित**—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सरक्षिता]। १ भलीभाँति रक्षित। हिफाजत से रखा हुआ। २ अच्छी तरह बचाया हुआ।

**सरक्षितव्य**—वि० [सं०] १ जिसका सरक्षण करना हो। २ जिसका सरक्षण उचित हो।

**सरक्षिता**—वि० [सं० सरक्षितिन्] रक्षा करनेवाला। जिसने रक्षण किया है (को०)।

**सरक्षी**—वि० [सं० सरक्षिन्] [वि० स्त्री० सरक्षिणी] १ सरक्षण करनेवाला। २ देखभाल करनेवाला।

**सरक्ष्य**—वि० [सं०] १ जिसका सरक्षण करना हो। २ जिसका सरक्षण उचित हो।

**सरब्ध**—वि० [सं०] १ खूब मिला हुआ। खूब जुडा हुआ। आश्लिष्ट। २ जो एक दूसरे को खूब पकडे हुए हो। ३ हाथ मे हाथ मिलाए हुए। ४ क्षुब्ध। उद्विग्न। ५ जोश मे आया हुआ। उत्तेजित। ६ क्रोध से भरा हुआ। कोपपूर्ण। जैसे, —सरब्ध वचन। ७ क्रुद्ध। नाराज। ८ सूजा हुआ। फूला हुआ। ९ बढा हुआ। वर्धित (को०)।

**सराग**—संज्ञा पुं० [सं०] १ लाली। २ राग। प्रेम। प्यार। ३ उग्रता। क्रोध (को०)।

**सराद्ध**—वि० [सं०] १ सपन्न। पूरा किया हुआ। २ लब्ध। प्राप्त (को०)।

**सराद्धि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कार्य की पूर्णता। सफलता। २. प्राप्ति (को०)।

**सराधक**—संज्ञा पुं० [सं०] ध्यान करनेवाला। आराधना करनेवाला। पूजा करनेवाला।

**सराधन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सराधनीय, सराधित, सराध्य] १ तुष्टीकरण। प्रसन्न करना। २ पूजा करना। पूजा द्वारा प्रसन्न या तुष्ट करना। ३ ध्यान। ४ जय जयकार।

**सराधनीय**—वि० [सं०] पूजा के योग्य।

**सराधित**—वि० [सं०] जिसे पूजा आदि के द्वारा प्रसन्न किया गया हो (को०)।

**सराध्य**—वि० [सं०] १ जो ध्यान के द्वारा प्राप्य हो। २ तुष्ट या प्रसन्न करने योग्य। ३ जिसे अनुकूल किया जा सके (को०)।

**सराव, सरावण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सरावी] १ कोलाहल। शोर। २ हलचल। धूम।

**सरावी**—वि० [सं० सराविन्] कोलाहल करनेवाला (को०)।

**सरिहाण**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रेमपूर्वक चाटने की क्रिया। जैसे, गौ का बछडे को चाटना (को०)।

**सरुग्ण**—वि० [सं०] छिन्न भिन्न। खडित। चूर चूर।

**सरुजन**—संज्ञा पुं० [सं०] दर्द। पीडा। व्यथा (को०)।

**सरुद्ध**—वि० [सं०] १ अच्छी तरह रोका हुआ। २ घेरा हुआ। ३ अच्छी तरह बद। ४ आच्छादित। ढँका हुआ। ५ ठसाठस भरा हुआ। ६ मना किया हुआ। वर्जित। ७ रुका हुआ (को०)। ८ अवरुद्ध। घिरा हुआ (को०)।

**यौ०**—सरुद्धचेष्ट = जिसकी चेष्टा या क्रिया रोक दी गई हो। रुद्ध चेष्टावाला। सरुद्ध प्रजनन = जिसकी प्रजनन शक्ति मार दी गई हो।

**सरुपित**—वि० [सं०] चिह्नित। व्रणयुक्त। क्षत (को०)।

**सरूढ**—वि० [सं०] १ अच्छी तरह बढा हुआ। २ खूब जमा हुआ। अच्छी तरह लगा हुआ। जिसकी खूब जड पकड गई हो। ३ अकुरित। जमा हुआ। ४ अकुर फेंकता हुआ। पुनर्जात। सुखता या अच्छा होता हुआ (घाव)। ५ प्रकट। आविर्भूत। निकल पडा हुआ। ६ धृष्ट। प्रगल्भ। ७ प्रौढ। दृढ। ८ गहराई तक घुसा हुआ। जैसे, बाण (को०)।

**सरोचन**—संज्ञा पुं० [सं०] रामायण मे वर्णित एक पर्वत का नाम।

**सरोदन**—संज्ञा पुं० [सं०] खूब जोर से रोना (को०)।

**सरोध**—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोक। छेक। रुकावट। २ गढ आदि को चारो ओर से घेरना। घेरा। ३ परिमिति। हदबदी। ४ बद करना या मूँदने की क्रिया। ५ अटकाव। बाधा। प्रतिबध। ६ हिंसा। नाश। ७ क्षेप। फेंकना। ८ वधन। बाँधना (को०)। ९ क्षति। हानि (को०)। १० घेरा। वेष्टन (को०)।

**सरोधन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सरोधनीय, सरोधित, सरुद्ध] १ रोकना। छेंकना। रुकावट डालना। २ घेरना। ३ हद बाँधना। ४ बद करना। मूँदना। ५ बाधा डालना। काम में हानि पहुँचाना। ६ बदी करना। कैद करना।

**सरोधनीय**—वि० [सं०] रोकने, छेंकने या घेरने योग्य।

**सरोध्य**—वि० [सं०] १. जो रोका, छेंका या घेरा जानेवाला हो। २ जिसे रोकना या घेरना उचित हो। ३ जो बधन में डालने योग्य हो (को०)।

**सरोपण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सरोपणीय, सरोपित, सरोप्य] १ पेड पौधा लगाना। जमाना। बैठाना। २ घाव सुखाना। घाव अच्छा करना। ३ घाव पूजना। फोडा भरना।

**सरोपित**—वि० [सं०] जमाया, रोपा या लगाया हुआ।

**सरोप्य**—वि० [सं०] १ जो जमाया या लगाया जानेवाला हो। २ जिसे जमाना या लगाना उचित हो।

**सरोपित**—वि० [सं०] १ ऊपर लगाया हुआ। छोपा हुआ। लेप किया हुआ। (सुश्रुत)।

**सरोह**—संज्ञा पुं० [सं०] १ जमना। ऊपर छाना या बैठना। २ घाव पर पपडी जमना। घाव सूखना। अकुर फेंकना। ३ अकुरित होना। जमना। ४ प्रकट होना। आविर्भूत होना।

**सरोहण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सरोहणीय, सरोही] १ जमना। ऊपर छाना। २ घाव पर पपडी जमना। घाव सूखना। ३ (पेड पौधा) जमाना। लगाना।

**सलघन**—संज्ञा पुं० [सं० सलङ्घन] बीत जाना। व्यतीत होना (को०)।

**सलघित**—वि० [सं० सलङ्घित] बीता हुआ। अतीत। गत (को०)।

**सलक्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सलक्षणीय, सलक्षित, सलक्ष्य] १ रूप निश्चित करना। विशेष लक्षणों द्वारा भेद स्पष्ट करना। २ लखना। पहचानना। तमीज करना। ताडना।

सलक्षित—वि० [सं०] १ लखा हुआ। पहचाना हुआ। ताडा हुआ। २ रूप निश्चित किया हुआ। लक्षणो से जाना हुआ।

सलक्ष्य—वि० [सं०] १ जो लखा जाय। जो पहचाना जाय। जो देखने मे आ सके। २ जो लक्षणो से जाना जा सके। जो लक्षणो द्वारा लक्षित हो सके।

सलक्ष्यक्रम व्यग्य—सज्ञा पुं० [स०] साहित्य शास्त्र के अनुसार व्यग्य के दो भेदो मे से एक। वह व्यजना जिसमे वाच्यार्थ से व्यगार्थ की प्राप्ति का क्रम लक्षित हो।

विशेष—इसके द्वारा वस्तु और अलकार की व्यजना होती है। जैसे, 'पेड का पत्ता नही हिलना' इसका व्यग्यार्थ हुआ कि 'हवा नही चलती'। इसमे वाच्यार्थ के उपरात व्यग्यार्थ की प्राप्ति लक्षित होती है। इसके विपरीत जहाँ रसव्यजना या भाव-व्यजना मे क्रम लक्षित नही होता, उसे असलक्ष्यक्रम व्यग्य कहते है।

सलग्न—वि० [स०] १ बिल्कुल लगा हुआ। सटा हुआ। मिला हुआ। २ भिडा हुआ। लडाई मे गुथा हुआ। ३. सबद्ध। जुडा हुआ। ४ निमग्न। सलीन (को०)।

सलपन—सज्ञा पु० [स०] इधर उधर की बात चीत। प्रलाप। गपशप।

सलप्तक—सज्ञा पु० [स०] शिष्ट व्यक्ति। वह व्यक्ति जिसमे बात चीत की जा सके [को०]।

सलब्ध—वि० [स०] प्राप्त। पाया हुआ। गृहीत [को०]।

सलय—सज्ञा पु० [स०] १ पक्षियो का उतरना या नीचे बैठना। २. लीन होने की क्रिया। घुल जाना। ३ प्रलय। ४ निद्रा। नीद। लेटना। ५ घोसला (को०)।

संलयन—सज्ञा पुं० [स०] [वि० सलीन] १ पक्षियो का नीचे उतरना या बैठना। २ लय को प्राप्त होना। लीन होना। ३ नष्ट होना। व्यक्त न रहना। ४ दे० 'सलय'।

सलाप—सज्ञा पु० [सं०] १ परस्पर वार्तालाप। आपस की बातचीत। प्रेमपूर्ण वार्तालाप या कथोपकथन (को०)। ३. गुप्त बातचीत। गोपनीय वार्ता (को०)। ४ स्वय कुछ कहना। प्रिय या प्रिया के गुणो का प्रशसन (को०)। ५ नाटक मे एक प्रकार का सवाद जिसमे क्षोभ या आवेग नही होता, पर धीरता होती है।

सलापक—सज्ञा पु० [स०] १ नाटक मे एक प्रकार का सवाद। सलाप। २ एक प्रकार का उपरूपक या छोटा अभिनय।

सलापित—वि० [सं०] जिससे वार्तालाप किया गया गया हो। जिससे कहा गया हो [को०]।

सलापी—वि० [स० सलापिन्] बातचीत या गपशप करनेवाला [को०]।

सलालित—वि० [स०] जिसका भलीभाँति लालन किया गया हो [को०]।

सलिप्त—वि० [स०] १. लीन। भली भाँति लिप्त। २ खूब लगा हुआ।

सलीढ—वि० [सं० सलीढ] १ अच्छी तरह चाटा हुआ। जिसे खूब चखा गया हो। २. जिसका भोग किया गया हो [को०]।

सलीन—वि० [सं०] १ खूब लीन। अच्छी तरह लगा हुआ। २. आच्छादित। ढका हुआ। छिपा हुआ। ३ सकुचित। सिकुडा हुआ। ४ जो घुलकर एकरूप हो। विलीन। गर्क (को०)।

यौ०—सलीन कर्ण = जिसके कान नमित या लटके हो। सलीन मानस = खिन्नमन। उदास।

सलुलित—वि० [स०] १ जो ठीक दशा मे न हो। क्षुब्ध। अस्त-व्यस्त। २, सपर्क या ससर्गप्राप्त [को०]।

सलेख—सज्ञा पु० [स०] पूर्ण सयम। (बौद्ध)।

सलेप—सज्ञा पु० [स०] कर्दम। कीचड [को०]।

सलोडन—सज्ञा पुं० [स०] [वि० सलोडित] १ (जल आदि को) खूब हिलाना या चलाना। क्षुब्ध करना। मथना। २ खूब हिलाना डुलाना। झकझोरना। ३ उलट पुलट करना। उथल पुथल करना। गडबड करना।

सवत्[1]—सज्ञा पु० [स०] १ वर्ष। सवत्सर। साल। २ वर्ष विशेष जो किसी सख्या द्वारा सूचित किया जाता है। चली आती हुई वर्ष गणना का कोई वर्ष। सन्। जैसे,—यह कौन सवत् है? ३ महाराज विक्रमादित्य के काल से चली हुई मानी जानेवाली वर्षगणना। ४ सग्राम। युद्ध (को०)।

संवत्[1]—सज्ञा स्त्री० भूमिविशेष। वह भूमि जो मिट्टी खनने के लिये प्रशस्त एवं पाषाण आदि से रहित हो [को०]।

सवत[2]—सज्ञा पु० [स० सवन] दे० 'सवत्'। उ०—चद्र नाग वसु पच गिनि सवत माधव मास।—छिताई० (परिचय), पृ० ५।

सवत्सर—सज्ञा पु० [सं०] १ वर्ष। साल। २ पाँच पाँच वर्ष के युगो का प्रथम वर्ष।

विशेष—प्रभवादि साठ संवत्सर १२ युगो मे विभक्त है जिसमे से प्रत्येक युग पाँच वर्ष का होता है। प्रत्येक युग के प्रथम वर्ष का नाम सवत्सर है। इसका देवता अग्नि कहा गया है।

३ शिव का एक नाम। ४ विक्रम सवत् (को०)।

यौ०—सवत्सरकर। सवत्सरनिरोध = एक वर्ष की कैद। बरस भर का कारावास। सवत्सरफल = साल का शुभाशुभ फल। सवत्सरभुक्ति = सूर्य का एक वर्ष का मार्ग। संवत्सरभृत = जो एक वर्ष के लिये रखा हो। सवत्सरभ्रमि = वर्ष भर मे परिक्रमा पूरी करनेवाला, जैसे सूर्य। सवत्सरमुखी = ज्येष्ट मास के शुक्लपक्ष की दशमी। संवत्सररथ = एक वर्ष का पथ। वर्ष भर की राह।

सवत्सरकर—सज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

सवत्सरीय—वि० [स०] सवत्सर से सबद्ध। वार्षिक। साल वाला। साल का [को०]।

सवदन—सज्ञा पु० [स०] १ परस्पर कथन। बातचीत। २ सवाद। सँदेशा। पैगाम। ३ विचार। आलोचन। ४ जाँच। ५ जादू या मत्र के द्वारा वश मे करना (को०)। ६ यत्र। तावीज (को०)।

सवदना—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वश मे करने की क्रिया। वशीकरण।

२ मद्र, ओषधि आदि से किसी को वश मे करने की क्रिया। दे० 'सवदन'।

**सवनन**—सज्ञा पु० [स०] दे० १ 'सवदन'। २ यत्र मत्र आदि के द्वारा स्त्रियो को फँसाना। ३ प्राप्ति। उपलब्धि (को०)। ४ अनुराग। आसक्ति। प्रीति (को०)।

**सवनना**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सवदना'।

**सवपन**—सज्ञा पुं० [स०] बीज वपन करने की क्रिया। खेत मे बीज छीटना या बोना (को०)।

**सवर**—सज्ञा पुं० [स०] १ रोक। परिहार। दूर करना। जैसे,—कालसवर। २ इद्रियनिग्रह। मन को दबाना या वश मे करना। ३ बौद्ध मतानुसार एक प्रकार का व्रत। ४ बाँध। बद। ५ पुल। सेतु। ६ चुनना। पसद करना। ७ कन्या का वर चुनना। ८ आच्छादन। आवरण (को०)। ९ बोध। समझ (को०)। १० आड या ओट करना। सकोचन (को०)। ११ एक प्रकार का हिरन (को०)। १२ एक राक्षस का नाम दे० 'शवर' (को०)। १३ छिपाव। दुराव। गोपन (को०)। १४ पानी। जल (को०)। १५ एक प्रकार की मछली (को०)। १६ अपने को दृश्यमान ससार से दूर करना। (जैन)।

**सवरण**—सज्ञा पु० [स०] [वि० सवरणीय, सवृत्त] १ हटाना। दूर रखना। रोकना। २ बद करना। ढाँकना। ३ आच्छादित करना। छोपना। ४ छिपाना। गोपन करना। ५ छिपाव। दुराव। ६ ढक्कन या परदा। ७ घेरा। जिसके भीतर सब लोग न जा सकें। बाँध। बद। ९ सेतु। पुल। १० किसी चित्तवृत्ति को दबाने या रोकने की क्रिया। निग्रह। जैसे,—क्रोध सवरण करना। ११ गुदा के चमडे की तीन परतो मे से एक। १२ कुरु के पिता का नाम। १३ लेने के लिये पसद करना। चुनना। १४ कन्या का विवाह के लिये वर या पति चुनना। १५ गुप्तभेद। रहस्य (को०)। १६ कपट। बहाना। छद्म (को०)।

**सवरणीय**—वि० [स०] १ निवारण करने योग्य। रोकने लायक। २ सगोपनीय। ३ विवाह के योग्य। वरने योग्य।

**सवर्ग**—सज्ञा पुं० [स०] [वि० सवर्ग्य] १ अपनी ओर समेटना। अपने लिये बटोरना। २ भक्षण। भोजन। चट कर जाना। ३ खपत। लग जाना। ४ एक वस्तु का दूसरी मे समा जाना या लीन हो जाना। जैसे, जीव का ब्रह्म मे लीन होना।

यौ०—सवर्गविद्या = विनय, तल्लीनता अथवा रूपातर प्राप्ति का ज्ञान।

५ गुणनफल। ६ अग्नि का एक नाम (को०)। ७ बलात् ले लेना। अपहरण करना (को०)।

**सवर्गण**—सज्ञा पुं० [स०] अपना लेना। आकर्षित करना। जैसे,—मित्र सवर्गण (को०)।

**सवर्ग्य**—वि० [स०] सवर्ग करने योग्य। गुणित करने योग्य (को०)।

**सवर्जन**—सज्ञा पु० [स०] [वि० सवर्जनीय, सवर्जित, सवृक्त] १ छीनना। खसोटना। ले लेना। हरण करना। २ खा जाना। उडा जाना।

**सवर्त**—सज्ञा पुं० [स०] १ जुटना। भिडना। (शत्रु से)। २ लपेटने की क्रिया भाव। लपेट। ३ फेरा। घुमाव। चक्कर। ४ प्रलय। कल्पात। ५ एक कल्प का नाम। ६ लपेटी या बटोरी हुई वस्तु। ७ पिंडी। गोला। ८ बट्टी। टिकिया। ९ घना समूह। घनी राशि। १० प्रलयकाल के नौ मेघो मे से एक। ११ इद्र का अनुचर एक मेघ जिससे बहुत जल बरसता है।

विशेष—मेघो के द्रोण, आवर्त्त, पुष्कलावर्त आदि कई नाम कहे गए हैं। जिस प्रकार आवर्त बिना जल का माना गया है, उसी प्रकार सवर्त अत्यत अधिक जलवाला कहा गया है।

१२ मेघ। बादल। १३ सवत्सर। वर्ष। १४ एक दिव्यास्त्र। १५ एक केतु का नाम। १६ निश्चित समय पर होनेवाला प्रलय। खड प्रलय (को०)। १७ सकोच। आकुचन (को०)। १८ ग्रहो का एक योग। १९ विभीतक। बहेडा।

**सवर्तक**[1]—वि० [स०] १ लपेटनेवाला। २ लय या नाश करनेवाला।

**सवर्तक**[2]—सज्ञा पु० १ कृष्ण के भाई बलराम। २ बलराम का अस्त्र। लागल। हल। ३ बडवानल। ४ विभीतक वृक्ष। बहेडा। ५ प्रलय नामक मेघ। ६ प्रलय मेघ की अग्नि। ७ एक नाग। ८ एक ऋषि।

**सवर्तकल्प**—सज्ञा पुं० [स०] प्रलय का एक भेद। (बौद्ध)।

**सवर्तकी**—सज्ञा पु० [स० सवर्त्तकिन्] कृष्ण के भाई बलराम।

**सवर्तकेतु**—सज्ञा पुं० [स०] एक केतु का नाम।

विशेष—यह मध्य समय पश्चिम दिशा मे उदय होता है और आकाश के तृतीयाश तक फैला रहता है। इसकी चोटी धूमिल रग लिए ताम्र वर्ण की होती है। इसके उदय का फल राजाओ का नाश कहा गया है।

**सवर्तन**—सज्ञा पुं० [स०] [वि० सवर्तनीय, सवर्तित, सवृत्त] १ लपेटना। २ फेरा या चक्कर देना। ३ किसी ओर फिरना। प्रवृत्त होना या करना। ४ पहुँचना। प्राप्त होना। ५ हल नामक अस्त्र। ६ हरिवश के अनुसार एक दिव्यास्त्र (को०)।

**सवर्तनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] सृष्टि का लय। प्रलय।

**सवर्तनीय**—वि० [स०] लपेटने योग्य। फेरने योग्य।

**सवर्ति**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सवर्तिका'।

**सवर्तिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लपेटी हुई वस्तु। २ बत्ती। दीप की शिखा। ३ कमल की बँधी पत्ती। ४ कोई बँधा हुआ पत्ता। ५ बलराम का अस्त्र, हल। लागल। ६ वह पत्ती जो पराग केशर के पास हो (को०)।

**सवर्तित**—वि० [स०] १ लपेटा हुआ। २ फेरा या घुमाया हुआ।

**सवर्द्धक सवर्धक**—वि०, सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० सवर्द्धिका] १ बढाने वाला। वर्धन करनेवाला। २ अतिथियो का स्वागत सत्कार करनेवाला (को०)।

**सवर्द्धन, सवर्धन**[1]—सज्ञा पु० [स०] [वि० सवर्द्धनीय, सवर्धित, सवृद्ध] १ वृद्धि को प्राप्त होना। बढना। २ पालना। पोसना। ३ बढाना। उन्नत करना। ४ (बाल आदि) बढाने का साधन (को०)।

सवर्द्धन, सवर्धन[२]—वि० सवर्द्धक। बढानेवाला को०।

सवर्द्धनीय, सवर्धनीय—वि० [स०] १ बढने या बढाने योग्य। २ पालने पोसने योग्य।

सवर्द्धित, सवर्धित—वि० [स०] १ बढा हुआ। २ बढाया हुआ। ३ पाला पोसा हुआ।

सवर्मित—वि० [स०] वर्म से युक्त। जिरहबख्तर पहने हुए को०।

सवल—पद्मा पु० [स०] १ दे० सबल[१]। २ आधार। सहारा।

सवलन—पद्मा पु० [स०] [वि० सवलनीय, सवलित] १ मिलना। जुटना (शत्रु से)। २ मेल। मिलान। संयोग। ३ मिलावट। मिश्रण।

सवलित—वि० [स०] १ मिला हुआ। जुटा हुआ (शत्रु से)। २ मिला हुआ। ३ युक्त। सहित। ४ मिश्रित हुआ। ५ त्रुटित। टूटा हुआ (को०)। ६ आर्द्र या तर किया हुआ (को०)। ७ मिश्रण युक्त। मिश्रित (को०)। ८ सबद्ध।

सवल्गन—पद्मा पु० [स०] उछलना। उल्लसित होना को०।

सवल्गित[१]—वि० [स०] अभिद्रवित। बरबाद को०।

सवल्गित[२]—पद्मा पुं० ध्वनि को०।

सवसति—पद्मा स्त्री० [स०] वस्तुओं की एक साथ रहने की स्थिति। एक साथ वास करना को०।

सवसथ—पद्मा पुं० [स०] १ बस्ती। गाँव या कस्बा। २ निवास। वसति। घर (को०)।

सवसन—पद्मा पु० [स०] निवास स्थान। गृह को०।

सवस्त्रण—पद्मा पु० [स०] एक समान वस्त्र धारण करना को०।

सवह—पद्मा पु० [स०] १ वह जो वहन करता हो। वहन करनेवाला। ले जानेवाला। २ एक वायु जो आकाश के सात मार्गों में से तीसरे मार्ग में रहती है। ३ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

सवहन—पद्मा पुं० [स०] १ वहन करना। ले जाना। ढोना। २ दिखाना। प्रदर्शित करना। व्यक्त करना। ३ अगुआई या नेतृत्व करना (को०)।

सवाच्य—पद्मा पुं० [स०] ६४ कलाओं में से एक का नाम। बातचीत करने या कथा कहने का ढग।

सवाटिका—पद्मा स्त्री० [स०] सिवाडा। शृगाटक।

सवाद—पद्मा पुं० [स०] १ बातचीत। कथोपकथन। खबर। हाल। समाचार। वृत्तान्त। ३ प्रसगकथा। चर्चा। ४ नियति। नियुक्ति। ५ मामला। मुकदमा। व्यवहार। ६ सहमति। एक राय। ७ स्वीकार। रजामदी। ८ वहम। मुबाहमा। ९ सादृश्य। एकरूपता। जैसे, रूप सवाद (को०)। १० समागम। भेंट। मिलन (को०)।

सवादक—वि०, पद्मा पु० [स०] १ भाषण करनेवाला। बातचीत करनेवाला। २ सहमत होनेवाला। एक राय होनेवाला। ३ स्वीकार करनेवाला। माननेवाला। राजी होनेवाला। ४ बजानेवाला।



सवाददाता—पद्मा पु० [स० सवाददातृ] सवाद देनेवाला। समाचार भेजनेवाला। समाचार पत्रों में स्थानीय समाचार भेजनेवाला वह व्यक्ति जो उस कार्य के लिये नियुक्त किया गया हो। (अ० लोकल रिपोर्टर)।

सवादन—पद्मा पु० [स०] [वि० सवादनीय, सवादित, सवादी, सवाद्य] १ भाषण। बातचीत करना। २ सहमत करना। एकमत होना। ३ राजी होना। मानना। ४ बजाना।

सवादिका—पद्मा स्त्री० [स०] १ कीट। कीडा। २ पिपीलिका। चीटी।

सवादित—वि० [स०] १ बोलने में प्रवृत्त किया हुआ। बातचीत में लगाया हुआ। २ राजी किया हुआ। मनाया हुआ। ३ बजाया हुआ। वादित।

सवादिता—पद्मा स्त्री० [स०] १ सादृश्य। तुल्यता। समानता। २ एक मेल का होना।

सवादी[२]—वि० [स० सवादिन्] [वि० स्त्री० सवादिनी] १ सवाद करनेवाला। बातचीत करनेवाला। २ सहमत होनेवाला। राजी होनेवाला। ३ अनुकूल होनेवाला। तुल्य। समान। ४ बजानेवाला।

सवादी[२]—पद्मा पुं० सगीत में वह स्वर जो वादी के साथ सब स्वरों के साथ मिलता और सहायक होता है। जैसे,—पचम से षडज तक जाने में बीच के तीन स्वर सवादी होंगे।

सवार—पद्मा पु० [स०] १ आच्छादन। ढाँकना। छिपाना। २ शब्दों के उच्चारण में कठ का आकुचन या दबाव। ३ उच्चारण के बाह्य प्रयत्नों में से एक जिसमें कठ का आकुचन होता है। विवार' का उलटा। ४ बाधा। रोध। विघ्न। अडचन। ५ अपचय। क्षय। ह्रास। घटती को०)। ६ रक्षण। सरक्षण (को०)। ७ उपकल्पन। व्यवस्थापन (को०)।

सवारण—पद्मा पुं० [स०] [वि० सवारणीय, सवारित, सवार्य] १ हटाना। दूर करना। निवारण करना। २ रोकना। न आने देना। ३ निषेध करना। मना करना। ४ छिपाना। आवृत करना। ढाँकना।

सवारणीय—वि० [स०] १ हटाने या दूर करने योग्य। २ रोकने योग्य। ३ छिपाने या ढाँकने योग्य।

सवारित—वि० [स०] १ रोका हुआ। हटाया हुआ। २ मना किया हुआ। ३ ढाँका हुआ।

सवार्य—वि० [स०] १ हटाने योग्य। दूर करने योग्य। २ मना करने योग्य। रोकने योग्य। ३ ढाँकने या छिपाने योग्य।

सवावदूक—वि० [स०] १ ठीक ठीक कह देनेवाला। ज्यों का त्यों बताने या अभिव्यक्त करनेवाला। २ जो अतिशय तुल्यता का व्यजक हो को०।

सवास—पद्मा पु० [स०] १ साथ बसना या रहना। २ परस्पर सबध। ३ सहवास। प्रसग। मैथुन। ४ वह खुला हुआ स्थान जहाँ लोग विनोद या मन बहलाव के निमित्त एकत्र हों। ५ सभा। समाज। ६ मकान। घर। रहने का स्थान। वसति। ७ सार्वजनिक स्थान। ८ घरेलू व्यवहार (को०)।

सवासित—वि० [स०] सुगधित किया हुआ। बासा हुआ। सुवासित। २ जो पूतिगध से युक्त हो। दुर्गधयुक्त। जैसे, श्वास (को०)।

सवासी—वि० [स० सवासिन्] १ एक साथ निवास करनेवाला। एक जगह रहनेवाला। २ स्थानविशेष का रहनेवाला। ३ परिधान-युक्त। जो वस्त्र धारण किए हो (को०)।

सवाह—सज्ञा पु० [स०] १ ले जाना। ढोना। २ पैर दबाना। ३ खुला उपवन जहाँ लोग एकत्र हो। ४ बाजार। मडी। ५ पीडन। सताना। जुल्म। ६ दे० 'मर्दनीक' (को०)। ८ सात वायुओ मे से एक (को०)।

सवाहक—वि०, सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० सवाहिका] १ ले जानेवाला। २ ढोनेवाला। ३ बदन मलनेवाला। मर्दनीक। पैर दबानेवाला। पाँव पलोटनेवाला। ४ गति देनेवाला। चलानेवाला। सचालक (को०)।

सवाहन—सज्ञा पुं० [सं०] [सज्ञा स्त्री० सवाहना] [वि० सवाहनीय, सवाहित, सवाही, सवाह्य] १ उठाकर ले चलना। ढोना। २ ले जाना। पहुँचाना। ३ चलाना। परिचालन। ४ शरीर की मालिश। हाथ पैर दबाना या मलना। ५ जिसकी मालिश की गई हो। ६ (मेघो का) जाना। गमन (को०)।

सवाहित—वि० [स०] १ ले गया हुआ। वाहित। २ पहुँचाया हुआ। ढोया हुआ। ३ चलाया हुआ। परिचालित। ४ जिसका शरीर मर्दन हुआ हो। जिसके हाथ पाँव दबाए गए हो।

सवाही—वि० [सं० सवाहिन्] [वि० स्त्री० सवाहिनी] १ ले जानेवाला। पहुँचानेवाला। २ ढोनेवाला। ३ चलानेवाला। ४ अग मर्दन करनेवाला। हाथ पैर दबानेवाला।

सवाह्य—वि० [स०] १ वहन करने योग्य। २ मलने योग्य। दबाने योग्य। ३ व्यक्त करने या दिखाने योग्य (को०)।

सविक्त—वि० [स०] जिसको चुनकर अलग किया गया हो।

सविग्न—वि० [स०] १ क्षुब्ध। उद्विग्न। घबराया हुआ। २ भीत। आतुर। डरा हुआ। ३ इतस्तत आवागमन करता हुआ (को०)।

यौ०—सविग्नमानस, सविग्नहृदय = किंकर्तव्य विमूढ। हतबुद्धि।

सविघ्नित—वि० [स०] विघ्नयुक्त। अतरायुक्त। जिसमे विघ्न डाला गया हो (को०)।

सविज्ञ—वि० [स०] अच्छी तरह जानकार।

सविज्ञात—वि० [स०] १ जिसे सभी जानते हो। सर्वज्ञात। सवविदित। २ जो सभी को मान्य या विधेय हो (को०)।

सविज्ञान—सज्ञा पु० [स०] १ सम्यक् बोध। पूर्ण ज्ञान। २ सहमति। एक मत। ३ स्वीकृति। मजूरी।

यौ०—सविज्ञान भूत = जिसे सभी जानते हो। जो सबको ज्ञात हो गया हो।

सवित्—सज्ञा स्त्री० [सं०] चेतना। दे० सविद्।

सवितिकाफल—सज्ञा पुं० [स०] सेव। सेवीफल।

सवित्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ प्रतिप्रत्ति। २ अविवाद। ऐक्यमत। एक राय। ३ चेतना। सज्ञा। ४ अनुभव। ५ बुद्धि। ६ प्रति स्मरण (को०)।

सवित्पत्र—सज्ञा पु० [स०] शुक्रनीति के अनुसार वह पत्र जिसमे दो ग्रामो या प्रदेशो के बीच किसी बात के लिये मेल की प्रतिज्ञा या शर्तें लिखी हो।

सविद्—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चेतना। चैतन्य। ज्ञान शक्ति। २ बोध। ज्ञान। समझ। ३ बुद्धि। महत्तत्व। (साख्य)। ४ सवेदन। अनुभूति। ५ योग की एक भूमि जिसकी प्राप्ति प्राणायाम से होती है। ६ समझौता। करार। वादा। ७ मिलने का स्थान जो पहले से ठहराया गया हो। ८ युक्ति। उपाय। तदबीर। ९ वृत्तात। हाल। सवाद। १० बँधी हुई परपरा। रीति। प्रथा। ११ नाम। १२ तोषण। तुष्टि। १३ भाँग। १४ युद्ध। लडाई। १५ युद्ध की ललकार। १६ सकेत। इशारा। निशान। १७ प्राप्ति। लाभ। १८ सपत्ति। जायदाद। १९ वार्तालाप। सलाप (को०)। २० विचारो की एकता। मतैक्य (को०)। २१ मैत्री। दोस्ती (को०)। २२ योजना (को०)। २३ स्वीकृति। सहमति (को०)। २४ सकेत शब्द। परिचायक शब्द (को०)।

सविद'—वि० [स०] चेतन। चेतनायुक्त।

सविद'—सज्ञा पुं० वादा। समझौता। इकरार।

सविदा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ समझौता। वादा। इकरार। २ भाँग का पौधा (को०)।

सविदात—वि० [स०] १ जाननेवाला। प्रतिभाशाली। २ अनुरूप। सामजस्यपूर्ण (को०)।

सविदामजरी—सज्ञा स्त्री० [स० सविदामञ्जरी] गाँजा।

सविदित'—वि० [स०] १ पूर्णतया ज्ञात। जाना बूझा। सुविदित। २ ढूँढा हुआ। खोजा हुआ। ३ तै पाया हुआ। सबकी राय से ठहराया हुआ। ४ वादा किया हुआ। जिसका करार हुआ हो। ५ समझाया बुझाया हुआ। उपदिष्ट। ६ ख्यात। प्रसिद्ध (को०)। ७ स्वीकृत। माना हुआ (को०)।

सविदित'—सज्ञा पुं० वादा। करार। प्रतिज्ञा (को०)।

सविद्वाद—सज्ञा पु० [स०] यूरोपीय दर्शन का एक सिद्धात जिसमे वेदात के समान चैतन्य के अतिरिक्त और किसी वस्तु की पारमार्थिक सत्ता नही स्वीकार की गई है। चैतन्यवाद।

सविद्व्यतिक्रम—सज्ञा पु० [स०] समझौते या करार का पालन न होना (को०)।

सविध्—सज्ञा स्त्री० [स०] योजना। रूपरेखा। क्रम व्यवस्थापन (को०)।

सविधा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ रहन सहन। आचार व्यवहार। २ योजना। खाका। रूपरेखा (को०)। ३ व्यवस्था। आयोजन। प्रबध। डौल।

सविधातव्य—वि० [स०] जो आयोजन, सपादन एव निर्माण के योग्य हो।

सविधाता—संज्ञा पु० [सं० सविधातृ] प्रबंधक। व्यवस्थापक। स्रष्टा। निर्माता [को०]।

सविधान—संज्ञा पुं० [स०] १ व्यवस्था। आयोजन। प्रबंध। २. विधि। रीति। दस्तूर। ३ रचना। सजना। ४. विचित्रता। अनूठापन। ५ कथा में घटनाओं का क्रम व्यवस्थापन (को०)। ६ किसी राष्ट्र का वह वैधानिक ढाँचा जिससे वह संचालित होता है। राष्ट्रविधान। वह विधान या सिद्धांतों का समूह जिसके आधार पर किसी राष्ट्र, राज्य या संस्था का संघटन और संचालन होता है। (अं० कॉंस्टिट्यूशन)।

यौ०—सविधानज्ञ, सविधान शास्त्री = सविधान को जाननेवाला। सविधान का विशेषज्ञ। सविधान सभा = सविधान का निर्माण करनेवाली सभा या समिति।

सविधानक—संज्ञा पु० [सं०] १ विचित्र क्रिया या व्यापार। अलौकिक घटना। २ (कथावस्तु में) घटनाओं का क्रम। किसी नाटक की पूरी कथावस्तु (को०)।

सविधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विधान। रीति। दस्तूर। २ व्यवस्था। प्रबंध। ढौल।

सविधेय—वि० [स०] १ जिसका ढौल या प्रबंध करना हो। २ जिसे करना हो। करणीय। ३ जिसका प्रबंध उचित हो।

सविभक्त—वि० [सं०] १ अच्छी तरह बँटा या बाँटा हुआ। अच्छी तरह अलग किया हुआ। २ जिसके सब अंग ठीक हिसाब से हों। सुडौल। ३ प्रदत्त। दिया हुआ।

सविभक्ता—वि० [सं० सविभक्तृ] जो हिस्सा बँटाता हो। अन्य लोगों के साथ हिस्सा बँटानेवाला [को०]।

सविभजन—संज्ञा पु० [सं०] [वि० सविभजनीय] १ बाँट या हिस्सा लेना। बँटाई। २ साझा। हिस्सा।

सविभजनीय—वि० [सं०] जो लोगों में विभक्त करने योग्य हो [को०]।

सविभाग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सविभागी] १ पूर्णतया भाग करना। हिस्सा करना। बाँट। बँटाई। २ प्रदान। ३ भाग। अंश। हिस्सा (को०)।

सविभागी—संज्ञा पुं० [सं० सविभागिन्] १ साझीदार। २ भाग या हिस्सा प्राप्त करनेवाला। भाग लेनेवाला [को०]।

सविभाव्य—वि० [स०] समझने योग्य [को०]।

सविमर्द—संज्ञा पुं० [स०] वह युद्ध जिसमें अत्यधिक रक्तपात हो। भीषण संग्राम [को०]।

सविषा—संज्ञा स्त्री० [स०] अतीस। अतिविषा।

सविष्ट—वि० [स०] १ आगत। प्राप्त। पहुँचा हुआ। २ विश्राम करता हुआ। लेटा हुआ। सोया हुआ। ३. निविष्ट। बैठा हुआ। ४ वस्त्र से आच्छादित। वस्त्र में आवृत (को०)।

सविहित—वि० [स०] सम्यक् व्यवस्थित अथवा कृत। जिसका देखभाल या प्रबंध किया गया हो [को०]।

सवीक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सवीक्षणीय, सवीक्षित, सवीक्ष्य] १. इधर उधर देखने की क्रिया। अवलोकन। २. अन्वेषण। खोज। तलाश।

सवीत'—वि० [स०] १. आवृत। ढका हुआ। २ छिपा या छिपाया हुआ। ३ कवच धारण किए हुए। कवचयुक्त। ४ पहने हुए। ५ रुद्ध। रुका हुआ। ६ न दिखाई देता हुआ। नजर से गायब। अदृश्य। लुप्त। ७ अनदेखा किया हुआ। जिसे देखकर भी टाल गए हों। ८ अभिभूत (को०)। ९ वस्त्राच्छादित (को०)। १० परिवेष्टित। घिरा हुआ (को०)।

सवीत'—संज्ञा पुं० १ पहनावा। वस्त्र। आच्छादन। २ सफेद। कटभी। ३ यज्ञोपवीत (को०)।

सवीती—वि० [स० सवीतिन्] जो यज्ञोपवीत पहने हो।

सवृक्त—वि० [स०] १ छीना हुआ। हरण किया हुआ। २ नष्ट या उड़ाया हुआ। खरचा खाया हुआ।

सवृत्त—वि० [स०] १ आच्छादित। ढका हुआ। बंद किया हुआ। २ घिरा हुआ। ३ लपेटा हुआ। ४ युक्त। सहित। पूर्ण। ५ रक्षित। ६ दबाया हुआ। दमन किया हुआ। ७ जो किनारे या अलग हो गया हो। ८ रुँधा हुआ (गला)। ९ धीमा किया हुआ। १० प्रच्छन्न। गोप्य। गुप्त (को०)। ११ बलपूर्वक छीना हुआ (को०)। १२ अस्पष्ट। जो स्पष्ट न हो (को०)। १३ जो अलग कर दिया गया हो या रखा हो (को०)।

सवृत'—संज्ञा पु० १ वरुण देवता। २ गुप्त स्थान। ३ एक प्रकार का जलबेतस्। एक प्रकार का बेंत। ४ उच्चारण का एक ढंग (को०)।

सवृतकोष्ठ—संज्ञा पु० [सं०] १ कोष्ठबद्धता। कब्जियत। २ वह जिसे कब्ज की बीमारी हो (को०)।

सवृतमंत्र—संज्ञा पु० [स० सवृतमन्त्र] १ वह व्यक्ति जो अपनी योजना गुप्त रखता हो। २ गुप्त मंत्रणा। भेद की बातचीत।

सवृतसंवार्य—वि० [सं०] गोप्य बात को प्रकट न करनेवाला [को०]।

सवृति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ ढकने या छिपाने की क्रिया। गुप्त रखने की क्रिया। २ गुप्त प्रयोजन। अभिसंधि (को०)। ३ बाधा (को०)। ४ दंभ। ढोंग। छद्म (को०)।

सवृत्त'—वि० [स०] १ पहुँचा हुआ। समागत। प्राप्त। २ घटित। जो हुआ हो। ३ जो पूरा हुआ हो। (कामना, इच्छा आदि)। ४ उत्पन्न। पैदा। ५ उपस्थित। मौजूद। ६ संचित। राशीकृत (को०)। ७ व्यतीत। गत (को०)। ८ आवृत। ढका हुआ (को०)। ९ युक्त या सज्जित (को०)।

संवृत्त'—संज्ञा पुं० १ वरुण देवता। २ एक नाग का नाम।

सवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ निष्पत्ति। सिद्धि। २ एक देवी का नाम। ३ होना। घटना (को०)। ४ आवरण। संवृति। आच्छादन (को०)।

सवृद्ध—वि० [स०] १ पूर्ण अभिवृद्ध या बड़ा हुआ। २ उन्नत। जो ऊँचा और बड़ा हो गया हो। ३ विकसित होता हुआ। जो उन्नत हो रहा हो (को०)।

सवृद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बढने की क्रिया या भाव। बढती। अधिकता। २ धन आदि की अधिकता। अभ्युदय। समृद्धि। ३ शक्ति। ताकत (को०)।

सवेग—सज्ञा पु० [स०] १ पूर्ण वेग या तेजी। तीव्रता। २ आवेग। घबराहट। उद्विग्नता। खलबली। ३ भय। सहम। ४ जोर। अतिरेक। ५ चडता। उगता (को०)। ६ तीव्र पीडा (को०)।

सवेजन—सज्ञा पुं० [स०] [वि० सवेजनीय, सवेजित, सविग्न] १ उद्विग्न करना। घबरा देना। खलबली डालना। २ सहमाना। डराना। ३ भडकाना। उत्तेजित करना।

यौ०—रोमसवेजन = रोगटे खडे होना। पुलक होना। नेत्र-सवेजन = जर्राह का पिचकारी लगाना।

सवेजनीय—वि० [स०] जो सवेजन करने योग्य हो। जिसे सवेजित किया जाय (को०)।

सवेजित—वि० [स०] दे० 'सविग्न' (को०)।

सवेद—सज्ञा पु० [स०] १ सुख दु ख आदि का जान पडना। अनुभव। वेदना। ज्ञान। बोध।

सवेदन—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० सवेदना] [वि० सवेदनीय, सवेदित, सवेद्य] १ अनुभव करना। सुख दु ख आदि की प्रतीति करना। क्लेश, आनद, शीत, ताप आदि को मन म मालूम करना। २ जताना। प्रकट करना। बोध कराना। ३ बोध। ज्ञान (को०)। ४ नकछिकनी नाम की घास। ५ देना। आत्म-समर्पण करना।

सवेदना—सज्ञा स्त्री० [स०] अनुभूति। वेदना। दे० 'सवेदन'।

सवेदनीय—वि० [स०] १ अनुभव योग्य। प्रतीति योग्य। २ जताने लायक। बोध कराने योग्य।

सवेदित—वि० [सं०] १ अनुभव किया हुआ। प्रतीत किया हुआ। २ जताया हुआ। बोध कराया हुआ। बताया हुआ।

सवेद्य'—वि० [स०] १ अनुभव करने योग्य। प्रतीत करने योग्य। मन मे मालूम करने लायक। २ दूसरे को अनुभव कराने योग्य। जताने योग्य। बताने लायक। ३ समझने योग्य।

यौ०—स्वसवेद्य = अपने ही अनुभव करने योग्य। जो दूसरे को बताया न जा सके, आप ही आप मालूम किया जा सके।

सवेद्य'—सज्ञा पु० १ दो नदियो का सगम। २ एक तीर्थ (को०)।

सवेल्लित—वि० [स०] सवलित (को०)।

सवेश—सज्ञा पुं० [स०] १ पास जाना। पहुँचना। २ प्रवेश। घुसना। ३ बैठना। आसन जमाना। ४ लेटना। सोना। पड रहना। ५ काम शास्त्रानुसार एक प्रकार का रतिबध। ६ काष्ठासन। पीढा। पाटा। ७ अग्नि देवता, जो रति के अधिष्ठाता माने गए है। ८ शयन कक्ष। शयनागार (को०)। ९ सपना। स्वप्न (को०)।

यौ०—सवेशपति = निद्रा, आराम अथवा रति के अधिष्ठाता देवता अग्नि।

सवेशक—सज्ञा पु० [स०] १ जमा करने या ठीक ठिकाने मे रखने वाला। सामान आदि को तरतीब देनेवाला। २ शयन करने, सोने मे सहायता देनेवाला (को०)।

सवेशन—सज्ञा पु० [स०] [वि० सवेशनीय, सवेशनीय, सवेशित, सवेश्य] १ बैठना। २ लेटना। पड रहना। सोना। ३ घुसना। प्रवेश करना। ४ रति। रमण। समागम। ५ शय्या या बैठने का आसन (को०)।

सवेशनीय—वि० [स०] जो सवेशन करने लायक हो। जो सवेशन के योग्य हो।

सवेशी—वि० [स० सवेशिन्] लेटनेवाला। शयन करनेवाला (को०)।

सवेश्य—वि० [स०] १ लेटने योग्य। २ घुसने योग्य।

सवेष्ट—सज्ञा पुं० [स०] लपेटने का कपडा इत्यादि। वेठन। आच्छादन।

सवेष्टन—सज्ञा पु० [स०] [वि० सवेष्टित, सवेष्टनीय] १ लपेटना। ढाँकना। बद करना। २ घेरना। ३ आच्छादन। वेष्टन। वेठन (को०)।

सवैधानिक—वि० [स० सम् + वैधानिक] विधान के अनुसार। सविधान सबधी। कानूनी।

सव्यवहरण—सज्ञा पु० [स०] १ भली भाँति व्यवहार करना। २ अच्छा कारोबार करना। व्यापार आदि मे उन्नति करना (को०)।

सव्यवहार—सज्ञा पु० [स०] १ अच्छी तरह का व्यवहार। अच्छा सलूक। एक दूसरे के प्रति उत्तम आचरण। २ मामला। प्रसग। ३ ससर्ग। लगाव। ४ पूरा सेवा। व्यवहार। उपयोग। इस्तेमाल। ५ लेन देन करनेवाला। व्यवसायी। ६ वाणिज्य। व्यापार। ७ प्रचलित शब्द। आमफहम, लफ्ज।

सव्याध—सज्ञा पुं० [स०] द्वद्व युद्ध। लडाई (को०)।

सव्यान—सज्ञा पुं० [स०] १ उत्तरीय वस्त्र। चादर। दुपट्टा। २ वस्त्र। कपडा। आच्छादन।

सव्याय—सज्ञा पु० [स०] १ आच्छादन। वस्त्र। २ ओढना।

सव्रात—सज्ञा पुं० [स०] झुड। गिरोह।

सशसा—सज्ञा स्त्री० [स०] तारीफ। स्तुति (को०)।

सशप्त—वि० [स०] १ जो शापग्रस्त हो। २ जिसने किसी के साथ प्रतिज्ञा की या शपथ खाई हो। वाग्बद्ध।

सशप्तक—सज्ञा पु० [स०] १ वह योद्धा जिसने बिना सफल हुए लडाई आदि से न हटने की शपथ खाई हो। २ वह जिसने यह शपथ खाई हो कि बिना मरे न लौटेगे। ३ कुरुक्षेत्र के युद्ध मे एक दल जिसने अर्जुन के वध की प्रतिज्ञा की थी, पर स्वय मारा गया था। ४ चुना हुआ योद्धा (को०)। ५ युद्ध मे सहयोग देनेवाला वीर योद्धा।

सशब्द—सज्ञा पुं० [स०] १ ललकार। २ निर्वचन। कथन। ३ स्तुति। प्रशसा। ४ हवाला। उल्लेख। उद्धरण (को०)।

**सशब्दन**—संज्ञा पु० [सं०] १ ध्वनि या शब्द करना। २ प्रशंसा करना। ३ ललकारना या पुकारना। ४ उल्लेख करना। हवाला देना (को०)।

**सशम**—संज्ञा पुं० [सं०] १ पूर्ण तुष्टि। कामना की पूर्ण निवृत्ति।

**सशमन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ शांत करना। निवृत्त करना। २ नष्ट करना। न रहने देना। ३ वह औषध जो दोषों को बिना घटाए बढ़ाए शोधन करे। ४ स्थिर करना।

**सशमनवर्ग**—संज्ञा पुं० [सं०] वे ओषधियाँ जो सशमन करें। जैसे,—देवदारु, कुट, हल्दी आदि।

**सशय**—संज्ञा पुं० [सं०] १ लेट रहना। पड़ रहना। २ दो या कई बातों में से किसी एक का भी मन में न बैठना। अनिश्चयात्मक ज्ञान। अनिश्चय। संदेह। शक। शुबहा। दुबधा।

विशेष—यह न्याय के सोलह पदार्थों में से एक है।

३ आशंका। खतरा। डर। जैसे,—प्राण का संशय में पड़ना। ४ संदेह नामक काव्यालंकार। ५ संभावना (को०)। ६ विवाद का विषय (को०)।

यौ०—संशयकर = कठिनाई में डालनेवाला। खतरे से भरा हुआ। विपत्तिकर। संशयगत = जो विपत्ति या खतरे में पड़ गया हो। संशयच्छेद = संशय का विनाश। संदेह नाश। संशयच्छेदी = संशय दूर करनेवाला। संदेह का निराकरण करनेवाला। संशयसम। संशयस्थ।

**संशयसम**—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय दर्शन में २४ जातियों अर्थात् खंडन की असंगत युक्तियों में से एक। वादी के दृष्टांत को लेकर उसमें साध्य और असाध्य दोनों धर्मों का आरोप करके वादी के साध्य विषय को संदिग्ध सिद्ध करने का प्रयत्न।

विशेष—वादी कहता है—'शब्द अनित्य है, उत्पत्ति धर्मवाला होने से, घड़े के समान'। इसपर यदि प्रतिवादी कहे-'शब्द नित्य और अनित्य दोनों हुआ, मूर्त होने के कारण, घट और घटत्व के समान' तो उसका यह असंगत उत्तर 'संशयसम' होगा।

**संशयस्थ**—वि० [सं०] १ जो संदेह में पड़ा हो। २ जो खतरे में पड़ा हो (को०)।

**संशयापनोद**—संज्ञा पुं० [सं०] १ संशय का दूर होना। २ एक प्रकार का काव्यालंकार।

**संशयात्मक**—वि० [सं०] जिसमें संदेह हो। संदिग्ध। शुबहे का। अनिश्चित।

**संशयात्मा**—संज्ञा पुं० [सं० संशयात्मन्] जिसका मन किसी बात पर विश्वास न करे। विश्वासहीन। संदेहवादी।

**संशयान**—वि० [सं०] संदेह करनेवाला। संशयालु (को०)।

**संशयापन्न**—संज्ञा पुं० [सं०] संशययुक्त। अनिश्चित।

**संशयालु**—वि० [सं०] १ विश्वास न करनेवाला। २ बात बात में संदेह करनेवाला। शकी।

**संशयास्पद**—वि० [सं०] १ संशययुक्त। संदेहास्पद। २ खतरनाक।

**संशयित**—वि० [सं०] १ संशययुक्त। दुबधा में पड़ा हुआ। २ संदिग्ध। अनिश्चित। ३ आपत्तिग्रस्त। खतरे में पड़ा हुआ (को०)।

**संशयिता**—संज्ञा पुं० [सं० संयितृ] संशयकर्ता। संशय करनेवाला।

**संशयी**—वि० [सं० संशयिन्] १ संशय करनेवाला। संदेह करनेवाला। २ शकी।

**संशयोच्छेदी**—वि० [सं० संशयोच्छेदिन्] संदेह को दूर करनेवाला। संदेहनाशक।

**संशयोपमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का उपमा अलंकार जिसमें कई वस्तुओं के साथ समानता संशय के रूप में कही जाती है।

**संशयोपेत**—वि० [सं०] संशययुक्त। संदिग्ध। अनिश्चित।

**संशर**—संज्ञा पु० [सं०] तोड़ना। विशीर्ण करना। चूर्ण करना (को०)।

**संशरण**—संज्ञा पु० [सं०] १ दलित करना। चूर्ण करना। २ भंग करना। तोड़ना। ३ युद्ध का आरंभ। दे० 'संसरण'। ४ शरण में जाना। पनाह लेना।

**संशारुक**—वि० [सं०] १ तोड़नेवाला। भंग करनेवाला। २ दलन या मर्दन करनेवाला।

**संशासन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छा शासन। उत्तम राज्यप्रबंध। २ आदेश। मंत्र। अनुशासन।

**संशासित**—वि० [सं०] १ सुशासित। अच्छे ढंग से शासित। २ आदिष्ट। अनुशासित। निर्देश प्राप्त (को०)।

**संशित**—वि० [सं०] १ सान पर चढ़ाया हुआ। तेज किया हुआ। चोखा या तीखा किया हुआ। टेया हुआ। तीक्ष्ण। तेज। २ उद्यत। उतारू। तत्पर। आमादा। ३ दक्ष। निपुण। पटु। ४ नोकदार। नुकीला। अनीदार। ५ सर्वथा पूरा किया हुआ। निष्पन्न (को०)। ६ निर्णीत। सुनिश्चित (को०)। ७ अपने संकल्प को दृढ़तापूर्वक निभानेवाला (को०)। ८ कर्कश। कटु। अप्रिय। कठोर। जैसे,—संशित वचन।

यौ०—संशितवचन = (१) अप्रिय कथन। (२) कटुवक्ता। संशितवाक् = कटुभाषी। संशितव्रत।

**संशितव्रत**—संज्ञा पु० [सं०] वह जो नियम व्रत के पालन में पक्का हो। कठोरता से नियम या व्रत आदि का पालन करनेवाला।

**संशितात्मा**—वि० [सं० संशितात्मन्] १ दृढ़ मनवाला। २ अनुशासित मनवाला (को०)।

**संशिति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संशय। संदेह। शक। २ खूब टेना या तेज करना। खूब सान पर चढ़ाना।

**संशिष्ट**—वि० [सं०] बचा हुआ। बाकी रहा हुआ।

**संशीत**—वि० [सं०] १ जो ठंढा हुआ हो। २ ठंढ से जमा हुआ।

**संशीति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] संदेह। संशय। अनिश्चय (को०)।

**संशीलन**—संज्ञा पु० [सं०] १ नित्य अभ्यास। नियमित अभ्यास। २ नित्य संपर्क या साहचर्य।

**सशुद्ध**—वि० [स०] १ यथेष्ट शुद्ध। विशुद्ध। २ साफ किया हुआ। स्वच्छ या शुद्ध किया हुआ। चुकाया हुआ। चुकता किया हुआ। बेबाक (ऋण)। ४ जांचा हुआ। परीक्षित। ५ अपराध या दंड आदि से मुक्त किया हुआ। ६ जो प्रायश्चित्त आदि विधानों द्वारा दोषरहित हो। जैसे, —सशुद्ध पातक।

यौ०—सशुद्धकिल्विष = निष्पाप। पापमुक्त। सशुद्धपातक = प्रायश्चित्त द्वारा पापमुक्त।

**सशुद्धि**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ पूरी सफाई। पूरी पवित्रता। २ शरीर की सफाई। ३ शुद्ध करना। स्वच्छ या विमल करना (को०)। ४ संशोधन। सुधार (को०)। ५ (ऋण का) भुगतान या परिशोध (को०)।

**सशुष्क**—वि० [स०] १ बिल्कुल सूखा हुआ। खुश्क। २ नीरस। ३ जो सहृदय न हो। अरसिक। ४ कुम्हलाया हुआ (को०)।

**सशून**—वि० [स०] अत्यंत शोथयुक्त या फूला हुआ (को०]।

**सश्रृंगी**—संज्ञा स्त्री० [स० सश्रृङ्गी] एक प्रकार की गौ। वह गाय जिसके शृंग आमने सामने घूमे हों (को०]।

**संशोधक**—संज्ञा पुं० [स०] १ शोधन करनेवाला। सुधारनेवाला। दुरुस्त या ठीक करनेवाला। २ संस्कार करनेवाला। बुरी से अच्छी दशा में लानेवाला। ३ अदा करनेवाला। चुकानेवाला।

**संशोधन**[1]—संज्ञा पु० [स०] [वि० संशोधनीय, संशोधित, संशुद्ध, संशोध्य] १ शुद्ध करना। साफ करना। स्वच्छ करना। २ दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। संस्कार करना। त्रुटि या दोष दूर करना। कसर या ऐब निकालना। ३ चुकता करना। अदा करना। बेबाक करना। (ऋण आदि)।

**संशोधन**[2]—वि० [स०] १ जिसमें शुद्ध किया जाय। सुधारने, शुद्ध करने, संस्कार करने का साधन। सुधारनेवाला। २ विकारों (वात, पित्तादि) को दूर करनेवाला (को०]।

**संशोधनीय**—वि० [स०] १ साफ करने योग्य। २ सुधारने या ठीक करने योग्य। ३ कर्ज आदि जो चुकता किया जाय। बेबाक करने योग्य (को०)।

**संशोधित**—वि० [स०] १ खूब शुद्ध किया हुआ। २ सुधारा हुआ। ठीक किया हुआ। दुरुस्त किया हुआ। ३ बेबाक किया हुआ। चुकाया हुआ (को०)।

**संशोधी**—वि० [स० संशोधिन्] [वि० स्त्री० संशोधिनी] १ सुधारनेवाला। दुरुस्त करनेवाला। ३ चुकानेवाला। जैसे,—ऋण-संशोधी (को०)।

**संशोध्य**—वि० [स०] १ साफ करने योग्य। २ सुधारने या ठीक करने योग्य। ३ जिसका सुधार करना हो। ४ जिसे साफ करना हो। ४ जिसे चुकाना या बेबाक करना हो (को०)।

**संशोभित**—वि० [स०] सजा हुआ। शोभित। अलंकृत (को०]।

**संशोष**—संज्ञा पुं० [स०] १ शोषण। सोखना। जज्ब करना। २ शुष्क करना। सुखाना (को०]।

**संशोषण**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संशोषणीय, संशोषित, संशोष्य] १ बिल्कुल सोखना। जज्ब करना। २ सुखाना।

**संशोषण**[2]—वि० सुखाने या सोखनेवाला (को०]।

**संशोषणीय**—वि० [सं०] संशोषण योग्य। सोखने योग्य।

**संशोषित**—वि० [स०] सोखा या सुखाया हुआ।

**संशोषी**—वि० [स० संशोषिन्] १ सोखने या जज्ब करनेवाला। २ सुखा देनेवाला। जैसे, बुखार, सुखंडी आदि रोग (को०]।

**संशोष्य**—वि० [स०] सोखने योग्य। जिसे सोखना या सुखाना हो।

**संश्चत्**—संज्ञा पु० [स०] १ इंद्रजाल। बाजीगरी। माया। जादू। २ छल। छद्म। धोखा। दाँवपेंच। ३ ऐंद्रजालिक। जादूगर। मायिक (को०]।

**संश्यान्**—संज्ञा पुं० [स०] १ (शीत से) ठिठुरा हुआ। सिकुड़ा हुआ। २ जमा हुआ। ३ लिपटा या लपटा हुआ (को०)। ४ अवसन्न (को०)।

**संश्रय**—संज्ञा पु० [स०] १ संयोग। मेल। संबंध। समागम। लगाव। संपर्क। ३ आश्रय। शरण। पनाह। ४ सहारा। अवलंब। ५ राजाओं का परस्पर रक्षा के लिये मेल। अभिसंधि।

**विशेष**—स्मृतियों में यह राजा के छह गुणों में कहा गया है और दो प्रकार का माना गया है—(१) शत्रु से पीड़ित हो कर दूसरे राजा को सहायता लेना, और (२) शत्रु से पहुँचनेवाली हानि की आशंका से किसी दूसरे बलवान् राजा का आश्रय लेना।

६. पनाह की जगह। शरण स्थान। ७ रहने या ठहरने की जगह। घर। ८ विश्राम की जगह। विश्रामस्थान (को०)। ९ उद्देश्य। लक्ष्य। मनलब। १० किसी वस्तु का अंग। हिस्सा।

**संश्रयण**—संज्ञा पु० [सं०] [वि० संश्रयणीय, संश्रयी, संश्रित] १. सहारा लेना। अवलंब पकड़ना। २ शरण लेना। पनाह लेना। ३ आसक्ति (को०)।

**संश्रयणीय**—वि० [स०] १ सहारा लेने योग्य। २ शरण लेने योग्य।

**संश्रयी**[1]—वि० [स० संश्रयिन्] [वि० स्त्री० संश्रयिणी] १ सहारा लेनेवाला। २ शरण लेनेवाला।

**संश्रयी**[2]—संज्ञा पुं० भृत्य। नौकर।

**संश्रव**[1]—संज्ञा पु० [स०] १ सुनना। कान देना। २ अंगीकार। स्वीकार। मानना। रजामंदी। ३ वादा। प्रतिज्ञा। करार।

**संश्रव**[2]—वि० जो सुना जा सके। सुनाई पड़नेवाला।

**संश्रव**[3]—संज्ञा पुं० [स० संश्रवस्] ख्याति। प्रसिद्धि। गौरव (को०]।

**संश्रवण**—संज्ञा पु० [स०] [वि० संश्रवणीय, संश्रुत] १ सुनना। खूब कान देना। २ अंगीकार करना। स्वीकार करना। ३. वादा करना। करार करना। ४ श्रवण का क्षेत्र। जहाँ तक कान सुन सके वह क्षेत्र या दूरी (को०)। ४ कान। श्रवण (को०)।

**संश्रांत**—वि० [सं० संश्रान्त] बिल्कुल थका हुआ। शिथिल। पसमाँदा।

सश्राव—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सश्रावणीय, सश्रावित, सश्राव्य] १. कान देना। सुनना। २ अंगीकार। स्वीकार।

सश्रावक—संज्ञा पु० [सं०] १ सुननेवाला। श्रोता। २. चेला। शिष्य।

सश्रावयिता—वि० [सं० सश्रावयितृ] घोषित करनेवाला। सुनानेवाला [को०]।

सश्रावित—वि० [सं०] १ सुनाया हुआ। २. जोर जोर से पढकर सुनाया हुआ।

सश्राव्य—वि० [सं०] १. सुनाने योग्य। २. सुनाई पडनेवाला।

सश्रित'—वि० [सं०] १ जुडा या मिला हुआ। संयुक्त। २ लगा हुआ। टिका वा ठहरा हुआ। ४ आलिंगित। संश्लिष्ट। गले या छाती से लगाया हुआ। ५ भागकर शरण मे गया हुआ। जिसने जाकर पनाह ली हो। ६ जिसने आश्रय ग्रहण किया हो। जो निर्वाह के लिये किसी के पास गया हो। ७ जिसने सेवा स्वीकार की हो। ८ जो किसी बात के लिये दूसरे पर निर्भर हो। आसरे या भरोसे पर रहनेवाला। पराधीन। ९ आसक्त। परायण (को०)। १० न्यस्त। निहित (को०)। ११. उपयुक्त। उचित (को०)। १२ अंगीकृत। गृहीत। स्वीकृत (को०)। १३ सबधी। विषयक (को०)।

सश्रित'—संज्ञा पु० सेवक। भृत्य। परावलंबी व्यक्ति।

सश्रुत—संज्ञा पु० [सं०] १ खूब सुना हुआ। २ खूब पढकर सुनाया हुआ। ३ स्वीकृत। माना हुआ। मंजूर। ४ प्रतिज्ञात। वादा किया हुआ (को०)।

संश्लिष्ट'—वि० [सं०] १ खूब मिला हुआ। जडा हुआ। सटा हुआ। २ एक साथ किया हुआ। ३ संमिलित। मिश्रित। ४ एक मे मिलाया हुआ। गड्डबड्ड। अस्पष्ट। अनिश्चित। ५ आलिंगित। परिरंभित। भेटा हुआ। ६ सज्जित। युक्त। सहित (को०)।

यौ०—संश्लिष्ट कर्म = वे काम जिनमे अच्छाई बुराई का पता न चल सके। संश्लिष्टकर्मा = अविवेकी। भले बुरे की पहचान न करनेवाला।

संश्लिष्ट'—संज्ञा पुं० १ राशि। ढेर। समूह। २ एक प्रकार का चँदोवा या मंडप। (वास्तु)।

संश्लेष—संज्ञा पु० [सं०] १ मेल। मिलाप। संयोग। २ मिलान। सटाव। ३ आलिंगन। परिरंभण। भेंटना। ४ चर्म रज्जु। नरखा। बंधन। पाश (को०)। ५ जोड। संधि (को०)।

संश्लेषण—संज्ञा पु० [सं०] [वि० संश्लेषणीय, संश्लेषित, संश्लिष्ट] १ एक मे मिलाना। जुटाना। सटाना। २ लगाना। अँटकाना। टाँगना। ३ संबद्ध करना (को०)। ४ बाँधने या जोडनेवाली वस्तु।

संश्लेषणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'संश्लेषण'।

संश्लेषित—वि० [सं०] १ मिलाया हुआ। जोडा हुआ। सटाया हुआ। २ लगाया हुआ। अटकाया हुआ। ३ आलिंगन किया हुआ।

संश्लेषी—वि० [सं० संश्लेषिन्] [वि० स्त्री० संश्लेषिणी] १ मिलानेवाला। जोडनेवाला। २ आलिंगन करनेवाला। भेंटनेवाला।

संश्वत्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'संश्चत्' [को०]।

संसग—संज्ञा पु० [सं० संसङ्ग] संयोग। लगाव। संबंध [को०]।

संसगी—वि० [सं० संसङ्गिन्] १ साथ लगनेवाला। २ संसर्ग या संपर्क मे आनेवाला [को०]।

संस(ु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० संशय] संशय। आशंका। उ०—करणा करी छाँडि पगु दीनो जानी सुख मन संस। सूरदास प्रभु असुर निकदन दुष्टन के उर गस।—सूर (शब्द०)।

संस†[2]—संज्ञा पुं० [देश० या सं० शस्य, प्रा० सस्स (= पैदावार, फसल)] उन्नति। बढती। वृद्धि [को०]।

संसइ(ु)†[1]—संज्ञा पु० [सं० संशय] दे० 'संशय'।

संसइ†[2]—वि० [सं० संशयिन्, प्रा० संसइ] संशययुक्त। शंका करनेवाला।

संसउ(ु)—संज्ञा पु० [सं० संशय] दे० 'संशय'। उ०—अजहूँ कछु संसउ मन मोरे। करहु कृपा विनवौं कर जोरे।—मानस, १।१०९।

संसकिरत†—संज्ञा स्त्री० [सं० संस्कृत] संस्कृत भाषा। उ०—भाषा तो सतन ने कहिया, संसकिरत ऋषिन की बानी है।—कबीर रे०, पृ० ४६।

संसक्त—वि० [सं०] १ लगा हुआ। सटा हुआ। मिला हुआ। २ भिडा हुआ (शत्रु से)। ३ संबद्ध। जुडा हुआ। ४ प्रवृत्त। लगा हुआ। मशगूल। लिप्त। लीन। ५ आसक्त। लुभाया हुआ। लुब्ध। प्रेम मे फँसा हुआ। ६ विषय वासना मे लीन। ७ युक्त। सहित। पूर्ण। ८ सघन। घना। ९ अव्यवस्थित। मिश्रित (को०)। १० समीपवर्ती। निकटवर्ती (को०)। ११ अनवरत। लगातार। निरंतर (को०)। १२ अस्पष्ट (वाणी) (को०)।

यौ०—संसक्तचेता, संसक्तमना = जिसका मन किसी मे आसक्त या लीन हो। संसक्तयुग = जुए मे बँधा हुआ।

संसक्त सामंत—संज्ञा पु० [सं० संसक्त सामन्त] पराशर स्मृति के अनुसार वह सामंत जिसकी थोडी बहुत जमीन चारो ओर हो और कही पूरे गाँव भी हो।

संसक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लगाव। मिलान। २. जोड। बंध। ३ संबंध। ४. आसक्ति। लगन। ५ लीनता। ६ प्रवृत्ति।

संसगर†—वि० [सं० शस्य (= अन्न, फसल) + आगार] १. उपजाऊ। जिसमे पैदावार अधिक हो। २ लाभदायक। फायदेमंद। बरकतवाला।

संसज्जमान वि० [सं०] १ साथ लगनेवाला। अनुषंगी। २ स्खलित। अस्पष्ट (स्वर)। जो शोक के कारण स्पष्ट न हो (वाणी)। ३ जो तैयार हो [को०]।

संसत्, संसद्'—संज्ञा पुं० [सं०] १ समाज। सभा। मंडली। २ राजसभा। दरबार। ३. धर्मसभा। न्याय सभा। न्यायालय।

अदालत। ४. चौबीस दिनो का एक यज्ञ। ५ समूह। राशि (को०)। ६ किसी देश की चुने हुए जन प्रतिनिधियो की सर्वोच्च सभा (अ० पार्लमेंट)। विशेष दे० 'पार्लमेंट'।

**ससत्, ससद्[1]**—वि० १ साथ साथ बैठनेवाला। २ यज्ञ मे बैठने या भाग लेनेवाला (को०)।

**ससद**—सज्ञा पु० [स०] १ एक यज्ञ जो २४ दिन का होता था। २ दे० 'पार्लमेंट'।

**ससदन**—सज्ञा पु० [स०] विषाद। खेद। खिन्नता (को०)।

**ससनाना**—क्रि० अ० [अनुध्व०] दे० 'सनसनाना'।

**ससय**—सज्ञा पुं० [स० सशय] दे० 'सशय'। उ०—अस निज हृदय विचारि तजु ससय भजु रामपद।—मानस, १।११५।

**ससरण**—सज्ञा पु० [स०] [वि० ससरणीय, ससरित, समृत] १ चलना। सरकना। गमन करना। २ सेना की अबाध यात्रा। ३ एक जन्म से दूसरे जन्म मे जाने की परपरा। भवचक्र। ४ समार। जगत्। ५ राजपथ। सडक। रास्ता। ६ नगर के तोरण के पास यात्रियो के लिये विश्राम स्थान। शहर के फाटक के पास मुसाफिरो के ठहरने का स्थान। धर्मशाला। सराय। ७ युद्ध का आरभ। लडाई का छिडना। ८ वह मार्ग जिससे होकर बहुत दिनो से लोग या पशु आते जाते हो।

**विशेष**—बृहस्पति ने लिखा है कि ऐसे मार्ग पर चलने से कोई (जमीदार भी) किसी को नही रोक सकता।

**ससर्ग**—सज्ञा पुं० [स०] १ सबध। लगाव। सपर्क। २ मेल। मिलाप। सयोग। ३ सहवास। समागम। सग। साथ। ४ स्त्री पुरुष का सहवास। मैथुन। ५ घालमेल। घपला। अस्तव्यस्तता। ६ वात, पित्तादि मे से दो का एक साथ प्रकोप। (सुश्रुत)। ७ जायदाद का एक मे होना। इजमाल शराकत। साझेदारी। ८ वह विंदु जहाँ एक रेखा दूसरी को काटती हो। (शुल्वसूत्र)। ९ रक्त जक्त। परिचय। घनिष्टता। १० समवाय (को०)। ११ अवधि (को०)। १२ स्थायित्व। स्थिरता। सातत्य (को०)।

**ससर्गज**—वि० [स०] जो ससर्ग या लगाव से उत्पन्न हो (को०)।

**ससर्गदोष**—सज्ञा पुं० [स०] वह बुराई जो किसी के साथ रहने से आवे। सगत का दोष।

**ससर्गविद्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लोगो से मिलने जुलने का हुनर। व्यवहारकुशलता। २ सामाजिक विज्ञान। समाज विज्ञान (को०)।

**ससर्गाभाव**—सज्ञा पु० [स०] १ ससर्ग का अभाव। सबध का न होना। २ न्याय मे अभाव का एक भेद। किसी वस्तु के सबध मे दूसरी वस्तु का अभाव। जैसे,—घर मे घडा नही है। विशेष दे० 'अभाव'।

**ससर्गी[1]**—वि० [स० ससर्गिन्] [वि० स्त्री० ससर्गिणी] १ ससर्ग या लगाव रखनेवाला। २ ससर्ग प्राप्त। सयुक्त। युक्त (को०)। ३ परिचित। रक्त जक्तवाला। हेली मेली (को०)।

**ससर्गी[2]**—सज्ञा पुं० १ मित्र। सहचर। २ वह जो पैतृक सपत्ति का विभाग हो जाने पर भी अपने भाइयो या कुटुबियो आदि के साथ रहता हो।

**ससर्गी**—सज्ञा स्त्री० शुद्धि। सफाई।

**ससर्जन**—सज्ञा पु० [स०] [वि० ससर्जनीय, ससर्जित, ससर्ज्य] १ सयोग होना। मिलना। २ जुडना। सबद्ध होना। ३ अपनी ओर मिलाना। राजी करना। ४ हटाना। दूर करना। त्याग करना। छोडना। ५ शुद्धता। स्वच्छता। सफाई (को०)।

**ससर्जनीय**—वि० [स०] जो ससर्जन के योग्य हो।

**ससर्जित**—वि० [स०] जिसका ससर्जन किया गया हो।

**ससर्ज्य**—वि० [स०] जो ससर्जन के योग्य हो।

**ससर्प**—सज्ञा पुं० [स०] १ रेंगना। सरकना। २ खिसकना। धीरे धीरे चलना। ३ वह अधिक साम जो अन्य सामवाले वर्ष मे होता है।

**ससर्पण**—सज्ञा पु० [स०] [वि० ससर्पणीय, ससर्पित, ससर्पी] १ रेंगना। सरकना। २ खिसकना। धीरे धीरे चलना। ३ चढना। ४ सहसा आक्रमण। अचानक हमला।

**ससर्पणीय**—वि० [स०] जो रेंगने, खिसकने, चढने या एकाएक आक्रमण के योग्य हो।

**ससर्पित**—वि० [स०] १ जिसने ससर्पण किया हो। २ जिसपर ससर्पण किया जाय।

**ससर्पी**—वि० [स० ससर्पिन्] [वि० स्त्री० ससर्पिणी] १ रेंगनेवाला। सरकनेवाला। २ खिसकने या धीरे धीरे चलनेवाला। ३ फैलनेवाला। सचार करनेवाला। ४ पानी के ऊपर तैरनेवाला। उतरानेवाला (सुश्रुत)।

**ससह**—वि० [स०] बराबरी वाला। जो समान हो (को०)।

**ससा[1]**—सज्ञा पु० [स० सशय] दे० 'सशय'। उ० मन जोवन पर पटक्यो कसा। सो अज्ञान मम बानी समा।—गोपाल (शब्द०)।

**ससा[2]**—सज्ञा पु० [स० श्वास, हिं० साँस, नासा] श्वास। प्राणवायु। उ०—कबीर ससा जीव मे, कोई न कहै समुझाइ। नाना वाणी बोलता सो कित गया बिलाइ।—कबीर ग्र०, पृ० ३१।

**ससा[3]**—सज्ञा पुं० [हिं० सँडसा] दे० 'सँडसा'। उ०—ससा खूटा सुख भया मिल्या पियारा कत।—कबीर ग्र०, पृ० १५।

**ससाद**—सज्ञा पुं० [स०] १ जमावडा। गोष्ठी। २ सभा। समाज। मडली।

**ससादन**—सज्ञा पुं० [स०] [वि० समादनीय, समादित, ससाद्य] १ जुटाना। एकत्र करना। २ तरतीब मे लगाना। क्रमबद्ध करना।

**ससादनीय**—वि० [स०] ससादन करने योग्य। जिसका समादन किया जाय।

**ससादित**—वि० [स०] १ एकत्र किया हुआ। जुटाया हुआ। २ तरतीब दिया हुआ। लगाया हुआ। सजाया हुआ।

**ससाधक**—सज्ञा पु० [स०] १ पूर्णतया साधन करनेवाला। सपन्न करनेवाला। अजाम देनेवाला। २ जीतनेवाला। वश मे करनेवाला।

**ससाधन**—सज्ञा पु० [स०] [वि० समाधनीय, ससाधित, समाध्य] १ अच्छी तरह करना। पूरा करना। अजाम देना। २ तैयारी। आयोजन। ३ जीतना। दमन करना। वश मे करना।

**समाधनीय**—वि० [स०] १ साधन के योग्य। पूरा करने योग्य। २ जीतने योग्य। वश मे लाने योग्य।

**ससाध्य**—वि० [स०] १ पूरा करने योग्य। २ जीतने योग्य। दमन करने योग्य। ३ जिसे करना हो। करने योग्य। ४ जिसे जीतना या वश मे करना हो।

**ससार**—सज्ञा पुं० [स०] १ लगातार एक अवस्था से दूसरी अवस्था मे जाते रहना। २ बार बार जन्म लेने की परपरा। आवागमन। भवचक्र। जगत्। दुनिया। विश्व। सृष्टि। ४ इहलोक। मर्त्यलोक। ५ मायाजाल। माया का प्रपच। जीवन का जजाल। ६ गृहस्थी। ७ दुर्गध खदिर। विट् खदिर। ८ मार्ग। पथ (को०)।

यौ०—ससारगमन = जन्म मरण का चक्कर। ससारगुरु। ससारचक्र। ससारतिलक। ससारपथ। ससारपदवी। ससारबधन = जागतिक जीवन का पाश या मोह। ससार भावन। ससार मार्ग। ससारमोक्ष = ससार मे छुटकारा। ससारमोक्षण = ससारयात्रा। ससारवर्जित = सासारिकता से मुक्त। ससारवर्त्म = ससार का मार्ग। ससारसग = सासारिकता। ससारसुख = ससार का आनद। भौतिक सुख।

**ससारगुरु**—सज्ञा पं० [स०] १ ससार को उपदेश देनेवाला। जगद्गुरु। २ कामदेव। स्मर।

**ससारचक्र**—सज्ञा पु० [स०] १ जन्म पर जन्म लेने की परपरा। नाना योनियो मे भ्रमण। २ माया का जाल। दुनिया का चक्कर। प्रपच। ३ जगत् की दशा का उलट फेर।

**ससारण**—सज्ञा पु० [स०] चलाना। सरकाना। गति देना।

**ससारतिलक**—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का उत्तम चावल। उ०—कोरहन, बडहन, जडहन, मिला। औ ससारतिलक खँडविला—जायसी (शब्द०)।

**ससारपथ**—सज्ञा पु० [स०] १ सासारिक प्रपच। सासारिक जीवन। २ ससार मे आने का मार्ग। स्त्रियो की जननेंद्रिय।

**ससारपदवी**—सज्ञा स्त्री० [स०] ससारपथ। ससारमार्ग (को०)।

**ससारभावन**—सज्ञा पु० [स०] ससार को दु खमय जानना।

विशेष—यह ज्ञान चार प्रकार का है—नरकगति, तिर्यग्गति, मनुष्यगति और देवगति।

**ससारमार्ग**—सज्ञा पुं० [स०] १ स्त्रियो की जननेंद्रिय। २ सासारिक जीवन (को०)।

**ससारमोक्षण**—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो भवबधन मे मुक्त करे। २ ससार से छुटकारा (को०)।



**ससारयात्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ ससार मे रहना। जीवन बिताना। २ जिदगी। जीवन (को०)।

**ससारसारथि**—सज्ञा पु० [स०] १ ससारपथ को पार करानेवाला। २ शिव का एक नाम।

**ससारसरणि**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'ससारमार्ग' (को०)।

**ससारी**[1]—वि० [स० ससारिन्] [वि० स्त्री० ससारिणी] १ ससार सबधी। लौकिक। जैसे,—ससारी बाते। २ ससार मे रहनेवाला। ससार को माया मे फँसा हुआ। दुनिया के जजाल से घिरा हुआ। जैसे,—ससारी जीवो के कल्याण के लिये यह कथा है। ३ लोकव्यवहार मे कुशल। दुनियादार। ४ बार बार जन्म लेनेवाला। भवचक्र मे बँधा हुआ। जैसे—ससारी आत्मा। ५ ससरण करनेवाला। दूर तक जाने या व्याप्त होनेवाला (को०)।

**ससारी**[2]—सज्ञा पु० १ प्राणी। जीव। २ जीवात्मा (को०)।

**ससिंचु**—सज्ञा स्त्री० [स० शस्य] दे० 'शस्य'। उ०—जिन समिन को सीच तुम, करी सुहरी बहारि।—दीन० ग्र०, पृ० २०१।

**ससिक्त**—वि० [स०] खूब सीचा हुआ। जिसपर खूब पानी छिडका, गया हो। आर्द्र। तर।

**ससिद्ध**—वि० [स०] १ पूर्णतया सपन्न। अच्छी तरह किया हुआ। २ प्राप्त। लब्ध। ३ अच्छी तरह सीझा या पका हुआ। (भोजन)। ४ जो नीरोग हो गया हो। चगा। स्वस्थ। ५ तैयार। उद्यत। प्रस्तुत। ६ किसी बात मे पक्का। कुशल। निपुण। ७ जिसका योग सिद्ध हो गया हो। मुक्त। ८ कृतसकल्प (को०)। ९ तोषयुक्त। सतुष्ट (को०)।

**ससिद्धार्थ**—वि० [स०] जिसका उद्देश्य या अभिप्राय सिद्ध हो गया हो (को०)।

**ससिद्धि**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सम्यक् पूर्ति। किसी कार्य का अच्छी तरह पूरा होना। २ कृतकार्यता। सफलता। कामयाबी। ३ स्वस्थता। ४ पक्वता। सीझना। ५ पूर्णता। ६ मुक्ति। मोक्ष। ७ परिणाम। आखिरी नतीजा। ८ पक्की बात। निश्चित बात। न टलनेवाला वचन। ९ निसर्ग। प्रकृति। १० स्वभाव। आदत। ११ मदमस्त स्त्री। मदोन्मत्ता।

**ससी**—सज्ञा स्त्री० [हि० सँडसी] दे० 'सडसी'।

**ससीमित**—वि० [सं० सम्+सीमित] पूर्णत सकुचित। जो सीमा के भीतर ही हो। उ०—ये राज्य अपने क्षेत्र मे ही ससीमित रहते थे।—भा० सैन्य०, पृ० ५।

**ससुखित**—वि० [स०] पूर्णत तुष्ट। पूर्ण आनदित (को०)।

**ससुप्त**—वि० [स०] खूब सोया हुआ।

**ससूचक**—वि०, सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० ससूचिका] १. प्रकट करनेवाला। २ जतानेवाला। ३ भेद खोलनेवाला। ४ समझाने बुझानेवाला। कहने सुननेवाला। ५ डाँटने डपटनेवाला।

**ससूचन**—सज्ञा पु० [स०] [वि० ससूचनीय, ससूचित, ससूच्य] १ अच्छी तरह प्रकट करना। जाहिर करना। २ बात खोलना।

भेद खोलना। ३ कहना सुनना। ४ डाँटना डपटना। भला बुरा कहना। भर्त्सना करना। फटकारना। ५ जताना। इगित करना। सकेतित करना।

**ससूचित**—वि० [सं०] १ प्रकट किया हुआ। जाहिर किया हुआ। २ डाँटा डपटा हुआ। जिसे कुछ कहा सुना गया हो। ३ जो सूचित किया गया हो। जताया हुआ।

**ससूची**—वि० [सं० ससूचिन्] [वि० स्त्री० ससूचिनी] १ प्रकट करनेवाला। २ जतानेवाला। ३ भला बुरा कहनेवाला। फटकारनेवाला। दे० 'ससूचक'।

**ससूच्य**—वि० [स०] १ प्रकट करने योग्य। २ जताने लायक। ३ जिसे जताना या प्रकट करना हो। ४ भला बुरा कहने योग्य। जिसे भला बुरा कहना हो, या जिसके लिये भला बुरा कहना हो।

**ससृति**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जन्म पर जन्म लेने की परपरा। आवागमन। भवचक्र। २ ससार। जगत्। उ०—देव पाय सताप घन छोर ससृति दीन भ्रमत जग जोनि नहिं कोपि त्राता। —तुलसी (शब्द०)। ३ अनवरतता। सातत्य। नैरतर्य। प्रवाह (को०)। ४ गति। दशा। अवस्था (को०)।

**ससृष्ट**[1]—वि० [स०] १ एक साथ उत्पन्न या आविर्भूत। २ एक मे मिला जुला। सश्लिष्ट। मिश्रित। ३ सबद्ध। परस्पर लगा हुआ। ४ अतर्भूत। अतर्गत। शामिल। ५ जो जायदाद का बँटवारा हो जाने पर भी समिलित हो गया हो (भाई आदि)। ६ हिला मिला हुआ। बहुत मेल किए हुए। बहुत परिचित। ७ सपन्न किया हुआ। अजाम दिया हुआ। ८ किया हुआ। बनाया हुआ। रचित। निर्मित। ९ वमनादि द्वारा शुद्ध किया हुआ। कोठा साफ किया हुआ। १० जुटाया हुआ। इकट्ठा किया हुआ। सगृहीत। ११ स्वच्छ वस्त्रादि से युक्त (को०)। १२ मिला जुला। विभिन्न प्रकार का (को०)। १३ प्रभावित। अभिभूत। आक्रात। जैसे, रोगससृष्ट।

यौ०—ससृष्टकर्मा = भले बुरे हर प्रकार के कर्मोवाला। जिसके कर्म भले और बुरे दोनो हो। ससृष्टभाव = आत्मीयता। निकट सपर्क। ससृष्टमैथुन। ससृष्टरूप = (१) मिले जुले रूप या आकृतिवाला। (२) घालमेल वाला। मिलावटी। समृष्टहोम।

**ससृष्ट**[2]—सज्ञा पु० १ घनिष्ठता। हेलमेल। निकट का सबध। २ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

**ससृष्टता**—सज्ञा स्त्री० [स०] 'ससृष्टत्व' [को०]।

**ससृष्टत्व**—सज्ञा पु० [स०] १ ससृष्ट होने का भाव। २ स्मृति के अनुसार जायदाद का बँटवारा हो जाने के पीछे फिर एक मे होना या रहना।

**ससृष्टमैथुन**—वि० [स०] [वि० स्त्री० ससृष्टमैथुन] १ जो मैथुनरत हो। २ जो सभोग कर चुका हो। जो मैथुन कार्य सपन्न कर चुका हो [को०]।

**ससृष्टहोम**—सज्ञा पुं० [स०] अग्नि और सूर्य की एक ही मे मिली हुई आहुति।

**ससृष्टि**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक साथ उत्पत्ति या आविर्भाव। २ एक मे मेल या मिलावट। मिश्रण। ३ परस्पर सबध। लगाव। ४ हेलमेल। घनिष्ठता। मेल मुआफिकत। ५ बनाने की क्रिया या भाव। सयोजन। रचना। ६ एकत्व करना। इकट्ठा करना। जुटाना। ७ सग्रह। समूह। राशि। ८ दो या अधिक काव्यालकारो का ऐसा मेल जिसमे सब परस्पर निरपेक्ष हो, अर्थात् एक दूसरे के आश्रित, अनर्भूत आदि न हो। ९ सहभागिता। साझेदारी (को०)। १० एक ही परिवार मे मिल जुलकर रहना। दे० 'समृष्टत्व'—२।

**ससृष्टी**—सज्ञा पु० [स० समृष्टिन्] १ बँटवारे के बाद फिर मे एक मे हो जानेवाले सबधी। २ साझीदार। भागीदार [को०]।

**ससेक**—सज्ञा पु० [स०] अच्छी तरह पानी आदि का छिडकाव या सिचाई।

**ससेचन**—सज्ञा पुं० [स०] अच्छी तरह तर करना, सींचना या छिडकाव करना [को०]।

**ससेवन**—सज्ञा पु० [स०] [वि० ससेवित, ससेवनीय, ससेव्य] १ पूर्णतया सेवन। हाजिरी मे रहना। नौकरी बजाना। २ खूब इस्तेमाल करना। व्यवहार करना। उपयोग मे लाना। बरतना। ३ लगाव मे रहना। सपर्क रखना (को०)।

**ससेवा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ व्यवहार की क्रिया या भाव। २ पूजा। अर्चन। ३ हाजिरी। सेवा। ४ प्रवृत्ति। झुकाव [को०]।

**ससेवित**—वि० [स०] १ भलीभाँति उपयोग मे लाया हुआ। २ अच्छी तरह सेवा किया हुआ [को०]।

**ससेविता**—वि० [स० ससेवितृ] व्यवहार मे लानेवाला। उपयोग मे लानेवाला [को०]।

**ससेवी**—वि० [स० ससेविन्] १ व्यवहार करनेवाला। उपयोग करनेवाला। २ सेवा टहल करनेवाला [को०]।

**ससेव्य**—वि० [स०] १ सेवा या पूजा करने योग्य। सेव्य। २ व्यवहार्य [को०]।

**ससौ**—सज्ञा पु० [हि० साँस] श्वास। प्राणवायु [को०]।

**सस्करण**—सज्ञा पुं० [स०] १ ठीक करना। दुरुस्त करना। सजाना। २ शुद्ध करना। सुधार करना। ३ परिष्कृत करना। सुदर या अच्छे रूप मे लाना। ४ द्विजातियो के लिये विहित सस्कार करना। ५ पुस्तको की एक बार की छपाई। आवृत्ति (आधुनिक)। ६ शवदाह करना (को०)।

**सस्कर्तव्य**—वि० [स०] १ व्यवस्थित या तैयार करने योग्य। २ परिष्कार करने योग्य [को०]।

**सस्कर्ता**—सज्ञा पुं० [स०] १ सस्कार करनेवाला। २ शुद्ध करनेवाला। शोधक (को०)। ३ भोजन पकानेवाला। पाचक (को०)। ४ वह जो छाप या मुद्रा डालता हो (को०)।

**सस्कार**—सज्ञा पु० [स०] १ ठीक करना। दुरुस्ती। सुधार। २ दोष या त्रुटि का निकाला जाना। शुद्धि। ३ सजाना। अच्छे

या सुदर रूप मे लाना। ४ धो माँजकर साफ करना। परिष्कार। ५ वदन की सफाई। शौच। ६ मनोवृत्ति या स्वभाव का शोधन। मानसिक शिक्षा। मन मे अच्छी वातो का जमाना। ७ शिक्षा, उपदेश, सगत, आदि का मन पर पडा हुआ प्रभाव। दिल पर जमा हुआ असर। जैसे,—जैसा लडकपन का सस्कार होता है, वैसा ही मनुष्य का चरित्र होता है। ८ पूर्व जन्म की वासना। पिछले जन्म की वातो का असर जो आत्मा के साथ लगा रहता है (यह वैशेषिक के २४ गुणो मे से एक है)। जैसे,—विना पूर्व जन्म के सस्कार के विद्या नही आती। ९ पवित्र करना। धर्म की दृष्टि से शुद्ध करना। १० वे कृत्य जो जन्म से लेकर मरणकाल तक द्विजातियो के सवध मे आवश्यक होते है। वर्णधर्मानुसार किसी व्यक्ति के सवध मे होनेवाला विधान, रीति या रस्म।

**विशेष**—द्विजातियो के लिये षोडश या द्वादश सस्कार कहे गए है। मनु के अनुसार उनके नाम ये है—गर्भाधान, पुसवन, सीमतोन्नयन, जातकर्म, नामकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, उपनयन, केशात, समावर्तन और विवाह इनमे कर्णवेध, विद्यारभ, वेदारभ और अत्येष्टि कर्म को गणना करने से इनकी सख्या १६ हो जाती है।

११ मृतक की क्रिया। १२ इद्रियो के विषयो के ग्रहण से उत्पन्न मन पर जमा हुआ प्रभाव। १२ मन द्वारा कल्पित या आरोपित विषय। भ्रातिजन्य प्रतीति। प्रत्यय। (जैसी जगत् की, जो वास्तविक नही है।)।

**विशेष**—पच स्कधो मे चौथा स्कध 'सस्कार' है जो भववधन का कारण कहा गया है।

१३ साफ करने या माँजने का झाँवाँ, पत्थर आदि। झवाँ। १४ चमकाना (को०)। १५ व्याकरण की दृष्टि से शब्दो की विशुद्धि (को०)। १६ खाना वनाना। भोग्य पदार्थ तैयार करना (को०)। १७ छाप। प्रभाव (को०)। १८ उपनयन सस्कार। यज्ञोपवीत कर्म (को०)। १९ धार्मिक कृत्य या अनुष्ठान। २० स्मरण शक्ति (को०)। २१ साथ साथ रखना (को०)। २२ पशुओ, पौधो आदि का पालन और रक्षण (को०)।

**यौ०**—सस्कारकर्ता = सस्कार करानेवाला। सस्कारज = सस्कार से उत्पन्न होनेवाला। सस्कारनाम = जो नाम सस्कार के समय दिया गया हो। सस्कारपूत = (१) शिक्षा के कारण परिष्कृत। (२) सस्कार द्वारा जो पवित्र किया गया हो। सस्कारभूषण। सस्काररहित = सस्कारहीन। सस्कारवर्जित। सस्कार-विशिष्ट = पाक द्वारा परिष्कृत। जो पाक क्रिया के कारण उत्तम वना हो। सस्कारसपन्न। सस्कारहीन।

**सस्कारक**—सज्ञा पुं० [स०] १ सस्कार करनेवाला। शुद्ध करनेवाला। ३ मन पर छाप डालनेवाला (को०)। वह जो तैयार करता हो (को०)। ५ वह जो सुधार करता हो। सुधारक (को०)। ६ वह जिसे पकाया जाय या पकाने योग्य हो (को०)।

**सस्कारता**—सज्ञा स्त्री० [स०] सस्कार होने का भाव, क्रिया या स्थिति (को०)।

**सस्कारत्व**—सज्ञा पुं० [स०] 'सस्कारता'।

**सस्कारभूषण**—सज्ञा पुं० [स०] कथन या भाषण, जो शुद्धता, सत्यता एवम् यथार्थता से शोभित या युक्त हो (को०)।

**सस्कारवत्व**—सज्ञा पुं० [स०] सस्कारयुक्त होने का भाव (को०)।

**सस्कारवर्जित**—वि० [स०] वह व्यक्ति जिसका सस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

**सस्कारवान्**—वि० [स० सस्कारवत्] १ जिसका सस्कार या परिष्कार किया गया हो। सस्कार से युक्त। सस्कारवाला। २ सुदर गुणो से विभूषित (को०)।

**सस्कारसपन्न**—वि० [स० सस्कारसम्पन्न] सस्कार युक्त। सुशिक्षित।

**सस्कारहीन**—वि० [स०] जिसका सस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

**सस्कारी**[1]—वि० [स० सस्कारिन्] जिसका सस्कार हुआ हो। अच्छे सस्कारवाला।

**सस्कारी**[2]—सज्ञा पुं० सोलह मात्राओ का एक छद।

**सस्कार्य**—वि०—[स०] १, सस्कार करने योग्य। २ जिसकी सफाई या सुधार करना हो। ३ प्रभाव डालने योग्य। जिसपर प्रभाव डाला जाय (को०)।

**सस्कृत**[1]—वि० [स०] १ सस्कार किया हुआ। शुद्ध किया हुआ। २ परिमार्जित। परिष्कृत। ३ धो माँजकर साफ किया हुआ। निखारा हुआ। ४ पकाया हुआ। सिझाया हुआ। ५ सुधारा हुआ। ठीक किया हुआ। दुरुस्त किया हुआ। ६ अच्छे रूप मे लाया हुआ। सँवारा हुआ। सजाया हुआ। आरास्ता। ७ जिसका उपनयन आदि सस्कार हुआ हो। ८ श्रेष्ठ। सर्वोत्तम (को०)। ९ अभिमत्रित। पुनीत किया हुआ।

**सस्कृत**[2]—सज्ञा स्त्री० भारतीय आर्यो की प्राचीन साहित्यिक भाषा। पुराने आर्यो की लिखने पढने की उच्च भाषा। देववाणी।

**विशेष**—विद्वानो की राय है कि वेदो (सहिताओ) की भाषा अत्यत प्राचीन है। यह सुदूर अतीत मे कभी बोलचाल की आर्यों की भाषा थी। जब उस भाषा मे परिवर्तन होने लगा और धीरे धीरे उसके समझनेवाले कम होने लगे, तब सहिताओ का सकलन हुआ। बाद मे यास्क ने निघटु आदि बनाकर उस मत्र-भाग की भाषा को विद्वानो मे सुरक्षित रखा। पीछे जो आर्य-भाषा प्रचलित होती गई, उसपर क्रमश द्रविड आदि आर्येतर भारतीय भाषाओ का प्रभाव पडता गया। अत इस प्रचलित या लौकिक आर्यभाषा को शुद्ध, व्यवस्थित और सुरक्षित रखने का इद्र, शाकल्य शाकटायन, पाणिनि आदि वैयाकरणो ने प्रयत्न किया। पाणिनि आदि वैयाकरणो ने दूर दूर तक फैले हुए यथासभव सब प्रयोगो और रूपो को ध्यान मे रखते हुए एक व्यापक आर्यभाषा का व्याकरणनिर्माण किया। यही 'भाषा या लौकिक सस्कृत कहलाई जो रूप स्थिर हो जाने के कारण साहित्य की सर्वमान्य भाषा हुई और अबतक चली आ रही है। लोगो की बोलचाल की भाषा मे अतर पडता रहा, पर यह सस्कृत ज्यो की त्यो रही

और विद्वानो तथा शिष्यो की परम्परा द्वारा अपने शुद्ध रूप मे व्यवहृत तथा प्रयुक्त होती चली आ रही है। आज भी उसमे साहित्य रचा जा रहा है और पत्र-पत्रिकाएँ आदि निकलती है बोलचाल की भाषाएँ पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि प्राकृतिक कहलाईं और यह सस्कार की हुई प्राचीन भाषा सस्कृत या अमरभाषा कहलाई।

सस्कृत[3]—सज्ञा पु० १ व्याकरण के नियमो द्वारा व्युत्पन्न शब्द। २ द्विजाति का वह व्यक्ति जिसका सस्कार हो गया हो। ३ विद्वान् पुरुष। ४ धार्मिक परम्परा। ५ बलि। आहुति [को०]।

सस्कृति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ शुद्धि। सफाई। २ सस्कार। सुधार। परिष्कार। ३ सजावट। आराइश। ४ रहन सहन आदि की रुढि। भीतर बाहर से सस्कार की गई—सभ्यता। शाइस्तगी। ५ पूर्ण करना। पूरा करना (को०)। ६ निर्णय। निश्चयन (को०)। ७ उद्योग। चेष्टा (को०)। ८ २८ वर्णों के वृत्तो की सज्ञा। ९ अग्रेजी 'कल्चर' शब्द के अनुवाद रूप मे प्रयुक्त शब्द।

सस्क्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सस्कार। सस्कृति। २ शुद्ध करना। मत्र आदि से पवित्र करना (को०)। ३ अत्येष्टि (को०)। ४ तैयार करना (को०)।

सस्खलन—सज्ञा पु० [स०] [वि० सस्खलित] १ च्युत होना। गिरना। २ भूल करना। चूकना।

सस्खलित[1]—वि० [स०] १ च्युत। गिरा हुआ। २ भूला हुआ। चूका हुआ।

संस्खलित[2]—सज्ञा पु० भूल चूक।

सस्तभ—सज्ञा पुं० [स० सस्तम्भ] १ गति का सहसा रोध। एकबारगी रुकावट। २ चेष्टा का अभाव। निश्चेष्टता। ठक हो जाना। हाथ पैर रुक जाना। ३ शरीर की गति का मारा जाना। लकवा। ४ दृढता। धीरता। ५ हठ। टेक। जिद। ६ आधार। टेक। सहारा।

सस्तभन—सज्ञा पुं० [स० सस्तम्भन] [वि० सस्तभित, सस्तब्ध] १ गति का सहसा रुकना या रोकना। एकबारगी ठहर जाना। २ निश्चेष्ट करना या होना। ठक कर देना या हो जाना। ३ बद करना। ४ सहारा देना। टेकना। ५ रोकनेवाली वस्तु। ६ सकुचित करना। समेट लेना (को०)।

सस्तभनीय—वि० [स० सस्तम्भनीय] १ दृढ करने योग्य। २ रोके जाने योग्य। ३ सहारा देने योग्य (को०)।

सस्तभित—वि० [सं० सस्तम्भित] १ जिसे सहारा दिया गया हो। २ स्तब्ध। निश्चेष्ट। ३ लकवा रोग से ग्रस्त [को०]।

सस्तभी—[स० सस्तम्भिन्] सस्तभ करने या रोकनेवाला। निवारण करनेवाला [को०]।

सस्तब्ध—वि० [स०] १ एकबारगी रुका या ठहरा हुआ। २ निश्चेष्ट। ठक। भोचक्का। ३ सहारा दिया हुआ। जिसे टेक या सहारा दिया हो।

सस्तर[1]—सज्ञा पु० [स०] १ तह। पर्त। पहल। २ घास फूस से बनाया हुआ आच्छादन। ३ घास फूस फैलाकर बनाया हुआ बिस्तर। तृण शय्या। ४ बिस्तर। शय्या। ५ बिखेरना। विकीर्णन (को०)। ६ बिकीर्ण पुष्पराशि। फैलाए हुए फूलो का समूह। ७ यज्ञ या यज्ञ आदि का आयोजन (को०)। ८ विधि, व्यवस्था या आचारादि का प्रचार (को०)।

सस्तर[2]—वि० छितराया हुआ। विकीर्ण किया हुआ।

सस्तरण—सज्ञा पुं० [स०] १ बिछाना। फैलाना। पसारना। २ छितराना। बिखेरना। ३ तह चढाना। परत फैलाना। ४ बिस्तर। शय्या।

सस्तव—सज्ञा पुं० [सं०] १ प्रशसा। स्तुति। तारीफ। २ जिक्र। कथन। उल्लेख। ३ परिचय। जान पहचान। मेल जोल।

सस्तवन—सज्ञा पु० [स०] [वि० सस्तवनीय, सस्तुत] १ स्तुति करना। प्रशसा करना। २ यश गाना। कीर्ति बखानना।

सस्तव प्रीति—सज्ञा स्त्री० [स०] सस्तव अर्थात् परिचय के कारण होनेवाली प्रीति [को०]।

सस्तवस्थिर—वि० [स०] परिचय वा घनिष्टता से दृढ [को०]।

सस्तवान[1]—वि० [स०] १ यश गान करनेवाला। स्तुति करनेवाला। २ वाग्मी। वाग्पटु [को०]।

सस्तवान[2]—सज्ञा पु० १ प्रसन्नता। आनद। २ गायक। गानेवाला। ३ उद्गाता [को०]।

सस्तार—सज्ञा पुं० [स०] तह। पहल। २ बिस्तर। शय्या। ३ एक यज्ञ का नाम। ४ विततिं। बिस्तार। वृद्धि (को०)।

सस्तारक—सज्ञा पुं० [स०] बिस्तर। शय्या [को०]।

सस्तार पक्ति—सज्ञा स्त्री० [स० सस्तार पङ्क्ति] एक वर्णवृत्ति जिसमे १२+८+८+१२ के योग के ४० वर्ण होते है [को०]।

सस्ताव—सज्ञा पु० [स०] १ यज्ञ मे स्तुति करनेवाले ब्राह्मणों की अवस्थान भूमि। २ स्तुति। प्रशसा। ३ परिचय। जान पहचान। ४ समिलित स्तवन या स्तुति (को०)।

सस्तीर्ण—वि० [स०] फैलाया हुआ। पसारा हुआ। बिछाया हुआ। २ बिखेरा हुआ। फैलाया हुआ। छितराया हुआ।

सस्तुत—वि० [सं०] १ जिसकी खूब स्तुति या प्रशसा की गई हो। २ परिचित। ज्ञात। ३ एक साथ गिना हुआ। गिनती मे शामिल किया हुआ। ४ समान। तुल्य। सामजस्य युक्त। ५ अभीष्ट। इच्छित (को०)। ६ जिसकी एक साथ या समिलित होकर स्तुति की गई हो (को०)।

सस्तुतक—वि० [स०] भद्र। शिष्ट। सभ्य [को०]।

सस्तुति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सम्यक् स्तुति। खूब प्रशसा। गहरी तारीफ। २ भावाभिव्यजन की एक आलकारिक पद्धति या शैली (को०)।

सस्तूप—सज्ञा पुं० [स०] घूर। कूडे कचरे का ढेर [को०]।

सस्तृत—वि० [स०] फैलाया या बिछाया हुआ। आच्छादित [को०]।

सस्त्यान[1]—वि० [स०] दृढ। जमा हुआ।

सस्त्यान[2]—सज्ञा स्त्री० वह जो स्थिर या दृढ हो। जैसे,—गर्भस्थ भ्रूण या गर्भ [को०]।

संस्त्याय—संज्ञा पुं० [सं०] १ संचय। राशि। ढेर। २ सन्निधि। सामीप्य। घनिष्टता। ३ प्रसार। विस्तार (को०)। ४. घर। आवास (को०)। ५ मित्रों का वार्तालाप (को०)।

संस्थ'—संज्ञा पुं० [सं०] १. निज देशवासी। स्वदेशवासी। अपने देश का। २. निवासी (को०)। ३ चर। दूत।

संस्थ'—वि० १. टिकाऊ। ठहरनेवाला। २ पालनकर्ता। धरेता। ३ स्थिर। अचल। २. विद्यमान। मौजूद। ५ मृत। नष्ट। ६ पूर्ण। अंत को प्राप्त। ७ व्यक्त (को०)।

संस्था—संज्ञा पुं० [सं०] १ ठहरने की क्रिया या भाव। ठहराव। स्थिति। २ व्यवस्था। बँधा नियम। विधि। मर्यादा। रूढ़ि। ३ प्रकट होने की क्रिया या भाव। अभिव्यक्ति। प्रकाश। ४ रूप। आकार। आकृति। ५ गुण। सिफत। ६ ठिकाने लगाना। ७ समाप्ति। अंत। खातमा। ८ जीवन का अंत। मृत्यु। ९ नाश। १० प्रलय। ११ यज्ञ का मुख्य अंग। १२ वध। हिंसा। १३ गुप्तचरों या भेदियों का वर्ग।

विशेष—इसके अंतर्गत पाँच प्रकार के दूत कहे गए हैं—वणिक्, भिक्षु, छात्र, सिद्धी (संप्रदायी) और कृषक।

१४ व्यवसाय। पेशा। १५ जत्था। गरोह। १६ समाज। मंडल। सभा। समिति। १७. राजाज्ञा। फरमान। १८. सादृश्य। समानता। १९ विराम। यति (को०)। २० शव के आग में जलने की आवाज या शव क्रिया (को०)। २१ सोमयज्ञ का एक प्रकार (को०)।

यौ०—संस्थाकृत = स्थिरीकृत। निर्धारित। ठहराया हुआ। संस्थाजप = यज्ञांत में किया जानेवाला जप।

संस्थागार—संज्ञा पुं० [सं०] वह भवन या कक्ष जहाँ सभा आदि की जाय (को०)।

संस्थाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यापार का निरीक्षक। व्यापाराध्यक्ष।

विशेष—कौटिल्य के अनुसार इसका मुख्य काम गिरवी रखे जानेवाले माल का तथा पुरानी चीजों का विक्रय करवाना था। तौल माप का निरीक्षण भी यही करता था। चंद्रगुप्त के समय से तुला द्वारा तौलने में यदि दो तोले का फरक पड़ जाता तो बनिए पर छह पण जुर्माना किया जाता था। क्रय विक्रय संबंधी राजनियमों को जो लोग तोड़ते थे, उनको भी दंड यही देता था। भिन्न भिन्न पदार्थों पर कितनी चुंगी लगे कौन कौन सा माल बिना चुंगी दिए शहर में जाय, इन संपूर्ण बातों का प्रबंध भी यही करता था। पदार्थों की कीमतें भी यही नियत करता था। सरकारी पदार्थों का विक्रय भी यही करवाता था और उनके विक्रय के लिये नौकर भी रखता था, इत्यादि।

२ किसी समाज, समिति या संस्था का प्रधान व्यक्ति।

संस्थान'—संज्ञा पुं० [सं०] १ ठहरने की क्रिया या भाव। ठहराव। स्थिति। २. खड़ा रहना। डटा रहना। जमा रहना। ३. संनिवेश। बैठाना। स्थापन। विन्यास। ४. अस्तित्व। जीवन। ५ सम्यक् पालन। पूरा अनुसरण। पूरी पैरवी। ६ ठहरने या रहने की जगह। डेरा। घर। ७ बस्ती। जनपद। ८ सार्वजनिक स्थान। सर्वसाधारण के इकट्ठे होने की जगह। ९. रूप। आकृति। शरीर। १०. कांति। सौंदर्य। ११ प्रकृति। स्वभाव। १२ योग का लक्षण। १३ अवस्था। दशा। हालत। १४. मूल तत्वों की समष्टि। योग। जोड़। १५ ठिकाने लगाना। समाप्ति। अंत। खातमा। १६ नाश। मृत्यु। १७ रचना। बनावट। निर्माण। १८ पड़ोस। सामीप्य। निकटता। १९ चौमुहानी। चौरास्ता। चौराहा। २० आयोजन। प्रबंध। व्यवस्था। ढोंग। २१ ढाँचा। चौखटा। २२ साँचा। ढाँचा। ढोंग। खाका। २३ राशि। समूह। संचय। ढेर (को०)। २४ उद्योग, व्यापार, साहित्य आदि के विभिन्न अंगों की उन्नति के लिये स्थापित मंडल या संस्था। २५ भाग। हिस्सा। खंड (को०)। २६ चिह्न। निशान। विशेष चिह्न (को०)।

संस्थान'—वि० १ स्थावर। २ सदृश। समान (को०)।

संस्थापक—संज्ञा पुं० [सं०] (स्त्री० संस्थापिका) १ खड़ा करनेवाला। स्थापित करनेवाला। २ उठानेवाला। (भवन आदि)। ३. कोई नई बात चलानेवाला। जारी करनेवाला। प्रवर्त्तक। ४ कोई सभा, समाज या सर्वसाधारण के उपयोगी कार्य चलानेवाला। ५ नित्र खिलौने आदि बनानेवाला। ६ रूप या आकार देनेवाला।

संस्थापन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संस्थापनीय, संस्थापित, संस्थाप्य] १ खड़ा करना। उठाना। निर्मित करना। (भवन आदि)। २ स्थित करना। जमाना। बैठाना। ३ कोई नई बात चलाना। नया काम जारी करना। नया काम योजना। ४. रूप या आकार देना। ६ एक साथ करना। एकत्र करना। संचयन करना (को०)। ७ निर्णीत करना। निश्चित करना (को०)। ८ नियंत्रित करना। प्रतिबंधित करना (को०)। ९ नियम। विधि (को०)।

संस्थापना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रोकना। नियंत्रण। प्रतिबंध। २ शांत या स्थिर करने के उपाय। ३ दे० 'संस्थापना' (को०)।

संस्थापनीय—वि० [सं०] संस्थापन के योग्य।

संस्थापित—वि० [सं०] १ उठाया हुआ। खड़ा किया हुआ। निर्मित। २. जमाया हुआ। बैठाया हुआ। स्थित किया हुआ। प्रतिष्ठित। ३ जारी किया हुआ। चलाया हुआ। ४ संचित। बटोरा हुआ। ५ ढेर लगाया हुआ। ६ नियंत्रित। प्रतिबंधित। रोका हुआ (को०)।

संस्थाप्य—वि० [सं०] १ संस्थापन के योग्य। २ जिसका संस्थापन करना हो। ३ पूर्ण या समाप्त करने योग्य। जैसे, यज्ञ आदि (को०)। ४ शांतिप्रदायक बलिप्रयोग द्वारा चिकित्सा करने लायक (को०)।

संस्थित'—वि० [सं०] १ खड़ा। उठाया हुआ। २ ठहरा हुआ। टिका हुआ। ३ बैठा हुआ। जमा हुआ। दृढ़ता से खड़ा हुआ। ४ रूप में आया हुआ। निर्मित। ५ ठिकाने लगाया हुआ। ६

समाप्त। खतम। ७ मृत। मरा हुआ। ८ ढेर लगाया हुआ। बटोरा हुआ। ९ मिलता जुलता। समान (को०) १० अदर रखा हुआ। अतर्वर्ती (को०)। ११ लगा हुआ। आसक्त (को०)। १२ प्रस्थान किया हुआ (को०)। १३ (भोजन आदि) अधिक समय से पडा हुआ (को०)। १४ आधृत। आधारित (को०)। १५ टिकाऊ (को०)। १६ भावी (को०)। १७ दक्ष। कुशल (को०)।

**संस्थिति**[१]—संज्ञा पुं० १ आचरण। २ आकृति (को०)।

**संस्थिति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ खडे होने की क्रिया या भाव। २ ठहराव। जमाव। ३ बैठने की क्रिया या भाव। ४ एक अवस्था मे रहने का भाव। ज्यो का त्यो रहने का भाव। ५ दृढता। धीरता। ६ अस्तित्व। हस्ती। ७ रूप। आकृति। सूरत। ८ व्यवस्था। तरतीब। ९ गुण। सिफत। १० प्रकृति। स्वभाव। ११ समाप्ति। खातमा (विशेषत यज्ञादि के लिये)। १२ मृत्यु। मरण। १३ काष्ठबद्धता। कब्जियत। १४ राशि। ढेर। अटाला। १५ सामीप्य। आसन्नता (को०)। १६ निवास स्थान। आवासस्थल (को०)। १७ शोक। प्रतिग्रह (को०)। १८ अवधि। कालावधि (को०)। १९ प्रलय (को०)।

**संस्पर्द्धा, संस्पर्धा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी के बराबर होने की प्रबल इच्छा। बराबरी की चाह। २ ईर्ष्या। डाह।

**संस्पर्द्धी, संस्पर्धी**—वि० [स० संस्पर्द्धिन् संस्पर्धिन्] [स्त्री० संस्पर्द्धिनी] १ बराबरी की इच्छा करनेवाला। २ ईर्ष्यालु।

**संस्पर्श**—सज्ञा पुं० [स०] १ अच्छी तरह छू जाने का भाव। एक के अग का दूसरे से लगना।

विशेष—धर्मशास्त्रो मे कुछ लोगो का संस्पर्श होने पर द्विजातियो के लिये प्रायश्चित्त का विधान है। यह संस्पर्शदोष शरीर के छू जाने, आलाप, निश्वास, सहभोजन तथा एक शय्या पर बैठने या सोने से कहा गया है।

२ घनिष्ठ सबध। गहरा लगाव। ३ मिलाप। मेल। ४ मिलावट। मिश्रण। ५ इद्रियो का विषय ग्रहण। ६ थोडा सा आविर्भाव। कुछ प्रभाव।

**संस्पर्शन**—सज्ञा पुं० [स०] [वि० संस्पर्शनीय, संस्पृष्ट] १ छूना। अग से अग लगना। २ मिलना। सटना। ३ मिश्रण।

**संस्पर्शी**—सज्ञा स्त्री० [स०] जनी नामक गध द्रव्य।

**संस्पर्शी**[१]—वि० [स० संस्पर्शिन्] सपर्क मे आनेवाला। स्पर्श करनेवाला। छूनेवाला।

**संस्पर्शी**[२]—सज्ञा पुं० जनी नामक गध युक्त पौधा (को०)।

**संस्पृष्ट**—वि० [सं०] १ छूआ हुआ। २ सटा हुआ। लगा हुआ। मिला हुआ। ३ जुडा हुआ। परस्पर सबद्ध। ४ पास ही पडता हुआ। जो निकट ही हो। ५ लेश मात्र प्रभावित। जिसपर बहुत कम असर पडा हो। ६ प्राप्त (को०)।

**संस्पृष्टमैथुना**—सज्ञा स्त्री० [स०] वह लडकी जिसे बरगलाया गया हो या जिसे मैथुन का परिचय मिल गया हो। भ्रष्ट।

विशेष—ऐसी लडकी को विवाह के अयोग्य माना गया है।

**संस्फाल**—सज्ञा पुं० [सं०] १ मेढ। मेष। २ मेघ। बादल (को०)।

**संस्फुट**—वि० [स०] १ अच्छी तरह फूटा या खुल पडा हुआ। २ अच्छी तरह खिला हुआ। विकसित। ३ सुस्पष्ट।

**संस्फेट**—सज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। लडाई।

**संस्फोट**—सज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संस्फोटि] युद्ध। लडाई।

**संस्मरण**—सज्ञा पुं० [स०] [वि० संस्मरणीय, संस्मृत] १ पूर्ण स्मरण। खूब याद। २ अच्छी तरह सुमिरना या नाम लेना। ३ संस्कारजन्य ज्ञान। ४ किसी व्यक्ति या विषय आदि की स्मृति का आधार बनाकर उसके सबध मे लिखा हुआ वह लेख जिसमे उसकी विशिष्टताओ का आकलन हो सके।

**संस्मरणीय**—वि० [सं०] १ पूर्ण स्मरण करने योग्य। २ नाम जपने योग्य। ३ महत्व का। न भूलनेवाला। जिसकी याद बराबर बनी रहे। ४ जिनका स्मरण मात्र रह गया हो। अतीत।

**संस्मारक**[१]—सज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संस्मारिका] १ वह जो स्मरण कराता हो। स्मरण करानेवाला। याद दिलानेवाला। २ वह निर्माण या वस्तु जो व्यक्ति, स्थिति या कार्यविशेष की स्मृति बनाया गया हो। स्मारक।

**संस्मारक**[१]—वि० स्मरण करानेवाला।

**संस्मरण**—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० संस्मारित] १ स्मरण करना। याद दिलाना। २ गिनती करना। गिनना (चौपायो के विषय मे)।

**संस्मारित**—वि० [स०] १ याद दिलाया हुआ। स्मरण कराया हुआ। २ ध्यान मे लाया हुआ। याद किया हुआ।

**संस्मृत**—वि० [स०] १ स्मरण किया हुआ। याद किया हुआ। २ अभिहित। कथित (को०)। ३ आज्ञप्त। आदिष्ट (को०)।

**संस्मृति**—सज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्ण स्मृति। पूरी याद।

**संस्यूत**—वि० [स०] १ अभेद्य रूप मे अच्छी तरह एक मे मिला हुआ। २ सिला हुआ। नत्थी किया हुआ। ३ अनुस्यूत। ओतप्रोत (को०)।

**संस्रव**—सज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संस्रवा] १ एक साथ बहना। २ पूरा बहाव, प्रवाह या धारा। ३ बहती हुई वस्तु। ४ बहता हुआ जल। ५ एक प्रकार का पिंडदान। ६ किसी वस्तु का नीचा हुआ अश। उखडा हुआ छिलका। ७ चूना। गिरना। झरना। रसना।

**संस्रवण**—सज्ञा पुं० [स०] १ बहना। प्रवाहित होना। २ चूना। झरना। गिरना।

यौ०—गर्भस्रवण = गर्भपात। गर्भस्राव।

**संस्रष्टा**—सज्ञा पुं० [स० संस्रष्टृ] [स्त्री० संस्रष्ट्री] १ आयोजन करनेवाला। २ मिलाने जुलानेवाला। मिश्रण करनेवाला। ३ रचनेवाला। बनानेवाला। निर्माता। ४ भाग लेनेवाला। सहयोग देनेवाला (को०)। ५ भिडनेवाला। लडाई मे जुटनेवाला।

सस्राव--सज्ञा पु० [स०] १ वहाव। प्रवाह। २ मवाद का इकट्ठा होना। (सुश्रुत)। ३ किसी द्रव पदार्थ के नीचे जमा हुआ पदार्थ। तलछट। ४ एक प्रकार का पिंडदान। सस्रव (को०)।

सस्रावण--सज्ञा पु० [स०] [वि० सस्राव्य] १ वहाना। प्रवाहित करना। २ वहना। प्रवाहित होना। ३ झरना। चूना टपकना।

सस्रावित--वि० [स०] १ वहाया हुआ। २ वहा हुआ। ३ झरा हुआ। ४ टपका हुआ।

सस्राव्य--वि० [स०] १ वहाने या टपकाने योग्य। २ जिसे वहाना या टपकाना हो।

सस्वार--सज्ञा पु० [स०] एक साथ स्वर निकालना। समवेत रूपेण शब्द करना [को०]।

सस्वेद--सज्ञा पु० [स०] स्वेद। पसीना।

सस्वेदज--वि० [स०] पसीने से उत्पन्न (कृमि आदि)।

सस्वेदी--वि० [स० स्स्वेदिन्] जिसके शरीर से स्वेद या पसीना वह रहा है।

सहता--सज्ञा पुं० [स० सहन्तृ] [स्त्री० सहत्री] १ वध करनेवाला। मारनेवाला। २ सहत करनेवाला। सवद्ध करनेवाला।

सहत[1]--वि० [स०] १ खूब मिला। जुटा या सटा हुआ। विल्कुल लगा हुआ। पूर्ण सवद्ध। २ एक हुआ। एक मे मिला हुआ। ३ सयुक्त। सहित। ४ जो मिलकर ठोस हो गया हो। मिलकर खूब बैठा हुआ। कडा। सख्त। ५ जो विरल या झीना न हो। गठा हुआ। घना। ६ दृढाग। मजबूत। दृढ। ७ एकत्र। इकट्ठा। ८ मिश्रित। मिला हुआ। ९ एक मत (को०)। १० अवरुद्ध। वद (को०)। ११ चोट खाया हुआ। आहत। घायल।

यौ०--सहतकुलीन। सहतजानु। सहततल = अजुलिवद्ध (हाथ)। जिसकी दोनो अँजुरिया मिली हुई हो। सहतपत्रिका। सहतवल = सुगठित सैन्य। सगठित सेना। सहतभू = जिसकी भौंह परस्पर मिली हो। एक मे मिली हुई भौंहोवाला। कुचित भ्रू वाला। सहतमूर्ति = जिसकी शरीराकृति हृष्ट पुष्ट हो। दृढ शरीरवाला। सहतस्तनी = पुष्ट और घने या अविरल स्तनोवाली। सहतहस्त = हाथ से हाथ मिलाए हुए।

सहत[2]--सज्ञा पु० नृत्य मे एक प्रकार की मुद्रा।

सहतकुलीन--वि० [स०] सम्मिलित परिवार का अथवा ऐसे कुटुव का जो निकटतम सवधी हो।

सहतजानु, सहतजानुक--सज्ञा पु० [स०] १ वह जिसने घुटने मिलाए हुए हो। वह जिसने दोनो घुटने सटाए हो। २ बैठने की एक मुद्रा। ३ वह जिसके घुटने चलने मे परस्पर टकराते हो। लग्नजानुक (को०)।

सहतता--सज्ञा स्त्री० [स०] १ घना सपर्क, श्लेप, लगाव या मेल। २. निविडता। सपृक्तता। परस्पर सपृक्त होना। साद्रता। ३ ऐक्य। सहमति। एकता। ४ सौमनस्य। अविरोधिता [को०]।

सहतत्व--सज्ञा पुं० [स०] सहत होने की क्रिया, स्थिति या भाव। सहतता [को०]।

सहतपत्रिका--सज्ञा स्त्री० [स०] सोआ। शतपुष्पा।

सहतल--सज्ञा पु० [स०] १ अजलि। अँजुरी। २ दोहत्थल। दोहत्थड [को०]।

सहताग--वि० [स० सहताङ्ग] १ दृढाग। हृष्ट पुष्ट। मजबूत। २ परस्पर सपृक्त या मिला हुआ (को०)।

सहताजलि--वि० [स० सहताञ्जलि] जो हाथ जोडे हो। कर वद्ध।

सहताख्य--वि० [स०] पवमान नामक अग्नि।

सहति--सज्ञा स्त्री० [स०] मिलाव। मेल। २ जुटाव। वटोर। इकट्ठा होने का भाव। ३ राशि। ढेर। अटाला। ४ समूह। झुड। ५ परस्पर मिलकर ठोस होने का भाव। निविड सयोग। गठन। ठोसपन। घनत्व। ६ सधि। जोड। ७ शरीर। देह। जिस्म (को०)। ८ शक्ति। ताकत। वल (को०)। ९ सयुक्त यत्न। सामूहिक चेष्टा (को०)। १० परमाणु का परस्पर मेल।

सहतिशाली--वि० [स० सहतिशालिन्] घन। ठोस। दृढ [को०]।

सहतिपुष्पिका--सज्ञा स्त्री० [स०] सोआ। शतपुष्पा।

सहनन[1]--सज्ञा पु० [स०] १ सहत करना। एक मे मिलाना। जोडना। २ खूब मिलाकर घना या ठोस करना। ३ वध। मार डालना। ४ सयोग। मेल। मिलावट। ५ कडाई। ६ पुष्टता। मजबूती। वलिष्ठता। ७ मेल। मुआफिकत। सामजस्य। अनुकूलता। ८ शरीर। देह। ९ कवच। वक्तर। वर्म। १० शरीर का मर्दन। मालिश।

सहनन[2]--वि० १ हता। हनन करनेवाला। विनाशक। २ ठोस। दृढ। ३ मजवूत या दृढ करनेवाला। ४ एक दूसरे से टकरानेवाला [को०]।

सहननीय--वि० [स०] १ दृढ। मजबूत। मिला हुआ। २ जो सहनन के योग्य हो [को०]।

सहरण--सज्ञा पुं० [स०] १ एक साथ करना। वटोरना। एकत्र करना। सग्रह करना। २ एक साथ बाँधना। गूँथना (केशो का)। ३ जबरदस्ती ले लेना। छीनना। ४ लौटा लेना। जैसे, अभिमत्रित अस्त्र या माया आदि। समेटना। सकुचित करना (को०)। ५ अवरोध करना। रोकना। ६ सहार करना। नाश करना। ध्वस करना। ७ प्रलय।

सहरना(यू)[1]--क्रि० अ० [स० सहार] नष्ट होना। सहार होना।

सहरना(यू)[2]--क्रि० स० [स० सहारण] सहार करना। ध्वस करना। उ०--सुरनायक सो सहरी परम पापिनी वाम।--केशव (शब्द०)।

सहर्तव्य--वि० [स०] १ सहरण के योग्य या जिसका सहरण किया जाय। २ एकत्र करने योग्य। ३ पहले जैसा करने योग्य। वापस करने लायक [को०]।

सहर्त्ता—वि० सञ्ज्ञा पुं० [सं० सहर्तृ] [वी० सहर्त्री] १ इकट्ठा करनेवाला। बटोरने या समेटनेवाला। एकत्र करनेवाला। २ नाश करनेवाला। ३ वध करनेवाला। मारनेवाला।

सहर्ष—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ उमंग से रोओं का खड़ा होना। पुलक। उमंग। २ भय से रोंगटे खड़े होना। ३ चढ़ा ऊपरी। एक दूसरे से बढ़ने की चाह। स्पर्द्धा। लाग डाँट। होड़। ४ ईर्ष्या। डाह। ५ वायु। हवा (को०)। ६ प्रसन्नता। आनंद। हर्ष (को०)। ७ काम का वेग। कामोत्तेजना (को०)। ८ संघर्ष। रगड़। ९ मर्दन। शरीर की मालिश।

सहर्षण'—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [वि० सहर्षित, सहृष्ट] १ पुलकित होना। २ स्पर्द्धा। लाग डाँट। चढ़ा ऊपरी।

सहर्षण'—वि० [वि० स्त्री० सहर्षिणी] पुलकित करनेवाला। आनंद से प्रफुल्लित करनेवाला।

सहर्षा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] पित्तपापड़ा। पर्पटक। शाहतरा।

सहर्षित—वि० [सं०] पुलकित। रोमांचित।

सहर्षी—वि० [सं० सहर्षिन्] [वि० स्त्री० सहर्षिणी] १ पुलकित होनेवाला। २ पुलकित करनेवाला। ३ स्पर्द्धा या ईर्ष्या करनेवाला।

सहवन—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ चार मकानों का चौकोर समूह। २ साथ मिलकर हवन करना। ३ उचित या ठीक ढंग से यज्ञादि करना। यथोचित रीति या सरणि से यज्ञ करना (को०)।

संहात—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ संघात। समूह। जमावड़ा। वि० दे० 'संघात'। २ एक नरक का नाम। ३ शिव के एक गण का नाम।

सहात्य—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] समझौते की शर्तों का परित्याग। संधि की शर्तों को न मानना या भंग करना (को०)।

सहार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ एक साथ करना। इकट्ठा करना। समेटना। २ संग्रह। संचय। ३ संकोच। आकुंचन। सिकुड़ना। ४ समेटकर बाँधना। गूँथना (केशों का)। जैसे, वेश-संहार। ५ छोड़े हुए बाण को फिर वापस लेना। ६ खुलासा। सार। संक्षेप करण। ७ नाश। ध्वंस। ८ समाप्ति। अंत। खात्मा। जैसे,—रूपक के किसी अंक या रूपक का। काव्य-संहार। ९ कल्पांत। प्रलय। १० एक नरक का नाम। ११ कौशल। निपुणता। १२ व्यर्थ करने का क्रिया। निवारण। परिहार। रोक। जैसे,—किसी अस्त्र का संहार। १३ उच्चारण संबंधी एक दोष (को०)। १४ झुंड। समूह (को०)। १५ अभ्यास। निरंतर प्रवृत्ति (को०)। १६ भीतर की ओर करना। अंदर करना। सिकोड़ना। जैसे,—हाथी द्वारा अपनी सूँड़ (को०)। १७ संहारक। संहर्ता (को०)। १८ एक असुर (को०)।

संहारक—वि०, सञ्ज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संहारिका] १ संहार करनेवाला। संहर्ता। नाशक। २ संकोचन करनेवाला। संक्षिप्तकर्ता (को०)। ३ संग्रहकर्ता। एकत्र करनेवाला।

संहारकारी—वि० [सं० संहारकारिन्] [वि० स्त्री० संहारकारिणी] संहार या नाश करनेवाला।

संहारकाल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] विश्व के नाश का समय। प्रलयकाल। उ०—बड़ा बलिष्ठ खर का संहारक आयो। संहार काल जनु काल हरण को आयो।—केशव (शब्द०)।

संहारना—क्रि० स० [सं० संहरण] १ मार डालना। उ०—आहि धनुष रावन संहारा। भेलि धनुष जानकी भारा। —जायसी (शब्द०)। २ नाश करना। ध्वंस करना।

संहार भैरव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] भैरव के आठ रूप या मूर्तियों में से एक। कालभैरव।

संहार मुद्रा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] तांत्रिक पूजन में अंगों की एक प्रकार की स्थिति, जिसे विसर्जन मुद्रा भी कहते हैं।

संहारिक—वि० [सं०] सब कुछ संहार करनेवाला।

संहारी—वि० [सं० संहारिन्] नाश करनेवाला। विनाश करनेवाला। संहार करनेवाला (को०)।

संहार्य—वि० [सं०] १ समेटने या बटोरने योग्य। संग्रह करने योग्य। इकट्ठा करने लायक। २ एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर करने योग्य। हटाने लायक। ले जाने लायक। ३ जिसे ले जाना हो। ४ रोकने योग्य। निवारण या परिहार के योग्य। ५ जिसे रोकना हो। जिसका निवारण या परिहार करना हो। ६ खुलाने या अलग करने योग्य। ७ जिसका किसी पर हक या अधिकार हो (को०)।

संहित—वि० [सं०] १ एक साथ किया हुआ। एकत्र किया हुआ। बटोरा हुआ। समेटा हुआ। २ संमिलित। मिलाया हुआ। ३ जुड़ा हुआ। लगा हुआ। संबद्ध। ४ संयुक्त। सहित। अन्वित। पूर्ण। ५ मेल में आया हुआ। हेल मेलवाला। मेली। ६ क्रम या परंपरागत संबंध या लगाव रखनेवाला। ७ चढ़ाया हुआ। संधान के लिये जो धनुष पर चढ़ाया गया हो (को०)। ८ अनुकूल (को०)। ९ उचित। निमित्त (को०)।

संहित पुष्पिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ मोगा नाम का साग। २ धनिया।

संहिता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ मेल। मिलावट। संयोग। २ पाणिनि व्याकरण का एक पारिभाषिक शब्द जिसके अनुसार दो वर्णों का परस्पर अत्यंत (परम) सन्निकर्ष होता है। संधि। ३ ऋग्वेदादि चारों वेदों के मंत्रों का संकलन और उसकी वह विशेष रीति का (जिसमें व्याकरण अनुसारी संधि की गई हो) पाठ। वह ग्रंथ जिसमें पदपाठ आदि का क्रम नियमानुसार रखा गया हो। कोई ग्रंथ जिसका पाठ प्राचीन काल में गृहीत रखा गया हो। जैसे—मनु, अत्रि आदि की धर्मसंहिताएँ या स्मृतियाँ।

विशेष—स्मृति या धर्मशास्त्र संबंधी १९ संहिताएँ कही जाती हैं जिनमें मनु, अत्रि, विष्णु, हारीत, याज्ञवल्क्य, बृहस्पति, नारद, पराशर, व्यास, दक्ष, गौतम आदि प्रसिद्ध हैं। रामायण को भी कभी कभी संहिता कह देते हैं। वेदव्यास कृत एक 'पुराण संहिता' का भी उल्लेख मिलता है (दे० 'पुराण')। इसके अतिरिक्त और विषयों के ग्रंथ भी संहिता कहे जाते हैं। जैसे—भृगुसंहिता (फलित ज्योतिष), गर्गसंहिता (कृष्ण की कथा) आदि।

४ सकलन। सग्रह। सचय (को०)। ५ नियमानुसार विशिष्ट रूप मे क्रमबद्ध गद्य पद्य आदि का सग्रह (को०)। ६ ससार का भरणपोषण करनेवाली परम शक्ति (को०)। ७ वेदो का मत्र भाग। मुख्य वेद। विशेष दे० 'वेद'।

यौ०—सहिताकार=सहिता का रचयिता। सहितापाठ=वेद के मत्रो का सुव्यवस्थित क्रम।

सहिति—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक साथ रखना। लगाव या सपर्क-स्थापन (को०)।

सहूति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शोर। हल्ला। २ एक साथ पुकारना। एक साथ चिल्लाना (को०)।

सहृत—वि० [स०] एकत्र किया हुआ। समेटा हुआ। २ सगृहीत। जुटाया हुआ। ३ नष्ट। ध्वस्त। ४ समाप्त। खत्म। ५ निवारित। रोका हुआ। ६ जिसे सक्षिप्त किया गया हो। सकुचित (को०)। ७ अपहृत (को०)।

सहृति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बटोरने या समेटने की क्रिया। २ सग्रह। जुटाव। ३ नाश। ध्वस। ४ प्रलय। ५ अत। समाप्ति। ६ रोक। परिहार। ७ सक्षेप। खुलासा। ८ ग्रहण। धारण (को०)। ९ हरण। छीनना। लूट खसोट।

सहृषित—वि [स०] १ पुलकित। रोमाचित। सहर्षित। २ भय के कारण जड या निश्चेष्ट (को०)।

सहृष्ट—वि० [स०] १ अचित। खडा (रोम)। २ जिसके रोएँ उमग से खडे हो। पुलकित। प्रफुल्ल। ३ जिसके रोगटे डर से खडे हो। डरा हुआ। भीत। ४ प्रतिस्पर्धा के कारण दीप्त (को०)। ५ प्रज्वलित। जलता हुआ। प्रदीप्त (अग्नि)।

यौ०—सहृष्टमना=प्रसन्नमना। हर्षित हृदय। सहृष्टरोमाग, सहृष्टरोमा=प्रसन्नता के कारण जिसके शरीर के रोएँ खडे हो। सहृष्टवत्=प्रसन्नता या उल्लासपूर्वक। सहृष्टवदन=जिसका चेहरा प्रसन्नता से खिल या दमक रहा हो।

सहृष्टो—वि० [स० सहृष्टिन्] उत्तेजित। उत्थित। खडा। जैसे—पुरुष की जननेंद्रिय (को०)।

सह्राद—सज्ञा पुं० [स०] १ ऊँचा स्वर। चीख। २ एक असुर जो हिरण्यकशिपु का पुत्र था। ३ शोर। कोलाहल।

सह्रादन—सज्ञा पुं० [स०] चिल्लाना। कोलाहल करना। शोर मचाना। चीखना।

सह्रीण—वि० [स०] १ पूर्णतया लज्जित या शर्मिदा। २ सकोचशील। सलज्ज (को०)।

सह्लाद—पज्ञा पुं० [सं०] १ आनद विशेष। २ दे० 'सह्राद' (को०)।

सह्लादी—वि [सं० सह्लादिन्] प्रसन्नता से भरा हुआ। प्रफुल्ल। हर्षित। आनदयुक्त (को०)।

सँइतना†—क्रि० स० [स० सञ्चय] १ लीपना। पोतना। चौका लगाना। २ सचय करना। ३ सुरक्षित रखना। ठिकाने से रखना। सहेजकर रखना। ४ यह देखना कि जितना और जैसा चाहिए, उतना और वैसा है या नही। सहेजना।



सउपना ⑤†‡—क्रि० स० [स० समर्पण, प्रा० समप्पण, हि० सौंपना] दे० 'सौंपना'।

सँकरा†'—वि० [स० सङ्कीर्ण] [वि० स्त्री० सँकरी] जो अधिक चौडा या विस्तृत न हो। पतला और तग। जैसे,—सँकरा रास्ता।

सँकरा²—पज्ञा पु० कष्ट। दुख। विपत्ति।

मुहा०—सँकरे मे पडना=दुख मे पडना। कष्ट मे पडना।

सँकरा ⑤†³—पज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला] शृखला। साँकल। सीकट। जजीर। उ०—घुँघरवार अलकै विष भरे। सँकरे प्रेम चहुँ गये परे।—जायसी (शब्द०)।

सँकरा⁴—सज्ञा पुं० [स० शङ्कराभरण] एक राग। दे० 'शकराभरण'।

सँकराना'—क्रि० स० [हि० सँकरा+आना (प्रत्य०)] १ सकुचित करना। तग करना। २ बद करना।

सँकराना†²—क्रि० अ० सकुचित या सकीर्ण होना। जैसे,—यह रास्ता आगे चलकर सँकरा गया है।

सँकलपना ⑤†—क्रि० अ० [स० सङ्कल्प] सकल्प करना। त्याग करना। छोड देना। उ०—सुख सँकलपि दुख साँवर लीन्हेउँ।—पदमावत, पृ० १३७।

सँकाना ⑤†—क्रि० अ० [सं० शङ्क] शकित होना। भीत होना। डरना। उ०—मुँह मिठान दृग चीकने, भौंह सरल सुभाय। तऊ खरे आदर खरौ, छिन छिन हियौ सँकाय।—बिहारी (शब्द०)।

सँकारा ⑤—सज्ञा पुं० [सं० सकाल] प्रात काल। उषा काल। उ०—वहै पुकारहिं साँझ सकारा।—पदमावत, पृ० १०८।

सँकुचना—क्रि० अ० [हि० सकुचना] सकुचित होना। दे० 'सकुचना'

सँकुचाना—क्रि० अ० [हि० सकुचाना] दे० 'सकुचाना'।

सँकेत†—वि० [हि०] १ दे० 'सँकरा'। २ दे० 'सकेत'।

सँकेतना'—क्रि० स० [स० सङ्कीर्ण] सकट मे डालना। कष्ट मे डालना। आपत्ति मे डालना। उ०—भएउ चेन, चेतन चित चेता। नैन झरोखे जीव सँकेता।—जायसी (शब्द०)।

सकेतना ⑤†²—क्रि० अ० सकीर्ण होना। सकुचित होना। मुँदना। उ०—कवल सँकेता कुमुदिनि फूली। चकई बिछुरि अचक मन भूली।—पदमावत, पृ० ५४२।

सँकेलना†—क्रि० स० [स० सँङ्कुट] बीचकर एकत्र करना। समेटना। उ०—मानहु तिमिर अरुनमय रासी। बिरची बिधि सँकेलि सुषमा सी।—मानस, २।२३९। (ख) आएउ इहाँ समाज सँकेली।—मानस, २।२९७।

सँकोच—सज्ञा पु० [स० सङ्कोच] दे० 'सकोच'। उ०—नीच कीच बिच मगन जस मीनहि सलिल सँकोच।—मानस, २।२५१।

सँकोचना'—क्रि० स० [सं० सङ्कोच] सकुचित करना। सकोच करना। उ०—नींद न परनि राति प्रेम पनु एक भाँति सोचत सँकोचत बिरचि हरि हर कै।—तुलसी (शब्द०)।

सँकोचना²—क्रि० अ० सकुचित होना।

सँझवाती घनसार नीर चदन सो वारि लीजियत न अनल चहियतु है।—हृदयराम (शब्द०)। २ वह गीत जो सध्या समय गाया जाता है। प्राय यह विवाह के अवसर पर होता है।

सँझवाती[2]—वि० सध्या सबधी। सध्या का।

सँझिया, सँझैया—सज्ञा पुं० [स० सन्ध्या] वह भोजन जो सध्या के समय किया जाता है। रात्रि का भोजन।

सँझोखा—सज्ञा पु० [स० सन्ध्या] दे० 'सँझोखे'।

सँझोखे ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० सन्ध्या] सध्या का समय। शाम का वक्त। उ०—गोप अथाइनि ते उठे गोरज छाई गैल। चलि चलि अलि अभिसारिके भली सझोखे सैल।—बिहारी (शब्द०)।

सँझौती‡—सज्ञा स्त्री०, वि० [हिं० सझा+औती (प्रत्य०) दे० 'सँझवाती'।

सँटिया—सज्ञा स्त्री० [देश०] बाँस की लबी पतली छडी। साँटी। पतला बेत या छड़ी। उ०—सँटिया लिए हाथ नँदरानी थरथरात रिस गात।—सूर०, १०।३४१।

सँठ[1]—सज्ञा पुं० [स० शान्त] शाति। निस्तब्धता। खामोशी।

मुहा०—सँठ मारना=चुपकी साधना। चुप रहना। कुछ न बोलना। न बोलना।

सँठ[2]—सज्ञा पुं० [स० शठ] १ शठ। धूर्त। २ नीच। बाहियात।

सँड़सा—सज्ञा पु० [स० सन्दश] [स्त्री० अल्पा० सडसी] लोहे का एक औजार जो दो छडो से बनता है। गहुआ। जबूरा।

विशेष—इसके एक सिरे पर थोडा सा छोडकर दोनो छडो को आपस मे कील से जड देते है। प्राय इसे लोहार गरम लोहा आदि पकडने के लिये रखते है।

सँड़सी—सज्ञा स्त्री० [स० सन्दश] पतले छडो का एक प्रकार का सँडसा। जँबूरी।

विशेष—इसके दोनो छडो का अगला भाग अर्ध वृत्ताकार मुडा हुआ होता है। इसमे पकडकर प्राय चूल्हे पर से गरम बटुली आदि गोल मुँहवाले बरतन उतारते है।

सँडाई†—सज्ञा स्त्री० [हिं० साँड] दे० 'सडाई'।

सँडास ⓤ†—सज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सँडासी'।

सँड़ास[2]—सज्ञा स्त्री० [हिं०] सँडी हुई वस्तु की गध। सँडाँध।

सँड़ासी†—सज्ञा स्त्री० [स० सन्दशिका] दे० 'सँडसी'। उ०—खिन खिन जीव सँडासिन्ह आँका। आवहि डाँव छुवावहि बाँका।—पदमावत, पृ० ७०३।

सँतरँज ⓤ—सज्ञा पुं० [अ० शतरज, तुल० स० चतुरङ्ग] दे० 'शतरज'। उ०—मया सूर परसन भा राजा। साहि खेल सँतरँज कर साजा।—पदमावत, पृ० ६१२।

सँदेस ⓤ†—सज्ञा पुं० [स० सन्देश] दे० 'सँदेसा'। उ०—पितु सँदेस सुनि कृपानिधाना।—मानस, २।९७।

सँदेसड़ा ⓤ†—सज्ञा पुं० [हिं० सदेस+डा (प्रत्य०)] दे० 'सँदेसा'। उ०—पिउ सो कहेहुँ सँदेसडा, हे भौरा! हे काग।—जायसी ग्र०, पृ० १५४।

सँदेसरा ⓤ†—सज्ञा पु० [हिं० सदेस+रा (प्रत्य०)] दे० 'सँदेसा'। उ०—जब लगि कह न सँदेसरा ना ओहि भूख न प्यास।—पदमावत, पृ० ३६५।

सँदेसा—सज्ञा पुं० [स० सन्देश] किसी के द्वारा जबानी कहलाया हुआ समाचार आदि। खबर। हालचाल।

क्रि० प्र०—आना —जाना।—पाना।—भेजना।—मिलना।

सँदेसी†—सज्ञा पु० [हिं० सदेसा+ई (प्रत्य०)] वह जो सदेसा ले जाता हो। सदेशवाहक। बसीठ।—उ०—राजा जाइ तहाँ वहि लागा। जहाँ न कोइ सँदेसी कागा।—जायसी (शब्द०)।

सँदेहिल ⓤ—वि० [स० सदेह+हिं०, इल (प्रत्य०)] सदेहास्पद। सदेहयुक्त। उ०—नाम धर्‌यो सदिग्ध पद सब्द सदेहिल जासु।—भिखारी० ग्र०, भा० २, पृ० २२२।

सँपुटो ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पुट] कटोरी। प्याली।

सँपूरन—वि० [स० सम्पूर्ण] १ पूर्ण। उ०—अष्टम मास सँपूरन होई।—सूर०, ३।१३। २ सफल। सिद्ध। ३ समाप्त [को०]।

सँपेरा—सज्ञा पुं० [हिं० साँप+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० सँपेरिन] साँप पालनेवाला आदमी। मदारी। साँप का तमाशा दिखलानेवाला।

सँपोला—सज्ञा पु० [हिं० साँप+ओला (अल्पा० प्रत्य०)] साप का बच्चा।

मुहा०—सँपोला पालना=ऐसे व्यक्ति को प्रश्रय देना जो आगे चलकर उसी पर वार करे। नितराम् अविश्वसनीय व्यक्ति को प्रश्रय देना।

सँपोलिया—सज्ञा पु० [हिं० साँप+वाला] १ साँप पकडनेवाला। सँपेरा।† २ दे० 'सँपोली'-२।

सँपोली—सज्ञा स्त्री० [हिं० साँप+ओली (प्रत्य०)] १ वह पिटारी जिसमे सँपेरे साँप रखते है। २ बाँस के पोर पर से सूखकर अलग हो जानेवाली सूप के आकार की खोल। सुपेली।

सँभरना ⓤ†—क्रि० अ० [हिं० सँभलना] दे० 'सँभलना'।

सँभलना—क्रि० अ० [हिं० सँभालना] १ किसी बोझ आदि का ऊपर लदा रह सकना। पकड मे रहना। थामा जा सकना। जैसे,—यह बोझ तुमसे नही सभलेगा। २ किसी सहारे पर रुका रह सकना। आधार पर ठहरा रहना। जैसे,—इस खभे पर यह पत्थर नही सँभलेगा। ३ होशियार होना। सचेत होना। सावधान होना। जैसे,—इन ठगो के बीच सँभल कर रहना। ४ चोट या हानि से बचाव करना। गिरने पडने से रुकना। जैसे,—वह गिरते गिरते सँभल गया। ५ बुरी दशा को फिर सुधार लेना। जैसे,—इस रोजगार मे इतना घाटा उठाआगे कि सँभलना कठिन होगा। ६ कार्य का भार उठाया जाना। निर्वाह सभव होना। जैसे,—हमसे इतना खर्च नही सँभलेगा। ७. स्वस्थता प्राप्त करना। आरोग्य लाभ करना। चगा होना। जैसे,—बीमारी तो बहुत कडी पाई, पर अब सँभल रहे है।

सँभला†—सज्ञा पुं० [हिं० सँभलना] एक बार बिगडकर फिर सुधरी हुई फसल।

सँभार ⓤ†—सज्ञा पुं० [हिं० सँभालना, स० सम्भार] १ देखरेख। खबरदारी। निगरानी। २ पालन पोषण। उ०—करिय सँभार कोसलराइ।—तुलसी (शब्द०)।

यौ०—सार सँभार=पालन पोषण और निरीक्षण का भार। उ०—सब कर सार सँभार गोसाई।—तुलसी (शब्द०)।

३ वश मे रखने का भाव। रोक। निरोध। उ०—रे नृप बालक कालबस बोलत तोहि न सँभार।—तुलसी (शब्द०)। ४ तन बदन की सुधि। होश हवास। ५ तैयारी (क्रि०)।

सँभारना(५)†—क्रि० स० [स० सम्भार] १ दे० 'सँभालना'। २ याद करना। स्मरण करना। मन मे इकट्ठा करके लाना। उ०—बदि पितर सब सुकृत सँभारे। जो कुछ पुन्य प्रभाव हमारे। तौ सिव धनुष मृनाल की नाई। तोरहि राम, गनेस गोसाई।—तुलसी (शब्द०)।

सँभाल—सज्ञा स्त्री० [स० सम्भार] १ रक्षा। हिफाजत। २ पोषण का भार। देखरेख। निगरानी। ४ प्रबध। इतजाम। जैसे,—घर की सँभाल वही करता है। ५ तन बदन की सुध। होश हवास। चेत। आपा। जैसे,—वह इतना विकल हुआ कि शरीर की सँभाल न रही।

सँभालना—क्रि० स० [स० सम्भार] १ भार को ऊपर ठहराना। बोझ ऊपर रखे रहना। भार ऊपर ले सकना। जैसे,—इतना भारी बोझ कैसे सँभालोगे। २ रोक या पकड मे रखना। इस प्रकार थामे रहना कि छूटने या भागने न पावे। रोके रहना। काबू मे रखना। जैसे,—सँभालो, नही तो छूटकर भाग जायगा। ३ किसी वस्तु को अपनी जगह से हटने, गिरने पडने, खिसकने आदि से रोकना। यथास्थान रखना। च्युत न होने देना। थामना। जैसे—टोपी सँभालना, धोती सँभालना। ४ गिरने पडने से रोकने के लिये सहारा देना। गिरने से बचाना। जैसे,—मैने सँभाल लिया, नही तो वह गिर पडता। ५. रक्षा करना। हिफाजत करना। नष्ट होने या खो जाने से बचाना। जैसे,—इस पुस्तक को बहुत सँभालकर रखना। ६ बुरी दशा को प्राप्त होने से बचाना। बिगडी दशा मे सहायता करना। खराबी से बचाना। उद्धार करना। जैसे,—उसने बडे बुरे दिनो मे सँभाला है। ७ पालन पोषण करना। परवरिश करना। ८ देखरेख करना। निगरानी करना। ९ प्रबध करना। इतजाम करना। व्यवस्था करना। जैसे,—घर सँभालना। १० निर्वाह करना किसी कार्य का भार अपने ऊपर लेना। चलाना। जैसे,—उसका खर्च हम नही सँभाल सकते। ११ दशा बिगडने से बचाना। रोग, व्याधि, आपत्ति इत्यादि की रोक करना। जैसे,—बीमारी बढ जाने पर सँभालना कठिन हो जाता है। १२ कोई वस्तु ठीक ठीक है, इसका इतमीनान कर लेना। सहेजना। जैसे—देखो १००) है, इन्हे सँभालो। १३ स्मरण करना। याद करना। दे० 'सँभारना'। १४ किसी मनोवेग को रोकना। जोश थामना। जैसे,—उसकी कडी बाते सुनकर मै अपने को सँभाल न सका।

सयो० क्रि०—देना।—लेना।

सँभाला—सज्ञा पुं० [हिं० सँभालना] जीवन की ज्योति का बुझने के पूर्व टिमटिमा उठना। मरने के पहले कुछ चेतनता सी आ जाना। चैतन्य बाई होना। जैसे,—कल सभाला लिया था, आज मर गया।

क्रि० प्र०—लेना।

सँभालू—सज्ञा पु० [हिं० सिंधुवार] श्वेत सिंधुवार वृक्ष। मेवडी।

सँयोना पु०—क्रि० स० [हिं० सँजोना अथवा स० सयोजन] दे० 'सँजोना'।

सँवर(५)†—सज्ञा स्त्री० [स० स्मरण] १ याद। स्मरण। स्मृति। २ खबर। हाल चाल।

सँवरना'—क्रि० अ० [स० सम् √वृ > सवरण (=व्यवस्थित करना)] १ बनाना। दुरुस्त होना। २ सजना। अलकृत होना।

सँवरना(५)'—क्रि० स० [स० स्मरण, हिं० सुमिरना] याद करना। उ०—सँवरौ आदि एक करतारू।—जायसी (शब्द०)।

सँवरा†—वि० [हिं० साँवला] दे० 'साँवला'।

सँवरिया—वि० [हिं० साँवला+इया (प्रत्य०)] दे० 'साँवला'। उ०—बिरिख सँवरिया दहिने बोला।—जायसी (शब्द०)।

सँवाँ†'—सज्ञा पुं० [स० श्यामाक] साँवाँ नाम का अन्न।

सँवाँ†'—वि० [स० समान] समान। सदृश। तुल्य।

सँवाग†—पज्ञा पुं० [हिं० स्वाँग] रूप बदलना। भेष बदलना। उ०—मोख लेहि जोगिनि फिर माँगू। केतन पाइय किए सँवागू।—पदमावत, पृ० ६०५।

सँवार(५)†'—सज्ञा स्त्री० [स० सवाद या स्मरण] हाल। समाचार। उ०—पुनि रे सँवार कहेसि अरु दूजी। जो बनि दीन्ह देवतन्ह दूजी।—जायसी (शब्द०)।

सँवार'—सज्ञा स्त्री० [हिं० सँवारना] १ सँवारने की क्रिया या भाव। २ एक प्रकार का शाप या गाली।

विशेष—कभी कभी लोग यह न कहकर कि 'तुम पर खुदा की मार या फटकार' प्राय 'तुम पर खुदा की सँवार' कह दिया करते हैं।

सँवारना—क्रि० स० [सं० सम्वर्णन या सवरण] १ सजाना। अलकृत करना। उ०—कठ कठुला नीलमनि अभोज माल सँवारि।—सूर०, १०।१६९। २ दुरुस्त करना। ठीक करना। उ०—सो देही नित देखि के चोच सँवारे काग।—कविता कौ०, भा०, १, पृ० १९७। ३ क्रम से रखना। ठीक ठीक लगाना। ४ कार्य सुचारु रूप से सपन्न करना। काम ठीक करना।

मुहा०—बिगडी सँवारना=बिगडी बात बनाना।

सँहरना पु०—क्रि० अ० [स० सहार] नष्ट होना। उ०—हैहय मारे नृपजन सँहरे। सो जस लै किन जुग जुग जीजै।—केशव (शब्द०)।

सँहारना(५)—क्रि० स० [सं० सहरण] दे० 'सहारना'। उ०—इहाँ तो खड्ग नरदइ मारो। इहाँ तो विरह तुम्हार सँहारो।—जायसी (शब्द०)।

स'—सज्ञा पुं० [स०] १ ईश्वर। २ शिव। महादेव। ३ साँप। ४ पक्षी। चिडिया। ५ वायु। हवा। ६ जीवात्मा। ७ चद्रमा। ८ भृगु। ९ दीप्ति। काति। चमक। १० ज्ञान। ११ चिंता। १२ गाडी का रास्ता। सडक। १३ सगीत मे षडज स्वर

का सूचक अक्षर। जैसे,—रे, ग, म, ध, नि, स। १४ छंद-शास्त्र मे 'सगण' शब्द का सूचक अक्षर या सक्षिप्त रूप। दे० 'सगण'। १५ घेरा। वाड (को०)।

स[२]—उप० एक उपसर्ग जिसका प्रयोग शब्दो के आरभ मे, कुछ विशिष्ट अर्थ उत्पन्न करने के लिये होता है। जैसे,—(क) बहुव्रीहि समास मे 'सह' के अर्थ मे। जैसे, —सजीव = सह + जीव। सपरिवार = सह + परिवार। (ख) 'स्व' या एक ही' के अर्थ मे। जैसे,—सगोत्र। (ग) 'सु' के स्थान मे। जैसे,—सपूत।

सअादत—सज्ञा स्त्री० [अ० सआदत] १ भलाई। कल्याण। २ प्रताप। इकबाल। ३ बरकत। शुभ होने का भाव [को०]।

यौ०—सआदतमद = (१) सौभाग्यशील। (२) आज्ञापालक। सआदतमदी = सआदतमद होने का भाव।

सइ ५[१]—अव्य० [स० सह] से। साथ।

सइ ५[२]—अव्य० [प्रा० सु तो] एक विभक्ति जो करण और अपादान कारक का चिह्न है।

सइअन†—सज्ञा पु० [स० शोभाञ्जन, हि० सहिजन] दे० 'सहिजन'।

सइन†—सज्ञा स्त्री० [सं० सन्धि] नाड़ी का व्रण। नासूर।

सइना ५—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेना] दे० 'सेना'।

सइयो ५†—सज्ञा स्त्री० [स० सखी, प्रा० सहीयो] सखी। सहेली।

सइल‡[१]—सज्ञा स्त्री० [स० शल्य] लकडी की वह खूँटी या गुल्ली जो गाडी के कँधावर मे लगाई जाती है। इसके लगने से बैल की गरदन दो बैलो के बीच रहरी मे ठहरी रहती है और वह इधर उधर नही हो सकता। कभी कभी यह लोहे की भी होती है। समदूल। सैला। घुल्ला।

सइल ५[२]—सज्ञा पुं० [स० शैल] दे० 'शैल'। उ०—मत्तभट मुकुट दसकध साहस सइल सृग विद्रनि जनु वज्र टाँकी।—तुलसी ग्र०, पृ० १६३।

सइवर‡—सज्ञा पुं० [सं० शैवल] सेवार। शैवाल।

सई[१]—सज्ञा स्त्री० [अ० सही] मल्लाहो की परिभाषा मे नाव खीचने की गून को कडा करना।

सई[२]—सज्ञा पुं० [अ०] पराक्रम। प्रयत्न। कोशिश।

यौ०—सई सिफारिश = दौड़धूप या कोशिश पैरवी।

सई ५[३]—सज्ञा स्त्री० [स० श्री] वृद्धि। बरकत। उ०—खग मृग सवर निसाचर सब की पूँजी बिनु बाढी सई।—तुलसी (शब्द०)।

सई‡[४]—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक नदी का नाम जो शाहजहाँपुर से निकल कर जौनपुर मे गोमती से मिलती है। उ०—सई तीर बसि चले बिहाने। शृगवेरपुर सब निअराने।—मानस, २।१८९।

सई†[५]—सज्ञा स्त्री० [स० सखी, प्रा० सही] दे० 'सखी'।

सईकटा—सज्ञा पुं० [स० शतकण्टक या सकण्टक] एक प्रकार पेड।

सईद—वि० [अ०] १ तेजस्वी। २ भाग्यशाली। खुशनसीब। ३ कल्याणकारी। मागलिक। शुभ [को०]।

सईल—सज्ञा स्त्री० [सं० शैल, प्रा० सइल] दे० 'सइल'।

सईस—सज्ञा पुं० [अ० साइस] दे० 'साईस'।

सउँ ५—अव्य० [हिं० सो] दे० 'सो'।

सउख‡—सज्ञा पु० [अ० शौक] दे० 'शौक'।

सउजा†—सज्ञा पु० [स० शावक या देशी] आखेट करने योग्य जतु। शिकार। साउज।

सउत†—सज्ञा स्त्री० [स० सपत्नी] दे० 'सौत'।

सउतिया†—सज्ञा स्त्री० [हि० सउत + इया (प्रत्य०)] दे० 'सौत'।

सउतेला†—वि० [हिं० सौत + एला (प्रत्य०) तेला] दे० 'सौतेला'।

सऊर—सज्ञा पुं० [अ० शुऊर] दे० 'शऊर'।

सककूर—सज्ञा पुं० [रूमी सकन्कूर, अ० सकन्कूर] गोह की तरह का एक जतु।

विशेष—इसका रग लाल या पीला होता है। इसका मास खारा और फीका होता है, पर बहुत बलवर्धक माना जाता है। इसे रेत की मछली या रेगमाही भी कहते है।

सकटक[१]—सज्ञा पुं० [स० सकण्टक] १ करज वृक्ष। कजा। पूति करज। दुर्ग धकरज। २ सिवार। शैवाल। सेवार।

सकटक[२]—वि० १ कंटकयुक्त। काँटो से भरा हुआ। कँटीला। २ खतरनाक। कष्टदायी [को०]।

सकपन—वि० [स० सकम्पन] १ जो कपन के साथ हो। २ कपन-युक्त। काँपता हुआ [को०]।

सक†[१]—सज्ञा पुं० [स० शक] दे० 'शक'।

सक[२]—सज्ञा स्त्री० [हिं० शक्ति, सकत] दे० 'शक्ति', 'सकत'।

सक ५[३]—सज्ञा पुं० [अ० शक्] सदेह। शका शक।

सक ५[४]—सज्ञा पु० [स० शाका] साका। धाक।

मुहा०—सक बाँधना = (१) धाक बाँधना। (२) मर्यादा स्थापित करना।

यौ०—सकबधी = धाक बाँधने या मर्यादा स्थापित करनेवाला। उ०—हौं सो रतनसेन सकबधी। राहु बेधि जीता सैरधी। —जायसी (शब्द०)।

सकट[१]—सज्ञा पुं० [स० शकट] शकट। गाडी। छकडा। सगड। उ०—कोटि भार सकटनि महँ भरि कै। भए पठावत आनँद करि कै।—गिरिधरदास (शब्द०)।

सकट[२]—सज्ञा पुं० [स०] शाखोट वृक्ष। सिहोर।

सकट[३]—वि० अधम। जघन्य। नीच। बुरा [को०]।

सकटान्न—सज्ञा पुं० [स०] जिसे किसी प्रकार का अशौच हो, उसका अन्न। अशौचान्न। अशुद्ध अन्न।

विशेष—शास्त्रो मे इस प्रकार का अन्न खाने का निषेध है, और कहा गया है कि जो ऐसा अन्न खाता है, उसे भी अशौच हो जाता है।

सकटी—सज्ञा स्त्री० [सं० शकटी] १ गाडी। २ छोटा सगड। डि०)।

सकड़ी—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खली] दे० 'सिकडी', 'सिकरी'।

सकत†[१]—सज्ञा स्त्री० [स० शक्ति] १ बल। शक्ति। सामर्थ्य। ताकत। २ वैभव। सपत्ति।

**सकत** पु०[२]—क्रि० वि० [स० शक्ति] जहाँ तक हो सके। भरसक। उ०—का तोहि जीव मरावौ सकत आ। के दोस। जो नहिं बुझै समुदजल सो बुझाइ कित ओस।—जायसी (शब्द०)।

**सकता**[१]—सज्ञा स्त्री० [स० शक्ति] १ शक्ति। ताकत। २ सामर्थ्य। उ०—मिट्टी के बासन को इतनी सकता कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड सके। सच है जो बना हो सो अपने बनानेवाले को क्या सराहे।—इशाअल्लाह खाँ (शब्द०)।

**सकता**[२]—पज्ञा पुं० [अ० सकतह्] १ एक प्रकार का मानसिक रोग जिसमे रोगी बेहोश हो जाता है। बेहोशी की बीमारी। २ विराम। यति।

मुहा०—सकता पडना = छद मे यतिभग दोष होना। सकते का आलम = विस्मय से मुग्ध होने की स्थिति। स्तब्ध या ठक होना। सकते की हालत = भय आश्चर्य आदि मे स्तब्ध या निमग्न होने की स्थिति। बेहोशी की सी स्थिति। उ०—और हँसी का एक ऐसा ठहाका सुन पडा कि जिससे सबके सब सकते की हालत मे हो गए, मानो सबके होश हवास गायब हो गए हो, केवल शरीर वहाँ बैठा हो।—पीतल०, भा० २, पृ० ६५।

**सकती**[१]—सज्ञा स्त्री० [स० शक्ति] १ शक्ति। बल। ताकत। २ शक्ति नामक अस्त्र। ३ दे० 'शक्ति'—८-१३। उ०—स्यो सकती दोउ मुप जीवत।—रामानद, पृ० १२।

**सकती**[२]†—सज्ञा स्त्री० [फा० सख्ती] कडाई। जोर जबरदस्ती। उ०—कवि किंवित् औसर जो अकती मकती नहीं हौं पर कीजिए जू। हम तो अपनो वर पूजती है सपने नहिं पीपर पूजिए जू।—कविता कौ०, भा० १, पृ० ४०३।

**सकन**—सज्ञा पुं० [देश०] लता कस्तूरी। मुरकदाना।

**सकना**—क्रि० अ० [स० शक् या शक्य] कोई काम करने मे समर्थ होना। करने योग्य होना। जैसे,—खा सकना, चल सकना, कह सकना।

विशेष—इस क्रिया का व्यवहार सदा किसी दूसरी क्रिया के साथ सयोज्य क्रिया के रूप मे ही होता है, अलग नही होता। परतु बगाल मे कुछ लोग भूल से, या बँगला के प्रभाववश, कभी कभी अकेले भी इस क्रिया का व्यवहार कर बैठते हैं। जैसे,—हमसे नही सकेगा।

**सकपक**—सज्ञा स्त्री० [अनु०] १ हिचक। २ चकपकाहट [को०]।

**सकपकाना**—क्रि० अ० [अनु० सकपक] १ चकपकाना। आश्चर्ययुक्त होना। २ हिचकना। आगापीछा करना। ३ लज्जित होना। शरमाना। ४ प्रेम, लज्जा या शका के कारण उद्भूत एक प्रकार की चेष्टा। उ०—प्रथम समागम मे एहो कवि रघुनाथ कहा कहौ रावरो सो एतनी सकाई है। मिलिबे की चरचा सुनत ही सकपकाई स्वेद भरै तन परै मुखिया पियराई है।—रघुनाथ (शब्द०)। ५ हिलना। डोलना। लहराना। उ०—सकपकाहिं विष भरे पसारे। लहरि भरे लहकति अति कारे।—जायसी (शब्द०)।

**सकर** पु०—वि० [स०] १ हस्तयुक्त। २ किरणयुक्त। ३ जिसके ऊपर कर लगा हो। ४ सूडवाला (हाथी) [को०]।

**सकर**—पज्ञा पुं० [अ० सकर] दोजख। नरक [को०]।

**सकर**[१]—पज्ञा स्त्री० [फा० शकर तुल० सं० शर्करा प्रा० सक्करा, अप० सक्कर 'जइ सक्कर सय खड थिय'—पुरानी हिंदी] शक्कर। चीनी। खाँड।

**सकरकद**—पज्ञा पुं० [फा० शकरकद] दे० 'शकरकद'।

**सकरकदी**—पज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'शकरकद'।

**सकरकन**—पज्ञा पु० [हि शकरकद] दे० 'शकरकद'।

**सकरखडी**†—पज्ञा स्त्री० [फा० शकर+हिं० खड+ई (प्रत्य०) तुल० सं० शर्करासण्ड] लाल और बिना साफ की हुई चीनी। खाँड। शक्कर।

**सकरणक**—वि० [स०] जो शरीर के किसी अवयव द्वारा सबद्ध किया गया [को०]।

**सकरना**—क्रि० अ० [स० स्वीकरण] १ सकारा जाना। स्वीकृत या अगीकृत होना। मजूर होना। जैसे,—टूटी सकरना, दाम सकरना। २ कबूला जाना। माना जाना।

सयो० क्रि०—जाना।

**सकरपाला**—पज्ञा पुं० [फा० शकरपारा] १ शकरपारा नाम की मिठाई। वि० दे० 'शकरपाला'। २ एक प्रकार का कामुनो नोच्। ३ कपडे पर की एक प्रकार की सिलाई जो शकरपारे की आकृति की होती है। दे० 'शकरपारा'।

**सकरा**—वि० [स० सङ्कीर्ण, हिं० सँकरा] दे० 'सँकरा'।

**सकरिया**—पज्ञा स्त्री० [फा० शकर+हिं० इया] लाल शकरकद। रतालू।

**सकरुड**—पज्ञा पु० [गुज०] सकुरुड या साकुड नाम का वृक्ष।

विशेष—इस वृक्ष की पत्तियो आदि का व्यवहार ओषधि के रूप मे होता है। वैद्यक के अनुसार यह कषाय, रुचिकर, दीपन और वातनाशक माना जाता है।

**सकरुण**—वि० [स०] १ जिसे करुणा हो। दयाशील। २ करुणा से भरा हुआ। करुणायुक्त। करुणार्द्र।

**सकरुन**पु०—वि० [स० सकरुण] १ सकरुण। दयाशील। २ करुणा से भरा हुआ। करुणार्द्र। उ०—सकरुन वचन सुनत भगवाना।—मानस, ६।६९।

**सकर्ण**[१]—पज्ञा पु० [स०] वह जो सुनता या सुन सकता हो।

**सकर्ण**[२]—वि० [वि० स्त्री० सकर्णा, सकर्णी] १ कानवाला। जिसे कान हो।

**सकर्णक**—पज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

**सकर्णआवृत**—वि० [स०] जो कर्ण तक ढँका हुआ हो [को०]।

**सकर्तृक**—वि० [स०] १ कर्ता से युक्त। २ जिसके पास साधन हो। उपकरणवाला [को०]।

**सकर्मक**—वि० [स०] १ काम वाला। जिसके पास कार्य हो। २ कर्म कारक से युक्त। जैसे, सकर्मक क्रिया।

**सकर्मक क्रिया**—स्त्री० [स०] व्याकरण मे दो प्रकार की क्रियाओ मे से एक। वह क्रिया जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त हो। जैसे,—'खाना'। खाने का कार्य उस वस्तु पर समाप्त होता

है, जो खाई जाती है, इसलिये यह सकर्मक क्रिया हुई। इसी प्रकार देना, लेना, मारना, उठाना आदि सकर्मक क्रियाएँ है।

सकर्मा—वि० [स० सकर्मन्] १ साथ साथ अथवा एक प्रकार का काम करनेवाला। २ दे० 'सकर्मक' [को०]।

सकल[1]—वि० [स०] १ सब। सर्व। समस्त। कुल। २ कलाओं से युक्त (को०)। ३ मद और मधुर स्वरवाला (को०)। ४ जगत् से प्रभावित। ५ ब्याज देनेवाला (को०)।

यौ०—सकलकामदुघ, सकलकामप्रद = सभी कामनाएँ पूर्ण करनेवाला। उ०—सकल कामप्रद तीरथराऊ।—मानस, २।२०३। सकलवर्ण = जो क और ल वर्ण से युक्त हो। कलह।

सकल[2]—सज्ञा पु० १ रोहित तृण। गध तृण। रोहिस घास। २ निर्गुण ब्रह्म और सगुण प्रकृति। ३ समग्र वस्तु। प्रत्येक वस्तु। हर एक चीज (को०)। ४ दर्शनशास्त्र के अनुसार तीन प्रकार के जीवो मे से एक प्रकार के जीव। पशु।

विशेष—जीव तीन प्रकार के माने गए हैं—विज्ञानाकल, प्रलयाकल, और सकल। सकल जीव मल, माया और कर्म से युक्त होता है। इसके भी दो भेद कहे गए हे—पक्व कलुष और अपक्व कलुष।

सकल[3]—सज्ञा स्त्री० [अ० शक्ल] दे० 'शकल[2]'।

सकलकल—वि० [स०] सपूर्ण, सोलहो कलाओं से युक्त (चद्रमा)।

सकलखोरा—सज्ञा पु० [हिं० शकरखोरा] एक पक्षी। दे० 'शकरखोरा'।

सकलजननी—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रकृति।

सकलदार—वि० [अ० शक्ल + फा० दार (प्रत्य०)] शक्लवाला। सूरतवाला। खूबसूरत। उ०—सकलदार मैं नही, नीच फिर जाति हमारी।—पलटू०, पृ ६।

सकलप्रिय—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो सबको प्रिय हो। सबको अच्छा लगनेवाला। २ चना। चणक।

सकललक्षरण—सज्ञा पुं० [स०] शाल निर्यास। धूना। राल।

सकलसिद्धि—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जिसे सब सिद्धियाँ प्राप्त हो। २ समग्र सिद्धियाँ। सभी विषयो मे सफलता।

सकलसिद्धिदा—सज्ञा पु० [स०] तान्त्रिको के अनुसार एक भैरवी का नाम।

सकलात—सज्ञा पुं० [स० सकाल (= ऋतु या अवसर के उपयुक्त)?] १ ओढने की रजाई। दुलाई। उ०—(क) लग्यो शीत गात सुनो बात प्रभु काँपि उठे दई सकलात आनि प्रीति हिये भोई है। (ख) शीत लगत सकलात विदित पुरुषोत्तम दीनी। शौच गए हरि सग कृत्य सेवक की कीनी।—भक्तमाल (शब्द०)। २ उपहार। भेट। सौगात। उ०—सौ गाडी सकलात सलौनी। पातसाह की जात पठौनी।—लाल कवि (शब्द०)।

सकलाधार—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम।

सकली—सज्ञा स्त्री० [डिं०] मत्स्य। मछली।

सकलेदु—सज्ञा पु० [स० सकलेन्दु] पूर्णिमा का चद्रमा।

यौ०—सकलेदुमुख = जिसका मुख पूर्णिमा के चाँद जैसा हो।

सकलेश्वर—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु का एक नाम।

सकल्प[1]—सज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम।

सकल्प[2]—वि० वेद के एक अग कल्प से युक्त। वेद के उस अग से युक्त जिसमे यज्ञादि का विधान किया गया है [को०]।

सकवा†—सज्ञा पुं० [हिं० साकू] शाल। अश्वकर्ण।

सकषाय—वि० [स०] १ जो कषाय रस से युक्त हो। कसैला। २ जागतिक वासनाओं काम, क्रोध आदि से युक्त [को०]।

सकस‡—सज्ञा पु० [अ० शक्स] दे० 'शक्स'।

सकसकाना†—क्रि० अ० [अनु०] बहुत डरना। डर के कारण काँपना। उ०—सकसकात तनु भीजि पसीना उलटि उलटि तन जोरि जँभाई।—सूर (शब्द०)।

सकसना†—क्रि० अ० [हिं० स + कसना] इतना कस उठना कि जरा सा भी स्थान खाली न रहे। २ डरना। भयभीत होना।

सकसाना†[1]—क्रि० अ० [अनु०] डर मानना। भयभीत होना। उ०—दस्तेवाज वारन के द्वार ठाढे रस्ते पर छिति के अधीस दस्तवस्त सकमात हे।—नकछेदी (शब्द०)।

सकसाना†[2]—क्रि० स० इतना अधिक भर देना कि जगह खाली न रह जाय। अडसाना। ठूसना।

सका†—सज्ञा पुं० [अ० सक्का] १. पानी भरनेवाला, भिश्ती। २ वह जो घूम घूमकर लोगो को पानी पिलाता हो, विशेषत मशक मे (मुसलमानोको) पानी पिलानेवाला।

सकाकुल—सज्ञा पुं० [?] १ एक प्रकार का कद जिसे अवर कद कहते हे। २ एक प्रकार का शतावर। ३ शकाकुल मिस्री। सुधामूली।

सकाकुल मिसरी—सज्ञा स्त्री० [?] दे० 'सकाकुल मिस्री'।

सकाकुल मिस्री—सज्ञा स्त्री० [?] १ सुधामूली। २ शक्करकद।

सकाकोल—सज्ञा पुं० [स०] १ मनु के अनुसार एक नरक का नाम। २ नरक भूमि। यमपुरी जहाँ काकोल नाम का नरक है।

सकाना†[1]—क्रि० अ० [स० शङ्कन] १ शका करना। सदेह करना। डरना। उ०—(क) जोरि कटक पुनि राजा घर कहँ कीन पयान। दिवसहिं भानु अलोप भा वासुकि इद्र सकान।—जायसी (शब्द०)। (ख) देखि सैन ब्रज लोग सकात। यह आयो कीन्हे कछु घात।—सूर (शब्द०)। २ भय के कारण सकोच करना। हिचकना। ३ दुखी होना। रज होना।

सकाना†[2]—क्रि० स० 'सकना' का प्रेरणार्थक रूप। उ०—जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई। कोटि भाँति कोउ करै उपाई।—मानस, ७।११६।

विशेष—इसका क्वचित् हास्य प्रयोग भी प्राप्त होता है।

सकाम—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह व्यक्ति जिसे कोई कामना या इच्छा हो। २ वह व्यक्ति जिसकी कामना पूर्ण हुई हो। लब्धकाम। ३ कामनासना युक्त व्यक्ति। मैथुन की इच्छा रखनेवाला व्यक्ति। कामी। ४ वह व्यक्ति जो कोई कार्य भविष्य मे फल मिलने की इच्छा से करे। जो निस्वार्थ होकर कोई कार्य न करे, बल्कि स्वार्थ के विचार से करे। ५ प्रेम करनेवाला। प्रेमी।

**सकाम निर्जरा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैनियों के अनुसार चित्त की वह वृत्ति जिसमें बहुत अधिक क्षति होने पर भी शत्रु या पीड़ा देनेवालों को परम शांतिपूर्वक क्षमा कर दिया जाता है। यह वृत्ति उपशांत चित्तवाले साधुओं में होती है।

**सकामा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो मैथुन की इच्छा रखती हो। कामपीड़िता। कामवती।

**सकामारि**—संज्ञा पुं० [सं०] कामियों वा विषयी जीव के शत्रु, शिव [को०]।

**सकामी**—संज्ञा पुं० [सं० सकामिन्] १ वह जिसे किसी प्रकार की कामना हो। कामनायुक्त। वासनायुक्त। २ कामी। विषयी।

**सकार**[1]†—संज्ञा पुं० [सं०] १ 'स' अक्षर। २ 'स' वर्ण की सी ध्वनि। जैसे,—उसके मुँह से सकार भी न निकला। ३ सगण (।।ऽ)।

**सकार**[2]—वि० उत्साही। सक्रिय। फुर्तीला [को०]।

**सकारथ**†—वि० [सं० सु+कार्यार्थ] १ सार्थक। उपयोग में आने लायक। २ सफल। अकारथ का उलटा।

**सकारना**—क्रि० अ० [सं० स्वीकरण] १ स्वीकार करना। मंजूर करना। २ महाजनों का हुंडी की मिती पूरी होने के एक दिन पहले हुंडी देखकर उसपर हस्ताक्षर करना।

**विशेष**—जो लोग किसी महाजन को हुंडी पर रुपए देते हैं, वे मिती पूरी होने से एक दिन पहले अपनी हुंडी उस महाजन के पास उसे दिखलाने और उससे हस्ताक्षर कराने के लिये ले जाते हैं। इससे महाजन को दूसरे दिन के दातव्य धन की सूचना भी मिल जाती है और रुपये पानेवाले को यह निश्चय भी हो जाता है कि कल मुझे रुपए मिल जायँगे।

**सकारा**[1]—संज्ञा पुं० [सं० स्वीकरण] १ महाजनी में वह धन जो हुंडी सकारने और उसका समय फिर से बढ़ाने के लिये लिया जाता है। २ सुबह का समय।

**सकारा**[2]—संज्ञा पुं० [सं० सकाल] सुबह। प्रभात।

**सकारे, सकारै**†—क्रि० वि० [सं० सकाल] १ प्रातःकाल। सबेरे। तड़के। उ०—अवधेश के द्वारे सकारे गई, सुत गोद कै भूपति लै निकसे। अवलोकिहौ सोच विमोचन को ठगि सी रही, जे न ठगे धिक से।—तुलसी (शब्द०)।

**यौ०**—साँझ सकारे=सायंकाल और प्रातःकाल। सुबह शाम। उ०—गए मयूर तमचूर जो हारे। उन्हहिं पुकारे साँझ सकारे।—जायसी (शब्द०)।

२ नियत समय पर। ठीक वक्त पर। (क्व०)।

**सकारौ**†—क्रि० वि० [हिं० सकारे] दे० 'सकारे'।

**सकार्थ**†—वि० [हिं० सकारथ] दे० 'सकारथ'। उ०—नानक गुर मुखि छूटी अै जन्मु सकार्थ होय।—प्राण०, पृ० २१५।

**सकाल**[1]—वि० [सं०] समयोचित [को०]।

**सकाल**[2]—अव्य १ तड़के। सबेरे। २ ठीक समय पर [को०]।

**सकाल**†—संज्ञा पुं० [सं०] प्रभात। सुबह। भोर।

**यौ०**—सकाल बिकाल=(१) सुबह शाम। (२) हर समय। हर वक्त।

**सकालत**—संज्ञा स्त्री० [अ० सकालत] १ सकील या गरिष्ठ होने का भाव। २ गुरुता। भारीपन।

**सकाश**—वि० [सं०] दृश्यमान। पास। निकट। समीप।

**सकाश**[2]—संज्ञा पुं० १ सामीप्य। निकटता। २ पड़ोस। प्रतिवेश। ३ उपस्थिति [को०]।

**सकाश**[3]—अव्य० पास। निकट। समीप।

**सकिलना**†[1]—क्रि० अ० [हिं० सिकुड़ना या अनु०] १ सिकुड़ना। सरकना। २ सिमटना। सिकुड़ना। उ०—उमरन बार सकिल गई नाना। भयो तहाँ ते रुधिर प्रवाहा।—सुजान (शब्द०)। ३ हो सकना। पूरा होना। जैसे,—तुमसे यह काम नहीं सकिल सकता। ४ एकत्र होना। बटोरना। पुंजीभूत होना। उ०—मेघा महिगन गो जल पावन। सकिलि अननमग चलेउ सुहावन।—मानस, १।३६।

**सकिलाना**‡—क्रि० स० [हिं० सकिलना का सक० रूप] १ सिकुड़ाना। सरकाना। २ सिमटना। समेटना। ३ पूरा करना। निष्पन्न करना। ४ एकत्र करना। बटोरना।

**सकीन**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का जंतु।

**सकीवकी**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सक(=शक्ति)+बक(=बकने की क्रिया)] १ शक्ति। सामर्थ्य। २ बड़ बड़ करने की बात। बढ़ बढ़कर बोलना। उ०—सकीवकी सब गइन हिराई। प्रभु बिन तो कहँ कौन छोड़ाई।—गुलाल०, पृ० २८।

**सकीर्न**†—वि० [सं० सङ्कीर्ण] दे० 'सकीर्ण'। उ०—बल सकीर्न ईकार लघु, दीर्घ दोन है नाँहि।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ५३३।

**सकील**[1]—वि० [अ० सकील] १ जो जल्दी हजम न हो। गरिष्ठ। गुरुपाक। २ भारी। वजनी। ३ जो कठिन हो। क्लिष्ट (शब्द०)।

**सकील**[2]—संज्ञा पुं० [सं०] समोग कार्य में कमजोर पड़ने के कारण अपनी पत्नी को स्वयं समोग करने के पहले किसी और व्यक्ति से संयुक्त करानेवाला पुरुष [को०]।

**सकुत**†—संज्ञा पुं० [सं० शकुन्त, प्रा० सकुन] दे० 'शकुत' (पक्षी)।—अनेकार्थ०, पृ० १०१।

**सकुक्षि**—वि० [सं०] एक ही पेट से पैदा होनेवाला। सहोदर [को०]।

**सकुच**†—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं० सङ्कोच] संकोच। लाज। शर्म। उ०—(क) सुनु मैया तेरी सौं करौं याकी टेव लरन की, सकुच बेचि सी खाई।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सकुच सुरत आरम हो, बिछुरी लाज लजाय। डरकि ढार टुरि डिग भई, ढीठ ढिठाई आय।—बिहारी (शब्द०)। (ग) हम सों उन सों कौन सगाई। हम अहीर अबला ब्रजवासी वै जदुपति जदुराई। कहा भयो जु भए नँदनंदन अब इह पदवी पाई। सकुच न आवत घोष बसत की तजि ब्रज गए पराई।—सूर (शब्द०)।

**सकुचना**—क्रि० अ० [सं० सङ्कोच, हिं० सकुच+ना (प्रत्य०)] १ संकोच करना। लज्जा करना। शरमाना। उ०—(क)

सकुची, डरी, मुरी मन बारी। गहु न बाँह रे जोगि भिखारी। —जायसी (शब्द०)। (ख) मुनि पग धुनि चितई इतै, न्हाति दिए ही पीठि। चकी, झुकी, सकुची, डरी, हँसी लजीली दीठ।—बिहारी (शब्द०)। २ (फूलो का) सपुटित होना। होना। सकुचित होना। उ०—गिरिधरदास कहै सकुची कुमोदिनी यो देखि पर पुरुष लजात जैसे खडिता।—गिरधर (शब्द०)।

सकुचाई पु—सज्ञा स्त्री० [स० सडकोच, हिं० सकुच+आई (प्रत्य०)] सकुचित होने का भाव। २ सकोच। शर्म। लज्जा। हया।

सकुचाना[1]—क्रि० अ० [स० सडकोच, हि० सकुच+आना (प्रत्य०)] सकुचित होना। लजाना। सकोच करना। जैसे,—वह आपके पास आने मे सकुचाता है। उ०—(क) एहि विधि भरत फिरत वन माही। नेम प्रेम लखि मुनि सकुचाही।—मानस, २।३११। (ख) राम की तो ऐसी बात कज पात गात जाके सामने मरीच ताहि देख सकुचाइ है। —हृदयराम (शब्द०)।

सकुचाना पु[2]—क्रि० स० [हिं० सकुचाना का प्रे० रूप] किसी को सकोच करने मे प्रवृत्त करना। लज्जित करना।

सकुचाना पु[3]—क्रि० स० [स० सङ्कुञ्चन] सिकोडना। उ०—श्रवण शरण ध्वनि सुनत लियो प्रभु तनु सकुचाई।—सूर (शब्द०)।

सकुचावना पु†—क्रि० स० [हिं० सकुचाना का प्रे० रूप] लज्जित करना। सकुचित करना। उ०—निज करनी सकुचेहि कत, सकुचावत इहि चाल। मोहूँ मे नित विमुख त्यो मनमुख रहि गोपाल।—बिहारी (शब्द०)।

सकुचावनी पु—वि० स्त्री० [हिं० सकुचना] विनिदित करनेवाली। लजानेवाली। सकुचित करनेवाली। उ०—खाँड की खजावनी सी, कद की कुढावनी सी, सिता की सतावनी सी सुधा सकुचावनी।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ३०५।

सकुची—सज्ञा स्त्री० [सं० सकुलमत्स्य] एक प्रकार की मछली जो साधारण मछलियो से भिन्न और प्राय कछुए के आकार की होती है।

विशेष—इसके छोटे छोटे चार पैर होते है और एक लबी पूँछ होती है। इसी पूँछ से यह शत्रु को मारती है। जहाँपर इसकी चोट लगती है, वहाँ घाव हो जाता है और चमडा सडने लगता है। कहते है कि यह मछली ताड के वृक्ष पर चढ जाती है। पानी मे और जमीन पर दोनो जगह यह रह सकती है।

सकुचीला—वि० [हिं० सकुच+ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सकुचीली] जिसे अधिक सकोच हो। सकोच करनेवाला। शरमीला।

सकुचीली—सज्ञा स्त्री० [हिं० सकुचीला] लाजवती। लज्जावती लता।

सकुचौहा पु—वि० [स० सङ्कोच, हिं० सकुच+औहाँ (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सकुचौहीं] सकोच करनेवाला। लजीला। शरमीला। उ०—गह्यो अबोलो बोलि प्यौ आपुहि पठै बसीठि। दीठि चुराई दुहुन की लखि सकुचौही दीठि।—बिहारी (शब्द०)।

सकुड़ना—क्रि० अ० [हिं० सिकुडना] दे० 'सिकुडना'।

सकुन पु[1]—सज्ञा पु० [स० शकुन्त] पक्षी। चिडिया।

यौ०—सकुनाधम।

सकुन[2]—सज्ञा पुं० [स० शकुन] दे० 'शकुन' (सगुन)।

सकुनाधम पु—सज्ञा पुं० [स० शकुन, प्रा०, सकुन+अधम] वह पक्षी जो पक्षियो मे अत्यत निम्नकोटि का माना जाय। काग। कौआ। उ०—सकुनाधम सब भाँति अपावन। प्रभु मोहि कीन्ह विदित जगपावन।—मानस, ७।१२३।

सकुनी पु†[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शकुन्त] पखेरू। चिडिया। पक्षी।

सकुनी[2]—सज्ञा पुं० [स० शकुनि] दुर्योधन का मामा। विशेष दे० 'शकुनि'। उ०—भीषम, द्रोन, करन अस्थामा सकुनी महित काहु न सरी।—सूर०, १।२४६।

सकुपना पु—क्रि० अ० [हिं० सकोपना] दे० 'सकोपना'।

सकुरुड—सज्ञा पु० [स० सकुरुण्ड ?, गुज०] साकुरुड वृक्ष।

सकुल[1]—सज्ञा पु० [स०] १ अच्छा कुल। उत्तम कुल। ऊँचा खानदान। २ सकुची मछली। सकुल मत्स्य। ३ नेवला (को०)। ४ सबधी। रिश्तेदार।

सकुल[2]—वि० १ उत्तम कुलवाला। कुलीन। २ एक ही परिवार का। ३ सपरिवार। परिवार के साथ। उ०—सकुल सदल प्रभु रावन मार्‌यो।—मानस, ६।११५।

सकुलज—वि० [स०] एक ही कुल मे उत्पन्न।

सकुला—सज्ञा पुं० [सं० स+कुल] बौद्ध भिक्षुओ का नेता या सरदार।

सकुलादनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गरेठी। महाराष्ट्री लता। २ कुटकी।

सकुली—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सकुची'।

सकुल्य—सज्ञा पु० [सं०] १ वह जो एक ही कुल का हो। सगोत्र। २ वह जो एक ही गोत्र का किंतु तीन पीढी के ऊपर चौथी, पाँचवी, छठी, सातवी, आठवी या नवी पीढी का हो। ३ दूरवर्ती सबधी (को०)।

सकूतरा—सज्ञा पु० [देश०] एक द्वीप का नाम।

विशेष—यह टापू अरब सागर मे अफ्रीका के पूर्वी तट के समीप है। यहाँ मोती और प्रवाल अधिक मिलते है।

सकूनत—सज्ञा स्त्री० [अ० सकूनत] [वि० सकूनती] रहने का स्थान। निवास स्थान। पता। जैसे,—अदालत मे गवाहो की वल्दियत और सकूनत भी लिखी जाती है।

सकृत्[1]—अव्य० [स०] १ एक बार। एक मरतबा। २ सदा। ३ साथ। सह। ४ एक समय। किसी समय (को०)। ५ तुरत। तत्काल (को०)।

सकृत्[2]—सज्ञा पु० १ पशुओ का मल। विष्ठा। गुह। २ कौआ। काक।

सकृत्प्रज—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसके एक ही बच्चा हो। २ काक। कौआ। ३ सिह। मृगेद्र (को०)।

सक्षणि—वि० [स०] सेवा करने के योग्य। सेव्य।

सक्षत—वि० [स०] क्षतयुक्त। अक्षत का उलटा। व्रणयुक्त। चुटैल।

सक्षम—वि [स०] १ जिसमे क्षमता हो। क्षमताशाली। २ काम करने के योग्य। कार्य मे समर्थ। ३ जो क्षमाशील हो। क्षमा से युक्त (को०)।

सक्षार—वि० [सं०] खारी। क्षारयुक्त। नमकीन (को०)।

सख—सज्ञा पुं० [स० सखि शब्द का कर्ताकारक एकवचन] १ सखा। मित्र। साथी। (समासात मे) जैसे,—वसतसख, सचिवसख। २ एक प्रकार का वृक्ष।

सखत†—वि० [अ० सख्त] दे० 'सख्त'।

सखती†—सज्ञा स्त्री० [अ० सख्त+ई] दे० 'सख्ती'।

सखत्व—सज्ञा पुं० [स०] सखा होने का भाव। सखापन। मित्रता। दोस्ती।

सखर[1]—सज्ञा पु० [स०] एक राक्षस का नाम।

सखर†[2]—वि० [हिं० सखरा] १ दे० 'सखरा'। २ खरा। चोखा। कटु। ३ 'खर' राक्षस से युक्त। जहाँ 'खर' की चर्चा हुई हो। उ०—सखरसुकोमल मजु, दोषरहित दूषण सहित।—मानस, १।१४।

सखरच†—वि० [फा० शाहखर्च] दिल खोलकर व्यय करनेवाला। खर्च करने मे जो कजूस न हो।

सखरज†—वि० [हिं० सखरच] दे० 'सखरच'।

सखरण†—सज्ञा पुं० [हि० शिखरन] दे० 'शिखरन'।

सखरस—सज्ञा पुं० [स० सख ?+हिं० रस] मक्खन। नैनू।

सखरा[1]—सज्ञा पुं० [स० सक्षार] १ खारा। क्षारयुक्त। २ निखरा का उलटा। दे० 'सखरी'।

सखरा[2]—सज्ञा पु० [हिं० निखरी] वह भोजन जो घी मे न पकाया गया हो। कच्ची रसोई। दे० 'सखरी'।

सखरी[1]—सज्ञा स्त्री० [हि० निखरा या निखरी का उल्टा] कच्ची रसोई। कच्चा भोजन। जैसे,—दाल, भात, रोटी आदि जो हिंदू लोग चौके के बाहर या किसी अन्य आदमी के हाथ की नही खाते और जिसमे छूत मानते हैं। विशेष दे० 'निखरी'।

सखरी[2]—सज्ञा स्त्री० [स० शिखर] छोटा पहाड। पहाडी (डि०)।

सखस†—सज्ञा पु० [फा० शख्स] दे० 'शख्स'।

सखसावन—सज्ञा पु० [फा० शख्स+हिं० आवन, अथवा स० सुख+शयन या सुखासन] १ पालकी। पीनस। २ आरामकुरसी। ३ पलग।

सखा[1]—सज्ञा पु० [स० सखि] १ वह जो सदा साथ रहता हो। साथी। सगी। २ मित्र। दोस्त। ३ सहयोगी। सहचर। ४ एक वृक्ष (को०)। ५ साहित्य मे वह व्यक्ति जो नायक का सहचर हो और जो सुख दुख मे उसके समान सुख दुख को प्राप्त हो।

विशेष—सखा चार प्रकार के होते है—पीठमर्द, विट, चेट और विदूषक।

६ पत्नी की बहन का पति। साढू (को०)।

यौ०—सखाभाव = मित्रता। सखाविग्रह = आपसी तकरार। मित्रो की लडाई।

सखा—सज्ञा स्त्री० [अ० सखा] दे० 'सखावत' (को०)।

सखावत—सज्ञा स्त्री० [अ० सखावत] १ सखी या दाता होने का भाव। दानशीलता। २ उदारता। फैयाजी।

सखिता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सखी होने का भाव। २ बधुता। मैत्री। दोस्ती।

सखित्व—सज्ञा पुं० [स०] बधुता। मित्रता। दोस्ती।

सखिपूर्व[1]—सज्ञा पुं० [स०] बधुता। मित्रता।

सखिपूर्व[2]—जिसमे पहले मित्रता रही हो (को०)।

सखिल—वि० [स०] मित्रता से युक्त। मैत्रीपूर्ण। दोस्ती से भरा हुआ (को०)।

सखी[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सहेली। सहचरी। सगिनी। २ साहित्य ग्रथो के अनुसार वह स्त्री जो नायिका के साथ रहती हो और जिससे वह अपनी कोई बात न छिपावे।

विशेष—सखी का चार प्रकार का कार्य होता है—मडन, शिक्षा, उपालभ और परिहास।

३ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे १४ मात्राएँ और अत मे एक मगण या एक यगण होता है। इसकी रचना मे आदि से अत तक दो दो कलें होती है—२+२+२+२+२+२ और कभी कभी २+३+३+२+२+२ भी होता है और विराम ८ और ६ पर होता है। विरामभेद के अनुसार कवियो ने इसके दो भेद किए है—(१) विजात और (२) मनोरम।

यौ०—सखी भाव। सखी सप्रदाय।

सखी[2]—वि० [अ० सखी] दाता। दानी। दानशील। जैसे,—सखी से सूम भला जे तुरत दे जवाब। (कहावत)।

सखीभाव—सज्ञा पुं० [स०] वैष्णवो के अनुसार भक्ति का एक प्रकार जिसमे भक्त अपने आपको इष्टदेवता श्री कृष्ण आदि की पत्नी या सखी मानकर उपासना करता है।

सखीसप्रदाय—सज्ञा पुं० [स० सखी सम्प्रदाय] वैष्णवो का एक सप्रदाय।

विशेष—इस सप्रदाय मे भगवत्प्राप्ति के लिये गोपीभाव को एकमात्र उन्नत साधन माना गया है। इसके प्रवर्तक स्वामी हरिदासजी हैं। यह सप्रदाय निबार्क मत की ही एक अवातर शाखा है।

सखुआ—सज्ञा पु० [सं० शाल] शालवृक्ष। साखू। विशेष—दे० 'शाल'।

सखुन—सज्ञा पु० [फा० सुखन] १ बातचीत। वार्तालाप। २ कविता। काव्य। उ०—जुल्म है गर न दो सखुन की दाद। कहर है गर न करो मुझको प्यार।—कविता कौ, भा० ४, पृ० ४६०। ३ कौल। वचन। जैसे,—मर्दों का सखुन एक होता है।

मुहा०—सखुन देना = वचन हारना। वादा करना। सखुन डालना = (१) कोई बात कहना। कुछ चाहना या माँगना। उ०—सखुन उन्ही पर डाले जो हँस हँस रखे मान।—(शब्द०)। (२) प्रश्न करना। पूछना। सवाल करना।

४ कथन। उक्ति।

सखुनचीन—सज्ञा पुं० [फा० सुखनचीं] चुगुलखोर। चवाई। इधर उधर बात लगानेवाला।

सखुनचीनी—सज्ञा स्त्री० [फा० सुखनचीनी] सखुनचीन का भाव। चुगुलखोरी। चवाव।

सखुनतकिया—सज्ञा पु० [फा० सुखनतकिया] वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगो की जबान पर ऐसा चढ जाता है कि बातचीत करने मे प्राय मुँह से निकला करता है। तकियाकलाम।

विशेष—बहुत से लोग ऐसे होते है जो बातचीत करने मे बारबार 'जो है सो', क्या नाम', 'समझ लीजिए कि' आदि कहा करते है। ऐसे ही शब्दो या वाक्यांशो को सखुनतकिया कहते है।

सखुनदाँ—सज्ञा पुं० [फा० सुखनदाँ] १ वह जो सखुन या काव्य अच्छी तरह समझता हो। काव्य का रसिक। २ वह जो बातचीत का मर्म अच्छी तरह समझता है।

सखुनदानी—सज्ञा स्त्री० [फा० सुखनदानी] १ बातचीत की समझदारी। २ काव्यमर्मज्ञता। काव्यरसिकता।

सखुनपरवर—सज्ञा पु० [फा० सुखनपरवर] १ वह जो अपनी कही हुई बात का सदा पालन करता हो। जबान या बात का धनी। २ वह जो अपनी कही हुई अनुचित या गलत बात का भी बराबर समर्थन करता हो। हठी। जिद्दी।

सखुनफहम—वि० [फा० सुखनफह्म] काव्यमर्मज्ञ। सहृदय। स०—हम सखुनफहम है गालिब के तरफदार नही।—कविता को०, भा० ४, पृ० ४५४।

सखुनवर—सज्ञा पुं० [फा० सुखनवर] कवि। शायर। उ०—देख इस तरह से कहते है सखुनवर सेहरा।—कविता को० भा० ४, पृ० ४५५।

सखुनशनास—सज्ञा पुं० [फा० सुखनशनास] १ वह जो सखुन या काव्य भलीभाँति समझता हो। काव्य का मर्मज्ञ। २ वह जो बातचीत का मर्म बहुत अच्छी तरह समझता हो।

सखुनसज—सज्ञा पुं० [फा० सुखनसज] १ वह जो बात समझता हो। २ वह जो काव्य समझता हो।

सखुनसजी—सज्ञा स्त्री० [फा० सुखनसजी] सखुनसज का भाव।

सखुनसाज—सज्ञा पु० [फा० सुखनसाज]। वह जो सखुन कहता हो। काव्य रचना करनेवाला। कवि। शायर। २ वह जो सदा झूठी बाते गढता हो। अपने मन से झूठी बाते बनाकर कहनेवाला।

सखुनसाजी—सज्ञा पु० [फा० सुखनसाजी] १ सखुनसाज का भाव या काम। २ कवि होने का भाव या काम। ३ झूठी बाते गढने का गुण या भाव।

सखोल—सज्ञा पुं० [स०] राजतरगिणी के अनुसार एक प्राचीन नगर का नाम।

सख्त—वि० [अ० सख्त] १ कठोर। कडा। जो मुलायम न हो। २ मजबूत। दृढ। ३ अत्यत। बहुत ज्यादा। जैसे,—जान सख्त मुश्किल मे आ पडी है। ४ तीव्र। तेज। प्रचड। ५ निर्दय। बेरहम। ६ बहुत बडा। विशाल [को०]।

यौ०—सख्तकमान = (१) योद्धा। पहलवान। (२) ताकतवर। (३) धनुर्धर। सख्तकलाम = कटुभाषी। सख्तकलामी = कटु या दुर्वचन कहना। सख्तगीर = कडी सजा देनेवाला। सख्तगीरी = सख्तगीर का काम। सख्तजबान = कटुभाषी। सख्तजाँ = (१) कठिन परिश्रमी। (२) निलर्ज्जता का जीवन बितानेवाला। (३) सख्तमीर। सख्तजानी = बेहया जीवन। सख्तदिल = निर्दय या बेरहम। सख्तदिली = कठोरहृदयता। सख्तबाजू = प्रत्यत परिश्रमी। सख्तमिजाज = कडे मिजाजवाला। सख्तमीर = जिसके प्राण कठिनता से निकले। सख्तमुश्किल = (१) भारी कठिनाई। गहरी बाधा। (२) अत्यत कठिन। सख्तलगाम = मुँहजोर घोटा।

सख्ती—सज्ञा स्त्री० [फा० सख्ती] १ सख्त होने का भाव। कठोरता। कडाई। २ बेहयाई। निर्लज्जता। ३ कठिनाई। ४ निर्दयता। ५ तेजी। तीखापन। ६ दृढता। ७ तगी [को०]।

यौ०—सख्तीकश = कठिनाइयाँ झेलनेवाला।

मुहा०—सख्ती उठाना = (१) जुल्म सहना। (२) कठिनाइयाँ झेलना। सख्ती मे पेश आना = कठोरता का व्यवहार करना।

सख्य—सज्ञा पुं० [स०] १ सखा का भाव। सखत्व। सखापन। २ मित्रता। दोस्ती। ३ वैष्णव मतानुसार ईश्वर के प्रति वह भाव जिसमे ईश्वरावतारको भक्त अपना सखा मानता है। जैसे,—महात्मा सूरदास का श्रीकृष्ण के प्रति सख्य भाव था। ४ दोस्त। मित्र को०। ५ समानता। बराबरी (को०)।

यौ०—सख्यभग सख्यविसर्जन = मित्रता टूटना। मैत्रीभग। दोस्ती खत्म होना।

सख्यता—सज्ञा स्त्री० [स० सख्यत + ता (प्रत्य०)] दे० 'सख्य'।

सगध[1]—वि० [स० सगन्ध] १ जिसमे गध हो। गधयुक्त। महकदार। २ जिसे अभिमान हो। अभिमानी। ३ सबद्ध। सबधी। सबधित (को०)।

सगधा[2]—सज्ञा पुं० जातिबधु। ज्ञातिसबधी।

सगधा[1]—सज्ञा स्त्री० [स० सगन्धा] एक प्रकार का चावल। सुगधशालि। बाममती चावल।

सगधा[2]—वि० दे० 'सगा'।

सगधी[1]—वि० पुं० [स० सगन्धिन्] जिसमे गध हो। महकदार।

सगधी[2]—वि० दे० 'सगा'।

सग[1]—सज्ञा पुं० [फा०] कुक्कुर। कुत्ता। श्वान।

यौ०—सगजाँ = (१) लालची। लोभी। (२) बेरहम। सगजादा = कुत्ते की औलाद (गाली)। सगबच्चा। पिल्ला। सगवान = कुत्ते की देखरेख करनेवाला। सगवानी = कुत्ते की देखरेख। सगसार = कुत्ते की तरह अपवित्र और निकृष्ट।

सग(यु)[2]—वि० [स० स्वक् अथवा 'सगर्भ' (वर्णलोप)] सगा। (समस्त पदो मे प्रयुक्त) जैसे, सगपन।

सग[3]—सज्ञा पुं० [स० शाक, हिं० साग] शाक। साग। (समस्त पदो मे प्रयुक्त) जैसे, सगपहिता।

सगजुबान—सज्ञा पुं० [फा०] वह घोडा जिसकी जीभ कुत्ते के समान लबी और पतली हो। ऐसा घोडा प्राय ऐबी समझा जाता है।

सगड़ी—सज्ञा स्त्री० [स० शकटी, शकटिका, हिं० सगड] छोटा सगड।

सगण[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ छद शास्त्र मे एक गण जिसमे दो लघु और एक गुरु अक्षर होते हैं। इस गण का प्रयोग छद के आदि मे अशुभ है। इसका रूप ।।ऽ है। २ शिव का एक नाम।

**सगण[२]**—वि० १ जो गणों से युक्त हो। साथियों या दल से युक्त। सदल बल। २ सेना से युक्त। ससैन्य (को०)।

**सगत†**—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] १ शिव की भार्या, पार्वती। (डिं०)। २ शक्ति। ताकत। बल। सामर्थ्य।

**सगतिक**—वि० [स०] १ उपसर्ग से युक्त (को०)। ⑤ २ जिसकी कोई गति हो। अगतिक का विलोम।

**सगती†**—संज्ञा स्त्री० [स० शक्ति] १ पार्वती। (डिं०)। २ एक अस्त्र। शक्ति। ३ ताकत। बल।

**सगदा**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का मादक द्रव्य जो अनाज से बनाया जाता है।

**सगन[१]**—संज्ञा पुं० [स० सगण] १ छंद शास्त्र का एक गण। दे० 'सगण[१]'।

**सगन†[२]**—संज्ञा पुं० [स० शकुन, हिं० सगुन] दे० 'शकुन'। जैसे, सगनौती।

**सगनौती**—संज्ञा स्त्री० [हिं० शकुनौती] दे० 'शकुनौती'।

**सगपन**—संज्ञा पुं० [हिं० सगापन] दे० 'सगापन'।

**सगपहता, सगपहिता‡**—संज्ञा पुं० [स० शाक प्रहित] दे० 'सगपहती'।

**सगपहती, सगपहिती‡**—संज्ञा स्त्री० [हिं० साग + पहिती] एक प्रकार की दाल जो साग मिलाकर बनाई जाती है।

विशेष—प्रायः लोग सगपहिती बनाने के लिये उड़द की दाल में चना, पालक या बथुए का साग मिलाते हैं। कभी कभी अरहर की दाल भी मिलाकर बनाई जाती है।

**सगपिस्ताँ**—संज्ञा पुं० [फा०] लिसोड़ा। बहुवार।

**सगपु**—संज्ञा पुं० [स०] अमरवल्ली।

**सगबग[१]**—वि० [अनु०] १ सराबोर। लथपथ। उ०—(क) बरसावत बहु सुमन को सौरभ मद धारि। सगबग बिंदु मरद सो, ब्रज की चलत बयारि।—अंबिकादत्त (शब्द०)। (ख) पिय चूम्यो मुँह चमि होत रोमांचन सगबग।—व्यास (शब्द०)। २ द्रवित। उ०—मुरली नलिका सो अमी नाथ रहे बगराय। सगबग होत पपान जिहिं सूखे तरु हरिराय।—(शब्द०)। ३ परिपूर्ण। उ०—कित तूठ्यो रतिराज साज सब सजि सुख पागे। किहि सुहाग सगबगे भाग काके पुनि जागे।—(शब्द०)। ४ शंकित। डरा हुआ। भीत।

**सगबग**—क्रि० वि० तेजी से। जल्दी से। चटपट। उ०—उतरि पलँग ते न दियो है धरा पै पग तेऊ सगबग निसि दिन चली जाती है।—भूषण (शब्द०)।

**सगबगना** ⑤—क्रि० अ० [अनु० सगबग + हिं० ना (प्रत्य०)] १ लथपथ या सराबोर होना। उ०—तन पुलकित किहिं हेतु कपोलन परि गई पीरी। रोम सेद सगबगे चाल हू भई अधीरी।—अंबिकादत्त (शब्द०)। २ दे० 'सगबगाना'।

**सगबगाना**—क्रि० अ० [अनु० सगबग] १ लथपथ होना। किसी वस्तु से भीगना या सराबोर होना। २ सकपकाना। शंकित होना। भयभीत होना। ३ हिलना डुलना।

**सगभत्ता†**—संज्ञा पुं० [हिं० साग + भात] एक प्रकार का भात जो साग मिलाकर बनाया जाता है। इसमें पकाते समय चावल में साग मिला देते हैं।

**सगर[१]**—संज्ञा पुं० [हिं० तगर] तगर का फूल और उसका पौधा।

**सगर[२]**—संज्ञा पुं० [स०] १ अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो बहुत धर्मात्मा तथा प्रजारंजक थे।

विशेष—इनका विवाह विदर्भराजकन्या केशिनी से हुआ था। उनकी दूसरी स्त्री का नाम सुमति था। इन स्त्रियों सहित सगर ने हिमालय पर कठोर तपस्या की। इससे संतुष्ट होकर महर्षि भृगु ने आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी पहली स्त्री से तुम्हारा वंश चलानेवाला पुत्र होगा, और दूसरी स्त्री से ६० हजार पुत्र होंगे। सगर की पहली स्त्री से असमंजस नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जो बड़ा उद्धत था। उसे सगर ने अपने राज्य से निकाल दिया। इसके पुत्र का नाम अंशुमान था। सगर की दूसरी स्त्री से साठ हजार पुत्र हुए। एक बार सगर ने अश्वमेध यज्ञ करना चाहा। अश्वमेध का घोड़ा इंद्र ने चुरा लिया और उसे पाताल में जा छिपाया। सगर के पुत्र उसे ढूँढ़ते ढूँढ़ते पाताल में जा पहुँचे। वहाँ महर्षि कपिल के समीप अश्व को बँधा पाकर उन्होंने उनका अपमान किया। मुनि ने क्रुद्ध होकर उन्हें शाप देकर भस्म कर डाला। अपने पुत्रों के न आने पर सगर ने अंशुमान को उन्हें ढूँढ़ने के लिये भेजा। अंशुमान ने पाताल में पहुँच कर मुनि को प्रसन्न किया और वहाँसे घोड़ा लेकर अयोध्या पहुँचा। अश्वमेध यज्ञ समाप्त करके सगर ने तीस सहस्र वर्ष राज्य किया। राजा भगीरथ इन्हीं के वंश के थे।

**सगर[१]**—वि० विष मिला हुआ। विषाक्त (को०)।

**सगर[२]**—संज्ञा पुं० [स० सागर] सागर। तालाब।

**सगरा†[१]**—वि० [स० सकल] [वि० स्त्री० सगरी] सब। तमाम। पूरा समग्र। सकल। कुल।

**सगरा†[२]**—संज्ञा पुं० [स० सागर] १ तालाब। २ झील।

**सगरी**—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नगरी का नाम।

**सगर्भ[१]**—वि० [स०] १ एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर। सगा। (भाई, बहन आदि)। २ रहस्य युक्त। तात्पर्य युक्त। जिसमें भीतर कुछ हो। उ०—नारद बचन सगर्भ सहेतू। सुंदर सब गुननिधि बृषकेतू।—मानस, १।७२। ३ जिसके पत्ते खुले न हों (को०)। ४ अनुरूप। समान (को०)।

**सगर्भ[२]**—संज्ञा पुं० सगा भाई (को०)।

**सगर्भा**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ वह स्त्री जिसे गर्भ हो। गर्भवती स्त्री। २ सहोदरा। सगी बहन।

**सगर्भ्य**—वि० [स०] एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर। सगा (भाई, बहन आदि)।

**सगल** ⑤**†**—वि० [हिं० सकल] दे० 'सकल'।

**सगलगी‡**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सगा + लगना] १ किसी से बहुत सगापन दिखाने की क्रिया। बहुत आपसदारी दिखलाना।

सगोता—वि० [स० सगोत्र] एक ही गोत्र या कुल का।

सगोती'—सज्ञा पु० [स० सगोत्रिन्] १ एक गोत्र के लोग। सगोत्र। २ आपसदारी के या रिश्ते नाते के लोग। भाई बधु।

सगोती'—वि० समान या एक कुल या गोत्र का।

सगोत्र'—सज्ञा पुं० [स०] १ एक गोत्र के लोग। सजातीय। २ कुल। जाति। ३ एक ही कुल का श्राद्ध, पिड, तर्पण करनेवाला व्यक्ति (को०)। ४ दूर का सबधी (को०)।

सगोत्र'—वि० एक ही कुल मे उत्पन्न। बधु (को०)।

सगोत्री—वि०, सज्ञा पु० [स० सगोत्र+ई] दे० 'सगोत्र', 'सगोती'।

सगोनोमर—सज्ञा पुं० [हि० सागौन] सागौन। शाल वृक्ष।

सगोष्ठी—सज्ञा स्त्री० [स०] साहचर्य। मैत्री (को०)।

सगौती—सज्ञा स्त्री० [हि० सगवती] खाने का मास। गोश्त। कलिया।

सगड—सज्ञा पु० [स० शकट] सामान ढोने की गाडी या बोझ ढोने का ठेला।

सग्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] सहभोजन। एकत्र भोजन।

सग्धिति—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सग्धि'।

सग्म—सज्ञा पुं० [स०] यजमान।

सग्रह—वि० [स०] १ ग्रहण लगा हुआ। ग्रस्त (चद्रमा)। २ ग्राहो से परिपूर्ण। जैसे—सग्रह नदी। ३ जिसपर कोई ग्रह लगा हो (को०)।

सघन—वि० [स०] १ घना। गझिन। अविरल। गुजान। जैसे,—सघन जगल। उ०—सघन कुज छाया सुखद शीतल मद समीर।—बिहारी (शब्द०)। २ घन के साथ। बादलो से युक्त। मेघपूरित (को०)। ३ ठोस। ठस।

सघनता—सज्ञा स्त्री० [स०] सघन होने का भाव। निविडता। अविरलता। गुजानी।

सघली†—वि० स्त्री० [हि० सगरी] समग्र। सब। सारी। सगरी।

सचद्रक वि० [स० सचन्द्रक] [वि० स्त्री० सचद्रिका] जिसपर चद्रमा के समान आकृतियाँ हो (को०)।

सच'—वि० [स० सत्य, प्रा० सच्च, अप० सच्च] जो यथार्थ हो। सत्य। वास्तविक। ठीक। दे० 'सत्य'।

सच'—वि० [स० √सच्] १ जो आदर समान करे। पूजक। अर्चक। २ लगा हुआ। सबद्ध (को०)।

सचकित—वि० [स०] १ भौचक्का। जिसे विस्मय हुआ हो। २ डर के मारे काँपता हुआ (को०)।

सचक्र—वि० [स०] १ पहियो या गडारी से युक्त। २ चक्करदार। घेरा या वलय से युक्त। मडलाकार। ३ चक्र नामक आयुध से युक्त। ४ सेना से युक्त। जिसके पास सेना हो (को०)।

सचक्री—सज्ञा पुं० [स० सचक्रिन्] वह जो रथ चलाता हो। सारथी।

सचन—सज्ञा पुं० [स०] १ सेवा करने की क्रिया या भाव। सेवन। २ सम्मान। आदर (को०)। ३ सहयोगी। सहायक (को०)।

सचना'†—क्रि० स० [स० सञ्चयन] १ सचय करना। एकत्र करना। जमा करना। बटोरना। उ०—दान करन है दुइ जग तरा। रावन सचा अगिन महँ जरा।—जायसी (शब्द०)। २ सज्जित करना। सजाना। ३ सपादित करना। पूरा करना। उ०—अहु कुड शोनित सो भरे पितु तर्पणादि किया सची।—केशव (शब्द०)।

सचना'†—क्रि० अ०, क्रि० स० १ दे० 'सजना'। उ०—जो कछु सकल लोक की शोभा लै द्वारिका सची री।—सूर (शब्द०)। २ प्रसन्न होना। अनुकूल होना।

सचनावत्—सज्ञा पु० [स०] परमेश्वर, जिसका भजन सब लोग करते है।

सचमुच—अव्य० [हिं० सच+मुच (अनु०)] १ यथार्थत। ठीक ठीक। वास्तव मे। वस्तुत। २ अवश्य। निश्चय। निस्सदेह।

सचर'—सज्ञा पु० [स०] श्वेत भिरटी। सफेद कटसरैया।

सचर'—वि० [स० स+√चर् (=गति)] सचल। जो चलता रहे। गतिशील। जगम।

यौ०—सचराचर।

सचरना†—क्रि० अ० [सं० सञ्चरण] १ किसी बात का विख्यात होना। सचरित होना। फैलना। २ किसी वस्तु या प्रथा का अधिक व्यवहार मे आना। बहुत प्रचलित या प्रसिद्ध होना। ३ सचार करना। प्रवेश करना। उ०—कुटिल अलक भ्रुव चारु नैन मिलि सचरे श्रवण समीप सुमीति। वक्र विलोकनि भेद भेदिआ जोइ कहत सोइ करत प्रतीति।—सूर (शब्द०)।

सचराचर'—सज्ञा पुं० [स०] १ ससार की सब चर और अचर वस्तुएँ। स्थावर और जगम सभी वस्तुएँ। २ जगत्। विश्व। ससार (को०)।

सचराचर'—वि० जिसमे सचल और अचल सभी आ जायँ। जगम और स्थावर युक्त (को०)।

सचल'—सज्ञा पु० [स०] वह वस्तु जिसमे गति की सामर्थ्य हो। सचर। चर। जगम।

सचल'—वि० चलायमान। चर। चलनेवाला।

सचल लवण—सज्ञा पु० [स०] सौवर्चल लवण। साँचर नमक।

सचलता—सज्ञा स्त्री० [स०] सचल होने का भाव। जगम होने का भाव। सचरणशीलता (को०)।

सचा—सज्ञा पु० [स० सचा (=निकट)] दे० 'सखा'।

सचाई—सज्ञा स्त्री० [स० सत्य, प्रा० सच्च+हिं० आई (प्रत्य०)] १ सच्चा होने का भाव। सत्यता। सच्चापन। ईमानदारी। २ वास्तविकता। यथार्थता।

सचान—सज्ञा पुं० [स० सञ्चान (=श्येन)] श्येनपक्षी। बाज। उ०—गएउ सहमि नहि कछु कहि आवा। जनु सचान बन झपटेउ लावा।—मानस, २।२९।

सचारना†—क्रि० स० [सं० सञ्चारण] सचरना का सकर्मक रूप। सचारित करना। फैलाना।

सचारु—वि० [स०] जो बहुत सुदर हो। चारुतायुक्त।

सचावट†—सज्ञा स्त्री० [हिं सच+आवट (प्रत्य०)] सच्चापन। सचाई। सत्यता।

सचिक—वि० [स० सचिङ्क] चेतनायुक्त।

सचित—वि० [स० सचिन्त] [वि० स्त्री० सचिता] जिसे चिंता हो। फिक्रमद।

सचि'—सज्ञा पुं० [सं०] १ सखा। दोस्त। मित्र। २ मैत्री। दोस्ती। घनिष्ठता [को०]।

सचि'—सज्ञा स्त्री० इद्र की पत्नी। शची [को०]।

सचिक्कण—वि० [स०] अत्यत चिकना। बहुत अधिक चिकना। जैसे—सचिक्कण केश।

सचिक्कन—वि० [स० सचिक्कण] अत्यत चिकना। अत्यत स्निग्ध। उ०—सहज सचिक्कन स्याम रुचि, सुचि सुगध सुकुमार। गनत न मन पथ अपथ लखि बिथुरे सुथरे बार।—बिहारी (शब्द०)।

सचित्—वि० [स०] चित् से युक्त। जिसे ज्ञान या चेतना हो।

सचित्क—सज्ञा पुं० [स०] चिंतन। विचारना। मनन [को०]।

सचित्त'—सज्ञा पुं० [स०] वह जिसका ध्यान एक ही ओर लगा हो।

सचित्त'—वि० १ समान चित्तवाला। २ सावधान। सचेत। ३. प्रज्ञायुक्त। बुद्धिमान्। ४ जिसका चित्त किसी एक तरफ लगा हो [को०]।

सचित्र—वि० [स०] १ चित्रों से शोभित। चित्रों से सजा हुआ या अलकृत। २ जिसमे चित्र हो। चित्रों से युक्त। ३. शबलित। रगबिरगा। चित्रित [को०]।

सचिल्लक—सज्ञा पुं० [स०] १ क्लिन्नचक्षु। २ जिसकी दृष्टि खराब हो।

सचिव—सज्ञा पुं० [स०] १ मित्र। दोस्त। सखा। २ मत्री। वजीर। (अ० सेक्रेटरी)। ३ सहायक। मददगार। ४ काला धतूरा या काले धतूरे का वृक्ष। ५ किसी सघटन या सस्था के सचालन का उत्तरदायित्व वहन करनेवाला व्यक्ति।

सचिवता—सज्ञा स्त्री० [स०] सचिव होने का भाव या धर्म।

सचिवत्व—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सचिवता' [को०]।

सचिक्कामय—सज्ञा पुं० [स०] १ पाडु रोग। पीलिया। २ विसर्प रोग।

सचिवालय—सज्ञा पुं० [स० सचिव+आलय] वह स्थान या भवन जहाँ किसी राज्य के विभिन्न विभागीय मत्रियो तथा सर्वोच्च अधिकारियो के कार्यालय हो (अ० सेक्रेटरियट)।

सची—सज्ञा स्त्री० [स०] १ इद्र की स्त्री का नाम। इद्राणी। दे० 'शची'। २ अगर। अगरु।

यौ०—सचीनदन = सचीसुत।

सचीसुत—सज्ञा पु० [स०] १. शची का पुत्र, जयत। २ श्रीचैतन्यदेव।

सचु†—सज्ञा पु० [स० √सच्] १ सुख। आनद। उ०—(क) मुक्तामाल बाल बग पगति करत कुलाहल कूल। सारस हस मध्य शुक सैना, बैजयति सम तूल। पुरइनि कपिश निचोल विविध रँग विहँसत सचु उपजावै। सूर श्याम आनद कद की शोभा कहत न आवै।—सूर (शब्द०)। (ख) अँखियन ऐसी धरनि धरी। नदनँदन देखे सचु पावै या सो रहति डरी।—सूर (शब्द०)। २ प्रसन्नता। खुशी।

सचेत—वि० [स० सचेतन] १ चेतनायुक्त। दे० 'सचेतन'। २ सज्ञान। समझदार। ३ सजग। सावधान। होशियार। जैसे,—जब वह आया करे, तब तुम सचेत रहा करो।

सचेतक—सज्ञा पु० [स० सचेत+क] ससद् वा विधान सभा का वह अधिकारी जो सदस्यो को आवश्यक सूचना देने, अनुशासन का पालन कराने, मतदान के निमित्त बुलाने आदि की व्यवस्था करता है। (अ० ह्विप)।

सचेतन'—सज्ञा पुं० [स०] १ वह प्राणी जिसे चेतना हो। विवेकयुक्त प्राणी। २ वह वस्तु जो जड न हो। चेतन।

सचेतन'—वि० १ चैतन्य। चेतनायुक्त। २ सावधान। होशियार। ३ समझदार। चतुर।

सचेता—वि० [स० सचेतस्] १ एक मत होनेवाला। एक राय होनेवाला। सहमत। २ बुद्धि या समझ रखनेवाला। ३ सचेत। भावनायुक्त। भावुक [को०]।

सचेती—सज्ञा स्त्री० [हि० सचेत+ई (प्रत्य०)] १ सचेत होने का भाव। २ सावधानी। होशियारी।

सचेल—वि० [स०] वस्त्रयुक्त। जो कपड़ा पहने हुए हो। परिधानयुक्त। वस्त्राच्छादित [को०]।

यौ०—सचेलस्नान = वस्त्र पहने हुए स्नान करना।

सचेष्ट'—वि० [स०] १ जिसमे चेष्टा हो। २ जो चेष्टा करे।

सचेष्ट'—सज्ञा पु० [स०] आम्रवृक्ष। आम का पेड।

सचैयत—सज्ञा स्त्री० [हिं० सच्च+ऐयत (प्रत्य०)] सचावट। सच्चाई। सत्यता। सच्चापन।

सचोर—सज्ञा पु० [देश०] गुजराती ब्राह्मणो की एक जाति।

सच्चरित'—वि० [स०] जिसका चरित्र अच्छा हो। सच्चरित्र। उ०—सब सुखी सब सच्चरित सुदर नारि नर सिसु जरठ जे।—मानस, ७।२८।

सच्चरित'—सज्ञा पु० १ सत्पुरुषो का चरित्र या वृत्त। २ सत् आचरण। सदाचरण [को०]।

सच्चरित्र—वि०, सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सच्चरित'।

सच्चर्या—सज्ञा स्त्री० [स०] उत्तम आचरण। अच्छी चाल चलन।

सच्चा—वि० [स० सत्य, प्रा० सत्त, अप० सच्च] [वि० स्त्री० सच्ची] १ सच बोलनेवाला। जो कभी झूठ न बोलता हो। सत्यवादी। ईमानदार। २ जिसमे झूठ न हो। यथार्थ। ठीक। वास्तविक। जैसे,—सच्चा मामला। ३ असली। विशुद्ध। जैसे,—सच्चा सोना। सच्चा घी। ४. बिलकुल ठीक और पूरा। जितना या जैसा चाहिए, उतना या वैसा। जैसे,—(क) तुमने भी उसपर खूब सच्चा हाथ मारा। (ख) यह तसवीर बहुत सच्ची जडी गई है।

सच्चाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० सच्चा+आई (प्रत्य०)] सच्चा होने का भाव। सच्चापन। सत्यता।

सच्चापन—सज्ञा पु० [हिं० सच्चा+पन (प्रत्य०)] सत्य होने का भाव। सत्यता। सचाई।

सच्चार—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो सपत्ति की रक्षा करता है। २ कुशल दूत। चतुर गुप्तचर (को०)।

सच्चारा—सज्ञा स्त्री० [स०] हलदी। हरिद्रा।

सच्चाहट—सज्ञा स्त्री० [हिं० सच्चा+हट (प्रत्य०)] सच्चा होने का भाव। सच्चापन। सत्यता।

सच्चिकन—वि० [सं० सचिक्कण] दे० 'सचिक्कण', 'सचिक्कन'।

सच्चित्—सज्ञा पुं० [स०] सत् और चित् दोनो से युक्त, ब्रह्म।

सच्चिदानद—सज्ञा पुं० [स० सच्चिदानन्द] (सत्, चित् और आनद से युक्त होने के कारण) परमात्मा का एक नाम। ईश्वर। परमेश्वर।

सच्चिन्मय—वि० [स०] सत् और चित् अर्थात् चैतन्य से युक्त। सत् और चैतन्य का स्वरूप।

सच्छद'—वि० [स० सच्छन्द] [वि० स्त्री० सच्छदा] समान अथवा एक ही तरह के छदोवाला (को०)।

सच्छद[२]—वि० [स० स्वच्छन्द] दे० 'स्वच्छद'।

सच्छत—वि० [स० स+क्षत] जिसे क्षत लगा हो। घायल। जख्मी। उ०—जिनको जग अच्छत सीस धरै। तिनको जग सच्छत कौन करै।—केशव (शब्द०)।

सच्छाक—सज्ञा पु० [स० सत्+शाक] अदरक का पत्ता। आदी का पत्ता (को०)।

सच्छाय—वि० [स०] १ समान या एक रग का। २ भासमान्। भास्वर। जो चमकनेवाला हो। ३ छायादार। छायायुक्त। जिसमे छाया हो। जैसे,—सच्छाय वृक्ष (को०)।

सच्छास्त्र—सज्ञा पुं० [स०] वह ग्रथ जो सिद्धातो का अच्छे ढग से प्रतिपादन करे (को०)।

सच्छिद्र—वि० [सं०] १ दोषयुक्त। जिसमे ऐब हो। २ छिद्रयुक्त। छेदवाला (को०)।

सच्छी[१]—सज्ञा पु० [स० साक्षी] गवाह या दर्शक। दे० 'साक्षी'।

सच्छी[२]—सज्ञा स्त्री० गवाही। दे० 'साक्षी'।

सच्छील'—वि० [स०] शीलयुक्त। उदात्त गुणोवाला (को०)।

सच्छील[२]—सज्ञा पु० अच्छा या भला आचरण (को०)।

सच्छलोक—वि० [स० सत्+श्लोक] जिसकी सुदर कीर्ति हो। अच्छे नाम या ख्यातिवाला (को०)।

सच्युति'—सज्ञा स्त्री० [स०] दल बल सहित चलना।

सच्युति[२]—वि० १ रेतस् स्खलन युक्त। २ स्खलन युक्त (को०)।

सछद—वि० [स० स+छन्द] १ जो छद युक्त हो। २ स्वैराचारी। २ चालवाला। चालबाज। ४. समूह या परिकर से युक्त।

सजवाल—वि० [स० सजम्बाल] कीचड से युक्त। पकिल (को०)।

सज'—सज्ञा स्त्री० [स० सज्जा, हिं० सजावट] १ सजने की क्रिया या भाव।

यौ०—सजधज।

२ रूप। बनाव। डौल। शकल। ३ शोभा। सौदर्य। सजावट। शृगार।

सज[२]—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत लबा वृक्ष। असीन का पेड।

विशेष—इस वृक्ष के पत्ते शिशिर ऋतु मे झड जाते हैं। यह हिमालय, बगाल और दक्षिण भारत मे अधिकता से पाया जाता है। इसके हीर की लकडी बहुत कडी और मजबूत होती है। इसकी लकडी का रग स्याही लिए भूरा होता है और यह जहाज, नाव आदि बनाने मे काम आती है। इसे कहीं कहीं असीन भी कहते है। यह बहुत लबा वृक्ष होता है।

सजग—वि० [हिं० जागगा जागरूकता से युक्त)] सावधान। सचेत। सतर्क। होशियार। उ०—(क) तव आयुहु बस होइहै जिमि धनिया कर भूत। तदपि सजग रहिए सदा रिपु सम जानि कपूत।—(शब्द०)। (ख) जौ राजा अस सजग न होई। काकर राज कहाँ कर होई।—जायसी (शब्द०)।

सजडा†—सज्ञा पुं० [हिं० सहिजन] दे० 'सहिजन' (वृक्ष)।

सजदार—वि० [हिं० सज+फा० दार (प्रत्य०)] जिसकी आकृति अच्छी हो। सुदर।

सजधज—सज्ञा स्त्री० [हिं० सज+धज अन०] बनाव सिगार। सजावट। जैसे,—उनकी बारात बहुत सजधज से निकली थी।

सजन'—सज्ञा पु० [स० सत्+जन (=सज्जन)] [स्त्री० सजनी] १ भला आदमी। सज्जन। शरीफ। २ पति। भर्ता। उ०—बहुत नारि सुभाग सुदरि और घोष कुमारि। सजन प्रीतम नाऊँ लै लै देहिं परस्पर गारि।—सूर (शब्द०)। ३ प्रियतम। आशना। यार।

सजन[२]—वि० [स०] जनयुक्त। जनसहित। जहाँ लोग रहते हों। जिसमे लोग हो।

सजन[३]—सज्ञा पु० १ एक ही परिवार या कुल के आदमी। सबधी जन। २ जनसमाज। लोग बाग (को०)।

सजनपद—वि० [स०] समान या एक जनपद का (को०)।

सजना[१]—क्रि० अ० [स० सज्जा] १ भूषण, वस्त्र आदि से अपने को सज्जित करना। अलकृत करना। शृगार करना। उ०—तीज परब सौतिन सजे, भूषन बसन सरीर। सबै मरगजे मुँह करी, वहे मरगजे चीर।—बिहारी (शब्द०)। २ शोभा देना। शोभित होना। भला जान पडना। जैसे,—यह गुलदस्ता भी यहाँ खूब सजता है। ३ शस्त्रास्त्र से सुसज्जित होना। रण के लिये तैयार होना। उ०—हमहीं चलिहै ऋषि सग अबै। सजि सैन चलै चतुरग सबै।—केशव (शब्द०)।

सजना[२]—क्रि० स० १ वस्तुओ को उचित स्थान मे रखना जिसमे वे सुदर जान पडें। व्यवस्थित करना। सजाना। सुसज्जित

करना। माजना। जैसे,—मकान सजना, थाली सजना। २ किसी वस्तु को धारण करना।

सजना[1]—संज्ञा पु० [हिं० सहिंजन] दे० 'सहिंजन'।

सजना[2]—संज्ञा पु० [सं० सज्जन, हिं० सुजन] मित्र। प्रियतम।

सजनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० साजन] सखी। सहेली। मित्र स्त्री।

सजनाथ—वि० [सं०] प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर।

सजनु—वि० [सं०] सहजात। एक साथ उत्पन्न या निर्मित (को०)।

सजन्य—संज्ञा पु० [सं०] जो नातेदार या रिश्तेदार सबंधी हो (को०)।

सजप—संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो तूष्णीम् या मौन भाव से जप में रत हो। २ एक प्रकार के संन्यासी (को०)।

सजबज—संज्ञा स्त्री० [हिं० सज + बज (अनु०)] दे० 'सजधज'।

सजल[1]—वि० [सं०] १ जल से युक्त या पूर्ण। जिसमें पानी हो। २ अश्रुपूर्ण (नेत्र)। आँसुओं से पूर्ण (आँख)। उ०—लोचन सजल मकरद भरे अरविंद खुलो खुले बूँदपति मधुप किशोर को।—काव्यकलाधर (शब्द०)।

यौ०—सजलनयन, सजलनेत्र = आँसूभरी आँखोंवाला।

सजल[2]—वि० [हिं० मँझला का अनु०] [हिं० सजली] चार सहोदरों में से तीसरा। मँझले से छोटा पर सबसे छोटे से बड़ा।

सजल[3]—वि० स्त्री० [सं०] जल से भरी हुई। जलयुक्त।

सजवना†—संज्ञा पुं० [हिं० सजना] सजने की क्रिया या भाव। तैयारी। उ०—बहुतन्ह अस गढ कीन्ह सजवना। अत भई लंका जस रवना।—जायसी (शब्द०)।

सजवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सज (ना) + वाई (प्रत्य०)] १ सजवाने की क्रिया। २ सुसज्जित करवाने का भाव। ३ सजाने की मजदूरी। जैसे,—इस टोपी की सजवाई दो रुपए लगे हैं।

सजवाना—क्रि० स० [हिं० सजाना का प्रे० रूप] किसी के द्वारा किसी वस्तु को सुसज्जित कराना। सुसज्जित करवाना। जैसे,—आज कल महाराज अपनी कोठी सजवा रहे हैं।

सजा[1]—संज्ञा पुं० [अ० सजअ] तुक। अत्यानुप्रास। अनुप्रास (को०)।

सजा[2]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सजा] १ अपराध आदि के कारण होनेवाला दंड। २ प्रत्यपकार। बुराई का बदला (को०)। ३. अर्थदंड (को०)। ४ कारागार का दंड। जेल में रखने का दंड।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—पाना।—भुगतना।—मिलना।—होना।

यौ०—सजायाफ्ता। सजायाब।

सजाइ†—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सजा] सजा। दंड। उ०—पर्वतसहित धोइ ब्रज डारौ देउ समुद्र बहाइ। मेरी बलि औरहि लै अरपत इनको करै सजाइ।—सूर०, १०।८२२।

सजाई[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सजाना + आई (प्रत्य०)] १. सजाने की क्रिया। सजाने का काम। २ सजाने का भाव। ३. सजाने की मजदूरी।

सजाई[2]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सजा] दे० 'सजा'। उ०—जो असत्य कछु कहब बनाई। तौ विधि देइहि हमहि सजाई।—मानस, २।१९।

सजागर—वि० [सं०] १ जागता हुआ। २ सजग। होशियार।

सजात[1]—वि० [सं०] १ सहजात। साथ साथ उत्पन्न। २ बंधु बांधव से युक्त (को०)।

यौ०—सजातकाम = परिजनों पर शासन करने की इच्छावाला।

सजात[2]—संज्ञा पु० भाई (को०)।

सजाति[1]—वि० [सं०] एक जाति का। समान जाति का। जैसे,—(क) वे तो हमारे सजाति हो हैं। (ख) ये दोनों वृक्ष सजाति हैं। २ समान। तुल्य (को०)।

सजाति[2]—संज्ञा पु० १ वह बालक जो एक ही जाति के माता पिता से उत्पन्न हो (को०)।

सजातीय[1]—वि० [सं०] १ एक जाति या गोत्र का। २ समान। तुल्य (को०)।

सजातीय[2]—संज्ञा पु० दे० 'सजाति[2]'।

सजात्य[1]—वि० [सं०] दे० 'सजातीय'।

सजात्य[2]—संज्ञा पु० बंधुत्व। भाईचारा (को०)।

सजान—संज्ञा पुं० [सं० सज्ञान] १ जानकार। जाननेवाला। २ चतुर। होशियार।

सजाना—क्रि० स० [सं० सज्जा] १ वस्तुओं को यथास्थान रखना। यथाक्रम रखना। तरतीब लगाना। २ अलंकृत करना। सँवारना। शृंगार करना।

सजानि—वि० [सं०] पत्नी के सहित। सपत्नीक (को०)।

सजाय[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह जो अपनी स्त्री के सहित वर्तमान हो।

सजाय†[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सजा] दे० 'सजा'। उ०—पैंहहि सजाय ननु कहत बजाय तोहि, बावरी न होहि बानि जानि कपिनाह की। आन हनुमान को दोहाई बलवान को, सत्य महावीर को, जो रहै पीर बाँह को।—तुलसी (शब्द०)।

सजायाफ्ता—संज्ञा पु० [फ़ा० सजायाफ्तह्] वह जिसने दंड विधान के अनुसार दंड पाया हो। वह जो सजा भोग चुका हो। वह जो कैदखाने हो आया हो।

सजायाब—वि० [फ़ा० सजायाब] १ जो दंड पाने के योग्य हो। दंडनीय। २ जो कानून के अनुसार सजा भोग चुका हो। जिसे कारागार का दंड मिल चुका हो।

सजार, सजारु—संज्ञा पुं० [सं० शल्यक] साहिल। शल्यक। साही।

सजाल—वि० [सं०] जालदार। केसरयुक्त (को०)।

सजाव[1]—संज्ञा पुं० [सं० सद्य, प्रा० सज्ज + हिं० आव (प्रत्य०)] एक प्रकार का दही। मलाईदार मीठा दही।

विशेष—इसे बनाने के लिये दूध को पहले खूब उबालते हैं और तब उसमें जामन छोड़ते हैं, इस प्रकार जमा हुआ दही बहुत उत्तम होता है, उसको साँठी या मलाई बहुत मोटी और

चिकनी होती है। प्राय 'दही' शब्द के साथ ही इस शब्द का प्रयोग मिलता है और विशेष अर्थ देता है। जैसे,—भावभरी कोऊ लिए रुचिर मजाव दही कोऊ मही मजु दावि दलकति पाँसुरी। —रत्नाकर, भा० १ पृ० १५१।

सजाव[2]—सज्ञा स्त्री० दे० 'सजावट'।

सजावट—सज्ञा स्त्री० [हिं० सजाना+आवट (प्रत्य०)] १ सज्जित होने का भाव या धर्म। जैसे,—उनके मकान की सजावट भी देखने ही योग्य है। २ शोभा। ३ तैयारी।

सजावन Ⓟ†—सज्ञा पुं० [हिं० सजाना] १ सजाने की क्रिया। अलकृतकरण। मडन। २ तैयार करने की क्रिया। सुसज्जित करना। उ०—अब तो नाथ विलव न कीजै। सैन सजावन शासन दीजै।—रघुराज (शब्द०)।

सजावल—सज्ञा पु० [तु० सजावुल] १ सरकारी कर उगाहनेवाला कर्मचारी। तहसीलदार। २ राजकर्मचारी। ३ सिपाही। जमादार।

सजावली—सज्ञा स्त्री० [तु० सजावुल+ई (प्रत्य०)] १ सजावल का काम। २ सजावल का पद या ओहदा।

सजावार—वि० [फा० सजावार] १ जो दड का भागी हो। जो सजा पाने के योग्य हो। २ योग्य। सत्पात्र (को०)।

सजिना—सज्ञा पु० [हिं० सहिंजन] दे० 'सहिंजन'।

सजीउ Ⓟ†—वि० [स० सजीव] दे० 'सजीव'।

सजोदा—वि० [फा० सज़ीदह्] लायक। पात्र। योग्य (को०)।

सजोया—सज्ञा पु० [अ०] आदत। स्वभाव। प्रकृति (को०)।

सजीला—वि० [हिं० सजना+ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सजीली] १ सजधज के साथ रहनेवाला। छैला। छबीला। जैसे,—वह बहुत अच्छा और सजीला जवान है। २ सुदर। सुडौल। मनोहर।

सजीव[1]—वि० [स०] १ जीवयुक्त। जिसमे प्राण हो। उ०—हस्ति सिंघली बाँधे बारा। जनु सजीव सब ठाढ पहारा।—जायसी (शब्द०)। २ फुरतीला। तेज। ३ ज्यायुक्त। प्रत्यचायुक्त (को०)। ४ ओजयुक्त। ओजस्वी। जैसे,—उनकी कविता बडी सजीव है।

सजीव[2]—सज्ञा पुं० प्राणी। जीवधारी।

सजीवता—सज्ञा स्त्री० [स०] सजीव होने का भाव। सजीवपन।

सजीवन—सज्ञा पु० [स० सञ्जीवन] सजावनी नामक बूटी। विशेष दे० 'सजीवनी'।

सजीवनबूटी—सज्ञा स्त्री० [स० सञ्जीवनी+हिं० बूटी] रुदती। रुद्रवती। विशेष दे० 'सजीवनी'।

सजीवनमूर सजीवनमूल Ⓟ—सज्ञा पुं० [स० सञ्जीवनी] सजीवनी बूटी। विशेष दे० 'सजीवनी'।

सजीवनी मत्र—सज्ञा पु० [स० सञ्जीवन+मन्त्र] १ पुराणादि मे उक्त वह मत्र जिसके सबध मे लोगो का विश्वास है कि मरे हुए मनुष्य या प्राणी को जिलाने की शक्ति रखता है। २ वह मत्र जिससे किसी कार्य मे सुभीता हो। उपकारी मत्रणा।

सजीह—सज्ञा पु० [फा०] स्वभाव।

सजु[1]—वि० [स० सजुष्] १ जो प्रिय हो। प्यारा। २ परस्पर सबद्ध। एक साथ रहनेवाला (को०)।

सजु[2]—सज्ञा पु० मित्र। दोस्त। साथी (को०)।

सजुग Ⓟ†—वि० [हिं० सजग] सजग। सचेत। होशियार। उ०—लोभी चोर दूत ठग छोरा रहहिं यह पाँव। जो यह हाट सजुग भा गँठ ताकर पै बाँच।—जायसी (शब्द०)।

सजुता—सज्ञा स्त्री० [स० सयुता] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण, दो जगण और एक गुरु होता है। (स ज ज ग) विशेष दे० 'सयुत'।

सजूरी—सज्ञा स्त्री० [स० सजुष् (=प्रिय) ?] एक प्रकार की मिठाई। उ०—(क) कमल नैन हरि करौ बियारी। लुचुई लपसी मद्य जलेबी सोइ जेवहु जो लगै पियारी। घेवर मालपुवा मोतिलाडू मधर सजूरी सरस सवारी।—सूर०, १।२२७। (ख) माधुरि अति सरस सजूरी। सद परसि धरी घृत पूरी।—सूर (शब्द०)।

सजोना†—क्रि० स० [हिं० सजाना] १ सज्जित करना। शृगार करना। २ सामान करना। सरजाम करना।

सजोयल Ⓟ—वि० [हिं० सजोना] दे० 'सँजोइल'।

सजोष—वि० [सं०] (वे) जिनमे समान प्रीति हो। मेल से कोई काम करनेवाले।

सजोषण—सज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत दिनो से चली आई हुई समान प्रीति। २ साथ साथ आनद लेना। सम्मिलित रूपेण आनद मनाना या लेना (को०)।

सज्ज Ⓟ[1]—सज्ञा पु० [हिं० साज] दे० 'साज'।

सज्ज[2]—वि० [सं०] १ सज्जित। सजा हुआ। तैयार किया हुआ। २ परिधानयुक्त। कपडे धारण किए हुए। ३ सँवारा हुआ। भूषित। अलकृत। ४ शस्त्र आदि से सुसज्जित। सुरक्षित, दृढ या परिखा आदि से घेरा हुआ। ६ प्रत्यचायुक्त (को०)।

सज्जक—सज्ञा पु० [स०] सज्जा। सजावट।

सज्जकर्म—सज्ञा पु० [स० सज्जकर्मन्] १ सज्जित करना या होना। २ धनुष पर प्रत्यचा चढाना (को०)।

सज्जण[1]—सज्ञा पु० [स० सज्ज] फौज की तैयारी। (डिं०)।

सज्जण[2]—सज्ञा पु० [स० सज्जन] प्रिय। प्रियतम। दे० 'सज्जन'। उ०—चाल सखी तिण मदिरइँ सज्जण रहियउ जेण। कोइक मीठउ बोलडइ लागो होसी तेण।—ढोला०, दू० ३५६।

सज्जता—सज्ञा स्त्री० [स०] सज्जा का भाव। सजावट।

सज्जन—सज्ञा पुं० [स० सत्+जन] १ भला आदमी। सत्पुरुष। शरीफ। २ अच्छे कुल का मनुष्य। ३ प्रिय मनुष्य। प्रियतम। ४ चौकीदार। सतरी। ५ घाट। ६ बाँधना या लटकाना (को०)। ७ तैयारी करना (को०)। ८. शस्त्रादि से सज्जित होना (को०)। ९ सजाने की क्रिया या भाव। सज्जा।

सज्जनता—सज्ञा स्त्री० [स०] सज्जन होने का भाव। सत्पुरुषता। भलमनसाहत। भलमनसी। सौजन्य। साधुता।

सज्जनताईपु०—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्जन+हिं० ताई (प्रत्य०)] दे० 'सज्जनता'।

सज्जन१—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह हाथी जिसपर नायक या सवार चढता हो। २ अलकृत करना। भूषित करना (को०)। ३ अलकरण। प्रसाधन। भूषण। सजावट (को०)। ४ सवारी के पहले हाथी को सज्जित करना (को०)।

सज्जा१—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। २ वेशभूषा। ३ युद्ध का उपकरण। सैनिक साजसामान। शस्त्र, कवच आदि (को०)।

सज्जा२—संज्ञा स्त्री० [स० शय्या, प्रा० सज्जा, सेज्जा] १ चारपाई। शय्या। २ चारपाई, तोशक, चादर आदि वे सामान जो किसी के मरने पर उसके उद्देश्य से महापात्र को दिए जाते है। विशेष दे० 'शय्यादान'।

सज्जा३—वि० [स० सव्य] दाहिना। (पश्चिम)।

सज्जाद—वि० [अ०] आराधक। उपासना करनेवाला (को०)।

सज्जादगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] गद्दीनशीनी (को०)।

सज्जादा—संज्ञा पु० [अ० सज्जादह्] १ बिछाने का वह कपडा जिसपर मुसलमान नमाज पढते हैं। मुसल्ला। जानमाज। २. आसन। ३. फकीरो या पीरो आदि की गद्दी।

सज्जादानशीन—संज्ञा पुं० [अ० सज्जादह्+फा० नशीन] १ वह जो गद्दी या तकिया लगाकर बैठता हो। २ मुसलमान पीर या बडा फकीर।

सज्जित—वि० [स०] १ जिसकी खूब सजावट हुई हो। अलकृत। आरास्ता। २. आवश्यक वस्तुओ से युक्त। तैयार। जैसे,—युद्ध के निमित्त सज्जित सैन्य। ३ परिधानयुक्त। वस्त्र आदि धारण किए हुए (को०)। ४ शस्त्रो से सजा हुआ। ५ बद्ध। सबद्ध। लगा हुआ (को०)।

सज्जी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्जि, सर्जिका] एक प्रकार का प्रसिद्ध क्षार जो सफेदी लिए हुए भूरे रग का होता है।

विशेष—सज्जी दो प्रकार की होती है। एक वह जो मालवा की ओर बनाई जाती है। इसमे बडी बडी खाइयाँ खोदकर उनमे वृक्षो की शाखाएँ और पत्ते आदि भरकर आग लगा देते है। जब वे जलकर जम जाते है, तब उनकी राख को खारी कहते हैं। इसी खारी से भूमि मे सज्जी बनाते हैं। दूसरे प्रकार की सज्जी खार (क्षार) वाली जमीन मे होती है। खार के कारण भूमि फूल जाती है और उसी फूली हुई मिट्टी को सज्जी कहते है। वैद्यक के अनुसार सज्जी गरम, तीक्ष्ण और वायुगोला, शूल, वात, कफ, कृमिरोग आदि को शात करनेवाली मानी जाती है।

सज्जीखार—संज्ञा पुं० [सं० सर्जिका क्षार] दे० 'सज्जी'।

सज्जीबूटी—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्जीवनी] क्षुप जाति की एक वनस्पति जो प्रति वर्ष उत्पन्न होती है।

विशेष—यह ६ से १८ इच तक ऊँची होती है। इसकी शाखाएँ कोमल और पत्ते बहुत छोटे और तिकोने होते हैं। पुष्प छोटे और एक से तीन तक साथ लगते है। बीजकोष १।४ इच तक के घेरे मे गोलाकार होता है। इसका रग प्राय चमकीला गुलाबी होता है। इसमे बहुत ही छोटे छोटे बीज होते हैं। प्राय इसी के उठलो और पत्तियो मे सज्जीखार तैयार होता है। यह क्षुप तीन प्रकार का पाया जाता है।

सज्जुई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सज+ई (प्रत्य०)] दे० 'सजाव'।

सज्जुता—संज्ञा स्त्री० [सं० सयुता] सयुता नामक छद। वि० दे० 'सयुता'।

सज्जुष्ट—वि० [सं०] आनददायक। सुखकारी। सज्जनो को प्रियकर।

सज्जे१†—[सं० सर्व] सब। बिलकुल। सपूर्ण।

सज्जे२†—अव्य० तमाम। सर्वत। सपूर्णत।

सज्ञान१—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसे ज्ञान हो। ज्ञानवाला मनुष्य। १ बुद्धिमान या चतुर पुरुष। सयाना। ३ उस अवस्था को पहुँचा हुआ पुरुष जिसमे वह विवेकयुक्त हो जाता है। प्रौढ। बालिग।

सज्ञान२—वि० १ ज्ञानयुक्त। २ चतुर। बुद्धिमान्। ३ सचेत। सावधान। होशियार।

सज्य—वि० [सं०] ज्या अर्थात् प्रत्यचा से युक्त। (धनुष) जिसपर प्रत्यचा चढी हो (को०)।

सज्या†—संज्ञा स्त्री० [स० शय्या] दे० 'शय्या'।

सज्योत्स्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योत्स्नायुक्त रात। चाँदनी रात।

सझ—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्जा] १ सजावट। २ तैयारी। (डि०)।

सझर—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्जा] सेना को सज्जित करने की क्रिया। फौज तैयार करना (डि०)।

सझनी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा पक्षी जिसकी पीठ काली, छाती सफेद और चोच लबी होती है।

सझिदार†—संज्ञा पुं० [हिं० साझीदार] [स्त्री० सझिदारिन्] हिस्सेदार। साझीदार। शरीक।

सझिदारी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सझिदार+ई (प्रत्य०)] साझेदार होने का भाव। साझा। शिरकत। साझेदारी।

सझिया†—संज्ञा पुं० [हिं० साझा] १ साझीदार। हिस्सेदार। २ साझा। हिस्सा। भाग।

सट—संज्ञा पुं० [सं०] १ जटा। २ वह व्यक्ति जो ब्राह्मण पिता और भटिजातीय माता से उत्पन्न हो (को०)।

सटई—संज्ञा स्त्री० [देश०] अनाज रखने का एक प्रकार का पात्र।

सटक—संज्ञा स्त्री० [अनु० सट से] १ सटकने की क्रिया। धीरे से चपत होने या खिसकने का व्यापार। २ तबाकू पीने का लबा लचीला नैचा जो भीतर छल्लेदार तार देकर बनाया जाता है।

विशेष—यह रबर को नली को भाँति लचीला और लपेटने योग्य होता है। अधिक लबे होने को निगाली रबड मे प्रबधन होती है, अत लोग सटक का व्यवहार करते है।

३ पतली लचनेवाली छडी। उ०—बिलक बिलकई सटक गौ लफति सटक लो आय। नारि सलोनो साँवरो नागिन लो डसि जाय।—बिहारी (शब्द०)।

**सटकना[1]**—क्रि० अ० [अनु० सट से] धीरे से खिसक जाना। रफू चक्कर होना। चल देना। चपत होना। उ०—असुर यह बात तकि गयो रण ते सटकि विपति ज्वर दियो तब शिव पठाई।—सूर (शब्द०)।

**सटकना[2]**—क्रि० स० बालो मे से अनाज निकालने के लिये उसे कूटने की क्रिया। डाँठ कूटना या पीटना।

**सटकाना**—क्रि० स० [अनु० सट से] १ किसी को छडी, कोडे आदि से मारना जिसमे 'सट' शब्द हो। जैसे,—दो कोडे सटकाऊँगा, ठीक हो जाओगे। २ सड सड या सट सट शब्द करते हुए हुक्का पीना। जैसे,—क्या बैठे सटका रहे हो।

**सटकार**—सज्ञा स्त्री० [अनु० सट] १ सटकाने की क्रिया या भाव। २ फटकारने या झटकारने की क्रिया। ३ गौ आदि को हाँकने की क्रिया। हटकार। उ०—सारथी पाय रुख दए सटकार हय द्वारकापुरी जब निकट आई।—सूर (शब्द०)।

**सटकारना**—क्रि० स० [अनु० सट से] १ पतली लचीली छडी या कोडे आदि से किसी को सट से मारना। सट सट मारना। २ झटकारना। फटकारना।

**सटकारा**—वि० [अनु०] चिकना और लवा। (केश, बाल)। उ०—छुटे छुटावत जगत तैं सटकारे सुकुमार। मन बाँधत बेनी बँध नील छबीले बार।—स० सप्तक, पृ० १०५।

**सटकारी**—सज्ञा स्त्री० [स० अनु०] लचनेवाली पतली छडी। साँटी।

**सटक्का**—सज्ञा पु० [अनु० सट से] १ दे० 'सटका'। २ दौड। झपट। जैसे,—एक सटक्के मे तो तुम पर पहुँच जायँगे।

मुहा०—सटक्का मारना = एक साँस से दौडकर या बहुत जल्दी जल्दी जाना।

**सटना**—क्रि० अ० [सं० स + √स्था] १ दो चीजो का इस प्रकार एक मे मिलना जिसमे दोनो के एक पार्श्व एक दूसरे से लग जायँ। जैसे,—दीवार से अलमारी सटना। २ चिपकना। जैसे,—दफ्ती पर कागज सटना। ३ सभोग होना। (बाजारू)। ४ लाठी या डडे आदि से मार पीट होना। लाठी सोटा चलना। मार पीट होना। (बदमाश)। ५ साथ होना। मिलना।

सयो० क्रि०—जाना।

**सटपट**—सज्ञा स्त्री० [अनु०] १ सिपपिटाने की क्रिया। चकपकाहट। उ०—अरी खरी सटपट परी, विधु आगे मग हेरि। सग लगे मधुपन लई भागत गली अँधेरि।—बिहारी (शब्द०)। २ शील। सकोच। ३ सकट। दुविधा। असमजस।

क्रि० प्र०—मे पडना।—मे डालना।

**सटपटाना[1]**—क्रि० अ० [अनु०] १ सटपट की ध्वनि होना। २ दे० 'सिटपिटाना'। उ०—छुटै न लाज न लालचौ प्यौ लखि नैहर गेह। सटपटात लोचन खरे, भरे सकोच सनेह।—बिहारी (शब्द०)। ३ दब जाना। मद या मौन होना। ४ चकपकाना।

**सटपटाना[2]**—क्रि० स० सटपट शब्द उत्पन्न करना।

**सटर पटर[1]**—वि०, क्रि० वि० [अनु०व०] १ छोटा मोटा। तुच्छ। हलका। जैसे,—सटर पटर काम करने से न चलेगा। २ बहुत साधारण। बिलकुल मामूली।

**सटर पटर[2]**—सज्ञा स्त्री० १ उलझन का काम। बखेडे का काम। २ व्यर्थ या तुच्छ काम। जैसे,—इसी सटर पटर मे दिन बीत जाता है।

क्रि० प्र०—करना।—लगाना।

**सट सट**—क्रि० वि० [अनु०] १ सट शब्द के साथ। सटासट। २ शीघ्र। बहुत जल्दी। तुरत। जैसे,—वह सब काम सट सट निपटा डालता है।

**सटाक**—सज्ञा पु० [स० सटाङ्क] सिंह। शेर।

**सटा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चूडा। शिखा। २ जटा। ३ घोडे या शेर के कधे पर के बाल। अयाल। केशर। ४ शूकर का बाल (को०)। ५ केशपाश। वेणी। जूडा (को०)। ६ द्युति। दीप्ति। चमक (लाक्ष०)। ७ बाहुल्य। बहुलता। बहु सख्या (को०)।

**सटाक**—सज्ञा पुं० [अनु०] सट शब्द। 'सट' की आवाज।

**सटाका†[1]**—सज्ञा पुं० [अनु०] १ दे० 'सटाकी'। २ दे० 'सटाक'।

**सटाका†[2]**—क्रि० वि० सट से। तुरत। झटपट।

**सटाकी**—सज्ञा स्त्री० [अनु०] चमडे की वह रस्सी या पट्टी जो पैना के सिरे पर बाँधी जाती है।

विशेष—पैना बाँस का एक पतला छोटा डडा होता है जिससे हल जोतनेवाला या गाडी हाकनेवाला बैल हाँकता है। इस पैना को कोडे का आकार देने के लिये इसमे चमडे की पतली पतली पट्टियाँ बाधते हैं। इन्ही पट्टियो को सटाकी कहते हैं। सटाकी और डडा दोनो मिलकर 'पैना' होता है।

**सटान**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सटना + आन (प्रत्य०)] १ सटने की क्रिया या भाव। मिलान। २ दो वस्तुओ के सटने या मिलने का स्थान। जोड।

**सटाना**—क्रि० स० [स० स + √स्था] १ दो चीजो को एक मे सयुक्त करना। दो चीजो के पार्श्वो को आपस मे मिलाना। मिलाना। जोडना। २ लाठी, डडे आदि से लडाई करना। मारपीट करना। (बदमाश)। ४ स्त्री और पुरुष का सयोग कराना। सभोग कराना। (बाजारू)।

**सटाव**—वि० [देश०] १ (दलाली की परिभाषा मे) कम। न्यून। २ हलका। घटिया। खराब।

**सटाल[1]**—सज्ञा पुं० [स०] सिंह। केसरी। शेर बबर।

**सटाल[2]**—जिसकी गर्दन पर अयाल हो। २ पूर्ण। युक्त (को०)।

**सटालु**—सज्ञा पुं० [सं०] अपक्व फल। वह फल जो पका न हो (को०)।

**सटि**—सज्ञा स्त्री० [स०] कचूर। शटी।

**सटिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] वन आदी। जगली कचूर।

**सटियल**—वि० [स० सस्त] जो रद्दी किस्म का हो। घटिया दरजे का।

**सटिया**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सटना] १ सोने या चाँदी की एक प्रकार की चूडी। २ चादी की एक प्रकार की कलम जिससे स्त्रियाँ माँग मे सिंदूर देती हैं। ३ दे० 'साटी'। ४ अभिसधि। गुप्त वार्ता या षडयत्र करना।

सटी—सज्ञा स्त्री० [स०] वनग्रादी । जगली कचूर ।

सटीक¹—वि० [स०] जिसमे मूल के साथ टीका भी हो । टीका सहित । व्याख्या सहित । जैसे,—सटीक रामायण ।

सटीक²—वि० [हि० ठीक या स० सटीक] बिलकुल ठीक । जैसा चाहिए ठीक वैसा ही । जैसे,—यह तसवीर बन तो रही है, सटीक उतर जाय, तो बात है ।

संयो० क्रि०—पडना ।—बैठना ।

सटैला—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी ।

सटोरिया—सज्ञा पु० [हि० सट्टा] सट्टेबाज । सट्टा खेलनेवाला ।

सट्ट¹—सज्ञा पु० [स०] दरवाजे की चौखटे मे दोनो ओर की लकडियाँ । बाजू ।

सट्ट²—सज्ञा पु० [हि० सट्टा] दे० 'सट्टा' ।

सट्टक—सज्ञा पु० [स०] १ प्राकृत भाषा मे प्रणीत छोटा रूपक । एक उपरूपक । जैसे,—राजशेखर कृत कर्पूर मजरी है । २ जीरा मिला हुआ मट्ठा ।

सट्टा¹—सज्ञा पु० [देश०] १ वह इकरारनामा जो काश्तकारो मे खेत के साझे आदि के सबध मे होता है । बटाई । २ वह इकरारनामा जो दो पक्षो मे कोई निश्चित काम करने या कुछ शर्तें पूरी करने के लिये होता है । इकरारनामा । जैसे,—बाजेवालो को पेशगी रुपया दे दिया, पर उनसे सट्टा नही लिखाया ।

सट्टा²—सज्ञा पु० [हि० हाट या सट्टी] १ वह स्थान जहाँ लोग वस्तुएँ खरीदने बेचने के लिये एकत्र होते है । हाट । बाजार । २ बाजार की तेजी मदी के अनुमान के आधार पर अधिक लाभ की दृष्टि से की हुई खरीदफरोख्त जो एक प्रकार का द्यूत माना जाता है । दे० 'सट्टेबाज' ।

यौ०—सट्टा बाजार = वह बाजार जहाँ सट्टे का काम होता है । सट्टेबाज ।

सट्टा³—सज्ञा स्त्री० [स०] १. एक प्रकार का पक्षी । २ बाजा ।

सट्टा बट्टा—सज्ञा पु० [हि० सटना + अनु० बट्टा] १ मेल मिलाप । हेल मेल । २ सिद्धि के लिये की हुई धर्ततापूर्ण युक्ति । चालबाजी ।

मुहा०—सट्टा बट्टा लडाना = अपना कार्य सिद्ध करने के लिये किसी प्रकार की युक्ति करना ।

सट्टी—सज्ञा स्त्री० [हि० हाट या हट्टी] वह बाजार जिसमे एक ही मेल की बहुत सी चीजें लोग दूर दूर से लाकर बेचते हो । हाट । जैसे,—तरकारी की सट्टी, पान की सट्टी ।

मुहा०—सट्टी मचाना = ऐसा शोर करना जैसा सट्टी मे होता है । बहुत से लोगो का मिलकर जोर जोर से बोलना । जैसे,—पडितजी के दरजे मे तो लडको ने सट्टी मचा रखी है । सट्टी लगाना = बहुत सी चीजे इधर उधर फैला देना । जैसे,—तुमने यहाँ किताबो की सट्टी लगा रखी है ।

सट्टेबाज—सज्ञा पु० [हि० सट्टा + फा० बाज (प्रत्य०)] वह आदमी जो अधिक लाभ की दृष्टि से बाजार मे क्रय विक्रय करे । सट्टा खेलनेवाला ।

विशेष—यह व्यापारियो का एक प्रकार का जुआ है । कभी कभी लाभ के स्थान पर व्यापारी इसमे अपना सर्वस्व गँवा देता है ।

सट्टेबाजी—सज्ञा स्त्री० [हि० सट्टेबाज + ई (प्रत्य०)] सट्टेबाज का काम । सट्टा खेलने का काम ।

सट्वा—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का पक्षी । २ प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा ।

सठ¹—सज्ञा पु० [स० षष्टि, प्रा० सट्ठि, दे० हि० साठ] साठ की सख्या । दे० 'साठ' ।

सठ²—सज्ञा पु० [स० शठ] दे० 'शठ' ।

सठई†—सज्ञा स्त्री० [हि० सठ + ई (प्रत्य०)] शठ होने का भाव । सठता ।

सठता—सज्ञा स्त्री० [स० शठ, हि० सठ + ता (प्रत्य०)] १ शठ होने का भाव । शठ का धर्म । शठता । २ मूर्खता । बेवकूफी । उ०—जानी राम न कहि सके भरत लखन सिय प्रीति । सो सुनि समुझि तुलसी कहत हठ सठता की रीति ।—तुलसी (शब्द०) ।

सठि—सज्ञा स्त्री० [स०] कचूर [को०] ।

सठियाना—क्रि० अ० [हि० साठ + इयाना (प्रत्य०)] १ साठ वर्ष की अवस्था को प्राप्त होना । साठ बरस का होना । २ वृद्धावस्था के कारण बुद्धि तथा विवेकशक्ति का कम हो जाना ।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग व्यक्ति और बुद्धि दोनो के लिये होता है । जैसे,—(क) उनकी बात छोड दो, वे तो सठिया गए है । (ख) तुम्हारी तो अक्ल सठिया गई है ।

संयो० क्रि०—जाना ।

सठुरी†—सज्ञा स्त्री० [हि० सीठी या साँठी] गेहूँ या जौ आदि के डठलो का वह गँठीला अश जिसका भूसा नही होता और जो ओसाकर अलग कर दिया जाता है । गठुरी । कूँटा । कूँटी ।

सठेरा—सज्ञा पु० [हि० साँठा] मन का वह डठल जो सन निकल जाने पर बच रहता है । सठा । सरई । सलई ।

सठोरा—सज्ञा पु० [हि० सोठ + ओरा (प्रत्य०)] दे० 'सोठौरा' ।

सठ्ठो—पज्ञा पु० [डि०] ऊँट । क्रमेलक ।

सड¹—सज्ञा पु०, स्त्री० [अनु०] दे० 'सडाक' ।

सड†²—सज्ञा पु० [स० सप्त] सात । सात को सख्या । समस्त शब्दो मे पूर्व पद के रूप मे प्रयुक्त । जैसे, सडसठ ।

सडक—सज्ञा स्त्री० [अ० शरक] १ आने जाने का चौडा रास्ता । राजमार्ग । राजपथ । २ रास्ता । मार्ग ।

सड़क्का—सज्ञा पु० [हि० सटक्का] दे० 'सटक्का' ।

सडन—सज्ञा स्त्री० [हि० सडना] सडने की क्रिया या भाव । गलन ।

सड़ना—क्रि० अ० [स० सरण] १ किसी पदार्थ मे ऐसा विकार होना जिससे उसके सयोजक तत्व या अग बिलकुल अलग अलग हो जायँ, उसमे से दुर्गंध आने लगे और वह काम के योग्य न रह जाय । जैसे,—उँगली सडना, फल सडना । २ किसी पदार्थ मे खमीर उठना या आना ।

संयो० क्रि०—जाना ।

३ दुर्दशा मे पडा रहना । बहुत बुरी हालत मे रहना । जैसे—रियासतो मे लोग बरसो तक जेलखाने मे यो ही सडते है ।

सड़सठ¹—सज्ञा पु० [हि० सड (सात का रूप) + साठ] साठ और सात की सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६७ ।

**सडसठ[२]**—वि० जो गिनती मे साठ से सात अधिक हो।

**सड़सठवाँ**—वि० [हि० सडसठ+वाँ (प्रत्य०)] गिनती मे सडसठ के स्थान पर पडनेवाला।

**सडसी**—सज्ञा स्त्री० [हि० सँडसी] दे० 'सँडसी'।

**सडा**—सज्ञा पुं० [हि० सडना] वह औषध जो गौओ को बच्चा होने के समय पिलाते है। प्राय यह औषध सडाकर बनाते हैं, इसी से इसे सडा कहते है।

**सडाइँद**—सज्ञा स्त्री० [हि० सडना+गध] दे० 'सडायँध'।

**सडाक**—सज्ञा पुं०, स्त्री० [अनु० 'सड' से] १ कोडे आदि की फटकार की आवाज जो प्राय सड के समान होती है। २ शीघ्रता। जल्दी। जैसे, —सडाक से चले जाओ और चले आओ।

**सडान**—सज्ञा स्त्री० [हि० सडना] सडने का व्यापार या क्रिया। सडना।

**सडाना**—क्रि० स० [हि० सडना का सक० रूप] १ सडना का सकर्मक रूप। किसी वस्तु को सडने मे प्रवृत करना। किसी पदार्थ मे ऐसा विकार उत्पन्न करना कि उसके अवयव गलने लगे और उसमे से दुर्गंध आने लगे। जैसे,—(क) सब आम तुमने रखे रखे सडा डाले। (ख) महुए को सडाकर शराब बनाई जाती है। २ किसी वस्तु को बुरी दशा मे रखना अथवा उसका उपयोग न करना, न करने देना।

**सयो० क्रि०**—डालना।—देना।

**सडायँध**—सज्ञा स्त्री० [हि० सडना+गध] सडी हुई चीज की गध।

**सडाव**—सज्ञा पुं० [हि० सडना+आव (प्रत्य०)] सडने की क्रिया या भाव। सडना।

**सडासड**—अव्य० [अनु० 'सड' से] सड शब्द के साथ। जिसमे सडसड शब्द हो। जैसे,—चोर पर सडासड कोडे पडने लगे।

**सडियल**—वि० [हि० सडना+इयल (प्रत्य०)] १ सडा हुआ। गला हुआ। २ निकम्मा। रद्दी। खराब। ३ नीच। तुच्छ। जैसे,—सडियल आदमी सडियल एक्का। सडियल तसवीर।

**सढ**—सज्ञा पुं० [देश०] वैश्यो की एक जाति।

**सण**—सज्ञा पुं० [स० शण] दे० 'सन'।

**सणगार**Ⓤ†—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गार] शृगार। सजावट। (डिं०)।

**सणतूल**—सज्ञा पुं० [स०] सन का रेशा। शणततु।

**सणसूत्र**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शणसूत्र'।

**सणि**—सज्ञा स्त्री० [स०] गाय के श्वास की गध [को०]।

**सतद्र**—वि० [स० सतन्द्र] तद्रायुक्त। क्लात। थका हुआ [को०]।

**सत्[१]**—सज्ञा पुं० [स०] १ ब्रह्म। २ वह जो वस्तुत विद्यमान हो। अस्तित्व। सत्ता (को०)। ३ सचाई। वास्तविकता (को०)। ४ भद्र पुरुष। सद्गुणी व्यक्ति (को०)। ५ जल (वेद)। ६ कारण (को०)।

**सत्[२]**—वि० १ सत्य। २ साधु। सज्जन। ३ धीर। ४ नित्य। स्थायी। ५ विद्वान्। पडित। ६ मान्य। पूज्य। ७ प्रशस्त। ८ शुद्ध। पवित्र। ९ श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा। भला। १० वर्तमान। विद्यमान (को०)। ११ ठीक। उचित (को०)। १२ मनोहर। सुदर (को०)। १३ दृढ। स्थिर (को०)।

**सत[१]**—वि० [हि०] दे० 'सत्'।

**सत[२]**—सज्ञा पुं० [स० सत्] सत्यतापूर्ण धर्म।

**मुहा०**—सत पर चढना = पति के मृत शरीर के साथ सती होना। सत पर रहना = पतिव्रता रहना। सती रहना।

**सत[३]**—वि० [स० शत] दे० 'शत'।

**सत[४]**—सज्ञा पुं० [स० सत्व] १ किसी पदार्थ का मूल तत्व। सार भाग। जैसे —मुलेठी का सत। २ जीवनी शक्ति। ताकत। जैसे,—चार दिन के बुखार मे शरीर का सारा सत निकल गया।

**सत[५]**—वि० [स० सप्त] १ 'सात' (सख्या) का समिप्त रूप जिसका व्यवहार यौगिक शब्द बनाने मे होता है। जैसे, —सतमजिला।

**सतकार**Ⓟ—सज्ञा पुं० [स० सत्कार] दे० 'सत्कार'।

**सतकारना**Ⓟ—क्रि० स० [स० सत्कार+हि० ना (प्रत्य०)] सत्कार करना। आदर करना। सम्मान करना। इज्जत करना। उ०—(क) गुरु को जेठो बधु विचारयो। करि प्रणाम अतिशय सतकार्यो। (ख) राजा कियो ताहि परनामा। सादर सतकार्यो मति धामा।—रघुराज (शब्द०)।

**सतकोन**—वि० [हि० सात+कोना] जिसमे सात कोने हो। सात कोनो वाला।

**सतगँठिया**—सज्ञा स्त्री० [हि० सात+गाँठ] एक प्रकार की वनस्पति जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

**सतगुरु**—सज्ञा पुं० [हि० सत (=सच्चा)+गुरु या स० सद्गुरु] १ अच्छा गुरु। २ परमात्मा परमेश्वर।

**सतजीत**—सज्ञा पुं० [स० सत्यजित्] दे० 'सत्यजित्'।

**सतजुग**—सज्ञा पुं० [स० सत्ययुग] दे० 'सत्ययुग'।

**सतत**—अव्य० [स०] निरतर। सदा। सर्वदा। हमेशा। बराबर।

**सततक**—वि० [स०] (ज्वर) जो दिन भर मे दो बार चढता हो [को०]।

**सततग**—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो सदा चलता रहता हो। २ पवन। वायु। हवा।

**सततगति**—सज्ञा पुं० [स०] वायु। हवा।

**सततज्वर**—सज्ञा पुं० [स०] वह ज्वर जो दिन मे दो बार आवे, या कभी दिन मे एक बार और फिर रात को भी एक बार आवे। द्विकालिक विषम ज्वर।

**सततदुर्गत**—वि० [स०] निरतर बुरी अवस्थावाला। जो सदा कष्ट मे रहे [को०]।

**सततधृति**—वि० [स०] निरतर धैर्यशील रहनेवाला। जो सर्वदा दृढ सकल्प युक्त हो [को०]।

**सततपरिग्रह**—अ० [स०] निरतर [को०]।

**सततयायी**—वि० [स० सततयायिन्] १ निरतर गतिशील। २ निरतर क्षयालु या क्षयशील [को०]।

**सततयुक्त**—वि० [स०] सदा तत्पर। सतत अनुरक्त या परायण [को०]।

**सतत समिताभियुक्त**—संज्ञा पु० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

**सतत स्पंदन**—वि० [सं० सततस्पन्दन] नित्य स्पंदनशील।

**सतताभियोग**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी न किसी कार्य में सदैव लगा रहना [को०]।

**सतति**—वि० स्त्री० [सं०] जो सदा चला करे या विच्छिन्न न हो।

**सतत्व**—संज्ञा पु० [सं०] स्वभाव। प्रकृति।

**सतदंत**—संज्ञा पुं० [हिं० सात+दाँत] [वि० सतदंता] वह पशु जिसके सात दाँत हो गए हों।

विशेष—प्रायः पशुओं को पूरे दाँत निकल आने के पूर्व उनके दाँतों की संख्या के अनुसार पुकारते हैं। जैसे, दुदंता, चौदंता, सतदंता आदि शब्द क्रमशः दो, चार और सात दाँतोंवाले बछड़े के लिये प्रयुक्त होते हैं।

**सतदल**Ⓖ—संज्ञा पुं० [सं० शतदल] १ कमल। २ सौ दलों या पँखुड़ियोंवाला कमल।

**सतधृत**—संज्ञा पु० [सं० शतधृत] ब्रह्मा। (डिं०)।

यौ०—सतधृत सुत=नारदमुनि।

**सतन**—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का लाल चंदन जिसकी गंध भूमि या मिट्टी के समान होती है [को०]।

**सतनजा**—संज्ञा पुं० [हिं० सात+अनाज] सात भिन्न प्रकार के अन्नों का मेल। वह मिश्रण जिसमें सात भिन्न भिन्न प्रकार के अनाज हों।

**सतनी**†—संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तपर्ण] १ सप्तपर्ण वृक्ष। सतिवन। छतिवन। २ एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष।

विशेष—इस वृक्ष की छाल का रंग कालापन लिए होता है। और लकड़ी संदूक आदि बनाने के काम में आती है। यह बंगाल, दक्षिण भारत और हिमालय में अधिकता से पाया जाता है।

**सतनु**—वि० [सं०] जिसे तन हो। शरीरवाला।

**सतपतिया**'—संज्ञा स्त्री० [हिं० सतपुतिया] दे० 'सतपुतिया'।

**सतपतिया**²—संज्ञा स्त्री० [हिं० सात+पति] १ वह स्त्री जिसने सात पति किए हों। २ पुश्चली। छिनाल।

**सतपदी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तपदी] दे० 'सप्तपदी'।

**सतपरबा**†—संज्ञा पुं० [सं० शतपर्वा] १ शतपर्वा। बाँस। २ ऊख। गन्ना।

**सतपात**—संज्ञा पु० [सं० शतपत्र, प्रा० सतपत्त] शतपत्र। कमल।

**सतपुतिया**—संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तपुत्रिका] एक प्रकार की तोरई जो प्रायः सब प्रांतों में होती है।

विशेष—इसके बोने का समय वर्षा ऋतु है। इसकी लता भूमि पर फैलती है या मँडे पर चढ़ाई जाती है। इसके फल साधारण तोरई से कुछ छोटे होते हैं और पाँच, सात या कभी कभी इससे भी अधिक संख्या में एक साथ गुच्छों में लगते हैं।

**सतपुरिया**—संज्ञा स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की जंगली मधुमक्खी।

**सतफेरा**Ⓖ—संज्ञा पु० [हिं० सात+फेरा] विवाह के समय होनेवाला सप्तपदी नामक कर्म। विशेष दे० 'सप्तपदी'। उ०—फिरहिं दोउ सतफेरे गुने के। सातहिं फेर गाँठ सो एके।—जायसी (शब्द०)।

**सतबरवा**—संज्ञा पुं० [सं० शतपर्व (=बाँस)] एक प्रकार का वृक्ष जो नैपाल में होता और जिससे नैपाली कागज बनाया जाता है।

**सतभइया**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सात+भाई] एक प्रकार की मैना (पक्षी) जिसे पेगिया मैना भी कहते हैं।

विशेष—इसकी लंबाई प्रायः एक बालिश्त होती है। इसका रंग पीलापन लिए भूरा होता है। इसके पैर और पंजे पीले होते हैं। ऋतुसंहारानुसार यह रंग बदलती है। यह झुंड में रहती है और छोटे, घने वृक्षों या झाड़ियों में घोंसला बनाती है। यह एक बार में प्रायः तीन अंडे देती है। यह बहुत शोर करती है। कहते हैं कि कोयल प्रायः अपने अंडे इसी के घोंसले में रखती है।

**सतभाव**Ⓖ—संज्ञा पुं० [सं० सद्भाव] १ सद्भाव। अच्छा भाव। २ सरलता। सीधापन। ३. सच्चापन। सचाई।

**सतभौरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सप्त भ्रमण] हिंदुओं में विवाह के समय की एक रीति। इसमें वर और वधू को अग्नि की सात बार प्रदक्षिणा करनी पड़ती है। इसे 'भौरी पड़ना' भी कहते हैं।

**सतमख**—संज्ञा पु० [सं० शतमख] जिसने १०० यज्ञ किए हों। शतक्रतु। इंद्र (डिं०)।

**सतमसा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मार्कंडेय पुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

**सतमस्क**—वि० [सं०] अंधकारयुक्त। तमसाच्छन्न [को०]।

**सतमासा**—संज्ञा पुं० [हिं० सात+मास] १ सात मास पर उत्पन्न शिशु। वह बच्चा जो गर्भ में सातवें महीने उत्पन्न हुआ हो। (ऐसा बच्चा प्रायः बहुत रोगी और दुबला होता है और जल्दी जीता नहीं)। २ वह रस्म जो शिशु के गर्भ में आने पर सातवें महीने की जाती है।

**सतमूली**—संज्ञा स्त्री० [सं० शतमूली] सतावर। शतावरी।

**सतयुग**—संज्ञा पु० [सं० सत्ययुग] दे० 'सत्ययुग'।

**सतरंग**—वि० [हिं० सतरंगा] दे० 'सतरंगा'।

**सतरंगा**'—वि० [हिं० सात+रंग] जिसमें सात रंग हों। सात रंगों वाला। जैसे—सतरंगा साफा, सतरंगी साड़ी।

**सतरंगा**²—संज्ञा पुं० इंद्रधनुष जिसमें सात रंग होते हैं।

**सतरज**—संज्ञा स्त्री० [अ० शतरंज या सं० चतुरङ्ग] दे० 'शतरंज'। उ०—सतरज को सो राज काठ को सब समाज महाराज बाजी रचो प्रथमहि नृपति।—तुलसी (शब्द०)।

**सतरंजी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शतरंजी] दे० 'शतरंजी'।

**सतर**'—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ लकीर। रेखा।

क्रि० प्र०—खींचना।

२ पक्ति। अवली। कतार।

सतर[२]—वि० १ टेढा। वक्र। उ०—रमन कह्यो हँमि रमनि सो रति विपरीत विलास। चितई करि लोचन सतर सगरब मलज सहास।—बिहारी (शब्द०)। २ कुपित। क्रुद्ध। उ०—(क) कान्हहू पर सतर भौहें महरि मनहि विचारु।—तुलसी ग्र० पृ० ४३५। (ख) सुनहु श्याम तुमहूँ सरि नाही ऐसे गए विलाइ। हम सो सतर होत सूरज प्रभु कमल देहु अब जाइ।—सूर (शब्द०)।

सतर[३]—सज्ञा स्त्री०, पुं० [अ०] १ मनुष्य का वह अग जो ढका रखा जाता है और जिसके न ढके रहने पर उसे लज्जा आती है। गुह्य इद्रिय।

मुहा०—बेसतर करना=(१) नगा करना। विवस्त्र करना। (२) बेइज्जत करना।

२ ओट। आड। परदा। ३ छिपाना। गोपन करना।

यौ०—सतरपोश=जिससे तन ढाँका जाय। सतरपोशी=शरीर ढाँकना। तन ढाँकना।

सतरकी†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सत्रह] वह क्रिया जो किसी की मृत्यु के पश्चात् सत्रहवे दिन की जाती है। सत्रही।

सतरह†—वि० सज्ञा पु० [हिं० सत्तरह] दे० 'सत्तरह'।

सतराना—क्रि० अ० [हिं० सतर या स० सतर्जन] १ क्रोध करना। कोप करना। उ०—हम ही पर सतरात कन्हाई।—सूर (शब्द०)। २ कुढना। चिढना। बिगडना। उ०—(क) जु ज्यौं उझकि झाँपति वदन, झुकति विहँसि सतराइ। तु त्यौं गुलाल मुठी झुठी झझकावतु पिय जाइ।—बिहारी (शब्द०)। (ख) चद दुति मद भई, फद मे फँसी हौं आय, द्वद नद ठानैगी रे, जोरे जुग पानि दै। सासु सतरैहे, जेठ पतिनी रिसैहे, उक वचन सुनैहै, छाँडि गर की भुजानि दै।—देव (शब्द०)।

क्रि० प्र०—जाना। उ०—लेहु अब लेहु, तब कोऊ न सिखायो मान्यो, कोई सतराइ जाइ जाहि जाहि रोकिए।—तुलसी (शब्द०)।

सतराहट—सज्ञा स्त्री० [हिं० सतराना+हट (प्रत्य०)] कोप। गुस्सा। नाराजगी।

सतरी†—सज्ञा स्त्री० [सं० सर्पदष्ट्रा] सर्पदष्ट्रा नामक ओषधि।

सतरौहाँ†—वि० हिं० सतराना+औहा (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सतरौही] १ कुपित। क्रोधयुक्त। २ कोपसूचक। रिसाया हुआ सा। उ०—सकुचि न रहिए स्याम सुनि ये सतरौहै बैन। देत रचौहैं चित कहे नेह नचौंहै नैन।—बिहारी (शब्द०)।

सतर्क—वि० [स०] १ तर्कयुक्त। युक्ति से पुष्ट। दलील के साथ। २ जो विवेकशील हो (को०)। ३ सावधान। होशियार। सचेत। खबरदार।

सतर्कता—सज्ञा स्त्री० [स०] सतर्क होने का भाव। सावधानी। होशियारी।

सतर्पना†—क्रि० स० [स० सन्तर्पण] भली भाँति तृप्त करना। सतुष्ट करना।

सतर्प—वि० [स०] तृपित। प्यासा।

सतल—वि० [स०] १ तल या आधारयुक्त। २ पेंदेवाला। जिसमे पेंदा हो [को०]।

सतलज—सज्ञा स्त्री० [स० शतद्रु] पजाब की नदियो मे से एक। शतद्रु नदी।

सतलडा—वि० [हिं० सात+लड] [वि० स्त्री० सतलडी] जिसमे सात लड हो। जैसे,—सतलडा हार।

सतलड़ी, सतलरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सात+लडी] गले मे पहनने की सात लडियो की माला या हार।

सतवती—वि० स्त्री० [हिं० सत्य+वती (प्रत्य०)] सतवाली। सती। पतिव्रता।

सतवर्ग—सज्ञा पुं० [फा० सदवर्ग] दे० 'सदवर्ग'।

सतसग—सज्ञा पुं० [सं० सत्सङ्ग] दे० 'सत्सग'। उ०—बिनु सतसग विवेक न होई।—मानस, १।३।

सतसगति—सज्ञा स्त्री० [स० सत्सङ्गति] दे० 'सत्सग'। उ०—सठ सुधरहिं सतसगति पाई। पारस परस कुधातु सुहाई।—मानस, १।३।

सतसगी—वि० [स० सत्सङ्गिन्] दे० 'सत्सगी'।

सतसइया—सज्ञा स्त्री० [स० सप्तशतिका] दे० 'सतसई'। उ०—सतसइया के दोहरे ज्यो नावक के तीर। देखन मे छोटे लगें घाव करे गभीर।

सतसई—सज्ञा स्त्री० [स० सप्तशती, प्रा० सत्तसई] १ वह ग्रथ जिसमे सात सौ पद्य हो। सात सौ पद्यो का समूह या सग्रह। सप्तशती।

विशेष—हिंदी साहित्य मे 'सतसई' शब्द से प्राय सात सौ दोहे ही समझे जाते हैं। जैसे,—बिहारी की सतसई।

सतसट—वि० [स० सप्तषष्ठि, हिं० सडसठ] दे० 'सडसठ'।

सतसल—सज्ञा पु० [देश०] शीशम का पेड।

सतह—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी वस्तु का ऊपरी भाग। बाहर या ऊपर का फैलाव। तल। जैसे,—मेज की सतह, समुदर की सतह।

मुहा०—सतह चौरस या बराबर करना=समतल करना। उभार और गहराई अथवा खुरदुरापन निकालना।

२ रेखागणित के अनुसार वह विस्तार जिसमे लबाई और चौडाई हो, पर मोटाई न हो। ३ जमीन की फर्श या छत।

सतहत्तर[१]—वि० [स० सप्तसप्तति, पा० सत्तसत्तति, प्रा० सत्तहत्तरि] सत्तर और सात। जो गिनती मे तीन कम अस्सी हो।

सतहत्तर[२]—सज्ञा पु० सत्तर से सात अधिक की सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—७७।

सतहत्तरवाँ—वि० [हिं० सतहत्तर+वाँ (प्रत्य०)] जिसका स्थान सतहत्तर पर हो। जो क्रम मे सतहत्तर के स्थान पर पडता हो।

सताग—सज्ञा पुं० [स० शताङ्ग] रथ। यान। उ०—कोउ तुरग चढि कोउ मतग चढि कोउ सताग चढि आए। अति उछाह नरनाह भरे सब सपति विपुल लुटाए।—रघुराज (शब्द०)।

**सतानंद**—संज्ञा पुं० [सं० सतानन्द] गौतम ऋषि के पुत्र जो राजा जनक के पुरोहित थे। उ०—सतानंद तब आएसु दीन्हा। सीता गमन समीपहिं कीन्हा।—मानस, १।२६३।

**सताना**—क्रि० स० [सं० सतापन, प्रा० सतावन] १ संताप देना। कष्ट पहुँचाना। दुःख देना। पीड़ित करना। उ०—(क) कह्यौ सुरन्ह तुम ऋषिहि सतायौ। तातें कर रहि गयो उपायो।—सूर (शब्द०)। (ख) गई कामिदी विरह सताई। चलि पराग अरइल बिच आई।—जायसी (शब्द०)। २ तंग करना। हैरान करना। ३ किसी के पीछे पड़ना।

**सतार**—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के अनुसार ग्यारहवें स्वर्ग का नाम।

**सतारुक**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कुष्ठ या कोढ़ जिसमें शरीर पर लाल और काली फुंसियाँ निकलती हैं।

**सतारू**—संज्ञा पुं० [सं० सतारुक] दे० 'सतारुक'।

**सतालू**—संज्ञा पुं० [सं० सप्तालुक, मि० फ़ा० शफ़्तालू] एक पेड़ जिसके गोल फल खाए जाते हैं। शफ़्तालू। आड़ू।

विशेष—यह पेड़ मझोले कद का होता है और भारत के ठंढे प्रदेशों में पाया जाता है। इसके पत्ते लंबे, नुकीले और कुछ श्यामता लिए गहरे रंग के होते हैं। पतझड़ के पीछे नए पत्ते निकलने के पहले इसमें लाल रंग के फूल लगते हैं। फल गूलर की तरह गोल और पकने पर हरे और लाल रंग के होते हैं जिनके ऊपर बहुत महीन सफेद रोइँयाँ होती हैं। ये फल खाने में बड़े मीठे होते हैं। इसके बीज कड़े छिलके के और बादाम की तरह के होते हैं। इसकी लकड़ी मजबूत और लंबाई लिए होती है तथा उसमें से एक प्रकार की हलकी सुगंध भी निकलती है।

**सतावना**—क्रि० स० [प्रा० सतावण, हिं० सताना] दे० 'सताना'।

**सतावर**—संज्ञा स्त्री० [सं० शतावरी] एक झाड़दार बेल जिसकी जड़ और बीज औषध के काम में आते हैं। शतमूली। नारायणी।

विशेष—यह बेल भारत के प्रायः सभी प्रांतों में होती है। इसकी टहनियों पर छोटे छोटे महीन काँटे होते हैं। पत्तियाँ सोए की पत्तियों की सी होती हैं और उनमें एक प्रकार की क्षारयुक्त गंध होती है। फूल इसके सफेद होते हैं और गुच्छे में लगते हैं। फल जंगली बेर के समान होते हैं और पकने पर लाल रंग के हो जाते हैं। प्रत्येक फल में एक या दो बीज होते हैं। इसकी जड़ बहुत पुष्टिकारक और वीर्यवर्धक मानी जाती है। स्त्रियों का दूध बढ़ाने के लिये भी यह दी जाती है। वैद्यक में इसका गुण शीतल, मधुर, अग्निदीपक, बल कारक और वीर्यवर्द्धक माना गया है। ग्रहणी और अतिसार में भी इसका क्वाथ देते हैं।

**सतासी**[1]—वि० [सं० सप्तशीति, प्रा० सत्तासी] अस्सी और सात। जो गिनती में अस्सी से सात अधिक हो।

**सतासी**[2]—संज्ञा पुं० सात ऊपर अस्सी की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है,—८७।

**सतासीवाँ**—वि० [सं० सप्ताशीतितम, हिं० सतासी + वाँ (प्रत्य०)] जिसका स्थान अस्सी से सात अधिक की संख्या पर हो। जो क्रम में सतासी पर पड़ता हो।

**सति**[1]—संज्ञा पुं० [सं० सत्य, प्रा० सत्ति] दे० 'सत्य' या 'सत'।

**सति**[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उपहार। भेंट। दान। २ अंत। नाश (को०)।

**सतिभाउ**—संज्ञा पुं० [सं० सत्यभाव या सद्भाव] दे० 'सद्भाव'। उ०—(क) दानिसिरोमनि कृपानिधि नाथ कहौं सतिभाउ।—मानस, १।१४६। (ख) कहति परस्पर बचन जसोमति लखि नहिं सकति कपट सतिभाऊ।—तुलसी ग्रं०, पृ० ४३४।

**सतिवन**—संज्ञा पुं० [सं० सप्तपर्ण, प्रा० सत्तवन्न] एक सदाबहार बड़ा पेड़ जिसकी छाल आदि दवा के काम में आती है। सप्तपर्णी। छतिवन।

विशेष—इसका पेड़ ४०-५० हाथ ऊँचा होता है और भारत के प्रायः सभी स्थानों में पाया जाता है। भारतवर्ष के बाहर आस्ट्रेलिया और अमेरिका के कुछ स्थानों में भी यह मिलता है। यह बहुत जल्दी बढ़ता है। पत्ते सेमर के पत्तों के समान और एक सींके में सात सात लगते हैं। इसकी लकड़ी मुलायम और सफेद होती और सजावट के सामान बनाने के काम आती। फूल हरापन लिए सफेद होता है। फूलों के झड़ जाने पर हाथ भर के लगभग लंबी पतली रोईदार फलियाँ लगती हैं। यह वसंत ऋतु में फूलता और बैशाख-जेठ में फलता है। फूलों में एक प्रकार की मदायन गंध होती है, इसी से कवियों ने कहीं कहीं इस गंध की उपमा गजमद से दी है। आयुर्वेद के अनुसार इसकी छाल त्रिदोषनाशक, अग्निदीपक, ज्वरघ्न और बलदायक होती है। ज्वर दूर करने में इसकी छाल का काढ़ा कुनैन के समान ही होता है। ज्वर के पीछे की कमजोरी भी इससे दूर होती है।

**सती**[1]—वि० स्त्री० [सं०] अपने पति को छोड़ और किसी पुरुष का ध्यान मन में न लानेवाली। साध्वी। पतिव्रता।

**सती**[2]—संज्ञा स्त्री० १ दक्ष प्रजापति की कन्या जो भव या शिव को ब्याही गई थी। २ पतिव्रता स्त्री। ३ वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जले। सहगामिनी स्त्री।

मुहा०—सती होना = (१) मरे हुए पति के शरीर के साथ चिता में जल मरना। सहगमन करना। (२) किसी के पीछे मर मिटना।

४ मादा। मादापशु। ५ गंधयुक्त मृत्तिका। सोंधी मिट्टी। ६ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक गुरु होता है। ७ विश्वामित्र की स्त्री का नाम। ८ अंगिरा की स्त्री का नाम। ९ सन्यासिनी (को०)। १० दुर्गा या पार्वती का एक नाम (को०)।

**सती**[3]—संज्ञा पुं० [हिं० सत (= सत्य) + ई (प्रत्य०)] सत्यान्वेषी। सत्य का अनुगमन करनेवाला। उ०—

**सतीक**—संज्ञा पुं० [सं०] जल। पानी (को०)।

**सतीचौरा**—संज्ञा पुं० [सं० सती + हिं० चौरा] वह वेदी या छोटा चबूतरा जो किसी स्त्री के सती होने के स्थान पर उसके स्मारक में बनाया जाता है।

**सतीत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] सती होने का भाव। पातिव्रत्य।

मुहा०—सतीत्व बिगाड़ना या नष्ट करना = किसी स्त्री से बलात्कार करना।

सतीत्वहरण—सज्ञा पु० [स०] परस्त्री के साथ बलात्कार। सतीत्व बिगाडना।

सतीदोषोन्माद—सज्ञा पुं० [स०] स्त्री का वह उन्माद रोग जिसका प्रकोप किसी सतीचौरे को अपवित्र आदि करने के कारण माना जाता है।

सतीन'—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार का मटर। २ अपराजिता। ३ बाँस (को०)। ४ जल पानी (को०)।

सतीन'—वि० यथार्थ। वास्तविक (को०)।

सतीनक—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का मटर (को०)।

सतीपन—सज्ञा पुं० [स० सती+हिं० पन (प्रत्य०)] सती रहने का भाव। पातिव्रत्य। सतीत्व।

सतीपुत्र—सज्ञा पुं० [स०] साध्वी स्त्री का पुत्र।

सती प्रथा—सज्ञा स्त्री० [स० सती+प्रथा] पति के मरण के उपरात पत्नी का उसके साथ सहगमन या जल जाना।

विशेष अगरेजी शासन काल मे सार्ड विलियम बेंटिक ने कानून बनाकर इस प्रथा को बद कर दिया। इस प्रथा के विरुद्ध आदोलन के मुख्य प्रेरक राजा राम मोहन राय कहे जाते है।

सतीर्थ'—सज्ञा पुं० [स०] १ एक ही आचार्य से पढनेवाला। सहपाठी। ब्रह्मचारी। २ शिव का एक नाम (को०)।

सतीर्थ'—वि० तीर्थवाला। तीर्थयुक्त (को०)।

सतीर्थ्य—सज्ञा पु० [स०] सहपाठी। ब्रह्मचारी।

सतील—सज्ञा पुं० [स०] १ बाँस। वश। तृणराज। २ अपराजिता। ३ वायु। ४ एक प्रकार का मटर (को०)।

सतीलक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का मटर (को०)।

सतीला—सज्ञा स्त्री० [स०] अपराजिता। विष्णुक्राता। कोयल लता।

सतीव्रत—सज्ञा पुं० [स०] पतिव्रत (को०)।

सतीव्रता—सज्ञा स्त्री० [स०] पतिव्रता स्त्री (को०)।

सतुआ†—सज्ञा पुं० [स० सक्तुक, सक्तुआ] भ्रष्ट यवादि चूर्ण। भुने हुए जौ और चने का चूर्ण जो पानी डालकर खाया जाता है। सत्तू।

सतुआनि†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सतुआ] दे० 'सतुआ सक्राति'।

सतुआ सक्राति—सज्ञा स्त्री० [हिं० सतुआ+सक्राति] मेष की सक्राति जो प्राय वैशाख मे पडती है। इस दिन लोग जल से भरा घडा, पखा और सत्तू दान करते और खाते है।

सतुआसोठ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सतुआ+सोठ] साठ की एक जाति।

सतुष—वि० [स०] जिसमे तुष अर्थात् छिलका हो। (अन्न) जो भूसी से युक्त हो (को०)।

सतून—सज्ञा पु० [फा०, मि० स० स्थूण] स्तभ। खभा।

सतूना—सज्ञा पु० [फा० सतून (=खभा)] बाज की एक झपट जिसमे वह पहले शिकार के ठीक ऊपर उड जाता है, और फिर एकबारगी नीचे की ओर उसपर टूट पडता है। उ०—काग आपनी चतुराई तब तक लेहु चलाइ। जब लगि सिर पर देइ नहिं लगर सतूना आइ।—रसनिधि (शब्द०)।

सतृट्—वि० [सं० सतृप्] दे० 'सतृष'।

सतृप—वि० [स०] १ तृष्णा से युक्त। प्यासवाला। प्यासा। २ चाहनेवाला। इच्छुक।

सतृष्ण—वि० [स०] दे० 'सतृप'।

सतेज—वि० [स० सतेजस्] दे० 'सतेजा'।

सतेजा—वि० [स० सतेजस्] तेजयुक्त। जिसमे तेज हो। दीप्तिमान्। प्रभायुक्त (को०)।

सतेर—सज्ञा पुं० [स०] भूमी। भुस। तुष।

सतेरक—सज्ञा पुं० [स०] ऋतु। मौसिम।

सतेरी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की मधुमक्खी।

सतेस—सज्ञा स्त्री० [स० स+तरस् (=वेग)] शीघ्रता। फुर्ती। तेजी।

सतोखना पु†—क्रि० स० [स० सन्तोषण] १ सतुष्ट करना। प्रसन्न करना। २ सतोष दिलाना। समझाना। ढारस देना।

सतोगुण—सज्ञा पु० [स० सत्वगुण] दे० 'सत्वगुण'।

सतोगुणी—सज्ञा पुं० [हिं० सतोगुण+ई (प्रत्य०)] सत्वगुणवाला। उत्तम प्रकृति का। सात्विक।

सतोद—वि० [स०] करकने या शल्य की तरह चुभनेवाली वेदना से युक्त (को०)।

सतोदर—सज्ञा पु० [स० शतोदर] दे० 'शतोदर'।

सतौला†—सज्ञा पुं० [हिं० सात+औना (प्रत्य०)] प्रसूता स्त्री का वह विधिपूर्वक स्नान जो प्रसव के सातवे दिन होता है।

सतौसर—सज्ञा पुं० [सं० सप्तसूक्] सात लडी का हार। सतलडा हार।

सत्कथा—सज्ञा स्त्री० [स०] उत्तम कथा या मनोरजक वार्ता। अच्छी बात चीत (को०)।

सत्कदब—सज्ञा पु० [स० सत्कदम्ब] एक प्रकार का कदव।

सत्करण—सज्ञा पु० [स०] [वि० सत्करणीय, सत्कृत] १ सत्कार करना। आदर करना। २ मृतक की अतिम क्रिया करना। क्रिया कर्म करना।

सत्करणीय—वि० [स०] सत्कार करने योग्य। आदरणीय। पूज्य।

सत्कर्त्तव्य—वि० [स०] १ सत्कार के योग्य। २ जिसका सत्कार करना हो।

सत्कर्त्ता'—वि०, सज्ञा पुं० [स० सत्कर्तृ] [स्त्री० सत्कर्त्री] १ अच्छा काम करनेवाला। सत्कर्म करनेवाला। २ हित करनेवाला। ३ आदर सत्कार करनेवाला।

सत्कर्त्ता'—सज्ञा पुं० विष्णु का एक नाम (को०)।

सत्कर्म—सज्ञा पु० [स० सत्कर्मन्] [वि० सत्कर्मा] १ अच्छा कर्म। अच्छा काम। २ धर्म या उपकार का काम। पुण्य। ३ अच्छा सस्कार। ४ सत्कार। ५ अभिवादन (को०)। ६ शुद्धि। प्रायश्चित्त। सस्कार (को०)। ६ अत्येष्टि कर्म (को०)।

सत्कला—सज्ञा पुं० [स०] उत्कृष्ट या ललित कला (को०)।

सत्कवि—सज्ञा पुं० [स०] सुकवि। श्रेष्ठ या उत्कृष्ट कोटि का कवि (को०)।

सत्काचनार—सज्ञा पु० [स० सत्काञ्चनार] रक्त काचन वृक्ष। लाल कचनार (को०)।

सत्काड—सज्ञा पु० [स० सत्काण्ड] १ चीन। २ बाज। श्येन (को०)।

सत्काय दृष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्ध मतानुसार मृत्यु के उपरात आत्मा, लिग, शरीर आदि के बने रहने का मिथ्या सिद्धात।

सत्कार—संज्ञा पु० [सं०] १ आए हुए के प्रति अच्छा व्यवहार। आदर। समान। खातिरदारी। २ आतिथ्य। मेहमानदारी। ३ पर्व। उत्सव। ४ देखभाल। ख्याल (को०)। ५ दावत। भोज (को०)।

सत्कार्य[1]—वि० [सं०] १ सत्कार करने योग्य। २ जिसका सत्कार करना हो। ३ जिस (मृतक) का क्रिया कर्म करना हो।

सत्कार्य[2]—संज्ञा पु० १ उत्तम कार्य। अच्छा काम। २ कारण मे कार्य की स्थिति या सत्ता का होना (को०)।

सत्कार्यवाद—संज्ञा पुं० [सं०] सांख्य का यह दार्शनिक सिद्धांत कि बिना कारण के कार्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती, अर्थात् इस जगत् की उत्पत्ति शून्य से नहीं हो सकती, किसी मूल सत्ता से है। किसी कारण मे कार्य की सत्ता का सिद्धांत। यह सिद्धांत बौद्धों के शून्यवाद का विरोधी है।

सत्किष्कु—संज्ञा पुं० [सं०] लंबाई की एक प्राचीन नाप जो सवा गज के लगभग होती थी।

सत्कीर्त्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम कीर्त्ति। यश। नेकनामी।

सत्कुल[1]—संज्ञा पु० [सं०] उत्तम कुल। अच्छा या बड़ा खानदान।

सत्कुल[2]—वि० अच्छे कुल का। खानदानी।

सत्कुलीन—वि० [सं०] सत्कुल मे उत्पन्न। जो अच्छे कुल का हो। खानदानी (को०)।

सत्कृत—वि० [सं०] १ अच्छी तरह किया हुआ। २ जिसका आदर सत्कार किया गया हो। आदृत। ३ अलंकृत। सजाया हुआ। बनाया हुआ।

सत्कृत[2]—संज्ञा पुं० १ सत्कार। समान। आदर। २ सत्कर्म। अच्छा काम। पुण्य। ३ शिव (को०)। ४ आतिथ्य (को०)।

सत्कृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आदर सत्कार। २. सद्गुण। सदाचार। ३ पुण्य। अच्छा कर्म (को०)।

सत्क्रिय—वि० [सं०] सत् कार्य करनेवाला (को०)।

सत्क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सत्कर्म। पुण्य। धर्म का काम। २ सत्कार। आदर। अच्छा व्यवहार। खातिरदारी। ३ आयोजन। तैयारी। सजावट। ४ शिष्टाचार। अभिवादन (को०)। ५ शुद्धि संस्कार (को०)। ६ मृतक संस्कार। अंत्येष्टि क्रिया (को०)।

सत्त[1]—संज्ञा पुं० [सं० सत्व, प्रा० सत्त] १ किसी पदार्थ का सार भाग। असली जुज। रस। जैसे,—गेहूँ का सत्त, मुलेठी का सत्त। २ तत्व। काम की वस्तु। जैसे,—अब तो उसमे कुछ भी सत्त बाकी नहीं रह गया।

सत्त[2]‡—संज्ञा पुं० [सं० सत्य, प्रा० सत्त] १ सत्य। सच बात। २ सतीत्व। पातिव्रत्य।

सत्तम—वि० [सं०] १ अत्यंत सुंदर। सर्वोत्तम। २. सर्वश्रेष्ठ। सर्वजन-पूज्य (को०)।

सत्तर[1]—वि० [सं० सप्तति, प्रा० सत्तरि] साठ और दस। जो गिनती मे साठ से दस अधिक हो।

सत्तर[2]—संज्ञा पुं० साठ से दस अधिक की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—७०।

सत्तरवाँ†—वि० [हिं० सत्तर+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० सत्तरवीं] जो क्रम मे सत्तर के स्थान पर हो।

सत्तरह[1]—वि० [सं० सप्तदश, प्रा० सत्तरह] दस और सात। जो गिनती मे दस से सात अधिक हो।

सत्तरह[2]—संज्ञा पु० १ दस से सात की अधिक संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१७। २ पाँसे के खेल मे एक दाँव जिसमे दो छक्के और एक पंजा तीनों एक साथ पड़ते हैं।

सत्तरहवाँ—वि० [हिं० सत्तरह+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० सत्तरहवीं] जो क्रम मे सत्तरह के स्थान पर पड़े।

सत्तलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] आस्तरण। दरी। बिछौना। कालीन। गलीचा (को०)।

सत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ होने का भाव। अस्तित्व। हस्ती। होना। भाव। २. शक्ति। दम। ३ वास्तविकता। यथार्थता (को०)। ४ जाति का एक भेद (को०)। ५ उत्तमता। श्रेष्ठता (को०)। ६ अधिकार। प्रभुत्व। हुकूमत। (मराठी मे गृहीत)।

मुहा०—सत्ता चलाना=अधिकार जताना। हुकूमत करना। उ०—जो लोग असभ्य हैं, जगली हैं उनपर सत्ता चलाने (हुकूमत करने) मे अनियंत्रित शासन अच्छा होता है।—महावीर-—प्रसाद द्विवेदी (शब्द०)।

सत्ता[2]—संज्ञा पुं० [सं० सप्तक, या हिं० सात] ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमे सात बूटियाँ हों।

सत्ताइस, सत्ताईस[1]—वि० [सं० सप्तविंशति, प्रा० सत्ताईसा] सात और बीस। जो गिनती मे बीस से सात अधिक हो।

सत्ताइस, सत्ताईस[2]—संज्ञा पु० बीस से सात अधिक की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है,—२७।

सत्ताइसवाँ—वि० [हिं० सत्ताइस+वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम मे सत्ताइस के स्थान पर पड़ता हो।

सत्ताधारी—संज्ञा पुं० [सं० सत्ताधारिन्] अधिकारी। अफसर। हाकिम।

सत्तानवे[1]—वि० [सं० सप्तनवति, प्रा० सत्तानवइ] नब्बे और सात। जो गिनती मे सौ मे तीन कम हो।

सत्तानवे[2]—संज्ञा पु० सौ से तीन कम की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है,—९७।

सत्तानवेवाँ—वि० [हिं० सत्तानवे+वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम मे सत्तानवे के स्थान पर पड़ता हो।

सत्तार—संज्ञा पु० [अ०] १ परदा ढाँकनेवाला। दोष ढाँकनेवाला। २ ईश्वर (को०)।

सत्तावन[1]—वि० [सं० सप्तपञ्चाशत, प्रा० सत्तावन्ना] पचास और सात। जो गिनती मे तीन कम साठ हो।

सत्तावन[2]—संज्ञा पुं० तीन कम साठ की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है,—५७।

सत्तावनवाँ—वि० [हिं० सतावन + वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम मे सत्तावन के स्थान पर पडा हो।

सत्ताशास्त्र—सज्ञा पुं० [सं०] पाश्चात्य दर्शन की वह शाखा जिसमे मूल या पारमार्थिक सत्ता का विवेचन हो।

सत्तासामान्यत्व—सज्ञा पुं० [स०] अनेक रूपो के भीतर एक सामान्य द्रव्य का अस्तित्व। जैसे,—कुडल, ककण आदि अनेक गहनो मे, 'सोना' नामक द्रव्य सामान्य रूप से पाया जाता है।

विशेष—इस तथ्य का उपयोग वेदातो या दार्शनिक अनेक नाम-रूपात्मक जगत् को तह मे किसी एक अनिर्वचनीय और अव्यक्त सत्ता का प्रतिपादन करने मे करते है।

सत्तासी[1]—वि० [स० सप्ताशीति, प्रा० सत्तासी] अस्सी और सात। जो तीन कम नब्बे हो।

सत्तासी[2]—सज्ञा पुं० तीन कम नब्बे की सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है,—८७।

सत्तासीवाँ—वि० [हिं० सत्तासी + वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम मे तीन कम नब्बे के स्थान पर हो।

सत्ति[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शक्ति] शक्ति। सामर्थ्य।

सत्ति[2]—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ बैठने की क्रिया। उपवेशन। २ प्रारभ। शुरुआत (को०)।

सत्तू—सज्ञा पुं० [स० सक्तुक, प्रा० सत्तुअ] भुने हुए जौ और चने या और किसी अन्न का चूर्ण या आटा जो पानी मे घोलकर खाया जाता है।

मुहा०—सत्तू बाँधकर पीछे पडना = (१) पूरी तैयारी के साथ किसी को तग करने मे लगना। सब काम धधा छोडकर किसी के विरुद्ध प्रयत्न करना। (२) पूर्ण तैयारी के साथ किसी काम मे लगना। सब काम धधा छोडकर प्रवृत्त होना।

सत्पति—सज्ञा पुं० [स०] १ भले लोगो या वीरो का स्वामी। २ इद्र। देवराज। शक्र (को०)।

सत्पत्र—सज्ञा पु० [स०] कमल का नवीन पत्ता (को०)।

सत्पथ—सज्ञा पुं० [स०] १ उत्तम मार्ग। २. सदाचार। अच्छी चाल। ३ उत्तम सप्रदाय या सिद्धात। अच्छा पथ।

सत्पथीन—वि० [स०] सत्पथ या सुमार्ग पर चलनेवाला (को०)।

सत्परिग्रह—सज्ञा पु० [स०] सत् या योग्य व्यक्ति से दान ग्रहण करना (को०)।

सत्पशु—सज्ञा पुं० [स०] देवताओ के बलि योग्य अच्छा पशु। वह पशु जो देव बलि देने के योग्य हो।

सत्पात्र—सज्ञा पु० [स०] १ दान आदि देने के योग्य उत्तम व्यक्ति। २ श्रेष्ठ और सदाचारी व्यक्ति। योग्य मनुष्य। ३ कन्या देने के योग्य उत्तम पुरुष। अच्छा वर।

सत्पात्रवर्ष—सज्ञा पु० [स०] योग्य व्यक्ति के प्रति उदारता का व्यवहार (को०)।

सत्पात्रवर्षी—वि० [स० सत्पात्रवर्षिन्] पात्रता का विचार करके दान आदि देनेवाला (को०)।

सत्पुत्र[1]—सज्ञा पु० [स०] १ योग्य पुत्र। २ वह पुत्र जो पितरो का विधिपूर्वक तर्पण आदि करे (को०)।

सत्पुत्र[2]—वि० [स०] पुत्रवाला (को०)।

सत्पुरुष—सज्ञा पुं० [स०] भला आदमी। सदाचारी पुरुष।

सत्पुष्प—सज्ञा पुं० [स०] १ अच्छा पुष्प। उत्तम पुष्प। २ पूर्ण विकसित फूल (को०)।

सत्प्रतिग्रह—सज्ञा पुं० [सं०] योग्य पात्र मे दान ग्रहण करना (को०)।

सत्प्रतिपक्ष[1]—वि० [स०] जिसका उचित खडन हो सके। जिसके विपक्ष मे बहुत कुछ कहा जा सके।

सत्प्रतिपक्ष[2]—सज्ञा पुं० [स०] हेत्वाभास के पाँच प्रकारो मे से एक (यत्र साध्याभावसाधक हेत्वन्तर स प्रतिपक्ष) वह हेतु जिसके विपक्ष मे अन्य समकक्ष हेतु हो। जैसे शब्द नित्य है क्योकि वह श्रव्य है, शब्द अनित्य है क्योकि वह उत्पन्न है। यहाँ शब्द की नित्यता के हेतु 'श्रव्य' के समकक्ष उसकी अनित्यता का हेतु 'उत्पत्ति' है।

सत्प्रमुदिता—सज्ञा स्त्री० [स०] साख्य दर्शन के अनुसार आठ सिद्धियो मे से एक सिद्धि (को०)।

सत्फल—सज्ञा पुं० [स०] दाडिम। अनार।

सत्यकार—सज्ञा पुं० [स० सत्यत्कार] १ वचन को सत्य करना। २ वादा पूरा करना। २ वादा पूरा करने की जमानत के तौर पर कुछ पेशगी देना।

सत्यभरा—सज्ञा स्त्री० [स० सत्यम्भरा] एक नदी का नाम (को०)।

सत्य[1]—वि० [स०] १ जो बात जैसी है, उसके सबध मे वैसा ही (कथन)। यथार्थ। ठीक। वास्तविक। सही। यथातथ्य। जैसे,—सत्य बात, सत्य वचन। २ असल। ३ ईमानदार। निष्कपट। विश्वस्त (को०)। ४ सद्गुणी। सच्चरित्र। ५ जो झूठा न हो। सच्चा (को०)।

सत्य[2]—क्रि० वि० सचमुच। ठीक ठीक।

सत्य[3]—सज्ञा पु० १ वास्तविक बात। ठीक बात। यथार्थ तत्व। जैसे,—सत्य को कोई छिपा नही सकता।

विशेष—बौद्ध धर्म मे चार आर्य सत्य कहे गए है—दुख सत्य (ससार दुख रूप है यह सत्य बात), दुखसमुदय (दुख के कारण), दुखनिरोध (दुख रोका जाता है) और मार्ग (निर्वाण का मार्ग)। बौद्ध दार्शनिक दो प्रकार का सत्य मानते हैं—सवृत्ति सत्य (जो बहुमत से माना गया हो) और परमार्थ सत्य (जो स्वत सत्य हो)।

२ उचित पक्ष। न्याय पक्ष। धर्म की बात। ईमान की बात। जैसे,—हम सत्य पर दृढ रहेंगे। ३ पारमार्थिक सत्ता। वह वस्तु जो सदा ज्यो की त्यो रहे, जिसमे किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन न हो (वेदात)। जैसे,—ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या है। ४ ऊपर के सात लोको मे से सबसे ऊपर का लोक जहाँ ब्रह्मा अवस्थान करते हैं। ५ नवे कल्प का नाम। ६ अश्वत्थ वृक्ष। पीपल का पेड। ७ विष्णु का एक नाम। ८ रामचद्र का एक नाम। ९. नादीमुख श्राद्ध के अधिष्ठाता

देवता। १० विश्वेदेवा मे से एक। ११ शपथ। कसम। १२ प्रतिज्ञा। कौल। १३ चार युगो मे से पहला युग। कृतयुग। १४ एक दिव्यास्त्र। १५ ईमानदारी। निष्कपटता (को०)। १६ भद्रता। सद्गुण। शुचिता (को०)। १७ जल। पानी (को०)। १८ विशुद्धता। खरापन (को०)। १९ एक ऋषि। २० सात व्याहृतियो मे से एक (को०)। २१ ब्रह्म (को०)। २२ मोक्ष (को०)।

यौ०—सत्यकृत् = उचित कार्य को करनेवाला। सत्यग्रथि = जिसकी ग्रथि सत्य हो। सच्ची और ठीक गाँठ बाँधनेवाला। सत्यघ्न = सत्य की हत्या करनेवाला। शपथ या प्रतिज्ञा भग करनेवाला। सत्यनिष्ठ = सचाई पर दृढ रहनेवाला। सत्यमेव = अत्रि मुनि के एक पुत्र का नाम। सत्यपाल = एक ऋषि। सत्यपूत = सत्य द्वारा शुद्ध। सत्यप्रतिश्रुत = बात का धनी। सत्यप्रतिष्ठान = जिसकी नीव सत्य पर आश्रित हो। सत्यबध = जो सत्य से बँधा हुआ हो। सत्यवादी। सत्यभारत = महाभारतकार व्यासदेव का एक नाम। सत्यभेदी = वादा तोडनेवाला। सत्ययौवन। सत्यरत = (१) सत्यवादी। (२) व्यास। सत्यरथ = विदर्भ के एक राजा। सत्यरूप = (१) वास्तविक स्वरूप वाला। (२) विश्वास योग्य। सत्यवाहन = जो सत्य का वहन करनेवाला हो। सत्यविक्रम = सच्चा वीर। सत्यवृत्त = अच्छे आचरणवाला। सत्यवृत्ति = सदाचार। सत्यशपथ = (१) जिसकी प्रतिज्ञा पूरी होकर रहे। (२) जिसका शाप झूठा न हो। सत्यसरक्षण = सत्य की रक्षा करना। वचन का पालन। सत्यसार = जो पूर्णत सत्य हो। सत्यस्वप्न = जिसका सपना सच्चा हो।

**सत्यक**—वि० [स०] दे० 'सत्य'।

**सत्यक**—सज्ञा पु० [स०] १ अनुबध या सौदे का पुष्टिकरण। २ कृष्ण का एक पुत्र जिसकी माता का नाम भद्रा था। यह केकयराज की कन्या थी। ३ मनु रैवतक का एक पुत्र (को०)।

**सत्यकाम**—वि० [स०] सत्य का प्रेमी।

**सत्यकीर्ति**—सज्ञा पुं० [स०] १ एक अस्त्र जो मनबल से चलाया जाता था। २. सधान के पूर्व अस्त्र को अभिमत्रित करने का एक मत्र (को०)।

**सत्यकेतु**—सज्ञा पुं० [स०] १ एक बुद्ध का नाम। २ केकय देश के एक राजा का नाम। ३ अक्रूर के पुत्र का नाम।

**सत्यक्रिया**—सज्ञा स्त्री० [स०] वादा। प्रतिज्ञा। शपथ। (बौद्ध)।

**सत्यजित्**—सज्ञा पुं० [स०] १ वासुदेव का एक भतीजा। २. एक दानव। ३ एक यक्ष। ४ तीसरे मन्वतर के इद्र का नाम।

**सत्यज्ञ**—वि० [स०] जिसे सत्य की जानकारी हो।

**सत्यतपा**—सज्ञा पु० [स० सत्यतपस्] वाराहपुराण मे वर्णित एक ऋषि का नाम जो पहले व्याध थे।

**सत्यत**—अव्य० [स० सत्यतस्] ठीक ठीक। वास्तव मे। सचमुच।

**सत्यता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सत्य होने का भाव। वास्तविकता। सचाई। २ नित्यता।

**सत्यदर्शी**[1]—वि० [सं० सत्यदर्शिन्] सत्य का पारखी। सत्य को पहचान लेनेवाला। सत्य और असत्य का विवेक करनेवाला (को०)।

**सत्यदर्शी**[2]—सज्ञा पुं० तेरहवे मन्वतर क एक ऋषि का नाम (को०)।

**सत्यदृक्**—वि० [सं० सत्यदृश्] दे० 'सत्यदर्शी'।

**सत्यधन**—वि० [स०] जिसका सर्वस्व सत्य हो। जिसे सत्य सबसे प्रिय हो।

**सत्यधर्म**—सज्ञा पुं० [स०] १. तेरहवें मनु के एक पुत्र का नाम। २ सत्य रूपी धर्म। शाश्वत सत्य। धर्म (को०)।

यौ०—सत्यधर्म पथ = सत्यरूपी धर्म का मार्ग। शाश्वत सत्य का मार्ग। सत्यधर्म परायण = सत्यरूपी धर्म को माननेवाला। सत्य को माननेवाला। सत्य का पालन करनेवाला।

**सत्यधृति**—वि० [सं०] अत्यत सत्यवादी। पूर्णत सत्यवक्ता (को०)।

**सत्यनारायण**—सज्ञा पु० [स०] विष्णु भगवान् का एक नाम जिसके सबध मे एक कथा रची गई है। इस कथा का प्रचार आजकल बहुत है।

**विशेष**—ऐसा पता लगता है कि अकबर के समय बग देश मे अकबर के नए मत 'दीन इलाही' के प्रचार के लिये पहले पहल यह कथा किसी पडित से लिखाई गई थी और उसका रूप कुछ दूसरा ही था। जैसे, नारद और विष्णु का सवाद उसमे न था, और 'दडी' के स्थान पर शाह या पीर नाम था। पीछे पडितो ने उस कथा मे आवश्यक परिवर्तन करके पौराणिक हिंदूधर्म के अनुकूल कर लिया और वह उसी परिवर्तित रूप मे प्रचलित हुई। बग भाषा मे भी सत्यपीर की कथा के नाम से यह कथा पाई गई है।

**सत्यपर, सत्यपरायण**—वि० [स०] सत्य मे प्रवृत्त। ईमानदार।

**सत्यपारमिता**—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्ध धर्मानुसार सत्य की प्राप्ति अथवा सिद्धि (को०)।

**सत्यपुर**—सज्ञा पुं० [स०] १ विष्णुलोक। २. सत्यरूपी नारायण का लोक (को०)।

**सत्यपुरुष**—सज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर। परमात्मा।

**सत्यपूत**—वि० [स०] सत्य द्वारा परिष्कृत या पवित्र (को०)।

**सत्यप्रतिज्ञ**—वि० [सं०] प्रतिज्ञा को सत्य करनेवाला। वचन का सच्चा।

**सत्यफल**—सज्ञा पुं० [स०] बिल्व। श्रीफल। बेल।

**सत्यभामा**—सज्ञा स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की आठ पटरानियो मे से एक जो सत्राजित की कन्या थी। इन्ही के लिये कृष्ण पारिजात लाने गए थे और इद्र से लडे थे।

**सत्यमान**—सज्ञा पु० [स०] ठीक नापजोख या नापतौल (को०)।

**सत्यमूल**—वि० [स०] जिसका मूल सत्य हो। सत्य पर आश्रित। उ०—सत्यमूल सब सुकृत सुहाए। वेद पुरान विदित मुनि गाए।—मानस, २।२८।

**सत्यमेधा**—सज्ञा पुं० [सं० सत्यमेधस्] विष्णु (को०)।

**सत्ययुग**—संज्ञा पु० [सं०] पौराणिक काल गणना के अनुसार चार युगों में से पहला युग। कृतयुग।

**विशेष**—यह युग सबसे उत्तम माना जाता है। इस युग में पुण्य और सत्यता की अधिकता रहती है। यह १७, २८,००,० वर्ष का कहा गया है। इसका आरंभ वैशाख शुक्ला तृतीया रविवार से माना गया है।

**सत्ययुगाद्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैशाख शुक्ल तृतीया जिस दिन से सत्ययुग का आरंभ माना गया है।

**सत्ययुगी**—वि० [सं० सत्ययुग+हिं० ई (प्रत्य०)] १ सत्ययुग का। सत्ययुग संबंधी। २ बहुत प्राचीन। ३ बहुत सीधा और सज्जन। सच्चरित्र। धर्मात्मा। कलियुगी का उलटा।

**सत्ययौवन**—संज्ञा पुं० [सं०] एक देव योनि। विद्याधर (को०)।

**सत्यरथा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] त्रिशंकु की पत्नी का नाम (को०)।

**सत्यलोक**—संज्ञा पु० [सं०] ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक जहाँ ब्रह्मा रहते हैं। उ०—सत्यलोक नारद चले करत राम गुन गान।—मानस, १।१३८।

**सत्यवक्ता**—वि० [सं० सत्यवक्तृ] सत्य बोलनेवाला। सत्यवादी।

**सत्यवचन**—संज्ञा पु० [सं०] सच कहना। यथार्थ कथन। २ प्रतिज्ञा। कौल। वादा।

**सत्यवचा'**—संज्ञा पुं० [सं० सत्यवचस्] १ ऋषि। संत। २ भविष्य-द्रष्टा सिद्ध पुरुष। ३ सचाई (को०)।

**सत्यवचा'**—वि० सच बोलनेवाला (को०)।

**सत्यवती'**—वि० स्त्री० [सं०] सच बोलनेवाली। २ सत्य या धर्म का पालन करनेवाली।

**सत्यवती'**—संज्ञा स्त्री० १ मत्स्यगंधा नामक धीवरकन्या जिसके गर्भ से कुमारी अवस्था में ही पराशर के संयोग से कृष्ण द्वैपायन या व्यास की उत्पत्ति हुई थी। २ शमी वृक्ष। ३ गाधि की पुत्री और ऋचीक की पत्नी जिसके कौशिकी नदी हो जाने की कथा प्रसिद्ध है। ४ नारद की पत्नी का नाम (को०)।

**सत्यवती सुत**—संज्ञा पु० [सं०] सत्यवती के पुत्र वेदव्यास।

**सत्यवदन**—संज्ञा पु० [सं०] सच बोलना (को०)।

**सत्यवद्य**—संज्ञा पु० [सं०] १ वह जिसकी बात या प्रतिज्ञा आदि सच्ची हो। २ सच्ची बात। सचाई (को०)।

**सत्यवसु**—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वेदेवों में से एक।

**सत्यवाक्य**—संज्ञा पु० [सं०] सत्यवादिता। सत्य बोलना (को०)।

**सत्यवाच्**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सत्य वचन। २ वादा। करार। प्रतिज्ञा। ३ एक प्रकार का मंत्रास्त्र। ४ काक। कौआ। ५ कश्यप मुनि का एक पुत्र (को०)। ६ सावर्णि मनु का एक पुत्र (को०)। ७ वह जो सत्य बोलता हो।

**सत्यवाचक**—वि० [सं०] सत्यवक्ता। सत्यवादी।

**सत्यवाद**—संज्ञा पु० [सं०] [वि० सत्यवादी] १ सत्य बोलना। सच कहना। २ धर्म पर दृढ रहना। ईमान पर रहना।

**सत्यवादिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ द्राक्षायिणी का एक नाम। २ वाधि द्रुम की एक देवी। ३ वह स्त्री जो सत्य बोलती हो। सच बोलनेवाली स्त्री।

**सत्यवादी**—वि० [सं० सत्यवादिन्] [वि० स्त्री० सत्यवादिनी] १ सत्य कहनेवाला। सच बोलनेवाला। २ प्रतिज्ञा पर दृढ रहनेवाला। वचन को पूरा करनेवाला। ३ धर्म पर दृढ रहनेवाला। धर्म कभी न छोड़नेवाला। जैसे,—राजा हरिश्चंद्र बड़े सत्यवादी थे। ४ निष्कपट (को०)।

**सत्यवान्'**—वि० [सं० सत्यवत्] [वि० स्त्री० सत्यवती] १ सच बोलने-वाला। २ प्रतिज्ञा पर दृढ रहनेवाला।

**सत्यवान्'**—संज्ञा पु० शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन के पुत्र का नाम जिसकी पत्नी सावित्री के पातिव्रत्य के अलौकिक प्रभाव की कथा पुराणों में प्रसिद्ध है।

**विशेष**—इनके पिता अंधे हो गए थे और गद्दी से उतार दिए गए थे। वे उदास होकर पुत्र और पत्नी सहित वन में रहते थे। मद्र देश के राजा घूमते घूमते उस वन में आए और उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह सत्यवान् के साथ कर दिया। पर सत्यवान् अल्पायु थे, इससे वे शीघ्र मर गए। सावित्री ने पातिव्रत्य के बल से अपने पति को जिला दिया।

२ चाक्षुष मनु का एक पुत्र। ३, अस्त्र संचालन में प्रयुक्त एक मंत्र। अस्त्र मंत्र (को०)।

**सत्यव्यवस्था**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्य की व्यवस्था, निरूपण या निश्चय (को०)।

**सत्यव्रत'**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सत्य बोलने की प्रतिज्ञा या नियम। २ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ३ त्रेतायुग में सूर्यवंश के पचीसवें राजा जो त्र्यारुण के पुत्र थे। आगे चलकर इन्हीं का नाम त्रिशंकु पड़ा (को०)। ४ महादेव (को०)।

**सत्यव्रत'**—वि० १ जिसने सत्य बोलने की प्रतिज्ञा की हो। सत्य का नियम पालन करनेवाला। २ ईमानदार। सच्चा (को०)।

**सत्यशील**—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सत्यशीला] सत्य का पालन करने-वाला। सच्चा।

**सत्यश्रवसो**—संज्ञा स्त्री० [सं०] उषा का एक रूप (को०)।

**सत्यशपथ**—संज्ञा पुं० [सं०] शपथ ग्रहण (को०)।

**सत्यसंकल्प**—वि० [सं० सत्यसङ्कल्प] जो विचारे हुए कार्य को पूरा करे। दृढसंकल्प। उ०—राम सत्यसंकल्प प्रभु सभा काल बस तोरि।—मानस, ६।४१।

**सत्यसंकाश**—वि० [सं० सत्यसङ्काश] सत्य जैसा। सत्य के समान। सत्यवत् (को०)।

**सत्यसंगर'**—वि० [सं० सत्यसङ्गर] दे० 'सत्यव्रत' या 'सत्य-संकल्प' (को०)।

**सत्यसंगर'**—संज्ञा पु० कुबेर का एक नाम (को०)।

**सत्यसंध'**—वि० [सं० सत्यसन्ध]। [स्त्री० सत्यसंधा] सत्यप्रतिज्ञ। वचन को पूरा करनेवाला। उ०—सत्यसंध दृढव्रत रघुराई।—तुलसी (शब्द०)।

सत्यसध[२]—सज्ञा पुं० १ रामचद्र का एक नाम। २ भरत का एक नाम। ३ जनमेजय का एक नाम। ४ स्कद का एक अनुचर। ५ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

सत्यसधी[३]—वि० [स० सत्य+सन्धान] जिसका निशाना अचूक हो। जिसका लक्ष्य न चूके। उ०—सत्यसध प्रभ वध करि येही। आनहु चर्म कहनि वैदेही।—मानस, ३।२१।

सत्यसधा—सज्ञा स्त्री० [स० सत्यसन्धा] द्रौपदी का एक नाम।

सत्यसभव—सज्ञा पु० [स० सत्यसम्भव] वचन। वादा। प्रतिज्ञा [को०]।

सत्यसहित—वि० [स०] वचन का पक्का। जिसका कथन सत्य हो [को०]।

सत्यसाक्षी—सज्ञा पु० [स० सत्यसाक्षिन्] प्रत्यक्षदर्शी या विश्वस्त गवाह [को०]।

सत्याग—वि० [स० सत्याङ्ग] जिसके सभी अग सत्य के बने हो [को०]।

सत्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सच्चाई। सत्यता। २ दुर्गा का एक नाम। ३ सीता का एक नाम। ४ व्यास की माता सत्यवती। ५ द्रौपदी का एक नाम (को०)। ६ कृष्ण की पत्नी सत्यभामा (को०)। ७ विष्णु की माता (को०)।

सत्याकृति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पेशगी रकम। अग्रिम धन। २ (इकरारनामा या मसौदे मे) दर निर्धारण [को०]।

सत्याग्नि—सज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि।

सत्याग्रह—सज्ञा पुं० [स० सत्य+आग्रह] [वि० सत्याग्रही] सत्य के लिये आग्रह या हठ। सत्य या न्याय पक्ष पर प्रतिज्ञापूर्वक अडना और उसकी सिद्धि के उद्योग मे मार्ग मे आनेवाली कठिनाइयो और कष्टो को धीरतापूर्वक सहना और किसी प्रकार का उपद्रव या बल प्रयोग न करना।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सत्याग्रही—वि० [स० सत्याग्रहिन्] सत्य या न्याय के लिये आग्रह करनेवाला। सत्याग्रह का सहारा लेनेवाला।

सत्यात्मक—वि० [स०] वह जिसका तत्त्व सत्य हो।

सत्यात्मज—सज्ञा पु० [स०] १ सत्या या सत्यभामा का पुत्र। २ सत्य का पुत्र [को०]।

सत्यात्मा—वि० [स० सत्यात्मन्] १ सत्यपरायण। सत्याचरण करनेवाला। २ सत्यवादी [को०]।

सत्यानद—सज्ञा पुं० [स० सत्यानन्द] वास्तविक आनद [को०]।

सत्यानास—सज्ञा पुं० [स० सत्ता+नाश] सर्वनाश। मटियामेट। ध्वस। बरबादी।

सत्यानासी[१]—वि० [हि० सत्यानास+ई (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सत्यानासिन] १ सत्यानास करनेवाला। चौपट करनेवाला। २ अभागा। बदकिस्मत।

सत्यानासी[२]—सज्ञा स्त्री० एक कँटीला पौधा जो प्राय खँडहरो और उजाड़ स्थानो पर जमता है। घमोई। भडभाँड। स्वर्णक्षीरी। पीतपुष्पा।

विशेष—इसके बीच मे गोभी के पौधे की तरह एक काड ऊपर को गया होता है और चारो ओर नीलापन लिए हरे कटावदार पत्ते निकलते है जिनपर चारो ओर विषैले काँटे होते है। इस पौधे को काटने या दबाने से एक प्रकार का पीला दूध या रस निकलता है। इसका फूल पीला, कटोरे के आकार का और देखने मे सुदर पर गधहीन होता है। फूल झड जाने पर गुच्छो मे फल या बीजकोश लगते है जिनमे राई के से काले काले बीज भरे रहते हैं। इन बीजो से एक प्रकार का बहुत तीक्ष्ण तेल निकलता है जो खुजली पर लगाया जाता है। वैद्यक मे सत्यानासी कडवी, दस्तावर, शीतल तथा कृमि रोग, खुजली और विष को दूर करनेवाली मानी गई है।

सत्यानुरक्त—वि० [स०] सत्य का प्रेमी। सचाई का भक्त [को०]।

सत्यानृत[१]—सज्ञा पुं० [स०] १ सच और झूठ का मेल। सच और झूठ। २ वाणिज्य। व्यापार। दूकानदारी। ३ वह जो देखने मे सत्य हो किंतु वास्तव मे झूठ हो।

सत्यापन—सज्ञा पुं० [स०] १ असलियत की जाँच। सत्य होने का निश्चय। २ सत्य का पालन अथवा सत्य कथन (को०)। ३ सौदे के दर का निर्धारण या निश्चयन (को०)।

सत्यापना—सज्ञा स्त्री० [स०] १ किसी सौदे या इकरार का पूरा होना। २ दे० 'सत्यापन' (को०)।

सत्याभिधान—वि० [स०] सच बोलनेवाला [को०]।

सत्याभिसध—वि० [स० सत्याभिसन्ध] वादे का पक्का। जो अपना वचन पूरा करे [को०]।

सत्यालापी—वि० [स० सत्यालापिन्] दे० 'सत्याभिधान' [को०]।

सत्याश्रम—सज्ञा पु० [स०] ससारत्याग। सन्यास [को०]।

सत्याषाढी—सज्ञा स्त्री० [स० सत्याषाढी] कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा का नाम।

सत्येतर—सज्ञा पुं० [स०] जो सत्य से पृथक् या भिन्न हो। जो सत्य न हो। असत्य [को०]।

सत्योत्कर्ष—सज्ञा पु० [स०] १ सचाई मे श्रेष्ठता या प्रमुखता। २. सच्ची श्रेष्ठता [को०]।

सत्योत्तर—सज्ञा पु० [स०] १ सत्य बात का स्वीकार। २ अपराध आदि का स्वीकार। इकबाल। (स्मृति)।

सत्योद्य—वि० [स०] सच बोलनेवाला। सच्चा [को०]।

सत्योपपावन—सज्ञा पु० [स०] शरदडा नदी के पश्चिम तट पर स्थित एक पवित्र फलप्रद वृक्ष। (पुराण)।

सत्रग—सज्ञा पु० [स० सत्रङ्ग] एक प्रकार का पौधा।

सत्र—सज्ञा पु० [स० सत्र] १ यज्ञ, हवन दान आदि। २ एक सोमयाग जो १३ या १०० दिनो मे पूरा होता था। ३ परिवेषण। गोपन। ४ वह स्थान जहाँ मनुष्य छिप सकता हो। ५ कोठरी। घर। मकान। ६ धोखा। भ्राति। ७ धन। ८ तालाब। ९ जगल। १० वह स्थान जहाँ असहायो को भोजन

बाँटा जाता है। छेत्र। सदावर्त। जैसे,—अन्न सत्र। ११ विकट स्थान या समय।

विशेष—कौटिल्य ने लिखा है कि रेगिस्तान, सकटमय स्थान, दलदल, पहाड, नदी, घाटी, ऊँची नीची भूमि, नाव, गौ, शकट, व्यह, ध्रुव तथा रात ये सब सत्र कहे जाते हैं।

१२ उदारता। वदान्यता (को०)। १३ सद्गुण (को०)। १४ दो बडे अवकाशो के बीच किसी सस्था का लगातार चलनेवाला कार्यकाल (को०)। १५ घमड। अभिमान (को०)। १६. छद्म वेश (को०)।

यौ०—सत्रगृह=यज्ञ करने या आश्रय लेने का स्थान। सत्रपरिवेषण=यज्ञ मे भोजनदान। सत्रफल=सोमयाग का फल। सत्रफलद=यज्ञ या सत्र का फल देनेवाला। सत्रयाग=सोमयज्ञ। सत्रवसति, सत्रशाला=दे० 'सत्रगृह'। सत्रसद्म=दे० 'सत्रागार'।

सत्रप—वि० [स०] लाज सकोचवाला। विनयशील। लजालू [को०]।

सत्रह¹—सज्ञा पुं० [हिं० सत्तरह] १ सत्तरह की सख्या। २ पासे के खेल मे एक दाँव जिसमे दो छक्के और एक पजा साथ पडते हैं। उ०—ढारि पासा साधु सगति फेरि रसना सारि। दाँव अब के परचो पूरो कुमति पिछली हारि। राखि सत्रह सुनि अठारह चोर पाँचो मारि।—सूर (शब्द०)।

सत्रह²—वि० दे० 'सत्तरह'।

सत्रही—सज्ञा पुं० [हिं० सत्तरह] मृत्यु के सत्रहवें दिन होनेवाला कृत्य।

सत्रा—अव्य० [सं० सत्त्रा] सहित। साथ [को०]।

सत्रागार—सज्ञा पुं० [स० सत्त्रागार] सत्रशाला। यज्ञशाला [को०]।

सत्राजित—सज्ञा [सं०] एक यादव जिसकी कन्या सत्यभामा श्रीकृष्ण को ब्याही थी।

विशेष—इसने सूर्य की तपस्या करके दिव्य स्यमतक मणि प्राप्त की थी। उसके खो जाने पर इसने श्रीकृष्ण को चोरी लगाई। जब श्रीकृष्ण ने वह मणि ढूँढकर ला दी, तब सत्राजित बहुत लज्जित हुआ और उसने श्रीकृष्ण को अपनी कन्या सत्यभामा ब्याह दी।

सत्राजिती—सज्ञा स्त्री० [स०] सत्राजित की कन्या सत्यभामा का एक नाम।

सत्रापश्रय—सज्ञा पुं० [स० सत्त्रापश्रय] आश्रय या पनाह का स्थान। आश्रय का स्थान [को०]।

सत्रायण—सज्ञा पुं० [स० सत्त्रायण] यज्ञादि का वह सिलसिला जो अनवरत चलता रहे [को०]।

सत्राहा—सज्ञा पु० [स० सत्त्राहन्] इद्र [को०]।

सत्रि—सज्ञा पुं० [सं० सत्त्रि] १ बहुत यज्ञ करनेवाला। २ हाथी। ३ मेघ। बादल।

सत्री—सज्ञा पु० [स० सत्त्रिन्] १ यज्ञ करनेवाला। २ किसी दूसरे राजा के राज्य मे अपने राजा या राज्य की ओर से रहनेवाला राजदूत। एलची। ३ यज्ञ का निरीक्षण करनेवाला पुरोहित। ब्रह्मा (को०)। ४ शिष्य। छात्र (को०)।

सत्रु(पु)—सज्ञा पुं० [स० शत्रु] दे० 'शत्रु'। उ०—सत्रु न काहु करि गनै मित्र गनै नहिं काहि। तुलसी यह मत सत के बोलै समता माहि।—तुलसी ग्र०, पृ० १०।

सत्रुघन, सत्रुहन(पु)‡—सज्ञा पु० [स० शत्रुघ्न] दे० 'शत्रुघ्न'। उ०—(क) सुनि सत्रुघन मातु कुटिलाई।—मानस, २।१६३। (ख) जाके सुमिरत ते रिपु नासा। नाम सत्रुहन वेद प्रकासा।—मानस, १।१९७। (सत्रुसमन, सत्रुसाल, सत्रुसूदन, सत्रुहा आदि भी इनके नाम प्राप्त होते है)।

सत्व—सज्ञा पुं० [स० सत्त्व] १ सत्ता। होने का भाव। अस्तित्व। हस्ती। २ सार। तत्व। मूल वस्तु। असलियत। ३ अत प्रकृति। खासियत। विशेषता। ४ चित्त की प्रवृत्ति। ५ आत्मतत्व। चैतन्य। चित्तत्त्व। ६ प्राण। जीव तत्व। ७ साख्य के अनुसार प्रकृति के तीन गुणो मे से एक जो सब मे उत्तम है और जिसके लक्षण ज्ञान, शाति, शुद्धता आदि हैं।

विशेष—इस गुण के कारण अच्छे कर्म मे प्रवृत्ति, विवेक आदि का होना माना गया है।

८. प्राणी। जीवधारी। ९ गर्भ। हमल। १०. भूत। प्रेत। ११ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। १२ दृढता। धीरता। साहस। शक्ति। दम। १३ मूल तत्व। जैसे—पृथ्वी, वायु, अग्नि आदि (को०)। १४. भद्रता। सद्गुण। श्रेष्ठता (को०)। १५. वास्तविकता। सचाई (को०)। १६ बुद्धिमत्ता। अच्छी समझ (को०)। १७ स्वाभाविक गुण या लक्षण (को०)। १८ सत्ता। नाम (को०)। १९. लिंग शरीर (को०)।

यौ०—सत्वकर्ता=जीवो की सृष्टि करनेवाला। सत्वपति=प्राणियो का स्वामी। सत्वलोक=प्राणिलोक। सत्वसपन्न=(१) धीरजवाला। (२) जिसमे सत्वगुण हो।

सत्वक—सज्ञा पुं० [स० सत्त्वक] मृत मनुष्य को जीवात्मा। प्रेत।

सत्वगुण—सज्ञा पु० [सं० सत्त्वगुण] अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्त करनेवाला गुण। साधु और विवेकशील प्रकृति। विशेष दे० 'सत्व'।

सत्वगुणी—वि० [स० सत्त्वगुणिन्] साधु और विवेकी। उत्तम पकृति का।

सत्वतनु—सज्ञा पुं० [स० सत्त्वतनु] विष्णु का एक नाम [को०]।

सत्वधातु—सज्ञा पुं० [स० सत्त्वधातु] पशुश्रेणी। पशुमडल [को०]।

सत्वधाम—सज्ञा पुं० [स० सत्त्वधाम] विष्णु का एक नाम।

सत्वप्रधान—वि० [स० सत्त्वप्रधान] जिसकी प्रकृति मे सत्वगुण की अधिकता या प्रधानता हो।

सत्वभारत—सज्ञा पुं० [स० सत्त्वभारत] व्यास एक नाम।

सत्वमेजय—वि० [स० सत्त्वमेजय] पशुओ, प्राणधारियो, जीवो को कँपानेवाला [को०]।

सत्वयोग—सज्ञा पु० [स० सत्त्वयोग] १ गरिमा। माहात्म्य। गौरव। २ सजीवता [को०]।

सत्वर¹—अव्य० [स०] शीघ्र। जल्द। तुरत। झटपट।

सत्वर²—वि० तेज। फुर्तीला। गतिशील [को०]।

सत्वलक्षण—सज्ञा पु० [स० सत्त्वलक्षण] गर्भद्योतक चिह्न या लक्षण [को०]।

सत्वलक्षणा—वि० स्त्री० [स० सत्त्वलक्षणा] जिसमे गर्भ के लक्षण हो। गर्भवती। हामिला।

सत्ववती[१]—वि० [स० सत्त्ववती] १. गर्भवती। २ सत्त्वगुणवाली।

सत्ववती[२]—सज्ञा स्त्री० एक तात्रिक देवी। (बौद्ध)।

सत्ववान्—वि० [स० सत्त्ववत्] [स्त्री० सत्त्ववती] १ प्राणयुक्त। २ दृढतायुक्त। दृढ। ३ धीर। साहसी।

सत्वविप्लव—सज्ञा पुं० [स० सत्त्वविप्लव] चेतना का अभाव। अचेतनता [को०]।

सत्वविहित—वि० [स० सत्त्वविहित] १ प्राकृतिक। २ सत्वगुण युक्त। पुण्यात्मा। धार्मिक [को०]।

सत्वशाली—वि० [स० सत्त्वशालिन्] [वि० स्त्री० सत्त्वशालिनी] दृढतायुक्त। साहसी। धीर। दमवाला।

सत्वशील—वि० [स० सत्त्वशील] सात्विक प्रकृति का। अच्छी प्रकृति का। सदाचारी। धर्मात्मा।

सत्वसपन्न—वि० [स० सत्त्वसम्पन्न] १ सतोगुण से युक्त। २ धीरता युक्त। शातचित्त।

सत्वसप्लव—सज्ञा पुं० [स० सत्त्वसम्प्लव] १ बल या सामर्थ्य की हानि। २ प्रलय। विश्व का नाश।

सत्वसार—सज्ञा पुं० [स० सत्त्वसार] १ शक्ति का मूल या सार। २ अत्यत शक्तिशाली पुरुष [को०]।

सत्वस्थ[१]—वि० [स० सत्त्वस्थ] अपनी प्रकृति मे स्थित। २ दृढ। अविचलित। धीर। ३. सशक्त। ४. प्राणयुक्त। ५ सत्त्वगुण से युक्त (को०)। ६ उत्तम। श्रेष्ठ (को०)।

सत्वस्थ[२]—सज्ञा पुं० योगी [को०]।

सत्वात्मा[१]—वि० [स० सत्त्वात्मन्] जिसमे सत्व गुण हो [को०]।

सत्वात्मा[२]—सज्ञा पु० लिंग शरीर [को०]।

सत्वाधिक—वि० [स० सत्त्वाधिक] १ भला। जिसका स्वभाव अच्छा हो। २ हिम्मती। साहसवाला को०]।

सत्वोद्रेक—सज्ञा पुं० [स० सत्त्वोद्रेक] १ उत्तम प्रकृति की अधिकता या उमग। २ साहस। उमग। उत्साह।

सत्सग—सज्ञा पु० [स० सत्सङ्ग] साधुओ या सज्जनो के साथ उठना बैठना। अच्छा साथ। भली सगत। अच्छी सोहबत।

सत्सगति—सज्ञा स्त्री० [स० सत्सङ्गति] दे० 'सतसग'। उ०—सत्सगति महिमा नहिं गोई।—तुलसी (शब्द०)।

सत्सगी—वि० [स० सत्सङ्गिन्] [वि० स्त्री० सत्सगिनी] १ सत्सग करनेवाला। अच्छी सोहबत मे रहनेवाला। २ मेल जोल रखनेवाला। लोगो के साथ बातचीत आदि का व्यवहार रखनेवाला। जैसे,—वे बडे सत्सगी आदमी हैं।

सत्ससर्ग—सज्ञा पुं० [स०] भलेमानुसो का सग। सत्सग [को०]।

सत्सन्निधान—सज्ञा पुं० [स०] सत्सग [को०]।

सत्समागम—सज्ञा पुं० [स०] भले आदमियो का ससर्ग।

सत्सहाय[१]—वि० [स०] जिसके मित्र या सहायक सत्पुरुष हो।

सत्सहाय[२]—सज्ञा पु० सन्मित्र। अच्छा दोस्त [को०]।

सत्सार[१]—सज्ञा पु० [स०] १ चित्रकार। चितेरा। २. कवि। ३ एक प्रकार का पौधा।

सत्सार[२]—वि० जिसका रस अच्छा हो। अच्छे रसवाला [को०]।

सथर†—सज्ञा स्त्री० [स० स्थल] पृथ्वी। भूमि।

सथरी†—सज्ञा स्त्री० [हि० साथरी] दे० 'साथरी'।

सथिया—सज्ञा पु० [स० स्वस्तिक, प्रा० सत्थिअ] १ एक प्रकार का मगलसूचक या सिद्धिदायक चिह्न जो कलश, दीवार आदि पर बनाते है और जो समकोण पर काटती हुई दो रेखाओ के रूप मे होता है—卐। स्वस्तिक चिह्न। उ०—द्वार बुहारत अष्ट सिद्धि। कौरेन सथिया चीतत नवनिधि।—सूर (शब्द०)। २ देवता आदि के पदतल का एक चिह्न। ३. फोडे आदि की चीरफाड करनेवाला। जर्राह।

सथूत्कार[१]—वि० [स०] (व्यक्ति) बोलते समय जिसके मुख से थूक के छीटे उडे [को०]।

सथूत्कार[२]—सज्ञा पु० बातचीत करते समय मुँह से थूक के छीटे निकलना [को०]।

सदजन—सज्ञा पुं० [सं० सदञ्जन] पीतल से निकलनेवाला एक प्रकार का अजन।

सदभ—वि० [स० सदम्भ] १. दभयुक्त। घमडी। गर्वीला। २ सत् अर्थात् स्वच्छ जल से युक्त [को०]।

सदंश—सज्ञा पु० [स०] १ कर्कट। केकडा। २ वह जिसका दश तीक्ष्ण हो [को०]।

सदशक—सज्ञा पु० [स०] केकडा।

सदशवदन—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का बगला [को०]।

सद्—सज्ञा स्त्री० [स०] गोष्ठी। सभा। जमावडा [को०]।

सद[१]—अव्य० [सं० सद्य] तत्क्षण। तुरत। तत्काल।

सद[२]—वि० १ ताजा। उ०—सद माखन साटौ दही धरचो रहे मन मद। खाइ न विन गोपाल को दुखित जसोदा नद।—पृ० रा०, २।५५७। २ नया। नवीन। हाल का।

सद[३]—सज्ञा स्त्री० [स० सत्त्व] प्रकृति। आदत। टेव। उ०—सदन सदन के फिरन की सद न छुटै हरि राय। रुचै तितै विहरत फिरौ, कत बिहरत उर आय।—बिहारी (शब्द०)।

सद[४]—सज्ञा पुं० [स० सदस्] १ सभा। समिति। मडली। २ एक छोटा मडप जो यज्ञशाला मे प्राचीन वश के पूर्व बनाया जाता था।

सद[५]—सज्ञा पु० [अ० सदा (=आवाज)] गडरियो का एक प्रकार का गीत। (पजाब)।

सद[६]—वि० [फा०] शत। सौ [को०]।

यौ०—सदआफरी=सौ सौ साधुवाद। सदचाक। सदचिराग। सदया। सदवर्ग। सदशुक्र=(भगवान् को) सौ सौ धन्यवाद।

**सद[2]**—संज्ञा पुं० [सं०] १ पेड का फल। २ एक एकाह यज्ञ[को०]।

**सदई**Ⓤ—अव्य० [स० सदैव] सदैव। सदा। उ०—उथपे थपन उजार बसावन गई बहोर बिरद सदई है।—तुलसी (शब्द०)।

**सदक[1]**—संज्ञा पु० [सं०] भूसीसहित अनाज।

**सदक[2]**—संज्ञा पु० [अ० सिद्क] दे० 'सिदिक'।

**सदका**—संज्ञा पु० [अ० सद्कह] १ वह वस्तु जो ईश्वर के नाम पर दी जाय। दान। २ वह वस्तु जो किसी के सिर पर से उतार कर रास्ते मे रखी जाय। उतारन। उतारा।

क्रि० प्र०—उतारना।—करना।

यौ०—सदके का कौआ=कुरूप और काला कलूटा आदमी। सदके की गुडिया=अत्यत भद्दी और कुरूप औरत। ३ निछावर। बलि।

मुहा०—सदके जाऊँ=बलि जाऊँ। (मुसल०)।

**सदक्ष**—वि० [स०] जिसमे अच्छे बुरे का ज्ञान हो। विवेकवाला। [को०]।

**सदक्षिण**—वि० [स०] जिसे दक्षिणा या भेंट मिली हो। दक्षिणावाला [को०]।

**सदचाक**—वि० [फा०] जो बहुत जगह से फटा हो। टुकडे टुकडे। तार तार [को०]।

**सदचिराग**—संज्ञा पुं० [फ़ा० सदचिराग] दीपाधार जो लकडी या प्रस्तर निर्मित हो और जिसपर बहुत दीप जलाए जा सके।

**सदन**—संज्ञा पुं० [स०] १ रहने का स्थान। घर। मकान। २ विराम। थिराना। स्थिरता। ३ शैथिल्य। थकावट। ४ एक प्रसिद्ध कसाई का नाम जो बडा भगवद्भक्त हो गया है। ५ जल (को०)। ६ यज्ञभवन या यज्ञस्थल (को०)। ७ यमालय। यम का आवास (को०)। ८ म्लान होना। क्षीण होना (को०)।

**सदना[1]**—क्रि० अ० [स० सदन (=थिराना)] १ छेद मे से रसना। चूना। २ नाव के छेदो मे से पानी आना।

**सदनि**—संज्ञा पुं० [स०] पानी। जल [को०]।

**सदनुग्रह**—संज्ञा पुं० [स०] सत्पुरुषो पर अनुग्रह। भलेमानुसो पर कृपा करना [को०]।

**सदपा**—संज्ञा पुं० [फा०] गोजर। कनखजूरा [को०]।

**सदफ**—संज्ञा स्त्री० [अ० सदफ] सीप। शुक्ति [को०]।

यौ०—सदफे मादिक=सच्ची सीपी। वह सीपी जिसमे मोती हो।

**सदवर्ग**—संज्ञा पुं० [फा०] हजारा गेदा।

**सदमा**—संज्ञा पुं० [अ० सद्मह्] १ आघात। धक्का। चोट। २ मानसिक आघात। रज। दुःख।

क्रि० प्र०—पहुँचना।—लगना।—उठाना।

३ पछतावा। पश्चात्ताप [को०]। ४ पीडा। दर्द (को०)। ५ बडी हानि। भारी नुकसान।

क्रि० प्र०—उठाना। पहुँचना।

**सदय**—वि० [सं०] दयायुक्त। दयालु।

**सदर[1]**—वि० [अ० सद्र] १ खास। प्रधान। मुख्य जैसे,—सदर अमीन। सदर दरवाजा। सदर मुकाम। २ वक्षस्थल। छाती (को०)।

**सदर[2]**—संज्ञा पु० वह स्थान जहाँ कोई बडी कचहरी हो या बडा हाकिम रहता हो। केंद्रस्थल।

**सदर[3]**—वि० [स०] भययुक्त। डरा हुआ।

**सदर[4]**—संज्ञा पुं० [देश०] सज नाम का वृक्ष। विशेष दे० 'सज'। (बु देल०)।

**सदर आला**—संज्ञा पु० [अ० सद्र आला] अदालत का वह हाकिम जो जज के नीचे हो। छोटा जज।

**सदर दरवाजा**—संज्ञा पुं० [अ० सद्र+फा० दरवाजा] खास दरवाजा। सामने का द्वार। फाटक।

**सदरनशीन**—संज्ञा पुं० [अ० सद्र+फा० नशीन] किसी सभा का सभापति। मीर मजलिस।

**सदर बाजार**—संज्ञा पु० [अ० सद्र+फा० बाज़ार] १ बडा बाजार। खास बाजार। २ छावनी का बाजार।

**सदर बोर्ड**—संज्ञा पु० [अ० सद्र+अ० बोर्ड] माल की सबसे बडी अदालत।

**सदरी**—संज्ञा स्त्री० [अ०] बिना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती या बडी जो और कपडो के ऊपर पहनी जाती है। सीनाबद।

विशेष—इसका चलन अरब मे बहुत अधिक है। मुसलमानी मत के साथ इसका प्रचार अफगानिस्तान, तुर्किस्तान और हिंदुस्तान मे भी हुआ।

**सदर्थ**—संज्ञा पु० [स०] १ असल बात। मुख्य विषय। साध्य विषय। २ धनाढ्य पुरुष।

**सदर्थना**Ⓤ—क्रि० स० [स० सदर्थ या समर्थन] समर्थन करना। पुष्टि करना। तसदीक करना।

**सदर्प**—क्रि० वि० [सं०] १ दर्पयुक्त। घमडी। २ दर्पपूर्वक। घमड के साथ [को०]।

**सदश**—वि० [स०] जिसमे पाड या किनारा हो। किनारेदार। हाशियेदार।

**सदस्**—संज्ञा पुं० [स०] १ रहने का स्थान। मकान। घर। २ सभा। समाज। मडली। ३ यज्ञशाला मे एक छोटा मडप जो प्राचीन वश के पूर्व बनाया जाता था। ४ आकाश। व्योम (को०)।

**सदसत्[1]**—वि० [स० सत्+असत्] १ सच और झूठ। २ अस्तित्व और अनस्तित्व। ३ भला बुरा। अच्छा और खराब।

**सदसत्[2]**—संज्ञा पुं० १ किसी वस्तु के होने और न होने का भाव। २ सच्ची और झूठी बात (को०)। २ अच्छाई बुराई।

**सदसद्विवेक**—संज्ञा पुं० [स०] अच्छे और बुरे की पहचान। भले बुरे का ज्ञान।

**सदसि[1]**—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'सदस्'।

सदसि[२]—क्रि० वि० सदम् मे। सभा या गोष्ठी मे।

सदस्य—सज्ञा पुं० [स०] १ यज्ञ करनेवाला। याजक। २ किसी सभा या समाज मे सम्मिलित व्यक्ति। सभासद। मेवर।

सदस्यता—सज्ञा स्त्री० [स० सदस्य+ता (प्रत्य०)] सदस्य होने का भाव [को०]।

यौ०—सदस्यताशुल्क = सदस्य वनने का चदा।

सदहा[१]—सज्ञा पु० [स०] १ यज्ञ करनेवाला। याजक। सभासद। किसी सभा या समाज मे सम्मिलित व्यक्ति। मेवर।

सदहा[२]—वि० [फा०] सैकडो।

सदहा†[३]—सज्ञा पुं० [देश०] अनाज लादने की वडी वैलगाडी।

सदा[१]—अव्य० [स०] १ नित्य। हमेशा। सर्वदा। २ निरतर।

यौ०—सदाकाता = एक नदी। सदाकालवह = सवदा गतिशील। सदा प्रवहमान। सदातोया = (१) वह नदी जिसमे निरतर जल वना रहे। (२) सदानीरा। करतोया नदी। (३) एलापर्णी। सदापरिभूत = एक बोधिसत्व का नाम। सदापर्ण = जिसमे हमेशा पत्ते वने रहें। सदाभ्रम = नित्य भ्रमणशील।

सदा[२]—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ गूँज। प्रतिध्वनि। २ ध्वनि। आवाज। शब्द। ३ पुकार।

मुहा०—सदा देना या लगाना = फकीर का भीख पाने के लिये पुकारना।

यौ०—सदाए गैब = आकाशवाणी। सदाए हक = सत्य की आवाज। इन्साफ की वात।

सदाकत—सज्ञा स्त्री० [अ० सदाकत] सच्चाई। सत्यता। खरापन।

यौ०—सदाकतपसद, सदाकतपरस्त = जिसे सच्चाई पसद हो। सत्यता पर दृढ रहनेवाला। सचाई या सत्यता पर दृढ।

सदाकारी—वि० [स० सदाकारिन्] जिसका आकार सत् अर्थात् भला हो [को०]।

सदाकुसुम—सज्ञा पुं० [स०] धव। धातकी।

सदागति—सज्ञा पुं० [स०] १ वायु। पवन। २ वात। (आयुर्वेद)। ३ सूर्य। ४ विभु। ब्रह्म। ५ चरम सुख। निर्वाण। मोक्ष (को०)। ५ वह जो सर्वदा गतिशील रहता हो।

सदागतिशत्रु—सज्ञा पु० [स०] एरड। अडी का पेड।

सदागम—सज्ञा पु० [स०] १ सज्जन का आगमन। २. सत् शास्त्र। अच्छा सिद्धात।

सदाचरण—सज्ञा पु० [स०] अच्छा चाल चलन। सात्विक व्यवहार।

सदाचार—सज्ञा पु० [स०] १ अच्छा आचरण। सात्विक व्यवहार। सद्वृत्ति। २ शिष्ट व्यवहार। भलमनसाहत। ३ रीति। रवाज।

सदाचारी—सज्ञा पुं० [स० सदाचारिन्] [स्त्री० सदाचारिणी] १ अच्छे आचरणवाला पुरुष। अच्छे चाल चलन का आदमी। सद्वृत्तिशील। २. धर्मात्मा। पुण्यात्मा।

सदातन[१]—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु।

सदातन[२]—वि० सावकालिक। सदा या अनवरत रहनेवाला [को०]।

सदात्मा—वि० [स० सदात्मन्] सत् स्वभाव का। नेक। भला [को०]।

सदादान[१]—सज्ञा पु० [स०] १ वह हाथी जिसे सदा मद वहता हो। २ ऐरावत। ३ गणेश। ४ सदा दान देने की प्रकृति। दानशीलता। ५ गधहीरा [को०]।

सदादान[२]—वि० सर्वदा दान देनेवाला [को०]।

सदानद—सज्ञा पु० [स० सदानन्द] १ वह जो सदा आनद मे रहे। २ शिव। ३ परमेश्वर। ४ विष्णु ५ सदा आनद की स्थिति। सर्वदा रहनेवाला आनद। ६ वह जो सदा आनदप्रद हो। सदा आनद देनेवाला।

सदानन—वि० [स०] सुदर मुखाकृतिवाला [को०]।

सदानर्त्त[१]—वि० [स०] जो वरावर नाचता हो।

सदानर्त[२]—सज्ञा पु० ममोला। खजन।

सदानीरा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ करतोया नदी। २ सर्वदा प्रवाहित होनेवाली नदी (को०)।

सदानीपा—सज्ञा स्त्री० [स०] एलानी। एलापर्णी।

सदाप[१]—वि० [स०] सत् अर्थात् स्वच्छ पानीवाला [को०]।

सदाप(पु)[२]—वि० [स० सदर्प, पा० मदप्प > सदाप] सदर्प। गर्वयुक्त।

सदापुर—सज्ञा पुं० [स०] केवटी मोथा। कैवर्त्त मुस्तक।

सदापुष्प[१]—सज्ञा पुं० [स०] १ नारिकेल। नारियल। २ आक। सफेद मदार। ३ कुद का फूल।

सदापुष्प[२]—वि० सदा पुष्पयुक्त। हमेशा फूलनेवाला [को०]।

सदापुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आक। २ लाल आक। ३ कपास। ४ मल्लिका। एक प्रकार की चमेली।

सदाप्रसून[१]—सज्ञा पु० [स०] १ रोहितक वृक्ष। २ आक। मदार। ३ कुद का पौधा।

सदाप्रसून[२]—वि० सदा पुष्प युक्त। हमेशा पुष्पित [को०]।

सदाफर†—वि०, सज्ञा पुं० [स० सदाफल] दे० 'सदाफल'। उ०—फरे सदाफर अउर जँभीरी।—जायसी (शब्द०)।

सदाफल[१]—वि० [स०] जो सब दिन फले। सदा फलता रहनेवाला।

सदाफल[२]—सज्ञा पुं० १ गूलर। ऊमर। २ श्रीफल। बेल। ३ नारियल। ४ कटहल। ५ एक प्रकार का नीबू।

सदाफला, सदाफली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जपा पुष्प। गुडहर। देवीफूल। २ एक प्रकार का वैगन।

सदाबरत†—सज्ञा पु० [हि० सदावर्त] दे० 'सदावर्त'।

सदाबर्त—सज्ञा पुं० [सं० सदाव्रत] १ नित्य भूखो और दीनो को भोजन वाँटने की क्रिया या नियम। रोज की खैरात।

क्रि० प्र०—चलना।—वँटना।

२ वह अन्न या भोजन जो नियम से नित्य गरीबो को वाँटा जाय। खैरात।

क्रि० प्र०—वँटना।—वाँटना।

३ नित्य होनेवाला दान।

**सदावर्ती**—सज्ञा पु० [हिं० सदावर्त] १ सदावर्त बाँटनेवाला। भूखो को नित्य अन्न बाँटनेवाला। २ बडा दानी। बहुत उदार।

**सदावहार**[1]—वि० [हिं० सदा+फा० बहार (=वसत ऋतु, फूल पत्ती का समय)] १ जो सदा फूले। २. जो सदा हरा रहे। जिसका पतझड न हो। जिसमे बराबर नए पत्ते निकलते और पुराने झडते रहें।

**विशेष**—वृक्ष दो प्रकार के होते है। एक तो पतझडवाले, अर्थात् जिनकी सब पत्तियाँ शिशिर ऋतु मे झड जाती और वसत मे सब पत्तियाँ नई निकलती हैं। दूसरे सदाबहार अर्थात् वे जिनके पत्ते झडने की नियत ऋतु नही होती और जिनमे सदा हरी पत्तियाँ रहती है।

**सदाबहार**[2]—सज्ञा पुं० एक प्रकार के फूल का नाम।

**सदाभद्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] गँभारी का पेड।

**सदाभव**—वि० [स०] हमेशा होनेवाला। निरतर। अनवरत [को०]।

**सदाभव्य**—वि० [स०] जो सर्वदा विद्यमान या सावधान हो [को०]।

**सदाभ्रम**—वि० [स०] सर्वदा भ्रमणशील [को०]।

**सदामडलपत्रक**—सज्ञा पुं० [स० सदामण्डलपत्रक] सफेद गदहपूरना। श्वेत पुनर्नवा।

**सदामत्त**[1]—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार के यक्ष।

**सदामत्त**[2]—वि० १ जिसके गडस्थल से सदा मदस्राव होता हो (हाथी)। २ सर्वदा मस्त रहनेवाला [को०]।

**सदामद**[1]—वि० [स०] १ हमेशा नशे मे रहनेवाला। नित्यमत्त। २ हमेशा, मद बहानेवाला (हाथी)। ३ खुशी के मारे जो मतवाला हो गया हो। ४ घमड से चूर रहनेवाला [को०]।

**सदामद**[2]—सज्ञा पु० गणेश।

**सदामर्ष**—वि० [सं०] जो शात या धीर न हो। उच्छृखल। अमर्षयुक्त।

**सदामासी**—सज्ञा स्त्री० [स०] मासरोहिणी।

**सदामुदित**—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो सर्वदा मुदित रहता हो। २ एक प्रकार की सिद्धि [को०]।

**सदायोगी**[1]—सज्ञा पुं० [स० सदायोगिन्] विष्णु।

**सदायोगी**[2]—वि० सर्वदा योगाभ्यास करनेवाला। जो हमेशा योगाभ्यास करता हो [को०]।

**सदार**—वि० [स०] सस्त्रीक। दारायुक्त।

**सदारत**—सज्ञा स्त्री० [अ०] सभापतित्व। अध्यक्षता। सदर का पद। उ०—मुहम्मद कुतुब कूँ सदारत दिखाया।—दक्खिनी०, पृ० ७४।

**सदारुह**—सज्ञा पुं० [सं०] बेल। बिल्व वृक्ष।

**सदावरदायक**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की समाधि [को०]।

**सदावर्त, सदावर्ती**—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सदाबर्त', 'सदावर्ती'।

**सदाशय**—वि० [स०] जिसका भाव उदार और श्रेष्ठ हो। उच्च विचार का। अच्छी नीयत का। सज्जन। भलामानस।

**सदाशयता**—सज्ञा स्त्री० [सं० सदाशय+ता (प्रत्य०)] भलमनसाहत। सज्जनता। उ०—जाति जीवन हो निरामय, वह सदाशयता प्रखर दो।—अपरा, पृ० १९२।

**सदाशिव**—सज्ञा पु० [स०] १ सदा कल्याणकारी। सदा कृपालु। २ सदा शुभ और मगल। ३ महादेव का एक नाम।

**सदाश्रित**—वि० [स०] जो सर्वदा दूसरे के आश्रय मे रहता हो। परावलबी [को०]।

**सदासुहागिन**[1]—वि० स्त्री० [हिं० सदा+सुहागिन] जो सदा सौभाग्यवती रहे। जो कभी पतिहीन न हो।

**सदासुहागिन**[2]—सज्ञा स्त्री० १ वेश्या। रडी। (विनोद)। २ सिंदूर-पुष्पी का पौधा। ३ एक प्रकार की छोटी चिडिया। ४ एक प्रकार के मुसलमान फकीर जो स्त्रियो के वेश मे घूमते है।

**सदिच्छा**—सज्ञा स्त्री० [स० सद्+इच्छा] सद् विचार। अच्छी इच्छा। उ०—इसलिये उनकी सारी सदिच्छा सपना बनकर ही रह जाती है।—इति० आलो०, पृ० ५५।

**सदिया**—सज्ञा स्त्री० [फा० सादह् (=कोरा)] लाल पक्षी का एक भेद जिसका शरीर भूरे रग का होता है। बिना चित्ती की मुनियाँ।

**सदियाना**†—सज्ञा पुं० [फा० शादियानह्] दे० 'शादियाना'। उ०—लागे मगल होन लगे बाजन सदियाना।—पलटू०, पृ० ८२।

**सदी**[1]—सज्ञा स्त्री० [अ०, फा०] १ सौ वर्षों का समूह। शताब्दी। २ किसी विशेष सौ वर्ष के बीच का काल। जैसे,—१६वी सदी। ३. सैकडा। जैसे,—५) फी सदी सूद।

**सदी**[2]—सज्ञा स्त्री० [अ० सद्इ] स्तन। पयोधर। कुच [को०]।

**सदीव**(पु)—अव्य० [स० सदैव] दे० 'सदैव'। उ०—मच्छाँ जल जीव जिम, मवजी तराँ सदीव। अदताराँ धन जीव इम, जस दाताराँ जीव।—बाँकी ग्र०, भा० ३, पृ० ५०।

**सदुक्ति**—सज्ञा स्त्री० [स०] सत् उक्ति। अच्छी लगनेवाली बात। भले शब्द [को०]।

**सदुद्य**—वि० [स०] सत्य बोलनेवाला [को०]।

**सदुपदेश**—सज्ञा पु० [स०] १ अच्छा उपदेश। उत्तम शिक्षा। २ अच्छी सलाह।

**सदुपयोग**—सज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु का सत्कार्य मे उपयोग। सत्कार्य मे लगाना। अच्छे कार्य मे प्रयुक्त करना।

**सदुर्दिन**—सज्ञा पु० [स०] मेघाच्छन्न या बादलो से घिरा हुआ दिन [को०]।

**सदूर**(पु)—सज्ञा पुं० [स० शार्दूल] शार्दूल। सिह। उ०—विरह हस्ति तन सालै घाय करै चित चूर। वेगि आइ पिउ बाजहु गाजहु होइ सदूर।—जायसी (शब्द०)।

**सदृक**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की मिठाई। (सुश्रुत)।

**सदृक्ष**—वि० [सं०] दे० 'सदृश'।

**सदृश**—वि० [स०] १. जो देखने मे एक ही सा हो। एक रूप रग का। समान। अनुरूप। २ तुल्य। बराबर। ३ उपयुक्त। मुनासिब। योग्य।

यौ०—सदृशक्षम = समान क्षमतावाला। सदृशविनिमय = तुल्य वस्तुओं के ज्ञान में भ्रम। समान वस्तु की पहिचान करने में भ्रम होना। सदृशवृत्ति = समान वृत्ति का। समान आचरण, व्यवहार या जीविकावाला। सदृशस्त्री = समान जाति की पत्नीवाला। सदृशस्पदन = लगातार या किसी निश्चित समय पर होनेवाला स्पदन।

सदृशता—सज्ञा स्त्री० [सं०] अनुरूपता। समानता। तुल्यता।

सदेविक—वि० [स०] देवी के साथ। पत्नी के साथ। महिषी के साथ [को०]।

सदेश[1]—वि० [स०] १ किसी एक ही देश या स्थान का। २ पडोसी। प्रतिवेशी। ३ देशवाला। देशयुक्त। जिसके पास देश हो।

सदेश[2]—सज्ञा पु० प्रतिवेश। पडोस।

सदेह—क्रि० वि० [स०] १ इसी शरीर से। विना शरीर त्याग किए। जैसे,—त्रिशकु सदेह स्वर्ग जाना चाहते थे। २ मूर्तिमान। सशरीर। उ०—सब शृगार सदेह मनो रति मन्मथ मोहै।—केशव (शब्द०)।

सदैकरस—वि० [स०] १ जो सदा एक रस हो। २ सर्वदा। एक आकाक्षा या इच्छायुक्त।

सदैव—अव्य० [स०] सदा ही। सर्वदा। हमेशा।

सदोगत—वि० [सं० सदस् + गत] जो सभा या समिति में उपस्थित हो [को०]।

सदोगृह—सज्ञा पुं० [सं० सदस् + गृह] सभाभवन। सभाकक्ष। सभागृह [को०]।

सदोष—वि० [सं०] १ दोषयुक्त। जिसमे ऐब हो। २ अपराधी। दोषी। ३ जिसपर आपत्ति या एतराज किया जा सके (को०)। ४ रात्रि से सबद्ध। रात्रियुक्त।

सदोषक—वि० [स०] दोषयुक्त। जिसमे ऐब हो [को०]।

सद्गति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ उत्तम गति। अच्छी अवस्था। भली हालत। २ मरण के उपरात उत्तम लोक की प्राप्ति। ३ अच्छी चाल चलन।

सद्गव—सज्ञा पु० [स०] उत्तम कोटि का साँड [को०]।

सद्गुण[1]—सज्ञा पुं० [सं०] अच्छा गुण। अच्छी सिफत। सज्जनता। उ०—जिमि सद्गुण सज्जन पहँ आवा।—तुलसी (शब्द०)।

सद्गुण[2]—वि० सत् गुणो से युक्त। सज्जनता युक्त [को०]।

सद्गुणी—सज्ञा पुं० [स० सद्गुणिन्] अच्छे गुणवाला।

सद्गुरु—सज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छा गुरु। उत्तम शिक्षक या आचार्य। २ वह धर्मशिक्षक या मत्रदाता जिसके उपदेश से ससार के बधनो से छुटकारा और ईश्वर की प्राप्ति हो।

सद्ग्रंथ—सज्ञा पुं० [स० सत् + ग्रन्थ] अच्छा ग्रथ। सन्मार्ग बतानेवाला पुस्तक या गथ। उ०—जिमि पाषड विवाद ते लुप्त होहिं सद्ग्रथ।—तुलसी (शब्द०)।

सद्घ[1]—सज्ञा पुं० [स० शब्द, प्रा० सद्द] १ शब्द। ध्वनि।

सद्घ[2]—अव्य० [सं० सद्य] तुरत। फौरन। तत्काल।

सद्घी—सज्ञा स्त्री० [हिं०] सादा। सुफेद। (पतगसादी)

सद्धन—सज्ञा पुं० [स०] सत्कार्य द्वारा उपार्जित द्रव्य। अच्छी कमाई का धन [को०]।

सद्धर्म—सज्ञा पुं० [स०] १ उत्तम धर्म (बौद्ध या जैन धर्म के लिये प्रयुक्त)। २ अच्छा नियम या न्याय [को०]।

सद्धी—वि० [स० सत् + धी] सद्बुद्धि युक्त। बुद्धिमान् [को०]।

सद्ब्राह्मण—सज्ञा पु० [सं०] उत्तम कोटि का या सात्विक ब्राह्मण। कुलीन ब्राह्मण [को०]।

सद्भाग्य—सज्ञा पुं० [स०] अच्छी किस्मत। उत्तम भाग्य [को०]।

सद्भाव—सज्ञा पुं० [स०] १ अच्छा भाव। प्रेम और हित का भाव। शुभचिंतना की वृत्ति। २ मेलजोल। मैत्री। ३ निष्कपट भाव। सच्चा भाव। अच्छी नीयत। ४ होने का भाव। अस्तित्व। हस्ती। ५ वस्तुस्थिति। वास्तविकता (को०)। ६ भद्रता। साधुता (को०)। ७. प्राप्ति (को०)।

सद्भावश्री—सज्ञा पु० [स०] १ सद्भाव की श्री, शोभा या गौरव। २. एक देवी का नाम (को०)।

सद्भूत—वि० [स०] १ जो अस्तित्व या सत्तायुक्त हो। असद्भूत का विपरीतार्थक। २ जो वस्तुत सत्य या सत् हो।

सद्भृत्य—सज्ञा पु० [स०] भला नौकर। उत्तम सेवक।

सद्म—सज्ञा पुं० [स० सद्मन्] १. घर। मकान। रहने का स्थान। २. बैठनेवाला। ३. दर्शक। ४ सग्राम। युद्ध। ५ पृथ्वी और आकाश। ६ रुकने या ठहरने की जगह (को०)। ७ देवस्थान। मदिर। देवालय (को०)। ८ वेदी (को०)। ९ जल (को०)। १० पीठ। आसन (को०)।

सद्मा—वि० [स० सद्मन्] १ बैठनेवाला। २ निवास करने या रहनेवाला [को०]।

सद्मिनी—सज्ञा स्त्री० [स० सद्म] १ हवेली। बडा मकान। २ प्रासाद। महल।

सद्य[1]—अव्य० [स०] १ आज ही। २ इसी समय। अभी। ३ तुरत। शीघ्र। झट। तत्काल। ४ कुछ ही समय पूर्व (को०)।

सद्य[2]—सज्ञा पुं० शिव का एक नाम। सद्योजात।

सद्य—अव्य० [स० सद्यस्] दे० 'सद्य'।

यौ०—सद्य कृत = तुरत किया हुआ। सद्य कृत्त = जो तत्काल काटा गया हो। सद्य कृत्तोप्त = जो अभी काटा और बोया गया हो। सद्य क्रीत = (१) एक एकाह यज्ञ। (२) जो तुरत खरीदा गया हो। सद्य पर्युषित = जो एक दिन पूर्व का हो। बासी। सद्य पाती = शीघ्र गिरनेवाला। सद्य प्रक्षालक = वह जो तुरत काम मे लाने के हेतु अन्न आदि को साफ करे। सद्य प्रज्ञाकर = तुरत प्रज्ञा या बुद्धि देनेवाला। शीघ्र ज्ञान देनेवाला। सद्य प्राणकर = तुरत शक्ति प्रदान करनेवाला। सद्य प्राणहर = शीघ्र प्राण या शक्ति का नाश करनेवाला। सद्य फल = शीघ्र फलदायक। सद्य शक्तिकर = तुरत शक्ति देनेवाला। सद्य शुद्धि = दे० 'सद्य शौच'। सद्य शोथ = तुरत

शोथ या सूजन करनेवाला। सद्य शौच = तुरत की हुई शुद्धि या शुचिता। सद्य श्राद्धी = जिसने अभी अभी श्राद्ध कर्म किया हो। सद्य स्नात = जिसने अभी अभी स्नान किया हो। सद्य स्नेहन = शीघ्रस्नेह युक्त या स्निग्ध करना।

**सद्य पाक'**—वि० [स०] जिसका फल तुरत मिले। जिसके परिणाम मे विलव न हो।

**सद्यापाक'**—सज्ञा पु० रात के चौथे पहर का स्वप्न (जो लोगो के विश्वास के अनुसार ठीक घटा करता है)।

**सद्य प्रसूत**—वि० [स०] तुरत का उत्पन्न।

**सद्य प्रसूता**—वि० स्त्री० [स०] जिसे अभी बच्चा हुआ हो।

**सद्य शोथा**—सज्ञा स्त्री० [स०] कपिकच्छु। केवाँच।
विशेष—केवाँच छू जाने से तुरत खुजली और सूजन होती है।

**सद्यश्छिन्न**—वि० [स०] जो तुरत काटा गया हो। अभी अभी काटकर छिन्न किया हुआ।

**सद्यस्क, सद्यस्तन**—वि० [स०] १ नवीन। ताजा। टटका। २ उसी समय का। (को०)।

**सद्युक्ति**—सज्ञा स्त्री० [स०] अच्छी युक्ति या तरकीब। भला तरीका। भली युक्ति (को०)।

**सद्योजात'**—वि० [स०] [वि० स्त्री० सद्योजाता] तुरत का उत्पन्न।

**सद्योजात'**—सज्ञा पु० १ शिव का एक स्वरूप या मूर्ति। २ तुरत का उत्पन्न बछडा।

**सद्योबल**—वि० [स०] शीघ्र शक्ति देनेवाला।
यौ०—सद्योबलकर = दे० 'सद्योबल'।

**सद्योभावी'**—वि० [स० सद्योभाविन्] तुरत का उत्पन्न। सद्योजात।

**सद्योभावी'**—सज्ञा पु० तुरत का उत्पन्न बछडा। (को०)।

**सद्योमन्यु**—वि० [स०] जिससे तुरत क्रोध उत्पन्न हो। शीघ्र क्रोध पैदा करनेवाला (को०)।

**सद्योऽमृत**—वि० [स० सद्यस् + अमृत] तुरत अमृत के समान फलदायक।

**सद्योमृत**—वि० [स०] तत्काल का मरा हुआ (को०)।

**सद्योव्रण**—सज्ञा पु० [सं०] वह घाव जो तुरत लगा हो। अभी अभी लगी चोट। ताजा घाव (को०)।

**सद्योहत**—वि० [स०] जो तुरत या अभी अभी मारा गया हो।

**सद्र**—सज्ञा पु० [अ०] दे० 'सदर'।

**सद्रव्य**—वि० [स० सद्द्रव्य] १ स्वर्णाभ। स्वर्णिम। सुनहला। २ द्रव्ययुक्त। धनयुक्त।

**सद्रि**—सज्ञा पु० [स०] १ मेप। मेढा। २ पहाड। ३ हाथी (को०)।

**सद्रु**—वि० [स०] १ आराम करने या बैठनेवाला। २ गमनोद्यत। जानेवाला (को०)।

**सद्वद्व**—वि० [स० सद्वन्द्व] सघर्षप्रिय। झगडा करनेवाला (को०)।

**सद्वश**—सज्ञा पु० [स०] १ उत्तम जाति का बाँस। २ अच्छा कुल या खानदान (को०)।
यौ०—सद्वशजात = सत्कुलोत्पन्न। खानदानी।

**सद्वतो**—सज्ञा स्त्री० [स०] पुलस्त्य की कन्या और अग्नि की स्त्री।

**सद्वत्सल**—वि० [स०] सत्पुरुषो के प्रति कृपालु या अनुग्रहयुक्त (को०)।

**सद्वसथ**—सज्ञा पुं० [स०] गाँव। ग्राम (को०)।

**सद्वस्तु**—सज्ञा पुं० [स०] १ वस्तु या कथानक जो सत् एवम् रोचक हो। २ सत्कार्य। अच्छा काम। ३ सत् पदार्थ या वस्तु (को०)।

**सद्वाजी**—सज्ञा पुं० [स० सद्वाजिन्] शुभ लक्षणोवाला अश्व जो सवारी के लिये उत्तम हो (को०)।

**सद्वादिता**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सद्वादित्व' (को०)।

**सद्वादित्व**—सज्ञा पुं० [सं०] सद्वादी होने का भाव।

**सद्वादी**—वि० [स० सद्वादिन्] [वि० स्त्री० सद्वादिनी] सच बोलनेवाला। सत्यवादी (को०)।

**सद्वार्ता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुसमाचार। शुभ सूचना। अच्छी खबर। २ वार्तालाप जो शोभन हो। अच्छी बात। भली बात (को०)।

**सद्विगर्हित**—वि० [स०] जो सज्जनो द्वारा विगर्हित हो। सत्पुरुषो द्वारा निंदित (को०)।

**सद्विद्य**—वि० [स०] पूर्ण शिक्षाप्राप्त। जिसने अच्छी और पूरी शिक्षा प्राप्त की हो (को०)।

**सद्वृत्त'**—वि० [स०] १ सदाचारी। शिष्ट। २ सुदर वर्तुलाकार। सुदर घेरेदार। जिसका घेरा सुदर और वर्तुल हो। जैसे,—स्तनमडल का।

**सद्वृत्त'**—सज्ञा पुं० १ शोभन आचार। सदाचार। २ दोषरहित वृत्त या वर्तुल आकार।

**सद्वृत्ति**—सज्ञा स्त्री० [सं०] अच्छा चालचलन। उत्तम व्यवहार।

**सधन'**—वि० [स०] १ धनयुक्त। २ धनी। धनवान् (को०)।

**सधन'**—सज्ञा पुं० वह धन जो सामान्य या सम्मिलित हो।

**सधना**—क्रि० अ० [हिं० साधना] १ सिद्ध होना। पूरा होना। सरना। काम होना। जैसे,—काम सधना। २ काम चलना। मतलब निकलना। ३ अभ्यस्त होना। हाथ बैठना। मँजना। मश्क होना। जैसे,—अभी हाथ सधा नही है, इसी से देर लगती है। ४ प्रयोजन सिद्धि के अनुकूल होना। गा पर चढना। जैसे,—बिना कुछ रुपया दिए वह आदमी नही सधेगा। ५ लक्ष्य ठीक होना। निशाना ठीक होना। ६ घोडे आदि का शिक्षित होना। निकलना। ७ सँभलना। ८ समाप्त होना। खत्म होना। खर्च होना। ९ ठीक नपना। नापा जाना। जैसे,—अँगरखा सधना।

**सधर**Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० अधर का अनु०] ऊपर का ओठ। ओष्ठ।

**सधर्म, सधर्मक**—वि० [स०] १ समान गुण, धर्म, स्वभाव या क्रियावाला। एक ही प्रकार का। २ तुल्य। समान। ३ समान सप्रदाय या जाति का (को०)। ४ समान कर्तव्योवाला (को०)।
यौ०—सधर्मचारिणी = पत्नी। भार्या।

सधर्मा—वि० [स० सधर्मन्] समानधर्मा। समान गुण एव धर्मवाला। दे० 'सधर्म' [को०]।

सधर्मिणी—सज्ञा स्त्री० [स०] सधर्मचारिणी। पत्नी। भार्या [को०]।

सधर्मी—वि० [स० सधर्मिन्] [स्त्री० सधर्मिणी] समानधर्मा। दे० 'सधर्मा' [को०]।

सधवा—पज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। जो विधवा न हो। सुहागिन। सौभाग्यवती।

सधाना—क्रि० स० [हिं० सधना का प्रेर० रूप] साधने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को साधने मे प्रवृत्त करना।

सधावर—सज्ञा पु० [हिं० सधवा या स० सप्त, प्रा० सद्ध? अथवा देशज] वह उपहार जो गर्भवती स्त्री को गर्भ के सातवें महीने दिया जाता है।

सधि'—सज्ञा पु० [स०] पावक। अग्नि [को०]।

सधि'—सज्ञा पु० [स० सधिस्] साँड। वृषभ [को०]।

सधी—वि० [स०] धी अर्थात् बुद्धियुक्त। बुद्धिमान् [को०]।

सधूम—वि० [स०] धूँए से आच्छादित। धूमयुक्त [को०]।

सधूमक—वि० [स०] १ धूम्रयुक्त। २ धूँए जैसा [को०]।

सधूमवर्णा—सज्ञा स्त्री० [स०] अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक जिह्वा।

सधूम्र—वि० [स०] १ धुँधला। २ धुँए से आच्छादित। ३ धूम्र वर्ण का। काला। श्यामवर्ण का [को०]।

यौ०—सधूम्रवर्णा = अग्नि की एक जिह्वा। सधूमवर्णा।

सधोर†—सज्ञा पुं० [हिं० सधावर] दे० 'सधावर'।

सधौर†—सज्ञा पु० [हिं० सधावर] दे० 'सधावर'।

सध्रीच—सज्ञा पु० [स० सध्र्यञ्च] [स्त्री० सध्रीची (= पत्नी। सखी)] पति। सखा। स्वामी [को०]।

सध्रीची—सज्ञा स्त्री० [स० सध्रीचीन (= समान उद्देश्यवाला)] सखी [डिं०]।

सध्रीचीन—वि० [स०] [स्त्री० सध्रीचीना] १ साथ साथ रहनेवाला। साथी। २ समान उद्देश्यवाला [को०]।

सध्वस—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'कण्व', 'काण्व'।

सनक†—सज्ञा पु० [अनु० सन सन्] सन्नाटा। स्तब्धता। नीरवता।

सनद—सज्ञा पु० [स० सनन्द] दे० 'सनदन'।

सनदन—सज्ञा पु० [स० सनन्दन] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रो मे से एक मानसपुत्र।

विशेष—ये कपिल के भी पूर्व सांख्य मत के प्रवर्तक कहे गए है।

यौ०—सनक सनदन।

सन्—सज्ञा पुं० [अ०] १ वर्ष। साल। सवत्सर। २ कोई विशेष वर्ष। सवत्। जैसे,—सन इसवी, सन् हिजरी।

सन'—सज्ञा पुं० [सं० शण] बोया जानेवाला एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छाल के रेशे से मजबूत रस्सियाँ आदि बनती है।

विशेष—यह तीन साढे तीन हाथ ऊँचा होता है और इसका काड सीधी छडी की तरह दूर तक ऊपर जाता है। फूल पीले रग के होते है। कुआरी फसल के साथ यह खेतो मे बोया जाता है और भादो कुआर मे तैयार होता है। रेशेदार छिलका अलग करने के लिये इसके डठल पानी मे डालकर सडाए जाते है।

सन(५)†—प्रत्य० [स० सुन्तो या सङ्ग] अवधी मे करणकारक का चिह्न। से। साथ।

सन'—पज्ञा स्त्री० [अनु०] वेग से निकल जाने का शब्द। जैसे,—तीर सन से निकल गया।

सन[४]—सज्ञा पु० [स०] १ ब्रह्मा के चार मानस पुत्रो मे से एक मानस पुत्र। २. हाथी का कान फडफडाना [को०]। ३ समर्पण। भेंट [को०]। ४ भोजन। आहार [को०]। ५ लाभ। प्राप्ति [को०]। ६ घटापाटलि वृक्ष।

सन[५]—वि० [अनु० सुन] १ सन्नाटे मे आया हुआ। स्तब्ध। ठक। २ मौन। चुप।

मुहा०—जी सन होना = चित्त स्तब्ध होना। घबरा जाना।

सनई—सज्ञा स्त्री० [हिं० सन] छोटी जाति का सन।

सनक'—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्क (= खटका)] १ किसी बात की धुन। मन की झोक। वेग के साथ मन की प्रवृत्ति।

मुहा०—सनक चढना या सवार होना = धुन होना।

२. उन्माद की सी वृत्ति। खब्त। जुनून।

मुहा०—सनक आना = पागल होना। खब्ती होना। सनक जाना = पागल होना। सनकना। सनक लेना = पागलो का सा काम करना।

सनक[२]—सज्ञा पु० [स०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रो मे से एक।

विशेष—ये परम ज्ञानी और विष्णु के समासद माने गए हैं। शेष के नाम है—सन, सनत्कुमार और सनदन।

सनकना'—क्रि० अ० [हिं० सनक + ना (प्रत्य०)] पागल हो जाना। पगलाना। झक्की हो जाना।

सनकना'—क्रि० अ० [अनु० सनसन] वेग से हवा मे जाना या फेंका जाना। जैसे,—तीर सनकना, गोले सनकना।

सनकाना—क्रि० स० [हिं० सनकना का प्रेर०] किसी को सनकने मे प्रवृत्त करना।

सनकारना(५)†—क्रि० स० [हिं० सैन + करना] १ सकेत करना। इशारा करना। २ इशारे से बुलाना। ३. किसी काम के लिये इशारा करना। उ०—तुलसी सभीतपाल सुमिरे कृपालु राम समय सुकरना सगहि सनकार दी।—तुलसी (शब्द०)।

सयो० क्रि०—देना।

सनकियाना'—क्रि० स० [स० सङ्केतन, हिं० सन] इशारा करना। सकेत करना।

सनकियाना[२]—क्रि० अ० [हिं० सनक] दे० 'सनकना'।

सनकियाना[३]—क्रि० स० दे० 'सनकाना'।

सनकुरगी—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बडा पेड।

विशेष—इसके हीर की लकडी बहुत मजबूत और स्याही लिए लाल होती है। इसकी कुर्सियाँ आदि बनती हैं। यह वृक्ष तिनेवली और ट्रावनकोर मे अधिक पाया जाता है।

सनट्टा—सज्ञा पुं० [देश०] विलायती मेहदी नाम का पौधा जो बागो मे बाड के रूप मे लगाया जाता है। विशेष दे० 'विलायती मेहदी'।

सनत्—सज्ञा पुं० [स०] ब्रह्मा।

सनत्कुमार—सज्ञा पुं० [स०] १ ब्रह्मा के चार मानस पुत्रो मे से एक। वैधात्र।

विशेष—ये सबसे पहले प्रजापति कहे गए हैं।

२ बारह सार्वभौमो या चक्रवर्तियो मे से एक। (जैन)। ३ जैनो के अनुसार तीसरे स्वर्ग का नाम। ४ वह सत जिसकी अवस्था हमेशा एक सी रहे। सर्वदा बाल्य या युवावस्था मे रहनेवाला तपस्वी (को०)।

सनत्सुजात—सज्ञा पुं० [स०] ब्रह्मा के सात मानस पुत्रो मे से एक मानसपुत्र।

सनत्ता—सज्ञा पुं० [हिं० सन] वह वृक्ष जिसपर रेशम के कीडे पाले जाते हैं। जैसे,—शहतूत, बेर।

सनद—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ तकियागाह। आश्रय। सहारा। २ भरोसा करने की वस्तु। ३ प्रमाण। सबूत। दलील। ४ प्रमाणपत्र। सर्टिफिकेट। ५ आदर्श। नमूना। (को०)। ६ उदाहरण। मिसाल (को०)।

सनदयाफ्ता—वि० [अ० सनद+फा० याफ्तह्] १ जिसे किसी बात की सनद मिली हो। प्रमाणपत्र प्राप्त। २ किसी परीक्षा मे उत्तीर्ण।

सनदी'—वि० [अ० सनद] प्रमाणयुक्त। प्रामाणिक।

सनदी[२]—सज्ञा स्त्री० हालचाल। वृत्तात। समाचार।

सनना—क्रि० अ० [स० सन्धम् (=पिघल कर मिलना)] १ जल के योग से किसी चूर्ण के कणो का एक मे मिलना या लगना। गीला होकर लेई के रूप मे मिलना। जैसे,—आटा सनना। २ गीली वस्तु के साथ मिलना। आप्लावित होना। ओतप्रोत होना। जैसे,—कपडा कीचड मे सन गया। ३ लिप्त होना। पगना। एक मे मिलना। लीन होना। उ०—बोलत बैन सनेह सने।—सूर (शब्द०)।

सयो० क्रि०—जाना।

सननी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सानना] पानी मे भिगाया हुआ भूसा या सूखा चारा जो चौपायो को दिया जाता है। सानी।

सनमध—सज्ञा पुं० [सं० सम्बन्ध] दे० 'सबध'। उ०—मात पिता जोर्यो सनमधा। कै कछु आपुहि कीयो धधा।—सुदर ग्र०, भा० १, पृ० ३२३।

सनम—सज्ञा पुं० [अ०] १ बुत। प्रतिमा। मूर्ति (को०)। २ प्रिय। प्रियतम। प्यारा।

यौ०—सनमकदा, सनमखाना=बुतखाना। मदिर। सनमपरस्त=बुतपरस्त। मूर्तिपूजक। सनमपरस्ती=बुतपरस्ती। मूर्तिपूजा।

सनमान—सज्ञा पुं० [स० सम्मान] दे० 'सम्मान'। उ०—केहि करनी जन जानि कै सनमान किया रे। केहि अघ अवगुन आपनो करि डारि दिया रे।—तुलसी ग्र०, पृ० ४७१।

सनमानना—क्रि० स० [स० सम्मान+हिं० ना (प्रत्य०)] खातिर करना। आदर करना। सत्कार करना। उ०—नृप सुनि आगे आइ पूजि सनमानेउ।—तुलसी (शब्द०)।

सनमुख—अव्य० [प० सम्मुख] दे० 'सम्मुख'। उ०—सनमुख आएउ दधि अरु मीना। कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना।—मानस, १।३०३।

सनय—वि० [स०] १ प्राचीन। पुराना। २ नीतियुक्त (को०)।

सनसन—सज्ञा पुं० [अनु०] दे० 'सनसनाहट'।

सनसनाना—क्रि० अ० [अनु० सन सन] १ हवा मे झोके से निकलने या जाने का शब्द होना। २ खौलते हुए पानी का शब्द होना। ३ हवा बहने का शब्द होना।

सनसनाहट—सज्ञा पुं० [हिं० सनसनाना] १ हवा बहने का शब्द। २ हवा मे किसी वस्तु के वेग से निकलने का शब्द। ३ खौलते हुए पानी का शब्द। ४ सनसनी।

सनसनी—सज्ञा स्त्री० [अनु० सन सन] १ सवेदन सूत्रो मे एक प्रकार का स्पदन। झनझनाहट। झुनझुनी। जैसे,—दवा पीते ही शरीर मे सनसनी सी मालूम हुई। २ अत्यत भय, आश्चर्य आदि के कारण उत्पन्न स्तब्धता। ठक रह जाने का भाव। ३ उद्वेग। घबराहट। खलबली। क्षोभ।

क्रि० प्र०—फैलाना।

४ दे० 'सनसनाहट'। ५ सन्नाटा। नीरवता।

सनसूत्र—सज्ञा पुं० [स०] शण सूत्र। सन की डोरी या रस्सी (को०)।

सनहकी—सज्ञा स्त्री० [अ० सनहक] मिट्टी का एक बरतन जो बहुधा मुसलमान काम मे लाते है।

सनहाना—सज्ञा पुं० [देश०] वह नाँद या बडा बरतन जिसमे भरे हुए खटाई मिले जल मे धोने के पूर्व बरतन फूलने के लिये डाले जाते है।

सना'—अव्य० [स०] हमेशा। सर्वदा। नित्य (को०)।

सना[२]—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ स्तुति। स्तवन। वदना। २ तारीफ। प्रशसा। श्लाघा (को०)।

सना[३]—सज्ञा पुं० [अ० सनह्] वत्सर। वर्ष। सन् (को०)।

सना[४]—सज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'सनाय'।

सनाढ्य—सज्ञा पुं० [स० सन (=दक्षिणा)+आढ्य (=सपन्न)] ब्राह्मणो की एक शाखा जो गौडो के अनर्गत कही जाती है।

सनातु—अव्य० [स०] सदा। हमेशा (को०)।

सनातन'—सज्ञा पुं० [स०] १ प्राचीन काल। अत्यत पुराना समय। अनादि काल। जैसे,—यह बात सनातन से चली आती है। २ प्राचीन परपरा। बहुत दिनो से चला आता हुआ क्रम। ३ ब्रह्मा। ४ विष्णु। ५ शिव (को०)। ६ वह जिसे सब श्राद्धो

मे भोजन कराना कर्तव्य हो। ७ ब्रह्मा के एक मानसपुत्र। ८. एक प्राचीन ऋषि (को०)।

**सनातन[2]**—वि० १. अत्यत प्राचीन। बहुत पुराना। जिसके आदि का पता न हो। अनादि काल का। २ जो बहुत दिनो से चला आता हो। परपरागत। जैसे,—सनातन रीति, सनातन धर्म। ३. नित्य। सदा रहनेवाला। शाश्वत। ४. दृढ। निश्चल। अचल (को०)।

**सनातनतम**—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का एक नाम (को०)।

**सनातनधर्म**—सज्ञा पुं० [स०] १ प्राचीन धर्म। २ परपरागत धर्म। ३ वर्तमान हिंदू धर्म का वह स्वरूप जो परपरा से चला आता हुआ माना जाता है और जिसमे पुराण, तत्र, बहुदेवोपासना, प्रतिमापूजन, तीर्थ माहात्म्य आदि सब समान रूप मे माननीय है। साधारण जनता के बीच प्रचलित हिंदू धर्म।

**सनातनपुरुष**—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु भगवान्। उ०—पुरुष सनातन की बधू क्यो न चचला होय।—रहीम (शब्द०)।

**सनातनी[1]**—वि०, सज्ञा पु० [स० सनातन+ई (प्रत्य०)] १ जो बहुत दिनो से चला आता हो। जिसकी परपरा बहुत पुरानी हो। २ सनातन धर्म का अनुयायी।

**सनातनी[2]**—स्त्री० [स०] १. लक्ष्मी। २ दुर्गा। ३ पार्वती। ४ सरस्वती (को०)।

**सनाथ**—वि० [स०] [स्त्री० सनाथा] १ जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो। जिसके ऊपर कोई मददगार या सरपरस्त हो। उ०—हौ सनाथ ह्वै हौ सही जौ लघुतहि न मितैहौ।—तुलसी (शब्द०)। २ प्रभु या पतियुक्त। ३ कब्जा किया हुआ। अधिकृत (को०)। ४ सपन्न। सहित। युक्त (को०)। ५ जो अनाकार्ण हो। जैसे, सभा आदि (को०)। ६ कृतार्थ। कृतकृत्य। उ०—प्राइ रामपद नावहि माथा। निरखि बदनु सब होहि सनाथा।—मानस, ४।२२। ७ सफल।

मुहा०—सनाथ करना=शरण मे लेना। आश्रय देना। सहायक होना।

**सनाथा**—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। पतियुक्ता स्त्री। सधवा स्त्री। सपतिका नारी (को०)।

**सनाभ**—सज्ञा पुं० [स०] १ सहोदर या सगा भाई। २ नजदीकी रिश्तेदार। सगा सबधी (को०)।

**सनाभि[1]**—सज्ञा पुं० [स०] १ सहोदर भाई। २ सन्निकट सबधी जो सात पीढी के अदर हो (को०)। ३ सबधी। रिश्तेदार (को०)। ४ एक ही पूर्वज से उत्पन्न पुरुष। सपिड पुरुष।

**सनाभि[2]**—वि० १ समान केंद्र से सपृक्त या जुडा हुआ। जैसे,—रथचक्र का आरा। २ नाभियुक्त। ३ सदृश। तुल्य। समान। ४ सगा या सहोदर। ५ एक पूर्वज से उत्पन्न। सपिड (को०)।

**सनाभ्य**—सज्ञा पु० [स०] एक ही कुल का पुरुष। सात पीढियो के भीतर एक ही वश का मनुष्य। सपिड व्यक्ति।

**सनाम, सनामक**—वि० [स०] एक ही या समान नाम का (को०)।

**सनामा**—वि० [स० सनामन्] [वि० स्त्री० सनाम्नी] दे० 'सनाम', 'सनामक' (को०)।

**सनाय**—पज्ञा स्त्री० [अ० सना] एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दस्तावर होती है। स्वर्णपत्री। सोनामुखी।

विशेष—इस पौधे की अधिकतर जातियाँ अरब, मिस्र, यूनान, इटली आदि पश्चिम के देशो मे होती है। केवल एक जाति का पौधा भारतवर्ष के सिंध, पजाब, मदरास आदि प्रातो मे थोडा बहुत होता है। इसकी पत्तियाँ इमली की तरह एक सींके के दोनो ओर लगती है। एक सींके मे ५ से ८ जोडे तक पत्तियाँ लगती है जो देखने मे पीलापन लिए हरे रग की होती है। इसमे चिपटी लबी फलियाँ लगती है जो सिरे पर गोल होती है। इसकी पत्तियो का जुलाब हकीम और वैद्य दोनो साधारणत दिया करते हैं। इसकी फलियो मे भी रेचन गुण होता है, पर पत्तियो से कम। वैद्यक मे सनाय रेचक तथा मदाग्नि, विषम ज्वर, अजीर्ण, प्लीहा, यकृत्, पाडु रोग आदि को दूर करनेवाली कही गई है।

**सनाल**—वि० [स०] नाल या डठल से युक्त। जैसे,—सनाल कमल। उ०—मोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि समीत देत जय माला।—मानस, १।२६४।

**सनाली**—पज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो स्त्रियो को दलाली करती हो। कुटनी। दूती (को०)।

**सनासन**—सज्ञा पुं० [हिं० सनसन] दे० 'सनसन'।

**सनाह**—सज्ञा पु० [स० सन्नाह] कवच। बकतर। उ०—उठि उठि पहिरि सनाह अभागे। जहँ तहँ गाल बजावन लागे।—तुलसी (शब्द०)।

**सनि[1]**—सज्ञा पुं० [स० शनि] दे० 'शनि'।

**सनि[2]**—सज्ञा पुं०, स्त्री० [स०] १. दान। भेंट। २ अर्चन। पूजन ४ विनय। निवेदन। ५ दिशा (को०)।

यौ०—सनिकाम=कुछ पाने के लिये इच्छुक। सनिवन्य=भिक्षा या याचना से प्राप्त।

**सनिकार**—वि० [स०] निकारयुक्त। अपमानित। तिरस्कृत। अपमानजनक (को०)।

**सनिग्रह**—वि० [स०] दस्ता या मूठ से युक्त (को०)।

**सनित[1]**—वि० [हिं० सनना] मिश्रित। सना या माना हुआ। मिला हुआ (को०)।

**सनित[2]**—वि० [स०] १ अगीकृत। स्वीकृत। २ जो प्राप्त हो। पाया हुआ। लब्ध (को०)।

**सनिद्र**—वि० [सं०] सुप्त। निद्राभिभूत (को०)।

**सनियम**—वि० [सं०] १ नियम, धर्मानुष्ठान से युक्त। नियमवाला। २ नियमित। नियमपूर्वक (को०)।

**सनिया**—पज्ञा पु० [स० शण] रेशमी धोती या वस्त्र।

**सनिर्घृण**—वि० [स०] जिसमे दया न हो। निष्ठुर (को०)।

**सनिर्विशेष**—वि० [स०] निरपेक्ष। उदासीन (को०)।

**सनिर्वेद**—वि० [स०] अन्यमनस्क। निर्वेदयुक्त। खिन्न (को०)।

**सनिष्ठिव, सनिष्ठीव, सनिष्ठेव**—वि० [स०] जिसमे थूक मिला हो।

**सनिष्ठिव, सनिष्ठीव, सनिष्ठेव**[२]—सज्ञा पु० वह शब्द या कथन जिसके उच्चारण मे मुँह से थूक के छीटे उडते हो।

**सनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आदरयुक्त प्रार्थना या निवेदन। २ दिशा। ३. गौरी का एक नाम (को०)। ४ हाथी का कान फटफटाना। ५ कांति। दीप्ति।

**सनीचर**—सज्ञा पुं० [स० शनैश्चर] दे० 'शनैश्चर'।

**सनीचरी**—सज्ञा पु० [हि० सनीचर+ई (प्रत्य०)] शनि की दशा, जिसमे दु ख, व्याधि आदि की अधिकता होती है।

मुहा०—मीन की सनीचरी = मीन राशि पर शनि की स्थिति की दशा जिसका फल राजा और प्रजा दोनो का नाश माना जाता है। उ०—एक तौ कराल कलिकाल सूल मूल ता मे कोढ मे की खाज सी सनीचरी है मीन की।—तुलसी (शब्द०)।

**सनीड़**[१]—अव्य० [स० सनीड] १ पडोस मे। बगल मे। २ समीप। निकट।

**सनीड**[२]—सज्ञा पुं० नैकट्य। प्रतिवेशिता। समीपता (को०)।

**सनीड**[३]—वि० १ पडोसी। बगल का। २ पास का। समीप का। ३ एक ही नीड मे रहनेवाला (को०)।

**सनोल**—वि० [स०] दे० 'सनीड'।

**सनेमि**—वि० [स०] १ पूर्ण। पूरा। २ नेमियुक्त। परिधियुक्त। जिसमे मडल हो (को०)।

**सनेस, सनेसा**—सज्ञा पुं० [स० सन्देश] दे० 'सदेश'।

**सनेह**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० स्नेह] दे० 'स्नेह'।

**सनेहिया**Ⓤ—सज्ञा पुं० [हि० सनेह+इया (प्रत्य०)] दे० 'सनेही'।

**सनेही**[१]—वि० [स० स्नेही, स्नेहिन्] स्नेह या प्रेम करनेवाला। प्रेमी।

**सनेही**[२]—सज्ञा पुं० चाहनेवाला। प्रियतम। प्यारा।

**सनै सनै**Ⓤ—अव्य० [स० शनै शनै] दे० 'शनै शनै'।

**सनोबर**—सज्ञा पु० [अ०] चीड का पेड।

**सन्न**[१]—सज्ञा पु० [स०] १ चिरौजी का पेड। पियाल वृक्ष। २ परिमाण मे स्वल्पता। कमी। अल्पता (को०)। ३. नाश। ध्वस। विनाश (को०)।

**सन्न**[२]—वि० [स० शून्य, हि० सुन्न] १, सज्ञाशून्य। सवेदनारहित। विना चेतना का सा। स्तब्ध। जड। जैसे,—यह भीषण सवाद सुनते ही वह सन्न रह गया। २ भौचक। ठक। स्तभित। ३ एकबारगी खामोश। सहसा मौन। एकदम चुप। ४ डर से चुप। भय से नीरव। जैसे,—उसके डाँटते ही वह सन्न हो गया।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

मुहा०—सन्न मारना = सन्नाटा खीचना। एकबारगी चुप हो जाना।

**सन्न**[३]—वि० [सं०] १ जो सिकुड गया हो। सकुचित। २ समाप्त। नष्ट। मृत। ३ दुबला। क्षीण। ४ सुस्त। विषण्ण। विषादयुक्त। ६ जिसमे कोई हरकत न हो। गतिहीन। मद। ७. झुका हुआ। अवनत। म्लान। ८ निकटस्थ। समीपवर्ती। सटा हुआ। ९ बैठा हुआ। आसीन। १० गत। प्रस्थित। ११ धीमा। मद। जैसे,—स्वर (को०)।

यौ०—सन्नकठ = गद्गद कठवाला। रुँधे गलेवाला। सन्नजिह्व = जो चुप हो। मौन। सन्नधी = उत्साहरहित। विषण्ण। सन्नभाव = त्याक्ताश। म्लान। उद्विग्न। सन्नमुसल = कार्य मे अप्रयुक्त या रखा हुआ मूसल। सन्नवाक्, सन्नवाच् = मद स्वर मे बोलनेवाला। जो धीमी आवाज मे बोलता हो। सन्नशरीर = श्लथदेह। थका हुआ। सन्नहृष = आनदरहित। उत्साहहीन। विषण्ण।

**सन्नक**[१]—वि० [स०] जो लबा न हो। नाटा। बौना (को०)।

**सन्नक**[२]—सज्ञा पु० [स०] पियाल वृक्ष। चिरौजी का पेड।

**सन्नकद्रु, सन्नकद्रुम**—सज्ञा पु० [स०] चिरौजी का पेड (को०)।

**सन्नत**[१]—वि० [स०] १ झुका हुआ। २ नीचे गया हुआ। ३ खिन्न। उदास (को०)।

यौ०—सन्नतभ्रू = जिसकी भौंहे झुकी हो। टेढी भौंहोवाला।

**सन्नत**[२]—सज्ञा पु० राम की सेना का एक वदर।

**सन्नतर**—वि० [स०] अत्यत धीमा। अत्यत मद या मद्र। जैसे,—स्वर (को०)।

**सन्नति**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ झुकाव। २ नम्रता। विनय। ३ किसी ओर प्रवृत्ति। मन का झुकाव। ४ कृपादृष्टि। मेहरबानी। ५ दक्ष की पुत्री और क्रतु की स्त्री का नाम। ६. ध्वनि। आवाज। ७ एक प्रकार का यज्ञ (को०)।

**सन्नद्ध**—वि० [सं०] १ बँधा हुआ। कसा या जकडा हुआ। २ कवच आदि बाँधकर तैयार। ३ तैयार। आमादा। उद्यत। ४ लगा हुआ। जुडा हुआ। मिला हुआ। ५ पास का। समीप का। ६ हिंसक। घातक (को०)। ७ फूटने या खिलने को ओर अभिमुख। विकासोन्मुख (को०)। ८ आनदयुक्त। मोहक (को०)। ९ युक्त। सपन्न (को०)।

यौ०—सन्नद्ध कवच = जिसने कवच या जिरहबख्तर धारण किया हो। कवची। सन्नद्धयोध = पूर्णत सज्जित या तैयार योद्धाओ से युक्त।

**सन्नय**—सज्ञा पुं० [स०] १ समूह। झुड। सख्या। परिमाण। तादाद। २ पिछला हिस्सा। पिछला अश। ३ सेना का पिछला भाग (को०)।

**सन्नयन**—सज्ञा पुं० [स०] १ एक साथ करना। समीप लाना। २ सवद्ध करने की क्रिया (को०)।

**सन्नहन**—सज्ञा पु० [स०] १ एक साथ अच्छी तरह बाँधना। नद्धना। पिरोना। २ तैयार होना। तत्पर होना। सन्नद्ध होना। ३ रस्सी। जेवर। ४ युद्धोपकरण, लडाई के हथियार आदि से युक्त होना। ५ उद्योग या प्रयत्न करना। ५ कसान। कसाव या खिचाव। ७ तैयारी (को०)।

**सन्नाटा**[१]—सज्ञा पुं० [स० शून्य, हि० सुन्न+आटा (प्रत्य०)] १ चारो ओर किसी प्रकार का शब्द न सुनाई पडने की अवस्था।

नि शब्दता। नीरवता। निस्तब्धता। जैसे,—मेला उठ जाने पर वहाँ सन्नाटा हो गया।

क्रि० प्र०—करना।—छाना।—फैलाना।—होना।

२ किसी प्राणी के न होने का भाव। निर्जनता। निरालापन। एकातता। जैसे,—वहाँ सन्नाटे मे पुकारने से भी कोई न सुनेगा। ३ अत्यत भय या आश्चर्य के कारण उत्पन्न मौन और निश्चेष्टता। ठक रह जाने का भाव। स्तब्धता।

मुहा०—सन्नाटे मे आना = ठक रह जाना। स्तभित हो जाना। कुछ कहते सुनते न बनना।

४ सहसा मौन। एकदम खामोशी। चुप्पी।

मुहा०—सन्नाटा खीचना या मारना = एकबारगी चुप हो जाना। एकदम मौन हो जाना।

५ चहल पहल का अभाव। विनोद या मनोरजन का न होना। उदासी।

मुहा०—सन्नाटा बीतना = उदासी मे समय काटना।

६. काम धधे से गुलजार न रहना। जैसे,—अब तो कारखाने मे सन्नाटा रहता है।

**सन्नाटा**[२]—वि० १ जहाँ किसी प्रकार का शब्द आदि न सुनाई पडता हो। नीरव। स्तब्ध। २. निर्जन। निराला। जैसे,—सन्नाटा मैदान।

**सन्नाटा**[३]—पुं० [अनु० सनसन] १ हवा के जोर से चलने की आवाज। वायु के बहने का शब्द। जैसे—आज तो बडे सन्नाटे की हवा है।

मुहा०—सन्नाटे का = सन सन शब्द के साथ बहता हुआ।

२ हवा चीरते हुए तेजी से निकल जाने का शब्द। वेग से वायु मे गमन करने का शब्द।

मुहा०—सन्नाटे के साथ या सन्नाटे से = वेग से। झोके से। बडी तेजी से। जैसे,—तीर सन्नाटे से निकल गया।

**सन्नादन** सज्ञा पु० [स०] राम की सेना का एक यूथप बदर।

**सन्नाम**—पुं० [स० सन्नामन्] सत् नाम। अच्छा नाम। सुनाम [को०]।

**सन्नाह**—सज्ञा पु० [स०] १ कवच। बकतर। उ०—पिधउ दिढ सन्नाह वाह उप्परि पक्खर दइ।—इतिहास, पृ० २८। २. उद्योग। प्रयत्न। ३ स्वय को शस्त्रास्त्र से सुसज्जित करना (को०)। ४ युद्ध जैसी सज्जा (को०)। ५. सामग्री। सामान। उपकरण (को०)।

**सन्नाह्य**—पुं० [सं०] युद्ध के योग्य एक विशेष प्रकार का हाथी।

**सन्नि**—सज्ञा स्त्री० [स०] खिन्नता। विषण्णता। निराशा [को०]।

**सन्निकट**—अव्य० [स०] समीप। पास। निकट।

**सन्निकर्ष**—पुं० [स०] [वि० सन्निकृष्ट] १ सबध। लगाव। २ नाता। रिश्ता। ३ सामीप्य। समीपता। ४ इद्रियो का विषयो के साथ सबध (न्याय)।

विशेष—यही ज्ञान का कारण है और लौकिक तथा अलौकिक दो प्रकार का कहा गया है।

४ पात्र। आधार। आश्रय। ५ निकट खीचना। समीप लाना (को०)। ६ नूतन विषय या विचार (को०)।

**सन्निकर्षण**—सज्ञा पु० [स०] दे० सन्निकर्ष [को०]।

**सन्निकाश** वि० [सं०] उसी रूप रग का। सदृश। समान।

**सन्निकीर्ण**—वि० [स०] पूरी तौर से। छितराया हुआ। पूर्णत. फैला हुआ [को०]।

**सन्निकृष्ट**[१]—वि० [स०] १ समीपवाला। नजदीक का। २ जो पास खिच आया हो। समीप खीचा हुआ [को०]।

**सन्निकृष्ट**[२]—सज्ञा पु० पडोस।

**सन्निचय**—पुं० [स०] १ बटोरना। एकत्र करना। ढेर करना। २ भडार। राशि [को०]।

**सन्निचित**—वि० [स०] १ राशीभूत। एकत्रित। २ अवरुद्ध। अवष्टभित। रुका हुआ। जैसे,—सन्निचित मल। (सुश्रुत)।

**सन्नितान**—पुं० [स०] सगीत मे एक प्रकार का ताल [को०]।

**सन्निध**—पुं० [स०] १ सामीप्य। २ आमने सामने की स्थिति।

**सन्निधाता**—पुं० [स० सन्निधातृ] १ आकर्षण करने या पास लानेवाला। २ जो एकत्र या जमा करता हो। ३ वह जो अपनी निगरानी मे रखे। पास रखनेवाला। ४ न्यायपीठ के समक्ष लोगो को सविवरण उपस्थित करनेवाला अधिकारी। ५ वह जो चोरी का माल रखता हो [को०]।

**सांनिधान**—सज्ञा पु० [स०] १ आमने सामने की स्थिति। २. निकटता। समीपता। ३. रखना। धरना। ४ स्थापित करना। ५ किसी वस्तु के रखने का स्थान। ६. वह स्थान जहाँ धन एकत्र किया जाय। निधि। ७ दृष्टिगोचरता (को०)। ८ ग्रहण करना। भार लेना (को०)। ९ समिश्रण (को०)। १० इद्रियो का विषय (को०)।

**सन्निधि**—पुं० स्त्री० [स०] १ समीपता। निकटता। २ आमने सामने की स्थिति। ३ पडोस। दे० 'सन्निधान'।

**सन्निपात**—सज्ञा पुं० [स०] १ एक साथ गिरना या पडना। २ जुटना। भिडना। टकराना। ३ सयोग। मेल। मिश्रण। ४ इकट्ठा होना। एक साथ जुटना। ५ कफ, वात और पित्त तीनो का एक साथ बिगडना। त्रिदोष। सरसाम।

विशेष—यह वास्तव मे कोई अलग रोग नही है, बल्कि एक विशेष अवस्था है जो ज्वर या और किसी व्याधि के बिगडने पर होती है। यह कई प्रकार का होता है। सबसे साधारण रूप वह है जिसमे रोगी का चित्त भ्रात हो जाता है, वह अडबड बकने लगता है तथा उछलता कूदता है। आयुर्वेद मे १३ प्रकार के सन्निपात कहे गए हैं—सधिग, अतक, रुग्दाह, चित्तभ्रम, शीताग, तद्रिक, कठकुब्ज, कर्णक, भग्ननेत्र, रक्तष्ठीव, प्रलाप, जिह्वक, और अभिन्यास।

६ एक साथ कई बातो का घटना या ठीक उतरना। ७. समाहार। समूह। ८ आना। पहुँचना (को०)। ९. सगीत मे एक प्रकार का ताल (को०)। १० मैथुन। सभोग (को०)। ११ युद्ध। लडाई (को०)। १२. ग्रहो का विशेष योग (को०)।

सन्निपातक—संज्ञा पु० [सं०] त्रिदोष विशेष। दे० 'सन्निपात'–५ [को०]।

सन्निपातित—वि० [सं०] १ च्युत। निःसृत। २ समवेत। इकट्ठा। एकत्र [को०]।

सन्निपाती—वि० [सं० सन्निपातिन्] सामवायिक [को०]।

सन्निबंध—संज्ञा पु० [सं० सन्निबन्ध] १ एक में बाँधना। जकड़ना। २ लगाव। संबंध। ३ प्रभाव। तासीर। ४ फल। परिणाम।

सन्निबद्ध—वि० [सं०] १ एक में बंधा हुआ। जकड़ा हुआ। २ लगा हुआ। अड़ा हुआ। फँसा हुआ। ३ सहारे पर टिका हुआ। आश्रित। ४ व्यवस्थित [को०]।

सन्निबर्हण—संज्ञा पु० [सं०] प्रतिरोध। प्रतिबंध [को०]।

सन्निभ—वि० [सं०] सदृश। समान। मिलता जुलता।

सन्निभृत—वि० [सं०] १ अच्छी तरह छिपाया हुआ। गुप्त। २ समझ बूझकर बोलनेवाला। ३ चतुर। शिष्ट (को०)।

सन्निमग्न—वि० [सं०] १ खूब डूबा हुआ। २ सोया हुआ।

सन्निमित्त—संज्ञा पु० [सं०] १ अच्छा शगुन २ जिसका कारण सत् या अच्छा हो। ३ भले लोगों का हित [को०]।

सन्नियंता—वि० [सं० सन्नियन्तृ] शासन करनेवाला। नियामक। व्यवस्थापक [को०]।

सन्नियोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छा योग। संयोग। संबंध। २ नियुक्ति। ३ लगाव। ४ फरमान। आज्ञा। आदेश [को०]।

सन्निरुद्ध—वि० [सं०] १ रोका हुआ। ठहराया हुआ। अड़ाया हुआ। २ दबाया हुआ। दमन किया हुआ। ३ एक साथ रखा या बटोरा हुआ। जैसे,–ठसाठस भरा हुआ। कसा हुआ।

सन्निरोध—संज्ञा पु० [सं०] १ रोक। रुकावट। बाधा। २ दमन। निवारण। ३ निग्रह। बंधन। कारागृह (को०)। ४ तंगी। संकोच। ५ तंग रास्ता। सँकरी गली।

सन्निवाय—संज्ञा पुं० [सं०] संहति। संघात [को०]।

सन्निवास—संज्ञा पुं० [सं०] १ भले लोगों के साथ रहना। साथ रहना। २ निवास। वसति। नीड़ [को०]।

सन्निविष्ट—वि० [सं०] १ एक साथ बैठा या मिला हुआ। २. जमा हुआ। धरा हुआ। ३ स्थापित। प्रतिष्ठित। ४ लगा हुआ। जड़ा हुआ। ५ अँटा हुआ। आया हुआ। ६ समाया हुआ। लीन। ७ पास का। समीप का। लगा हुआ। ८ जिसने शिविर या पड़ाव डाला हो (को०)।

सन्निवृत्त—वि० [सं०] १ जो लौट आया हो। प्रत्यावर्तित। २. ठहरा या रुका हुआ। ३ जो अलग हट गया हो। पराङ्मुख [को०]।

सन्निवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लौट आना। पलटना। प्रत्यावर्तन। २ ठहरना। रुकना। ३ अलग हटना। दूर होना। ४ रोकने की क्रिया [को०]।

सन्निवेश—संज्ञा पु० [सं०] १ एक साथ बैठना। २ जमना। स्थित होना। बैठना। ३ रखना। धरना। ठहरना। ४ लगाना। जड़ना। बैठाना। ५ अँटना। भीतर आना। समाना। ६. स्थिति। आधार। रखने की जगह। ७ आसन। बैठकी। ८ रहने की जगह। निवास। घर। ९ पुर या ग्राम के लोगों के एकत्र होने का स्थान। अथाई। चौपाल। १० एकत्र होना। जुटना। ११ समूह। समाज। १२ योजना। व्यवस्था। १३ रचना। १४ गठन। गठन। बनावट। आकृति। १५ स्तंभ, मूर्ति आदि की स्थापना। १६ गहरी पैठ। १७ उत्कट भक्ति (को०)। १८ संचय। समुच्चय (को०)। १९ डेरा डालना। शिविर स्थापित करना।

सन्निवेशन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सन्निवेशित, सन्निवेशी, सन्निवेश्य, सन्निविष्ट] १ एक साथ बैठना। २ बैठना। जमना। ३ रखना। धरना। ४ बैठाना। लगाना। जड़ना। ५ टिकाना। ठहराना। अड़ाना। ६. स्थापित करना। जैसे,—प्रतिमा या स्तंभ का सन्निवेशन। ७ वास। निवास। ८ विधान। व्यवस्था।

सन्निवेशित—वि० [सं०] १ बैठाया हुआ। जमाया हुआ। २ ठहराया हुआ। रखा हुआ। ३ स्थापित। प्रतिष्ठित। ४ अँटाया हुआ। भीतर डाला हुआ। ५ सौंपा हुआ (को०)।

सन्निसर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] सत् स्वभाव। विनयशीलता। उदारता [को०]।

सन्निहित[1]—वि० [सं०] १. एक साथ या पास रखा हुआ। २ समीपस्थ। निकटस्थ। ३ रखा हुआ। धरा हुआ। ४ ठहराया हुआ। टिकाया हुआ। अड़ाया हुआ। ५ जो कुछ करने पर हो। उद्यत। तैयार। ६ उपस्थित। विद्यमान (को०)।

सन्निहित[2]—संज्ञा पुं० १ सामीप्य। २. एक प्रकार की अग्नि [को०]।

सन्निहितापाय—वि० जिसका विनाश निकट ही हो। क्षणभंगुर [को०]।

सन्नी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सन] सन की जाति का एक प्रकार का छोटा पौधा।

विशेष—वह पौधा प्रायः सारे भारत और बरमा में पाया जाता है। इसके डंठलों से भी एक प्रकार का मजबूत रेशा निकलता है, पर लोग उसका व्यवहार कम करते हैं। यह देखने में बहुत सुंदर होता है, अतः कहीं कहीं लोग इसे बागों में शोभा के लिये भी लगाते हैं।

सन्नोदन—संज्ञा पु० [सं०] १ पशु आदि को चलाना। हाँकना। २ प्रेरित करना। उभारना। उसकाना।

सन्मंगल—संज्ञा पुं० [सं० सन्मङ्गल] भला काम [को०]।

सन्मणि—संज्ञा पु० [सं०] उत्तम कोटि का रत्न [को०]।

सन्मति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सम्मति' [को०]।

सन्मातुर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो साध्वी स्त्री का पुत्र हो। सती स्त्री का पुत्र [को०]।

सन्मात्र[1]—वि० [सं०] जिसका अस्तित्व मात्र स्वीकार्य हो [को०]।

सन्मात्र[2]—संज्ञा पुं० [सं०] आत्मा का एक नाम [को०]।

सन्मान—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सम्मान'।

सन्माननां पु०—क्रि० स० [हिं० सनमानना] दे० 'सनमानना'।

सन्मार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] सत् मार्ग। अच्छा मार्ग।

यौ०—सन्मार्गगामी = सुमार्ग पर चलनेवाला। सन्मार्गयोधी = धर्म या नियम के अनुसार लडनेवाला योद्धा। सन्मार्गस्थ = सत्पमार्ग पर स्थित। सन्मार्गगामी।

सन्मार्गालोकन—सज्ञा पुं० [स०] सत्पथ पर चलना। सुमार्ग पर चलना।

सन्मार्गी—वि० [स० सन्मार्गिन्] सुपथ पर चलनेवाला। सत् पथ पर गमन करनेवाला।

सन्मुख—अव्य० [स० सम्मुख] दे० 'सम्मख'।

सन्यासन—सज्ञा पुं० [स० सन्यसन, सन्यसन] [वि० सन्यस्त] १. फेकना। छोडना। अलग करना। हटाना। दूर करना। २ सासारिक विषयो का त्याग। दुनिया का जजाल छोडना। ३ रखना। धरना। ४ बैठाना। जमाना। स्थापित करना। ५ खडा करना। ६ जमा करना (को०)। ७. सौपना (को०)।

सन्यस्त—वि० [स० सन्यस्त, सन्यस्त] १ फेंका हुआ। अलग किया हुआ। २ रखा हुआ। धरा हुआ। ३ बैठाया हुआ। जमाया हुआ। ४ सौंपा हुआ (को०)।

सन्यास—सज्ञा पुं० [स० सन्यास, सन्यास] १ छोडना। दूर करना। त्याग। २ सासारिक प्रपचो के त्याग की वृत्ति। दुनिया के जजाल से अलग होने की अवस्था। वैराग्य। ३ चतुर्थ आश्रम। यति धर्म।

विशेष—यह प्राचीन भारतीय आर्यों या हिंदुओ के जीवन की चार अवस्थाओ मे से अतिम है जो पुत्र आदि के सयाने हो जाने पर ग्रहण की जाती थी। इसमे मनुष्य गृहस्थी छोडकर जगल या एकात स्थान मे ब्रह्मचिंतन या परलोकसाधन मे प्रवृत्त रहते थे और भिक्षा द्वारा निर्वाह करते थे। इसमे किसी आचार्य से दीक्षा लेकर सिर मुँडाते और दड ग्रहण करते थे। सन्यास दो प्रकार का कहा गया है—एक सक्रम अर्थात् जो ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य और वानप्रस्थ आश्रम के उपरात ग्रहण किया जाय, दूसरा अक्रम जो बीच मे ही वैराग्य उत्पन्न होनेपर धारण किया जाय। बहुत दिनो तक 'सन्यास' कलिवर्ज्य माना जाता था, पर शकराचार्य ने बौद्ध भिक्षुओ और जैन यतियो को अपने अपने धर्म का प्रचार बढाते देख कलिकाल मे फिर सन्यास चलाया और गिरि, पुरी, भारती आदि दस प्रकार के सन्यासियो की प्रतिष्ठा की जो दशनामी कहे जाते हैं।

क्रि० प्र०—ग्रहण करना।—लेना।

४ महना शरीर का त्याग। एकबारगी मरण। ५ एकदम थक जाना। चरम शैथिल्य। ६ धरोहर। थाती। ७ वादा। इकरार। ८. बाजी। होड। खेल मे शर्त लगाना। ९ जटामासी।

सन्यासी—सज्ञा पुं० [स० सन्यासिन्, सन्यासिन्] [स्त्री० सन्यासिनी, सन्यासिन] १ वह पुरुष जिसने सन्यास धारण किया हो। चतुर्थ आश्रमी। २. विरागी। त्यागी। यति। ३ वह जो त्याग देता है (को०)। ४. भोजन का त्याग करनेवाला (को०)।

सपक—वि० [स० स + पङ्क] १ कीचड से भरा हुआ। २ मुसीबत से भरा हुआ। उ०—मन मानि अतका करि मत सका सिधु सपका तरितरिगे।—पद्माकर ग्र०, पृ०.१९।

सपई—सज्ञा स्त्री० [हिं० साँप] १ एक प्रकार का लबा कीडा जो मनुष्यो और पशुओ की आँतो मे उत्पन्न होता है। पेट का केचुवा। २. बेला नामक फूल।

सपक्ष'—सज्ञा पुं० [सं०] अनुकूल पक्ष। मुवाफिक राय।

सपक्ष'—वि० १ जो अपने पक्ष मे हो। तरफदार। २ समर्थक। पोषक। ३ पक्षयुक्त। डैनो वाला (को०)। ४ पखवाला। दलवाला (को०)। ४ पखदार (बाण)। उ०—चले बान सपक्ष जनु उरगा।—मानस, ६।९३। ५ सदृश। समान (को०)। ६ एक जाति, वर्ग या श्रेणी का। ७ जिसमे साध्य या अनुमान का पक्ष हो (को०)।

सपक्ष'—सज्ञा पुं० १. तरफदार। मित्र। सहायक। २ न्याय मे वह बात या दृष्टात जिसमे साध्य अवश्य हो। जैसे,—जहाँ धूआँ होता है, वहाँ आग रहती है। जैसे,—रसोईघर का दृष्टात सपक्ष है। ३ सजातीय। रिश्तेदार (को०)।

सपक्षक—वि० [सं०] पक्षयुक्त। पखोवाला (को०)।

सपक्षो—वि० [स० सपक्ष] दे० 'सपक्ष'।

सपच्छ—वि० [स० सपक्ष, प्रा० सपच्छ] दे० 'सपक्ष'।

सपटा—सज्ञा पु० [देश०] १. सफेद कचनार। २ एक प्रकार का टाट। ३ मूँज की बनी एक प्रकार की पेटारी।

सपट्टी—सज्ञा स्त्री० [स०] द्वार के चौखट की दोनो खडी लकडियाँ। बाजू।

सपड़ना—क्रि० अ० [हिं० सपरना] दे० 'सपरना'।

सपडाना—क्रि० स० [हिं० सपराना] दे० 'सपराना'।

सपत—अव्य० [स० सपदि] दे० 'सपदि'।

सपताक—वि० [स०] पताका सहित। झडेवाला (को०)।

सपत्न'—सज्ञा पुं० [स०] अरि। वैरी। विरोधी। शत्रु।

यौ०—सपत्नजित्। सपत्नदूषण, सपत्नप्रमथनाशन = शत्रु का सहार करनेवाला। सपत्नवृद्धि = वैरियो की वृद्धि। सपत्नश्री = वैरी की विजय। सपत्नसूदन = शत्रुहता। शत्रुसूदन।

सपत्न'—वि० शत्रुता रखनेवाला। दुश्मन। वैरी। शत्रु (को०)।

सपत्नजित्—सज्ञा पुं० [स०] १. शत्रु को जीतनेवाला। २ मुदत्ता के गर्भ से उत्पन्न कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

सपत्नता—सज्ञा स्त्री० [स०] वैर। शत्रुता।

सपत्नारि—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का ठाग बाँस जिसके डडे या छडियाँ बनती हैं।

सपत्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक ही पति की दूसरी स्त्री। जो अपने पति की दूसरी स्त्री हो। सौत। सौतिन।

सपत्नीक—वि० [सं०] स्त्री के सहित। जोरू के साथ। जैसे,—आप सपत्नीक तीर्थ करने जायेंगे।

सपत्र—वि० [स०] पत्तो या पखो के सहित (को०)।

**सपत्राकरण**—संज्ञा पु० [सं०] १ ऐसा बाण मारना कि उसके पख तक भीतर घुस जायँ। २ बहुत पीडित करना [को०]।

**सपत्राकृत**—वि० [सं०] १ जिसे ऐसा तीर लगा हो कि उसके पख तक भीतर घुस गए हों। २ आहत। घायल [को०]।

**सपत्राकृति** संज्ञा स्त्री० [सं०] अत्यंत कष्ट या पीडा। दारुण व्यथा [को०]।

**सपथ**—संज्ञा पु० [सं० शपथ] दे० 'शपथ'। उ०—भामिनि राम सपथ सत मोही।—मानस, २।२६।

**सपदि**—अव्य० [सं०] उसी समय। तुरंत। शीघ्र। जल्द। उ०—(क) सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई।—मानस, ६।८४। (ख) सठ स्वपक्ष तव हृदय बिसाला। सपदि होहि पक्षी चंडाला।—मानस, ७।११२।

**सपन**†—संज्ञा पु० [हिं० सपना] दे० 'सपना'। उ०—सुनि सिय सपन भरे जल लोचन। भए सोचबस सोचबिमोचन।—मानस, २।२२५।

**सपना**[1]—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्न] १ वह दृश्य जो निद्रा की दशा में दिखाई पडे। नींद में अनुभव होनेवाली बात। २ निद्रा की दशा में दृश्य देखना।

मुहा०—सपना होना=देखने को भी न मिलना। दुर्लभ हो जाना।

**सपना**(यु)[2]—क्रि० अ० [सं० सर्पण, प्रा० सप्पण] चलना। गतिशील होना। उ०—लय पग्ग रमक्किय प्रेत दिस, वर वीर सु मंडिय चित्त रस। अविलंघ करी मकर विसन, रिपु थान सपत सु मैं न मन।—पृ० रा०, १।५३०।

**सपरदा, सपरदाई**—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदायी] गानेवाली तवायफ के साथ (तबला, सारंगी आदि) बजानेवाला। भँडवा। समाजी। साजिंदा।

**सपरना**—क्रि० अ० [सं० सम्पादन, प्रा० सपाडन] १ किसी काम का पूरा होना। समाप्त होना। निबटना। २ काम का किया जा सकना। हो सकना। जैसे,—यह काम हमसे नहीं सपरेगा।

मुहा०—सपर जाना=मर जाना।

३ तैयारी करना। तैयार होना।

**सपरब**—वि० [सं० सपर्व] गाँठयुक्त। पोरदार। उ०—बेनु हरित मनिमय सब कीने। सरल सपरब परहिं नहिं चीने।—मानस, १।२८०।

**सपरम**(यु)—वि० [हिं० स (=सह)+परस (=स्पर्श)] छूत से युक्त। स्पृश्य। स्पर्श करने योग्य। 'अपरस' का विलोम। उ०—अपरस ठौर तहाँ सरबस जाइ कैसे, बासना न धोवै तौं लौं नर के पधारे कहा।—घनानंद, पृ० १६८।

**सपराना**—क्रि० स० [हिं० सपरना] १ काम पूरा करना। निबटाना। खतम करना। २ पूरा कर सकना। कर सकना। ३† नहलाना। स्नान कराना।

**सपरिकर**—वि० [सं०] १ अनुचर वर्ग के साथ। २ ठाठ बाट के साथ। जुलूस के साथ।

**सपरिक्रम** वि० [सं०] दे० 'सपरिकर' [को०]।

**सपरिच्छद** वि० [सं०] १ अनुचर वर्ग के साथ। २ तैयारी के साथ। ठाठ बाट के साथ। जुलूस के साथ।

**सपरिजन**—वि० [सं०] दे० 'सपरिकर'। उ०—बहुरि सपरिजन भरत कहु रिपि अस आयेसु दीन्ह।—मानस, २।२१३।

**सपरिवृढ़ण**—वि० [सं०] परिशिष्ट से युक्त (वेद)।

**सपरिवार**—वि० [सं०] कुटुंबियों या आत्मीयों के सहित [को०]।

**सपरिवाह**—वि० [सं०] १ जो पूरा भरा हो। लबरेज। २ सतह से ऊपर बहता हुआ [को०]।

**सपरिव्यय**—वि० [सं०] विविध प्रकार की सामग्री, मसाले आदि के योग से तैयार किया गया। जैसे,—खाद्य पदार्थ [को०]।

**सपरिहार**—वि० [सं०] १ परिहार या अपवाद युक्त। २ शालीनता या भीरुता से युक्त [को०]।

**सपर्ण**—वि० [सं०] पत्रयुक्त। पत्तियोंवाला [को०]।

**सपर्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पूजा। आराधना। उपासना। २ सत्कार। सेवा टहल [को०]।

**सपशु**—वि० [सं०] १ पशुयुक्त। जानवरों के सहित। २ जो पशुबलि से संबंधित हो [को०]।

**सपाट**—वि० [सं० स+पट्ट, हिं० पाटा (=पीढा)] १ बराबर। हमवार। समतल। २ जिसकी सतह पर कोई उभरी या जमी हुई वस्तु न हो। चिकना।

**सपाटा**—संज्ञा पुं० [सं० सर्पण (=सरकना)] १ चलने, दौडने या उडने का वेग। झोंक। तेजी। जैसे,—सपाट के साथ दौडना। २ तीव्र गति। दौड। झपट। झपटा।

क्रि० प्र०—भरना।—मारना।—लगाना।

यौ०—सैर सपाटा=घूमना फिरना।

**सपाद**—वि० [सं०] १ चरण सहित। २ चतुर्थांश युक्त। ३ चतुर्थांश और अधिक के साथ। जिसमें एक का चौथाई और मिला हो। जैसे, सवा दो, सवा तीन, सवा चार।

यौ०—सपादपीठ=पादपीठ के साथ। पादपीठिका से युक्त। पैर रखने की छोटी चौकी से युक्त। सपादमत्स्य=एक प्रकार का मत्स्य। सपादलक्ष=सवा लाख। एक लाख पचीस हजार।

**सपादुक**—वि० [सं०] जो पादुका, खडाऊँ या चट्टी पहने हो [को०]।

**सपाल**—वि० [सं०] १ पशुपालक से रक्षित या युक्त। जिसके साथ पशुपालक हो। २ राजा से युक्त [को०]।

**सपिंड**—संज्ञा पुं० [सं० सपिण्ड] एक ही कुल का पुरुष जो एक ही पितरों को पिंडदान करता हो। एक ही खानदान का।

विशेष—छह् पीढी ऊपर और छह् पीढी नीचे तक के लोग सपिंड की गणना में आते हैं। इनके अतिरिक्त माता नाना और पडनाना आदि, कन्या, कन्या का पुत्र और पौत्र आदि तथा पिता माता के भाई बहिन आदि बहुत से आते हैं।

सपिंडन—संज्ञा पुं० [सं० सपिण्डन] दे० 'सपिंडीकरण' [को०]।

सपिंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० सपिण्डी] मृतक के निमित्त वह कर्म जिसमें वह और पितरों या परिवार के मृत प्राणियों के साथ पिंडदान द्वारा मिलाया जाता है।

सपिंडीकरण—संज्ञा पुं० [सं० सपिण्डीकरण] १ समान पितरों के समान में किया जानेवाला विशेष श्राद्ध का अनुष्ठान। यह श्राद्ध पहिले मृतक की मृत्यु तिथि के एक वर्ष बाद किया जाता था किंतु आजकल १२वें दिन ही किया जाने लगा है। २. किसी व्यक्ति को सपिंड का अधिकार देना [को०]।

सपीड—वि० [सं०] पीड़ा या वेदनायुक्त [को०]।

सपीतक—संज्ञा पुं० [सं०] घीया तुरई। नेनुवा।

सपीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुतों के एक साथ बैठकर पीने या खाने की क्रिया। सहपान या सहभोज [को०]।

सपीतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] लंबी घीया या कद्दू।

सपुर—वि० [सं०] पुरवासियों के साथ। उ०—देखि सपुर परिवार जनक हिय हारेउ।—तुलसी ग्र०, पृ० ५३।

सपुलक—वि० [सं०] पुलक या हर्ष के साथ।

सपूत—संज्ञा पुं० [सं० सत्पुत्र, प्रा० सपुत्त, सउत्त] वह पुत्र जो अपने कर्त्तव्य का पालन करे। अच्छा पुत्र। उ०—सूर सुजान सपूत सुलच्छन गनियत गुन गरुआई।—तुलसी (शब्द०)।

सपूती—संज्ञा स्त्री० [हिं० सपूत+ई (प्रत्य०)] १ सपूत होने का भाव। लायकी। २ योग्य पुत्र उत्पन्न करनेवाली माता।

सपेत, सपेद—वि० [फा० सफेद, मि० सं० श्वेत] सफेद। श्वेत। धवल।

सपेती—संज्ञा स्त्री० [हिं० सफेदी] दे० 'सफेदी'।

सपेरा—संज्ञा पुं० [हिं० सँपेरा] दे० 'सँपेरा'।

सपेला—संज्ञा पुं० [हिं० साँप+ऐला (प्रत्य०)] साँप का छोटा बच्चा। उ०—जिमि कोउ करै गरुड सों खेला। डरपावै गहि स्वल्प सपेला।—मानस, ३।५०।

सपोत—वि० [सं०] जिसके पास नाव हो। पोत युक्त [को०]।

सपोला—संज्ञा पुं० [हिं० साँप+पोला (प्रत्य०)] साँप का छोटा बच्चा।

सपौष्णमैत्र—वि० [सं०] रेवती और अनुराधा नक्षत्र में युक्त [को०]।

सप्त—वि० [सं०] गिनती में सात।

यौ०—सप्तकोण=सात कोणों वाला। सप्तगंग=एक स्थान-विशेष जहाँ गंगा सात धाराओं में बहती है। सप्तगोदावरी=एक नदी। सप्तज्वाल=सप्तार्चि। अग्नि। सप्ततंतु, सप्ततन्तु=सात तारों से युक्त। सप्तदीधिति=अग्नि। सप्त द्वारावकीर्ण=सात द्वारों—पाँच इंद्रियाँ, मन और बुद्धि से युक्त। सप्तधातुक=सात धातुओं वाला। सप्तदिन, सप्तदिवस=सप्ताह। सप्तपद=सात पदों का। सप्तपुरुष=जो सात पीढ़ी लंबा हो। सप्तबोध्यंग कुसुमाढ्य=एक बुद्ध का नाम। सप्तभूमिक, सप्तभूमिमय, सप्तभौम=सात मंजिलों वाला। सप्तमरीचि=सात मरीचि या किरणों वाला। सप्तार्चि। अग्नि। सप्तमहाभाग=विष्णु। सप्तमात्य=सप्तर्षि। सप्त यम=सात स्वरों वाला। सप्तरात्र=सात रात्रि का काल। सप्ताह। सप्तरात्रक=जो सात रात तक चले। साप्ताहिक। सप्तवर्ग=सात का समाहार। सप्तवर्ष=सात वर्ष का। सप्तविदार=एक वृक्ष का नाम। सप्तविध=सात प्रकार का। सप्तसमाधि-परिष्कारक, सप्तसमाधिपरिष्कारदायक=बुद्ध का एक नाम।

सप्तऋषि—संज्ञा पुं० [सं० सप्तर्षि] दे० 'सप्तर्षि'।

सप्तक'—संज्ञा पुं० [सं०] १ सात वस्तुओं का समूह। २ संगीत में सात स्वरों का समूह।

सप्तक'—वि० [वि० स्त्री० सप्तकी, सप्तकी] १ सात से युक्त। २ जो छह् के बाद हो। सात। ३ सप्तम। सातवाँ [को०]।

सप्तकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियों का कमरबंद।

सप्तकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वेदेवा में से एक।

सप्तगुण—वि० [सं०] सात बार और। सतगुना।

सप्तग्रही—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक ही राशि में सात ग्रहों का योग या एकत्र होना।

सप्तचत्वारिंश—वि० [सं०] सैंतालीसवाँ।

सप्तचत्वारिंशत्—वि० [सं०] सैंतालीस।

सप्तच्छद—संज्ञा पुं० [सं०] सप्तपर्ण वृक्ष। छतिवन।

सप्तजिह्व'—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि, जिसकी सात जिह्वाएँ मानी गई है।

सप्तजिह्व'—वि० सात जिह्वावाला। जिसे सात जीभ हो [को०]।

सप्तति—वि० [सं०] सत्तर।

सप्ततितम—वि० [सं०] सत्तरवाँ।

सप्तत्रिंश—वि० [सं०] सैंतीसवाँ।

सप्तत्रिंशत्—वि० [सं०] सैंतीस।

सप्तदश'—वि० [सं०] सत्तरहवाँ।

सप्तदश²—वि० [सं० सप्तदशन्] सत्तरह।

सप्तदशक—वि० [सं०] सत्रह से युक्त। जिसमें सत्रह हों [को०]।

सप्तदशम—वि० [सं०] सत्तरहवाँ।

सप्तद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े और मुख्य विभाग।

विशेष—सात द्वीप ये हैं—जंबू द्वीप, कुश द्वीप, प्लक्ष द्वीप, शाल्मलि द्वीप, क्रौंच द्वीप, शाक द्वीप और पुष्कर द्वीप।

२ पृथ्वी, जो सात द्वीपों में युक्त है।

सप्तधा—वि० [सं०] १ सात भागों में। २ सात गुना [को०]।

सप्तधातु'—संज्ञा पुं० [सं०] आयुर्वेद के अनुसार शरीर के सात संयोजक द्रव्य अर्थात् रक्त, पित्त, मांस, वसा, मज्जा, अस्थि और शुक्र।

सप्तधातु'—वि० सात धातुओं से बना हुआ। जैसे,—शरीर।

सप्तधातु[२]—संज्ञा पु० चंद्रमा के घोड़ों में से एक का नाम।

सप्तधान्य—संज्ञा पु० [सं०] जौ, धान, उरद आदि सात अन्नों का मेल जो पूजा में काम आता है।

सप्तनली—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहेलियों का चिड़िया फँसाने का एक उपकरण। कपा [को०]।

सप्तनवति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्तानवे की संख्या—९७।

सप्तनाडिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तनाडिका] सिंघाड़ा।

सप्तनाडी चक्र—संज्ञा पु० [सं० सप्तनाडीचक्र] फलित ज्योतिष में सात टेढ़ी रेखाओं का एक चक्र जिसमें सब नक्षत्रों के नाम भरे रहते हैं और जिसके द्वारा वर्षा का आगम बताया जाता है।

सप्तनामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आदित्यभक्ता। हुलहुल नाम का पौधा।

सप्तपंचाश—वि० [सं० सप्तपञ्चाश] सत्तावनवाँ।

सप्तपंचाशत्—वि० [सं० सप्तपञ्चाशत्] सत्तावन।

सप्तपत्र'—वि० [सं०] १ जिसमें सात पत्ते या दल हों। २ जिसके वाहन सात घोड़े हों।

सप्तपत्र[२]—संज्ञा पु० १ मोतिया। मोगरा बेला। २ सप्तपर्ण वृक्ष। छतिवन। ३ सूर्य।

सप्तपदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू अग्नि के चारों ओर सात परिक्रमाएँ करते हैं और जिसमें विवाह पक्का हो जाता है। भाँवर। भँवरी। २ किसी बात को अग्नि की साक्षी देकर पक्का करना।

सप्तपदी पूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विवाह के अवसर पर होनेवाला एक पूजन।

विशेष—इसमें एक लोढ़ा वर और वधू के आगे रखकर वर को उसे पूजने को कहा जाता है, पर वह उसे पैर से हटा देता है।

सप्तपराक—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का तप।

सप्तपर्ण—संज्ञा पु० [सं०] १ छतिवन का पेड़। २. एक प्रकार की मिठाई।

सप्तपर्ण[२]—वि० जिसमें सात दल या पत्ते हों [को०]।

सप्तपर्णक—संज्ञा पु० [सं०] छतिवन वृक्ष [को०]।

सप्तपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लज्जालु। लज्जावती लता। २ एक मिठाई। ३ छतिवन का फूल (को०)।

सप्तपलाश—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'सप्तपर्ण'।

सप्तपाताल—संज्ञा पु० [सं०] पृथ्वी के नीचे के सात लोक जिनके नाम ये हैं—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल।

सप्तपुत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] तुरई की तरह की सतपुतिया नाम की तरकारी।

सप्तपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्षदायक कहे गए हैं।

विशेष—अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, काची, अवन्तिका (उज्जयिनी) और द्वारका ये सात पवित्र पुरियाँ हैं।

सप्तप्रकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] राज्य के सात अंग जो ये हैं—राजा, मंत्री, सामंत, देश, कोश, गढ़ और सेना।

सप्तबाह्य—संज्ञा पु० [सं०] बाह्लीक देश। बलख।

सप्तभंगिनय—संज्ञा पुं० [सं० सप्तभङ्गिनय] दे० 'सप्तभंगी'—१।

सप्तभंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तभङ्गी] १ जैन न्याय या तर्क के सात अवयव जिन पर स्याद्वाद की प्रतिष्ठा है।

विशेष—ये सातों अवयव या सूत्र स्यात् शब्द से आरंभ होते हैं। यथा—स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति च नास्ति, स्यादवक्तव्य, स्यादस्ति चावक्तव्य, स्यान्नास्ति चावक्तव्य, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्य।

२ सप्तभंगी को माननेवाला। स्याद्वाद का अनुयायी जैन।

यौ०—सप्तभंगीनय = दे० 'सप्तभंगिनय'।

सप्तभद्र—संज्ञा पु० [सं०] १ सिरिस। शिरीष वृक्ष। २ नेवारी। नवमल्लिका। ३ गूजा। चिरमटी।

सप्तभुवन—संज्ञा पु० [सं०] ऊपर के सात लोक। विशेष दे० 'लोक'।

सप्तभूम'—संज्ञा पु० [सं०] मकान के सात खंड या मंजिल।

सप्तभूम[२]—वि० सात खंडों का। सतमंजिला।

सप्तभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रसातल। २ दे० 'सप्तभूम'।

सप्तमंत्र—संज्ञा पु० [सं० सप्तमन्त्र] अग्नि। सप्तार्चि [को०]।

सप्तम—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सप्तमी] सातवाँ।

सप्तमातृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सात माताएँ या शक्तियाँ जिनका पूजन विवाह आदि शुभ अवसरों के पहले होता है।

विशेष—इनके नाम ये हैं—ब्राह्मी या ब्राह्मणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐंद्री या इंद्राणी और चामुंडा।

सप्तमी'—वि० स्त्री० [सं०] सातवाँ।

सप्तमी[२]—संज्ञा स्त्री० १ किसी पक्ष की सातवीं तिथि। २ किसी पक्ष का सातवाँ दिन। ३ अधिकरण कारक की विभक्ति का नाम (व्याकरण)।

सप्तमुष्टिक—संज्ञा पु० [सं०] ज्वर की एक औषधि जो कई द्रव्यों के योग से बनती है।

सप्तमृत्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शांति पूजन में काम आनेवाली सात स्थानों की मिट्टी।

विशेष—राजद्वार की, गजशाला की तथा इसी प्रकार और स्थानों की मिट्टी मँगाई जाती है।

सप्तरक्त—संज्ञा पु० [सं०] शरीर के सात अवयव जिनका रंग लाल होता है। यथा—हथेली, तलवा, जीभ आँख या पलक का निचला भाग, तालू और ओठ।

सप्तराव—संज्ञा पु० [सं०] गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

सप्तराशिक—संज्ञा पुं० [सं०] गणित की एक क्रिया जिसमें सात राशियाँ होती हैं।

सप्तरुचि—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो सात रोचि या किरणों से युक्त हो। २ अग्नि का एक नाम।

**सप्रज्ञ**—वि०—[स०] प्रज्ञा या बुद्धिवाला [को०]।

**सप्रणय**—वि० [स०] प्रणययुक्त। स्नेहयुक्त। स्नेही। मित्रता-पूर्ण [को०]।

**सप्रतिभ**—वि० [स०] दूरदर्शी। प्रतिभावान्। विवेकी।

**सप्रतिभय**—वि० [स०] जिसका कोई अनुमान न हो। सहसा आ पड़नेवाला। खतरनाक [को०]।

**सप्रतीवाय**—वि० [स०] मिश्रणयुक्त [को०]।

**सप्रतीश**—वि० [स०] आदरणीय। सभ्रात [को०]।

**सप्रत्यय**—वि० [सं०] १ विश्वास रखनेवाला। विश्वासयुक्त। २ निश्चित। विश्वस्त [को०]।

**सप्रपच**—वि० [स० सप्रपञ्च] अनेक प्रकार के इधर उधर के प्रपचों से युक्त।

**सप्रभ**—वि० [स०] १ चमकदार। कातियुक्त। २ समान कांति या आभावाला [को०]।

**सप्रमाण**—वि० [स०] १ प्रमाण सहित। सबूत के साथ। २ प्रामाणिक। ठीक।

**सप्रमाद**—वि० [स०] अनवधानता युक्त। असावधान।

**सप्रयास**—क्रि० वि० [सं० स+प्रयास] चेष्टापूर्वक। कोशिश के साथ। उ०—प्राकृतिक दान वे, सप्रयास या अनायास आते है सब, सब मे है श्रेष्ठ, धन्य मानव।—अनामिका, पृ० २३।

**सप्रवाद**—वि० [स०] प्रवादयुक्त। जिसका प्रवाद हो।

**सप्रश्रय**—वि० [स०] सविनय। अत्यत आदरपूर्वक। अत्यत विनय के साथ [को०]।

**सप्रसव**—वि० [स०] एक ही मूल से सबद्ध [को०]।

**सप्रसवा**—वि० [स०] १ गर्भवाली। सगर्भा। गर्भिणी। २ जिसे बच्चे हो। सवत्सा [को०]।

**सप्लाई**—सज्ञा स्त्री० [अ०] (व्यवहार या उपयोग के लिये कोई वस्तु) उपस्थित करना। पहुँचाना। मुहैया करना। जैसे,—वे ७ न० घुडसवार पलटन के घोडो के लिये घास दाना सप्लाई किया करते हैं।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

२ प्राप्ति। पहुँच। पूर्ति। रसद। दानापानी।

यौ०—सप्लाई अफसर=पूर्ति विभाग का अधिकारी। सप्लाई आफिस, सप्लाई डिपार्टमेंट, सप्लाई विभाग=पूर्ति या सप्लाई करने का महकमा। पूर्ति कार्यालय।

**सप्लायर**—सज्ञा पु० [अ०] वह जो किसी को चीजे पहुँचाने का काम करता है। कोई वस्तु या माल पहुँचाने या मुहैया करनेवाला।

**सप्लीमेंट**—सज्ञा पु० [अ०] १ वह पत्र जो किसी समाचारपत्र मे अधिक विषय देने के लिये अतिरिक्त रूप से लगाया जाय। अतिरिक्त पत्र। क्रोड पत्र। २ किसी वस्तु का अतिरिक्त अश।

**सफ¹**—सज्ञा पुं० [स० शफ] दे० 'शफ'।

**सफ²**—सज्ञा स्त्री० [अ० सफ] १ पक्ति। कतार।

क्रि० प्र०—बाँधना।

२ लबी चटाई। सीतल पाटी। ३ बिछावन। फर्श। बिस्तर। ४ रेखा। लकीर। ५ नमाज पढनेवालो की कतार (को०)।

यौ०—सफदर=युद्ध मे सैन्यपक्ति को विदीर्ण करनेवाला। रणशूर। योद्धा। सफबदी=कतार मे करना। पक्तिबद्ध करना। सफबस्ता=पक्तिबद्ध। सफशिकन=कतार तोडनेवाला। पक्ति को छिन्नभिन्न करनेवाला। वीर।

**सफगोल**—सज्ञा पुं० [हिं० इसबगोल] दे० 'इसबगोल'।

**सफतालू**—सज्ञा पु० [स० सप्तालु, फा० शफ्तालू] एक पेड जिसके गोल फल खाए जाते हैं। सतालू। आडू।

विशेष—यह हिंदुस्तान मे ठढी जगहो मे होता है। पेड मझोले आकार का और लकडी लाल मजबूत और सुगधित होती है। पत्ते लबे नोकदार तथा कालापन लिए गहरे हरे रग के होते है। पतझड के पीछे पत्तियाँ निकलने के पहले ही इसमे फूल लग जाते है जो गुलाबी रग के होते है। फल पकने पर कुछ लाल और कुछ हरे रग के होते हैं और उनके ऊपर महीन महीन रोइयाँ सी होती है। बीजों मे बादाम की तरह का कडा छिलका होता है।

**सफन**[1]—वि० [हिं० स+अ० फन] गुण या हुनरवाला। होशियार। उ०—हाल हजूर बातून बासीन है सफन सर्वग है यार मेरा।—सत दरिया, पृ० ७२।

**सफन**[2]—सज्ञा पु० [अ० सफन] १ मछली या मगर का खुरदरा चमडा। २ बसूला।

**सफर**—सज्ञा पुं० [अ० सफर] १ प्रस्थान। यात्रा। रास्ते मे चलना। २ हिजरी सन् का दूसरा मास (को०)। ३ रास्ते मे चलने का समय या दशा। जैसे,—सफर मे बहुत सामान नही रखना चाहिए।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

यौ०—सफरखर्च=मार्ग व्यय। सफर जल=दे० 'बिही'। सफरनामा=यात्रा विवरण। भ्रमण वृत्तात।

**सफर**[2]—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की छोटी चमकीली मछली। सफरी [को०]।

**सफरदाई**—सज्ञा पुं० [हिं० सपरदाई] दे० 'सपरदाई'।

**सफरमैना**—सज्ञा [अ० सैपर माइनर] सेना के वे सिपाही जो सुरग लगाने तथा खाई आदि खोदने को आगे चलते है।

**सफरा**—सज्ञा पुं० [अ० सफरा] पित्त।

**सफरी**[1]—सज्ञा पु० [अ० सफरी] सफर मे का। सफर मे काम आनेवाला। यात्रा के समय का। जैसे,—सफरी बिस्तर।

**सफरी**[2]—सज्ञा पुं० १ राह खर्च। रास्ते का सामान। २ यात्री। पर्यटक (को०)। ३ अमरूद। उ०—श्रीफल मधुर चिरौजी आनी। सफरी चिरुआ अरु नय बानी।—पूर (शब्द०)।

**सफरी**[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शफरी] एक प्रकार की मछली। सौरी मछली।

**सफरोन**—सज्ञा पुं० [अ० कैम्फर आयल] कपूर के लाल तेल से तैयार होनेवाली एक दवा या मसाला।

**सफल**—वि० [स०] [स्त्री० सफला] १ जिसमे फल लगा हो। फल से जिसका कुछ परिणाम हो। जो व्यर्थ न जाय। सार्थक। युक्त। २. जैसे,—तुम्हारा परिश्रम सफल हो गया। ३ पूरा होना। जैसे,—मनोरथ सफल होना। ४ कृतकार्य। कामयाब। जिसका प्रयोजन सिद्ध हुआ हो।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

५ अडकोश युक्त। जो बधिया न हो।

**सफलक** वि० [स०] जिसके पास फलक या ढाल हो।

**सफलता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सफल होने का भाव। कामयाबी। सिद्धि। २ पूर्णता। ३ सार्थक होना। सार्थकता।

**सफला** सज्ञा स्त्री० [स०] पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी जो विशेष रूप से व्रत का दिन है।

**सफलित**—वि० [स० सफल] सार्थक। सफलीभूत।

**सफलीकरण**—सज्ञा पु० [स०] १ सफल करना। २ सिद्ध करना। पूर्ण क

**सफलीभूत**—वि० [स०] जो सफल हुआ हो। जो सिद्ध या पूरा हुआ हो।

**सफलोदर्य**—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम (को०)।

**सफलोदर्क**—वि० [स०] जिसमे सफलता की झलक दिखाई दे (को०)।

**सफहा**—सज्ञा पु० [अ० सफहह्] १ रुख। तल। सतह। २ वरक। पृष्ठ। पन्ना।

**सफा**—वि० [अ० सफा] १ साफ। स्वच्छ। निर्मल। २. पाक। पवित्र। उ०—कोई सफा न देखा दिल का।—काष्ठजिह्वा (शब्द०)। ३ जो खुरदुरा न हो। चिकना। बराबर।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

**सफा**—सज्ञा स्त्री० १ स्वच्छता। निर्मलता। २ चमक दमक (को०)।

**सफाइन**—सज्ञा पुं० [अ० सफाइन, सफीना (=नौका) का बहुवचन] नौकाएँ (को०)।

**सफाई**—सज्ञा स्त्री० [अ० सफा+ई(प्रत्य०)] १. सफा होने का भाव। स्वच्छता। निर्मलता। २ मैल, कूडा, करकट आदि हटाने की क्रिया। जैसे,—मकान की सफाई। ३ अर्थ या अभिप्राय प्रकट होने का गुण। ४ स्पष्टता। चित्त से दुर्भाव आदि का निकलना। मन मे मैल न रहना। जैसे,—सामने बातचीत कर लो, दिलो की सफाई हो जाय। ५ कपट या कुटिलता का अभाव। दुराव का न होना। जैसे,—आज उन्होने बडी सफाई से बात की। ६ दोषारोप का हटना। इलजाम का दूर होना। निर्दोषिता। जैसे,—उसने अपनी सफाई के लिये बहुत कुछ कहा। ७ ऋण का परिशोध। कर्ज या हिसाब का चुकता होना। बेबाकी। ८ मामले का निबटारा। निर्णय। ९ खात्मा। समाप्ति (को०)। १० ऊबडखाबड न रहना। खुरदुरापन का अभाव (को०)। ११ बरबादी। विनाश। तबाही। १२ चिकनापन। स्निग्धता (को०)।

मुहा०—सफाई कर देना=(१) साफ, बेबाक या स्वच्छ कर देना। (२) समाप्त या खत्म कर देना। (३) बरबाद कर देना। सफाई देना=निर्दोषिता प्रमाणित करना। कसूरवार न होने का सबूत देना।

**सफाचट**—वि० [हिं० सफा+चट] १ एकदम स्वच्छ। बिलकुल साफ। २ जिसपर कुछ जमा या लगा न रह गया हो। जो बिल्कुल चिकना हो। जैसे,—मैदान सफाचट होना। ३ जो जमा या लगा न रहने दिया जाय। जो निकाल, उखाड या दूर कर दिया जाय। जैसे,—बाल सफाचट होना। ४ जरा सा भी शेष न रहने देना (भोजन आदि)।

**सफाया**—सज्ञा पु० [हिं०] १ खत्म होने की स्थिति। समाप्ति। २ विनाश।

क्रि० प्र०—करना। होना।

**सफाहत**—सज्ञा स्त्री० [अ० सफाहत] कमीनापन। नीचता (को०)।

**सफी**—वि० [अ० सफी] १ साफ। स्वच्छ। धवल। २ पवित्रात्मा। शुद्ध भावना से युक्त। ३ मित्र। सखा। दोस्त (को०)।

**सफीना** सज्ञा पु० [अ० सफीनह्, अ० सब पेना] १. बही। किताब। नोटबुक। २ अदालती परवाना। इत्तलानामा। समन। ३. छोटी कश्ती। नाव। नौका (को०)।

**सफीर**[1]—सज्ञा स्त्री० [अ० सफीर] १ चिडियो की आवाज। २ वह सीटी जो पक्षियो को बुलाने के लिये दी जाती है। ३ सीटी।

**सफीर**[2]—सज्ञा पुं० एलची। राजदूत।

**सफील**[1]—सज्ञा स्त्री० [अ० फसील] पक्की चहारदीवारी। शहरपनाह। परकोटा।

**सफील**[2]—सज्ञा स्त्री० [अ० सफील] दे० 'सफीर'।

**सफूफ**—सज्ञा पु० [अ० सफूफ] चूर्ण। बुकनी। फकी।

**सफेद**—वि० [फा० सुफेद, मि० स० श्वेत] १ जो चूने के रग का हो। जिसपर कोई रग न हो। धौला। श्वेत। चिट्टा। जैसे,—सफेद घोडा। २ जिसपर कुछ लिखा या चिह्न न हो। कोरा। सादा। जैसे,—सफेद कागज।

यौ०—सफेद दाग=श्वेतकुष्ठ। सफेदरेश=बूढा, जिसकी दाढी पक गई हो।

मुहा०—किसी का रग सफेद पड जाना=विवर्णता होना। भय आदि से चेहरे का फीका पड जाना। स्याह सफेद=भला बुरा। इष्ट अनिष्ट। जैसे,—स्याह सफेद सब उसी के हाथ है।

**सफेदधावी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सफेद+धावी] एक प्रकार का बडा पेड। चकडी।

विशेष—यह वृक्ष हिमालय पर पाया जाता है। इसकी लकडी की कधियाँ बनाई जाती हैं। इसके फूलो मे सुगध होती है। इसके पत्ते खाद के काम मे आते है।

सफेदपलका—सज्ञा पु० [फा० सुफैद+हिं० पलक] वह कबूतर जिसके पर कुछ सफेद और कुछ काले हो।

सफेदपोश—सज्ञा पु० [फा० सुफेदपोश] १ साफ कपडे पहननेवाला। २ शिक्षित और कुलीन। भलामानस। शिष्ट। ३ अमीर न होते हुए भी भले व्यक्ति की तरह रहनेवाला। ४ वह जो केवल सफेद कपडे पहन कर शिष्टता का प्रदर्शन करता हो और जो वस्तुत शिक्षित और भला आदमी न हो।

सफेदा—सज्ञा पुं० [फा० सुफैदा] १ जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा तथा लोहे, लकडी आदि पर रँगाई के काम मे आता है। २ सफेद चमडा जो जूते आदि बनाने के काम मे आता है। ३ आम का एक भेद जो लखनऊ के आसपास होता है। ४ खरबूजे का एक भेद। ५ पजाब और काश्मीर मे होनेवाला एक बहुत ऊँचा पेड।

विशेष—यह वृक्ष खभे की तरह एकदम सीधा ऊपर जानेवाला पेड है जिसकी छाल का रग सफेद होता है। इसकी लकडी सजावट के सामान बनाने के काम मे आती है।

सफेदार—सज्ञा पुं० [देश०] सीसम का पेड।

सफेदी—सज्ञा स्त्री० [फा० सुफैदी] १ सफेद होने का भाव। श्वेतता। धवलता।

मुहा०—सफेदी आना=बाल सफेद होना। बुढापा आना।

२ दीवार आदि पर सफेद रग या चूने की पोताई। चूनाकारी।

क्रि० प्र०—करना।—फेरना।

३ सूर्य निकलने के पहले का उज्ज्वल प्रकाश जो पूर्व दिशा मे दिखाई पडता है।

मुहा०—(सुबह की) सफेदी फैलना=प्रभात होना। सूर्य का प्रकाश विकीर्ण होना।

सफेन—वि० [स०] झागदार। फेन युक्त। फेनिल।

सफेनपुज—सज्ञा पु० [स० सफेनपुञ्ज] वह जो घने फेन से भरा हुआ या आच्छादित हो। जैसे, समुद्र [को०]।

सफ्क—सज्ञा पु० [अ० सफ्क] हिंमत। रक्तपात। हिंसा [को०]।

सफ्तालू—सज्ञा पु० [हिं० सफतालू] दे० 'सफतालू'।

सफ्फाक—वि० [अ० सफ्फाक] १ निष्ठुर। बेरहम। २ हिंसक। ३ अत्याचारी [को०]।

सफ्फाकी—सज्ञा स्त्री० [अ० सफ्फाकी]। ३ निष्ठुरता। क्रूरता। बेरहमी। २ अत्याचार। जुल्म। ३ हिंसा। रक्तपात [को०]।

सबध—वि० [स० सबन्ध] जिसके लिये बध या प्रतिभू, जमानत आदि दी गई हो [को०]।

सबधक—वि० [स० सबन्धक] दे० 'सबध'।

सबधु[1]—वि० [स० सबन्धु] १ मित्रयुक्त। समित्र। २ एक ही कुल या वश का। ३ सन्निकट सबधी। नजदीकी रिश्तेदार [को०]।

सबधु[2]—सज्ञा पु० नातेदार। रिश्तेदार। सबधी [को०]।

सब[1]—वि० [स० सर्व, प्रा० सव्व] १ जितने हो, वे कुल। समस्त। जैसे,—(क) इतना सुनते ही सब लोग वहाँ से चल गए। (ख) सब किताबें आलमारी मे रख दो।

मुहा०—सब मिलाकर=जितना हो, उतना सब। कुल। २ पूरा। सारा। समस्त।

सब[2]—वि० [अ०] छोटा। गौण। अप्रधान।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग प्राय यौगिक शब्दो के आरभ मे होता है। जैसे,—सबइसपेक्टर, सबजज, सबऑर्डिनेट, सब आफिस।

सबक—सज्ञा पु० [फा० सबक] १ उतना अश जितना एक बार मे पढाया जाय। पाठ।

क्रि० प्र०—देना।—पढना।—पढाना।—लेना।

२ शिक्षा। नसीहत। ३ अनुभव। तजुर्बा।

क्रि० प्र० देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

सबकत—सज्ञा स्त्री० [अ० सबकत] किसी विषय मे औरो की अपेक्षा आगे बढ जाना। विशेषता प्राप्त करना।

क्रि० प्र०—करना।—ले जाना।

सबच्छो—वि० [स० सवत्सा] बछडेवाली। बछडे मे युक्त। बछडे के साथ। उ०—दीधो मोनो सोलहो, दीधी सुरह सबच्छी गाई। —बी० रासो, पृ० २५।

सबछ—वि० [स० सवत्स, सवच्छ] बछडेवाली। बछडासहित। उ०—ह्वै लख धेनु सबछ बहु दूधी। प्रथम प्रसूता सुदर सूधी। —नद० ग्र०, पृ० २३४।

सबज—वि० [फा० सब्ज] दे० 'सब्ज'।

सबजज—सज्ञा पुं० [अ०] छोटा जज। सदराला। सिविल जज।

सबडिवीजन—सज्ञा पुं० [अ० सबडिवीजन] किसी जिले का वह छोटा भूभाग जिसके अतर्गत बहुत से गाँव और कसबे हो। परगना। जैसे, चाँदपुर सब डिवीजन।

विशेष—कई सब डिवीजनो का एक जिला होता है अर्थात् हर जिला कई सब डिवीजनो मे बँटा हुआ होता है।

सबडिवीजनल—वि० [अ० सबडिवीजनल] सबडिवीजन का। उस भूभाग का जिसके अतर्गत बहुत से गाँव और कसबे हो। सबडिवीजन सबधी। जैसे,—सबडिवीजनल अफसर।

सबद—सज्ञा पुं० [सं० शब्द] १ शब्द। आवाज। उ०—हुता जो सुन्नम सुन्न, नाँव ठाँव ना सुर सबद। तहा पाप नहिं पुन्न, महमद आपुहि आपु महँ।—जायसी (शब्द०)। २ [स्त्री० सबदी] किसी महात्मा की वाणी या भजन आदि। जैसे,—कबीरजी के सबद, दादूदयाल के सबद।

सबनमी—वि० [फा० शबनम] जो शबनम की तरह एकदम श्वेत और महीन हो। उ०—धवल अटारी लखि खरी नवल वधू हरि दग। सादी सारी सबनमी लसत गुलाबी रग।—स० सप्तक, पृ० २३४।

सबब—सज्ञा पुं० [अ०] १ कारण। वजह। मूल कारण। हेतु। जैसे,—उनके नाराज होने का तो मुझे कोई सबब नही मालूम। २. द्वार। साधन। जैसे,—बिना किसी सबब के वहाँ पहुँचना कठिन है। ३ दलील। तर्क।

सबमरीन—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार की नाव जो जल के अंदर चलती है और युद्ध के समय शत्रु के जहाजों को नष्ट करने के काम में आती है। गोताखोर जहाज। पनडुब्बी।

विशेष—यह घंटों जल के अंदर रह सकती है और ऊपर से दिखाई नहीं देती। हवा, पानी लेने के लिये इसे ऊपर आना पड़ता है। यह 'टारपीडो' नामक भयंकर शस्त्र साथ लिए रहती है और घात लगते ही शत्रु के जहाज पर टारपीडो चलाती है। यदि टारपीडो ठिकाने पर लगा तो जहाज में बड़ा सा छेद हो जाता है।

सबर(पु)[1]—वि० [सं० सबल] ताकतवर। बली। सबल।

सबर[2]—संज्ञा पु० [अ० सब्र] दे० 'सब्र'।

सबरा(पु)—संज्ञा पु० [हिं० सब] सब। कुल। तमाम।

सबरी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शबरी] दे० 'शबरी'।

सबरी[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी = (कुदाल,)] सेंध मारने में चोरों द्वारा प्रयुक्त लगभग हाथ भर लंबा एक औजार।

सबल[1]—वि० [सं०] १ जिसमें बहुत बल हो। बलवान्। बलशाली। ताकतवर। जैसे,—जो सबल होगा वह निर्बलों पर शासन करेगा। २ जिसके साथ सेना हो। फौजवाला।

सबल[2]—संज्ञा पु० वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम [को०]।

सबल[3]—संज्ञा पु० [अ०] १ अन्न की बाल। अनाज की बाल। २ एक नेत्र रोग। मोतियाबिंद [को०]।

सबलि[1]—वि० [सं०] १ जिसपर राजकर लगता हो। २ बलिकर्म से सबद्ध [को०]।

सबलि[2]—संज्ञा पुं० (बलि चढ़ाने के लिये उपयुक्त) संध्या वेला। गोधूलि [को०]।

सबसिडियरी जेल—संज्ञा स्त्री० [अं०] हवालात।

सबा—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह हवा जो प्रभात और प्रात काल के समय पूर्व की ओर से चलती है। उ०—बराबरी का तेरी गुल ने जब खयाल किया। सबा ने मार थपेड़ा मुँह उसका लाल किया। —कविता कौ०, भा० ४, पृ० ६७।

यौ०—सबाखराम, सबादम = वह घोड़ा जो बहुत तेज भागता हो।

सबात—संज्ञा स्त्री० [अ०] स्थायी या दृढ़ होने का भाव। स्थायित्व। दृढ़ता [को०]।

सबाध—वि० [सं०] कष्ट पहुँचानेवाला। हानिकारक। पीड़क [को०]।

सबार'—संज्ञा पुं० [हिं० सबेरा] दे० 'सबेरा'।

सबार[2]—क्रि० वि० जल्दी। शीघ्र। उ०—होइ भगीरथ कर तहँ फेरा। जाहि सबार मरन कै बेरा।—जायसी (शब्द०)।

सबारै—संज्ञा पुं०, क्रि० वि० [हिं० सबेर] दे० 'सबार'।

सबार्डिनेट जज—संज्ञा पु० [अं०] दीवानी अदालत का वह हाकिम जो जज के नीचे हो। छोटा जज। सदराला। सिविल जज।

सबाष्प—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सबाष्पा] १ जिसकी आँखों में आँसू हो। २. जिसमें से भाप निकल रही हो [को०]।

सबाष्पक—वि० [सं०] १ अश्रुयुक्त (नेत्र)। २. जिसमें से भाप निकल रही हो [को०]।

सबिंदु'—वि० [सं० सविन्दु] बुँदकीदार। बिंदुसहित। बिंदु से युक्त [को०]।

सबिंदु[2]—संज्ञा पु० एक पर्वत का नाम [को०]।

सबी(पु)—संज्ञा स्त्री० [अ० शबीह] चित्र। तसवीर। उ०—लिखन बैठि जाकी सबी गहि गहि गरब गरूर। भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर।—बिहारी र०, दो० ३४७।

सबीज—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सबीजा] १ बीजाक्षर से युक्त। उ०—लोग वियोग विषम विष दागे। मंत्र सबीज सुनत जनु जागे।—मानस, २।१८४। २ जिसमें बीआ हो। जैसे, सबीज फल (को०)। ३ कीटाणुयुक्त (को०)।

सबील—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ रास्ता। मार्ग। सड़क। २ उपाय। तरकीब। यत्न। जैसे,—वहाँ पहुँचने की कोई सबील निकालनी चाहिए। ३ वह स्थान जहाँपर पथिकों आदि को धर्मार्थ जल या शरबत पिलाया जाता है। पौसरा।

क्रि० प्र०—पिलाना।—रखना।—लगाना।

सबीह'—वि० [अ०] १ खूब गोरा। अत्यंत गौर वर्ण का।

सबीह[2]—संज्ञा पु० [अ० शबीह] दे० 'शबीह'।

सबीह(पु)[3]—वि० [सं० सभी, प्रा० सबीह] भययुक्त। भयालु। भयान्वित।

सबू—संज्ञा पु० [फा० सुबू] मिट्टी का घड़ा। मटका। गगरी।

यौ०—सबूसाज = कुंभकार। कुम्हार।

सबूत—संज्ञा पु० [अ० सुबूत] दे० 'सुबूत'।

सबूर—वि० [अ०] माफ करनेवाला। क्षमाशील। २ धैर्ययुक्त। धीरज या सब्र करनेवाला [को०]।

सबूरा—संज्ञा पु० [अ० सब्र] काठ या चमड़े आदि का बना हुआ एक प्रकार का लंबा लिंगाकार खंड जिससे विधवा या पतिहीना स्त्रियाँ अपनी कामवासना तृप्त करती हैं। काष्ठ या चर्मनिर्मित लिंग। (मुसल० स्त्री०)।

सबूस—संज्ञा स्त्री० [फा०] मूसी। तुष। चोकर [को०]।

सबूह, सबूही—संज्ञा स्त्री० [फा०] सवेरे पी जानेवाली मदिरा। तड़के पी जानेवाली शराब [को०]।

सबेरा—संज्ञा पु० [सं० सु+हिं० बेरा] सुंदर समय। प्रातःकाल। सूर्योदय का समय।

सब्ज'—वि० [फा० सब्ज] १ कच्चा और ताजा (फल, फूल आदि)।

मुहा०—सब्ज बाग दिखलाना = अपना काम निकालने या फँसाने के लिये बड़ी बड़ी आशाएँ दिलाना।

२ हरा। हरित। (रंग)। ३ शुभ। उत्तम। जैसे,—सब्जवख्त = भाग्यशाली।

यौ०—सब्जपरी = (१) इंदर सभा की नायिका। (२) ताजापन या मस्ती देनेवाली, मदिरा। शराब (लाक्ष०)। सब्जपा = दे०

'सब्जकदम'। सब्जपुल = आसमान। सब्जपोश = हरी पोशाक पहने हुए। सब्जफोडा = एक प्रकार का कबूतर। सब्जबख्त। सब्जमुखी = कबूतर की एक जाति। सब्जरग = (१) हरे रग का। (२) सलोना। साँवला। सब्जरगी = सलोनापन। सब्जदार = मुर्गी की एक जाति।

**सब्जकदम**—वि० [फा० सब्ज + प्र० कदम] जिसके कही पहुँचते ही कोई अशुभ घटना हो। जिसके चरण अशुभ हो।

**विशेष**—इस शब्द मे 'सब्ज' का प्रयोग व्यग्य रूप से होता है।

**सब्जा**—सज्ञा पु० [फा० सब्जह्] १ हरी घास और वनस्पति आदि। हरियाली।

क्रि० प्र०—लहलहाना।

२ भग। भाँग। विजया। ३ पन्ना नामक रत्न। ४ स्त्रियो का कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना। ५ घोडे का एक रग जिसमे सफेदी के साथ कुछ कालापन भी मिला होता है। ६ वह घोड़ा जो इस रग का हो। ७ एक जाति का आम। ८ खरबूजे की एक जाति।

**सब्जी**—सज्ञा स्त्री० [फा० सब्जी] १ हरी घास और वनस्पति आदि। हरियाली। २ हरी तरकारी। ३ खाने के लिये तैयार की हुई तरकारी। ४ भग। भाँग। विजया।

यौ०—सब्जीखोर = शाकाहारी। सब्जीफरोश = हरी तरकारी बेचनेवाला। सब्जीमडी = वह जगह जहाँ सब्जी और ताजे फल बिकते हो।

**सब्जेक्ट**—सज्ञा पुं० [अ०] १ प्रजा। रैयत। जैसे,—ब्रिटिश सब्जेक्ट। २ विषय। मजमून।

**सब्जेक्ट कमिटी** सज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'विषय निर्वाचनी समिति'।

**सब्त**—सज्ञा पुं० [अ०] १ शनिवार। २ लेख [को०]।

**सब्बाक**—सज्ञा पुं० [अ०] सुनार। स्वर्णकार [को०]।

**सब्र**—सज्ञा पुं० [अ०] सतोष। धैर्य।

क्रि० प्र०—आना।—करना।—रखना।

मुहा०—सब्र करना = (१) धीरज धरना। ठहरना। रुकना। (२) जल्दबाजी या उतावली न करना। सब्र देना = धैर्य बँधाना। ढाँढस देना। सब्र की सिल छाती पर रखना = सबकुछ चुपचाप सह लेना। (किसी का) सब्र पडना = किसी के धैर्यपूर्वक सहन किए हुए कष्ट का प्रतिफल होना। जैसे,—तुमने उस गरीब का मकान ले लिया, तुमपर उसका सब्र पडा है जिससे तुम्हारा लडका मर गया। सब्र कर बैठना या लेना = कोई हानि या अनिष्ट होने पर चुपचाप उसे सह लेना। सब्र समेटना = किसी का शाप लेना। ऐसा काम करना जिसमे किसी का शाप पडे।

**सब्रह्म, सब्रह्मक**—वि० [स०] १ ब्रह्मा से युक्त। ब्रह्मा के साथ। २ ब्रह्मलोक सहित [को०]।

**सब्रह्मचर्य**—सज्ञा पु० [स०] (एक ही गुरु से) साथ साथ पठना। सहाध्ययन [को०]।

**सब्रह्मचारी**—सज्ञा पुं० [स० सब्रह्मचारिन्] १ वे ब्रह्मचारी जिन्होंने एक साथ एक गुरु से एक प्रकार की शिक्षा प्राप्त की हो। २ एक समान दु ख मे ग्रस्त व्यक्ति। ३ एक सदृश या एक जैसा आदमी। ४ वेदादि की एक ही शाखा का अध्ययन करनेवाले छात्र। ५ साथी। मित्र [को०]।

**सभग**—वि० [स० सभङ्ग] जिसमे टूकडे या खड हो [को०]।

यौ०—सभगश्लेष = श्लेष अलकार का एक प्रकार, जिसमे शब्द को खड करके दूसरा अर्थ निकाला जाता है। दे० 'श्लेष'।

**सभक्ष**—वि० [स०] साथ खानेवाला। सहभोजी [को०]।

**सभय**—वि० [स०] १ भययुक्त। उ०—सचिव सभय सिख देइ न कोई।—मानस १। २ डर उत्पन्न करनेवाला। भयकारक खतरनाक (को०)।

**सभर्तृका**—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सधवा। सुहागिन।

**सभस्मा**—वि० [स० सभस्मन्] जिसने भस्म लगाया हो। भस्म युक्त।

यौ०—सभास्माद्विज = शैव या पाशुपत मतावलबी।

**सभा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह स्थान जहाँ बहुत से लोग मिलकर बैठे हो। परिषद। गोष्ठी। समिति। मजलिस। जैसे,—विद्वानो की सभा मे बैठा करो। २ वह स्थान जहाँ किसी एक विषय पर विचार करने के लिये बहुत से लोग एकत्र हो। ३ वह सस्था या समूह जो किसी विषय पर विचार करने अथवा कोई काम सिद्ध करने के लिये सघटित हुआ हो। ४ सामाजिक। सभासद। ५ जूआ। द्यूत। ६ घर। मकान। ७ समूह। झुड। ८. प्राचीन वैदिक काल की एक सस्था जिसमे कुछ लोग एकत्र होकर सामाजिक और राजनीतिक विषयो पर विचार करते थे। ९ न्यायपीठ। न्यायालय [को०]। १० अतिथिशाला। धर्मशाला। पथिकालय (को०)। ११ भोजनालय [को०]।

यौ०—सभागत = जो सभा या न्यायपीठ मे उपस्थित हो। सभाचातुरी, सभा- चातुर्य = सभा समाज मे व्यवहार करने की पटुता। सभानायक = दे० 'सभापति'। सभापूजा = नाटक की प्रस्तावना मे दर्शको के प्रति समान व्यक्त करना। सभाप्रवेशन = न्यायपीठ के समक्ष जाना। सभामडन = सभागृह या सभाकक्ष को सजाना। सभामडप = सभागृह। सभा का कक्ष। सभायोग्य = समाज या गोष्ठी के उपयुक्त। सभावशकर = सभा, समाज या गोष्ठी को प्रभावित या वशीभूत करनेवाला।

**सभाकार**—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो सभा करता हो। सभा करनेवाला। २ वह जो सभाकक्ष बनाता हो। सभागृह का बनानेवाला (को०)।

**सभाग**—वि० [स०] १ हिस्सेदार। जिसका भाग या हिस्सा हो। २ सार्वजनीन। सर्वजनसुलभ। सामान्य। ३ सभा मे जानेवाला [को०]।

**सभागा**ऊ—वि० [स० स + भाग्य] [वि० स्त्री० सभागी] १ भाग्यवान्। खुशकिस्मत। तकदीरवर। उ०—ओहि छुइ पवन विरिछ जेहि

लागा। सोइ मलयगिरि भएउ सभागा।—जायसी (शब्द०)। २ सुदर। रूपवान्। उ०—आए गुपुत होइ देखन लागी। वह मूरति कस सती सभागी।—जायसी (शब्द०)।

सभागृह—सज्ञा पु० [स०] वह स्थान जहाँ किसी सभा या समिति का अधिवेशन होता हो। बहुत से लोगो के एक साथ बैठने का स्थान। मजलिस की जगह।

सभाचार—सज्ञा पु० [स०] १ सभा, गोष्ठी या समाज का रीति-रिवाज। समाज का आचार। २ धर्मसभा की पद्धति या नियम कायदा (को०)।

सभाजन—सज्ञा पुं० [स०] अपने मित्रो, सबधियो आदि के आने पर उनसे गले मिलना, उनका कुशल मगल पूछना और स्वागत या शिष्टाचार करना। २ सेवा (को०)। ३ विनम्रता। शिष्टता (को०)।

सभाजित—वि० [स०] १ आदृत। समानित। प्रसन्न। तुष्ट। २. प्रशसित। जिसकी प्रशस्ति की गई हो (को०)।

सभाज्य—वि० [सं०] आदरणीय। समान करने योग्य (को०)।

सभानर—सज्ञा पु० [स०] १ हरिवश के अनुसार कक्ष के एक पुत्र का नाम। २ भागवत के अनुसार अणु के एक पुत्र का नाम।

सभापति—सज्ञा पुं० [स०] १. वह जो सभा का प्रधान या नेता बनकर उसका कार्य चलाता हो। सभा का मुखिया। मीर मजलिस। २. वह जो जुए का अड्डा चलाता हो। द्यूतगृह का सचालक (को०)।

सभापरिषद—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बहुत से लोगो का एकत्र होकर साहित्य या राजनीति आदि से सबध रखनेवाले किसी विषय पर विचार करना। २ वह स्थान जहाँ इस प्रकार के कार्य के लिये लोग एकत्र होते हैं। सभागृह। सभाभवन।

सभापर्व—सज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के एक पर्व का नाम।

सभापाल—सज्ञा पु० [स०] वह जो सार्वजनिक भवन अथवा सभाभवन का रक्षक हो (को०)।

सभारता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ भारयुक्तता। २ अधिकता। आधिक्य। पूर्णता। ३ अभ्युदय। वृद्धि (को०)।

सभार्य, सभार्यक—वि० [स०] भार्या के साथ। भार्यानुगत। सपत्नीक।

सभावन—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम (को०)।

सभावी—सज्ञा पु० [सं० सभाविन्] वह जो द्यूतगृह का प्रधान हो। जूएखाने का मालिक।

सभासद—सज्ञा पुं० [स० सभासद्] १ वह जो किसी सभा मे सम्मिलित हो और उसमे उपस्थित होनेवाले विषयो पर सम्मति देने का अधिकार रखता हो। सदस्य। सामाजिक। पार्षद। २ वह जो किसी सभा या जलसे का सहायक हो (को०)। ३ दे० 'असेसर' (को०)।

सभासाह—सज्ञा पु० [सं०] वह जिसने वादविवाद या शास्त्रार्थ मे विजय प्राप्त की हो (को०)।

सभास्तार—सज्ञा पु० [स०] सभासद्। सदस्य।

सभिक, सभीक—सज्ञा पु० [स०] वह जो लोगो को जूआ खेलाता हो। जूएखाने का मालिक।

सभीत—वि० [सं० सभीति] दे० 'सभीति'। उ०—सचिव सभीत सकै नहि पूछी।—मानस, २।३२।

सभीति—वि० [स०] भयग्रस्त। डरवाला। भययुक्त।

सभेय—सज्ञा पुं० [स०] सभा का सदस्य। सभासद। सभ्य।

सभोचित—सज्ञा पु० [स०] पडित। विद्वान्।

सभ्य[1]—सज्ञा पु० [स०] १ जो किसी सभा मे सम्मिलित हो और उसके विचारणीय विषयो पर अपनी सम्मति दे सकता हो। सभासद। सदस्य। वह जिसका व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन श्रेष्ठ हो। वह जिसका आचार व्यवहार और रहन सहन उत्तम हो। कुलीन व्यक्ति। वह जिसमे तहजीब हो। भला आदमी। ३. न्यायाधीश को सलाह देनेवाला जनप्रतिनिधि। दे० 'असेसर'। ४ द्यूतगृह का सचालक। ५. द्यूतगृह के सचालक का सेवक (को०)। ६ पाँच पवित्र अग्नियो मे से एक (को०)।

सभ्य[2]—वि० १ सभा से सबध रखनेवाला। २ सभा समाज के योग्य। ३ सस्कृत। परिष्कृत। शिष्ट। ४ सुशील। विनम्र। ५ विश्वस्त। ईमानदार (को०)।

सभ्यता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सभ्य होने का भाव। सदस्यता। २ व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की वह अवस्था जिसमे लोगो का आचार व्यवहार बहुत सुधरकर अच्छा हो चुका हो। सुशिक्षित और सज्जन होने की अवस्था। ३ भलमनसाहत। शराफत। जैसे,—जरा सभ्यता का व्यवहार करना सीखो। ४ किसी भी काल या युग का सामाजिक जीवन या व्यवहार। सस्कृति। (अ० कल्चर)। जैसे—मोहनजोदडो सभ्यता, द्रविड सभ्यता।

सभ्येतर—वि० [स०] सभ्य से इतर या भिन्न। जो सभ्य न हो। असभ्य। गँवार। जगली (को०)।

सभ्यत्व—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सभ्यता' (को०)।

समक[1]—वि० [स० समङ्क] एक समान प्रतीक या चिह्नो को धारण करनेवाला। समान चिह्नवाला (को०)।

समक[2]—सज्ञा पुं० १ हुक या अकुश। २ पीडा। कचट। दर्द। (लाक्ष०)। ३ खेती को नष्ट करनेवाला पशु (को०)।

समग[1]—वि० [स० समङ्ग] जिसके सभी अग या अवयव पूर्ण हो। सर्वागयुक्त।

समग[2]—सज्ञा पुं० एक प्रकार की क्रीडा (को०)।

समंगल—वि० [स० समङ्गल] मगलयुक्त। शुभ। मगलमय (को०)।

समगा—सज्ञा स्त्री० [स० समङ्गा] १ मजीठ। २ लाजवती। लजाधुर। ३ वाराहक्राता। गेंठी। ४ बाला।

समगिनी—सज्ञा स्त्री० [स० समङ्गिनी] बौद्धो की, बोधिवृक्ष की एक देवी।

समचन--सज्ञा पुं० [स० समञ्चन] १ आकर्षण। झुकाना। नवाना। २ आकुचन (को०)।

समजन[१]--वि० [स० समञ्जन] एक साथ मिलनेवाला। सयुक्त करनेवाला (को०)।

समजन[२]--सज्ञा पुं० लेपन। विलेपन। अभ्यजन (को०)।

समजस[१]--वि० [स० समञ्जस] १ उचित। ठीक। वाजिब। २ जिसे किसी बात का अभ्यास हो। अभ्यस्त। ३ सही। सच। यथार्थ (को०)। ४ स्पष्ट। बोधगम्य (को०)। ५ स्वस्थ (को०)। ६ अच्छा। नेक (को०)।

समजस[२]--सज्ञा पुं० १ पात्रता। औचित्य। योग्यता। २ यथार्थता। ३ सत्यकथन। सचाई। सत्यता। ४ समानता। ५ उपयुक्त या ठीक प्रमाण (को०)।

समठ--सज्ञा पु० [स० समण्ठ] वे फल जिनकी तरकारी बनती हो। तरकारी के काम आनेवाले फल। जैसे,--पपीता, ककडी आदि। २ गडीर। पोय (को०)।

समत[१]--सज्ञा पुं० [स० समन्त] सीमा। प्रात। किनारा। सिरा।

समंत[१]--वि० १ समस्त। सब। कुल। २ हर दिशा मे मौजूद। विश्वव्यापी (को०)।

समतकुसुम--सज्ञा पु० [स० समन्तकुसुम] ललितविस्तर के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

समतगध--सज्ञा पु० [स० समन्तगन्ध] बौद्धो के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

समतदर्शी[१]--वि० [स० समन्तदर्शिन्] जिसे सब कुछ दिखाई देता हो। सर्वदर्शी।

समतदर्शी[२]--सज्ञा पुं० गौतम बुद्ध का एक नाम।

समतदुग्धा--सज्ञा स्त्री० [स० समन्तदुग्धा] स्नुही। थूहर।

समतनेत्र--सज्ञा पु० [स० समन्तनेत्र] एक बोधिसत्व का नाम।

समतपचक--सज्ञा पु० [स० समन्तपञ्चक] कुरुक्षेत्र का एक नाम।

विशेष--कहते हैं कि एक बार परशुराम ने समस्त क्षत्रियो को मारकर उनके लहू से यहाँ पाँच तालाब बनाए थे। और उन्ही मे उन्होने लहू से अपने पिता का तर्पण किया था। तभी से इस स्थान का नाम समतपचक पडा।

समतपर्यायी--वि० [स० समन्तपर्यायी] सबका अतर्भाव करनेवाला। सबको अपने मे समेटनेवाला (को०)।

समतप्रभ--सज्ञा पुं० [स० समन्तप्रभ] एक बोधिसत्व का नाम।

समतप्रभास--सज्ञा पुं० [स० समन्तप्रभास] गौतम बुद्ध का एक नाम।

समतप्रसादिक--सज्ञा पु० [स० समन्तप्रसादिक] एक बोधिसत्व का नाम।

समतप्रासादिक--वि० [स० समन्तप्रासादिक] जो सर्वत्र सहायता करने मे समर्थ या सक्षम हो (को०)।

समतभद्र--सज्ञा पुं० [स० समन्तभद्र] गौतम बुद्ध का एक नाम।

समतभद्रक--सज्ञा पु० [स० समन्तभद्रक] एक प्रकार का लवा कवल (को०)।

समतभुज--सज्ञा पुं० [स० समन्तभुज्] अग्नि।

समतर--सज्ञा पुं० [स० समन्तर] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम। २ इस देश का निवासी।

समतरश्मि--सज्ञा पु० [स० समन्तरश्मि] एक बोधिसत्व का नाम।

समतालोक--सज्ञा पु० [स० समन्तालोक] ध्यान करने का एक प्रकार।

समतावलोकित--सज्ञा पुं० [स० समन्तावलोकित] एक बोधिसत्व का नाम।

समत्र--वि० [स० समन्त्र] मन्त्रयुक्त। मत्रो से युक्त। (को०)।

समत्रक--वि० [स०] १ दे० 'समत्र'। २ इद्रजाल का ज्ञाता (को०)।

समत्रिक--वि० [स० समन्त्रिक] मत्रित्र अमात्यादि से युक्त (को०)।

समद--सज्ञा पु० [फा०] १ वह बादामी रग का घोडा जिसकी अयाल, दुम और पुट्ठे काले हो। उ०--नील समद चाल जग जाने। हाँसत भार गियाह बखाने। --जायसी (शब्द०)। २ घोडा। अश्व।

समदर--सज्ञा पुं० [फा०] १ एक कीडा जिसकी उत्पत्ति अग्नि से मानी जाती। २ समुद्र (को०)।

सम्--अव्य० [स०] दे० 'स'।

सम[१]--वि० [स०] १ समान। तुल्य। बराबर। २ सब। कुल। समस्त। पूरा। तमाम। ३ जिसका तल ऊबड खाबड न हो। चौरस। ४ (सख्या) जिसे दो से भाग देने पर शेष कुछ न बचे। जूम। ५ एक ही। वही। अभिन्न (को०)। ६ निष्पक्ष। तटस्थ। उदासीन। ७ ईमानदार। खरा (को०)। ८ भला। सद्गुणसपन्न (को०)। ९ सामान्य। मामूली (को०)। १० उपयुक्त। यथार्थ। ठीक (को०)। ११ मध्यवर्ती। बीच का। १२ सीधा (को०)। १३ जो न बहुत अच्छा और न बहुत बुरा हो। मध्यम श्रेणी का (को०)।

यौ०--समचक्रवाल = वृत्त। समचतुरश्र, समचतुर्भुज, समचतुष्कोण = जिसके चारो कोण समान हो। समतीर्थक = जिसमे ऊपर तक जल भरा हो। लबालब पानी भरा हुआ। समतुला = समान मूल्य। समतुलित = जिसका भार समान हो। समतोलन = सतुलन। तराजू के दोने पलडे बराबर रखना। समान तौलना। समभाग। समभूमि।

सम[२]--सज्ञा पुं० १ वह राशि जो सम सख्या पर पडे। दूसरी, चौथी, छठी आदि राशियाँ। वृष, कर्कट, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन ये छह् राशियाँ।

यौ०--समक्षेत्र = नक्षत्रो की एक विशेष स्थिति।

२ गणित मे वह सीधी रेखा जो उस अक के ऊपर दी जाती है जिसका वर्गमूल निकालना होता है। ३ सगीत मे वह स्थान जहाँ गाने बजानेवालो का सिर या हाथ आपसे आप हिल जाता है।

विशेष--यह स्थान ताल के अनुसार निश्चित होता है। जैसे, तिताले मे दूसरे ताल पर और चौताल मे पहले ताल पर सम होता है। वाद्यो का आरभ और गीतो तथा वाद्यो का अत

इसी सम पर होता है। परंतु गाने बजाने के बीच बीच में भी सम बराबर आता रहता है।

४ साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें योग्य वस्तुओं के संयोग या संबंध का, कारण के साथ कार्य की सामान्यता का, तथा अनिष्टबाधा के बिना ही प्रयत्नसिद्धि का वर्णन होता है। यह विषमालंकार का बिलकुल उलटा है। उ०—(क) जस दूलह तस बनी बराता। कौतुक बिबिध होहिं मगु जाता। (ख) चिरजीवौ जोरी जुरै क्यों न सनेह गँभीर। को कहिए वृषभानुजा वे हलधर के बीर। ५ समतल भूमि। चौरस मैदान (को०)। ६ याम्योत्तर रेखा अर्थात् दिकचक्र, आकाश-वृत्त को विभाजित करनेवाली रेखा का मध्य बिंदु (को०)। ७ समान वृत्ति। समभाव। समचित्तता (को०)। ८ तुल्यता। सादृश्य। समानता (को०)। ९ तृणाग्नि (को०)। १० धर्म के एक पुत्र का नाम (को०)। ११ धृतराष्ट्र का एक पुत्र (को०)। १२ उत्तम स्थिति। अच्छी दशा (को०)।

**सम[3]**—संज्ञा पु० [अ०] विष। जहर। सम्म। उ०—सम खायँगे पर तेरी कसम हम न खायँगे।

**सम(यौ)[4]**—संज्ञा पुं० [स० शम] दे० 'शम'। उ०—तापस सम दम दया निधाना। परम रय पथ परम सुजाना।—मानस, १। ४४।

**समकक्ष**—वि० [सं०] बराबरी का। समान। तुल्य। जैसे,—दर्शन शास्त्र में वे तुम्हारे समकक्ष हैं।

**समकक्षा**—संज्ञा स्त्री० [स०] बराबरी। तुल्यता (को०)।

**समकन्या**—संज्ञा स्त्री० [स०] वह कन्या जो विवाह के योग्य हो गई हो। ब्याहने लायक लड़की।

**समकर**—वि० [सं०] १ मकर आदि समुद्री जंतुओं से युक्त। २ उचित रूप में महसूल लगानेवाला (को०)।

**समकर्ण**—संज्ञा पु० [स०] १ शिव का एक नाम। २ गौतम बुद्ध का एक नाम। ३ ज्यामिति में किसी चतुर्भुज के आमने सामनेवाले कोणों के ऊपर की रेखाएँ।

**समकर्मा**—वि० [स० समकर्मन्] समान पेशेवाला।

**समकाल**—संज्ञा पु० [स०] एक ही काल या समय। समान क्षण (को०)।

**समकालीन**—वि० [स०] जो (दो या कई) एक ही समय में हों। एक ही समय में होनेवाले। जैसे,—तुलसीदासजी जहाँगीर के समकालीन थे।

**समकृत**—संज्ञा पुं० [स०] कफ। श्लेष्मा।

**समकोटिक**—वि० [स०] सुडौल। (रत्न) समान पहल या कोणवाला (हीरा) (को०)।

**समकोण**—वि० [स०] (त्रिभुज या चतुर्भुज) जिसके आमने सामने के दो कोण समान हों।

**समकोल**—संज्ञा पु० [स०] साँप।

**समकोश**—संज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम।

**समक्रम**—वि० [स०] जिसका पादविक्षेप समान दूरी पर पड़े। चलने में जिसके कदम समान दूरी पर पड़े (को०)।

**समक्रिय**—वि० [स०] समान क्रियाएँ या कार्य करनेवाला (को०)।

**समक्वाथ**—संज्ञा पुं० [स०] वह क्वाथ या काढ़ा जिसका पानी आदि जलकर आठवाँ भाग रह जाय।

**समक्ष[1]**—अव्य० [स०] आँखों के सामने। सामने। जैसे,—अब वह कभी आपके समक्ष न आवेगा।

**समक्ष[2]**—वि० जो आँखों के सामने हो रहा है। प्रत्यक्ष (को०)।

**समक्षता**—संज्ञा स्त्री० [स०] दृश्यता। प्रत्यक्षता। गोचरता (को०)।

**समखात**—संज्ञा पु० [स०] घन के रूप में की गई खुदाई। वह खुदाई जिसकी लंबाई, चौड़ाई और गहराई समान हो (को०)।

**समगंधक**—संज्ञा पु० [स० समगन्धक] नकली धूप।

**समक्षदर्शन**—संज्ञा पुं० [स०] १ आँखों देखा प्रमाण या सबूत। २ आँखों देखना। प्रत्यक्ष दर्शन (को०)।

**समगंधिक**—संज्ञा पु० [स० समगन्धिक] १ वह जिसमें समान गंध हो। २ उशीर। खस।

**समग**—संज्ञा पुं० [अ० समग] गोंद (को०)।

**समगति**—संज्ञा पु० [स०] वायु। हवा (को०)।

**समग्ग(यौ)**—वि० [स० समग्र] दे० 'समग्र'।

**समग्र**—वि० [स०] १ समस्त। कुल। पूरा। सब। जैसे,—उसे समग्र लघुकौमुदी कंठ है। २ जिसके पास सब कुछ हो। सर्वसंपन्न (को०)।

यौ०—समग्रभक्षणशील=जो सब कुछ भक्षण करे या खा जाय। समग्रशक्ति=सभी शक्तियों से युक्त। समग्रसपत्=जो सभी प्रकार के सुख या संपत्तियों से युक्त हो।

**समग्रणी**—वि० [स०] लोगों में अग्रणी, श्रेष्ठ (को०)।

**समग्रेंदु**—संज्ञा पुं० [स० समग्रेन्दु] चंद्रमा का पूर्ण मंडल। पूर्णचंद्र (को०)।

**समचतुर्भुज**—संज्ञा पु० [स०] वह चतुर्भुज जिसके चारों भुज समान हों।

**समचर**—वि० [स०] समान आचरण करनेवाला। एक सा व्यवहार करनेवाला। उ०—नाम निठुर समचर सिखी सलिल सनेह न दूर। ससि सरोग दिनकर बड़े पयद प्रेमपथ कूर।—तुलसी (शब्द०)।

**समचार(यौ)**—संज्ञा पु० [स० समाचार?] दे० 'समाचार', खबर। उ०—(क) नारद जे दूत आहि। समचार सबै कहि ते सुनाइ।—पृ० रा०, ७।५५। (ख) सखी कह मैं पठए चारा। आजि काल्हि ऐहै समचारा।—नंद० ग्रं०, पृ० १३४।

**समचित्त**—संज्ञा पु० [स०] वह जिसके चित्त की अवस्था सब जगह समान रहती हो। वह जिसका चित्त कहीं दुखी या क्षुब्ध न होता हो। वह जो उदासीन या तटस्थ रहे। समचेता। २ वह जो धैर्ययुक्त हो। धैर्यशाली (को०)। ३ वह जिसकी प्रज्ञा एक ही विषय पर केंद्रित हो (को०)।

**समचेता**—संज्ञा पु० [सं० समचेतस्] वह जिसके चित्त की वृत्ति सब जगह समान रहती हो। दे० 'समचित्त'।

**समच्छेद, समच्छेदन**—वि० [स०] वह भिन्न जिनके हर या हल समान हो [को०]।

**समज**—सज्ञा पु० [स०] १ वन। जगल। २ पशुओ का झुड। ३ मूर्खो का झुड। मूर्खमडल [को०]। ४ इद्र [को०]।

**समजाति, समजातीय**—वि० [स०] जो समान जाति का हो। समान वर्ग का [को०]।

**समज्ञा**—सज्ञा स्त्री० [स०] कीर्त्ति। यश।

**समज्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सभा। गोष्ठी। वह स्थान जहाँ लोग मिलें जुलें। २ ख्याति। प्रसिद्धि। मशहूरियत [को०]।

**समझ**—सज्ञा स्त्री० [स० सज्ञान] १ समझने की शक्ति। बुद्धि। अक्ल। जैसे, तुम्हारी समझ की बलिहारी।

मुहा०—समझ पर पत्थर पडना=बुद्धि नष्ट होना। अक्ल का मारा जाना। जैसे,—उसकी समझ पर तो पत्थर पड गए है, वह हिताहितज्ञानशून्य हो गया है।

२ खयाल। जैसे,—(क) मेरी समझ मे उसने ऐसा कोई काम नही किया कि जिसके लिये उसकी निंदा की जाय। (ख) मेरी समझ मे उन्होने तुमको जो उत्तर दिया, वह बहुत ठीक था।

**समझदार**—वि० [हिं० समझ+फा० दार] बुद्धिमान। अक्लमद।

**समझना**—क्रि० अ० [स० सम्यक् ज्ञान] १ किसी बात को अच्छी तरह जान लेना। अच्छी तरह मन मे बैठाना। भली भाँति हृदयगम करना। अच्छी तरह ध्यान मे लाना। ज्ञान प्राप्त करना। बोध होना। बूझना। जैसे,—मैने जो कुछ कहा, वह तुम समझ गए होगे। २ ख्याल मे आना। ध्यान मे आना। विचार मे आना। जैसे,—(क) मै समझता हूँ कि अब तुम्हारी समझ में यह बात आ गई होगी। (ख) तुम समझे न हो तो फिर समझ लो।

सयो० क्रि०—जाना।—पडना।—रखना।—लेना।

मुहा०—समझ बूझकर=अच्छी तरह जानकर। ज्ञानपूर्वक। जैसे,—तुमने बहुत समझ बूझकर यह काम किया है। समझ रखना=अच्छी तरह जान रखना। भली भाँति हृदयगम करना। जैसे,—तुम समझ रखो कि अपने किए का फल तुम्हे अवश्य भोगना पडेगा। समझ लेना=(१) बदला लेना। प्रतिशोध लेना। जैसे,—कल तुम चौक मे आना, तुमसे समझ लेंगे। (२) समझौता करना। निपटारा। जैसे,—आप रुपए दे दीजिए, हम दोनो आपस मे समझ लेगे।

**समझाना**—क्रि० स० [हि० समझना का सक०] कोई बात अच्छी तरह किसी के मन मे बैठाना। हृदयगम कराना। ज्ञान प्राप्त कराना। ध्यान मे जमाना। बोध कराना।

यौ०—समझाना बुझाना।

**समझाव, समझावा**—सज्ञा [हिं० √समझ+आव (प्रत्य०)] राजीनामा। समझौता।

यौ०—समझाव बुझाव=समझाना बुझाना।

**समझौता**—सज्ञा पुं० [हिं० समझाना] आपस का वह निपटारा जिसमे दोनो पक्षो को कुछ न कुछ दबना या स्वार्थत्याग करना पडे। राजीनामा।

क्रि० प्र०—करना।—कराना।—होना।

**समतट**—सज्ञा पुं० [स०] १ समुद्र के एक ही किनारे पर के देश। २ एक प्राचीन प्रदेश का नाम जो आधुनिक बगाल के पूर्व मे था।

**समतल**—वि० [स०] जिसका तल सम हो, ऊबड खाबड न हो। जिसकी सतह बराबर हो। हमवार। जैसे,—इस पहाड के ऊपर बहुत दूर तक समतल भूमि चली गई है।

**समता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सम या समान होने का भाव। बराबरी। तुल्यता। जैसे,—इस तरह के कामो मे कोई आपकी समता नही कर सकता। २ तटस्थता। निष्पक्षता। औदासीन्य [को०]। ३ उदारता। औदार्य [को०]। ४ अभिन्नता। एकता। ऐक्य [को०]। ५ धीरता। धैर्यशलिता। धीरत्व [को०]। ६ पूर्णत्व। पूर्णता [को०]। ७ साधारण होने का भाव। साधारण्य [को०]।

**समताई**—सज्ञा स्त्री० [स० समता+हिं० ई (प्रत्य०)] दे० 'समता'।

**समतिक्रम**—सज्ञा पुं० [स०] अतिक्रमण। उपेक्षण। उल्लघन [को०]।

**समतिक्रात¹**—वि० [स० समतिक्रान्त] १ उल्लघित। उपेक्षित। २ जो बीत गया हो। व्यतीत। बीता या गुजरा हुआ। ३ जिसने अपना वचन या वादा पूरा किया हो। जिसने प्रतिज्ञा के अनुसार चलकर उसे पूर्ण किया हो [को०]।

**समतिक्रात²**—सज्ञा पु० १ लघन। अतिक्रमण। २ त्रुटि। दोष [को०]।

**समतीत**—वि० [स०] बीता हुआ। अतीत। गत। व्यतीत [को०]।

**समतूल**—वि० [स० सम+तुल्य] समान। सदृश। तुल्य। उ०—एहि विधि उपजै लच्छि जब सुदरता सुखमूल। तदपि सकोच कवि कहहिं सीय समतूल।—मानस, १।२४७।

**समत्रय**—सज्ञा पुं० [स०] हर्रे, नागरमोथा और गुड इन तीनो के समान भागो का समूह।

**समत्रिभुज**—सज्ञा पु० [स०] वह त्रिभुज जिसके तीनो भुज समान हो।

**समत्थ**—वि० [स० समर्थ, प्रा० समत्थ] दे० 'समर्थ'। उ०—दूत रामराय को सपूत पूत वाय को, समत्थ हाथ पाय को सहाय असहाय को।—तुलसी ग्र०, पृ० २४४।

**समत्व**—सज्ञा पु० [स०] सम या समान होने का भाव। समता। तुल्यता। बराबरी।

**समत्विट्**—वि० [स० समत्विष्] चारो ओर जिसका प्रकाश एक सा हो। समान रूप से दीप्तिमान् [को०]।

**समथ, समथ्थ**—[स० समर्थ, प्रा० समत्थ] उ०—जहँ जहँ राजन काज हुअ तहँ तहँ होइ समथ्थ।—पृ० रा०, ५।१०२।

**समदत**—वि० [सं० समदन्त] जिसके दाँत समान या एक से हो [को०]।

**समद**—वि० [स०] १ गर्व से उद्धत। २ नशे मे मत्त या मतवाला। ३ प्रसन्न। हर्षित। ४ प्रेमोन्मत्त। प्रेम के नशे मे चूर [को०]।

**समदन¹**—सज्ञा पु० [स०] युद्ध। लडाई।

**समदन**ⓤ[२]—सज्ञा स्त्री० [स० समादान] भेंट। उपहार। नजर। उ०—आपन देस खा, सब औ चँदेरी लेहु। समुद जो समदन कीन्ह तोहि ते पायौ नग देहु।—जायसी (शब्द०)।

**समदना** प्र[१]—क्रि० अ० [स० समादान] प्रेमपूर्वक मिलना। भेंटना। उ०—समदि लोग पुनि चढी विवाना। जेहि दिन डरी सो आइ तुलाना।—जायसी (शब्द०)।

**समदना** ⓤ[२]—क्रि० स० १ भेंट करना। उपहार देना। नजर करना। २ विवाह करना। उ०—दुहिता समदौ सुख पाय अबै।—केशव (शब्द०)। ३ आदर सत्कार करना। उ०—सब विधि सबहि समदि नरनाहू। रहा हृदय भरि पूरि उछाहू।—मानस, १।३५४।

**समदर्शन**—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो सब मनुष्यो, स्थानो और पदार्थों को समान दृष्टि से देखता हो। सबको एक सा देखनेवाला। समदर्शी। २ समान रूप या आकृति का। एक रूप (को०)।

**समदर्शी**—सज्ञा पुं० [स० समदर्शिन्] वह जो सब मनुष्यो, स्थानो और पदार्थों आदि को समान दृष्टि से देखता हो। जो देखने मे किसी प्रकार का भेदभाव न रखता हो। सब को एक सा देखनेवाला।

**समदाना**ⓤ—क्रि० स० [हिं० समाधान] १. सौपना। रखना। जिम्मे करना। २ समाधान करना।

**समदुख** वि० [स०] १ दूसरे के दुख कष्ट को स्वय अनुभूत करनेवाला। समवेदना प्रकट करनेवाला। २ समदुखभाक्। सम दुखी। सहभोगी (को०)।

यौ०—समदुखसुख = (१) दुख और सुख का साथी। (२) जिसमे दुख और सुख समान रूप से हो।

**समदृश्**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'समदर्शी'।

**समदृष्टि**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह दृष्टि जो सब अवस्थाओ मे और सब पदार्थों को देखने के समय समान रहे। समदर्शी की दृष्टि। २ दे० 'समदर्शी'।

**समदेश**—सज्ञा पुं० [स०] चौरस मैदान। समतल क्षेत्र (को०)।

**समद्युति**—वि० [स०] समान कातिवाला (को०)।

**समद्वादशास्र**—सज्ञा पु० [स०] वह क्षेत्र आदि जिसके बारह समान भुज हो। बारह बराबर भुजाओ वाला क्षेत्र।

**समद्विद्विभुज**—सज्ञा पु० [स०] वह चतुर्भुज जिसका प्रत्येक भुज अपने सामनेवाले भुज के समान हो। वह चतुर्भुज जिसके आमने सामने के भुज बराबर हो।

**समद्विभुज**—वि० [स०] वह क्षेत्र जिसकी दोनो भुजाएँ बराबर हो।

**समधर्मा**—वि० [स० समधर्मन्] समान धर्म, प्रकृति या स्वभाव का (को०)।

**समधिक**—वि० [स०] अधिक। अतिशय। ज्यादा। बहुत।

**समधिगत**—वि० [स०] पास पहुँचा हुआ। निकट आया हुआ। प्राप्त (को०)।

**समधिगम**—सज्ञा पु० [स०] पूरी तरह समझना या अनुभव करना (को०)।

**समधिगमन**—सज्ञा पुं० [स०] आगे बढ जाना पार कर लेना। जीत जाना (को०)।

**समधियान**†—सज्ञा पु० [हिं०] दे० 'समधियाना'।

**समधियाना**—सज्ञा पु० [हिं० समधी + इयाना (प्रत्य)] वह घर जहाँ अपनी कन्या या पुत्र का विवाह हुआ हो। समधी का घर।

**समधी**—सज्ञा पु० [स० सम्बन्धी] [स्त्री० समधिन] पुत्र या पुत्री का ससुर। वह जिसकी कन्या से अपने पुत्र का अथवा जिसके पुत्र से अपनी पुत्री का विवाह हुआ हो। उ० सकल भाँति सम साज समाजू। सम समधी देखे हम आजू।—मानस, १।३२०।

**समधीत**—वि० [स०] अच्छी तरह पढा हुआ। जिसने सम्यक् रूप से अध्ययन किया हो। खूब पढा हुआ (को०)।

**समधुर**—वि० [स०] मिठास से युक्त। मिष्ट। मीठा (को०)।

**समधुरा**—सज्ञा स्त्री० [सं०] द्राक्षा। अगूर (को०)।

**समधौरा**†—सज्ञा पुं० [हिं० समधी + औरा (प्रत्य०)] विवाह की एक रीति जिसमे दोनो समधी परस्पर मिलते है।

**समध्व**—वि० [सं०] सहयात्री। जो एक साथ यात्रा करे (को०)।

**समनतर**—वि० [स० समनन्तर] ठीक बगलवाला। बिलकुल सटा हुआ। बराबरी का।

**समन**ⓤ[१]—सज्ञा पुं० [स० शमन] १ दे० 'शमन'। २ यम। उ०—मातु मृत्यु पितु समन समाना।—मानस, ३।२।

**समन**[२]—वि० दे० 'शमन'। उ०—(क) समन अमित उतपात सब भरत चरित जप जाग।—मानस, १।४१। (ख) समन पाप सताप सोक के।—मानस, १।३२।

**समन**[३]—सज्ञा स्त्री० [फा०] चमेली का पुष्प (को०)।

यौ०—समनअदाम, समनपैकर = चमेली के फूल की तरह सुकुमार शरीरवाला। समनइजार, समनखद = चमेली के फूल जैसे कपोलवाला। समनजार = चमेली का बाग। समनबू = चमेली की गधवाला। समनरू = चमेली के फूल जैसा कातिमान। समनसाक = वह सुदरी जिसकी पिंडलियाँ चमेली जैसी सफेद हो।

**समन**[४]—सज्ञा पुं० [अ०] कीमत। दाम। मूल्य (को०)।

**समन**[५]—सज्ञा पु० [अ० समन्स] न्यायालय द्वारा प्रतिवादी या गवाहो को इजलास के समुख नियत तिथि पर उपस्थित रहने के लिये भेजी गई लिखित सूचना या बुलावा। दे० 'सम्मन'। जैसे,—समन बगरज इनफिसाल मुकदमा।

**समनगा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बिजली। विद्युत्। २ सूर्य की किरण।

**समनीक**—सज्ञा पु० [सं०] युद्ध। लडाई।

यौ०—समनीक मूर्धा = युद्ध का अग्रिम मोर्चा।

समनुकीर्तन—संज्ञा पु० [सं०] अत्यंत प्रशस्ति करना। खूब प्रशंसा करना (को०)।

समनुज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इजाजत। अनुमति। २ पूर्ण सहमति या स्वीकृति (को०)।

समनुज्ञात—वि० [सं०] १ जो (जाने के लिये) आज्ञप्त हो। आज्ञाप्राप्त। २ अधिकार प्राप्त। ३ अनुगृहीत। पूरी तरह सहमत। पूर्णतः स्वीकृत।

समनुज्ञान—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'समनुज्ञा'।

समनुवर्ती—वि० [सं० समनुवर्तिन्] [वि० स्त्री० समनुवर्तिनी] आज्ञाकारी। अनुगत (को०)।

समनुव्रत—वि० [सं०] पूरी तरह अनुगत। पूर्णतः आज्ञापालन करनेवाला (को०)।

समन्मथ—वि० [सं०] कामयुक्त। कामपीडित (को०)।

समन्यु—संज्ञा पु० [सं०] शिव का एक नाम।

समन्यु[1]—वि० १ क्रोध से भरा हुआ। कोपयुक्त। २ दुःखपूर्ण। वेदनामय (को०)।

समन्वय—संज्ञा पु० [सं०] १ नियमित परंपरा या क्रमबद्धता। २ मिलन। मिलाप। संयोग। संसर्ग। संश्लेष। ३ कार्य कारण का प्रवाह या निर्वाह होना। ४ विरोध का अभाव। विरोध का न होना।

समन्वयन—संज्ञा पु० [सं०] समन्वय करने की क्रिया या भाव। मेल बैठाना। क्रमबद्ध रूप में करना।

समन्वित—वि० [सं०] १ मिला हुआ। संयुक्त। २ जिसमें कोई रुकावट न हो। ३ अनुगत (को०)। ४ सहित। युक्त। भरा हुआ (को०)। ५ प्रभावित। ग्रस्त (को०)।

समपद—संज्ञा पु० [सं०] १ धनुष चलानेवालों का एक प्रकार का खड़े होने का ढंग जिसमें वे अपने दोनों पैर बराबर रखते हैं। २ कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का रतिबंध या आसन।

समपाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'समपद'। २ नृत्य में पादन्यास की एक गति (को०)। ३ वह छंद या कविता जिसके चारों चरण समान या बराबर हों।

समप्पन(पु)—संज्ञा पु० [सं० समर्पण, प्रा० समप्पण] दे० 'समर्पण'।

समप्रभ—वि० [सं०] समान प्रभावाला। तुल्य कांतिवाला (को०)।

समबुद्धि—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसकी बुद्धि सुख और दुःख, हानि और लाभ सबमें समान रहती हो। २ वह जो निष्पक्ष या तटस्थ हो (को०)।

समभाग[1]—संज्ञा पु० [सं०] समान भाग। बराबर हिस्सा।

समभाग[2]—वि० समान भाग या अंश पानेवाला। बराबर के हिस्से का हकदार (को०)।

समभाव[1]—संज्ञा पुं० [सं०] तुल्यता। समता। समत्व।

समभाव[2]—वि० समान प्रकृति या भाववाला (को०)।

समभिद्रुत—वि० [सं०] १ ग्रस्त। बाधित। २ झपटनेवाला। किसी की ओर वेग से टूट पड़नेवाला (को०)।

समभिधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाम। आख्या।

समभिप्लुत—वि० [सं०] १ जलप्लावित। २ उपसृष्ट। ग्रस्त। अभिभूत। आक्रांत। ३ किसी वस्तु से सना या लिपटा हुआ (को०)।

समभिव्याहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ साथ साथ उल्लेख या वर्णन करना। २ सामीप्य। साथ। संगति। सहयोग। ३ ऐसे शब्द का सामीप्य, सन्निधि या संगति जिसके द्वारा किसी शब्द का अर्थ निर्धारित या सुस्पष्ट हो सके (को०)।

समभिसरण—संज्ञा पु० [सं०] १ पाने की चेष्टा या यत्न करना। प्राप्तिकाम होना। २ किसी ओर बढ़ना। पहुँचना (को०)।

समभिहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ साथ करना। एकत्रीकरण। एक साथ ग्रहण। २ बार बार होने का भाव। आवृत्ति। ३ अधिकता। ज्यादती। बहुतायत।

समभूमि—संज्ञा पु० [सं०] समतल भूमि। चौरस या हमवार जमीन (को०)।

समभ्यर्चन—संज्ञा पुं० [सं०] पूजन। समादरण (को०)।

समभ्याश—संज्ञा पुं० [सं०] सान्निध्य। सामीप्य। नैकट्य (को०)।

समभ्यास—संज्ञा पु० [सं०] नियमित रूप से करना। अभ्यसन (को०)।

समभ्याहार—संज्ञा पु० [सं०] १ समीप करना। निकट लाना। २ सामीप्य। निकटता।

सममंडल—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष में प्रधान लंब रेखा (को०)।

सममति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'समबुद्धि'।

सममय—वि० [सं०] समान मूल का। जिसका एक ही मूल हो।

सममात्र—वि० [सं०] १ समान परिमाण या नाप का। २ समान मात्राओं का। सममात्रिक (को०)।

सममिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] समान परिमाण।

समय—संज्ञा पु० [सं०] १ वक्त। काल। जैसे,—समय परिवर्तनशील है।

मुहा० —समय पर = ठीक वक्त पर।

२ अवसर। मौका। उ०—का बरषा सब कृषी सुखाने। समय चूकें पुनि का पछिताने।—मानस १।२६१। ३ अवकाश। फुरसत। जैसे,—तुम्हें इस काम के लिये थोड़ा समय निकालना चाहिए।

क्रि० प्र० —निकालना।

४ अंतिम काल। जैसे,—उनका समय आ गया था, उन्हें बचाने का सब प्रयत्न व्यर्थ गया। ५ शपथ। प्रतिज्ञा। ६ आकार। ७ सिद्धांत। ८ संविद। ९ निर्देश। १० भाषा। ११ संकेत। १२ व्यवहार। १३ संपद। १४ कर्तव्य पालन। १५ व्याख्यान। प्रचार। घोषणा। १६ उपदेश। १७ दुःख का अवसान। १८ नियम। १९ धर्म। २० संन्यासियों, वैदिकों, व्यापारियों आदि के संघों में प्रचलित नियम। (स्मृति)।

**समराख्य**—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत में एक प्रकार का ताल (को०)।

**समरागम**—संज्ञा पु० [सं०] युद्ध आरंभ होना (को०)।

**समराना**†—क्रि० स० [हिं० सँवारना]। सजाना। सँवारना। पहनाना।

**समरांजिर**—संज्ञा पु० [सं०] समरांगण। युद्धभूमि (को०)।

**समरु**पु—संज्ञा पु० [सं० स्मर] कामदेव। उ०—मकराकृति गोपाल के सोहत कुंडल कान। धरयौ मनो हिय धर समर ड्योढ़ी लसत निसान।—बिहारी र०, दो १०३।

**समरोचित**—वि० [सं०] युद्ध में प्रयुक्त करने लायक। युद्धोपयुक्त (को०)।

**समरोद्योग**—संज्ञा पुं० [सं०] लड़ाई का मैदान। युद्ध क्षेत्र।

**समरोद्यत**—वि० [सं०] युद्ध के लिये उद्यत या प्रस्तुत (को०)।

**समर्घ**—वि० [सं०] कम दाम का। सस्ता। महर्घ या महँगा का उलटा।

**समर्चक**—वि० [सं०] उपासना करनेवाला। अर्चना करनेवाला। अर्चक। पूजक (को०)।

**समर्चन**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० समर्चना] अच्छी तरह अर्चन या पूजन करना।

**समर्चना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'समर्चन'।

**समर्ण**—वि० [सं०] १ कष्टग्रस्त। पीड़ित। २ प्रार्थित। याचित (को०)।

**समर्थ**—वि० [सं०] १ जिसमें कोई काम करने का सामर्थ्य हो। कोई काम करने की योग्यता या ताकत रखनेवाला। उपयुक्त। योग्य। जैसे,—आप सब कुछ करने में समर्थ हैं। २ तगड़ा। प्रगल्भ। ३ जो अभिलषित हो। अभीष्ट। ४ युक्ति के अनुकूल। ठीक। ५ बलवान्। शक्त (को०)। ६ योग्य या उपयुक्त बनाया हुआ (को०)। ७ समान प्रयोजनवाला। समानार्थी (को०)। ८ साधक (को०)। ९ अत्यंत बलशाली (को०)। १० पास पास विद्यमान (को०)। ११ अर्थयुक्त या अर्थ द्वारा संबद्ध (को०)।

**समर्थ**[२]—संज्ञा पुं० १ हित। भलाई। २ व्याकरण में सार्थक शब्द (को०)। ३ सार्थक वाक्य में मिलाकर रखे हुए शब्दों की संहति (को०)। ४ योग्यता (को०)। ५ बोधगम्यता (को०)।

**समर्थक**[१]—वि० [सं०] जो समर्थन करता हो। समर्थन करनेवाला। २ सक्षम। योग्य (को०)।

**समर्थक**[२]—संज्ञा पुं० चंदन की लकड़ी।

**समर्थता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ समर्थ होने का भाव या धर्म। सामर्थ्य। शक्ति। ताकत। २ अर्थ आदि की समानता।

**समर्थत्व**—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'समर्थता' (को०)।

**समर्थन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ यह निश्चय करना कि अमुक बात उचित है या अनुचित। वाजिब और गैरवाजिब का फैसला करना। २ यह कहना कि अमुक बात ठीक है। किसी विषय में सहमत होना। किसी के मत का पोषण करना। जैसे,—मैं आपके इस कथन का समर्थन करता हूँ। ३ विवेचन। मीमांसा। ४. निषेध। वर्जन। मनाही। ५ संभावना। ६ उत्साह। ७ सामर्थ्य। शक्ति। ताकत। ८ विवाद की समाप्ति या अंत करना। ९ प्राप्ति (को०)। १० याचना (को०)। ११ पलायन (को०)। १२ किसी हानि या अपराध की क्षतिपूर्ति करना (को०)।

**समर्थना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी के साथ के लिए प्रयत्न करना जो अनुचित हो। न्याय विरुद्ध काम के लिये प्रयत्न। २ दे० 'समर्थन'। ३ अनुरोध। आग्रहपूर्ण (को०)।

**समर्थनीय**—वि० [सं०] १ समर्थन करने के योग्य। जिसका समर्थन किया जा सके। २ जो निश्चित या प्रमाणित करने योग्य हो (को०)।

**समर्थित**—वि० [सं०] १ जिसका समर्थन किया गया हो। समर्थन किया हुआ। २ जिसकी विवेचना हो चुकी हो। जिसपर अच्छी तरह विचार हो चुका हो। ३ जो निश्चित हो चुका हो। स्थिर किया गया। ४ प्रमाणित (को०)। ५ जो हो सकता हो। जो संभव हो। संभावित।

**समर्थ्य**—वि० [सं०] जिसका समर्थन किया जा सके। समर्थन करने योग्य।

**समर्द्धक, समर्धक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ बढ़ावा देनेवाले तेरा आदि। २ घर का उत्सव या मंगल मनानेवाला हो (को०)।

**समर्पक**—वि० [सं०] जो समर्पण करता हो। समर्पित करनेवाला।

**समर्पण**—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी को कोई चीज सम्मानपूर्वक भेंट करना। प्रतिष्ठापूर्वक देना। जैसे,—वे यह पुस्तक किसी राजा या मंत्री को समर्पण करना चाहते हैं। २ दान देना। जैसे—आत्मसमर्पण करना। ३ स्थापित करना। स्थापना। ४ नाटक में पात्रों द्वारा पारस्परिक संलाप (को०)।

**समर्पना**पु—क्रि० स० [सं० समर्पण] देना। समर्पण करना। भेंट करना। अर्पित करना।

**समर्पयिता**—वि० [सं० समर्पयितृ] भेंट करने या प्रदान करनेवाला। समर्पक (को०)।

**समर्पित**—वि० [सं०] १ जो समर्पण किया गया हो। समर्पण किया हुआ। २ जिसकी स्थापना की गई हो। स्थापित। ३ पूर्ण या भरा हुआ (को०)। ४ विजित (को०)।

**समर्प्य**—वि० [सं०] जो समर्पण किया जा सके। जो समर्पण करने के योग्य हो।

**समर्यादि**[१]—वि० [सं०] १ निकट। पास। करीब। २ जिसकी चाल चलन अच्छी हो। अच्छे चरित्रवाला। ३ जो सीमा या मर्यादा में हो। ४ समानपुरुष। मित्र (को०)।

**समर्यादि**[२]—संज्ञा पु० सीमित। परिमित। २ पैरदूर। सामीप्य (को०)।

**समर्यादि**[३]—अव्य० निश्चित रूप से (को०)।

**समर्हण**—संज्ञा पुं० [सं०] १ आदर। सम्मान। २ भेंट। उपहार (को०)।

**समलंकृत**—वि० [सं० समलङ्कृत] भलीभाँति अलंकृत। अच्छी तरह सज्जित। सुसज्जित (को०)।

**समविषम**—वि० [स०] १ नतोन्नत। ऊबडखाबड। जैसे,—भूमि। २ सतुलित असतुलित। उचित अनुचित। जैसे,—आहार-विहार।

**समवीर्य**—वि० [स०] समान शक्ति का। तुल्यबल।

**समवृत्त**—सज्ञा पुं० [स०] १ वह छद जिसके चारो चरण समान हो। २ वह वृत्त, घेरा या गोलाई जो समान हो।

**समवृत्ति**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] मन स्थैर्य। धीरता।

**समवृत्ति**[2]—वि० समान वृत्तिवाला। धीर। स्थिर।

**समवेक्षण**—सज्ञा पु० [स०] निरीक्षण।

**समवेक्षित**—वि० [स०] ठीक तरह से देखा परखा हुआ। सुविचारित [को०]।

**समवेत**[1]—वि० [स०] १ एक मे मिला या इकट्ठा किया हुआ। एकत्र। २ जमा किया हुआ। सचित। ३. किसी के साथ एक श्रेणी मे आया हुआ। ४ जो किसी के साथ नित्य सबध द्वारा सबद्ध हो। नित्य सबध से बँधा हुआ।

**समवेत**[1]—सज्ञा पु० १ सबध। लगाव। ताल्लुक। २ दे० 'सभूयकारी'-२।

**समव्यूह**—सज्ञा पुं० [स०] वह सेना जिसमे २२५ सवार, ६७५ सिपाही तथा इतने ही घोडे और रथ आदि के पादरक्षक हो।

**समशकु**—सज्ञा पु० [स० समशङ्कु] वह समय जब कि सूर्य ठीक सिर पर आते हो। ठीक दोपहर का समय। मध्याह्न।

**समशशी**—सज्ञा पु० [स० समशशिन्] समान कोण या शृगवाला चद्रमा।

**समशीतोष्ण**—वि० [स०] जहाँ न तो बहुत गर्मी हो और न शीत। मात दिल [को०]।

**समशीतोष्ण कटिबध**—सज्ञा पु० [स० समशीतोष्ण कटिबन्ध] पृथ्वी के वे भाग जो उष्ण कटिबध के उत्तर मे कर्क रेखा से उत्तर वृत्त तक और दक्षिण मे मकर रेखा से दक्षिण वृत्त तक पडते हैं।

विशेष—पृथ्वी के इन भूभागो मे न तो बहुत अधिक सरदी पडती है और न बहुत अधिक गरमी, दोनो प्राय समान भाव मे रहती है।

**समश्रुति**—वि० [स०] जिसकी श्रुति या विराम समान हो। सगीत मे मे समान श्रुतियुक्त [को०]।

**समश्रेणि**—सज्ञा स्त्री० [स०] समान श्रेणि या पक्ति। वह पक्ति या रेखा जो सीधी हो [को०]।

**समष्टि**—सज्ञा स्त्री० [स०] सब का समूह। कुल एक साथ। व्यष्टि का उलटा या विलोम। जैसे,—आप सब लोगो की अलग अलग बात जानें दे, समष्टि का विचार करे। २ सयुक्त अधिकार। समान अधिकार। सत्ता जो समवेत या सयुक्त हो। ३ सामूहिक होने का भाव। सपूर्णता।

**समष्ठल**—सज्ञा पु० [स०] १ कोकुआ नाम का कँटीला पौधा जो प्राय पश्चिम मे नदियो के किनारे होता है।

विशेष—वैद्यक मे इसे कटु, उष्ण, रुचिर, दीपन और कफ तथा वात का नाशक माना है।

२ गँठीर या गिडनी नाम का साग।

**समष्ठिना**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ समष्ठिल। कोकुआ। २ जमीकद। सूरन। ३ गिडनी या गँठीर नाम का साग।

**समष्ठीला**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'समष्ठिना'।

**समसख्यात**—वि० [स० समसङ्ख्यात] जिसकी सख्या समान या बराबर हो।

**समसधि**—सज्ञा स्त्री० [स० समसन्धि] १ कौटिल्य के अनुसार वह सधि जिसमे सधि करनेवाला राजा या राष्ट्र अपनी पूरी शक्ति के साथ सहायता करने को तैयार हो। २ समानता के स्तर पर होनेवाली सधि या समझौता [को०]।

**समसस्थान**—सज्ञा पुं० [सं०] योग के अनुसार आसन का एक प्रकार [को०]।

**समसन**—सज्ञा पु० [स०] १ इकट्ठा करने का काम। जोडना। मिलाना सघटित करना। २ छोटा या सक्षिप्त करना। ३ व्याकरण के अनुसार समास करना। समास के रूप मे ले आना [को०]।

**समसमयवर्ती**—वि० [स० समसमयवर्तिन्] जो एक साथ हो। साथ साथ या युगपत् होनेवाला।

**समसरि**[1]—सज्ञा स्त्री० [स० समसर या सरि, हिं० सरि?] बराबरी। तुलना। समानता। उ०—दुहुन देह कछु दिन अरु मोकौं तब करिहौ सो समसरि आई।—सूर०, १०।६६८।

**समसरि**[2]—वि० बराबर। समान। उ०—सहस सकट सरि कमल चलाए। अपनी समसरि और गोप जे तिनकौ साथ पठाए। —सूर०, १०।७८३।

**समसान**—सज्ञा पु० [स० श्मशान] श्मसान [को०]।

**समसामयिक**—वि० [स०] एक ही समय मे होनेवाला। समकालिक (अ० कंटेंपोररी)।

**समसूत्र, समसूत्रस्थ**—वि० [स०] एक ही व्याख्या मे अवस्थित [को०]।

**समसिद्धात**—वि० [स० समसिद्धान्त] जिसका लक्ष्य एक हो। समान सिद्धात को लेकर चलनेवाला।

**समसुप्ति**—सज्ञा स्त्री० [स०] कल्पात मे होनेवाली विश्व की निद्रा। प्रलय [को०]।

**समसेर**—सज्ञा स्त्री० [फा० शमशेर] तलवार। कृपाण।

**समस्त**—वि० [स०] १ सब। कुल। समग्र। जैसे,—(क) उन्हे समस्त रामायण कठ है। (ख) इस समय समस्त देश मे एक नए प्रकार की जागृति हो रही है। २ एक मे मिलाया हुआ। सयुक्त। ३ जो समास द्वारा मिलाया गया हो। समासयुक्त। ४ जो थोडे मे किया गया हो। जो सक्षेप मे हो। सक्षिप्त। ५ जो समग्र मे व्याप्त हो [को०]। ६ समिश्रित [को०]।

**समस्तधाता**—सज्ञा पुं० [स० समस्तधातृ] वह जो सबका धारण-पोषण करनेवाला हो। विष्णु।

**समस्थ**—वि० [स०] १ बराबर। समान। २ समतल। ३ अनुरूप। ४ जो फलने फूलने की या समृद्ध स्थिति मे हो [को०]।

**समस्थल**—सज्ञा पु० [स०] समतल भूमि [को०]।

**समस्थली**—सज्ञा स्त्री० [स०] गगा और यमुना के बीच का देश। गगा यमुना का दोआवा। अतर्वेद।

**समस्थान**—सज्ञा पु० [स०] योग की एक विशेष मुद्रा जिसमे दोनो पैर सटा लिए जाते है।

**समस्य**—वि० [स०] १ जो समास करने योग्य हो। छोटा या सक्षिप्त करने लायक। २ (श्लोक आदि) जिसके पद या चरण पूर्ण करने योग्य हो। पूरणीय [को०]।

**समस्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सवटन। २ मिलाने की क्रिया। मिश्रण। ३ किसी श्लोक या छद आदि का वह अतिम पद या टुकडा जो पूरा श्लोक या छद बनाने के लिये तैयार करके दूसरो को दिया जाता है और जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छद बनाया जाता है।

क्रि० प्र०—देना।—पूर्ति करना।

४. कठिन अवसर या प्रसग। कठिनाई। जैसे,—इस समय तो उनके सामने कन्या के विवाह की एक बडी समस्या उपस्थित है।

**समस्यापूर्त्ति**—सज्ञा स्त्री० [स०] किसी समस्या के आधार पर कोई छद या श्लोक आदि बनाना।

**समह्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] ख्याति। प्रसिद्धि [को०]।

**समाघ्रिक**—वि० [स० समाघ्रिक] अपने पैरो पर सम भाव से खडा रहनेवाला [को०]।

**समाजन**—सज्ञा पु० [स० समाञ्जन] सुश्रुत के अनुसार आँखो मे लगाने का एक प्रकार का अजन जो कई ओषधियो के योग से बनता है।

**समात**—सज्ञा पु० [स० समान्त] १ प्रतिवेशी। वह जो पडोसी हो। २ साल का अत या समाप्ति [को०]।

**समातक**—सज्ञा पु० [स० समान्तक] कामदेव।

**समातर**—वि० [स० समान्तर] समानातर। समान अतरवाला [को०]।

**समाश**—सज्ञा पु० [स०] सम या बराबर का हिस्सा।

**समाशक**—वि० [स०] बराबर का हिस्सेदार। समान भाग का हकदार [को०]।

**समाशिक**—वि० [स०] दे० 'समाशक'।

**समाशी**—वि० [स० समाशिन्] बराबरी का। समान अशवाला [को०]।

**समास**—वि० [स०] १ जिसमे मास हो। मासयुक्त। २ पुष्ट। भरा हुआ। मासल [को०]।

**समासमीना**—सज्ञा स्त्री० [स०] वह गौ जो हर साल बछडा ब्याती हो [को०]।

**समाँ**[1]—सज्ञा पु० [स० समय] समय। वक्त।

मुहा०—समाँ बँधना = (सगीत आदि कार्यो का) इतनी उत्तमता से होना कि सब लोग स्तब्ध हो जायँ। समाँ बाँधना = (सगीत आदि मे) रग जमाना या श्रोताओ पर प्रभाव डालना। २ मौसिम। ऋतु। ३ बहार। आनद। ४ चमक दमक। सजधज।

**समाँ**[2]—सज्ञा पु० [अ०] नजारा। दृश्य [को०]।

**समा**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वर्ष। साल।

**समा**[2]—सज्ञा पु० [स० समय] दे० 'समाँ'।

**समा**[3]—सज्ञा पु० [अ०] अबर। आकाश। गगन [को०]।

**समाअ**—सज्ञा पु० [अ० समाअ] १ सगीत के स्वरो की तन्मयता मे झूमना। २ सगीत श्रवण। गान सुनना [को०]।

**समाअत**—सज्ञा स्त्री० [अ० समाअत] १ श्रवण करना। सुनना। कान देना। २ सुनने की शक्ति। ३ मुकदमे की सुनवाई या विचार [को०]।

**समाई**[1]—सज्ञा स्त्री० [हिं० समाना (=अँटना)] १ सामर्थ्य। शक्ति। बूता। समर्थता। २ समाने की क्रिया या भाव।

**समाई**[2]—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ सुनी हुई बात। श्रुति पर आधारित बात। २. सामान्य लोगो द्वारा बोलने मे सुना गया वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति व्याकरण के नियमो से सिद्ध न हो [को०]।

**समाउ**Ⓤ—सज्ञा पु० [हिं० समाना] १ दे० 'समाई'[1]। २ निर्वाह। समाव। अटने की जगह। गुजाइश।

**समाकरण**—सज्ञा पु० [स०] आह्वान करना। बुलाना [को०]।

**समाकर्णितक**—सज्ञा पु० [स०] वह आह्वान, सकेत या इशारा जो अपनी ओर ध्यान आकर्षित करे।

**समाकर्ष**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'समाकर्षण' [को०]।

**समाकर्षण**—सज्ञा पु० [स०] [वि० समाकृष्ट] अपनी ओर खीचना या आकृष्ट करना [को०]।

**समाकर्षिणी**—सज्ञा स्त्री० [स०] बहुत दूर तक फैलनेवाली गध [को०]।

**समाकर्षी**—वि० [स० समाकर्षिन्] [स्त्री० समाकर्षिणी] १ खीचनेवाला। जो अपनी ओर आकृष्ट करे। २ दूर तक सुगध फैलानेवाला या प्रसार करनेवाला। जैसे,—समाकर्षी पुष्प या समाकर्षी गध [को०]।

**समाकर्षी**[1]—सज्ञा पु० [स०] प्रसरणशील सुगध। दूर तक फैलनेवाली सुगध [को०]।

**समाकार**—वि० [स०] एक समान आकारवाला [को०]।

**समाकुचन**—सज्ञा पु० [स० समाकुञ्चन] सिकोडना। सीमित करना।

**समाकुचित**—वि० [स० समाकुञ्चित] १ सीमित। २ समाप्त किया हुआ। जैसे,—समाकुचित वक्तव्य या भाषण [को०]।

**समाकुल**—वि० [स०] १ जिसको अवकाश ठिकाना न हो। बहुत अधिक घबराया हुआ। २ भरा हुआ। पूर्ण। आकीर्ण। भीडभाड से युक्त (को०)।

**समाकृष्ट**—वि० [स०] १ पास खीचा हुआ। निकट लाया हुआ। २ पूर्णत आकृष्ट। खीचा हुआ [को०]।

**समाक्रमण**—सज्ञा पु० [स०] १ कुचलना। रौदना। २ कदम रखना। डग भरना। ३ आक्रमण। धावा। हमला। चढाई [को०]।

**समाक्रात**—वि० [स० समाक्रान्त] १ कुचला हुआ। रौदा हुआ। २. जिसपर आक्रमण हुआ हो। आक्रात। ३ पालन किया हुआ हो। आक्रात पूरा किया हुआ [को०]।

**समाक्षिक**—वि० [स०] मधु या शहद से युक्त। शहद के साथ (को०)।

**समाख्या**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ ख्याति। यश। कीर्ति। २ उपाधि। संज्ञा। नाम। ३ विश्लेषण। स्पष्टीकरण। व्याख्या (को०)।

**समाख्यात**—वि० [स०] १ जो प्रसिद्ध या ख्यात हो। २ अच्छी तरह जिसका वर्णन या विवेचन किया गया हो। ३ जिसे गिन लिया गया हो। ४ अभिहित। घोषित (को०)।

**समाख्यान**—संज्ञा पु० [स०] १ नाम लेना। उल्लेख करना। २ विवरण। व्याख्या। ३ आख्या। नाम (को०)।

**समागत**[1]—वि० [स०] १ जिसका आगमन हुआ हो। आगत। आया हुआ। जैसे,—उन्होंने समस्त समागत सज्जनों की यथेष्ट अभ्यर्थना की। २ प्रत्यावर्तित। वापस आया हुआ (को०)। ३ जो संयुक्त स्थिति में हो (को०)। ४ मिला हुआ। संमिलित (को०)।

**समागत**[2]—संज्ञा पु० गोष्ठी। समिति। समूह। दल (को०)।

**समागता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रहेलिका का एक भेद (को०)।

विशेष—इसमें पहेली का अर्थ शब्दों की संधि में छिपा होता है।

**समागति**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ संयोग। मिलन। एकत्र होना। २ पहुँचना। उपगमन। ३ समान दशा या गति (को०)।

**समागम**—संज्ञा पुं० [स०] १ आगमन। आना। जैसे,—इस बार यहाँ बहुत से विद्वानों का समागम होगा। २ मिलना। मिलन। भेंट। जैसे,—इसी बहाने आज सब लोगों का समागम हो गया। ३ स्त्री के साथ संभोग करना। मैथुन। ४ (ग्रहों का) योग। ५ संघ। समूह (को०)।

यौ०—समागम क्षण = समागम काल। समागम प्रार्थना = समागम की इच्छा। समागम मनोरथ = मिलन की इच्छा।

**समागमकारी**—वि० [स० समागमकारिन्] जो मिलाने या समागम कराने में सहायक हो (को०)।

**समागमन**—संज्ञा पु० [सं०] १ समागम की क्रिया या भाव। मिलने की स्थिति। २ आगमन। आना। ३ संभोग। मैथुन (को०)।

**समागमी**—वि० [स० समागमिन्] १ मिलने या समागम करनेवाला। २ आसन्न या उपस्थित भविष्य (को०)।

**समागलित**—वि० [स०] जो गिरा हुआ हो। च्युत। पतित (को०)।

**समागाढ**—वि० [स० समागाढ] प्रगाढ। सुदृढ़।

**समाघात**—संज्ञा पु० [स०] १ युद्ध। लड़ाई। २ जान से मार डालना। हत्या। वध (को०)।

**समाघ्राण**—संज्ञा पु० [स०] सूँघने की क्रिया। खूब अच्छी तरह से सूँघना (को०)।

**समाघ्रात**—वि० [स०] खूब सूँघा हुआ। जिसे अच्छी तरह सूँघा गया हो। अनाघ्रात का उलटा (को०)।

**समाचक्षण**—संज्ञा पु० [स०] १ ठीक ढंग से कहना। अच्छी तरह कहना। २ विवृत करना या विवरण उपस्थित करना (को०)।

**समाचयन**—संज्ञा पु० [स०] संग्रहण। चयन की क्रिया (को०)।

**समाचरण**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सम्यक् आचरण। २ पूरा करना। पूरा करना। ३ सेवन करना। व्यवहार में लाना। अमल करना।

**समाचरित**—वि० [सं०] जिसका अच्छी तरह व्यवहार या सेवन किया गया हो। सम्यक् रूप से आचरित (को०)।

**समाचार**—संज्ञा पु० [स०] १ संवाद। खबर। हाल। जैसे,—क्या नया समाचार है। उ०—समाचार तेहि समय मुनि सीय उठी अकुलाइ।—मानस २।५७।

यौ०—समाचारपत्र। समाचार प्रसारण = रेडियो या समाचारपत्रों द्वारा खबर फैलाना। खबर प्रसारित करना। समाचार बुलेटिन = खबर की छोटी विवरणिका, सूचना या इश्तहार।

२ शिष्टाचार। अच्छा व्यवहार (को०)। ३ रीति। प्रथा (को०)। ४ गति। आगे बढ़ना (को०)। ५ आचरण। व्यवहार (को०)।

**समाचारपत्र**—संज्ञा पुं० [सं० समाचार + पत्र] वह पत्र जिसमें सब देशों के अनेक प्रकार के समाचार रहते हों। खबर का कागज। अखबार।

**समाचीर्ण**—वि० [स०] १ जिसे पूरा कर लिया गया हो। २ व्यवहार में लाया हुआ (को०)।

**समाचेष्टित**[1]—वि० [स०] १ जिसके लिये प्रयत्न किया जा चुका हो। २ जो व्यवहार में लाया गया हो (को०)।

**समाचेष्टित**[2]—संज्ञा पु० १ व्यवहार। आचरण। चरित्र। २ अंग-संचालन का ढंग। भंगिमा (को०)।

**समाज**—संज्ञा पुं० [स०] १ समूह। संघ। गरोह। दल। २ सभा। ३ हाथी। ४ एक ही स्थान पर रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय आदि करनेवाले वे लोग जो मिलकर अपना एक अलग समूह बनाते हैं। समुदाय। जैसे,—शिक्षित समाज, ब्राह्मण समाज। ५ वह संस्था जो बहुत से लोगों ने एक साथ मिलकर किसी विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिये स्थापित की हो। सभा। जैसे,—संगीत समाज, साहित्य समाज। ६ प्राचुर्य। समुच्चय। संग्रह (को०)। ७ एक प्रकार का ग्रहयोग। ८ मिलना। एकत्र होना (को०)।

**समाजत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] खुशामद। अनुनय। विनय (को०)।

**समाजवाद**—संज्ञा पुं० [स० समाज + वाद] एक राजनीतिक सिद्धांत।

विशेष—यह शब्द अंग्रेजी 'सोशलिज्म' का हिंदी रूप है। इस सिद्धांत के अनुसार उत्पादन और उसके समान वितरण पर पूरे समाज का अधिकार स्वीकार किया जाता है।

**समाजवादी**—वि० [स० समाज + वादिन्] समाजवाद के सिद्धांत का अनुगमन करनेवाला।

**समाजशास्त्र**—संज्ञा पुं० [स० समाज + शास्त्र] वह शास्त्र जो मानव समाज का उसे सामाजिक प्राणी मानकर अध्ययन-विवेचन करता है।

**समाजशास्त्री**—वि० [स० समाज + शास्त्रिन्] समाजशास्त्र का पंडित।

**समाज सन्निवेशन**—सज्ञा पुं० [स०] समाज या जनसमूह के बैठने के उपयुक्त स्थान ।

**समाजसेवक**—वि० [स० समाज + सेवक] समाज की सेवा करनेवाला ।

**समाजसेवा**—सज्ञा स्त्री० [स० समाज + सेवा] वह सेवा जो सामाजिक हित की दृष्टि से की जाय ।

**समाजसेवी**—सज्ञा पु० [स० समाजसेविन्] दे० 'समाजसेवक' ।

**समाजिक**—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'सामाजिक' [को०] ।

**समाजी**—सज्ञा पुं० [हि० समाज + ई (प्रत्य०)] १. वह व्यक्ति जो वेश्याओं के यहाँ तबला, सारगी आदि बजाता है । सपरदाई । २ किसी समाज का अनुयायी (विशेषत आर्यसमाज का) । जैसे—आर्य-समाजी । ३ वह व्यक्ति जो सामाजिक हो ।

**समाज्ञप्त**—वि० [स०] जिसे आदेश दिया गया हो [को०] ।

**समाज्ञा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ यश । कीर्ति । बडाई । २ आख्या । सज्ञा । नाम [को०] ।

**समाज्ञात**—वि० [स०] १ भली भाँति जाना हुआ । पूर्णत ज्ञात । २ मान्य । माना हुआ ।

**समातत**—वि० [स०] १ जिसका सिलसिला टूटा न हो । लगातार क्रमवाला । २ जिसे फैला दिया गया हो । पूर्णत विस्तारित । ३ आकृष्ट । खीचा या ताना हुआ । जसे—धनुष [को०] ।

**समाता**—सज्ञा स्त्री० [स० समातृ] १ वह जो माता के समान हो । २ माता की विपत्नी । विमाता । सौतेली माँ ।

**समातीत**—वि० [स०] एक वर्ष से अधिक आयु का । जो एक वर्ष पूरा कर चुका हो [को०] ।

**समातृक**—वि० [स०] मातासहित । माता के साथ । मातृयुक्त [को०] ।

**समादत्त**—वि० [स०] प्राप्त । गृहीत । जिसे ले लिया गया हो [को०] ।

**समादर**—सज्ञा पुं० [सं०] आदर । समान । खातिर ।

**समादरणीय**—वि० [स०] समादार करने के योग्य । आदर सत्कार करने के लायक ।

**समादान¹**—सज्ञा पु० [स०] १ बौद्धो का सौगतात्मिक नामक नित्य कर्म । २ ग्रहण किए हुए व्रतो या आचारो की उपेक्षा (जैन) । ३ पूर्णत स्वीकार या ग्रहण [को०] । ४ उचित दान स्वीकार करना । उपयुक्त उपहार लेना [को०] । ५ निश्चय । सकल्प [को०] । ६ प्रारभ । आरभ [को०] ।

**समादान²**—सज्ञा पु० [फा० शमादान] दे० 'शमादान' ।

**समादापक**—वि० [स०] उत्तेजक । विक्षोभक [को०] ।

**समादापन**—सज्ञा पुं० [स०] उकसावा । बढावा । उत्तेजन [को०] ।

**समादिष्ट**—वि० [स०] आदिष्ट । आज्ञप्त । निर्दिष्ट [को०] ।

**समादृत**—वि० [सं०] जिसका अच्छी तरह आदर हुआ हो । समानित ।

**समादेय**—वि० [सं०] १ आदर या प्रतिष्ठा करने योग्य । २ स्वागत या अभ्यर्थना करने योग्य । ३ ग्रहण या स्वीकरण योग्य [को०] ।

**समादेश**—सज्ञा पुं० [सं०] आज्ञा । आदेश । हुक्म ।

यौ०—समादेश याचिका = (राजाज्ञा प्राप्त करने के लिये) प्रार्थना पत्र (अ० रिट अप्लिकेशन) ।

**समाधा**—सज्ञा पुं० [स०] १ निराकरण । निपटारा । २ विरोध करना । ३ सिद्धात । ४ दे० 'समाधान' ।

**समाधान**—सज्ञा पुं० [स०, [वि० समाधानीय] १ चित्त को सब ओर से हटाकर ब्रह्म की ओर लगाना । मन को एकाग्र करके ब्रह्म मे लगाना । समाधि । प्रणिधान । २ किसी के शका या प्रश्न करने पर दिया जानेवाला वह उत्तर जिससे जिज्ञासु या प्रश्न-कर्ता का सतोष हो जाय । किसी के मन का सदेह दूर करने-वाली बात । ३ इस प्रकार कोई बात कहकर किसी को सतुष्ट करने की क्रिया । ४ किसी प्रकार का विरोध दूर करना । ५ निष्पत्ति । निराकरण । ६ नियम । ७ तपस्या । ८ अनुसधान । अन्वेषण । ९ ध्यान । १० मत की पुष्टि । सहमति । समर्थन । ११ मिलाना । मेल बैठाना । साथ रखना [को०] । १२ उत्सुकता । औत्सुक्य [को०] । १३ मन की स्थिरता । मनःस्थैर्य [को०] । १४ नाटक की मुखसधि के उपक्षेप, परिकर आदि १२ अगो मे से एक अग । बीज को ऐसे रूप मे पुन प्रदर्शित करना जिससे नायक अथवा नायिका का अभिमत प्रतीत हो ।

**समाधानना**Ⓢ—क्रि० स० [स० समाधान + हि० ना (प्रत्य०)] समाधान करना । सतोष देना । सात्वना प्रदान करना ।

**समाधि¹**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ समर्थन । २ नियम । ३ ग्रहण करना । अगीकार । ४ ध्यान । ५ आरोप । ६ प्रतिज्ञा । ७ प्रतिशोध । बदला । ८ विवाद का अत करना । झगडा मिटाना । ९. कोई असभव या असाध्य कार्य करने के लिये उद्योग करना । कठिनाइयो मे धैर्य के साथ उद्योग करना । १० चुप रहना । मौन । ११ निद्रा । नींद । १२ योग । १३ योग का चरम फल, जो योग के आठ अगो मे से अतिम अग है और जिसकी प्राप्ति सबके अत मे होती है ।

विशेष—इस अवस्था मे मनुष्य सब प्रकार के क्लेशो से मुक्त हो जाता है, चित्त की सब वृत्तियाँ नष्ट हो जाती है, बाह्य जगत् से उसका कोई सबध नहीं रहता उसे अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त हो जाती है और अत मे कैवल्य की प्राप्ति होती है । योग दर्शन मे इस समाधि के चार भेद बतलाए है—सप्रज्ञात समाधि, सवितर्क समाधि, सविचार समाधि और सानद समाधि । समाधि की अवस्था मे लोग प्राय पद्मासन लगाकर और आँखे बद करके बैठते है, उनके शरीर मे किसी प्रकार की गति नहीं होती, और ब्रह्म मे उनका अवस्थान हो जाता है । विशेष दे० 'योग' ३९ और ३८ ।

क्रि० प्र०—लगना ।—लगाना ।

१४ किसी मृत व्यक्ति की अस्थियों या शव जमीन मे गाडना ।

क्रि० प्र०—देना ।

१५ वह स्थान जहा इस प्रकार शव या अस्थियाँ आदि गाडी गई हो । छतरी । १६ काव्य का एक गुण जिसके द्वारा दो घटनाओं का दैवसयोग से एक ही समय मे होना प्रकट होता है और जिसमे एक ही क्रिया का दोनो कर्त्ताओं के साथ अन्वय

होता है। १७ एक प्रकार का अर्थालंकार जो उस समय माना जाता है जब किसी आकस्मिक कारण से कोई काम बहुत ही सुगमतापूर्वक हो जाता है। उ०—(क) हरि प्रेरित तेहि अवसर चले पवन उनचास। (ख) मीत मरन अबरोध हित सोचत कछू उपाय। तब ही आकसमात ते उठी घटा घहराय। १८ साथ मिलाना या करना (को०)। १९ गरदन का जोड़ या उसकी एक विशेष अवस्था (को०)। २० दुर्भिक्ष के समय अनाज बचाकर रखना। अन्न संचय (को०)। २१ तपस्या (को०)। २२ पूर्ति। संपन्नता (को०)। २३ प्रतिदान (को०)। २४ सहारा। आश्रय (को०)। २५ इंद्रियनिरोध (को०)। २६ सत्रहवाँ कल्प (को०)।

यौ०—समाधिनिष्ठ = समाधिस्थ। समाधिभंग = समाधि टूटना। समाधिमग्न = समाधि में लीन। समाधिभेद = (१) समाधि के चार भेद। (२) समाधि भंग होना।

**समाधि[२]**—संज्ञा स्त्री० [सं० समाधित या समाधान] दे० 'समाधान'। (क्व०)। उ०—ब्याधि भूत ननित उपाधि काहू खल की समाधि कीजै तुलसी को जानि जन फुर कै।—तुलसी (शब्द०)।

**समाधिक्षेत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ योगियों आदि के मृत शरीर गाड़े जाते हैं। २ साधारण मुरदे गाड़ने की जगह। कब्रिस्तान।

**समाधिगर्भ**—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

**समाधित**—वि० [सं०] १ जिसने समाधि लगाई हो। समाधि अवस्था को प्राप्त। २ तुष्ट या प्रसन्न किया हुआ (को०)।

**समाधित्व**—संज्ञा पुं० [सं०] समाधि का भाव या धर्म।

**समाधिदशा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दशा जब योगी समाधि में स्थित होता है और परमात्मा में प्रेमबद्ध होकर निमग्न और तन्मय होता है तथा अपने आप को भूलकर चारों ओर ब्रह्म ही ब्रह्म देखता है।

**समाधिमत्**—वि० [सं०] दे० 'समाधी' (को०)।

**समाधिमोक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] पुरानी संधि तोड़ना। समझौता तोड़ना। संधिभंग। (कौटि०)।

विशेष—चाणक्य ने इसके अनेक नियम दिए हैं। संधि के समय किसी पक्ष को दूसरे पक्ष से जो वस्तुएँ मिली हों, उन्हें किस प्रकार लौटाना चाहिए, किस प्रकार सूचना देनी चाहिए आदि बातों का उसने पूर्ण वर्णन किया है।

**समाधियोग**—संज्ञा पुं० [सं०] १ समाधियुक्त होना। २ ध्यान या विचार का प्रभाव या गुणवत्ता (को०)।

**समधिविग्रह**—संज्ञा पुं० [सं०] ध्यान की प्रतिमूर्ति (को०)।

**समाधिशिला**—संज्ञा स्त्री० [सं० समाधि + शिला] किसी की समाधि पर लगाई जानेवाली वह शिला जिसपर समाधिस्थ व्यक्ति का नाम, जन्म और मृत्युतिथि अंकित हो।

**समाधिसमानता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों के अनुसार ध्यान का एक भेद।

**समाधिस्थ**—वि० [सं०] जो समाधि में स्थित हो। जो समाधि लगाए हुए हो।

**समाधिस्थान**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समाधिक्षेत्र'।

**समाधी**—वि० [सं० समाधिन्] १ समाधिस्थ। जो समाधि में हो। २ धर्मनिष्ठ। धार्मिक। उपासक (को०)।

**समाधूत**—वि० [सं०] जिसे दूर या तितर बितर कर दिया गया हो। भगाया हुआ (को०)।

**समाधेय**—वि० [सं०] १ समाधान करने के योग्य। जिसका समाधान हो सके। २ निर्देश योग्य। जिसे निर्देश किया जा सके (को०)। ३ अंगीकार योग्य। स्वीकरणीय (को०)। ४ जो क्रम-युक्त या व्यवस्थित किया जा सके (को०)।

**समाध्मात**—वि० [सं०] १ फूला हुआ। जैसे,—समाध्मात उदर। २ गर्वयुक्त। फूला हुआ। ३ फुलाया हुआ। जिसमें हवा भर दी गई हो (को०)।

**समान[१]**—वि० [सं०] जो रूप, गुण, मान, मूल्य, महत्व आदि में एक से हों। जिनमें परस्पर कोई अंतर न हो। सम। बराबर। सदृश। तुल्य। एकरूप। जैसे,—वे दोनों समान विद्वान् हैं, उनमें कोई अंतर नहीं है।

महा०—एक समान = एक सा। एक जैसा।

यौ०—समान वर्ण = ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण एक ही स्थान से होता हो। जैसे,—क, ख, ग, घ समान वर्ण हैं।

२ सामान्य। साधारण (को०)। ३. मध्यवर्ती। उभयनिष्ठ। बीच का (को०)। ४ क्रोधी। कोपाविष्ट। क्रोधयुक्त (को०)। ५ सज्जन। भला (को०)। ६ समादरणीय। समादृत। सम्मानित (को०)। ७ साकल्य। समग्रता। समाम। जैसे, सत्या का (को०)।

**समान[२]**—संज्ञा पुं० १ सत्। २ शरीर के अंतर्गत पाँच वायुओं में से एक वायु जिसका स्थान नाभि माना गया है। ३ मित्र। साथी (को०)। ४ व्याकरण के अनुसार एक ही स्थान से उच्चरित होनेवाले वर्ण (को०)।

**समानकरण**—वि० [सं०] (स्वर) जिनका करण या उच्चारण स्थान एक हो (को०)।

**समानकर्तृक**—वि० [सं०] एक कर्तृक। (वाक्य आदि) जिनका कर्ता एक ही हो (को०)।

**समानकर्म**—संज्ञा पुं० [सं० समानकर्मन्] १ वे जो एक ही तरह का काम करते हों। एक ही तरह का व्यवसाय या कार्य करनेवाले। हमपेशा। २ समान काम। एक ही काम (को०)। ३ वे वाक्य जिनके कर्म कारक समान या एक ही हों।

**समानकर्मक**—वि० [सं०] १ व्याकरण में एक ही कर्मवाला। २ समान कर्म करनेवाला (को०)।

**समानकाल, समानकालीन**—संज्ञा पुं० [सं०] वे जो एक ही समय में उत्पन्न हुए या अवस्थित रहे हों। समकालीन।

**समानक्षेत्र**—वि० [सं०] समान क्षेत्रवाला। आपस में एक दूसरे को संतुलित करनेवाला (को०)।

समानगति—वि० [स०] एकमत, एक राय होनेवाले [को०]।

समानगोत्र—संज्ञा पुं० [स०] वे जो एक ही गोत्र मे उत्पन्न हुए हों। सगोत्र।

समानग्रामीय—वि० [स०] एक ही गाँव मे निवास करनेवाले [को०]।

समानजन्मा—संज्ञा पुं० [स० समानजन्मन्] १ वे जो प्राय एक साथ ही, अथवा एक ही समय मे उत्पन्न हुए हों। जो अवस्था या उम्र मे बराबर हों। समवयस्क। २ वे जिनका उत्पत्ति-स्थान एक हो [को०]।

समानतंत्र—संज्ञा पु० [स० समानतन्त्र] १ वे जो एक ही काम करते हों। समान कर्म। हमपेशा। २ वे जो वेद की किसी एक ही शाखा का अध्ययन करते हों और उसी के अनुसार यज्ञ आदि कर्म करते हों।

समानता—संज्ञा स्त्री० [स०] समान होने का भाव। तुल्यता। बराबरी। जैसे,—इन दोनो मे बहुत कुछ समानता देखने मे आती है।

समानतेजा—वि० [स० समानतेजस्] समान दीप्ति या कीर्तिवाले। जिनकी कांति या कीर्ति समान हो [को०]।

समानतोऽर्थापद—संज्ञा पुं० [स०] कौटिल्य के अनुसार एक ही साथ चारो ओर अर्थ सिद्धि।

समानत्व—संज्ञा पुं० [स०] समान होने का भाव। समानता। तुल्यता। बराबरी।

समानदुःख—वि० [स०] समान कष्ट या या दुःखवाला। समान वेदना-युक्त। समवेदना व्यक्त करनेवाला [को०]।

समदेवत, समदैवत्य—वि० [स०] जो एक ही या समान देवता सबधी हो [को०]।

समानधर्मा—वि० [सं०] समान गुण, धर्म, प्रकृतिवाला। तुल्य गुण-वाला [को०]।

समाननामा—संज्ञा पुं० [स० समाननामन्] वे जिनके नाम एक ही हो। एक ही नामवाले। नामराशी।

समानयन—संज्ञा पु० [स०] १ अच्छी तरह अथवा आदरपूर्वक ले आने की क्रिया। २ एक साथ करना। एकत्र करना। सग्रह करना [को०]।

समाननिधन—वि० [स०] जिनका निधन या परिणाम एक सा हो [को०]।

समानप्रतिपत्ति—वि० [स०] समान मेधावाला। विवेकशील [को०]।

समानप्रेमा—वि० [स० समानप्रेमन्] जिसका प्रेम सदा एक समान हो [को०]।

समानमान—वि० [सं०] तुल्य सम्मान प्राप्त करनेवाला। जो किसी के समान सम्मान का भागी हो [को०]।

समानयम—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही या समान ऊँचाई का स्वर। समान तार स्वर (सगीत)।

समानयोगित्व—संज्ञा पु० [सं०] वह जो समान स्तर या योग का हो [को०]।

समानयोनि—संज्ञा पुं० [स०] वे जो एक ही योनि या स्थान से उत्पन्न हुए हों।

समानरुचि—वि० [स०] जिनकी रुचि एक समान हो [को०]।

समानरूप—वि० [स०] जिनका रूप, रग समान हो [को०]।

समानर्षि, समानर्षि—संज्ञा पुं० [स०] वे जो एक ही ऋषि के गोत्र या वश मे उत्पन्न हुए हों।

समानवयस्क—वि० [स०] दे० 'समानवया'।

समानवया—वि० [स० समानवयस्] तुल्य वय का समान उम्रवाला। हमउम्र [को०]।

समानवर्चस—वि० [स० समानवर्चस्] समान कातिवाला। जिनकी कांति एक सदृश हो [को०]।

समानवर्ण—वि० [स०] १ दे० 'समान रूप'। २ समान वर्णवाला। समानाक्षर युक्त [को०]।

समानवसन, समानवस्त्र—वि० [स०] जिनका पहनावा एक सा हो। समान वस्त्र, परिधानवाले [को०]।

समानविद्य—वि० [स०] किसी के समान ज्ञानवाला। समान विद्या से युक्त। समकक्ष (विद्वान्)।

समानशब्दत्व—संज्ञा पु० [स०] एक समान शब्दो द्वारा भाव या विचारो को अभिव्यक्त करने की स्थिति [को०]।

समानशब्दा—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रहेलिका का एक भेद [को०]।

समानशील—वि० [स०] जिनका शील स्वभाव समान या एक सा हो [को०]।

समानसंख्य—वि० [स० समानसङ्ख्य] जिसकी सख्याएँ समान हो। समान सख्यावाला [को०]।

समानसलिल—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'समानोदक' [को०]।

समानस्थान—संज्ञा पुं० [स०] वह स्थान जहाँ दिन और रात दोनो बराबर होते हैं।

समानांतर—वि० [स० समानान्तर] १ जो हमेशा एक समान अतर पर रहे। जैसे,—समानांतर रेखा। २ साथ साथ चलने या काम करनेवाला। जैसे,—समानांतर सरकार। ३ समकक्ष। तुल्य। बराबर [को०]।

समाना'—क्रि० अ० [स० समाविश्] अदर आना। भरना। अटना। जैसे,—यह समाचार सुनते ही सबके हृदय मे आनद समा गया। उ०—नागु तेज प्रभु बदन समाना। सुर मुनि सबहि अचंभौ माना।—मानस, ६।७०।

समाना'—क्रि० स० किसी के अदर रखना। भरना। अटाना। जैसे—ये सब चीजे इसी बक्स के अदर समा दो।

समानाधिकरण'—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण मे वह शब्द या वाक्यांश जो वाक्य मे किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिये आता है। जैसे,—लोगो मे जहाँ फिरना, वहीं आपका काम है। इसमे 'वहीं' शब्द 'लोगो मे फिरना' का समानाधिकरण है। २ समान स्थान या परिस्थिति (को०)। ३ एक ही कारक-विभक्ति मे प्रयुक्त होना (को०)। ४ समान आधार। समान वर्ग या श्रेणी।

**समानाधिकरण'**—वि० १ समान आधारवाला। २ एक ही श्रेणी या वर्ग का। ३ एक ही कारक विभक्ति में रखा हुआ (को०)।

**समानाधिकार**—संज्ञा पुं० [सं०] समानता का अधिकार। बराबरी का दर्जा (को०)।

**समानाभिहार**—संज्ञा पुं० [सं०] समान या एक ही प्रकार की वस्तुओं का समाहरण (को०)।

**समानार्थ**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो। पर्याय। २ वे जिनका प्रयोजन या उद्देश्य समान हो।

**समानार्थक**—वि० [सं०] दे० 'समानार्थ' (को०)।

**समानिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की वर्णवृत्ति जिसमें रगण, जगण और एक गुरु होता है। समानी। उ०—देखि देखि कै समा। विप्र मोहिया प्रभा। राजमंडली लभै। देव लोक को हभै।—केशव (शब्द०)।

**समानी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण वृत्त। दे० 'समानिका'।

**समानोदक**—संज्ञा पुं० [सं०] जिनकी ग्यारहवीं से चौदहवीं पीढ़ी तक के पूर्वज एक हों। इन्हें साथ साथ तर्पण करने का अधिकार होता है।

**समानोदर्य**—संज्ञा पुं० [सं० समानोदर्य्य] वे जिनका जन्म एक ही माता के गर्भ से हुआ हो। सहोदर भाई। सगा भाई।

**समानोपमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का एक भेद।

विशेष—इसमें वाक्यविच्छेद में एक ही उपमा दूसरी उपमा का भी काम दे जाती है। जैसे,—'मालकानन' में दो उपमाएँ छिपी हैं—(क) साल+आनन अर्थात् अलकावली से युक्त आनन और (ख) साल+कानन अर्थात् वह जंगल जिसमें साल के ही वृक्ष हों।

**समाप**—संज्ञा पुं० [सं०] इष्ट देवता की सपर्या या पूजा (को०)।

**समापक**—संज्ञा पुं० [सं०] समाप्त करनेवाला। खतम करनेवाला। पूरा करनेवाला।

**समापतित**—वि० [सं०] सामने आया हुआ। जो घटित हो (को०)।

**समापत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक ही समय में और एक ही स्थान पर उपस्थित होना। मिलना। २ संयोग। मौका। अवसर (को०)। ३ प्राप्ति। समाप्ति (को०)। ४ मूल रूप का ग्रहण या प्राप्ति (को०)।

यौ०—समापत्तिदृष्ट = संयोग से दिखाई पड़नेवाला।

**समापन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ समाप्त करने की क्रिया। खतम करना। पूरा करना। २ मार डालना। हत्या करना। वध। ३ सूक्ष्म चिंतन। गूढ़ चिंतन (को०)। ४ खंड। अध्याय। विभाग (को०)। ५ समाप्ति। उपलब्धि। अभिग्रहण (को०)। ६ समाधान।

**समापना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] समाप्त होने का भाव। निष्पत्ति। परिणति। सिद्धि। समाप्तता (को०)।

**समापनीय**—वि० [सं०] १ समाप्त करने योग्य। खतम करने के लायक। २ मार डालने योग्य। वध्य।

**समापन्न'**—संज्ञा पुं० [सं०] १ मार डालना। हत्या करना। वध। २ मरण। मृत्यु। ३ अंत। समाप्ति। पूर्ति (को०)।

**समापन्न'**—वि० १ खतम किया हुआ। समाप्त किया हुआ। २ वध किया हुआ। मारा हुआ। निहत (को०)। ३ आगत। पहुँचा हुआ (को०)। ४ घटित। गुजरा हुआ (को०)। ५ निष्णात। प्रवीण। कुशल (को०)। मिला हुआ। प्राप्त। ६ युक्त। अन्वित। उपेत (को०)। ७ आर्त। दुखित। अभिभूत (को०)। ८ क्लिष्ट। कठिन।

**समापादन**—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण करना। रूप या आकार देना। संपादित करना (को०)।

**समापादनीय**—वि० [सं०] पूरा करने योग्य। आकारित करने योग्य। रूप देने योग्य (को०)।

**समापाद्य**—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण के अनुसार विसर्ग का 'स' और 'प' में परिवर्तन।

**समापिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्याकरण में दो प्रकार की क्रियाओं में से एक प्रकार की क्रिया जिससे किसी कार्य का समाप्त हो जाना सूचित होता है। जैसे,—वह परसों यहाँ से चला गया। इस वाक्य में 'चला गया' समापिका क्रिया है।

**समापित**—वि० [सं०] समाप्त किया हुआ। खतम या पूरा किया हुआ।

**समापी**—संज्ञा पुं० [सं० समापिन्] वह जो समाप्त करता हो। खतम करनेवाला।

**समापूर्ण**—वि० [सं०] पूरा पूरा भरा हुआ। सम्यक् आपूरित। लबरेज (को०)।

**समाप्त**—वि० [सं०] १ जिसका अंत हो गया हो। जो खतम या पूरा हो। जैसे,—(क) जब आप अपनी सब बातें समाप्त कर लीजिएगा, तब मैं भी कुछ कहूँगा। (ख) आपका यह ग्रंथ कबतक समाप्त होगा। २ निपुण। कुशल। चतुर (को०)। ३ परिपूर्ण (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

यौ०—समाप्तप्राय = जो लगभग समाप्त या पूर्ण हो। समाप्तभूयिष्ठ = जो प्रायः पूरा हो गया हो। समाप्तशिक्ष = जिसने शिक्षा पूर्ण कर ली हो।

**समाप्तलभ**—संज्ञा पुं० [सं० समाप्तलम्भ] बौद्धों के अनुसार एक बहुत बड़ी संख्या का नाम।

**समाप्तान**—संज्ञा पुं० [सं०] पति। स्वामी। मालिक। खाविंद।

**समाप्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी कार्य या बात आदि का अंत होना। उस अवस्था को पहुँचना जब कि उस संबंध में और कुछ भी करने को बाकी न रहे। खतम या पूरा होना। २ प्राप्त होने या मिलने का भाव। प्राप्ति। ३ निष्पन्नता। पूर्णता (को०)। ४ अंतर या मनभेद दूर करना (को०)। ५ शरीर आदि का विभिन्न तत्वों में विघटन। मृत्यु (को०)।

**समाप्तिक'**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो समाप्त करता हो। खतम या पूरा करनेवाला। २ वह जो वेदों का अध्ययन समाप्त कर चुका हो।

**समाप्तिक[1]**—वि० समाप्ति का। अत का। २ जिसने काम पूरा कर दिया हो (को०)।

**समाप्य**—वि० [स०] समाप्त करने के योग्य। खतम या पूरा करने के लायक।

**समाप्यायित**—वि० [स०] जो अच्छी तरह तृप्त, पोषित, सतुष्ट किया गया हो (को०)।

**समाप्लव, समाप्लाव**—सज्ञा पुं० [स०] स्नान करने की क्रिया। नहाना। गोता लगाना।

**समाप्लुत**—वि० [स०] १ जो गोता लगा चुका हो। नहाया हुआ। २. बाढग्रस्त। बाढ मे डूबा हुआ। ३ भरा हुआ। पूर्ण (को०)।

**सभाभाषण**—सज्ञा पु० [स०] बातचीत। वार्तालाप (को०)।

**समाम्नात**—वि० [स०] १ जिसे बार बार कहा गया हो। दोहराया हुआ। २ परपरागत। परपरा से प्राप्त (को०)।

**समाम्नाता**—सज्ञा पु० [स० समाम्नातृ] १ वह जो बारबार कहता हो। दुहरानेवाला। २ वह जो मूल पाठ का सग्रह या सपादन करता हो (को०)।

**समाम्नान**—सज्ञा पु० [स०] १ आवृत्ति करना। दुहराना। २ गणना। ३ परपराप्राप्त पाठ या वर्णन (को०)।

**समाम्नाय**—सज्ञा पुं० [स०] १ शास्त्र। २ समूह। समष्टि। जैसे,—अक्षर समाम्नाय। ३ परपरा। अनुश्रुति (को०)। ४. पढना। पाठ करना। गान करना (को०)। ५ शिव (को०)। ६ सहार। प्रलय (को०)। ७ पवित्र ग्रथ (को०)। ८ (शब्दो या वचनो का) परपरागत सग्रह। जैसे, पशु समाम्नाय (को०)।

**समाम्नायिक[1]**—सज्ञा पु० [स०] वह जिसे शास्त्रो का अच्छा ज्ञान हो। शास्त्रवेत्ता।

**समाम्नायिक[2]**—वि० शास्त्र सबधी। शास्त्र का।

**समाय**—सज्ञा पु० [स०] १ पहुँचना। आना। २ यो ही देखने के लिये आना (को०)।

**समायत**—वि० [स०] जिसे फैला दिया गया हो। पूरा पूरा लबा। विस्तृत (को०)।

**समायत्त**—वि० [स०] जो किसी के सहारे टिका हो। पूर्णत अधीन या वशीभूत (को०)।

**समायस्त**—वि० [स०] दु खी। खिन्न। पीडित। विषादग्रस्त (को०)।

**समायात**—वि० [स०] १. लौटा हुआ। प्रत्यावर्तित। २ साथ साथ या समीप आया हुआ (को०)।

**समायी**—वि० [स० समायिन्] १ समकाल मे घटनेवाला। एक ही समय मे होनेवाला। २ एक के बाद दूसरा तत्काल होने या घटनेवाला (को०)।

**समायुक्त**—वि० [स०] १ साथ जोडा हुआ। सघटित। सयुक्त। २ तैयार किया हुआ। निर्मित। ३ कृतसकल्प। सलग्न। ४ युक्त। सज्जित। सहित। ५ जिसे कोई कार्यभार सौपा गया हो। नियुक्त किया हुआ (को०)।

**समायुत**—वि० [स०] १ सयुक्त। साथ मिलाया हुआ। २ सग्रहीत। एकत्रित किया हुआ। ३ सहित। युक्त। अन्वित (को०)।

**समायोग**—सज्ञा पुं० [स०] १ सयोग। २ बहुत से लोगो का एक साथ एकत्र होना। ३ तैयारी (को०)। ४ (धनुष पर) बाण सधान करना (को०)। ५ कारण। प्रयोजन। उद्देश्य (को०)। ६ राशि। ढेर (को०)।

**समारभ**—सज्ञा पु० [स० समारम्भ] १ अच्छी तरह आरभ होना। २ समारोह (क्व०)। ३ दे० 'समालभ'। अगलेप। ४ उद्योग। साहसिक कार्य (को०)। ५ उद्योग का उत्साह। साहसपूर्ण कार्य करने का उत्साह या भावना (को०)।

**समारभण**—सज्ञा पु० [स० समारम्भण] १ गले लगाना। आलिगन। २ अगलेपन। समालभन (को०)।

**समारब्ध**—वि० [स०] १ शुरू किया हुआ। २ जो हो चुका हो। घटित। ३ जिसने आरभ किया हो। आरभक (को०)।

**समारभ्य**—वि० [स०] समारभ करने योग्य।

**समाराधन**—सज्ञा पु० [स०] १ अच्छी तरह आराधना या उपासना करना। २ सेवा। टहल (को०)। ३ सतुष्टि या प्रसादन का साधन (को०)।

**समारूढ**—वि० [स० समारूढ] १ किसी पर चढने या आरूढ होनेवाला। २. चढा हुआ। आरूढ। सवार। ३ जिसने स्वीकार कर लिया हो। राजी। ४ बढा हुआ। वर्द्धित। ५ (घाव) जो भरा हुआ हो (को०)।

**समारोप**—सज्ञा पुं० [स०] १ चढाना। रोपण करना। जैसे,—धनुष। २ स्थानातरण। स्थल परिवृत्ति (को०)। ३ दे० 'आरोप'।

**समारोपक**—वि० [स०] १ वर्धन करनेवाला। वर्धक। २ समारोप करनेवाला। ३ रोपने या उपजानेवाला (को०)।

**समारोपण**—सज्ञा पु० [स०] १ तानना या चढाना। जैसे,—धनुष (को०)। २ दे० 'आरोपण'।

**समारोपित**—वि० [स०] १ चढाया हुआ। ताना हुआ। जैसे,—धनुष। २ किसी को दिया हुआ। प्रदत्त। ३ दे० 'आरोपित' (को०)।

**समारोह**—सज्ञा पु० [स०] १ आडबर। तडक भडक। धूम धाम। २ कोई ऐसा कार्य या उत्सव जिसमे बहुत धूमधाम हो। ३ स्वीकरण। स्वीकार (को०)। ४ चढना। दे० 'आरोह'।

**समारोहण**—सज्ञा पुं० [स०] १ केशो का बढना। बाल बढना। २ आरोहण या सवार होने की क्रिया। ३ यज्ञ की अग्नि का स्थानातरण (को०)।

**समार्थ[1]**—सज्ञा पु० [स०] समान अर्थवाला शब्द। पर्य्याय।

**समार्थ[2]**—वि० जो समान अर्थवाला हो (को०)।

**समार्थक[1]**—सज्ञा पु० [स०] समान अर्थवाला शब्द। पर्य्याय।

**समार्थक[2]**—वि० दे० 'समार्थ[2]' (को०)।

**समार्थी**—वि० [स० समार्थिन्] १ समता या बराबरी का इच्छुक। २ शाति का अन्वेषक। शाति की कामनावाला (को०)।

**समार्ष**—वि० [स०] एक ही प्रवर से सबधित। जो समान प्रवरवाला हो (को०)।

समालंब—संज्ञा पु० [सं० समालम्ब] रोहिष तृण। रूसा नामक घास।

समालंबन—संज्ञा पु० [सं० समालम्बन] आलंबन करना। टेक लेना। सहारा लेना (को०)।

समालंबित—वि० [सं० समालम्बित] किसी के सहारे टिका हुआ। आश्रित। टँगा हुआ। लगा हुआ (को०)।

समालंबिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० समालम्बिनी] एक तृण (को०)।

समालंबी'—संज्ञा पु० [सं० समालम्बिन्] भू तृण।

समालंबी'—वि० पराश्रयी। परावलंबी (को०)।

समालभ—संज्ञा पुं० [सं० समालम्भ] १ शरीर पर केशर आदि का लेप करना। २ मार डालना। हत्या करना। ३ ग्रहण करना। पकड़ना (को०)। ४ (यज्ञ में) पशु को बलि के लिये पकड़ना (को०)।

समालभन—संज्ञा पुं० [सं० समालम्भन] दे० 'समालभ'।

समालक्ष्य—वि० [सं०] जो दिखाई पड़े। दिखाई पड़नेवाला। व्यक्त। गोचर (को०)।

समालब्ध—वि० [सं०] १ जो पकड़ में आ गया हो। गृहीत। २ संपर्क में आया हुआ (को०)।

समालाप—संज्ञा पु० [सं०] अच्छी तरह बातचीत करना।

समालिंगन—संज्ञा पु० [सं० समालिङ्गन] [वि० समालिंगित] कसकर आलिंगन करना। गाढालिंगन (को०)।

समालिप्त—वि० [सं०] अच्छी तरह लिप्त या पुता हुआ। लेप किया हुआ (को०)।

समाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुष्पगुच्छ। फूलों का गुच्छा। कुसुम का स्तबक। गुलदस्ता (को०)।

समालोक—संज्ञा पु० [सं०] १ अवलोकना। देखना। २ कल्पना। चिंतन। मनन (को०)।

समालोकन—संज्ञा पु० [सं०] १ अच्छी तरह देखना। निरीक्षण। २ सोचना। विचारना। मनन। चिंतन (को०)।

समालोकी'—संज्ञा पु० [सं० समालोकिन्] १ वह जो किसी चीज को अच्छी तरह देखता हो।

समालोकी'—वि० १ किसी वस्तु का अच्छी तरह निरीक्षण करनेवाला। २ सोचने विचारनेवाला। चिंतन मनन करनेवाला (को०)।

समालोच—संज्ञा पुं० [सं०] बातचीत। संभाषण। संलाप (को०)।

समालोचक—संज्ञा पु० [सं०] १ वह जो किसी चीज के गुण और दोष देखकर बतलाता हो। २. वह जो कृति के दोष गुण आदि को विवेचित करता हो। समालोचना करनेवाला। ३ अच्छी तरह देखनेवाला।

समालोचन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समालोचना'।

समालोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अच्छी तरह देखने की क्रिया। खूब देखना भालना। २ किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना। यह देखना कि किसी चीज में कौन सी बातें अच्छी और कौन सी खराब है, विशेषत किसी पुस्तक के गुण और दोष आदि देखना। ३ वह कथन, लेख या निबंध आदि जिसमें इस प्रकार गुणों और दोषों की विवेचना हो। आलोचना।

समालोची—संज्ञा पुं० [सं० समालोचिन्] वह जो किसी चीज के गुण और दोष देखता हो। समालोचना करनेवाला।

समावर्जन—संज्ञा पु० [सं०] वशीभूत करना। अपनी ओर करना या खींचना। आकृष्ट करना (को०)।

समावर्जित—वि० [सं०] झुकाया हुआ। जिसे झुका दिया गया हो। कृतनम्र (को०)।

समावर्त्त—संज्ञा पु० [सं०] १ वापस आना। लौटना। २ दे० 'समावर्तन'। ३ विष्णु (को०)।

समावर्त्तन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समावर्तनीय] १ वापस आना। लौटना। २ गुरुकुल में विद्याध्ययन करके ब्रह्मचारी का गुरु की अनुमति से अपने घर वापस जाना। ३ प्राचीन वैदिक काल का एक प्रकार का संस्कार। समावर्तन संस्कार।

विशेष—यह संस्कार उस समय होता था जब बालक या ब्रह्मचारी नियत समय तक गुरुकुल में रहकर और वेदों तथा अन्यान्य विद्याओं का अच्छी तरह अध्ययन करने के उपरांत स्नातक बनकर घर लौटता था। इस संस्कार के समय कुछ हवन आदि होते थे।

यौ०—समावर्तन संस्कार = दे० 'समावर्तन'—३।

समावर्तनीय—वि० [सं०] १ लौटने योग्य। वापसी के लायक। २ जो समावर्तन संस्कार करने योग्य हो गया हो।

समावर्तमान—वि० [सं०] दे० 'समावर्त्ती'।

समावर्त्ती—वि० [सं० समावर्त्तिन्] १ अध्ययन समाप्त कर गुरुकुल से लौटनेवाला। २ लौटने या वापस होनेवाला।

समावह—वि० [सं०] १ जो उत्पन्न या प्रस्तुत करे। २ जो किसी (कार्य या व्याधि) का कारणभूत हो (को०)।

समावाय—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'समवाय'।

समावास—संज्ञा पु० [सं०] १ निवास स्थान। घर। २ ठहरने का स्थान। ३ शिविर। पड़ाव (को०)।

समावासित—वि० [सं०] १ ठहराया या टिकाया हुआ। २ बसाया हुआ (को०)।

यौ०—समावासित कटक = वह जिसने सेना को शिविर करने का आदेश दिया हो।

समाविग्न—वि० [सं०] १ भीत या डरा हुआ। २ उद्वेल्लित। क्षुब्ध। विह्वल। कंपित (को०)।

समाविद्ध—वि० [सं०] १ जिसका संयोग या संघटन हुआ हो। २ विह्वल। क्षोभयुक्त। आकुल (को०)। ३ क्षीण (को०)।

समाविष्ट—वि० [सं०] १ जिसका समावेश हुआ हो। समाया हुआ। २ जिसका चित्त किसी एक ओर लगा हुआ हो। एकाग्र चित्त। ३. गृहीत। ग्रहण किया हुआ (को०)। ४ भूतप्रेत

आदि के आवेश मे ग्रस्त। भूताविष्ट (को०)। ५. सयुक्त। युक्त। सपन्न। सहित (को०)। ६. निश्चित। स्थिर किया हुआ (को०)। ७. पूर्णत शिक्षित या सुनिर्दिष्ट (को०)। ८ पूर्णत आच्छादित, प्रभावित या आवेष्टित (को०)।

समावी—वि० [अ०] आकस्मिक। आसमानी। दैवी।

समावृत्त—वि० [स०] १ अच्छी तरह ढका या छाया हुआ। २ घिरा हुआ। लपेटा हुआ। वलयित (को०)। ३ सुरक्षित। अवरुद्ध या बद किया हुआ (को०)। ४ रोका हुआ (को०)। ५ आकीर्ण। विकीर्ण (को०)।

समावृत्त'—सज्ञा पुं० [सं०] वह जो विद्या अध्ययन करके, समावर्तन सस्कार के उपरात, घर लौट आया हो। जिसका समावर्तन सस्कार हो चुका हो।

समावृत्त'—वि० [स०] १ पूर्ण या किया हुआ। २. लौटा हुआ। वापस (को०)। ३ जुटना। एकत्र होना। ४. जो गुरुकुल से लौटा हो (को०)।

समावृत्ताक—सज्ञा पु० [स०] गुरुकुल से शिक्षा समाप्त कर लौटा हुआ स्नातक। दे० 'समावृत्त' (को०)।

समावृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दे० 'समावर्त्तन'। २ पूर्णता। समाप्ति (को०)।

समावेश—सज्ञा पु० [स०] १ एक साथ या एक जगह रहना। २ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अतर्गत होना। जैसे,—इस एक ही आपत्ति मे आपकी सब आपत्तियो का समावेश हो जाता है। ३ चित्त को किसी एक ओर लगाना। मनोनिवेश। ४ मिलना। साहचर्य (को०)। ४ घुसना। प्रवेश करना (को०)। ६ प्रेतावेश (को०)। ७ प्रणयोन्माद। भावावेश (को०)। ८. मतैक्य (को०)। ९ व्याप्त होना (को०)।

समावेशन—सज्ञा पुं० [स०] १ घुसना। बैठना। २ विवाह की ससिद्धि, सपन्नता या पूर्णावस्था (को०)।

समावेशित—वि० [स०] १ जिसका समावेश किया गया हो (को०)। २ खचित। जडा हुआ। जटित (को०)। ३ दे० 'समाविष्ट'।

समाश—सज्ञा पु० [स०] अशन। खाना। भोजन (को०)।

समाश्रय—सज्ञा पु० [स०] १ आश्रय। सहारा। २ सहायता। मदद। ३. आश्रय स्थान। शरण। शरण गृह (को०)। ४. निवास। घर (को०)। ५. शरण या सहारा ढूँढना (को०)।

समाश्रयण—सज्ञा पु० [स०] १ 'समाश्रय'। २ चयन। चुनना (को०)।

समाश्रित'—वि० [स०] १ जिसने किसी स्थान पर अच्छी तरह आश्रय ग्रहण किया हो। २ जो सहारे पर हो। अवलबित (को०)। ३ निवसित। बसा हुआ। अधिष्ठित (को०)। ४. सज्जित किया हुआ। जैसे,—कक्ष या घर (को०)। ५. एकत्रित (को०)।

समाश्रित'—सज्ञा पुं० सेवक। भृत्य (को०)।

समाश्लिष्ट—वि० [सं०] १ भली भाँति आलिगित। २ सलग्न। चिपका या लगा हुआ (को०)।

समाश्लेष—सज्ञा पुं० [स०] गाढ आलिगन (को०)।

समाश्वस्त—वि० [स०] जिसे तसल्ली हो गई हो। सात्वना प्राप्त। आश्वस्त। २ प्रोत्साहित (को०)।

समाश्वास—सज्ञा पु० [स०] १ सतोष होना। जी मे जी आना। ढाढस बँधना। २ आस्था। भरोसा। विश्वास। ३. प्रोत्साहन। बढावा (को०)।

समाश्वासन—सज्ञा पुं० [स०] १ ढाँढस बँधाना। सतोष देना। २ उत्साह बढाना (को०)।

समासग—सज्ञा पु० [स० समासङ्ग] १ मिलन। मिलाप। मेल। २ लगाव। साहचर्य (को०)। ३ किसी के जिम्मे करना। काम सौपना (को०)।

समासंजन—सज्ञा पुं० [स० समासञ्जन] १ मिलाना। सयुक्त करना। २ खचित करना। जडना या रखना। ३ लगाव। मेल। सपर्क। सयोग (को०)।

समास—स० पु० [स०] १ सक्षेप। २ समर्थन। ३ सग्रह। ४ पदार्थों का एक मे मिलना। समिलन। ५ व्याकरण मे दो या अधिक शब्दो का सयोग। शब्दो का कुछ विशिष्ट नियमो के अनुसार आपस मे मिलकर एक होना। जैसे,—'प्रेमसागर' शब्द प्रेम और सागर का, 'पराधीन' शब्द पर और अधीन का, 'लवोदर' शब्द लव और उदर का सामासिक रूप है।

विशेष—शब्दो का यह पारस्परिक सयोग सधि के नियमो के अनुसार होता है। हिंदी मे चार प्रकार के समास होते है—(१) अव्ययी भाव जिसमे पहला शब्द प्रधान होता है और जिसका प्रयोग क्रियाविशेषण के समान होता है। जैसे, यथाशक्ति, यावज्जीवन, प्रतिदिन आदि, (२) तत्पुरुष जिसमे पहला शब्द सज्ञा या विशेषण होता है और दूसरे शब्द की प्रधानता रहती है। जैसे,—ग्रथकर्ता, निशाचर, राजपुत्र आदि, (३) समानाधिकरण तत्पुरुष या कर्मधारय जिसमे दोनो शब्द या तो विशेष्य और विशेषण के समान या उपमान और उपमेय के समान रहते है और जिनका विग्रह होने पर परवर्ती एक ही विभक्ति मे काम चलता है। जैसे,—छुटभैया, अधमरा, नवरात्र, चौमासा आदि और (४) द्वद्व जिसमे दोनो शब्द या उनका समाहार प्रधान होता है। जैसे,—हरिहर, गायबैल, दालभात, चिट्ठीपत्री, अन्नजल, आदि।

६ मतभेद दूर करना। अतर दूर करना। विवाद मिटाना (को०)। ७ सग्रह। सघात (को०)। ८ पूर्णता। समष्टि (को०)। ९ सधि। दो शब्दो का व्याकरण के नियमानुसार एक मे मिलना (को०)। १० सक्षेपण (को०)।

यौ०—समासप्राय। समासबहुल।

समासक्त—वि० [स०] १ लगा हुआ। जुडा हुआ। अनुस्यूत। २ अनुरागयुक्त। आसक्त। ३. पहुचा हुआ। प्राप्त। ४ प्रभावित। ५. रुका हुआ। ठहरा हुआ। (प्रभाव या असर करने मे) जैसे, विष (को०)।

**समासक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लगाव। संबंध। २ अनुरक्ति। आसक्ति। ३ दे० 'समासना' [को०]।

**समासत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नजदीक होने का भाव। समीपता [को०]।

**समासन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ पटपर या सम भूमि पर बैठने की क्रिया। २ (कई लोगों का) एक साथ बैठना [को०]।

**समासन्न**—वि० [सं०] १ प्राप्त। पहुँचा हुआ। जो आ गया हो। २ नजदीकवाला। जो पास हो [को०]।

**समासपर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ भोजराज के एक प्राचीन नगर का नाम। २ दे० 'समासप्राय'।

**समासप्राय**—वि० [सं०] पद या छंद आदि जिसमें समास की बहुलता हो।

**समासबहुल**—वि० [सं०] दे० समासप्राय'।

**समासम**—वि० [सं०] जो सम और असम हो [को०]।

**समासर्जन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ पूर्णत परित्याग या छोड़ना। २ दे देना। अर्पित करना। न्यस्त या सुपुद करना [को०]।

**समासवान्**[1]—वि० [सं० समासवत्] जिनमें समास हो। समास युक्त। समासवाला [को०]।

**समासवान्**[2]—संज्ञा पुं० [सं०] एक बहुत बड़ा पेड़। तुन नामक वृक्ष। विशेष दे० 'तुन' [को०]।

**समासादन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ निकट होना या पहुँचना। २ प्राप्त करना या होना। मिल जाना। ३ संपन्न करना। पूर्ण करना [को०]।

**समासादित**—वि० [सं०] १ निकटस्थ। समीपस्थ। २ जो पहुँच गया हो। ३ आसादित। प्राप्त। लब्ध। ४. पूर्ण या सिद्ध किया हुआ (को०)।

**समासार्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी छंद का वह अतिमात्र जिसके आधार पर छंद पूरा किया जाय। समस्या [को०]।

**समासीन**—वि० [सं०] १ अच्छी तरह बैठा हुआ। २ एक साथ बैठा हुआ [को०]।

**समासोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें समान कार्य, समान लिंग और समान विशेषण आदि के द्वारा किसी प्रस्तुत वर्णन से अप्रस्तुत का ज्ञान होता है। जैसे,—'कुमुदिनिहू प्रफुलित भई, साँझ कलानिधि जोय' यहाँ प्रस्तुत 'कुमुदिनी' से नायिका का और 'कलानिधि' से नायक का ज्ञान होता है।

**समास्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कार्य काल। सत्र। २ साक्षात्कार। मुलाकात। ३ एक साथ बैठने की क्रिया [को०]।

**समाहत**—वि० [सं०] १ मिला हुआ। जुड़ा हुआ। २ घायल। चोट खाया हुआ। ३ आघातित। मारा हुआ। पीटा हुआ। जैसे,—नगाड़ा, घोंसा आदि। ४ एक साथ आघातित या प्रहारित [को०]।

**समाहनन**—संज्ञा पुं० [सं०] हनन या मारने की क्रिया [को०]।

**समाहर**—वि० [सं०] विध्वंसक। विनाशक [को०]।

**समाहरण**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समाहार'।

**समाहर्त्ता**—संज्ञा पुं० [सं० समाहर्त्तृ] १ समाहार करनेवाला। २ वह जो किसी चीज का संक्षेप करता हो। ३ मिलानेवाला। ४ कौटिल्य के अनुसार प्राचीन काल का राजकर एकत्र करनेवाला प्रधान कर्मचारी।

विशेष—चंद्रगुप्त के समय में इसका मासिक वेतन २००० पण था। यह जनपद को चार भागों में विभक्त करके और ग्रामों का ज्येष्ठ, मध्यम और कनिष्ठ के नाम से विभाग करके करों के रजिस्टर में निम्नलिखित वर्गीकरण करता था—परिहारक, आयुधिक, धान्यकर, पशुकर, हिरण्यकर, कुप्यकर, विशिष्टकर और प्रतिकर। इनमें से प्रत्येक के लिये वह 'गोप' नियुक्त करता था, जिनके अधिकार में पाँच से दस गाँव तक रहते थे। इन गोपों के ऊपर स्थानिक होते थे।

**समाहर्त्ता**[2]—वि० १ समाहार करनेवाला। संग्राहक। २ मिलानेवाला।

**समाहर्तृपुरुष**—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार समाहर्ता का कारिंदा।

**समाहार**—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत सी चीजों को एक जगह इकट्ठा करना। संग्रह। २ समूह। राशि। ढेर। ३ मिलना। मिलाप। ४ शब्दों या वाक्यों का परस्पर संयोग (को०)। ५ द्वंद्व और द्विगु समासों का समष्टिविधायक एक उपभेद (को०)। ६ संक्षेपण। संकोचन (को०)। ७ वर्णमाला के दो अक्षरों का शब्दांश में योग। प्रत्याहार (को०)।

**समाहारद्वंद्व**—संज्ञा पुं० [सं० समाहारद्वन्द्व] एक प्रकार का द्वंद्व समास। वह द्वंद्व समास जिससे उसके पदों के अर्थ के सिवा कुछ और अर्थ भी सूचित होता हो। जैसे,—सेठसाहूकार, हाथपाँव, दालरोटी आदि। इनमें से प्रत्येक के उनके पदों के अर्थ के सिवा उसी प्रकार के कुछ और व्यक्तियों या पदार्थों का भी बोध होता है।

**समाहित**[1]—वि० [सं०] १ रोका हुआ। पकड़ा हुआ। अधिकृत। २ जोड़ा हुआ। लगाया हुआ। जैसे,—आग में ईंधन। ३ संयोजित। ४ संकलित। ५ संचित किया हुआ। ६ व्यवस्थित। ७ प्रतिपादित किया हुआ। प्रतिपन्न। ८ स्वीकार किया हुआ। ९ समंजित। जिसमें सामंजस्य स्थापित किया गया हो। १० दबाया हुआ। कम किया हुआ। जैसे,—उठता हुआ स्वर। ११ तै किया हुआ (को०)। १२ शांत (मन) (को०)। १३ प्रवृत्त। लीन (को०)। १४ सुपुर्द किया हुआ (को०)। १५ समान। सदृश। अनुरूप (को०)। १६ समभाव का। एक ही जैसा (को०)। १७ समध्वनित। संवादी। संगत (को०)। १८ भेजा हुआ। प्रेषित (को०)।

यौ०—समाहितबुद्धि, समाहितमति = स्थिर बुद्धि। समाहितमना (मनस्) = स्थिर चित्त।

**समाहित**[2]—संज्ञा पुं० १ एकाग्रचित्त होना। एकनिष्ठता। २ वह व्यक्ति जिसकी बुद्धि पुण्यमय हो। पुण्यात्मा [को०]।

**समाहूत**—वि० [स०] [स्त्री० समाहूता] १ जिसे बुलाया या निमन्त्रित किया गया हो। २ लडने या खेलने के लिये चुनौती दिया या पाया हुआ। जिसे ललकारा गया हो (को०)।

**समाह्व**—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो समान नाम का हो। समान नामवाला। २ ललकार। आह्वान। चुनौती। ३ आमत्रण। बुलाना (को०)।

**समाह्वय**—सज्ञा पु० [स०] १ पशु पक्षियो (तीतर, बटेर, हाथी, शेर, भैसे आदि) को लडाने और उनकी हार जीत पर बाजी लगाने का खेल।

विशेष—इसके सबध मे अर्थशास्त्र तथा स्मृतियो मे अनेक नियम हैं।

२ चुनौती। चैलेज। ललकार (को०)। ३ सग्राम। युद्ध (को०)। ४ द्वद्व युद्ध। मल्ल युद्ध (को०)। ५ नाम। अभिधान (को०)।

**समाह्वा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गोजिया या वनगोभी नाम की घास। गोजिह्वा। २ आख्या। नाम। अभिधान (को०)।

**समाह्वाता**—वि०, सज्ञा पु० [स० सामाह्वातृ] १ पुकारनेवाला। बुलानेवाला। २ चैलेज करनेवाला। चुनौती देनेवाला (को०)।

**समाह्वान**—सज्ञा पुं० [स०] १ आह्वान। बुलाना। २ जूआ खेलने के लिये किसी को बुलाना या ललकारना। ३ दे० 'समाह्वय'—१। ४ चुनौती। ललकार (को०)।

**समिंधन**—सज्ञा पु० [स० समिन्धन] (आग, दीया आदि) प्रज्वलित करना। सुलगाना। २ ईंधन। ३ शोथ, सूजन या उभाड आदि का कारण (को०)।

**समिक**—सज्ञा पु० [स०] लवा, और धारदार कोई भी हथियार। साँगु, कुत, बरछा आदि (को०)।

**समित्**—सज्ञा पुं० [स०] १ मेल। साथ। मिलाप (को०)। २ अग्नि (को०)। ३ युद्ध। समर। लडाई।

**समित**—वि० [स०] १ साथ आया या मिला हुआ। २ एकत्रित। पुजीभूत। ३ सबधित। सयुक्त। सलग्न। ४ सन्निहित। समीपवर्ती। समीपस्थ। ५ समानातर। तुल्य। सदृश। ६ प्रतिश्रुत। अगीकृत। ७ खत्म किया हुआ। पूर्ण या समाप्त किया हुआ। ८ मापा हुआ (को०)।

**समिता**—सज्ञा स्त्री० [स०] बहुत महीन पीसा हुआ आटा। मैदा।

**समितिंजय**—सज्ञा पुं० [स० समितिञ्जय] वह जिसने युद्ध मे विजय प्राप्त की हो। युद्धजयी। २ वह जिसने किसी सभा आदि मे विजय प्राप्त की हो। ३ यम। ४ विष्णु।

**समिति**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सभा। समाज। २ प्राचीन वैदिक काल की एक प्रकार की सस्था जिसमे राजनीतिक विषयो पर विचार हुआ करता था। ३ किसी विशिष्ट कार्य के लिये नियुक्त की हुई कुछ आदमियो की सभा। ४ युद्ध। समर। लडाई। ५ समानता। साम्य। ६ सन्निपात नामक रोग। ७. इकट्ठा होना। जुटना। मिलना (को०)। ८. झुड। रेवड़ (को०)। ९ सतुलित करना। मर्यादित करना (को०)। १०. आचारपद्धति। आचारसहिता (जैन)।

यौ०—समितिमर्दन = युद्ध मे परेशान करनेवाला। समितिशाली = वीर। योद्धा। समितिशोभन = युद्ध मे प्रमुख या श्रेष्ठ।

**समित्कलाप**—सज्ञा पु० [स०] लकडियो, ईंधन का गट्ठर (को०)।

**समित्काष्ठ**—सज्ञा पु० [स०] ईंधन। चैला। लकडी (को०)।

**समित्पाथ**—सज्ञा पु० [स० समित्पान्थ] अनल। आग। पावक (को०)।

**समित्पूल**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'समित्कलाप'।

**समिथ**—सज्ञा पुं० [स०] १ अग्नि। २ आहुति। ३ युद्ध। समर। लडाई। ४ जुटाव। सभा। समिति (को०)।

**समिदाधान**—सज्ञा पु० [स०] १ अग्नि मे ईंधन डालना। २ अग्नि मे समिधा डालना जो ब्रम्हचारी का दनिक कृत्य है (को०)।

**समिद्ध**—वि० [स०] १ जलता हुआ। प्रज्वलित। प्रदीप्त। २ उत्तेजनायुक्त। उत्तजित (को०)। ३ अग्नि मे डाला हुआ। अग्नि मे न्यस्त (को०)। ४ आढ्य। पूर्ण (को०)।

यौ०—समिद्धकाति = जिसकी काति दीप्त हो। समिद्धदर्प = अभिमान के कारण उत्तेजित। गर्व से स्फीत। समिद्धहोम = हवन। आहुति।

**समिद्धन** सज्ञा पु० [स०] १ जलाने की लकडी। ईंधन। २ जलाने की क्रिया। सुलगाना। ३ उत्तेजना देना। उद्दीपन।

**समिध्**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आग जलाने की लकडी। ईंधन। २. यज्ञकुड मे जलाने की लकडी। समिधा।

**समिध**—सज्ञा पुं० [स०] १ अग्नि। २ दे० 'समिध्' (को०)।

**समिधा**—सज्ञा स्त्री० [स० समिध्] दे० 'समिध्', 'समिधि'।

**समिधि**—सज्ञा स्त्री० [स० समिध] लकडी विशेषत यज्ञकुड मे जलाने की लकडी। उ०—(क) प्रेम बारि तरपन भलो घृत सहज सनेह। ससय समिधि अगिनि छमा समता बलि देह।—तुलसी (शब्द०)। (ख) समिधि सेन चतुरग विहाई। महा महीप भए पसु आई।—मानस, १।२८३।

**समिर**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'समीर'।

**समिश्र**—वि० [स०] मिला हुआ। मिश्रित होनेवाला (को०)।

**समिष्**—सज्ञा पु० [स०] इद्र।

**समीक**—सज्ञा पु० [स०] युद्ध। समर। लडाई।

**समीकरण**—सज्ञा पु० [स०] १ समान करने की क्रिया। तुल्य या बराबर करना। २ आत्मसात् करना (को०)। ३ गणित मे एक विशेष प्रकार की क्रिया जिससे किसी व्यक्त या ज्ञात राशि की सहायता से किसी अव्यक्त या अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है। ४ गणित मे (भिन्न या किसी सवाल को) हल करना या सरल करना। ५ भूमि समतल करने का साधन। पाटा या हेंगा जिससे क्षेत्र समतल किया जाता है (को०)।

**समीकार**—सज्ञा पु० [स०] वह जो छोटा बडा, ऊँचा नीचा या अच्छी बुरी चीजो को समान करता हो। बराबर करनेवाला। २. समान करने की क्रिया (को०)। ३. गणित मे समीकरण।

**समीकृत**—वि० [स०] १ समान किया हुआ। बराबर किया हुआ। २ जोडा या योग किया हुआ (को०)।

**समीकृति**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ समान या तुल्य करने की क्रिया। समीकरण। २ वजन करना। तोलना।

**समीक्रिया**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'समीकरण'।

**समीक्ष**—सज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छी तरह देखने की क्रिया। २ दर्शन। ३ अन्वेषण। जाच पडताल। ४ विवेचन। ५ साख्य शास्त्र जिसके द्वारा प्रकृति और पुरुष का ठीक ठीक स्वरूप दिखाई देता है। ६ पूर्ण ज्ञान (को०)।

**समीक्षक**—वि० [स०] १ समीक्षा करनेवाला। समालोचक। २ निरीक्षक। अच्छी तरह देखनेवाला।

**समीक्षण**—सज्ञा पु० [स०] १ दर्शन। देखना। २ अनुसधान। अन्वेषण। जाच पडताल। ३ आलोचना।

**समीक्षा**—सज्ञा स्त्री० [स०] [वि० समीक्षित, समीक्ष्य] १ अच्छी तरह देखने की क्रिया। २ देखने की आकाक्षा। दिदृक्षा (को०)। ३ दृष्टि। चितवन। निगाह। नजर (को०)। ४ आलोचना। समालोचना। ५ प्रज्ञा। बुद्धि। मति। ६ यत्न। कोशिश। ७ विचार। सम्मति। राय (को०)। ८ अनुसधान। अन्वेषण (को०)। ९ आत्मविद्या। आत्मा सबधी ज्ञान (को०)। १० सत्य का आधारभूत या मौलिक रूप (को०)। ११ मूलभूत सिद्धात (को०)। १२ मीमासा शास्त्र। १३ साख्य मे बतलाए हुए पुरुष, प्रकृति, बुद्धि, अहकार आदि तत्व।

**समीक्षित**—वि० [स०] १ भली भाँति देखा परखा हुआ। २ जिसकी समीक्षा या समालोचना की गई हो।

**समीक्ष्य**—वि० [स०] समीक्षा करने के योग्य। भली भाँति देखने के योग्य।

**समीक्ष्यकारी**—वि० [स० समीक्ष्यकारिन्] अच्छी तरह सोच समझ कर काम करनेवाला को०]।

**समीक्ष्यवादी**—सज्ञा पु० [स० समीक्ष्यवादिन्] वह जो किसी विषय को अच्छी तरह जाँच या समझ कर कोई बात कहता हो।

**समीच**—सज्ञा पु० [स०] १ जलनिधि। समुद्र। सागर। २ शशि। चद्रमा [को०]।

**समीचक**—सज्ञा पु० [स०] प्रसग। मैथुन। सभोग।

**समीची**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ स्तव। गुणगान। वदना। २ हरिणी। मृगी (को०)।

**समीचीन'**—वि० [स०] १ यथार्थ। ठीक। २ उचित। वाजिब। ३ न्यायसगत। ४ सत्य। सही (को०)।

**समीचीन**—सज्ञा पु० १ सत्य। २ गरिमा [को०]।

**समीचीनता**—सज्ञा स्त्री० [स०] समीचीन होने का भाव या धर्म।

**समीचीनत्व**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'समीचीनता'।

**समीति, समीती**—सज्ञा स्त्री० [स० समिति] दे० 'समिति'। उ०—राग रोष इरषा विमोह बस रची न साधु समीति।—तुलसी (शब्द०)।

**समीद**—सज्ञा पुं० [सं०] मैदा। गेहूँ का बहुत महीन आटा [को०]।

**समीन**—वि० [सं०] १ वार्षिक। सालाना। २ जो एक वर्ष के लिये भाडे पर लिया गया हो। ३ एक साल का (को०)।

**समीनिका**—सज्ञा [सं०] वह गौ जो प्रति वर्ष बच्चा देती हो। हर साल ब्यानेवाली गाय।

**समीप'**—वि० [स०] दूर का उलटा। पास। निकट। नजदीक।

**समीप'**—सज्ञा पु० सामीप्य। निकटता [को०]।

**समीपता**—सज्ञा स्त्री० [सं०] समीप का भाव या धर्म।

**समीपवर्ती**—वि० [सं० समीपवर्तिन्] समीप का। पास का। नजदीक।

**समीपसप्तमी**—सज्ञा पुं० [स०] समीपता का व्यजक कारक। सप्तमी विभक्ति।

**समीपस्थ**—वि० [स०] जो समीप मे हो। पास का।

**समीभाव**—सज्ञा पुं० [सं०] सहज स्थिति। सम भाव मे होना [को०]।

**सम य**—वि० [सं०] १ तुल्य। समान। २ समान कारण होने से एक सा समझा जानेवाला। ३ जो एक ही मूल का हो। ४ समान या तुल्य सबधी। सम सबधी [को०]।

**समीर**—सज्ञा पुं० [स०] १ वायु। हवा। २ वायु देवता (को०)। ३ शमी वृक्ष। ४ प्राणवायु जिसे योगी वश मे रखते है। उ०—कछु न साधन सिधि जानौं न निगम विधि नहिं जप तप बस न समीर।—तुलसी (शब्द०)।

**समीरण'**—सज्ञा पु० [स०] १ वायु। हवा। २ गध तृणवी। मरुआ। ३ रास्ता चलनेवाला। पथिक। बटोही। ४. प्रेरणा। ५. श्वास। साँस (को०)। ६ शरीरस्थ प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान नामक पाँच वायु (को०)। ७ पाँच की सख्या (को०)। ८ वायु देवता (को०)। ९ भेजना। प्रेषण (को०)।

**समीरण'**—वि० गतिशील या प्रेरित करनेवाला। उद्दीप्त करनेवाला [को०]।

**समीरसूनु**—सज्ञा पुं० [स०] वायुपुत्र। हनुमान। उ०—राम की रजाय ते रमायनी समीरसूनु उतरि पयोधि पार गोवि सखाक सो।—तुलसी ग्र०, पृ० १७१।

**समीरित**—वि० [सं०] १ क्षुब्ध। उत्प्रेरित। २ उच्चारित (शब्द या स्वर)।

**समीसर**—सज्ञा पुं० [स० शनैश्चर, हिं० सनीचर] शनैश्चर। शनि। उ०—रा० रू०, पृ० २७२।

**समीहन'**—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का एक नाम।

**समीहन'**—वि० लालायित। ईर्ष्यालु। उत्सुक [को०]।

**समीहा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ उद्योग। प्रयत्न। चेष्टा। कोशिश। २. इच्छा। ख्वाहिश। ३ अनुसधान। तलाश। जाँच पडताल।

**समीहित'**—वि० [स०] अभिलषित। आकाक्षित। इच्छित। २. प्रारभ किया हुआ। शुरू किया हुआ। ३ जिसके लिये चेष्टा या प्रयत्न किया गया हो [को०]।

**समीहित'**—सज्ञा पुं० अभिलाषा। आकाक्षा। स्पृहा। २. प्रयत्न। कोशिश। चेष्टा [को०]।

समुद(५)—सज्ञा पुं० [स० समुद्र] समुद्र ।

समुदन—सज्ञा पुं० [स० समुन्दन] १ गीलापन । सीलन । तरी । २ पूरी तरह आर्द्र या तर होना [को०] ।

समुदर—सज्ञा पु० [स० समुद्र] दे० 'समुद्र' ।

समुदरफल—सज्ञा पुं० [हिं० समुदर+फल] मझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष । इजर ।

विशेष—यह वृक्ष म्हेलखंड और अवध के जगलो मे झरनो के किनारे और नम जमीन पर होता है । बंगाल मे भी यह अधिकता से होता है और दक्षिण भारत मे लका तक पाया जाता है । कही कही लोग इसे शोभा के लिये बागो मे भी लगाते हैं । इसकी लकडी से प्राय नावे बनती है । औषध मे भी इसकी पत्तियो और छाल आदि का व्यवहार होता है ।

समुदरफूल—सज्ञा पु० [हिं० समुदर+फूल] एक प्रकार का विधारा । वृद्धदारुक ।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह मधुर, कसैला, शीतल और कफ, पित्त तथा रुधिरविकार को दूर करनेवाला और गर्भिणी की पीडा हटनेवाला होता है ।

समुदरसोख—सज्ञा पुं० [हिं० समुदर+सोखना] एक प्रकार का क्षुप जो प्राय सारे भारत मे थोडा बहुत पाया जाता है ।

विशेष—समुदरसोख के पत्ते तीन चार अगुल लबे, अडाकार और नुकीले होते हैं । इसकी डालियो के अत मे छोटे छोटे बीज होते हैं । वैद्यक मे यह वातकारक, मलरोधक, पित्तकारक तथा कफकारक कहा गया है ।

समुक्त—वि० [स०] १ जिसे कहा गया हो । उक्त । कथित । २ जिसकी लानत मलामत की गई हो । तिरस्कृत । भर्त्सित । निंदित [को०] ।

समुक्षण—सज्ञा पुं० [स०] १ सीचने या जल आदि छिडकने की क्रिया । तरबतर करना । २ नाँधना । ढुलकाना । गिराना [को०] ।

समुक्षित—वि० [स०] १ अच्छी तरह छिडका या सीचा हुआ । तर किया हुआ । २ जिसे उत्तेजना या बढावा दिया गया हो । उत्साहित [को०] ।

समुख[1]—सज्ञा पु० [स०] वह जो अच्छी तरह बातें करना जानता हो । वाग्मी । वाक्पटु ।

समुख[2]—वि० १ भाषणपटु । २ बकवादी । बातूनी । ३ मुखवाला । मुख-युक्त [को०] ।

समुचित—वि० [सं०] १ यथेष्ट । उचित । योग्य । ठीक । वाजिब । २ जैसा चाहिए, वैसा । उपयुक्त । जैसे,—आपने उनकी बातो का समुचित उत्तर दिया । ३ जो रुचि या विचार के अनुकूल हो । जो पसद हो ।

समुच्च—वि० [स०] जो बहुत ऊँचा हो [को०] ।

समुच्चय—सज्ञा पु० [स०] १ बहुत सी चीजो का एक मे मिलना । समाहार । मिलन । २ समूह । राशि । ढेर । ३ साहित्य मे एक प्रकार का अलकार जिसके दो भेद माने गए है । एक तो वह जहाँ आश्चर्य, हर्ष, विषाद आदि बहुत से भावो के एक साथ उदित होने का वर्णन हो । जैसे,—हे हरि तुम बिनु राधिका सेज परी अकुलाति । तरफराति, तमकति, तचति, सुसकति, सूखी जाति । दूसरा वह जहाँ किसी एक ही कार्य के लिये बहुत से कारणो का वर्णन हो । जैसे,—गगा गीता गायत्री गनपति गरुड गोपाल । प्रात काल जे नर भजैं ते न परैं भव-जाल । ४ वाक्य या शब्दो का समाहार । शब्दो का परस्पर मिलन या योग (को०) । ५ कौटिल्य के मत से वह आपत्ति जिसमे यह निश्चय हो कि इस उपाय के अतिरिक्त और उपायो से भी काम हो सकता है ।

समुच्चयन—सज्ञा पु० [स०] बहुत सी चीजो का एक मे समाहार करना । एकत्र करना [को०] ।

समुच्चयालकार—सज्ञा पुं० [स० समुच्चयालङ्कार] समुच्चय नामक अलकार । दे० 'समुच्चय'—३ ।

समुच्चयोपमा—सज्ञा स्त्री० [स०] समुच्चयालकार से बनी उपमा [को०] ।

समुच्चर—सज्ञा पुं० [स०] १ एक साथ आना जाना । २ ऊपर की ओर उठना या चढना । आरोह । ३ लाँघ जाना । पार हो जाना [को०] ।

समुच्चार—सज्ञा पु० [स०] १ स्पष्ट बोलना । उच्चारण करना । २ विसर्जन । त्याग [को०] ।

समुच्चित—वि० [सं०] १. ढेर लगाया हुआ । राशि के रूप मे रखा हुआ । २ एकत्र किया हुआ । जमा किया हुआ । सगृहीत । ३ क्रम से लगाया हुआ (को०) ।

समुच्छन्न—वि० [स०] १ खुला हुआ । नग्न । अनावृत । २ उद्ध्वस्त । विनष्ट । तितर बितर किया हुआ [को०] ।

समुच्छित्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १. पूर्णत उच्छेद या उत्पाटन । २. ध्वस । नाश । बरबादी ।

समुच्छिन्न—वि० [स०] १ जड से उखाडा हुआ या उत्पाटित । पूर्णत नष्ट या बर्बाद किया हुआ । २ तार तार । फटा हुआ [को०] ।

यौ०—समुच्छिन्न वासन = (१) जिसके वस्त्र फटे हुए या उच्छिन्न हो । (२) जिसकी वासना या भ्रम दूर हो गया हो ।

समुच्छेद—सज्ञा पुं० [स०] १ जड से उखाडना । उन्मूलन । २ ध्वस । नाश । बरबादी ।

समुच्छेदन—सज्ञा पुं० [स०] १ जड से उखाडना । २ नष्ट करना । बरबाद करना ।

समुच्छ्राय—सज्ञा पु० [स०] १ उच्चता । ऊँचाई । २ बैर । विरोध । शत्रुता । ३ सग्रह । सचय । ढेर । ४ युद्ध । लडाई । ५ पहाड । पर्वत । ६. वृद्धि । विकास । ७ जन्म । (बौद्ध) । ८ ऊपर उठना । उत्थान । ९ उच्च पद [को०] ।

समुच्छ्राय—स० पुं० [स०] १ ऊँचाई । उच्चता । २ उन्नति । उत्थान । ३ बढती । वृद्धि [को०] ।

समुच्छ्रित—वि० [स०] १ ऊँचा । उन्नत । उठा हुआ । २ शक्तिशाली । ३ लहरें लेता हुआ । ४ ऊपर किया या उठाया हुआ [को०] ।

**समुच्छ्रति**—सज्ञा स्त्री० [स०] उन्नति। बढती। वृद्धि [को०]।

**समुच्छ्वसित**—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जिसने गभीर एवम् दीर्घ श्वास छोडा हो। २ गहरी साँस [को०]।

**समुच्छ्वास**—सज्ञा पुं० [स०] दीर्घ श्वास। लबी साँस [को०]।

**समुज्ज्वल**—वि० [स०] खूब उज्ज्वल। चमकता हुआ।

**समुज्जृभण**—सज्ञा पुं० [स० समुज्जृम्भण] १ जँभाई लेना। २ ऊपर की ओर बढना। निकलना। ३ प्रयत्न करना [को०]।

**समुज्झित**[1]—वि० [स०] १ छोडा हुआ। परित्यक्त। २ गया हुआ। ३ मुक्त [को०]।

**समुज्झित**[2]—सज्ञा पुं० परित्याग [को०]।

**समुझ**Ⓤ†—सज्ञा स्त्री० [हिं० समझ] दे० 'समझ'।

**विशेष**—इसके यौगिक और क्रियाओ आदि के लिये दे० समझ' शब्द के यौगिक और क्रियाएँ।

**समुझना**—क्रि० अ० [स० सम्यक् ज्ञान] दे० 'समझना'। उ०—जाको बालविनोद समुझि जिय डरत दिवाकर भोर को। —तुलसी ग्र०।

**समुझनि**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं० समझना] समझने की क्रिया या भाव।

**समुझाना**—क्रि० स० [हिं० समझना] दे० 'समझाना'। उ०—पुनि रघुपति बहु विधि समुझाए। लै पादुका अवधपुर आए। —मानस, ७।६५।

**समुत्कटकित**—वि० [स० समुत्कण्टकित] जिसके रोएँ खडे हो गए हो। रोमहर्ष से युक्त।

**समुत्कठा**—सज्ञा स्त्री० [स० समुत्कण्ठा] तीव्र इच्छा। गहरी चाह या लालसा [को०]।

**समुत्क**—वि० [स०] अत्यत उत्सुक। लालायित [को०]।

**समुत्कट**—वि० [स०] १ उत्तुग। उन्नत। ऊँचा। २ अत्यन। अत्यधिक। प्रगाढ। ३ महान्। गौरवयुक्त। ४ अत्यधिक। अनगिनत [को०]।

**समुत्कर्ष**—सज्ञा पुं० [स०] १ आत्म उन्नति। अपना उत्कर्ष। अपनी सपन्नता या वृद्धि। २ गौरव। ३ (आभूषण आदि) उतार कर एक ओर रख देना [को०]।

**समुत्कीर्ण**—वि० [स०] १ भली भाँति उत्कीर्ण। २ छेदा हुआ। छिद्रित [को०]।

**समुत्क्रम**—सज्ञा पुं० [स०] १ ऊपर उठना। २ प्रतिबध को न मानना। सीमा का अतिक्रमण। हद पार करना [को०]।

**समुत्क्रोश**—सज्ञा पुं० [स०] १ कुरर नाम का पक्षी। २ जोर से चिल्लाना (को०)। ३ भारी कोलाहल (को०)।

**समुत्तोजक**—वि० [स०] उत्तेजना करनेवाला। जो उत्तेजित करे [को०]।

**समुत्तोजन**—सज्ञा पुं० [स०] उत्तेजित करने की क्रिया। बढावा या उत्तेजना देना [को०]।

**समुत्थ**—वि० [सं०] १ उठा हुआ। उन्नत। २ उत्पन्न। जात। घटित। उद्भूत।

**समुत्थान**—सज्ञा पुं० [स०] १ उठने की क्रिया। २ उत्पत्ति। ३ आरभ। ४ रोग का निदान या निर्णय। ५ पुनर्जीवन प्राप्त करना। जीवित होकर पुन उठना। रोग का पूरी तरह शात होना। ६ परिश्रम। उद्यम। उद्योग (को०)। ७ वृद्धि। विकास (को०)। ८ उत्तोलन। फहराना। जैसे,—ध्वजा, पताका (को०)। ९ (नाभि का) उभडना। फूलना (को०)।

**समुत्थापक** वि० [स०] जगाने या उठानेवाला। उत्थापन करनेवाला [को०]।

**समुत्थित**—वि० [स०] १ एक साथ उठा हुआ। जैसे,—समुत्थित धूलि। २ अत्यत ऊँचा। जैसे,—समुत्थित शैल शिखर। ३ एकत्रित। घनीभूत। जैसे,—बादल। ४ उद्यत। प्रस्तुत। ५ जो फूला या सूज आया हो। ६ जो स्वास्थ्यलाभ कर चुका हो। ७ उत्पन्न। जात। उद्भूत [को०]।

**समुत्पतन**—सज्ञा पुं० [स०] १ उडना। ऊपर उठना। २ प्रयत्न। कोशिश। चेष्टा [को०]।

**समुत्पत्ति**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ उत्पत्ति। पैदाइश। २. जड। मूल। ३ होना। घटित होना [को०]।

**समुत्पन्न**—वि० [स०] उत्पन्न। उद्भूत। घटित [को०]।

**समुत्परिवर्त्तिम**—सज्ञा पुं० [स०] कौटिल्य के अनुसार बेचे हुए पदार्थों मे चालाकी से दूसरा पदार्थ मिला देना [को०]।

**समुत्पाट**—सज्ञा पुं० [स०] १ उत्पाटन। उन्मूलन। २ अलगाव। पृथक्करण [को०]।

**समुत्पात**—सज्ञा पुं० [स०] सकट की सूचना देनेवाला उपद्रव [को०]।

**समुत्पादन**—सज्ञा पुं० [स०] उत्पादन करना। उत्पन्न करना। पैदा करना [को०]।

**समुत्पिज**[1]—वि० [स० समुत्पिञ्ज] अत्यत घबराया हुआ [को०]।

**समुत्पिज**[2]—सज्ञा पुं० १ इतस्तत अस्तव्यस्त या तितर बितर हुई सेना। २ भारी अव्यवस्था [को०]।

**समुत्पिजल, समुत्पिजलक**—वि०, सज्ञा पुं० [स० समुत्पिञ्जल, समुत्पिञ्जलक] दे० 'समुत्पिज' [को०]।

**समुत्पुसन**—सज्ञा पुं० [स०] अपनयन। दूरीकरण [को०]।

**समुत्सन्न**—वि० [स०] पूरी तौर से उच्छिन्न। विनष्ट। ध्वस्त [को०]।

**समुत्सर्ग**—सज्ञा पुं० [स०] १ छोडना। त्याग। २ देना। प्रदान करना। ३ मल त्याग। ४ उत्सर्ग करना। निर्गमन। जैसे,—पुवीर्य [को०]।

**समुत्सर्पण**—सज्ञा पुं० [स०] आगे बढना। अग्रसरण [को०]।

**समुत्सव**—सज्ञा पुं० [स०] वृहत् उत्सव। बडा जलसा [को०]।

**समुत्सारण**—सज्ञा पुं० [स०] १ भगाना। हाँक देना। २ पीछे लगना। दौडाना। ३ हाँके का शिकार करना [को०]।

**समुत्साह**—सज्ञा पुं० [स०] उत्साह या इच्छाशक्ति [को०]।

**समुत्सुक**—वि० [स०] १ अत्यत बेचैन। आतुर। अधीर। २ उत्कठित। उत्सुक। ३ दु खपूर्ण। शोकपूर्ण। खेदजनक [को०]।

समुत्सेध—संज्ञा पु० [सं०] १ ऊँचाई। उत्तुंगता। २ मोटाई। स्थूलता। ३ घनता। साद्रता (को०)।

समुदंत—वि० [सं० समुदन्त] १ कोर। तट या किनारे के ऊपर उठा २ जो उफनकर या उमडकर बहने की स्थिति मे हो।

समुद'—वि० [सं०] आनदयुक्त। हृष्ट। खुशी के साथ। प्रसन्नता युक्त। (को०)।

समुद(पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं० समुद्र प्रा० समुद्द] समुद्र।

समुदंत—वि० [सं०] खीचकर ऊपर लाया या उठाया हुआ। जैसे,—कूप से जल (को०)।

समुदय—संज्ञा पुं० [सं०] १ उठने या उदित होने की क्रिया। उदय। २ दिन। ३ युद्ध। समर। लडाई। ४ ज्योतिष मे लग्न। ५ सूर्य का उगना (को०)। ६ समुच्चय। ढेर (को०)। ७ समिश्रण। मेल (को०)। ८ राजस्व (को०)। ९ प्रयत्न। चेष्टा (को०)। १० सेना का पिछला भाग (को०)। ११ वित्त। धन (को०)। १२ उत्पत्ति का हेतु (को०)। १३ नक्षत्रोदय (को०)।

समुदय'—वि० समस्त। सब। कुल।

समुदाइ, समुदाई (पु)—संज्ञा पु० [सं० समुदाय] समूह। समुदाय। उ०—(क) राका पति षोडस उअहि तारागन समुदाइ। सकल गिरिन्ह दव लाइअ बिनु रवि राति न जाइ।—मानस, ७।७८। (ख) काटत बढहि सीस समुदाई।—मानस, ६।१०१।

समुदागम—संज्ञा पु० [सं०] पूर्ण ज्ञान (को०)।

समुदाचार—संज्ञा पु० [सं०] १ शिष्टाचार। भलमनसहत का व्यवहार। सदाचार। २ नमस्कार, प्रणाम आदि। अभिवादन। ३ आशय। अभिप्राय। मतलब।

समुदानय—संज्ञा पु० [सं०] एक साथ लाना। साथ लाना (को०)।

समुदाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। ढेर। २ झुड। गरोह। जैसे,—विद्वानो का समुदाय। ३ युद्ध। समर। लडाई। ४ पीछे की ओर को सेना। ५ उदय। ६ उन्नति। तरक्की। ७ सयोग (को०)। ८ शरीर के तत्वो का समाहार (को०)। ९ एक नक्षत्र (को०)।

समुदायवाचक—वि० [सं०] वस्तुओ के सग्रह को प्रकट करनेवाला शब्द (को०)।

समुदायशब्द—संज्ञा पु० [सं०] सग्रह की अभिव्यक्ति करनेवाला शब्द (को०)।

समुदायि(पु)—संज्ञा पु० [सं० समुदाय] झुड। समूह। गिरोह।

समुदाव—संज्ञा पुं० [सं० समुदाय] दे० 'समुदाय'। उ०—रची एक सब गुनिन को, बर बिरचि समुदाव।—केशव (शब्द०)।

समुदाहरण—संज्ञा पु० [सं०] १ घोषणा करना। २ निदर्शन। उदाहरण देना (को०)।

समुदाहार—संज्ञा पु० [सं०] बातचीत। वार्तालाप (को०)।

समुदित—वि० [सं०] १ उठा हुआ। २ उन्नत। ३ उत्पन्न। जात। ४ एकत्रित। सचित (को०)। ५ अन्वित। युक्त। सज्जित (को०)। ६ जो राजी या सहमत हो (को०)। ७ प्रचलित (को०)। ८ जिसमे बात की गई हो (को०)।

समुदीरण—संज्ञा पु० [सं०] १ बोलना। कहना। उच्चारण करना। २ दुहराना। बार बार करना।

समुदीर्ण—वि० [सं०] १ दीप्तिमान्। अत्यत चमकदार। २ उन्नत (को०)।

समुद्‌ग'—वि० [सं०] १ उगनेवाला। ऊपर चढनेवाला। २. पूर्णत व्यापक। ३ आवरण या ढक्कन से युक्त। ४ फलियो से युक्त (को०)।

समुद्‌ग'—संज्ञा पु० १ ढका हुआ सदूक। मजूषा। गोल पेटारी। २ कनी की नोक। ३ मदिर की गोल आकृति। ४ एक प्रकार की चमक (को०)।

समुद्‌गक—संज्ञा पुं० [सं०] १ ढक्कनदार पेटारी। २ एक प्रकार का छद (को०)।

समुद्‌गत—वि० [सं०] १ जो उदय हुआ हो। उदित। २ उत्पन्न। जात।

समुद्‌गम—संज्ञा पु० [सं०] १ उठान चढाई। २ उगना। निकलना। ३ जन्म (को०)।

समुद्‌गार—संज्ञा पु० [सं०] १ बहुत अधिक वमन होना। ज्यादा कै होना। २ भाषण। कथन (को०)। ३ ऊपर खीचना। उठाना (को०)।

समुद्‌गिरण—संज्ञा पु० [सं०] १ वमन करना। कै करना। २ उगली हुई वस्तु। ३ उठाना। ऊपर करना (को०)।

समुद्‌गीत'—संज्ञा पुं० [सं०] उच्च स्वर से गाया जानेवाला गीत (को०)।

समुद्‌गीत'—वि० १. उच्च स्वर से या भली भाँति गाया हुआ (को०)।

समुद्‌गीर्ण—वि० १ वमित। २ उक्त। कथित। ३ उठाया या ऊपर किया हुआ (को०)।

समुद्‌दड—वि० [सं० समुद्‌दण्ड] १ ऊपर उठाया हुआ। जैसे,—हाथ। २ (लाक्ष०) खौफनाक। भयानक (को०)।

समुद्देश—संज्ञा पु० [सं०] १ भली भाँति निर्देश करना। २. पूर्ण विवरण ३ अभिप्राय। ४ सिद्धात (को०)।

समुद्धत—वि० [सं०] १ ऊपर उठाया हुआ। उन्नीत। २ उत्तेजित। ३ घमडी। अभिमानी। ४ अशिष्ट। असभ्य। ढीठ। धृष्ट। ५. तीव्र। उग्र। प्रखर (को०)

समुद्धरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह अन्न जो वमन करने पर पेट से निकला हो। २ ऊपर की ओर उठाने, खीचने या बाहर निकालने की क्रिया। ३ उद्धार। ४ दूरीकरण। निवारण (को०)। ५ उच्छेद। उन्मूलन (को०)।

समुद्धर्त्ता—संज्ञा पु० [सं० समुद्धर्तृ] १. वह जो ऊपर की ओर उठाता या निकालता हो। २ उद्धार करनेवाला। ३ ऋण चुकानेवाला। कर्ज अदा करनेवाला।

समुद्धार—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'समुद्धरण'।

समुद्धृत—वि० [सं०] १ ऊपर उठाया हुआ। २ बचाया हुआ। मुक्त किया हुआ। ३. वमित। कै किया हुआ। ४. अपसा-

रित । हटाया हुआ । ५ विभक्त । ६ ग्रसित । ग्रस्त । ७ दुष्ट । उद्‌दड (को०) ।

**समुद्‌बोधन**—सज्ञा पु० [स०] १ भली भाँति जगाना । होश मे लाना । २ उत्साह देना । पुन जीवित करना (को०) ।

**समुद्भव**—सज्ञा पुं० [सं०] १ उत्पत्ति । जन्म । २ होम के लिये जलाई हुई अग्नि । ३ पुनरुद्धार । पुनरुज्जीवन (को०) ।

**समुद्भूत**—वि० [स०] जात । उत्पन्न (को०) ।

**समुद्भूति**—सज्ञा स्त्री० [स०] उत्पन्न होने की क्रिया । उत्पत्ति । जन्म ।

**समुद्भेद** सज्ञा पु० [स०] १ उत्पत्ति । २ विकास । ३ फाडकर निकलना (को०) । ४ व्यक्त होना (को०) ।

**समुद्यत**—वि० [स०] १ जो भली भाँति उद्यत हो । अच्छी तरह से तैयार । २ ऊपर को उठा या उठाया हुआ (को०) । ३ जो दिया गया हो । प्रदत्त (को०) । ४ किसी कार्य मे लगा हुआ । प्रवृत्त (को०) ।

**समुद्यम**—सज्ञा पु० [स०] १ उद्यम । चेष्टा । २ आरभ । शुरू । ३ ऊपर करना । उठाना । (को०) । ४ आक्रमण । ५ तैयारी (को०) ।

**समुद्योग**—सज्ञा पु० [स०] १ सक्रिय चेष्टा । पूरी तैयारी । २ प्रयोग । व्यवहार । ३ ( कई कारणो का ) समवेत होना ।

**समुद्र**—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जलराशि जो पृथ्वी को चारो ओर से घेरे हुए है और जो इस पृथ्वीतल के प्राय तीन चतुर्थाश मे व्याप्त है । सागर । अबुधि ।

विशेष—यद्यपि समस्त ससार एक ही समुद्र से घिरा हुआ है, तथापि सुभीते के लिये उसके पाँच बडे भाग कर लिए गए है, और इनमे से प्रत्येक भाग सागर या महासागर कहलाता है । पहला भाग जो अमेरिका से यूरोप और अफ्रिका के मध्य तक विस्तृत है, एटलाटिक समुद्र ( सागर या महासागर भी ) कहलाता है । दूसरा भाग जो अमेरिका और एशिया के मध्य मे है, पैसिफिक या प्रशात समुद्र कहलाता है । तीसरा भाग जो अफ्रिका से भारत और आस्ट्रेलिया तक है, इडियन या भारतीय समुद्र हिंद महासागर कहलाता है । चौथा समुद्र जो एशिया, यूरोप और अमेरिका, उत्तर तथा उत्तरी ध्रुव के चारो ओर है, आर्कटिक या उत्तरी समुद्र कहलाता है और पाँचवा भाग जो दक्षिणी ध्रुव के चारो ओर है, एटार्कटिक या दक्षिणी समुद्र कहलाता है । परतु आजकल लोग प्राय उत्तरी और दक्षिणी ये दो ही समुद्र मानते है, क्योकि शेष तीनो दक्षिणी समुद्र से बिलकुल मिले हुए हैं, दक्षिण की ओर उनकी कोई सीमा नही है । समुद्र के जो छोटे छोटे टुकडे स्थल मे अदर की ओर चले जाते है, वे खाडी कहलाते हैं । जैसे,—बगाल की खाडी । समुद्र की कम से कम गहराई प्राय बारह हजार फुट और अधिक से अधिक गहराई प्राय तीस हजार फुट तक है । समुद्र मे जो लहरे उठा करती है, उनका स्थल की ऋतुओ आदि पर बहुत कुछ प्रभाव पड़ता है । भिन्न भिन्न अक्षाशो मे समुद्र के ऊपरी जल का तापमान भी भिन्न होता है । कही तो वह ठढा रहता है, कही कुछ गरम और कही बहुत गरम । ध्रुवो के आसपास उसका जल बहुत ठढा और प्राय बरफ के रूप मे जमा हुआ रहता है । परतु प्राय सभी स्थानो मे गहराई की ओर जाने पर अधिकाधिक ठढा पानी मिलता है । गुण आदि की दृष्टि से समुद्र के सभी स्थानो का जल बिलकुल एक सा और समान रूप से खारा होता है । समुद्र के जल मे सब मिलाकर उन्तीस तरह के भिन्न भिन्न तत्व हैं, जिनमे क्षार या नमक प्रधान है । समुद्र के जल से बहुत अधिक नमक निकाला जा सकता है, परतु कार्यत अपेक्षाकृत बहुत ही कम निकाला जाता है । चद्रमा के घटने बढने का समुद्र के जल पर विशेष प्रभाव पडता है और उसी के कारण ज्वार भाटा आता है । हमारे यहाँ पुराणो मे समुद्र की उत्पत्ति के सबध मे अनेक प्रकार की कथाएँ दी गई हैं और कहा गया है कि सब प्रकार के रत्न समुद्र से ही निकलते है, इसी लिये उसे 'रत्नाकर' कहते हैं ।

पर्या०—समुद्र । अब्धि । अकूपार । पारावार । सरित्पति । उदन्वान् । उदधि । सिंधु । सरस्वान् । सागर । अर्णव । रत्नाकर । जलनिधि । नदीकात । नदीश । मकरालय । नीरधि । नीरनिधि । अबुधि । पाथोधि । निधि । इदुजनक । तिमिकोष । क्षीराब्धि । मित्रद्रु । वाहिनीपति । जलधि । गगाधर । तोयनिधि । दारद । तिमि । महाशय । वारिराशि । शैलशिविर । महीप्राचीर । कपति । पयोधि । नित्य । आदि आदि ।

२ किसी विषय या गुण आदि का बहुत बडा आगार । ३ बहुत बडी सख्या का वाचक शब्द (को० । ४ शिव का एक नाम (को०) । ५ चार की सख्या (को०) । ६ नक्षत्रो और ग्रहो की एक विशेष प्रकार स्थिति (को०) । ७ एक प्राचीन जाति का नाम ।

**समुद्रकटक**—सज्ञा पु० [स०] जलपोत । जहाज (को०) ।

**समुद्रकफ**—सज्ञा पुं० [सं०] समुद्रफेन ।

**समुद्रकाची**—सज्ञा स्त्री० [स० समुद्रकाञ्ची] पृथ्वी, जिसकी मेखला समुद्र है ।

**समुद्रकाता**—सज्ञा स्त्री० [स० समुद्रकान्ता] १ नदी, जिसका पति समुद्र माना जाता है और जो समुद्र मे जाकर मिलती है । २ असवरग । पृक्का (को०) ।

**समुद्रकुक्षि**—सज्ञा स्त्री० [स०] समुद्र का किनारा (को०) ।

**समुद्रग**[1]—वि० [स०] १ समुद्र की ओर जानेवाला । २ समुद्री कार्य करनेवाला (को०) ।

**समुद्रग**[2]—सज्ञा पुं० १ माँझी । २ समुद्री व्यापारी (को०) ।

**समुद्रगमन**—सज्ञा पु० [स०] समुद्र का किनारा (को०) ।

**समुद्रगा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नदी जो समुद्र की ओर गमन करती है । २ गगा का एक नाम ।

**समुद्रगामी**—वि० [स० समुद्रगामिन्] दे० 'समुद्र' ।

**समुद्रगुप्त**—सज्ञा पुं० [स०] गुप्त राजवंश के एक बहुत बडे, प्रसिद्ध वीर सम्राट् का नाम जिनका समय सन् ३३५ से ३७५ ई० तक माना जाता है।

विशेष—अनेक बडे बडे राज्यो को जीतकर गुप्त साम्राज्य हुगली से चबल तक और हिमालय से नर्मदा तक विस्तृत था। पाटलिपुत्र मे इनकी राजधानी थी, परतु अयोध्या और कौशाबी भी इनकी राजधानियाँ थी। इन्होने एक बार अश्वमेध यज्ञ भी किया था।

**समुद्रगृह** सज्ञा पुं० [स०] १ ग्रीष्म ताप से त्राण के लिये जल के बीच मे बना हुआ भवन। २ नहाने का कक्ष। स्नान-गृह [को०]।

**समुद्रचुलुक**—सज्ञा पु० [स०] अगस्त्य मुनि जिन्होने चुल्लुओ से समुद्र पी डाला था।

**समुद्रज**[1]—वि० [स०] समुद्र से उत्पन्न। समुद्रजात।

**समुद्रज**[2]—सज्ञा पुं० मोती, हीरा, पन्ना आदि रत्न जिनकी उत्पत्ति समुद्र से मानी जाती है।

**समुद्रझाग**—सज्ञा पु० [स०] समुद्रफेन।

**समुद्रतट, समुद्रतीर**—सज्ञा पुं० [स०] समुद्र का किनारा।

**समुद्रदयिता**—सज्ञा स्त्री० [स०] नदी। दरिया।

**समुद्रनवनीत**—सज्ञा पुं० [स०] १ अमृत। २ चद्रमा।

**समुद्रनवनीतक**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'समुद्रनवनीत'।

**समुद्रनेमि, समुद्रनेमी**—सज्ञा स्त्री० [स०] पृथ्वी।

**समुद्रपत्नी**—सज्ञा स्त्री० [स०] नदी। दरिया।

**समुद्रपर्यंत**—वि० [स० समुद्रपर्यन्त] जिसकी सीमा समुद्रतक हो। आसमुद्र [को०]।

**समुद्रपात**—सज्ञा पुं० [स० समुद्र + हि० पात (=पत्ता)] एक प्रकार की झाडदार लता जो प्राय सारे भारत मे पाई जाती है। समुदर का पत्ता। समुदरसोख।

विशेष—इसके डठल बहुत मजबूत और चमकीले होते है और पत्ते प्राय पान के आकार के होते है। पत्ते ऊपर की ओर हरे और मुलायम होते है। इन पत्तो मे एक विशेष गुण यह होता है कि यदि घाव आदि पर इनका ऊपरी चिकना तल रखकर बाँधा जाय, तो वह घाव सूख जाता है। और यदि नीचे का रोएँदार भाग रखकर फोडे आदि पर बाँधा जाय, तो वह पककर बह जाता है। बसत के अत मे इसमे एक प्रकार के गुलाबी रग के फूल लगते हैं जो नली के आकार के लबे होते है। ये फूल प्राय रात के समय खिलते है और इनमे से बहुत मीठी गध निकलती है। इसमे एक प्रकार के गोल, चिकने, चमकीले और हलके भूरे रग के फल भी लगते हे। वैद्यक के अनुसार इसकी जड बलकारक और आमवात तथा स्नायु सबधी रोगो को दूर करनेवाली मानी गई है, और इसके पत्ते उत्तेजक, चर्मरोग के नाशक और घाव को भरनेवाले कहे गए हैं।

**समुद्रफल**—सज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जो अवध, मध्य भारत आदि मे नदियो के किनारे और तर भूमि मे तथा कोकण मे समुद्र के किनारे बहुत अधिकता से पाया जाता है।

विशेष—यह प्राय ३० से ५० फुट तक ऊँचा होता है। इसकी लकडी सफेद और बहुत मुलायम होती हे और कुछ भूरी या काली होती है। इसके पत्ते प्राय तीन इच तक चौडे और दस इच तक लबे होते है। शाखाओ के अत मे दो ढाई इच के घेरे के गोलाकार सफेद फूल लगते हैं। फल भी प्राय इतने ही बडे होते है जो पकने पर नीच की ओर मे चिपट या चौपहल हो जाते है। वैद्यक के अनुसार यह चरपरा, गरम, कडवा और त्रिदोषनाशक होता हे तथा सन्निपात, भ्राति, सिर के रोग और भूतबाधा आदि को दूर करता है।

**समुद्रफेन**—सज्ञा पु० [स०] समुद्र के पानी का फेन या झाग जो उसके किनारे पर पाया जाता है और जिसका व्यवहार ओषधि के रूप मे होता है। समुदरफेन। समुदर झाग।

विशेष—समुद्र मे लहरे उठने के कारण उसके खारे पानी मे एक प्रकार का झाग उत्पन्न होता है जो किनारे पर आकर जम जाता है। यही झाग समुद्रफेन के नाम से बाजारो मे बिकता है। देखने मे यह सफेद रग का, खरखरा, हलका और जाली-दार होता है। इसका स्वाद, फीका, तीखा और खारा होता हे। कुछ लोग इसे एक प्रकार की मछलो की हड्डियो का पजर भी मानते है। वैद्यक के अनुसार यह कसैला, हलका, शीतल, सारक, रुचिकारक, नेत्रो को हितकारी, विष तथा पित्तविकार का नाशक और नेत्र तथा कठ आदि के रोगो को दूर करनेवाला होता है।

**समुद्रभव**—वि० [स०] जो समुद्र मे उत्पन्न हो। समुद्रजात [को०]।

**समुद्रभूकी**—सज्ञा स्त्री० [स० समुद्रभूकी] पुराणानुसार एक दानव का नाम।

**समुद्रमथन** सज्ञा पु० [स० समुद्रमन्थन] समुद्र को मथना।

**समुद्रमथन**—सज्ञा पु० [स०] १ सिंधु का मथन। समुद्रमथन। २ एक दैत्य का नाम [को०]।

**समुद्रमहिषी**—सज्ञा स्त्री० [स०] समुद्र की पत्नी। गगा नदी [को०]।

**समुद्रमालिनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] पृथ्वी, जो समुद्र को अपने चारो ओर माला की भाँति धारण किए हुए है।

**समुद्रमेखला**—सज्ञा स्त्री० [स०] पृथ्वी, जो समुद्र को मेखला के समान धारण किए हुए है।

**समुद्रयात्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] समुद्र के द्वारा दूसरे देशो की यात्रा।

**समुद्रयात्री**—वि० [स० समुद्रयात्रिन्] समुद्रयात्रा करनेवाला।

**समुद्रयान**—सज्ञा पु० [स०] १ समुद्र यात्रा। २ समुद्र पर चलने की सवारी। जैसे,—जहाज, स्टीमर आदि।

**समुद्रयायी**—वि० [स० समुद्रयायिन्] दे० 'समुद्रग' [को०]।

**समुद्रयोषित्**—सज्ञा स्त्री० [स०] सरिता। नदी [को०]।

**समुद्ररसना**—सज्ञा स्त्री० [स०] पृथ्वी।

**समुद्रलवण**—संज्ञा पु० [सं०] करकच नाम का लवण जो समुद्र के जल से तैयार किया जाता है। वैद्यक के अनुसार यह लघु, हृद्य, पित्तवर्धक, विदाही, दीपन, रुचिकारक और कफ तथा वात का नाशक माना जाता है।

**समुद्रवल्लभा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र की पत्नी, नदी [को०]।

**समुद्रवसना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

**समुद्रवह्नि**—संज्ञा पु० [सं०] वडवानल।

**समुद्रवास**—संज्ञा पु० [सं० समुद्रवासस्] अग्नि।

**समुद्रवासी**—संज्ञा पुं० [सं० समुद्रवासिन्] १ वह जो समुद्र मे रहता हो। २ वह जो समुद्र के तट पर रहता हो।

**समुद्रवेला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सागर की तरग। समुद्र की लहर। २ समुद्रतट। सागरतट। ३ ज्वार भाटा [को०]।

**समुद्र-व्यवहारी**—संज्ञा पु० [सं० समुद्रव्यवहारिन्] वह जो समुद्रयात्रा करके व्यापार करता है। समुद्री व्यापारी [को०]।

**समुद्रशुक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र की सीपी। समुद्रोत्पन्न सीपी।

**समुद्रसार**—संज्ञा पु० [सं०] मोती।

**समुद्रसुभगा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गगा।

**समुद्रशोष**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समुद्रपात'।

**समुद्रस्थली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जो समुद्र के तट पर था।

**समुद्रात**[1]—संज्ञा पुं० [सं० समुद्रान्त] १ समुद्र का किनारा। २ जातीफल। जायफल।

**समुद्रात**[2]—वि० जो समुद्र तक विस्तृत हो।

**समुद्राता**—संज्ञा स्त्री० [सं० समुद्रान्ता] १ दुरालभा। २ कपास। कर्पासी। ३ पृक्का। ४ जवासा। ५ पृथ्वी, जो समुद्र तक विस्तृत है (को०)।

**समुद्राबरा**—संज्ञा स्त्री० [सं० समुद्राम्बरा] पृथ्वी।

**समुद्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शमी। २ कचूर (को०)।

**समुद्राभिसारिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कल्पित देववाला जो समद्र-देव की सहचरी मानी जाती है।

**समुद्रायणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

**समुद्रारु**—संज्ञा पु० [सं०] १ कुभीर नामक जलजतु। २ सेतवध। ३ एक प्रकार की मछली जिसे तिमिगिल कहते है।

**समुद्रार्था**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

**समुद्रावरणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

**समुद्रावरोहण**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि। समाधि का एक ढग [को०]।

**समुद्रिय**—वि० [सं०] १ समुद्र सबधी। समुद्र का। २ समुद्र से उत्पन्न। समुद्रजात। ३ एक प्रकार का वृत्त (को०)।

**समुद्री**—वि० [सं० समुद्रिय] १ दे० 'समुद्रिय'। २ जो समुद्र की ओर से आता हो। जैसे,—वायु। ३ जो समुद्रयान द्वारा की जाय। जैसे,—यात्रा। ३. जलसेना सबधी।

**समुद्रीय**—वि० [सं०] समुद्र सबधी। समुद्र का। समुद्रिय।

**समुद्रोन्मादन**—संज्ञा पुं० [सं०] कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

**समुद्र्य**—वि० [सं०] दे० 'समुद्रीय' [को०]।

**समुद्वह**—वि० [सं०] १ श्रेष्ठ। उत्तम। बढिया। २ वहन करनेवाला। ३ नीचे ऊपर जानेवाला (को०)।

**समुद्वाह**—संज्ञा पुं० [सं०] १ विवाह। शादी। पाणिग्रहण। २ धारण करना। ऊपर उठाना (को०)।

**समुद्वाहित**—वि० [सं०] ऊपर उठाया हुआ या धारण किया हुआ।

**समुद्वेग**—संज्ञा पु० [सं०] १ घबडाहट की स्थिति। बेचैनी। २ डर। भय। त्रास [को०]।

**समुन्न**—वि० [सं०] १ आर्द्र। गीला। २ गदा। मलिन [को०]।

**समुन्नत**[1]—वि० [सं०] १ जिसकी यथेष्ट उन्नति हुई हो। खूब बढा हुआ। २ बहुत ऊँचा। ३ ऊपर उठाया हुआ (को०)। ४ गौरवान्वित (को०)। ५ अभिमानी। घमडी। गर्वयुक्त (को०)। ६ खरा। सच्चा। ७ जो आगे की ओर बढा या निकला हो।

**समुन्नत**[2]—संज्ञा पुं० वास्तु विद्या के अनुसार एक प्रकार का स्तभ या खभा।

**समुन्नति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ यथेष्ट उन्नति। काफी तरक्की। २ महत्व। बडाई। ३ उच्चता। ४. श्रेष्ठ पद या ओहदा। उच्च पद (को०)। ५ ऊपर की ओर करना या उठाना (को०)। ६ घमड। अभिमान (को०)।

**समुन्नद**—संज्ञा पु० [सं०] रामायण के अनुसार एक राक्षस का नाम।

**समुन्नद्ध**[1]—वि० [सं०] १ जो अपने आपको बडा पडित समझता हो। २ अभिमानी। घमडी। ३ उत्पन्न। उद्भूत। जात। ४ उन्नत। उच्छ्रित (को०)। ५ सूजा हुआ। फूला हुआ (को०)। ६ पूर्ण। पूरा (को०)। ७ विकृत। बुरे चेहरे मोहरे का (को०)। ८ बधनमुक्त। ९ सर्वोत्कृष्ट। सर्वश्रेष्ठ। सर्वप्रधान (को०)।

**समुन्नद्ध**[2]—संज्ञा पुं० प्रभु। स्वामी। मालिक।

**समुन्नमन**—संज्ञा पु० [सं०] उठाना। चढाना। जैसे, भौह का [को०]।

**समुन्नय**—संज्ञा पु० [सं०] १ प्राप्ति। लाभ। २ वृत्तात। घटना। ३ नतीजा। निष्कर्ष। ४ अनुमान [को०]।

**समुन्नयन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऊपर की ओर उठाने या ले जाने की क्रिया। २ प्राप्ति। लाभ।

**समुन्नाद**—संज्ञा पु० [सं०] एक साथ होनेवाली चिल्लाहट [को०]।

**समुन्नीत**—वि० [सं०] उन्नत किया हुआ। ऊपर किया हुआ [को०]।

**समुन्मीलन**—संज्ञा स० [सं०] १ खोलना या खुलना। जैसे,—फल की पंखुडियो या नेत्र की पलको का। २ फैलाना। ३ दिखाना। प्रदर्शन।

**समुन्मीलित**—वि० [स०] १ खोला हुआ। खुला हुआ। २ फैलाया हुआ। ३ दिखाया हुआ। प्रदर्शित [को०]।

**समुन्मूलन**—सज्ञा पु० [स०] जड़ से उखाड फेकना। बिल्कुल नष्ट कर देना [को०]।

**समुपकरण**—सज्ञा पु० [सं०] उपकरण। साधन। सामान। सामग्री। उ०—पार कर जीवन प्रलोभन, समुपकरण।—अपरा, पृ० २२।

**समुपक्रम**—सज्ञा पु० [स०] १ प्रारभ। शुरुआत। २ दवा शरू करना। आरभिक चिकित्सा [को०]।

**समुपगमन**—सज्ञा पु० [पुं०] लगाव। सपर्क। पहुँच [को०]।

**समुपचार**—सज्ञा पु० [स०] आदर सत्कार करना। ध्यान रखना या देना।

**समुपद्रुत**—वि० [स०] जिसे आक्रात किया गया हो। रौंदा हुआ [को०]।

**समुपनयन**—सज्ञा पु० [स०] पास ले जाना [को०]।

**समुपभुक्त**—वि० [स०] १ खाया हुआ। भोग किया हुआ। २ कृत मैथुन [को०]।

**समुपभोग** सज्ञा पु० [स०] उपभोग करना। व्यवहार मे लाना। २ मैथुन। सभोग। ३ खाना। भक्षण [को०]।

**समुपयुक्त**—वि० [स०] १ ठीक और वाजिब। उचित। उपयुक्त। २ भोगा हुआ। व्यवहृत। भुक्त [को०]।

**समुपवेश**—सज्ञा पु० [स०] १ विनोद। तोष। आनद। २ एक साथ बैठना। ३ आदर। सत्कार अभ्यर्थना [को०]।

**समुपवेशन**—सज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छी तरह बैठने की क्रिया। २ आसन (को०)। ३ अभ्यर्थना। ४ भवन। आवास। निवास।

**समुपष्टभ**—सज्ञा पुं० [स० समुपष्टम्भ] सहारा। आश्रय [को०]।

**समुपस्तभ** सज्ञा पु० [स० समुपस्तम्भ] आश्रय। भरोसा। सहारा।

**समुपस्था, समुपस्थान**—सज्ञा पुं० [स०] १ पहुँच। प्रवेश। २ निकटता। सामीप्य। ३ घटित होना। आ पडना। घटना [को०]।

**समुपस्थित**—वि० [स०] १. पहुँचा हुआ। उपस्थित। २ बैठा हुआ। ३ व्यक्त। जाहिर। ४ समय के अनूकूल। ५ हिस्से मे आया हुआ। जो आ पडा हो। प्राप्त। ६ सन्नद्ध। तैयार। ७ जिसका निश्चय कर लिया गया हो [को०]।

**समुपस्थिति**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ उपस्थिति। २ नजदीक होने का भाव। ३ पहुँच। ४ घटित होने की क्रिया [को०]।

**समुपहृत**—वि० [स०] खडित। जिसे काट दिया गया हो। जैसे,—समुपहृत सिद्धात [को०]।

**समुपह्वर**—सज्ञा पुं० [स०] शरण गृह। छिपने का स्थान। गुप्त स्थान [को०]।

**समुपागत**—वि० [सं०] पास आया या पहुँचा हुआ। प्राप्त [को०]।

**समुपार्जन**—सज्ञा पु० [स०] सम्यक् अर्जन करना। एक साथ प्राप्त करना [को०]।

**समुपेत**—वि० [स०] १ समवेत रूप से आगत। एकत्रित। २ पहुँचा हुआ। ३ सज्जित। युक्त। ४ आबाद। बसा हुआ [को०]।

**समुपेक्षक**—वि० [स०] ध्यान न देनेवाला। उपेक्षा करनेवाला [को०]।

**समुपोढ**—वि० [स० समुपोढ] १ उन्नत। उत्थित। उठा हुआ। २ बढा हुआ। वृद्धि प्राप्त। ३ आकृष्ट। ४ नियत्रित। रोका हुआ। ५ आरभ किया हुआ [को०]।

**समुपोषक**—वि० [स०] जो उपवास करता हो। उपवासी [को०]।

**समुल्लसित**—वि० [स०] १ जो चमक रहा हो। उद्भासित। आभायुक्त। सुदर। कातिमान्। २ जो खेल रहा हो। क्रीडा करनेवाला। आनद मनाता हुआ [को०]।

**समुल्लास** सज्ञा पु० [स०] [वि० समुल्लसित] १ उल्लास। आनद। प्रसन्नता। खुशी। २ ग्रथ आदि का प्रकरण या परिच्छेद।

**समुल्लेख**—सज्ञा पु० [स०] १ उन्मूलन। उच्छेद। उत्पाटन। २ उत्खनन। उल्लेखन। ३ चर्चा। जिक्र।

**समुहाँ**[१]—वि० [स० सम्मुख, प्रा० सम्मुह, हिं० सामुहे] १ सामने का। आगे का। २ सामना। सीधा।

**समुहा**[२]—क्रि० वि० सामने। आगे। उ०—मरिबे को साहसु करै बढै बिरह की पीर दौरति है समुही ससी सरसिज सुरभि समीर।—स० सप्तक, पृ० १०६।

**समुहाना**†—क्रि० अ० [स० सम्मुख, पु०हिं० सामुहे] सामने आना। समुख होना। उ०—सबही त्यो समुहाति छिनु चलति सबनु दै पीठि। वाही त्यौ ठहराति यह कबिल नबी लौ दीठि।—बिहारी (शब्द०)।

**समुहैं**—क्रि० वि० [हिं०] सामने। आगे।

**समूचा**—वि० [स० समुच्चय] [स्त्री० समूची] समग्र। सपूर्ण। सब का सब। कुल।

**समूढ**—वि० [स० समूढ] १ ढेर लगाया हुआ। २ एकत्र किया हुआ। सचित। सगृहीत। ३ पकडा हुआ। ४ भोगा हुआ। भुक्त। ५ जिसका विवाह हो चुका हो। विवाहित। ६ जो अभी उत्पन्न हुआ हो। सद्य जात। ७ सगत। ठीक। ८ ढँका हुआ। आवृत (को०)। ९ सहित। युक्त (को०)। ११ वक्र। झुका हुआ (को०)। १२ निर्मल। स्वच्छ (को०)। १३ सचालित किया हुआ। जिसका नेतृत्व किया गया हो (को०)।

**समूर**[१]—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का मृग। शबर या साबर नामक हिरन।

**समूर**[२]—वि० [स० समूल] दे० 'समूल'।

**समूरक**—सज्ञा पुं० [स०] स० 'समूर'[१]।

**समूरु, समूरुक**—सज्ञा पु० [स०] समूर मृग। सबर मृग।

समूत—वि० [सं०] १ जिसने मूत या जल दिया हो। २ जिसका कोई मूत्र। मूत्र संबंधी।

समूत'—वि० वि० जल सहित। मूत्र सहित। जैसे,—किसी का कार्य समूत नष्ट हो जाना।

समूह—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ही प्रकार की बहुत सी चीजों का ढेर। राशि। २ समुदाय। झुंड। गरोह।

समूहकर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समूहकार' [को०]।

समूहकार—संज्ञा पुं० [सं० समूहकार] १ मालिया नामक फूल। मालती। २ एक विवाह (को०)।

समूहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक साथ मिलाना। २ संग्रह। राशि। ३ धनुष पर बाण चढ़ाना [को०]।

समूहन—वि० १ पुंजीकरवाना। २ एकत्र करनेवाला [को०]।

समूहनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भाड़। बुहारी।

समूह हितवादी—संज्ञा पुं० [सं०] जनता के हित के साधन में तत्पर संस्थाओं। जनता के प्रतिनिधि।

विशेष—यह कहा जा चुका है कि किसी स्थान का शासन धर्मार्थ संस्थाओं और पवित्र समूह हितवादियों के हाथ में देना चाहिए।

समूह्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ की अग्नि। २ यज्ञाग्नि रखने के लिये बना हुआ स्थान [को०]।

समूह्य'—वि० १ यज्ञ करने के योग्य। ऊहा करने के योग्य। २ पूजने योग्य (को०)।

समृति—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] दे० 'स्मृति'। उ०—समृत पुराणों कथा इतिहादिक मतनेक।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० २६।

यौ०—समृतिकार ऐ = स्मृतिकार। स्मृतियों का जानकार। उ०—सीता माती स्याह लिए जग मांझन जेताह। काजी मुल्ला लिए लिए फरे बिन समृतवेताह।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० २८।

समृति—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] दे० 'स्मृति'—उ०—पढ़न सुनन गुन गिनम, धारन, मनति, पुरान।—मति० ग्र०, पृ० ३६।

समृद्ध—वि० [सं०] १ जिसके पास बहुत अधिक संपत्ति हो। धनी। धनवान। २ उत्पन्न। जात। ३ प्रसन्न। भाग्यवान्। ४ भरा पूरा। बढ़ा चढ़ा (को०)। ५ फलयुक्त। ६ सफल। पूरा (को०)। ७ पूर्णतः विकसित (को०)। ८ प्रधान। मुख्य। प्रमुख (को०)। ९ गतिशील (को०)।

समृद्ध'—संज्ञा पुं० महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

समृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बहुत अधिक संपन्नता। ऐश्वर्य। संपत्ति। २ हृष्टपुष्टता। सबलता। ३ प्रभाव। ४ बहुलता। प्रचुरता (को०)। ५ प्रधानता। प्रमुखता। सर्वोपरित्व (को०)। ६ अभिवृद्धि। वृद्धि। बढ़ती।

समृद्धी'—संज्ञा पुं० [सं० समृद्धिन्] १ वह जो बार बार अपनी समृद्धि बढ़ाता रहता हो। २ उन्नतिशील। संपन्न व्यक्ति। भरा पूरा (को०)।

समृद्धी'—संज्ञा स्त्री० [सं० समृद्धि] दे० 'समृद्धि'।

समेटना—क्रि० स० [हिं० सिमटना] १ बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा करना। २ अपने ऊपर लेना। जैसे,—किसी का भार समेटना। ३ बिछौना आदि लपेटना या तह करके रखना।

समेड़ो—संज्ञा स्त्री० [सं० समेडो] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

समेत'—वि० [सं०] १ संयुक्त। मिला हुआ। २ साथ साथ आया हुआ। सह आगत (को०)। ३ निकट आया हुआ। पहुँचा हुआ (को०)। ४ सज्जित। युक्त (को०)। ५ संपृष्ट। संपर्कित। भिड़ा हुआ (को०)। ६ स्वीकृत। सहमत (को०)।

समेत'—अव्य० सहित। साथ।

समेत'—संज्ञा पुं० पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

समेरु—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार मेरु के अंतर्गत एक पर्वत का नाम।

समेधन—संज्ञा पुं० [सं०] विकास। वृद्धि (को०)।

समेधित—वि० [सं०] १ अत्यधिक बढ़ा हुआ। प्रचुर। बहुत। प्रभूत। २ शक्तिशाली। मजबूत। ३ जुटा हुआ। मिला हुआ। संयुक्त (को०)।

समै, समैया, समो पु०—संज्ञा पुं० [सं० समय] काल। अवसर। मौका। दे० 'समय'। उ०—(क) तुलसी निज्ह नरिन तेऊ भूरिभाग जेऊ मुनि कै सुचित तेहि समै समैहै।—तुलसी ग्र०, पृ० ३४२। (ख) देहि गारि लहकौरि समौ सुख पावहिं।—तुलसी ग्र०, पृ० ५६।

समोखना पु०—क्रि० स० [सं० सम्बोधन, सन्तोषण, पु० हिं० समोख] समझा कर कहना। जोर देकर कहना।

समोद—वि० [सं०] समुद। आनंदित। प्रसन्न। उ०—कुछ दिन रह गृह तू फिर समाद, बैठी नानी की स्नेह याद।—अपरा, पृ०, १८३।

समोदक'—वि० [सं०] जिसमें जल आधी मात्रा में हो। जिसमें आधा जल मिला हो (को०)।

समोदक'—संज्ञा पुं० मट्ठा। घोल (को०)।

समोध पु०—संज्ञा पुं० [सं० सम्बोध] संबोध। ज्ञान। उ०—रुधी मु गाय वन व्याघ्र क्रोध। आवी मु राज राजन समोध। कुरुलाय करिय करना सुपेन। छड़ाय राज राजन बलेन।—पृ० रा० १।१९८।

समोधना पु०—क्रि० स० [सं० सम्बोधन] बोध देना। समझाना बुझाना। प्रबोधन करना। ढाढस बंधाना। उ०—नद समोधत ताकौं चित्त। सब अरिष्ट बल होनुह मित्त।—नंद० ग्र०, पृ० २३६।

समोना पु'—क्रि० स० [हिं० समाना] १ समन्वित करना। एक में करना या मिलाना। २ समेटना। उ०—पूरन दया सद्गुरु

की होई। वश आपु मे लेहि समोई।—कबीर सा०, पृ० ९५५।

समोना(पु)[२]—क्रि० अ० [स० समुद] आनदित होना। प्रसन्न होना। अनुरक्त होना। उ०—जोति वरै माहेव के निसु दिन तकि तकि रहत समोई।—कबीर० श०, भा० ३, पृ० ६।

समोसा—सज्ञा पुं० [फा० सबोसह्] एक प्रकार का प्रसिद्ध व्यजन। सिंघाडा। तिकोना।

विशेष—यह मैदे से बनाया जाता है। मैदा गूँथ कर छोटी पतली रोटी की तरह बेल लेते है। इसी बेली हुई रोटी को बीच से काट कर दो अर्द्धवृत्त की शक्ल मे कर लेते हैं। फिर एक हिस्सा लेकर उसके बीच मसालेदार आलू मटर आदि भरकर तिकोने के आकार मे लपेट लेते है और घी या तेल मे छान लेते हे। यह नमकीन और मीठा दोनो प्रकार का बनाया जाता है।

समोह—सज्ञा पुं० [स०] समर। युद्ध। लडाई।

समौ पे—सज्ञा पु० [स० समय, पु हि० समउ] दे० 'समय'।

सर्मारिया†—वि० [हि० सम + उमरिया] बराबर उम्रवाला। समवयस्क।

सम्मत्रण—सज्ञा पु० [स० सम्मन्त्रण] राय लेना। मत्रणा करना [को०]।

सम्मत्रणीय—वि० [स० सम्मन्त्रणीय] दे० सम्मत्रव्य'।

सम्मत्रव्य—वि० [स० सम्मन्त्रव्य] १ मत्रणा करने योग्य। २ भली भाँति मनन करने योग्य।

सम्मत्रित—वि० [स० सम्मन्त्रित] अच्छी तरह विचार किया हुआ। भली भाँति समझा बूझा हुआ [को०]।

सम्म—सज्ञा पुं० [अ०] विष। गरल [को०]।

सम्मग्न—वि० [स०] पूर्णतः निमग्न। डूबा हुआ। तल्लीन। खोया हुआ [को०]।

सम्मत[१]—सज्ञा पु० [स०] १ राय। समति। सलाह। २ अनुमति। ३ धारणा [को०]। ४ सावर्णि मनु का एक पुत्र (को०)।

सम्मत[२]—वि० १ जिसकी राय मिलती हो। सहमत। अनुमत। २ पसद। प्रिय (को०)। ३ सोचा विचारा हुआ (को०)। ४ समान। तुल्य (को०)। ५ समानित। प्रतिष्ठित (को०)। ६ युक्त। सहित (को०)।

सम्मति'—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सलाह। राय। २ अनुमति। आदेश। अनुज्ञा। ३ मत। अभिप्राय। ४ सम्मान। प्रतिष्ठा। ५ इच्छा। वासना। ६ आत्मबोध। आत्मज्ञान। ७ सहमति। समर्थन (को०)। ८ प्रेम। स्नेह (को०)। ९ एक नदी का नाम (को०)।

सम्मति[२]—वि० [स० सम मति] समान मति या एक राय का।

सम्मत्त—वि० [स०] १ मतवाला। नशे मे धुत। २ जिसके गडस्थल से मद बहता हो (हाथी)। ३ जो आनदातिरेक से मस्त हो। आनदविह्वल (को०)।

सम्मद'—सज्ञा पुं० [स०] १ हर्ष। आमोद। आह्लाद। २ एक ऋषि (को०)। ३ एक प्रकार की मछली।

विशेष—विष्णुपुराण मे लिखा है कि यह मछली अधिक जल मे रहती है और बहुत बडी होती है। इसके बहुत बच्चे होते हैं।

सम्मद[२]—वि० सुखी। आनदित। हर्षयुक्त। प्रसन्न।

सम्मदो—वि० [स० सम्मदिन] आनदयुक्त। प्रसन्न [को०]।

सम्मन—सज्ञा पुं० [अ० समन्स] अदालत का वह सूचनापत्र या आदेश पत्र जिसमे किसी को निर्दिष्ट समय पर अदालत मे उपस्थित या हाजिर होने की सूचना या आदेश लिखा रहता है। तलबीनामा। इत्तिलानामा। आह्वानपत्र।

क्रि० प्र०—आना।—देना।—निकलना।—निकलवाना।—जारी कराना।—जारी होना।—तामील होना।—तामील कराना।

सम्मर(पु)[१]—सज्ञा पु० [स० स्मर] दे० 'स्मर'। उ०—छुटि समाधि ऋषि नैन उघारे। अति सकोपि सम्मर उर मारे।—ह० रासो, पृ० २७।

सम्मर(पु)—सज्ञा पुं० [स० समर] युद्ध। रण। लडाई।

सम्मर्द—सज्ञा पु० [सं०] १ युद्ध। लडाई। २ समूह। भीड। ३ परस्पर का विवाद। लडाई झगडा। ४ रगड। घिसना। घर्षण (को०)। ५ कुचलना। रौदना (को०)। ६ (लहरो की) टक्कर या मुठभेड।

सम्मर्दन—सज्ञा पुं० [स०] १ भली भाँति मर्दन करने का व्यापार। रौदना। २ वसुदेव के पुत्रो मे एक पुत्र। ३ रगडना। घिसना। सघर्षण (को०)। ४ लडाई। युद्ध (को०)। ५ वह जो भली भाँति मर्दन करता हो। अच्छी तरह मर्दन करनेवाला।

सम्मर्दी—सज्ञा पुं० [स० सम्मर्दिन्] १ भली भाँति मर्दन करनेवाला। २ रगडने या घिसनेवाला।

सम्मर्शन—सज्ञा पु० [सं०] थपथपाना। सहलाने की क्रिया [को०]।

सम्मर्शी—वि० [स० सम्मर्शिन्] भले बुरे, सत् असत् का निर्णय कर सकनेवाला [को०]।

सम्मर्ष—सज्ञा पुं० [स०] मर्ष। सहन। धैर्य।

सम्महा—सज्ञा पु० [स० शुष्मा] अग्नि। आग। पावक। (डि०)।

सम्मा—सज्ञा स्त्री० [स०] सख्या, आकार आदि की तुल्यता या समानता। २ एक छद का नाम (को०)।

सम्मातृ—वि० [स०] जिसकी माता पतिव्रता हो। सती माता वाला।

सम्मातुर—वि० [सं०] सती साध्वी माता वाला। सन्मातुर [को०]।

सम्माद—सज्ञा पुं० [स०] १ नशा। मद। २ उन्माद। पागलपन।

सम्मान'—सज्ञा पुं० [स०] १ समादर। इज्जत। मान। गौरव। प्रतिष्ठा। २ माप। मान (को०)। ३ तुलना। समानता (को०)।

सम्मान[२]—वि० १ मान सहित। २ जिसका मान पूरा हो। ठीक मानवाला।

**सम्मूर्छनोद्भव**—सज्ञा पुं० [स० सम्मूर्च्छनोद्भव] मछली, नक्र आदि जलजतु [को०]।

**सम्मूर्छित**—वि० [स० सम्मूर्च्छित] १. चेतनाहीन। बेहोश। २ घनीभूत। गाढा। ३ मिलाया हुआ। मिश्रित [को०]।

**सम्मृत**—वि० [सं०] जिसमे बिलकुल जान न हो। बेजान। मृत [को०]।

**सम्मृष्ट**—वि० [सं०] १ जिसका सशोधन भली भाँति हुआ हो। २ अच्छी तरह साफ किया हुआ। ३ भली भाँति झाडा बुहारा हुआ।

**सम्मेघ**—सज्ञा पुं० [सं०] वह मौसम जिसमे बादल घिर आए हो। घिरी घटाओ वाला दिन। मेघाच्छन्न दिन [को०]।

**सम्मेत, सम्मेद**—सज्ञा पु० [स०] एक पर्वत का नाम।

**सम्मेलन**—सज्ञा पुं० [स०] १. मनुष्यो का किसी निमित्त एकत्र हुआ समाज। २. जमावडा। जमघट। ३ मेल। मिलाप। सगम। ४ मिश्रण (को०)।

**सम्मोचित**—वि० [सं०] छोडा हुआ। मुक्त [को०]।

**सम्मोद**—सज्ञा पुं० [स०] १ प्रीति। प्रेम। २ हर्ष। प्रसन्नता। आनद। ३ सुगध। महक (को०)।

**सम्मोदिक**—सज्ञा पुं० [सं०] साथी। सहचर [को०]।

**सम्मोह**—सज्ञा पुं० [सं०] १ मोह। प्रेम। २ भ्रम। सदेह। ३ मूर्च्छा। बेहोशी। ४ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे एक तगण और एक गुरु होता है। ५ घबराहट। अव्यवस्था (को०)। ६ अज्ञान। मूर्खता (को०)। ८ आकर्षण। वशीकरण (को०)। ९ सग्राम। कोलाहल (को०)। १० ज्योतिष मे एक विशेष ग्रह योग (को०)।

**सम्मोहक**—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो मोह लेता हो। मोहक। लुभावना। २ एक प्रकार का सन्निपात ज्वर, जिसमे वायु अति प्रबल होती है। इसके कारण शरीर मे वेदना, कप, निद्रानाश आदि होता है। ३ अचेत करनेवाला। सज्ञाहीन करनेवाला (को०)।

**सम्मोहन**[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ मोहित करने की क्रिया। मुग्ध करना। २ वह जिसमे मोह उत्पन्न होता हो। मोहकारक। ३ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु को मोहित कर लेते थे। ४ कामदेव के पाँच बाणो मे एक बाण का नाम।

**सम्मोहन**[2]—वि० दे० 'सम्मोहक'।

**सम्मोहनी**—सज्ञा स्त्री० [सं०] माया [को०]।

**सम्मोहित**—वि० [स०] १ वशीभूत। वश मे किया हुआ। २ घबडाया हुआ। ३ पथभ्रष्ट। हतबुद्धि। ४ अचेत किया हुआ। बेहोश (को०)।

**सम्यक्**[1]—सज्ञा पुं० [सं०] समुदाय। समूह।

**सम्यक्**[2]—वि० १ पूरा। समस्त। सब। २ साथ जाने या रहनेवाला (को०)। ३ सही। युक्त। ठीक। उचित (को०)। ४ शुद्ध। सत्य। यथार्थ (को०)। ५ सुहावना। रुचिकर (को०)। ६ एकरूप (को०)।

**सम्यक्**[3]—क्रि० वि० १ सब प्रकार से। २ अच्छी तरह। भलीभाँति। उचित रूप से। सही ढग से। ३ स्पष्ट रूप से (को०) ४ सम्मानपूर्वक। ससम्मान (को०)। ५ यथार्थत। वस्तुत। सचमुच (को०)।

**सम्यक्कर्मात**—सज्ञा पु० [स० सम्यक्कर्मान्त] सत्कार्य। अच्छा काम। सत्कम [को०]।

**सम्यक्चारित्र**—सज्ञा पु० [स०] जैनियो के अनुसार धर्मत्रय मे से एक धर्म। बहुत ही धर्म तथा शुद्धतापूर्वक आचरण करना।

**सम्यक्ज्ञान**—सज्ञा पु० [स०] जैनियो के धर्मत्रय मे से एक। न्याय-प्रमाण द्वारा प्रतिष्ठित सात या नौ तत्त्वो का ठीक ठीक और पूरा ज्ञान।

**सम्यक् दर्शन**—सज्ञा पु० [सं०] जैनियो के अनुसार धर्मत्रय मे से एक। रत्नत्रय, सातो तत्वो और आत्मा आदि मे पूरी पूरी श्रद्धा होना।

**सम्यक्दर्शी**—सज्ञा पुं० [स० सम्यक्दर्शिन्] वह जिसे सम्यक्दर्शन प्राप्त हो।

**सम्यक्दृष्टि**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सम्यक्दर्शन' [को०]।

**सम्यक्वृत्त**—सज्ञा स्त्री० [स०] कर्तव्य का ठीक ठीक पालन। अनवरत अभ्यास या उद्योग [को०]।

**सम्यक्पाठ**—सज्ञा पु० [स०] शुद्ध उच्चारण। ठीक ठीक पढना [को०]।

**सम्यक्प्रणिधान**—सज्ञा पुं० [स०] प्रगाढ समाधि [को०]।

**सम्यक्प्रयोग**—सज्ञा पुं० [स०] उचित या उपयुक्त उपयोग। ठीक प्रयोग करना [को०]।

**सम्यक्प्रवृत्ति**—सज्ञा स्त्री० [स०] इद्रियो की उचित प्रवृत्ति [को०]।

**सम्यक्प्रहाण**—सज्ञा पु० [स०] ठीक प्रयत्न। उचित चेष्टा। (बौद्ध)।

**सम्यक्श्रद्धान**—सज्ञा पु० [सं०] ठीक विश्वास। उचित श्रद्धा [को०]।

**सम्यक् सबुद्ध**—सज्ञा पुं० [स० सम्यक् सम्बुद्ध] [सज्ञा स्त्री० सम्यक् सबुद्धि] १ वह जिसे सब बातो का पूरा और ठीक ज्ञान प्राप्त हो। २ बुद्ध का एक नाम।

**सम्यक्सबोध**—सज्ञा पुं० [स० सम्यक् सम्बोध] एक बुद्ध का नाम।

**सम्यक्समाधि**—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्धो के अनुसार एक प्रकार की समाधि।

**सम्यक्स्थिति**—सज्ञा स्त्री० [स०] साथ साथ रहने की स्थिति।

**सम्यक्स्मृति**—सज्ञा स्त्री० [स०] ठीक ठीक स्मरण। सही स्मृति [को०]।

**सम्यगवबोध**—सज्ञा पु० [स०] उचित बोध। ठीक ज्ञान। सही समझ [को०]।

**सम्यगाजीव**—सज्ञा पु० [स०] उचित रहन सहन।

**सम्याना**[1]—सज्ञा पु० [फा० शामियाना] दे० 'शामियाना'।

**सम्यीची**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ प्रशसा। स्तुति। २ हरिनी। मृगी [को०]।

सम्रथ(पु)—वि० [स० समर्थ, हिं० समरथ] दे० 'समर्थ'।

सम्राज्ञी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सम्राट् की पत्नी। २ साम्राज्य की अधीश्वरी।

सम्राट्—सज्ञा पुं० [स० सम्राज्] वह बहुत बड़ा राजा जिसके अधीन बहुत से राजा महाराज आदि हो और जिसने राजसूय यज्ञ भी किया हो। महाराजाधिराज। शाहशाह।

सम्हरना, सम्हलना†—क्रि० अ० [हिं० सँभलना] दे० 'सँभलना'।

सम्हार, सम्हाल†—सज्ञा स्त्री० [सं० सम्भार] दे० 'सँभाल'।

सम्हारना, सम्हालना†—क्रि० स० [स० सम्भार] दे० 'सँभालना'। उ०—(क) हीरा जनम दियौ प्रभु हमकौ दीनी बात सम्हार।—सूर०, १।१६६। (ख) आनँद उर अचल न सम्हारति सीस सुमन बरपावति।—सूर०, १०।२३।

सय(पु)—सज्ञा पु० [स० शत, प्रा० सय] दे० 'शत'। उ०—दिन दिन सय गुन भूपति भाऊ। देखि सराह महा मुनिराऊ।—मानस, १।३६०।

यौ०—सयगुन = सौगुना।

सयन[1]—सज्ञा पु० [स०] १ बधन। २ विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

सयन[2]—सज्ञा पु० [स० शयन] १ शयन करने का आसन। बिस्तर। उ०—निज कर राजीवनयन पल्लव-दल रचित सयन प्यास परस्पर पियूष प्रेम पान की।—तुलसी (शब्द०)। २ लेटने की क्रिया। सोने की क्रिया। उ०—सयन करहु निज निज गृह जाई।—मानस, ६।१४।

सयन(पु)[3]—सज्ञा स्त्री० [स० सैन्य] सेना। वाहिनी। सैन्य। उ०—तट कालिंद्री तहँ बिमल करि मुकाम नृपराज। सथ्थ सयन सामत भर सूर जु आए साज।—पृ० रा०, ६१।१३५।

सयल(पु)—सज्ञा पु० [स० शैल] पर्वत। शिखर। दे० 'शैल'। उ०—गहि सयल तेहि गढ पर चलावहि जहँ सो तहँ निसिचर हए।—मानस, ६।४८।

सयान(पु)[1]—सज्ञा पुं० [हिं० सयानापन] दे० 'सयानापन'। उ०—आई गौने कालि ही, सीखी कहा सयान। अब ही तैं रूसन लगी, अब ही तैं पछितान।—मतिराम (शब्द०)।

सयान[2]—वि० [स० सज्ञान] ज्ञानवान्। कुशल। चतुर। जिसे जानकारी हो। चालाक। उ०—सोइ सयान जो परधन हारी। जो कर दभ सो बड आचारी।—मानस, ७।१८।

यौ०—सयानपन = चतुरता या चालाकी।

सयानप(पु)—सज्ञा पु० [हिं० सयान+प (प्रत्य०)] दे० 'सयानापन'। उ०—(क) हरि तुम बलि को छलि कहा लीन्यौ। बाँधन गए बँधाए आपुन कौन सयानप कीन्यौ।—सूर०, ८।१५। (ख) अति सूधो सनेह को मारग है जहँ नेंकु सयानप बाँक नहीं।—घनानद, पृ० ८६।

सयानपत(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० सयान+पत (प्रत्य०)] चालाकी। धूर्तता।

सयानपन—सज्ञा पुं० [हिं० सयान+पन (प्रत्य०)] १ सयाना होने का भाव। २ चतुरता। बुद्धिमानी। होशियारी। ३ चालाकी। धूर्तता।

सयाना[1]—वि० [स० सज्ञान] [वि० स्त्री० सयानी] १ अधिक अवस्थावाला। वयस्क। जैसे,—अब तुम लडके नही हो, सयाने हुए। उ०—भली बुद्धि तेरै जिय उपजी, बडी बैस अब भई सयानी। सूर०, १०।३६५। २ बुद्धिमान्। चतुर। होशियार। उ०—और काहि विधि करौ तुमहिं तैं कौन सयानो।—सूर०, १०।४६२। ३ चालाक। धूर्त।

सयाना[2]—सज्ञा पु० [स०] १ बडा बूढा। वृद्ध पुरुष। २ वह जो झाड-फूँक करता हो। जतर मतर करनेवाला। ओझा। ३ चिकित्सक। हकीम। ४ गाँव का मुखिया। नवरदार।

सयानाचारी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सयाना+चार (प्रत्य०)] वह रसूम जो गाँव के मुखिया को मिलता है।

सयावक—वि० [स०] लाक्षारजित। जावकयुत (को०)।

सयूथ्य—सज्ञा पुं० [स०] वह जो समान समूह, श्रेणी या वर्ग का हो (को०)।

सयोग—सज्ञा पुं० [स०] मेल। मिलाप। सयोग। सगम (को०)।

सयोनि[1]—वि० [स०] १ जो एक ही योनि से उत्पन्न हुए हो। २ एक ही जाति या वर्ग आदि के।

सयोनि[2]—सज्ञा पुं० १ इद्र का एक नाम। २ सहोदर भ्राता। सगा भाई (को०)। ३ सुपारी आदि काटने का सरौता (को०)।

सयोनिता—सज्ञा स्त्री० [स०] सयोनि होने का भाव या धर्म।

सयोनीय पथ—सज्ञा पुं० [स०] खेतो मे जानेवाला मार्ग।

सयोषण—वि० [स०] स्त्रियो से युक्त। स्त्रियो के साथ (को०)।

सरग[1]—सज्ञा पु० [स० सरङ्ग] १ चौपाया। चतुष्पद जतु। २ चिडिया। पक्षी। ३ एक प्रकार का मृग। सारग (को०)।

सरग[2]—वि० १ अनुनासिक युक्त। सानुनासिक। २ वर्ण या रगयुक्त। रगीन (को०)।

सरजाम—सज्ञा पु० [फा०] दे० 'सरअजाम'।

सरड—सज्ञा पु० [स० सरण्ड] १ पक्षी। चिडिया। २ कामुक या लपट व्यक्ति। ३ कृकलास। ४ धूर्त या खल व्यक्ति। ५ एक प्रकार का आभूषण (को०)।

सरडर—वि० [अ० सरडर] जिसने अपने को दूसरे के हवाले किया हो। जिसने दूसरे के समुख आत्मसर्मपण किया हो। उपस्थित। हाजिर। जैसे,—उनपर गिरफ्तारी का वारट था, सोमवार को अदालत मे सरडर हो गए।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सर[1]—सज्ञा पु० [स० सरस्] १ बडा जलाशय। ताल। तालाब। २ गमन। गति (को०)। ३ तीर। बाण। उ०—सत सत सर मारे दस भाला।—मानस, ६।८२। ४ जमा हुआ दूध। दही का चक्का (को०)। ५ नमक (को०)। ६ लडी। हार। माला (को०)। ७ झरना। जलप्रपात

८ जल। सलिल (को०)। ९ वायु (को०)। १० छंद मे लघु मात्रा (को०)।

**सर[३]**—वि० १ गतिशील। गमनशील। २ रेचन करनेवाला। रेचक।

**सर[४]†**—सज्ञा पु० [स० शर] दे० 'शर'। उ०—कागज गरे मेघ मसि खूटी सर दौ लागि जरे। सेवक सूर लिखै ते आधौ पलक कपाट अरे।—सूर (शब्द०)।

**सर[४]**—सज्ञा पुं० [फा०] १ सिर। २ सिरा। चोटी। उच्च स्थान।

यौ०—सरअजाम। सरपरस्त। सरपच। सरदार। सरहद।

मुहा०—सर करना = बदूक छोडना। फायर करना।

३ प्रेम। स्नेह। प्रीति (को०)। ४ इरादा। इच्छा। विचार (को०)। ५ श्रेष्ठ। उत्तम (को०)।

**सर[५]**—वि० दमन किया हुआ। जीता हुआ। पराजित। अभिभूत।

मुहा०—सर करना = (१) जीतना। वश मे लाना। दबाना। (२) खेल मे हराना।

**सर[६]**—सज्ञा पुं० [अ०] एक बडी उपाधि जो अँगरेजी सरकार देती है।

**सर[७]**—सज्ञा स्त्री० [स० शर] चिता। उ०—पाएउँ नहिं होइ जोगी जती। अब सर चढौ जरौ जस सती।—जायसी (शब्द०)।

**सर अजाम**—सज्ञा पुं० [फा०] १ सामान। सामग्री। असबाब। २ प्रबध। बदोबस्त (को०)। ३ अत। पूर्ति। समाप्ति। ४ परिणाम। फल। नतीजा (को०)।

**सरई**—सज्ञा स्त्री० [हि० सरहरी] दे० 'सरहरी'।

**सरकडा**—सज्ञा पु० [स० शरकाण्ड] सरपत की जाति का एक पौधा जिसमे गाँठवाली छडे होती है।

**सरक**—सज्ञा पुं० [स०] १ सरकने की क्रिया। खिसकना। चलना। २ मद्यपात्र। शराब का प्याला। ३ गुड की बनी शराब। ४ मद्यपान। शराब पीना। ५ यात्रियो का दल। कारवाँ। ६ शराब का खुमार। उ०—वय अनुहरत विभूषन विचित्र अग जोहे जिय अति सनेह की सरक सो।—तुलसी (शब्द०)। ७ तालाब। सरोवर। तीर्थ (को०)। ८ आकाश। स्वर्ग (को०)। ९ राजपथ की अटूट पक्ति। १० मोती। मुक्ता (को०)।

**सरकना**—क्रि० अ० [स० सरक, सरण] १ जमीन से लगे हुए किसी ओर धीरे से बढना। किसी तरफ हटना। खिसकना। जैसे,—थोडा पीछे सरको। २ नियत काल से और आगे जाना। टलना। जैसे,—विवाह सरकना। ३ काम चलना। निर्वाह होना। जैसे,—काम सरकना।

सयो० क्रि०—जाना।

**सरकफूँदा**—सज्ञा पुं० [हि० सरकना + फदा] सरकनेवाला फदा। दे० 'सरकवाँसी'।

**सरकर्दा**—वि० [फा० सरकर्दह्] अगुआ। मुखिया। नेता (को०)।

**सरकवाँसी†**—सज्ञा स्त्री० [हि० सरकना + स० पाश, पाशक] एक प्रकार का सरकनेवाला फदा जो किसी चीज मे डालकर खीचने से सरक कर उसे जकड लेता है।

**सरकश**—वि० [फा०] १ उद्धत। उद्दड। अक्खड। २ शासन न माननेवाला। विरोध मे सिर उठनेवाला। ३ शरारती।

**सरकशी**—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ उद्दडता। औद्धत्य। २ नटखटी। शरारत।

**सरका[१]**—सज्ञा पुं० [अ० सरका] चोरी (को०)।

**सरका[२]**—सज्ञा पु० [स० सरक (= गगन)] आकाश।

मुहा०—सरका कूटना = (१) गगन मडल मे विहार करना। समाधिस्थ होना। ली लगाना। (२)† हस्तमैथुन करना (बाजारू)।

**सरकार**—सज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० सरकारी] १ प्रधान। अधिपति। मालिक। शासक। प्रभु। २ राज्य। राज्य सत्ता। शासन-सत्ता। गवनमेंट। ३ राज्य। रियासत। जैसे,—निजाम सरकार। ४ न्यायालय। न्यायपीठ (को०)। ५ राजदरबार। राजसभा (को०)। ६ बडे व्यक्तियो के लिये सबोधन का शब्द (को०)।

**सरकारी**—वि० [फा०] १ सरकार का। मालिक का। २ राज्य का। राजकीय। जैसे,—सरकारी इलजाम, सरकारी कागज।

यौ०—सरकारी अहलकार = राज्य का कर्मचारी। सरकार का मुलाजिम। सरकारी कागज = (१) राज्य के दफ्तर का कागज। (२) प्रामिसरी नोट। जैसे,—उसके पास डेढ लाख रुपया के सरकारी कागज है। सरकारी साँड = (१) लफट। दून। मक्कार। (लाक्ष०)। (२) गाय बैलो की नस्ल सुधारने के लिये रखा हुआ अच्छी जाति का साँड।

**सरखत**—सज्ञा पु० [फा० सरखत] १ वह कागज या दस्तावेज जिस-पर मकान आदि किराए पर दिए जाने की शर्तें होती है। २ तनखाह आदि के हिसाब का कागज (का०)। ३ दिए और चुकाए हुए ऋण का ब्यौरा। उ०—आयसु मा लाकनि सिधार लोकपाल सबै तुलसी निहाल कै कै दिया सरख (ष) तु है।—तुलसी ग्र०, पृ० १९८।

**सरग**—सज्ञा पुं० [स० स्वग] १. दे० 'स्वर्ग'। उ०—(क) मूल पताल सरग ओहि साखा। अमर बेलि को पाय का चाखा।—जायसी (शब्द०)। (ख) धरनि धामु धनु पुर परिवारू। सरगु नरकु जहँ लगि व्यवहारू।—मानस, २।९२। २ आकाश। व्योम। उ०—का घू घट मुख मूदहु नवला सारि। चाद सरग पर सोहत एहि अनुहारि।—तुलसी ग्र०, पृ० २०।

यौ०—सरगतरु = स्वर्गतरु। आकाश वृक्ष। उ०—पात पात का सींचिबो न कर सरग तरु हेत।—तुलसी ग्र०, पृ० १८०।

**सरगना[१]**—क्रि० अ० [देश०] डाग मारना। शेखी बघारना। बढ चढ कर बातें करना।

**सरगना[२]**—सज्ञा पु० [फा० सरगनह्] मुखिया। सरदार। अगुवा। जैसे,—चोरो का सरगना।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्राय बुरे अर्थ मे ही होता है।

सरगपताली'—वि० [स० स्वर्ग, हिं० सरग + स० पातालीय] जिसका एक अग ऊपर और एक नीचे की ओर हो। तिरछा। बाँका।

सरगपतानी'—सज्ञा पुं० १ वह बैल जिसका एक सीग ऊपर और दूसरा नीचे की ओर झुका हो। २ ऐंची आँखोवाला।

सरगम—सज्ञा पुं० [हिं० सा, रे, ग, म] सगीत मे सात स्वरो के चढाव उतार का क्रम। स्वर ग्राम।

सरगर्दानी—सज्ञा स्त्री० [फा०] परेशानी। हैरानी। दिक्कत।

सरगर्म—वि० [फा०] १ जोशीला। आवेशपूर्ण। २ उमग से भरा हुआ। उत्साही। कटिबद्ध। ३ तन्मय। तल्लीन (को०)।

सरगर्मी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ जोश। आवेश। २ उमग। उत्साह। ३ तन्मयता। सलग्नता।

सरगही†—सज्ञा स्त्री० [अ० सहर + फा० गह] व्रत के दिनो मे पूर्व-रात्रि के उत्तरार्ध का खाना। दे० 'सहरगही'।

सरगुन—वि० [स० सगुण] गुणयुक्त। दे० 'सगुण'। 'निरगुन' का विलोम।

सरगुनिया—वि० [हिं० सरगुन + इया (प्रत्य०)] सगुणोपासक। वह जो सगुण की उपासना करता हो। 'निरगुनिया' का विलोम या उल्टा।

सरघा—सज्ञा स्त्री० [स०] मधुमक्खी।

सरज—सज्ञा पुं० [स०] १ शुद्ध नवनीत। ताजा मक्खन। २ वह जो धूलियुक्त हो [को०]।

सरजनहार—वि० [हिं० सरजना + हार (प्रत्य०)] निर्माता। रचयिता। उ०—आपै आप करत विचारा। को हमको सरजनहारा।—रामानद०, पृ० ११।

सरजना—क्रि० स० [स० सृजन] १ सृष्टि करना। २ रचना। बनाना।

सरजमीन—सज्ञा स्त्री० [फा० सरज़मी] १ पृथ्वी। जमीन। २ देश। मुल्क। सल्तनत [को०]।

सरजसा, सरजस्का—सज्ञा स्त्री० [सं०] ऋतुमती स्त्री। रजस्वला स्त्री [को०]।

सरजा'—सज्ञा स्त्री० [स० सरजस्] ऋतुमती स्त्री [को०]।

सरजा'—सज्ञा पुं० [फा० शरजाह (= उच्च पदवाला), अ० शरजह् (= सिंह)] १ श्रेष्ठ व्यक्ति। सरदार। २ सिंह। उ०—सरजा सिवाजी जग जीतन चलत है।—भूषण (शब्द०)।

सरजीव—वि० [स० सजीव] जो जीवयुक्त हो। निर्जीव का विलोम या उलटा।

सरजीवन†—वि० [स० सञ्जीवन] १ सजीवन। जिलानेवाला। २ हराभरा। उपजाऊ।

सरजोर—वि० [फा० सरजोर] १. जबरदस्त। २ उद्दड। दुर्दमनीय। सरकश।

सरजोरी—सज्ञा स्त्री० [फा० सरजोरी] १ जबरदस्ती। २ उद्दडता।

सरजोश—वि० [फा०] जो पहले जोश मे उतारा जाय। सार। सत [को०]।

सरट्—सज्ञा पुं० [स०] १ वायु। हवा। २ मेघ। बादल। ३ गिरगिट। कृकलास। ४ मधुमक्खी। ५ डोरा। सूत [को०]।

सरट—सज्ञा पु० [स०] १, छिपकली। २ गिरगिट। ३ वायु।

सरटि—सज्ञा पु० [स०] १ मेघ। बादल। २ हवा। वायु [को०]।

सरटु—सज्ञा पु० [स०] कृकलास। गिरगिट [को०]।

सरण'—सज्ञा पु० [स०] १ धीरे धीरे हटना या चलना। आगे बढना। सरकना। खिसकना। २ तीव्र गति से चलना। शीघ्र गमन (को०)। ३. स्थानातर। गमन (को०)। ४ लोहे का मोर्चा। लौहकिट्ट (को०)।

सरण—वि० १ गतिशील। गतिमय। २ बहनेवाला [को०]।

यौ०—सरणमार्ग = जाने का रास्ता।

सरणा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की लता [को०]।

सरणि, सरणी—सज्ञा स्त्री० [स०] मार्ग। रास्ता। २ पगडडी। ३ लगातार और सीधी पक्ति, रेखा या लकीर। ४ ढर्रा। विधि। व्यवस्था (को०)। ५ कठ का एक रोग (को०)। ६ एक लता। गध प्रसारणी (को०)।

सरण्यु—सज्ञा पुं० [स०] १ वायु। हवा। २ मेघ। ३ जल। पानी। ४ वसत ऋतु। यमराज। ६ अग्नि [को०]।

सरत्—सज्ञा पुं० [स०] १ सूत। तागा। धागा। २ वह जो गतिशील हो [को०]।

सरतराश—सज्ञा पुं० [फा०] नाई। नापित। क्षौरकार [को०]।

सरतराशी—सज्ञा स्त्री० [फा०] क्षौर कर्म। नाई का काम [को०]।

सरताज—वि० [फा०] १ शिरोमणि। सबसे श्रेष्ठ। २ सरदार। नायक। सिरताज [को०]।

सरतान—सज्ञा पुं० [अ०] १ केकडा। कर्कट। २. कर्क राशि। ३ दूषित व्रण [को०]।

सरता वरता—सज्ञा पु० [स० वर्तन, हिं० बरतना + अनु० सरतना] बाँटा। बँटाई।

मुहा०—सरता वरता करना = आपस मे काम चला लेना।

सरतारा—वि० [?] निश्चित। सावकाश।

सरत्नि—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की हाथ की माप [को०]।

सरथ'—वि० [स०] रथपर चढा हुआ। रथयुक्त [को०]।

सरथ'—सज्ञा पु० [स०] रथारोही सैनिक [को०]।

सरद'—वि० [फा० सर्द] दे० 'सर्द'।

सरद'—सज्ञा स्त्री० [स० शरत्] शरद ऋतु। उ०—(क) सरद रात मालति सघन फूलि रही बन बास।—पृ० रा०, २।३६०। (ख) कत दुसह दारुन सरद।—पृ० रा०, ६१।४२।

सरदई—वि० [फा० सरदह्] सरदे के रग का। हरापन लिए पीला।

सरदर—क्रि० वि० [फा० सर + दर (= भाव)] १ एक सिरे से। २ सब एक साथ मिला कर। औसत मे।

सरदर्द—सज्ञा पुं० [फा०] १ शिरोवेदना। सिर का दर्द। २. कष्ट। झमेला। झझट। जजाल [को०]।

**सरदल**[1]—सज्ञा पुं० [देश०] दरवाजे का बाजू या साह।

**सरदल**[2]—क्रि० वि० [फा० सरदर] दे० 'सरदर'।

**सरदा**—सज्ञा पुं० [फा० सर्दह्] एक प्रकार का बहुत बढ़िया खरबूजा जो काबुल मे आता है।

**सरदार**—सज्ञा पुं० [फा०] १ किसी मडली का नायक। अगुवा। श्रेष्ठ व्यक्ति। २ किसी प्रदेश का शासक। ३ अमीर। रईस। ४ वेश्याओ की परिभाषा मे वह व्यक्ति जिसका किसी वेश्या से सबध हो। ५ वह जो सिख सप्रदाय को मानता हो। सिखो की उपाधि।

**सरदार तत्र**—सज्ञा पु० [फा० सरदार+स० तन्त्र] एक प्रकार की सरकार जिसमे राजसत्ता या शासनसूत्र सरदारो, बडे बडे ताल्लुकदारो या ऐश्वर्यशाली नागरिको के हाथ मे रहता है। कुलीन तत्र। अभिजात तत्र। कुलतत्र। दे० 'ऐरिस्टोक्रैसी'।

**सरदारनी**—सज्ञा स्त्री० [हि० सरदार] प्रतिष्ठित सिख महिला। सरदार की पत्नी।

**सरदारी**—सज्ञा स्त्री० [फा०] सरदार का भाव। अध्यक्षता। स्वामित्व।

**सरदाला**—सज्ञा स्त्री० [देश०] उत्तरी भारत की रेतीली भूमि मे होनेवाली एक प्रकार की बारहमासी घास जो चारे के लिये अच्छी समझी जाती है। बादरी।

**सरद्वत्**—सज्ञा पुं० [स०] १ गौतम ऋषि। २ गौतम ऋषि के एक पुत्र का नाम [को०]।

**सरधन**Ⓤ—वि० [सं० सधन] धनी। अमीर। निर्धन का विपरीत वाचक।

**सरधाँकी**—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पौधा जो प्राय रेतीली भूमि मे होता है। यह वर्षा और शरद् ऋतु मे फूलता है। इसका व्यवहार औषधि के रूप मे होता है।

**सरधा**Ⓤ†—सज्ञा स्त्री० [सं० श्रद्धा] दे० 'श्रद्धा'।

**सरधौंकी**—सज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सरधाँकी'।

**सरन**Ⓤ‡—सज्ञा स्त्री० [स० शरण] दे० 'शरण'। उ०—अब आयो हौ सरन तिहारी ज्यो जानौ त्यौ तारौ।—सूर०, १।१७८।

**सरनगत**Ⓤ—वि० [सं० शरणागत] शरण मे गया हुआ। जो शरणागत हो।—उ० सूरदास गोपाल सरनगत भएँ न को गति पावत।—सूर०, १।१८१।

**सरनदीप**—सज्ञा पु० [स० स्वर्ण द्वीप या सिंहल द्वीप] लका का एक प्राचीन नाम जो अरबवालो मे प्रसिद्ध था। उ०—दिया दीप नहिं तम उँजियारा। सरनदीप सरि होइ न पारा।—जायसी (शब्द०)।

**सरनविश्त**—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. भाग्यलिपि। २ हालचाल। वृत्तात। खबर [को०]।

**सरना**[1]—क्रि० अ० [स० सरण (=चलना, सरकना)] १ सरकना। खिसकना। २ हिलना। डोलना। ३. काम पूरा पड़ना। जैसे,—इतने मे काम नही सरेगा। ४. होना। किया जाना। निबटना। जैसे,—काम निर्वाह होना। गुजारा होना। निभना। ६ दे० 'मरना'। ७. खत्म होना। बीत जाना। समाप्त होना। उ०—बीतै जाम बोलि तब आयौ, सुनहु कस तब आइ सरयौ।—सूर०, १०।५६।

**सरनाई**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [सं० शरण] शरण। आश्रय। रक्षा। उ०—(क) जो सभीत आवा सरनाई।—मानस, ६।८४। (ख) सूर कुटिल राखौ सरनाई इहि व्याकुल कलिकाल।—सूर०, १।२०१।

**सरनागत**—वि० [स० शरणागत] दे० 'शरणागत'। उ०—सरनागत कह जे तजहिं निज अनहित अनुमानि।—मानस, ६।८३।

**यौ०**—सरनागतवच्छल = दे० 'शरणागतवत्सल'। उ०—सरनागत वच्छल भगवाना।—मानस, ६।४३।

**सरनाम**—वि० [फा०] जिसका नाम हो। प्रसिद्ध। मशहूर। विख्यात। उ०—तुलसी सरनाम गुलाम है राम को जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।—तुलसी ग्र०, पृ० २२३।

**सरनामा**—सज्ञा पुं० [फा० सरनामह्, तुल स० शिरोनाम] १ किसी लेख या विषय का निर्देश जो ऊपर लिखा रहता है। शीर्षक। २ पत्र का आरभ या सबोधन। ३. पत्र आदि पर लिखा जानेवाला पता।

**सरनी**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [सं० सरणि] दे० 'सरणी'। उ०—ब्रज जुवती सब देखि थकित भईं सुदरता को सरनी।—सूर०, १०।१२३।

**सरपच**—सज्ञा पुं० [फा० सर+हि० पच] पचो मे बडा व्यक्ति। पचायत का सभापति।

**सरपजर**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० शरपञ्जर] बाणो का घेरा। सरपिंजर। उ०—अवघट घाट बाट गिरिकदर। मायाबल कीन्हेसि सरपजर।—मानस, ६।७२।

**सरप**Ⓤ—सज्ञा पु० [सं० सर्प] साँप।

**सरपट**[1]—क्रि० वि० [स० सपर्ण] तीव्रगति से। सरपट चाल से।

**क्रि० प्र०**—छोडना।—डालना।—दौडना।—फेंकना।

**सरपट**[2]—सज्ञा स्त्री० घोडे की बहुत तेज दौड जिसमे वह दोनो अगले पैर साथ साथ आगे फेकता है।

**सरपट**[3]—वि० समथर। चौरस। सपाट।

**सरपत**—सज्ञा पुं० [स० शरपत्र] कुश की तरह की एक घास।

**विशेष**—इसमे टहनियाँ नही होती बहुत पतली (आधे जौ भर) और हाथ दो हाथ लबी पत्तियाँ ही मध्य भाग से निकलकर चारो ओर घनी फैली रहती है। इसके बीच से पतली छड निकलती है जिसमे फूल लगते है। यह घास छप्पर आदि छाने के काम मे आती है।

**सरपरस्त**—सज्ञा पुं० [फा०] १. रक्षा करनेवाला। २. श्रेष्ठ पुरुष। अभिभावक। सरक्षक।

**सरपरस्ती**—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ सरक्षा। २. अभिभावकता।

**सरपिंजर**—सज्ञा पुं० [स० शरपिञ्जर] बाणो का [illegible]। उ०—अर्जुन तब सरपिंजर [illegible] दियौ।—सूर०, १०।४३०६

सरवार†—सज्ञा पुं० [सं० सरयूपार] सरयू नदी के पार का भूखड। यहाँ के ब्राह्मण सरयूपारी या सरवरिया कहे जाते है।

सरवाला—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार की लता जिसे घोडावेल भी कहते है। बिलाई कद इसी की जड होती है। विशेष दे० 'घोडा वेल'।

सरविस—सज्ञा स्त्री० [अ० सर्विस] १ नौकरी। २ खिदमत। सेवा।

सरवे—सज्ञा स्त्री० [अ० सर्वे] १ जमीन की पैमाइश। २ वह सरकारी विभाग जो जमीन की पैमाइश किया करता है।

सरव्य—सज्ञा पुं० [स०] निशाना। लक्ष्य। शरव्य [को०]।

सरसफ—सज्ञा स्त्री० [फा० सरशफ तुल० स० सर्षप] सरसो।

सरशार—वि० [फा०] १ परिपूर्ण। ऊपर तक भरा हुआ। लबरेज। २ उन्मत्त। मत्त। ३ छलकता हुआ [को०]।

सरशीर—सज्ञा स्त्री० [फा०] दूध की मलाई। क्षीर सार। बालाई [को०]।

सरसप्रत—सज्ञा पुं० [स० सरसम्प्रत ?] तिधारा। थूहर। पत्रगुप्त वृक्ष।

सरस्—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० अल्पा० सरसी] १ सरोवर। तालाब। २ जल। पानी (को०)। ३ वाणी (को०)।

सरस¹—वि० [स०] १ रसयुक्त। रसीला। २ गीला। भीगा। सजल। ३ जो सूखा या मुरझाया न हो। हरा। ताजा। ४ सुदर। मनोहर। ५ मधुर। मीठा। ६ जिसमे भाव जगाने की शक्ति हो। भावपूर्ण। जैसे,—सरस काव्य। उ०—(क) सरस काव्य रचना करौ खलजन सुनि न हसत।—पृ० रा०, १।५१। (ख) निज कवित्त केहि लाग न नीका। सरस होहु अथवा अति फीका।—तुलसी (शब्द०)। ७ छप्पय छद के ३५ वें भेद का नाम जिसमे ३६ गुरु, ८० लघु, कुल ११६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ८ रसिक। सहृदय। भावुक। ९ बढकर। उत्तम। उ०—ब्रह्मानद हृदय दरस सुख लोचननि अनुभए उभय सरस राम जागे है।—तुलसी (शब्द०)। १० पसीने से तर (को०)। ११ प्रेमपूर्ण। प्रणयोन्मत्त (को०)। १३ घना। ठस। साद्र (को०)।

सरस²—सज्ञा पु० तालाब। सरोवर [को०]।

सरसइ(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० सरस्वती, प्रा० सरसई] सरस्वती नदी। उ०—सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा।—तुलसी (शब्द०)।

सरसई(पु)¹—सज्ञा स्त्री० [स० सरस्वती, प्रा० सरसई] सरस्वती नदी या देवी।

सरसई(पु)²—सज्ञा स्त्री० [सं० सरस + हिं० ई (प्रत्य०)] १ सरलता। रसपूर्णता। २ हरापन। ताजापन। उ०—तिय निज हिय जु लगी चलत पिय लख रेख खरोट। सूखन देति न सरसई खोटि खोटि खत खोट।—बिहारी (शब्द०)।

सरसई†³—सज्ञा स्त्री० [हिं० सरसो] फल के छोटे अकुर या दाने जो पहले दिखाई पडते है। जैसे,—आम की सरसई।

सरसठ—वि० [हिं०] दे० 'सडसठ'।

सरसठवाँ—वि० [हिं०] दे० 'सडसठवाँ'।

सरसना—क्रि० अ० [सं० सरस + हिं० ना (प्रत्य०)] १ हरा होना। पनपना। वृद्धि को प्राप्त होना। बढना। उ०—सुफल होत मन कामना मिटत विघन के द्वद। गुन सरसत बरषत हरष सुमिरत लाल मुकुद।—(शब्द०)। ३ शोभित होना। सोहाना। उ०—वाको विलोकिए जो मुख इदु लगै यह इदु कहूँ लवलेस मैं। वेनी प्रवीन महा सरसै छवि जो परसै कहूँ स्यामल केस मैं।—वेनी (शब्द०)। ४ रसपूर्ण होना। ५ भाव की उमग से भरना। ६ रसयुक्त अर्थात् जलपूर्ण होना।

सरसब्ज—वि० [फा० सरसब्ज] १ हरा भरा। जो सूखा या मुरझाया न हो। लहलहाता हुआ। २ जहाँ हरियाली हो। जो घास और पेड पौधो से हरा हो। ३ समृद्ध। मालदार (को०)। ४ आबाद (को०)। ५ उपजाऊ (को०)।

सरसमान†—सज्ञा पुं० [फा० सर व सामान] दे० 'सरोसामान'।

सर सर¹—सज्ञा पुं० [अनु०] १ जमीन पर रेंगने का शब्द। २ तीव्र वायु के चलने से उत्पन्न ध्वनि। जैसे,—हवा सर सर चल रही है।

सर सर²—क्रि० वि० सरसर की ध्वनि के साथ।

सर सर³—वि० [सं०] इतस्तत घूमनेवाला [को०]।

सर सर⁴—सज्ञा स्त्री० [अ०] आँधी। अधड। तोखी हवा।

सरसराना—क्रि० अ० [अनु० सर सर] १ सर सर की ध्वनि होना। २ वायु का सर सर की ध्वनि करते हुए बहना। वायु का तेजी से चलना। सनसनाना। उ०—सरसराती हुई हवा केले के पत्तो को हिलाती है।—रत्नावली (शब्द०)। ३ साँप या किसी कीडे का रेंगना।

सरसराहट—सज्ञा स्त्री० [हिं० सरसर + आहट (प्रत्य०)] १. साँप आदि के रेंगने का सा अनुभव। २ खुजली। सुरसुराहट। ३ वायु के बहने का शब्द।

सरसरी¹—वि० [फा०] १ जमकर या अच्छी तरह नही। जल्दी मे। जैसे—सरसरी नजर से देखना। २ चलते ढग पर। काम चलाने भर को। स्थूल रूप से। मोटे तौर पर। जैसे,—अभी सरसरी तौर से कर जाओ।

यौ०—सरसरी नजर। सरसरी निगाह। सरसरी तौर से।

सरसरी²—सज्ञा स्त्री० १ औरतो की एक सांकेतिक भाषा। २ एक शिरोभूषण।

सरसा—सज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद निसोथ। शुक्ल त्रिवृता।

सरसाई(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० सरस + आई (प्रत्य०)] १ सरसता। २. शोभा। सुदरता। ३ अधिकता।

सरसाना¹—क्रि० स० [हिं० सरसना] १ रसपूर्ण करना। २ हरा भरा करना।

सरसाना(पु)²—क्रि० अ० दे० 'सरसना'।

सरसाना(पु)³—क्रि० अ० शोभित होना। शोभा देना। साजना। उ०—(क) लै आए निज अक मे शोभा कही न जाई। जिमि जलनिधि की गोद मे शशिशिशु शुभ सरसाई।—गोपाल

(शब्द०)। (ख) सुदर सूधी सुगोल रची विधि कोमलता अति ही सरसात है।—हरिऔध (शब्द०)।

**सरसाम**—संज्ञा पुं० [फा०] सन्निपात। त्रिदोष। बाई।

**सरसार**†—वि० [फा० सरशार] १ डूबा हुआ। मग्न। २ गडाप। चूर। मदमस्त (नशे मे)।

**सरसिक**—संज्ञा पुं० [सं०] सारस पक्षी (को०)।

**सरसिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हिंगुपत्री। २ छोटा ताल। बावली।

**सरसिज**[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ वह जो ताल मे होता हो। २ कमल। ३ सारस पक्षी (को०)।

**सरसिज**[2]—वि० सर मे जात। ताल मे पैदा होनेवाला।

**सरसिजयोनि**—संज्ञा पुं० [स०] कमल से उत्पन्न, ब्रह्मा।

**सरसिरुह**—संज्ञा पुं० [स०] (सर मे उत्पन्न) कमल।

यौ०—सरसिरुहबंधु = सूर्य।

**सरसी**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ छोटा ताल। छोटा सरोवर। तलैया। २ पुष्करिणी। बावली। उ०—कठुला कठ बघनहा नीके। नयन सरोज नयन सरसी के।—सूर (शब्द०)। ३ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे न, ज, भ, ज, ज, ज, र होते है।

**सरसीक**—संज्ञा पुं० [स०] सारस पक्षी।

**सरसीरुह**—संज्ञा पुं० [स०] १ सरसी मे उत्पन्न होनेवाला, कमल। २ सारस पक्षी।

**सरसूलगोरटी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] सफेद कटसरैया। श्वेत भिंटी।

**सरसेट**†—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ झगडा। तकरार। झझट। बखेडा।

**सरसेटना**—क्रि० स० [अनु० सरसेट] १ खरी खोटी सुनाना। फटकारना। भला बुरा कहना। २ रगेदना। रपटना। ३ तेजी से समाप्त करना।

**सरसो**—संज्ञा स्त्री० [स० सर्षप, तुल० फा० सर्शफ] एक धान्य या पौधा जिसके गोल गोल छोटे बीजो से तेल निकलता है। एक तेलहन।

विशेष—भारत के प्राय सभी प्रातो मे इसकी खेती की जाती है। इसका डठल दो तीन हाथ ऊँचा होता है। पत्ते हरे और कटे किनारेवाले होते हैं। ये चिकने होते और डठी मे सटे रहते है। फलियाँ दो तीन अगुल लबी और गोल होती है जिनमे महीन बीज के दाने भरे होते हैं। कार्त्तिक म गेहूँ के साथ तथा अलग भी इसे बोते है। माघ तक यह तैयार हो जाता है। सरसो दो प्रकार की होती है—लाल और पीली या सफेद। इसे लोग मसाले के काम मे भी लाते है। इसका तेल, जो कडुआ तेल कहलाता है, नित्य के व्यवहार मे आता है। इसके पत्तो का साग बनता है।

**सरसौहाँ**†—वि० [हि० सरस + औहाँ (प्रत्य०)] सरस बनाया हुआ। रसयुक्त किया हुआ। रसीला। उ०—तिय तरसौहैं मुनि किए करि सरसौहैं नेह। धर परसौहैं ह्वै रहे सर बरसौहैं मेह।—बिहारी (शब्द०)।

**सरस्वती**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ एक प्राचीन नदी जो पजाब मे बहती थी और जिसकी क्षीण धारा कुरुक्षेत्र के पास अब भी है। २ विद्या या वाणी की देवी। वाग्देवी। भारती। शारदा।

विशेष—वेदो मे इस नदी का उल्लेख बहुत है और इसके तट का देश बहुत पवित्र माना गया है। पर वहाँ यह नदी अनिश्चित सी है। बहुत से स्थलो मे तो सिंध नदी के लिये ही इसका प्रयोग जान पडता है। कुरुक्षेत्र के पास से होकर बहनेवाली मध्यदेशवाली सरस्वती के लिये इस शब्द का प्रयोग थोडी ही जगहो मे हुआ है। कुछ विद्वानो का अनुमान है कि पारसियो के प्राचीन ग्रथ मे अफगानिस्तान की जिस 'हरख्वैती' नदी का उल्लेख है, वास्तव मे वही मूल सरस्वती है। पीछे पजाब की नदी का यह नाम दिया गया। ऋग्वेद मे इस नदी के समुद्र मे गिरने का उल्लेख है। पर पीछे की कथाओं मे इसकी धारा लुप्त होकर भीतर भीतर प्रयाग मे जाकर गगा से मिलती हुई कही गई है। वेदो मे सरस्वती नदियो की माता कही गई है और उसकी सात बहिनें बताई गई हैं। एक स्थान पर वह स्वर्गमार्ग से बहती हुई और वृत्रासुर का नाश करनेवाली कही गई है। वेद मत्रो मे जहाँ देवता रूप मे इसका आह्वान है, वहाँ पूषा, इद्र और मरुत आदि के साथ इसका सबध है। कुछ मत्रो मे यह इडा और भारती के साथ तीन यज्ञदेवियो मे रखी गई है। वाजसनेयी सहिता मे कथा है कि सरस्वती ने वाचादेवी के द्वारा इद्र को शक्ति प्रदान की थी। आगे चलकर ब्राह्मण ग्रथो मे सरस्वती वाग्देवी ही मान ली गई है। पुराणो मे सरस्वती देवी ब्रह्मा की पुत्री और स्त्री दोनो कही गई है और उसका वाहन हस बताया गया है। महाभारत मे एक स्थान पर सरस्वती को दक्ष प्रजापति की कन्या लिखा है लक्ष्मी और सरस्वती देवी का वैर भी प्रसिद्ध है।

३ विद्या। इत्म। ४ एक रागिनी जो शकराभरण और नट नारायण के योग से उत्पन्न मानी जाती है। ५ ब्राह्मी बूटी। ६. मालकगनी। ज्योतिष्मती लता। ७ सामलता। ८ एक छद का नाम। ९ गाय। १० वचन। वाणी। शब्द। स्वर (को०)। ११ नदी। सरिता (को०)। १२ उत्कृष्ट या श्रेष्ठ स्त्री। सभ्य एव शिष्ट महिला (को०)। १३ दुर्गा देवी का एक रूप। महासरस्वती (को०)। १४ बौद्धो की एक देवी (को०)।

**सरस्वतीकठाभरण**—संज्ञा पुं० [स० सरस्वतीकण्ठाभरण] १ गान के साठ मुख्य भेदो मे से एक। २ भोजकृत अलकार का एक ग्रथ। ३ एक पाठशाला जिसे धार के परमारवशी राजा भोज ने स्थापित किया था।

**सरस्वती पूजन**—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सरस्वती पूजा'।

**सरस्वती पूजा**—संज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती का उत्सव जो कहीं वसत पचमी को और कहीं आश्विन के नवरात्र मे होता है।

**सरस्वान्**[1]—वि० [स० सरस्वत्] १ जलपूर्ण। जलयुक्त। २ रसमय। रसीला। ३ सुस्वादु। स्वादिष्ट। ४ भव्य। शोभन। चुस्त-दुरुस्त। ५ भावनाप्रधान। भावुक।

सरस्वान्[२]—सज्ञा पु० १ सागर। समुद्र। २ तालाव। सरोवर। ३. नद। महानद। ४ मैमामहिष। ५ वायु [को०]।

सरहग—सज्ञा पु० [फा०] १ सेना का अफसर। नायक। कप्तान। २ मल्ल। पहलवान। ३ जवरदस्त। वलवान्। ४ वह जो किसी से न दवता हो। उद्दड। सरकश। ५ पैदल सिपाही। ६ चोवदार। ७ कोतवाल।

सरहगी—सज्ञा स्त्री० [फा०] सिपहगिरी। सेना की नौकरी। २. उद्दडता। ३ वीरता। ४ पहलवानी।

सरह—सज्ञा पु० [स० शलभ, प्रा० सरह] १ पतग। फतिगा। २ टिड्डी। उ०—कटक सरह अस छट।—जायसी (शब्द०)।

सरहज—सज्ञा स्त्री० [स० श्यालजाया] साले की स्त्री। पत्नी के भाई की स्त्री।

सरहटी—सज्ञा स्त्री० [स० सर्पाक्षी] सर्पाक्षी नाम का पौधा। नकुलकद।

विशेष—यह पौधा दक्षिण के पहाडो, आसाम, वरमा और लका आदि मे वहुत होता है। इसके पत्ते समवर्ती, २ से ५ इच तक लवे तथा १ से १॥ इच तक चौडे, अडाकार, अनीदार और नुकीले होते हैं। टहनियो के अत मे छोटे छोटे सफेद रग के फल आते है। इसके वीज वारीक तथा तिकोने होते हैं। सरहटी स्वाद मे कुछ खट्टी और कडवी होती है। कहते हे कि जव साँप और नेवले मे युद्ध होता है, तव नेवला अपना विष उतारने के लिये इसे खाता है। इसी से हिंदुस्तान और सिहल आदि मे इसकी जड साँप का विष उतारने की दवा समझी जाती ह। इसकी छाल, पत्ती और जड का काढा पुष्ट होता है और पेट के दर्द मे भी दिया जाता है।

सरहत‡—सज्ञा पु० [देश०] खलिहान मे फैला हुआ अनाज वुहारने का झाडू।

सरहतना‡—क्रि० स० [देश०] अनाज को साफ करने के लिये फटकना। पछोडना।

सरहद—सज्ञा स्त्री० [फा० सर+अ० हद] १ सीमा। २ किसी भूमि की चौहद्दी निर्धारित करनेवाली रेखा या चिह्न। ३ सीमा पर की भूमि। सीमात। सिवान।

सरहदी—वि० [फा० सरहद+ई (प्रत्य०)] सरहद का। सरहद सवधी। सीमा सवधी। जैसे,—सरहदी झगडे।

सरहद्द—सज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'सरहद'।

सरहना—सज्ञा स्त्री० [देश०] मछली के ऊपर का छिलका। चूई।

सरहर—सज्ञा पु० [स० शर] [सज्ञा स्त्री० सरहरी] भद्रमजु। रामशर। सरपत।

सरहरा[१]—वि० [स० सरल+हिं० धड अथवा हिं० सरहर] १ सीधा ऊपर को गया हुआ। जिसमे इधर उधर शाखाएँ न निकली हो (पेड)।

सरहरा[२]—वि० [स० सरण] [वि० स्त्री० सरहरी] जिसपर हाथ पैर रखने से न जमे। फिसलाववाला। चिकना।

सरहरी[१]—सज्ञा स्त्री० [स० शर] १. मूँज या सरपत की जाति का एक पौधा जिसकी छड पतली, चिकनी और विना गाँठ की होती है। २ गडनी। सर्पाक्षी।

सरहरी[२]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सरहरा] सर्दी या जुकाम की दशा मे गले मे होनेवाली खराश। सुरसुरी। सुरहुरी।

सरहस्य—वि० [स०] १ गूढ। भेदपूर्ण। २ उपनिषद् के साथ युक्त। ३ दार्शनिक शिक्षा या पराविद्या से युक्त [को०]।

सरहिंद—सज्ञा पुं० [फा० सर+हिंद] पजाव का एक स्थान।

सराँग†—सज्ञा स्त्री० [सं० शलाका] लोहे की एक मोटी छड जिसपर पीटकर लोहार वरतन वनाते है।

सरा(यु)[१]—सज्ञा स्त्री० [स० शर] चिता। उ०—चदन अगर मलयगिर काढा। घर घर कीन्ह सरा रचि ठाढा।—जायसी (शब्द०)।

सरा[२]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गति। सचलन। २ निर्झर। प्रपात। ३ प्रसारिणी लता [को०]।

सरा[३]—सज्ञा पुं० [अ०] पाताल।

सरा[४]—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ सराय। मुसाफिरखाना। २ घर। मकान। ३ जगह। स्थान।

सरा—वि० [फा० सर्द] वेमेल। खालिस। खरा [को०]।

सरा[५]—सज्ञा स्त्री० [देशी] माला। स्रक्।—देशी०, ८।२।

सराई[१]—सज्ञा स्त्री० [स० शलाका] १ शलाका। सलाई। २ सरकडे की पतली छडी।

सराई[२]—सज्ञा स्त्री० [स० शराव (=प्याला)] मिट्टी का प्याला या दीया। सकोरा।

सराई†[३]—[फा० सराचह (=एक पहनावा)] गायजामा।

सराग†[१]—सज्ञा पु० [स० शलाक] १ लोहे की सीख। पतला सीखचा। नुकीली छड। २ वह लकडी जो कुलावे के वीच मे लगाई जाती है और उसके ऊपर कुलावा घूमता है।

सराग[२]—वि० [स०] १ रागयुक्त। रगीन। रगदार। २ अलक्तक से रँगा हुआ। लाक्षारजित। ३ प्रेमाविष्ट। मुग्ध। ४ शोभायुक्त। सुदर [को०]।

सराजाम‡—सज्ञा पुं० [फा० सर अजाम] सामग्री। असवाव। सामान।

सराध‡—सज्ञा पु० [स० श्राद्ध] दे० 'श्राद्ध'। उ०—(क) जज्ञ सराध न कोऊ करै।—सूर, १।२६०। (ख) द्विज भोजन मख होम सराधा। सब कै जाइ करहु तुम वाधा।—मानस, १।१८१।

यौ०—सराधपख=श्राद्ध का पक्ष या पखवारा जो आश्विन कृ० १ से अमावास्या तक माना जाता है। पितृपक्ष। उ०—जौ लगि काग सराध पख तौ लगि तौ सनमानु।—विहारी र०, दो० ४३४।

सराना—क्रि० स० [हिं० सारना का प्रेर०] पूर्ण कराना। सपादित कराना। (काम) कराना। उ०—तैं ही उनकौ मूड चढायो। भवन विपिन सँग ही सँग डोलै ऐसेहि भेद लखायो। पुरुष भँवर दिन चारि आपुनो अपनो चाउ करायो।—सूर (शब्द०)।

सराप—सज्ञा पु० [स० शाप] दे० 'शाप'। उ०—तिन्हहि सराप दीन्ह अति गाढा।—मानस, १।१३५।

सरापना(पु)—क्रि० स० [सं० श्रापं, हिं० सराप+ना (प्रत्य०)] १ शाप देना। बददुआ देना। अनिष्ट मनाना। कोसना। २. बुरा भला कहना। गाली देना।

सरापा'—अव्य० [फा०] आपाद मस्तक। पूरा का पूरा। सपूर्ण।

यौ०—सरापानाज=नाज नखरे से पूर्ण या भरा हुआ। सरापा-शरारत=शरारत भरा।

सरापा'—सज्ञा पुं० १ नखशिख। नख से शिख तक सर्वांग। २ नख-शिख का वर्णन [को०]।

सराफ—सज्ञा पुं० [अ० सर्राफ] १ रुपए पैसे या चाँदी सोने का लेन देन करनेवाला महाजन। २ सोने चाँदी का व्यापारी। ३ सोने चाँदी के बरतन, जेवर आदि का लेन देन करनेवाला। ४. बदले के लिये रुपए पैसे रखकर बैठनेवाला दूकानदार।

यौ०—सराफखाना=जहाँ सराफे का काम होता हो। सराफा।

सराफा—सज्ञा पुं० [अ० सर्राफ] १ सराफी का काम। रुपए पैसे या सोने चाँदी के लेन देन का काम। २ वह स्थान जहाँ सराफों की दूकानें अधिक हों। सराफों का बाजार। जैसे,—अभी सराफा नहीं खुला होगा। ३ कोठी। बैंक।

क्रि० प्र०—खोलना।

सराफी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सराफ+ई (प्रत्य०)] १ सराफ का काम। चाँदी सोने या रुपए पैसे के लेन देन का रोजगार। २ वह वर्णमाला जिसमें अधिकतर महाजन लोग लिखते हैं। महाजनी। मुंडा। ३ नोट रुपए आदि भुनाने का बट्टा जो भुनानेवाले को देना पडता है।

यौ०—सराफी पारचा=हुंडी।

सराब'—सज्ञा पुं० [अ०] १ मृगतृष्णा। २ धोखा देनेवाली वस्तु। ३ धोखा। वंचन।

सराब[†]²—सज्ञा स्त्री० [फा० शराब] दे० 'शराब'।

सराबोर—वि० [स० स्राव+हिं० बोर] बिलकुल भीगा हुआ। तरबतर। नहाया हुआ। आप्लावित।

सराय'—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ रहने का स्थान। घर। मकान। २. यात्रियों के ठहरने का स्थान। मुसाफिरखाना।

मुहा०—सराय का कुत्ता=अपने मतलब का यार। स्वार्थी। मतलबी। सराय का भठियारी=लडाकी और निर्लज्ज स्त्री।

सराय'—सज्ञा पुं० [देश०] गुल्ला नाम का पहाडी पेड।

विशेष—यह वृक्ष बहुत ऊँचा होता है और हिमालय पर अधिक होता है। इसके हीर को लकडी सुगधित और हलकी होती है और मकान आदि बनवाने के काम में आती है।

सरार—सज्ञा पुं० [देश०] घोडा बेल नाम की लता जिसकी जड बिलाई कद कहलाती है। दे० 'घोडा बेल'।

सराव(पु)[†]—सज्ञा पुं० [स० शराव] १ मद्यपात्र। प्याला। (शराब पीने का)। २ कसोरा। कटोरा। ३. दीया। उ०—हरि जू की आरती बनी। अति बिचित्र रचना रचि राखी परति न गिरा गनी। कच्छप अंघ आसन अनूप अति डाँडी शेष बनी। मही सराव मध्य सागर घृत बाती शैल घनी।—सूर (शब्द०)। ४. एक तौल जो ६४ तोले की होती थी।

यौ०—सराव सपुट।

सराव'—वि० [स०] ध्वनियुक्त। गुंजित। शब्दायमान [को०]।

सराव'—सज्ञा पुं० १ आवरण। ढक्कन। २. कसोरा। शराव [को०]।

सराव'—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की पहाडी बकरी।

सरावग—सज्ञा पुं० [स० श्रावक] जैन। सरावगी। उ०—उँम सीम विलसत विमल तुलसी तरल तरग। स्वान सरावग के कहे लघुता लहै न गग।—तुलसी ग्र०, पृ० १३५।

सरावगी—सज्ञा पुं० [स० श्रावक] श्रावक धर्मावलबी। जैन धर्म माननेवाला। जैन।

विशेष—प्राय इस मत के अनुयायी आजकल वैश्य ही अधिक पाए जाते हैं।

सरावन[†]—सज्ञा पुं० [स० सरण, हिं० सरना] जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। हेंगा।

सरावसपुट—सज्ञा पुं० [स० शराव+सम्पुट] रसौषध फूँकने के लिये मिट्टी के दो कसोरा का मुँह मिलाकर बनाया हुआ एक बरतन।

सराविका—सज्ञा स्त्री० [स० शराविका] एक प्रकार की फुसी। दे० 'शराविका'।

सरास(पु)—सज्ञा पुं० [?] तुष। भूसी।

सरासन—सज्ञा पुं० दश० [स० शरासन] दे० 'शरासन'। उ०—(क) कटि निषग कर बान सरासन।—मानस, ६।११। (ख) (ख) लछिमन चले क्रुद्ध होइ बान सरासन हाथ।—मानस, ६।५१।

सरासर'—वि० [स०] इधर उधर घूमनेवाला [को०]।

सरासर'—अव्य० [फा०] १ एक सिरे से दूसरे सिरे तक। यहाँ से वहाँ तक। २ बिलकुल। पूर्णतया। जैसे,—तुम सरासर झूठ कहते हो। ३ साक्षात्। प्रत्यक्ष।

सरासरी'—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ आसानी। फुरती। २. शीघ्रता। जल्दी। ३ मोटा अदाज। स्थूल अनुमान। ४ बकाया लगान का दावा।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सरासरी'—क्रि० वि० १ जल्दी में। हडबडी में। जमकर नहीं। इतमीनान से नहीं। २ मोटे तौर पर। स्थूल रूप से।

सराह(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० श्लाघा] बडाई। प्रशसा। तारीफ। श्लाघा।

सराहत—सज्ञा स्त्री० [अ०] स्पष्ट कहना। विवृत करना या व्याख्या करना।

सराहना'—क्रि० स० [स० श्लाघन] १. तारीफ करना। बडाई करना। प्रशसा करना। उ०—(क) ऊँचे चितै सराहियत गिरह कबूतर लेत। दृग झलकित मुकलित बदन तन पुलकत हित हेत।—बिहारी (शब्द०)। (ख) जे फल देखौ साहब

फीका। ताकर काहु सराहे नीका।—जायसी (शब्द०)। (ग) सबै सराहत सीय लुनाई।—तुलसी (शब्द०)।

सराहना[2]—संज्ञा स्त्री० प्रशंसा। तारीफ। उ०—श्रीमुख जासु सराहना की ही श्री हरिचंद।—प्रतापनारायण (शब्द०)।

सराहनीय ५—वि० [हिं० सराहना+ईय (प्रत्य०)] १ प्रशंसा के योग्य। तारीफ के लायक। श्लाघनीय। २ अच्छा। बढ़िया। उम्दा।

सराहु—वि० [सं०] १ राहु से युक्त। राहु के साथ। २ (चंद्रमा) जो राहु से ग्रस्त हो (को०)।

सरि[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ झरना। निझर। झालर (को०)। २. दिशा (को०)। ३ दे० 'सरी'।

सरि ५[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] नदी।

सरि ५[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० सदृश, प्रा० सरिस] बराबरी। समता। उ०—दाडिम सरि जो न कै सका फाटउ हिया दरकि।—जायसी (शब्द०)।

सरि[4]—वि० तुल्य। सदृश। समान।

सरि[5]—संज्ञा स्त्री० [देशी] हार। लरी। माला।

सरिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सरिका] गमनशील। जो जा रहा हो (को०)।

सरिका[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हींगपत्री। हींगुपत्री। २ मोतियों की लड़ी। ३ मुक्ता। ४ रत्न। ५ छोटा ताल या सरोवर। ६ एक तीर्थ। ७ गमन। प्रस्थान (को०)। ८ जानेवाली स्त्री (को०)।

सरिका[2]—संज्ञा पुं० [अ० सरिकह्] चौर्य। चोरी। तस्करता (को०)।

सरिगम—संज्ञा पु० [हिं० सरगम] दे० 'सरगम'।

सरित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नदी। २ दुर्गा का एक नाम (को०)। सूत्र। डोरी (को०)।

सरित ५—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] सरिता। नदी। उ०—दुगति दुर्गन ही जु कुटिल गति सरितन ही की।—केशव (शब्द०)।

सरितापति—संज्ञा पुं० [सं० सरितांपति] १ नदियों का पति, समुद्र। २ चार की संख्या का वाचक शब्द (को०)।

सरितावरा—संज्ञा स्त्री० [सं० सरितांवरा] गंगा, जो नदियों में श्रेष्ठ है (को०)।

सरिता—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित् (=बहा हुआ)] १ धारा। प्रवाह। २ नदी। दरिया।

सरित्फ—संज्ञा पुं० [सं०] नदी का फेन।

सरित्त ५—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] नदी। सरिता।

सरित्पति—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र। २ दे० 'सरितापति'।

सरित्सुत—संज्ञा पुं० [सं०] (गंगा के पुत्र) भीष्म।

सरित्वान्—संज्ञा पुं० [सं० सरित्वत्] सिंधु। समुद्र (को०)।

सरित्सुरंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्सुरङ्गा] नहर। कुल्या (को०)।

सरिद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सरित्'।

सरिदधिपति—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सरित्पति' (को०)।

सरिदिही—संज्ञा स्त्री० [फा० सर (=सरदार)+देह (=गाँव)] वह नजर या भेंट जो जमींदार या उसका कारिंदा किसानों से हर फसल पर लेता है।

सरिदुभय—संज्ञा पुं० [सं०] नदी का दोनों किनारा (को०)।

सरिद्भर्ता—संज्ञा पुं० [सं० सरिद्भर्तृ] समुद्र।

सरिद्वत्—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र। सागर (को०)।

सरिद्वरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] (उत्तम नदी) गंगा।

सरिन्नाथ—संज्ञा पुं० [सं०] सागर (को०)।

सरिन्मुख—संज्ञा पु० [सं०] नदी का उद्गम। मुहाना (को०)।

सरिमा—संज्ञा पुं० [सं० सरिमन्] १ गति। गमन। २ वायु। ३ काल। समय (को०)।

सरिया[1]—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ ऊँची भूमि। २ पैमाने का और कोई छोटा सिक्का। (सोनार)।

सरिया[2]—संज्ञा पुं० [सं० शर] १ सरकंडे की छड़ जो गुनहने या रपहले तार बनाने में काम आती है। सरई। २ पतली छड़।

सरियाना—क्रि० स० [सं० सर] १ तरतीब से लगाकर इकट्ठा करना। बिखरी हुई चीजें ढंग से समेटना। जैसे,—लकड़ी सरियाना, कागज सरियाना। २ मारना। लगाना। (बाजारू)।

सरिर, सरिल—संज्ञा पुं० [सं०] सलिल। जल।

सरिवन—संज्ञा पुं० [सं० शालपर्ण] शालपर्ण नाम का पौधा। विपर्णी। अंशुमती।

विशेष—यह क्षुप जाति की वनौषधि है और भारत के प्रायः सभी प्रांतों में होती है। इसकी ऊँचाई तीन चार फुट होती है। यह जंगली झाड़ियों में पाई जाती है। इसका कांड सीधा और पतला होता है। पत्ते बेल के पत्तों की भाँति एक सींके में तीन तीन होते हैं। ग्रीष्म ऋतु को छोड़ प्रायः सभी ऋतुओं में इसके फल फूल देखे जाते हैं। फूल छोटे और आसमानी रंग के होते हैं। फलियाँ चिपटी पतली और प्रायः आध इंच लंबी होती हैं। सरिवन औषध के काम में आती है।

सरिवर, सरिवरि ५—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरि+सं० प्रति, प्रा० पडि, वडि] बराबरी। समता। उ०—तुमहि हमहि सरिवरि कस नाथा।—तुलसी (शब्द०)।

सरिश्क—संज्ञा पुं० [फा०] १. आँसू। २ बूँद (को०)।

सरिश्त—संज्ञा पुं० [फा०] १ स्वभाव। प्रवृत्ति। २ बनावट। निर्मिति। सृष्टि (को०)।

सरिश्ता—संज्ञा पुं० [फा० सररिश्तह् का विकृत रूप सरिश्तह्] १ अदालत। कचहरी। २ शासन या कार्यालय का विभाग। महकमा। दफ्तर। आफिस।

सरिश्तेदार—संज्ञा पु० [फा० सरिश्तहदार] १ किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी। २ अदालतों में देशी भाषाओं में मुकदमों की मिसलें रखनेवाला कर्मचारी।

सरिश्तेदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ सरिश्ते का भाव। २ सरिश्तेदार का काम या पद।

सरिषप—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'सर्षप' (को०)।

सरिस(पु)—वि० [सं० सदृश, प्रा० सरिस] सदृश। समान। तुल्य। उ०—(क) जल पय सरिस बिकाइ देखहु प्रीति की रीति यह।—तुलसी (शब्द०)। (ख) उठिकै निज मस्तक धयो चालत अमुर महान। वात वेग ते फल सरिस महि महँ गिरे विमान।—गिरधरदास (शब्द०)।

सरी'—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तलैया। पुष्करिणी। छोटा जलाशय। २ झरना। छोटा प्रपात (को०)।

सरी'—संज्ञा स्त्री० [फा०] अध्यक्षता। सरदारी (को०)।

सरी'—संज्ञा स्त्री० [देशी] माला। हार।

सरीक†—वि० [फा० शरीक] दे० 'शरीक'।

सरीकत†—संज्ञा स्त्री० दे० [फा० शिरकत] दे० 'शिरकत'।

सरीकता(पु)—संज्ञा स्त्री० [फा० शरीक + सं० ता (प्रत्य०)] साझा। हिस्सा। शिरकत। उ०—निपट निदरि बोले बचन कुठारपानि मानी त्रास औवनिपन मानो मौनता गही। रोपे मापे लखन अकन अनपोही बातैं तुलसी विनीत बानी बिहँसि ऐसी कही। सुजस तिहारो भरे भुअन भृगुतिलक प्रबल प्रताप आपु कही सो सबै कही। टूटचौ सो न जुरैगो सरासन महेस जू को, रावरो पिनाक मे सरीकता कहा रही।—तुलसी (शब्द०)।

सरीका†—वि० [सं० सदृक्ष, प्रा० सरिक्ख, हिं० सरीखा] दे० 'सरीखा'।

सरीखा—वि० [सं० सदृक्ष, प्रा० सरिक्ख] सदृश। समान। तुल्य।

सरीफा—संज्ञा पुं० [सं० श्रीफल] एक छोटा पेड जिसके फल खाए जाते है।

विशेष—इसकी छाल पतली खाकी रग की होती है और पत्ते अमरूद के पत्तो के से होते हैं। फूल तीन दलवाले, चौडे और कुछ अनीदार होते है। फल गोलाई लिए हरे रग का होता है और उसपर उभरे हुए दाने होते हैं जो देखने मे बडे सुदर लगते है। बीजकोशो का गूदा बहुत मीठा होता है। इस फल मे बीज अधिक होते हैं। सरीफा गरमी के दिनो मे फूलता है और कार्तिक अगहन तक फल पकते हैं। विंध्य पर्वत पर बहुत से स्थानो मे यह आप से आप उगता है। वहाँ इसके जगल के जगल खडे है। जगली सरीफे के फल छोटे होते है और उनमे गूदा बहुत कम होता है।

सरीर'—संज्ञा पुं० [सं० शरीर] दे० 'शरीर'। उ०—सरज सरीर वादि बहु भोगा।—मानस, २।१७८।

सरीर'—संज्ञा पु० [अ०] सिंहासन। राजगद्दी। तख्त (को०)।

सरीर'—संज्ञा स्त्री० १ पदचाप। पदध्वनि। २ कलम की खरखराहट।

यौ०—सरीरेकलम = लिखते समय कागज पर होनेवाली कलम की खरखराहट।

सरीस(पु)'—वि० [सं० सदृश, प्रा० सरिस] समान। तुल्य। सरीखा। उ०—(क) विक्रम राज सरीस भौ वृधि ब्रन्नन कवि चद।—पृ० रा० १।७०३। (ख) सुनहु लखन भल भरत सरीसा।—मानस, २।२३०।

सरीस(पु)'—संज्ञा पुं० [देशी] सह। साथ। उ०—परनापमि सानउ भ्रात सरीस। प्रथीपति आइ नमाइय सीस।—पृ० रा०, ५।३८।

सरीसृप—संज्ञा पुं० [सं०] १ रेंगनेवाला जतु। जैसे,—साँप, कनखजूरा आदि। २. सप। साँप। ३ विष्णु का एक नाम।

सरीसृप'—वि० रेंगनेवाला। पेट के बल घिसटते हुए चलनेवाला (को०)।

सरीह—वि० [अ०] जो प्रत्यक्ष हो खुला हुआ।

सरीहन्—अव्य० [अ०] प्रत्यक्षत। स्पष्टत (को०)।

सरु'—वि० [सं०] पतला। लघु। छोटा (को०)।

सरु—संज्ञा पुं० १ तीर। बाण। २ तलवार या कटार की मूठ। दे० सरु (को०)।

सरुख—वि० [सं० सरुष] सक्रोध। क्रोधयुक्त।

सरुक्—वि० [सं०] १. दे० 'सरुच्'। २ दे० 'सरुज्'।

सरुच्—वि० [सं०] शोभायुक्त। कातिमान्।

सरुज्—वि० [सं०] कष्टग्रस्त। व्याधिग्रस्त। रोगयुक्त।

सरुज—वि० [सं०] रोगी। रोगयुक्त। रुग्न। उ०—सरज सरीर वादि बहु भोगा। बिनु हरिभगति जायँ जप जोगा।—मानस, २।१७८।

सरुट्, सरुष्, सरुष—वि० [सं०] क्रोधयुक्त। कुपित। उ०—बोले भृगुपति सरुष हँसि तहूँ बधु सम बाम।—मानस, १।२८२।

सरुहाना ५ †[१]—क्रि० अ० [?] अच्छा होना। ठीक होना।

सरुहाना ५[२]—क्रि० स० चगा करना। अच्छा करना। उ०—समुझि रहनि सुनि कहनि बिरह व्रत अनप अमिअ ओषध सरुहाए।—तुलसी (शब्द०)।

सरूप'—वि० [सं०] [सज्ञा स्त्री० सरूपता] १ रूपयुक्त। आकारवाला। २ एक ही रूप का। सदृश। समान। ३ रूपवान। सुदर।

सरूप†[२]—संज्ञा पु० [सं० स्वरूप] दे० 'स्वरूप'। उ०—जा सरूप बस सिव मन माहीं। जेहि कारन मुनि जतन कराहीं।—मानस १।१४६।

सरूपता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक रूप या समान होने की स्थिति या भाव। सदृशता। २ ब्रह्मरूप होना। लीन होना जो मुक्ति के चार भेदो मे एक है। दे० 'सारूप्य'।

सरूपत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सरूपता'।

सरूपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] भूत की स्त्री जो असख्य रुद्रो की माता कही गई है।

सरूपी—वि० [सं० सरूपिन्] समान रूपवाला। सदृश (को०)।

सरूर—संज्ञा पुं० [फा० सुरूर] १ आनद। खुशी। प्रसन्नता। २ हलका नशा। नशे की तरग। मादकता।

सरेख(पु)—वि० [सं० श्रेष्ठ] [वि० स्त्री० सरेखी] अवस्था मे बडा और समझदार। श्रेष्ठ। चतुर। चालाक। सयाना। उ०—हँसि हँसि पूछै सखी सरेखी। जनहु कुमुदचदन मुख देखी।—जायसी (शब्द०)।

**सरेखना**—क्रि० स० [हिं०] १ अच्छी तरह समझा देना। १ दे० 'सहेजना'।

**सरेखा**'—संज्ञा पुं० [स० श्लेषा] दे० 'श्लेषा' (नक्षत्र)।

**सरेखा**[पु]२—वि० [स० श्रेष्ठ] दे० 'सरेख'। उ०—ततखन बोला सुआ सरेखा। अगुवा सोइ पथ जेहि देखा।—जायसी (शब्द०)।

**सरेदस्त**—क्रि० वि० [फा०] १ इस समय। अभी। २ फिलहाल। अभी के लिये। इस समय के लिये। उ०—हाँ, यों तो मेरा खयाल है, सरेदस्त आप किसी संकट में नहीं हैं।—कंकाल, पृ० ६६।

**सरेनौ**—क्रि० वि० [फा०] नए ढंग से। पुनः शुरू से।

**सरेबाजार**—क्रि० वि० [फा० सरे बाजार] बाजार में। जनता के सामने। २ खुलेआम। सबके सामने।

**सरेराम**—संज्ञा पुं० [फा०] अटारी। कोठा [को०]।

**सरेरा, सरेला**—संज्ञा पुं० [देश०] १ पाल में लगी हुई रस्सी जिसे ढीला करने से पाल की हवा निकल जाती है। २ मछली की वसी की डोरी। शिस्त।

**सरेश**—वि०, संज्ञा पुं० [फा०] दे० 'सरेस'।

**सरेशाम**—संज्ञा पुं० [फा०] सायंकाल। संध्याकाल। संध्यामुख [को०]।

**सरेशीर**—संज्ञा पुं० [फा०] मलाई। सरशीर।

**सरेस**'—संज्ञा पुं० [फा० सरेश] एक लसदार वस्तु जो ऊँट, गाय, भैंस, आदि से चमड़े या मछली के पोटे को पकाकर निकालते हैं। सहरेस। सरेश।

विशेष—यह कागज, कपड़े, चमड़े आदि को आपस में जोड़ने या चिपकाने के काम आता है। जिल्दबंदी में इसका व्यवहार बहुत होता है।

**सरेस**'—वि० चिपकनेवाला। लसीला।

**सरेसमाही**—संज्ञा पुं० [फा० सरेश माही] सफेद या काले रंग का गोंद के समान एक द्रव्य।

विशेष—यह एक प्रकार की मछली के पेट से निकलता है जिसको नाक लंबी होती है और जिसे नदी का सुग्गर कहते हैं। यह दुर्गंधयुक्त और स्वाद में कड़ुवा होता है।

**सरौंट**[पु]†—संज्ञा पुं० [स० शाट+वर्त्त, हिं० सिलवट] कपड़ों में पड़ी हुई सिलवट। शिकन। बली। उ०—नट न सीस साबित भई लुटी सुखन की मोट। चुप करिए चारी करति सारी परी सरौंट।—बिहारी (शब्द०)।

**सरो**—संज्ञा पुं० [फा० सर्व] एक सीधा पेड़ जो बगीचों में शोभा के लिये लगाया जाता है। वनझाऊ।

विशेष—इस पेड़ का स्थान काश्मीर, अफगानिस्तान और फारस आदि एशिया के पश्चिमी प्रदेश हैं। फारसी की शायरी में इसका उल्लेख बहुत अधिक है। ये शायर नायिका के सीधे डीलडौल की उपमा प्रायः इसी से दिया करते हैं। यह पेड़ बिलकुल सीधा ऊपर को जाता है। इसकी टहनियाँ पतली होती हैं और पत्तियाँ से लगे होने के कारण बिखरी नहीं देतीं। पत्तियाँ टेढ़ी रेखाओं के आकार के रूप में बहुत घनी और सुंदर होती हैं। यह पेड़ भाऊ की जाति का है, और उसी के से फल भी उसमें लगते हैं।

**सरोई**—संज्ञा पुं० [हिं० सरो ?] एक प्रकार का बड़ा पेड़।

विशेष—यह वृक्ष बहुत ऊँचा होता है। इसकी लकड़ी सजावट लिए सफेद होती है और चारपाइयाँ आदि बनाने के काम में आती है। इसकी छाल से रंग भी निकाला जाता है।

**सरोकार**—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० सरोकारी] १. परस्पर व्यवहार का संबंध। २ लगाव। आवश्यकता। प्रयोजन। मतलब।

**सरोकारी**—वि० [फा०] सरोकार रखनेवाला [को०]।

**सरोज**[पु]—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल। २. सारस पक्षी (डिं०)। [पु] ३ मुख। उ०—फूले सरोज बनाइ कै ऊपर सोवर खंजन दै थिरकाइहौं।—बिहारी र०, मा० १, पृ० ३१।

यौ०—सरोजखंड = कमलों का समूह। सरोजनयन। सरोजमुख। सरोजराग = पद्मराग। सरोजन।

**सरोजना**[पु]—क्रि० स० [सं० सायुज्य] पाना। उ०—हम सालोक्य स्वरूप सराज्यो रहा समीप सहाई। सो तजि रहत और की ओरे तुम अलि बड़े अदाई।—सूर (शब्द०)।

**सरोजमुखी**—वि० स्त्री० [सं०] कमल के समान मुखवाली। सुंदरी। उ०—तो तन मनोज की ही मौज है सरोजमुखी हाजिर हजूर साजैं रहैं सरसाइ कै।—बिहारी र०, मा० १, पृ० ६६।

**सरोजल**—संज्ञा पुं० [सं०] तालाब का पानी [को०]।

**सरोजिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कमलों से भरा हुआ ताल। कमलपूर्ण सरसी। २ कमलों का समूह। कमलवन। ३ कमल का पौधा (को०)। ४ कमल का फूल।

**सरोजी**'—वि० [सं० सरोजिन्] [स्त्री० सरोजिनी] १ कमलवाला। २ जहाँ कमल हों।

**सरोजी**'—संज्ञा पुं० १ (कमल से उत्पन्न) ब्रह्मा। २ बुद्ध का एक नाम।

**सरोतर**†—वि० [सं० सर्वत्र, हिं० सरबतर] १ निरंतर। लगातार। अनवरत। उ०—रंग छलला जहाँ सरोतर चक। ऊ गुरुन क बनारसी बैठक।—शुदा की०। २ साफ। सुस्पष्ट।

**सरोता**†—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सरौता'।

**सरोतसव**—संज्ञा पुं० [स०] १ बकुला। बक पक्षी। २ सारस।

**सरोद**—संज्ञा पुं० [फा०] १. बीन की तरह का एक प्रकार का बाजा।

विशेष—इसमें ताँत और लोहे के तार लगे रहते हैं और इसके आगे का हिस्सा चमड़ा से मढ़ा रहता है।

२ नाचने गाने की क्रिया। गान और नृत्य।

**सरोधा**—संज्ञा पुं० [स० स्वरोदय] श्वास के दाहिने या बाएँ नथने से निकलना देखकर भविष्य की बातें कहने की विद्या।

**सरोपा**—संज्ञा पुं० [फा०] १ सिर और पैर। २. सिरोपाव। खिलअत [को०]।

**सरोरक्ष, सरोरक्षक**—सज्ञा पुं० [स०] जलाशय की रक्षा करनेवाला व्यक्ति [को०]।

**सरोरुह**—सज्ञा पुं० [स०] कमल।

**सरोला**—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार की मिठाई।

विशेष—यह पोस्ते, छुहारे, बादाम आदि मेवो के साथ मैदे को घी और चीनी मे पकाकर बनाई जाती है।

**सरोवर**—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० सरोवरी] १ तालाब। पोखरा। २ झील। ताल।

**सरोवरी**—सज्ञा स्त्री० [स०] पुष्करिणी। छोटी तलैया। सरसी। उ०—नाभि सरोवरी श्रो' त्रिवली की तरगनि पैरत ही दिन-राति है।—भिखारी ग्र०, भा० २, पृ० १२६।

**सरोविंदु**—सज्ञा पुं० [स० सरोविन्दु] एक प्रकार का वैदिक गीत।

**सरोष**—वि० [स०] क्रोधयुक्त। कुपित। उ०—सुनि सरोष भृगुनायक आए। बहुत भाँति तिन आँखि देखाए।—मानस, १।२६३।

**सरोस**ⓤ—वि० [स० सरोष] दे० 'सरोष'।

**सरोसामान**—सज्ञा पु० [फा० सर+व+सामान] सामग्री। उपकरण। असबाब।

**सरोही**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिरोही] दे० 'सिरोही'।

**सरौ**[1]—सज्ञा पु० [स० शराव] १ कटोरी। प्याली। २ ढक्कन। ढकना।

**सरौ**[2]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सरो] एक वृक्ष विशेष। दे० 'सरो'।

**सरौट**ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिलवट] दे० 'सरौंट'।

**सरौता**—सज्ञा [स० सार (=लोहा)+पत्र, प्रा० सारवत्त] [स्त्री० अल्पा० सरौती] सुपारी काटने का औजार।

विशेष—यह लोहे के दो खडो का होता है। ऊपर का खड गँडासी की भाँति धारदार होता है और नीचे का मोटा, जिसपर सुपारी रखते है, दोनो खडो के सिरे ढीली कील से जुडे रहते हैं, जिससे वे ऊपर नीचे घूम सकते है। इन्ही दोनो खडो के बीच मे रखकर और ऊपर से दबाकर सुपारी काटी जाती है।

**सरौती**[1]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सरौता] छोटा सरौता।

**सरौती**[2]—सज्ञा स्त्री० [स० शरपत्री] एक प्रकार की ईख जिसकी छड पतली होती है।

विशेष—इस ईख की गाँठें काली होती है और सब तना फेद होता है।

**सर्क**—सज्ञा पु० [स०] १ मन। चित्त। २ वायु। ३ एक प्रजापति का नाम। ४ ब्रह्मा (को०)।

**सर्करा**ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० शर्करा] दे० 'शर्करा'। उ०—ज्यो सर्करा मिलै सिकता महँ बल ते न कोउ बिलगावै।—तुलसी ग्र०, पृ० ५४२।

**सर्कस**—सज्ञा पुं० [अ०] १ वह स्थान जहाँ जानवरो का खेल और शारीरिक शक्ति का करतब दिखाया जाता है। क्रीडागन। २ वह मडली जो पशुओ तथा नटो को साथ रखती है और खेल कूद के तमाशे दिखाती है।

**सर्का**—सज्ञा पु० [अ० सर्क़ह्] १ चोरी। २ दूसरे के भाव या लेख को चुरा लेने की क्रिया। साहित्यिक चोरी।

**सर्कार**—सज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सरकार'।

**सर्कारी**—वि० [हिं०] दे० 'सरकारी'।

**सर्किट**—सज्ञा पु० [अ०] १ मडल। परिधि। परिणाह। घेरा। २ परिभ्रमण। आवर्तन।

यौ०—सर्किट हाउस=दे० 'सर्क्युट हाउस'।

**सर्किल**—सज्ञा पुं० [अ०] कई महल्लो, गाँवो या कसबो आदि का समूह जो किसी काम के लिये नियत हो। हलका। जैसे,—सर्किल अफसर, सर्किल इन्सपेक्टर। २ घेरा। वृत्त।

**सर्क्युट हाउस**—सज्ञा पु० [अ०] जिले के प्रधान नगर मे वह सरकारी मकान या कोठी जहाँ, दौरा करते हुए उच्च राज्य कर्मचारी या बडे अफसर लोग ठहरते हैं। सरकारी कोठी।

**सर्क्यूलर**—सज्ञा पु० [अ०] १ गश्ती चिट्ठी। २ सरकारी आज्ञापत्र जो दफ्तरो मे घुमाया जाता है। ३ वह पत्र, विज्ञप्ति या सूचना जो बहुत से व्यक्तियो के नाम भेजी जाय। गश्ती चिट्ठी।

**सर्क्ष**—वि० [स०] ऋक्षयुक्त। नक्षत्रमडित। नक्षत्रयुक्त [को०]।

**सर्ग**[1]—सज्ञा पु० [स०] १ गमन। गति। चलना या बढना। २. ससार। सृष्टि। जगत् की उत्पत्ति। ३ बहाव। झोक। प्रवाह। ४ छोडना। चलाना। फेंकना। ५ छोडा हुआ अस्त्र। ६ मूल। उद्गम। उत्पत्ति स्थान। ११ प्रयत्न। चेष्टा। १२ सकल्प। १३ किसी ग्रथ (विशेषत काव्य) का अध्याय। प्रकरण। परिच्छेद। उ०—प्रथम सर्ग जो सेष रह, दूजे सप्तक होइ। तीजे दोहा जानिए सगुन विचारव सोइ।—तुलसी ग्र०, पृ० ६७। १४ मोह। मूर्छा। १५. शिव का एक नाम। १६ धावा। हमला (सेना का)। १७ स्वीकृति (को०)। १८ युद्धोपकरण, शस्त्रादि का उत्पादन (को०)। १९ रुद्र का एक पुत्र (को०)। २० जीव। प्राणी (को०)। २१. मलत्याग (को०)।

**सर्ग**ⓤ[2]—सज्ञा पु० [स० स्वर्ग] दे० 'स्वर्ग'।

यौ०—सर्गपताली।

**सर्गक**—वि० [स०] सर्जन करनेवाला। निर्माता [को०]।

**सर्गकर्ता**—सज्ञा पुं० [स० सर्गकर्तृ] सृष्टि निर्माता। स्रष्टा [को०]।

**सर्गकालीन**—वि० [स०] जो सृष्टिनिर्माण के काल का या उससे सबद्ध हो [को०]।

**सर्गक्रम**—सज्ञा पु० [स०] सृष्टि का सिलसिला। सर्ग का क्रम [को०]।

**सर्गपताली**—सज्ञा पु० [स० स्वर्ग+पाताल+हिं० ई (प्रत्य०)] १. जिसकी आँखे ऐंची हो। ऐंचाताना। २ वह बैल जिसका एक सीग ऊपर की ओर उठा हो और दूसरा नीचे की ओर झुका हो।

**सर्गपुट**—सज्ञा पुं० [सं०] शुद्ध राग का एक भेद।

**सर्गबध**—वि० [स० सर्गबन्ध] जो कई अध्यायो या सर्गो मे विभक्त हो। जैसे,—सर्गबध काव्य।

सर्गुन‡—वि० [स० सगुण] दे० 'सगुण'।

सर्चलाइट—सज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की बहुत तेज बिजली की रोशनी जिसका प्रकाश रिफलेक्टर या प्रकाश-परावर्त्तक द्वारा लबाई मे बहुत दूर तक जाता है। अन्वेषक प्रकाश। प्रकाश प्रक्षेपक।

विशेष—इसका प्रकाश इतना तेज होता है कि आँखे सामने नहीं ठहरती और दूर तक की चीजे साफ दिखाई देती हैं। दुर्घटना के बचाव के लिये पहले प्राय जहाजो पर इसका उपयोग होता था, पर आजकल मेल, एक्सप्रेस आदि ट्रेनो के इजिनो के आगे भी यह लगी रहती है।

सर्ज[1]—सज्ञा पु० [स०] १ बडी जाति का शाल वृक्ष। अजकर्ण वृक्ष। २ राल। धूना। करायल। ३ शल्लकी वृक्ष। सलई का पेड। ४ विजयसाल का पेड। असन वृक्ष।

यौ०—सर्जनिर्यास, सर्जनिर्यासक = दे० 'सर्जमणि'। सर्जरस।

सर्ज[2]—सज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार का बढिया मोटा ऊनी कपडा जो प्राय कोट आदि बनाने के काम मे आता है।

सर्जक—सज्ञा पु० [स०] १ बडा शाल वृक्ष। २ विजयसाल। ३ सलई का पेड। ४ मट्ठा छोडने पर गरम दूध का फटाव।

सर्जन[1]—सज्ञा पुं० [स०] [वि० सर्जनीय, सर्जित] १ छोडना। त्याग करना। फेकना। २ निकालना। ३ सृष्टि का उत्पन्न होना। सृष्टि। ४ निर्माण। ५ सेना का पिछला भाग। ६ ढीला करना (को०)। ७ मलत्याग (को०)। ८ माल का गोदाम।

सर्जन[2]—सज्ञा पु० [अ०] अस्त्र चिकित्सा करनेवाला। चीर फाड करनेवाला डाक्टर। जर्राह।

सर्जना—सज्ञा स्त्री० [स०] रचना। निर्माण। सृष्टि (को०)।

सर्जनी—सज्ञा स्त्री० [स०] गुदा की वलियो मे से बीचवाली वली जो मल, पवनादि निकालती है।

सर्जमणि—सज्ञा पुं० [स०] १ मोचरस। सेमल का गोद। २ राल। धूना। करायल।

सर्जरस—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सर्जमणि' (को०)।

सर्जरी—सज्ञा स्त्री० [अ०] चीर फाड करके चिकित्सा करने की क्रिया या विद्या। शल्य चिकित्सा।

सर्जि—सज्ञा स्त्री० [स०] सज्जी।

सर्जिका—सज्ञा स्त्री० [स०] सज्जी खार।

सर्जिकाक्षार, सर्जिक्षार—सज्ञा पु० [स०] सज्जी। क्षार।

सर्जी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सर्जि'।

सर्जु[1]—सज्ञा पु० [स०] १ वणिक। व्यापारी। २ दे० 'सर्ज'।

सर्जु[2]—सज्ञा स्त्री० विद्युत्। बिजली।

सर्जू[1]—सज्ञा पुं० [स०] वणिक्। व्यापारी। २ गले का हार। कठहार। ३ गमन। अनुसरण (को०)।

सर्जू[2]—सज्ञा स्त्री० दे० 'सर्जु[2]'।

सर्जू[3]—सज्ञा स्त्री० [स० सरयू] दे० 'सरयू'।

सर्जूर—सज्ञा पु० [सं०] दिन।

सर्जेंट—सज्ञा पुं० [अ०] दे० 'सारजट'।

सर्ज्य—सज्ञा पुं० [स०] १ राल। धूना (को०)।

सर्टिफिकेट—सज्ञा पु० [अ० सर्टिफिकेट] १ परीक्षा मे उत्तीर्ण होने का प्रमाणपत्र। सनद। २ चाल चलन, स्वास्थ, योग्यता आदि का प्रमाणपत्र।

सर्णसि, सर्णीक—सज्ञा पुं० [स०] जल। पानी (को०)।

सर्त—सज्ञा स्त्री० [फा० शर्त] दे० 'शर्त'।

सर्ता—सज्ञा पुं० [स० सर्तृ] घोडा।

सर्द—वि० [फा०] १ ठडा। शीतल। २ सुस्त। काहिल। ढीला। ३ मद। धीमा।

यौ०—सर्द गर्म = (१) ऊँच नीच। (२) काल या दशा का परिवर्तन। सर्दबाई। सर्दबाजारी = बाजार मे वस्तुओ की माँग का अभाव। सर्दमिजाज।

मुहा०—सर्द होना = (१) ठडा पडना। शीतल होना। (२) मरकर तमाम हो जाना। (३) मद हो जाना। धीमा हो जाना। (४) उत्साह रहित होना। चुप हो जाना। दब जाना।

४ नपुसक। नामर्द। ५ बेस्वाद। बेमजा।

सर्दई—वि० [प० सर्दा + ई (प्रत्य०)] सर्दा के रग का। हरिताभा युक्त पीले रगवाला।

सर्दबाई—सज्ञा स्त्री० [फा० सर्द + हिं० बाई] हाथी की एक बीमारी जिसमे उसके पैर जकड जाते है।

सर्दमिजाज—वि० [फा० सर्द + मिजाज] १ मुर्दा दिल। जिसमे शील न हो। बेमुरौवत। रूखा।

सर्दा—सज्ञा पुं० [प०] बढिया जाति का लबोतरा खरबूजा जो काबुल से आता है।

सर्दाबा—सज्ञा पुं० [फा० सर्दाबह्] १ तहखाना। तलगृह (को०)। २ कब्र। समाधि।

सर्दार—सज्ञा पुं० [फा० सरदार] दे० सरदार'।

सर्दी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ सर्द होने का भाव। ठडापन। शीतलता। २ जाडा। शीत।

मुहा०—सर्दी पडना = जाडा होना। सर्दी खाना = ठड सहना। शीत सहना। सर्दी लगना = सर्दी खाना।

३ जुकाम।

क्रि० प्र०—होना।

सर्प—सज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० सर्पिणी] २ रेंगना। २ साँप।

यौ०—सर्पककालिका = दे० 'सपककाली'। सर्प कोटर = साँप का बिल। सर्पदश = साँप का काटना। सर्पदष्ट = (१) वह जिसे साँप ने काटा हो। सर्प द्वारा दष्ट। (२) साँप का काटना। सर्पधारक = सँपेरा। सर्पनामा = दे० 'सर्पककाली'। सर्पनिर्मोचन = केचुल। सर्पफण, सर्पफणा = साँप का फन। सर्पबलि = साँपो को दी जानेवाली बलि या उपहार। सर्पभृता = पृथ्वी।

धरित्री। सर्पमणि = वह मणि या रत्न जो सर्प के सिरपर पाया जाता है। सर्पविद् = सँपेरा। सर्पविवर = साँप का बिल। सर्पवेद = दे० 'सर्प विद्या'। सर्पव्यापादन = (१) साँप द्वारा काटे जाने से मरना। (२) सर्प का व्यापादन। साँपो को मारना।

३ ज्योतिष मे एक प्रकार का बुरा योग। ४ नागकेसर। ५ ग्यारह रुद्रो मे से एक। ६ एक म्लेच्छ जाति। ७ सरण। गमन (को०)। ८ वक्र या कुटिल गति (को०)। ९ आश्लेषा नक्षत्र (को०)। १० एक राक्षस (को०)।

**सर्पककालिका**—सज्ञा स्त्री० [स० सर्पकङ्कालिका] सर्प लता।

**सर्पकाल**—सज्ञा पु० [स०] साँपो का काल, गरुड। उ०—सर्पकाल कालीगृह आए। खगपति बलि बलात सो खाए।—गोपाल (शब्द०)।

**सर्पगधा**—सज्ञा स्त्री० [स० सर्पगन्धा] १ गध नाकुली। २ नकुल कद। नाकुली। ३ नागदवन नामक जडी।

**सर्पगति**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सर्प की गति। २ कुटिल गति। कपट की चाल।

**सर्पगृह**—सज्ञा पुं० [स०] साँप का घर। बाँबी।

**सर्पघातिनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] सरहँटी। सर्पाक्षी।

**सर्पच्छत्र, सर्पच्छत्रक**—सज्ञा पु० [स०] छत्राक। खुमी। कुकरमुत्ता।

**सर्पछिद्र**—सज्ञा पु० [स०] सर्प + हिं० छिद्र] साँप का बिल। बाँबी।

**सर्पण**—सज्ञा पु० [स०] [वि० सर्पित, सर्पणीय] १ रेगना। सरकना। २ धीरे धीरे चलना। ३ छोडे हुए तीर का भूमि से लगा हुआ जाना। ४ कुटिल या वक्र गति (को०)।

**सर्पतनु**—सज्ञा पुं० [स०] बृहती का एक भेद।

**सर्पतृण**—सज्ञा पु० [स०] नकुल कद।

**सर्पदडा**—सज्ञा स्त्री० [स० सर्पदण्डा] सिहली पीपल।

**सर्पदडी**—सज्ञा स्त्री० [सं० सर्पदण्डी] १ गोरक्षी। गोरख इमली। २ गँगरेन। नागबला।

**सर्पदता**—सज्ञा स्त्री० [स० सर्पदन्ता] सिहली पीपल।

**सर्पदती**—सज्ञा स्त्री० [स० सर्पदन्ती] नागदती। हाथी शुडी।

**सर्पदष्ट्र**—सज्ञा पुं० [स०] १ साँप का दत। २ जमालगोटा।

**सर्पदष्ट्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] दाती। उदुबर पर्णी।

**सर्पदष्ट्रिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] अजशृगी। विषाणी (को०)।

**सर्पदष्ट्री**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वृश्चिकाली। २ दती। उदुबर-पर्णी। ३ बिछुआ। वृश्चिका।

**सर्पदमनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] वध्या कर्कोटकी (को०)।

**सर्पद्विट्, सर्पद्विष**—सज्ञा पुं० [स०] मोर। मयूर।

**सर्पनेत्रा**—सज्ञा पु० [स०] १ सर्पाक्षी। २ गधनाकुली।

**सर्पपति**—सज्ञा पुं० [स०] शेषनाग।



**सर्पपुष्पी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नागदती। २ बाँझ खेखसा।

**सर्पप्रिय**—सज्ञा पु० [स०] चदन।

**सर्पफणज**—सज्ञा पु० [स०] सर्पमणि।

**सर्पफेण**—सज्ञा पु० [स०] अफीम। अहिफेन।

**सर्पबध**—सज्ञा पुं० [स० सर्पबन्ध] कुटिल या पेचीली चाल।

**सर्पबेलि**—सज्ञा स्त्री० [स०] नागबल्ली। पान।

**सर्पभक्षक**—सज्ञा पु० [स०] १ नकुल कद। नाकुली कद। २ मोर। मयूर पक्षी।

**सर्पभुक्, सर्पभुज**—सज्ञा पुं० [स०] १ नकुल कद। २ मोर। मयूर। ३ सारस पक्षी। ४ एक प्रकार का बहुत बडा साँप (को०)।

**सर्पमाला**—सज्ञा स्त्री० [स०] सरहँटी। सर्पाक्षी।

**सर्पयज्ञ, सर्पयाग**—सज्ञा पु० [स०] एक यज्ञ जो नागो के सहार के लिये जनमेजय ने किया था।

**सर्पराज**—सज्ञा पु० [स०] १ सर्पों के राजा, शेषनाग। २ वासुकि।

**सर्पलता**—सज्ञा स्त्री० [स०] नागवल्ली। पान।

**सर्पवल्ली**—सज्ञा स्त्री० [स०] नागवल्ली। पान।

**सर्पविद्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] साँप को पकडने या उन्हें वश मे करने की विद्या।

**सर्पव्यूह**—सज्ञा पु० [स०] सेना का एक प्रकार का व्यूह जिसकी रचना सर्प के आकार की होती थी।

**सर्पशीर्ष**—सज्ञा पु० [स०] १. एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी बनाने के काम मे आती थी। २ तात्रिक पूजा मे हाथ और पजे की एक मुद्रा।

**सर्पसत्र**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सर्पयज्ञ'।

**सर्पसत्री**—सज्ञा पु० [सं० सर्पसत्रिन्] राजा जनमेजय का एक नाम जिन्होने सर्पयज्ञ किया था।

**सर्पसुगधा, सर्पसुगधिका**—सज्ञा स्त्री० [स० सर्पसुगन्धा, सर्पसुगन्धिका] सपगधा। गधनाकुली।

**सर्पसहा**—सज्ञा स्त्री० [स०] सरहँटी। सर्पाक्षी।

**सर्पसारी व्यूह**—सज्ञा पुं० [स०] कौटिल्य के अनुसार वह भोगव्यूह जिसम पक्ष, कक्ष तथा उरस्य विषम हो।

**सर्पहा**[1]—सज्ञा पु० [स० सर्पहन्] १ सर्प का मारनेवाला। नेवला। २ गरुड (को०)।

**सर्पहा**[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] गोडनी। सरहँटी। सर्पाक्षी।

**सर्पागी**—सज्ञा स्त्री० [स० सर्पाङ्गी] १ सरहँटी। २ सिहली पीपल। ३ नकुल कद।

**सर्पाति**—सज्ञा पुं० [स० सर्पान्ति] गरुड का एक पुत्र (को०)।

**सर्पा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ साँपिन। सर्पिणी। २ फणिलता।

**सर्पाक्ष**—सज्ञा पु० [स०] १ रुद्राक्ष। शिवाक्ष। २ सर्पाक्षी। सरहँटी।

**सर्पाक्षी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सरहँटी। २ गधनाकुली। ३ सर्पिणी। ४. श्वेत अपराजिता। ५. शखिनी।

सर्पाख्य—संज्ञा पु० [स०] नाग केसर।

सर्पादनी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ गधनाकुली। गध रास्ना। रास्ना। २ नकुल कद।

सर्पाभ—वि० [स०] १ साँप जैसे रगवाला। २ जो साँप की तरह का हो [को०]।

सर्पारांति—संज्ञा पु० [स०] दे० 'सर्पारि' [को०]।

सर्पारि—संज्ञा पुं० [स०] सर्पो का शत्रु। १ गरुड। २ नेवला। ३ मयूर। मोर।

सर्पावास—संज्ञा पु० [सं०] १ सर्पो के रहने का स्थान। बाँबी। २ चदन। मलयज। सदल।

सर्पाशन—संज्ञा पुं० [स०] १ मयूर। मोर। २ गरुड।

सर्पास्य—संज्ञा पु० [स०] १ वह जिसका मुँह साँप की तरह हो। साँप के समान मुखवाला। २ खर नामक राक्षस का एक सेनापति जिसे राम ने युद्ध मे मारा था।

सर्पाह्या—संज्ञा स्त्री० [स०] एक योगिनी का नाम [को०]।

सर्पि—संज्ञा पु० [स०] १ घृत। घी। २ एक वैदिक ऋषि का नाम।

यौ०—सर्पिमट=घी का मट्ठा या फेन। सर्पिसमुद्र=घी का समुद्र।

सर्पिका—संज्ञा स्त्री० [स०] १ छोटा साँप। २ एक नदी का नाम।

सर्पिणी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ साँपिन। मादा साँप। २ भुजगी लता।

विशेष—यह सर्प के आकार की होती है और इसमे विष का नाश करने और स्तनो को बढाने का गुण होता है।

सर्पित—संज्ञा पुं० [स०] साँप के काटने का क्षत। सर्पदश।

सर्पिरब्धि—संज्ञा पु० [स०] घृत का सागर।

सर्पिर्मंड—संज्ञा पुं० [स० सर्पिर्मण्ड] पिघले हुए मक्खन का फेन।

सर्पिर्मेही—संज्ञा पु० [स० सर्पिर्मेहिन्] एक प्रकार के प्रमेह रोग से ग्रस्त व्यक्ति।

सर्पिल—वि० [सं०] साँप के समान [को०]।

सर्पिष्क—संज्ञा पु० [स०] दे० 'सर्पिस्'।

सर्पिष्कुडिका—संज्ञा स्त्री० [स० सर्पिष्कुण्डिका] घी रखने का पात्र। घृतकुभ।

सर्पिष्मान्—वि० [स० सर्पिष्मत्] घृताक्त। घी से तर [को०]।

सर्पिस्—संज्ञा पु० [स० सर्पिष्] घृत। घी।

सर्पी[१]—वि० [स० सर्पिन्] [स० सर्पिणी] रेंगनेवाला। धीरे धीरे चलनेवाला।

सर्पी[२]—संज्ञा पुं० [स० सर्पिन्] दे० 'सर्पि' या 'सर्पिस्'।

सर्पेट—संज्ञा पुं० [अ०] साँप। सर्प।

सर्पेश्वर—संज्ञा पुं० [स०] वासुकि का नाम जो साँपो के राजा हैं [को०]।

सर्पेष्ट—संज्ञा पुं० [स०] चदन।

सर्पोन्माद—संज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का उन्माद जिसमे मनुष्य सर्प की भाँति लोटता, जीभ निकालता और क्रोध करता है। इसमे गुड, दूध आदि खाने की अधिक इच्छा होती है।

सर्फ—संज्ञा पुं० [अ० सर्फ] १ व्यय। खर्च। जैसे,—इस काम मे सौ रुपए सर्फ हो गए। २ उपयोग। इस्तेमाल (को०)। ३ व्याकरण मे पदव्याख्या। वाक्यविश्लेषण (को०)।

सर्फा—संज्ञा पुं० [फा० सर्फह्] १ खर्च। व्यय। २ लाभ। नफा। मुनाफा (को०)। ३ अधिक व्यय। अपव्यय (को०)। ४ कजूसी। कृपणता (को०)। ५ सत्ताइस नक्षत्रो मे १२ वाँ नक्षत्र। उत्तराफाल्गुनी (को०)। ६ इसाफ। न्याय (को०)।

सर्फी—वि० [अ० सर्फी] सर्फ अर्थात् पदव्याख्या, वाक्यविश्लेषण आदि का ज्ञाता। व्याकरण जाननेवाला [को०]।

सर्बस—वि० [स० सर्वस्व] दे० 'सरबस'।

सर्म[१]—संज्ञा पु० [स० शर्म] दे० 'शर्म'। कल्याण। देहि अवलब न विलब अभोजकर चक्रधर तेज बल सर्म रासी।—तुलसी (शब्द०)।

सर्म[२]—संज्ञा पुं० [स०] १ गति। गगन। २ आकाश। व्योम। ३ स्वर्ग [को०]।

सर्म[३]—संज्ञा पु० [स० शर्मन्] प्रसन्नता। आनद। खुशी [को०]।

सर्मक—संज्ञा पु० [अ० समक] एक साग। वास्तुक। बथुआ [को०]।

सर्मा—संज्ञा पुं० [फा०] शीत ऋतु। शीत काल [को०]।

सर्माई—वि० [फा०] शीत ऋतु का। जाडे का। जैसे, कपडा, पहनावा [को०]।

सर्रा—संज्ञा पु० [अनु० सर मर] लोहे या लकडी की छड जिसपर गराडी घूमती है। धुरी। धुरा।

सर्राफ—संज्ञा पु० [अ० सर्राफ] १ सोने चाँदी या रुपए पैसे का व्यापार करनेवाला। २ बदले के लिये पैसे, रुपए आदि लेकर बैठनेवाला।

मुहा०—सर्राफ के से टके=वह सौदा जिसमे किसी प्रकार की हानि न हो।

३ धनी। दौलतमद। ४ पारखी। परखनेवाला।

सर्राफ नानुआ—संज्ञा पु० [अ० सर्राफ+?] विवाह आदि शुभ अवसरो पर कोठीवालो या महाजनो का नौकरो को मिठाई, रुपया पैसा आदि बाँटना।

सर्राफा—संज्ञा पुं० [अ० सर्राफह्] दे० 'सराफा'।

सर्राफी—संज्ञा स्त्री० [अ० सर्राफी] दे० 'सराफी'।

सर्व[१]—वि० [स०] सारा। सब। समस्त। तमाम। कुल।

यौ०—सर्वकाचन=पूरा सोने का बना हुआ। सर्वकाम्य=(१) जिसकी प्रत्येक व्यक्ति इच्छा करे। (२) सर्वप्रिय। सर्वकृत्=सर्वोत्पादक। ब्रह्मा। सर्वकृष्ण=अत्यत काला। सर्वक्षय=सपूर्ण प्रलय या विनाश। सर्वक्षित्=जो सब मे हो। सर्वजन=सब लोग। सर्वज्ञाता=सब कुछ जाननेवाला। सर्वत्याग=सपूर्ण का त्याग। सर्वपति, सर्वप्रभु=सबका स्वामी। सर्वप्राप्ति=सब कुछ प्राप्त होना। सर्वभयकर=सबको भय पैदा करनेवाला। सर्वभोगीन, सर्वभोग्य=जिसका उपभोग सभी कर सकें। जो सबके लिये भोग्य हो। सर्वमगल=सबके लिये मगलकारक या शुभ। सर्वमहान्=सर्वश्रेष्ठ।

जो सबमे महान् हो। सर्वरक्षण = जो सब का रक्षण करे या सबसे रक्षा करनेवाला। सर्वरक्षी = सबकी सुरक्षा करनेवाला। सर्ववल्लभ = सबका प्यारा। जो सबको प्रिय हो। सर्ववातसह = पोत या यान जो सभी प्रकार की वायु को सहन करने मे सक्षम हो। सर्ववादिसम्मत = जिससे सभी सहमत हो। सर्ववासक = पूर्णत वस्त्राच्छादित। सर्वविज्ञान = सभी विषयो का ज्ञान। सर्वविज्ञानी = सभी विषयो का ज्ञाता। सर्वविनाश = सर्वनाश। सर्वविषय = जो सब विषयो से सबद्ध हो। सर्ववीर्य = समग्र शक्ति से युक्त। सर्वशका = सब के प्रति शक की भावना। सर्वशक = दे० 'सर्वशक्तिमान्'। सर्वशास्त्री = सभी प्रकार के शस्त्रो से युक्त। सर्वशीघ्र = जो सबसे तीव्र या तेज हो। सर्वश्राव्य = जिसे सभी लोग सुन सके। सर्वसपन्न = जो सभी चीजो मे सपन्न या युक्त हो।

**सर्व[2]**—सज्ञा पुं० १ शिव का एक नाम। २. विष्णु का एक नाम। ३ पारा। पारद। ४ रसौत। ५. शिलाजतु। शिलाजीत। ६. एक मुनि का नाम (को०)। ७ जल (को०)। ८ एक जनपद (को०)।

**सर्व[3]**—सज्ञा पु० [अ०] एक वृक्ष। दे० 'सरो' [को०]।

**सर्वक**—वि० [स०] सब समस्त। पूरा। तमाम। कुल। समग्र [को०]।

**सर्वकर**—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम [को०]।

**सर्वकर्त्ता**—सज्ञा पुं० [स० सर्वकर्त्तृ] १ ब्रह्मा। २ ईश्वर (को०)।

**सर्वकर्मा**—सज्ञा पुं० [स० सर्वकर्मन्] शिव [को०]।

**सर्वकर्मीण**—वि० [स०] सब कार्य करनेवाला [को०]।

**सर्वकाम**—सज्ञा पु० [स०] १ सब इच्छाए रखनेवाला। २ सब इच्छाएँ पूरा करनेवाला। ३ शिव का एक नाम। ४ एक बुद्ध या अर्हत् का नाम।

यौ०—सर्वकामगम = इच्छानुसार सभी जगह गमन करनेवाला। सर्वकामद। सर्वकामदुघ = सभी कामनाएँ पूर्ण करनेवाला। सर्वकामवर।

**सर्वकामद**—वि० [स०] [वि० स्त्री० सर्वकामदा] सब कामनाए पूरी करनेवाला।

**सर्वकामद[2]**—सज्ञा पु० शिव [को०]।

**सर्वकामवर**—सज्ञा पु० [स०] शिव [को०]।

**सर्वकामिक**—वि० [स०] १. सारी इच्छाएँ पूरी करनेवाला। २ जिसकी सारी इच्छाएँ पूरी हो गई हो [को०]।

**सर्वकामी**—वि० [स० सर्वकामिन्] सभी इच्छाएँ पूर्ण करनेवाला। २ जिसकी सभी इच्छाएँ पूर्ण हो। ३. स्वच्छा से काम करनेवाला [को०]।

**सर्वकारी**—वि० [स० सर्वकारिन्] १. जो सब कुछ करने मे समर्थ हो। २. सबका निर्माण करनेवाला [को०]।

**सर्वकाल**—क्रि० वि० [स०] हर समय। सब दिन। सदा।

**सर्वकालप्रसाद**—सज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम [को०]।

**सर्वकालिक, सर्वकालीन**—वि० [स०] सब समय या काल का [को०]।

**सर्वकेशी**—सज्ञा पुं० [स० सर्वकेशिन्] अभिनेता। एक्टर। नट [को०]।

**सर्वकेसर**—सज्ञा पु० [स०] बकुल वृक्ष या पुष्प। मौलिसिरी।

**सर्वक्षार**—सज्ञा पु० [स०] १ मोखा। मुष्कक वृक्ष। २ एक प्रकार का क्षार। महाक्षार (को०)। ३ सब कुछ नष्ट कर देना या काम लायक न रहने देना।

यौ०—सर्वक्षारनीति = युद्ध मे सेना द्वारा पीछे हटते हुए सब सामान नष्ट कर देना जिसमे शत्रुपक्ष उसका उपयोग न कर सके और उसे आगे बढने मे बाधा हो।

**सर्वगध**—सज्ञा पु० [स० सर्वगन्ध] १ दालचीनी। गुडत्वक्। २ एला। इलायची। ३ तेजपात। ४ नागकेसर। नागपुष्प। ५ शीतल चीनी। ६ लौग। लवग। ७ अगर। अगरु। ८ शिलारस। ९ कर्पूर। १० वह जो सभी प्रकार के गध से युक्त हो। ११ केसर।

**सर्वगधिक**—सज्ञा पुं० [स० सर्वगन्धिक] दे० 'सर्वगध' [को०]।

**सर्वग[1]**—वि० [स०] [वि० स्त्री० सर्वगा] जिसकी गति सब जगह हो। जो सब जगह जा सके। सर्वव्यापक।

**सर्वग[2]**—सज्ञा पुं० १ पानी। जल। २ जीव। आत्मा। ३. ब्रह्म। ४ शिव का एक नाम।

**सर्वगण**—सज्ञा पु० [स०] खारी मिट्टी। रेह।

**सर्वगत**—वि० [स०] जो सब मे हो। सर्वव्यापक।

**सर्वगति**—वि० [स०] जिसका शरण सब लोग हो। जो सबको गति हो। जिसमे सब आश्रय ले।

**सर्वगा**—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रियगु क्षुप।

**सर्वगामी**—वि० [स० सर्वगामिन्] दे० 'सर्वग'।

**सर्वग्रथि**—सज्ञा पु० [स० सर्वग्रन्थि] पीपला मूल।

**सर्वग्रथिक**—सज्ञा पु० [स० सर्वग्रन्थिक] दे० 'सर्वगाथ'।

**सर्वग्रह**—वि० [स०] एक बार मे सब कुछ भक्षण करनेवाला [को०]।

**सर्वग्रहापहा**—सज्ञा स्त्री० [स०] नागदमनी। नागदौन।

**सर्वग्रास**—सज्ञा पु० [स०] १ चद्र या सूर्य का वह ग्रहण जिसमे उनका मडल पूर्ण रूप से छिप जाता है। पूर्ण ग्रहण। खग्रास ग्रहण। २. वह जो सब कुछ खा जाय, बचा न रहने दे।

**सर्वचक्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] वाद्धा का एक तात्रिक दवा।

**सर्वचर्माण**—वि० [स०] १. जो पूर्णत चर्मनिर्मित हो। २ जिसमे सभी प्रकार के चमडे लगे हो [को०]।

**सर्वचारी[1]**—वि० [स० सर्वचारिन्] [वि० स्त्री० सर्वचारिणी] सब मे रमनेवाला। व्यापक।

**सर्वचारी[2]**—सज्ञा पु० शिव का एक नाम।

**सर्वच्छदक**—वि० [स० सर्वच्छन्दक] सबका अनुकूल या यथानुरूप करनेवाला [को०]।

**सर्वज**—वि० [स०] जो त्रिदोष के कारण उद्भूत हो [को०]।

**सर्वजन**—सज्ञा पु० [स०] सभी जन। सब लोग [को०]।

**सर्वजनप्रिया**—सज्ञा स्त्री० [स०] १. ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २. वश्या, जो सभी लोगो को प्रिय हो।

**सर्वजनीन**—वि० [स०] १ सब लोगो मे सबध रखनेवाला। सब का। सार्वजनिक। २ विश्वव्यापी। प्रसिद्ध (को०)। ३ सबका हितकारी। सबका कल्याण करनेवाला (को०)।

**सर्वजनीय**—वि० [स०] दे० 'सर्वजनीन'।

**सर्वजया**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सबजय नाम का पौधा जो बगीचो मे फूलो के लिये लगाया जाता है। देवकली। २ मागशीर्ष महीने मे होनेवाला स्त्रियो का एक प्राचीन पर्व।

**सर्वजित्**¹—वि० [स०] १ सबको जीतनेवाला। २ सबसे बढा चढा। सबसे श्रेष्ठ या उत्तम।

**सर्वजित्**²—सज्ञा पुं० १ माघ सवत्सरो मे से इक्कीसवाँ सवत्सर। २ मृत्यु। काल। ३ एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

**सर्वजीव**—सज्ञा पु० [स०] सब की आत्मा। सर्वात्मा (को०)।

**सर्वजीवी**—वि० [स० सर्वजीविन्] जिसके पिता, पितामह और प्रपितामह तीनो जीते हो।

**सर्वज्ञ**¹—वि० [स०] [वि० स्त्री० सर्वज्ञा] सब कुछ जाननेवाला। जिसे कुछ अज्ञात न हो।

**सर्वज्ञ**²—सज्ञा पुं० १ ईश्वर। २ देवता। सुर। ३ बुद्ध या अर्हत्। ४ शिव का एक नाम।

**सर्वज्ञतर**—सज्ञा स्त्री० [स०] सर्वज्ञ होने का भाव।

**सर्वज्ञत्व**—सज्ञा पुं० [स०] सर्वज्ञ होने का भाव। सर्वज्ञता।

**सर्वज्ञा**¹—वि० स्त्री० [स०] सब कुछ जाननेवाली।

**सर्वज्ञा**²—सज्ञा स्त्री० १, दुर्गा देवी। २ एक योगिनी।

**सर्वज्ञाता**—वि० [स० सर्वज्ञातृ] दे० 'सर्वज्ञ'।

**सर्वज्ञानी**—सज्ञा पुं० [स० सर्वज्ञानिन्] वह जो सबकुछ जानता हो। सबकुछ जाननेवाला। सर्वज्ञ।

**सर्वज्यानि**—सज्ञा स्त्री० [स०] सब वस्तुओ की हानि। सर्वनाश।

**सर्वतंत्र**¹—सज्ञा पु० [स० सर्वतन्त्र] १ सर्व प्रकार के शास्त्र सिद्धात। २ वह जिसने सभी शास्त्रो को पढा हो और उनमे निष्णात हो।

यौ०—सर्वतत्र स्वतत्र = सभी तत्र या शास्त्र जिसके लिये अपना शास्त्र हो। जो सभी तत्रो मे निष्णात हो।

**सर्वतंत्र**²—वि० दे० जिसे सब शास्त्र मानते हो। सर्वशास्त्रसमत। जैसे,—सर्वतत्र सिद्धात।

**सर्वतः**—अव्य० [स० सर्वतस्] १ सब ओर। चारो तरफ। २ सब प्रकार से। हर तरह से। ३. पूरी तरह से। पूर्ण रूप से।

यौ०—सर्वतः पाणिपाद = जिसके हाथ पाँव सब ओर हो। सर्वतः शुभा।

**सर्वतःशुभा**—सज्ञा स्त्री० [स०] कँगनी नाम का अनाज। काकुन। प्रियगु।

**सर्वतमोनुद**—वि० [स०] (सूर्य) जो समग्र अधकार को हटाने या दूर करनेवाला है।

**सर्वतश्चक्षु**—वि० [स० सर्वतश्चक्षुष्] जिसकी दृष्टि चारो ओर हो। जो सर्वत्र सब कुछ देखता हो।

**सर्वतापन** सज्ञा पुं० [स०] १ (सबको तपानेवाला) सूर्य। २ कामदेव।

**सर्वतिक्ता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ भटाकी। बरहटा। २ मकोय। काकमाची।

**सर्वतूर्यनिनादी**—सज्ञा पु० [स० सर्वतूर्यनिनादिन्] शिव (को०)।

**सर्वतोगामी**—वि० [स० सर्वतोगामिन] जो सभी दिशाओ मे जा सके। सब जगह गमन करनेवाला। सर्वव्यापी (को०।

**सर्वतोदिश**—क्रि० वि० [स०] चारो ओर। चतुर्दिक्।

**सर्वतोधार**—वि० [सं०] जिसमे सर्वत्र तेज धार हो।

**सर्वतोधुर**—वि० [स०] जो सब ओर शीर्षस्थानीय हो।

**सर्वतोभद्र**¹—वि० [सं०] १ सब ओर से मगल। सर्वाश मे शुभ या उत्तम। २ जिसके सिर, दाढी, मूँछ आदि सब के बाल मुडे हो।

**सर्वतोभद्र**²—सज्ञा पुं० १ वह चौखूँटा मदिर जिसके चारो ओर दरवाजे हो। २ युद्ध मे एक प्रकार का व्यूह। ३ एक प्रकार का चौखूँटा मागलिक चिह्न जो पूजा के वस्त्र पर बनाया जाता है। ४ एक प्रकार का चित्रकाव्य। ५ एक प्रकार की पहेली जिसमे शब्द के खडाक्षरो के भी अलग अलग अर्थ लिए जाते है। ६ विष्णु का रथ। ७ बाँस। ८ एक गधद्रव्य। ९ वह मकान जिसके चारो ओर परिक्रमा का स्थान हो। १०. एक वन का नाम (को०)। ११ एक पर्वत (को०)। १२ इस नाम का एक चक्र (ज्योतिष)। १३ देवताओ का एक वन (को०)। १४ मुडन कराना। क्षौरकर्म कराना। १५ हठ योग मे बैठने का एक आसन या मुद्रा। १६ नीम का पेड।

**सर्वतोभद्रकच्छेद**—सज्ञा पु० [स० सर्वतोभद्रकच्छेद] भगदर की चिकित्सा के लिये अस्त्र से लगाया हुआ चौकोर चीरा।

**सर्वतोभद्रचक्र**—सज्ञा पु० [स०] ज्योतिष मे शुभाशुभ फल जानने का एक चौखूँटा चक्र (को०)।

**सर्वतोभद्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ काश्मरी वृक्ष। गभारी। २ अभिनेत्री। अभिनय करनेवाली। नर्तकी। नटी।

**सर्वतोभद्रिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] काश्मरी वृक्ष। गभारी। गम्हार वृक्ष।

**सर्वतोभाव, सर्वतोभावेन**—अव्य० [स०] सर्व प्रकार से। सपूर्ण रूप से। अच्छी तरह। भली भाँति।

**सर्वतोभोगी**—सज्ञा पु० [स०] कौटिल्य के अनुसार वह वश्य मित्र जो अमित्रो, आसारो, (सगी साथियो), पडोसियो तथा जागलिको से रक्षा करे।

**सर्वतोमुख**¹—वि० [स०] १ जिसका मुँह चारो ओर हो। २ जो सब दिशाओ मे प्रवृत्त हो। ३ पूर्ण व्यापक।

**सर्वतोमुख**²—सज्ञा पुं० १ एक प्रकार की व्यूह रचना। २ जल। पानी। ३ आत्मा। जीव। ४ ब्रह्म। ५ ब्रह्मा (जिनके चार मुँह है)। ६. ब्राह्मण। विप्र (को०)। ७. शिव। ८. अग्नि। ९. स्वर्ग। १०. आकाश।

सर्वतोमुखी—वि० स्त्री० [स० सर्वतोमुख] दे० 'सर्वतोमुख'। जैसे,—आपकी प्रतिभा सर्वतोमुखी है।

सर्वतोवृत्त—वि० [स०] सर्वव्यापक।

सर्वत्र—अव्य० [स०] १ सब कही। सब जगह। हर जगह। २ हर काल मे। हमेशा।

सर्वत्रग'—वि० [स०] सर्वगामी। सर्वव्यापक।

सर्वत्रग'—सज्ञा पुं० १ वायु। २ मनु के एक पुत्र का नाम। ३. भीमसेन के एक पुत्र का नाम।

सर्वत्रगत—वि० [सं०] जो सब जगह पहुँचा हो [को०]।

सर्वत्रगामी—सज्ञा पुं० [स० सर्वत्रगामिन्] १ वह जो सबत्र गमनशील हो। २ वायु। हवा।

सर्वत्रसत्त्व—सज्ञा पु० [स०] सर्वात्मकता। विश्वात्मकता। विश्वरूपता [को०]।

सर्वत्रापि—वि० [स०] सब स्थानो मे जानेवाला।

सर्वथा—अव्य० [स०] १ सब प्रकार से। सब तरह से। २ बिलकुल। सब। ३ सर्वदा। हमेशा। निरतर (को०)। ४ पूरी तौर से। पूर्णत (को०)। ५ बहुत अधिक। अत्यत (को०)।

सर्वदडधर—वि० [स० सर्वदण्डधर] सब को दड देनेवाला (शिव) [को०]।

सर्वदडनायक—सज्ञा पुं० [स० सर्वदण्डनायक] सेना या पुलिस का एक ऊँचा अधिकारी।

सर्वद'—वि० [स०] सब कुछ देनेवाला।

सर्वद'—सज्ञा पु० शिव का एक नाम।

सर्वदमन'—वि० [स०] सबको दमन करनेवाला [को०]।

सर्वदमन'—सज्ञा पुं० दुष्यत के पुत्र भरत का एक नाम।

सर्वदर्शन—वि० [स०] सब कुछ देखनेवाला [को०]।

सर्वदर्शी'—सज्ञा पुं० [स० सर्वदर्शिन्] [स्त्री० सर्वदर्शिणी] सब कुछ देखनेवाला।

सर्वदर्शी'—सज्ञा पु० १ ईश्वर। परमात्मा। २ एक बुद्ध या अर्हत् को०]।

सर्वदा—अव्य० [स०] सब काल मे। हमेशा। सदा।

सर्वदाता—वि० सज्ञा पु० [स० सर्वदातृ] सब कुछ दे देनेवाला। सर्वस्व देनेवाला [को०]।

सर्वदान—सज्ञा पुं० [स०] सर्वस्व का दान करना [को०]।

सर्वदिग्विजय—सज्ञा स्त्री० [स०] सभी दिशाओ को जीतना। विश्वविजय [को०]।

सर्वदेवमय'—वि० [स०] जिसमे सब देवता हो [को०]।

सर्वदेवमय'—सज्ञा पु० १ शिव। २ कृष्ण।

सर्वदेवमुख—सज्ञा पु० [स०] अग्नि [को०]।

सर्वदेशीय—वि० [स०] १ सभी देशो से सबद्ध। २ सभी देशो मे होनेवाला या प्राप्य [को०]।

सर्वदेश्य—वि० [स०] दे० 'सर्वदेशीय' [को०]।

सर्वद्रष्टा—वि० [सं० सर्वद्रष्टृ] सब कुछ देखनेवाला।

सर्वद्वारिक—वि० [स०] जिसकी विजययात्रा के लिये सब दिशाएँ खुली हो। दिग्विजयी।

सर्वधन्वी—सज्ञा पु० [स० सर्वधन्विन्] कामदेव [को०]।

सर्वधातुक—सज्ञा पु० [स०] ताँबा। ताम्र।

सर्वधारी—सज्ञा पु० [स० सर्वधारिन्] १ साठ सवत्सरो मे से बाइसवाँ सवत्सर। २ शिव का एक नाम।

सर्वधुरावह—सज्ञा पुं० [स०] गाडी मे जोता जानेवाला जानवर।

सर्वधुरीण—सज्ञा पु० [स०] वह जो सभी प्रकार का बोझा ढोने के उपयुक्त हो [को०]।

सर्वनाभ—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र।

सर्वनाम—सज्ञा पुं० [स० सर्वनामन्] व्याकरण मे वह शब्द जो सज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होता है। जैसे,—मैं, तू, वह।

सर्वनाश—सज्ञा पुं० [स०] सत्यानाश। विध्वस। पूरी बरबादी।

सर्वनाशी—सज्ञा पु० [स० सर्वनाशिन्] सर्वनाश करनेवाला। विध्वसकारी। चौपट करनेवाला।

सर्वनिक्षेप—सज्ञा स्त्री० [स०] गणना करने की एक पद्धति विशेष [को०]।

सर्वनिधन—सज्ञा पु० [स०] १. सब का नाश या वध। २. एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सर्वनियोजक—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का एक नाम जो सबके नियोजक है [को०]।

सर्वनिलय—वि० [स०] जिसका निलय या निवास सब जगह हो [को०]।

सर्वनियता—सज्ञा पु० [स० सर्वनियन्तृ] सब को अपने नियम के अनुसार ले चलनेवाला। सब को वश मे करनेवाला।

सर्वपति—सज्ञा पु० [स०] वह जो सबका मालिक हो।

सर्वपथीन—वि० [स०] १ जो सर्वत्र गमनशील हो। सभी दिशाओ मे जानेवाला। २. जो चारो ओर फैला हो [को०]।

सर्वपा'—वि० [स०] १ सब कुछ पीनेवाला। २ सब की रक्षा करनेवाला [को०]।

सर्वपा'—सज्ञा स्त्री० दैत्यराज बलि की स्त्री का नाम।

सर्वपाचक—सज्ञा पु० [स०] सुहागा। टकण क्षार।

सर्वपारशव—वि० [स०] पूर्णत लोहे का बना हुआ [को०]।

सर्वपार्श्वमुख—सज्ञा पुं० [स०] शिव [को०]।

सर्वपावन—सज्ञा पुं० [स०] सबको पवित्र करनेवाले, शिव [को०]।

सर्वपूजित—सज्ञा पु० [स०] जो सबके द्वारा पूजित है, शिव [को०]।

सर्वपूत—वि० [स०] पूर्णत पवित्र या शुद्ध [को०]।

सर्वपूर्ण—वि० [सं०] सब कुछ से भरा पूरा।

सर्वपृष्ठ—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का यज्ञ।

सर्वप्रथम—वि० [स०] १ सबसे पहिले। २ सभी लोगो मे पहला या प्रथम श्रेणी का [को०]।

सर्वप्रद—वि० [स०] सर्वस्व देनेवाला [को०]।

सर्वप्रिय—वि० [स०] १ सब को प्यारा। जिसे सब चाहें। जो सब को अच्छा लगे। २ जिसे सब कुछ प्रिय हो।

सर्वबंधविमोचन—संज्ञा पुं० [सं० सर्वबन्धविमोचन] सभी बंधनों से छुड़ानेवाला—शिव [को०]।

सर्वबल—संज्ञा पुं० [सं०] एक बहुत बड़ी संख्या। (बौद्ध)।

सर्वबाहु—संज्ञा पु० [सं०] युद्ध करने की एक विधि।

सर्वबीज—संज्ञा पु० [सं०] सबका बीज या मूल [को०]।

सर्वभक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सब कुछ खा डालनेवाला, अग्नि। आग।

सर्वभक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बकरी। छागी।

सर्वभक्षी'—संज्ञा पुं० [सं० सर्वभक्षिन्] [वि० स्त्री० सर्वभक्षिणी] सबकुछ खानेवाला।

सर्वभक्षी'—संज्ञा पुं० अग्नि।

सर्वभवोद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सर्वभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ संपूर्ण सत्ता। सारा अस्तित्व। २. संपूर्ण आत्मा। ३ पूर्ण तुष्टि। मन का पूरा भरना।

सर्वभावकर—संज्ञा पु० [सं०] शिव [को०]।

सर्वभावन—संज्ञा पु० [सं०] १ वह जो सब का उत्पादक हो। सब की भावना करनेवाला। २ महादेव। शिव।

सर्वभूत'—पुं० [सं०] सब प्राणी या सृष्टि। चराचर।

सर्वभूत'—वि० जो सब कुछ हो या सब में हो। सर्वस्वरूप।

सर्वभूतगुहाशय—वि० [सं०] सबके हृदय में निवास करनेवाला [को०]।

सर्वभूतपितामह—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा। प्रजापति [को०]।

सर्वभूतहर—संज्ञा पु० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सर्वभूतहित—संज्ञा पु०[सं०] सब प्राणियों की भलाई।

सर्वभूमिक—संज्ञा पु० [सं०] दारचीनी। गुडत्वक्।

सर्वभृत्—वि० [सं०] जो सबका पालन पोषण करे [को०]।

सर्वभोग—संज्ञा पु० [सं०] कौटिल्य के अनुसार वह वश्यमित्र जो सेना, कोश तथा भूमि से सहायता करे।

सर्वभोगसह—संज्ञा पु० [सं०] कौटिल्य के अनुसार सब प्रकार से उपयोगी मित्र सब प्रकार के कामों में समर्थ मित्र।

सर्वभोगी—वि० [सं० सर्वभोगिन्] [वि० स्त्री० सर्वभोगिनी] १ सब का आनंद लेनेवाला। २ सब कुछ खानेवाला।

सर्वमंगला'—वि० [सं० सर्वमङ्गला] सब प्रकार का या सबका मंगल करनेवाली।

सर्वमंगला—संज्ञा स्त्री० १ दुर्गा। २ लक्ष्मी।

सर्वमलापगत—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार की समाधि [को०]।

सर्वमांसाद—वि० [सं०] सभी प्रकार के मांस का भक्षण करनेवाला [को०]।

सर्वमूल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ कौडी। कपर्दक। २ कोई छोटा सिक्का।

सर्वमूषक—संज्ञा पु० [सं०] (सबका मूसने या ले जानेवाला) काल।

सर्वमेध—संज्ञा पुं० [सं०] १ सार्वजनिक सत्र। २ एक उपनिषद् का नाम (को०)। ३. यज्ञ (को०)। ४ एक प्रकार का सोमयाग जो दस दिनों तक होता था।

सर्वयत्नी—वि० [सं० सर्वयन्त्रिन्] सभी औजारों से युक्त [को०]।

सर्वयोगी—संज्ञा पु० [सं० सर्वयोगिन्] शिव का एक नाम।

सर्वयोनि—संज्ञा पु० [सं०] सब का मूल। सब की जड़ [को०]।

सर्वरत्नक—संज्ञा पु० [सं०] जैन शास्त्रानुसार नौ निधियों में एक।

सर्वरत्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत में एक श्रुति [को०]।

सर्वरस—संज्ञा पुं० [सं०] १ राल। धूना। करायल। २. लवण। नमक। ३ एक प्रकार का बाजा। ४ सब विद्याओं में निपुण व्यक्ति। विद्वान् व्यक्ति। ५ सभी प्रकार के रस, भोज्य पदार्थ आदि। ६ वह जो सब रसों से युक्त हो।

सर्वरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाजा का माड। धान को खीलों का माँड।

सर्वरसोत्तम—संज्ञा पु० [सं०] नमक। लवण।

सर्वरास—संज्ञा पु० [सं०] १ राल। करायल। धूना। २ एक प्रकार का वाद्य [को०]।

सर्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं० शर्वरी] दे० 'शर्वरी'।

सर्वरीस—संज्ञा पु० [सं० शर्वरीश] दे० 'शर्वरीश'।

सर्वरूप—वि० [सं०] जो सब रूपों का हो। सर्वस्वरूप।

सर्वरूप'—संज्ञा पु० एक प्रकार की समाधि।

सर्वार्थासिद्धि—संज्ञा पु० [सं०] जैनों के अनुसार सब से ऊपर का अनुत्तर या स्वर्ग के ऊपर का लोक।

सर्वलक्षण—संज्ञा पु० [सं०] सभी शुभ लक्षण या चिह्न [को०]।

सर्वलाक्षत—संज्ञा पु० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सर्वला—संज्ञा स्त्री० [सं०] लोहे का डंडा।

सर्वलालस—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

सर्वलिंग—वि० [सं० सर्वलिङ्ग] जो प्रत्येक लिंग में हो। (विशेषण) जो प्रत्येक लिंग (पुं०, स्त्री० और नपुंसक) में होता है।

सर्वलिंगी'—वि० [सं० सर्वलिङ्गिन्] [वि० स्त्री० सर्वलिंगिनी] सब प्रकार के ऊपरी आडंबर रखनेवाला। पाखंडी।

सर्वलिंगी'—संज्ञा पु० [सं०] नास्तिक।

सर्वली—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा लौहदंड या तोमर।

सर्वलोक—संज्ञा पु० [सं०] समग्र लोक। चराचर जगत् [को०]।

यौ०—सर्वलोककृत् = शिव का एक नाम। सर्वलोकगुरु = विष्णु। सर्वलोकपितामह = ब्रह्मा जो सबके पितामह हैं। सर्वलोक-प्रजापति, सर्वलोकभृत् = दे० सर्वलोककृत्'। सर्वलोकमहेश्वर = (१) शिव। शंकर। (२) विष्णु का एक नाम।

सर्वलोकेश, सर्वलोकेश्वर—संज्ञा पु० [सं०] १ शिव। २. ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४ कृष्ण।

सर्वलोचन—संज्ञा पु० [सं०] सूर्य।

सर्वलोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा जो औषध के काम में आता है। गंधनाकुली।

सर्वलोह—संज्ञा पुं० [सं०] १. तीर। बाण। २ वह जो पूर्णतः लाल वर्ण का हो [को०]।

सर्वलौह—संज्ञा पु० [सं०] १. तांबा। ताम्र। २. बाण। तीर।

सर्ववर्णिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] गभारी का पेड ।

सर्ववर्णी—वि० [स० सर्ववर्णिन्] विभिन्न वर्ण का । विभिन्न जाति या प्रकार का [को०] ।

सर्ववल्लभा—सज्ञा स्त्री० [स०] कुलटा स्त्री ।

सर्ववागीश्वरेश्वर—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु [को०] ।

सर्ववादी—सज्ञा पुं० [स० सर्ववादिन्] शिव का एक नाम ।

सर्ववास—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम ।

सर्ववासी—सज्ञा पुं० [स० सर्ववासिन्] शिव [को०] ।

सर्वविक्रयी—वि० [स० सर्वविक्रयिन्] सभी प्रकार की वस्तुओ को बेचनेवाला ।

सर्वविख्यात, सर्वविग्रह—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम ।

सर्वविद्[1]—वि० [सं०] सर्वज्ञ ।

सर्वविद्[2]—सज्ञा पु० [स०] १ ईश्वर । २. ओकार ।

सर्वविद्य—वि० [स०] समग्र विद्याओ का ज्ञाता । सर्वज्ञ [को०] ।

सर्वविश्रभी—वि० [स० सर्वविश्रम्भिन्] सबका विश्वास करनेवाला । प्रत्येक का विश्वास करनेवाला [को०] ।

सर्ववीर—वि० [स०] जिसके बहुत से पुत्र हो ।

यौ०—सर्ववीरजित् = समस्त वीरो को जीतनेवाला ।

सर्ववेत्ता—वि० [स० सर्ववेतृ] सर्वविद् । सर्वज्ञ ।

सर्ववेद—वि० [स०] सब वेदो का जाननेवाला । पूर्णत ज्ञानवान् ।

सर्ववेदस्—सज्ञा पु० [स०] वह जो अपनी यज्ञ मे दान कर दे ।

सर्ववेदस—सज्ञा पुं० [स०] १ सारी सपत्ति । सारा मालमता । २. वह यज्ञ जिसमे समग्र सपत्ति दान कर दी जाय (को०) । ३ दे० 'सर्ववेदस्' (को०) ।

सर्ववेदसी—वि० [स० सर्ववेदसिन्] जो अपनी समग्र सपत्ति का दान कर दे [को०] ।

सर्ववेदी—वि० [स० सर्ववेदिन्] जो सब कुछ जानता हो । सर्वज्ञ [को०] ।

सर्ववेशी—सज्ञा पु० [स० सर्ववेशिन्] नट । अभिनेता [को०] ।

सर्ववैनाशिक—सज्ञा पुं० [स०] आत्मा आदि सबको नाशवान् माननेवाला । क्षणिकवादी । बौद्ध ।

सर्वव्यापक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सर्वव्यापी' ।

सर्वव्यापी[1]—वि० [स० सर्वव्यापिन्] [वि० स्त्री० सर्वव्यापिनी] सबमे रहनेवाला । सब पदार्थो मे रमणशील ।

सर्वव्यापी[2]—सज्ञा पु० १ ईश्वर । २ शिव ।

सर्वश—अव्य० [स० सर्वशस्] १ पूरा पूरा । २ समूचा । पूर्ण रूप मे ।

सर्वशक्तिमान्[1]—वि० [स० सर्वशक्तिमत्] [स्त्री० सर्वशक्तिमती] सब कुछ करने की सामर्थ्य रखनेवाला ।

सर्वशक्तिमान्[2]—सज्ञा पुं० ईश्वर ।

सर्वशातिकृत्—सज्ञा पु० [सं० सर्वशान्तिकृत्] दुष्यत के पुत्र भरत का एक नाम [को०] ।

सर्वशून्य—वि० [स०] १ बिलकुल खाली । पूर्णत रिक्त । २. जिसके लिये सब शून्य या अस्तित्वविहीन हो [को०] ।

सर्वशून्यवादी—सज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध ।

सर्वशून्या—सज्ञा स्त्री० [स०] दरिद्रता (जिसमे सब कुछ सूना सूना प्रतीत होता है) ।

सर्वशूर—सज्ञा पुं० [स०] एक बोधिसत्व का नाम ।

सर्वश्री—वि० [स०] जहाँ सभी लोग श्रीयुक्त हो । अनेक व्यक्तियो का नाम एक साथ आने पर सब के लिये एक बार आरभ मे इसका प्रयोग होता है । जैसे, सर्वश्री अमुक, फलाँ आदि । यह प्रयोग आधुनिक है और अग्रेजी शब्द 'मेसर्स' का अनुवाद है ।

सर्वश्रेष्ट—वि० [स०] सब मे बडा । सब से उत्तम ।

सर्वश्वेता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक ओषधि का नाम । २ एक प्रकार का विषैला कीडा । सर्षपिक । (सुश्रुत) ।

सर्वसगत—सज्ञा पुं० [स० सर्वसङ्गत] षष्टिक धान्य । साठी धान ।

सर्वसज्ञा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक बहुत बडी सख्या [को०] ।

सर्वसभव—सज्ञा पुं० [स० सर्वसम्भव] वह जो सबका उत्पत्तिस्थान या मूल हो । [को०] ।

सर्वसमत—वि० [स० सर्वसम्मत] जिसके पक्ष मे सभी लोग सहमत हो [को०] ।

सर्वसमति—सज्ञा स्त्री० [सं० सर्वसम्मति] सभी सदस्यो की राय [को०] ।

सर्वसस्थ—वि० [स०] १ सर्वव्यापक । २ सर्वविनाशक [को०] ।

सर्वसस्थान—वि० [स०] सब रूपो मे रहनेवाला । सर्वरूप ।

सर्वसहार—सज्ञा पु० [स०] काल ।

सर्वसहारी—वि० [स० सर्वसहारिन्] दे० 'सर्व समाहर' ।

सर्वसख—सज्ञा पुं० [स०] सज्जन । सबका मित्र । साधु पुरुष [को०] ।

सर्वसन्नाह—सज्ञा पुं० [स०] पूरी तौर से सेना को एकत्र और शास्त्र-सज्ज करना ।

सर्वसमता—सज्ञा स्त्री० [स०] निष्पक्षता । समता ।

सर्वसमाहर—वि० [स०] सबका विनाश करनेवाला [को०] ।

सर्वसु—वि० [सं० सर्वस्व] दे० 'सर्वस्व' ।

सर्वसर—सज्ञा पुं० [स०] मुँह का एक रोग जिसमे छाले मे पड जाते हैं तथा खुजली तथा पीडा होती है ।

विशेष—यह तीन प्रकार का होता है—वातज, पित्तज और कफज । वातज मे मुख मे सुई चुभने की सी पीडा होती है । पित्तज मे पीले या लाल रग के दाहयुक्त छाले पडते हैं । कफज मे पीडारहित खुजली होती है ।

सर्वसह—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो सब कुछ सहन करे । सहनशील व्यक्ति । २ गूगल । गुग्गुल ।

सर्वसहा—सज्ञा स्त्री० [स०] धरित्री । सर्वसहा पृथ्वी [को०] ।

सर्वसाप्रत—सज्ञा पुं० [स० सर्वसाम्प्रत] सर्वत्र वर्तमान रहने का भाव । सर्वव्यापकता [को०] ।

सर्वसाक्षी—सज्ञा पुं० [स० सर्वसाक्षिन्] १ वह जो सब कुछ देखता हो । ईश्वर । परमात्मा । २ अग्नि । ३ वायु ।

सर्वसाद—वि० [स०] १ समग्र जगत् जिसमे लीन हो। २ जिसमे सब कुछ लीन हो (को०)।

सर्वसाधन—सज्ञा पुं० [स०] १ सोना। स्वर्ण। २ धन। ३ शिव का एक नाम। ४ वह जो सब कुछ का साधन कर सकता हो। सब कुछ सिद्ध करनेवाला (को०)। ५ हर एक प्रकार का साधन या उपकरण।

सर्वसाधारण[1]—सज्ञा पु० [स०] साधारण लोग। जनता। आम लोग।

सर्वसाधारण[2]—जो सब मे पाया जाता हो। आम। सामान्य।

सर्वसामान्य—वि० [स०] जो सब मे एक सा पाया जाय। मामूली।

सर्वसारग—सज्ञा पुं० [स० सर्वसारङ्ग] एक नाग का नाम।

सर्वसार—सज्ञा पु० [स०] सब का सारभूत पदार्थ या सार तत्व।

सर्वसाह—वि० [स०] जो सब कुछ सह ले। सब कुछ सह लेनेवाला। पूर्णत सहनशील (को०)।

सर्वसिद्धा—सज्ञा स्त्री० [स०] चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी ये तीन तिथियाँ।

सर्वसिद्धार्थ—वि० [स०] जिसके सभी अर्थ या प्रयोजन सिद्ध हो चुके हो। जिसकी सभी कामनाएँ पूर्ण हो (को०)।

सर्वसिद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सब कार्यों और कामनाओ का पूरा होना। २ पूर्ण तर्क। ३ विल्व वृक्ष। श्रीफल। बेल।

सर्वसुलभ—वि० [स०] जो सबको सुलभ हो। जिसे सब लोग सुभीते से प्राप्त कर सकें।

सर्वसौवर्ण—वि० [स०] जो पूर्णत स्वर्णनिर्मित हो (को०)।

सर्वस्तोम—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सर्वस्व—सज्ञा पु० [स०] १ जो कुछ अपना हो वह सब। २ किसी की सारी सपत्ति। सब कुछ। कुल मालमता।

यौ०—सर्वस्वदड = सारी सपत्ति जब्त कर लेने का दड। सर्वस्वदक्षिण = वह यज्ञ जिसमे समग्र सपत्ति का दान कर दिया जाय। सर्वस्वसधि = दे० 'क्रम मे'। सर्वस्वहरण, सर्वस्वहार = (१) सब कुछ हरण करना या मूस लेना। (२) दे० 'सर्वस्वदड'।

सर्वस्वसधि—सज्ञा स्त्री० [स० सर्वस्वसन्धि] सर्वस्व देकर शत्रु से की हुई सधि।

विशेष—कौटिल्य ने कहा है कि शत्रु के साथ यदि ऐसी सधि करनी पडे तो राजधानी को छोड कर शेष सब उसको सुपुर्द कर देना चाहिए।

सर्वस्वामी—वि० [स० सर्वस्वामिन्] सब का स्वामी या प्रभु (को०)।

सर्वस्वार—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सर्वस्वी—सज्ञा पुं० [स० सर्वस्विन्] [वि० स्त्री० सर्वस्विनी] ब्रह्मवैवर्त्त-पुराण के अनुसार एक जाति। नापित पिता और गोप माता से उत्पन्न एक सकर जाति।

सर्वहर—सज्ञा पुं० [स०] १ सब कुछ हर लेनेवाला। २ वह जो किसी की सारी सपत्ति का उत्तराधिकारी हो। ३ महादेव। शकर। ४. यमराज। ५. काल।

सर्वहरण, सर्वहार—सज्ञा पुं० [स०] सर्वस्व का हरण। समग्र सपत्ति का हरण (को०)।

सर्वहारा—सज्ञा पुं० [स० सब+हिं० हारना] वह जिसके पास कुछ भी न हो। समाज का पिछडा हुआ निम्नतम श्रमिक वर्ग। कमकर, श्रमिक, मजदूर वर्ग के लोग (अ० प्रोलेटेरियट)।

सर्वहारी[1]—वि० [स० सर्वहारिन्] [वि० स्त्री० सर्वहारिणी] सब कुछ हरण करनेवाला।

सर्वहारी[2]—सज्ञा पु० एक प्रेत (को०)।

सर्वहित[1]—सज्ञा पु० [स०] १ शाक्य मुनि। गौतम बुद्ध। २ सबका कल्याण। ३ मरिच। मिर्च।

सर्वहित[2]—वि० जो सबके लिये हित पथ्य या कल्याणकारी हो (को०)।

सर्वहित कर्म—सज्ञा पुं० [स०] सामाजिक समारोह, उत्सव या जलसा आदि।

विशेष—कौटिल्य ने लिखा है कि जो नाटक आदि सामाजिक जलसो मे योग न दे, उसे उसमे सम्मिलित होने या उसे देखने का अधिकार नही है, उसे हटा देना चाहिए। यदि न हटे तो वह दड का भागी हो।

सर्वांग—सज्ञा पुं० [स० सर्वाङ्ग] १ सपूर्ण शरीर। सारा बदन। जैसे,—सर्वांग मे तैलमर्दन। २ शिव का एक नाम (को०)। ३ सब अवयव या अश। ४ सब वेदाग।

सर्वांगपूर्ण—वि० [स० सर्वाङ्गपूर्ण] सब प्रकार से पूर्ण। जिसके सभी अग या अवयव पूर्ण हो।

सर्वांगरूप—सज्ञा पु० [स० सर्वाङ्ग रूप] शिव का एक नाम।

सर्वांगसुदर—वि० [स० सर्वाङ्गसुन्दर] जो हर तरह से सुदर हो।

सर्वांगिक—वि० [स० सर्वाङ्गिक] सभी अगो का। जो सब अगो के काम आए। जैसे, गहना (को०)।

सर्वांगीण—वि० [स० सर्वाङ्गीण] १ जो सभी अगो मे व्याप्त या उनसे सबधित हो। जैसे, सर्वांगीण स्पर्श। २ वेदागो से सबद्ध (को०)।

सर्वांत—सज्ञा पु० [स० सर्वान्त] सब का अत या विनाश।

यौ०—सर्वांतकृत् = दे० 'सर्वांतक'।

सर्वांतक—वि० [स० सर्वान्तक] सब का अतक या नाशक। सबका विनाशक या अत करनेवाला (को०)।

सर्वांतरस्थ—वि० [स० सर्वान्तरस्थ] सब के अतर मे स्थित या रहनेवाला। सब के भीतर निवास करनेवाला।

सर्वांतरात्मा—सज्ञा पुं० [स० सर्वान्तरात्मन्] भगवान्। ईश्वर।

सर्वांतर्यामी—सज्ञा पु० [स० सर्वान्तर्यामिन्] ईश्वर। परमात्मा।

सर्वांत्य—सज्ञा पुं० [स० सर्वान्त्य] वह पद्य जिसके चारो चरणो के अत्याक्षर एक से हो।

सर्वाकार—क्रि० वि० [स०] पूर्ण रूप से। पूर्णत।

सर्वाक्ष—सज्ञा पु० [स०] १. रुद्राक्ष। शिवाक्ष। २ वह जो सबको देखता हो।

सर्वाक्षी—सज्ञा स्त्री० [स०] दुधिका। दुधिया घास। दुद्धी।

सर्वाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] पारद। पारा।

सर्वाजीव—वि० [सं०] सबको जीविका देनेवाला। सबके योगक्षेम की व्यवस्था करनेवाला।

सर्वाणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा। पार्वती। शर्वाणी।

सर्वातिथि—संज्ञा पु० [सं०] वह जो सबका आतिथ्य करे। वह जो सब आए गए लोगो का सत्कार करे।

सर्वातिशायी—वि० [सं० सर्वातिशायिन्] सबसे आगे बढ जानेवाला। जो सबसे प्रधान या श्रेष्ठतम हो।

सर्वातोद्यपरिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सर्वात्मा—संज्ञा पु० [सं० सर्वात्मन्] १ सबकी आत्मा। सारे विश्व की आत्मा। सपूर्ण विश्व मे व्याप्त चेतन सत्ता। ब्रह्म। २ शिव का एक नाम। ३ जिन। अर्हत्।

सर्वादृश—वि० [सं०] सबके समान। अन्यो के समान।

सर्वाधिक—वि० [सं०] सबसे अधिक। सबसे आगे [को०]।

सर्वाधिकार—संज्ञा पु० [सं०] १ सब कुछ करने का अधिकार। पूर्ण प्रभुत्व। पूरा इख्तियार। २. सब प्रकार का अधिकार।

सर्वाधिकारी—संज्ञा पु० [सं० सर्वाधिकारिन्] १ पूरा अधिकार रखनेवाला। वह जिसके अधिकार मे पूरा इख्तियार हो। २ हाकिम। ३ निरीक्षणकर्ता। निरीक्षक। ४ सबका प्रधान। अध्यक्ष (को०)।

सर्वाधिपत्य—संज्ञा पु० [सं०] सबपर प्रभुत्व या आधिपत्य [को०]।

सर्वाध्यक्ष—संज्ञा पु० [सं०] वह जो सबपर शासन करता हो [को०]।

सर्वानुकारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शालपर्णी।

सर्वानुकारी—वि० [सं० सर्वानुकारिन्] [वि० स्त्री० सर्वानुकारिणी] सबका अनुकरण या अनुगमन करनेवाला [को०]।

सर्वानुक्रमणिका, सर्वानुक्रमणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सभी वस्तुओ या विषयो की क्रमबद्ध ब्यौरेवार सूची।

सर्वानुभू—वि० [सं०] सबका अनुभव करनेवाला। जो सबकी अनुभूति करता हो।

सर्वानुभूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ समग्र की, सबकी अनुभूति। वह अनुभूति जो व्यापक हो। २ श्वेत निवृता या निसोथ [को०]।

सर्वान्न—संज्ञा पु० [सं०] हर तरह का अन्न।

यौ०—सर्वान्नभक्षक, सर्वान्नभोजी = हर तरह का अन्न या खाद्य पदार्थ खानेवाला।

सर्वान्नीन—वि० [सं०] सभी प्रकार के भोज्य पदार्थ खानेवाला। सर्वान्नभोजी [को०]।

सर्वान्य—वि० [सं०] जो पूर्णत भिन्न हो [को०]।

सर्वापरत्व—संज्ञा पु० [सं०] मोक्ष। मुक्ति [को०]।

सर्वाभिभू—संज्ञा पुं० [सं०] एक बुद्ध का नाम।

सर्वाभिशकी—वि० [सं० सर्वाभिशङ्किन्] शकालु। शक्की स्वभाव का। सबपर शका करनेवाला [को०]।

सर्वाभिसधक—संज्ञा पु० [सं० सर्वाभिसन्धक] सबको धोखा देनेवाला (मनु०)।



सर्वाभिसधी—वि० [सं० सर्वाभिसन्धिन्] १ सबको धोखा देनेवाला। २ ठोगी। पाखडी। वचक [को०]।

सर्वाभिसार—संज्ञा पु० [सं०] चढाई के लिये सपूर्ण सेना की तैयारी या सजाव।

सर्वामात्य—संज्ञा पु० [सं०] किसी परिवार या गृहस्थी मे रहनेवाले घर के प्राणी, नौकर चाकर आदि सब लोग। (स्मृति)।

सर्वायनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद निसोथ।

सर्वायस—वि० [सं०] जो पूर्णत लौहनिर्मित हो। पूर्णत लोहे का बना हुआ [को०]।

सर्वायुध—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सर्वारण्यक—वि० [सं०] वन मे होनेवाली वस्तुओ को ही खानेवाला [को०]।

सर्वार्थ—संज्ञा पु० [सं०] समग्र विषय या पदार्थ [को०]।

यौ०—सर्वार्थकर्ता = जो सब वस्तुओ का निर्माण करता हो। सर्वार्थकुशल = सभी विषयो मे चतुर या निष्णात। सर्वार्थचिंतक = सबका चिंतन करनेवाला। प्रधान अधिकारी। सर्वार्थसाधक = सभी कार्यो को सिद्ध या पूर्ण करनेवाला। सर्वार्थसाधिका। सर्वार्थसिद्धि।

सर्वार्थोपाधन—संज्ञा पु० [सं०] १ वह जो सभी प्रयोजनो को सिद्ध करता हो। २ सब प्रयोजन सिद्ध होना। सारे मतलब पूरे होना।

सर्वार्थोपाधिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा [को०]।

सर्वार्थसिद्ध—संज्ञा पु० [सं०] सिद्धार्थ। शाक्य मुनि। गौतम बुद्ध।

सर्वार्थसिद्धि'—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारे उद्देश्यो का सिद्ध होना। लक्ष्य पूर्ण होना [को०]।

सर्वार्थसिद्धि'—संज्ञा पुं० [सं०] जैनो का एक देव वर्ग [को०]।

सर्वार्थानुसाधिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा का एक नाम। सर्वार्थसाधिका [को०]।

सर्वालोकंकर—संज्ञा पु० [सं०] समाधि का एक प्रकार [को०]।

सर्वावसर—संज्ञा पुं० [सं०] आधी रात।

सर्वावसु—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की एक किरण का नाम।

सर्वावास—वि० [सं०] दे० 'सर्वावासी'।

सर्वावासी—वि० [सं० सर्वावासिन्] जिसका निवास सर्वत्र हो [को०]।

सर्वाशय—संज्ञा पु० [सं०] १ सबका शरण या आधारभूत स्थान। २ शिव का एक नाम।

सर्वाशी—वि० [सं० सर्वाशिन्] [वि० स्त्री० सर्वाशिनी] सब कुछ खानेवाला। सर्वभक्षी। (स्मृति)।

सर्वाशय—संज्ञा पु० [सं०] सब कुछ खाना। सर्वभक्षण।

सर्वाश्रय—संज्ञा पु० [सं०] वह जो सबका आश्रय स्थान हो। सबको आश्रय देनेवाला, शिव [को०]।

सर्वास्तिवाद—संज्ञा पुं० [सं०] यह दार्शनिक सिद्धात कि सब वस्तुओ की वास्तव सत्ता है, वे असत् नही है।

विशेष—यह बौद्ध मत की वैभाषिक शाखा के चार भिन्न भिन्न मतो मे से एक है जिसके प्रवर्त्तक गौतम बुद्ध के पुत्र राहुल माने जाते है।

सर्वास्तिवादी—वि०, सज्ञा पु० [स० सर्वास्तिवादिन्] सर्वास्तिवाद मत क माननेवाला बौद्ध।

सर्वास्त्र—वि० [स०] सब प्रकार के शस्त्रास्त्रो से युक्त। शस्त्रास्त्रो से सज्जित [को०]।

सर्वास्त्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] जैनो की सोलह विद्या देवियो मे से एक।

सर्विस—सज्ञा स्त्री० [अ ] १ नौकरी। चाकरी। २ सेवा। सुश्रूषा। परिचर्या।

सर्वीय—वि० [स०] १ सबका। जो सबसे सबद्ध हो। २ जो जन-साधारण के लिये उपयुक्त हो। सर्वोपयुक्त [को०]।

सर्वे सज्ञा पु० [अ०] १ भूमि की नापजोख। पैमाइश। २ वह सरकारी विभाग जो भूमि को नापकर उसका नक्शा बनाता है।

सर्वेयर—सज्ञा पु० [अ०] वह जो सर्वे अर्थात् जमीन की नापजोख करता हो। पैमाइश करनेवाला। अमीन।

सर्वेश, सर्वेश्वर—सज्ञा पुं० [स०] १ सबका स्वामी। सबका मालिक। २ ईश्वर। ३ चक्रवर्त्ती राजा। ४ शिव। ५ एक प्रकार की ओषधि।

सर्वेसर्वा—वि० [स० सर्व] १ वह व्यक्ति जिसे किसी मामले मे सब कुछ करने का अधिकार हो। २ सर्वप्रधान कर्त्ता धर्ता।

सर्वोत्तम—वि० [स०] सबसे उत्तम। जिससे अच्छा दूसरा न हो [को०]।

सर्वोदय—सज्ञा पु० [स०] सभी के उदय या उत्थान की भावना से आचार्य विनोबा भावे द्वारा प्रवर्तित स्वतत्र भारत का एक सघटन।

सर्वोपकारी—वि० [स० सर्वोपकारिन्] सबका मददगार। जो सबकी सहायता करे।

सर्वोपरि—वि० [स०] सबसे ऊपर या बढकर। सर्वश्रेष्ठ।

सर्वोपाधि—सज्ञा स्त्री० [सं०] वे गुण जो सबमे साधारणत पाए जाते हो। सर्वसामान्य गुण [को०]।

सर्वौघ—सज्ञा पुं० [स०] १ सर्वांगपूर्ण सेना। २ दे० 'सर्वाभिसार'। ३ एक प्रकार का मधु या शहद।

सर्वौषध—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सर्वौषधि'।

सर्वौषधि—सज्ञा स्त्री० [स०] आयुर्वेद मे ओषधियो का एक वर्ग जिसके अतर्गत दस जडी बूटियाँ हैं।

विशेष—राजनिघटु के अनुसार कुष्ठ, मासी, हरिद्रा, वचा, शैलेय, चदन, मुरा, रक्त चदन, कर्पूर और मुस्तक तथा शब्दचद्रिका के अनुसार मुरा, मासी, वचा, कुष्ठ, शैलेय, रजनी द्वय, शटी चपक और मोथा इस वर्ग मे गिनाई गई ह।

सर्षफ—सज्ञा पु० [फा० सर्शफ, तुल० स० सर्षप] दे० 'सर्षप'।

सर्शप—सज्ञा पुं० [सं०] १ सरसो। २ सरसो भर का मान या तौल। ३ एक प्रकार का विष।

यौ०—सर्षपकद। सर्षपकण=सरसो का दाना। सर्षपतैल। सर्षपनाल। सर्षपशाक=सरसो का साग। सर्षपस्नेह=सरसो का तेल।

सर्षपकद—सज्ञा पु० [स० सर्षपकद] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ विष होती है।

सर्षपक—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का साँप।

सर्षपकी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक विषैला कीडा। २ एक प्रकार का चर्म रोग (को०)।

सर्षपतैल—सज्ञा पु० [स०] सरसो का तेल।

सर्षपनाग—सज्ञा पु० [सं०] सरसो का साग।

सर्षपा—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद सरसो।

सर्षपारुण—सज्ञा पु० [स०] पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार असुरो का एक गण।

सर्षपिक—सज्ञा पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बहुत जहरीला कीडा जिसके काटने से आदमी मर जाता है।

सर्षपिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक प्रकार का लिग रोग।

विशेष—इस रोग मे लिग पर सरसो के समान छोटे छोटे दाने निकल आते हैं। यह रोग प्राय दुष्ट मैथुन से होता है।

२ मसूरिका रोग का एक भेद। ३ सर्षपिक नाम का जहरीला कीडा। दे० 'सर्षपिक'।

सर्षपी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ स्रावि का। २ सफेद सरसो। ३ ममोला। खजन पक्षी। ४ एक प्रकार के छोटे दाने जो शरीर पर निकल आते है।

सर्सों—सज्ञा स्त्री० [हिं० सरसो] दे० 'सरसो'।

सर्हद—सज्ञा स्त्री० [हिं० सरहद] दे० 'सरहद'।

सलवा नोन—सज्ञा पु० [सलवा ?+हिं० नोन] कचिया नोन। काच लवण।

सल¹—सज्ञा पु० [स०] १ जल। पानी। २ सरल वृक्ष। ३ एक प्रकार का कीडा जो प्राय घास मे रहता है। इसे बोट भी कहते हे।

सल²—सज्ञा स्त्री० [हिं०] १ सिकुडन। सिलवट। २ तह। पर्त।

सलई—सज्ञा स्त्री० [स० शल्लकी] १ शल्लकी वृक्ष। चीढ। वि० दे० 'चीढ'। २ चीढ का गोद। कुदुर।

सलक—सज्ञा पुं० [अ०] चुकदर। कदशाक।

सलक्षण—वि० [स०] १ समान लक्षणो से युक्त। २ चिह्न या लक्षणयुक्त [को०]।

सलखपात—सज्ञा पुं० [स० शल्क+पद] कच्छप। कछुआ।

सलग—वि० [स० सलग्न] पूरा का पूरा। कुल। समग्र। जो टूटा न हो। उ०—कठिन समैया कलिकाल को कुटिल दैया सलग रुपैया मैया कापै दियो जात है।—कविता कौ०, भा० १, पृ० ३६०।

सलगम—सज्ञा पुं० [फा० शलजम] दे० 'शलजम'।

सलगा सज्ञा स्त्री० [स० शल्लकी] शल्लकी। सलई। चीढ।

सलग्नक वि० [स०] जो (ऋण) प्रतिभू अर्थात् जामिन देकर लिया गया हो [को०]।

सलज¹—वि० [स० सलज्ज] दे० 'सलज्ज'।

सलज²—सज्ञा पुं० [स० सल (=जल)] पहाडी बरफ का पानी।

सलजम—सज्ञा पु० [फा० शलजम] दे० 'शलजम'।

सलज्ज—वि० [स०] जिसे लज्जा हो। शर्म और हयावाला। लज्जाशील।

सलटुक—सज्ञा पु० [स०] चौलाई का साग।

सलतत†—सज्ञा स्त्री० [हि० सलतनत] १ सुभीता। आराम। २ व्यवस्था। प्रबध जुगाड।

सलतनत—सज्ञा स्त्री० [अ० सल्तनत] १ राज्य। बादशाहत। २ साम्राज्य। ३ इतजाम। प्रबध।

मुहा०—सलतनत बैठना = प्रबध ठीक होना। इतजाम बैठना। ४ सुभीता। आराम। जैसे,—पहले जरा सलतनत से बैठ लो, तब बातें होगी।

सलना[1]—क्रि० अ० [स० शल्य] १ साला जाना। छिदना। भिदना। २. किसी छेद मे किसी चीज का डाला या पहनाया जाना। ३. गडना। चुभना।

सलना[2]—सज्ञा पुं० लकडी छेदने का बरमा।

सलना[3]—सज्ञा पुं० [स०] मोती।

सलपत्र—सज्ञा पु० [स०] दालचीनी। गुडत्वक्।

सलपन—सज्ञा पुं० [देश०] दो तीन हाथ ऊँची एक झाडी जिसकी टहनियो पर सफेद रोएँ होते है।

विशेष—यह प्राय सारे भा त, लका, बरमा, चीन और मलाया मे पाई जाती है। यह वर्षा ऋतु मे फूलती है। इसका व्यवहार ओषधि के रूप मे होता है।

सलफ—सज्ञा पुं० [अ० सलफ] पूर्वपुरुष। पूर्वज। पुराने जमाने के पुरखे लोग [को०]।

सलब[1]—वि० [अ० सल्ब] नष्ट। बरबाद। जैसे,—साल ही भर मे उन्होने बाप दादा की सारी कमाई सलब कर दी।

सलब[2]—सज्ञा पु० दे० 'सल्ब'।

सलभ—सज्ञा पु० [स० शलभ] दे० 'शलभ'।

सलमह—सज्ञा पु० [फा०] बथुवा नाम का साग।

सलमा—सज्ञा पु० [अ० सलम ?] सोने या चाँदी का बना हुआ चमकदार गोल लपेटा हुआ तार जो टोपी, साडी आदि मे बेलबूटे बनाने के काम मे आता है। बादला।

सलवट—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिलवट] दे० 'सिलवट'।

सलवन—सज्ञा पु० [स० शालिपर्ण] सरिवन।

सलवात—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ बरकत। २ रहमत। मेहरबानी। ३ गाली। दुर्वचन। कुवाच्य।

क्रि० प्र०—सुनाना।

सलवार—सज्ञा पु० [फा० शलवार] एक प्रकार का ढीला पायजामा जिसमे चुन्नटे रहती हैं।

सलसल बोल—सज्ञा पुं० [अ०] बहुमूत्र रोग या मधुप्रमेह नामक रोग।

सलसलाना[1]—क्रि० अ० [अनु०] १ धीरे धीरे खुजली होना। सरसराहट होना। २ गुदगुदी होना। ३ कीडो का पेट के बल चलना। सरसराना। रेंगना। ४ आर्द्र या गीला होने से कार्य के अनुपयुक्त होना।

सलसलाना[2]—क्रि० स० १ खुजलाना। २. गुदगुदाना। ३ शीघ्रता से कोई कार्य करना।

सलसलाहट—सज्ञा स्त्री० [अनु०] १ सलसल शब्द या ध्वनि। २ सलसलाने का भाव या क्रिया। २ खुजली। खारिश। ४ गुदगुदी। कुलकुली।

सलसी—सज्ञा स्त्री० [देश०] माजूफल की जाति का एक प्रकार का बडा वृक्ष जो बूक भी कहलाता है। विशेष दे० 'बूक'।

सलहज—सज्ञा स्त्री० [स० श्यालजाया] साले की पत्नी। सरहज।

सला—सज्ञा स्त्री० [क०] १ निमत्रित करना। २ आवाज देना। बुलाना [को०]।

सलाई[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शलाका] १ धातु की बनी हुई कोई पतली छोटी छड। जैसे,—सुरमा लगाने की सलाई। घाव मे दवा भरने की सलाई। मोजा या गुलूबद बुनने की सलाई।

मुहा०—सलाई फेरना = (१) आँखो मे सुरमा या औषध लगाना। (२) सलाई गरम करके अथवा करने के लिये आँखो मे लगाना। आँखे फोडना।

२ दियासलाई। माचिस।

सलाई[2]—सज्ञा स्त्री० [हि० सालना] १ सालने की क्रिया या भाव। २. सालने की मजदूरी।

सलाई[3]—सज्ञा स्त्री० [स० शल्लकी] १ सलई। शल्लकी। २ चीड की लकडी।

सलाक[1]—सज्ञा स्त्री० [फा०] सोने या चादी की सलाई [को०]।

सलाक[2]—सज्ञा स्त्री० [फा० सलाख] बाण। तीर। उ०—शुद्ध मलाक समान लसी अति रोपमयी दृग दोठि तिहारी।—केशव (शब्द०)।

सलाकना†—क्रि० अ० [स० शलाका + हिं० ना (प्रत्य०)] सलाई या इसी तरह की और किसी चीज से किसी दूसरी चीज पर लकीर खीचना। सलाई की सहायता से चिह्न करना।

सलाख—सज्ञा स्त्री० [फा० सलाख, मि० स० शलाका] १ लोहे आदि धातु की बनी हुई छड। २ शलाका। सलाई। २ लकार। खत।

सलाजीत—सज्ञा स्त्री० [हि० शिलाजीत] दे० 'शिलाजीत'।

सलात—सज्ञा स्त्री० [अ०] नमाज [को०]।

सलातीन—सज्ञा पु० [अ० सुलतान का बहु व०] शासक वर्ग [को०]।

सलाद—सज्ञा पुं० [अ० सैलाड] १ गाजर, मूली, राई, प्याज आदि पत्तो का अँगरेजी ढग से सिरके आदि म डाला अचार। २ एक विशिष्ट जाति क कद क पत्ते जो प्राय. कच्चे खाए जात है और बहुत पाचक होते है। इसक कई भेद हात ह।

सलाबत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ कठोरता। सख्ती। २ प्रताप। शौर्य। वीरता [को०]।

**सलाम**—सज्ञा पुं० [अ०] प्रणाम करने की क्रिया। प्रणाम। बदगी। आदाब।

मुहा०—दूर से सलाम करना = किसी बुरी वस्तु के पास न जाना। किसी बुरे आदमी से दूर रहना। जैसे,—उनको तो हम दूर ही से सलाम करते है। सलाम है = हम दूर रहना चाहते हैं। बाज आए। जैसे,—अगर उनका यही रग ढग है, तो फिर हमारा तो यही से उनको सलाम है। सलाम लेना = सलाम का जवाब देना। सलाम कबूल करना। सलाम देना = (१) सलाम करना। (२) सलाम कहलाना। सलाम करके चलना = किसी से नाराज होकर चलना। अप्रसन्न होकर विदा होना। सलाम फेरना = (१) नमाज खतम करना। (२) किसी से अप्रसन्न होकर उसका प्रणाम न स्वीकार करना।

यौ०—सलाम अलैक या सलाम अलैकम = अभिवादन। सलाम। तुम सलामत रहो, तुमपर सलामती हो इस प्रकार परस्पर अभिवादन। सलामो पयाम = (१) किसी का प्रणाम और सदेशा आना या भेजना। (२) विवाह की बातचीत।

**सलामकराई**—सज्ञा स्त्री० [अ० सलाम + हिं० कराई] १ सलाम करने की क्रिया या भाव। २ वह धन जो कन्या पक्षवाले मिलनी के समय पर वर पक्ष के लोगो को देते है। (मुसल०)।

**सलामत**[1]—वि० [अ०] १ सब प्रकार की आपत्तियो से बचा हुआ रक्षित। जैसे,—घर तक सलामत पहुँचे, तब समझना।

यौ०—सही सलामत।

२ जीवित और स्वस्थ। तदुरुस्त और जिदा। जैसे,—आप सलामत रहे, हमे बहुतेरा मिला करेगा। ३ कायम। बरकरार। जैसे,—सिर सलामत रहे, टोपियाँ बहुत मिलेगी। ४ अखड। अक्षत।

**सलामत**[2]—क्रि० वि० कुशलपूर्वक। खैरियत से।

**सलामत**[3]—सज्ञा स्त्री० शामिल या पूरा होने का भाव। अखडित और सपूर्ण होने का भाव।

**सलामती**—सज्ञा स्त्री० [अ० सलामत + ई (प्रत्य०)] १ तदुरुस्ती। स्वस्थता। २ कुशल। क्षेम। जसे,—हम तो हमेशा आपकी सलामती चाहते है।

मुहा०—सलामती से = ईश्वर की कृपा से। परमात्मा के अनुग्रह से।

विशेष—इस मुहावरे का प्रयोग प्राय स्त्रियाँ और विशेषत मुसलमान स्त्रियाँ, कोई बात कहते सयय, शुभ भावना से करती है। जैसे,—सलामती से उनके दो दो लडके है।

३ एक प्रकार का मोटा कपडा। ४ जीवन। जिदगी।

**सलामी**[1]—सज्ञा स्त्री० [अ० सलाम + ई (प्रत्य०)] १ प्रणाम करने की क्रिया। सलाम करना। जैसे,—दूल्हे को सलामी मे १०) मिले थे। २ वर वधू को प्राप्त होनेवाली वह रकम जो सलामी की रस्म मे दी जाती है। ३ शस्त्रो से प्रणाम करने की क्रिया। सैनिको को प्रणाम करने की प्रणाली। सिपाहियाना सलाम। जैसे,—सिपाहियो की सलामी, तोपखाने की सलामी। ४ नजराना। अकोर। भेट। ५ ढाल। ६ तोपो या बदूको की बाढ जो किसी बडे अधिकारी या माननीय व्यक्ति के आने पर दागी जाती है।

मुहा०—सलामी उतारना = किसी के स्वागतार्थ बदूको या तोपो की बाढ दागना।

क्रि० प्र०—दगना।—दागना।—होना।

**सलामी**[2]—वि० १ सलाम करनेवाला। प्रार्थना या अर्ज करनेवाला। २ ढालवाँ। ढालदार। क्रमश झुकावदार।

**सलार**—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार की चिडिया। उ०—चकई चकवा और पिदारे। नकटा लेदी सोन सलार।—जायसी (शब्द०)।

**सलामत**—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मृदुता। नम्रता। २ सभ्यता। सुगमता। ३ शिष्टता। सभ्यता। ४ वह भाषा जो सरल और अक्लिष्ट शब्दो से युक्त हो। भाषा का अक्लिष्ट, गतिशील और सरल होना (को०)।

**सलाह**—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ समति। परामर्श। राय। मशवरा।

क्रि० प्र०—पूछना। देना।—बताना।—लेना।

मुहा०—सलाह ठहराना = राय पक्की होना समति निश्चित होना। जैसे,—सब लोगो की सलाह ठहरी है कि कल बाग चलें। २ अच्छाई। भलाई। ३ मेल। सुलह।

**सलाहकार**—सज्ञा पुं० [अ० सलाह + फा० कार (प्रत्य०)] वह जो परामर्श देता हो। राय देनेवाला।

**सलाही**—सज्ञा पुं० [अ० सलाह] सलाहकार। परामर्शदाता। जैसे,—कानूनी सलाही। (भारतीय शासनपद्धति।) (कृत्य०)।

**सलाहीयत**—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ अच्छाई। खूबी। भलाई। २ योग्यता। पात्रता। ३ इद्रियनिग्रह। पारसाई। सयम। ४ विद्वत्ता। ५ गभीरता (को०)।

**सलिंग** वि० [स० सलिङ्ग] समान लिंग से युक्त। समान चिह्नवाला। सदृश। अनुरूप (को०)।

**सलिंगी**—वि० [स० सलिङ्गिन्] जो केवल चिह्न धारण करता हो। पाखडी। ढोगी (को०)।

**सलिकु**—सज्ञा स्त्री० [स० शर ?] चिता।

**सलिता**—सज्ञा स्त्री० [स० सरिता] नदी। सरिता। उ०—द्रप्पन सम आकास श्रवत जल अमृत हिमकर। उज्जल जल सलिता सु सिद्धि सुदर सरोज सर।—पृ० रा०, ६१।४२।

**सलिल**—सज्ञा पु० [स०] १ जल। पानी। २ उत्तराषाढ नक्षत्र (को०)। ३ अश्रु। आँसू (को०)। ४. सलिल वात। एक प्रकार की हवा (को०)। ५ वर्षा का जल (को०)। ६ बहुत बडी सख्या (को०)। ७ एक वृत्त (को०)।

**सलिलकर्म**—सज्ञा पु० [स० सलिलकर्मन्] पितरो के लिये दिया जानेवाला जल। तर्पण (को०)।

**सलिलकुतल**—सज्ञा पुं० [स० सलिलकुतल] शैवाल। सिवार।

**सलिलकुक्कुट**—संज्ञा पु० [सं०] एक जल पक्षी। जलकुक्कुट (को०)।

**सलिलक्रिया** संज्ञा स्त्री० [स०] १ प्रेत का तर्पण। जलाजलि। उदकक्रिया। विशेष दे० 'उदकक्रिया'। २ मृतक क्रिया के समय शव को नहलाना (को०)।

**सलिलगर्गरी**—संज्ञा स्त्री० [स०] पानी की गगरी (को०)।

**सलिलगुरु**—वि० [स०] १. जलपूर्ण। पानी से भरा हुआ। २ अश्रु से परिपूर्ण (को०)।

**सलिलचर**—वि० [स०] जल मे विचरण करनेवाला जलचर।

यौ०—सलिलचरकेतन=कामदेव का एक नाम।

**सलिलज**—संज्ञा पु० [सं०] १ कमल। पद्म। २ वह जो जल से उत्पन्न हो। जलजात। जलजीव या वस्तुएँ।

**सलिलजन्मा**—संज्ञा पु० [स० सलिलजन्मन्] १ कमल। पद्म। २ वह जो जल से उत्पन्न हो। जलजात।

**सलिलद**[1]—वि० [स०] सलिल देनेवाला। जल देनेवाला। जो जल दे।

**सलिलद**[2]—संज्ञा पु० मेघ। बादल।

**सलिलधर**—संज्ञा पु० [सं०] १ मोथा। मुस्तक। २. बादल। मेघ (को०)। ३. अमृतपायी। देवता (को०)।

**सलिलदायी**—वि० [स० सलिलदायिन्] जल बरसानेवाला। वर्षा करनेवाला (को०)।

**सलिलनिधि**—संज्ञा पु० [स०] १ जलनिधि। समुद्र। २ सरसी छंद का एक नाम।

**सलिलनिपात**—संज्ञा पुं० [स०] जल गिरना। वर्षा होना (को०)।

**सलिलनिषेक**—संज्ञा पु० [स०] जलसिंचन। जल द्वारा सींचना (को०)।

**सलिलपति**—संज्ञा पुं० [स०] १ जल के स्वामी—वरुण। २ समुद्र। सागर।

**सलिलप्रिय**—संज्ञा पु० [स०] सूअर। शूकर।

**सलिलभर**—संज्ञा पु० [स०] ताल। झील। पोखरा (को०)।

**सलिलमुच्**—संज्ञा पु० [स०] मेघ। बादल।

**सलिलयोनि**—संज्ञा पु० [स०] १ ब्रह्मा। २ वह वस्तु जो जल मे उत्पन्न होती हो।

**सलिलरय**—संज्ञा पु० [स०] जल की धारा। सलिल का प्रवाह (को०)।

**सलिलराज**—संज्ञा पु० [स०] १ जल का स्वामी, वरुण। २ समुद्र। सागर।

**सलिलराशि**—संज्ञा पुं० [स०] १ जलाशय। जलाधार। २ समुद्र। सागर (को०)।

**सलिलवात, सलिलवायु**—संज्ञा पु० [सं०] सलिल को सस्पर्श कर के आती हुई वायु।

**सलिलस्तभी**—वि० [स० सलिलस्तम्भिन्] जल की गति का अवरोध करनेवाला। जलस्तभन करनेवाला (को०)।

**सलिलस्थलचर**—वि० [स०] जो जल और स्थल दोनो मे विचरण करता हो। जैसे,—हंस, साँप आदि।

**सलिलाजलि**—संज्ञा स्त्री० [सं० सलिलाञ्जलि] मृतक के उद्देश्य से दी जानेवाली जलाजलि।

**सलिलाकर**—संज्ञा पुं० [स०] समुद्र। सागर।

**सलिलाधिप**—संज्ञा पु० [स०] जल के अधिष्ठाता देवता, वरुण।

**सलिलार्णव**—संज्ञा पु० [स०] समुद्र। सागर।

**सलिलार्थी**—वि० [सं० सलिलार्थिन्] जल का इच्छुक। प्यासा (को०)।

**सलिलालय**—संज्ञा पु० [स०] समुद्र।

**सलिलाशन**—वि० [स०] केवल जल पीकर रहनेवाला।

**सलिलाशय**—संज्ञा पु० [सं०] जलाशय। तालाब।

**सलिलाहार**—संज्ञा पु० [स०] १, १ वह जो केवल जल पीकर रहता हो। २ केवल जल पीकर रहने की क्रिया।

**सलिलेंद्र**—संज्ञा पु० [स० सलिलेन्द्र] जल के अधिष्ठाता देवता, वरुण।

**सलिलेंधन**—संज्ञा पुं० [स० सलिलेन्धन] बड़वानल।

**सलिलेचर**—संज्ञा पु० [स०] जल मे रहनेवाला जीव। जलचर।

**सलिलेश**—संज्ञा पुं० [स०] जल के अधिष्ठाता देवता—वरुण।

**सलिलेशय**—वि० [स०] जल मे सोनेवाला। जलशायी।

**सलिलेश्वर**—संज्ञा पु० [स०] सलिलेंद्र। वरुण (को०)।

**सलिलोद्भव**[1]—संज्ञा पु० [स०] १ कमल। २ जल मे उत्पन्न होनेवाली कोई चीज।

**सलिलोद्भव**[2]—वि० जल मे उत्पन्न (को०)।

**सलिलोपजीवी**[1]—वि० [स० सलिलोपजीविन्] केवल जल पर निर्भर रहनेवाला। जलोपजीवी।

**सलिलोपजीवी**[2]—संज्ञा पु० मल्लाह। मछुवा (को०)।

**सलिलोपप्लव**—संज्ञा पु० [स०] जलप्रलय जलप्लावन (को०)।

**सलिलौका**[1]—संज्ञा पुं० [सं० सलिलौकस्] जोक। जलौका।

**सलिलौका**[2]—वि० जल मे रहनेवाला (को०)।

**सलिलौदन**—संज्ञा पुं० [स०] पकाया हुआ अन्न। ओदन।

**सलीका**—संज्ञा पु० [अ० सलीकह्] १ काम करने का ठीकठीक या अच्छा ढग। शऊर। तमीज। २ हुनर। लियाकत। ३ चालचलन। बरताव। ४ तहजीब। सभ्यता।

क्रि० प्र०—आना।—सिखाना।—सीखना।—होना।

**सलीकामद**—वि० [अ० सलीकह्+फा० मद (प्रत्य०)] १ जिसे सलीका हो। शऊरदार। तमीजदार। २ हुनरमद। ३ शिष्ट। सभ्य।

**सलीकेदार**—वि० [अ० सलीकह्दार] दे० 'सलीकामद'।

**सलीखा**—संज्ञा पुं० [स० शल्क (=छिलका)] तज। त्वकपत्र्।

**सलीता**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत मोटा कपड़ा जो प्रायः मारकीन या गजी की तरह का होता है।

**सलीपर**—संज्ञा पु० [अ० स्लिपर] १ एक प्रकार का हलका जूता जिसके पहनने पर पंजा ढँका रहता है और एँड़ी खुली रहती है।

सल्लना(पु)—क्रि० स० [स० शल्यन, हिं० सालना] १ दुख देना। कष्ट देना। चुभाना। २ दे० 'सालना'।

सल्लम—संज्ञा पुं० स्त्री० [देश०] एक प्रकार का मोटा कपडा। गजी। गाढा।

सल्लाह—संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'सलाह'।

सल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्लकी] शल्लकी। सलई।

सल्लू[1]—वि० [देश०] मूर्ख। बेवकूफ।

सल्लू[2]—संज्ञा पुं० [हिं० सलना] चमडे की डोरी।

सल्लोक—संज्ञा पु० [स० सत्+लोक] शिष्ट या सज्जन व्यक्ति। भद्र पुरुष। सत्पुरुष (को०)।

सल्व—संज्ञा पु० [स० शल्व] दे० 'शल्व'।

सवंशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वृक्ष।

सव[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ जल। पानी। २ पुष्परस। पुष्पद्रव। मकरंद। ३ यज्ञ। ४ सूर्य। ५. संतान। औलाद। ६ चद्रमा। ७ सोमलता का रस निकालना (को०)। ८ बलि। तर्पण (को०)। ९ वह जो उत्पादन करता हो (को०)। १० अर्क या मदार का पौधा (को०)। ११ अनुज्ञा। आज्ञा। आदेश (को०)। १२ प्रोत्साहन। उभारना। प्रेरणा करना (को०)।

सव[2]—वि० अज्ञ। मूर्ख। अनाडी।

सव[3]—संज्ञा पु० [स० शव] दे० 'शव'। उ०—फिरत सृगाल सज्यौ सव काटत चलत सो सिर लै भागि।—सूर०, ६।१५८।

सवगात†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौगात] दे० 'सौगात'।

सवजा—संज्ञा स्त्री० [स०] बर्बरी। अजगधा।

सवत†—संज्ञा स्त्री० [स० सपत्नी] दे० 'सौत'।

सवति(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] दे० 'सौत'। उ०—(क) जरि तुम्हारि चह सवति उखारी।—मानस, २।१७। (ख) सेवहि सकल सवति मोहि नीके।—मानस, २।१८।

सवत्स—वि० [स०] [वि० स्त्री० सवत्सा] बच्चे के सहित। जिसके साथ बच्चा हो। जैसे,—दान मे सवत्स गौ दी जाती है।

सवधूक—वि० [स०] वधू के साथ। पत्नीसहित (को०)।

सवन—संज्ञा पु० [स०] १ प्रसव। बच्चा जनना। २ श्योनाक वृक्ष। सोनापाठा। ३ यज्ञस्नान। ४ सोमपान। ५. यज्ञ। ६. चद्रमा। ७ पुराणानुसार भृगु के एक पुत्र का नाम। ८ वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम। ९ रोहित मन्वतर के सप्तर्षियो मे से एक ऋषि का नाम। १० स्वायभुव मनु के एक पुत्र का नाम। ११ अग्नि का एक नाम। १२ सोमलता को निचोडकर रस निकालना (को०)। १३ उपहार। बलि (को०)।

यौ०—सवनकाल=आहुति देने, तर्पण आदि का समय। सवनक्रम=यज्ञादि के विभिन्न कृत्यो का क्रम। सवनसस्था=यज्ञ कर्म का अत या समाप्ति।

सवनकर्म—संज्ञा पुं० [स० सवनकर्मन्] यज्ञकार्य।

सवनमुख—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ का आरभ।

सवनिक—वि० [स०] सवन सबधी। सवन का।

सवनीय—वि० [स०] सोम तर्पण से सबधी। सवन सबधित (को०)।

यौ०—सवनीय पशु=वह पशु जिसकी यज्ञ मे बलि चढाई जाय। सवनीय पात्र=सोमरस पीने का पात्र।

सवपुष—वि० [स० सवपुष्] शरीर के साथ। शरीर सहित। मूर्त (को०)।

सवयस—वि० [स० सवयस्] दे० 'सवयस्क'।

सवयस्क—वि० [सं०] समान अवस्थावाले। बराबर की उम्रवाले।

सवया[1]—संज्ञा स्त्री० [स०] सखी। सहचरी। सहेली।

सवया[2]—वि० [सं० सवयस्] हम उम्र। समान अवस्था का।

सवया[3]—संज्ञा पु० सखा। सहचर। मित्र। वयस्य (को०)।

सवर—संज्ञा पुं० [स०] १ जल। २ शिव का एक नाम।

सवररोध्र—संज्ञा पु० [सं०] पठानी लोध। सफेद लोध।

सवर्ण[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० सवर्णा] १ समान। सदृश। एक ही प्रकार का। समान वर्ण का। समान जाति का। ३ एक ही रग का (को०)। ४ व्याकरण मे अक्षरो के समान वर्ग मे सबद्ध। एक ही स्थान से उच्चरित होनेवाला (को०)। ५ गणित मे समान 'हर' वाली सख्या (को०)।

सवर्ण[2]—संज्ञा पुं० ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय माता से उत्पन्न सतान। विशेष दे० 'माहिष्य' (को०)।

सवर्णन—संज्ञा पु० [स०] गणित मे भिन्नो को समान हर वाली भिन्न के रूप मे लाना (को०)।

सवर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की पत्नी छाया का एक नाम।

सवर्य—वि० [स०] वर्य, श्रेष्ठ एव अच्छे गुणो से युक्त (को०)।

सवहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] निमोथ। त्रिवृत।

सवाँग†—संज्ञा पुं० [हिं० स्वाँग] दे० 'स्वाँग'। उ०—हिलि मिलि करत सवाँग सभा रसकेलि हो। नाउनि मन हरखाइ नुगवन मेलि हो।—तुलसी ग्र०, पृ० ६।

सवाँगना(पु)—क्रि० अ० [हिं० स्वाँगना] दे० 'स्वाँगना'।

सवा—संज्ञा स्त्री० [स० स+पाद] चौथाई सहित। सपूर्ण और एक का चतुर्थाश। चतुर्थाश सहित। जैसे,—सवा चार, अर्थात् चार और एक का चतुर्थाश=४¼।

सवाई[1]—संज्ञा स्त्री० हिं० सवा+ई (प्रत्य०)] १ ऋण का एक प्रकार जिसमे मूल धन का चतुर्थाश ब्याज मे देना पडता है। २. जयपुर के महाराजाओ की एक उपाधि। ३ मूत्रयत्र सबधी एक प्रकार का रोग।

सवाई[2]—वि० १ एक और चौथाई। सवा। २ किसी से बीस या और अधिक बढ चढकर। उ०—सीसनि टिपारे, उपवीत, पीत पट कटि, दोना बाम करनि मनोहर सवाई है।—तुलसी ग्र०, पृ० ३०५।

सवाक्—वि० [सं० सवाच्] वाणीयुक्त। वाक्युक्त। बोलता हुआ। अवाक् का उलटा।

सवाक् चित्र—सज्ञा पुं० [सवाक्+चित्र] वह चित्र जिसमे पात्रो के बोलने, गाने आदि की ध्वनि भी सुनाई दे। बोलता हुआ सिनेमा (अ० टॉकी)।

सवागी—सज्ञा पुं० [हिं० सुहागा] सुहागा। टकण क्षार।

सवाती—सज्ञा स्त्री० [स० स्वाती] स्वाती नक्षत्र [को०]।

सवाद—सज्ञा पु० [हि० स्वाद] दे० स्वाद।

सवादिक—वि० [हिं० सवाद+इक (प्रत्य०)] खाने मे जिसका स्वाद अच्छा हो। स्वाद देनेवाला। स्वादिष्ट।

सवादिल—वि० [हिं० सवाद+इल (प्रत्य०)] दे० 'सवादिक'।

सवाब—सज्ञा पु० [अ०] १ शुभ कृत्य का फल जो स्वर्ग मे मिलेगा। पुण्य।

मुहा०—सवाब कमाना = ऐसा काम करना जिसमे पुण्य हो। पुण्य कार्य करना।

२ पलटा। प्रतिफल। बदला। ३ भलाई। नेकी।

सवाया—वि० [हि० सवा+या (प्रत्य०)] १ दे० 'सवाई'। २ अधिक बढ चढ कर। उ०—कहि रामानँद सबद सवाया और सबै घट रीता।—रामानद०, पृ० १३।

सवार[1]—सज्ञा पु० [फा०] १ वह जो घोडे पर चढा हो। अश्वारोही। २ अश्वारोही सैनिक। रिसाले का सिपाही। ३ वह जो किसी चीज, हाथी, घोडा, ऊँट यान आदि पर चढा हो। ४ घुडसवार सिपही।

सवार[2]—वि० १ किसी चीज पर चढा या बैठा हुआ। जैसे,—वे गाडी पर सवार होकर घूमने निकलते हैं। २ नशे मे मस्त या मतवाला।

सवार[3]—सज्ञा पुं० [हिं०] १ प्रभात। सुबह। भोर। २ शीघ्र।

सवारना—क्रि० स० [हिं० सँवारना] दे० 'सँवारना'।

सवारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ किसी चीज पर विशेषत चलने के लिये चढने की क्रिया। २ वह चीज जिसपर यात्रा आदि के लिये चढते हो। सवार होने की वस्तु। चढने की चीज। जैसे,—घोडा, हाथी, मोटर, रेल आदि।

मुहा०—सवारी लेना = सवारी के काम मे लाना। सवार होना।

३ वह व्यक्ति जो सवार हो। जैसे—एक्केवाले चार आने की सवारी माँगते है। ४ जलूस। जैसे,—राजा साहब की सवारी बहुत धूम से निकली थी। ५ कुश्ती मे अपने विपक्षी को जमीन पर गिराकर उसकी पीठ पर बैठना और उसी दशा मे उसे चित करने का प्रयत्न।

क्रि० प्र०—कसना।

६ सभोग या प्रसग के लिये लिये स्त्री पर चढने की क्रिया। (बाजारू)।

क्रि० प्र०—कसना।—गाँठना।

सवाल—सज्ञा पुं० [अ०] १ पूछने की क्रिया। २ वह जो कुछ पूछा जाय। प्रश्न। ३ अर्जी। दरखास्त। माँग। याचना।

मुहा०—(किसी पर) सवाल देना = (किसी पर) नालिश करना। फरियाद करना।

४ विनती। निवेदन। प्रार्थना। ५ भिक्षा की याचना। ६ गणित का प्रश्न जो उत्तर निकालने के लिये दिया जाता है।

क्रि० प्र०—करना।—निकालना।—देना।

सवालजवाब—सज्ञा पु० [अ०] १ बहस। वादविवाद। जैसे,—सब बातो मे सवालजवाब मत किया करो, जो कहा जाय, वह किया करो। २ तकरार। हुज्जत। झगडा।

सवालात—सज्ञा पु० [अ०] सवाल का बहुवचन। अनेक प्रश्न।

सवालिया—वि० [अ०] जिसमे कोई बात पूछी गई हो। जैसे—सवालिया जुमला।

सवासा—वि० [स० सवासस्] वस्त्रयुक्त [को०]।

सविकल्प[1]—वि० [स०] १ विकल्प सहित। सदेहयुक्त। सदिग्ध। २ जो किसी विषय के दोनो पक्षो या मतो आदि को, कुछ निर्णय न कर सकने के कारण, मानता हो। ३ ऐच्छिक। इच्छानुकूल (को०)। ४ जो विकल्प या अतर (ज्ञाता और ज्ञेय मे) मानता हो।

सविकल्प[2]—सज्ञा पुं० १ दो प्रकार की समाधियो मे से एक प्रकार की समाधि। वह समाधि जो किसी आलंबन की सहायता से होती है। २ वेदात के अनुसार ज्ञाता और ज्ञेय के भेद का ज्ञान।

सविकल्पक—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सविकल्प'।

सविकार—वि० [सं०] १ जिसमे विकार हो। विकार वा विकृति-युक्त। २ जो उन्मिषित या विकसित हो रहा हो। ३ (फल, खाद्य आदि) जो सडा गला हो। गलित। खराब [को०]।

सविकाश, सविकास—वि० [स०] १ विकासयुक्त। विस्तारयुक्त। २ विकसित। खिला हुआ। कातिमान [को०]।

सविग्रह—वि० [स०] १ शरीरी। विग्रहयुक्त। मूर्तिमान्। देहधारी। २ अर्थवाला। सार्थक। ३ सघर्षरत। झगडालू [को०]।

सविचार—सज्ञा पुं० [सं०] चार प्रकार की सविकल्प समाधियो मे से एक प्रकार की समाधि।

सविज्ञान—वि० [स०] १. विज्ञानयुक्त। विशिष्ट ज्ञान सहित। २ विवेकयुक्त। विचारवान्।

सविडालभ—सज्ञा पुं० [स० सविडालम्भ] नाटचशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का परिहास या मजाक।

सवितर्क[1]—सज्ञा पु० [स०] चार प्रकार की सविकल्प समाधियो मे से एक प्रकार की समाधि।

सवितर्क[2]—वि० वितर्कयुक्त। विचारशील [को०]।

सविता[1]—सज्ञा पुं० [स० सवितृ] १ सूर्य। दिवाकर। २ बारह की सख्या। ३ आक। अर्क। मदार। ४ शिव का एक नाम (को०)। ५ इद्र (को०)। ६ जगत्स्रष्टा। ससार का रचयिता (को०)। ७ अदित्याइस व्यासो मे से एक (को०)।

सविता[2]—वि० [वि० स्त्री० सवित्री] जनक। उत्पादक। स्रष्टा [को०]।

सवितातनय—संज्ञा पुं० [सं० सवितृतनय] सूर्य के पुत्र हिरण्यपाणि, यमराज, शनि आदि।

सवितादैवत—संज्ञा पुं० [सं० सवितृदैवत] हस्त नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता सूर्य माने जाते हैं।

सवितापुत्र—संज्ञा पुं० [सं० सवितृपुत्र] सूर्य के पुत्र, हिरण्यपाणि, यम, शनि आदि।

सवितामेरु—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार मेरु के उत्तर के एक पर्वत का नाम।

सवितासुत—संज्ञा पुं० [सं० सवितृसुत] सूर्य के पुत्र, शनैश्चर।

सवितृतुल—वि [सं०] दे० 'सवितृतुल्य' [को०]।

सवित्र—संज्ञा पुं० [सं०] प्रजनन। प्रसव करना। लड़का जनना।

सवित्रिय—वि० [सं०] सूर्य संबंधी। सविता या सूर्य का।

सवित्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रसव करानेवाली धाई। धात्री। दाई। २ प्रसव करनेवाली, माता। माँ। ३ गौ।

सविद्य—वि० [सं०] १ विद्वान्। पंडित। २ तुल्य या समान विषय का अध्ययन करनेवाला (को०)।

सविध'—वि० [सं०] १ निकट। पास। समीप। २ समान। सजातीय। एक ही वर्ग का (को०)।

सविध'—संज्ञा पुं० निकटता। सामीप्य [को०]।

सविधा'—अ० विधिपूर्वक। विधिवत्।

सविधि—वि० [सं०] दे० 'सविध'।

सविनय—वि० [सं०] १. विनययुक्त। विनम्र। २ विनम्रता या शिष्टतापूर्वक [को०]।

सविनय अवज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सविनय कानून भंग'।

सविनय कानून भंग—संज्ञा पुं० [सं० सविनय + फा० कानून + हिं० भंग] नम्रता या भद्रतापूर्वक राज्य की किसी ऐसी व्यवस्था या कानून अथवा आज्ञा को न मानना जो अपमानजनक और अन्यायमूलक प्रतीत हो। और ऐसी अवस्था में राज्य की ओर से होनेवाले पीडन तथा कारादंड आदि को धीरतापूर्वक सहन करना। भद्र अवज्ञा। सविनय अवज्ञा। (सिविल डिसओबीडिएंस)।

सविभक्तिक—वि० [सं०] विभक्तियुक्त [को०]।

सविभाल—संज्ञा पुं० [सं०] नखी या हट्टविलासिनी नामक गंध द्रव्य।

सविभास—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का एक नाम।

सविभ्रम—वि० [सं०] दे० 'सविलास' [को०]।

सविमर्श—वि० [सं०] दे० 'सवितर्क' [को०]।

सविलास—वि० [सं०] १ भोग विलास करनेवाला। भोगी। विलासी। २ क्रीडा या प्रणययुक्त (को०)।

सविशंक—वि० [सं०] शंकित। शंकायुक्त [को०]।

सविशेष—वि० [सं०] १ विशिष्ट गुणों से युक्त। २ विशिष्ट। असाधारण। खास। ३ अंतर करनेवाला। विशेषतासूचक (को०)। ४ विलक्षण [को०]।

सविशेषक'—वि० [सं०] १ जो विशेष गुणों से युक्त हो। २ सुविचारित [को०]।

सविशेषक'—संज्ञा पुं० विशेष गुण [को०]।

सविश्रंभ—वि० [सं०] दिली। अंतरंग। अभिन्नहृदय [को०]।

सविष—संज्ञा पुं० [सं०] एक नरक [को०]।

सविस्तर—अ० [सं०] विवरण के साथ। विस्तार के साथ [को०]।

सविस्मय—वि० [सं०] १ चकित। विस्मित। २ संदेहपूर्ण। ३ विस्मयपूर्वक [को०]।

सवीर—वि० [सं०] वीरों से युक्त। अनुयायियों के साथ।

सवीर्य—वि० [सं०] १ समान शक्तिवाला। २ शक्तिशाली [को०]।

सवीर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] सतावर। शतावरी।

सवृत्त—वि० [सं०] चरित्रवान् [को०]।

सवृद्धिक—वि० [सं०] ब्याज के साथ [को०]।

सवृष्टिक—वि० [सं०] वर्षा से युक्त। वृष्टियुक्त।

सवेग'—वि० [सं०] १ समान वेगवाला। २ उग्र [को०]।

सवेग'—क्रि० वि० वेगपूर्वक। शीघ्र गति से। उ०—चले सवेग राम तेहि काला।—मानस २ २४२।

सवेताल—वि० [सं०] वेताल से ग्रस्त [को०]।

सवेध—संज्ञा पुं० [सं०] समीपता [को०]।

सवेरा—संज्ञा पुं० [हिं० स + सं० वेला] १. सूर्य निकलने के लगभग का समय। प्रातःकाल। सुबह। २ निश्चित समय के पूर्व का समय। (क्व०)।

सवेरे—अव्य० [हिं०] तड़के। भोर में। सुबह।

सवेश—वि० [सं०] १ निकट। समीप पास। २ विभूषित। अलंकृत (को०)।

सवेणीय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

सवेप—वि० [सं०] अलंकृत। सज्जित [को०]।

सवेष्टन—वि० [सं०] पगड़ीयुक्त। जिसपर पगड़ी हो [को०]।

सवैया—संज्ञा पुं० [हिं० सवा + ऐया (प्रत्य०)] १ तौलने का एक बाट जो सवा सेर का होता है। २ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु होता है। इसे 'मालिनी' और 'दिवा' भी कहते हैं।

विशेष—इस अर्थ में कुछ लोग इसे स्त्री लिंग भी बोलते हैं।

३ वह पहाड़ा जिसमें एक, दो, तीन आदि संख्याओं का सवाया रहता है। ४ दे० 'सवाई'।

सवैलक्ष्य—वि० [सं०] १ अप्राकृतिक। अस्वाभाविक। २ लज्जित। लज्जायुक्त। नम्रता [को०]।

यौ०—सवैलक्ष्य स्मित = अस्वाभाविक मुस्कान। झेंपभरी हँसी।

सव्य'—वि० [सं०] १ वाम। बायाँ। २ दक्षिण। दाहिना।

विशेष—सव्य शब्द का वाम और दक्षिण दोनों अर्थ में प्रयोग होता है। पर साधारणतः यह वाम के ही अर्थ में प्रयुक्त

होता है। ३ प्रतिकूल। विरुद्ध। खिलाफ। ४ अनुकूल। उपयुक्त। दक्षिण (को०)। ५ जो घृत मे सिंचित न हो। शुष्क। रूखा (को०)।

सव्य[२]—सज्ञा पु० १ यज्ञोपवीत। २ चद्र या सूर्यग्रहण के दस प्रकार के ग्रासो मे एक प्रकार का ग्रास। ३ अगिरा के पुत्र का नाम जो ऋग्वेद के कई मत्रो के द्रष्टा थे।

विशेष—कहते है कि अगिरा के तपस्या करने पर इद्र ने उनके घर पुत्र रूप मे जन्म ग्रहण किया था, जिनका नाम सव्य पडा। ४ विष्णु। ५ अग्नि, जो किसी के मृत्युकाल मे दीप्त की जाय (को०)।

सव्यचारी—सज्ञा पु० [स० सव्यचारिन्] १ अर्जुन का एक नाम। दे० 'सव्यसाची'। २ अर्जुन वृक्ष। कौह वृक्ष।

सव्यजानु—सज्ञा पु० [स०] युद्ध का एक ढग (को०)।

सव्यथ—वि० [स०] १ पीडा या व्यथा से ग्रस्त। २ शोकाकुल। दु खान्वित (को०)।

सव्यपेक्ष—वि० [स०] आसरा या अपेक्षायुक्त। किसी पर निर्भर या अवलबित (को०)।

सव्यबाहु—सज्ञा पु० [स०] बाएँ हाथ से लडने का एक तरीका (को०)।

सव्यभिचार—सज्ञा पु० [स०] हेत्वाभास का एक भेद।

सव्यसाची—सज्ञा स्त्री० [स० सव्यसाचिन्] अर्जुन।

विशेष—कहते है कि अर्जुन दाहिने हाथ से भी तीर चला सकते थे और बाएँ हाथ से भी, इसी लिये उनका यह नाम पडा।

सव्यभिचरण—वि० [स०] व्यभिचारि भाव से युक्त (को०)।

सव्यात—सज्ञा पु० [स० सव्यान्त] युद्ध करने का एक प्रकार (को०)।

सव्याज—वि० [स०] १ व्याज या छद्मयुक्त। २. कपटी। धूर्त। चालबाज (को०)।

सव्यापार—वि० [स०] काम मे लगा हुआ (को०)।

सव्येतर—वि० [स०] दाहिना (को०)।

सव्येष्ठा—स्त्री० पु० [स० सव्येष्ठ] दे० 'सव्येष्ठ'।

सव्येष्ठ—सज्ञा पु० [स०] सारथी।

सव्येष्ठा, सव्येष्ठाता—सज्ञा पु० [स० सव्येष्ठृ, सव्येष्ठातृ] सारथी। दे० 'सव्येष्ठ' (को०)।

सव्रण—वि० [स०] १ चोटैल। व्रणयुक्त। २ घायल। ३ दोषयुक्त। छिद्रयुक्त। सदोष (को०)।

सव्रणशुक्र—सज्ञा पु० [स०] आँख का एक रोग जिसमे आँख की पुतली पर सूई से किए हुए छोटे छेद के समान गहरी फूली पडती है और आँखो से गरम आँसू निकलते है।

सव्रती—वि० [स० सव्रतिन्] १ व्रतयुक्त। २ समान ढग से काम करनेवाला। समान रीतिरिवाज वाला (को०)।

सव्रीड—वि० [स०] व्रीडा या लज्जायुक्त। लज्जित (को०)।

सशक—वि० [स० सशङ्क] १ जिसे शका हो। शकायुक्त। २ भयभीत। डरा हुआ। ३ भयकारी। भयानक। ४. शका उत्पन्न करनेवाला। भ्रामक।

सशकना—क्रि० स० [स० सशङ्क + हिं० ना (प्रत्य०)] १ शकायुक्त होना। शकित होना। २ भयभीत होना। डरना।

सशक्तिक—वि० [स०] शक्तियुक्त। शक्तिशाली।

सशब्द—वि० [स०] १ ध्वनियुक्त। शब्द करता हुआ। २ चिल्ला कर कहा हुआ। जोरा से घोषित। ३ नादयुक्त। नाद के साथ (को०)।

सशयन—वि० [स०] समीपवर्ती। पास पडोस का।

सशरीर—वि० [स०] १ शरीरयुक्त। देहधारी। मूर्त। २ अस्थियुक्त। ३ शरीर के साथ।

सशल्क[१]—वि० [स०] जिसमे शल्क हो। शल्कयुक्त।

सशल्क[२]—सज्ञा पु० एक प्रकार का मत्स्य (को०)।

सशस्य[१]—सज्ञा पु० [स०] गेहूँ। गोधूम।

सशल्य[२]—वि० १ शल्ययुक्त। काँटेदार। २ काँटे या नोकदार अस्त्रो से विधा हुआ। ३ कठिन। मुश्किल। कष्टमय (को०)।

सशल्यव्रण—सज्ञा पु० [स०] व्रण रोग का एक भेद।

विशेष—काँटे आदि के चुभ जाने से यह व्रण उत्पन्न होता है। इसमे विद्ध स्थान मे वेदना होती है और कालान्तर मे वह पक जाता है।

सशस्या—सज्ञा स्त्री० [स०] नागदती। हाथी चुडी।

सशाखी—सज्ञा पु० [?] काला जीरा। कृष्ण जीरक।

सशस्त्र—वि० [स०] १ शस्त्रयुक्त। शस्त्रसज्ज। हथियारो से लैस। २ जिसमे शस्त्रो, हथियारो का उपयोग हुआ हो (को०)।

सशस्य—वि० [स०] १ अन्न से युक्त। २ जिसमे अनाज पैदा हो। उपजाऊ (को०)।

सशस्या—सज्ञा स्त्री० [स०] नागदती (को०)।

सशाक—सज्ञा पु० [स०] तरकारी। भाजी।

सशाद्वल—वि० [स०] हरी हरी घासो से पूर्ण (को०)।

सशुक्र—वि० [स०] दीप्तियुक्त। चमकदार (को०)।

सशूक[१]—वि० [स०] टूँडवाला (को०)।

सशूक[२]—सज्ञा पु० ईश्वरविश्वासी। आस्तिक (को०)।

सशेष—वि० [स०] जिसमे शेष हो। २ अपूर्ण। अधूरा।

सशोथ—वि० [स०] सूजा हुआ।

सशोथपाक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का नेत्र रोग।

विशेष—इस रोग मे आँखो मे से आँसू निकलते है और उनमे खुजली तथा शोथ होता है। आँखे लाल भी हो जाती हैं।

सश्मश्रु[१]—वि० [स०] श्मश्रुयुक्त। दाढी मूँछवाला।

सश्मश्रु[२]—सज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसे दाढी मूँछ उग आई हो (को०)।

सश्रद्ध—वि० [स०] १ श्रद्धायुक्त। आस्थावान्। २ विश्वास करने योग्य। सच्चा (को०)।

सश्रम—वि० [स०] १ श्रमयुक्त। २ थका हुआ। ३ श्रमपूर्वक।

सश्रीक—वि० [स०] १ समृद्धियुक्त। भाग्यशाली। २ शोभायुक्त। सुदर (को०)।

सश्रीवृक्ष—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का घोडा, जिसके वक्षस्थल पर भँवरी हो [को०]।

सश्लेष—वि० [स०] श्लेषयुक्त। द्व्यर्थक। श्लिष्ट [को०]।

सश्वास—वि० [स०] जीवित। जो श्वासयुक्त हो [को०]।

ससक(पु)—वि० [स० सशङ्क] शकित। शकायुक्त।

ससकना(पु)—क्रि० अ० [स० सशङ्क+हि० ना] दे० 'सशकना'। उ०—शिवहि विलोकि ससकेउ मारू।—मानस, २।८६।

ससकेत—वि० [स० ससङ्केत] जिसके साथ कोई सकेत या गुप्त समझौता हुआ हो [को०]।

ससग—वि० [स० ससङ्ग] सबद्ध। सगयुक्त। सलग्न [को०]।

ससंततिक—वि० [सं० ससन्ततिक] सततियुक्त। बाल बच्चेदार [को०]।

ससदेह[1]—वि० [सं० ससन्देह] सशय युक्त।

ससदेह[2]—सज्ञा पुं० सदेह नामक अलकार।

ससध्य—वि० [स० ससन्ध्य] सध्या सबधी [को०]।

ससपद्—वि० [स० ससम्पद्] सपद्युक्त। सुखी। समृद्धिशील [को०]।

ससभ्रम[1]—वि० [स० ससम्भ्रम] व्याकुल। घबडाया हुआ [को०]।

ससभ्रम[2]—अव्य० १ हडबडी मे। शीघ्रतापूर्वक। घबडाहट मे। २ अभ्यर्थनापूर्वक। सादर [को०]।

ससरभ—वि० [स० ससरम्भ] सरभ युक्त। क्रुद्ध [को०]।

ससवाद—वि० [सं०] समान राय। एकमत [को०]।

ससवित्क—वि० [स०] समझदार। विवेकशील [को०]।

ससविद्—वि० [स०] जिसके साथ कोई समझौता हुआ हो [को०]।

ससशय[1]—वि० [स०] अनिश्चित। सदेहयुक्त [को०]।

ससशय[2]—सज्ञा पु० एक काव्यदोष। सदिग्धता [को०]।

ससहार—वि० [स०] सहार या निरोध शक्ति से युक्त [को०]।

सस[1]—सज्ञा पुं० [स० शश] चद्रमा। शशि।

सस[2]—सज्ञा पु० [स० शस्य] खेती बारी। उ०—सपने के सौतुख सुख सस सुर सोचत देत बिराई के।—तुलसी (शब्द०)।

सस[3]—सज्ञा पु० [स० शश] खरगोश।

ससक†[1]—सज्ञा पु० [स० शशक] खरहा। खरगोश।

ससक†[2]—सज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सिसक'।

ससकना†—क्रि० अ० [हिं० ससङ्कना] घबडाना। झिझकना।

ससत्व—वि० [स०] १ शक्तियुक्त। साहसपूर्ण। २ सत्वयुक्त। गर्भयुक्त। ३ पशु, पक्षियो, जतु, जीवो से पूर्ण [को०]।

ससत्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] गर्भवती स्त्री। गर्भिणी।

ससदल(पु)—सज्ञा पु० [स० शशधर] चद्रमा। उ०—सीसुर ससदल भाल।—ढोला०, दू० ४७६।

ससधर(पु)—सज्ञा पु० [स० शशधर] चद्रमा।

ससन—सज्ञा पु० [स०] पशु का वध [को०]।

ससना†—क्रि० अ० [हिं०] दे० 'ससकना'।

ससरना†—क्रि० अ० [स० सम्+सरण] सरकना। खिसकना। घसकना।

ससहर(पु)—सज्ञा पुं० [स० शशधर, प्रा० ससहर] चद्रमा। उ०—सोइ सूर तुम ससहर आनि मिलावा साह। तस दुख महँ सुख उपजै रैनि माँह दिन होइ।—जायसी (शब्द०)।

ससहाय—वि० [स०] सहायकों, साथियों के साथ [को०]।

ससा†—सज्ञा पुं० [स० शशा] १ खरगोश। शशक। २ खीरा।

समाउत्रस—वि० [स०] चकित। भयभीत। डरा हुआ [को०]।

ससाना†—क्रि० अ० [हिं०] दे० 'समकना'।

ससार्थ—वि० [स०] सार्थयुक्त। जिसमे वणिक् अपने वनिज के साथ हो (काफिला)।

ससि'—सज्ञा पुं० [स० शशि] शशि। चद्रमा। उ०—वीण अलापी देखि ससि, रमणी नाद सलीण।—ढोला०, दू० ५७०।

ससि(पु)[2]—सज्ञा पुं० [स० सस्य] धान्य।—उ०—ससि सपन्न सोह महि कैसी। उपकारी कै सपति जैसी।—मानस, ४।५५।

ससित—वि० [स०] सिता या शर्करायुक्त [को०]।

ससिद्ध—सज्ञा पुं० [स०] वडा शाल। सर्ज वृक्ष।

ससिधर(पु)—सज्ञा पु० [स० शशधर] शशि। चद्रमा।

ससिरिपु(पु)—सज्ञा पु० [स० शशिरिपु] दिन। उ०—ससिरिपु वरष सूररिपु जुग वर हररिपु कीन्हा घात।—भूर०, १०।३६७६।

ससिहर(पु)[1]—सज्ञा पुं० [स० शशधर] चद्रमा।—उ०—ससिहर मृगरस्थ मोहियउ तिण हसि मेल्हो वोण, ढोला० दू० ५७०।

ससिहर(पु)[2]—सज्ञा स्त्री० [स० शशि+धर] शिशिर ऋतु। उ०—कहि नारि पीय विनु कामिनी रिति ससिहर किम जीजइय।—पृ० रा०, ६१।६४।

ससी(पु)—सज्ञा पुं० [स० शशि] शशि। चद्रमा।

ससील(पु)—वि० [स० सशील] शीलयुक्त। सुशील।

ससुर'—सज्ञा पु० [स० श्वशुर] जिसके पुत्री या पुत्र से व्याह हुआ हो। पति या पत्नी का पिता। श्वशुर। दे० 'श्वसुर'।

ससुर—वि० [स० स+सुर] १ देवगणों के साथ। देवताओं मे युक्त। २ मदमत्त। मतवाला नशे मे चूर। ३ सुरा या मदिरायुक्त [को०]।

ससुरा—सज्ञा पु० [स० श्वसुर] १ श्वशुर। ससुर। २ एक प्रकार की गाली। जैसे,—वह ससुरा हमारा क्या कर सकता है। ३ दे० 'ससुराल'। उ०—कत यह रहसि जा आउव करना। ससुरइ अत जनम दुख भरना।—जायसी (शब्द०)।

ससुरार, ससुरारि(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० श्वसुरालय] दे० 'ससुराल'। उ०—ससुरारि पियारि लगा जबत। रिपुरूप कुटुब भए तबते।—मानस, ७।१०१।

ससुराल—सज्ञा स्त्री० [स० श्वशुरालय] १ श्वसुर का घर। पति या पत्नी के पिता का घर। २ जेलखाना। बदीगृह। (बदमाश)।

ससेन, ससैन—वि० [स०] सेना से युक्त। सेना या वाहिनी के साथ।

सस्तर'—वि० [स०] आस्तरण या पत्ते आदि के बने हुए बिछान से युक्त [को०]।

सस्तर(पु)[2]—सज्ञा पु० [स० शस्त्र] दे० 'शस्त्र'।

सस्ता—वि० [स० स्वस्थ] [वि० स्त्री० सस्ती] १ जो महँगा न हो। जिसका मूल्य साधारण से कुछ कम हो। थोड़े मूल्य का। जैसे,—

उन्हें यह मकान बहुत सस्ता मिल गया। २ जिसका भाव बहुत उतर गया हो। जैसे,—आजकल सोना सस्ता हो गया है।

यौ०—सस्ता समय = ऐसा समय जब कि सब चीजे सस्ती हों। सस्ता माल = घटिया दर्जे का माल।

मुहा०—सस्ता लगना = कम दाम पर बेचना। दाम या भाव कम कर देना। सस्ते छूटना = जिस काम मे अधिक व्यय, परिश्रम या कष्ट आदि होने का हो, वह काम थोडे व्यय, परिश्रम या कष्ट मे हो जाना।

३ जो सहज मे प्राप्त हो सके। जिसका विशेष आदर न हो। ४ घटिया। साधारण। मामूली। (क्व०)।

**सस्ताना[1]**—क्रि० अ० [हिं० सस्ता + ना (प्रत्य०)] किसी वस्तु का कम दाम पर बिकना। सस्ता हो जाना।

**सस्ताना[2]**—क्रि० स० किसी चीज का भाव सस्ता करना। सस्ते दामो पर बेचना।

**सस्ती**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सस्ता + ई (प्रत्य०)] १ सस्ता होने का भाव। सस्तापन। अल्पमूल्यता। महँगी का अभाव। २ वह समय जब कि सब चीजे सस्ते दाम पर मिला करती हो। जैसे,—सस्ती मे यही कपडा तीन आने गज मिला करता था।

**सस्त्रीक**—वि० [स०] जिसके साथ स्त्री हो। स्त्री या पत्नी के सहित। जैसे,—वे सस्त्रीक यहाँ आनेवाले है।

**सस्नेह**—वि० [स०] १ स्नेहयुक्त। प्रेमपूर्वक। प्रेमपूर्ण। २ स्नेह या तैलयुक्त (को०)।

**सस्पृह**—वि० [स०] स्पृहायुक्त। इच्छायुक्त (को०)।

**सस्पेंड**—वि० [अ०] जो किसी काम से, किसी अभियोग के सबध मे, जाँच पूरी न होने तक, अलग कर दिया गया हो। जो किसी काम से, किसी अपराध पर, कुछ समय के लिये छुडा दिया गया हो। मुअत्तल। जैसे,—उसपर घूस लेने का अभियोग है, इसलिये वह सस्पेंड कर दिया गया है।

क्रि० प्र०—करना।

**सस्फुर**—वि० [स०] १ स्पदनशील। २ जीवित (को०)।

**सस्मय**—वि० [स०] १ आश्चर्ययुक्त। चकित। २ हँसता हुआ। सस्मित। ३ घमडी। अभिमानी (को०)।

**सस्मित**—वि० [स०] हँसता हुआ। मुसकान युक्त (को०)।

**सस्य**—सज्ञा पु० [स०] १ धान्य। २ शास्त्र। ३ उत्तम गुण। ४ वृक्षो का फल। ५ दे० 'शस्य'। ६ एक कीमती पत्थर (को०)।

विशेष—सस्य' के यौगिक आदि शब्दो के लिये दे० 'शस्य' के यौगिक शब्द।

**सस्यक[1]**—सज्ञा पुं० [स०] १ वृहत्सहिता के अनुसार एक प्रकार की मणि। २ तलवार। ३ शालि। ४ साधु। ५ नारियल की गिरी (को०)। ६ शस्त्र (को०)।

**सस्यक[2]**—वि० १ सत्य से युक्त। २ जो योग्यता, सद्विचार, अच्छाई आदि सद्गुणो से युक्त हो (को०)।

**सस्यप्रद**—वि [स०] उपजवाला। जो उपजाऊ हो (को०)।

**सस्यमजरी**—सज्ञा स्त्री० [स० सस्यमञ्जरी] दे० 'शस्यमजरी'।

**सस्यमारी[1]**—सज्ञा पु० [स० सस्यमारिन्] मूसा। चूहा।

**सस्यमारी[2]**—वि० शस्य या अनाज का नाश करनेवाला।

**सस्यमाली**—सज्ञा स्त्री० [स०] धान्य से पूर्ण धरती (को०)।

**सस्यगीर्षक**—सज्ञा पु० [स०] अनाज की बाल। शस्यमजरी।

**शस्यशूक**—सज्ञा पुं० [स०] यव, धान आदि की बालो का नुकीला अगला भाग या टूँड (को०)।

**सस्यसवत्सर**—सज्ञा पु० [स०] शाल। साखू।

**सस्यसवर**—सज्ञा पु० [स० सस्यसम्वर] १ सलई। शल्लकी। २ शाल का वृक्ष।

**सस्यसवरण**—सज्ञा पु० [स० सस्यसम्वरण] शाल या अश्वकर्ण वृक्ष। साखू।

**सस्यहता, सस्यहा**—वि०, सज्ञा पु० [स० सस्यहन्तृ, सस्यहन्] दे० 'शस्यहता'।

**सस्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] अरनी। गणिकारिका। गनियर।

**सस्याद**—वि० [स०] अनाज या खेत चर जानेवाला। शस्यभक्षक (को०)।

**सस्येष्टि**—सज्ञा स्त्री० [स०] फसल के पकने पर किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ (को०)।

**सस्वेद**—वि० [स०] पसीने से युक्त। पसीने से लथपथ (को०)।

**सस्वेदा**—सज्ञा स्त्री० [स०] वह कुमारी कन्या जिसका कौमार्य भग हुआ हो (को०)।

**सहडुक**—सज्ञा पु० [स० सहण्डुक] एक प्रकार का मास का रसा या शोरवा।

विशेष—बकरे आदि पशुओ के मासभरे अगो के टुकडो को धोकर घी मे हीग आदि का तडका देकर धीमी आँच मे भून ले। अनतर उसे छानकर पानी, नमक, मसाला आदि डाले और पक जाने पर उतार ले। भावप्रकाश मे यह शोरवा शुक्रवर्धक, बलकारक, रुचिकर, अग्निदीपक, त्रिदोष शाति के लिये श्रेष्ठ और धातुपोषक बताया गया है।

**सहँगा**—वि० [देश०] जो महँगा न हो। सस्ता। महँगा शब्द के साथ यौगिक रूप मे प्रयुक्त। जैसे—महँगासहँगा। उ०—मनि मनिक महँगे किए सँहगे तृन, जल, नाज। तुलसी ऐसो जानिए राम गरीबनेवाज।—तुलसी ग्र०, पृ० १५२।

**सह[1]**—अव्य० [स०] १ सहित। समेत। २ एक साथ। युगपत्।

**सह[2]**—वि० [स०] १ विद्यमान। उपस्थित। मौजूद। २ सहिष्णु। सहनशील। ३ समर्थ। योग्य। सशक्त। ४ पराभूत या वशीभूत करनेवाला (को०)।

**सह[3]**—सज्ञा पु० [स०] १ सादृश्य। समानता। बराबरी। २ सामर्थ। बल। शक्ति। ३ अगहन का महीना। ४ महादेव का एक नाम। ५ रेह का नोन। पाशु लवण। ६ अग्नि (को०)। ७ कृष्ण के एक पुत्र का नाम जिसकी माता का नाम माद्री था (को०)। ८ मनु का एक पुत्र। ९ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। १० प्राचीन काल की एक प्रकार की वनस्पति या बूटी जिसका व्यवहार यज्ञो आदि मे होता था।

**सह[४]**—सज्ञा स्त्री० समृद्धि ।

**सहक**—वि० [स०] सहनशील । सहिष्णु । क्षमाशील [को०] ।

**सहकरण**—सज्ञा पुं० [स०] कोई काम साथ साथ करना ।

**सहकर्ता**—सज्ञा पुं० [स० सहकर्तृ] जो काम करने मे मददगार या सहायक हो [को०] ।

**सहकार[१]**—सज्ञा पु० [सं०] १ सुगधियुक्त पदार्थ । २ आम का पेड । ३ कलमी आम । ४ आम की मजरी या बौर (को०) । ५ आम्र का रस (को०) । ६ सहायक । मददगार । ७ साथ मिलकर काम करना । सहयोग ।

**सहकार[२]**—वि० हकार की ध्वनि से युक्त [को०] ।

**सहकारता**—सज्ञा स्त्री० [स०] सहायता । मदद ।

**सहकारभजिका**—सज्ञा स्त्री० [स० सहकारभञ्जिका] प्राचीन काल की एक प्रकार की क्रीडा या अभिनय ।

**सहकारिता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सहकारी होने का भाव । सहायक होने का भाव । २. सहायता । मदद ।

**सहकारी**—सज्ञा पु० [सं० सहकारिन्] [वि० स्त्री० सहकारिणी] १ साथ काम करनेवाला । साथी । सहयोगी । २ सहयोगात्मक । सहयोगयुक्त । ३ सहायक । मददगार । सहायता करनेवाला ।

**सहकृत्**—वि० [सं०] दे० 'सहकारी' ।

**सहगमन**—सज्ञा पुं० [स०] १ साथ जाने की क्रिया । २ पति के शव के साथ पत्नी के सती होने का व्यापार । सती होने की क्रिया ।

**सहगवन**—सज्ञा पुं० [स० सहगमन, प्रा० सहगवण] दे० 'सहगमन' ।

**सहगामिनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह स्त्री जो पति के शव के साथ सती हो जाय । पति की मृत्यु पर उनके साथ जल मरनेवाली स्त्री । उ०—मगल सकल सोहाहिं न कैसे । सहगामिनिहि विभूषन जैसे ।—मानस, २।३७ । २ स्त्री । पत्नी । सहचरी । साथिन ।

**सहगामी**—वि०, सज्ञा पुं० [स० सहगामिन्] [स्त्री० सहगामिनी] १ साथ चलनेवाला । साथी । २ अनुकरण करनेवाला । अनुयायी ।

**सहगौन**—सज्ञा पु० [स० सहगमन, प्रा० सहगवन] दे० 'सहगमन' ।

**सहचर**—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० सहचरी] १ वह जो साथ चलता हो । साथ चलनेवाला । साथी । हमराही । २ सेवक । दास । भृत्य । नौकर । ३ दोस्त । सखा । मित्र । ४ कटसरैया । ५ पति (को०) । ६ प्रतिबधक । जामिन (को०) ।

**सहचरण**—सज्ञा पु० [स०] साथ साथ जाना या लगे रहना ।

**सहचरा**—सज्ञा स्त्री० [स०] नीली कटसरैया ।

**सहचराद्य तैल**—सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार का तेल ।

विशेष—यह तैल बनाने के लिये नीले फूलवाली कटसरैया, धमास, कत्था, जामुन की छाल, आम की छाल, मुलेठी, कमलगट्टा सब एक टके भर लेते हैं और उनका चूर्ण बनाकर १६ सेर जल मे डालकर औटाते है । जब चौथाई रह जाता है, तब उसे तेल या बकरी के दूध मे पकाते हैं । कहते है कि इसके सेवन से दाँत मजबूत हो जाते है ।

**सहचरित**—वि० [स०] १ साथ जाने या रहनेवाला । २ सगत । अनुरूप । युक्त [को०] ।

**सहचरी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सहचर का स्त्री० रूप । २ पत्नी । भार्या । जोरू । ३ सखी । सहेली । ४ पीली कटसरैया । पीत झिंटी (को०) ।

**सहचार**—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो सदा साथ रहता हो । सहचर । सगी । साथी । २ साथ । सग । सोहबत । ३ समन्वय । सामजस्य । सगति (को०) । ४ न्याय मे हेतु के साथ साध्य का अनिवार्य होना (को०) ।

**सहचार उपाधि लक्षणा**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की लक्षणा जिसमे जड सहचारी के कहने से चेतन सहचारी का बोध होता है । जैसे,—'गद्दी को नमस्कार करो, यहा गद्दी शब्द से गद्दी पर बैठनेवाले का बोध होता है ।

**सहचारिणी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ साथ मे रहनेवाली । सहचरी । सखी । २ पत्नी । स्त्री । जोरू ।

**सहचारिता**—सज्ञा स्त्री० [स०] सहचारी होने का भाव ।

**सहचारित्व**—सज्ञा पु० [स०] सहचारी होने का भाव ।

**सहचारी**—सज्ञा पुं० [स० सहचारिन्] [स्त्री० सहचारिणी] १ सगी । साथी । दे० 'सहचर' । २ सेवक । नौकर ।

**सहज[१]**—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० सहजा] १ सहोदर भाई । सगा भाई । एक माँ का जाया भाई । २ निसर्ग । स्वभाव । ३ ज्योतिष मे जन्म लग्न से तृतीय स्थान । भाइयो और बहना आदि का विचार इसी स्थान को देखकर किया जाता है । ४ जीवन्मुक्त (को०) ।

**सहज[२]**—वि० स्वाभाविक । स्वभावोत्पन्न । प्राकृतिक । जैसे,—काटना तो साँपो का सहज स्वभाव है । २ साधारण । ३ जन्मजात । ४ सरल । सुगम । आसान । जैसे,—जब तुमसे इतना सहज काम भी नही हो सकता, तब तुम और क्या करोगे । ५ साथ साथ उत्पन्न होनेवाला ।

**सहजअरि प्रकृति**—सज्ञा पुं० [स०] वह राजा जो विजेता का पडोसी और स्वभावत शत्रुता रखनेवाला हो ।

**सहजकृति**—सज्ञा पु० [स०] सोना । स्वर्ण ।

**सहजकलैव्य**—सज्ञा पुं० [स०] नपुसकता रोग का एक भेद । वह नपुसकता जो जन्म से ही हो ।

**सहजजन्मा**—वि० [सं० सहजजन्मन्] १ यमज । यमल । जुडवाँ । २ सगा । सहोदर [को०] ।

**सहजता**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहज होने का भाव । २ सरलता । स्वाभाविकता ।

**सहजधार्मिक**—वि० [स०] जो स्वभावत धर्मनिष्ठ हो [को०] ।

**सहजन**—सज्ञा पुं० [हिं० सहिंजन] दे० 'सहिजन' ।

**सहजन्मा**—वि० [स० सहजन्मन्] १ एक गर्भ से एक साथ ही होनेवाली संतान। यमज। यमल। जोडा। २ एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर। सगा (भाई आदि)। ३ जन्मना या स्वभावतः प्राप्त।

**सहजन्य**—संज्ञा पुं० [स०] एक यक्ष का नाम।

**सहजन्या**—संज्ञा स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम।

**सहजपथ**—संज्ञा पुं० [हिं० सहज+पथ] गौडीय वैष्णव संप्रदाय का निम्न वर्ग।

विशेष—इस संप्रदाय के प्रवर्तकों के मतानुसार भजन साधन के लिये पहले एक नवयौवनसंपन्न सुंदर परकीया रमणी की आवश्यकता होती है। बाद रसिक भक्त या गुरु से सम्यक् रूप से उपदेश लेकर उस नायिका के प्रति तन मन अर्पणकर साधन भजन करने से अविलंब व्रजनंदन रसिकशिरोमणि श्रीकृष्ण की प्राप्ति होती है। सहजियों का कहना है कि इस प्रकार की लीला महाप्रभु सर्वसाधारण को न दिखाकर गुप्त रूप से राय रामानंद और स्वरूप दामोदर आदि कई मार्मिक भक्तों को बता गए हैं।

**सहजमलिन**—वि० [स०] प्रकृत्या मलिन। स्वभावतः गंदा।

**सहजमित्र**—संज्ञा पुं० [स०] स्वाभाविक मित्र।

विशेष—शास्त्रों में भानजा, मौसेरा भाई और फुफेरा भाई सहजमित्र और वैमात्रेय तथा चचेरे भाई सहज शत्रु बताए गए हैं। भानजे आदि से संपत्ति का कोई संबंध नहीं होता, इसी से ये सहज मित्र हैं। परंतु चचेरे भाई संपत्ति के लिये झगडा कर सकते हैं, इससे वे सहज शत्रु कहे गए हैं।

**सहजमित्र प्रकृति**—संज्ञा पुं० [सं०] वह राजा जो विजेता का पडोसी, कुलीन तथा स्वभाव से ही मित्र हो।

**सहजवत्सल**—वि० [स०] स्वभावतः कोमल हृदयवाला [को०]।

**सहजशत्रु**—संज्ञा पुं० [स०] शास्त्रों के अनुसार वैमात्रेय या चचेरा भाई जो संपत्ति के लिये झगडा कर सकता है। विशेष दे० 'सहजमित्र'।

**सहजसुहृद**ⓤ—वि० [स० सहजसुहृद्] सहजमित्र। स्वभाव या प्रकृति से जो मित्र हो। उ०—सहज सुहृद गुरु स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि। सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि।—मानस, २।६३।

**सहजांधदृक्**—वि० [स० सहजान्धदृश्] जो जन्म से ही अंधा हो।

**सहजात**—वि० [स०] १. सहोदर। २ यमज। ३ स्वाभाविक। प्राकृतिक (को०)। ४ एक ही काल में उत्पन्न (को०)।

**सहजाधिनाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के अनुसार जन्मकुंडली के तीसरे या सहज स्थान का अधिपति ग्रह।

**सहजानि**[१]—संज्ञा स्त्री० [स०] पत्नी। स्त्री। जोरू।

**सहजानि**[२]—वि० स्त्री के साथ। जोरू के साथ। सपत्नीक।

**सहजारि**—संज्ञा पुं० [स०] शास्त्रों के अनुसार वैमात्रेय या चचेरा भाई जो समय पडने पर संपत्ति आदि के लिये झगडा कर सकता है। सहज शत्रु।

**सहजार्श**—संज्ञा पुं० [सं०] वह अर्श या बवासीर जिसके मस्से कठोर, पीले रंग के और अंदर की ओर मुँहवाले हों।

**सहजिया**—संज्ञा पुं० [हिं० सहज (=पथ+इया (प्रत्य०)] वह जो सहजपथ का अनुयायी हो। सहजपथ को माननेवाला। विशेष दे० 'सहजपथ'।

**सहजीवी**—वि० [सं० सहजीविन्] एक साथ जीवन धारण करनेवाले। साथ रहनेवाले।

**सहजेंद्र**—संज्ञा पुं० [सं० सहजेन्द्र] फलित ज्योतिष के अनुसार जन्मकुंडली के तीसरे या सहज स्थान के अधिपति ग्रह।

**सहजेतर**—वि० [स०] सहज अर्थात् प्राकृतिक या जन्मजात से इतर अथवा भिन्न [को०]।

**सहजैं**ⓤ—अव्य० [हिं० सहज+हीं] स्वभावतः। सरलतापूर्वक। आसानी से।

**सहजोदासीन**—वि० [सं०] जो प्रकृत्या या स्वाभाविक रूप से मित्र या शत्रु न हो [को०]।

**सहत**[१]—संज्ञा पुं० [फा० शहद] दे० 'शहद'।

**सहत**[२]†—वि० [हिं० सस्ता] दे० 'सस्ता'।

**सहतमहत**—संज्ञा पुं० [स० श्रावस्ती] दे० 'श्रावस्ति'।

**सहतरा**—संज्ञा पुं० [फा० शाहतरह्] पित्ता पापडा। पर्पटक।

**सहता**[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सहत्व' [को०]।

**सहता**[२]—वि० [हिं० सस्ता] कम दाम का। सस्ता।

**सहताना**ⓤ[१]—क्रि० अ० [हिं० सुस्ताना] श्रम मिटाना। थकावट दूर करना। विश्राम करना। आराम करना। सुस्ताना। उ०—सहतात कहाँ नर व जग में जिन मीत के काज सीस धरे।—लक्ष्मण सिंह (शब्द०)।

**सहताना**†[२]—क्रि० अ० [हिं० सस्ता+ना (प्रत्य०)] सस्ता होना। अपेक्षाकृत कम मूल्य का होना।

**सहती**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सस्ती] सस्तापन। दे० 'सस्ती'।

**सहतूत**—संज्ञा पुं० [फा० शाहतूत, शहतूत] एक फल। दे० 'शहतूत'।

**सहत्व**—संज्ञा पुं० [स०] १ 'सह' का भाव। २ एक होने का भाव। एकता। ३ मेलजोल।

**सहदंड**—वि० [स० सहदण्ड] दंड के साथ। सेना से युक्त।

**सहदइया**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सहदेई] दे० 'सहदेई'।

**सहदान**—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत से देवताओं के उद्देश्य से एक साथ ही या एक में किया जानेवाला दान। २ तर्पण। जलदान।

**सहदानी**ⓤ—संज्ञा स्त्री० [स० सज्ञान] निशानी। पहचान। चिह्न। उ०—सारँगपाणि मूँदि मृगनैनी मणि मुख माँह समानो। चरण चापि महि प्रगटि करी पिय शेष शीश सहदानी।—सूर (शब्द०)।

**सहदार**—वि० [स०] १ सपत्नीक। स्त्री के साथ। २ जिसका विवाह हो चुका हो। विवाहित [को०]।

सहदीक्षित—वि० [सं०] जिन्होने एक साथ दीक्षा प्राप्त की हो।

सहदीक्षिती—वि० [सं० सहदीक्षिनिन्] एक साथ दीक्षा लेनेवाले (को०)।

सहदूल—संज्ञा पु० [स० शार्दूल] सिंह। शार्दूल।

सहदेई—संज्ञा स्त्री० [स० सहदेवी] क्षुप जाति की एक वनौषधि जो पहाडी भूमि मे अधिक उपजती है।

विशेष—यह तीन चार फुट ऊँची होती है। इसके पत्ते बथुए के पत्तो के समान होते है। वर्षा ऋतु मे यह उगती है। बढने के साथ साथ इसके पत्ते छोटे होते जाते है। पत्तो की जड मे फूलो की कलियाँ निकलती है। ये फूल बग्गियारे के फूलो की भाँति पीले रग के होते है। इसके पौधे चार प्रकार के पाए जाते हैं।

सहदेव—संज्ञा पु० [स०] १ राजा पाडु के पाँच पुत्रो मे से सबसे छोटे पुत्र।

विशेष—कहते है कि माद्री के गर्भ और अश्विनी कुमारो के औरस से इनका जन्म हुआ था, और ये पुरुषोचित सौदर्य के आदर्श माने जाते थे। द्रौपदी के गर्भ से इन्हे श्रुतसेन नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था। ये बडे विद्वान् थे। विशेष दे० 'पाडु'।

२ जरासध का पुत्र। महाभारत युद्ध मे इसने पाडवो के विपक्षियो का साथ दिया था। यह अभिमन्यु के हाथ से मारा गया था।

३ हरिवश के अनुसार हर्यश्व के एक पुत्र का नाम।

सहदेवा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ सहदेई। पीतपुष्पी। विशेष दे० 'सहदेई'। २ बरियारा। बला। ३ दडोत्पल। ४ अनतमूल। शारिवा। ५ सरहँटी। सर्पाक्षी। ६ प्रियगु। ७ नील। ८ मोनवली नामक वनस्पति जो भारतवर्ष मे प्राय सभी प्रातो मे पाई जाती है।

विशेष—यह क्षुप जाति की वनस्पति है। इसकी ऊँचाई दो फुट तक होती है। इसकी डटी के नीचे के भाग मे पत्ते नही होते। पत्ते दो से चार इच तक चौडे, गोल और सिरे पर कुछ तिकोने होते हैं। इनकी डडियाँ १-२ इच लबी होती है। फूल छोटे छोटे होते है। यह वनस्पति औषध के काम मे आती है।

९ भागवत के अनुसार देवक की कन्या और वसुदेव की पत्नी का नाम।

सहदेवी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ सहदेई। पीतपुष्पी। विशेष दे० 'सहदेई'। २ सर्पाक्षी। सरहँटी। ३ बरियारा। बला (को०)। ४ अनतमूल (को०)। ५ महानीली। ६ प्रियगु। ७ सहदेव की एक पत्नी का नाम (को०)।

सहदेवीगण—संज्ञा पु० [सं०] सहदेई, बला, शतमूली, शतावर कुमारी, पुनर्नवा, मिही और व्याघ्री आदि ओषधियो का समूह जिनसे देवप्रतिमाओ को स्नान कराया जाता है।

सहधर्म—संज्ञा पु० [स०] समान धर्म, आचार, कर्तव्य आदि।

सहधर्मचर—वि० पु० [स०] सहधर्म का पालन करनेवाला (को०)।

सहधर्मचरण—संज्ञा पु० [सं०] स्वामी या पति के सार कर्तव्य का पालन करना (को०)।

सहधर्मचरी—संज्ञा स्त्री० [स०] स्त्री। पत्नी। जोरू।

सहधर्मचरिणी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ स्त्री। पत्नी। भार्या। २ सहकर्मिणी।

सहधर्मचारी—संज्ञा पु० [सं० सहधर्मचारिन्] १ वह जो साथ साथ कर्तव्य, धर्म का पालन करता हो। २ सहविद। पति।

सहधर्मिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी। स्त्री (को०)।

सहधर्मी—वि० [स० सहधर्मिन्] समान कर्तव्य या धर्मयुक्त (को०)।

सहन'—संज्ञा पु० [सं०] १ सहने की क्रिया। बरदाश्त करना। २ क्षमा। शाति। तितिक्षा। ३ दे० 'सहनशीलता'।

सहन'—वि० सहनशील। सहिष्णु। २ शक्तियुक्त। शक्तिमानी। २ क्षमा करनेवाला। क्षमाशील (को०)।

सहन'—संज्ञा पु० [अ० सह्न] १ मकान के बीच का खुला छोडा हुआ भाग। अँगनाई। अजिर। आँगन। चौक। २ मकान के सामने का खुला छोडा हुआ सामने भाग। द्वार प्रकोष्ठ। प्रघण। प्रघाण। (अ० पोर्टिको, पोर्च)। उ० बाहर सहन मे दो गाडियाँ खडी थी।—कठहार, पृ० ३८२।

यौ०—सहनदार = मकान जिसमे सहन हो।

३ एक प्रकार का बढिया रेशमी कपडा। ४ एक प्रकार का मोटा, सफ, चिकना सूती कपडा जो मगहर मे अच्छा बनता है। गाढा।

सहनक—संज्ञा पु० [अ० सह्नक] १ एक प्रकार की छिछली रकाबी जिसका व्यवहार प्राय मुसलमान लोग करते है। छोटा तवक। २ बीबी फातिमा की नियाज या फातिहा (मुसल०)।

सहनची—संज्ञा स्त्री० [अ० सह्नची] सहन की बगल मे बनाया हुआ छोटा दालान या कमरा (को०)।

सहनभडार, सहनभँडार—संज्ञा पु० [अ० सहन + स० भण्डार] १ कोष। खजाना। निधि। २ धनराशि। दौलत। उ०—दानि दिए बसन मनि भूषण राजा सहनभँडार। मागध सूत भाट नट जाचक जहँ जहँ करहिं कतार।—तुलसी (शब्द०)।

सहनर्तन—संज्ञा पु० [सं०] साथ मे नाचना। साथ साथ नृत्य करना (को०)।

सहनशील—वि० [स०] १ जिसका स्वभाव सहन करने का हो। जो सरलता से सह लेता हो। बरदाश्त करनेवाला। सहिष्णु। २ सतोषी। धैर्य धारण करनेवाला। सब्र करनेवाला।

सहनशीलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहनशील होने का भाव। २ धीरता। सतोष। सब्र।

सहना—क्रि० स० [स० सहन] १ बरदाश्त करना। झेलना। भोगना। जैसे,—(क) अपने पाप के लिये ही तुम दुख सहते हो। (ख) अब तो यह कष्ट नही सहा जाता। (ग) तुम क्यो उसके लिये बदनामी सहते हो। २ परिणाम भोगना। अपने ऊपर लेना। फल भोगना। जैसे,—इस काम मे जो घाटा होगा,

वह सब तुम्हे सहना पडेगा। ३ बोझ बरदाश्त करना। भार वहन करना। जैसे,—भला यह लकडी इतना बोझ कहाँ से सहेगी।

सयो० क्रि०—जाना।—लेना।

सहनाई—सज्ञा स्त्री० [फा० शहनाई] दे० 'शहनाई'। उ०—सुर नर नारि सुमगल गाई। सरस राग बाजहि सहनाई।—मानस, १।३०२।

सहनायन(पु)†—सज्ञा स्त्री० [फा० शहनाई+हिं० आयन (प्रत्य०)] शहनाई बजानेवाली स्त्री। उ०—नटनी डोमिन ढारिन, सहनायन परकार। निरतत नाद विनोद सो, बिहसत खेलत वार।—जायसी (शब्द०)।

सहनिर्वाप—सज्ञा पुं० [स०] वह दान तर्पण आदि जो साथ साथ किया जाय [को०]।

सहनिवास—सज्ञा पुं० [सं०] साथ निवास करना। एक साथ रहना।

सहनीय—वि० [स०] सहन करने के योग्य। जो असह्य न हो। जो सहा जा सके। सह्य।

सहनृत्य—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सहनर्तन'।

सहपथा—सज्ञा पुं० [स० सहपन्था] वह जो साथ साथ यात्रा करे। सहयात्री [को०]।

सहपति—सज्ञा पुं० [स०] ब्रह्मा का एक नाम।

सहपत्नीक—वि० [स०] सपत्नीक। सस्त्रीक।

सहपथी—सज्ञा पु० [सं० सहपथिन्] यात्रा मे साथ देनेवाला व्यक्ति। हमराही। सहयात्री [को०]।

सहपाशुकिल—सज्ञा पुं० [स०] लँगोटिया मित्र। बचपन का साथी [को०]।

सहपाशुक्रीडी—सज्ञा पुं० [स० सहपाशुक्रीडिन्] साथ साथ धूलमिट्टी मे खेलनेवाला बचपन का साथी [को०]।

सहपाठी—सज्ञा पुं० [स० सहपाठिन्] वह जो साथ मे पढा हो। वह जिसने साथ मे विद्या का अध्ययन किया हो। सहाध्यायी।

सहपान, सहपानक—सज्ञा पुं० [स०] साथ साथ आसव आदि पीने की क्रिया।

सहपिंड—सज्ञा पुं० [स० सहपिण्ड] सपिंड नाम की क्रिया। विशेष दे० 'सपिंडी'।

सहपिंडक्रिया—सज्ञा स्त्री० [स० सहपिण्डक्रिया] साथ साथ पिंडदान [को०]।

सहप्रयायी—सज्ञा पुं० [स० सहप्रयायिन्] साथ साथ यात्रा करनेवाला। सहयात्री [को०]।

सहप्रस्थायी—सज्ञा पुं० [सं० सहप्रस्थायिन्] सहयात्री [को०]।

सहबाला†—सज्ञा पु० [फा० शहबाला, शाहबाला] दे० 'शहबाला'।

सहभार्य—वि० [स०] सपत्नीक। सभार्य। सस्त्रीक [को०]।

सहभाव—सज्ञा पु० [स०] १ साथीपन। मित्रता। सख्यता। २ सहजीवन या युगपत् स्थिति की भावना। सह अस्तित्व की भावना [को०]।

सहभावी—सज्ञा पु० [सं० सहभाविन्] १ वह जो सहायता करता हो। सहायक। मददगार। २ सहोदर। ३ वह जो साथ रहता हो। सखा। सहचर।

सहभू—वि० [स०] एक साथ उत्पन्न। सहज।

सहभूत—वि० [सं०] जो साथ हो। सयुक्त। युक्त [को०]।

सहभोज—पुज्ञा पुं० [सं० सहभोजन] विभिन्न वर्ण के लोगों का एक साथ बैठकर भोजन करना। सामूहिक भोज जिसमे विभिन्न जाति और सप्रदाय के लोग एक साथ सम्मिलित हो।

सहभोजन—सज्ञा पुं० [सं०] एक साथ बैठकर भोजन करना। मित्रों के साथ खाना।

सहभोजी—सज्ञा पुं० [सं० सहभोजिन्] वे जो एक साथ बैठकर खाते हो। साथ भोजन करनेवाले।

सहम—सज्ञा पुं० [फा०] १ डर। भय। खौफ।

मुहा०—सहम चढना=डर होना। भय होना।

२ सकोच। लिहाज। मुलाहजा।

यौ०—सहमनाक=खौफनाक। भयानक। डरावना।

सहमत—वि० [स०] जिसका मत दूसरे के साथ मिलता हो। एक मत का। जैसे,—मैं इस विषय मे आपसे सहमत हूँ कि वह बडा भारी झूठा है।

सहमना'—क्रि० अ० [फा० सहम+हिं० ना (प्रत्य०)] भय खाना। भयभीत होना। शकित होना। डरना। उ०—सहमी सभा सकल जनक भए विकल राम लखि कौशिक असीम आज्ञा दई है।—तुलसी (शब्द०)।

सयो० क्रि०—जाना।—पडना।

सहमना'—वि० [स० सहमनस्] चतुरता या बुद्धिमत्तापूर्ण [को०]।

सहमरण—सज्ञा पुं० [स०] स्त्री का पति के साथ मरने का व्यापार। सती होने की क्रिया। दे० 'सहगमन'।

सहमातृक—वि० [सं०] जो माता के साथ हो। माता सहित [को०]।

सहमान—सज्ञा पुं० [स०] १ ईश्वर का एक नाम। २ वह जो मान या गर्वयुक्त हो। मानी। अभिमानी व्यक्ति।

सहमाना—क्रि० स० [हिं० सहमना का सक०] किसी को सहमने मे प्रवृत्त करना या घबडाहट मे डाल देना। भयभीत करना। डराना।

सयो० क्रि०—देना।

सहमृता—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो अपने मृत पति के शव के साथ जल मरे। सहमरण करनेवाली स्त्री। सती।

सहयायी—सज्ञा पुं० [सं० सहयायिन्] दे० 'सहपथा,' सहयात्री [को०]।

सहयोग—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक साथ मिलकर काम करने का भाव। सहयोगी होने का भाव। २ साथ। सग। ३ मदद। सहायता। ४ आधुनिक भारतीय राजनीतिक क्षेत्र मे सरकार के साथ मिलकर काम करने, उसकी काउसिलो आदि मे सम्मिलित होने और उसके पद आदि ग्रहण करने का सिद्धात।

सहयोगवाद—संज्ञा पुं० [सं०] राजनीतिक क्षेत्र में सरकार से सहयोग अर्थात् उसके साथ मिलकर काम करने का सिद्धांत।

सहयोगवादी—संज्ञा पुं० [सं० सहयोग+वादिन्] राजनीतिक क्षेत्र में सरकार से सहयोग करने अर्थात् उसके साथ मिलकर काम करने के सिद्धांत को माननेवाला।

सहयोगी—संज्ञा पुं० [सं०] १ सहायक। मददगार। २ वह जो किसी के साथ मिलकर कोई काम करता हो। सहयोग करनेवाला। साथ काम करनेवाला। ३ हमउमर। समवयस्क। ४ वह जो किसी के साथ एक ही समय में वर्तमान हो। समकालीन। ५. आधुनिक भारतीय राजनीतिक क्षेत्र में सब कामों में सरकार के साथ मिले रहने, उसकी काउंसिलों आदि में सम्मिलित होने और उसके पद तथा उपाधियाँ आदि ग्रहण करनेवाला व्यक्ति।

सहर[1]—संज्ञा पुं० [अ०] प्रातःकाल। भोर। सवेरा।

सहर[2]—संज्ञा पुं० [अ० सेह्र] जादू। टोना।

सहर[3]—संज्ञा पुं० [फा० शहर, शह्र] दे० 'शहर'।

सहर†[1]—संज्ञा पुं० [हिं० सिहोर] दे० 'सिहोर' (वृक्ष)।

सहर†[2]—क्रि० वि० [हिं० सहारना (=सहना) या सहलाना (=सुमताना)]। धीरे। मंद गति से। रुक रुक कर। जैसे,—तुम तो सब काम सहर सहर कर करते हो।

सहरई†—संज्ञा स्त्री० [फा० शहर, हिं० सहर+ई] नागरिकता। शहरी होने का भाव। शहरीपन।

यौ०—सहरईपन=सहरई। शहरीपन।

सहरक्षा—संज्ञा पुं० [सं० सहरक्षस्] तीन प्रकार की यज्ञाग्नियों में से से एक [को०]।

सहरगही—संज्ञा स्त्री० [अ० सहर+फा० गह] वह भोजन जो किसी दिन निर्जल व्रत करने के पहले बहुत तड़के या कुछ रात रहे ही किया जाता है। सहरी।

विशेष—इस प्रकार का भोजन प्रायः मुसलमान लोग रमजान के दिनों में रोजा रखने पर करते हैं। वे प्रायः ३ बजे रात को उठकर कुछ भोजन कर लेते हैं, और तब दिन भर निर्जल और निराहार रहते हैं। हिंदुओं में स्त्रियाँ प्रायः हरतालिका तीज का व्रत रखने से पहले भी इसी प्रकार बहुत तड़के उठकर भोजन कर लिया करती हैं। और इसे 'सरगही' कहती हैं। दे० 'सरगही'।

क्रि० प्र०—खाना।

सहरना—क्रि० अ० [हिं० सिहरना] दे० 'सिहरना'।

सहरगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वन मृग। जंगली मृग। मृदुपर्णी।

सहरा—संज्ञा पुं० [अ०] जंगल। वन। अरण्य। २ सिंहाड़ा नामक जंतु। ३ रेतियला मैदान। रेगिस्तान। मरुभूमि।

यौ०—सहरा आजम=अफ्रीका की विशाल मरुभूमि और जंगल। सहरागर्द=वनेचर। काननचारी। सहरागर्दी=वन परिभ्रमण।



वनचर होना। वनेचरत्व। सहरानशीं=(१) जंगल का निवासी। जंगली। (२) तपस्वी।

सहराई'—वि० [अ० सहरा+हिं० आई] जंगली। वन्य। आरण्यक।

सहराई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सहर (=शहर)+आई] दे० 'सहरई'।

सहराती†—वि० [फा० शहर+हिं० आती (प्रत्य०)] दे० 'शहराती'।

यौ०—सहरातीपन=दे० 'सहरई'।

सहराना'—क्रि० स० [हिं० सहलाना] धीरे धीरे हाथ फेरना। सहलाना। मलना। उ०—बाघ बछानि को गाइ जिआवत बायिन पैं सुरभी सुत चोपैं। न्योरनि को सहरावत साँप अहारनि दै बेहहै प्रतिपोषैं।—गुमान (शब्द०)।

सहराना[2]—क्रि० अ० [हिं० सिहरना] डर से काँपना। सिहर उठना।

सहरि—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २ वृष। साँड।

सहरिया—संज्ञा पुं० [अ० सहरगही] एक प्रकार का गेहूँ।

सहरी'—संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] शफरी मछली। शफरी। उ०—पान भरी सहरी सकल सुत बारे बारे केवट की जाति कछु वेद न पढ़ाइहौं। सब परिवार मेरा याही लागे राजा जू हौं दीन चित्त हीन कैसे, दूसरी गढ़ाइहौं। तुलसी (शब्द०)।

सहरी'—संज्ञा स्त्री० [अ०] व्रत के दिन बहुत तड़के किया जानेवाला भोजन। सरगही। विशेष दे० 'सहरगही'।

सहरी[3]—वि० [अ०] प्रातःकालीन। प्रातःकालीन [को०]।

सहरुए—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा के एक घोड़े का नाम।

सहर्ष—वि० [सं०] हर्षयुक्त। आनंदयुक्त। प्रसन्नतापूर्वक।

सहल—वि० [अ०, मि० सं० सरल] जो कठिन न हो। सरल। सहज। आसान। उ०—टहल महल जन महल महल जागन चाहिअ जुग जाम सो। देखन दोष न खीझत रीझत मुनि सेवक गुनगाम सो।—तुलसी (शब्द०)।

यौ०—सहल दुश्वार=कठिन। मुश्किल। सहल दुश्वारी=कठिनाई। आलस्य। सुस्ती।

सहलगी†—संज्ञा पुं० [हिं० साथ+लगना] वह जो साथ हो ले। रास्ते का साथी। हमराही।

सहलाना'—क्रि० स० [हिं० सहर (=धीरे) या अनु०] १ धीरे धीरे किसी वस्तु पर हाथ फेरना। सहराना। सुहराना। जैसे,—बच्चा सहलाना, पैर सहलाना। उ०—रानी पैरी होरे सबरे सहलाने लगी।—इत्यादि (शब्द०)। २ मलना। ३ गुदगुदाना।

संयो० क्रि०—देना।

सहलाना—क्रि० अ० सहसुदी होना। सुजलाना। जैसे—इसी देर में पैर का अंगूठा सहला रहा है।

सहलोकधातु—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक लोक का नाम। वह लोक जहाँ मनुष्य बसते हैं। पृथिवी।

सहवन—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का तेलहन जिसमे तेल निकाला जाता है।

सहवर्त्ती—वि० [स० सहवर्त्तिन्] जो साथ हो। साथ लगा हुआ। साथ का।

सहवसति—सज्ञा स्त्री० [स०] एक साथ रहना [को०]।

सहवसु—सज्ञा पु० [स०] एक असुर का नाम जिसका उल्लेख ऋग्वेद मे आता है।

सहवाच्य—वि० [स०] जो साथ साथ वाच्य हो या कहा गया हो।

सहवाद—सज्ञा पु० [स०] आपस मे होनेवाला तर्क वितर्क। वाद-विवाद। बहस।

सहवास—सज्ञा पु० [सं०] १ एक साथ रहने का व्यापार। सग। साथ। २ मैथुन। रति। सभोग।

सहवासिक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सहवासी' [को०]।

सहवासी—सज्ञा पु० [स० सहवासिन्] १ साथ रहनेवाला। सगी। साथी। मित्र। दोस्त। २ प्रतिवेशी। पडोसी।

सहवीर्य—सज्ञा पुं० [स०] ताजा नवनीत। सद्य माखन [को०]।

सहव्रत—वि० [स०] समान व्रत या कर्तव्ययुक्त [को०]।

सहव्रता—सज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी। भार्या। जोरू।

सहशय—वि० [स०] साथ मे शयन करनेवाला [को०]।

सहशयान—वि० [स०] जो साथ मे सोया हुआ हो।

सहशय्या—सज्ञा स्त्री० [स०] एकत्र या पास सोने का भाव [को०]।

सहशिष्ट—वि० [स०] एक साथ सीखा या शिक्षा पाया हुआ [को०]।

सहसजात—वि० [स० सहसञ्जात] साथ जनमा हुआ [को०]।

सहसभव—वि० [स० सहसम्भव] जो एक साथ उत्पन्न हुए हो। सहज।

सहसवाद—सज्ञा पुं० [स०] परस्पर बातचीत। गपशप।

सहसवास—सज्ञा पुं० [स०] एकत्र रहने का भाव। साथ रहना [को०]।

सहसवेग—वि० [सं०] सवेगो से युक्त। उत्तेजनायुक्त। उत्तेजित।

सहससंसर्ग—सज्ञा पु० [स०] शरीर का समर्ग। शारीरिक लगाव [को०]।

सहस(ङ)—वि० [स० सहस्र] दे० 'सहस्र'।

सहसकर, सहसकिरन(ङ)—सज्ञा पु० [स० सहस्रकिरण] रवि। सूर्य। मरीचिमाली। उ०—सहसकिरनि रूप मन भूला। जहँ जहँ दृष्टि कमल जनु फूला।—जायसी (शब्द०)।

सहसगो(ङ)—सज्ञा पुं० [स० सहस्रगु] सूर्य। सहस्राशु।

सहसजीभ—सज्ञा पुं० [स० सहस्रजिह्व] शेषनाग।

सहसदल—सज्ञा पुं० [स० सहस्रदल] कमल। शतपत्र।

सहसनयन—सज्ञा पुं० [स० सहस्रनयन] सहस्र आँखोवाला, इद्र। उ०—सहसनयन बिनु लोचन जाने।—मानस, २।२१७।

सहसपत्र—सज्ञा पु० [स० सहस्रपत्र] कमल।

सहसफण—सज्ञा पुं० [स० सहस्रफण] हजार फणोवाला, शेषनाग।

सहसबदन—सज्ञा पुं० [स० सहस्रवदन] हजार मुखोवाला, शेषनाग।

सहसबाहु—सज्ञा पुं० [सं० सहस्रबाहु] दे० 'सहस्रबाहु'। उ०—सहसबाहु सुरनाथ त्रिसकू। केहि न राजमद दीन्ह कलकू।—मानस, २।२२८।

सहसमुख—सज्ञा पुं० [स० सहस्रमुख] शेषनाग।

सहसवदन—सज्ञा पुं० [सं० सहस्रवदन] शेषनाग।

सहससीस(ङ)—सज्ञा पुं० [सं० सहस्रशीर्ष] शेषनाग। उ०—जो सहससीस अहीस महिधर लखन सचराचर धनी।—मानस, २।१२६।

सहसा—अव्य० [सं०] एक दम से। एकाएक। अचानक। अतर्कित। जैसे,—सहसा आँधी आई और चारो ओर अधकार छा गया। २ बलपूर्वक। बलात। जबरदस्ती [को०]। ३ दुस्साहस के साथ। बिना विचार [को०]। ४ हँसता हुआ। मुस्कराता हुआ [को०]।

सहसाक्षि(ङ)—सज्ञा पु० [सं० सहस्राक्ष] सहस्र आँखोवाला, इद्र।

सहसाखी(ङ)—सज्ञा पुं० [सं० सहस्राक्ष] इद्र। सहस्राक्ष। उ०—के पर दोस लखहिं सहसाखी। परहित घृत जिन्ह के मन माखी।—मानस, १।४।

सहसाहृद—सज्ञा पुं० [स०] १ दत्तक पुत्र। गोद लिया हुआ लडका। २ वह जो एक एक रुपया पाता हो। अकस्मात् रुपया पड़नेवाला व्यक्ति।

सहसान'—सज्ञा पु० [स०] १ मयूर। मोर पक्षी। २ यज्ञ।

सहसान'—वि० सहनशील [को०]।

सहसानन—सज्ञा पुं० [सं० सहस्रानन] सहस्र मुखोवाला, शेषनाग।

सहसानु'—सज्ञा पुं० [स०] १ मोर पक्षी। २ धर्मानुष्ठान। यज्ञ [को०]।

सहसानु'—वि० जो सहा करे। चुपचाप सहन कर जानेवाला। क्षमावान् [को०]।

सहसिद्ध—वि० [स०] स्वाभाविक। प्राकृतिक। सहज [को०]।

सहसेवी—वि० [स० सहसेविन्] किसी के साथ समभोग या मैथुन करनेवाला [को०]।

सहस्त—वि० [स०] १ हाथवाला। बाहुयुक्त। २. जो अस्त्रास्त्र चलाने मे कुशल हो [को०]।

सहस्थ, सहस्थित—वि० [स०] १ साथी। २ साथ रहनेवाला [को०]।

सहस्य—सज्ञा पुं० [स०] पूस का महीना। पौष मास।

सहस्र'—सज्ञा पु० [स०] दस सौ की सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है —१०००।

सहस्र'—वि० जो गिनती मे दस सौ हो। पाँच सौ का दूना।

यौ०—सहस्रगुण = हजार गुना। सहस्रघाती। सहस्रजलधार = एक पर्वत का नाम। सहस्रजिह्व = जिनको हजार जीभ हैं, शेषनाग। सहस्रधामा। सहस्रपरम = हजारो मे एक। सहस्रबुद्धि। सहस्रभानु। सहस्रमरीचि। सहस्रलोम। सहस्रवदन। सहस्रहस्त।

सहस्रक—वि० [स०] एक हजार तक या एक हजारवाला [को०]।

सहस्रकर—संज्ञा पु० [सं०] सूर्य।

सहस्रकला—संज्ञा स्त्री० [सं० सहस्र+कला] [illegible]

सहस्रकिरण—संज्ञा पु० [सं०] सूर्य। [illegible]

सहस्रकृत्वः—वि० [सं०] [illegible]

सहस्रक्षु—संज्ञा पु० [सं०] १ सूर्य। [illegible]

सहस्राक्षु—वि० [सं०] १ हजार आँखवाला। [illegible] २ जिसकी [illegible]

सहस्रगुण—वि० [सं०] हजार गुना (को)।

सहस्रजाती—संज्ञा पु० [सं० सहस्र+जाति] [illegible]

सहस्रजित्—संज्ञा पु० [सं० सहस्रजित्] हजार को जीतनेवाला, [illegible]

सहस्रचरण—संज्ञा पु० [सं०] [illegible] विष्णु।

सहस्रचित्त—संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।

सहस्रजित्—संज्ञा पु० [सं०] १ मुचुकुंद। [illegible] पटरानी जांबवती के [illegible] पुत्र का नाम। ४ वह जो हजार [illegible] ५ [illegible] मुक्त स्त्री (जै०)।

सहस्रणी—संज्ञा पु० [सं०] हजार [illegible] का [illegible] नाम विशेषतः।

सहस्रतम—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सहस्रतमी] हजारवाँ।

सहस्रतय—संज्ञा पु० एक हजार की संख्या (को)।

सहस्रदंष्ट्र—संज्ञा पु० [सं०] साँप। सर्प।

सहस्रदंष्ट्री—संज्ञा पु० [सं० सहस्रदंष्ट्र] एक [illegible] प्रकार। [illegible] शेषनाग।

सहस्रद—संज्ञा पु० [सं०] १ सहस्र या [illegible] हजार गाएँ आदि दान [illegible] करनेवाला। [illegible] पंडित। [illegible] २ शिव (को)।

सहस्रदक्षिण—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का [illegible] जिसमें हजार गाएँ दान दी जाती हैं।

सहस्रदल—[illegible] पु० [सं०] कमल। [illegible]

सहस्रधारावृष्टि—संज्ञा पु० [सं०] [illegible]

सहस्रपत्र—[illegible] पु० [सं०] १ [illegible]

सहस्रपदी—[illegible] [illegible] [illegible]

सहस्रपर्व—[illegible] [illegible] [illegible]

सहस्रपाद—[illegible] [illegible] [illegible]

सहस्रपाद—[illegible] [illegible] [illegible]

सहस्रपाद

**सहस्रार**—संज्ञा पुं० [सं०] १ हजार दलोंवाला एक प्रकार का कल्पित कमल। कहते हैं कि यह कमल मनुष्य के मस्तक में उलटा लगा रहता है, और उसी में सृष्टि, स्थिति तथा लयवाला परविंदु रहता है। २ जैनों के अनुसार बारहवें स्वर्ग का नाम।

**सहस्रारज**—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के एक देवता का नाम।

**सहस्रार्चिस्**—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव का नाम। २ सहस्र किरणवाला, सूर्य।

**सहस्रावर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ हजार पण से नीचे का जुरमाना। २ वह अर्थदंड या जुरमाना जो ५०० से एक हजार पण के अंदर हो [को०]।

**सहस्रावर्तक**—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

**सहस्रावर्ता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवी की एक मूर्ति का नाम।

**सहस्रास्य**—संज्ञा पुं० [सं०] हजार मुखवाले, विष्णु। २ शेषनाग या अनंत का एक नाम।

**सहस्री**[1]—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रिन्] १ वह वीर या नायक जिसके पास हजार योद्धा, घोड़ा या हाथी आदि हों। २ हजार व्यक्तियों का समूह या दल [को०]।

**सहस्री**[2]—वि० १ हजारवाला। जिसके पास हजार हों। २ जिसने सहस्रावर अर्थदंड अदा किया हो। ३ एक सहस्र तक का। जिसकी सीमा एक सहस्र हो [को०]।

**सहस्रेक्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] हजार आँखोंवाला—इंद्र। सहस्राक्ष [को०]।

**सहस्वान्**—वि० [सं० सहस्वत्] शक्तिशील। ताकतवर।

**सहापति**—संज्ञा पुं० [सं० सहाम्पति] १ ब्रह्मा। पितामह। २ एक नाग का नाम। ३ एक बोधिसत्व [को०]।

**सहा**[1] संज्ञा पुं० [सं०] १ घीकुआर। ग्वारपाठा। २ वनमूँग। ३ दंडोत्पल। ४ सफेद कटसरैया। ५ ककही या कंघी नाम का वृक्ष। ६ सर्पिणी। ७ रासना। ८ सत्यानाशी। ९ सेवती। १० हेमंत ऋतु। ११ अगहन मास। १२ मधुवन। १३ देवताड़ वृक्ष। १४ मेहँदी।

**सहा**[2]—संज्ञा [सं० सहस्] १ धरित्री। पृथिवी। २ घृतकुमारी। घीकुआर [को०]।

**सहाइ**Ⓤ[1]—संज्ञा पुं० [सं० सहाय्य] सहायक। मददगार।

**सहाइ**Ⓤ[2]—संज्ञा स्त्री० सहायता। मदद। उ०—(क) दीन्ही है रजाइ राम पाइ सो सहाइ लाल लषन समर्थ बीर हेरि हेरि मारि है।—तुलसी ग्र०, पृ० २३३। (ख) हरि जू ताकी करी सहाइ।—सूर०, ७।२।

**सहाई**Ⓤ[1]—संज्ञा पुं० [सं० सहाय्य] सहायक। मददगार। उ०—अति आरति कहि कथा सुनाई। करहु कृपा करि होहु सहाई।—मानस, १।१३२।

**सहाई**Ⓤ[2]—संज्ञा स्त्री० सहायता। मदद।

**सहाउ**Ⓤ—संज्ञा पुं० [सं० सहाय, प्रा० सहाअ] दे० 'सहाय'

**सहाचर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ पीली कटसरैया। पीली निर्गुंडी। २ दे० 'सहचर'।

**सहाद्वय**—संज्ञा पुं० [सं०] वनमृग। जंगली मृग।

**सहाध्ययन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ साथ साथ या मिलकर पढ़ना। २ साथ साथ पढ़ने का भाव। सहपाठी होना। ३ समान विषय या अध्ययन [को०]।

**सहाध्यायी**—संज्ञा पुं० [सं० सहाध्यायिन्] १ वह जो साथ पढ़ता हो। सहपाठी। २ वह जो समान या एक ही विषय का अध्ययन करता हो।

**सहाना**[1]—संज्ञा पुं० [सं० शोभन या फा० शाह] एक प्रकार का राग। विशेष दे० 'शहाना'[1]।

**सहाना**Ⓤ[2]—वि० [फा० शहानह्, शहना] शाही। राजसी।

**सहाना**†[3]—क्रि० स० [सं० सहन, हिं० सहना] प्रदर्शित करना। सहने के लिये प्रेरित करना।

**सहानी**[1]—वि० [फा० शाहाना] पीलापन लिए हुए लाल रंग का जैसे,—सहानी चूड़ियाँ। दे० 'शहाना' के यौ०।

**सहानी**[2]—संज्ञा पुं० एक प्रकार का रंग जो पीलापन लिए लाल होता है।

**सहानुगमन**†—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री का अपने पति के शव के साथ जल मरना। सती होना। सहगमन।

**सहानुसरण**—संज्ञा पुं० [सं०] १ साथ साथ अथवा समान रूप में अनुसरण करना। २ सहगमन।

**सहानुभूति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी को दुःखी देखकर स्वयं दुःखी होना। दूसरे के कष्ट में दुःखी होना। हमदर्दी।

क्रि० प्र०—करना।—दिखाना।—रखना।

**सहान्य**—संज्ञा पुं० [सं०] पर्वत [को०]।

**सहापवाद**—वि० [सं०] अपवाद युक्त। अपमति युक्त [को०]।

**सहाब**[1]—संज्ञा पुं० [फा० शहाब] एक प्रकार का गहरा लाल रंग। दे० 'शहाब'।

**सहाब**[2]—संज्ञा पुं० [अ०] मेघ। पर्जन्य [को०]।

**सहावत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मैत्री। दोस्ती। मित्रता। २ सहायता। मदद [को०]।

**सहाय**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सहायता। मदद। सहारा। २ आश्रय। भरोसा ३ सहायक। मददगार। ४ मित्रता। मैत्री [को०]। ५ एक प्रकार की वनस्पति या गंधद्रव्य। ६ एक प्रकार का हंस या चक्रवाक पक्षी। ७ शिव का एक नाम [को०]। ८ मित्र। साथी [को०]।

यौ०—सहायकरण = सहायता करना। सहायवत् = संगी। जो मदद करे। सहायकृत्य = सहायता करना।

**सहायक**—वि० [सं०] १ सहायता करनेवाला। मददगार। २ (छोटी नदी) जो किसी बड़ी नदी में मिलती हो। जैसे,—यमुना भी गंगा की सहायक नदियों में से एक है। ३ किसी की अधीनता में रहकर काम में उसकी सहायता करनेवाला। जैसे,—सहायक संपादक।

**सहायता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी के कार्यसंपादन में शारीरिक या और किसी प्रकार योग देना। ऐसा प्रयत्न करना जिसमें किसी का काम कुछ आगे बढ़े। मदद। सहाय। जैसे,—मकान बनाने में सहायता देना, किताब लिखने में सहायता देना। २ मित्रों का समूह (को०)। ३ वह धन जो किसी कार्य को आगे बढ़ाने के लिये लिये दिया जाय। मदद। जैसे,—उन्हें लड़की के ब्याह में कई जगहों से सौ सौ रुपए की सहायता मिली।

क्रि० प्र०—करना।—पाना।—देना।—मिलना।—होना।

**सहायत्व**—संज्ञा पु० [सं०] १ मित्रता। मैत्री। २ मित्र मंडल। मित्रसमूह। ३ सहायता मदद (को०)।

**सहायन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ साथ देना या रहना। २ अनुगमन। साथ जाना (को०)।

**सहायवान्**—वि० [सं० सहायवत्] १ मित्रवाला। संगी साथी से युक्त। २, सहायतायुक्त। जिसे मदद मिली हो (को०)।

**सहायी**[1]—वि० [सं० सहायिन्] [वि० स्त्री० सहायिनी] साथ जाने या अनुगमन करनेवाला।

**सहायी**[2]—संज्ञा पु० [सं० सहाय + ई (प्रत्य०)] १ सहायक। मददगार। सहायता करनेवाला। २ सहायता। मदद। सहाय।

**सहार**[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ आम का पेड़। आम्रवृक्ष। सहकार। २ महाप्रलय।

**सहार**[2]—संज्ञा पुं० [हिं० सहना] १ बर्दाश्त। सहनशीलता। २ सहन करने की क्रिया।

**सहारना**†—क्रि० स० [सं० सहन, हिं० सँभाल या सहाय] १ सहन करना। बर्दाश्त करना। सहना। उ०—कठिन वचन सुनि श्रवन जानकी सकी न वचन सहार। तृण अंतर दै दृष्टि तिरौंछी दई नैन जलधार।—सूर (शब्द०)। २ अपने ऊपर भार लेना। सँभालना। ३ गवारा करना।

**सहारा**—संज्ञा पुं० [सं० सहाय] १ मदद। सहायता।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

२ जिसपर बोझ डाला जा सके। आश्रय। आसरा। २ भरोसा। ४ इतमीनान।

मुहा०—सहारा पाना = मदद पाना। सहारा देना = (१) मदद देना। (२) टेक देना। (३) आसरा देना। (४) रोकना। सहारा ढूँढना = आसरा ताकना। वसीला ढूँढना।

**सहारोग्य**—वि० [सं०] स्वस्थ। रोगरहित (को०)।

**सहार्थ**[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ सहयोग। २ साधारण या समान विषय। ३ आनुषंगिक विषय (को०)।

**सहार्थ**[2]—वि० १ समान अर्थ युक्त। २ समान उद्देश्य, वस्तु या विषयवाला (को०)।

**सहार्द**—वि० [सं०] हृदयवाला। स्नेही (को०)।

**सहार्ध**—वि० [सं०] आधे के साथ। जिसमें आधा और हो (को०)

**सहालग**—संज्ञा पुं० [सं० साहित्य (= संबंध)] १ वह समय जो हिंदू ज्योतिषियों के कथनानुसार शुभ माना जाता है। २ वे मास या दिन जिनमें विवाह के मुहूर्त हों। ब्याह शादी के दिन।

**सहालाप**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी के साथ बातचीत (को०)।

**सहाव**—वि० [सं०] १ 'हाव' से युक्त। २ कामासक्त। विलासी (को०)।

**सहावल**—संज्ञा पुं० [फा० शाकून] लोहे या पत्थर का वह लटकन जिसे तागे में लटकाकर दीवार की सिधाई नापी जाती है। शाकून। लटकन। सनसाल। विशेष दे० 'साहुल'।

**सहासन**—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही आसन पर बैठना (को०)।

**सहासिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] साथ साथ बैठना। सहगोष्ठी (को०)।

**सहिंजन**—संज्ञा पुं० [सं० शोभाञ्जन] दे० 'सहिजन'।

**सहिजन**—संज्ञा पुं० [सं० शोभाञ्जन] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जो भारत के प्रायः सभी प्रांतों में उत्पन्न होता है, पर अवध में अधिक देखा जाता है। शोभांजन। मुनगा।

**विशेष**—इसकी छाल मोटी होती है पर लकड़ी अधिक कड़ी नहीं होती। पत्ते गुलतुरी के पत्ते की तरह होते हैं। फागुन मास से वसंत ऋतु के आरंभ तक इसमें फूल रहते हैं। इसके फूल एक इंच के घेरे में गोलाकार सफेद रंग के होते हैं और बहुत से एक साथ गुच्छे में लगते हैं। इसके फल हाथ डेढ़ हाथ से बीस हाथ तक की फलियों के आकार के होते हैं जिनकी मोटाई एक अंगुल से अधिक नहीं होती। ये फल तरकारी के काम में आते हैं। इसके बीज सफेद रंग के और तिकोने होते हैं। बीजों से उत्पन्न होने के अतिरिक्त यह डाल लगा देने से भी लग जाता है और शीघ्र फलने लगता है। यह औषधि के काम में भी लाया जाता है। कहीं कहीं नीले रंग के फूलोंवाला सहिजन भी पाया जाता है।

**सहिजानी**Ⓤ†—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्ञान] निशानी। चिह्न। पहचान।

**सहित**[1]—अव्य० [सं०] १ साथ। समेत। संग। युक्त। जैसे,—सीता और लक्ष्मण सहित रामजी वन गए थे।

**सहित**[1]—वि० १ युक्त। साथ। २ बर्दाश्त या सहन किया हुआ। झेला या भोगा हुआ। ३ (ज्योतिष) किसी के साथ लगा हुआ या संयुक्त (को०)।

**सहित**[1]—संज्ञा पुं० वह धनुष जो ३०० पल का वजन संभाल सकता हो (को०)।

**सहितत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] सहित का भाव या धर्म।

**सहितव्य**—वि० [सं०] सहन करने के योग्य। जो सहा जा सके।

**सहिता**—वि० [सं० सहितृ] सहनेवाला। सहनशील (को०)।

**सहित्व**—संज्ञा पुं० [सं०] सहन करने की क्षमता। धीरता। धैर्य (को०)।

**सहिया**Ⓤ—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति, हिं० सैंया, सेंहथा] बरछी। साँग।

**सहिदान**Ⓤ†—संज्ञा पुं० [सं० सज्ञान] चिह्न। पहचान। निशान।

**सहिदानी**Ⓤ†—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्ञान] चिह्न। पहचान। निशान। उ०—(क) सुनो अनुज इह बन इतनान मिलो जानकि प्रिया हरी। कुछ इक अगनि की सहिदानी मेरा दृष्टि परी। कटि

केहरि कोकिल वाणी अरु शशि मुख प्रभा खरी। मृग मूमी नैनन की शोभा जाहि न गुप्त करी।—सूर (शब्द०)। (ग) जारि वारि कै विधूम वारिधि बुताई लूम नाइ माथो पगनि मो ठाढो कर जोरि कै। 'मातु कृपा कीजै महिदानी दीजै' सुनि सिय दीन्ही है असीम चारु चूडामनि छोरि कै।—तुलसी (शब्द०)।

सहिवाला†—संज्ञा पु० [फा० शहबाला] दे० 'शहबाला'।

सहिम—वि० [सं०] बर्फ युक्त। बर्फ के समान ठंडा [को०]।

सहिर—संज्ञा पु० [सं०] पर्वत। पहाड [को०]।

सहिरिया†—संज्ञा स्त्री० [देश०] बसत की वह फसल जो बिना सींचे होती है, सींची नहीं जाती।

सहिष्ठ—वि० [सं०] बलवान्। ताकतवर।

सहिष्णु'—वि० [सं०] जो कष्ट या पीडा आदि सहन कर सके। सहनशील। बरदाश्त करनेवाला।

सहिष्णु'—संज्ञा पु० १ विष्णु। उपेंद्र। २ हरिवंश में उल्लिखित एक ऋषि। ३ पुलह के एक पुत्र का नाम। ४ छठे मन्वंतर के सप्तर्षियों में एक का नाम [को०]।

सहिष्णुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहिष्णु होने का भाव। सहनशीलता। २ क्षमा।

सहिष्णुत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सहिष्णुता'।

सही(५)'—संज्ञा स्त्री० [सं० सखी, प्रा० सही] सखी। सहेली।

सही'—वि० [फा०] सीधा। ऋजु। सरल। जैसे,—सहीकद = सीधा। सीधे आकार का [को०]।

सही'—वि० [फा० सहीह] १ सत्य। सच। २ प्रामाणिक। ठीक। यथार्थ। ३ जो गलत न हो। शुद्ध। ठीक।

४ स्वस्थ। तंदुरस्त। चंगा (को०)। ५ पूर्ण। पूरा। समूचा। साबित (को०)।

मुहा०—सही पढना = ठीक उतरना। सच होना। प्रमाणित होना। सही भरना = तसलीम करना। मान लेना। उ०—बानी विधि गौरि हर सेमहूँ गनेस कही सही भरी लोमस भुसुंडिहु बारिपो।—तुलसी (शब्द०)।

सही'—संज्ञा स्त्री० [सं० साक्ष्य या साक्षी, प्रा० सक्खी ?] (स्वीकृति-सूचक) हस्ताक्षर। दस्तखत। उ०—मुदित माथ नावत बनी तुलसी अनाथ की, परी रघुनाथ सही है।—तुलसी ग्र०, पृ० ५९५।

क्रि० प्र०—करना।—लेना।

सहीसबूत—संज्ञा पु० [फा० सहीसाबित] साक्षी। प्रमाण। सबूत।

सहीसलामत—वि० [फा०] १ स्वस्थ। आरोग्य। भला चंगा। तंदुरस्त। २ जिसमें कोई दोष या न्यूनता न आई हो।

सहीह—वि० [फा०] दे० 'सही' [को०]।

सहीसालिम—वि० [फा०] १ दे० 'सहीसलामत'। २ जैसे का तैसा। ज्यों का त्यों। जैसा था वैसा ही। उ०—बर्छी टूटी हुई थी लेकिन राइफल सहीसालिम थी।—रंगिया०, पृ० ३७८।

सहुँ—अव्य० [सं० सम्मुख] १ समुख। सामने। २ ओर। तरफ। उ०—जा सहुँ हेर जाइ सो मारा। गिरिवर ठरहि जोंह जो टारा।—जायसी (शब्द०)।

सहुरि'—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सहुरि'—संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। धरित्री।

सहूर†—संज्ञा पुं० [अ० शुऊर, शऊर] दे० 'शऊर'।

सहूलत—संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'सहूलियत'।

सहूलियत—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ आसानी। सुगमता। जैसे,—अगर आप आ जायँगे, तो मुझे अपने काम में और सहूलियत हो जायगी। २ अदब। कायदा। शऊर। जैसे,—अब तुम बड़े हुए कुछ सहूलियत सीखो।

सहृदय'—वि० [सं०] १ जो दूसरे के दुःख सुख आदि समझने की योग्यता रखता हो। समवेदनायुक्त पुरुष। २ दयालु। दयावान्। ३ रसिक। ४ सज्जन। भला आदमी। ५ सुंदर भाव। अच्छे मिजाजवाला। ६ प्रसन्नचित्त। खुशदिल।

सहृदय'—संज्ञा पुं० १ विद्वान् व्यक्ति। २ गुणों की समझ रखने और सराहना करनेवाला व्यक्ति [को०]।

सहृदयता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहृदय होने का भाव। २ सौजन्य। ३ रसिकता। ४ दयालुता।

सहृल्लेख'—वि० [सं०] संदेहास्पद। आपत्तिजनक। संदिग्ध [को०]।

सहृल्लेख'—संज्ञा पुं० संदिग्ध खाद्य [को०]।

सहेज†—संज्ञा पु० [देश०] वह दही जो दूध को जमाने के लिये उसमें छोडा जाता है। जामन।

सहेजना—क्रि० स० [अ० सही ?] १ भली भाँति जाँचना। अच्छी तरह से देखना कि ठीक या पूरा है या नहीं। सँभालना। जैसे,—रुपए सहेजना। कपडे सहेजना।

संयो० क्रि०—देना।—लेना।

२ अच्छी तरह कह सुनकर सिपुर्द करना।

क्रि० प्र०—देना।

सहेजवाना†—क्रि० स० [हिं० सहेजना का प्रेर० रूप] सहेजने का काम दूसरे से करवाना।

सहेट(५)—संज्ञा पुं० [हिं० सहेत, सहेट] मिलने की जगह। दे० 'सहेत'। उ०—भौन ते निकसि वृषभानु की कुमारी देखी ता समै सहेट को निकुंज गिरवो तीर को।—मतिराम (शब्द०)।

सहेटी(५)—वि० स्त्री० [हिं० सहेट] १ संकेत स्थल की ओर जानी रहनेवाली। घुमक्कड। घूमनेवाली। उ०—आठ न मानति चाट भरी उघरी ही रहै अति लाज लपेटी। डीठि गई मिलि ईठि सुजान न देहि क्यौं पीठि जु दीठि सहेटी।—घनानंद, पृ० १३। २ संकेतस्थल पर जानेवाली। अभिसार करनेवाली।

सहेत(५)†—संज्ञा पु० [सं० संकेत] वह निर्दिष्ट स्थान जहाँ प्रेमी प्रेमिका मिलते हैं। अभिसार का पूर्वनिर्दिष्ट या निश्चित स्थान। मिलने की जगह।

**सहेतु**—वि० [स०] हेतु युक्त। सहेतुक। कारणयुक्त। हेतु सहित। सकारण [को०]।

**सहेतुक**—वि० [स०] जिसका कोई हेतु हो। जिसका कुछ उद्देश्य या मतलब हो। जैसे,—यहाँ यह पद सहेतुक आया है, निरर्थक नहीं है।

**सहेरवा**‡—संज्ञा पु० [देश०] हरसिंगार या पारिजात का वृक्ष।

**सहेल**†—संज्ञा पु० [देश०] वह सहायता जो असामी या काश्तकार अपने जमींदार को उसके खुदकाश्त खेत को काश्त करने के बदले में देता है। यह सहायता प्रायः बेगारी और बीज आदि के रूप में होती है।

**सहेल**[२]—वि० [स०] क्रीडायुक्त। हेलायुक्त। चिंतारहित। लापरवाह [को०]।

**सहेलरी**Ⓟ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सहेली] दे० 'सहेली'।

**सहेलवाल**—संज्ञा पु० [देश०] वैश्यों की एक जाति।

**सहेली**—संज्ञा स्त्री० [सं० सह+हिं० एली (प्रत्य०)] साथ में रहनेवाली स्त्री। संगिनी। सखी। २ अनुचरी। परिचारिका। दासी।

**सहैया**Ⓟ†—संज्ञा पुं० [हिं० सहाय] सहायता करनेवाला। सहायक।

**सहैया**[२]—वि० [स० सहन] सहनेवाला। सहन करनेवाला।

**सहोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें 'सह', 'संग', 'साथ' आदि शब्दों का व्यवहार होता है और अनेक कार्य साथ ही होते हुए दिखाए जाते हैं। प्रायः इन अलंकारों में क्रिया एक ही होती है। जैसे,—बल प्रताप वीरता बड़ाई। नाक, पिनाकहिं संग सिधाई।—तुलसी (शब्द०)।

**सहोजा**—संज्ञा पु० [स०] १ अग्नि। २ इंद्र।

**सहोटज**—संज्ञा पु० [स०] पर्णकुटी। ऋषियों आदि के रहने की पर्णकुटी।

**सहोढ**—संज्ञा पु० [स० सहोढ] १ बारह प्रकार के पुत्रों में से एक प्रकार का पुत्र। गर्भ की अवस्था में ब्याही हुई कन्या का पुत्र। वह पुत्र जिसकी माता विवाह से पूर्व ही गर्भवती रही हो। २ वह चोर जो चोरी के माल के साथ पकड़ा गया हो (को०)।

**सहोढज**—संज्ञा पु० [सं० सहोढज] दे० 'सहोढ'—१।

**सहोणी**Ⓟ†—संज्ञा स्त्री० [स०] सखी। सहेली।

**सहोत्थ**—वि० [स०] जो सहज या स्वाभाविक हो [को०]।

**सहोत्थायी**—वि० [स० सहोत्थायिन्] साथ साथ उठने या उन्नति करनेवाला [को०]।

**सहोदक**—वि० [स०] साथ साथ तर्पण करनेवाला। दे० 'समानोदक' [को०]।

**सहोदर**[१]—संज्ञा पु० [स०] [स्त्री० सहोदरा] एक ही उदर से उत्पन्न संतान। एक माता के पुत्र।

**सहोदर**[२]—वि० १ सगा। अपना। खास (क्व०)। २ जो एक माता उदर से पैदा हो।

**सहोपमा**—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का अलंकार। उपमा। अलंकार काव्य भेद।

**सहोवन**—संज्ञा पुं० [सं०] भयंकर क्रूरता या बर्बरता [को०]।

**सहोर**[१]—संज्ञा पु० [सं० शाखोट] एक प्रकार का वृक्ष। सिहोर। शाखोट।

**विशेष**—इसका वृक्ष प्रायः जंगली प्रदेशों में होता है और विशेषतः शुष्क भूमि में अधिक उत्पन्न होता है। यह अत्यंत गठीला और झाड़दार होता है। प्रायः यह सदा हरा भरा रहता है पतझड़ में भी इसके पत्ते नहीं गिरते। इसकी छाल मोटी होती है और रंग भूरा खाकी होता है। इसकी लकड़ी सफेद और साधारणतः मजबूत होती है। इसके पत्ते हरे छोटे और खुरदुरे होते हैं। फाल्गुन मास तक इसका वृक्ष फूलता फलता है और वैशाख में आषाढ़ तक फल पकते हैं। फूल आध इंच लंबे, गोल और सफेद या पीलापन लिए होते हैं। इसके गोल फल गूदेदार होते हैं और बीज गोलाकार होते हैं। इसकी टहनियों को काटकर लोग दातून बनाते हैं। चिकित्साशास्त्र के अनुसार यह रक्तपित्त, बवासीर, वात, कफ और अतिसार का नाशक है।

**पर्या०**—शाखोट। भूतावास। पीतफलक। पिशाचद।

**सहोर**[१]—वि० [सं०] अच्छा। उत्कृष्ट। उत्तम [को०]।

**सहोर**[२]—संज्ञा पुं० महात्मा। साधु। संत [को०]।

**सहोवर**‡—संज्ञा पुं० [सं० सहोदर] सगा भाई। एक माता के पुत्र।

**सहोवल**—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'महोवल'।

**सह्य**[१]—संज्ञा पुं० [स०] १ दक्षिण देश में स्थित एक पर्वत। विशेष दे० 'सह्याद्रि'। २ स्वास्थ्य। आरोग्यलाभ (को०)। २ मदद। सहायता (को०)। ३ युक्तता। पर्याप्ति (को०)।

**सह्य**[२]—वि० १ सहने योग्य। सहने लायक। बर्दाश्त करने लायक। जो सहन करने में समर्थ हो। २ आरोग्य। ३ प्रिय। प्यारा। ४ झेलने, भोगने या वहन करने योग्य (को०)। ५. समर्थ। शक्तिशाली (को०)।

**सह्य**[१]—संज्ञा पुं० साम्य। समानता। बराबरी।

**सह्यकर्म**—संज्ञा पुं० [स० सह्यकर्मन्] मदद। सहायता। सहारा।

**सह्यवासिनी**—संज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा की एक मूर्ति।

**सह्यात्मजा**—संज्ञा स्त्री० [स०] सह्य नामक पर्वत से निकलनेवाली नदी। कावेरी [को०]।

**सह्याद्रि**—संज्ञा पुं० [स०] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध पर्वत। जो बंबई (महाराष्ट्र) प्रांत में है।

**विशेष**—पश्चिमीय घाट का वह भाग जो मलयाचल पर्वत के उत्तर नीलगिरी तक है, सह्याद्रि कहलाता है। पूना से बंबई जानेवाली रेल इसी को पार करती हुई गई है। शिवाजी प्रायः अपने शत्रुओं से बचने के लिये इसी पर्वतमाला में रहा करते थे।

**सह्य**—संज्ञा पुं० [सं०] पहाड़। पर्वत [को०]।

सह्व--सज्ञा पु० [अ०] अनवधानता। प्रमाद।

सह्वम्—अव्य० [अ०] प्रमाद के कारण। गलती मे।

साकथिक—वि० [स० साङ्कथिक] वार्तापटु। वार्तालाप करने मे कुशल [को०]।

साकथ्य--सज्ञा पु० [स० साङ्कथ्य] बातचीत। वार्तालाप [को०]।

साकरिक—वि० [स० साङ्करिक] वर्णसकर [को०]।

साकर्य--सज्ञा पु० [स० साङ्कर्य] घालमेल। मिश्रण। घपला। मिलावट।

साकल—वि० [स० साङ्कल] [वि० स्त्री० साङ्कली] योग या मिश्रण द्वारा उत्पन्न या निष्पादित किया हुआ [को०]।

साकल्पिक--वि० [स० साङ्कल्पिक] १ सकल्पजन्य। सकल्प द्वारा कृत। २ कल्पनाजन्य। कल्पना से उत्पन्न [को०]।

साकाश्य—सज्ञा पु० [स० साङ्काश्य] जनक के भाई कुशध्वज की राजधानी का नाम [को०]।

साकाश्या—सज्ञा स्त्री० [स० साङ्काश्या] द० 'साकाश्य'।

साकूजित—सज्ञा पु० [स० साङ्कूजित] पक्षियो का जोर से चहचहाना।

साकेतिक--वि० [स० साङ्केतिक] १ सकेत सबधी। प्रतीकात्मक। उ०—रहस्यवादियो की सार्वभौम प्रवृत्ति के अनुसार ये सिद्ध लोग अपनी बानियो के साकेतिकता दूसरे अर्थ भी करते थे। —इतिहास, पृ० १२। २ परपरित। परपराप्राप्त। प्रचलित।

यौ०—साकेतिक हडताल = अपनी माँग के समर्थन मे आगे की जानेवाली काररवाई की अग्रिम सूचना के प्रतीक या सकेत मे की जानेवाली हडताल। (अ० टोकेन स्ट्राइक)।

साकेतिकता—सज्ञा स्त्री० [स० साङ्केतिक + ता (प्रत्य०)] सूक्ष्मता। सकेत या प्रतीक रूप मे होने का भाव। उ०—यहाँ एकदम विक्षिप्तता और अत्यत साकेतिकता नही है।—इति०, पृ० ८६।

साकेत्य—सज्ञा पु० [स० साङ्केत्य] १ सहमति। राजीनामा। समझौता। २ प्रिय अथवा प्रिया के साथ मिलन के समय का निश्चय किया जाना [को०]।

साक्रमिक--वि० [सं० साङ्क्रमिक] सक्रमणशील। सक्रामक [को०]।

साक्षेपिक—वि० [स० साङ्क्षेपिक] सक्षिप्त। सक्षेप या कम किया हुआ [को०]।

साख्य'—सज्ञा पुं० [स० साङ्ख्य] १ हिंदुओ के छह् दर्शनो मे से एक दर्शन जिसके कर्ता महर्षि कपिल है।

विशेष—इस दर्शन मे सृष्टि की उत्पत्ति का क्रम दिया गया है। इसमे प्रकृति को ही जगत् का मूल माना है और कहा गया है कि सत्व, रज और तम इन तीनो के योग से सृष्टि का और उसके सब पदार्थों आदि का विकास हुआ है। इसमे ईश्वर की सत्ता नही मानी गई है, और आत्मा को ही पुरुष कहा गया है। इसके अनुसार आत्मा अकर्ता, साक्षी और प्रकृति से भिन्न है। आत्मा या पुरुष अनुभवात्मक कहा गया है, क्योकि इसमे प्रकृति भी नही है और विकृति भी नही है। इसमे सृष्टि के चार मुख्य विधान माने गए हैं--प्रकृति, विकृति, विकृति-प्रकृति और अनुभव। इसमे आकाश आदि पाँचो भूत और ग्यारह इद्रियाँ प्रकृति है। विकृति या विकार सोलह प्रकार के माने गए है। इसमे सृष्टि को प्रकृति का परिणाम कहा गया है, इसलिये इसका मत परिणामवाद भी कहलाता है। विशेष दे० 'दर्शन'। २ शिव। ३ वह जो साख्यमत का अनुयायी हो (को०)।

साख्य'—वि० सख्या सबधी। २ आकलनकर्ता। गणक। ३ विवेचक। ४ विचारक। तार्किक।

साख्यकारिका—सज्ञा स्त्री० [स० साङ्ख्यकारिका] साख्यदर्शन की पद्यबद्ध टीका जिसकी रचना ईश्वरकृष्ण ने ईसा की तीसरी सदी मे की थी। उ०—साख्यदर्शन के प्रवर्तक कपिल ई० पू० ७-६वी सदी मे हुए होगे पर इसका पहला ग्रथ ईश्वरकृष्णकृत साख्यकारिका तीसरी ईस्वी सदी की रचना है।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १६४।

साख्यजोग—सज्ञा पु० [स० साख्य + योग, हिं० जोग] दे० 'साख्य'। उ०—साख्य जोग यह धर्म है, कर्म बीज को जार।—केशव० अमी०, पृ० १।

साख्यप्रसाद—सज्ञा पु० [स० साङ्ख्यप्रसाद] शिव [को०]।

साख्यमुख्य—सज्ञा पु० [स० सङ्ख्यमुख्य] शिव [को०]।

साख्यवादी—सज्ञा पु० [स० साङ्ख्यवादिन्] साख्यदर्शन का अनुयायी। उ०—साख्यवादियो ने जिसको प्रकृति कहा है करीब करीब उसको वेदातियो ने माया कहा है।—हिंदी काव्य०, पृ० ८।

साख्यायन—सज्ञा पु० [स० साङ्ख्यायन] एक प्राचीन आचार्य।

विशेष—इन्होने ऋग्वेद के साख्यायन ब्राह्मण की रचना की थी। इनके कुछ श्रौत सूत्र भी है। साख्यायन कामसूत्र भी इन्ही का बनाया हुआ है।

साग'—वि० [स० साङ्ग] १ सब अगो सहित। सपूर्ण। २ अवयव या अगवाला। अगयुक्त (को०)। ३ छह् अगो या उपागो से युक्त (को०)।

यौ०—सागोपाग।

साग—सज्ञा पु० [हिं० स्वाँग] द० 'स्वाँग'। उ०—खिलवत हास खुसामदी, सुरका दुरका साग।—बाँकी ग्र०, भा० २, पृ० ७७।

सागग्लानि—वि० [स० साङ्गग्लानि] थकित। क्लात [को०]।

सागज—वि० [स० साङ्गज] रोमराजियुक्त। केशयुक्त। बालो से ढका हुआ [को०]।

सागतिक'—वि० [स०] सगति, समाज या सघ मे सबद्ध [को०]।

सागतिक'—सज्ञा पु० [स०] १ अतिथि। अभ्यागत। नवागतुक। २ वह व्यक्ति जो व्यापार, (आदान प्रदान, भुगतान आदि) के सिलसिले मे आया हो [को०]।

सागत्य—सज्ञा पु० [स० साङ्गत्य] सगति। समागम। सगम [को०]।

सागम--सज्ञा पु० [स० साङ्गम] सगम। मिलन। सपर्क [को०]।

सा'गि(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कु, हिं० सांगी] दे० 'साँगी'। उ०—शब्द की सागि समसेर तुम पकरि ले, सुरति नेजा निर्वान कीना।—सत० दरिया पृ० ७०।

सागीत(पु)—सज्ञा पु० [स० साङ्गीत] दे० 'सगीत'। उ० जोतिक आगम जानि, सामुद्रिक सागीत सब।—हिं० क० का०, पृ० १८८।

सागु'ठा—सज्ञा स्त्री० [स० साङ्गुष्ठा] १ गुजा। २ करजनी।

सागोपाग—अव्य० [स० साङ्गोपाङ्ग] अगो और उपागो सहित। सपूर्ण। समस्त। पूर्ण। जैसे—(क) विवाह के कृत्य सागोपाग होने चाहिए। (ख) यज्ञ सागोपाग पूरा हो गया।

सागोपागता—सज्ञा स्त्री० [स० साङ्गोपाङ्ग + ता (प्रत्य०)] सब अगो से युक्त होने का भाव। उ०—समस्या सबधी विवेचना की पूर्णता व्यवस्था अथवा सागोपागता मे नही है।—इति०, पृ० १२७।

साग्रहिक—वि० [स० साङ्ग्रहिक] सग्रहकर्ता। जो सग्रह करने मे कुशल हो [को०]।

साग्राम—सज्ञा पु० [स० साङ्ग्राम] दे० 'सग्राम'।

साग्रामिक'—वि० [स० साङ्ग्रामिक] जो सग्राम से सबधित हो। युद्धविषयक [को०]।

साग्रामिक'—सज्ञा पु० १ यौद्धिक उपकरण। युद्ध की सामग्री। २. सेनानायक। सेनापति [को०]।

साग्रामिक गुण—सज्ञा पु० [स० साङ्ग्रामिक गुण] राजा के युद्ध सबधी (शक्ति, षड्गुण और अस्त्रादि अभ्यास आदि) गुण।

साग्रामिक परिच्छद—सज्ञा पु० [स० साङ्ग्रमिक परिच्छद] युद्धोपकरण। लडाई के औजार [को०]।

साग्राहिक—वि० [स० साङ्ग्राहिक] मलावरोधक। कोष्ठबद्धकारक। (चरक)।

साघा'टिका—सज्ञा स्त्री० [स० साङ्घाटिका] १ वह स्त्री जो प्रेमी और प्रेमिका का सयोग कराती हो। कुटनी। दूती। २ स्त्री प्रसग। मैथुन। ३ एक प्रकार का वृक्ष।

साघात—सज्ञा पु० [स० साङ्घात] समूह। दल।

साघातिक'—वि० [स० साङ्घातिक] [वि० स्त्री० साघातिकी] १ अत्यत विनाशात्मक। मारक। २ दल या समूह से सबधित [को०]।

साघातिक'—सज्ञा पु० ज्यौतिष मे जन्मनक्षत्र से सोलहवाँ नक्षत्र जो साघातिक कहा गया है।

साघिक—वि० [स० साङ्घिक] सघ से सबद्ध। भिक्षुओ के सघ से सबधित [को०]।

यौ०—साघिक सपत्ति = भिक्षुसघ की सपत्ति।

साचारिक—वि० [स० साञ्चारिक] [वि० स्त्री० साचारिकी] सचरणशील। गमनशील। जगम [को०]।

साजन'—सज्ञा पुं० [स० साञ्जन] गिरगिट। छिपकली [को०]।

साजन'—वि० अशुद्ध। कलुषित। पवित्रतारहित [को०]।

साड—वि० [स० साण्ड] जो बधिया न किया गया हो। जो अड सहित हो [को०]।

सात'—वि० [स० शान्त, प्रा० सान्त] दे० 'शात'।

सात'—वि० [स० सान्त] १ जिसका अत हो। अतयुक्त। जैसे—ससार का प्रत्येक पदार्थ सात है। २ खुश। प्रसन्न।

सातति क—वि० [स० सान्ततिक] सतान देनेवाला। सततिदायक [को०]।

सातपन—सज्ञा पु० [स० सान्तपन] एक प्रकार का तप। सातपन कृच्छ्र।

सातपनकृच्छ्र—सज्ञा पु० [स० सान्तपनकृच्छ्र] एक प्रकार का व्रत जिसमे व्रत करनेवाला प्रथम दिवस भोजन त्यागकर गोमूत्र, गोमय, दूध, दही और घी को कुश के जल मे मिलाकर पीता है और दूसरे दिन उपवास करता है।

सातर—वि० [स० सान्तर] १ अतराल या अवकाशयुक्त। २ जो दृढ न हो। ३ झीना [को०]।

सातानिक'—वि० [स० सान्तानिक] सतान सबधी। सतान का। औलाद का। २ पैदा करनेवाला। बढनेवाला। जैसे, वृक्ष (को०)। ३ सतान नामक वृक्ष सबधी (को०)। ४ प्रजाकाम। पुत्रकाम। सतान का अभिलाषी (को०)। ५ विवाह का उच्छुक (को०)।

सातानिक'—सज्ञा पुं० सतान की कामना से विवाह करनेवाला ब्राह्मण [को०]।

सातापिक—वि० [स० सान्तापिक] सताप देनेवाला। कष्ट देनेवाला।

साति(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० शान्ति, प्रा० सान्ति] दे० 'शाति'। उ०—कस के साति होइ जो अवै। देव काज तौ बिगरचौ सबै।—नद० ग्र०, पृ० २२२।

सात्व—सज्ञा पु० [स० सान्त्व] दे० 'सात्वन'।

सात्वन—सज्ञा पु० [स० सान्त्वन] १ किसी दुखी को सहानुभूतिपूर्वक शाति देने की क्रिया। आश्वासन। ढारस। सात्वना। २ स्नेहपूर्वक कुशल मगल पूछना और बातचीत करना। ३ प्रणय। प्रेम। ४ सधि। मिलन। दे० 'सात्वना'।

सात्वना—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दुखी व्यक्ति को उसका हृदय हलका करने के लिये समझाने बुझाने और शाति देने की क्रिया। शाति देने का काम। ढारस। आश्वासन। २ चित्त की शाति। सुख। ३ प्रणय। प्रेम। ४ दे० 'सात्वन'—४। ५ मृदुता (को०)। ६ अभिवादन या कुशलक्षेम (को०)।

सात्ववाद—सज्ञा पुं० [स० सान्त्ववाद] वह वचन जो किसी को सात्वना देने के लिये कहा जाय। सात्वना का वचन।

सात्वित—वि० [स० सान्त्वित] जिसे सात्वना दी गई हो। जिसे ढाढस बँधाया गया हो। आश्वस्त किया हुआ [को०]।

सादीपनि—सज्ञा पु० [स० सान्दीपनि] सादीपन के गोत्र के एक प्रसिद्ध मुनि जो बहुत बडे धनुर्धर थे और जिन्होने श्रीकृष्ण और बलराम को धनुर्वेद की शिक्षा दी थी। विष्णुपुराण, हरिवश, भागवत आदि मे इनके सबध मे कई कथाएँ मिलती है।

सादृष्टिक—वि० [स० सान्दृष्टिक] [वि० स्त्री० सान्दृष्टिकी] १ एक ही दृष्टि मे होनेवाला। देखते ही होनेवाला। तात्कालिक। २ स्पष्ट। प्रकट। प्रत्यक्ष।

**सादृष्टिक न्याय**—संज्ञा पु० [सं० सान्दृष्टिक न्याय] एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग उस समय किया जाता है, जब कोई चीज देखकर उसी तरह की पहले देखी हुई कोई चीज याद आ जाती है।

**साद्र**[1]—संज्ञा पु० [सं० सान्द्र] १ वन। जंगल। २. ढेर। राशि (को०)।

**साद्र**[2]—वि० १ घना। गहरा। घोर। २ मृदु। कोमल। ३ स्निग्ध। चिकना। ४. सुंदर। खूबसूरत। ५ मोटा। कसा हुआ। गफ (को०)। ६ बलवान्। बलिष्ट। शक्तिमान्। प्रचंड (को०)। ७ पर्याप्त। अतिशय। अधिक (को०)। ८ माफिक। रुचिकर। अनुकूल (को०)।

**साद्रकुतूहल**—वि० [सं० सान्द्रकुतूहल] अत्यंत कौतूहल से युक्त। जो अत्यंत उत्सुक हो [को०]।

**साद्रता**—संज्ञा स्त्री० [सं० सान्द्रता] साद्र होने का भाव।

**साद्रत्वक्क**—वि० [सं० सान्द्रत्वक्क] घनी या मोटी छालवाला [को०]।

**साद्रपुष्प**—संज्ञा पु० [सं० सान्द्रपुष्प] विभीतक। बहेड़ा।

**साद्रप्रमेह**—संज्ञा पु० [सं० सान्द्रप्रमेह] दे० 'साद्रप्रसाद।' उ०—साद्रप्रमेह से रात्रि में पात्र में धरने से जैसा होवे ऐसा मूत्र होय।—माधव०, पृ० १८३।

**साद्रप्रसाद**—संज्ञा पु० [सं० सान्द्रप्रसाद] एक प्रकार का कफज प्रमेह।

विशेष—इस प्रमेहरोग में कुछ मूत्र तो गाढा और कुछ पतला निकलता है। यदि ऐसे रोगी का मूत्र किसी बरतन में रख दिया जाय, तो उसका गाढा अंश नीचे बैठ जाता है और पतला अंश ऊपर रह जाता है।

**साद्रमणि**—संज्ञा पु० [सं० सान्द्रमणि] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

**साद्रमूत्र**—वि० [सं० सान्द्रमूत्र] जिसका मूत्र साद्रप्रसाद के रोगी की तरह गाढा या लसदार हो [को०]।

**साद्रमेह**—संज्ञा पु० [सं० सान्द्रमेह] दे० 'साद्रप्रसाद'।

**साद्रस्निग्ध**—वि० [सं० सान्द्रस्निग्ध] गाढा और चिपचिपा या लसदार [को०]।

**साद्रस्पर्श**—वि० [सं० सान्द्रस्पर्श] जो छूने में चिकना या कोमल हो [को०]।

**साद्रोह**Ⓤ—वि० [सं० स्वामिद्रोह] स्वामिद्रोही। स्वामी से शत्रुता करनेवाला। उ०—भग्यौ वै बगाली करनाटवाली। भग्यौ भागि साद्रोह कूरमवाली।—पृ० रा०, २४।२६०।

**साध्य**[1]—वि० [सं० सान्ध्य] १ संधि संबंधी। संधि का। २ जो जोड या संधि पर स्थित हो।

**साध्य**[2]—संज्ञा पुं० एक प्राचीन ऋषि का नाम।

**साधिक**—संज्ञा पु० [सं० सान्धिक] १ वह जो मद्य बनाता या बेचता हो। कलाल। शौंडिक। २ वह जो संधि करता हो। संधि करनेवाला।

**साधिविग्रहिक**—संज्ञा पु० [सं० सान्धिविग्रहिक] प्राचीन काल का राज्यों का वह अधिकारी जिसे संधि और विग्रह करने का अधिकार हुआ करता था।

**साध्य**—वि० [सं० सान्ध्य] १ संध्या संबंधी। सायंकालीन। संध्या का। उ०—साध्य मेघ की अमल अंगना सी भली। फैल रही थी जहाँ कनक रेखावली।—शकु०, पृ० ८५। २ प्रातःकाल से संबंधित। प्रभात का। प्रातःकालिक (को०)।

**साध्यकुसुमा**—संज्ञा स्त्री० [सं० सान्ध्यकुसुमा] वे वृक्ष, पौधे और बेलें आदि जो संध्या के समय फूलती हों।

**साध्यभोजन**—संज्ञा पु० [सं० सान्ध्यभोजन] सायंकालीन भोजन। बियारी। ब्यालू [को०]।

**सापत्तिक**—वि० [सं० साम्पत्तिक] संपत्ति से संबंध रखनेवाला। आर्थिक। मालो।

**सापद**—वि० [सं० साम्पद] संपत्ति संबंधी। संपत्ति का। आर्थिक। मालो।

**सापन्निक**—वि० [सं० साम्पन्निक] संपन्नतापूर्वक रहनेवाला। विलासपूर्वक रहनेवाला [को०]।

**सापरत**Ⓤ—अव्य० [सं० साम्प्रत] दे० 'साप्रत'। उ०—माजी माँनै वेदमत सुणैं सदा सुरगाह। सती गाठमी सापरत दसमी श्री दुरगाह।—बाँकी० ग्र०, भा०, २, पृ० २५।

**सापराय**[1]—वि० [सं० साम्पराय] १ आवश्यकता या आपत्ति के कारण जिसकी अपेक्षा हुई हो। २ युद्ध से संबद्ध। सामरिक। ३ परलोक या भविष्य से संबंधित [को०]।

**सापराय**[2]—संज्ञा पु० १ इहलोक से परलोक में जाने का मार्ग। २ विपत्ति। आपत्ति। ३ जरूरत के समय काम आनेवाला सहायक या मित्र। ४ झगडा। संघर्ष। ५ भविष्य। भविष्य का जीवन। ६ अनिश्चय। ७ भविष्य की जिज्ञासा। ८ अन्वेषण। गवेषणा। जिज्ञासा [को०]।

**सापरायण**—संज्ञा पु० [सं० साम्परायण] मृत्यु जो इस लोक से दूसरे लोक में ले जाती है [को०]।

**सापरायिक**[1]—वि० [सं० साम्परायिक] १ परलोक संबंधी। पारलौकिक। २ युद्ध में काम आनेवाला। ३ युद्ध संबंधी। युद्ध का। ४ जरूरत के समय काम आनेवाला। ५ व्यसनासक्त। पडा हुआ। विपत्तिग्रस्त (को०)। ६ दाहकर्म संबंधी। और्ध्वदेहिक (को०)।

**सापरायिक**[2]—संज्ञा पुं० १ युद्ध। समर। २ लडाई का रथ (को०)।

**सापरायिक कल्प**—संज्ञा पु० [सं० साम्परायिक कल्प] एक प्रकार का सैनिक व्यूह [को०]।

**सापातिक**—वि० [सं० साम्पातिक] संपात संबंधी। संपात का।

**सापादिक**—वि० [सं० साम्पादिक] गुणकारी। लाभदायक [को०]।

**साप्रत**[1]—अव्य० [सं० साम्प्रत] १ इसी समय। सद्य। अभी। तत्काल। २ अब। अधुना (को०)। ३ ठीक ढंग से। उचित रीति से (को०)।

**साप्रत**[2]—वि० १ युक्त। मिला हुआ। २ योग्य। उचित। उपयुक्त (को०)। ३ संगत। प्रासंगिक। सामयिक (को०)। ४ प्रत्यक्ष। प्रकट। व्यक्त। उ०—दाता जग माता पिता दाता साप्रत देव।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ४७।

साप्रतकाल—सज्ञा पु० [स० साम्प्रतकाल] वर्तमान समय। वर्तमान काल [को०]।

साप्रतिक—वि० [स० साम्प्रतिक] [वि० स्त्री० साप्रतिकी] १ वर्तमान काल से सबध रखनेवाला। वर्तमानकालिक। इस समय का। आधुनिक। उ०—सपादकीय प्रबध वा प्रेरित पत्र आदि साप्रतिक पत्रो मे प्रकाशित होने की चाल चल रही है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २९४। २ वर्तमानजीवी। आधुनिक काल की सीमा मे रहनेवाला (व्यक्ति)। उ०—पर जब उनके जीवनबोध ने अपनी परमिति को छू लिया तो साप्रतिको को उनका स्थान ग्रहण करते देर न लगी।—बदनवार (भू०), पृ० १७। ३ उचित। योग्य। ठीक। उपयुक्त (को०)।

साप्रदायिक—वि० [स० साम्प्रदायिक] [वि० स्त्री० साप्रदायिकी] १ किसी सप्रदाय से सबध रखनेवाला। सप्रदाय का। २ परपरित। परपरासिद्ध (को०)।

साप्रदायिकता—सज्ञा स्त्री० [स० साम्प्रदायिकता] १ किसी सप्रदाय से सबधित होने का भाव। २ सप्रदाय के प्रति कट्टरता का भाव। दूसरे सप्रदाय के अहित पर अपने सप्रदाय की हितरक्षा।

साप्रियक—वि० [स० साम्प्रियक]। जहाँ परस्पर प्रियजन अथवा परस्पर भाईचारा रखनेवाले लोग रहते हो [को०]।

साबधिक१—वि० [स० साम्बन्धिक] १ सबधजन्य। सबध का। २ विवाह सबधी।

साबधिक२—सज्ञा पु० १ स्त्री का भाई, साला। २ सबध। रिश्तेदारी (को०)।

साब—सज्ञा पु० [स० साम्ब] १ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम जो जाववती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

विशेष—बाल्यावस्था मे इन्होने बलदेव से अस्त्रविद्या सीखी थी। बहुत अधिक बलवान् होने के कारण ये दूसरे बलदेव माने जाते थे। भविष्यपुराण मे लिखा गया है कि ये बहुत सुदर थे और अपनी सुदरता के अभिमान मे किसी को कुछ न समझते थे। एक बार इन्होने दुर्वासा मुनि का कृश शरीर देखकर उनका कुछ परिहास किया, जिससे दुर्वासा ने शाप दिया था कि तुम कोढी हो जाओगे। इसके उपरात एक अवसर पर रुक्मिणी, सत्यभामा और जाववती को छोडकर श्रीकृष्ण की और सब रानियाँ इनके रूपपर इतनी मुग्ध हो गई कि उनका रेत स्खलित हो गया था। इसपर श्रीकृष्ण ने भी इन्हे शाप दिया था कि तुम कोढी हो जाओ। इसी लिये ये कोढी हो गए थे। अत मे इन्होने नारद के परामर्श से सूर्य की मित्र नामक मूर्ति की उपासना आरभ की जिससे अत मे इनका शरीर नीरोग हो गया। कहते हे कि जिस स्थान पर इन्होने 'मित्र' की उपासना की थी, उस स्थान का नाम 'मित्रवण' पडा। इन्होने अपने इस नाम से सावपुर नामक एक नगर भी, चद्रभागा के तट पर बसाया था। महाभारत के युद्ध मे ये जरासध और शाल्व आदि से बहुत वीरतापूर्वक लडे थे।

२. शिव का एक नाम, जो अबा, पार्वती के सहित है (को०)।

सावपुर—सज्ञा पु० [स० साम्बपुर] पजाब के मुलतान नगर का एक प्राचीन नाम।

विशेष—यह नगर चद्रभागा नदी के तट पर है। कहते ह कि इसे श्रीकृष्ण के पुत्र साब ने बसाया था।

सावपुराण—सज्ञा पु० [स० साम्बपुराण] एक उपपुराण का नाम।

सावपुरी—सज्ञा स्त्री० [स० साम्बपुरी] दे० 'सावपुर'।

सावर१—सज्ञा पु० [स० साम्बर] १ साँभर हरिन। विशेष दे० 'साँभर'। २ साँभर नमक।

सावर२—सज्ञा पु० [स० सम्बल] पाथेय। सबल। राहखर्च।

सावरी†१—वि० [स० साम्बर+ई] सावर मृग के चर्म या साँभर क्षेत्र का बना हुआ। उ०—पाए पाँणहीं सावरी, चउघड्या माह दीई मिलाँण।—बी० रासो, पृ० ७७।

सावरी२—सज्ञा स्त्री० [सं० साम्बरी] १ माया। जादूगरी। २ जादूगरनी।

विशेष—कहते हैं कि इस विद्या का आविष्कार श्रीकृष्ण के पुत्र सावर ने किया था, इसी से इसका यह नाम पडा।

सावाधिक—सज्ञा पु० [स० साम्बाधिक] रात्रि का द्वितीय याम या प्रहर [को०]।

साभर—सज्ञा पु० [स० साम्भर] साँभर नमक [को०]।

साभवी—सज्ञा स्त्री० [स० साम्भवी] १ लाल लोध। २ आशका। सभावना (को०)।

साभाष्य—सज्ञा स्त्री० [स० साम्भाष्य] सभाषण। बातचीत।

सामुखी—सज्ञा स्त्री० [स० साम्मुखी] वह तिथि जिसका मान सायकाल तक हो।

सामुख्य—सज्ञा पु० [स० साम्मुख्य] १ प्रत्यक्षता। समक्षता। सामने होने की स्थिति। २ अनुकूलता। कृपाभाव। तरफदारी।

सायमन—वि० [स०] सयमन सबधी। सयमन विषयक।

सायात्रिक—सज्ञा पु० [स०] १ समुद्रीय व्यापार करनेवाला व्यापारी। पोतवणिक्। २ यान। सवारी। ३ उपाकाल [को०]।

सायुग—वि० [स०] सयुग सबधी। युद्ध से सबधित [को०]।

सायुगीन१—वि० [स०] १ युद्ध से सबधित। सामरिक। २ रणकुशल। युद्धचतुर [को०]।

सायुगीन२—सज्ञा पु० १ युद्ध मे कुशल व्यक्ति। २ श्रेष्ठ योद्धा या वीर। बहादुर। लडाकू।

सारावि(ण—सज्ञा पु० [स०] कई व्यक्तियो का एक साथ चीखना-पुकारना। शोर गुल [को०]।

सावत्सर१—वि० [स०] वार्षिक। वर्ष मे होनेवाला। जो सवत्सर से सबधित हो [को०]।

सावत्सर२—सज्ञा पु० १ ज्योतिषी। ज्योतिर्विद। २ वह जो ग्रहादि की गति के अनुसार पचाग बनाता हो। ३ चाद्रमास। ३ काला चावल। ४ मृतक का एक वर्ष के उपरात होनेवाला कृत्य। बरसी [को०]।

सावत्सरक१—वि० [स०] (ऋण) जो एक वर्ष मे चुकाया जाय [को०]।

सावत्सरक२—सज्ञा पु० ज्योतिषी [को०]।

सांवत्सररथ—संज्ञा पु० [सं०] सूर्य, जिनका रथ संवत्सर है [को०]।

सांवत्सरिक[१]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सांवत्सरिक] वार्षिक। संवत्सर से संबंधित।

सांवत्सरिक[२]—संज्ञा पु० १ वार्षिक भूमि कर। सालाना मालगुजारी। २ वर्षभर में चुका दिया जानेवाला ऋण। ३ ज्यौतिर्विद। ज्यौतिषी [को०]।

सांवत्सरिक श्राद्ध—संज्ञा पु० [सं०] प्रति वर्ष किया जानेवाला श्राद्ध। वार्षिक श्राद्ध।

सांवत्सरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृतक का एक साल बाद होनेवाला श्राद्ध। बरसी [को०]।

सांवत्सरीय—वि० [सं०] वर्ष संबंधी। वार्षिक। सांवत्सर।

सांवर्तक—संज्ञा पु० [सं०] प्रलयाग्नि। प्रलय काल की अग्नि। प्रलय में संबंधित या प्रलयकाल में प्रकट होनेवाली आग [को०]।

सांवादिक[१]—वि० [सं०] १ बोलचाल में प्रयुक्त। संवाद, वार्तालाप आदि में प्रचलित। २ विवादास्पद। बहस तलब [को०]।

सांवादिक[२]—संज्ञा पु० १ विवादग्रस्त विषय। २ तार्किक। तर्कशास्त्री। नैयायिक [को०]।

सांवास्यक—संज्ञा पु० [सं०] एक साथ रहना। एक जगह रहना [को०]।

सांवित्तिक—वि० [सं०] अधिकरणनिष्ठ। विषयगत। विषयी [को०]।

सांविद्य—संज्ञा पु० [सं०] रजामंदी। सहमति [को०]।

सांवृत्तिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सांवृत्तिकी] अलीक। भ्रांतिजनक। ऐंद्रजालिक [को०]।

सांव्यावहारिक[१]—संज्ञा पु० [सं०] कंपनी के हिस्सेदार होकर काम या व्यापार करनेवाला व्यापारी।

सांव्यावहारिक[२]—वि० आमफहम। प्रचलित। व्यावहारिक [को०]।

साश—वि० [सं०] जो अंश सहित हो। अंशयुक्त। जिसमें भाग या हिस्सा हो [को०]।

साशयिक[१]—वि० [सं०] १ संदेहास्पद। संदिग्ध। २ जो निश्चित न हो अनिश्चित। ३ संदेही [को०]।

साशयिक[२]—संज्ञा पु० अनिश्चित, संदेहास्पद या खतरे से भरा हुआ काम [को०]।

साशयिकत्व—संज्ञा पुं० [सं०] संदेह। शंका। अनिश्चय [को०]।

सासर्गिक—वि० [सं०] संस्पर्श या छूत से उत्पन्न। संपर्कजन्य। संसर्गजन्य [को०]।

सासारिक—वि० [सं०] संसार संबंधी। इस संसार का। लौकिक। ऐहिक। जैसे,—अब आप सासारिक झगडो से अलग होकर भगवद्भजन में लीन रहते है।

सासिद्धिक—वि० [सं०] १ प्रकृति से संबंधित। प्राकृतिक। स्वाभाविक। २ दैव संबंधी। दैविक। दैवी। ३ यादृच्छिक। ऐच्छिक। स्वत प्रवर्तित [को०]।

यौ०—सासिद्धिक प्रवाह=जल का स्वाभाविक या स्वत प्रवर्तित प्रवाहक्रम अथवा गति।

सासिद्धय—संज्ञा पु० [सं०] जीवन के परम लक्ष्य का प्राप्त कर लेने की स्थिति। संसिद्धि। परिपूर्णता [को०]।

सासृष्टिक—वि० [सं०] सीधे संबंध रखनेवाला [को०]।

सास्कारिक—वि० [सं०] संस्कारसंबंधी। जो अंत्येष्टि अथवा अन्य संस्कारों से संबद्ध हो [को०]।

सांस्कृतिक—वि० [सं०] परंपरा, संस्कार और आचार विचारों से संबद्ध। संस्कृति संबंधी [को०]।

सांस्थानिक—वि० [सं०] समान देश या स्थान से संबंधित।

सांस्राविण—संज्ञा पु० [सं०] प्रवाह। बहाव। धारा [को०]।

साहत्य—संज्ञा पुं० [सं०] संपर्क। संबंध। साथ [को०]।

साहननिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० साहननिकी] शरीर से संबंधित। शारीरिक [को०]।

साँइयाँ—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी] दे० 'साँई, साईं'। उ०—बाँका परदा खोलि के समुख ले दीदार। बालसनेही साँइया आदि अंत का यार।—कबीर सा० सं०, पृ० १६।

साँई—संज्ञा पु० [सं० स्वामी, प्रा० सामि, सामी] १ स्वामी। मालिक। उ०—आप को साफ कर तुही साई।—केशव० ग्रंथा०, पृ० ६। २ ईश्वर। परमात्मा। परमेश्वर। उ०—गुर गौरीस साँइँ सीतापति हित हनुमानहि जाइ कै। मिलिहौं मोहि कहाँ की वे अब अभिमत अवधि अघाइ कै।—तुलसी (शब्द०)। ३ पति। शौहर। भर्ता। उ०—(क) चल्यो धाय कमठी चढाय फुरकाय आख बाई जग साई बात कछु न तनक को।—हृदयराम (शब्द०) (ख) पूस मास सुनि सखिन पै साँई चलत सवार। गहि कर बीन प्रवीन तिय राग्यौ राग मलार।—बिहारी (शब्द०)। ४ मुसलमान फकीरों की एक उपाधि।

साँकड़[१]—संज्ञा पु० [सं० शृंखल] १ शृंखला। जंजीर। सीकड। २. सिकडी जो दरवाजे में लगाई जाती है। अगला। ३ चाँदी का बना हुआ एक प्रकार का गहना जो पैर में पहना जाता है। साँकडा।

साँकडभीड़ो—वि० [हिं० सँकरा ?] संकुचित। छोटा। संकीर्ण। उ०—गुडिया ढाहै मदँधगज ताता चाल तुरग। साकडभीडो सुरग ह्वै, जिको कहीजै जग।—बाँकी ग्र०, भा० १, पृ० ६।

साँकडा[१]—संज्ञा पु० [सं० शृंखला, प्रा० संकला] एक प्रकार का आभूषण जो पैर में पहना जाता है। यह मोटी चपटी सिकडी की भाँति होता है। प्राय मारवाडी स्त्रियाँ इसे पहनती हैं।

साँकड़ा[२]—संज्ञा पुं० [संकीर्ण ?] क्षुद्र स्वभाव या वृत्ति का। संकीर्ण। उ०—सतन साँकडो दुष्ट पीडा करै, बाहरै बाहलो वेगि आवै।—दादू०, पृ० ५४६।

साँकड़ाना[१]—क्रि० स० [हिं० साँकड] बाँधना। साकल में बाँधना। उ०—दोनूं फोज घोडा की बाहे साँकडाया।—शिखर०, पृ० ७४।

साँकड़ाना[२]—क्रि० स० [हिं० संकीर्ण] संकरा कर देना। संकीर्ण कर देना। रोकना। उ०—किल्ला की सफीलां मोरिचा नैं साँकडाया।—शिखर०, पृ० ५०।

साँकडि(पु)†—वि० [स० सटकीर्ण] सँकरी। सकीर्ण। उ०—जमुन क तिरे तिरे साँकडि बारी।—विद्यापति, पृ० ३०।

साँकत(पु)—वि० [स० शटिकत] दे० 'शकित'। उ०—डावा कर ऊपर दुसट, कर जीमणो करन। सो लगाय मुख साँकतो माव-डियो कुचरत।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० १६।

साँकना(पु)—क्रि० अ० [स० शङ्कन] शका करना। शकित होना। सदेह मे पडना। उ०—साँकिया राज राँणा सकल, अकल पाँण छिलियो असुर।—रा० रू०, पृ० १६।

साँकर(पु)[१]—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खल] शृखला। जजीर। सीकड। उ०—(क) काडा आसू बूद, कसि साँकर बरुनी सजल। कीने बदन निमूद, दृग मलिग डारै रहत।—बिहारी र०, दो० २३०।

साँकर[२]—सज्ञा पु० [स० सङ्कीर्ण] कष्ट सकट। उ०—(य) साँकरे की साकरन सनमुख हो न तौर —केशव (शब्द०)। (ख) मुकती साँठि गाँठि जो करै। साँकर परे सोइ उपकरै।—जायसी (शब्द०)।

साँकर[३]—वि० १ सकीर्ण। तग। सँकरा। २ दु खमय। कष्टमय। उ०—सिहल दीप जो नाहि निबाहू। यही ठाढ साँकर सब काहू।—जायसी (शब्द०)।

साँकरा†[१]—वि० [हिं० सँकरी] दे० 'सँकरा'।

साँकरा[२]—सज्ञा पु० [हिं० साँकडा] दे० 'साँकडा'।

साँकरा(पु)[३]—वि० [हिं सँकरा (=सकट)] सकट मे पडा हुआ। सकटग्रस्त। उ —साँकरे को साँकरन सनमुख तोरै। दशमुख मुख जोवै गजमुख मुख को।—रामच०, पृ० १।

साँकरि†(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खला] दे० 'साँकल'। उ०—तब श्रीठाकुर जी भीतर की साँकरि खोलते।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १०१।

साँकरी(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्कीर्ण] सकट। उ०—उडवत धूर धरे काँकरी। सवनि के दृगनि परी साँकरी।—नद० ग्र०, पृ० २४२।

साँकल—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खला] १ जजीर। सिक्कड। दे० 'साँकर'। २ अर्गला। दरवाजे की सिकडी।

साँकाहुली—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खपुष्पी] 'शखाहुली'।

साँखा(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खा] दे० 'शका'। उ०—पखी नावँ न देखा पाँखा। राजा होइ फिरा कै साँखा।—जायसी ग्र०, पृ० १६४।

साँग—सज्ञा स्त्री० [स० शक्ति या शङ्कु] १ एक प्रकार की बरछी जो भाले के आकार की होती है, पर इसकी लबाई कम होती है और यह फेककर मारी जाती है। शक्ति। उ०—कोउ माजत बरछीन साँग उर बेधनवाली।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २४। २ एक प्रकार का औजार जो कुँआ खोदते समय पानी फोडने के काम मे आता है। ३ भारी बोझ उठाने का डडा।

साँगरी[१]—सज्ञा स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का रग जो कपडे रँगने के काम आता है। यह जगार से निकलता है। २ एक प्रकार का शाक। उ०—फोग केर कांचर फली गेघर गेघरपात। बडियाँ मेले वाणियाँ, साँगरियाँ सोगात।—बाकी० ग्र०, भा० २, पृ० ६७।

साँगामाची†—सज्ञा स्त्री० [स० साग+हिं० मचिया] एक प्रकार की छोटी माँची या खाट। उ०—तब श्रीगुसाई जी एक साँगामाँची धराइ कै बीच मे विराजे।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० ३३६।

साँगि(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० स० शटकु या शक्ति, हिं० साँग, साँगी] दे० 'साँग'। उ०—रणधीर मु कोपि कै साँगि लई।—ह० रासो०, पृ० ७६।

साँगी[१]—सज्ञा स्त्री० [स० शटकु या शक्ति] १ बरछी। साँग। उ०—चले निसाचर आयनु साँगी। गहि कर भिदिपाल बर साँगी।—मानस, ६।३६। २ बैलगाडी मे गाडीवान के बैठने का स्थान। जुआ।

साँगी[२]—सज्ञा स्त्री० [स० साङ्ग (=उपकरण युक्त), हिं० सग या सामग्री] जाली जो एक्के या गाडी के नीचे लगी रहती है और जिसमे मामूली चीजें रखी जाती है।

साँघणा(पु)†—वि० [स० सघन ?] दे० 'सघन'। उ०—माहिली माँडली छीदा होइ। बारली माँडली साँघणा।—बी० रासो, पृ० ५।

साँच(पु)[१]—सज्ञा पु० [स० सत्य, प्रा० सत्त, सच्च] [स्त्री० साँची] सत्य। यथार्थ। जैसे,—साँच को आँच नहीं। (कहा०)।

साँच(पु)[२]—वि० सत्य। सच। ठीक। यथार्थ।

साँच(पु)[३]—सज्ञा पु० [स० स्थाता, हिं० साँचा] दे० 'साँचा'। उ०—चाक चढाइ साँच जनु कीन्हा। बाग तुरग जानु गहि लीहा।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० १६३।

साँचना(पु)—क्रि० स० [हिं० साँचा] साँचे मे ढालना। सचित करना। सुदर आकार प्रदान करना। उ०—सब सोभा ससि सानि कै साँची इछिनि एक।—पृ० रा०, १८।५६।

साँचरी(पु)†—सज्ञा स्त्री० [स० सहचरी] सखी। सहेली। उ०—आवी अवाँसइ साँचरी। हीयडइ हरीप मन रग अपार।—बी० रासो, पृ० ११४।

साँचला†—वि० [हिं० साँच+ला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० साँचली] जो सच बोलता हो। सच्चा। सत्यवादी।

साँचा—सज्ञा पु० [स० स्थाता] १ वह उपकरण जिसमे कोई तरल पदार्थ ढालकर अथवा गीली चीज रखकर किसी विशिष्ट आकार प्रकार की कोई चीज बनाई जाती है। फरमा। जैसे,—ईटो का साँचा, टाइप का साँचा। उ०—जैसे धातु कनक की एका। साँचा माही रूप अनेका।—कबीर सा०, पृ० १०११।

**विशेष**—जब कोई चीज किसी विशिष्ट आकार प्रकार की बनानी होती है, तब पहले एक ऐसा उपकरण बना लेते है जिसके अदर वह आकार बना होता है। तब उसी मे वह चीज डाल या भर दी जाती है, जिससे अभीष्ट पदार्थ बनाना होता है। जब वह चीज जम जाती है, तब उसी उपकरण के भीतरी आकार

की हो जाती है। जैसे,—ईंट बनाने के लिये पहले उनका एक साँचा तैयार किया जाता है, और तब उसी साँचे मे सुरखी, चूना आदि भरकर ईंटे बनाते है।

मुहा०—साँचे मे ढला होना = (१) अग प्रत्यग से बहुत ही सुदर होना। रूप और आकार आदि मे बहुत सुदर होना। उ०—वह सरापा के साँचे मे ढली थी —प्रेमघन, भा० २, पृ० ४५४। (२) सवेदनाहीन। एक रस। एक रूप। उ०—अच्छी कुठारहित इकाई साँचे ढले समाज मे।—अरी ओ०, पृ० ४। साँचे मे ढालना = बहुत सुदर बनाना।

२ वह छोटी आकृति जो कोई बडी आकृति बनाने से पहले नमूने के तौर पर तैयार की जाती है और जिसे देखकर वही बडी आकृति बनाई जाती है।

विशेष—प्राय कारीगर जब कोई बडी मूर्ति आदि बनाने लगते है, तब वे उसके आकार की मिट्टी, चूने, 'प्लैस्टर आफ पेरिस' आदि की एक आकृति बना लेते है, और तब उसी के अनुसार धातु या पत्थर की आकृति बनाते है।

३ कपडे पर बेल बूटा छापने का टप्पा जो लकडी का बनता है। छापा। ४ एक हाथ लबी लकडी जिसपर सटक बनाने के लिये सल्ला बनाते है। ५ जुलाहो की वे दो लकडियाँ जिनके बीच मे कूँच के साल को दबाकर कसते है।

**साँचि**ⓤ—वि० [स० सत्य, प्रा० सच्च] दे० 'साँच'[२]। उ०—हौं तौ तिहारी अग्याकारिनि साँचि बात मोसौ कहा कहौ महराज। —नद० ग्र०, पृ० ३६८।

**साँचिया**—सज्ञा पु० [हिं० साँचा + इया (प्रत्य०)] १ किसी चीज का साँचा बनानेवाला। २ धातु गलाकर साँचे मे ढालनेवाला।

**साँचिला**ⓤ—वि० [हिं० साँच] सच्चा। साँचला। उ०—एक सनेही साँचिलो कोशलपाल कृपालु।—तुलसी ग्र०, पृ०

**साँची**[१]—सज्ञा पु० [साँची नगर ?] एक प्रकार का पान जो खाने मे ठडा होता है। विशेष—दे० 'पान'।

**साँची**ⓤ[२]—वि० स्त्री० [स० सत्य, प्रा० सच्च] सत्य। दे० 'साँच'[२]। उ०—हरखी पभा बात सुनि साँची।—मानस, १।२९०।

**साँची**[३]—सज्ञा पु० [?] पुस्तको की छपाई का वह प्रकार जिसमे पक्तियाँ सीधे बल मे न होकर बेडे बल मे होती है।

विशेष—इसमे पुस्तके चौडाई के बल मे नही बल्कि लबाई के बल मे लिखी या छापी जाती है। प्राचीन काल के जो लिखे हुए ग्रथ मिलते हैं वे अधिकाश ऐसे ही होते है। इनमे पृष्ठ लबा अधिक और चौडा कम रहता है, और पक्तियाँ लबाई के बल मे होती है। प्राय ऐसी पुस्तकें बिना सिली हुई ही होती है, और उनके पन्ने बिलकुल एक दूसरे से अलग अलग होते हैं।

**साँचोरा**‡—सज्ञा पु० [देश०] गुर्जर ब्राह्मणो की एक उपजाति। उ०—सो गोपालदास भगवद् इच्छा ते गुजरात मे एक साँचोरा ब्राह्मण के प्रगटे।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० १०।

**साँझ**—सज्ञा स्त्री० [स० सन्ध्या, प्रा० सझ, सझा] सध्या। शाम। सायकाल। उ०—साँझ समय सानद नृपु गएउ कैकई गेह।—मानस, २।२४। (ख) सखी सोभ सब बसि भई मनो कि फूली साँझ।—पृ० रा०, १४।५५।

**साँझना**†—सज्ञा पुं० [स० सन्ध्या, हिं० साँझ + ना (प्रत्य०)] उतनी भूमि जितनी एक हल से दिन भर मे जोती जा सकती है। दिन भर मे जुत जानेवाली जमीन।

**साँझा**—सज्ञा पु० [स० सार्द्ध, प्रा० सड्ढ, सद्ध सज्झ] व्यापार, व्यवसाय आदि मे होनेवाला हिस्सा। पत्ती। विशेष दे० साझा'। सध्या।

**साँझि**ⓤ—सज्ञा स्त्री० [ स० सन्ध्य, प्रा० सझा] दे० 'साँझ'। सध्या। उ०—साँझि ही सिगार सजि प्रानप्यारे पास जाति।—नद० ग्र०, पृ० ३१५।

**साँझी**—सज्ञा स्त्री० [स० सान्ध्य वा सज्जा ?] देवमदिरो मे देवताओ के सामने जमीन पर की हुई फूल पत्तो आदि की सजावट जो विशेषत पितृपक्ष मे सायकाल के समय की जाती है। प्राय सावन के महीने मे शृगार आदि के अवसर पर भी ऐसी सजावट होती है।

मुहा०—साँझी खेलना या साँझी पूजावनाⓤ—सायकाल के समय साँझी की सजावट तैयार करना या पूरी करना। उ०—(क) सखि क्वार मास लग्यौ सुहावन सबै साँझी खेलही।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ५०८। (ख) पुजावति साँझी कीरति माय कुँवरि राधा को लाड लडाय।—घनानद, पृ० ५६१।

**साँट**[१]—सज्ञा स्त्री० [स० सट से अनु०] १ छडी। साँटी। पतली कमची। २ कोडा। ३ शरीर पर का वह लबा गहरा दाग जो कोडे या बेत का आघात पडने से होता है।

क्रि० प्र०—उभडना।—पडना।—लगना। उ०—हे मोरि सखियाँ लागलि गुरु के साँट भइलि मनभावन।—गुलाल०, पृ० ४९।

**साँट**[२]—सज्ञा स्त्री० [देश० ?] लाल गदहपूरना।

**साँट**ⓤ[३]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सटना] लगाव। मिलान। लपेट। उ०—गगन मडल मे रास रचो लगि दृष्टि रूप कै साँट।—भीखा० श०, पृ० १९।

**साँटमारी**—सज्ञा स्त्री० [हिं०] हाथियो को साँटे मारकर लडाना। दे० 'साटमारी'। उ०—उसने बतलाया, इमाम अली! काजी हूँ सरकार और साँटमारी भी करता हूँ।—झाँसी०, पृ० ९८।

**साँटा**—सज्ञा पु० [हिं० साँट (=छडी)] १ करघे के आगे लगा हुआ वह डडा जिसे ऊपर नीचे करने से ताने के तार ऊपर नीचे होते है। २ कोडा। ३ ऐड। ४ ईख। गन्ना। उ०—राजा के दर्शनो को चलने के समय ब्राह्मण ने साँठे के टुकडो को नही देखा।—भारतेदु ग्र०, भा० ३, पृ० ३०। ५ प्रतिकार। बदला। उ०—यह साँटो लै कृष्णवतार। तब ह्वैहौ तुम ससार पार।—राम च०, पृ० ८६।

**साँटि**ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सटना] मेल मिलाप। उ०—तिकस्यो मान गुमान सहित वह मैं यह होत न जानो। नैननि साँटि करी मिली नैननि उनही सो रुचि मानो।—सूर (शब्द०)।

साँटिया(पु)†—सज्ञा पु० [हिं० साँटी] टोडी पीटनेवाला। डुग्गीवाला। उ०—चहुँ दिसि आनि साँटिया फेरी। मैं कठकाई राजा केरी। —जायसी (शब्द०)।

साँटी[१]—सज्ञा स्त्री० [स० यष्टिका] १ पतली छोटी छडी। २ बाँस की पतली कमची। शाखा। उ०—बाम्हन को ले साँटी मारे। तोर जनेऊ आगी डारे।—कबीर सा०, पृ० २५५।

क्रि० प्र०—मारना।—सटकारना।

साँटी[२]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सटना] १ मेल मिलाप। २ बदला। प्रतिकार। प्रतिहिंसा।

साँठ[१]—सज्ञा पु० [देश०] १ एक प्रकार का कडा जिसे प्राय राजपूताने के किसान पैर मे पहनते है। २ दे० 'साँकडा'।

साँठ[२]—सज्ञा पु० [स० यष्टि, हिं० साँट] १ ईख। गन्ना। २ सरकडा। ३ वह लबा डडा जिससे अन्न पीटकर दाने निकालते हैं।

साँठ[३]—सज्ञा पु० [स० सन्धि ? या हिं० सटना] मेलजोल। मेल मिलाप। दे० 'साँटी'। जैसे,—साँठ गाँठ।

साँठगाँठ—सज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ+अनु० साँठ] १ मेल मिलाप। २ छिपा और दूषित सबध। जैसे,—उस स्त्री से उसकी साँठ-गाँठ थी। उ०—क्या भोली बनी जाती है और बागवाँ से खुद ही साँठगाँठ जो की थी।—फिसाना०, भा० ३, पृ० १२६। ३ षड्यत्र। दुरभिसधि। साजिश। जैसे,—उन दोनो ने साँठगाँठकर उसे वहाँ से निकलवा दिया।

साँठना(पु)—क्रि० स० [स० सन्धि, हिं० साँठ] पकडे रहना। उ०—नाथ सुनी भृगुनाथ कथा बलि बाल गए चलि बात के साँठे। —तुलसी (शब्द०)।

साँठि(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ] दे० 'साँठी'[१]। उ०—साँठि नाहि जग बात को पूछा।—जायसी ग्र०, पृ० १५७।

साँठी(पु)[१]—सज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ ? या स० स+अर्थ (=धन)=सार्थ ?] पूँजी। धन। उ०—सब निबहिहि तहँ आपन साँठी। माँठी बिना रहब मुख माँटी।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० २०७।

साँठी[२]—सज्ञा स्त्री० [देश०] पुनर्नवा। गदहपूरना।

साँठी[३]—सज्ञा पु० [स० षष्ठिक, हिं० साठी] दे० 'साठी' (धान)।

साँड[१]—सज्ञा पु० [स० षण्ड या साण्ड] १ वह बैल (या घोडा) जिसे लोग केवल जोडा खिलाने के लिये पालते है।

विशेष—ऐसा जानवर बधिया नही किया जाता और न उससे कोई काम लिया जाता है।

२ वह बैल जो मृतक की स्मृति मे हिंदू लोग दागकर छोड देते हैं। वृषोत्सर्ग मे छोडा हुआ वृषभ।

मुहा०—साँड की तरह घूमना=आजाद और बेफिक्र घूमना। साँड की तरह डकारना=बहुत जोर से चिल्लाना।

साँड[२]—वि० १ मजबूत। बलिष्ठ। २ आवारा। बदचलन।

साँडनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० साँड ?] ऊँटनी या मादा ऊँट जिसकी चाल बहुत तेज होती है। विशेष दे० 'ऊँट'। उ०—द्रव्यलाभ धावमान साँडनी। सद्गृहस्थ गेह की उजाडनी। —भारतेंदु ग्र०, भा० ३, पृ० ८४५।

साँडा—सज्ञा पु० [हिं० साँड] छिपकली की जाति का पर आकार मे उससे कुछ बडा एक प्रकार का जगली जानवर। इसकी चरबी निकाली जाती है जो दवा के काम मे आती है।

साँडिया—सज्ञा पुं० [हिं० साढिया] १ तेज चलनेवाला ऊँट। २ साँडनी पर सवारी करनेवाला।

साँढनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० साँड ?] दे० 'साँडनी'। उ०—यह सुनत ही तत्काल नामजी एक साँढनी लै ग्राम दाहिनै गए और, दोहनै दूसरी ओर धरि कै तहाँ ते श्रीजी द्वार को चले।—दो सौ बावन० भा०, पृ० १६।

साँढिया(पु)†—सज्ञा पु० [हिं०] दे० 'साँढिया'। उ०—निसु निसु नवला साँढियाँ, निसु निसु नवला साजि।—ढोला०, दू० ८१।

साँढिया—सज्ञा पुं० [हिं०] ऊँट। अलबक।

साँत(पु)†—सज्ञा स्त्री० [स० शान्ति] दे० 'शाति'। उ०—होर शोर भी भाँत भाँत का था, वह भाँत जो मेग साँत का था।—दक्खिनी०, पृ० १६६।

साँतिया†—सज्ञा पु० [स० स्वस्तिक] दे० 'स्वस्तिक-१२'। उ०—धरहुँ सुहद्रा साँतिये, अपने विरँन दरबार, बधाई राजी नद के। —पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ६२२।

साँती(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० शान्ति] दे० 'शाति'। उ०—जैं सुना हिये भइ साँती।—जायसी ग्र०, पृ० ११७।

साँथड़ा—सज्ञा पुं० [?] बादिया का वह हिस्सा जो पेच बनाने के लिये घुमाया जाता है (लुहार)।

साँथरा(पु)—सज्ञा पुं० [स० सस्तर] दे० 'साँथरी'। उ०—कामी लज्जा ना करै मन माँहैं अहिलाद। नीद न माँगै साँथरा भूख न माँगै स्वाद।—कबीर ग्र०, पृ० ४१।

साँथरी—सज्ञा स्त्री० [स० सस्तर] १ चटाई। २ बिछौना। डासन। उ०—कुस साँथरी निहारि सुहाई। कीन्ह प्रनामु प्रदच्छिन जाई।—मानस, २।१६६।

साँथा—सज्ञा पुं० [देश०] लोहे का एक औजार जो चमडा कूटने के काम मे आता है।

साँथी—सज्ञा स्त्री० [देश०] १ वह लकडी जो ताने के तारोको ठीक रखने के लिये करघे के ऊपर लगी रहती है। २ ताने के सूतो के ऊपर नीचे होने की क्रिया।

साँद[१]—सज्ञा पु० [देश०] वह लकडी आदि जो पशुओ के गले मे इस लिये बाँध दी जाती है, जिससे वे भागने न पावें। लगर। टेका।

साँद(पु)[२]—अव्य० [हिं० साथ ?] दे० 'साथ'। उ०—मीने मे दम कूँ अपने साँद लेकर। कमर कूँ अपने दामन बाँद लेकर —दक्खिनी०, पृ० २८१।

साँदा†—सज्ञा पुं० [देश०] दे० 'साँद'।

साँध[१]—सज्ञा पु० [स० सन्धान] वह वस्तु जिसपर निशाना लगाया जाय। लक्ष्य। निशाना।

साँध[२]—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धि] १ सधि। मित्रता। उ०—जाएँ तोड जहान सूँ साँध न जाएँ सीह।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० २३। २ छिद्र। सधि। फाँक। दरार। खाली जगह। उ०—कनातो की साँधो से जगमोहन ने वह नाच देखा था। —ज्ञानदान, पृ० ४८।

साँधना[1]—क्रि० स० [स० सन्धान] निशाना साधना। लक्ष्य करना। सधान करना। उ०—(क) अगिन बान दुइ जानो साँधे। जग बेधे जो होहिं न बाँधे।—जायसी (शब्द०)। (ख) जनु घुघची वह तिलकर भूहाँ। विरह बान साँधो सामूहाँ।—जायसी (शब्द०)।

साँधना[2]—क्रि० स० [स० साधन] सिद्ध करना। साधना। उ०—सीस काटि के पैरी बाँधा। पावा दाँव बैर जस साँधा।—जायसी (शब्द०)।

साँधना[3]—क्रि० स० [स० सन्धि] १ एक मे मिलाना। मिश्रित करना। उ०—बिबिध मृगन कर आमिष राँधा। तेहि महँ विप्रमासु खल साँधा।—तुलसी (शब्द०)। २ रस्सियो आदि मे जोड लगाना। (लश०)। ३ सधान करना। तैयार करना। बनाना। उ०—धोआउरि धाने मदिरा साँध, देउर भाँगि मसीद बाँध। —कीर्ति०, पृ० ४४।

साँधा—सज्ञा पुं० [स० सन्धि] दो रस्सियो आदि मे दी हुई गाँठ। (लश०)।

मुहा०—साँधा मारना = दो रस्सियो आदि मे गाँठ लगाकर उन्हे जोडना। (लश०)।

सान—सज्ञा स्त्री० [फा० शान] दे० 'शान'। उ०—गरबी गुमान होइ बडो सावधान होइ, सान होइ सहिबी प्रताप पुज धाम को।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ४३२।

सानना—क्रि० स० [हिं० सानना] गूँधना। मिलाना। दे० 'सानना'। उ०—पाँच तत तीनि गुण जुगति करि सानियाँ। —कबीर ग्र०, पृ० १५६।

साँप—सज्ञा पुं० [सं० सर्प, प्रा० सप्प] [स्त्री० सापिन] १ एक प्रसिद्ध रेंगनेवाला लबा कीडा जिसके हाथ पैर नही होते और जो पेट के बल जमीन पर रेंगता है।

विशेष—केवल थोडे से बहुत ठढे देशो को छोडकर शेष प्राय समस्त ससार मे यह पाया जाता है। इसकी सैकडो जातियाँ होती है जो आकार और रग आदि मे एक दूसरी से बहुत अधिक भिन्न होती हैं। साँप आकार मे दो ढाई इच से २५-३० फुट तक लबे होते हैं और मोटे सूत से लेकर प्राय एक फुट तक मोटे होते है। बहुत बडी जातियो के साँप अजगर कहलाते है। कुछ साँपो के सिर पर फन होता है। ऐसे साँप नाग कहलाते है। साँप पीले, हरे, लाल, काले, भूरे आदि अनेक रगो के होते हैं। साँपो की अधिकाश जातियाँ बहुत डरपोक और सीधी होती है, पर कुछ जातियाँ जहरीली और बहुत ही घातक होती है। भारत के गेहुअन, धामिन, नाग और काले साँप बहुत अधिक जहरीले होते हैं, और उनके काटने पर आदमी प्राय नही बचता। इनके मुँह मे साधारण दाँतो के अतिरिक्त एक बहुत बडा नुकीला खोखला दाँत भी होता है जिसका सबध जहर की एक थैली से होता है। काटने के समय वही दाँत शरीर मे गड़ाकर ये विष का प्रवेश करते है। सब साँप मासाहारी होते है और छोटे छोटे जीव-जतुओ को निगल जाते है। इनमे यह विशेषता होती है कि ये अपने शरीर की मोटाई से कही अधिक मोटे जतुओ को निगल जाते है। प्राय छोटी जाति के साँप पेडो पर और बडी जाति के जगलो, पहाडो आदि मे यो ही जमीन पर रहते है। इनकी उत्पत्ति अडो से होती है, और मादा हर बार मे बहुत अधिक अडे देती है। साँपो के छोटे बच्चे प्राय रक्षित होने के लिये अपनी माता के मुँह मे चले जाते है, इसी लिये लोगो मे यह प्रवाद है कि साँपिन अपने बच्चो को आप ही खा जाती है। इस देश मे साँपो के काटने की चिकित्सा प्राय जतर मतर और झाड फूँक आदि से की जाती है। भारतवासियो मे यह भी प्रवाद है कि पुराने साँपो के सिर मे एक प्रकार की मणि होती है जिसे वे रात मे अधकार के समय बाहर निकालकर अपने चारो ओर प्रकाश कर लेते है।

मुहा०—कलेजे पर साँप लहराना या लोटना = बहुत अधिक व्याकुलता या पीडा होना। अत्यत दुख होना। (ईर्ष्या आदि के कारण)। साँप उतारना = सर्प के काटने पर विष को मत्रादि से दूर करना। साँप का पाँव देखना = असभव वस्तु को पाने का प्रयत्न करना। साँप कीलना = मत्र द्वारा साँप को वश मे करना। मत्र द्वारा साँप को काटने से रोकना। साँप को खिलाना = अत्यत खतरनाक कार्य करना। साँप से खेलना = अत्यत खतरनाक व्यक्ति से सबध रखना। साँप सूँघ जाना = साँप का काट खाना। मर जाना। निर्जीव हो जाना। जैसे,—ऐसे सोए है मानो साँप सूँघ गया है। उ०—अरे इस मकान मे कोई है या सबको साँप सूँघ गया।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ३४। साँप खेलाना = मत्र बल से या और किसी प्रकार साँप को पकडना और क्रीडा करना। साँप की तरह केंचुली झाडना = पुराना भद्दा रूप रग छोडकर नया सुदर रूप धारण करना। साँप की लहर = साँप काटने पर रह रह कर आनेवाली विष की लहर। साप काटने का कष्ट। साँप की लकीर = पृथ्वी पर का चिह्न जो साँप के निकल जाने पर होता है। साँप के मुँह मे = बहुत जोखिम मे। साँप (के) चले जाने पर लकीर को पीटना = (१) अवसर बीत जाने पर भी उस अवसर को जिलाए रखना। किसी विषय को असमय मे उठाना। (२) खतरे के अवसर पर उसका प्रतिरोध न करके बाद मे उसे दूर करने की चेष्टा करना। मौका गुजर जाने पर मुस्तैदी दिखाना। साँप छछूँदर की गति या दशा = भारी असमजस की दशा। दुविधा। उ०—भइ गति साँप छछूँदर केरी। —तुलसी (शब्द०)।

विशेष—साँप छछूँदर की कहावत के सबध मे कहा जाता है कि यदि साँप छछूँदर को पकडने पर जा जाता है, तो वह तुरत मर जाता है, और यदि न खाय और उगल दे, तो अधा हो जाता है।

पर्या०—भुजग। भुजग। अहि। विषधर। व्याल। सरीसृप। कुडली। चक्षुश्रवा। फणी। बिलेशय। उरग। पन्नग। पवना-

नाग। सर्प। व्याल। दर्वी। गोखरा। गूढपाद। हरि। हिलिमुख।

२ बहुत ही दुष्ट आदमी। अत्यंत दुष्ट व्यक्ति। (क्व०)।

सांपटना†—क्रि० अ० [सं० स्नापन या देश०] स्नान करना। नहाना। उ०—सांपटि पीजै समद दुग सेवारिया।—बाँकी० ग्र० भा० ३, पृ० ३१।

सांपधरन—संज्ञा पुं० [हिं० साँप+धरन] सर्प धारण करनेवाले, शिव। महादेव।

सांपना—क्रि० स० [सं० समर्पण, प्रा० समप्पन, सउप्पन, हिं० सौंपना] देना। प्रदान करना। उ० उभी भावज दइ छइ सीप, स्वल चोखी राय सांपजै भीप।—वी० रासो, पृ० ४५।

सांपा—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सिवापा'।

सांपिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० साप+इन (प्रत्य०)] १ साँप की मादा। २ घोड़े के शरीर पर की एक प्रकार की भौंरी जो अशुभ समझी जाती है। ३ एक प्रकार की गाय जो जीभ को काफी लंबी निकालकर उसे सर्पिणी की तरह घुमाती रहती है। ऐसी गाय का पालना अशुभ माना जाता है।

सांपिनि सांपिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पिणी] दे० 'सांपिन'। उ०—त्रिभुवनानी परम पापिनी। मतनि की डमनी जु सांपिनी।—नंद० ग्र०, पृ० २३६।

सांपिया—संज्ञा पुं० [हिं० साँप+इया (प्रत्य०)] एक प्रकार का काला रंग जो प्रायः साधारण साँप के रंग से मिलता जुलता होता है।

सांभर'—संज्ञा पुं० [सं० सम्भल या साम्भल] १ राजपूताने की एक झील जहाँ का पानी बहुत खारा है। इसी झील के पानी से सांभर नमक बनाया जाता है। २ उक्त झील के जल से बनाया हुआ नमक। ३ भारतीय मृगों की एक जाति।

विशेष—इस जाति का मृग बहुत बड़ा होता है। इसके कान लंबे होते हैं और सींग बारहसिंगों की सींगों के समान होते हैं। इसकी गरदन पर बड़े बड़े बाल होते हैं। अक्तूबर के महीने में यह खाया जाता है।

सांभर,२—संज्ञा पुं० [सं० सम्बल या सम्भार] मार्ग के लिये साथ में लिया हुआ जलपान या भोजन। सबल। पाथेय। उ०—जावत नहि सांभर लेहु दूरि है जाना।—जायसी (शब्द०)।

सांभरि—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्बल] दे० 'सांभर-२'। उ०—एक कोस जाना सांझ घरी। गाठी सांभरि बांधु बनाई।—सत० दरिया, पृ० ३८।

सांभलना—क्रि० स० [सं० √सम्भालय्, सम्भालयति, गुज०] १ सुनना। उ०—गाय आव्या की सांभली वात। नाचउ रूप सोहाग पात।—वी० रासो, पृ० ६१। २ स्मरण करना। उ०—सांझो हो राम सुनै सब कोई। सांभल्यां राम गगाफल होई।—दो० बानी, पृ० ५।

सांम'—संज्ञा पुं० [सं० श्याम, प्रा० साम] कृष्ण का नाम। श्याम। उ०—न सदा न सामो न गोग्गो न सांम को।—प्राण०, पृ० ११६।

सांम†२—संज्ञा पुं० [सं० साम] साम वेद। दे० 'साम'-१। उ०—भृकुटी विराजत स्वेत मानहुँ मंत्र अदभुत साम के।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ४५७।

सांम†३—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी] स्वामी। मालिक। प्रभु। उ०—रिजक उजालै सांम रौ पालै सांमधरम्म।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० १।

सांमजि†—संज्ञा पुं० [सं० समाज] समूह। दल। उ०—सांमजि करि, उभा रजपूत, हरिप नरायण दीधो सूत।—वी० रासो, पृ० १४।

सांमधरम्म—संज्ञा पुं० [सं० स्वामिधर्म] स्वामी के प्रति अपना कर्तव्य। उ०—नमसकार सूरां नरां, विरद नरेस वरम। रिजक उजालै सांम रौ, पालै सांमधरम।—बाँकी०, ग्र०, भा० १, पृ० १।

सांमन—संज्ञा पुं० [सं० श्रावण] दे० 'श्रावण' (मास)। उ०—सवत नव पट् वसु ससी, सांमन सुदि बुधवार।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ४८३।

सांमर—वि० [सं० श्यामल] दे० 'सांवला'।

सांमहा—वि० [सं० सम्मुख, प्रा० सम्मुह] [वि० स्त्री० सांमही] समुख। सामने। उ०—सांमही छीक हूंणइ कपाल।—वी० रासो, पृ० ५१।

सांमुहे†—अव्य० [सं० सम्मुखे] सामने। सम्मुख।

सांमेला†—संज्ञा पुं० [सं० सम्मिलन] मिलना। मिलाप। उ०—(क) चउघडियउ वाजइ सीह दुवारि, सांमेला की वेला हुई।—वी० रासो, पृ० १५। (ख) परण पधारे राम जीत दुजराजनै, तुरत करोजे त्यार सांमेलो साजनै।—रघु० रू०, पृ० ६२।

सांम्हा—अव्य० [सं० सम्मुख] समुख। सामने। उ०—भाज गई चिंता भडां, घडां कठट्ठे जग। सांमा रक्खण देख खल, सांम्हा किया तुरग।—रा० रू०, पृ० ३३।

सांय सांय—संज्ञा पुं० [अनु०] सन्नाटे में हवा की गति से पैदा होनेवाली ध्वनि। उ०—करता मारुत सांय सांय है।—साकेत, पृ० ३६१।

सांवक'—संज्ञा पुं० [देश०] वह ऋण जो हलवाहों को दिया जाता है और जिसके सूद के बदले में वे काम करते हैं।

सांवक२—संज्ञा पुं० [सं० श्यामक] सांवाँ नामक अन्न।

सांवत†१—संज्ञा पुं० [सं० सामन्त] सुभट। योद्धा। सामन्त। दे० 'सामन'। उ०—दुजोधन अवतार नृप सत सावत सबधं।—प० रासो, पृ० १।

सांवत२—संज्ञा पुं० [सं० सामन्त या देश०] एक प्रकार का राग।

सांवती†—संज्ञा [देश०] बैलगाड़ी या घोड़ागाड़ी के नीचे लगी हुई वह जाली जिसमें घास आदि रखते हैं।

सांवन—संज्ञा पुं० [देश०] मझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष जिसका तना प्रायः झुका हुआ होता है।

विशेष—इसकी छाल पतली और भूरे रग की होती है। यह देहरादून, अवध, बुदेलखड और हिमालय मे ४००० फुट की ऊँचाई पर पाया जाता है। फागुन चैत मे पुरानी पत्तियो के झडने और नई पत्तियो के निकलने पर इसमे फूल लगते है। इसमे से एक प्रकार का गोद निकलता है जो ओषधि के रूप मे काम आता और मछलियो के लिये विष होता है। इसके हीर की लकडी मजबूत और कडी होती है और सजावट के सामान बनाने के काम मे आती है। पशु इसकी पत्तियाँ बडे चाव से खाते है।

साँवर[1]—वि० [स० श्यामल] [वि० स्त्री० साँवरि या साँवरी] दे० 'साँवला'। उ०—काहे राम जिउ साँवर लछिमन गोर हो। कोदँह रानि कौसिलहि परिगा भोर हो।—तुलसी ग्र०, पृ० ५। २ सलोना। सुदर। उ०—सखि रोके साँवर लाल, घन घेरची मनो दामिनी।—नद० ग्र०, पृ० ३८५।

साँवर(पु)[2]—सज्ञा पु० [स० सम्भल, साम्भल] दे० 'साँवर', 'साँभर'। उ०—जाँवत अहै सकल ओरगाना। साँवर लेहु दूरि हे जाना। —जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० २०६।

साँवरा—वि०, सज्ञा पु० [हि० साँवला] दे० 'साँवला'।

साँवरो(पु)—वि०, सज्ञा पु० [हि०] दे० 'साँवला'। उ०—मखन सहित सजि सुघर साँवरो, सुनतहि सनमुख आए।—नद० ग्र०, पृ० ३८१।

साँवल(पु)[1]—वि०, सज्ञा पु० [स० श्यामल] दे० 'साँवला'। उ०—अद्भुत साँवल अग बन्यो अद्भुत पीतावर। मूरति धरि सिंगार प्रेम अबर ओढे हरि।—नद० ग्र०, पृ० २८।

साँवलताई[1]—सज्ञा स्त्री० [स० श्यामल, हि० साँवल + ताई (प्रत्य०)] साँवला होने का भाव। श्यामता। श्यामलता।

साँवला[1]—वि० [स० श्यामलक] [वि० स्त्री० साँवली] जिसके शरीर का रग कुछ कालापन लिए हुए हो। श्याम वर्ण का।

साँवला[2]—सज्ञा पु० १ श्रीकृष्ण का एक नाम। २ पति या प्रेमी आदि का बोधक एक नाम।

विशेष—इन अर्थो मे इस शब्द का प्रयोग गीतो आदि मे होता है।

साँवलापन—सज्ञा पु० [हि० साँवला + पन] साँवला होने का भाव। वर्ण की श्यामता।

साँवलि(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० श्यामला, प्रा० साँवली] श्यामल वर्ण की बदली। उ०—साँवलि काँइ न सिरजियाँ, अबर लागि रहत। वाट चलती साल्ह प्रिव, ऊभर छाँह करत।—ढोला०, दू०, ४१५।

साँवलिया[1]—सज्ञा पु० [हि० साँवलिया] १ कृष्ण। २ प्रिय का सबोधन। प्रिय। ३ पति। स्वामी।

साँवलिया[2]—वि० [स० श्यामल] दे० 'साँवला'। उ०—बैल दो साँवलिया और धौला।—कुकुर०, पृ० ५१।

साँवाँ—सज्ञा पु० [स० श्यामाक] कँगनी या चेना की जाति का एक अन्न जो सारे भारत मे बोया जाता है।

विशेष—यह प्राय फागुन चैत मे बोया जाता है और जेठ मे तैयार होता है। कही कही इसकी बोआई आषाढ-सावन मे होती है और भादोतक यह काट लिया जाता है। यह बरसाती अन्न है। इसके विषय मे यह कहावत पूर्वी जिलो मे प्रसिद्ध है कि 'साँवाँ साठी साठ दिना। देव बरीस रात दिना।' यह अन्न बहुत ही सुपाच्य और बलवर्धक माना जाता है और प्राय चावल की भाँति उबालकर खाया जाता है। कही कही रोटी के लिये इसका आटा भी तैयार किया जाता है। इसकी हरी पत्तियाँ और डठल पशुओ के लिये चारे की भाँति काम मे आते है, और पजाब मे कही कही केवल चारे के लिये भी इसकी खेती होती है। अनुमान है कि यह मिस्र या अरब से इस देश मे आया है।

साँस—सज्ञा स्त्री० [स० श्वास] १ नाक या मुह के द्वारा बाहर से हवा खीचकर अदर फेफडो तक पहुँचाने और उसे फिर बाहर निकालने की क्रिया। श्वास। दम।

विशेष—यद्यपि यह शब्द सस्कृत 'श्वास' (पुल्लिग) से निकला है और इसलिये पुल्लिग ही होना चाहिए, परतु लोग इसे स्त्रीलिंग ही बोलते हैं। परतु कुछ अवसरो पर कुछ विशिष्ट क्रियाओ आदि क साथ यह कवल पुल्लिग भी बोला जाता है। जैसे,—इतनी दूर से दौडे हुए आए है, साँस फूलने लगा।

क्रि० प्र०—आना।—जाना।—लेना।

मुहा०—साँस अडना = दे० 'साँस रुकना'। साँस उखडना = (१) मरने के समय रोगी का देर देर पर और बडे कष्ट से साँस लेना। (२) साँस टूटना। दम टूटना। उ०—पवन पी रहा था शब्दो को निर्जनता की उखडी साँस।—कामायनी, पृ० १६। (३) साँस या दमा के रोगी का जोर जोर की खाँसी आने से श्लथ होना। साँस उडना = प्राणात होना। जीवनलीला समाप्त होना। साँस ऊपर नीच होना = साँस का ठीक तरह से ऊपर नीचे न आना। साँस रुकना। साँस का अदर की अदर और बाहर की बाहर रह जाना = भौचक्का रह जाना। चकित रह जाना। साँस का टूट टूट जाना = धीरज का जाते रहना। उ०—आस कैसे न टूट जाती तब, साँस जब टूट टूट जाती है।—चुभते०, पृ० ५१। साँस खीचना = (१) नाक के द्वारा वायु अदर की ओर खीचना। साँस लेना। (२) वायु अदर खीचकर उसे रोक रखना। दम साधना। जसे,—हिरन साँस खीचकर पड गया। साँस चढना = अधिक वेग से या परिश्रम का काम करने के कारण साँस का जल्दी जल्दी आना और जाना। साँस चढाना = दे० 'साँस खीचना'। सास चलना = (१) जीवित होना। जीवित रहना। (२) रोग या अवस्थता की स्थिति मे जल्दी जल्दी और जोर से साँस लेना। साँस छोडना = नाक द्वारा अदर खीची हुई वायु को बाहर निकालना। साँस टूटना = दे० 'साँस उखडना'। साम डकार न लेना = किसी चीज को पूरणत पचा जाना। किसी चीज को इस प्रकार छिपाकर दाब जाना कि पता तक न चले। साँस तक न लेना = बिलकुल चुपचाप रहना। कुछ

न बोलना। जैसे,—उनके सामने तो यह लडका साँस नही लेता। साँस फूलना = बार बार साँस आना और जाना। साँस चढना। साँस भरना = दे० 'ठढी साँस लेना'। साँस रहते = जीते जी। जीवन पर्यंत। साँस रुकना = साँस के आने और जाने मे बाधा। श्वास की क्रिया मे बाधा होना। जैसे,—यहाँ हवा की इतनी कमी है कि साँस रुकती है। साँस लेना = (१) नाक के द्वारा वायु खीचकर अदर लेना और फिर उसे बाहर निकालना। (२) सुस्ताना। थोडी देर आराम करना। अतिम साँस लेना = प्राणात होना। मर जाना। अतिम साँसे गिनना = मरने के निकट होना। आसन्न मृत्यु होना। उलटी साँस लेना = (१) दे० 'गहरी साँस भरना या लेना।' (२) मरने के समय रोगी का बडे कष्ट से अतिम साँस लेना। ऊपर को साँस चढना = मरणासन्न होना। मृत्यु का निकट होना। साँसो मे जी का होना = मरणासन्न होना। मृत्यु का निकट होना। गहरी साँस भरना या लेना = बहुत अधिक दु ख आदि के आवेग के कारण बहुत देर तक अदर की ओर वायु खीचते रहना और उसे कुछ देर तक रोक कर बाहर निकालना। ठढी या लबी साँस लेना = दे० 'गहरी साँस भरना या लेना'।

२ अवकाश। फुरसत। विश्राम।

मुहा०—साँस लेना = थक जाने पर विश्राम लेना। ठहर जाना। जैसे,—(क) घटो से काम कर रहे हो, जरा साँस ले लो। (ख) वह जबतक काम पूरा न कर लेगा तबतक साँस न लेगा। साँस लेने या मारने तक की फुरसत न होना = बिल्कुल अवकाश न रहना। अत्यत व्यस्त होना।

३ गुजाइश। दम। जैसे,—अभी इस मामले मे बहुत कुछ साँस है। ४ वह सधि या दरार जिसमे से होकर हवा जा या आ सकती है।

मुहा०—(किसी पदार्थ का) साँस लेना = किसी पदार्थ मे सधि या दरार पड जाना। (किसी पदार्थ का) बीच मे से फट जाना या नीचे की ओर धँस जाना। जैसे,—(क) इस भूकप मे कई मकानो और दीवारो ने साँस ली है। (ख) इस भाथी मे कही न कही साँस जरूर है, इसी से पूरी हवा नही लगती।

५ किसी अवकाश के अदर भरी हुई हवा।

मुहा०—साँस निकलना = (१) किसी चीज के अदर भरी हुई हवा का बाहर निकल जाना। जैसे,—टायर की साँस निकलना, फुटबाल की साँस निकलना। (२) प्राणात होना। समाप्त हो जाना। साँस भरना = (१) किसी चीज के अदर हवा भरना। (२) अत्यधिक थकान से जल्दी जल्दी और जोर की साँस आना।

६ वह रोग जिसमे मनुष्य बहुत जोगे से, पर बहुत कठिनता से साँस लेता है। दम फूलने का रोग। श्वास। दमा।

क्रि० प्र०—फूलना।

**साँसत**—सज्ञा स्त्री० [हिं० साँस + त (प्रत्य०)] १ दम घुटने का सा कष्ट। २ बहुत अधिक कष्ट या पीड़ा। ३ झझट। बखेड़ा।

उ०—रेल राँड पर चढत होत सहजहिं परवस नर। मो मो मांमत सहत तऊ नहिं सकत कछू कर।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ७।

यो०—साँसतघर।

**साँसतघर**—सज्ञा पुं० [हिं० साँसत + घर] कारागार मे एक प्रकार की बहुत तग और बहुत अँधेरी कोठरी जिसमे अपराधियो को विशेष दड देने के लिये रखा जाता है। कालकोठरी। २ बहुत तग या छोटा मकान जिसमे हवा या रोशनी न आती हो।

**साँसति**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'साँसत'। उ०—नव तात न मात न स्वामी सखा सुत बधु बिसाल बिपत्ति बटैया। साँसति घोर पुकारत आरत कौन सुनै चहुँ ओर टटैया।—तुलसी (शब्द०)।

**साँसना**Ⓤ†—क्रि० स० [स० शासन] १ शासन करना। दड देना। २ डाँटना। उपटना। ३ कष्ट देना। दु ख देना।

**साँसल**—सज्ञा पुं० [देश०] १ एक प्रकार का कबल। २ बीज बोने की क्रिया।

**साँसा**†[1]—सज्ञा पुं० [स० श्वास, प्रा० सास] १ साँस। श्वास। जैसे,—जबतक साँसा, तबतक आसा। (कहा०)। २ जीवन। जिंदगी। ३ प्राण।

**साँसा**[2]—सज्ञा पुं० [हिं० साँसत] १ घोर कष्ट। भारी पीडा। तकलीफ। २ चिंता। फिक्र। तरद्दुद।

मुहा०—साँसा चढना = फिक्र होना। चिंता होना।

**साँसा**[3]—सज्ञा पुं० [स० सशय] १ सशय। सदेह। शक। २ डर। भय। दहशत।

मुहा०—साँसा पडना = सशय होना। सदेह होना। उ०—आवण का साँसा पडई। जाणि होमालइ राजा गलिया हो जाई।—बी० रासो, पृ० ४८।

**साँही**Ⓤ†—सज्ञा पुं० [स० स्वामी, प्रा० सांडि] फकीर। औलिया। दे० 'साई'। उ०—कही वत्त गोरी तिन सो सवाँही। कहैं जेब जवाब पुच्छत साँही।—पृ० रा०, १६।३३।

**सा**[1]—अव्य० [स० सदृश्य, सह] १ समान। तुल्य। सदृश। बराबर। जैसे,—उनका रग तुम्ही सा है। २ एक प्रकार का माननूचक शब्द। जैसे,—बहुत सा, थोडा सा, जरा सा।

**सा**[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गौरी। पार्वती। २ लक्ष्मी (कौ०)।

**सा**[3]—सज्ञा पुं० सगीत के सात स्वरो मे प्रथम स्वर। षड्ज का सक्षिप्त रूप।

**साअत**—सज्ञा स्त्री० [अ० साअत] दे० 'साइत-१'।

**साअद**—सज्ञा पुं० [अ० साइद] आरोहक।—दक्खिनी०, पृ० ६५।

**साइंस**—सज्ञा स्त्री० [अ० साइन्स] किसी विषय का विशेष ज्ञान-विज्ञान शास्त्र। विशेष दे० 'विज्ञान'। २ रासायनिक और भौतिक विज्ञान।

**साइ**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [फा० स्याही] दे० 'स्याही'। उ०—साइ सप्त साइर करी, करी कलम बनराइ।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ४३५।

साइक(पु)—सज्ञा पु० [स० शायक, प्रा० साइक] बाण। दे० 'शायक'। उ०—बीर पठन कर साइक तानिय।—प० रासो, पृ० १५३।

साइकिल—सज्ञा स्त्री० [अ०] दो पहियो की पैरगाडी। बाईसिकिल। पाँवगाडी। उ०—उसके पिता की एक बहुत बडी साइकिलो की एजेसी थी।—तारिका, पृ० ७।

साइग—सज्ञा पु० [अ० साइग] स्वर्णकार। सुनार [को०]।

साइक्लोपीडिया—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ वह बडा ग्रथ जिसमे किसी एक विषय के अगो और उपागो आदि का पूरा वर्णन हो। २ वह बडा ग्रथ जिसमे ससार भर के सब मुख्य मुख्य विषयो और विज्ञानो आदि का पूरा पूरा विवेचन हो। विश्वकोष। इनसाइक्लोपीडिया।

साइत[१]—सज्ञा स्त्री० [अ० साअत] १ एक घटे या ढाई घडी का समय। २ पल। लहमा। उ०—अभी एक साइत हुई कि मै राजभवन और अपने अनुचरो की स्वामिनी और अपने मन की रानी थी।—भारतेदु ग्र०, भा० १, पृ० ६०६। ३ मुहूर्त। शुभ लग्न। उ०—अर्थात् काबुल लेना शुभ साइत मे हुआ था कि सब सताने काबुल मे हुई।—हुमायूँ०, पृ० १३।

क्रि० प्र०—देखना।—निकलना।—निकलवाना।

यौ०—साइत सुदेवस = शुभ लग्न और दिन।

साइत[२]†—अ० [फा० शायद] दे० 'शायद'। उ०—साइत तुम्हे अनजान समझ कर रास्ते मे कुछ दिक करे।—गोदान, पृ० ८।

साइनबोर्ड—सज्ञा पु० [अ०] वह तख्ता या टीन आदि का टुकडा जिसपर किसी व्यक्ति, दूकान या व्यवसाय आदि का नाम और पता आदि अथवा सर्वसाधारण के सूचनार्थ इसी प्रकार की कोई और सूचना बडे बडे अक्षरो मे लिखी हो।

विशेष—ऐसा तख्ता दूकान, मकान या सस्था आदि के आगे किसी ऐसे स्थान पर लगाया जाता है, जहाँ सब लोगो की दृष्टि पडे।

साइबडी†—सज्ञा स्त्री० [?] वह धन जो किसान फसल के समय धार्मिक कार्यो के निमित्त देते है।

साइबान—सज्ञा पु० [फा० सायबान] दे० 'सायबान'।

साइम—वि० [अ०] [वि० स्त्री० साइमा] रोजा या व्रत रखनेवाला। दे० 'सायम'।

साइयाँ—सज्ञा पुं० [स० स्वामी, प्रा० सामी, साई] दे० 'साईं'। उ०—जाको राखे साइयाँ मारि न सकिहै कोइ। बाल न बाँका करि सकै जो जग बैरी होइ।—कबीर (शब्द०)।

साइर[१]†—सज्ञा पुं० [अ०] आमदनी के वह साधन जिनपर जमीदारो को प्राय लगान नही देना पडता था। जैसे,—स्वतत्रता के पूर्व जगल, नदी, बाग, ताल आदि जो कही कही सरकारी कर से मुक्त रहते थे। दे० 'सायर'।

साइर[२]—वि० [वि० स्त्री० साइरा] १ चक्रमणशील। घूमने फिरनेवाला। २ कुल। पूरा। ३ बचा हुआ। शेष। बाकी [को०]।

साइर(पु)[३]—सज्ञा पु० [स० सागर, प्रा० सायर] दे० 'सागर'। उ०—(क) दो लागी साइर जल्या पखी बैठे आइ।—कबीर ग्र०, पृ० १२। (ख) साइ सप्त साइर करी, करी कलम बनराइ।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ ४३५।

साइल—सज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० साइरा] १ प्रार्थी। उम्मीदवार। आसरा लगानेवाला। २ भिक्षुक। भिखमगा। ३ जिज्ञासा करनेवाला। प्रश्नकर्ता। उ०—कहे तब हाजिरो ने अर्ज यूँ कर। हुए साइल के एं आलम रहबर।—दक्खिनी०, पृ० ३२६।

साई[१]—सज्ञा पुं० [स० स्वामी] १ स्वामी। मालिक। प्रभु। २ ईश्वर। परमात्मा। ३ पति। खाविद। ४. एक प्रकार का पेड। दे० 'साँई'।

साई[२]—सज्ञा स्त्री० [स० स्वामिक, प्रा० साइअ या हि० साइत ?] वह धन जो गाने बजानेवाले या इसी प्रकार के और पेशेकारो को किसी अवसर के लिये उनकी नियुक्ति पक्की करके, पेशगी दिया जाता है। पेशगी। बयाना।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

मुहा०—साई बजाना = जिससे साई ली हो, उसके यहाँ नियत समय पर जाकर गाना बजाना।

साई†[३]—सज्ञा स्त्री० [स० सहाय] वह सहायता जो किसान एक दूसरे को दिया करते है।

साई[४] सज्ञा स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का कीडा जिसके घाव पर बीट कर देने से घाव मे कीडे पैदा हो जाते है। २ वे छडे जो गाडी के अगले हिस्से मे बेडे बल मे एक दूसरे को काटते हुए रखी जाती है और जिनके कारण उनकी मजबूती और भी बढ जाती है।

साई[५] सज्ञा स्त्री० [हि०] दे० 'साईकाँटा'।

साई(पु)[६]—सज्ञा पु० [स० स्वामी, प्रा० सामि] स्वामी। मालिक। उ०—है परष परष साई सुकीय। छुट्टत अरस जनु किरनकीय।—पृ० रा०, ११।२५।

साईकाँटा—सज्ञा पु० [हि० साही (= जतु) + काँटा] एक प्रकार का वृक्ष। साई। मोगली।

विशेष—यह वृक्ष बगाल, दक्षिण भारत, गुजरात और मध्यप्रदेश मे पाया जाता है। इसकी लकडी सफेद होती है और छाल चमडा सिझाने के काम मे आती है। इसमे से एक प्रकार का कत्था भी निकलता है।

साईबान सज्ञा पु० [फा० सायबान, साइबान] दे० 'सायबान'। उ०—बीच मैं एक बडा कमरा हवादार बहुत अच्छा बना हुआ था। उसके चारो तरफ सगमरमर का साईबान और साईबान के गिद फव्वारो की कतार।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० १७७।

साईस—सज्ञा पु० [हि० रईस का अनु०] [अ० साइस, सईस (= घोडे का रखवाला)] वह आदमी जो घोडे की खबरदारी और सेवा करता है, और उसे दाना घास आदि देता, मलता और टहलाता तथा इसी प्रकार के दूसरे काम करता है।

साईसी—सज्ञा स्त्री० [हि० साईस + ई (प्रत्य०)] साईस का काम, भाव या पद।

साउ†—सज्ञा पु० [स० साधु, प्रा० साहु] दे० 'साहु'।

साउज(पु)—संज्ञा पु० [सं० श्वापद, प्रा० सावय ?] वे जानवर जिनका शिकार किया जाता है। आखेट। अहेर। उ०—कीन्हेसि साउज आरन रहई। कीन्हेसि पंख उडहि जह चहई।—जायसी ग्र०, पृ० १।

साउथ—संज्ञा पु० [अं०] दक्षिण दिशा।

साऊ(पु)—संज्ञा पु० [सं० साधु, प्रा० साहु] सज्जन। भला पुरुष। साऊ ये दुसमन होइ लागे सबन लए कडी। तुम बिन साऊ कोऊ नही है डिगी नाव मेरे समँद अडी। सतवाणी०, पृ० ७७।

साएर(पु)—संज्ञा पु० [सं० सागर, प्रा० सायर] दे० 'सागर'। उ०—विरह अगिनि तन जरि बन जरे। नैन नीर साएर सब भरे।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० २७१।

साएरी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [अ० शायरी] दे० 'शायरी'। उ०—एह सब साएरी कवि कथा। दधी मथि घिन साधु लोन्हो छाछि को गुन गथा।—सत० दरिया, पृ० १५१।

साओन(पु)†—संज्ञा पु० [सं० श्रावण, प्रा० सावण] सावन का महीना दे० 'श्रावण'। उ०—साओन सयँ हम करब पिरीत। जत अभिमत अभिसारक रीत।—विद्यापति, पृ० २२६।

साकभरी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शाकम्भरी] देवी दुर्गा की एक मूर्ति।

साकभरी[2]—संज्ञा पु० शाकभरी क्षेत्र। साँभर झील या उसके आस-पास का प्रांत जो राजपूताने में है।

साक[1]—संज्ञा पु० [सं० शाक] शाक। साग। सब्जी। तरकारी। भाजी।

साक[2]—संज्ञा पु० [हिं०] १ दे० 'सागौन'।

साक[3]—संज्ञा स्त्री० [हिं० साख] १ दे० 'धाक'। उ०—को हौ तुम अब का भए, कहाँ गए करि साक।—भारतेंदु ग्र०, भा० ३, पृ० ३४०। २ दे० 'साख'। उ०—तहाँ कबीर चढि गया, गहि सतगुरु की साक।—कबीर सा० सं०, पृ० ६०।

साक[4]—संज्ञा स्त्री० [अ० साक] १ वृक्ष का तना या धड़। २ पौधे की शाख या टहल। ३ पिंडली (को०)।

साक[5]—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्क] शंका। दुविधा। उ०—मन फाटा बाइक बुरै मिटी सगाई साक।—कबीर ग्र०, पृ० ६०।

साकचेरि†—संज्ञा स्त्री० [सं० शाक+चेरी ?] मेहंदी। नखरंजन। हिना।

साकट—संज्ञा पु० [सं० शाक्त] १ शाक्त मत का अनुयायी। उ०—सोवत साधु जगाइए करै नाम का जाप। ये तीनो सोवत भले साकट सिंह रु साप।—सतवाणी०, पृ० २८६। २ वह जो मांसादि भक्षण करता हो। ३ वह जिसने किसी गुरु से दीक्षा न ली हो। गुरुरहित। ४ दुष्ट। पाजी। शरीर।

साकणी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शाकिनी] डाकिनी। पिशाचिनी। उ०—कलकै वीर करालो, हलकै साकण्याँ।—नट०, पृ० १७०।

साकत[1]—संज्ञा पु० [सं० शाक्त] दे० 'साकट'।

साकत(पु)[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] दे० 'शक्ति'। उ०—वही अनेक साकते। कहत चद बाकते।—पृ० रा०, ६।१८७।

साकत्ति(पु)—वि० [हिं०] दे० 'शक्ति'। उ०—चढ्या मनि सुलतान साहाब ताजी। जर जीन अमाल साकत्ति गाजी। पृ० रा०, १६।२६।

साकबंधी—वि० [हिं० साका+बाँधना] सब मर चलानेवाला (राजा)। उ०—गए साकबंधी सबा बाधि केत।—धर्मा०, पृ० ११।

साकम—संज्ञा पु० [सं० सक्थम, मि० प० सांका] घोड़े आदि का छोटा पुत्र। उ०—बछवार, साकम बोट पाखरि नीक नीक निकेतना।—कीर्ति०, पृ० २६।

साकर[1]†—वि० [सं० सङ्कीर्ण] संकीर्ण। सकरा। तंग।

साकर[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला] दे० 'सांकल'।

साकर[3]†—संज्ञा स्त्री० [हिं० शक्कर तुल० सं० शर्करा] दे० 'शक्कर'। उ०—जापर कृपा सोई मन जानै। गूगो साकर कहा बखानै।—रैदास०, पृ० ८८।

साकर(पु)[4]—संज्ञा स्त्री० [सं० शाखा+हिं० ड (प्रत्य०)] साख। धाक। खलबली। उ०—अंजन सुगंजन साकरे। जे करत दिसि दिसि साकरे।—पद्माकर ग्र०, पृ० ८।

साकल[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खल] दे० 'सांकल'।

साकल[2]—संज्ञा पु० [सं० शाकल] १ पंजाब (वाहीक) का पुराना नाम। २ मद्र देश का एक नगर। स्यालकोट।

साकल्य[1]—संज्ञा पु० [सं० शाकल्य] दे० 'शाकल्य'।

साकल्य[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्णता। समग्रता। किसी वस्तु का पूर्ण होने का भाव।

साक यक—वि० [सं०] रोगी। रुग्ण। बीमार।

साकल्लि(पु)†—संज्ञा पु० [सं० शाकल्य] दे० 'शाकल्य'। उ०—अब हम उभय प्रकार मुनि जिय जाना तोहि बखानि। एक अग्नि महि साकल्लि होमै सो प्रवृत्ती जानि।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० ४०।

साकवरा—संज्ञा पु० [?] बैल। वृषभ।

साकांक्ष—वि० [सं० साकाङ्क्ष] १ आशा से युक्त। इच्छुक। चाहनेवाला। २ महत्वपूर्ण। ३ जिसके लिये कुछ और पूरक वस्तु अपेक्षित हो (को०)।

साका—संज्ञा पु० [सं० शाका] १ संवत्। शाका।

क्रि० प्र०—चलना।—चलाना।

२ ख्याति। प्रसिद्धि। शोहरत। उ०—घहरत घटा धुनि धमकत धौंसा करि साका।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० २८२। ३ यश। कीर्ति। उ०—आनँद के घन प्रीति साकौ न बिगारिए।—घनानंद, पृ० ४०। ४ कीर्ति का स्मारक। ५ धाक। रोब।

मुहा०—साका करना = महान् कार्य करके कीर्ति स्थापित करना। उ०—साकौ करि पहुँतौ सरग, अचलौ ऐ उजवाल।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ८२। साका चलना = प्रभाव माना जाना। उ०—हृदय मुकुतामाल निरखत वारि अवलि बलाक। करज कर पर कमल वारत चलति जहँ तहँ साक।—सूर

(शब्द०)। साका चलाना = रोब जमाना। धाक जमाना। साका बाँधना = दे० साका चलाना'। उ०—किते विकरमाजीत साका बाँधि मर गए।—पलटू०, भा० २, पृ० ८४।

६ कोई ऐसा बड़ा काम जो सब लोग न कर सकें और जिसके कारण कर्ता की कीर्ति हो। उ०—गीध मानो गुरु, कपि भालु मानो मीन कैं, पुनीत गीत साके सब साहब समत्थ के।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

७ समय। अवसर। मौका। उ०—जो हम मरन दिवस मन ताका। आजु आइ पूजी वह साका।—जायसी (शब्द०)।

साकार[1]—वि० [स०] १ जिसका कोई आकार हो। जिसका स्वरूप हो। जो निराकार न हो। आकार या रूप से युक्त। २ मूर्तिमान। साक्षात्। ३ स्थूल। व्यक्त। ४ अच्छे आकार का। सुंदर (को०)।

साकार[2]—संज्ञा पु० ईश्वर का वह रूप जो आकार युक्त हो। ब्रह्म का मूर्तिमान स्वरूप।

साकारता—संज्ञा स्त्री० [स०] साकार होने का भाव। साकारपन।

साकारोपासना—संज्ञा स्त्री० [स०] ईश्वर की वह उपासना जो उसका कोई आकार या मूर्ति बनाकर की जाती है। ईश्वर की मूर्ति बनाकर उसकी उपासना करना।

साकित—संज्ञा पु० [स० शाक्त] दे० 'शाक्त'। उ०—साकित गिरही बानेधारी है सबही अज्ञान।—चरण० बानी, पृ० ८४।

साकिन—वि० [अ०] निवासी। रहनेवाला। बाशिंदा। जैसे,—रामलाल साकिन मौजा रामनगर। २ निश्चेष्ट। गतिहीन (को०)। ३ स्वर वर्ण से रहित। हलंत (को०)।

साकिनी—संज्ञा स्त्री० [स० शाकिनी] पिशाचिनी। डाइन। उ०—घूमत कहुँ काली करालवदना मुँह बाए। झुंड डाकिनी और साकिनी संग लगाए।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ३१।

साकिया—संज्ञा पु० [अ० साकियह्] शराब पिलानेवाली स्त्री। उ०—जो बद कर पलकें सहज दो घूँट हँसकर पी गया। जिससे सुधा मिश्रित गरल वह साकिया का जाम है।—हिल्लोल, पृ० ३६।

साकी[1]—संज्ञा पुं० [देश०] कपूर कचरी। गंध पलाशी।

साकी[2]—संज्ञा पु० [अ० साकी] १ वह जो लोगों को मद्य पिलाता हो। शराब पिलानेवाला। उ०—सिर्फ खैयामों की आवश्यकता है, साकी हजारों सुराही लिए यहाँ तैयार मिलेंगे।—किन्नर०, पृ० ३७। २ वह जिसके साथ प्रेम किया जाय। माशूक।

साकुच—संज्ञा पुं० [स०] सकुची मछली। शकुल मत्स्य।

साकुन, साकुन्न—संज्ञा पु० [स० शाकुन] दे० 'शाकुन-२'। उ०—साकुन्न कला क्रीडन विसार। चित्तन सुजोग कवि चवत चारु।—पृ० रा०, १।७३३।

साकुर—संज्ञा पु० [हि०] घोड़ा। उ०—एता लिछमण आपिया, साकुर ऊँट समाज।—शिखर०, पृ० १०६।

साकुरुड—संज्ञा पुं० [स० साकुरण्ड] दे० 'सकुरुड'।

साकुल—वि० [स०] हतबुद्धि। परीशान। घबड़ाया हुआ [को०]।

साकुश—संज्ञा पुं० [डिं०] घोड़ा। अश्व। बाजि।

साकूत—वि० [स०] १ अर्थयुक्त। सार्थक। साभिप्राय। २ क्रीडापूर्वक। ३ शृंगारप्रिय। स्वेच्छाचारी। विषयी [को०]।

साकूतस्मित—संज्ञा पु० [स०] १ अर्थपूर्ण मुस्कान। २ कामुक दृष्टि। वासनाभरी निगाह [को०]।

साकूतहसित—संज्ञा पु० [स०] दे० 'साकूतस्मित' [को०]।

साकृत—संज्ञा पु० [स० शाकल्य] शाकल्य। साकला हवन करने की वस्तु। उ०—गिद्धि सिद्धि बेताल पेपि पल साकृत छड्डिय।—पृ० रा०, २५।४५३।

साकेत—संज्ञा पु० [स०] अयोध्या नगरी। अवधपुरी।

साकेतक—संज्ञा पु० [स०] साकेत का निवासी। अयोध्या का रहनेवाला।

साकेतन—संज्ञा पु० [स०] साकेत। अयोध्या।

साकोटक—संज्ञा पु० [स० शाखोटक] शाखोट वृक्ष। सिहोर।

साकोह—संज्ञा पु० [स० शाल] साख। शाल। वृक्ष।

साक्ता—संज्ञा पुं० [स० शाक्त] दे० 'शाक्त'। उ०—सो एक समै एक साक्त गाम की सहनगी लै भूमि भरन आयो।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० ३१७।

साक्तुक[1]—संज्ञा पु० [स०] १ जौ जिससे सत्तू बनता है। भूना हुआ जौ। २ जौ का सत्तू। ३ एक प्रकार का विष।

साक्तुक[2]—वि० सत्तू संबंधी। सत्तू का।

साक्ष—वि० [स०] १ नेत्रयुक्त। नेत्रसहित। २ अक्षमाला या जप के मनकों से युक्त [को०]।

साक्षर—वि० [स०] जिसे अक्षरों का बोध हो। जो पढ़ना लिखना जानता हो। शिक्षित।

साक्षरता—संज्ञा पुं० [स० साक्षर+ता (प्रत्य०)] शिक्षित होने का भाव। पढ़ा लिखा होना।

साक्षरता आंदोलन—संज्ञा पु० [हिं० साक्षरता+आंदोलन] अपढ़ लोग पढ़ लिख सकें और उनमें शिक्षा का प्रसार हो इस दृष्टि से किया जानेवाला आंदोलन या आयोजन। शिक्षाप्रसार अभियान।

साक्षात्[1]—अव्य० [स०] १ सामने। समुख। प्रत्यक्ष। २. वस्तुतः। ठीक ठीक। ३ सीधे। बिना किसी माध्यम के।

साक्षात्[2]—वि० मूर्तिमान्। साकार। स्पष्ट। जैसे,—आप तो साक्षात् सत्य हैं।

साक्षात्[3]—संज्ञा पु० भेंट। मुलाकात। देखा देखी।

साक्षात्कर—वि० [स०] साक्षात् करनेवाला। साक्षात्कारी।

साक्षात्करण—संज्ञा पु० [स०] १ दृष्टिगत कराने का कार्य। आँखों के समुख उपस्थित करना। २ इंद्रियबोध कराना। ३ आभ्यंतरिक ज्ञान। आंतरिक ज्ञान [को०]।

साक्षात्कर्ता—वि० [सं० साक्षात्कर्तृ] साक्षात् करनेवाला [को०]।

साक्षात्कार—संज्ञा पु० [सं०] १ भेंट। मुलाकात। मिलन। २ पदार्थों का इंद्रियों द्वारा होनेवाला ज्ञान।

साक्षात्कारी—संज्ञा पु० [सं० साक्षात्कारिन्] १ साक्षात् करनेवाला। २ भेंट या मुलाकात करनेवाला।

साक्षात्कृत—वि० [सं०] साक्षात्कार कराया हुआ। प्रत्यक्ष कराया हुआ [को०]।

साक्षात्क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अतर्ज्ञानपरक प्रत्यक्ष ज्ञान। २ प्रत्यक्षीकरण [को०]।

साक्षाद्दृष्ट—वि० [सं०] साक्षात् देखा हुआ। आँखों से देखा हुआ।

साक्षिणी—वि० स्त्री० [सं०] साक्ष्य प्रस्तुत करनेवाली। प्रमाणस्वरूप। उ०—कहेगी शतद्रु शतसगरों की साक्षिणी सिक्ख थे सजीव।—लहर, पृ० ६०।

साक्षिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] साक्षी का काम। साक्षित्व। गवाही।

साक्षित्व—संज्ञा पु० [सं०] साक्षिता [को०]।

साक्षिद्वैध—संज्ञा पुं० [सं०] साक्षी मे दुविधा होना [को०]।

साक्षिपरीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गवाह की परीक्षा [को०]।

साक्षिप्त—अव्य० [सं०] अविचारपूर्वक। अविचारित। बिना विचारे।

साक्षिप्रत्यय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'साक्षीप्रत्यय'।

साक्षिभावित—वि० [सं०] गवाह के बयान से सिद्ध [को०]।

साक्षिभूत—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

साक्षिमान्‌आधि—संज्ञा पुं० [सं०] साक्षियों के सामने गिरवी रखा हुआ धन जिसकी लिखापढी न की गई हो।

साक्षी[1]—संज्ञा पुं० [सं० साक्षिन्] [वि० स्त्री० साक्षिणी] १ वह मनुष्य जिसने किसी घटना को अपनी आँखों देखा हो। चश्मदीद गवाह। २ वह जो किसी बात की प्रामाणिकता बतलाता हो। गवाह। ३ देखनेवाला। दर्शक। ४ परमात्मा (को०)। ५ दर्शन शास्त्र मे पुरुष या अहम् (को०)।

साक्षी[2]—वि० १ द्रष्टा। देखनेवाला। अपनी आँखों से किसी घटना को देखनेवाला [को०]।

साक्षी[3]—संज्ञा स्त्री० किसी बात को कहकर प्रमाणित करने की क्रिया।

साक्षीद्वैध—संज्ञा पु० [सं०] विरोधी बयान। बयानों मे परस्पर अंतर्विरोध [को०]।

साक्षीपरीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गवाह की परीक्षा लेना। जिरह [को०]।

साक्षीप्रत्यय—संज्ञा पु० [सं०] गवाहों का बयान [को०]।

साक्षीप्रश्न—संज्ञा पु० [सं०] साक्षीपरीक्षा। जिरह [को०]।

साक्षीभावित—वि० [सं०] प्रमाण या सबूत से सिद्ध [को०]।

साक्षीभूत[1]—वि० [सं०] १ साक्षात्कार करनेवाला। स्वयंद्रष्टा। २ प्रमाणस्वरूप। उ०—वर सो जीवन मुक्त है तुरिया साक्षीभूत।—सुंदर० ग्रं०, भा० २, पृ० ७८६।

साक्षीभूत[2]—संज्ञा पु० विष्णु [को०]।

साक्षीलक्षण—संज्ञा पु० [सं०] साक्षी से सिद्ध। प्रमाण से सिद्ध [को०]।

साक्षेप—वि० [सं०] १ पक्षपाती। पक्ष लेनेवाला। आपत्तिजनक। २ व्ययपूर्ण। नाने से युक्त [को०]।

साक्ष्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ साक्षी का काम। गवाही। शहादत। प्रमाण। उ०—दरिया साहब के निधन के लगभग ३० वर्ष बाद ही इस पथ के तीन साधुओं के साक्ष्य के आधार पर अपना वृत्तांत लिखा था।—संत० दरिया, पृ० ८। २ दृश्य।

साक्ष्य[2]—वि० दृश्य। दिखाई देनेवाला। (समासांत में प्रयुक्त)।

साख[1]—संज्ञा पुं० [हिं० साक्षी] १ साक्षी। गवाह। २. गवाही। शहादत। उ०—(क) तुम बसीठ राजा की ओरा। साख होहु यह भीख निहोरा।—जायसी (शब्द०)। (ख) जैसी भुजा, कलाई तेहि विधि जाय न भाख। कंकन हाथ होय जेहि तेहि दरपन का साख।—जायसी (शब्द०)।

मुहा०—साख पूरना = साक्षी भरना। समर्थन करना।

साख[2]—संज्ञा पुं० [सं० शाका, हिं० साका] १ धाक। रोब। २ मर्यादा। उ०—प्रीति बेन उरझइ जब तब सुजान मुख साख।—जायसी (शब्द०)। ३ बाजार मे वह मर्यादा या प्रतिष्ठा जिसके कारण आदमी लेन देन कर सकता हो। लेन-देन का खरापन या प्रामाणिकता। जैसे,—जबतक बाजार मे साख बनी थी, तबतक लोग लाखों रुपए का माल उन्हें उठा देते थे। ४ विश्वास। भरोसा।

क्रि० प्र०—बनना।—बिगडना।

साख†[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शाखा] १ दे० 'साखा'। २ उपज। फसल। उ०—ढाढी एक संदेसडउ कहि ढोलउ ममझाइ। जोवण आंवउ फलि रह्यउ साख न आवउ आइ।—ढोला०, दू० ११७।

साख(पु)[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखा] शिखा। ज्वाला। उ०—सपख अगनग साख सी। रत रोप मारग राप सी।—रघु० रू०, पृ० ६७।

साखत(पु)—संज्ञा पुं० [?] घोड़े के आभूषण विशेष। उ०—साखत पेमवद अरु पूजो। हीरन जटित हैकलैं दूजी।—हम्मीर०, पृ० ३।

साखना(पु)—क्रि० स० [सं० साक्षि, हिं० साख+ना (प्रत्य०)] साक्षी देना। गवाही देना। शहादत देना। उ०—जन की और कौन पत राखै। जात पाँति कुलकानि न मानत वेद पुरानन साखै।—सूर०, १।१५।

साखर(पु)†—वि० [सं० साक्षर] जिसे अक्षरों का ज्ञान हो। पढा लिखा। साक्षर।

साखा(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० शाखा] १ वृक्ष की शाखा। डाली। टहनी। उ०—भरी भार साखा रही भुम्मि लग्गी। लगे सकुल पादप तै उमग्गी।—ह० रासो, पृ० ३५। २ वंश या जाति की शाखा या उपभेद। ३ दे० 'शाखा'। ४ वह कीली जो चक्की के बीच मे लगी होती है। चक्की का धुरा। ५ सोचने विचारने का सिलसिला। विचारक्रम। उ०—को करि तर्क बढ़ावै साखा।—मानस, १।५२।

**साखामृग**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० शाखामृग] दे० 'शाखामृग'। उ०—सठ साखामृग जोरि सहाई। बाधा सिंधु इहै प्रभुताई। —मानस, ६।२८।

**साखि**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० साक्षि, प्रा० साक्खि] दे० 'साखी'। गवाही। उ०—व्याध, गनिका, गज, अजामिल साखि निगमनि भने। —तुलसी ग्र०, पृ० ५३६।

**साखिल्य**—सज्ञा पु० [स०] दोस्ती। मैत्री। मित्रता [को०]।

**साखी**[1]—सज्ञा पु० [स० साक्षि] साक्षी। गवाह। उ०—(क) ऊँच नीच ब्यौरौ न रहाइ। ताकी साखी मैं सुनि भाइ।—सूर०, १।२३०। (ख) सूरदास प्रभु अटक न मानत ग्वाल सबै हैं साखी।—सूर०, १०।७७४।

**साखी**[2]—सज्ञा स्त्री० १ साक्षी। गवाही।

मुहा०—साखी पुकारना = साक्षी का कुछ कहना। साक्षी देना। गवाही देना। उ०—याते योग न आवै मन मे तू नीके करि राखि। सूरदास स्वामी के आगे निगम पुकारत साखि।—सूर (शब्द०)।

२ ज्ञान सबधी पद या दोहे। वह कविता जिसका विषय ज्ञान हो। जैसे,—कबीर की साखी। उ०—साखी सबदी दोहरा कहि किहनी उपखान। भगति निरूपहि भगत कलि निंदहि बेद पुरान।—तुलसी ग्र०, पृ० १५१।

**साखी**[3]—सज्ञा पु० [स० शाखिन्] १ (शाखाओ वाला) वृक्ष। पेड। उ०—(क) तुलसीदास रूँध्यो यहै मठ साखि सिहारे।—तुलसी (शब्द०)। (ख) धरती बान बेधि सब राखी। साखी ठाढ देहिं सब साखी।—जायसी (शब्द०)। २ †पच। निर्णायक।

**साखीभूत**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० साक्षीभूत] दे० 'साक्षिभूत'। उ०—करता है सो करेगा, दादू साखीभूत।—दादू०, पृ० ४५७।

**साखू**—सज्ञा पु० [स० शाख] शाल वृक्ष। सखुआ। अश्वकर्ण वृक्ष।

**साखेय**—वि० [स०] १ जो सखा या मित्र से सबधित हो। २. मैत्रीपूर्ण। मिलनसार [को०]।

**साखोचार**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० शाखोच्चार] दे० 'साखोचारन'। उ०—वर कुअरि करतल जोरि साखोचारु दोउ कुलगुर करैं। —मानस, १।३२४।

**साखोचारन**Ⓤ†—सज्ञा दे० [स० शाखोच्चारण] विवाह के अवसर पर वर और वधू के वश गोत्रादि का चिल्ला चिल्लाकर परिचय देने की क्रिया। गोत्रोच्चार।

**साखोच्चार**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० शाखोच्चार] दे० 'साखोचारन'। उ०—वर दुलहिनिहि बिलोकि सकल मन रहसहि। साखोच्चार समय सब सुर मुनि बिहसहि।—तुलसी ग्र०, पृ० ४१।

**साखोट**[1]—सज्ञा पु० [स० शाखोट] शाखोट वृक्ष। सिहोर वृक्ष। सिहोरा। भूतावास।

**साखोट**†[2]—वि० छोटा, टेढा और भद्दा (वृक्ष)।

**साख्त**[1]—सज्ञा स्त्री० [फा० साख्त] १ बनावट। गढन। २ कृत्रिमता। बनावटीपन। ३ काट छाँट। तराश। ४ बहाना। व्याज-वार्ता [को०]।



**साख्ता**—वि० [फा० साख्तह्] १ निर्मित। बनाया हुआ। २ बनावटी। कृत्रिम। नकली।

यौ०—साख्ता परदाख्ता = (१) पालापोसा। बनाया सँवारा। (२) कृत। किया कराया। किया हुआ।

**साख्त**Ⓤ†[2]—सज्ञा पु० [स० शाक्त, पु० हि० साकट, साकत] दे० 'शाक्त'। उ०—साख्त मुठे बाट महिं जानि न मिलहिं हजूर। सत सहाई साथ बिनु मरहि बिसूर बिसूर।—प्राण०, पृ० २५३।

**साख्तगी**—सज्ञा स्त्री० [फा० साख्तगी] बनावट। गढन [को०]।

**साख्य**—सज्ञा पु० [स०] सखा भाव। मैत्री। मित्रता [को०]।

**साख्यात**Ⓤ†—अव्य० [स० साक्षात्(कृत्) त्] दे० 'साक्षात्'। उ०—अवर सिरीमुख उक्त रा, उभै भेद अखियात। पहिलो कल्पत पेखजै, समझ वियौ साख्यात।—रघु० रू०, पृ० ६६।

**साग**[1]—पज्ञा पु० [स० शाक] पौधो की खाने योग्य पत्तियाँ। शाक। भाजी। जैसे,—सोए, पालक, बथुए, मरसे आदि का साग। २ पकाई हुई भाजी। तरकारी। जैसे,—आलू का साग, कुम्हडे का साग। (वैष्णव)।

यौ०—सागपात = कदमूल। रूखासूखा भोजन। जैसे,—जो कुछ सागपात बना है, कृपा करके भोजन कीजिए।

मुहा०—सागपात समझना = बहुत तुच्छ समझना। कुछ न समझना।

**साग**Ⓤ[2]—सज्ञा स्त्री० [स० शक्ति, हिं० साँग] दे० 'साँग'। उ०—गहि सुभ साग उद्द कर लिनिय। लखत पसर सावतन किनिय। —प० रासो०, पृ० १२०।

**सागड़ी**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० शाकटिक] शकट या रथ चलानेवाला। सारथी। उ०—सोच करै नह सागडी, धवल तणी दिस भाल।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ३८।

**सागम**—वि० [स०] यथान्याय। न्याय्य। उचित। ईमानदारी से प्राप्त। वैधानिक [को०]।

**सागरगम**—वि० [स० सागरम्गम] दे० 'सागरग'।

**सागर**[1]—सज्ञा पु० [स०] १ समुद्र। उदधि। जलधि। दे० 'समुद्र'।

विशेष—ऐसा माना जाता है कि राजा सगर के नाम पर 'सागर' शब्द पडा।

२ बडा तालाब। झील। जलाशय। ३ सन्यासियो का एक भेद। ४ एक प्रकार का मृग। ५ चार की सख्या (को०)। ६ दस पद्म की सख्या (को०)। ७ एक नाग। नागदैत्य (को०)। ८ गत उत्सर्पिणी के तीसरे अर्हत। ९ सगर के पुत्र (को०)।

मुहा०—सागर उमडना = आधिक्य होना। मात्रा मे अत्यधिक होना। उ०—सागर उमडा प्रेम का खेवटिया कोइ एक। सब प्रेमी मिलि बूडते जो यह नहिं होता टेक।—कबीर सा० स०, पृ० ५१।

**सागर**[2]—वि० सागर सबधी। समुद्र सबधी।

**सागर**[3]—सज्ञा पु० [अ० साग़र] १ प्याला। खोरा। २ शराब का प्याला। उ०—वचन का पी सागर सुराही अकल। भर्या मद फिरा सत अजाँ मे नवल।—दक्खिनी०, पृ० २६७।

सागरक—सज्ञा पु० [स०] एक जनपद या नगर [को०]।

सागरकश—वि० [फा० सागरकश] शराब पीनेवाला। मद्यप [को०]।

सागरगभीर—सज्ञा पु० [स० सागरगम्भीर] समुद्र की तरह गभीर समाधि [को०]।

सागरग, सागरगम—वि० [स०] समुद्र यात्रा करनेवाला। समुद्र मे जानेवाला [को०]।

सागरगमा, सागरगा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नदी। दरिया। २ गगा नदी (जो०)।

सागरगामिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] नदी। सरिता [को०]।

सागरगामी—वि० [स० सागरगामिन्] [स्त्री० सागरगामिनी] दे० 'सागरग' [को०]।

सागरगासुत—सज्ञा पु० [स०] गगा के पुत्र—भीष्म [को०]।

सागरज—सज्ञा पुं० [स०] समुद्र लवण।

सागरजमल—सज्ञा पु० [स०] समुद्रफेन। अब्धिकफ।

सागरधरा—सज्ञा स्त्री० [स०] पृथ्वी। भूमि।

सागरधीरचेता—वि० [स० सागरधीरचेतस्] समुद्र की तरह विशाल, दृढ तथा गभीर मनोवृत्तिवाला [को०]।

सागरनेमि, सागरनेमी—सज्ञा स्त्री० [स०] धरित्री। पृथ्वी।

सागरपर्यंत—क्रि० वि० [स० सागरपर्यन्त] १ सागर से घिरा हुआ (जैसे,—पृथ्वी)। २ सागर तक। आसमुद्र [को०]।

सागरप्लवन—सज्ञा पु० [स०] १ समुद्र पार करना। समुद्र सतरण। २ घोडे की एक विशेष चाल [को०]।

सागरमति—सज्ञा पु० [स०] एक बोधिसत्व का नाम [को०]।

सागरमुद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] ध्यान, आराधना करने की एक प्रकार की मुद्रा।

सागरमेखला—सज्ञा स्त्री० [स०] पृथ्वी।

सागरलिपि—सज्ञा स्त्री० [स०] ललित विस्तर के अनुसार एक प्राचीन लिपि।

सागरवरधर—सज्ञा पुं० [स०] महासागर।

सागरवासी—सज्ञा पु० [स० सागरवासिन्] १ वह जो समुद्र मे रहता हो। समुद्र मे रहनेवाला। २ वह जो समुद्र के तट पर रहता हो। समुद्र के किनारे रहनेवाला।

सागरव्यूहगर्भ—सज्ञा पु० [स०] एक बोधिसत्व का नाम।

सागरशय—सज्ञा पु० [स०] वह जो समुद्र मे सोता हो, विष्णु का एक नाम [को०]।

सागरशुक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] समुद्री सीप [को०]।

सागरसुता—सज्ञा स्त्री० [स०] लक्ष्मी [को०]।

सागरसूनु—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा [को०]।

सागरात—सज्ञा पु० [स० सागरान्त] समुद्र का किनारा।

सागरांता—सज्ञा स्त्री० [स० सागरान्ता] पृथ्वी। धरती [को०]।

सागराबरा—सज्ञा स्त्री० [स० सागराम्बरा] पृथ्वी।

सागरा—सज्ञा पुं० [स० सागर?] श्री राग का एक पुत्र। उ०—सावा सारग सागरा औ गधारी भीर। अस्ट पुत्र श्रीराग के गौल वुड गभीर।—माधवानल०, पृ० १९४।

सागरानुकूल—वि० [स०] समुद्र के किनारे पर बसा हुआ [को०]।

सागरापाग—वि० [स० सागरापाङ्ग] समुद्र से घिरा हुआ। जैसे,—पृथ्वी [को०]।

सागरालय—सज्ञा पु० [स०] १ सागर मे रहनेवाले, वरुण। २ वह जो समुद्र मे रहता हो। समुद्रवासी [को०]।

सागरावर्त—वि० [स०] समुद्र की खाडी [को०]।

सागरेश्वर—सज्ञा पु० [स०] एक तीर्थ का नाम।

सागरोत्थ—सज्ञा पु० [स०] समुद्री लवण।

सागरोद्गार—सज्ञा पु० [स०] समुद्र का उमडना। ज्वार [को०]।

सागरोपम—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो समुद्र की तरह उदात्त, अतलस्पर्श और गभीर हो। २ एक बहुत बडी सख्या (जैन)।

सागवन, सागवान—सज्ञा पु० [हिं० सागौन] एक वृक्ष दे० 'शाल—१'।

सागस—वि० [स० स+आगस] सापराध। अपराधी। कसूरवार। उ०—प्रीतम कौ जब सागस लहै। व्यगि अव्यगि वचन कछु कहै।—नद० ग्र०, पृ० १४७।

सागुन्य—सज्ञा पु० [स० शाकुनिक (=सगुनियाँ), हिं० सगुन] शकुन विचारनेवाला। उ०—सागुन्य सगुन फल कहे जब्व। प्रमुदित्त मन चहुआन तब्व।—पृ० रा०, १७।४५।

सागू—सज्ञा पुं० [अ० सैगो] १ ताड की जाति का एक प्रकार का पेड जो जावा, सुमात्रा, बोर्नियो आदि मे अधिकता से पाया जाता है और बगाल तथा दक्षिण भारत मे भी लगाया जाता है।

विशेष—इसके कई उपभेद है जिनमे से एक को माड भी कहते हैं। इसके पत्ते ताड के पत्तो की अपेक्षा कुछ लबे होते हैं और फल सुडौल गोलाकार होते है। इसके रेशो से रस्से, टोकरे और बुरुश आदि बनते है। कही कहीं इसमे से पाछकर एक प्रकार का मादक रस भी निकाला जाता है और उस रस से गुड भी बनता है। जब यह पद्रह वर्ष का हो जाता है तब इसमे फल लगते है और इसके मोटे तने मे आटे की तरह का एक प्रकार का सफेद पदार्थ उत्पन्न होकर जम जाता है। यदि यह पदार्थ निकाला न जाय, तो पेड सूख जाता है। यही पदार्थ निकालकर पीसते हैं और तब छोटे छोटे दानो के रूप मे सुखाते हे। कुछ वृक्ष ऐसे भी होते हैं जिनके तने के टुकडे टुकडे करके उनमे से गूदा निकाल लिया जाता है और पानी मे कूटकर दानो के रूप मे सुखा लिया जाता है। इन्ही को सागूदाना या साबूदाना कहते है। इस वृक्ष का तना पानी मे जल्दी नही सडता, इसलिये उसे खोखला करके उससे नली का काम लेते हैं। यह वृक्ष वर्षा ऋतु मे बीजो से लगाया जाता है।

२ दे० 'सागूदाना'।

सागूदाना—सज्ञा पुं० [हिं० सागू+दाना] सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा। साबूदाना।

विशेष—यह पहले आटे के रूप मे होता है और फिर कूटकर दानो के रूप मे सुखा लिया जाता है। यह बहुत जल्दी पच

जाता है, इसलिये यह दुर्बलो और रोगियो को पानी या दूध मे उबालकर, पथ्य के रूप मे दिया जाता है। इसे साबूदाना भी कहते हैं। विशेष— दे० 'साग्'।

सागे†—क्रि० वि० [?] प्रकट मे।—रघु० रू०, पृ० २३६।

सागो—सज्ञा पुं० [अ० सैगो] दे० 'साग्'।

सागौन—सज्ञा पु० [अ० सैगो] दे० 'शाल'—१।

साग्नि—वि० [स०] १ अग्नि सहित। अग्नियुक्त। २ यज्ञाग्नि को रखनेवाला। ३ अग्नि सबधी [को०]।

साग्निक'—सज्ञा पु० [स०] १ वह जिसके पास यज्ञ या हवन की अग्नि रहती हो। वह जो बराबर अग्निहोत्र आदि किया करता हो। अग्निहोत्री। २ अग्नि द्वारा साक्षी किया हुआ।

साग्र—वि० [स०] १. समस्त। कुल। सब। २ बचा हुआ। शेष। अधिक (को०)।

साघल㊎†—क्रि० वि० [स० सकल, प्रा० सगल, सयल] सब। समग्र। उ०—साठ अतेवर राजकुमार साघलाँ ऊपरि जाति पमाँर। —बी० रासो, पृ० ३०।

साच㊎—वि० [स० सत्य, प्रा० सच्च, हिं० सच] दे० 'सत्य'। उ०—इस पतिया का यह परिमाण। साच सील चालो सुलतान। —दक्खिनी०, पृ० २१।

साचक—सज्ञा स्त्री० [तु० साचक] मुसलमानो मे विवाह की एक रस्म जिसमे विवाह से एक दिन पहले वर पक्षवाले अपने यहाँसे कन्या के लिये मेहँदी, मेवे, फल तथा कुछ सुगधित द्रव्य आदि भेजते हैं।

साचय㊎—अव्य० [स० सत्यम्] वस्तुत। यथार्थत। सचमुच। उ०—सरन्नि राव राखि राखि मैं सरन्नि साचय। —ह० रासो, पृ० ५१।

साचरज㊎—वि० [स० स+आश्चर्य] आश्चर्य के साथ। आश्चर्ययुक्त। उ०- जयत (साचरज)—वाह! कार्तिकेय—वृत्रासुर के वचन सुनि चकित होइ सुरराइ।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ४६३।

साचरी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक रागिनी जो कुछ लोगो के मत से भैरव राग की पत्नी है।

साचार—वि० [स०] १ सद्व्यवहार से युक्त। २ सद् आचार से युक्त। अच्छे आचरणवाला [को०]।

साचि—क्रि० वि० [स०] वक्र से। टेढे तिरछे [को०]।

साचिवाटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद पुनर्नवा। गदहपूरना।

साचिविलोकित—सज्ञा पु० [स०] तिरछी निगाह। वक्र दृष्टि। टेढी चितवन [को०]।

साचिव्य—सज्ञा पुं० [स०] १ सचिव का भाव या धर्म। सचिवता। २ शासन (को०)। ३ सहायता। मदद।

साचिव्यासेप—सज्ञा पु० [स०] आपत्ति पूर्ण स्वीकृति। आपत्ति युक्त स्वीकार।

साचो कुम्हड़ा—सज्ञा पुं० [देश० साची+कुम्हडा] भतुआ कुम्हडा। सफेद कुम्हडा। पेठा।

साचीकृत—वि० [स०] १ टेढा बनाया हुआ। २ निचुडा। झुका हुआ। ३ विकृत।

साचीगुण—सज्ञा पु० [स०] वैदिक काल के एक देश का नाम।

साचीन—वि० [स०] बगल से आनेवाला [को०]।

साच्छात㊎—अव्य० [स० साक्षात्, प्रा० साच्छात] दे० 'साक्षात्'। उ०- अरु साच्छात मात को भ्रात। सो वह कस हत्यो तिहि बात।—नद० ग्र०, पृ० २१६।

साच्छी㊎—सज्ञा पु० [सं० साक्षी] दे० 'साक्षी'। उ०—महा मुद्ध साच्छी चिदुरूप। परमातम प्रभु परम अनूप।—दरिया० बानी, पृ० १६।

साछ㊎†—सज्ञा पु० [स० साक्ष्य] दे० 'साख', 'साक्ष्य'। उ०—सतगुर के सदकै करूँ, दिल अपणी का साछ।—कबीर ग्र०, पृ० १।

साछी㊎—सज्ञा पुं० [स० साक्षिन्] दे० 'साक्षी'। उ०—रसिक पपीहा साछी आछी अछरौटी के।—घनानद, पृ० २०५।

साज'—सज्ञा पुं० [स०] पूर्व भाद्रपद नक्षत्र।

साज'—सज्ञा पुं० [फा० साज, मि० स० सज्जा] १. सजावट का काम। तैयारी। ठाटबाट। २ वह उपकरण जिसकी आवश्यकता सजावट आदि के लिये होती हो। वे चीजे जिनकी सहायता से सजावट की जाती है। सजावट का सामान उपकरण। सामग्री। जैसे,—घोडे का साज (जीन लगाम, तग, दुमची आदि), लहँगे का साज (गोटा, पट्ठा, किनारी आदि) बरामदे का साज (खभे, घुडिया आदि)।

यौ०—साजसमाज = साज सज्जा। अलकार। उ०—आए साजसमाज सजि भूषन बसन सुदेश।—तुलसी ग्र० पृ० ८२। साजसामान।

मुहा०—साज सजना = तैयारी करना। व्यवस्था करना। उ०—मो कह तिलक साज सजि सोऊ।—मानस, २। १८२

३ वाद्य। बाजा। जैसे,—तबला, सारगी, जोड़ी, सितार, हार मोनियम आदि।

मुहा०—साज छेडना = बाजा बजना आरभ करना। साज मिलाना = बाजा बजाने से पहले उसका सुर आदि ठीक करना।

४. लडाई मे काम आनेवाले हथियार। जैसे,—तलवार, बदूक, ढाल, भाला आदि। उ०—करी तयारी काट मैं, सजा जुद्ध को साज।—हम्मीर० पृ० २६। ५ बढइयो का एक प्रकार का रदा जिससे गोल गलता बनाया जाता है। ६ मन जाल। घनिष्टता।

यौ०—साजबाज = हेलमेल। घनिष्टता।

क्रि० प्र०—करना।—रखना।—होना।

साज'—वि० १. बनानेवाला। मरम्मत या तैयार करनेवाला। काम करनेवाला। २ बनाया हुआ। निर्मित। रचित।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग यौगिक शब्दो के अत मे होता है। जैसे,—बडासाज, रगसाज, जुदासाज आदि।

साज'—सज्ञा पुं० [अ०] साजू या साल का वृक्ष जिसकी लकडी इमारती कामो मे आती है। उ०—इमारती लकडी मे सागौन,

साज, सेमल, बीजा, हल्दुआ, तिंशा, शीशम, सलई आदि किस्म की लकडी बहुतायत से पाई जाती है।—शुक्ल अभि० ग्र० पृ० १४।

**साजक**—संज्ञा पु० [स०] बाजरा। बजरा।

**साजगार**—वि० [फा० साजगार] १ शुभद। अनुकूल। माफिक [को०]।

**साजगिरी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] संपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

**साजड**—संज्ञा पु० [देश०] गुलू नामक वृक्ष जिससे कतीरा गोद निकलता है। विशेष दे० 'गुलू'।

**साजति**Ⓟ†—संज्ञा स्त्री० [हि० सजावट] सजावट। दे० 'सज्जा'। उ०—जान तणी साजति करउ। जीरह रगावली परिहरज्यो टोप।—बी० रासो, पृ० ११।

**साजन**—संज्ञा पु० [स० सज्जन] १ पति। भर्ता। स्वामी। २ प्रेमी। वल्लभ। ३ ईश्वर। ४ सज्जन। भला आदमी।

**साजना**Ⓟ[1]†—क्रि० स० [स० सज्जा] १ दे० 'सजाना'। उ०—(क) चढा असाढ गगन घन गाजा। साजा बिरह दुद दल बाजा —जायसी (शब्द०)। (ख) बेल ताल जुग हेम कलस गिरि कटोरि जिनिआ कुच साजा।—विद्यापति, पृ० ७१। २ मजाना। तैयार करना। ३ छोटे बडे पानो को उनके आकार के अनुसार आगे पीछे या ऊपर नीचे रखना। (तमोली)।

**साजना**Ⓟ[2]—संज्ञा पु० [सं० सज्जन] दे० 'साजन'। उ०—मिलहि जो बिछुरै साजना गहि गहि भेंट गहत। तपनि मिरगिसिरा जे सहहि अद्रा ते पलुहत।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० ३५४।

**साजना**Ⓟ[3]—संज्ञा पु० [हि० सजाना] सजावट। साज। सज्जा। उ०—कीन्हेसि सहस अठारह वरन वरन उपराजि। भुगुति दिहेसि पुनि सबन कहँ सकल साजना साजि।—जायसी ग्र०, पृ० २।

**साजबाज**—संज्ञा पु० [फा० साजबाज या स० साज+बाज (अनु०)] १ तैयारी। २ गठबधन। मेलजोल। घनिष्टता। ३ अभिसधि। गुप्त अभिसधि।

सयो० क्रि०—करना।—बढाना।—रखना।—होना।

**साजबार**—वि० [हि० साज+फा० बार (प्रत्य०)] शोभास्पद। शोभनीय। उ०—बोलना सुल्ताँ उसे है साजबार। सल्तनत जिसके दायम बरकरार।—दक्खिनी०, पृ० १८७।

**साजर**—संज्ञा पु० [देश०] गुलू नामक वृक्ष जिससे कतीरा गोद, निकलता है। विशेष दे० 'गुलू'-१।

**साजस**Ⓟ†—संज्ञा स्त्री० [फा० साजिश] दे० 'साजिश'। उ०—केता साजस साह सूँ, राजस राणो राण।—रा० रू०, पृ० ३६२।

**साजसामान**—संज्ञा पु० [फा० साजसामान] १ सामग्री। उपकरण। असबाब। जैसे,—बारात का सब साजसामान पहले से ठीक कर लेना चाहिए। २ ठाट बाट।

**साजात्य**—संज्ञा पुं० [स०] सजाति होने का भाव जो वस्तु के दो प्रकार के धर्मो मे से एक है (वस्तुओं का दूसरे प्रकार का धर्म वैजात्य कहलाता है)। सजातीयता। समान वर्ग या श्रेणी का होना।

**साजिंदा**—संज्ञा पुं० [फा० साजिन्दह्] १ वह जो कोई साज बजाता हो। साज या बाजा बजानेवाला। २ वेश्याओं की परिभाषा मे तबला, सारगी या जोडी बजानेवाला। मसरदार। समाजी।

**साजिश**—संज्ञा स्त्री० [फा० साजिश] १ मेल मिलाप। २ किसी के विरुद्ध कोई काम करने मे सहायक होना। किसी को हानि पहुँचाने मे किसी को सलाह या मदद देना। जैसे,—इतना बडा मामला बिना उनकी साजिश के हो ही नही सकता। ३ दुरभिसधि। षड्यत्र।

**साजिशी**—वि० [फा० साजिशी] साजिश करनेवाला। कुचक्री। षडयत्री [को०]।

**साजीवन**Ⓟ—वि० [सं० सह+जीवन] जीवनयुक्त। सजीव। उ०—केहि विधि मृतक होय साजीवन।—कबीर सा०, पृ० ८।

**साजुज्य, साजोज**Ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सायुज्य] दे० 'सायुज्य'। उ०—(क) ब्रह्म अगिनि जरि सुद्ध हूँ सिद्धि समाधि लगाइ। लीन होई साजुज्य मे, जोतै जोति लगाइ।—नद० ग्र०, पृ० १७६। (ख) सालोक सगति रहै, सामीप समुख सोइ। सारूप सारीखा भया, साजोज एकै होइ।—दादू०, पृ० १८६।

**साझना**Ⓟ†—क्रि० स० [हि० सजाना] दे० 'सजाना'। उ०—लाखाँ सूँ बधइ लडाई सार प्रथम साझिया सिपाई।—रा० रू०, पृ० २३६।

**साझा**—संज्ञा पुं० [सं० सहार्ध्य] १ किसी वस्तु मे भाग पाने का अधिकार। सराकत। हिस्सेदारी। जैसे,—बासी रोटी मे किसी का क्या साझा? (कहा०)।

क्रि० प्र०—लगाना।

२ हिस्सा। भाग। बाँट। जैसे,—उनके गल्ले के रोजगार मे हमारा आधा साझा है।

क्रि० प्र०—करना।—रखना।—होना।

**साझी**—संज्ञा पु० [हि० साझा+ई (प्रत्य०)] वह जिसका किसी काम या चीज मे साझा हो। साझेदार। भागी। हिस्सेदार।

**साझेदार**—संज्ञा पु० [हि० साझा+दार (प्रत्य०)] शरीक होनेवाला। हिस्सेदार। साझी।

**साझेदारी**—संज्ञा स्त्री० [हि० साझेदार+ई (प्रत्य०)] साझेदार होने का भाव। हिस्सेदारी। शराकत।

**साट**[1]—संज्ञा स्त्री० [हि० सट से अनु०] दे० 'साँट'।

**साट**†[2]—वि० [स० षष्ठि, प्रा० सट्ठि, हि० साठ] दे० 'साठ'। उ०—साट घरी मो साई की बीसर, पर नही मोकूँ येक घरी हो।—दक्खिनी०, पृ० १३२।

**साट**Ⓟ[3]—संज्ञा स्त्री० [हि० गाँठ का अनु०] साजिश। षडयत्र। उ०—शेख तकी बादशाह के पीर का विरुद्धता करना और

ब्राह्मणो तथा मुल्लाओं की साट से कबीर साहब के साथ कुव्यवहार करना।—कबीर म०, पृ० १०१।

**साट**ⓤ[४]—संज्ञा पु० [देशी सट्ट] सट्टा। विनिमय। बदला। उ०—खजर नेत विसाल, गय चाही लागइ चक्ख। एकण साटइ मारुवी, देह एराकी लक्ख।—ढोला०, दू० ४५८।

**साटक**—संज्ञा पु० [?] १ भूसी। छिलका। २ बिलकुल तुच्छ और निरर्थक वस्तु। निकम्मी चीज। उ०—गज बाजि घटा, भले भूरि भटा, बनिता सुत भौह तकै सब वै। धरनी धन धाम सरीर भलो, सुर लोकहु चाहि इहै सुख ख्वै। सब फोकट साटक है तुलसी, अपनो न कछू सपनो दिन द्वै। जर जाउ सो जीवन जानकीनाथ! जियै जग मे तुम्हरो बिन ह्वै।—तुलसी (शब्द०)। ३ एक प्रकार का छद। उ०—छद प्रबध कवित्त जति साटक गाह दुहत्थ।—पृ० रा०, १।८१।

विशेष—कुछ लोग इसे शार्दूलविक्रीडित का अपभ्रष्ट रूप मानते है। 'रूपदीप पिंगल' के अनुसार इसका लक्षण इस प्रकार है—कर्मे द्वादश अक्क आद सज्ञा मात्रा सिवो सागरे। दुज्जी वी करिके कलाष्ट दस वी अर्को विरामाधिकम्। अते गुर्व निहार धार सबके औरो कछू भेद ना। तीसो मत्त उनीस अक्क चरनेसेसो भणै साटिकम्। यथा—आदीदेव प्रनम्य नम्य गुरु य वानीय वदे पय।—पृ० रा० १।१।

**साटन**—संज्ञा पु० [अ० सैटिन] एक प्रकार का बढिया रेशमी कपडा जो प्राय एकरुखा और कई रगो का होता है। उ०—पीछे अधिकारियो की कुर्सियाँ लगी थी जिनपर भी नीली साटन चढी थी। भारतेदु ग्र०, भा० ३, पृ० १०७।

**साटना**ⓤ†—क्रि० स० [हि० सटाना] १ दो चीजो का इस प्रकार मिलाना कि उनके तल आपस मे मिल जायँ। सटाना। जोडना। मिलाना। २ दे० 'सटाना'।

**साटनी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] कलदरो की परिभाषा मे भालू का नाच।

**साटमार**†—संज्ञा पु० [हि० साँट+मारना] वह जो हाथियो को साँटे मार मारकर लडाता हो। हाथियो को लडानेवाला।

**साटमारी**—संज्ञा स्त्री० [हि० साटमार+ई (प्रत्य०)] साँटे मार मारकर हाथियो को लडाने का कार्य। इस प्रकार की हाथियो की लडाई।

**साटा**ⓤ—संज्ञा पु० [देशी सट्ट, सट्टक (=विनिमय)] १ सौदा। दे० 'सट्टा'। उ०—सोई सास सुजाण नर साँई सेती लाइ। करि साटा सिरजनहार सूँ मँहगे मोलि बिकाइ।—दादू०, पृ० ३८। २ दे० 'साठी'। उ०—कहूँ न मन माने निमष ज्यो मनि बिना भुयग। सद माखन साटी दही। धरयौ रहै मनमद।—पृ० रा०, २।५५६।

**साटिकफिटिक**†—संज्ञा पु० [अ० सर्टिफिकेट] प्रमाणपत्र। उ०—लखि कै साँचे साटिकफिटिक सराहै सब जन।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २४।

**साटी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ पुनर्नवा। गदहपूर्ना। २ सामान। सामग्री। दे० 'साँठी'। ३ कमची। दे० 'साँटी'। उ०—बाजीगर के हाथ डोरी है जब साटिन ते सटका।—सत० दरिया, पृ० १३४।

**साटे**‡—अव्य० [देशी] बदले मे। परिवर्तन मे।

**साटेबरदार**—संज्ञा पु० [हि० साट+फा० बर+दार (प्रत्य०)] लाठी धारण करनेवाले। लट्ठधारी। उ०—उधर साटेबरदार, बरछीवाले दौडे, पर चँदोवे के नीचे भगदड मच गई।—तितली, पृ० १६१।

**साटोप**—वि० [स०] १ आडबरयुक्त। अभिमानी। मदोद्धत। २. शानदार। शाही। ३ (जल आदि से) फूला या भरा हुआ। ४ गर्जता हुआ। गर्जन करता हुआ। जैसे, बादल (को०)।

**साठ**[१]—वि० [स० षष्ठि, प्रा० सट्ठि] पचास और दस। जो पचपन से पाँच ऊपर हो।

**साठ**[२] संज्ञा पु० पचास और दस के योग की सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६०।

**साठ**[३]—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'साटी'।

**साठन**—संज्ञा पु० [अ० सैटिन] दे० 'साटन'। उ०—बढिया साठन की मढी हुई कौंच, कुर्सिये जगह जगह मौके से रक्खी थी।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० १७७।

**साठनाठ**—वि० [हि० साँठि+नाठ (<नष्ट)] १ जिसकी पूँजी नष्ट हो गई हो। निर्धन। दरिद्र। उ०—साठनाठ लग बात को पूँछा। बिन जिय फिरै मूँज तन छूँछा।—जायसी (शब्द०)। २ नीरस। रूखा। ३ इधर उधर। तितर बितर। उ०—चेटक लाइ हरहि मन जब लहि होइ गथ फेट। साठनाठ उठि भए बटाऊ, ना पहिचान न भेंट।—जायसी (शब्द०)।

**साठसाती**—संज्ञा स्त्री० [स० सार्ध, प्रा० सड्ढ हि० साठ+स० सप्तक ?] 'साढेसाती'।

**साठा**[१] संज्ञा पु० [देश०] १ ईख। गन्ना। ऊख। २ एक प्रकार का धान जिसे साठी कहते है। विशेष दे० 'साठी-१'। ३ वह खेत जो बहुत लबा चौडा हो। ४ एक प्रकार की मधुमक्खी जिसे साठुरिया कहते है।

**साठा**[२]—वि० [हि० साठ] जिसकी अवस्था साठ वर्ष की हो गई हो। साठ वर्ष की उम्रवाला। जैसे,—साठा सो पाठा। (कहा०)।

**साठा**ⓤ[३]—संज्ञा पु० [हि० सट्टा] बदला। उ०—पच बथेरा माँगै दीजै। उनके साठे बहु हय लीजै।—प० रासो, पृ० ११९।

**साठी**[१]—संज्ञा पु० [स० षष्टिक] एक प्रकार का धान।

विशेष—कहते है कि यह धान साठ दिन मे तैयार हो जाता है—सावाँ, साठी साठ दिना। देव बरीसै रात दिना। इसी से इसे साठी कहते हैं। इसके दाने दो प्रकार के होते है—काले और सफेद। काले की अपेक्षा सफेद दानेवाला अधिक अच्छा समझा जाता है। इसमे गुण अधिक होता है।

**साठी**ⓤ[२]—संज्ञा पु० [हि०] दे० 'साटा-१'। उ०—कालबूत कसणी भई, सेवग साठी जान। रज्जब तावै तोरगर, यूँ सतगुरु की बानि।—रज्जब०, पृ० २०।

**साड**—वि० [सं०] जिसमे आर हो। नुकीला। नोकदार। डकवाला। चुभनेवाला (को०)।

**साडना**ⓤ†—क्रि० स० [हि० सालना] दे० 'सालना'। उ०—अल्लह कारणि आपका साडै अदरि माहि।—दादू०, पृ० ६४।

**साडा**—संज्ञा पु० [देश०] १ घोडो का एक प्राणघातक रोग। २ बाँस का वह टुकडा, जो नाव मे मल्लाहो के बैठने के स्थान के नीचे लगा रहता है।

**साडी**[1]—संज्ञा स्त्री० [स० शाटिका, प्रा०] स्त्रियो के पहनने की धोती जिसमे चौडा किनारा या बेल आदि बनी होती है। सारी।

**साड़ी**[2]—संज्ञा स्त्री० [स० सार] दे० 'साढी-२'।

**साढ**†—वि० [स० साध] दे० साढे'।

**साढसाती**—संज्ञा स्त्री० [हि० साढ + साती] दे० 'साढेसाती'। उ०—अवध साढसाती जनु बोली।—तुलसी (शब्द०)।

**साढ़ासती**ⓤ—संज्ञा स्त्री० [स० सार्धक, प्रा० सड्ढअ, साढअ + हि० साढा + साती] दे० 'साढेसाती'। उ०— राम ही केतु अर राहु साढासती। राम ही राम सो सप्तवारा।—राम० धर्म०, पृ० २१६।

**साढी**[1]—संज्ञा स्त्री० [स० आषाढ, हि० असाढ] वह फसल जो असाढ मे बोई जाती है। असाढी।

**साढ़ी**[2]—संज्ञा स्त्री० [देश० अथवा स० सज्ज + दधि] दूध के ऊपर जमनेवाली बालाई। मलाई। उ०—सब हेरि धरीहै साढी। लै उपर उपरते काटी।—सूर (शब्द०)।

**साढो**[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० शाल] शाल वृक्ष का गोद।

**साढी**[4]—संज्ञा स्त्री० [स० शाटिका] दे० 'साडी'।

**साढू**—संज्ञा पु० [स० श्यालिबोढृ] साली का पति। पत्नी की बहन का पति।

**साढे**—वि० [स० सार्द्ध] और आधे से युक्त। आधा और के साथ। जैसे,—साढे सात।

**साढ़ेचौहारा**—संज्ञा पु० [हि० साढे + चौ (= चार) + हारा (प्रत्य०)] एक प्रकार की बाँट जिसमे फसल का ५।१६ अश जमीदार को मिलता है और शेष ११।१६ अश काश्तकार को।

**साढ़ेसाती**—संज्ञा स्त्री० [हि० साढे + सात + ई (प्रत्य०)] शनि ग्रह की साढे सात वर्ष, साढे सात दिन आदि की दशा।

विशेष—फलित ज्योतिष के अनुसार शनि ग्रह की साढेसाती का फल बहुत बुरा होता है।

मुहा०—साढेसाती आना या चढना = दुर्दशा या विपत्ति के दिन आना।

**साण**ⓤ†[1]—संज्ञा पु० [फा० शान या सं० शाण] शान। गुमान। उ०—भोरे भोरे तन करै षडै करि कुरबाँण। मिट्टा कौडा ना लगै, दादू तौ हू साण।—दादू०, पृ० ६५।

**साण**ⓤ†[2]—संज्ञा स्त्री० [स० शाण] दे० 'सान[1]'। उ०—जन रज्जब गुरु साण परि भूँठी मनतर वारि।—रज्जब०, पृ० ११।

**सात**[1]—वि० [स० सप्त, प्रा० सत्त] पाँच और दो। छह से एक अधिक।

**सात**[2]—संज्ञा पुं० पाँच और दो के योग की सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७।

मुहा०—सात की नाक कटना = परिवार भर की बदनामी होना। सात पाँच = चालाकी। मक्कारी। धूर्तता। जैसे,—वह बेचारा सात पाँच नही जानता, सीधा आदमी है। सात बार होकर निकलना = भोजन का बिना पचे पतली दस्त होकर निकलना। सात पाँच करना = (१) बहाना करना। (२) झगडा करना। उपद्रव करना। (३) चालबाजी करना। धूर्तता करना। सात परदे मे रखना = (१) अच्छी तरह छिपा कर रखना। (२) बहुत सँभालकर रखना। सातवें आसमान पर चढना = बहुत घमडी बनना। अत्यधिक अभिमान दिखाना। उ०—मिसेज रालिसन तो जैसे सातवें आसमान पर चढ गई।—जिप्सी, पृ० १६६। सात समुद्र पार = बहुत दूर। उ०—सात समुद्र पार, सहस्रो कोस की दूरी पर बैठे।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३७२। सात सलाम ⓤ = अनेकानेक प्रणाम। अत्यत विनीतता। उ०—पथी एक सँदेसडउ कहिज्यउ सात सलाम।—ढोला०, दू० १३६। सातो भूल जाना = होश हवाश चला जाना। इद्रियो का काम न करना (पाँच इद्रियाँ, मन और बुद्धि ये सब मिलकर सात हुए)। सात राजाओ की साक्षी देना = बहुत दृढतापूर्वक कोई बात कहना। किसी बात की सत्यता पर बहुत जोर देना। उ०—मनसि वचन अरु कमना कछु कहति नाहिन राखि। सूर प्रभु यह बोल हिरदय सात राजा साखि।—सूर (शब्द०)। सात सीकें बनाना = शिशु के जन्म के छठें दिन की एक रीति जिसमे सात सीकें रखी जाती हैं। उ०—साथिये बनाइकै देहि द्वारे सात सीक बनाय। नव किसोरी मुदित ह्वै ह्वै गहति यशुदाजी के पायँ।—सूर (शब्द०)।

**सात**ⓤ[3]—संज्ञा पुं० [स० शान्त] साहित्य शास्त्र मे वर्णित रसो मे से ९ वाँ रस। विशेष—दे० 'शात'। उ०—बीभछ अरिन समूह, सात उप्पनौ मरन भय।—पृ० रा०, २५।५०१।

**सात**[4]—वि० [स०] १ प्रदत्त। दिया हुआ। २ नष्ट। ध्वस्त [को०]।

**सात**[5]—संज्ञा पु० [स०] आनद। प्रसन्नता [को०]।

**सातक**ⓤ[1]—वि० [स० सात्विक] दे० 'सात्विक'। उ०—राजस तामस सातक माया।—प्राण०, पृ० ५६।

**सातक**[2]—वि० [स० सप्त, हि० सात + क (प्रत्य०) या एक] लगभग सात। जो सात की सख्या के आस पास हो। उ०—साथ किरात छ सातक दीन्हे। मुनिवर तुरत बिदा चर कीन्हे।—मानस, २।२७१।

यौ०—छ सातक = दे० 'सातक[2]'।

**सातगी**ⓤ—संज्ञा स्त्री० [हि० सादगी] सात्विकता। सादगी। उ०—दादू माया का गुण बल करै आपा उपजै आइ। राजस् तामस सातगी, मन चचल ह्वै जाइ।—दादू०, पृ० ४१६।

**सातत्य**—संज्ञा पु० [स०] सततता। नैरतय। स्थायी रूप से चलते रहने की स्थिति [को०]।

**सातपूती**—संज्ञा स्त्री० [हि० सात + पूती] दे० 'सतपुतिया'।

**सातफेरी**—संज्ञा स्त्री० [हि० सात + फेरी] विवाह की भाँवर नामक रीति जिसमे वर और वधू अग्नि की सात बार परिक्रमा करते हैं। सप्तपदी।

**सातभाई**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सात + भाई] दे० 'सतभइया'।

**सातम**ⓤ—वि० [स० सप्तम] दे० 'सातवाँ'। उ०—छउ सातम दिन आवीयो। निहचइ औलगि चालणहार।—बी० रासो, पृ० ४६।

**सातमइ**ⓤ—वि० [हिं० सातम + इ (प्रत्य०)] दे० 'सातवाँ'। उ०—घाट दुर्घट ते लाँघीया। सातमइ मास पहुतइ हो जाई।—बी० रासो, पृ० ७६।

**सातला**—सज्ञा पु० [स० सप्तला, सातला] एक प्रकार का थूहर जिसका दूध पीले रग का होता है। सप्तला। भूरिफेना। स्वर्णपुष्पी।

**विशेष**—शालग्राम निघटु मे लिखा है कि यह एक प्रकार की बेल है जो जगलो मे पाई जाती है। इसके पत्ते खैर के पत्तो की भाँति और फूल पीले होते है। इसमे पतली चिप्टी फली लगती है जिसे सीकाकाई कहते है। इसके बीज काले होते हैं जिनमे पीले रग का दूध निकलता है। परतु इडियन मेडिकल प्लाट्स के अनुसार यह क्षुप जाति की वनस्पति है। इसकी डाल एक से तीन फुट तक लबी होती है जिसमे रोएँ होते है इसके पत्ते एक इच लबे और चौथाई इच चौडे अडाकार अनीदार होते है। डाल के अत मे बारीक फलो के घने गुच्छे लगते हैं जो लाल रग के होते है। फल चिकने और छोटे होते हैं। यह वनस्पति सुगधयुक्त होती है। इसका तेल सुगधित और उत्तेजक होता है जो मिरगी रोग मे काम आता है।

**सातवाँ**—वि० [हिं० सात + वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम से सात पर हो। सात की सख्यावाला। छह के बाद पडनेवाली सख्या मे सबधित। उ०—दूसरे तीसरे पाँचये सातये आठवे तो भला आइवो कीजिए।—ठाकुर श०, पृ० २।

**सातवाहन**—सज्ञा पु० [स०] शालिवाहन नरेश का नाम।

**सातसख**ⓤ—सज्ञा पु० [हिं० सात + सख] सात शख की एक माप। (सत०)। उ०—सात सख तिनकी ऊँचाई।—कबीर० श०, पृ० ७२।

**सातसूत**ⓤ—सज्ञा पु० [हिं० सात + सूत] सात प्रकार की वायु। (सत०)। उ०—सात सूत दे गड बहतरि, पाट लगी अधिकाई। कबीर ग्र०, पृ० १५३।

**साति**ⓤ[१]—सज्ञा स्त्री० [स० शास्ति] शासन। दड।

**साति**[२]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ देना। दान। भेट। २ प्राप्ति। उपलब्धि। ३ मदद। सहायता। ४ विनाश। बरबादी। ५ अत। निष्कर्ष। ६ तेज दर्द। तीव्र पीडा। ७ विराम। ठहराव। ८ सपत्ति। धन [को०]।

**सातिक, सातिग**ⓤ—वि० [स० सात्विक] दे० 'सात्विक'। उ०—राजस करि उतपति करै, सातिक करि प्रतिपाल।—दादू०, पृ० ४५७।

**सातिना**—सज्ञा स्त्री० [स०] कौटिल्य के अनुसार एक प्रकार का काली किस्म का चमडा।

**सातिया**—सज्ञा पु० [स० स्वस्तिक] दे० 'सथिया'।

**सातिशय**—वि० [स०] अत्यत। अत्यधिक। बहुत ज्यादा।

**साती**[१]—सज्ञा स्त्री० [देश०] साँप काटने की एक प्रकार की चिकित्सा जिसमे साँप के काटे हुए स्थान को चीरकर उसपर नमक या बारूद मलते है।

**साती**ⓤ†[२]—क्रि० वि० [हिं० साथ + ही = साथी] साथ ही साथ। उ०—चदन के रगी लिव हुआ चदन। क्यौं कर रोवे देख ए हिगन। —दक्खिनी०, पृ० २२।

**सातीन, सातीनक, सातीलक**—सज्ञा पु० [स०] मटर [को०]।

**सातुक, सातुक्क**ⓤ—सज्ञा पु० [स० सात्विक] दे० सात्विक'। उ०—(क) बमी सुर समरथौ हरयौ गोपी सु चित्त सुर। कछुव करयौ कछु करयौ गए सातुक सुभाव गुर।—पृ० रा०, २।३१७। (ख) सजे तामस राज सातुक्क तज्ज।—पृ० रा०, २५।५५३।

**सातुवती**ⓤ—वि० स्त्री० [स० सत्ववती] सत्व गुण से युक्त। सत्ववती। उ०—तुही राजस तामस सातुवती। तुही आहित हित्त चित्त चरती।—पृ० रा०, ६१।६६५।

**सात्त्व**—वि० [स०] सतोगुणी। सत्व गुण सबधी [को०]।

**सात्त्विक**—वि०, सज्ञा पु० [स०] दे० 'सात्विक'।

**सात्त्विकी**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सात्विकी'।

**सात्म**—वि० [स० सात्मन्] आत्मयुक्त। अपने से युक्त [को०]।

**सात्मक**—वि० [स०] आत्मा के सहित। आत्मायुक्त।

**सात्मीकृत**—वि० [स०] अभ्यस्त। आदी [को०]।

**सात्मीभाव**—सज्ञा पु० [स०] जनकत्व। कारणत्व [को०]।

**सात्म्य**[१]—सज्ञा पु० [स०] १ सारूप्य। सरूपता। २ वैद्यक के अनुसार वह रस जिसके सेवन से शरीर का किसी प्रकार का उपकार होता हो और जिसके फलस्वरूप प्रकृतिविरुद्ध कोई कार्य करने पर भी शरीर का अनिष्ट न होता हो। ३ ऋतु, काल, देश आदि के अनुकूल पडनेवाला आहार विहार आदि। ४ अनुकूलता (को०)। ५ आदत। स्वभाव (को०)।

**सात्म्य**[२]—वि० अनुकूल। रुचिकर [को०]।

**सात्यकि**—सज्ञा पु० [स०] एक यादव जिसका दूसरा नाम युयुधान था।

**विशेष**—सात्यकि के पिता का नाम सत्यक था। सात्यकि का कृष्ण के सारथी के रूप मे भी उल्लेख है। महाभारत के युद्ध मे इसने पाडवो का पक्ष लिया था। और इसने कौरवपक्षीय भूरिश्रवा को मारा था। श्रीकृष्ण और अर्जुन से इसने शस्त्रविद्या सीखी थी। यादवो के पारस्परिक मुशल युद्ध मे यह मारा गया था।

**सात्यकी**—सज्ञा पु० [स० सात्यकि] दे० 'सात्यकि'।

**सात्यदूत**—सज्ञा पु० [स०] वह होम जो सरस्वती आदि देवियो या देवताओ के उद्देश्य से किया जाय।

**सात्ययज्ञ**—सज्ञा पुं० [स०] एक वैदिक आचार्य का नाम।

**सात्यरथि**—सज्ञा पुं० [स०] वह जो सत्यरथ के वश मे उत्पन्न हुआ हो।

**सात्यवत**—सज्ञा पु० [स०] सत्यवती के पुत्र वेदव्यास।

**सात्यवतेय**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सात्यवत'।

**सात्यहव्य**—संज्ञा पुं० [सं०] वशिष्ठ के वंश के एक प्राचीन ऋषि का नाम।

**सात्यव**—संज्ञा पु० [?] साधक।

**सात्राजित** संज्ञा पु० [सं०] राजा शतानीक जो सत्राजित के वंशज थे।

**सात्राजिती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्यभामा का एक नाम।

**सात्व**—वि० [सं० सात्त्व] सत्व गुण संबंधी। सात्विक।

**सात्वत**[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ बलराम। २ श्रीकृष्ण। ३ विष्णु। ४ यदुवंशी। यादव। ५ मनुसंहिता के अनुसार एक वर्ण संकर जाति। जातिच्युत वैश्य और त्यक्त क्षत्रिय पत्नी से उत्पन्न संतान। ६ सात्वत के अनुयायी। वैष्णव (को०)। ७ एक प्राचीन देश का नाम।

**सात्वत**[2]—वि० १ सात्वत अर्थात् विष्णु से संबंधित। वैष्णव। २ भक्त। ३ पांचरात्र से संबंधित (को०)।

**सात्वती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शिशुपाल की माता का नाम। २ दे० 'सात्वती वृत्ति' (को०)। ३ सुभद्रा का एक नाम।

यौ०—सात्वतीपुत्र, सात्वतीसूनु = शिशुपाल।

**सात्वतीवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य के अनुसार चार नाटकीय वृत्तियों में से एक प्रकार की वृत्ति।

विशेष—इसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्भुत और शांत रसों में होता है। यह वृत्ति उस समय मानी जाती है जब कि नायक द्वारा ऐसे सुंदर और आनंदवर्धक वाक्यों का प्रयोग होता है, जिनसे उसकी शूरता, दानशीलता, दाक्षिण्य आदि गुण प्रकट होते हैं।

**सात्विक**[1]—वि० [सं० सात्त्विक] १, सत्वगुण से संबंध रखनेवाला। सतोगुणी। २ जिसमें सत्वगुण की प्रधानता हो। ३ सत्व गुण से उत्पन्न। ४ वास्तविक। यथार्थ। ५ सत्य। स्वाभाविक (को०)। ६ ईमानदार। सच्चा (को०)। ७ गुणयुक्त (को०)। ८ शक्तिशाली। ओजपूर्ण (को०)। ९ आंतरिक भावना से प्रेरित (को०)।

**सात्विक**[2]—संज्ञा पु० १ सतोगुण से उत्पन्न होनेवाले निसर्गजात अंगविकार। ये आठ प्रकार के होते हैं,—स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य अश्रु और प्रलय।

विशेष—केशव के अनुसार आठवाँ प्रलय नहीं प्रलाप होता है।

२ साहित्य के अनुसार एक प्रकार की वृत्ति जिसका व्यवहार अद्भुत, वीर, शृंगार और शांत रसों में होता है। सात्वती वृत्ति। ३ ब्रह्मा। ४ विष्णु। ५ चार प्रकार के अभिनयों में से एक। सात्विक भावों को प्रदर्शित करके, हँसने, रोने, स्तंभ और रोमांच आदि के द्वारा अभिनय करना। ६ ब्राह्मण (को०)। ७ शरद् ऋतु की रात्रि (को०)। ८ बिना जल के दी जानेवाली आहुति या बलि (को०)।

**सात्विकी**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सात्त्विकी] दुर्गा का एक नाम।

**सात्विकी**[2]—वि० स्त्री० सत्व गुण संबंधी। सत्व गुण से संबंध रखनेवाली। सत्वगुण की।

**साथ**[1]—संज्ञा पुं० [सं० सह या सहित, प्रा०हिं० सत्थ] १ मिलकर या संग रहने का भाव। संगत। सहचार।

क्रि० प्र०—करना।—रहना।—लगना।—होना।

मुहा०—साथ छूटना = संग छूटना। अलग होना। जुदा होना। साथ देना = किसी काम में संग रहना। सहानुभूति करना या सहायता देना। जैसे,—इस काम में हम तुम्हारा साथ देंगे। साथ निबहना = साथ साथ या मेल जोल के साथ समय बीतना। साथ लगना = किसी कार्य में शरीक होना। किसी का साथ पकड़ना। साथ लगाना = किसी कार्य में सम्मिलित करना। साथ करना। साथ लेकर डूबना = अपना नुकसान करने के साथ साथ दूसरे का भी नुकसान करना। साथ लेना = अपने संग रखना या ले चलना। जैसे,—जब तुम चलने लगना तो हमें भी साथ ले लेना। साथ सोना = संभोग करना। संभोग करना। साथ मोकर मुँह छिपाना = बहुत अधिक घनिष्टता होने पर भी संकोच या दुराव करना। साथ का या साथ को = तरकारी, भाजी आदि जो रोटी के साथ खाई जाती है। साथ का खेला = बाल्यावस्था का मित्र। बचपन का साथी। साथ होना = मेलजोल होना। मित्रता होना।

२ वह जो संग रहता हो। बराबर पास रहनेवाला। साथी। संगी। ३ मेल मिलाप। घनिष्टता। जैसे,—आजकल उन दोनों का बहुत साथ है। ४ कबूतरों का झुंड या टुकड़ी। (लखनऊ)।

**साथ**[2]—अव्य० १ एक संबंधसूचक अव्यय जिसमें प्रायः सहचार का बोध होता है। सहित। से। जैसे,—(क) तुम भी साथ चले जाओ। (ख) वह बड़े आराम के साथ काम करता है।

महा०—साथ में घसीटना किसी की इच्छा के विरुद्ध उसको किसी कार्य में सम्मिलित करना। साथ ही = सिवा। अतिरिक्त। जैसे,—साथ ही यह भी एक बात है कि आप वहाँ नहीं जा सकेंगे। साथ ही साथ = एक साथ। एक सिलसिले में। जैसे,—साथ ही साथ दोहराते भी चलो। एक साथ = एक सिलसिले में जैसे,—(क) एक साथ दोनों काम हो जायँगे। (ख) जब एक साथ इतने आदमी पहुँचेंगे तो वे घबरा जायँगे।

२ विरुद्ध। से। जैसे,—सबके साथ लड़ना ठीक नहीं। ३ प्रति। से। जैसे,—(क) उनके साथ हँसी मजाक मत किया करो। (ख) बड़ों के साथ शिष्टतापूर्वक व्यवहार किया करो। ४ द्वारा। उ०—नखन साथ तव उदर बिदारचो।—सूर (शब्द०)।

**साथरा**[1]—संज्ञा पु० [सं० संस्तरण] [स्त्री० साथरी] १ बिछौना। बिस्तर। २ चटाई। ३ कुश की बनी चटाई। उ०—रघुपति चंद्र विचार करचो। नातो मानि सगर सागर सो कुश साथरे परचो।—सूर (शब्द०)।

**साथरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० संस्तरण] दे० 'साथरा'।

**साथिया**Ⓢ—संज्ञा पु० [सं० स्वस्तिक] दे० 'सथिया'। उ०—(क) साथिये बनाइ कै देहि द्वारे सात सीक बनाय।—सूर (शब्द०)। (ख) मंगल सदन चारि साथिये इन तरे जुत जदु फल चारि तकि सुख करौं हौं।—घनानंद, पृ० ३५२।

**साथी**—सज्ञा पु० [हिं० साथ + ई (प्रत्य०)] [स्त्री० साथिन] १ वह जो साथ रहता हो। साथ रहनेवाला। हमराही। सगी। २ दोस्त। मित्र। ३ सहायक। सहकारी। सहयोगी।

**साद[1]**—सज्ञा पु० [स०] १ डूबना। तल मे बैठना। २ थकान। क्लाति। ३ पतलापन। तन्वगता। तनुता। ४ नष्ट होना। विनाश। ५ पीडा। व्यथा। ६ स्वच्छता। पवित्रता। ७ गति। गमन। गतिशीलता [को०]।

**साद(यु)[2]**—सज्ञा पुं० [स० शब्द, प्रा० सद्द] दे० 'शब्द'। उ०—सिथल पुकारी साद सुणीजै, कीजै हो हरि! वाहर कीजै।—रघु० रू०, पृ० १३५।

**सादक(यु)**—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'मदका'—३।

**सादगी**—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ सादा होने का भाव। सादापन। सरलता। २ सीधापन। निष्कपटता।

**सादन**—सज्ञा पु० [स०] १ थकान। क्लाति। २. विनाश। बरबादी। ३ भवन। निवासस्थान। ४ पात्र। स्थाली (को०)। ५. क्लात करना। थकाना (को०)। ६ पात्र आदि व्यवस्थित करना [को०]।

**सादनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ थकान। क्लाति। २ बरबादी। विनाश। ३ कुटकी नामक पौधा [को०]।

**सादर(यु)**—वि० [स०] आदरपूर्वक। आदर के साथ। उ०—सदा सुनहिं सादर नर नारी। तेइ सुखवर मानस अधिकारी।—मानस, १।३८।

**सादव**—वि० [स० स + द्रव या सत् + रव] सद्रव। जलयुक्त। उ०—जल जगल महिय गान सूझत दादुर मोर रोर घन सादव। जदपि मधो मेघ झरि मडि बुझि विरह विरह विकल विन कादव।—अकबरी०, पृ० ३१७।

**सादा**—वि० [फा० सादह्] [वि० स्त्री० सादी] १ जिसकी बनावट आदि बहुत सक्षिप्त हो। जिसमे बहुत अग उपाग, पेच या बखेडे आदि न हो। जैसे,—चरखा सूत कातने का सबसे सादा यत्र है। २ जिसके ऊपर कोई अतिरिक्त काम न बना हो। जैसे,—सादा दुपट्टा, सादी जिल्द, सादा खिलौना। ३ जिसमे किसी विशेष प्रकार का मिश्रण न हो। बिना मिलावट का। खालिस। जैसे,—सादा पानी या सादी भाँग (जिसमे चीनी आदि न मिली हो), सादी पूरी (जिसमे पीठी आदि न भरी हो), सादा भोजन (जिसमे अधिक मसाले या भेद आदि न हो)। ४ जिसके ऊपर कुछ अकित न हो। जैसे,—सादा कागज, सादा किनारा (जिसमे बेल बूटे आदि न बने हो)। ५ जिसके ऊपर कोई रग न हो। सफेद। जैसे,—सादे किनारे की धोती। ६ जो कुछ छल कपट न जानता हो। जिसमे किसी प्रकार का आडबर या अभिमान आदि न हो। सरल-हृदय। सीधा। जैसे,—वे बहुत ही सादे आदमी है।

यौ०—सादा कपडा = (१) बिना बेलबूटे का कपडा। (२) वस्त्र जो रगीन न हो। सादा कागज = (१) बिना कुछ लिखा हुआ कोरा कागज। (२) कागज जिसपर टिकट या स्टाप न लगा हो। सादाकार। सादादिल = साफ दिल। निष्कपट हृदय। सादापन। सादामिजाज = साफ दिल। सादालोह। सीधासादा = सरल हृदय।

७ बेवकूफ। मूर्ख। (क्व०)। जैसे,—(क) वह सादा क्या जाने कि दर्शन किसे कहते है। (ख) यहाँ कौन ऐसा सादा है जो तुम्हारी बात मान ले।

८ सरल। सात्विक। पवित्र। ९ ढोगरहित। आडबरहीन। साधारण। जैसे,—सादा जीवन उच्च विचार (लोकोक्ति)।

**सादाकार**—वि० [फा०] १ जो सोने चाँदी का काम अच्छा जानता हो। २ सादा और हलका काम बनानेवाला।

**सादकारी**—सज्ञा स्त्री० [फा०] सादाकार या सुनार का काम। सुनारी का पेशा [को०]।

**सादात**—सज्ञा पुं० [अ०] १ श्रेष्ठजन। बुजुर्ग या वृद्ध जन। २ सैयद वश या जाति [को०]।

**सादान(यु)**—सज्ञा पुं० [फा० शादियानह्] प्रसन्नता या हर्षसूचक वाद्य। जीत का नगाडा। उ०—सादान बज्जि रन रज्जि सह, तह सु सध्धरकत करिय। सोमेस सूर चहुआन सुअ कित्ति चद छदह धरिअ।—पृ० रा०, ७।१५९।

**सादापन**—सज्ञा पु० [फा० सादा + पन (प्रत्य०)] सादा होने का भाव। सादगी। सरलता।

**सादालौह**—वि० [फा० सादह्लौह] १ छलविहीन। निश्छल। निष्कपट। २ मूर्ख। बुद्धू [को०]।

**सादाशिव**—वि० [स०] सदाशिव से सबधित [को०]।

**सादि[1]**—वि० [सं०] आदि से युक्त। प्रारभ सहित [को०]।

**सादि[2]**—सज्ञा पु० १ रथ हाँकनेवाला। सारथी। २ वीर। योद्धा। बहादुर। ३ उत्साहहीन या खिन्न व्यक्ति। ४ वायु। पवन [को०]।

**सादिक[1]**—वि० [अ० सादिक] १ सच्चा। सत्यवादी। उ०—सादिक हूँ अपने कौल का गालिब खुदा गवाह। कहता हूँ सच कि झूट की आदत नही मुझे।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ४५६। २. न्यायपूर्ण। उचित (को०)। ३ वफादार। स्वामिभक्त (को०)।

**सादिक(यु)[2]**—सज्ञा पु० [स० साधक] दे० 'साधक'। उ०—सतगुर सादिक रमता सादु।—रामानद०, पृ० ४९।

**सादित**—वि० [स०] १ बैठने के लिये प्रेरित किया हुआ। बैठाया हुआ। २ खिन्न। दुखी। ३ क्लात। थका हुआ। ४ विनष्ट। बरबाद [को०]।

**सादिर**—वि० [अ०] १ निस्तब्ध। २ उद्विग्न। चकित। भ्रात। ३ चालू होनेवाला। जारी होनेवाला [को०]।

**सादी[1]**—सज्ञा स्त्री० [फा० सादह्] १ लाल की जाति की एक प्रकार की छोटी चिडिया जिसका शरीर भूरे रग का होता है और जिसके शरीर पर चित्तियाँ नही होती। बिना चित्ती की मुनियाँ। सदिया। २ वह पूरी जिसमे पीठी आदि नही भरी होती।

३ पतग उडाने की सादी डोर। वह डोर जिसपर माँझा न लगा हो।

**सादी[२]**—वि० [स० सादिन्] १ बैठा हुआ। उपविष्ट। २ नष्ट करनेवाला। विनाशक। ३ सवारी करनेवाला [को०]।

**सादी[३]**—सज्ञा पुं० १ घुडसवार। उ०—दीख पडते है न सादी आज।—साकेत, पृ० १६८। २ वह जो हाथी पर सवार हो या सवारी मे बैठा हो। ३ रथ हाँकनेवाला। सारथी [को०]।

**सादी[४]**—सज्ञा पु० [स० सादिन्] १ शिकारी। उ०—सहस्र सादी सग सिधारे। शूकर मृगा सबन बहु मारे।—रघुराज (शब्द०)। २ अश्व। घोडा। (डिं०)।

**सादी[५]**—सज्ञा स्त्री० [फ़ा० शादी] दे० 'शादी'। उ०—कहत कमाली कबीर की बापकी सादी से मैं कुमारी भली सी।—कबीर म०, पृ० १६४।

**सादी(यु)[६]**—वि० [स० साधिन्, साधी] साधक। सिद्ध करनेवाला। उ०—अविद्या न विद्या न सिद्ध न सादी। तुही ए तुही ए तुही एक आदी।—पृ० रा०, २।६८।

**सादीनव**—वि० [स०] पीडित। व्यथाग्रस्त [को०]।

**सादु(यु)**—सज्ञा पु० [स० साधु] दे० 'साधु'। उ०—सतगुरु सादिक रमता सादु।—रामानद० पृ० ४६।

**सादुल, सादूल(यु)**—सज्ञा पुं० [स० शार्दूल] दे० 'शार्दूल'। सिंह।

**सादूर(यु)**—सज्ञा पु० [स० शार्दूल] १ शार्दूल। सिंह। उ०—चौथ दीन्ह सावक सादूरू। पाँचौ परस जो कचन मूरू।—जायसी (शब्द०)। २. कोई हिंसक पशु।

**सादृश्य**—सज्ञा पु० [स०] १ सदृश होने का भाव। समानता। एकरूपता। २ बराबरी। तुलना। समान धर्म। ३ प्रतिमूर्ति। प्रतिबिंब। ४ कुरग। मृग।

**सादृश्यता**—सज्ञा स्त्री० [स० सादृश्य + ता] दे० 'सादृश्य'।

**सादृश्यत्व**—सज्ञा पुं० [स० सादृश्य + त्व] सदृश होने का भाव। सादृश्य।

**सादृस(यु)**—सज्ञा पुं० [स० सादृश्य] सम्मान। तुल्य। उ०—कपोल गोल अादृस, कि भौंह भौंर सादृस।—हम्मीर रा०, पृ० २४।

**सादेह(यु)**—क्रि० वि० [स० स + देह] देह के साथ। सशरीर। उ०—सादेह दीसै समुख भाई। नाद विंद विधि देह बनाई।—घट०, पृ० २५८।

**साद्यत**—वि० [स० साद्यन्त] पूर्ण। पूरा। सपूर्ण [को०]।

**साद्य**—वि० [स०] नवीन। नया। ताजा [को०]।

**साद्यस्क[१]**—वि० [सं०] १ तुरत होनेवाला। २ तत्काल फल देनेवाला। ३ नया। ताजा [को०]।

**साद्यस्क[२]**—सज्ञा पुं० एक विशेष यज्ञ जिसका एक नाम 'साद्यस्क' भी है [को०]।

**साधत**—सज्ञा पु० [स० साधन्त] भिखारी। भिक्षुक [को०]।

**साध[१]**—सज्ञा पु० [स० साधु] १. साधु। महात्मा। उ०—योगेश्वर वह गति नहि पाई। सिद्ध साध की कौन चलाई।—कबीर सा०, पृ० ८४५। २ योगी। उ०—राजा इदर का राज टोलाऊँ तो मैं सच्चा साध।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ३७६। ३ अच्छा आदमी। सज्जन।

**साध[२]**—वि० उत्तम। अच्छा। उ०—अशेष शास्त्र विचार कै जिन जानियो मत साध।—केशव (शब्द०)।

**साध[३]**—सज्ञा स्त्री० [स० उत्साह] १ इच्छा। ख्वाहिश। कामना। उ०—जेहि अस साध होइ जिव खोवा। सो पतग दीपक अस रोवा।—जायसी (शब्द०)। २ गर्भ धारण करने के सातवें मास मे होनेवाला एक प्रकार का उत्सव। इस अवसर पर स्त्री के मायके से मिठाई आदि आती है।

**साध[४]**—सज्ञा पु० फर्रुखाबाद और कन्नौज के आस पास पाई जानेवाली एक जाति।

**विशेष**—इस जाति के लोग मूर्तिपूजा आदि नही करते, किसी के सामने सिर नही झुकाते और केवल एक परमात्मा की ही आराधना करते हैं।

**साधक[१]**—सज्ञा पु० [स०] १ साधना करनेवाला। साधनेवाला। सिद्ध करनेवाला। २ योगी। तप करनेवाला। तपस्वी। ३ जिससे कोई कार्य सिद्ध हो। करण। वसीला। जरिया। ४ भूत प्रेत को साधने या अपने वश मे करनेवाला। ओझा। ५ वह जो किसी दूसरे के स्वार्थसाधन मे सहायक हो। जैसे,—दोनो सिद्ध साधक बनकर आए थे। ६ पुत्रजीव वृक्ष। ७ दौना। ८ पित्त। उ०—आलोचक, रजक, साधक, पाचक, भ्राजक इन भेदो से पित्त पाँच प्रकार का है।—माधव०, पृ० ५८।

**साधक[२]**—वि० [स्त्री० साधका, साधिका] १ पूरा करनेवाला। २ कुशल। ३ प्रभावशील। ४ चमत्कारिक। ऐंद्रजालिक। ५ सहयोगी। सहायक। ६ निष्कर्षात्मक [को०]।

**साधकता**—सज्ञा स्त्री० [स० साधक + ता (प्रत्य०)] १ साधक होने का भाव। २ उपयुक्तता। औचित्य। ३ उपयोगिता [को०]।

**साधकत्व**—सज्ञा पु० [स०] साधक होने का भाव या स्थिति। साधकता। उ०—साथ ही उक्ति के अलौकिक सुख साधकत्व को लेकर हम इसे चाहे तो अलौकिक विज्ञान भी कह सकते हैं।—शैली, पृ० २७।

**साधकवर्ति**—सज्ञा स्त्री० [स०] साधक की वत्ती। ऐंद्रजालिक वत्ती या पलीता [को०]।

**साधका**—सज्ञा [स०] दुर्गा का एक नाम जिसे स्मरण करने से सब कार्यो की सिद्धि होती है।

**साधन[१]**—सज्ञा पु० [स०] १ किसी काम को सिद्ध करने की क्रिया। सिद्धि। विधान। २ वह जिसके द्वारा कोई उपाय सिद्ध हो। सामग्री। सामान। उपकरण। जैसे,—साधन के अभाव मे मैं यह काम न कर सका। ३ उपाय। युक्ति। हिकमत। ४ उपासना। साधना। ५ सहायता। मदद। ६ धातुओ के शोधने की क्रिया। शोधन। ७ कारण। हेतु। सबब। ८ अचार। सधान। ९ मृतक का अग्निसस्कार। दाह कर्म। १०.

जाना। गमन। ११ धन। दौलत। द्रव्य। १२ पदार्थ। चीज। १३ घोडे, हाथी और सैनिक आदि जिनकी सहायता से युद्ध होता है। १४ उपाय। तरकीब। १५. सिद्धि। १६ प्रमाण। १७ तपस्या आदि के द्वारा मत्र सिद्ध करना। साधना। १८ यत्न। (को०)। १९ दमन करना। जीत लेना (को०)। २० वशीकरण (को०)। २१ वसूली का आदेश प्राप्त कर द्रव्य, वस्तु, ऋण आदि को वसूल करना (को०)। २२ मारण। वध। विनाश (को०)। २३ व्याकरण मे करण कारक (को०। २४ मोक्ष या मुक्ति पाना (को०)। २५ लिंगेंद्रिय। शिश्न (को०)। २६ शरीर की इंद्रियाँ या अग (को०)। २७ कुच। स्तन (को०)। २८ प्राप्ति। लाभ (को०)। २९ गणना। सगणना (को०)। ३० बाद मे जाना। अनुगमन (को०)। ३१ मैत्री। मित्रता (को०)। ३२ अधिकार मे करना या लेना (को०)। ३३ तैयार करना। तैयारी (को०)। ३४ नीरोग या स्वस्थ करना (को०)। ३५ तुष्ट करना (को०)।

**साधन**[2] वि० १ पूरा करनेवाला। २ प्राप्त करनेवाला। ३ प्रेतादि आत्माओ को बुलाने या वशीभूत करनेवाला। ४ अभिव्यजक (को०)।

**साधनक**—सज्ञा पु० [स०] साधन। उपकरण (को०)।

**साधनक्रिया** सज्ञा स्त्री० [स०] १ समापिका क्रिया। २ कारक से सबधित क्रिया (को०)।

**साधनक्षम**—वि० [स०] जिसके लिये प्रमाण दिया जा सके (को०)।

**साधनचतुष्टय**—सज्ञा पुं० [स०] चार तरह के प्रमाण (को०)।

**साधनता**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ साधन का भाव या धर्म। २ साधन करने की क्रिया। साधना। उ०—कहि आचार भक्त विध भाषी हस धर्म प्रकटायो। कही विभूति सिद्ध साधनता आश्रम चार कहायो।—सूर (शब्द०)। ३ सिद्धि प्राप्ति की अवस्था (को०)।

**साधनत्व**—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'साधनता'।

**साधननिर्देश**—सज्ञा पु० [स०] प्रमाण उपस्थित करना। हेतु का प्रस्तुतीकरण (को०)।

**साधनपत्र**—सज्ञा पु० [स०] प्रमाणरूप मे प्रस्तुत या उपस्थित किया हुआ लेख, पत्र आदि (को०)।

**साधनहार**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० साधन + हिं० हार (प्रत्य०)] १ साधनेवाला। जो सिद्ध करता हो। २ जो साधा जा सके। सिद्ध होने के योग्य।

**साधना**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कोई कार्य सिद्ध या सपन्न करने की क्रिया। सिद्धि। २ किसी देवता या यत्र आदि को सिद्ध करने के लिये उसकी आराधना या उपासना करना। ३ दे० 'साधन'।

**साधना**[2]—क्रि० स० [स० साधन] १ (कोई कार्य) सिद्ध करना। पूरा करना। उ०—आसन साधि पवन पुनि पोवै। कोटि बरस लगि काहि न जीवै।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० ३३७। २. निशाना लगाना। सधान करना। जैसे,—लक्ष्य साधना। ३. नापना। पैमाइश करना। जैसे,—लकडी साधना, टोपी साधना। ४ अभ्यास करना। आदत डालना। स्वभाव डालना। जैसे,—योग साधना, तप साधना। उ०—जब लगि पीउ मिले तुहि साधि प्रेम की पीर। जैसे सीप स्वाति कहँ तपै समुंद मँझ नीर।—जायसी (शब्द०)। ५ शोधना। शुद्ध करना। ६ सच्चा प्रमाणित करना। ७ पक्का करना। ठहराना। ८ एकत्र करना। इकट्ठा करना। उ०—वैदिक विधान अनेक लौकिक आचरन सुनि जान कै। बलिदान पूजा मूल कामनि साधि राखी आनि कै।—तुलसी (शब्द०)। ९ अपनी ओर मिलाना या काबू मे करना। वश मे करना। उ०—गाधिराज को पुत्र साधि सब मित्र शत्रु बल।—केशव (शब्द०)।

**साधनी**—सज्ञा स्त्री० [सं० साधन] लोहे या लकडी का एक प्रकार का लबा औजार जिससे जमीन चौरस करते है।

**साधनीय**—वि० [स०] १ साधना करने के योग्य। साधने या सिद्ध करने लायक। २ जो हो सके। जो साधा जा सके। ३ उपयोगी। ४ प्राप्य। अर्जन या प्राप्त करने योग्य। जैसे,—ज्ञान। ५ निर्माण या रचना करने योग्य। जैसे,—शब्द (को०)।

**साधयत**—सज्ञा पु० [स० साधयत्] भिक्षुक। भिखारी (को०)।

**साधयती**—सज्ञा स्त्री० [स० साधयतीन्ती] साधना करनेवाली उपासिका। आराधिका (को०)।

**साधयितव्य**—वि० [स०] साधन करने के योग्य। साधने या सिद्ध करने लायक।

**साधयिता**—सज्ञा पु० [स० साधयितृ] वह जो साधन करता हो। साधन करनेवाला। साधक।

**साधर्मिक**—वि० [स०] साधर्म्य या समान धर्म का अनुकरण करनेवाला (को०)।

**साधर्म्य**—सज्ञा पुं० [स०] समान धर्म होने का भाव। एकधर्मता। समानधर्मता। तुल्यधर्मता। इन दोनो मे कुछ भी साधर्म्य नही है। उ०—मनुष्यो के रूप, व्यापार या मनोवृत्तियो के सादृश्य, साधर्म्य की दृष्टि से जो प्राकृतिक वस्तु व्यापार आदि लाए जाते हैं, उनका स्थान गौण ही समझना चाहिए।—रस०, पृ० ९।

**साधवा**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० साधु का बहुवचन साधव] १ साधना करनेवाला। साधक। २ सत् जन। साधु जन।—दादू० पृ० १।

**साधवी**Ⓤ—वि० स्त्री० [सं० साध्वी] दे० 'साध्वी'—१। उ०—साधवी सीय भगनी प्रिया प्रथा वरन चित्रग पर। इन सम न कोइ भुवनह भयो न न ह्वैहै रवि चक्क तर।—पृ० रा०, २१।२१४।

**साधस**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० साध्वस] दे० 'साध्वस'।

**साधा**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं० साध] अभिलाषा। साध। उत्कठा।

**साधार**—वि० [स०] १ आधार सहित। जिसका कुछ आधार हो। २ जो किसी के सहारे टिका हो (को०)।

**साधारण'**—वि० [स०] १ जिसमे कोई विशेषता न हो। मामूली। सामान्य। जैसे—साधारण बात, साधारण काम, साधारण उपाय। २ आसान। सरल। सहज। ३ सार्वजनिक। आम। ४ समान। सदृश। तुल्य। ५ मिश्रित। घुलामिला (को०)। ६ तर्कशास्त्र मे एकाधिक से सबद्ध। पक्षाभास (को०)। ७ मध्यवर्ती स्थान ग्रहण करनेवाला (को०)।

**साधारण'**—सज्ञा पुं० [स०] भाव प्रकाश के अनुसार वह प्रदेश जहाँ जगल अधिक हो, पानी अधिक हो, रोग अधिक हो और जाडा तथा गरमी भी अधिक पडती हो। २ ऐसे देश का जल। ३ सामान्य या सार्वजनिक नियम (को०)। ४ जातिगत या वर्गीय गुण (को०)। ५ एक सवत्सर (को०)।

**साधारणगाधार**—सज्ञा पु० [स० साधारण गान्धार] एक प्रकार का विकृत स्वर जो वज्रिका नामक श्रुति से आरभ होता है। इसमे तीन प्रकार की श्रुतियाँ होती है।

**साधारणत**—अव्य० [स०] १ मामूली तौर पर। आम तौर पर। सामान्यत। २ बहुधा। प्राय।

**साधारणतया**—अव्य० [स०] दे० 'साधारणत'।

**साधारणता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ साधारण होने का भाव या धर्म। मामूलीपन। २ सर्वसामान्य या साधारण हित (को०)।

**साधारणत्व**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'साधारणता'।

**साधारण देश** सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का देश। दे० 'साधारण'।

**साधारणधन**—सज्ञा पु० [स०] सयुक्त सपत्ति (को०)।

**साधारण धर्म**—सज्ञा पु० [स०] १ वह धर्म जो सबके लिये हो। सार्वजनिक धर्म।

विशेष—मनु के अनुसार अहिंसा, सत्य अस्तेय, शौच, इद्रिय-निग्रह, दम, क्षमा, आर्जव, दान ये दस साधारण धर्म है।

२ वह धर्म जो साधारणत एक ही प्रकार के सब पदार्थो मे पाया जाय। ३ चारो वर्णों के कर्तव्य कर्म। प्रजनन। सतानोत्पादन। जनन (को०)।

**साधारणपक्ष**—सज्ञा पु० [स०] १ ऐसा दल जिसमे सभी प्रकार के लोग हो। २ वह जो मध्यवर्ती हो (को०)।

**साधारणस्त्री**—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या। रडी।

**साधारणी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक अप्सरा का नाम। उ०—ग्रहण कियो नहिं तिन्हैं सुरासुर साधारण जिय जानी। ताते साधारणी नाम तिन लह्यो जगत छविखानी।—रघुराज (शब्द०)। २ सामान्या। साधारण स्त्री। वेश्या। ३ कुजी। चाभी। ताली। ४ बाँस की कइन (को०)।

**साधारणीकरण**—सज्ञा पु० [स०] साहित्य के रसविधान मे विभावन नामक व्यापार। दे० 'विभावन'।—२।

**साधारण्य**—सज्ञा पु० [स०] साधारण होने का भाव या धर्म। साधारणता। मामूलीपन।

**साधारित**—वि० [स०] जो आधारप्राप्त हो या जिसे आधार प्रदान किया गया हो (को०)।

**साधिक**—सज्ञा पुं० [स० साधक] दे० 'साधक'। उ०—सिद्ध बिना न साधिक निपजै ज्यौं घट होइ उज्याला।—रामानद०, पृ० १३।

**साधिका'**—वि० स्त्री० [स०] सिद्ध करनेवाली। जो सिद्ध करे।

**साधिका'**—सज्ञा स्त्री० गहरी नीद। सषुप्ति।

**साधित**—वि० [स०] १ सिद्ध किया हुआ। जो सिद्ध किया गया हो। जो साधा गया हो। २ जिसे किसी प्रकार का दड दिया गया हो। ३ शुद्ध किया हुआ। शोधित। ४ जिसका नाश किया गया हो। ५ ऋण आदि जो चुकाया गया हो। ६ छोडा हुआ। प्रक्षिप्त। ७ विजित। पराभूत। ८ प्रयोग द्वारा प्रमाणित या प्रदर्शित। ९ प्राप्त (को०)।

**साधिमा**—सज्ञा पु० [स० साधिमन्] अच्छापन। उत्तमता (को०)।

**साधिवास** वि० [स०] सुगधित। सुगधयुक्त (को०)।

**साधिष्ठ**—वि० [स०] १ अत्यत समीचीन या उत्तम। उत्कृष्टतम। २ बहुत मजबूत। अडिग। कठोर (को०)।

**साधी**—वि० [स० साधिन] साधने या सिद्ध करनेवाला (को०)।

**साधीय**—वि० [स० साधीयस्] १ उत्कृष्टतर। २, बलवत्तर। अधिक बली। ३ औचित्यतर। सुदरतर (को०)।

**साधु'**—सज्ञा पु० [स०] १ वह जिसका जन्म उत्तम कुल मे हुआ हो। कुलीन। आर्य। २ वह धार्मिक, परोपकारी और सद्गुणी पुरुष जो सत्योपदेश द्वारा दूसरो का उपकार करे। धार्मिक पुरुष। परमार्थी। महात्मा। सत। ३ वह जो शात, सुशील, सदाचारी, वीतराग और परोपकारी हो। भला आदमी। सज्जन।

मुहा०—साधु साधु कहना = किसी के कोई अच्छा काम करने पर उसकी बहुत प्रशसा करना।

४ वह जिसकी साधना पूरी हो गई हो। ५ साधु धर्म का पालन करनेवाला। जैन साधु। ६ दौना नामक पौधा। दमनक। ७ वरुण वृक्ष। ८ जिन। ९ मुनि। १० वह जो सूद या व्याज से अपनी जीविका चलाता हो। ११ साध। इच्छा। १० गर्भ के सातवें महीने मे होनेवाला एक सस्कार। उ०—ए मैं अपुविस अपुविस साध पुजाऊँ। लज्जा राखूँ नँनद को।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ९१९।

**साधु'**—वि० १ अच्छा। उत्तम। भला। २ सच्चा। ३ प्रशसनीय। ४ निपुण। होशियार। ५ योग्य। उपयुक्त। ६ उचित। मुनासिब। ७ शुद्ध। सही। शास्त्रीय। ८ दयालु। कृपालु। ९ रुचिकर। अनुकूल। २० योग्य। खानदानी।

**साधुक**—सज्ञा पु० [स०] १ कदम। कदव वृक्ष। २ वरुण वृक्ष।

**साधुकारी**—सज्ञा पु० [स० साधुकारिन्] वह जो उत्तम कार्य करता हो। अच्छा काम करनेवाला। दक्ष या कुशल व्यक्ति।

**साधुकृत**—वि० [स०] अच्छी तरह किया हुआ (को०)।

**साधुकृत्य**—सज्ञा पु० [स०] १ हानि की पूर्ति होना। क्षतिपूर्ति। २ लाभ। प्राप्ति। प्रतिफल (को०)।

**साधुज**—सज्ञा पु० [स०] वह जिसका जन्म उत्तम कुल मे हुआ हो। कुलीन।

**साधुजात**—वि० [स०] १ सुदर। खूबसूरत। २ उज्ज्वल। साफ। स्वच्छ।

**साधुता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ साधु होने का भाव या धर्म। २ साधुओ का धर्म। साधुओ का आचरण। ३ सज्जनता। भलमनसाहत। उ०—तदपि तुम्हारि साधुता देखी।—मानस, ७।१०६। ४ भलाई। नेकी। ५ सीधापन। सिधाई।

**साधुति**ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० साधु] सग। साथ। उ०—फुर फुर कहत मारु सब कोई। झूठहि झूठा साधुति होई।—कबीर बी० (शिशु०), पृ० १६४।

**साधुत्व**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'साधुता'।

**साधुदर्शन**—वि० [स०] १ सुदर। सुरूप। प्रियदर्शन। २ विचार-युक्त। विचारपूर्ण [को०]।

**साधुदर्शी**—वि० [स० साधुदर्शिन्] विवेकी [को०]।

**साधुदेवी**—सज्ञा स्त्री० [स०] सास [को०]।

**साधुधर्म**—सज्ञा पु० [स०] जैनो के अनुसार साधुओ का धर्म। यतियो का धर्म।

विशेष—यह दस प्रकार का कहा गया है—क्षाति, मार्दव, आर्जव मुक्ति, तप, सयम, सत्य, शौच, अकिंचन और ब्रह्म।

**साधुधी**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पत्नी या पति की माता। सास। २ अच्छी बुद्धि (को०)।

**साधुधी**[2]—वि० [स०] मृदु या उत्तम स्वभाव का। दयालु [को०]।

**साधुध्वनि**—सज्ञा स्त्री० [स०] साधुवाद। वाहवाही। प्रशसात्मक करतल ध्वनि [को०]।

**साधुपद**—सज्ञा पु० [स०] सत्पथ। सत् का मार्ग [को०]।

**साधुपुष्प**—सज्ञा पु० [स०] स्थल कमल। स्थल पद्म।

**साधुफल**—वि० [स०] उत्तम फल देनेवाला [को०]।

**साधुभवन**—सज्ञा पु० [स०] १ साधुओ के रहने की जगह। कुटीर। कुटी। २ मठ।

**साधुभाव**—सज्ञा पु० [स०] विनम्रता। दयालुता [को०]।

**साधुमत्र**—सज्ञा पु० [स० साधुमन्त्र] प्रभावशाली मत्र। फलदायक या कारगर मत्र [को०]।

**साधुमत्**—वि० [स०] १ अच्छा। उत्तम। २ प्रसन्नता या आनद देनेवाला [को०]।

**साधुमत**[1]—वि० [स०] जिसके विषय मे ऊँचे स्तर मे विचार किया गया हो। जिसका उच्च स्तर से मूल्याकन किया गया हो।

**साधुमत**ⓤ[2]—सज्ञा पुं० साधुजनो, सत्पुरुषो का विचार या मत। भले आदमियो की राय। उ०—भरतविनय सादर सुनिअ, करिअ, विचारु बहोरि। करब साधुमत, लोकमत, नृपनय निगम निचोरि। —मानस, २।२५७।

**साधुमती**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ तात्रिको की एक देवी का नाम। २ बौद्धो के अनुसार दसवी पृथ्वी का नाम।

**साधुमात्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] उचित या ठीक ठीक परिमाण [को०]।

**साधुम्मन्य**—वि० [स०] अपने को साधु या सज्जन माननेवाला [को०]।

**साधुवाद**—सज्ञा पु० [स०] किसी के कोई उत्तम कार्य करने पर 'साधु साधु' कहकर उसकी प्रशसा करने का काम।

**साधुवादी**—वि० [स० साधुवादिन्] १ न्यायसगत बात कहनेवाला। २ प्रशसक। प्रशसा करनेवाला।

**साधुवाह**—सज्ञा पु० [स०] घोडा जो अच्छी तरह से सिखाया गया हो। निकाला हुआ घोडा। [को०]।

**साधुवाही**[1]—वि० [स० साधुवाहिन्] १ अच्छी तरह वहन करने या (सवारी) आदि खीचनेवाला। २ जिसके पास अच्छी किस्म के शिक्षित अश्व हो [को०]।

**साधुवाही**[2]—सज्ञा पु० दे० 'साधुवाह'।

**साधुवृक्ष**—सज्ञा पु० [स०] १ कदम का पेड। कदब। २ वरुण का वृक्ष।

**साधुवृत्त**[1]—वि० [स०] १ उत्तम स्वभाव और चरित्रवाला। साधु आचरण करनेवाला। २ ठीक वृत्तवाला। खूब गोला।

**साधुवृत्त**[2]—सज्ञा पु० १ साधु एव सच्चरित्र व्यक्ति। २ सदाचार। दे० 'साधुवृत्ति' [को०]।

**साधुवृत्ति**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] उत्तम और श्रेष्ठ वृत्ति। सद्वृत्ति।

**साधुवृत्ति**[2]—वि० साधुवृत्त। सदाचारी [को०]।

**साधुशब्द**—सज्ञा पु० [स०] प्रशसा। साधुवाद।

**साधुशील**—वि० [स०] सत् स्वभाव का। धर्मात्मा। सत्पुरुष [को०]।

**साधुशुक्ल**—वि० [स०] बिल्कुल सफेद [को०]।

**साधुसमत**—वि० [स० साधुसम्मत] सत्पुरुषो द्वारा मान्य। उ०—सुद्ध सो भएउ साधुसमत अस। मानस, २ २४७।

**साधुसग**—सज्ञा पु० [स०] सत्सगति [को०]।

**साधुसाधु**—अव्य० [स०] एक पद जिसका व्यवहार किसी के बहुत उत्तम कार्य करने पर किया जाता है। धन्य धन्य। वाह वाह। बहुत खूब। उ०—(अ) अस्तुति सुनि मन हर्ष बढायो। साधु साधु कहि सुरनि सुनायो।—सूर (शब्द०)।

**साधू**—सज्ञा पु० [स० साधु] १ धार्मिक पुरुष। साधु। सत महात्मा। २, सज्जन। भला आदमी। ३ सीधा आदमी। भोला भाला। ४ दे० 'साधु'। उ०—साधू सनमुख नाम से, रन मे फिरै न पूठ।—दरिया० बानी, पृ० १२।

**साधूक्त**—वि० [स०] सज्जनो द्वारा कथित [को०]।

**साधूत**—सज्ञा पुं० [स०] १ दुकान। २ आतपत्र। छाता। ३ मोरो का झुड [को०]।

**साधो**—सज्ञा पु० [स० साधु] धार्मिक पुरुष। सत। साधु।

**साध्य**[1]—वि० [स०] १ सिद्ध करने योग्य। साधनीय। २ जो सिद्ध हो सके। पूरा हो सकने के योग्य। जैसे,—यह कार्य साध्य नही जान पडता। ३ सहज। सरल। आसान। ४ जो प्रमाणित करना हो। जिसे सावित करना हो। ५ प्रतिकार करने के योग्य। शोधनीय। ६ जानने के योग्य। ७ (चिकित्सा आदि

द्वारा) ठीक करने योग्य। चिकित्स्य। उ०—साध्य बीमारी भी दो प्रकार की है।—शार्ङ्गधर०, पृ० ५६। ८ प्राप्त करने योग्य। विजेतव्य (को०)। १० प्रयोक्तव्य। जो प्रयुक्त करने योग्य हो। ११ विध्वस्त, समाप्त या नष्ट करने योग्य (को०)।

साध्य[२]—संज्ञा पु० १ एक प्रकार के गणदेवता जिनकी संख्या बारह है और जिनके नाम इस प्रकार है—मन, मना, प्राण, नर, अपान, वीर्यवान्, विनिर्भय, नय, दस, नारायण, वृष और प्रभुच। शारदीय नवरात्र मे इन गणो के पूजन का विधान है। २. देवता। ३ ज्योतिष मे विष्कंभ आदि सत्ताइस योगो मे से इक्कीसवाँ योग जो बहुत शुभ माना जाता है।

विशेष—कहते हैं कि इस योग मे जो काम किया जाता है, वह भलीभाति सिद्ध होता है। जो बालक इस योग मे जन्म लेता है वह असाध्य कार्य भी सहज मे कर लेता है और बहुत वीर, धीर, बुद्धिमान् तथा विनयशील होता है।

४ तंत्र के अनुसार गुरु से लिए जानेवाले चार प्रकार के मंत्रो मे से एक प्रकार का मंत्र। ५ न्याय वैशेषिक दर्शन में वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय। जैसे,—पर्वत से धूआँ निकलता है, अत वहाँ अग्नि है। इसमे 'अग्नि' साध्य है। ६ कार्य करने की शक्ति। सामर्थ्य। जैसे,—यह काम हमारे साध्य के बाहर है। ७ परिपूर्णता। पूर्ति (को०)। ८ चाँदी (को०)।

साध्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साध्य का भाव या धर्म। साध्यत्व। शक्यता। २ रोग आदि जो चिकित्सा द्वारा साध्य हो (को०)। ३ न्याय वैशेषिक दर्शन मे वह पदार्थधर्म (साध्य का धर्म) जो अनुमान मे सद्हेतु द्वारा अनुमेय हो (को०)।

साध्यपक्ष—संज्ञा पु० [सं०] मुकदमे मे पूर्वपक्ष (को०)।

साध्यर्षि—संज्ञा पु० [सं०] शिव (को०)।

साध्यवसानरूपक—संज्ञा पु० [सं०] रूपक के ढग का एक अलंकार जिसमे अध्यवसान केवल मूर्त प्रत्यक्षीकरण के लिये होता है, आतिशय्य की व्यजना के लिये नही। किसी मत या वाद को स्पष्ट करने के लिये की हुई रूप योजना। जैसे,—जल मे कुभ, कुभ मे जल है, बाहर भीतर पानी। फूटा कुभ, जल जलहि समाना, यह तत कथौ गियानी।—चितामणि, भा० २, पृ० ६८।

साध्यवसाना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'साध्यवसानिका' (को०)।

साध्यवसानिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्यदर्पण के अनुसार एक प्रकार की लक्षणा।

साध्यवसाय—वि० [सं०] जिसका अर्थ ऊपर से ग्रहण किया जाय (को०)।

साध्यवान्—संज्ञा पु० [सं० साध्यवत्] १. व्यवहार मे वह पक्ष जिस पर वाद प्रमाणित करने का भार हो। २ वह जिसमे साध्य या अनुमेय निहित हो (को०)।

साध्यसम—संज्ञा पु० [सं०] न्याय मे वह हेतु जिसका साधन साध्य की भाँति करना पडे। जैसे,—पर्वत से धूआँ निकलता है, अत वहाँ अग्नि है। इसमे 'पर्वत' पक्ष है, 'धूआँ' हेतु है और 'अग्नि' साध्य है। धूएँ को सहायता से अग्नि का होना प्रमाणित किया जाता है। परतु यदि पहले यही प्रमाणित करना पडे कि धूआँ निकलता है, तो इसे साध्यसम कहेंगे।

साध्यसाधन—संज्ञा पु० १ साध्य का साधन। हेतु। २ साध्य और साधन।

साध्यसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साध्य अर्थात् करणीय की सिद्धि। लक्ष्य की उपलब्धि। २ निष्पत्ति (को०)।

साध्र—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का साम।

साध्वस—संज्ञा पु० [सं०] १ भय। डर। २ व्याकुलता। घबराहट। ३ प्रतिभा। ४ निष्क्रियता। जडता। जाडय (को०)।

साध्वसविप्लुत—वि० [सं०] भयभीत। भय से परिपूर्ण (को०)।

साध्वाचार—संज्ञा पु० [सं०] १ साधुओ का सा आचार। २ शिष्टाचार।

साध्वी[१]—वि० स्त्री० [सं०] १ पतिव्रता। पतिपरायणा (स्त्री)। २ शुद्ध चरित्रवाली (स्त्री)। सच्चरित्रा।

साध्वी[२]—संज्ञा स्त्री० १ दुग्ध पाषाण। २ मेदा नामक अष्टवर्गीय औषधि।

सानद[१]—संज्ञा पु० [सं० सानन्द] १ गुच्छकरज। स्निग्ध दल। २ एक प्रकार की सप्रज्ञात समाधि। ३ सगीत मे १६ प्रकार के ध्रुवको मे से एक प्रकार का ध्रुवक जिसका व्यवहार प्राय वीर रस के वर्णन के लिये होता है।

सानद[२]—क्रि० वि० आनद के साथ। आनदपूर्वक।

सानद[३] वि० आनदयुक्त। हर्षित। प्रसन्न।

सानदनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सानन्दनी] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

सानदा—संज्ञा स्त्री० [सं० सानन्दा] लक्ष्मी का एक रूप (को०)।

सानदाश्रु—संज्ञा पु० [सं० सानन्दाश्रु] आनद के आँसू। आनदानुभूति से उत्पन्न आँसू (को०)।

सानदुरी—संज्ञा पु० [सं० सानन्दुरी] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

सानदूर—संज्ञा पु० [सं० सानन्दूर] वाराहपुराण मे उल्लिखित एक तीर्थ विशेष (को०)।

सान[१]—संज्ञा पु० [सं० शाण, प्रा० सान, तुल० फा० सान] वह पत्थर की चक्की जिसपर अस्त्रादि तेज किए जाते हैं। शाण। कुरड। उ०—तेज के प्रताप गात कच्छहू लखात नीको दीपत चढायो सान हीरा जिमी छीनो है।—शकुतला०, पृ० ११०।

मुहा०—सान चढाना, सान देना = धार तीक्ष्ण करना। धार तेज करना। सान धरना = अस्त्र तेज करना। चोखा करना।

सान[२]—संज्ञा स्त्री० [अ० शान] दे० 'शान'।—उ० कै सुलतान की सान रहै कै हमीर हठी की रहै हठ गाढी।—हम्मीर०, पृ० १६।

सानक—वि० [अ०] समान। तुल्य। उ०—जिनके अगे चाद सूरज भीक के सानक हैं दो। ऐसे ऐसे आफतावो को उठा लाती हूँ मैं।—दक्खिनी०, पृ० २६५।

**सानना**[1]—क्रि० स० [हिं० सनना का सक० रूप] १ दो वस्तुओं को आपस मे मिलाना, विशेषतः चूर्ण आदि को तरल पदार्थ मे मिलाकर गीला करना। गूँधना। जैसे,—आटा सानना। २ समिलित करना। शामिल करना। उत्तरदायी बनाना। जैसे,—आप मुझे तो व्यर्थ ही इस मामले मे सानते हैं। ३. मिलाना। लपेटना। मिश्रित करना। सयुक्त करना। जैसे,—तुमने अपने दोनो हाथ मिट्टी मे सान लिए। उ०—यह सुनि धावत धरनि चरन की प्रतिमा खगी पथ मे पाई। नैन नीर रघुनाथ सानिकै शिव सो गात चढाई।—सूर (शब्द०)।

सयो० क्रि०—डालना।—देना। लेना।

**सानना**[2]—क्रि० स० [हिं० सान + ना (प्रत्य०)] सानपर चढाकर धार तेज करना। (क्व०)।

**सानमान**(पु)—वि० [स० सानुमत्] चोटियो वाला। ऊँचा (पर्वत)। उ०—बलिहारी भूधर तुमै धीर करै गुन गान। सानमान कहि अचल कहि सब जग करै बखान।—दीन ग्र०, पृ० २१०।

**सानल**[1]—सज्ञा पुं० [स०] शाल वृक्ष से निकलनेवाला निर्यास [को०]।

**सानल**[2]—वि० अनलयुक्त। अग्नियुक्त। २ कृत्तिका नामक नक्षत्र से युक्त [को०]।

**सानसि**—सज्ञा पुं० [स०] सोना। सुवर्ण [को०]।

**सानाथ्य**—सज्ञा पु० [स०] मदद। सहयोग। सहायता।

**सानिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] वशी। मुरली।

**सानिधि**(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० सान्निध्य] दे० 'सान्निध्य'। उ०—भगवदीन सगकरि, बात उनकी लै सदाँ, सानिधि इहि देति भैई। —नद० ग्र०, पृ० ३२८।

**सानिध्य**—सज्ञा पु० [स० सान्निध्य] दे० 'सान्निध्य'। उ०—और श्री आचार्यजी के पलगडी सानिध्य आत्मनिवेदन की आज्ञा किए। —दो सौ बावन०, भा० २, पृ० १६।

**सानिया**—सज्ञा पु० [अ० सानियह्] १ घटे का ६०वाँ भाग। मिनिट। २ पल। क्षण। लमहा [को०]।

**सानियिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सानिका' [को०]।

**सानी**[1]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सानना] १ वह भोजन जो पानी मे सानकर पशुओं को खिलाया जाता है।

विशेष—नाद मे भूसा भिगो देते है और उसमे खली, दाना, नमक आदि छोडकर उसे पशुओ को खिलाते है। इसी को सानी कहते है।

२. अनुचित रीति से एक मे मिलाए हुए कई प्रकार के खाद्यपदार्थ। (व्यग्य)। ३. गाड़ी के पहिए मे लगाने की गिट्टक।

**सानी**[2]—सज्ञा स्त्री० [स० शण या शाणा, शाणी (=सन का वस्त्र) प्रा० साणी] दे० 'मनई'।

**सानी**[3]—वि० [अ०] १. दूसरा। द्वितीय। जैसे,—औरगजेब सानी। २. बराबरी का। समानता रखनेवाला। मुकाबले का। जैसे,—इन बातो मे तो तुम्हारा सानी और कोई नही है। उ०—बले अब तूँ ओ शै के सानी नही। जो देऊँ अन्निया अब सो तेरे तईं।—दक्खिनी०, पृ० २३६।

यौ०—ला सानी = जिसके समान और कोई न हो। अद्वितीय।

**सानु**—सज्ञा पुं० [स०] १ पर्वत की चोटी। शिखर। उ०—अचल हिमालय का शोभनतम लता कलित शुचि सानु शरीर। —कामायनी, पृ० २६। २ अत। सिरा। ३ समतल भूमि। (पर्वत के ऊपर की) चौरस जमीन। ४ वन। जगल। विशेषत पहाडी जगल। ५ मार्ग। रास्ता। ६ पल्लव। पत्ता। ७ सूर्य। ८ विद्वान्। पडित। ९ अँखुआ। अकुर (को०)। १० अतट। करारा। प्रपात (को०)। ११ चट्टान (को०)। १२ हवा का झोका। प्रभजन (को०)।

**सानुकप**—वि० [स० सानुकम्प] अनुकपा या दया से युक्त। सहानुभूतिशील [को०]।

**सानुक**—वि० [स०] उठा हुआ। उद्धत। उच्छ्रित। दृप्त। घमडी [को०]।

**सानुकूल**—वि० [स०] दे० 'अनुकूल'। उ०—सदा सो सानुकूल रह मो पर। कृपासिधु सौमित्रि गुनाकर।—मानस, १।१७।

**सानुकूल्य**—सज्ञा पु० [स०] अनुकूल होने का भाव। अनुकूलता। पक्षग्रहण। सहयोगिता [को०]।

**सानुक्रोश**—वि० [स०] अनुक्रोश अर्थात् कृपायुक्त। दयालु। कृपालु [को०]।

**सानुग**—वि० [सं०] अनुगमन करनेवालो या अनुचरो से युक्त [को०]।

**सानुज**[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ प्रपौड्रिक वृक्ष। पुडेरी। २ तुवुरु नामक वृक्ष।

**सानुज**[2]—वि० छोटे भाई के साथ। उ०—सानुज पठइअ मोहि बन कीजिअ सबहि सनाथ।—मानस, २ २६७।

**सानुतर्प**—वि० [स०] तृषा या प्यासयुक्त। प्यासा [को०]।

**सानुनय**[1]—वि० [स०] विनयशील। शिष्ट।

**सानुनय**[2]—क्रि० वि० विनम्रता के साथ [को०]।

**सानुनासिक**—वि० [स०] १ जो अनुनासिक वर्ण से युक्त हो। २ नाक के बल गानेवाला [को०]।

**सानुपातिक**—वि० [स०] समुचित अनुपातयुक्त। उचित अगयुक्त। उ०—सानुपातिक सगीतात्मकता, रचना शैली की प्रधानता तथा ऐसी पूर्णता जो विश्लेषण से परे होने पर भी प्रतिदिन एक नए अर्थ को जन्म देगी।—हि० का० आ० प्र०, पृ० १४४।

**सानुप्रास**—वि० [स०] जिसमे अनुप्रास हो। अनुप्रास से युक्त [को०]।

**सानुप्लव**—वि० [स०] अनुयायी वर्ग से युक्त। अनुगताओ, सहचरो आदि के साथ [को०]।

**सानुबध**—वि० [सं० सानुबन्ध] १. अनुबधयुक्त। व्यतिक्रमरहित। क्रमबद्ध। २ जिसके परिणाम हो। परिणाम या फल से युक्त। ३ अपनी वस्तुओं के साथ [को०]।

**सानुभाव**—वि० [स० स+अनुभाव] अनुभावयुक्त। कृपालु। सदय। अनुकूल। उ०—तब यह ब्राह्मन ने कह्यो जो मो पै महादेव सानुभाव है।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ४५।

**सानुभावता**—संज्ञा स्त्री० [स० सानुभावता] अनुभाव युक्त होने की स्थिति या भाव। उ०—सो कछूक दिन मे इनको सानुभावता जनाए।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० १०।

**सानुमान्**—संज्ञा पु० [स० सानुमत] पर्वत [को०]।

**सानुमानक**—संज्ञा पुं० [स०] पुंडेरी। प्रपौंड्रीक।

**सानुराग**—वि० [स०] अनुरागयुक्त। प्रेमयुक्त। आसक्त [को०]।

**सानुरुह**—वि० [स०] पहाड पर या पहाड की चोटी पर पैदा होनेवाला [को०]।

**सानुष्टि**—संज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

**सानूकर्ष**—वि० [स०] धुरीवाला (रथ) [को०]।

**सानेयी** संज्ञा स्त्री० [स०] वशी [को०]।

**सानेरमा**—वि० [सं०] निर्माता। बनानेवाला। स्रष्टा [को०]।

**सानोक**†—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार की घास।

**सान्नत**—संज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का साम।

**सान्नत्य**—वि० [स०] स्वाभाविक या प्राकृतिक। प्रवृत्ति सबधी [को०]।

**सान्नहनिक**—वि०, संज्ञा पु० [स०] दे० 'सान्नाहिक'।

**सान्नाय**—संज्ञा पुं० [स०] मत्रो से पवित्र किया हुआ वह घी जिससे हवन किया जाता है।

**सान्नाहिक**[1]—संज्ञा पु० [स०] वह जो सन्नाह पहने हो। कवचधारी।

**सान्नाहिक**[2]—वि० १. युद्धार्थ प्रोत्साहित करनेवाला। २ कवचधारी। सन्नाह से युक्त [को०]।

**सान्नाहुक**—वि० [स०] जो कवच, शस्त्र आदि धारण करने योग्य हो [को०]।

**सान्निध्य**—संज्ञा पुं० [स०] १ समीपता। सामीप्य। सन्निकटता। २ एक प्रकार की मुक्ति जिसमे आत्मा का ईश्वर के समीप पहुँच जाना माना जाता है। मोक्ष।

**सान्निध्यता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सान्निध्य का धर्म या भाव।

**सान्निपातकी**—संज्ञा संज्ञा [स०] एक प्रकार का योनि रोग जो त्रिदोष से उत्पन्न होता है।

**सान्निपातिक**—वि० [स०] १ सन्निपात सबधी। सन्निपात का। २ त्रिदोष सबधी। त्रिदोष से उत्पन्न होनेवाला (रोग)। उ०—तीनो दोषो के लक्षण मिलते हो उसको सान्निपातिक रक्त पित्त जानना।—माधव०, पृ० १७। ३ उलझा हुआ। पेचीदा। जटिल (को०)।

**सान्न्यासिक**—संज्ञा पुं० [स०] वह ब्राह्मण जो अपने धार्मिक जीवन के चतुर्थ आश्रम मे प्रविष्ट हो। वह जिसने सन्यास ग्रहण किया हो। सन्यासी।

**सान्मातुर**—संज्ञा पु० [स०] सती साध्वी स्त्री की सतान [को०]।

**सान्यपुत्र**—संज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल के एक वैदिक आचार्य।

**सान्वय**—वि० [स०] १ वशपरपरागत। २ कुल या वशजो के साथ। ३ कुलविशेष से सबधित। ४ महत्वपूर्ण। ५ समान कार्य या व्यापारवाला। ६ पद्य के शब्दो की वाक्यरचना के नियमानुसार परस्पर क्रमबद्धता से युक्त [को०]।

**साप**(पु)[1]—संज्ञा पुं० [स० शाप] दे० 'शाप'। उ०—ऋण छूटयो पूरयो वचन, द्विजहु न दीनो साप।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० २९३।

**साप**†[2]—वि० [अ० साफ] दे० 'साफ'। उ०—मना मनशा साप करो।—दक्खिनी०, पृ० ५९।

**सापणी**(पु)—संज्ञा स्त्री० [स० सर्पिणी] दे० 'साँपिन'। उ०—पयो एक सँदेसणउ, लग ढोलइ पैहच्याइ। निरमी वेणी सापणी, स्वात न वरसउ आइ।—ढोला०, दू० १२५।

**सापत्न**[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० सापत्नी] १ सपत्न या शत्रु सबधी। २ सौत सबधी या सौत से उत्पन्न [को०]।

**सापत्न**[2]—संज्ञा पुं० एक ही पति की अनेक पत्नियो से उत्पन्न सतति। सौतेली सतान [को०]।

**सापत्नक**—संज्ञा पु० [स०] १ द्वेष। शत्रुता। २ दे० 'सापत्न्य' [को०]।

**सापत्नेय**—वि० [स०] सपत्नी का। सौतेला [को०]।

**सापत्न्य**[1]—संज्ञा पु० [स०] १ सपत्नी का भाव या धर्म। सौतपन। २ सपत्नी का पुत्र। सौत का लडका। ३ शत्रु। दुश्मन। ४ द्वेष। शत्रुता (को०)। ५ सौतेला भाई (को०)।

**सापत्न्य**[2]—वि० [स०] सपत्नी सबधी। सपत्नी या सौत का [को०]।

**सापत्न्यक**—संज्ञा पु० [स०] दे० 'सापत्नक' [को०]।

**सापत्य**[1]—वि० [स०] १ अपत्ययुक्त। सततियुक्त। सतान युक्त। २ जिसे गर्भ हो। गर्भ से युक्त [को०]।

**सापत्य**[2]—संज्ञा पुं० १ सपत्नी का पुत्र। सौत का बेटा। २ सौतेला भाई [को०]।

**सापत्रप**—वि० [स०] अपत्रप या सकोच मे पडा हुआ। लज्जित [को०]।

**सापद**(पु)—संज्ञा पु० [सं० श्वापद] श्वापद। पशु।

**सापन**[1]—संज्ञा पुं० [देश० ?] एक प्रकार का रोग। जिसमे सिर के बाल गिर जाते है।

**सापन**(पु)[2]—संज्ञा स्त्री० [स० सर्पिणी] दे० 'साँपिन'। उ०—हन्यौ सग दुअ अग निकसि दुअ अगुल सापन।—पृ० रा०, ७।१२०।

**सापना**(पु)†—क्रि० स० [स० शाप, हिं० साप+ना (प्रत्य०)] १ शाप देना। बददुआ देना। उ०—चहत महामुनि जाग गयो। नीच निसाचर देत दुसह दुख कृस तनु ताप तयो। सापे पाप नए निदरत खल, तब यह मत्र ठयो। विप्र साधु सुर धेनु धरनि हित हरि अवतार लयो।—तुलसी ग्र०, पृ० २९३। २ दुर्वचन कहना। गाली देना। कोसना।

**सापराध**—वि० [स०] दोषी। अपराधी [को०]।

**सापवाद**—वि० [स०] लोकापवाद से युक्त। कलकपूर्ण [को०]।

**सापवादक**—वि० [स०] जिसका अपवाद हो सके [को०]।

**सापाय**—वि० [स०] १ शत्रु से लडनेवाला। २ अपाययुक्त। खतरे से पूर्ण [को०]।

सापाश्रय—सज्ञा पु० [स०] वह मकान जिसके पिछले भाग मे खुली दालान हो (को०)।

सापिंड्य—सज्ञा पु० [सं० सापिण्ड्य] सापिंड होने का भाव या धर्म।

सापुरुस(पु)—सज्ञा पु० [स० सत्पुरुष] दे० 'सत्पुरुष'। उ०—(क) सोइ सूर सापुरुसो।—रा० रू०, पृ० १३८। (ख) अग न छूटै आखडी, सोहाँ सापुरसाँह।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० १६।

सापेक्ष वि० [स०] एक दूसरे के सबध पर स्थित। अपेक्षा सहित। उ०—मानस, मानुषी, विकासशास्त्र है तुलनात्मक, सापेक्ष ज्ञान।—युगात, पृ० ६०।

सापेक्षिक—वि० [स०] दे० 'सापेक्ष'। उ०—सर्वमान्य तथ्य तो एक सापेक्षिक बात है।—आचार्य०, पृ० १२६।

सापेक्ष्य—वि० [स०] अपेक्षित। आवश्यक। उ०—इसी से इस प्रश्न के सबध मे सावधानी सापेक्ष्य है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २३८।

साप्ततत्व—सज्ञा पु० [स० साप्ततत्त्व] प्राचीन काल का एक धार्मिक सप्रदाय।

साप्तपद'—वि० [स०] [स्त्री० साप्तपदी] १ सप्तपदी। सात पद साथ साथ चलने या सात शब्द, वाक्य परस्पर वार्ता करने से सबधित। २ सप्तपदी सबधी।

साप्तपद'—सज्ञा पु० १ घनिष्ठता। मित्रता। २ विवाह के समय वर तथा वधू द्वारा यज्ञाग्नि की सात प्रदक्षिणा करना (को०)।

साप्तपदीन—वि०, सज्ञा पु० [स०] दे० 'साप्तपद'।

साप्तपुरुष—वि० [स०] दे० साप्तपौरुष'।

साप्तपौरुष—वि० [स०] [वि० स्त्री० साप्तपौरुषी] सात पीढियो तक जानेवाला। सात पीढियो को समिलित करनेवाला (को०)।

साप्तमिक—वि० [स०] १ सप्तमी सबधी। सप्तमी का। २ सप्तमी विभक्ति से सबधित (को०)।

साप्तरथवाहनि—सज्ञा पु० [स०] वैदिक काल के एक प्राचीन ऋषि का नाम।

साप्ताहिक'—वि० [स०] १ सप्ताह से सबधित। २ सप्ताह भर का या सप्ताह भर के लिये। जैसे,—साप्ताहिक राशन। ३ प्रति सप्ताह या सप्ताह सप्ताह प्रकाशित होनेवाला। जैसे,—साप्ताहिक पत्र।

साप्ताहिक'—सज्ञा पु० साप्ताहिक समाचार पत्र।

साफ'—वि० [अ० साफ़] १ जिसमे किसी प्रकार का मैल या कूडा करकट आदि न हो। मैला या गँदला का उलटा। स्वच्छ। निर्मल। जैसे,—साफ कपडा, साफ कमरा, साफ रग। २. जिसमे किसी और चीज की मिलावट न हो। शुद्ध। खालिस। जैसे,—साफ पानी। ३ जिसकी रचना या सयोजक अगो मे किसी प्रकार की त्रुटि या दोष न हो। जैसे,—साफ लकडी। ४ जो स्पष्टतापूर्वक अकित या चित्रित हो। जो देखने मे स्पष्ट हो। जैसे,—साफ लिखाई, साफ छपाई, साफ तसवीर। ५ जिसका तल चमकीला और सफेदी लिए हो। उज्ज्वल। जैसे,—साफ कपडा। ६ जिसमे किसी प्रकार का भद्दापन या गडबडी आदि न हो। जिसे देखने मे कोई दोष न दिखाई दे। जैसे,—साफ खेल। (इद्रजाल या व्यायाम आदि के), साफ कुदान। ७ जिसमे किसी प्रकार का झगडा, पेच या फेरफार न हो जिसमे कोई बखेडा या झझट न हो। जैसे,—साफ मामला, साफ बरताव। ८ जिसमे धुंधलापन न हो। स्वच्छ। चमकीला। जैसे,—साफ शीशा, साफ आसमान। ९ जिसमे किसी प्रकार का छल कपट न हो। निष्कपट। जैसे,—साफ दिल। साफ आदमी।

मुहा०—साफ साफ सुनाना = बिलकुल स्पष्ट और ठीक बात कहना। खरी बात कहना।

१० जो स्पष्ट सुनाई पडे या समझ मे आवे। जिसके समझने या सुनने मे कोई कठिनता न हो। जैसे, साफ आवाज, साफ लिखावट, साफ खबर। ११ जिसका तल ऊबड खाबड न हो। समतल। हमवार। जैसे,—साफ जमीन, साफ मैदान। १२. जिसमे किसी प्रकार की विघ्न बाधा आदि न हो। निर्विघ्न। निर्बाध। १३ जिसके ऊपर कुछ अकित न हो। सादा। कोरा। १४ जिसमे किसी प्रकार का दोष न हो। बेऐब। १५ जिसमे से अनावश्यक या रद्दी अश निकाल दिया गया हो। १६ जिसमे से सब चीजे निकाल ली गई हो। जिसमे कुछ तत्व न रह गया हो।

यौ० साफ साफ = स्पष्ट रूप से। खुलकर।

मुहा०—साफ करना = (१) मार डालना। वध करना। हत्या करना। (२) नष्ट करना। चौपट करना। बरबाद करना। न रहने देना। (३) खा जाना। मैदान साफ होना = किसी प्रकार की विघ्न बाधा न होना निर्द्वद्व होना। साफ बोलना = (१) किसी शब्द का ठीक ठीक उच्चारण करना। स्पष्ट बोलना। (२) साफ होना। समाप्त होना। खतम होना। ११ लेनदेन आदि का निपटना। चुकता होना। जैसे,—हिसाब साफ होना।

साफ'—क्रि० वि० १ बिना किसी प्रकार के दोष, कलक या अपवाद आदि के। बिना दाग लगे। जैसे,—साफ छूटना। २ बिना किसी प्रकार की हानि या कष्ट उठाए हुए। बिना किसी प्रकार की आँच सहे हुए। जैसे,—साफ बचना। साफ निकलना। ३ इस प्रकार जिसमे किसी को पता न लगे या कोई बाधक न हो। जैसे,—(माल या स्त्री आदि) साफ उडा ले जाना। ४ बिलकुल। नितात। जैसे,—साफ इनकार करना। साफ बेवकूफ बनाना। ५ बिना अन्न जल के। निराहार।

साफगो—वि० [फ़ा० साफगो] स्पष्ट कहनेवाला। स्पष्टवक्ता (को०)।

साफगोई [फ़ा० साफगोई] स्पष्टवादिता। दो टूक या साफ (को०)।

साफदि [साफदिल] निष्कपट हृदयवाला। सच्चे

**साफदिली**—सज्ञा स्त्री० [फा० साफदिली] १ अतःशुद्धि। मन का निष्कपट होना। २ किसी के प्रति द्वेषभाव न होना।

**साफदीदा**—वि० [फा० साफदीदह्] निर्लज्ज। बेशरम। धृष्ट।

**साफल्य**—सज्ञा पु० [सं०] १ सफल होने का भाव। सफलता। कृतकार्यता। २ सिद्धि। लाभ। ३ उत्पादकता। उपयोगिता।

**साफा**—सज्ञा पुं० [अ० साफ] [स्त्री० साफी] १ सिर पर बाँधने की पगडी। मुरेठा। मुडासा।

यौ०—साफेवाज = साफा पहननेवाला। उ०—चाहे साफेवाज, फेटेवाज या अम्मामेवाज।—प्रेमघन०, भा० ३, पृ० २७७।

२ शिकारी जानवरो को शिकार के लिये या कबूतरो को दूर तक उडने के लिये तैयार करने के उद्देश्य से उपवास कराना।

मुहा०—साफा देना = उपवास करना। भूखा रखना।

३ नित्य के पहनने या ओढने के वस्त्रो आदि को साबुन लगाकर साफ करना। कपडे धोना। (बोल०)।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

यौ०—साफा पानी = अवकाश के समय इतमीनान के साथ कपडो का धोना और नहाना।

**साफिर**[१]—सज्ञा पुं० [अ० साफिर] १ दुर्बल घोडा। २ सफर करनेवाला यात्री [को०]।

**साफी**—सज्ञा स्त्री० [अ० साफी] १ हाथ मे रखने का रूमाल। दस्ती। २ वह कपडा जो गाँजा पीनेवाले चिलम के नीचे लपेटते है। ३ भाँग छानने का कपडा। छनना। उ०—साफी छानै सुरति अमल हरि नाम का।—पलटू०, भा० २, पृ० ६४। ४ एक प्रकार का रदा जो लकडी को बिलकुल साफ कर देता है। ५ वह कपडा जिससे चूल्हे पर से कडाही आदि उतारी जाय।

**सावका**—सज्ञा पु० [अ० साविकह्] दे० 'साविका'। उ०—बाप सावका करै लराई मयामद मतवारी।—कबीर ग्र०, पृ० ३२७।

**सावत**[१]—सज्ञा पु० [स० सामन्त] सामत। सरदार। (डिं०)।

**सावत**[२]—वि० [फा० अ० सबूत] दे० 'सावूत'। उ०—मुसकनि मल्लिम लगाय घाव सावत करि दीन्हौं।—ब्रज० ग्र०, पृ० १४।

**सावन**—सज्ञा पुं० [अ० सावून, उर्दू सावुन] दे० 'सावुन'।

**सावर**—सज्ञा पुं० [स० शम्बर] १ दे० 'साँभर'। २ साँभर मृग का चमडा जो मुलायम होता है। ३ शवर जाति के लोग। ४ गूहर वृक्ष। ५ मिट्टी खोदने का एक औजार। सबरी। ६ एक प्रकार का सिद्ध मत्र जो शिवकृत माना जाता है। उ०—स्वारथ के साथी मेरे हाथ सो न लेवा देई काहू तो न पीर रघुवर दीन जन की। साप सभा सावर लबार भए दैव दिव्य दुसह साँसति कीजै आगे दै या तन की।—तुलसी (शब्द०)।

**सावरी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सावर + ई (प्रत्य०)] साँभर मृग का मुलायम चमडा। उ०—दूजे पै सावरी परतला परि मन मोहुत।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० १३।

**सावल**[१]—सज्ञा पुं० [सं० शवर] बरछी। भाला। उ०—सूरजमाल दुकाल नेज गज ढाल निहारे। फल मावर फोरियो, विहग औरियो बधारे।—रा० रू०, पृ० ८६। २ मछली। माछ।

**सावस**[१]—सज्ञा पुं० [फा० शावाश] वाहवाही देने की क्रिया। दाद। दे० 'शावाश'।

**सावस**[२]—अव्य० वाह वाह। धन्य। साधु साधु। उ०—बोल्यौ बहुरि हमीर, सावस जग तेरी जनम।—हम्मीर०, पृ० ४८।

**सावाध**—वि० [स०] अस्तव्यस्त। बाधायुक्त। अव्यवस्थित [को०]।

**साविक**—वि० [अ० साविक] पूर्व का। पहले का। पुराने समय का। उ०—प्रभू जू मैं ऐसो अमल कमायो। साविक जमा हुती जो जोरी मीजाँकुल तल लायो।—सूर (शब्द०)।

यौ०—साविक दस्तूर = जैसा पहले था, वैसा ही। पहले की ही तरह। जिसमे कुछ परिवर्तन न हुआ हो। जैसे,—उसका हाल वही साविक दस्तूर है।

**साविका**—सज्ञा पु० [अ० साबिकह्] १ जान पहचान। मुलाकात। भेट। २ उपसर्ग (को०)। ३ सबध। सरोकार। व्यवहार।

मुहा०—साविका पडना = (१) काम पडना। वास्ता पडना। (२) लेन देन होना। (३) मेल मिलाप होना।

**साविग**—वि० [अ० साविग] रँगनेवाला [को०]।

**सावित**[१]—वि० [अ०, फा०] जिसका सबूत दिया गया हो। प्रमाणित। सिद्ध। २ मजबूत। दृढ (को०)। ३ ठहरा हुआ। स्थिर (को०)। ४, मबूत। समग्र। सब। सावूत। पूरा। ५ दुरुस्त। ठीक। उ०—ह्वै लोचन सावित नहि तेऊ।—सूर (शब्द०)।

**सावित**[२]—सज्ञा पुं० वह नक्षत्र या तारा जो चलता न हो, एक ही स्थान पर सदा ठहरा रहता हो।

**सावितकदम**—वि० [अ० साबितकदम] दृढनिश्चयी। दृढप्रतिज्ञ [को०]।

**सावितकदमी**—सज्ञा स्त्री० [अ० सावितकदमी] इरादे की दृढता। दृढप्रतिज्ञता [को०]।

**साविर**—वि० [अ०] [स्त्री० साविरा] १ सहनशील। धैर्यवान। २ जो प्रत्येक स्थिति मे ईश्वरकृपा पर निर्भर हो [को०]।

**सावुत**—वि० [फा० सबूत] १ जिसका कोई अग कम न हो। सावूत। सपूर्ण। २ दुरुस्त। ३ स्थिर। निश्चल।

**सावुन**—सज्ञा पुं० [अ०] रासायनिक क्रिया से प्रस्तुत एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर और वस्त्रादि साफ किए जाते है।

विशेष—यह सज्जी, चूने, सोडा तेल और चर्बी आदि के सयोग से बनाया जाता है। देशी सावुन मे चर्बी नही डाली जाती, पर विलायती सावुन मे प्राय चर्बी का मेल रहता है। शरीर मे लगाने के विलायती सावुनो मे अनेक प्रकार की सुगधियाँ भी रहती है।

यौ०—सावुनफरोश = सावुन बेचनेवाला। सावुनसाज = सावुन बनानेवाला। सावुनसाजी = सावुन बनाने का काम।

**सावूत**—वि० [फा० सबूत] दे० 'सावुत'। उ०—सत सिलाह सतोख सावूत तुम पहिरु सहिदान मरदान यारा।—सत० दरिया, पृ० ८१।

सावूदाना—सज्ञा पु० [अ० सैगो, हि० सागू + दाना] दे० 'सागूदाना'।

सावूनी—सज्ञा स्त्री०, [अ०] एक प्रकार की मिठाई [को०]।

साव्दो[१]—पज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की दाख। द्राक्षा।

साव्दो(यु)[२]—वि० [स० शाब्दी] शब्द सवधिनी। दे० 'शाब्दी'।

साभार—क्रि० वि० [स०] आभार के साथ। एहसान प्रकट करते हुए।

साभाव्य—सज्ञा पुं० [स०] प्रकृति या स्वभाव की परख। प्रकृति की पहिचान [को०]।

साभिनय—क्रि० वि० [स०] नाटकीयता के साथ। अभिनय मुद्रा के साथ [को०]।

साभिनिवेश—वि० [स०] १ किसी वस्तु के लिये उत्कट अनुराग, रुचि, पक्षपात आदि से युक्त। अभिनिवेशयुक्त। २ अभिनिवेशपूर्वक [को०]।

साभिप्राय—वि० [स०] १ अभिप्राय के साथ। विशेष अर्थ से युक्त। २ विशेष प्रयोजन से युक्त। सोद्देश्य। उ०—सकल साभिप्राय, समझ पाया था नही मै, थी तभी यह हाय।—अपरा, पृ० १६४।

साभिमान[१]—वि० [स०] अभिमानयुक्त। घमडी।

साभिमान[२]—अव्य० अभिमान के साथ। अभिमानपूर्वक [को०]।

साभिवादन—वि० [सं० स + अभिवादन] अभिवादनयुक्त। अभिवादन के साथ उ०—नवीन नरेश महाराज वधुवर्मा ने साभिवादन श्री चरणो मे सदेश भेजा है।—स्कद०, पृ० ७।

साभ्यसूय—वि० [स०] डाह करनेवाला। ईर्ष्यालु। द्वेषी [को०]।

सामजस्य—सज्ञा पुं० [स० सामञ्जस्य] १ औचित्य। २ यथार्थता। शुद्धता (को०)। ३ उपयुक्तता। ४ अनुकूलता। ५ वैषम्य या विरोध आदि का अभाव। मेल।

सामत[१]—सज्ञा पु० [स० सामन्त] १ वीर। योद्धा। उ०—अजबेस सामत भगवान बोले त्याहीं। सेस ज्वाला की सी पर सोनागिर ज्याहीं।—रा० रू०, पृ० ११४। २, किसी राज्य का करद कोई बडा जमीदार या सरदार। शुक्रनीति के अनुसार वह नरेश जिसकी भूमि का राजस्व ३ लाख कर्ष हो। ३ पडोसी। ४ श्रेष्ठ प्रजा। ५ समीपता। सामीप्य। नजदीकी। ६ पडोसी राजा। पडोस के राज्य का नरेश (को०)।

सामत[२]—वि० १ समीपवर्ती। सीमावर्ती। सरहदी। २ अनुगत। सेवक। ३ सर्वव्यापक। विश्वव्यापक [को०]।

सामतचक्र—सज्ञा पु० [स० सामन्तचक्र] पडोसी अथवा करद राजाओ का मडल [को०]।

सामतज—वि० [स० सामन्तज] जो पडोसी या करद राजाओ द्वारा उत्पन्न हो [को०]।

सामतभारती—सज्ञा पु० [स० सामन्त भारती] राग मल्लार और सारग के मेल से बना हुआ एक सकर राग।

सामतवासी—वि० [सं० सामन्तवासिन्] पडोस मे रहनेवाला। पडोसी [को०]।

सामत सारग—सज्ञा पु० [सं० सामन्तसारङ्ग] एक प्रकार का सारग राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

सामती[१]—सज्ञा स्त्री० [स० सामन्ती] एक प्रकार की रागिनी जो मेघ राग की प्रिया मानी जाती है।

सामती[२]—सज्ञा स्त्री० [सं० सामन्त + ई (प्रत्य०)] १ सामत का भाव या धर्म। २ सामत का पद।

सामती[३]—वि० सामत की। सामत सबधी। उ०—मध्यकाल के कवियो ने इस सामती चाकरी के विरोध मे लोक साहित्य की नीव डाली थी।—आचार्य०, पृ० १२।

सामती†[४]—सज्ञा स्त्री० [देशी] समतल भूमि। सम भूमि [को०]।

सामतेय—सज्ञा पु० [स० सामन्तेय] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सामतेश्वर—सज्ञा पु० [स० सामन्तेश्वर] चक्रवर्ती सम्राट्। शाहशाह।

सामद(यु)†—सज्ञा पु० [स० समुद्र, प्रा० समुद्द] दे० 'समुद्र'। उ०—दुभल जिण भूजाँवलहूत आहूँ दिसाँ, लघ सामद कीधी लडाई।—रघु० रू०, पृ० ३१।

सामदर—सज्ञा पु० [फा०] अग्नि कीट। आग मे रहनेवाला कीडा। समदर [को०]।

साम[१]—सज्ञा पु० [स० सामन्] १ वे वेद मत्र जो प्राचीन काल में यज्ञ आदि के समय गाए जाते थे। छदोवद्ध स्तुतिपरक मत्र या सूक्त। २ चारो वेदो मे तीसरा वेद। विशेष—दे० 'सामवेद'। ३ मीठी बाते करना। मधुर भाषण। ४ राजनीति के चार अगो या उपायो मे से एक। अपने वैरी या विरोधी को मीठी बाते करके प्रसन्न करना और अपनी ओर मिला लेना। (शेष तीन अग या उपाय दाम, दड और भेद हैं। ५ सतुष्ट करना। शात करना (को०)। ६ मृदुता। कोमलता (को०)। ७ ध्वनि। स्वर। आवाज (को०)।

साम[२]—वि०, सज्ञा पु० [स० श्याम] दे० 'स्याम'। उ०—धूम साम धौरे घन छाए।—जायसी ग्र०, पृ० १५२।

साम[३]—सज्ञा पु० [अ० शाम] दे० 'शाम' (देश)।

साम[४]—सज्ञा स्त्री० [फा० शाम] सायकाल। दे० 'शाम'। उ०—घुरविनिया छोडत नहिं कबहीं होइ भोर भा साम।—गुलाल०, पृ० १६।

साम(यु)[५]—सज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'शामी' (लोहे का बद)। हथियार। उ०—सूरा के सिर साम है, साधो के सिर राम।—दरिया० बानी, पृ० १४।

साम(यु)[६]—सज्ञा पु० [फा० सामान, सामाँ] दे० 'सामान'। उ०—वालमीकि अजामिल के कछु हुतो न साधन सामो।—तुलसी (शब्द०)।

साम[७]—वि० [स०] जो पचा न हो। जिसका अच्छी तरह पाक न हुआ हो [को०]।

सामक[१]—सज्ञा पु० [स० श्यामक, प्रा० सामय] साँवाँ नामक अन्न। विशेष दे० 'साँवाँ'।

सामक[२]—सज्ञा पु० [सं०] १ वह मूल धन जो ऋण स्वरूप लिया या दिया गया हो। कर्ज का असल रुपया। २ सान धरने का पत्थर। ३. वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो। ४. समान धन।

**सामक[२]**—वि० सामवेद सबधी । सामवेदीय [को०] ।

**सामकपुख**—सज्ञा पु० [स० सामकपुङ्ख] सरफोका घास ।

**सामकल**—सज्ञा पु० [स०] मृदु स्वर या मैत्रीपूर्ण वार्ता [को०] ।

**सामकारी**—सज्ञा पु० [स० सामकारिन्] १ वह जो मीठे वचन कह कर किसी को ढाढस देता हो । सात्वना देनेवाला । २ एक प्रकार का सामगान ।

**सामग[१]**—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० सामगी] १ वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो । २ विष्णु का एक नाम ।

**सामग[२]**—वि० सामगायक । उ०—गर्जना के साथ वेदो को गानेवाले सामग ऋषि समाज ने राजसूय यज्ञ करवाया तो भी यज्ञपूर्ति का शख नही वजा ।—राम० धर्म०, पृ० २८० ।

**सामगर्भ**—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु ।

**सामगान**—सज्ञा पु० [स०[ १ एक प्रकार का साम । २ वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो ।

**सामगानप्रिय**—सज्ञा पु० [स०] १ शिव । २ मगल ग्रह [को०] ।

**सामगाय**—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो सामगान का अच्छा ज्ञाता हो । २ सामगान ।

**सामगायक**—सज्ञा पु० [स०] सामवेदी ब्राह्मण [को०] ।

**सामगायन**—सज्ञा पु० [स०] १ विष्णु २. साम का गान [को०] ।

**सामगायी**—वि० [स० सामगायिन्] साम गानेवाला । सामगायक [को०] ।

**सामग्री**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वे पदार्थ जिनका किसी विशेष कार्य मे उपयोग होता है । जैसे,—यज्ञ की सामग्री । २ असबाव । सामान । ३ आवश्यक द्रव्य । जरूरी चीज । ४ किसी कार्य की पूर्ति के लिये आवश्यक वस्तु । साधन ।

**सामग्र्य**—सज्ञा पु० [स०] १ अस्त्र शस्त्र । हथियार । २ क्षेम । कुशल (को०) । ३ समग्रता । सपूर्णता (को०) । ४ समुदायत्व । समूहवद्धता (को०) । ५ भाडार । खजाना ।

**सामज[१]**—वि० [स०] १ जो सामवेद से उत्पन्न हुआ हो । २ साम नीति के कारण उत्पन्न ।

**सामज[२]**—सज्ञा पु० हाथी, जिसकी उत्पत्ति ब्रह्मा के सामगान से मानी जाती है ।

**सामजात**—वि० [स०] दे० 'सामज' [को०] ।

**सामत[१]**—सज्ञा पु० [स० सामन्त] दे० 'सामत' ।

**सामत[२]**—सज्ञा स्त्री० [अ० शामत] दे० 'शामत' ।

**सामता**Ⓤ**[१]**—सज्ञा स्त्री० [स० समता] समत्व । साम्य । समता । उ०—दरिया साध और स्वाग का, क्रोड कोस या बीच । नाम रचा सो सामता स्वाग काल की कीच ।—दरिया० बानी, पृ० ३३ ।

**सामता[२]**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सामत्व' ।

**सामति**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० सामर्थ्य, प्रा० सामच्छ, सामत्थ] दे० 'सामर्थ्य' । उ०—जा घट जैसी सामति देवो ता घट तैसा मेलो ।—रामानद०, पृ० १६ ।

**सामत्रय**—सज्ञा पु० [स०] हर्रे, सोठ और गिलोय इन तीनो का समूह ।

**सामत्व**—सज्ञा पुं० [स०] साम का भाव या धर्म । सामता ।

**सामध**—Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० सम्बन्धी, हिं० समधी] विवाह के अवसर पर समधियो के परस्पर मिलने की एक रस्म । उ०—(क) सामध देखि देव अनुरागे ।—(ख) पहिलहि पवरि मु सामध भा सुखदायक । इत विधि उत हिमवान मरिस मत्र लायक ।—तुलसी ग्र०, पृ० ४० ।

**सामध्वनि**—सज्ञा पुं० [स०] सामवेद की ध्वनि । साम का गान [को०] ।

**सामन[१]**—वि० [स०] शातिप्रिय । अनुद्विग्न । स्वस्थ । साम द्वारा उपचार करने योग्य [को०] ।

**सामन**Ⓤ**[२]**—सज्ञा पु० [स० आवण, हिं० सावन] दे० 'सावन' । उ०—सखी री सामन दूलहै आयौ ।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० १४८ ।

**सामना**—सज्ञा पुं० [हिं० सामने, पु० हिं० सम्मुह, सामुहे] १ किसी के समक्ष होने की क्रिया या भाव । जैसे,—जब हमारा उनका सामना होगा, तब हम उनसे बातें करेंगे ।

मुहा०—सामने आना = आगे आना । समुख आना । जैसे,—अब तो वह कभी हमारे सामने ही नही आता । सामने का = (१) जो समक्ष हो । (२) जो अपने देखने मे हुआ हो । जो अपनी उपस्थिति मे हुआ हो । जैसे,—(क) यह तो हमारे सामने का लडका है । (ख) यह तो हमारे सामने की बात है । सामने करना = किसी के समक्ष उपस्थित करना । आगे लाना । सामने की चोट = सीधी चोट । सामने से होनेवाली घातक मार । सामने की बात = आँखो देखी बात । वह बात जो अपनी उपस्थिति में हुई हो । सामने पडना = (१) दृष्टि के आगे आना । (२) बाधा खडी करना । मार्ग रोकना । सामने से उठ जाना = देखते देखते अस्तित्व समाप्त हो जाना । सामने होना = (१) (स्त्रियो का) परदा न करके समक्ष आना । जैसे,—उनके घर की स्त्रियाँ किसी के सामने नही होती ।

२ भेंट । मुलाकात । ३ किसी पदार्थ का अगला भाग । आगे की ओर का हिस्सा । आगा । जैसे,—उस मकान का सामना तालाब की ओर पडता है । ४ किसी के विरुद्ध या विपक्ष मे खडे होने की क्रिया या भाव । मुकाबला । जैसे,—वह किसी बात मे आपका सामना नही कर सकता । ५ भिडत । मुठभेड । लडाई । जैसे,—युद्धक्षेत्र मे दोनो दलो का सामना हुआ । ६ उद्दडता । गुस्ताखी । ढिठाई ।

मुहा०—सामना करना = धृष्टता करना । सामने होकर जवाब देना । गुस्ताखी करना । जैसे,—जरा सा लडाका, अभी से सबका सामना करता है ।

**सामनी**—सज्ञा स्त्री० [सं०] पशुओ को बाँधने की रज्जु । पगहा [को०] ।

**सामने**—क्रि० वि० [स० सम्मुख, प्रा० सम्मुहे, पु० हिं० सामुहें] १ समुख । समक्ष । आगे । २ उपस्थिति मे । मौजूदगी मे । जैसे—तुम्हारे सामने उन्हे कौन पूछेगा । ३ सीधे । आगे । जैसे,—सामने जाने पर एक मोड मिलेगा । ४, मुकाबले मे । विरुद्ध ।

**सामन्य[१]**—सज्ञा पु० [सं०] १ सामवेद का ज्ञाता ब्राह्मण । २ वह जो सामवेद का कुशलतापूर्वक गायन करे [को०] ।

**सामन्य[२]**—वि० १ अनुकूल । जो विरुद्ध न हो । २ जो सामगायन मे प्रवीण हो [को०] ।

**सामपुप्पि**—सज्ञा पु० [स०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

**सामप्रधान**—वि० [स०] जिसमे साम नीति मुख्य हो। मैत्रीपूर्ण। दोस्ताना [को०]।

**सामप्रयोग**—सज्ञा पु० [स०] सान्त्वना प्रदायक वचन या कथन [को०]।

**सामय**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० समय] दे० 'समय'। उ०—सामय समय पनीह वटा।—नद० ग्र०, पृ० ८४।

**सामयाचारिक**[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० सामयाचारिकी] समयाचार सबधी प्रचलित व्यवस्थाओ, निर्धारित मान्यताओ एव स्वीकृत परपराओ, या विधान सबधी [को०]।

यौ०—सामयाचारिक सूत्र = समयाचार सबधी एक ग्रथ।

**सामयिक**[1]—वि० [स०] १ समय सबधी। समय का। २ वर्तमान समय से सबध रखनेवाला।

यौ०—समसामयिक। सामयिकपत्र = समाचार पत्र।

३ समय की दृष्टि से उपयुक्त। समय के अनुसार। समयोचित। ४ किसी एक निश्चित कालावधि का। नियतकालिक (को०)। ५ जो तय हुआ हो उसके अनुसार। समय के अनुकूल (को०)। ६ ठीक समय पर होनेवाला (को०)। ७ अल्पकालिक। अस्थायी (को०)।

**सामयिक**[2]—सज्ञा पु० समय या अवधि। नियत काल [को०]।

**सामयिकपत्र**—सज्ञा पु० [स०] १ शुक्रनीति के अनुसार वह इकरारनामा या दस्तावेज जिसमे बहुत से लोग अपना अपना धन लगाकर किसी मुकदमे की पैरवी करने के लिये लिखापढी करते है। २ समाचारपत्र। अखबार।

**सामयीन**Ⓤ—सज्ञा पु० [अ० सामिईन] श्रोतागण। श्रोतृवृद। सुननेवाले लोग। उ०—खबर सुन सामयीन ने मिल के सारे कल्हा भेजे हैं उसकूँ के। दक्खिनी०, पृ० १६०।

**सामयोनि**—सज्ञा पु० [स०] १ ब्रह्मा। २ हाथी।

**सामर**[1]—सज्ञा पु० [स० समर] दे० 'समर'।

**सामर**[2]—वि० [स०] १ समर सबधी। समर का। युद्ध का। २ अमर अर्थात् देवताओ से युक्त।

**सामर**Ⓤ[3]—सज्ञा पु० [स० शम्बर, सम्बर] एक मृग। दे० 'साँभर'। उ०—सिंह कोल गज रीछ बहुत सामर बलवते। —पृ० रा०, ६। ६४।

**सामर**†[4]—वि० [स० श्यामल] दे० 'साँवरा', 'साँवला'।

**सामरथ**†—सज्ञा स्त्री० [सं० सामर्थ्य] दे० 'सामर्थ्य'।

**सामरस्य**—सज्ञा पु० [स०] हर स्थिति मे एक ही प्रकार की अनुभूति करने का भाव। समरसता। जैसे,—उनका जीवन सामरस्य से भरा होता है।

**सामरा**Ⓤ—वि० [स० श्यामल] दे० 'साँवला'। उ०—सामर वदन पर मोंवरे भरत है।—मति० ग्र०, पृ० ३५०।

**सामराधिप**—सज्ञा पु० [स०] सेना का प्रधान अधिकारी। सेनापति।

**सामरिक**—वि० [स०] समर सबधी। युद्ध का। जैसे,—सामरिक समाचार।

**सामरिकता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ समर या समर सबधी कार्यो मे लिप्त रहना। २ युद्ध। लड़ाई।

**सामरिकवाद**—सज्ञा पु० [स० सामरिक + वाद] वह सिद्धात जिसके अनुसार राष्ट्र सामरिक कार्यो—सेना बढाने, नित्य नए नए भयकर और घातक युद्धोपकरण बनवाने आदि की ओर, अधिकाधिक ध्यान दे। शस्त्रसज्ज और विराट् सेना रखने का सिद्धात।

**सामरेय**—वि० [स०] समर सबधी। युद्ध का।

**सामर्ध्य**—सज्ञा पु० [स०] सस्तापन। सस्ती [को०]।

**सामर्थ**Ⓤ†—सज्ञा स्त्री० [स० सामर्थ्य] समर्थता। दे० 'सामर्थ्य'। उ०—धर हरि अस हुवे धरपत्ती। सस्त्रवध सामर्थ सकत्ती। —रा० रू०, पृ० ६।

**सामर्थी**—सज्ञा पु० [हिं० सामर्थ + ई (प्रत्य०)] १ सामथ्य रखनेवाला। जिसे सामर्थ्य हो। २ जो किसी काय के करने की शक्ति रखता हो। ३ पराक्रमी। बलवान।

**सामर्थ्य**—सज्ञा पु०, स्त्री० [स०] १ समर्थ होने का भाव। किसी कार्य के सपादन करने की शक्ति। बल। २ शक्ति। ताकत। ३ औचित्य। उपयुक्तता। योग्यता। ४ शब्द की व्यजना शक्ति। शब्द की वह शक्ति जिससे वह भाव प्रकट करता है। ५ व्याकरण मे शब्दो का परस्पर सबध। ६ एक लक्ष्य या समान उद्देश्य होने का भाव (को०)। ७ अभिरुचि। लगाव (को०)। १० धन (को०)।

**सामर्थ्यवान**†—वि० [स० सामर्थ्यवत्] शक्तिशाली। समर्थ। उ०—जो श्री गुसाँई जो सर्व सामर्थ्यवान है।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २५८।

**सामर्थ्यहीन**—वि० [स०] जो सामर्थ्य से रहित हो। शक्ति, बल, योग्यता आदि से हीन।

**सामर्ष**—वि० [स०] अमर्षयुक्त। कोपाकुल [को०]।

**सामल**Ⓤ—वि० [फा० शामिल] एक साथ। साथ साथ। मिल जुलकर। उ०—सिंघ अजा सामल सलल पीवैं इक थाला। तसकर दवे उलूक ज्यूँ ऊँगा किरणालाँ।—रघु० रू०, पृ० १७०।

**सामवाद**—सज्ञा पु० [स०] सान्वनापूर्ण बात। मैत्रीपूर्ण बातचीत। सामनीति से युक्त कथन [को०]।

**सामवायिक**[1]—वि० [स०] १ समवाय सबधी। २ जो अटूट या अविच्छेद्य सबध से युक्त हो। ३ समूह या झुड सबधी।

**सामवायिक**[2]—सज्ञा पु० १ अमात्य। मत्री। वजीर। २ किसी श्रेणी, वर्ग, समाज या दल का प्रधान (को०)।

**सामवायिकराज्य**—सज्ञा पुं० [स०] वे राज्य जो जो किसी युद्ध के निमित्त मिल गए हो।

**विशेष**—कौटिल्य ने लिखा है कि सामवायिक शत्रु राज्यो से कभी अकेला न लडे।

**सामविद्**—सज्ञा पु० [स०] वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो।

**सामविप्र**—सज्ञा पु० [स०] वह ब्राह्मण जो अपने सब कर्म सामवेद के विधानो के अनुसार करता हो।

**सामवेद**—सज्ञा पु० [स० साम (न्) वेद] भारतीय आर्यो के चार वेदो मे से प्रसिद्ध तीसरा वेद।

विशेष—पुराणो म कहा है कि इस वेद की एक हजार सहिताएँ थी, परतु आजकल इनमे से केवल एक ही सहिता मिलती है। यह सहिता दो भागो मे विभक्त है, जिनमे से एक 'आर्चिक' और दूसरा 'उत्तरार्चिक' कहलाता है। इन दोनो भागो मे जो १८१० ऋचाएँ है, उनमे से अधिकाश ऋग्वेद मे आई हुई है। ये सब ऋचाएँ प्राय गायत्री छद मे ही है। यज्ञो के समय जो स्तोत्र आदि गाए जाते थे, उन्ही स्तोत्रो का इस वेद मे सग्रह है। भारतीय सगीतशास्त्र का आरभ इन्ही स्तोत्रो से होता है। इस वेद का उपवेद गाधववेद है।

**सामवेदिक[1]**—वि० [स०] सामवेद सबधी।

**सामवेदिक[2]**—सज्ञा पु० सामवेद का ज्ञाता या अनुयायी ब्राह्मण।

**सामवेदी**—सज्ञा पु० [स० सामवेदिन्] सामवेद का अध्येता एवम् जानकार ब्राह्मण [को०]।

**सामवेदीय**—वि०, सज्ञा पु० [स०] दे० 'सामवेदिक'।

**सामश्रवा**—सज्ञा पु० [स० सामश्रवस्] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

**सामसर**—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का गन्ना जो डुमराँव (बिहार) मे होता है।

**सामसाध्य**—वि० [स०] जो साम नीति के द्वारा साध्य हो।

**सामसाली**ⓤ—सज्ञा पु० [स० साम+शाली] राजनीति के साम, दाम, दड और भेद नामक अगो को जाननेवाला। राजनीतिज्ञ। उ०—जयति राज राजेद्र राजीवलोचन राम नाम कलि काम तरु सामसाली। अनय अबोधि कुभज निसाचर निकर तिमिर घनघोर वर किरिनिमाली।—तुलसी (शब्द०)।

**सामसावित्री**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का सावित्री मत्र।

**सामसुर**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का सामगान।

**सामस्तवि**—सज्ञा पु० [स० सामस्तम्बि] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

**सामस्त**ⓤ[1]—वि० [स० समस्त] दे० 'समस्त'।

**सामस्त[2]**—सज्ञा पु० [स०] शब्दो के विन्यास, मिश्रण, रचना या सधि-सबधी विद्या। शब्द विज्ञान [को०]।

**सामस्त्य**—सज्ञा पु० [स०] समस्तता। सपूर्णता [को०]।

**सामहलि**ⓤ—क्रि० वि० [स० सम्भाल्य ?] देखकर। समझ या जानकर। उ०—साँझी वेला सामहलि कटलि थई अगासि। ढोलइ करह कँवाइयउ आयउ पूगल पासि।—ढोला०, दू० ५२२।

**सामहिं**ⓤ—अव्य० [स० सन्मुख] सामने। समुख। समक्ष। उ०—तिन सामहिं गोरा रन कोपा। अगद सरिस पाउँ भुइँ रोपा।—जायसी (शब्द०)। (ख) कोप सिंह सामहिं रन मेला। लाखन सो ना मरै अकेला।—जायसी (शब्द०)।

**सामाँ[1]**—सज्ञा पु० [स० श्यामाक] एक अन्न। दे० 'साँवाँ'।

**सामाँ[2]**—सज्ञा पु० [फा० सामान] दे० 'सामान' उ०—चद तस्वीरे बुताँ चद हसीनो के खुतूत बाद मरने के मेरे घर से ये सामाँ निकला।—चद०, पृ० १।

**सामा[1]**—सज्ञा स्त्री० [स० श्यामा] दे० 'श्यामा'।

**सामा**ⓤ[2]—सज्ञा पु० [फा० सामान का सक्षिप्त रूप] सामग्री। सामान। सरजाम। उ०—(क) भोजन की सामा सत्यभामा की भलाई भले।—पद्माकर ग्र०, पृ० २४७। (ख) आखर लगाय लेत लाखन की सामा हो।—पद्माकर ग्र०, पृ० ३०६।

यौ०—सामा सामाज = सामग्री, उपकरण और समाज या समूह। उ०—सामासमाज सबही वृथा सब सी अदभुत दैवगति।—व्रज० ग्र०, पृ० ७६

**सामाजिक[1]**—वि० [स०] १ समाज से सबध रखनेवाला। समाज का। जैसे,—सामाजिक कुरीतियाँ, सामाजिक झगडे, सामाजिक व्यवहार। २ सभा से सबध रखनेवाला। ३ सहृदय। रसज्ञ।

**सामाजिक[2]**—सज्ञा पु० १ सभासद। सदस्य। सभ्य। २ (नाटक) देखनेवाला। (नाटक का) सहृदय पाठक या दर्शक। उ०—उन्होने बतलाया कि सामाजिको के हृदय मे वासनारूप मे स्थित स्थायी रति आदि भाव को ही रसत्व प्राप्त होता।—रसक०, पृ० २२।

**सामाजिकता**—सज्ञा स्त्री० [स०] सामाजिक का भाव। लौकिकता।

**सामाधान**—सज्ञा पुं० [स०] १ शमन करने की क्रिया। शाति। २ शका का निवारण। ३ किसी कार्य को पूर्ण करने का व्यापार। सपादन।

**सामान**—सज्ञा पु० [फा०] १ किसी कार्य के लिये साधन स्वरूप आवश्यक वस्तुएँ। उपकरण। सामग्री। २. माल। असबाब।

मुहा०—सामान बनना = (१) वस्तुओ का तैयार होना। (२) किसी प्रकार की तैयारी होना। सामान बाधना = माल असबाब बाँधकर चलने को तैयारी करना।

३ औजार। ४ बदोबस्त। इतजाम। उ०—इनके नाम व निशान को भी मिटा देने का सामान कर रहे है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३६२।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

**सामानग्रामिक**—वि० [स०] एक ही ग्राम मे रहनेवाले। एक ही गाँव के निवासी।

**सामानदेशिक**—वि० [स०] एक ही देश या गाँव से सबधित। सामानग्रामिक।

**सामानाधिकरण्य**—सज्ञा पुं० [सं०] १ समान अवस्था या परिस्थिति मे होना। २ समान पद या समान काय। ३ एक ही कर्म से सबधित होना (व्या०, नव्य न्याय)। एक ही कारक या सामानाधिकरण्य मे होना [को०]।

**सामानि**ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० सामान्या] दे० 'सामान्या-१'। उ०—प्रथम स्वकीया पुनि परिकीया। इक सामानि बखानी तिया।—नद० ग्र०, पृ० १४५।

**सामानिक**—वि० [स०] समानपदीय। समान स्थिति या पद का [को०]।

**सामान्य[1]**—वि० [स०] १ जिसमे कोई विशेषता न हो। साधारण। मामूली। २ दे० 'समान'। ३ महत्वहीन। अदना। तुच्छ (को०)। ४. पूरा। सपूर्ण (को०)। ५ औसत दरजे का (को०)।

**सामान्य**[२]—संज्ञा पुं० [सं०] १ समान होने का भाव। सादृश्य। समानता। बराबरी। २ वह एक बात या गुण जो किसी जाति या वर्ग की सब चीजों में समान रूप से पाया जाय। जातिसाधर्म्य। जैसे,—मनुष्यों में मनुष्यत्व या गौओं में गोत्व।

**विशेष**—वैशेषिक में जो छह् पदार्थ माने गए हैं, सामान्य उनमें से एक है। इसी को जाति भी कहते हैं।

३ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार। यह उस समय माना है, जब एक ही आकार की दो या अधिक ऐसी वस्तुओं का वर्णन होता है जिनमें देखने में कुछ भी अंतर नहीं जान पड़ता। जैसे,—(क) एक रूप तुम भ्राता दोऊ। (ख) नाहिं फरक श्रुतिकमल अरु हरिलोचन अभिसेप। (ग) जानी न जात मसाल औ बाल गोपाल गुलाल चलावत चूकैं। ४ संपूर्णता। पूर्ण होने का भाव (को०)। ५ किस्म। प्रकार (को०)। ६ सार्वजनिक कार्य। ७ अनुरूपता। तुल्यता (को०)। ८ वह धर्म जो मनुष्य, पशु पक्षी आदि सभी में सामान्य रूप से पाया जाय (को०)। ९ पहचान। लक्षण। चिह्न (को०)। १० वह अवस्था जिसमें किसी एक ओर झुकाव न हो। मध्य स्थिति। तटस्थता (को०)।

**सामान्य छल**—संज्ञा पुं० [सं०] न्यायशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का छल जिसमें संभावित अर्थ के स्थान में अति सामान्य के योग से असंभूत अर्थ की कल्पना की जाती है। जब वादी किसी संभूत अर्थ के विषय में कोई वचन कहे, तब सामान्य के संबंध से किसी असंभूत अर्थ के विषय में उस वचन की कल्पना करने की क्रिया। विशेष दे० 'छल'।

**सामान्यज्ञान**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वस्तुओं के सामान्य गुणों की जानकारी या ज्ञान। २ सब विषयों का साधारण या कामचलाऊ ज्ञान [को०]।

**सामान्य ज्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] साधारण ज्वर। मामूली बुखार।

**सामान्यतः**—अव्य० [सं०] सामान्य रूप से। साधारण रीति से। साधारणतः। जैसे,—राजनीति में सामान्यतः अपना ही स्वार्थ देखा जाता है।

**सामान्यतया**—अव्य० [सं०] सामान्य रूप से। साधारण रीति से। मामूली तौर से। सामान्यतः। साधारणतया।

**सामान्यतोदृष्ट**—संज्ञा पुं० [सं०] १ तर्क और न्यायशास्त्र के अनुसार अनुमान संबंधी एक प्रकार की भूल जो उस समय मानी जाती है जब किसी ऐसे पदार्थ के द्वारा अनुमान करते हैं जो न कार्य हो, न कारण। जैसे,—कोई आम को बौरते देखकर यह अनुमान करे कि अन्य वृक्ष भी बौरते होंगे। २. दो वस्तुओं या बातों में ऐसा साधर्म्य जो कार्यकारण संबंध से भिन्न हो। जैसे,—बिना चले कोई दूसरे स्थान पर नहीं पहुँच सकता। इसी प्रकार दूसरे को भी किसी स्थान पर भेजना बिना उसके गमन के नहीं हो सकता।

**सामान्यत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] सामान्य या साधारण होने का भाव। सामान्यता। साधारणता। उ०—इस सामान्यत्व की स्थापना के कई हेतु होते हैं। —आ० रा० शुक्ल, पृ० ८९।

**सामान्यनायिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सामान्य वनिता। वेश्या [को०]।

**सामान्यपक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] दो अतिसीमाओं के मध्य की स्थिति।

**सामान्यभविष्यत्**—संज्ञा पुं० [सं०] भविष्य क्रिया का वह काल जो साधारण रूप बतलाता है। जैसे,—आएगा, जाएगा, खाएगा।

**सामान्यभूत**—संज्ञा पुं० [सं०] भूत क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया की पूर्णता होती है और भूतकाल की विशेषता नहीं पाई जाती है। जैसे,—खाया, गया, उठा।

**सामान्यलक्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] वह गुण या लक्षण जो किसी जाति या वर्ग में समान रूप से पाया जाय [को०]।

**सामान्यलक्षणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गुण जिसके अनुसार किसी एक सामान्य को देखकर उसी के अनुसार उस जाति के और सब पदार्थों का बोध होता है। किसी पदार्थ को देखकर उस जाति के और सब पदार्थों का बोध करानेवाली शक्ति। जैसे,—किसी एक गौ या घड़े को देखकर समस्त गौओं या घड़ों का जो ज्ञान होता है, वह इसी सामान्य लक्षण के अनुसार होता है।

**सामान्यवचन**[१] वि० [सं०] सामान्य लक्षण बतानेवाला।

**सामान्यवचन**[२]—संज्ञा पुं० वस्तु या पदार्थबोधक शब्द [को०]।

**सामान्यवनिता** संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी [को०]।

**सामान्यवर्तमान**—संज्ञा पुं० [सं०] वर्तमान क्रिया का वह रूप जिसमें कर्ता का उसी समय कोई कार्य करते रहना सूचित होता है। जैसे,—खाता है, जाता है।

**सामान्यविधि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] साधारण विधि या आज्ञा। जैसे,—हिंसा मत करो, झूठ मत बोलो, चोरी मत करो, किसी का अपकार मत करो, आदि सामान्य विधि के अंतर्गत है। परंतु यदि यह कहा जाय कि यज्ञ में हिंसा की जा सकती है, अथवा ब्राह्मण की रक्षा के लिये झूठ बोला जा सकता है तो इस प्रकार की विधि विशेष होगी और वह सामान्य विधि की अपेक्षा अधिक मान्य होगी।

**सामान्य शासन**—संज्ञा पुं० [सं०] ऐसी राजाज्ञा जो सबपर समान रूप से लागू हो [को०]।

**सामान्य शास्त्र**—संज्ञा पुं० [सं०] सबपर समान रूप से लागू होनेवाला विधि या शास्त्र।

**सामान्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साहित्य के अनुसार वह नायिका जो धन लेकर किसी से प्रेम करती है।

**विशेष**—इस नायिका के भी उतने ही भेद होते हैं जितने अन्य नायिकाओं के होते हैं।

२ गणिका। वेश्या।

**सामायिक**[१]—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के अनुसार एक प्रकार का व्रत या आचरण जिसमें सब जीवों पर सम भाव रखकर एकांत में बैठकर आत्मचिंतन किया जाता है।

**सामायिक**[२]—वि० मायायुक्त। माया सहित।

**सामाश्रय**—संज्ञा पुं० [सं०] वह भवन या प्रासाद आदि जिसके पश्चिम ओर वीथिका या सड़क हो।

**सामासिक**[1]—वि० [स०] १ समास से सबध रखनेवाला। समास का। २ सामूहिक। समुच्चयात्मक (को०)। ३ सहत। सक्षिप्त (को०)। ४ मिश्रित (को०)।

**सामासिक**[2]—सज्ञा पु० समास।

**सामि**[1] सज्ञा स्त्री० [स०] निंदा। शिकायत।

**सामि**—वि० १ जो पूरा न हुआ हो। जो अपूर्ण या आशिक रूप मे हो। अधूरा। २ दोषावह। निंदनीय। ३ शीघ्रतापूर्वक (को०)।

**सामि**ⓤ[1]—सज्ञा पु० [स० स्वामि] स्वामी। पति। उ०—आवहु सामि सुलच्छना जीअ बसै तुम्ह नाउँ। - जायसी ग्र०, पृ० १०१।

**सामिक**—सज्ञा पुं० [स०] वृक्ष। पेड (को०)।

**सामिकृत**—वि० [स०] आशिक या अधूरा किया हुआ। (कार्य आदि) जो अशत कृत हो (को०)।

**सामिग्री**—सज्ञा स्त्री० [स० सामग्री] दे० 'सामग्री'।

**सामिश्र**ⓤ‡—सज्ञा पु० [स० स्वामिन्] दे० 'स्वामी'। उ०—पुण्य कहानी पिअ कहहु सामिअ सुनओ सुहेण।—कीर्ति०, पृ० १६।

**सामित**—वि० [स०] गेहूँ के आटे के साथ मिश्रित (को०)।

**सामित्त**ⓤ[1]—सज्ञा पु० [स० स्वामित्व] दे० 'स्वामित्व'।

**सामित्त**ⓤ[2]—सज्ञा पु० [स० साम्यत्व] दे० 'समता'। उ०—घटि वढि पच दिसा फिरि आयौ। कवि मुष तौ सामित्त करायौ। —पृ० रा०, २।४०७।

**सामित्य**[1]—सज्ञा पु० [स०] समिति का भाव या धर्म।

**सामित्य**[2]—वि० समिति का। समिति सबधी।

**सामिधेन**—वि० [स०] यज्ञाग्नि प्रज्वलित करने से सबधित (को०)।

**सामिधेनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का ऋक् मत्र जिसका पाठ होम की अग्नि प्रज्वलित करने के समय (अथवा सामिधा डालते समय) किया जाता है। २ समिधा (को०)।

**सामिधेन्य**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सामिधेनी'।

**सामिपीत**—वि० [स०] आधा पिया हुआ। अर्धपीत (को०)।

**सामिभुक्त**—वि० [स०] आधा खाया हुआ (को०)।

**सामियाना**—सज्ञा पु० [फा० शामियाना] दे० 'शामियाना'।

**सामिल**—वि० [फा० शामिल] दे० 'शामिल'[2]।

**सामिष**—वि० [स०] आमिष सहित। माम मद्य आदि के सहित। निरामिष का उलटा। जैसे,—सामिष भोजन, सामिष श्राद्ध।

**सामिष श्राद्ध**—सज्ञा पु० [स०] पितरो आदि के उद्देश्य से किया जानेवाला वह श्राद्ध जिसमे मास, मद्य आदि का व्यवहार होता है। जैसे,—मामाष्टका आदि सामिष श्राद्ध हैं।

**सामिसरियत**—वि० [स०] आधा किया हुआ। अर्धकृत (को०)।

**सामी**ⓤ†[1]—सज्ञा पु० [स० स्वामिन्] दे० 'स्वामी'।

**सामी**[2]—सज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'शामी'।

**सामीची**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वदना। प्रार्थना। स्तुति। २ नम्रता। सौजन्य। शिष्टता (को०)।

**सामीचीकरणीय**—वि० [स०] शिष्टतापूर्वक नमन करने योग्य। जो नम्रतापूर्वक प्रणाम करने योग्य हो (को०)।

**सामीचीन्य** सज्ञा पुं० [स०] उपयुक्तता। समीचीनता (को०)।

**सामीप**ⓤ—वि० [स० समीप या सामीप्य] दे० 'समीप'। उ०—कहा धरम उपदेश है, मूढन के सामीप।—दीन० ग्र०, पृ० ८४।

**सामीप्य**—सज्ञा पु० [स०] १ समीप होने का भाव। निकटता। २ एक प्रकार का मुक्ति जिसमे मुक्त जीव का भगवान् के समीप पहुँच जाना माना जाता है। उ०—निर्वान मारग को जो कोई ध्यावै, सो सामीप्य मुक्ति वैकुठ को पावै।—कबीर सा०, पृ० ९०५। ३ पडोस। ४ पडोसी। प्रतिवेशी।

**सामीर**ⓤ[1]—सज्ञा पु० [स० समीर] समीर। पवन। (डिं०)। उ०—चरस करत लिपमण चमर, अरस अगर, सामीर। इम सिय जुत जन मछ उर, वसो सदा रघुवीर।—रघु० रू०, पृ० १।

**सामीर**[2]—वि० दे० 'सामीर्य'।

**सामीरण**—वि० [स०] दे० 'सामीर्य'।

**सामीर्य**—वि० [स०] समीर सबधी। समीर का। हवा का।

**सामुझि**ⓤ‡—सज्ञा स्त्री० [स० सम्बुद्धि] दे० 'समझ'। उ०—प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहिं कथा सुनि लागिहि फीकी। —मानस, १।९।

**सामुदायिक**[1] वि० [स०] समुदाय सबधी। समुदाय का। सामूहिक।

**सामुदायिक**[2]—सज्ञा पु० बालक के जन्म समय के नक्षत्र से आगे के अठारह नक्षत्र जो फलित ज्योतिष के अनुसार अशुभ माने जाते हैं और जिनमे किसी प्रकार का शुभ कार्य करने का निषेध है।

**सामुद्ग**—सज्ञा पु० [स०] १ वह सधि या जोड जिसमे कुछ गहरापन हो। खात या गर्तयुक्त सधि। जैसे,—काँख या कूल्हे की सधि। २ भोजन के पहले और बाद मे ली जानेवाली औषधि (को०)।

**सामुद्र**[1]—सज्ञा पु० [स०] १ समुद्र से निकला हुआ नमक। वह नमक जो समुद्र के खारे पानी से निकाला जाता है। २ समुद्र-फेन। ३ वह व्यापारी जो समुद्र के द्वारा दूसरे देशो मे जाकर व्यापार करता हो। ४ नारियल। ५ जहाजी। नाविक। माँझी (को०)। ६ एक प्रकार का मच्छड। सुश्रुत के अनुसार सामुद्र, परिमडल, हस्तिनाशक, कृष्ण और पर्वतीय इन पाँच मच्छडो मे से एक (को०)। ७ करण और वेश्या से उत्पन्न सतति। एक जातिविशेष (को०)। ८ समुद्र की एक कन्या जो प्राचीनबर्हिष् की पत्नी थी (को०)। ९ आश्विन मास की वर्षा-विशेष का जल (को०)। १० शरीर मे होनेवाले चिह्न या लक्षण आदि जिन्हे देखकर शुभाशुभ का विचार किया जाता है। विशेष दे० 'सामुद्रिक'।

**सामुद्र**[2]—वि० १ समुद्र से उत्पन्न। समुद्र से निकला हुआ। २ समुद्र सबधी। समुद्र का।

**सामुद्रक**—सज्ञा पुं० [स०] १ समुद्री नमक। २ सामुद्रिक विद्या। दे० 'सामुद्र'।

**सामुद्रनिष्कुट**—सज्ञा पु० [स०] समुद्रतट वासी (को०)।

**सामुद्रनिष्कूट**—सज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम। २ इस जनपद का निवासी।

सामुद्रबंधु—संज्ञा पुं० [सं० सामुद्र बन्धु] चंद्रमा [को०]।

सामुद्रमत्स्य—संज्ञा पु० [सं०] समुद्र मे होनेवाली बडी बडी मछलियाँ जिनका मांस सुश्रुत के अनुसार भारी, चिकना, मधुर, वातनाशक, कफवर्धक, उष्ण और वृष्य होता है।

सामुद्रविद्—संज्ञा पु० [सं०] सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता [को०]।

सामुद्रस्थलक—संज्ञा पु० [सं०] समुद्र तट का प्रदेश। समुद्र के आस-पास का देश।

सामुद्राद्य चूर्ण—संज्ञा पु० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार का चूर्ण जो, साँभर, सोंचर और सेंधा नमक, अजवायन, जवाखार, वाय-विडंग, हींग, पीपल, चीतामूल और सोंठ को बराबर मिलाने से बनता है।

विशेष—कहते हैं कि इस चूर्ण का घी के साथ सेवन करने से उदर के सब प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं। यदि भोजन के आरंभ मे इसका सेवन किया जाय तो यह बहुत पाचक होता है और इनसे कोष्ठबद्धता दूर होती है।

सामुद्रिक'—वि० [सं०] १ समुद्र से संबंध रखनेवाला। समुदरी। सागर संबंधी। २ शरीरचिह्न संबंधी (को०)।

सामुद्रिक'—संज्ञा पु० १ फलित ज्योतिष का एक अंग जिसके अनुसार हथेली की रेखाओं, शरीर के तिलो तथा अन्यान्य लक्षणों आदि को देखकर मनुष्य के जीवन की घटनाएँ तथा शुभाशुभ फल बतलाए जाते है, यहाँतक कि कुछ लोग केवल हाथ की रेखाओं को देखकर जन्मकुंडली तक बनाते हैं। २ वह जो इस शास्त्र का ज्ञाता हो। हाथ की रेखाओं तथा शरीर के तिलो और लक्षणों आदि को देखकर जीवन की घटनाएँ और शुभाशुभ फल बतलानेवाला पंडित। ३ नाविक (को०)। ४ एक जलपक्षी। उ०—डुबकियाँ लगाते सामुद्रिक, धोती पीली चोचें धोविन।—ग्राम्या, पृ० ३७।

सामुहाँ(पु)†'—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने। समुख।

सामुहाँ'—संज्ञा पु० आगे का भाग या अंश। सामना। (क्व०)।

सामुहें(पु)†—अव्य० [सं० सन्मुख] सामने। सन्मुख।

सामूना—संज्ञा स्त्री० [सं०] काले रंग का एक हिरन [को०]।

सामूर—संज्ञा पु० [सं०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार वह्लव देश का चमडा [को०]।

सामूली—संज्ञा पु० [सं०] कौटिल्य वर्णित वह्लव देशीय चमडे का एक प्रकार [को०]।

सामूहाँ(पु)—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने। समुख। उ०—जनु घुघची वह तिलकर मूहाँ। विरहवान साँधो सामूहाँ।—जायसी (शब्द०)।

सामूहिक—वि० [सं०] १ समूह संबंधी। समूह का। २ जो समूहबद्ध हो (को०)।

सामृद्ध्य—संज्ञा पु० [सं०] समृद्धि का भाव या समृद्धिता।

सामेधिक—वि० [सं०] कौटिल्य के अनुसार जो अद्भुत प्राकृतिक शक्ति से संपन्न हो [को०]।

सामोद—वि० [सं०] १ आनंदयुक्त। प्रसन्नतापूर्ण। २. आमोद या सुगंधियुक्त [को०]।

सामोद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।

सामोपनिषद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

साम्न—वि० [सं०] सामवेद के मंत्रो से संबंधित [को०]।

साम्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का छंद। २ जानवरो को बाँधने की रस्सी [को०]।

साम्नी अनुष्टुप्—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमे १४ वर्ण होते है।

साम्नी उष्णिक्—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमे १४ वर्ण होते है।

साम्नी गायत्री—एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमे १२ वर्ण होते है।

साम्नी जगती—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमे २२ संपूर्ण वर्ण होते है।

साम्नी त्रिष्टुप्—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमे २२ संपूर्ण वर्ण होते है।

साम्नी पंक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० साम्नी पङ्क्ति] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमे २० संपूर्ण वर्ण होते है।

साम्नी बृहती—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमे १८ संपूर्ण वर्ण होते है।

साम्मत्य—संज्ञा पु० [सं०] संमति का भाव।

साम्मुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह तिथि जो सायंकाल तक रहती हो।

साम्मुख्य—संज्ञा पु० [सं०] १ संमुख का भाव। सामना। २ उपस्थिति (को०)। ३ कृपा। अनुग्रह (को०)।

साम्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ समान होने का भाव। तुल्यता। समानता। जैसे,—इन दोनो पुस्तको मे बहुत कुछ साम्य है। २ दृष्टिकोण की समानता या एकता (को०)। ३ संगति। सामंजस्य (को०)। ४ अवधि। माप। काल। सम (को०)। ४ समता की स्थिति। उदासीनता। तटस्थता। निष्पक्षता (को०)

यौ०—साम्यग्राह = (१) घडियाल बजानेवाला। (२) संगीत मे 'सम' को ग्रहण करने और ताल देनेवाला। साम्यताल-विशारद = लय और ताल का ज्ञाता। जो लय और ताल का जानकार हो।

साम्यतंत्र—संज्ञा पु० [सं० साम्य + तन्त्र] वह शासनप्रणाली जो साम्यवाद के सिद्धांत पर हो। साम्यवादी सिद्धांत के अनुरूप चलनेवाला शासन। उ०—ये राज्य प्रजाजन, साम्यतंत्र, शासन चालन के कृतक मान।—युगांत, पृ० ६०।

साम्यता—संज्ञा स्त्री० [सं० साम्य + ता] दे० 'साम्य'।

साम्यवाद—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का पाश्चात्य सामाजिक (समाजवादी) सिद्धांत। समष्टिवाद। उ०—ये राष्ट्र, अर्थ, जन, साम्यवाद, छल सभ्य जगत के शिष्ट मान।—युगांत, पृ० ५८।

विशेष—इस सिद्धांत का प्रवर्तन ईसा की उन्नीसवी शताब्दी मे हुआ माना जाता है। इस सिद्धांत का प्रतिपादन कार्लमार्क्स ने किया है जो जर्मनी का निवासी था। इस सिद्धांत के प्रचारक समाज मे साम्य स्थापित करना चाहते है और उसका वर्तमान

वैषम्य दूर करना चाहते हैं। वे लोग चाहते हैं कि समाज मे व्यक्तिगत प्रतियोगिता उठ जाय और भूमि तथा उत्पादन के समस्त साधनो पर किसी एक व्यक्ति का अधिकार न रह जाय, बल्कि सारे समाज का अधिकार हो जाय। इस प्रकार सब लोगो मे धन आदि का बराबर बराबर वितरण हो, न तो कोई बहुत गरीब रह जाय और न कोई बहुत अमीर रह जाय।

**साम्यवादी**—वि० [स० साम्य+वादिन्] १ साम्यवाद से सबधित। साम्यवाद का। २ जो साम्यवाद को मानता हो। साम्यवाद का अनुयायी।

**साम्यावस्था**—सज्ञा स्त्री० [स०] वह अवस्था जिसमे सत्व, रज और तम तीनो गुण बराबर हो, उनमे किसी प्रकार का विकार, या वैषम्य न हो। प्रकृति।

**साम्यावस्थान**—सज्ञा पु० [स०] प्रकृति। दे० 'साम्यावस्था' [को०]।

**साम्राज्य**—सज्ञा पु० [स०] १ वह राज्य जिसके अधीन बहुत से देश हो और जिसमे किसी एक सम्राट् का शासन हो। सार्वभौम राज्य। सलतनत। २ आधिपत्य। पूर्ण अधिकार। ३ आधिक्य। बाहुल्य (को०)। ४ प्रधानता (को०)।

**साम्राज्यकृत्**—वि० [स०] साम्राज्य करनेवाला। साम्राज्य का शासक [को०]।

**साम्राज्यलक्ष्मी**—सज्ञा स्त्री० [स०] तत्र के अनुसार एक देवी जो साम्राज्य की अधिष्ठात्री मानी जाती है।

**साम्राज्यवाद**—सज्ञा पु० [स० साम्राज्य+वाद] साम्राज्य के देशो की रक्षा और वृद्धि या विस्तार का सिद्धात। उ०—साम्राज्यवाद था कस, बदिनी मानवता पशु बलाक्रात।—युगात, पृ० ६०।

**साम्राज्यवादी**—सज्ञा पुं० [स० साम्राज्यवादिन् अथवा हिं० साम्राज्यवाद+ई (प्रत्य०)] वह जो साम्राज्यशासन प्रणाली का पक्षपाती और अनुरागी हो। वह जो साम्राज्य की स्थापना और उसकी विस्तारवृद्धि का पक्षपाती हो।

**साम्राणिकर्दम**—सज्ञा पु० [स०] गधमार्जार या गधबिलाव का वीर्य जो गधद्रव्यो मे माना जाता है। जवादि नामक कस्तूरी।

**साम्राणिज**—सज्ञा पुं० [स०] बडा पारेवत।

**साम्हना**†—सज्ञा पुं० [हिं० सामना] दे० 'सामना'।

**साम्हने**†—अव्य० [हिं० सामने] दे० 'सामने'।

**साम्हर**†—सज्ञा पु० [सं० शाकम्भर या सम्भल, साम्भल] १ दे० 'शाकबर'। २ दे० 'साँभर'। ३ साँभर झील का बना नमक। उ०—कोट यतन सो बिजन करई। साम्हर बिन फीका सब रहई।—कबीर सा०, पृ० २०६।

**साम्हे**(पु)—अव्य० [स० सम्मुख] दे० 'सामुहें'। उ०—कहिए अब लौ ठहरयौ कौन। सोई भाग्यो तुव साम्हें सो गयो परिछयौ जौन। भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० २६८।

**साय**[1]—वि० [स०] सध्या सबधी। सायकालीन। सध्याकालीन।

**साय**[2]—अव्य० शाम के समय।

**साय**[3]—सज्ञा पुं० १ दिन का अतिम भाग। सध्या। शाम। २ बाण। तीर।

**सायंकाल**—सज्ञा पु० [स० सायङ्काल] [वि० सायकालीन] दिन का अतिम भाग दिन और रात की सधि। सध्याकाल। सध्या। शाम।

**सायकालिक**—वि० [स० सायङ्कालिक] सध्या के समय का। शाम का।

**सायकालीन**—वि० [स० सायङ्कालीन] सध्या के समय का। शाम का।

**सायगृह**—सज्ञा पु० [स० सायङ्गृह] वह जो सध्यासमय जहाँ पहुँचता हो, वही अपना घर बना लेता हो।

**सायतन**—वि० [स० सायन्तन] सायकालीन। सध्या सबधी। सध्या का।

यौ०—सायतनमल्लिका=शाम को खिलनेवाली चमेली। सायतनसमय=शाम। सायकाल [को०]।

**सायतनी**—वि० [स० सायन्तनी] दे० 'सायतन'।

**सायधृति**—सज्ञा स्त्री० [स० सायन्धृति] सायकालीन हवन [को०]।

**सायनिवास**—सज्ञा पु० [स० सायन्निवास] वह स्थान जहाँ शाम को रहा जाय [को०]।

**सायपोष**—सज्ञा पु० [स० सायम्पोष] सायकाल किया जानेवाला भोजन। ब्यालू [को०]।

**सायप्रात**—अव्य० [स० सायम्प्रातर्] सुबह शाम।

**सायभव**—वि० [स० सायम्भव] सध्या का। शाम का।

**सायभोजन**—सज्ञा पु० [स०] शाम का भोजन। ब्यालू [को०]।

**सायमडन**—सज्ञा पु० [स० सायम्मण्डन] १ सूर्यास्त। २ सूर्य [को०]।

**सायमध्या**—सज्ञा स्त्री० [स० सायम्सन्ध्या] १ वह सध्या (उपासना) जो सायकाल मे की जाती है। २ सरस्वती देवी जिसकी उपासना सध्या के समय की जाती है। ३ सूर्यास्त का काल। गोधूलि वेला (को०)।

**सायसध्यादेवता**—सज्ञा स्त्री० [स० सायम्सन्ध्या देवता] देवी सरस्वती का एक नाम।

**सायस**—सज्ञा स्त्री० [अ० साइस] १ विज्ञान। शास्त्र। २ वह शास्त्र जिसमे भौतिक तथा रासायनिक पदार्थों के विषय मे विवेचन हो। विशेष दे० 'विज्ञान'।

**साय**—सज्ञा पु० [स०] १ सध्या का समय। शाम। २ बाण। तीर। ३ समाप्ति। अत (को०)।

**सायक**—सज्ञा पुं० [स०] १ बाण। तीर। शर। उ०—लखि कर सायर अरु तुम्हे कर सायक सर चाप।—शकुतला, पृ० ७। २ खड्ग। उ०—धीर सिरोमनि बीर बडे बिजई बिनई रघुनाथ सोहाए। लायकही भृगुनायक से धनु सायक सौंपि सुभाय सिधाए।—तुलसी (शब्द०)। ३ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पाद मे सगण, भगण, तगण, एक लघु और एक गुरु होता है (।।ऽ, ऽ।।, ऽऽ।, ।,ऽ)। ४ भद्र मुज। राम सर। ५ पाच की सख्या। (कामदेव के पाँच बाणो के कारण। ६ आकाश का विस्तार। अक्षाश (को०)।

सायकपुख—सज्ञा पु० [स० सायक्पुङख] बाण का वह भाग जिसमे पख लगा रहता है [को०]।

सायकपुखा—सज्ञा स्त्री० [स० सायकपुङखा] शरपुखा। सरफोका।

सायका—सज्ञा स्त्री० [स०] कुजदह। लाई।

सायण—सज्ञा पु० [स०] एक प्रसिद्ध आचार्य जिन्होने चारो वेदो के बहुत उत्तम और प्रसिद्ध भाष्य लिखे है।

विशेष—इनके पिता का नाम मायण था। पहले ये राज्यमत्री थे पर पीछे से सन्यासी होकर शृगेरी मठ के अधिष्ठाता हुए थे। उस समय इनका नाम विद्यारण्य स्वामी हुआ था। इनका समय ईसवी चौदहवी (१३७०) शताब्दी है। इनके नाम से और भी बहुत से सस्कृत ग्रथ प्रसिद्ध है।

सायणवाद—सज्ञा पु० [स०] आचार्य सायण का मत या सिद्धात।

सायणीय—वि० [स०] १ सायण सबधी। सायण का। २ सायण कृत (ग्रथ)।

सायत[1]—सज्ञा स्त्री० [अ० साअत] १ एक घटे या ढाई घडी का समय। २. दड। पल। लमहा। ३ शुभ मुहूर्त। अच्छा समय। उ०—जलद ज्योतिषी बैन, सायत धरत पयान की।—श्यामा०, पृ० १२५।

सायत[2]†—अव्य० [फा० शायद] दे० 'शायद'।

सायन[1]—सज्ञा पु० [स० सायण] दे० 'सायण'।

सायन[2]—वि० [स०] अयनयुक्त। जिसमे अयन हो (ग्रह आदि)। उ०—गोविद ने मुहूर्त चिंतामणि के सक्राति प्रकरण मे सायन सक्राति के ऊपर लिखा है।—सुधाकर (शब्द०)। (ख) भारतवर्ष के ज्योतिषाचार्यो ने जब देखा कि सायन दूसरे नक्षत्र मे गया।—ठाकुर प्र० (शब्द०)।

सायन[3]—सज्ञा पु० सूर्य की एक प्रकार की गति।

सायब—सज्ञा पु० [फा० साहब] पति। स्वामी। (डिं०)।

सायबान—सज्ञा पु० [फा० सायहवान] १ मकान के सामने धूप से बचने के लिये लगाया हुआ ओसार। बरामदा। २ मकान के आगे की ओर बढी या निकली हुई वह छाजन या छप्पर आदि जो छाया के लिये बनाई गई हो।

सायम्—अव्य० [स०] शाम को। शाम के समय।

सायमशन—सज्ञा पुं० [स०] शाम का भोजन। ब्यालू [को०]।

सायमाहुति—सज्ञा स्त्री० [स०] वह आहुति जो सध्या के समय दी जाय।

सायर†[1]—सज्ञा पु० [स० सागर, प्रा० सायर] १ सागर। समुद्र। उ०—(क) सायर मद्धि सुठाम करन त्रिभुवन तन अजुल। —पृ० रा०, २।९२। (ख) जहँ लग चदन मलय गिरि औ सायर सब नीर। सब मिलि आय बुझावहिं बुझै न आग सरीर।—जायसी (शब्द०)। २ ऊपरी भाग। शीर्ष।

सायर[2]—सज्ञा पुं० [अ०] १ वह भूमि जिसकी आय पर कर नही लगता। २ मुतफर्रकात। फुटकर।

सायर[3]—वि० १ घुमक्कड। सैर करनेवाला। घूमनेवाला। २ जो नियत या स्थिर न हो। अस्थायी। अनियत [को०]।

सायर†[4]—सज्ञा पु० [देश०] १ वह पटरा जिससे खेत की मिट्टी बराबर करते है। हेगा। २ एक देवता जो चौपायो का रक्षक माना जाता है।

सायर†[5]—सज्ञा पु० [अ० शाइर, शायर] कवि। कविता करनेवाला। दे० 'शायर'।

सायल[1]—सज्ञा पु० [अ०] १ सवाल करनेवाला। प्रश्नकर्ता। २ माँगनेवाला। याचना करनेवाला। ३ भिखारी। फकीर। ४ दर्ख्वास्त करनेवाला। प्रार्थना करनेवाला। ५ उम्मीदवार। आकाक्षी। ६ न्यायालय मे फरियाद करने या किसी प्रकार की अरजी देनेवाला। प्रार्थी।

सायल[2]—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धान जो सिलहट मे होता है।

सायवस—सज्ञा पु० [स०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

साया[1]—सज्ञा पु० [फा० सायह्] १ छाया। छाँह। उ०—छाँव सूँ मेरे हुए हैं बादशाह। माया परवरदा है मेरे सब मलूक।—दक्खिनी०, पृ० १८६।

यौ०—सायेदार।

२ आश्रय। सरक्षण। सहारा।

मुहा०—साये मे रहना = शरण मे रहना। सरक्षण मे रहना। साया उठना = सरक्षक का न रहना। देखभाल और परवरिश करनेवाले का मर जाना।

३. परछाईं। अक्स। प्रतिबिंब।

मुहा०—साये से भागना = बहुत दूर रहना। बहुत बचना।

४ जिन, भूत, प्रेत, परी आदि।

मुहा०—साया उतरना = भूत, प्रेत का प्रभाव समाप्त होना। साया होना = प्रेताविष्ट होना। भूत, प्रेत का प्रभाव होना। साये मे आना = भूत, प्रेतादि से प्रभावान्वित होना।

५ असर। प्रभाव।

मुहा०—साया पडना = किसी को सगत का असर होना। साया डालना = (१) कृपा करना। (२) प्रभाव डालना।

साया[2]—सज्ञा पु० [अ० शेमीज] १ घाघर की तरह का एक पहनावा जो प्राय पाश्चात्य देशो की स्त्रियाँ पहनती हैं। २ एक प्रकार का छोटा लहँगा जिस स्त्रियाँ प्राय महीन साडिया के नीचे पहनती है।

सायाबदी—सज्ञा स्त्री० [फा० सायह्बदी] मुसलमानो मे विवाह के अवसर पर मडप बनाने की क्रिया।

सायास—वि० [स० स + आयास] आयासपूर्वक। प्रयत्नपूर्वक। श्रमपूर्वक। उ०—सहज चुन चुन लघु तृण खर, पात। नीड रच रच निसि दिन सायास।—गुजन, पृ० ७४।

सायाह्न—सज्ञा पु० [स०] दिन का अतिम भाग। सध्या का समय। शाम।

सायिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ उचित क्रम न होना। क्रम का अनुचित स्थिति होना। २ छुरिका। कटार [को०]।

सायी—संज्ञा पुं० [सं० सादिन्] घोड़े का सवार। अश्वारोही।

सायुज—संज्ञा पु० [सं० सायुज्य] दे० 'सायुज्य'। उ०—गुरुनानक का भेदाभेद ईश्वर और जीव मे सायुज सबध मानता है।—हिंदी काव्य०, पृ० ४६।

सायुज्य—संज्ञा पु० [सं०] १ एक मे मिल जाना। ऐसा मिलना कि कोई भेद न रह जाय। २ पाँच प्रकार की मुक्तियो मे से एक प्रकार की मुक्ति जिसमे जीवात्मा परमात्मा मे लीन हो जाता है। उ०—हरि मे कहत गरीयसि मेरी। भक्ति होई सायुज्य बडेरी।—गर्गसहिता (शब्द०)। ३ समानता। एकरूपता।

सायुज्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सायुज्य का भाव या धर्म। सायुज्यत्व।

सायुज्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सायुज्य का भाव या धर्म। सायुज्यता।

सायुध—वि० [सं०] आयुधयुक्त। शस्त्रसज्ज [को०]।

यौ०—सायुध ग्रग्रह = जो हाथ मे शस्त्र ताने हुए हो।

सारग, सारँग[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का मृग। २ कोकिल। कोयल। उ०—वयन वर सारग सम।—सूर (शब्द०)। ३ श्येन। बाज। ४ सूर्य। उ०—जलसुत दुखी दुखी है मधुकर है पछी दुख पावत। सूरदास सारँग केहि कारण सारग कुलहि लजावत।—सूर (शब्द०)। ५ सिंह। उ०—सारग सम कटि हाथ माथ विच सारँग राजत। सारँग लाए अग देखि छवि सारँग लाजत। सारग भूषण पीत पट सारँग पद सारगधर। रघुनाथ दास वेदन करत सीतापति रघुवशधर।—विश्राम (शब्द०)। ६ हस पक्षी। ७ मयूर। मोर। ८ चातक। ९ हाथी। १० घोडा। अश्व। ११ छाता। छत्र। १२ शख। उ०—सारँग अधर सधर कर सारग सारँग जानि सारँग मति भोरी। सारँग दसन वसन पुनि सारँग वसन पीतपट डोरी।—सूर (शब्द०)। १३ कमल। कज। उ०—(क) सारग वदन विलास विलोचन हरि सारग जानि रति कीन्ही।—सूर (शब्द०)। (ख) सारँग दृग मुख पाणि पद सारँग कटि वपुधार। सारँगधर रघुनाथ छवि सारँग मोहनहार।—विश्राम (शब्द०)। १४ स्वर्ण। सोना। उ०—सारँग से दृग लाल माल सारँग की सोहत। सारँग ज्यो तनु श्यामवदन लखि सारँग मोहत।—विश्राम (शब्द०)। १५ आभूषण। गहना। १६ सर। तालाव। उ०—मानहु उमँगि चल्यो चाहत है सारँग सुधा भरे।—सूर० (शब्द०)। १७ भ्रमर। भौंरा। उ०—नचत है सारग सुदर करत शब्द अनेक।—सूर (शब्द०)। १८ एक प्रकार की मधुमक्खी। १९, विष्णु का धनुप। उ०—(क) एकहू बाण न आयो हरि के निकट तव गह्यो धनुप सारगधारी।—सूर (शब्द०) (ख) नवै परथमा जौवन सोहै। नयनवान श्री सारँग मोहै।—जायसी (शब्द०)। २० कर्पूर। कपूर। उ०—सारग लाए अग देखि छवि सारँग लाजत।—विश्राम (शब्द०)। २१ लवा पक्षी। २२ श्रीकृष्ण का एक नाम। उ०—गिरिधर ब्रजधर मुरलीधर धरनीधर पीतावरधर मुकुटधर गोपधर उर्गधर शखधर सारगधर चक्रधर गदाधर रस धरें अधर सुधाधर।—सूर (शब्द०)। २३ चद्रमा। शशि। उ०—तामहि सारँग सुत भोभित है ठाढी सारग सँभारि।—सूर (शब्द०)। २४ समुद्र। सागर। २५ जल। पानी। २६ बाण। शर। तीर। २७ दीपक। दीया। २८ पपीहा। २९ शभु। शिव। उ०—जनु पिनाक की आश लागि शशि सारँग शरन बचे।—सूर (शब्द०)। ३० सुगधित द्रव्य। ३१ सर्प। साँप। उ०—सारँग चरन पीठ पर सारँग कनक खभ ग्रहि मनहुँ चढो री।—सूर (शब्द०)। ३२ चदन। ३३ भूमि। जमीन। ३४ केश। बाल। अलक। उ०—शीश गग सारँग भस्म सर्वांग लगावत।—विश्राम (शब्द०)। ३५ दीप्ति। ज्योति। चमक। २६ शोभा। सुदरता। ३७ स्त्री। नारी। उ०—सूरदास सारँग केहि कारण सारँग कुलहि लजावत सूर (शब्द०)। ३८ रात्रि। रात। विभावरी। ३९ दिन। उ०—सारँग सुदर को कहत रात दिवस बड भाग।—नददास (शब्द०)। ४०. तलवार। खड्ग। (डिं०)। ४१ कपोत। कबूतर। ४२ एक प्रकार का छद जिसमे चार तगण होते हैं। इसे मैनावली भी कहते हैं। ४३ छप्पय छद के २६वें भेद का नाम।

विशेष—इसमे ४५ गुरु, ६२ लघु कुल १०७ वर्ण या १५२ मात्राएँ अथवा ४५ गुरु, ५८ लघु कुल १०३ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती हैं।

४४ मृग। हिरन। उ०—(क) श्रवण सुयश सारग नाद विधि चातक विधि मुख नाम।—सूर (शब्द०)। (ख) भरि थार आरति सजहिं सब सारग सायक लोचना।—तुलसी (शब्द०)। ४५ मेघ। बादल। घन। उ०—(क) कारी घटा देखि अँधियारी सारँग शब्द न भावै।—सूर (शब्द०)। (ख) सारँग ज्यो तनु श्याम वदन लखि सारग मोहत।—विश्राम (शब्द०)। ४६ मोती। (डिं०)। ४७ कुच। स्तन। ४८ हाथ। कर। ४९ वायस। कौआ। ५० ग्रह। नक्षत्र। ५१ खजन पक्षी। सोनचिडी। ५२ हल। ५३ मेढक। ५४ गगन। आकाश। ५५ पक्षी। चिडिया। ५६ वस्त्र। कपडा। ५७ सारगी नामक वाद्ययत्र। ५८ ईश्वर। भगवान्। ५९ काजल। नयनाजन। ६० कामदेव। मन्मथ। ६१ विद्युत्। बिजली। ६२ पुष्प। फूल। ६३ सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

विशेष—शास्त्रो मे यह मेघ राग का सहचर कहा गया है, पर कुछ लोग इसे सकर राग मानते और नट, मल्लार तथा देवगिरि के सयोग से बना हुआ बतलाते हैं। इसकी स्वरलिपि इस प्रकार कही गई है—स रे ग म प ध नि स। स नि ध प म ग रे स। स रे ग म प प ध प प म ग म प म ग म ग रे स। स रे ग रे स।

सारग, सारँग[2]—वि० १ रँगा हुआ। रजित। रगीन। उ०—सारँग दसन वसन पुनि सारँग वसन पीत पट डोरी।—सूर (शब्द०)। २ सुदर। सुहावना। उ०—सारँग वचन कहत सारँग सो सारँग रिपु है राखति झीनी।—सूर (शब्द०)। ३ सरस। उ०—सारँग नैन बैन वर सारँग सारँग वदन कहै

छवि को री।—सूर (शब्द०)। ४ अनेक रगो से युक्त। चितकबरा (को०)।

**सारगचर**—सज्ञा पु० [स० सारङ्गचर] काँच। शीशा।

**सारगज**—सज्ञा पुं० [स० सारङ्गज] मृग। हिरन [को०]।

**सारंगनट**—सज्ञा पु० [स० सारङ्गनट] सगीत मे सारग और नट के सयोग से बना हुआ एक प्रकार का सकर राग।

**सारगनाथ**—सज्ञा पु० [स० सारङ्गनाथ] काशी के समीप स्थित एक स्थान जो सारनाथ कहलाता है।

विशेष—यही प्राचीन मृगदाव है यह बौद्धो, जैनियो और हिंदुओ का प्रसिद्ध तीर्थ है।

**सारगनैनी**—वि० [स० सारङ्ग + हिं० नैन] सारग के से नयनवाली। मृगनैनी। उ०—सारगनैनी री काहे कियौ एतौ मान।—नद० ग्र०, पृ० ३६६।

**सारगपाणि**—सज्ञा पु० [सं० सारङ्गपाणि] सारग नामक धनुष धारण करनेवाले विष्णु।

**सारगपानि**—सज्ञा पु० [स० सारङ्गपाणि] दे० 'सारगपाणि'। उ०—सुमिरत श्री सारगपानि छन मै सब सोचु गयो। चले मुदित कौसिक कोसलपुर सगुननि साथु दयो।—तुलसी (शब्द०)।

**सारगलोचना**—वि० स्त्री० [स० सारङ्ग लोचना] जिसकी आँखे हिरन की सी हो। मृगनयनी।

**सारगशबल**—वि० [स० सारङ्गशबल] घोडा जो रग बिरगा और चितकबरा हो [को०]।

**सारगहर**—सज्ञा पु० [स० शार्ङ्गधर, प्रा० सारगहर] विष्णु।

**सारगा**—सज्ञा स्त्री० [स० सारङ्गा] १ एक प्रकार की छोटी नाव जो एक ही लकडी की बनती है। २ एक प्रकार की बडी नाव जिसमे ६००० मन माल लादा जा सकता है। ३ एक रागिनी का नाम जो कुछ लोगो के मत से मेघ राग की पत्नी है।

**सारगाक्षा**—वि० स्त्री० [स० सारङ्गाक्षा] जिसके नेत्र मृग की तरह हो। मृगनैनी [को०]।

**सारगिक**—सज्ञा पु० [स० सारङ्गिक] १ वह जो पक्षियो को पकडकर अपना निर्वाह करता हो। चिडीमार। बहेलिया। २. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, यगण और सगण (न, य, स) होते हैं।

विशेष—कवि भिखारीदास ने इसे मात्रिक छद माना है।

**सारगिका**—सज्ञा स्त्री० [स० सारङ्गिका] १ दे० 'सारगिका'। २ दे० 'सारगी'। ३ बहेलिया की स्त्री।

**सारगिया**—सज्ञा पु० [हिं० सारगी + आ (प्रत्य०)] सारगी बजाने वाला। साजिदा।

**सारगी**—सज्ञा स्त्री० [सं० सारङ्ग] एक प्रकार का बहुत प्रसिद्ध बाजा जिसका प्रचार इस देश मे बहुत प्राचीन काल से है। उ०—विविध पखावज आवज सचित बिचबिच मधुर उपग। सुर सहनाई सरस सारगी उपजत तान तरग।—सूर (शब्द०)।

विशेष—यह काठ का बना हुआ होता है और इसकी लबाई प्राय डेढ हाथ होती है। इसके सामने का भाग, जो परदा कहलाता है, पाँच छह अगुल चौडा होता है, और नीचे का भाग अपेक्षाकृत कुछ अधिक चौडा और मोटा होता है। इसमे ऊपर की ओर प्राय ४ या ५ खूँटियाँ होती है जिन्हे कान कहते है। उन्ही खूँटियो से लगे हुए लोहे और पीतल के कई तार होते है जो बाजे की पूरी लबाई मे होते हुए नीचे की ओर बँधे रहते है। इसे बजाने के लिये लकडी का एक लबा और दोनो ओर कुछ झुका हुआ एक टुकडा होता है जिसमे एक सिरे से दूसरे सिरे तक घोडे की दुम के बाल बँधे होते हैं। इसे कमानी कहते है। बजाने के समय यह कमानी दाहिने हाथ मे ले ली जाती है और उसमे लगे हुए घोडे के बाल से बाजे के तार रेते जाते हैं। उधर बायें हाथ की उँगलियाँ तारो पर रहती है जो बजाने के लिये स्वरो के अनुसार ऊपर नीचे और एक तार से दूसरे तार पर आती जाती रहती है। इस बाजे का स्वर बहुत ही मधुर और प्रिय होता है, इसलिये नाचने गाने का पेशा करनेवाले लोग अपने गाने के साथ प्राय इसी का व्यवहार करते है।

**सारड**—सज्ञा पु० [स० सारण्ड] साँप का अडा।

**सारभ**—सज्ञा पु० [स० सारम्भ] वे घपूर्ण वार्तालाप [को०]।

**सार**१—सज्ञा पु० [स०] १ किसी पदार्थ मे का मूल, मुख्य, काम का, या असली भाग। तत्व। सत्त। २ कथन आदि से निकलनेवाला मुख्य अभिप्राय। निष्कर्ष। उ०—तत्त सार इहै आहे अवर नाही जान।—जग० बानी, पृ० १८। ३. किसी पदार्थ मे से निकला हुआ निर्यास या अर्क आदि। रस। ४ चरक के अनुसार शरीर के अतर्गत आठ स्थिर पदार्थ जिनके नाम इस प्रकार हैं—त्वक्, रक्त, मास, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र और सत्व (मन)। ५ जल। पानी। ६ गूदा। मग्ज। ७ वह भूमि जिसमे दो फसलें होती हो। ८ गोशाला। बाडा। ९ खाद। १० दूहने के उपरात तुरत औटाया हुआ दूध। ११ औटाए हुए दूध पर की साडी। मलाई। १२ लकडी का हीर। १३ परिणाम। फल। नतीजा। १४ धन। दौलत। १५ नवनीत। मक्खन। १६ अमृत। १७ लोहा। १८ वन। जगल। १९ बल। शक्ति। ताकत। २० मज्जा। २१ वज्रक्षार। २२ वायु। हवा। २३ रोग। बीमारी। २४ जूआ खेलने का पासा। २५ अनार का पेड। २६ पियाल वृक्ष। चिरौजी का पेड। २७ बग। २८ मुद्ग। मूँग। २९ क्वाथ। काढा। ३० नीली वृक्ष। नील का पौधा। ३१ साल। सार। ३२ पत्ता। पतला शरबत। ३३ कपूर। ३४ तलवार। (डिं०)। ३५ द्रव्य। (डिं०)। ३६ हाड। अस्थि। (डिं०)। ३७. एक प्रकार का मात्रिक छद जिसमे २८ मात्राएँ होती है और सोलहवी मात्रा पर विराम होता है। इसके अत मे दो गुरु होते है। प्रभाती नामक गीत इसी छद मे होता है। ३८ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसमे एक गुरु और एक लघु होता है। इसे 'ग्वाल' और 'शानु' भी कहते है। विशेष दे० 'ग्वाल'। ३९ एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे उत्तरोत्तर

वस्तुओं का उत्कर्ष या अपकर्ष वर्णित होता है। इसे 'उदार' भी कहते हैं। उ०—(क)—सब मम प्रिय सब मम उपजाए। सब ते अधिक मनुज मोहि भाए। तिन महँ द्विज, द्विज महँ श्रुतिधारी। तिन महँ निगम नीति अनुसारी। तिन महँ पुनि विरक्त पुनि ज्ञानी। ज्ञानिहु ते अति प्रिय विज्ञानी। तिनते मोहि अति प्रिय निज दासा। जेहि गति मोरि न दूसरी आसा। (ख) हे करतार विनै सुनो 'दास' की लोकनि को अवतार करचो जनि। लोकनि को अवतार करचो तो मनुष्यन को तो सवार करचो जनि। मानुष हू को सँवार करचो तो तिन्हें विच प्रेम पसार करचौ जनि। प्रेम पसार करचो तो दयानिधि कैहूँ वियोग विचार करचौ जनि। ४० वस्त्र। कपडा। उ०—वगरे वार झीने सार मैं झलकति अधर नई अरुनई सरसानि।—घनानद, पृ० ५०६। ४१ गमन। क्रमण। गति (को०)। ४२ सवाद। पस (को०)। ४३ गोवर। गोमय (को०)। ४४ प्रसार। फैलाव। विस्तृति (को०)। ४५ दृढता। मजबूती। धैर्य। धीरता।

**सार**[2]—वि० १ उत्तम। श्रेष्ठ। २ ठोस। दृढ। मजबूत। ३ न्याय्य। ४ आवश्यक। अनिवार्य (को०)। ५ सही। वास्तविक (को०)। ६ अनेक प्रकार का। रग विरगा। चितकवरा (को०)। ७ भगानेवाला। दूर करनेवाला।

**सार**[3]—सज्ञा पु० [स० सारिका] सारिका। मैना। उ०—गहवर हिय शुक सो कहँ सारो।—तुलसी (शब्द०)।

**सार**[4]—सज्ञा पु० [हिं० सारना] १ पालन। पोषण। रक्षा। उ०—जड पच मिल जिहि देह करी करनी लघु धी धरनीधर की। जनु को कहु क्यों करिहैं न सँभार जो सार करैं सचराचर की।—तुलसी (शब्द०)। २ शय्या। पलग। उ०—रची सार दोनो इक पासा। होय जुग जुग आवहिं कैलासा।—जायसी (शब्द०)। ३ खबरदारी। सभाल। हिफाजत। उ०—भरत सौगुनी सारकरत हैं अति प्रिय जानि तिहारे।—तुलसी (शब्द०)। ४ सुधबुध। अवसान। होश हवास। ५ खोजखवर।

**सार**[5]—सज्ञा पु० [स० श्याल, हिं० साला] पत्नी का भाई। साला।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्राय गाली के रूप मे भी किया जाता है।

**सार**[6]—सज्ञा पु० [फा०] १ उष्ट्र। ऊँट। २ एक चिडिया [को०]।

**सार**[7]—प्रत्य० पदात मे प्रयुक्त होकर यह फारसी प्रत्यय निम्नाकित अर्थ देता है—१ वाला। जैसे,—शर्मसार। २ बहुतायत। जैसे,—कोहसार। ३. मानिद। तुल्य। समान। जैसे,—देव सार [को०]।

**सार**[8]†—सज्ञा स्त्री० [स० शाला] पशुओं को बाँधने का स्थान। पशुशाला। जैसे, गो सार।

**सारक**[1]—वि० [स०] रेचक। दस्तावर [को०]।

**सारक**[2]—सज्ञा पुं० जमालगोटा [को०]।

**सारखदिर**—सज्ञा पु० [स०] दुर्गध खदिर। बबुरी।

**सारखा**†—वि० [स० सदृश, हिं० सरीखा] सदृश। समान। तुल्य। उ०—ता घर मरहट सारखे भूत वसहि तिन माहि।—कबीर ग्र०, पृ० २५५।

**सारगव**—सज्ञा पु० [स० सारगन्ध] चदन। सदल।

**सारगधि**—सज्ञा पु० [स० सारगन्धि] चदन।

**सारग**—वि० [स०] १ शक्तिशाली। सबल। २ सारगर्भित [को०]।

**सारगराही**ⓤ—वि० [स० सारग्राही] दे० 'सारग्राही'। उ०—औगुन छाँडै गुन गहै, सारगराही लच्छ।—कबीर सा०, पृ० ६०।

**सारगर्भ**—वि० [स०] दे० 'सारगर्भित'।

**सारगर्भित**—वि० [स०] जिसमे तत्व भरा हो। सारयुक्त। तत्वपूर्ण। जैसे,—सारगर्भित पुस्तक, सारगर्भित व्याख्यान।

**सारगात्र**—वि० [स०] सारयुक्त या शक्तिशाली अगो वाला। पुष्टाग। बलवान [को०]।

**सारगुण**—सज्ञा पु० [स०] प्रधान या प्रमुख गुण। प्रधान धर्म [को०]।

**सारगुरु**—वि० [स०] जो वजन मे भारी हो। तौल मे भारी।

**सारग्राहिणी**—वि० स्त्री० [स०] दे० 'सारग्राही'। उ०—रिपुदमन—और वो बुद्धि कैसी अच्छी होती है। रणधीर—सारग्राहिणी।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० ६२।

**सारग्राही**—वि० [स० सारग्राहिन्] [वि० स्त्री० सारग्राहिणी] सार तत्व को ग्रहण करनेवाला। किसी वस्तु का मुख्य अश ले लेनेवाला [को०]।

**सारग्रीव**—सज्ञा पु० [स०] शिव [को०]।

**सारघ**—सज्ञा पु० [स०] वह मधु जो मधुमक्खी तरह तरह के फूलो से सग्रह करती है।

विशेष वैद्यक मे यह लघु, रुक्ष, शीतल, कमल और अर्श रोग का नाशक, दीपन, बलकारक, अतिसार, नेत्र रोग तथा घाव मे हितकर कहा गया है।

**सारजट**—सज्ञा पु० [अ० सारजेट] पुलिस के सिपाही का जमादार, विशेषत गोरा या युरेशियन जमादार।

**सारज**—सज्ञा पु० [स०] नवनीत। मक्खन।

**सारजासव**—सज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का आसव जो धान, फल, फूल, मूल, सार, टहनी, पत्ते, छाल और चीनी इन नौ चीजो से बनता है।

विशेष—वैद्यक मे यह आसव मन, शरीर और अग्नि को बल देनेवाला, अनिद्रा, शोक और अरुचि का नाश करनेवाला तथा आनदवर्धक बतलाया गया है।

**सारटिफिकट**—सज्ञा पु० [अ० सर्टिफिकेट] १ प्रशसापत्र। २ सनद। प्रमाणपत्र।

**सारण**[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार का गध द्रव्य। २ आम्रातक वृक्ष। अमडा। ३, अतिसार। दस्त की बीमारी। ४ भद्रबला। ५ पारा आदि रसो का सस्कार। दोषशुद्धि। ६ रावण के एक मत्री का नाम जो रामचद्र की सेना मे उनका भेद लेने गया था। ७ आँवला। ८ गधप्रसारिणी। ९ नवनीत। मक्खन। १० गध। महक। ११ घर की ओर ले चलना (को०)। १२ शरद् ऋतु की वायु (को०)। १३ तक्र। मट्ठा (को०)।

**सारण**[2]—वि० १ रेचक। प्रवाहित करने या बहानेवाला। २ चिटका हुआ। फटा हुआ। ३ जिसके सिर पर बालो के पाँच गुच्छे हो [को०]।

**सारणा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पारद आदि रसो का एक प्रकार का सस्कार। सारण। २ विस्तार करना। फैलाना (को०)। ३ ध्वनि या स्वर उत्पन्न करना (को०)।

**सारणि**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गधप्रसारिणी। २ पुनर्नवा। गदहपूरना। ३ छोटी नदी। ४ नाली। प्रणालिका। मोरी (को०)।

**सारणिक**[1]—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० सारणिकी] १ पथिक। राहगीर। बटोही। २ घूम घूमकर बेचनेवाला व्यापारी। फेरीवाला। बिसाती (को०)।

**सारणिक**[2]—वि० यात्रा करनेवाला [को०]।

**सारणिकघ्न**—सज्ञा पुं० [स०] पथिको का विनाश करनेवाला, डाकू।

**सारणी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गंधप्रसारिणी। २. छोटी नदी। ३. दे० 'सारिणी'।

**सारणेश**—सज्ञा पु० [स०] एक पर्वत का नाम।

**सारतडुल**—सज्ञा पु० [स० सारतण्डुल] चावल। हलका उबाला हुआ चावल जिसके सब दाने साबूत हो।

**सारतः**—अव्य० [स० सारतस्] १ प्रकृति के अनुसार। प्रकृत्या। २ बलपूर्वक। ३ धन के अनुसार। वित्त के अनुसार [को०]।

**सारतरु**—सज्ञा पु० [स०] १ केले का पेड। २. खैर का पेड।

**सारता**†—सज्ञा स्त्री० [स०] सार का भाव या धर्म। सारत्व।

**सारति**- सज्ञा स्त्री० [हिं० सारना] तैयारी। व्यवस्था। उ०—तब वकील कर जोरि अरज करी कछु अरज की। तब सुजानि दृग मोरि मसलति की सारति करी।—सुजान०, पृ० ६।

**सारतैल**—सज्ञा पु० [स०] वैद्यक के अनुसार अशोक, अगर, सरल, देवदारु आदि का तेल जिसका व्यवहार क्षुद्र रोगो मे होता है।

**सारथि**—सज्ञा पु० [स०] १. रथादि का चलानेवाला। सूत। रथनागर। २ समुद्र। सागर। ३ साथी। सहयोगी (को०)। ४ अगुआ। नेता। पथप्रदर्शक (को०)।

**सारथित्व**—सज्ञा पुं० [स०] १ सारथि का कार्य। २ सारथि का भाव या धर्म। ३ सारथि का पद।

**सारथी**—सज्ञा पु० [स० सारथि] दे० 'सारथि-१'। उ०—आपने बाण सो काटि ध्वज रुक्म के असुर औ सारथी तुरत मारयो। —सूर (शब्द०)।

**सारथ्य**—सज्ञा पु० [स०] १ रथ आदि का चलाना। गाडी आदि हाँकना। २ सवारी। ३ सहायता। मदद।

**सारद**ⓤ[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शारदा] सरस्वती। शारदा। उ०—सुक से मुनी सारद सेवकता चिरजीवन लोमस ते अधिकाने। ऐसे भए तो कहा तुलसी जो पै राजिवलोचन राम न जाने। —तुलसी (शब्द०)।

**सारद**[2]—वि० [स० शरद > शारद] शारदीय। शरद सबधी। उ०—सोहति धोती सेत मे, कनक बरन तन बाल। सारद बारद बीजुरी, भा रद कीजत लाल।—बिहारी (शब्द०)।

**सारद**[3]—सज्ञा पुं० [स० शरद्] शरद ऋतु।

**सारदर्शी**—वि० [स० सारदर्शिन्] सार तत्व को जाननेवाला। महत्वपूर्ण अश को पहचाननेवाला [को०]।

**सारदा**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दे० 'शारदा'। २ दुर्गा [को०]।

**सारदा**[2]—सज्ञा पु० [स० शरद् ?] स्थल कमल।

**सारदा**[3]—वि० स्त्री० [स०] सार देनेवाली। जो सार दे।

**सारदातीर्थ**—सज्ञा पु० [स० शारदातीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ।

**सारदारु**—सज्ञा पु० [स०] वह लकडी जिसमे सार भाग अधिक हो।

**सारदासुदरी**—सज्ञा स्त्री० [स० शारदासुन्दरी] दुर्गा का एक नाम।

**सारदी**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] जलपीपल।

**सारदी**[2]—वि० [स० शारदी] दे० 'शारदीय'। उ०—कहुँ कहुँ वृष्टि सारदी थोरी। कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी।—मानस, ४। १६।

**सारदूल**—सज्ञा पु० [हिं० शार्दूल] दे० 'शार्दूल'। उ०—क्रीडा मृग जाको सारदूल। तन बरन काति मनु हेम फूल। —भारतेदु ग्र०, भा० १, पृ० ३७३।

**सारद्रुम**—सज्ञा पुं० [स०] १ खैर का पेड। २ वह वृक्ष जिसकी लकडी मे सारभाग अधिक हो।

**सारधाता**—सज्ञा पु० [स० सारधातृ] १ वह जो ज्ञान उत्पन्न करता हो। बोध करानेवाला। २ शिव।

**सारधान्य**—सज्ञा पु० [स०] १ उत्तम धान। बढिया चावल। २ बढिया अन्न।

**सारधू**†—सज्ञा स्त्री० [हिं०] पुत्री। बेटी। कन्या।

**सारना**—क्रि० स० [हिं० सरना का सक० रूप] १ पूर्ण करना। समाप्त करना। सपूर्ण रूप से करना। उ०—धनि हनुमत सुग्रीव कहत है, रावण को दल मारयो। सूर सुनत रघुनाथ भयो सुख काज आपनो सारयो।—सूर (शब्द०)। २. साधना। बनाना। दुरुस्त करना। ३ सुशोभित करना। सुदर बनाना। ४ देख रेख करना। रक्षा करना। सँभालना। ५ आँखो मे अजन आदि लगाना। ६ (अस्त्र आदि) चलाना। सचालित करना। उ०—ससि पर करवत सारा काहू। नखतन्ह भरा दीन्ह बड दाहू।—जायसी (शब्द०)। ७ गलाना। सडाना। उ०—सन असत हे एक काट के जल मे सारै। —पलटू०, भा० १, पृ० १७। ८ काढना। लगाना। उ०—(क) जातहि राम तिलक तेहि सारा।—मानस, ५। ४९। (ख) मारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा —मानस, ६। १०५।

**सारनाथ**—सज्ञा पु० [स० सारङ्गनाथ] बनारस से उत्तरपश्चिम चार मील पर एक प्रसिद्ध स्थान।

**विशेष**—हिंदुओ, जैनियो और बौद्धो का एक प्रसिद्ध तीर्थ। यहाँ मृगदाव है जहाँसे भगवान् बुद्ध ने अपना धर्मचक्र प्रवर्तन) किया था। यहाँ खुदाई प, बौद्ध मदिरो का ध्वसावशेष तथा जैन मूर्तियाँ पाई गई ह। इसके भी यहाँ पाया गया है।

**सारपत्र**—वि० [स०] (वृक्ष) जिसकी पत्तियाँ मजबूत और कडी हो [को०]।

**सारपद**—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का पक्षी जो चरक के अनुसार विष्किर जाति का है। २ वह पत्ता जिसमे सार अर्थात् खाद हो।

**सारपर्णी**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शालपर्णी' [को०]।

**सारपाक**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का विषैला फल जिसका उल्लेख सुश्रुत ने किया है।

**सारपाढ**—सज्ञा पु० [स०] धन्वग वृक्ष। धामिन।

**सारपादप**—सज्ञा पु० [स०] धन्वग वृक्ष। धामिन।

**सारफल**—सज्ञा पुं० [स०] जँबीरी नीबू।

**सारबधका**—सज्ञा स्त्री० [सं० सारबन्धका] मेथी।

**सारबान**—सज्ञा पु० [फा०] ऊँट पालनेवाला। ऊँटवाला [को०]।

**सारभग**—सज्ञा पु० [स० सारभङ्ग] सार या शक्ति का अभाव [को०]।

**सारभाड**—सज्ञा पु० [स० सारभाण्ड] १ व्यापार की बहुमूल्य वस्तु। २ खजाना। ३ प्राकृतिक पात्र। प्रकृतिनिर्मित पात्र। जैसे, मृगनाभि। कस्तूरी। ४ चोखा माल। असली माल।

**सारभाटा**—सज्ञा पु० [हिं० ज्वार का अनु० + भाटा] ज्वारभाटा का उलटा। समुद्र की वह बाढ जिसमे पानी पहले बढकर समुद्र तट से आगे निकल जाता है और फिर कुछ देर बाद पीछे लौटता है।

**सारभुक्**—सज्ञा पु० [स० सारभुज्] लोहे को खानेवाली, अग्नि। आग।

**सारभूत**[1]—वि० [स०] १ सारस्वरूप। उ०—तामहिँ सारभूत द्वै साधैं। सिद्धासन पद्मासन बाँधैं।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० १०६।

**सारभूत**[2]—सज्ञा पुं० प्रमुख तत्त्व या सर्वोत्तम वस्तु।

**सारभृत्**—वि० [स०] सारग्रहण करनेवाला। सारग्राही।

**सारमडूक**—सज्ञा पु० [स० सारमण्डूक] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीडा जो मेढक की तरह का होता है।

**सारमहत्**—वि० [स०] अत्यत मूल्यवान्। बहुत कीमती।

**सारमार्गण**—सज्ञा पु० [स०] १ मज्जा या मेद ढूँढना। २. सार तत्त्व या अश खोजना [को०]।

**सारमिति**—सज्ञा स्त्री० [स०] श्रुति। वेद।

**सारमूषिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] देवदाली। घघरबेल। बदाल।

**सारमेय**—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० सारमेयी] १ सरमा की सतान। २ कुत्ता। ३ सुफलक के पुत्र और अक्रूर के एक भाई का नाम।

यौ०—सारमेयगणाधिप = कुबेर का एक नाम। सारमेयचिकित्सा = कुत्ते की चिकित्सा करने की कला।

**सारमेयादन**—सज्ञा पु० [स०] १ कुत्ते का भोजन। २ भागवत के अनुसार एक नरक का नाम।

**सारमेयी**—सज्ञा स्त्री० [स०] कुतिया।

**सारयोध**—वि० [सं०] चुने हुए योद्धाओ से युक्त। अच्छे वीरो से युक्त [को०]।

**साररूप**—वि० [स०] १ निचोड। निष्कर्ष स्वरूप। २ सर्वोत्तम। प्रमुख। ३ अत्यत सुदर [को०]।

**सारलोह**—सज्ञा पु० [स०] लोहसार। इस्पात। लोहा।

विशेष—वैद्यक मे यह ग्रहणी, अतिसार, अर्दाग, वात, परिणामशूल, सर्दी, पीनस, पित्त और श्वास का नाशक बताया गया है।

**सारल्य**—सज्ञा पुं० [स०] १ सरल होने का भाव। सरलता। उ०—किंतु हा! यह कैसा सारल्य? जानता है जो बनकर शल्य।—साकेत, पृ० ३५। २ सत्यता। ईमानदारी। सचाई [को०]।

**सारव**—वि० [स०] सरयू नदी से सबधित [को०]।

**सारवती**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ योग मे एक प्रकार की समाधि। २ एक प्रकार का छद जिसमे तीन भगण और एक गुरु होता है।

**सारवती**[2]—वि० स्त्री० [स० सारवत्] दे० 'सारवान्'।

**सारवत्ता**—सज्ञा स्त्री० [स०] सार ग्रहण करने का भाव। सारग्राहिता।

**सारवना**Ⓤ—क्रि० स० [सं० स्राव करण] स्रवित करना। चुआना। ढालना। उ०—ग्रम्ह अगनि जीवन जरै चेतन चितहि उजासो रे। सुमति कलाली सारवै कोइ पीवै विरला दासो रे।—दादू०, पृ० ४९३।

**सारवर्ग**—सज्ञा पुं० [स०] वे वृक्ष या वनस्पतियाँ आदि जिनमे से किसी प्रकार का दूध या सफेद तरल पदार्थ निकलता हो। क्षीरवृक्ष।

**सारवर्जित**—वि० [स०] जिसमे कुछ भी सार न हो। साररहित। निसार। रसहीन।

**सारवस्तु**—सज्ञा स्त्री० [स०] सारवान् वस्तु। मूल्यपूर्ण चीज [को०]।

**सारवान्**—दे० [स० सारवत्] १ महत्वपूर्ण। मूल्यवान। २ मजबूत। दृढ। ठोस। ३ पोषक। ४ सार अर्थात् द्रव, रस या निर्यासयुक्त। ५ सारयुक्त। घन। ससार। ६, उर्वर। उपजाऊ [को०]।

**सारवाला**—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की जगली घास जो तर जगहो मे होती है।

विशेष—यह घास प्राय बारह वर्ष तक सुरक्षित रहती है। मुलायम होने पर यह पशुओ को खिलाई जाती है।

**सारविद्**—वि० [स०] किसी वस्तु के सार का ज्ञाता। किसी के तत्व, मूल्य, अथवा महत्व को जाननेवाला [को०]।

**सारवृक्ष**—सज्ञा पु० [स०] धामिन। धन्वग वृक्ष।

**सारशन**—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सारसन'।

**सारशल्य**—सज्ञा पु० [स०] सफेद खैर का पेड। श्वेत खदिर।

**सारशून्य**—वि० [स०] तत्वरहित। महत्वहीन। निरर्थक [को०]।

**सारस[1]**—सज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सारसी] १ एक प्रकार का प्रसिद्ध सुदर पक्षी जो एशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और युरोप के उत्तरी भागो मे पाया जाता है। उ०—मोर हस सारस पारावत। भवननि पर सोभा अति पावत।—मानस, ७।२८।

विशेष—इसकी लबाई पूँछ के आखिरी सिरे तक ४ फुट होती है। पर भूरे होते है। सिर का ऊपरी भाग लाल और पैर काले होते हैं। यह एक स्थान पर नही रहता बराबर घूमा करता है। किसानो के नए बीज बोने पर यह वहाँ पहुँच जाता है और बीजो को चट कर जाता है। यह मेढक, घोघा आदि भी खाता है। यह प्राय घास फूस के ढेर मे घोसला बनाकर या खँडहरो मे रहता है। यह अपने बच्चो का लालन पालन बडे यत्न से करता है। कही कही लोग इसे पालते है। बाग बगीचो मे छोड देने पर यह कीडे मकोडो को खाकर उनसे पेड पौधो की रक्षा करता है। कुछ लोग भ्रमवश हस को ही सारस मानते हैं। वैद्यक मे इसके मास का गुण मधुर, अम्ल, कषाय तथा महातिसार, पित्त, ग्रहणी और अर्श रोग का नाशक बताया गया है।

पर्या०—पुष्कराह्व। लक्ष्मण। सरसीक। सरोद्भव। रसिक। कामी।

२ हस। ३ गरुड का पुत्र। ४. चद्रमा। ५ स्त्रियो का एक प्रकार का कटिभूषण। ६ झील का जल।

विशेष—नदी का जल पहाड आदि के कारण रुक कर जहाँ जमा होता है, उसे 'सरस' और उसके जल को सारस जल कहते हैं। ऐसा जल बलकारी, प्यास बुझानेवाला, लघु, रुचिकारक और मलमूत्र को रोकनेवाला माना गया है।

७ कमल। जलज। उ०—(क) सारस रस अचवन को मानो तृपित मधुप जुग जोर। पान करत कहुँ तृप्ति न मानत पलक न देत अकोर।—सूर (शब्द०)। (ख) मजु अजन सहित जलकन चुवत लोचन चारु। स्याम सारस मग मनो ससि श्रवत सुधा सिँगारु।—तुलसी (शब्द०)। ८ खग। पक्षी। विहग (को०)। ९ सगीत मे एक ताल (को०)। १० छप्पय का ३७ वाँ भेद। इसमे ३४ गुरु, ८४ लघु, कुल ११८ वर्ण या १५१ मात्राएँ अथवा ३४ गुरु, ८० लघु कुल ११४ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती है।

**सारस[2]**—वि० १ तालाव सबधी। २ सारस पक्षी सबधी। ३ चिल्लाने-वाला। बुलानेवाला [को०]।

**सारसक**—सज्ञा पुं० [स०] सारस।

**सारसन**—सज्ञा पु० [स०] १ स्त्रियो का कमर मे पहनने का मेखला नामक आभूषण। करधनी। चद्रहार। २ तलवार की पेटी। कमरबद। ३ कवच। उरस्त्राण (को०)।

**सारसप्रिया**—सज्ञा स्त्री० [सं०] सारसी [को०]।

**सारसा**—सज्ञा पुं० [अ० सालसा] दे० 'सालसा'।

**सारसाक्ष**—वि० [सं०] एक प्रकार का रत्न। लाल [को०]।

**सारसाक्षी**—सज्ञा स्त्री० [सं०] पद्मलोचना। कमलनैनी स्त्री [को०]।



**सारसिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] सारस पक्षी की मादा। सारसी [को०]।

**सारसी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आर्या छद का २३ वाँ भेद जिसमे ५ गुरु और ४८ लघु मात्राएँ होती है। २ सारस पक्षी की मादा।

**सारसुता**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० सूरसुता] यमुना। उ०—निरखति बैठि नितविनि पिय सँग सारसुता की ओर।—सूर (शब्द०)।

**सारसुती**Ⓤ†—सज्ञा स्त्री० [स० सरस्वती] दे० 'सरस्वती'।

**सारसैंधव**—सज्ञा पु० [स० सारसैन्धव] सेंधा नमक।

**सारस्य[1]**—वि० [स०] जिसमे बहुत अधिक रस हो। बहुत रसवाला।

**सारस्य[2]**—सज्ञा पुं० १ रसदार होने का भाव। रसीलापन। सरसता। २ जल का प्राचुर्य। जल की अधिकता (को०)। ३ उत्कोश। कलकल। निनाद (को०)।

**सारस्वत[1]**—सज्ञा पु० [स०] १ दिल्ली के उत्तरपश्चिम का वह भाग जो सरस्वती नदी के तट पर है और जिसमे पजाब का कुछ भाग सम्मिलित है। (प्राचीन आर्य पहले यही आकर बसे थे और इसे बहुत पवित्र समझते थे।) सारस्वत प्रदेश। २ इस देश के निवासी ब्राह्मण। ३ सरस्वती नदी के पुत्र एक मुनि का नाम। ४ एक प्रसिद्ध व्याकरण। ५ बिल्वदड। ६ वैद्यक मे एक प्रकार का चूर्ण जिसके सेवन से उन्माद, वायुजनित विकार तथा प्रमेह आदि रोगो का दूर होना माना जाता है। ७. वैद्यक मे एक प्रकार का औषधयुक्त घृत जो पुष्टिकारक माना जाता है। ८ एक कल्प का नाम (को०)। ९ वक्तृत्व। वाग्मिता (को०)। १० दे० 'सारस्वत कल्प (को०)।

**सारस्वत[2]**—वि० १ सरस्वती (वाग्देवी) सबधी। सरस्वती का। २ वाक्पटु। वाग्मी। विद्वान् (को०)। ३ सरस्वती नदी सबधी (को०)। ४ सारस्वत देश का।

**सारस्वतकल्प**—सज्ञा पु० [स०] सरस्वतीपूजन सबधी एक उत्सव का नाम। सारस्वतोत्सव [को०]।

**सारस्वतव्रत**—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक प्रकार का व्रत जो सरस्वती देवता के उद्देश्य से किया जाता है।

विशेष—कहते है कि इस व्रत का अनुष्ठान करने से मनुष्य बहुत बडा पडित, भाग्यवान् और कुशल हो जाता है और उसे पत्नी तथा मित्रो आदि का प्रेम प्राप्त हो जाता है। यह व्रत बराबर प्रति रविवार या पचमी को किया जाता है और इसमे किसी अच्छे ब्राह्मण की पूजा करके उसे भोजन कराया जाता है।

**सारस्वतीय**—वि० [स०] सरस्वती सबधी। सरस्वती का।

**सारस्वतोत्सव**—सज्ञा पु० [स०] वह उत्सव जिसमे सरस्वती देवी का पूजन किया जाता है।

**सारस्वत्य**—वि० [स०] सरस्वती सबधी। सरस्वती का।

**साराभस**—सज्ञा पु० [स०] नीबू का रस।

**साराश**—सज्ञा पु० [स०] १ खुलासा। सक्षेप। सार। निचोड। २ तात्पर्य। मतलब। अभिप्राय। ३ नतीजा। परिणाम। ४ उपसहार। परिशिष्ट।

**सारा**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ काली निसोथ। कृष्णत्रिवृत्ता। २ दूब। दूर्वा। ३ शातला। ४ थूहर। ५ केला। ६ कुश। कुशा (को०)। ७ तालिसपत्र।

**सारा**[2]—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का अलकार जिसमे एक वस्तु दूसरी से बढकर कही जाती है। जैसे, ऊखहुते मधुर पियूषहु ते मधुर प्यारी तेरे ओठ मधुरता को सागर है।

**सारा**†[3]—सज्ञा पु० [स० श्यालक] दे० 'साला'।

**सारा**[4]—वि० [स० सर्व] [वि० स्त्री० सारी] समस्त। सपूर्ण। समूचा। पूरा। उ०—के है पाकदामन तू नरियाँ मे आज। बडाई बडी तुज है सारियाँ मे आज।—दक्खिनी०, पृ० ८४।

**सारा**†[5]—सज्ञा पु० [हिं० ओसारा] दे० 'ओसारा'। उ०—जब सारे मे धूप फैल जाए तब कही आँख खुले।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ३६८।

**सारादान**—सज्ञा पुं० [स०] सार वस्तु को ग्रहण करना। उत्कृष्ट या सर्वोत्तम को चयन करना (को०)।

**सारापहार**—सज्ञा पुं० [स०] सार अश या सपत्ति को लूटना (को०)।

**सारामुख**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का धान या चावल (को०)।

**सारम्ल**—सज्ञा पु० [स०] १ जँबीरी नीबू। २ धामिन।

**सारार्थी**—वि० [स० सारार्थिन्] सार भाग का इच्छुक। लाभ लेने का इच्छुक (को०)।

**साराल**—सज्ञा पुं० [सं०] तिल।

**सारव**—वि० [स०] नादयुक्त। रवयुक्त (को०)।

**सारावती**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का छद जिसे सारावली भी कहते है।

**सारि**—सज्ञा पु० [स०] १ पासा या चौपड खेलनेवाला। २ जुआ खेलने का पासा। उ०—ढारि पासा साधु सगति केरि रसना सारि। दाँव अव के परयो पूरी कुमति पिछली हारि।—सूर (शब्द०)। ३ गोटी। ४ एक पक्षी। मैना (को०)।

यौ०—सारिक्रीडा = पाँसे का खेल। गोटियो का खेल। सारिफलक = बिसात जिसपर गोटी खेलते है।

**सारिक**[1]—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सारिका'।

**सारिक**[2]—सज्ञा पु० [अ० सारिक] [स्त्री० सारिका] चोर। तस्कर (को०)।

**सारिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मैना नामक पक्षी। दे० 'मैना'। उ०—वन उपवन फल फूल, सुभग सर शुक सारिका हस पारावत।—सूर (शब्द०)। २ सारगी, सितार, वीणा आदि तत वाद्यो का ऊँचा उठा हुआ वह भाग जिसके ऊपर से होकर तार जाता है। घुडिया। घोरिया (को०)। ३ चाडाल वीणा (को०)। ४ विश्वस्त व्यक्ति। चर (को०)।

**सारिकामुख**—सज्ञा पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीडा।

**सारिखा**Ⓤ†—वि० [सं० सदृश या सदृक्ष] दे० 'सरीखा'। उ०—(क) तुम्ह सारिखे सत प्रिय मोरे।—मानस, ५। (ख) सतगुरु सम न सचरा, सत्त नाम उर नाहिं। ते घट मरघट सारिखा, भूत बसै ता माँहि।—दरिया० बानी, पृ० ६। (ग) सुन्दर सदगुरु सारिखा उपकारी नहिं कोइ।—सुदर० ग्र०, भा० २, पृ० ६६७।

**सारिणी**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सहदेई। सहदेवी। महाबला। पीतपुष्पा। २ कपास। ३ धमासा। दुरालभा। कपिल शिशपा। काला सीसो। ४ गध प्रसारिणी। ५ रक्त पुनर्नवा। ६ जलप्रणाली। स्रोत की धारा (को०)।

**सारिणी**[2]—सज्ञा स्त्री० १ दे० 'सारणी'। २ वह तालिका या ग्रथ जिससे ग्रहो आदि की गति का क्रमबद्ध ज्ञान प्राप्त होता हो। जैसे,—चद्र सारिणी, सूर्यसारिणी। ३ सूची। तालिका। फेहरिस्त।

**सारिव**—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का धान।

**सारिवा**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनतमूल।

पर्या०—शारदा। गोपी। गोपकन्या। गोपवल्ली। प्रतानिका। लता। आस्फोता। काष्ठ शारिवा। गोपा। उत्पल सारिवा। अनता। शारिवा। श्यामा।

२ काला अनतमूल।

पर्या०—कृष्ण मूली। कृष्णा। चदन सारिवा। भद्रा। चदन गोपा। चदना। कृष्ण वल्ली।

**सारिवाद्वय**—सज्ञा पुं० [सं०] अनतमूल और श्यामा लता इन दोनो का समूह।

**सारिष्ट**—वि० [स०] अरिष्ट अर्थात् अमगल एवम् अशुभ लक्षणो से युक्त। मृत्यु के लक्षणो से युक्त (को०)।

**सारिष्ठ**—वि० [स०] १ सबसे सुदर। २ सबमे श्रेष्ठ।

**सारिमुक्त**—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जो ऋग्वेद के कुछ मत्रो के द्रष्टा थे।

**सारी**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सारिका पक्षी। मैना। उ०—शुभ सिद्धात वाक्य पढते हैं शुक सारी भी आश्रम के।—पचवटी, —पृ० ६। २ पासा। गोटी। ३ सातला। सप्तला। थूहर। ४ भौहो की भगिमा या वक्रता (को०)।

**सारी**[2]—सज्ञा स्त्री० [स० शाटिका, शाटी, हिं० साडी] १ दे० 'साडी'। उ०—तन सुरग सारी, नयन अजन, वेंदि भाल। सजे रही जग जालिमा मामिनि देखहु लाल।—स० सप्तक, पृ० २५२।

**सारी**†[3]—सज्ञा स्त्री० [हिं० साला] स्त्री की बहन। पत्नी की बहन।

**सारी**Ⓤ[4]—सज्ञा स्त्री० [स० सार] मलाई। बालाई। साढी।

**सारी**[5]—सज्ञा पु० [स० सारिन्] वह जो अनुकरण करनेवाला हो। वह जो अनुसरण करे।

**सारी**[6]—वि० [स० सारिन्] १ गमनशील। जानेवाला। गता। २ किसी वस्तु का सार भाग लेनेवाला (को०)।

**सारीख, सारीखा**Ⓤ—वि० [स० सदृक्ष, प्रा० सारिक्ख] [वि० स्त्री० सारीखी] समान। तुल्य। सदृश। उ०—(क) जोध सूर असुर वो सरोवर जूटिया, वरोवर करै सारीख वाहाँ।—रघु०

रू०, पृ० २१। (ख) सारीखी जोडी जुडी आ नारी अउ नाह। —ढोला०, दू० ६।

**सारु**Ⓤ†—सज्ञा पु० [हिं०] दे० 'सार'। उ०—सगर मे सरजा शिवाजी अरि सैनन को, सारु हरि लेत हिंदुवान सिर सारु दै।—भूषण ग्र०, पृ० ५४।

**सारूप**—सज्ञा पु० [स०] समान रूप होने का भाव। सरूपता।

**सारूप्य**[१]—सज्ञा पु० [स०] १ पाँच प्रकार की मुक्तियो मे से एक प्रकार की मुक्ति जिसमे उपासक अपने उपास्य देव के रूप मे रहता है और अत मे उसी उपास्य देवता का रूप प्राप्त कर लेता है। २ समान रूप होने का भाव। एकरूपता सरूपता। ३ अनुकूल वस्तु की सरूपता अथवा रूपसादृश्य के कारण जन्य चित्तक्षोभ की वृद्धि अथवा क्रोधादि व्यवहार (को०)। ४ किसी पदार्थ को या उससे मिलती जुलती सूरत को देखकर होनेवाला आश्चर्य (को०)।

**सारूप्य**[२]—वि० समुपयुक्त। उचित। ठीक (को०)।

**सारूप्यता**—सज्ञा स्त्री० [स०] सारूप्य का भाव या धर्म।

**सारो**Ⓤ†[१]—सज्ञा पु० [स० शालि] एक प्रकार का धान जो अगहन मास मे तैयार हो जाता है।

**सारो**Ⓤ†[२]—सज्ञा स्त्री० [स० सारिका] दे० 'सारिका'।

**सारोदक**—सज्ञा पु० [स०] अनतमूल का रस।

**सारोपा**—सज्ञा स्त्री० [स०] साहित्य मे एक प्रकार की लक्षणा जो उस स्थान पर होती है जहाँ एक पदार्थ मे दूसरे का आरोप होने पर कुछ विशिष्ट अर्थ निकलता है। जैसे,—गरमी के दिनो मे पानी ही जान है। यहाँ 'पानी' मे 'जान' का आरोप किया गया है। पर अभिप्राय यह निकलता है कि यदि थोडी देर भी पानी न मिले तो जान निकलने लगती है।

**सारोप्टिक, सारोप्ट्रिक**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का विष।

**सारोह**—वि० [स०] १ आरोहयुक्त। ऊपर उठा हुआ। २ घोडेवाले या घुडसवार के साथ (को०)।

**सारौं**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सारो] सारिका। मैना।

**सार्क**—वि० [स०] अर्क या सूर्य से युक्त। धूप या आतपयुक्त (को०)।

**सार्गड, सार्गल**—वि० [स०] अगलायुक्त। प्रतिबधित। रोक या प्रतिबध से युक्त। प्रतिरोधित (को०)।

**सार्गाल**—वि० [स० शार्गाल ?] शृगाल सबधी। स्यार का।

**सार्गिक**—सज्ञा पु० [स०] वह जो सृष्टि करने मे समर्थ हो। स्रष्टा। सृष्टिकर्ता।

**सार्जंट**—सज्ञा पु० [अ० सार्जेंट] दे० 'सर्जंट'।

**सार्ज**—सज्ञा पुं० [स०] राल। धूना।

**सार्जनाक्षि**—सज्ञा पु० [स०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

**सार्टिफिकेट**—सज्ञा पु० [अ० सार्टिफिकेट] दे० 'सर्टिफिकेट'।

**सार्त्र**—सज्ञा पुं० [स०] घर। निवास (को०)।

**सार्थ**[१]—सज्ञा पु० [स०] १ जतुओ का समूह। पशुओ का झुड। २ वणिको का समूह। कारवाँ। ३. समूह। गरोह। झुड। ४. व्यापारी माल (कौटि०)। ५ कारवार करनेवाला। व्यापारी। रोजगारी। ६, धनी व्यक्ति (को०)। ७ तीर्थयात्री (को०)। ८ समाज। समूह। भीड। दल (को०)।

**सार्थ**[२]—वि० १ अर्थ सहित। जिसका अर्थ हो। २ उद्देश्ययुक्त। जिसका कुछ उद्देश्य हो (को०)। ३ समान अर्थ या महत्व का (को०)। ५ सपन्न। धनी (को०)। ६ जो उपयोगी या काम के लायक हो (को०)।

**सार्थक**—वि० [स०] १ अर्थ सहित। २ सफल। सिद्ध। पूर्ण मनोरथ। ३ उपकारी। गुणकारी। मुफीद। ४ लाभकर। लाभदायक।

**सार्थकता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सार्थक होने का भाव। २ सफलता। सिद्धि। उ०—अधिक प्राणो के पास, अधिक आनदमय, अधिक कहने के लिये प्रगति की सार्थकता।—आराधना, पृ० ८६।

**सार्थघ्न**—सज्ञा पु० [स०] वह जो सार्थ या कारवाँ को नष्ट करता अथवा लूट लेता हो। डाकू (को०)।

**सार्थज**—वि० [स०] सार्थ मे उत्पन्न। कारवाँ मे पला हुआ (को०)।

**सार्थपति**—सज्ञा पुं० [स०] व्यापार करनेवाला। वणिक्। रोजगारी। सार्थ का स्वामी। कारवाँ का प्रधान।

**सार्थपाल**—वि० [स०] सार्थ की देखभाल करनेवाला। व्यापारियो के काफिले का रक्षक (को०)।

**सार्थभृत्**—सज्ञा पु० [स०] सार्थ का सचालक या प्रधान (को०)।

**सार्थवत्**—वि० [स०] १ जिसका कुछ अर्थ हो। अर्थयुक्त। २ यथार्थ। ठीक। ३ सार्थ या समूहवाला। विशाल समूह के साथ (को०)।

**सार्थवाह**—सज्ञा पु० [स०] १ सार्थ का प्रधान या नेता। २ व्यापारी। रोजगारी (को०)।

**सार्थवाहन**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सार्थवाह'।

**सार्थसचय**—वि० [स० सार्थसञ्चय] धनी। मालदार (को०)।

**सार्थहा**[१]—वि० [स० सार्थहन्] सार्थ का नाश करनेवाला (को०)।

**सार्थहा**[२]—सज्ञा पु० डाकू (को०)।

**साथहीन**—वि० [स०] अपने सार्थ से बिछुडा हुआ। जो अपने दल से बिछुड गया हो (को०)।

**सार्थवान्**—वि० [स० सार्थवत्] १. अर्थयुक्त। २ अभिप्राय से युक्त। महत्वपूर्ण। ३ जिसके साथ बहुत बडा समूह हो (को०)।

**सार्थातिवाह्य**—सज्ञा पु० [स०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार माल की चलान। व्यापारिक माल को रवाना करना।

**सार्थिक**[१]—वि० [स०] १ दे० 'सार्थक'। २ सहयात्री। साथ मे यात्रा करनेवाला (को०)।

**सार्थिक**[२]—सज्ञा पु० १ वणिक्। व्यापारी। २ सहयात्री (को०)।

**सार्थी**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० सारथिन्] रथ हाँकनेवाला। कोचवान।

**सार्दूल**—सज्ञा पुं० [स० शार्दूल] सिह। केसरी। विशेष दे० 'शार्दूल'।

**साद्ध**—वि० [स०] १. जिसमे पूरे के अतिरिक्त आधा भी मिला या लगा हो। अर्धयुक्त। २. सहित।

सार्वज्ञ, सार्वज्ञ्य—संज्ञा पुं० [सं०] होने का भाव। सर्वज्ञता।

सार्वत्रिक—वि० [सं०] सब स्थानों से सबद्ध। सब स्थानों में होनेवाला। प्रत्येक स्थितियों, स्थानों एवं अवस्थाओं में होनेवाला। सर्वव्यापी। जैसे, सार्वत्रिक नियम।

सार्वदेशिक—वि० [सं०] संपूर्ण देशों का। सर्वदेश या राष्ट्र संबंधी।

सार्वधातुक'—वि० [सं०] [स्त्री० सार्वधातुकी] संस्कृत व्याकरण के अनुसार सभी धातुओं में व्यवहृत होनेवाला। गण विकरण लगाने के पश्चात् धातु के समग्र रूपों में व्यवहृत होनेवाला।

सार्वधातुक'—संज्ञा पुं० संस्कृत व्याकरण में चार लकारों (लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ्) के तिङादि प्रत्यय या लिट् तथा आशीर्लिङ् को छोड़कर और सभी लकारों के विभक्तिचिह्न और 'श्' ध्वनि से प्रकट होनेवाले विकरण।

सार्वनामिक—वि० [सं०] सर्वनाम से संबंधित।

सार्वभौतिक—वि० [सं०] [स्त्री० सार्वभौतिकी] सर्वभूत संबंधी। सब प्राणियों या भूतों में संबंध रखनेवाला।

सार्वभौम'—संज्ञा पुं० [सं०] १ सप्तद्वीपा वसुधरा का नरेश। समस्त भूमि का राजा। चक्रवर्ती राजा। २ पुरुवंशी अहंयाति का पुत्र। ३ भागवत के अनुसार विदूरथ के पुत्र का नाम। ४ कुबेर की दिशा अर्थात् उत्तर दिशा का दिग्गज। हाथी। ५ शुक्रनीति के अनुसार वह राज्य जिसका कर या राजस्व प्रतिवर्ष ५० करोड़ कर्ष हो (को०)। ६ समग्र विश्व की भूमि। दुनियाँ का राज्य (को०)।

सार्वभौम'—वि० १ समस्त भूमि संबंधी। संपूर्ण भूमि का। जैसे,—सार्वभौम राजा। २ समग्र पृथ्वी का शासन करनेवाला (को०)। ३ जो संपूर्ण विश्व में विख्यात हो (को०)। ४ योग के अनुसार मन की सभी स्थितियों, अवस्थाओं से संबंध रखनेवाला (को०)।

यौ०—सार्वभौमगृह, सार्वभौमभवन = चक्रवर्ती नरेश का प्रासाद।

सार्वभौमवाद—संज्ञा पुं० [सं० सार्वभौम + वाद] वह सिद्धांत जिसमें पृथ्वी के समस्त प्राणियों के प्रति समता का भाव रखा जाता है। सभी के साथ समान भाववाला सिद्धांत। उ०—उपनिषदीय सार्वभौमवाद और उस काल का प्रचलित वर्णाश्रम इनका कैसे सहवास क्योंकर निभ सकता था।—सत० दरिया (भू०), पृ० ६२।

सार्वभौमसत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] समग्र भूमि पर शासन करने की सर्वोच्च शक्ति। व्यापक शक्ति या अबाध अधिकार (अं० पैरामाउंट पावर)। उ०—निस्संदेह उन्हें महसूस करना चाहिए कि सार्वभौम सत्ता न शिमला में है न ह्वाइट हाल (लंदन) में।—आज, १६५४।

सार्वभौमिक—वि० [सं०] संपूर्ण धरती संबंधी। विश्व में व्याप्त या फैला हुआ (को०)।

सार्वभौमिकता—संज्ञा पुं० [सं०] सार्वभौमिक होने का भाव। सर्वव्यापकता।

सार्वयज्ञिक, सार्वयज्ञीय—वि० [सं०] जो सभी प्रकार के यज्ञो से सबद्ध हो [को०]।

सार्वयौगिक—वि० [स०] प्रत्येक योग मे उपयोगी या उपकारक [को०]।

सार्वरात्रिक—वि० [स०] पूरी रात चलने या टिकनेवाला। जैसे,—दीपक [को०]।

सार्वराष्ट्रिय—वि० [स०] दे० 'सार्वराष्ट्रीय'।

सार्वराष्ट्रीय—वि० [सं०] जिसका दो या अधिक राष्ट्रो से सबध हो। भिन्न भिन्न राष्ट्र सबधी। जैसे,—सार्वराष्ट्रीय प्रश्न। सार्वराष्ट्रीय राजनीति।

सार्वरुह—सज्ञा पु० [स०] शोरा। मृत्तिकासार। सूर्यक्षार।

सार्वरोगिक, सार्वरौगिक—वि० [सं०] दे० 'सार्वयौगिक'।

सार्वलौकिक—वि० [स०] सब लोगो को ज्ञात। सारी दुनिया मे फैला हुआ। सार्वदेशिक [को०]।

सार्ववर्णिक—वि० [स०] १ हर किस्म का। हर प्रकार का। २ हर जाति या वर्ग से सबधित [को०]।

सार्वविद्य—सज्ञा पुं० [स०] सर्वज्ञता [को०]।

सार्ववेदस्—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो यज्ञ मे अपनी सपूर्ण सपत्ति दान कर दे। २ किसी की समग्र सपत्ति। पूरी सपत्ति [को०]।

सार्ववैद्य—सज्ञा पुं० [स०] १ वह ब्राह्मण जिसे चारो वेदो का ज्ञान हो। सपूर्ण वेदो का ज्ञाता ब्राह्मण। २ समग्र वेद। चारो वेद [को०]।

सार्वसेन—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का पचरात्र यज्ञ [को०]।

सार्षप'—सज्ञा पुं० [स०] १ सरसो। २ सरसो का तेल। ३ सरसो का साग।

सार्षप'—वि० सरसो सबधी। सरसो का।

सार्ष्टि—वि०, सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सार्ष्टि'।

सार्ष्टि'—सज्ञा स्त्री० [स०] पाँच प्रकार की मुक्तियो मे से एक प्रकार की मुक्ति।

सार्ष्टि'—वि० जो तुल्य या समान स्थान, पद, अधिकार, शक्ति, श्रेणी आदि से युक्त हो [को०]।

सार्ष्टिता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पद या शक्ति की समानता। २ एक प्रकार की मुक्ति [को०]।

सार्ष्टेय—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सार्ष्टिता' [को०]।

सालकार—वि० [सं० सालङ्कार] अलकारयुक्त। भूषित। आभूषणयुक्त। अलकृत [को०]।

सालग—सज्ञा पुं० [सं० सालङ्ग] सगीत मे तीन प्रकार के रागो मे से एक प्रकार का राग। वह राग जो बिलकुल शुद्ध हो, जिसमे किसी और राग का मेल न हो, पर फिर भी किसी राग का आभास जान पडता हो।

सालब—वि० [सं० सालम्ब] जो सहारा लिए हो। आलबयुक्त [को०]।

साल'—सज्ञा पुं०, स्त्री० [हि० सलना या सालना] १ सालने या सलने की क्रिया या भाव। २. छेद। सूराख। ३. चारपाई के पावो मे किया हुआ वह चौकोर छेद जिसमे पाटी आदि बैठाई जाती है। ४ घाव। जख्म। ५, दुख। पीडा। वेदना। कसक। चुभन। उ०—को जानि मात बिभनी पीर। सौति की साल सालै सरीर।—पृ० रा०, १।३७५।

साल'—सज्ञा पुं० [स०] १ जड। मूल। २ कूचवदों की परिभाषा मे खस की जड जिससे कूच बनती है। ३ राल। धूना। ४ वृक्ष। पेड। ५. प्राकार। परकोटा। ६ दीवार। ७ एक प्रकार की मछली जो भारत, लका और चीन मे पाई जाती है। ८. सियार। ९ कोट। किला। (डिं०)। १० माल का वृक्ष। दे० 'साल'।

साल'—सज्ञा पुं० [फा०] वर्ष। बरस। बारह महीने।

साल'—सज्ञा पुं० [सं० शालि] दे० 'शालि'।

साल'—सज्ञा स्त्री० [स० शाल] दे० 'शाला'।

साल†—सज्ञा पुं० [स० श्याल] दे० 'साला'।

साल†—सज्ञा पु० [फा० शाल] दे० 'शाल'।

साल अमोनिया—सज्ञा पु० [अ०] नौसादर।

सालइलाही—सज्ञा पु० [फा०] मुगल सम्राट् अकबर द्वारा प्रचारित एक सवत् या वर्ष जिसका प्रारभ उसके सिहासन पर बैठने की तिथि से हुआ था [को०]।

सालई†—सज्ञा [हिं०] दे० 'सलई'।

सालक'—वि० [हिं० सालना + क (प्रत्य०)] सालनेवाला। दुख देनेवाला। उ०—जद्यपि मनुज दनुज कुल घालक। मुनि पालक खल सालक बालक।—मानस, १।१३।

सालक'—वि० [सं०] अलको से युक्त। बालो से सुशोभित [को०]।

सालकि—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सालक्षण्य—सज्ञा पुं० [स०] लक्षणो, गुणो या चिह्नो की तुल्यता [को०]।

सालग'—सज्ञा पु० [सं०] एक राग।

यौ०—सालसूडक = सगीत मे एक ताल।

सालग†'—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सलई'।

सालगिरह—सज्ञा स्त्री० [फा०] बरस गाँठ। जन्मदिन।

सालग्राम—सज्ञा पुं० [स० शालग्राम] दे० 'शालग्राम'।

सालग्रामी—सज्ञा स्त्री० [स० शालग्राम] गडक नदी।

विशेष—इसका यह नाम इसलिये पडा कि उसमे शालग्राम की शिलाएँ पाई जाती हैं।

सालज—सज्ञा पुं० [सं०] सर्जरस। राल। धूना।

सालजक—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सालज'।

सालद्रुम—सज्ञा पुं० [स०] सागौन।

सालन'—सज्ञा पुं० [स० सलवण] मास, मछली या साग सब्जी की मसालेदार तरकारी।

सालन'—सज्ञा पुं० [स०] सर्जरस। धूना। राल। २ गोद (को०)।

सालना'—क्रि० अ० [सं० शूल] १ दुख देना। खटकना। कसकना। २ चुभना। गडना।

सयो० क्रि०—जाना।

**सालना[1]**—क्रि० स० १ दुःख पहुँचाना। व्यथित करना। उ०—सौति कौ साल सालै सरीर।—पृ० रा०, १।३७५। २ चुभाना। गडाना। ३ चारपाई की पाटी के दोनो छोर पर बने हुए पतले हिस्से को उसके गोडो के छेद मे ठोक कर ठीक करना।

**सालनिर्यास**—संज्ञा पु० [स०] राल। धूना। सर्जरस। करायल।

**सालपान**—सज्ञा पुं० [स० शालिपर्णी] एक प्रकार का क्षुप। कसरवा। चाँचर।

विशेष—यह क्षुप देहरादून, अवध और गोरखपुर की नम भूमि मे पाया जाता है। यह वर्षा ऋतु के अत मे फूलता है। इसकी जड का ओषधि के रूप मे व्यवहार होता है।

**सालपर्णी**—सज्ञा स्त्री० [स०] सरिवन। शालपर्णी।

**सालपुष्प**—सज्ञा पु० [स०] १ स्थल कमल। २ पुडेरी।

**सालभजिका**—सज्ञा स्त्री० [स० सालभञ्जिका] पुतली। मूर्त्ति।

**सालम मिश्री**—सज्ञा स्त्री० [अ० सालब + मिस्री (मिश्र देश का)] सुधामूली। अमृतोत्था। वीरकदा।

विशेष—यह एक प्रकार का क्षुप है जिसकी ऊँचाई प्राय डेढ फुट तक होती है। इसके पत्ते प्याज के पत्ते के समान और फैले हुए होते है। डडी के अत मे फूलो का गुच्छा होता है। फल पीले रग के होते है। इसका कद कसेरू के समान पर चिपटा, सफेद और पीले रग का तथा कडा होता है। इसमे वीर्य के समान गध आती है और यह खाने मे लसीला और फीका होता है। इसके पौधे भारत के कितने ही प्रातो मे होते है, पर काबुल, बलख, बुखारा आदि देशो की सालम मिश्री अच्छी होती है। इसका कद अत्यत पौष्टिक होता है और पुष्टिकर ओषधियो मे इसका विशेष प्रयोग होता है। वैद्यक के अनुसार यह स्निग्ध, उष्ण, वाजीकरण, शुक्रजनक, पुष्टिकर और अग्निप्रदीपक माना जाता है।

**सालर**†—सज्ञा पु० [स० शल्लकी] दे० 'सलई'।

**सालरस**—सज्ञा पु० [स०] राल। धूना।

**सालवाहन**—सज्ञा पुं० [स० शालवाहन] शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा। विशेष दे० 'शालिवाहन'।

**सालवेष्ट**—सज्ञा पु० [स०] करायल। धूना। राल [को०]।

**सालश्रृग**—सज्ञा पु० [स० सालश्रृङ्ग] दीवार या प्राचीर के आगे का हिस्सा।

**सालस[1]**—सज्ञा पु० [अ०] वह जो दो पक्षो के झगडो का निपटारा करे। पच।

**सालस[2]**—वि० [स०] १ आलसयुक्त। आलस के साथ। अलस। मद। सुस्त। अलसित। उ०—दो एक टोलियाँ, मद मद औ सालस लालस प्रेम सनी, अरमान भरी, दो एक बोलियाँ।—चाँदनी पृ०, ३४। २ थका हुआ। श्लथ। क्लात (को०)।

**सालसा**—सज्ञा पु० [अ०] खून साफ करने का एक प्रकार का अँग्रेजी ढग का काढा जो अनतमूल आदि से बनता है।

**सालसी**—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ सालम होने की क्रिया या भाव। दूसरो का झगड़ा निपटाना। २ पचायत।

**सालहज**—सज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सलहज'।

**सालहामाल**—क्रि० वि० [फा०] वर्षो मे। महीनो मे। वर्षानुवर्ष। काफी समय से। उ०—हिंदुओ मे सालहामाल से वर्ताव एगानियत का चला आ रहा है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ६।

**साला[1]**—सज्ञा पु० [स० श्यालक] [स्त्री० साली] १ पत्नी का भाई। २ एक प्रकार की गाली।

**साला[2]**—सज्ञा पु० [स० सारिका] सारिका। मैना। उ०—देखत ही गे सोइ कृपाला लखि प्रभात बोला तब साला।—विश्राम (शब्द०)।

**साला[3]**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दीवार। भित्ति। २. गृह। मकान। दे० 'शाला'।

**साला[4]**—वि० [फा० साल (प्रत्य०)] साल का। वर्ष का। वर्षीय। साल पर होनेवाला। (समस्त पदो मे प्रयुक्त)। जैसे,—एकसाला, पचसाला।

**सालाकरी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १. गृह परिचारिका। २ युद्ध मे प्राप्त पराजित पक्ष की स्त्री [को०]।

**सालातुरीय**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शालातुरीय'।

**सालाना**—वि० [फा० सालानह्] साल का। वर्ष का। वार्षिक। जैसे,—सालाना मेला, सालाना चदा।

**सालार[1]**—सज्ञा पुं० [स०] दीवाल मे गाडी हुई खूँटी। नागदतिका [को०]।

**सालार[2]**—सज्ञा पुं० [फा०] १ सेनापति। सिपहसालार। २ नायक। नेता। प्रधान [को०]।

**सालारजग**—सज्ञा पु० [फा०] १ सेनापति। सेना का नायक। २. सैनिको की एक उपाधि [को०]।

**सालावृक**—सज्ञा पु० [स०] १ कुत्ता। श्वान। २ गीदड। सियार। ३ वृक। भेडिया।

**सालावृकेय**—सज्ञा पु० [स०] कुत्ता, गीदड, स्यार, भेडिया आदि का बच्चा [को०]।

**सालि[1]**—सज्ञा पुं० [स० शालि] दे० 'शालि'। उ०—भरत नाम सुमिरत मिटहिं, कपट, कलेस कुचालि। नीति प्रीति परतीति हित सगुन सुमगलि सालि।—तुलसी ग्र०, पृ० ७८।

**सालि[2]**—सज्ञा स्त्री० [स० शल्य] साल। पीडा। चुभन।

**सालिक**—वि० [अ०] १ पथिक। बटोही। मुसाफिर। राही। २ जो गृहस्थाश्रम मे रहते हुए बहुत बडा साधक हो [को०]।

**सालिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] बाँसुरी [को०]।

**सालिगराम**—सज्ञा पु० [स० शालग्राम] दे० 'शालग्राम'। उ०—(क) उठे थन थोर बिराजत वाम। धरे जनु हाटक सालिगराम।—पृ० रा०,। (ख) रूपे के अरघा मनो पौढे सालिगराम।—पोद्दार अभि०, ग० पृ० ३८६।

**सालिग्राम**—सज्ञा पु० [स० शालग्राम] दे० 'शालग्राम'।

**सालिनी**—सज्ञा स्त्री० [स० शालिनी] दे० 'शालिनी'।

**सालिब मिश्री**—सज्ञा स्त्री० [अ० सालम मिस्री] दे० 'सालम मिश्री'।

**सालिम**—वि० [अ०] १ स्वस्थ। तदुरुस्त (को०)। २ महफूज। सुरक्षित (को०)। ३ जो कहीं खंडित न हो। पूर्ण। संपूर्ण। पूरा। उ०—बिन माँगे बिन जाँचे देय। सो सालिम बाजी जीत लेय।—कबीर० श०, भा० २, पृ० १११।

**सालियाना**—वि० [फा० सालियानह्] वार्षिक। दे० 'सालाना'। २ जो प्रतिवर्ष देय हो। जैसे, वेतन, भृति आदि (को०)।

**सालिस**—वि० [अ०] १ तीसरा। तृतीय। २ दो पक्षों में समझौता करानेवाला। पंच। मध्यस्थ। बिचौलिया। उ०—से सालिस होय समुझि ले, जीभ जहान बसीर।—धरनी०, पृ० ४५।

**सालिसिटर**—संज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का वकील जो कलकत्ते, बंबई और मद्रास के हाइकोर्टों में होनेवाले मुकदमे लेता और उनके कागज पत्र तैयार करके बैरिस्टर को देता है। एटर्नी। एडवोकेट।

विशेष—ये सालिसिटर हाईकोर्टों में बहस नहीं कर सकते, पर अन्य अदालतों में इन्हें बहस करने का पूरा अधिकार है। इनका दर्जा एडवोकेट के समान ही है।

**सालिसी**—संज्ञा [अ०] पंचायत (को०)।

**सालिह**—वि० [अ०] [स्त्री० सालिहा] सच्चरित्र। पुण्यात्मा (को०)।

**सालिहोत्री**—संज्ञा पु० [सं० शालिहोत्रिन्] दे० 'शालिहोत्री'।

**साली**[1]—संज्ञा स्त्री० [फा० साल+ई प्रत्य०)] १ वह जमीन जो सालाना देने के हिसाब से ली जाती है। २ खेती बारी के औजारों की मरम्मत के लिये बढ़ई को सालाना दी जानेवाली मजूरी।

**साली**[2]—संज्ञा पुं० [सं० शालि] दे० 'शालि'।

**साली**[3]—संज्ञा स्त्री० [हिं० साला] पत्नी की बहन।

**सालु**[1]—संज्ञा पु० [हिं० सालना] १. ईर्ष्या। २ कष्ट।

**सालु**[2]—संज्ञा पु० [सं० सार] दे० 'सार'। उ०—चढ़िआ नजर सराफ की मोती मनु है सालु।—प्राण०, पृ० १०५।

**सालुल**†—वि० [सं० सलावण्य ?] कोमल। मृदु। सलोना। उ०—कोतिक लखे हुए विकराल दीरघ रद किया। सालुल वर्ण चंड सरीर, लावण्य कज सिया।—रघु० रू०, पृ० १२६।

**सालू**—संज्ञा पु० [सं०, मि० फा० शाल] एक प्रकार का लाल कपड़ा जो मांगलिक कार्यों में उपयोग में आता है। (पश्चिमी)। उ०—कल, देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू।—मधुकरी, भा० २, पृ० २३। २ साड़ी। सारी। (डिं०)। ३ ओढ़नी।

**सालूर**—संज्ञा पु० [सं०] मेंढक। शालूर (को०)।

**सालेय**—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'शालेय' (को०)।

**सालेया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सौंफ।

**सालैगुग्गुल**—संज्ञा पु० [फा० सालै + सं० गुग्गुल] गुग्गुल का गोंद या राल। विशेष दे० 'गुग्गुल'।

**सालोक्य**—संज्ञा पु० [सं०] १ पाँच प्रकार की मुक्ति में से एक जिसमें मुक्त जीव भगवान् के साथ एक लोक में वास करता है। सलोकता। २ किसी के साथ समान लोक में निवास करना (को०)।

**सालोत्र**(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शालिहोत्र] दे० 'शालिहोत्र'। उ०—है लपै सक्क करि भेद छेद, दिप्पत नयन सालोत्र पेद। गज चिगछ इच्छ जानत सब्ब, नाटिक निवास मम सेस कब्ब।—पृ० रा०, ६।६।

**सालोहित**—संज्ञा पु० [सं०] सगोत्री। गोती (को०)।

**साल्मली**—संज्ञा पुं० [सं० शाल्मलि] दे० 'शाल्मली'।

**साल्व**—संज्ञा पुं० [सं०] एक नगर और उसके निवासी लोग। दे० 'शाल्व'। २ एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था (को०)।

**साल्वहा**—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु (को०)।

**साल्विक**—संज्ञा पु० [सं०] सारिका पक्षी (को०)।

**साल्वेय**[1]—वि० [सं०] साल्व या शाल्व संबंधी।

**साल्वेय**[2]—संज्ञा पु० १ एक प्राचीन देश का नाम। २ साल्व या शाल्व देश का रहनेवाला।

**सावंत**—संज्ञा पुं० [सं० सामन्त] १ वह भूस्वामी या राजा जो किसी बड़े राजा के अधीन हो और उसे कर देता हो। करद राजा। २ योद्धा वीर। ३ अधिनायक। उ०—छत्र भंग मेरी भयो, मरे सूर सावंत।—हम्मीर०, पृ० ३६। ४ उत्तम या श्रेष्ठ प्रजा।

**सावँकरन**—संज्ञा पु० [सं० श्यामकर्ण] श्यामकर्ण घोड़ा जिसके सब अंग श्वेत, पर कान काले होते हैं। (साईस)। उ०—सोरह सहस घोर घोरसारा। सावँकरन बालका तुखारा।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० १३७।

**साव**[1]—संज्ञा पु० [सं० शाव, प्रा० साव (=शावक, शिशु)] शिशु। बालक। पुत्र। (डिं०)।

**साव**[2]—संज्ञा पुं० [सं० साधु, प्रा० साहु] दे० 'साहु'।

**साव**(पु)[3]—संज्ञा पु० [सं० स्वादु, प्रा० साउ ?] दे० 'स्वाद'। उ०—चंगौ साव चखावसी, इभरमणी आखेट।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ३४।

**साव**[4]—संज्ञा पु० [सं०] तर्पण। पितरों को जल देना।

**सावक**[1]—वि० [सं०] [स्त्री० साविका] जन्म देनेवाला। उत्पन्न करनेवाला (को०)।

**सावक**[2]—संज्ञा पुं० १ दे० 'शावक'। २ पशु का बच्चा। छौना। बछवा। बछेरू। उ०—(क) चौथ दीन्ह सावक सादूर।—जायसी ग्रं०, पृ० १८५। (ख) सावक मोर बिछुड़ गयो, ढूँढत फिरौं बेहाल।—हिंदी० प्रेमा०, पृ० २४५।

**सावक**[3]—संज्ञा पु० [सं० श्रावक] दे० 'श्रावक'।

**सावकार**†—संज्ञा पुं० [हिं० साहूकार] दे० 'साहूकार'। उ०—सईस ने बतलाया कुल्लू के सावकार ने कारखाना बनाया है।—किन्नर०, पृ० १२।

**सावकाश**[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ अवकाश। फुर्सत। छुट्टी। २ मौका। अवसर।

**सावकाश**[1]—वि० १ जिसे मौका या फुरसत हो। अवकाशयुक्त। २ अनुकूल। उचित। योग्य [को०]।

**सावकाश**[2]—क्रि० वि० फुर्सत से। सुभीते से।

**सावकास**ⓤ—क्रि० वि० [सं० सावकाश] दे० 'सावकाश[2]'। उ०—सावकास ह्वै घनी घुटनि तें विमद पुलिन मँडराइ रुकौं।—घनानंद, पृ० ८२३।

**सावग**ⓤ—संज्ञा पुं० [सं० श्रावक] दे० 'श्रावक'।

**सावगी**—संज्ञा पुं० [सं० श्रावक, प्रा० सावग] दे० 'सरावगी'।

**सावग्रह**—वि० [सं०] १ 'अवग्रह' चिह्न से युक्त। २ नियन्त्रित। संयमित। ३ जिसका विश्लेषण किया गया हो [को०]।

**सावचेत**ⓤ†—संज्ञा पुं० [सं० सा + हिं० चेत अथवा सं० साव हित + हिं० चेत] सावधान। सतर्क। होशियार। चौकन्ना। उ०—अब इसमें सावचेत रहना चाहिए।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० ६७।

**सावचेती**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सावचेत + ई (प्रत्य०)] सावधानी। सतर्कता। खबरदारी। चौकन्नापन।

**सावज**ⓤ†—संज्ञा पुं० [सं० श्वापद, प्रा० सावय] जंगली जानवर जिसका शिकार किया जाता है।

**सावज्ञ**—वि० [सं०] १ अवज्ञा या तिरस्कार युक्त। २ अरुचि का अनुभव करनेवाला। घृणा करनेवाला [को०]।

**सावणिक**—संज्ञा पुं० [सं० श्रावणिक] श्रावण मास। सावन का महीना। (डिं०)।

**सावत**ⓤ[1]—संज्ञा पुं० [सं० सापत्न्य, देशी सावक्क, सावत्त, सावत या हिं० सौत] १ सौतों में होनेवाला पारस्परिक द्वेष। सौतियाडाह। २ ईर्ष्या। डाह। उ०—तहँ गए मद मोह लोभ अरि सराहैं मिटति न सावत।—तुलसी (शब्द०)।

**सावत**ⓤ[2]—संज्ञा पुं० [सं० सामन्त, हिं० सावत] दे० 'सावंत'। उ०—बडे सावत उद्द कनकेश मारे।—प० रासो, पृ० ४५।

**सावद्य**[1]—वि० [सं०] निंदनीय। दूषणीय। आपत्तिजनक।

**सावद्य**[2]—संज्ञा पुं० तीन प्रकार की योग शक्तियों में से एक शक्ति जो योगियों को प्राप्त होती है।

विशेष—अन्य दो शक्तियों के नाम निरवद्य और सूक्ष्म है।

**सावधान**—वि० [सं०] १ सचेत। सतर्क। होशियार। खबरदार। सजग। चौकस। २ उद्यमी। परिश्रमी (को०)। ३ अवधान-युक्त। ध्यानपूर्वक। उ०—सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि। भरत कथा भवभंज विमोचनि।—मानस, २।२८७।

**सावधानता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सावधान होने का भाव। सतर्कता। होशियारी। खबरदारी। सावधानी।

**सावधानी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सावधान + ई (प्रत्य०)] सावधान होने का भाव। दे० 'सावधानता'।

**सावधारण**—वि० [सं०] निश्चययुक्त। निश्चित। प्रतिबंधित [को०]।

**सावधि**—वि० [सं०] अवधि अर्थात् नियत काल या सीमा से युक्त। जिसके समय की सीमा निश्चित हो [को०]।

**सावधि आधि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गिरवी जो इस शर्त पर रखी जाय कि इतने दिनों के अंदर अवश्य छुड़ा ली जायगी।

**सावन**[1]—संज्ञा पुं० [सं० श्रावण] १. श्रावण का महीना। आषाढ़ के बाद का और भाद्रपद के पहले का महीना। श्रावण।

मुहा०—सावन के अंधे को हरियाली सूझना = हरा ही हरा दिखाई देना या सूझना। अच्छी परिस्थितियों में रहने या उन्हें देखनेवाले व्यक्ति का प्रतिकूल स्थितियों को भी किसी कारणवश पूर्ववत् समझना या जानना। सावन का फोड़ा = जल्दी ठीक न होनेवाला घाव। असाध्य रोग। उ०—पकपक कर ऐसा फूटा है, जैसा सावन का फोड़ा है।—आराधना, पृ० ७३। सावन हरा न भादों सूखा = समान या तुल्य जानना। समान परिस्थिति का समझना। प्राकृतिक या लौकिक परिवर्तन के प्रभाव से रहित जीवन जीना। उ०—मगर यहाँ सावन हरे न भादों सूखे दोनों बराबर हैं।—फिसाना०, भा० ३ पृ० ३७७।

२ एक प्रकार का गीत जो श्रावण के महीने में गाया जाता है। (पूरब)। ३ कजली नामक गीत। ४ आधिक्य। प्रचुरता। राशि।

**सावन**[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ कर्म का अंत। यज्ञ की समाप्ति। २ यज्ञ कर्म का यजमान। ३ वरुण। ४ पूरे एक दिन और एक रात का समय। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। ६० दंड का समय।

विशेष—इस प्रकार के ३० दिनों का एक सावन मास होता है और ऐसे बारह सावन मासों अर्थात् ३६० दिनों का एक सावन वर्ष होता है, मलमासतत्व के अनुसार—'सौर मवत्सरे दिन षट्काधिक सावनो भवति'। अर्थात् सौर और सावन वर्ष में लगभग ६ दिनों का अंतर होता है। विशेष—दे० 'वर्ष'।

५ तीस दिवस का मास (को०)। ६ एक विशेष वर्ष (को०)।

यौ०—सावन मास = तीस दिन का महीना। सावनवर्ष = वह साल जो सावन मास या ३६० दिनों का होता है।

**सावन**[1]—वि० सवन यज्ञ संबंधी [को०]।

**सावनी**[1]—संज्ञा पुं० [हिं० सावन + ई (प्रत्य०)] १ एक प्रकार का धान जो भादों में काटा जाता है। २ तंबाकू जो सावन भादों में बोया जाता है, कार्तिक में रोपा जाता है और फागुन में काटा जाता है। ३ एक प्रकार का फूल।

**सावनी**[2]—संज्ञा स्त्री० वह बायन जो सावन महीने में वर पक्ष से वधू के यहाँ भेजा जाता है।

**सावनी**[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रावणी] दे० 'श्रावणी'।

**सावनी**[4]—वि० सावन संबंधी। सावन का। जैसे,—सावनी समाँ = सावन मास की शोभा।

**सावनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सावन] १ श्रावण मास का गीत। २ कजली गीत।

**सावमर्द**—वि० [सं०] परस्परविरुद्ध। अरुचिकर। अप्रिय [को०]।

**सावयव**—वि० [सं०] अवयव युक्त। अंगसहित। साँग [को०]।

**सावर[1]**—सज्ञा पु० [स० शावर] शिवकृत एक तत्र का नाम।

**विशेष**—इसके सबध मे इस प्रकार की कथा है—एक बार जब शिवपार्वती किरात देश मे बन मे विचरण कर रहे थे, तब पार्वतीजी ने प्रश्न किया कि प्रभो! आपने सपूर्ण मत्र कील दिए है, पर अब कलिकाल है, इस समय के जीवो का उपकार कैसे होगा। तब शिवजी ने उसी वेश मे नए मत्रो की रचना की जो शाबर या सावर कहाते हैं। इन मत्रो को जपने या सिद्ध करने की आवश्यकता नही, ये स्वयसिद्ध है। न इनके कुछ अर्थ ही है।

२ एक प्रकार का लोहे का लबा औजार जिसका एक सिरा नुकीला और गुलमेख की तरह होता है। इसपर खुरपा रखकर हथौडे से पीटा जाता है जिससे खुरपा पतला और तेज हो जाता है।

**सावर[2]**—सज्ञा पु० [स० शबर या साम्बर] एक प्रकार का हिरन। उ०—चीते सुरोझ सावर दवग। गैंडा गलीनु डोलत अभग। —सूदन (शब्द०)।

**सावर[3]**—सज्ञा पुं० [स०] १ लोध। लोध्र। २ पाप। अपराध। गुनाह। ३ एक प्रकार का मृग।

**सावरक**—सज्ञा पुं० [स०] सफेद लोध।

**सावरण**—वि० [स०] १ छिपा हुआ। गोपनीय। २ ढका हुआ। बद। ३ जो घेरे के अदर हो [को०]।

**सावरणी**—सज्ञा स्त्री० [स० सम्मार्जनी] वह बुहारी जो जैन यति अपने साथ लिए रहते हैं।

**सावरिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] बिना जहरवाली जोक।

**सावर्ण[1]**—वि० [स०] सवर्ण सबधी। समान वर्ण या जाति सबधी।

**सावर्ण[2]**—सज्ञा पुं० दे० 'सावर्णि'।

**सावर्णक**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सावर्णि'।

**सावर्णलक्ष्य**—सज्ञा पु० [स०] १ चमडा। चर्म। २ एक ही वर्ण और जाति की तुल्यता का बोधक समान चिह्न (को०)।

**सावर्णि**—सज्ञा पु० [स०] १ आठवे मनु जो सूर्य के पुत्र थे।

**विशेष** कहते है कि सूर्य की पत्नी छाया सूर्य का तेज सहन न कर सकने के कारण अपने वर्ण की (सवर्ण) एक छाया बनाकर और उसे पति के घर छोडकर अपने पिता के घर चली गई थी। उसी के गर्भ से सावर्णि मनु की उत्पत्ति हुई थी।

२ एक मन्वतर का नाम। ३ एक गोत्र का नाम।

**सावर्णिक**—वि० [स०] समान जाति या कुल से सबद्ध [को०]।

**सावर्ण्य**—सज्ञा पु० [स०] १ रग की समानता। २ वर्ग या जाति की समानता। ३ आठवे मनु का युग अथवा मन्वतर [को०]।

**सावलेप**—वि० [स०] अवलेपयुक्त। गर्व से भरा हुआ। धृष्ट [को०]।

**सावशेष**—वि० [स०] १ जिसका कुछ अश शेष हो। २ जो पूरा न हो। अपूर्ण। अधूरा [को०]।

यौ०—सावशेषजीवित = जिसकी आयु अभी बाकी हो। जिसका जीवनकाल अभी शेष हो। सावशेषबधन = जिस पर कुछ प्रतिबध शेष हो। जो अभी भी बधन मे हो।

**सावष्टभ[1]**—सज्ञा पु० [स० सावष्टम्भ] वह मकान जिसके उत्तरदक्षिण दिशा मे सडक हो। ऐसा मकान बहुत शुभ माना गया है।

**सावष्टभ[2]**—वि० १ दृढ। मजबूत। २ आत्मनिर्भर। स्वावलबी। ३ गर्वोद्धत। घमडी। शानदार। गुमानी (को०)। ४ हिम्मती। साहसी (को०)।

यौ०—सावष्टभवास्तु = एक प्रकार का मकान। दे० 'सावष्टभ'।

**सावहित**—वि० [स०] अवधान युक्त। सावधान [को०]।

**सावहेल**—वि० [स०] अवहेला से युक्त। घृणा या तिरस्कार करनेवाला [को०]।

**सावाँ**†—सज्ञा पु० [स० श्यामाक] दे० 'साँवाँ'।

**साविका[1]**—सज्ञा स्त्री० [स०] धात्री। दाई [को०]।

**साविका[2]**—सज्ञा पु० [अ० साबिकह्] आवश्यकता। व्यवहार। सबध। सरोकार। प्रयोजन। उ०—सुनौ सपूतौ साविकौ सबकौ परै न रोज। लियौ जात याही समय, हित अनहित कौ खोज।—हम्मीर०, पृ० ४४।

**सावित्र[1]**—सज्ञा पुं० [स०] १ सूर्य। २ शिव। ३ वसु। ४ ब्राह्मण। ५ सूर्य के पुत्र। ६ कर्ण। ७ गर्भ। ८ यज्ञोपवीत। ९ उपनयन सस्कार। यज्ञोपवीत। ९ हस्त नक्षत्र (को०)। १० अग्नि का एक रूप (को०)। ११ कलछा या चम्मचभर परिमाण (को०)। १२ दसवे कल्प का नाम (को०)। १३ मेरु पर्वत का एक शिखर (को०)। १४ एक प्रकार की आहुति या होम (को०)। १५ एक वन का नाम (को०)। १३ एक प्रकार का अस्त्र।

**सावित्र[2]**—वि० १ सविता सबधी। सविता का। जैसे,—सावित्र होम। २ सूर्य से उत्पन्न। सूर्यवशीय। ३ गायत्री से युक्त। गायत्री मत्र से दीक्षित।

**सावित्रिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक शक्ति [को०]।

**सावित्री**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वेदमाता गायत्री। २ सरस्वती। ३ ब्रह्मा की पत्नी जो सूर्य की पृश्नि नाम की पत्नी से उत्पन्न हुई थी। ४ वह सस्कार जो उपनयन के समय होता है और जिसके न होने से ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य व्रात्य या पतित हो जाते है। ५ धर्म की पत्नी और दक्ष की कन्या। ६ कश्यप की पत्नी। ७ अष्टावक्र की कन्या। ८ मद्र देश के राजा अश्वपति की कन्या और सत्यवान की सती पत्नी का नाम।

**विशेष**—पुराणो मे इसकी कथा यो है। मद्र देश के धर्मनिष्ठ प्रजाप्रिय राजा अश्वपति ने कोई सतान न होने के कारण ब्रह्मचर्यपूर्वक कठिन व्रत धारण किया। वह सावित्री मत्र से प्रतिदिन एक लाख आहुति देकर दिन के छठे भाग मे भोजन करता था। इस प्रकार अठारह वर्ष बीतने पर सावित्री देवी ने प्रसन्न होकर राजा को दर्शन दिए और इच्छानुसार वर

माँगने को कहा। राजा ने बहुत से पुत्रो की कामना की। देवी ने कहा कि ब्रह्मा की कृपा से तुम्हारे एक कन्या होगी जो बडी तेजस्विनी होगी। कुछ दिनो बाद बडी रानी के गर्भ से एक कन्या हुई। सावित्री की कृपा से वह कन्या हुई थी, इसलिये राजा ने इसका नाम भी सावित्री ही रखा। सावित्री अद्वितीय सुदरी थी, पर किसी को इसका वरप्रार्थी होते न देखकर अश्वपति ने सावित्री से स्वय अपनी इच्छानुसार वर ढूँढकर वरण करने को कहा। तदनुसार सावित्री वृद्ध मत्रियो के साथ तपोवन मे भ्रमण करने लगी। कुछ दिनो बाद वह तीर्थो और तपोवनो का भ्रमण कर लौट आई और उसने अपने पिता से कहा शाल्व देश मे द्युमत्सेन नामक एक प्रसिद्ध धर्मात्मा क्षत्रिय राजा थे। वे अधे हो गए है। उनका एक पुत्र है जिसका नाम सत्यवान है। एक शत्रु ने उनका राज्य हस्तगत कर लिया है। राजा अपनी पत्नी और पुत्रसहित वन मे निवास कर रहे है। मैंने उन्ही सत्यवान् को अपने उपयुक्त वर समझकर उन्ही को पति वरण किया है। नारदजी ने कहा—सत्यवान मे और सब गुण तो हैं, पर वह अल्पायु है। आज से एक वर्ष पूरा होते ही वह मर जायगा। इसपर भी सावित्री ने सत्यवान् से ही विवाह करना निश्चित किया। विवाह हो गया, एक वर्ष बीतने पर सत्यवान् की मृत्यु हो गई। यमराज जब उसका सूक्ष्म शरीर ले चला, तब सावित्री ने उसका पीछा किया। यमराज ने उसे बहुत समझा बुझाकर लौटाना चाहा, पर उसने उसका पीछा न छोडा। अत मे यमराज ने प्रसन्न होकर उसकी मनस्कामना पूर्ण की। मृत सत्यवान् जीवित होकर उठ बैठा। सावित्री ने मन ही मन जो कामनाएँ की थी, वे पूरी हुई। राजा द्युमत्सेन को पुन दृष्टि प्राप्त हो गई। उसके शत्रुओ का विनाश हुआ। सावित्री के सौ पुत्र हुए। साथ ही उसके वृद्ध ससुर के भी सौ पुत्र हुए। उसने यह भी वर प्राप्त कर लिया था कि पति के साथ मैं बैकुंठ जाऊँ।

९ यमुना नदी। १० सरस्वती नदी। ११ प्लक्ष द्वीप की एक नदी। १२ धार के राजा भोज की स्त्री। १३ सधवा स्त्री। १४ आँवला। १५ प्रकाश की किरण (को०)। १६ पार्वती का एक नाम (को०)। १७ सूर्य की रश्मि (को०)। १८ अनामिका उँगली (को०)।

**सावित्री तीर्थ**—सज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

**सावित्रीपतित, सावित्रीपरिभ्रष्ट** सज्ञा पु० [स०] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जाति का वह व्यक्ति जिसका उचित समय पर उपनयन सस्कार न हुआ हो (को०)।

**सावित्रीपुत्र**—सज्ञा पु० [स०] क्षत्रियो की एक उपजाति या वर्ग।

**सावित्री व्रत**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का व्रत जो स्त्रियाँ पति की दीर्घायु की कामना से ज्येष्ठ कृष्ण १४ को करती हैं।

विशेष कहते है कि यह व्रत करने से स्त्रियाँ विधवा नही होती।

**सावित्रीव्रतक**—सज्ञा पु० [स०] सावित्री व्रत।

**सावित्रीसूत्र**—सज्ञा पु० [स०] यज्ञोपवीत जो सावित्री दीक्षा के समय धारण किया जाता है।

**सावित्रेय**—सज्ञा पुं० [सं०] सविता के पुत्र, यम (को०)।

**सावित्री**—सज्ञा स्त्री० [स०] सरिता। नदी (को०)।

**साविष्कार** वि० [स०] १ शक्ति आदि का प्रदर्शन करनेवाला। उद्धत। घमडी। २ प्रकट। व्यक्त (को०)।

**सावेग**—क्रि० वि० [स०] वेगपूर्वक। शीघ्रता से। झटके से (को०)।

**सावेरी**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक रागिनी (सगीत)।

**साशक**—वि० [सं० साशङ्क] आशकायुक्त। भयभीत। शकित (को०)।

**साशकता**—सज्ञा स्त्री० [स० साशङ्कता] आशका। डर। भय (को०)।

**साशस**—वि० [स०] आकाक्षापूरित। इच्छुक। आशान्वित (को०)।

**साशयदक**—सज्ञा पु० [स० साशयन्दक] छोटी छिपकली (को०)।

**साशिव**—सज्ञा पु० [सं०] १ एक प्राचीन देश का नाम।

विशेष—अर्जुन के दिग्विजय के प्रकरण मे यह उत्तर दिशा मे बतलाया गया है। इसे जीतकर अर्जुन यहाँ से आठ घोडे लाया था।

२ ऋषीक। ऋषिपुत्र।

**साशूक**—सज्ञा पु० [स०] ऊनी कबल (को०)।

**साश्चर्य**—वि० [सं०] १ आश्चर्यान्वित। चकित। भौचक। २ आश्चर्य या कौतूहलजनक (को०)।

यौ०—साश्चर्यावय = आश्चर्यजनक व्यवहारवाला।

**साश्र, सास्र**—वि० [स०] १ अस्र या कोण युक्त। जिसमे कोण या कोने हो। कोणात्मक। २ अश्रुयुक्त। रोता हुआ। साश्रु (को०)।

**साश्रु**—वि० [स०] अश्रुपूर्ण। आँसू बहाता हुआ। रोता हुआ (को०)।

**साश्रुधी**—सज्ञा स्त्री० [स०] पत्नी या पति की माता। सास।

**साश्वत**—वि० [सं० शाश्वत] दे० 'शाश्वत'।

**सापा**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [सं० शाखा] दे० 'शाखा'। उ०—मुनि पुनि कर्म फलनि तजि जैसे। अप अपनी श्रुति सापा वैसें।—नद० ग्र०, पृ० २९५।

**साखि**Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० साक्षी] गवाह।

**साखित**Ⓤ—सज्ञा पुं० [सं० शाक्त] वह जो शक्ति का उपासक हो। शक्ति को माननेवाला। वि० दे० 'शाक्त'। उ०—सापित कै तूँ हरता करता, हरि भगतन कै चेरी।—कबीर ग०, पृ० १५१।

**साष्टाग**—वि० [स० साष्टाङ्ग] आठो अग सहित।

यौ०—साष्टाग प्रणाम = मस्तक, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन, और मन से भूमि पर लेटकर प्रणाम करना।

मुहा०—साष्टाग प्रणाम करना = बहुत बचना। दूर रहना। (व्यग्य)। जैसे—हम यही से उन्हें साष्टाग प्रणाम करते है।

**साष्टाग योग**—सज्ञा पु० [स० साष्टाङ्ग योग] वह योग जिसमे यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये आठो अग हो। विशेष दे० 'योग'।

**साष्टी**—सज्ञा पुं० [देश०] एक टापू जो बबई प्रदेश के थाना जिले मे है।

विशेष—इस टापू को वहाँवाले 'फालता' और 'शास्तर' तथा अँगरेज 'सालसीट' कहते हैं। यह बबई से बीस मील ईशानकोण

मे उत्तर को झुकता हुआ समुद्र के तट पर बसा है। यहाँ एक किला भी बना है।

साप्यात(पु)—वि० [स० साक्षात् = साक्पात] दे० 'साक्षात्'। उ०—करि स्नान दान सुचि रुचि कुँआर। हाइ देव रूप साप्यात चार। —पृ०, रा०, ६।१३२।

सास[1]—संज्ञा स्त्री० [स० श्वश्रू] पति या पत्नी की माँ।

सास(पु)[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वास] दे० 'सास'। उ०—झावकि पइठी भालि, सुदर दीठी सास विण।—ढोला०, दू० ६०४।

सास[3]—वि० [स०] धनुषयुक्त। धनुष रखनेवाला [को०]।

सासण†—संज्ञा पु० [स० शासन, डि०] दे० 'शासन'। उ०—सिघासण चढणँ नर आसण सासण सह मानै ससार।—रघु० रू०, पृ० २२।

सासत[1]—संज्ञा स्त्री० [स० शास्ति] दे० 'साँसत'। उ०—चौरासी लख जिव तोहि दीन्हा। ले जीवन बड सासत कीन्हा।—कबीर, सा०, पृ० १३।

सासत(पु)[2]—वि० [स० शाश्वत] निरतर। दे० 'शाश्वत'। उ०—वणियो रहै वाडियाँ वागाँ वरसाणँ सासतो वसत।—बाँकी० ग्र०, भा० ३, पृ० १२२।

सासतर†—संज्ञा पु० [सं० शास्त्र] दे० 'शास्त्र'। उ०—सासतरो मे कहा है।—गोदान, पृ० १०४।

सासन(पु)—संज्ञा पु० [स० शासन] दे० 'शासन'। उ०—पुत्र श्री दशरत्थ के बनराज सासन आइयो।—केशव (शब्द०)।

सासनलेट—संज्ञा पु० [?] एक प्रकार का सफेद जालीदार कपडा।

सासना(पु)—संज्ञा स्त्री० [स० शासन] १ दे० 'शासन'। उ०—सासना न मानई जो काटि जन्म नर्क जाय।—केशव (शब्द०)। २ कष्ट। त्रास। दुख। पीडा। उ०—बहु सासना दई पैहलादै, तऊ निसक लियौ।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० २४०।

सासर वाड़ो—संज्ञा स्त्री० [स० श्वश्रू, व०, हिं० सासर + वाडी] ससुराल। उ०—करहा देस सुहामणँउ जे मूँ सासर वाडि। आँव सरोखउ आक गिणि जाति करीराँ झाडि।—ढोला०, दू० ४३२।

सासरा†—संज्ञा पुं० [स० श्वश्रू + आलय] दे० 'ससुराल'।

सासहि—वि० [सं०] १ सहन करने योग्य। सह्य। २ जीतने या विध्वस करनेवाला [को०]।

सासा(पु)[1]—संज्ञा स्त्री० [स० सशय, पु० हिं० समा (कबीर)] सदेह। शक। उ०—आई बतावन हो तुम्है राधिके लोजिए जानि न कीजिए सासा।—रसकुसुमाकर (शब्द०)।

सासा[2]—संज्ञा पुं० [सं० श्वास] दे० 'श्वास' या 'साँस'।

सासार—वि० [स०] १ आसार युक्त। मूसलाधार वृष्टि से युक्त। २ बरसाती [को०]।

सासि—वि० [स०] असि या कृपाणयुक्त [को०]।

सासु[1]—वि० [सं०] असु या प्राणयुक्त। जीवित।

सासु(पु)[2]—संज्ञा स्त्री० [स० श्वश्रू] दे० 'सास'। उ०—आया मन मे भर आकपण, उन नयनो का, सासु ने कहा।—अनामिका, पृ० १२४।

सासुर†—संज्ञा पु० [हिं० ससुर] १ पति या पत्नी का पिता। ससुर। २ ससुराल। उ०—केलि करैं मधुमत्त जहँ घन मधुपन के पुज। सोच न कर तुव सासुरे, सखी! सघन वनकुज। —मति० ग्र०, पृ० २६०।

सासुसू—वि० [स०] जिसम बाण हो। बाणयुक्त [को०]।

सासूय—वि० [स०] असूया युक्त। द्वेषी। ईर्ष्यालु [को०]।

सास्थि—वि० [स०] अस्थियुक्त। हड्डीवाला [को०]।

सास्थिताम्रार्घ—संज्ञा पु० [स०] काँसा [को०]।

सास्ना—संज्ञा स्त्री० [स०] गौओं आदि का गलकबल।

सास्वत—वि० [स० शाश्वत] शाश्वत। अमर। नित्य [को०]।

सास्मित—संज्ञा पु० [स०] शुद्ध सत्व को विषय बनाकर की जानेवाली भावना।

सास्वादन—संज्ञा पु० [स०] जैन मतानुसार निर्वाण प्राप्ति की चौदह अवस्थाओं मे से दूसरी अवस्था [को०]।

साह[1]—संज्ञा पु० [स० साधु] १ साधु। सज्जन। भला आदमी। जैसे,—वह चोर है और तुम बडे साह हो। उ०—चुरी वस्तु दै कै जिमि कोई। चोरहि साह बनावत होई।—शकुतला, पृ० ९२। २ व्यापारी। साहूकार। ३ धनी। महाजन। सेठ। ४ लकडी या पत्थर का वह लबा टुकडा जो दरवाजे के चौखटे मे देहलीज के ऊपर दोनो पार्श्वो मे लगा रहता है।

मुहा०—साहखर्ची = फिजूलखर्ची। अनावश्यक खर्च। शान शौकत के लिये धन का अपव्यय। उ०—पुराने ढर्रे की साहखर्ची और पास पडोस के लोगो से यश पाने की भूख—इन दोनो लतो ने खाया पडित का तबाह कर रखा था। —नई०, पृ० ४।

साह[2]—संज्ञा पु० [फा० शाह] स्वामी। दे० 'शाह'। उ०—अनि ही अयाने उपखानो नहि बूझै लाग, साह हो को गोत गोत होत है गुलाम को।—तुलसी ग्र०, पृ० २२०।

साह[3]—वि० [स०] १ जो साहस और मफतापूर्वक प्रतिरोध करे। २ निरोध या दमन करनेवाला [को०]।

साहचर्य—संज्ञा पु० [सं०] १. सहचर होने का भाव। साथ रहने का भाव। सहचरता। २ सग। साथ।

साहजिक—वि० [सं०] सहज। नैसर्गिक। स्वाभाविक [को०]।

साहजिकधर्म—संज्ञा पु० [स०] शुक्रनीति के अनुसार पारितोषिक। वेतन, विजय आदि मे मिला हुआ धन।

साहणहार(पु)—वि० [हिं० सहना + हार (प्रत्य०)] झेलनेवाला। सहनेवाला। सहन करनेवाला। उ०—ज्यू ज्यूँ हरि गुण साँभलौ त्यूँ त्यूँ लागै तीर। लागै सै भागा नहीं साहणहार कबीर।—कबीर ग्र०, पृ० ६४।

साहन—संज्ञा पु० [स०] सहन शक्ति। सहनशीलता [को०]।

**साहना**[1]—क्रि० स० [स० साहित्य (=मिलन)] भैंसो का जोडा खिलाना। बुहाना।

**साहनी**—सज्ञा स्त्री० [स० सेनानी या फा० शह्नह्?] १ सेना। फौज। उ०—(क) आयकै आपने आश्रम मे कियो यज्ञ अरभ प्रमोद प्रफुल्ला। आय निशाचर साहनी साजै मरीच सुबाहु सुने मख गुल्ला।—रघुराज (शब्द०)। (ख) करत विहार द्विरद मतवारे। गिरि सम वपुष भूलते कारे। कोटिन वाजि साहनी आवै। नीर पियाइ नदी अन्हवावै।—सबल (शब्द०)। २ साथी। सगी। उ०—हम खेलव तव साथ, होइ नीच सब भाँति जो। कह्यो वचन कुरुनाथ शकुनी तो सिरमौर मम। धरहु भार निज शीश, बैठारहु किन साहनी। हमहिं न ओछि महीश मैं खेलव नृप सदसि महँ।—सबल (शब्द०)। ३ पारिषद। उ०—भगत सकल साहनी बोलाए।—तुलसी (शब्द०)। ४ कोतवाल। ५ सेनापति।

**साहब**[1]—सज्ञा पु० [अ० साहिब] [स्त्री० साहिबा] १ मित्र। दोस्त। साथी। २ मालिक। स्वामी। ३ परमेश्वर। ईश्वर। ४ एक सम्मानसूचक शब्द जिसका व्यवहार नाम के साथ होता है। महाशय। जैसे,—मु० कालिका प्रसाद साहब।

यौ०—साहबजादा। साहब सलामत।

५ गोरी जाति का कोई व्यक्ति। फिरगी। ६ अफसर। हाकिम। सरदार। ७ अग्रेजो की तरह ठाट बाट से रहनेवाला व्यक्ति।

**साहब**[2]—वि० वाला।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का व्यवहार यौगिक शब्दो मे होता है। जैसे,—साहबइकबाल। साहबतदबीर। साहबदिमाग।

**साहबइसाफ**—वि० [अ० साहिब ए इसाफ] न्यायी। न्यायशील [को०]।

**साहबखाना**—सज्ञा पु० [अ० साहिब + फा० खानह्] घर का स्वामी। गृहपति [को०]।

**साहबगरज**—वि० [अ० साहिबगरज] गर्जू। स्वार्थी। खुदगरज [को०]।

**साहबजादा**—सज्ञा पु० [अ० साहिब + फा० जादह्] [स्त्री० साहबजादी] १ भले या बडे आदमी का लडका। २ पुत्र। बेटा। जैसे,—आज आपके साहबजादा कहाँ है?

**साहबदिल**—वि० [अ० साहिब + फा० दिल] सहृदय। साधु। सज्जन। मनस्वी [को०]।

**साहबपन**—सज्ञा पु० [अ० साहिब + हिं० पन (प्रत्य०)] साहब होने का भाव। साहबी [को०]।

**साहब बहादुर**—सज्ञा पु० [अ० साहिब + फा० बहादुर] १ सम्मानित व्यक्ति या राजा का सबोधन। २ योरोपीय ढग से रहनेवाला व्यक्ति।

**साहबान**—सज्ञा पु० [अ० साहिब का बहु व०] सज्जन वृद। सत्पुरुष।

**साहबाना**—वि० [अ० साहिबानह्] साहबी ढग का। साहबी।

**साहब सलामत**—सज्ञा स्त्री० [अ०] परस्पर मिलने के समय होनेवाला अभिवादन। बदगी। सलाम। जैसे,—जब कभी वे रास्ते मे मिल जाते हैं, तब साहबसलामत हो जाती है।

**साहबी**[1]—वि० [अ० साहिब + ई (प्रत्य०)] साहब का। साहब सबधी। जैसे,—साहबी चाल। साहबी रग ढग।

**साहबी**[2]—सज्ञा स्त्री० १ साहब होने का भाव। २ प्रभुता। मालिकपन। ३ सर्वोच्चता। सर्वोपरि होने का भाव। ईश्वरत्व। ४ बडाई। बडप्पन। महत्व।

मुहा०—साहबी करना = (१) अफसरी दिखाना। अफसरो की तरह रहना। (२) रोब गाँठना। (३) सीमा से बाहर अधिक व्यय करके ठाटबाट मे रहना।

**साहबीयत**—सज्ञा स्त्री० [अ० साहिब + इयत (प्रत्य०)] साहबपन। साहबी। अफसरी ढग।

**साह बुलबुल**—सज्ञा पुं० [अ० शाह + फा० बुलबुल] एक प्रकार का बुलबुल जिसका सिर काला, सारा शरीर सफेद और दुम एक हाथ लबी होती है।

**साहय**—वि० [स०] सहन करने मे प्रवृत्त करनेवाला [को०]।

**साहस**—सज्ञा पुं० [स०] १ वह मानसिक गुण या शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य यथेष्ट बल के अभाव मे भी कोई भारी काम कर बैठता है या दृढतापूर्वक विपत्तियो या कठिनाइयो आदि का सामना करता है। हिम्मत। हियाव। जैसे,—वह साहस करके डाकुओ पर टूट पडा।

क्रि० प्र०—करना।—दिखलाना।—होना।

२ जबरदस्ती दूसरे का धन लेना। लूटना। ३ कोई बुरा काम। दुष्ट कर्म। ४ द्वेष। ५ अत्याचार। ६ क्रूरता। बेरहमी। ७ परस्त्री गमन। ८ बलात्कार। ९ दड। सजा। १० जुर्माना। ११ अविमृश्यकारिता। अविवेकिता। औद्धत्य। उतावलापन। १२ वह अग्नि जिसपर यज्ञ के लिये चरु पकाया जाता है।

**साहसकरण**—सज्ञा पु० [स०] १ साहस करना। बल प्रयोग। २ उग्रता। क्रूरता।

**साहसकारी**—वि० [स० साहसकारिन्] १ साहस करनेवाला। साहसी। बहादुर। हिम्मती। २. उद्धत। अविवेकी [को०]।

**साहसदड**—सज्ञा पुं० [स० साहसदण्ड] १ सबसे बडा दड। कठोरतम दड। प्राणदड [को०]।

**साहसलाछन**—वि० [सं० साहसलाञ्छन] जिसकी पहचान साहस हो। जो अपने साहस से जाना पहचाना जाय [को०]।

**साहसाक**—सज्ञा पुं० [सं० साहसाङ्क] १ राजा विक्रमादित्य का एक नाम। २ एक कोशकार का नाम (को०)। ३ एक कवि का नाम (को०)।

**साहसाधिपति**—सज्ञा पुं० [स०] पुलिस अफसर [को०]।

**साहसाध्यवसायी**—वि० [स० साहसाध्यवसायिन्] किसी कार्य मे उतावली या जल्दीबाजी करनेवाला [को०]।

**साहसिक**—वि०, सज्ञा पु० [स०] १ वह जिसमे साहस हो। साहस करनेवाला। हिम्मतवर। पराक्रमी। २ डाकू। ३ चोर।

तस्कर। ४, मिथ्यावादी। ५ कर्कश वचन बोलनेवाला। ६ परस्त्रीगामी।

विशेष—शास्त्रो मे डाका, चोरी, झूठ बोलना, कठोर वचन कहना और परस्त्रीगमन ये पाँचो कर्म करनेवाले साहसिक कहे गए हैं और अत्यत पापी बतलाए गए है। धर्मशास्त्रो मे इन्हे यथोचित दड देने का विधान है। स्मृतियो मे लिखा है कि 'साहसिक व्यक्ति' की साक्षी नही माननी चाहिए क्योकि ये स्वय ही पाप करनेवाले होते है।

६ वह जो हठ करता हो। हठी। हठीला। ७ निर्भीक। निभय। निडर। ८ अविचारशील। अविवेकी (को०)। ९ क्रूर। अत्याचारी (को०)।

**साहसिकता**—सज्ञा स्त्री० [स० साहसिक+ता (प्रत्य०)] साहसिक होने का भाव दिलेरपन। हिम्मत। उ०—कितनी सरल, स्वतत्र और साहसिकता से भरी हुई यह रमणी है।—आँधी, पृ० १६।

**साहसिक्य**—सज्ञा पु० [स०] १ साहस दिखाने का भाव। साहसिकता। प्रचडता। २ असमीक्ष्यकारिता। अविवेकिता। औद्धत्य (को०)।

**साहसी**[1]—वि० [स० साहसिन्] १ वह जो साहस करता हो। हिम्मती। दिलेर। २ अविवेकी। उद्धत। ३ क्रूर। निष्ठुर (को०)। ४ असह्य। उग्र। प्रचड (को०)।

**साहसी**[2]—सज्ञा पुं० बलि का पुत्र जो शाप के कारण गधा हो गया था। इसे बलराम ने मारा था।

**साहसैकरसिक**—वि० [स०] साहसिकता मे ही आनद या रस माननेवाला। अत्यत अत्याचारी। उद्धत। उद्दड। क्रूर (को०)।

**साहस्र**—वि० [स०] १ सहस्र सबधी। हजार का। २ (ब्याज आदि) जो हजार पीछे दिया जाय (को०)। ३ जो हजार मे क्रीत किया गया हो (को०)। ४ सहस्रगुणित। हजार गुना (को०)। ५ असख्य। अत्यधिक सख्यायुक्त। असख्येय (को०)। ६ हजार से युक्त (को०)।

**साहस्र**[2]—सज्ञा पु० १ सहस्र का समूह। २ एक हजार सैनिको की टुकडी (को०)।

**साहस्रक**[1]—वि० [स०] जो एक हजार से युक्त हो। एक हजार की सख्यावाला (को०)।

**साहस्रक**[2]—सज्ञा पु० १ एक हजार का समूह। एक सहस्र। २. एक तीर्थ का नाम (को०)।

**साहस्रवेधी**—सज्ञा पु० [स० साहस्रवेधिन्] कस्तूरी।

**साहस्रांत**—सज्ञा पु० [स० साहस्रान्त] एक प्रकार का एकाह यज्ञ (को०)।

**साहस्राद्य**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'साहस्रात'।

**साहस्रिक**[1]—वि० [स०] सहस्र सबधी। हजार का।

**साहस्रिक**[2]—सज्ञा पु० किसी पदार्थ के एक सहस्र भागो मे से एक भाग—$\frac{१}{१०००}$।

**साहा**—सज्ञा पु० [स० साहित्य] १ वर्ष जो हिंदू ज्योतिष के अनुसार विवाह के लिये शुभ माना जाता है। २ विवाह आदि शुभ कार्यो के लिये निश्चित लग्न या मुहूर्त।

**साहानसाह**Ⓤ—सज्ञा पु० [फा० शाहशाह] दे० 'शाहशाह'। उ०—साहानसाह आलम निवाज। रनथभ कोट चहुँआन राज। हम्मीर०, पृ० १६।

**साहाय्यक**—सज्ञा पु० [स०] १ सहयोग। मदद। सहायता। २ मित्रता। मैत्री। ३ सहयोगियो या मित्रो का मडल। ४ उपकारक या सहायक सेना (को०)।

**साहाय्य**—सज्ञा पु० [स०] १ सहायता। मदद। २ दोस्ती। मैत्री। सग (को०)। ३ (नाटक मे) एक दूसरे को सकट मे मदद पहुँचाना (को०)।

**साहाय्यकर**—वि० [स०] मदद करनेवाला। सहायक (को०)।

**साहाय्यदान**—सज्ञा पु० [स०] सहायता देना। मदद देना (को०)।

**साहि**Ⓤ†[1]—सज्ञा पु० [फा० शाह] १ राजा। उ०—भूपन भनि ताके भयो, भुव भूपन नृप साहि। रातौ दिन सकित रहै, साहि सबै जग माहि।—भूषण ग्र०, पृ० ८। २ दे० 'साहु'।

**साहित**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० साहित्य] दे० 'साहित्य'। उ०—मुरभूम पाठ पिंगल मता, साहित वोदग सार नैं।—रघु० रू०, पृ० १४।

**साहिती**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'साहित्य'।

**साहित्य**—सज्ञा पु० [स०] १ एकत्र होना। मिलना। मिलन। २ वाक्य मे पदो का एक प्रकार का सबध जिसमे वे परस्पर अपेक्षित होते हैं और उनका एक ही क्रिया से अन्वय होता है। ३ किसी एक स्थान पर एकत्र किए हुए लिखित उपदेश, परामर्श या विचार आदि। लिपिबद्ध विचार या ज्ञान। ४ अलकार शास्त्र। रीतिशास्त्र। काव्यकला। काव्यशास्त्र आदि। ५ गद्य और पद्य सब प्रकार के उन ग्रथो का समूह जिनमे सार्वजनिक हित सबधी स्थायी विचार रक्षित रहते है। वे समस्त पुस्तके जिनमे नैतिक सत्य और मानव भाव बुद्धिमत्ता तथा व्यापकता से प्रकट किए गए हो। वाङ्मय।

विशेष—इस अर्थ मे यह शब्द बहुत अधिक व्यापक रूप मे भी बोला जाता है (जैसे,—समस्त ससार का साहित्य), और देश काल, भाषा या विषय आदि के विचार से परिमित रूप मे भी (जैसे,—हिंदी साहित्य, वैज्ञानिक साहित्य, बिहारी का साहित्य आदि)।

६. सगति। सामजस्य। तालमेल (को०)। ७ किसी वस्तु के उत्पादन या किसी कार्य की सपन्नता के लिये सामग्री का सग्रह (को०)।

**साहित्यदर्पण**—सज्ञा पु० [स०] साहित्य शास्त्र का एक सुप्रसिद्ध ग्रथ जिसके रचयिता विश्वनाथ कविराज है।

**साहित्यशास्त्र**—सज्ञा पु० [स०] वह शास्त्र जिसमे साहित्यिक विधाओ (अलकार, रस, रूपक, छद आदि) का शास्त्रीय ढग से मूल्याकन हो।

**साहित्यिक[1]**—वि० [सं० साहित्य + हिं० इक (प्रत्य०)] साहित्य सबधी। जैसे—साहित्यिक चर्चा।

**साहित्यिक[2]**—सज्ञा पु० वह जो साहित्य सेवा मे सलग्न हो। साहित्य शास्त्र का विद्वान्। साहित्यसेवी। जैसे,—वहाँ कितने ही प्रसिद्ध साहित्यिक उपस्थित थे।

**साहिनी**—सज्ञा स्त्री० [स० सेनानी ?] दे० 'साहनी'।

**साहब**—सज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० साहिबा] स्वामी। प्रभु। दे० 'साहब'। उ०—साहिब सीतानाथ से सेवक तुलसी दास।—मानस, १।२८।

**साहिबिनी**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [अ० साहिब + इनी (प्रत्य०)] स्वामिनी। मलकिन। उ०—मेरो साहिबिनि सदा सीस पर बिलसति, देबि क्यो न दास को देखाइयत पाय जू।—तुलसी ग्र०, पृ० २३१।

**साहिबी**—पज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'माहबी'। उ०—(क) सुलभ सिद्धि सब साहिबी सुमिरत सीता राम।—तुलसी ग्र०, पृ० १५२। (ख) लै बिलोक की साहिबी दै धतूर को फूल।—स० सप्तक, पृ० १४६।

**साहिब्बⓊ**—सज्ञा पुं० [अ० साहिब] दे० 'साहब'। उ०—साहिब्ब बचन इम उच्चरै अली औलिया पीर गनि।—ह० रासो, पृ० ५७।

**साहियाँⓊ**—सज्ञा पु० [स० स्वामी, या फा० शाह, हिं० साह, साहि] दे० 'साँई'।

**साहिर**—सज्ञा पु० [अ०] [बहु व० सहरा] जादूगर। उ०—अफसोस मार झटपट दिल को रखै हे अटका। किस साहिरो से सीखा जुल्फो ने तेरी लटका।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० १६।

**साहिरी**—सज्ञा स्त्री० [अ० साहिर] जादूगरी।

**साहिल[1]**—सज्ञा पु० [अ०] १ किनारा। कूल। तट। २ समुद्र अथवा नदी का तट (कौ०)।

**साहिल[2]**—सज्ञा स्त्री० [स० शल्यकी] दे० 'साही'।

**साहिलो**—सज्ञा स्त्री० [अ० साहिल (=समुद्र तट)] १ एक प्रकार का पक्षी जिसका रग काला और लबाई एक बालिश्त से अधिक होती है।

विशेष—यह प्राय उत्तरी भारत और मध्य प्रदेश मे पाया जाता है। यह पेड की टहनियो पर प्याले के आकार का घोसला बनाता है। इसके अडो का रग भूरा होता है।

२ बुलबुल चश्म।

**साही[1]**—सज्ञा स्त्री० [स० शल्यकी] एक प्रसिद्ध जतु जो प्राय दो फुट लबा होता है।

विशेष—इसका सिर छोटा, नथुने लबे, कान और आँखे छोटी और जीभ बिल्ली की तरह काँटेदार होती है। ऊपर नीचे के जबडे मे चार दाँतो के अतिरिक्त कुतरनेवाले दो दाँत ऐसे तीक्ष्ण होत हैं कि लकडी के मोटे तख्ते तक को काट डालते है। इसका रग भूरा, सिर और पाँव पर काले काले सफेदी लिए छोटे छोटे बाल और गदन पर के बाल लबे और भूरे रग के होते है। पीठ पर लबे नुकीले काँटे होते हैं। काँटे बहुधा सीधे और नोके पूँछ की भाँति फिरी रहती है। जब यह क्रुद्ध होता है, तब काँटे सीधे खडे हो जाते है। यह अपने शत्रुओ पर अपने काँटो से आक्रमण करता है। इसका किया हुआ घाव कठिनता से आराम होता है। इन काँटो से लिखने की कलम बनाई जाती है और चूडाकर्म मे भी कही कही इनका व्यवहार होता है। ये जतु आपस मे बहुत लडते है, इसलिये लोगो का विश्वास है कि यदि इसके दो काँटे दो आदमियो के दरवाजो पर गाड दिए जाएँ, तो दोनो मे बहुत लडाई होती है। यह दिन मे सोता और रात मे जागता है। यह नरम पत्ती, साग, तरकारी और फल खाता है। शीतकाल मे यह बेसुध पडा रहता है। यह प्राय ऊष्ण देशो मे पाया जाता है। स्पेन, सिसिली आदि प्रायद्वीपो और अफ्रीका के उत्तरी भाग, एशिया के उत्तर, तातार, ईरान तथा हिंदुस्तान मे यह बहुत मिलता है। इसे कही कही 'सेई' और 'स्याऊ' भी कहते है।

**साही[2]**—वि० [फा० शाही] दे० 'शाही'। उ०—साही हुकुम्म किज्जिय सुवेग।—प० रासो, पृ० ६५।

**साहु**—सज्ञा पु० [स० साधु] १ सज्जन। भला मानस। उ०—ताहि न खोजहु साहु के पूता। का पाहन पूजहु अजगूता।—कबीर सा०, पृ० ३६६। २ महाजन। धनी। साहुकार। चोर का उलटा।

विशेष—प्राय वणिको के नाम के आगे यह शब्द आता है। इसको कुछ लोग भ्रम से फारसी 'शाह' का अपभ्रश समझते है। पर यथार्थ मे यह सस्कृत 'साधु' का प्राकृत रूप है।

**साहुन**‡—सज्ञा पुं० [स० श्रावण, हिं० सावन] दे० 'सावन' (मास)। उ०—सदा तुरैया फूले नही, सदा न साहुन होय। सदा नै कसा रन चढै सदा न जोवे कोय।—शुक्ल अभि० ग्र०, पृ० १५३।

**साहुनिⓊ**—सज्ञा स्त्री० [हिं० साहु] साहु की स्त्री। साहुआइन। उ०—साहु के माल चोर धरि साँधा। साहुनि कूदि साहु कहँ बाधा।—सत० दरिया, पृ० ३६६।

**साहुरड़ाⓊ**‡—पज्ञा पु० [सं० श्वसुरालय या हिं० सासुर + डा (प्रत्य०)] पति का घर। ससुराल। सासुर। उ०—पवक द ादन चार हे साहुरडे जाणा। अधा लोक न जाणई मूरखु एयाणा।—कबीर ग्र०, पृ० ३०६।

**साहुल**—सज्ञा पुं० [फा० शाकूल] दीवार की सीध नापने का एक प्रकार का यत्र जिसका व्यवहार राज और मिस्त्री लोग मकान बनाने के समय करते है।

विशेष—यह पत्थर की गोली के आकार का होता है और इसमे एक लबी डोरी लगी रहती है। इसी डोरी के सहारे से इसे लटकाकर दीवार की टेढाई या सिधाई नापते है।

**साहू**—पज्ञा पु० [स० साधु, प्रा० साहु] दे० 'साहु'।

**साहूकार**—पज्ञा पु० [हिं० साहु + कार (प्रत्य०)] बडा महाजन या व्यापारी। कोठीवाल। धनाढ्य।

**साहूकारा[1]**—पज्ञा पु० [हिं० साहूकार + आ (प्रत्य०)] १ रुपयो का लेनदेन। महाजनी। २ वह बाजार जहा बहुत से साहूकार या महाजन कारबार करते हो। ३ साहूकारो का मुहल्ला।

**साहूकारा**[२]—वि० साहूकारो का। जैसे,—साहूकारा व्यवहार या ब्याज।

**साहूकारी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० साहूकार + ई (प्रत्य०)] १ साहूकार होने का भाव। साहूकारपन। २ साहूकार का काम। साहूकारा। महाजनी (को०)।

**साहेब**—सज्ञा पु० [अ० साहिब] दे० 'साहब'।

**साहैं**ⓤ†[१]—सज्ञा स्त्री० [हिं० बाँह] भुजदड। बाजू। उ०—सकल भुअन मगल मदिर के द्वार विसाल सुहाई साहै।—तुलसी (शब्द०)।

**साहैं**[२]—अव्य० [हिं० सामुहे] सामने। सम्मुख।

**साह्य**—सज्ञा पु० [स०] १ सयोजन। मेल। साथ। २ सहायता। मदद (को०)।

**साह्यकृत्**—सज्ञा पुं० [स०] साथी (को०)।

**साह्न**—वि० [स०] १ दिन से सबद्ध। दिन सहित। दिनयुक्त। २. दिन पूरा करनेवाला। दिवस समाप्त करनेवाला (को०)।

**साह्व**—वि० [स०] नामवाला (को०)।

**साह्वय**—सज्ञा पु० [स०] १ जानवरो की लडाई कराकर जुआ खेलना। २ पशुओ के लडाने के लिये योजित करना।

**सिउँ, सिउँ**ⓤ‡—प्रत्य० [अप० सिउँ (=सम)] दे० 'त्यो'। उ०—रतन जनम अपनो तै हास्यो गोविंद गत नहिं जानी। निमिष न लीन भयो चरनन सिउँ विरथा अउध सिरानी।—तेगबहादुर (शब्द०)।

**सिकना, सिँकना**—क्रि० अ० [स० श्रृत (=पका हुआ) + करण, हिं० सेंकना] आँच पर गरम होना या पकना। सेंका जाना। जैसे,—रोटी सिँकना।

**सिकली**—सज्ञा स्त्री० [स० श्रृङखला, हिं० साँकल] करधनी। मेखला। कमर मे पहनने की जजीर। उ०—खुटी सिकली सूता एकावटी चुलि वलया मेपला त्रिका।—वर्ण०, पृ० ४।

**सिकोना**—सज्ञा पुं० [अ०] कुनैन का पेड।

**सिखला**—सज्ञा स्त्री० [स० श्रृङखला, हिं० साँकल] १ दरवाजा वद करने की सिकडी। साँकल। २ वधन। घेरा। रोक। प्रतिवध। अर्गला। उ०—तोरि सिखला गेह की हो लोक लाज भय खोय। 'हरीचद' हरि सो मिलौ होनी होय सो होय।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ३७४।

**सिग**[१]—सज्ञा पु० [स० श्रृङ्ग] दे० 'सीग'।

**सिग**†[२]—वि० [देशी] कृश। दुर्बल।—देशी० ८ २८।

**सिगडा**†—सज्ञा पु० [स० श्रृङग + हिं० डा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० सिगडी] सीग का बना हुआ बारूद रखने का एक प्रकार का बरतन। उ०—तन बदूक सुमन का सिगडा ज्ञान का गज ठहकाई।—कबीर० श०, भा० १, पृ० २७।

**सिगरा**†—सज्ञा पुं० [हिं० सीग + रा (प्रत्य०)] दे० 'सिगडा' उ०—(क) तन बदूक सुमति कै सिगरा ज्ञान के गज ठहकाई।—पलटू०, भा० ३, पृ० ४०। (ख) रजक दानी, सिगरा तूलि पलीता दानी।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० १३।

**सिगरफ**—सज्ञा पु० [फा० शिगरफ] ईंगुर।

**सिगरफी**—वि० [फा० शिगरफी] ईंगुर का। ईंगुर से बना हुआ।

**सिगरी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सीग] एक प्रकार की मछली जिसके सिर पर सीग से निकले होते हैं।

**सिगरौर**—सज्ञा पुं० [स० श्रृङगवेर] प्रयाग के पश्चिमोत्तर नौ दस कोस पर एक स्थान जो प्राचीन श्रृगवेरपुर माना जाता है। यहाँ निषादराज गुह की राजधानी थी। उ०—सो जामिनि सिगरौर गँवाई।—मानस, २।१५१।

**सिगल**'—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बडी मछली जो भारत और बरमा की नदियो मे पाई जाती है। यह छह् फुट तक लबी होती है।

**सिगल**[२]—सज्ञा पु० [अ० सिगनल] दे० 'सिगनल'।

**सिगल**[३]—वि० [अ० सिंगिल] एक। दे० 'सिंगिल'। जैसे,—सिगल कप (डबल = दो अर्थात् भरा हुआ पूर्ण और सिगल = एक अर्थात् आधा)।

**सिगा**'—सज्ञा पु० [हिं० सीग] फूँककर बजाया जानेवाला सीग या लोहे का बना एक बाजा। तुरही। रणसिंगा।

**सिगा**†[२]—सज्ञा स्त्री० [देशी] फली। छीमी। फलियाँ।

**सिगार, सिँगार**ⓤ—सज्ञा पु० [स० श्रृङगार, प्रा० सिंगार] १. सजावट। सज्जा। बनाव। २ शोभा। ३ शृगार रस। उ०—ताही ते सिगार रस बरनि कह्यो कवि देव। जाको है हरि देवता सकल देव अधिदेव।—देव (शब्द०)।

**सिगारदान**—सज्ञा पु० [हिं० सिगार + स० आधान या फा० दान (प्रत्य०)] वह पात्र या छोटा सदूक जिसमे शीशा, कघी आदि शृगार की सामग्री रखी जाती है। प्रसाधन की सामग्री रखने का सदूक।

**सिगारना, सिँगारना**ⓤ—क्रि० स० [हिं० सिगार + ना (प्रत्य०)] वस्त्र, आभूषण, अगराग आदि से शरीर सुसज्जित करना। सजाना। सँवारना। उ०—(क) सुरभी वृषभ सिगारि बहुविधि हरदी तेल लगाई।—सूर (शब्द०)। (ख) कटे कुड कुडल सिँगारे गड पुडन पै कटि मै भुसुड सुड दडन की मडनी।—गि० दास (शब्द०)।

**सिगारपटार**†—सज्ञा पु० [स० श्रृङगार + प्रस्तार] अच्छी तरह किया हुआ शृगार। शृगार। सिगार। उ०—मावुन मल मल कर हाथ मुँह धोया फिर इत्र पाउडर लगाकर सिगारपटार किया।—कठहार, पृ० ९८।

**सिगारभोग**—सज्ञा पु० [स० श्रृङगार + भोग] शृगारकालीन भोग। वह भोग या नैवेद्य जो देवविग्रह के स्नान एव धूप आरती के उपरात तथा शृगार आरती के पूर्व अर्पण किया जाता है। बालभोग। कलेवा। उ०—फेरि रसोइ मे जाइ, समै भए भोग सराइ श्रीठाकुरजी की मगला आरति करि, सिगार करि सिगार-भोग धरतैं।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ १०१।

**सिगारमेज**—सज्ञा स्त्री० [स० श्रृङगार + फा० मेज] एक प्रकार की मेज जिसपर दर्पण लगा रहता है और शृगार की सामग्री सजी

रहती है। इसके सामने बैठकर लोग बाल सँवारते और वस्त्र आभूषण आदि पहनते हैं।

**सिंगारहाट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंगार + हाट (=बाजार)] १ संभ्रांत वेश्याओं का बाजार। वेश्याओं के रहने का स्थान। चकला। २ वह बाजार जहाँ शृंगार या प्रसाधन की वस्तुएँ बिकती हों।

**सिंगारहार**—संज्ञा पुं० [सं० हारशृङ्गार] हरसिंगार नामक फूल। परजाता। उ०—नागेसर सदबरग नेवारी। औ सिंगारहार फुलवारी।—जायसी (शब्द०)।

**सिंगारिया**—वि० [सं० शृङ्गार + हिं० सिंगार + इया (प्रत्य०)] किसी देवमूर्ति का शृंगार करनेवाला, पुजारी।

**सिंगारी, सिँगारी**ⓤ—वि० पुं० [सं० शृङ्गारिन्, प्रा० सिंगारि, हिं० सिंगार + ई (प्रत्य०)] १ शृंगार करनेवाला। शोभित करनेवाला। सजानेवाला। उ०—समर बिहारी सुर सम बलधारी धरि मल्लजुद्धकारी औ सिंगारी भट भेरु के।—गोपाल (शब्द०)। २ सिंगारिया। शृंगार का विशेषज्ञ। रामलीला, नाटक आदि में पात्रों को सजानेवाला। उ० आवत दूर दूर सौं सिच्छक गुनी सिंगारी।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ३०।

**सिंगाल**†—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पहाड़ी बकरा जो कुमायूँ से नैपाल तक पाया जाता है।

**सिंगाला**—वि० [हिं० सींग + आला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सिंगाली] सींगवाला। जैसे,—गाय, बैल।

**सिंगासन**†—संज्ञा पुं० [सं० सिंहासन, प्रा० सिंघासन] दे० 'सिंहासन'।

**सिंगिया**—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गिक] एक प्रसिद्ध स्थावर विष।

विशेष—इसका पौधा अदरक या हल्दी का सा होता है और सिक्किम की ओर नदियों के किनारे की कीचड़वाली जमीन में उगता है। इसकी जड़ ही विष होती है, जो सूखने पर सींग के आकार की दिखाई पड़ती है। लोगों का विश्वास है कि यह विष यदि गाय की सींग में बाँध दिया जाय, तो उसका दूध रक्त के समान लाल हो जाय। यह कुछ आयुर्वेदिक दवाओं में प्रयुक्त होता है।

**सिंगिया**†—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गिका, प्रा० सिंगिया] पिचकारी। फुहारा (को०)।

**सिंगिल**—वि० [अं०] १ अविवाहित। एकाकी। २ एक मात्र। इकहरा। जैसे,—सिंगिल लाइन, सिंगिल रीड बाजा।

**सिंगी**[1]—संज्ञा पुं० [हिं० सींग] १ सींग का बना हुआ फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा। तुरही।

विशेष—इसे शिकारी लोग कुत्तों को शिकार का पता देने के लिये बजाते हैं।

२ सींग का बाजा जिसे योगी लोग फूँककर बजाते हैं। उ०—सिंगी नाद न बाजही किंगरी गए सो जोगी।—दादू (शब्द०)।

क्रि० प्र०—फूँकना।—बजाना।

३ घोड़ों का एक बुरा लक्षण।

**सिंगी**[2]—संज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की मछली।

विशेष—यह मछली बरसाती पानी में अधिकता से होती है। इसके काटने या सींग गड़ाने से एक प्रकार का विष चढ़ता है। यह एक फुट के लगभग लंबी होती है और खाने के योग्य नहीं होती।

२ सींग की बनी नली जिससे घूमनेवाले देहाती जर्राह शरीर का रक्त चूसकर निकालते हैं।

क्रि० प्र०—लगाना।

**सिंगी मोहरा**—संज्ञा पुं० [हिं० सिंगी + मुहरा] सिंगिया नामक विष।

**सिंगुल**ⓤ—संज्ञा पुं० [हिं० सींग + उल (प्रत्य०)] सींग। उ०—पीत वरण अारक्त खुर सिर सिंगुल सुकुमार। कमलासन के अग्र अरि गो गोरूप पुकार।—पृ० रासो, पृ० ७।

**सिंगौटी, सिँगौटी**[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींग + औटी (प्रत्य०)] १ सींग का आकार। २ बैल के सींग पर पहनाने का एक आभूषण। ३ सींग का बना हुआ घोटना। ४ तेल आदि रखने के लिये सींग का पात्र। ५ जंगल में मरे हुए जानवरों के सींग।

**सिंगौटी, सिँगौटी**[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंगार + औटी] सिंदूर, कंघी आदि रखने की स्त्रियों की पिटारी।

**सिंघ**ⓤ‡—संज्ञा पुं० [सं० सिंह, प्रा० सिंघ] १ दे० 'सिंह'। २ शंख। ३ राजा। राव। ४ शूर। वीर। उ०—सिंघ सूर को कहत कवि बहुरि संख को सिंघ। सिंघ राव औ सिंघ वपु धरो भेष नरसिंघ।—अनेकार्थ०, पृ० १६३।

**सिंघण**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिंहाण' (को०)।

**सिंघपौरि**†—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंह + हिं० पौर] राजा के प्रासाद या मंदिर का मुख्य द्वार। सिंहपौर। उ० सो सुनिकै श्री रुक्मिनी जी आदि सब पटरानी निज सखी सहचारिन को सग ले कै सोरहहू सिंगार किए अपने अपने मंदिर ते निकसी। सो सिंघपौरि आई।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ७।

**सिंघन**—संज्ञा पुं० [सं० सिंहल] दे० 'सिंहल'।

**सिंघली**—वि० [सं० सिंहल + ई] दे० 'सिंहली'।

**सिंघा**†—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गक, हिं० सिंगा] दे० 'सिंगा'।

**सिंघाड़ा, सिँघाड़ा**†—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गाटक] १ पानी में फैलनेवाली एक लता जिसके तिकोने फल खाए जाते हैं। पानी फल।

विशेष—यह भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत में तालों और जलाशयों में रोपकर लगाया जाता है। इसकी जड़ें पानी के भीतर दूर तक फैलती हैं। इसके लिये पानी के भीतर कीचड़ का होना आवश्यक है, कँकरीली या बलुई जमीन में यह नहीं फैल सकता। इसके पत्ते तीन अंगुल चौड़े कटावदार होते हैं। जिनके नीचे का भाग ललाई लिए होता है। फूल सफेद रंग के होते हैं। फल तिकोने होते हैं जिनकी दो नोकें काँटे या सींग की तरह निकली होती हैं। बीच का भाग खुरदरा होता है। छिलका मोटा पर मुलायम होता है जिसके भीतर सफेद गूदा या गिरी होती है। ये फल हरे खाए जाते हैं। सूखे फलों की गिरी का आटा भी बनता है जो व्रत के दिन फलाहार के रूप में लोग खाते हैं।

अबीर बनाने मे भी यह आटा काम मे आता है। वैद्यक मे सिंघाडा शीतल, भारी कसैला वीर्यवर्द्धक, मलरोधक, वातकारक तथा रुधिरविकार और त्रिदोष को दूर करनेवाला कहा गया है।

पर्या०—जलफल। वारिकंटक। त्रिकोणफल।

२ सिंघाडे के आकार की तिकोनी सिलाई या बेल बूटा। ३ सोनारो का एक औजार जिससे वे सोने की माला बनाते हैं। ४ एक प्रकार की मुनिया चिडिया। ५ समोसा नाम का नमकीन पकवान जो सिंघाडे के आकार का तिकोना होता है। ६ सिंघाडे के आकार की मिठाई। मीठा समोसा। ७ एक प्रकार की आतिशबाजी। ७ रहट की लाट मे ठोकी हुई लकडी जो लाट को पीछे की ओर घूमने से रोकती है।

**सिंघाडी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंघाडा] वह तालाब जिसमे सिंघाडा रोपा जाता है।

**सिंघाण**—संज्ञा पु० [सं० सिङ्घाण] दे० 'सिंहाण'।

**सिंघाणक**—संज्ञा पु० [सं० सिङ्घाणक] दे० 'सिंहाणक'।

**सिंघारना**Ⓤ†—क्रि० स० [सं० सहारण] सहार करना। उ०—धनुधारे ! रे धनुधारे। सर एका बाल सिंघारे।—रघु० रू०, पृ० १५५।

**सिंघासन** संज्ञा पु० [सं० सिंहासन, प्रा० सिंघासण, सिंघासन] दे० 'सिंहासन'। उ०—(क) दशरथ राउ सिंघासन बैठि विराजहिं हो।—तुलसी (शब्द०)। (ख) तहाँ सिंघासन सुभग निहारा। दिव्य कनकमय मनि दुति कारा।—मधुसूदन (शब्द०)।

**सिंघिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नासिका [को०]।

**सिंघिनी**[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] नासिका। नाक।

**सिंघिनी**[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंह, प्रा० सिंघ + हिं० इनी (प्रत्य०)] दे० 'सिंहिनी'।

**सिंघिया**—संज्ञा पु० [सं० शृङ्गिक] दे० 'सिंहिनी' (विष)।

**सिंघो**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींग] १ एक प्रकार की छोटी मछली जिसका रग सुर्खी लिए हुए होता है। इसके गलफडे के पास दोनो तरफ दो काँटे होते हैं। २ सोट। शुडी।

**सिंघू**—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का जीरा जो कुल्लू और बूशहर (फारस) से आता है और काले जीरे के स्थान पर बिकता है।

**सिंघेला, सिँघेला**†—संज्ञा पु० [सं० सिंह, प्रा० सिंघ + हिं० एला (प्रत्य०)] शेर का बच्चा। उ०—तौ लगि गाज न गाज सिंघेला। सौह साह सौ जुरौ अकेला।—जायसी (शब्द०)।

**सिंचता**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिञ्चता] दे० 'सिंचिता' [को०]।

**सिंचन**—संज्ञा पु० [सं० सेचन] १ जल छिडकना। पानी के छीटे डालकर तर करना। २ पेडो मे पानी देना। सीचना।

**सिंचना, सिँचना**†—क्रि० अ० [हिं० सीचना] सीचा जाना।

**सिंचाई, सिँचाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० √सीच + आई (प्रत्य०)] १ पानी छिडकने का काम। जल के छीटो से तर करने की क्रिया। उ०—निजकर पुनि पत्रिका बनाई। कुकुम मलयज बिंदु सिंचाई।—रघुराज (शब्द०)। २ सीचने का काम। वृक्षो मे जल देने का काम। ३ सीचने का कर या मजदूरी।

**सिंचाना, सिँचाना**—क्रि० स० [हिं० सीचना का प्रे० रूप] १ पानी से छिडकाना। २ सीचने का काम कराना।

**सिंचित**—वि० [सं० सिञ्चित] [स्त्री० सिंचिता] १ जल छिडका हुआ छीटो से तर किया हुआ। सीचा हुआ।

**सिंचिता**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिञ्चिता] पिप्पली। पीपर।

**सिंचौनी, सिँचौनी**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीचना + औनी (प्रत्य०)] दे० 'सिंचाई'।

**सिंजा**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिञ्जा] १ अलकारो की ध्वनि। भूषणो की रुनझुन। २ दे० 'शिंजा'।

**सिंजालपारी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक औजार। विशेष दे० 'गावलीन'।

**सिंजित**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिञ्जित] शब्द। ध्वनि। झनक। झकार। उ०—घुटुरुन चलत घुघुरू बाजैं। सिंजित सुनत हस हिय लाजैं।—लाल कवि (शब्द०)।

**सिंडिकेट**—संज्ञा पु० [अ०] १ सिनेट या विश्वविद्यालय की प्रबध सभा के सदस्यो या प्रतिनिधियो की समिति। २ धनी व्यापारियो या जानकार लोगो की ऐसी मडली जो किसी कार्य को, विशेषकर अर्थसबधी उद्योग या योजना को अग्रसर करने के लिये बनी हो।

**सिंदन**Ⓤ‡—संज्ञा पुं० [सं० स्यन्दन] दे० 'स्यदन'। उ०—गज बाजि सु सिंदन जान चढे।—ह० रासो, पृ० ७८।

**सिंदरबानी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की हलदी।

विशेष—इस हलदी की जड से एक प्रकार का तीखर निकलता है। यह असली तीखुर मे मिला भी दिया जाता है।

**सिंदुक**—संज्ञा पु० [सं० सिन्दुक] सिंदुवार वृक्ष। सभालु।

**सिंदुर**Ⓤ—संज्ञा पु० [सं० सिन्दूर] दे० 'सिंदूर'।

**सिंदुररसना**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्दुर रसना ?] मदिरा। शराब। (अनेकार्थ०)।

**सिंदुरिया**—वि० [हिं० सिंदूर + इया (प्रत्य०)] सिंदूर जैसे रग वाला। सिंदूरिया [को०]।

**सिंदुरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्दूर] बबूल की जाति का एक छोटा पेड जो हिमालय के नीचे के प्रदेश मे चार साढे चार हजार फुट तक पाया जाता है।

**सिंदुवार**—संज्ञा पु० [सं० सिन्दुवार] सँभालू वृक्ष। निर्गुडी।

**सिंदुवारक**—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दुवारक] दे० 'सिंदुवार' [को०]।

**सिंदूर**—संज्ञा पु० [सं० सिन्दूर] १ इँगुर को पीसकर बनाया हुआ एक प्रकार का लाल रग का चूर्ण जिसे सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ अपनी माँग मे भरती है।

विशेष—सिंदूर स्त्रियो का सौभाग्य का चिह्न माना जाता है। गणेश और हनुमान की मूर्तियो पर भी यह घी मे मिलाकर

पोता और चढाया जाता है। आयुर्वेद मे यह भारी, गरम, टूटी हड्डी को जोडनेवाला, घाव को शोधने और भरनेवाला तथा कोढ, खुजली और विष को दूर करनेवाला माना गया है। यह घातक और अभक्ष्य है।

पर्या०—नागरेणु। वीरज। गणेशभूषण। सध्यारोग। शृगारक। सौभाग्य। अरुण। मगल्य।

२ बलूत की जाति का एक पहाडी पेड जो हिमालय के निचले भागो मे अधिक पाया जाता है।

सिंदूरकारण—सज्ञा पु० [स० सिन्दूरकारण] सीसा नामक धातु।

सिंदूरतिलक—सज्ञा पु० [स० सिन्दूरतिलक] १ सिंदूर का तिलक। २ हाथी।

सिंदूरतिलका—सज्ञा स्त्री० [स० सिन्दुर तिलका] सधवा स्त्री।

सिंदूरदान—सज्ञा पुं० [सं० सिन्दूरदान] विवाह के अवसर की एक प्रधान रीति। वर का कन्या की माँग मे सिंदूर डालना।

सिंदूरपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स० सिन्दूरपुष्पी] एक पौधा जिसमे लाल रग के फूल लगते है। वीरपुष्पी। सदा सुहागिन।

पर्या०—सिंदूरी। तृणपुष्पी। करच्छदा। शोणपुष्पी।

सिंदूरवदन—सज्ञा पु० [स० सिन्दूर + वन्धन ?] विवाह सस्कार मे एक प्रधान रीति जिसमे वर कन्या की माँग मे सिंदूर डालता है। उ०—सिंदूरवदन, होम लावा होन लागी भाँवरी। सिलपोहनी करि मोहनी मन हरचो मूरति साँवरी।—तुलसी ग्र०, पृ० ५९।

सिंदूररस—सज्ञा पुं० [स० सिन्दूररस] रस सिंदूर।

विशेष—यह पारे और गधक को आँच पर उडाकर बनाया जाता है और चद्रोदय या मकरध्वज के स्थान पर दिया जाता है।

सिंदूरवदन—सज्ञा पु० [स० सिन्दूरवन्दन] दे० 'सिंदूरदान'।

सिंदूरिका—सज्ञा स्त्री० [स० सिन्दूरिका] सिंदूर [को०]।

सिंदूरित—वि० [स० सिन्दूरित] सिंदूरयुक्त। लाल किया हुआ। सिंदूर पोता हुआ [को०]।

सिंदूरिया'—वि० [स० सिन्दूर + इया (प्रत्य०)] सिंदूर के रग का। खूब लाल। जैसे,—सिंदूरिया आम।

सिंदूरिया'—सज्ञा स्त्री० [स० सिन्दूर (पुष्पी)] सदा सुहागिन नाम का पौधा। सिंदूरपुष्पी।

सिंदूरी'—वि० [स० सिन्दूर + ई (प्रत्य०)] सिंदूर के रग का। उ०—भली सँभोखी सेल सिंदूरी छाए बादर।—अबिकादत्त (शब्द०)।

सिंदूरी'—सज्ञा स्त्री० [स० सिन्दूरी] १ धातकी। धव। २ रोचनी। हल्दी। लाल हल्दी। ३ सिंदूरपुष्पी। ४ कबीला। ५ लाल वस्त्र।

सिंदोरा—सज्ञा पु० [हिं० सिंदोरा] लकडी की एक डिबिया जिसमे स्त्रियाँ सिंदूर रखती हैं।

विशेष—यह सौभाग्य की सामग्री मानी जाती है।

सिंध'—सज्ञा पु० [स० सिन्धु] भारत के पश्चिम प्रात का एक प्रदेश जो बबई प्रात के अतर्गत था। अब यह पाकिस्तान का एक प्रात है।

सिंध'—सज्ञा स्त्री० १ पजाब की एक प्रधान नदी। २ भैरव राग की एक रागिनी।

सिंधव—सज्ञा पु० [स० सैन्धव] दे० 'सैंधव'। उ०—(क) सिंधव फटिक पषान का, ऊपर एकइ रग। पानी माहैं देखिए, न्यारा न्यारा अग।—दादूदयाल (शब्द०)। (ख) सिंधव रूप आराम मधि ते आज हेरायो श्याम। सूर (शब्द०)।

सिंधवी—सज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धु] एक रागिनी।

विशेष—यह रागिनी आभीरी और आशावरी के मेल से बनी मानी जाती है। इसका स्वरूप कान पर कमल का फूल रखे, लाल वस्त्र पहने, क्रुद्ध और हाथ मे त्रिशूल लिए कहा गया है। हनुमत के मत से इस रागिनी का स्वरग्राम यह है—सा रे ग म प ध नि सा अथवा सा ग म प ध नि सा।

सिंधसागर—सज्ञा पु० [स० सिन्धसागर] पजाब मे एक दोआब। झेलम और सिंधु नदी के बीच का प्रदेश।

सिंधारा†—सज्ञा पु० [देश०] श्रावण मास के दोनो पक्षो की तृतीया को लडकी की सुसराल मे भेजा हुआ पकवान आदि।

सिंधी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिंध + ई (प्रत्य०)] सिंध देश की बोली या भाषा।

विशेष—यह समस्त सिंध प्रात और उसके आसपास खास बेला, कच्छ और बहावलपुर आदि रियासतो के कुछ भागो मे बोली जाती है। इसमे फारसी और अरबी भाषा के बहुत अधिक शब्द मिल गए हैं। यह लिखी भी एक प्रकार की अरबी फारसी लिपि मे ही जाती है। इसमे 'सिरैकी', 'लारी' और 'थरेली' तीन मुख्य बोलियाँ हैं। पश्चिमी पजाब की भाषा के समान इसमे भी दो स्वरो के बीच मे कहीं कहीं 'त' पाया जाता है।

सिंधी'—वि० सिंध देश का। सिंध देश सबधी।

सिंधी'—सज्ञा पु० १ सिंध देश का निवासी। २ सिंध देश का घोडा जो बहुत तेज और मजबूत होता है। अत्यत प्राचीन काल से सिंध घोडे की नस्ल के लिये प्रसिद्ध है।

सिंधु'—सज्ञा पु० [स० सिन्धु] १ नद। नदी। २ एक प्रसिद्ध नद जो पजाब के पश्चिम भाग मे है। ३ समुद्र। सागर। ४ चार की सख्या। ५ सात की सख्या। ६ वरुण देवता। ७ सिंध प्रदेश। ८ सिंध प्रदेश का निवासी। ९ ओठो का गीलापन। ओष्ठ की आर्द्रता। १० हाथी के सूँड से निकला हुआ पानी। ११ हाथी का मद। गजमद। १२ श्वेत टकण। खूब साफ सोहागा। १३ सिंदुवार का पौधा। निर्गुंडी। १४ सपूर्ण जाति का एक राग।

विशेष—यह राग मालकोश का पुत्र माना जाता है। इसमे गाधार और निषाद दोनों स्वर कोमल लगते हैं। इसके गाने का समय दिन को १० दड से १६ दड तक है।

१५ गधर्वों के एक राजा का नाम। १६ वरुण का एक नाम (को०)। १७ विष्णु का एक नाम (को०)। १८ एक नागराज (को०)। १९ बाढ़। प्लावन (को०)।

सिंधु[2]—संज्ञा स्त्री० १ नदी। सरिता। २ दक्षिण की एक छोटी नदी जो यमुना मे मिलती है।

सिंधुक—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुक] निर्गुंडी। सँभालु वृक्ष।

सिंधुक[2]—वि० १ समुद्र से उत्पन्न। समुद्र का। समुद्र संबंधी। २ सिंध प्रदेश का (को०)।

सिंधुकन्या—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुकन्या] लक्ष्मी।

सिंधुकफ—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुकफ] समुद्रफेन।

सिंधुकर—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुकर] श्वेत टकण। सोहागा।

सिंधुकालक—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुकालक] नैऋत्य कोण के एक प्रदेश का प्राचीन नाम।

सिंधुखेल—संज्ञा पु० [सं० सिन्धु खेल] सिंध प्रदेश।

सिंधुज[1]—वि० [सं० सिन्धुज] १ समुद्र से उत्पन्न। २ सिंध देश मे होनेवाला। ३ नदी से उत्पन्न (को०)। ४ जलोत्पन्न। जल से या जल से उत्पन्न (को०)।

सिंधुज[2]—संज्ञा पु० १ सेंधा नमक। २ शंख। उ०—जाके क्रोध भूमि जल पटके कहा कहेगो सिंधुज पानी।—सूर (शब्द०)। ३ पारद। पारा। ४ सोहागा। ५ समुद्र का पुत्र, चद्रमा (को०)।

सिंधुजन्मा—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुजन्मन्] १ चद्रमा। २ सेंधा नमक।

सिंधुजन्मा—वि० दे० 'सिंधुज १'।

सिंधुजा—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुजा] १ समुद्र से उत्पन्न, लक्ष्मी। उ०—चौर ढारत सिंधुजा जय शब्द बोलत सिद्ध। नारदादिक विप्र मान अशेष भाव प्रसिद्ध।—केशव (शब्द०)। २ सीप जिससे मोती निकलता है।

सिंधुजात—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुजात] १ सिंधी घोडा। २ मोती।

सिंधुडा—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धु] एक रागिनी जो मालव राग की भार्या मानी जाती है।

सिंधुतीरसंभव—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुतीरसम्भव] सुहागा।

सिंधुदेश—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुदेश] सिंध नाम का देश।

सिंधुनंदन—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुनन्दन] (समुद्र का पुत्र) चद्रमा।

सिंधुनाथ—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुनाथ] नदियों का पति या स्वामी। समुद्र (को०)।

सिंधुपति—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुपति] दे० 'सिंधुराज'।

सिंधुपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुपर्णी] गंभारी वृक्ष।

सिंधुपिव—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुपिव] अगस्त्य ऋषि का एक नाम, जो समुद्र पी गए थे।

सिंधुपुत्र—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुपुत्र] १ चद्रमा। २ तिंदुक की जाति का एक पेड।

सिंधुपुलिंद—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुपुलिन्द] एक जनपद का नाम (को०)।

सिंधुपुष्प—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुपुष्प] १ शंख। २ कदंब। कदम। ३ मौलसिरी। बकुल।

सिंधुप्रसूत—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुप्रसूत] सेंधा नमक।

सिंधुमथ—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुमन्थ] १ पर्वत। २ समुद्रमथन।

सिंधुमथज—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुमन्थज] सेंधा नमक।

सिंधुमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुमातृ] नदियों की माता, सरस्वती।

सिंधुमुख—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुमुख] नदी का मुहाना। नदी का संगम स्थल (को०)।

सिंधुर—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुर] [स्त्री० सिंधुरा] १ हस्ती। हाथी। उ०—चली संग वनराज के, रमे एक वन माहि। सिंधुर यूथप बहुत तहँ, निकसे तेहि वन माहि।—सबलसिंह (शब्द०)। २ आठ की संख्या।

सिंधुरद्वेषी—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुरद्वेषिन्] हाथी का शत्रु, सिंह।

सिंधुरमणि, सिंधुरमनि—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुरमणि] गजमुक्ता। उ०—पीत वसन कटि कलित कठ सुदर सिंधुरमनि माल। तुलसी (शब्द०)।

सिंधुरवदन—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुरवदन] गजवदन। गणेश। उ०—गुरु सुरसइ सिंधुरवदन, मसि सुरसरि सुरगाइ। सुमिरि चलहु मग मुदित मन होइहि सुकृत महाइ।—तुलसी (शब्द०)।

सिंधुरागामिनि—वि० स्त्री० [सं० सिंधुरागामिनी] 'सिंधुरागामिनी'। हाथी की सी चालवाली। उ०—गावत चली सिंधुरागामिनि।—तुलसी (शब्द०)।

सिंधुरागामिनी—वि० स्त्री० [सं० सिन्धुरागामिनी] गजगामिनी।

सिंधुराज—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुराज] १ जयद्रथ का नाम। २ सेंधा नमक। ३ समुद्र (को०)।

सिंधुराव—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुराव] निर्गुंडी। सँभालू।

सिंधुल—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुल] राजा भोज के पिता का नाम।

सिंधुलताग्र—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुलताग्र] मूँगा। प्रवाल।

सिंधुलवण—संज्ञा पु० [सं०] सेंधा नमक।

सिंधुवार—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुवार] १ सिंदुवार। निर्गुंडी। २ फारस या सिंध से खरीदा घोडा। ३ सिंध देश का अश्व (को०)।

सिंधुवारित—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुवारित] दे० 'सिंधुवार (को०)।

सिंधुवासी—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुवासिन्] सिंध देश का निवासी।

सिंधुविष—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुविष] हलाहल विष जो समुद्र मथने पर निकलता था। उ०—ग्रासोविष, सिंधुविष पावक सो तो कछू हुतो प्रहलाद सो पिता को प्रेम छूट्यो है।—केशव (शब्द०)।

सिंधुवृष—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुवृष] विष्णु का एक नाम।

सिंधुवेषण—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुवेषण] गंभारी वृक्ष।

सिंधुशयन—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुशयन] विष्णु।

सिंधुसंगम—संज्ञा पु० [सं० सिन्धु सङ्गम] नदियों का संगम या समुद्र मिलन (को०)।

सिंधुसंभवा—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुसम्भवा] फिटकिरी।

सिंधुसर्ज—संज्ञा पु० [सं० सिन्धुसर्ज] शाल वृक्ष। साखू।

सिंधुसहा—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुसहा] निर्गुंडी। सिंदुवार।

**सिधुसागर** –सज्ञा पु० [स० सिन्धुसागर] सिंधु नद तथा सागर के बीच का देश [को०]।

**सिधुसुत**—सज्ञा पु० [स० सिन्धुसुत] जलधर नामक राक्षस जिसे शिवजी ने मारा था। उ०—सिधुसुत गर्व गिरि वज्र गौरीस भव दक्ष मख अखिल विध्वसकर्त्ता।—तुलसी (शब्द०)।

**सिधुसुता**—सज्ञा स्त्री० [स० सिन्धुसुता] १ लक्ष्मी। २ सीप।

**सिधुसुतासुत**—सज्ञा स्त्री० [स० सिन्धुसुतासुत] सिंधुसुता, सीप का पुत्र अर्थात् मोती। उ०—सिधुसुतासुत ता रिपु गमनी सुन मेरी तू बात।—सूर (शब्द०)।

**सिंधुसौवीर**—सज्ञा पुं० [स० सिन्धुसौवीर] सिंधुनद के आस पास बसनेवाली जाति [को०]।

**सिधूत्थ**—सज्ञा पु० [स० सिन्धूत्थ] १ चद्रमा। २ सेंधा नमक [को०]।

**सिधूद्भव**—सज्ञा पु० [स० सिन्धूद्भव] सेंधा नमक [को०]।

**सिधूपल**—सज्ञा पुं० [स० सिन्धूपल] सेंधा नमक [को०]।

**सिधूरा**—सज्ञा पुं० [स० सिन्धुर] सपूर्ण जाति का एक राग जो हिंडोल राग का पुत्र माना जाता है।

विशेष—यह वीर रस का राग है। इसमे ऋषभ और निषाद स्वर कोमल लगते है। इसके गाने का समय दिन मे ११ दड से १५ दड तक है।

**सिधूरी**—सज्ञा स्त्री० [स० सिन्धुर + हिं० ई] एक रागिनी जो हिंडोल राग की पुत्रवधू मानी जाती है।

**सिधोरा, सिँधोरा**—सज्ञा पु० [हिं० सिंदूर + ओरा (प्रत्य०)] सिंदूर रखने का लकडी का पात्र जो कई आकार का बनता है। उ०—गृहि ते निकरी सती होन को देखन को जग दौरा। अब तो जरे मरे बनि आई लीन्हा हाथ सिधोरा।—कबीर (शब्द०)।

**सिँधोरिया**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिंदूर + इया (प्रत्य०) १ सिंदूर रखने की छोटी डिबिया। दे० 'सिंदूरिया'।

**सिधोरी, सिँधोरी**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिंदूर] सिंदूर रखने की काठ की डिबिया। दे० 'सिधोरा'। उ०—काहू हाथ चदन के खोरी। कोइ सेंधूर कोइ गहे सिधोरी।—जायसी (शब्द०)।

**सिपा**†—सज्ञा स्त्री० [स० शम्पा] विद्युत्। बिजली। उ०—खुरतालु के भ्रमके मत सिपा के मिलाव।—रघु० रू०, पृ० २५०।

**सिपी**Ⓤ†—सज्ञा पु० [स० सीवित् (= सीनेवाला, दर्जी)] सीवक। छीपी। दर्जी। उ०—मन मेरी सुई तन मेरो धागा। खेचर जी के चरन पर नामा सिंपी लागा।—दक्खिनी०, पृ० १८।

**सिव**—सज्ञा पुं० [स० शिम्ब] दे० 'शिव'।

**सिवा**—सज्ञा स्त्री० [स० सिम्वा] १ शिवी धान। शमी धान्य। २ नखी नामक गध द्रव्य। हट्टविलासिनी। ३ सोठ। ४ फली। छीमी (को०)। ५ सेम (को०)।

**सिविजा**—सज्ञा स्त्री० [स० सिम्विजा] द्विदल जातीय अन्न [को०]।

**सिवी**—सज्ञा स्त्री० [सं० सिम्वी] १ छीमी। फली। २ सेम। निष्पावी। ३ वन मूँग।

**सिभ**Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० शम्भु] दे० 'सिभु'।

**सिभालू**—सज्ञा पु० [सं० सम्भालू] सिंदुवार। निर्गुंडी।

**सिभु**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० शम्भु] शिव। शकर। उ०—धरचो तन वस्त्र सुकोर कुआर। मँडी जनु सिभु मनम्मथ रार।—पृ० रा०, १४।६१।

**सिमृति**†—सज्ञा स्त्री० [स० स्मृति] स्मृति ग्रंथ। उ०—गुर मति वेद सिमृति अभ्यास।—प्राण०, पृ० २२८।

**सिंसप** सज्ञा पु० [सं० शिंशपा] दे० 'शिंशपा'।

**सिंसपा**—सज्ञा स्त्री० [स० शिंशपा] दे० 'शिंशपा'।

**सिसिपा**—सज्ञा स्त्री० [स० शिंशपा] दे० 'शिंशपा'। उ०—मरो सिसिपा सीकम की शोभा शुभ झलकी।—श्यामा०, प० ३६।

**सिसुपा**—सज्ञा स्त्री० [स० शिंशपा] १ एक वृक्ष। शिंशपा। सीसम। उ०—जहँ सिसुपा पुनीत तरु रघुवर किय विस्राम।—मानस, २।१९८। २ अशोक (को०)।

**सिंह**—सज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० सिंहनी] १ बिल्ली की जाति का सबसे बलवान् पराक्रमी और भव्य जगली जतु जिसके नर वर्ग की गरदन पर बडे बडे बाल या केसर होते है। शेर बबर।

विशेष—यह जतु अब ससार मे बहुत कम स्थानो मे रह गया है। भारतवर्ष के जगलो मे किसी समय सर्वत्र सिंह पाए जाते थे, पर अब कहीं नही रह गए है। केवल गुजरात या काठियावाड की ओर कभी कभी दिखाई पड जाते है। उत्तरी भारत मे अतिम सिंह सन् १८३९ मे दिखाई पडा था। आजकल सिंह केवल अफ्रिका के जगलो मे मिलते है। इस जतु का पिछला भाग पतला होता है, पर सामने का भाग अत्यत भव्य और विशाल होता है। इसकी आकृति से विलक्षण तेज टपकता है और इसकी गरज बादल की तरह गूँजती है, इसी से सिंह का गर्जन प्रसिद्ध है। देखने मे यह बाघ की अपेक्षा शात और गभीर दिखाई पडता है और जल्दी क्रोध नही करता। रग इसका ऊँट के रग का सा और सादा होता है। इसके शरीर पर चित्तियाँ आदि नही होती। मुँह व्याघ्र की अपेक्षा कुछ लबोतरा होता है, बिलकुल गोल नही होता। पूँछ का आकार भी कुछ भिन्न होता है। यह पतली होती है और उसके छोर पर बालो का गुच्छा सा होता है। सारे धड की अपेक्षा इसका सिर और चेहरा बहुत बडा होता है जो केसर या बालो के कारण और भी भव्य दिखाई पडता है। कवि लोग सदा से वीर या पराक्रमी पुरुष की उपमा सिंह से देते आए हैं। यह जगल का राजा माना जाता है।

**पर्य्या०**—मृगराज। मृगेंद्र। केसरी। पचानन। हरि। पचास्य।

२. ज्योतिष मे मेष आदि बारह राशियो मे से पाँचवी राशि।

विशेष—इस राशि के अतर्गत मघा, पूर्वा फाल्गुनी और उत्तरा फाल्गुनी के प्रथम पाद पडते है। इसका देवता सिंह और वर्ण पीतधूम्र माना गया है। फलित ज्योतिष मे यह राशि पित्त प्रकृति की, पूर्व दिशा की स्वामिनी, क्रूर और शब्दवाली कही गई है। इस राशि मे उत्पन्न होनेवाला मनुष्य क्रोधी, तेज चलनेवाला, बहुत बोलनेवाला, हँसमुख, चचल और मत्स्यप्रिय बतलाया गया है।

३ वीरता या श्रेष्ठतावाचक शब्द। जैसे,—पुरुष सिंह। ४ छप्पय छद का सोलहवाँ भेद जिसमे ५५ गुरु, ४२ लघु कुल ९७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ५ वास्तुविद्या मे प्रासाद का एक भेद जिसमे सिंह की प्रतिमा से भूषित बारह कोने होते

है। ६ रक्त शिग्रु। लाल सहिंजन। ७ एक राग का नाम। ८ वर्त्तमान अवसर्पिणी के २४ वे अर्हत् का चिह्न जो जैन लोग रथयात्रा आदि के समय झडो पर बनाते है। ९ एक आभूषण जो रथ के बैलो के माथे पर पहनाते है। १० एक कल्पित पक्षी। ११ वेकट गिरि का एक नाम। १२ कृष्ण के एक पुत्र का नाम (को०)। १३ विद्याधरो का एक राजा (को०)।

**सिहकर्ण**—सज्ञा पु० [स०] वास्तु की एक विशेष सज्जा। भवन के तोरण आदि पर बना वह ताखा या मुख जो सिह की आकृति का हो (को०)।

**सिहकर्णी**—सज्ञा स्त्री० [स०] बाण चलाने मे दाहिने हाथ की एक मुद्रा।

**सिंहकर्मा**—सज्ञा पु० [स० सिहकर्मन्] सिह के समान वीरता से काम करनेवाला। वीर पुरुष।

**सिहकेतु**—सज्ञा पु० [स०] एक बोधिसत्व का नाम।

**सिहकेलि**—सज्ञा पु० [स०] प्रसिद्ध बोधिसत्व मजुश्री का एक नाम।

**सिहकेशर, सिहकेसर**—सज्ञा पु० [स०] १ सिह की गरदन के बाल। २ मौलसिरी। बकुल वृक्ष। ३ एक प्रकार की मिठाई। सूतफेनी। काता।

**सिहग**—सज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम।

**सिहगर्जन**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सिहनाद'।

**सिहग्रीव**—वि० [स०] सिह के समान गर्दनवाला (को०)।

**सिहघोष**—सज्ञा पु० [स०] एक बुद्ध का नाम।

**सिंहचित्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] मपवन। मापपर्णी।

**सिहच्छदा**—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद दूब।

**सिहतल**—सज्ञा पु० [स०] अजलि। अँजुरी (को०)।

**सिहताल, सिहतालाख्य**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सिहतल' (को०)।

**सिहतुड**—सज्ञा पु० [स० सिहतुण्ड] १ सेहुँड। स्नुही। थूहर। २ एक प्रकार की मछली।

**सिहतुडक**—सज्ञा पु० [स० सिहतुण्डक] एक मत्स्य। सिहतुड (को०)।

**सिहदंष्ट्र**—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का बाण। २ शिव का एक नाम। ३ एक असुर (को०)।

**सिहदर्प**—वि० [स०] सिह के समान गर्ववाला (को०)।

**सिहद्वार**—सज्ञा पु० [स०] प्रासाद का मुख्य द्वार या सदर फाटक जहाँ सिह की मूर्ति बनी हो। उ०—सिहद्वार आरती उतारत यशुमति आनँदकद।—सूर (शब्द०)।

**सिहद्वीप**—सज्ञा पुं० [स०] एक द्वीप का नाम (को०)।

**सिहध्वज**—सज्ञा पु० [स०] एक बुद्ध का नाम।

**सिहध्वनि**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सिह की गर्जना। २ युद्धघोष। रणनाद (को०)।

**सिंहनदन**—सज्ञा पु० [स० सिहनन्दन] सगीत मे ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक।

**सिंहनर्दी**—वि० [स० सिहनर्दिन्] सिह के समान नाद करनेवाला (को०)।

**सिहनाद**—सज्ञा पु० [स०] १ सिह की गरज। २ युद्ध मे वीरो की ललकार। युद्धघोष। रणनाद। ३. सत्यता के निश्चय के कारण किसी बात का निशक कथन। जोर देकर कहना। ललकार के कहना। ४ एक प्रकार का पक्षी। ५ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे मगण, जगण, सगण, सगण और एक गुरु होता है। कनहस। नदिनी। उ०—सजि सी सिगार कलहस गती सी। चलि आइ राम छवि मडप दीसी। ६ सगीत मे एक ताल। ७ शिव का एक नाम। ८ बौद्ध-सिद्धातपरक ग्रथो का पाठ (को०)। ९ एक असुर (को०)। १० रावण के एक पुत्र का नाम।

**सिहनादक**—सज्ञा पु० [स०] १ सिघा नामक बाजा। २ सिह की गरज। सिहनाद (को०)। ३ युद्धघोष (को०)।

**सिहनाद गुग्गुल**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक यौगिक औषध जिसमे प्रधान योग गुग्गुल का रहता है।

**सिहनादिका**—सज्ञा स्त्री० [सं०] जवासा। धमासा। दुरालभा। हिगुआ।

**सिहनादी**[1]—वि० [स० सिहनादिन्] [स्त्री० सिहनादिनी] सिह के समान गरजनेवाला।

**सिहनादी**[2]—सज्ञा पुं० एक बोधिसत्व का नाम।

**सिहनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सिह की मादा। शेरनी। २ एक छद का नाम।

**विशेष**—इसके चारो पदो मे क्रम से १२, १८, २० और २२ मात्राएँ होती हैं। अत मे एक गुरु और २०, २० मात्राओ पर १ जगण होता है। इसके उलटे को गाहिनी कहते है।

**सिहपत्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] मापपर्णी।

**सिहपर्णी**—सज्ञा स्त्री० [स०] अडूसा। वासक।

**सिहपिप्पली**—सज्ञा स्त्री० [स०] सैहली।

**सिहपुच्छ**—सज्ञा पु० [स० पिठवन] पृश्निपर्णी।

**सिहपुच्छिका**—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सिहपुच्छी'।

**सिहपुच्छी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चित्रपर्णी। २ जगली उरद। मापपर्णी। ३ पृश्निपर्णी। पिठवन (को०)।

**सिहपुरुष**—सज्ञा पु० [स०] जैनियो के नौ वासुदेवो मे से एक वासुदेव।

**सिंहपुच्छी**—सज्ञा स्त्री० [स०] पिठवन। पृश्निपर्णी।

**सिहपौर**—सज्ञा पु० [स० सिह + हि० पौर] सिहद्वार। प्रासाद का सदर फाटक (जिसपर सिह की मूर्त्ति बनी हो)। उ०—भीर जानि सिहपौर त्रियन की यशुमति भवन दुराई।—सूर (शब्द०)।

**सिहप्रगर्जन**—वि० [स०] सिह की तरह गरजनेवाला (को०)।

**सिहप्रगर्जित**—सज्ञा पु० [स०] सिह की गरज। सिहनाद (को०)।

**सिंहप्रणाद**—सज्ञा पु० [स०] युद्धघोष। रणनाद। ललकार (को०)।

**सिहमल**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की धातु या पीतल। पचलोह।

**सिहमाया**—सज्ञा स्त्री० [स०] सिह की माया। सिह की आकृति का भ्रम या वहम।

**सिंहमुख**—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव के एक गण का नाम। २ वह जिसका मुख सिंह के समान हो (को०)।

**सिंहमुखी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बाँस। २ अडूसा। वासक। ३ वन उरद। जंगली उडद। ४ खारी मिट्टी। ५ कृष्ण निर्गुंडी। काला सँभालू।

**सिंहयाना, सिंहरथा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] (सिंह जिसका वाहन हो) दुर्गा।

**सिंहरव**—संज्ञा पु० [सं०] सिंहनाद। सिंह का गर्जन।

**सिंहल**—संज्ञा पु० [सं०] १ एक द्वीप जो भारतवर्ष के दक्षिण में है और जिसे लोग रामायणवाली लंका अनुमान करते है।

विशेष—जान पडता है कि प्राचीन काल मे इस द्वीप में सिंह बहुत पाए जाते थे, इसी से यह नाम पडा। रामेश्वर के ठीक दक्षिण पडने के कारण लोग सिंहल को ही प्राचीन लंका अनुमान करते है। पर सिंहलवासियो के बीच न तो यह नाम ही प्रसिद्ध है और न रावण की कथा ही। सिंहल के दो इतिहास पाली भाषा मे लिखे मिलते हैं—महावंसो और दीपवंसो, जिनसे वहाँ किसी समय यक्षो की बस्ती होने का पता लगता है। रावण के संबंध मे यह प्रसिद्ध है कि उसने लंका से अपने भाई यक्षो को निकालकर राक्षसो का राज्य स्थापित किया था। बंग देश के विजय नामक एक राजकुमार का सिंहल विजय करना भी इतिहासों मे मिलता है। ऐतिहासिक काल मे यह द्वीप स्वर्णभूमि या स्वर्णद्वीप के नाम से प्रसिद्ध था, जहाँ दूर देशो के व्यापारी मोती और मसाले आदि के लिये आते थे। प्राचीन अरब स्वर्ण द्वीप को 'सरनदीब' कहते थे। रत्नपरीक्षा के ग्रथो मे सिंहल द्वीप मोती, मानिक और नीलम के लिये प्रसिद्ध पाया जाता है। भारतवर्ष के कलिंग, ताम्रलिप्ति आदि प्राचीन बंदरगाहो से भारतवासियो के जहाज बराबर सिंहल, सुमात्रा, जावा आदि द्वीपो की ओर जाते थे। गुप्तवंशीय चंद्रगुप्त (सन् ४०० ईसवी) के समय फाहियान नामक जो चीनी यात्री भारतवर्ष मे आया था, वह हिंदुओ के ही जहाज पर सिंहल होता हुआ चीन को लौटा था। उस समय भी यह द्वीप स्वर्ण-द्वीप या सिंहल ही कहलाता था, लंका नही। इधर की कहानियो मे सिंहलद्वीप पद्मिनी स्त्रियो के लिये प्रसिद्ध है। यह प्रवाद विशेषत गोरखपथी साधुओ मे प्रसिद्ध है जो सिंहल को एक प्रसिद्ध पीठ मानते है। उनमे कथा चली आती है कि गोरखनाथ के गुरु मत्स्येंद्र नाथ (मछंदरनाथ) सिद्ध होने के लिये सिंहल गए, पर पद्मिनियो के जाल मे फँस गए। जब गोरख नाथ गए तब उनका उद्धार हुआ। वास्तव मे सिंहल के निवासी विलकुल काले और भद्दे होते है। वहाँ इस समय दो जातियाँ बसती हैं—उत्तर की ओर तो तामिल जाति के लोग और दक्षिण की ओर आदिम सिंहली निवास करते हैं।

२ सिंहल द्वीप का निवासी। ३ टीन। रंग। राँगा (को०)। ४ एक धातु पीतल (को०)। ५. छाल। वल्कल (को०)। ६ पीपर। पिप्पली (को०)।

**सिंहलक**[1]—वि० [सं०] सिंहल संबंधी।

**सिंहलक**[2]—संज्ञा पुं० १. पीतल। २ दारचीनी। ३ सिंहल द्वीप (को०)।

**सिंहलद्वीप**—संज्ञा पुं० [सं०] सिंहल नाम का टापू जो भारत के दक्षिण मे है। विशेष दे० 'सिंहल'।

**सिंहलद्वीपी**—वि० [सं० सिंहलद्वीपिन्] १ सिंहल द्वीप मे होनेवाला। २ सिंहलद्वीप का निवासी। उ०—कनक हाट सब कुहकुह लीपी। बैठ महाजन सिंघलद्वीपी।—जायसी (शब्द०)।

**सिंहलस्थ**—वि० [सं०] [स्त्री० सिंहलस्था] सिंहल निवासी।

**सिंहलस्था**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सैंहली। सिंहली पीपल।

**सिंहलांगुली**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंहलाङ्गुली] पिठवन। पृश्निपर्णी।

**सिंहला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सिंहल द्वीप। लंका। २ राँगा। ३ पीतल। ४ छाल। वल्कल। ५ दारचीनी।

**सिंहलास्थान**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का ताड जो दक्षिण मे होता है।

**सिंहली**[1]—वि० [हि० सिंहल + ई (प्रत्य०)] १ सिंहल द्वीप का। २ सिंहल द्वीप का निवासी।

विशेष—सिंहली काले और भद्दे होते है। वे अधिकांश हीनयान शाखा के बौद्ध हैं। पर बहुत से सिंहली मुसलमान भी हो गए हैं।

**सिंहली**[2]—संज्ञा स्त्री० १ सिंहली पीपल। २ सिंहल की बोली या भाषा (को०)।

**सिंहली पीपल**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंहपिप्पली] एक लता जिसके बीज दवा के काम मे आते हैं।

विशेष—यह सिंहल द्वीप के पहाडो पर उत्पन्न होती है। इसका रंग और रूप साँप के समान होता है और बीज नवे होते हैं। यह चरपरी गरम तथा कृमि रोग, कफ, श्वास और वात की पीडा को दूर करनेवाली कही गई है।

**सिंहलील**—संज्ञा पुं० [सं०] १ संगीत मे एक ताल। २ कामशास्त्र मे एक रतिबंध।

**सिंहवक्त्र**—संज्ञा पु० [सं०] सिंह का मुख। २ एक राक्षस का नाम। २ एक नगर (को०)।

**सिंहवत्स**—संज्ञा पुं० [सं०] एक नाग का नाम (को०)।

**सिंहवदना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अडूसा। २ मापपर्णी। वनउडदी। ३ खारी मिट्टी।

**सिंहवल्लभा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अडूसा।

**सिंहवाह**—वि० [सं०] जो सिंह पर सवार हो।

**सिंहवाहन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिंह पर चढने या सवारी करनेवाला। २ शिव का एक नाम (को०)।

**सिंहवाहना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा देवी।

**सिंहवाहिनी**[1]—वि० स्त्री० [सं०] सिंह पर चढनेवाली। उ०—सकल सिंगार करि सोहे आजु सिंहोदरी सिंहासन बैठी सिंहवाहिनी भवानी सी।—देव (शब्द०)।

सिंहवाहिनी[2]—सज्ञा स्त्री० दुर्गादेवी जिनका वाहन सिंह है। उ०—रूप रस एवी महादेवी देवदेवन की सिहासन बैठी सौ है सोहै सिंहवाहिनी।—देव (शब्द०)।

सिहवाही—वि० पुं० [स० सिंहवाहिन्] दे० 'सिहवाह'।

सिहविक्रम—सज्ञा पु० [स०] १ घोडा। २ सगीत मे एक ताल। ३ चद्रगुप्त नरेश का एक नाम (को०)। ४ एक विद्याधर राज (को०)।

सिहविक्रात[1]—सज्ञा पु० [स० सिंहविक्रान्त] १ सिंह की चाल। २ अश्व। घोडा। ३ दो नगण और सात या सात से अधिक यगणो के दडक का एक नाम।

सिहविक्रात[2]—वि० सिंह के समान पराक्रमवाला (को०)।

यौ०—सिहविक्रात गति = सिंह के समान गमन करनेवाला। सिंहविक्रातगामिता सिंहविक्रातगामी = दे० 'सिहविक्रातगति'।

सिहविक्रातगामिता—सज्ञा स्त्री० [स० सिंहविक्रान्तगामिता] बुद्ध के अस्सी अनुव्यजनो (छोटे लक्षणो) मे से एक।

सिंहविक्रोड़—सज्ञा पु० [स० सिंहविक्रीड] दडक का एक भेद जिसमे ९ से अधिक यगण होते हैं।

सिहविक्रोडित—सज्ञा पु० [स० सिंहविक्रीडित] १ सगीत मे एक ताल। २ एक प्रकार की समाधि। ३ एक बोधिसत्व का नाम। ४ एक छद का नाम।

सिहविजृभित—सज्ञा पु० [स० सिंहविजृम्भित] एक प्रकार की समाधि (बौद्ध)।

सिहविन्ना—सज्ञा स्त्री० [स०] मापपर्णी।

सिंहविष्कभित—सज्ञा पुं० [स० सिंहविष्कम्भित] एक प्रकार की समाधि (को०)।

सिहविष्टर—सज्ञा पु० [स०] सिंहासन (को०)।

सिहवृता—सज्ञा स्त्री० [स० सिंहवृन्ता] बन उडदी। मापपर्णी।

सिहशाव, सिंहशावक, सिहशिशु—सज्ञा पु० [स०] सिंह का शिशु या छौना (को०)।

सिहसहनन[1]—वि० [स०] १ सिंह के समान शक्ति या बलयुक्त। २ सुदर। सुरूप। रूपवान (को०)।

सिंह सनहन[2]—सज्ञा पु० सिंह का हनन (को०)।

सिंहसावक—सज्ञा पु० [स०] सिंह का बच्चा। उ०—सिंहसावक ज्यौं तजै गृह, इद्र आदि डेरात।—सूर०, १।१०६।

सिहस्कध—वि० [स० सिंहस्कन्ध] सिंह के समान कधोवाला (को०)।

सिहस्थ—वि० [स०] १ सिंह राशि मे स्थित (वृहस्पति)। २ एक पर्व जो बृहस्पति के सिंह राशि मे होने पर होता है।

विशेष—सिंहस्थ वृहस्पति मे विवाह आदि शुभ कार्य वर्जित है।

सिहस्था—सज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा।

सिंहहनु[1]—सज्ञा पु० [स०] सिंह के समान दाढ या दाढ की हड्डी जो कि बुद्ध के बत्तीस प्रधान लक्षणो मे से एक है।

सिंहहनु[2]—वि० जिसकी दाढ सिंह के समान हो।

सिहहनु[3]—सज्ञा पुं० गौतम बुद्ध के पितामह का नाम।

सिहा[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नाडी शाक। करेमू। २ भटकटैया। कटाई। कटकारी। ३. वृहती। बनभटा। ४ नाडी (को०)।

सिहा[2]—सज्ञा पु० १. नाग देवता। २ सिंह लग्न। ३ वह समय जब तक सूर्य इस लग्न मे रहता है।

सिहाचल—सज्ञा पुं० [स०] एक पर्वत (को०)।

सिहाटक—सज्ञा पु० [स० शृङ्गाटक] चतुष्पथ। चौराहा। उ०—और बनारस के बाहर सिंहाटक (चौराहे) पर मृगमास बिकने का उल्लेख है।—हिंदु० सभ्यता, पृ०, २९९।

सिहाढ्य—वि० [स०] सिंहो से सकुल या भरा हुआ (को०)।

सिहाण—सज्ञा पु० [स०] १. नाक का मल। नकटी। रेंट। २. लोहे का मुरचा। जग।

सिहाणक—सज्ञा पु० [स०] १. नाक का मल। नकटी। रेंट। २ लोहे का मुरचा। जग (को०)।

सिहान—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सिहाण'।

सिंहानक—सज्ञा पु० [स० सिंहाणक] दे० 'सिहाणक'।

सिंहानन—सज्ञा पु० [स०] १ कृष्ण निर्गुडी। काला सँभालू। २. वासक। अडूसा।

सिंहारहार—सज्ञा पु० [स० हार+शृङ्गार] दे० हरसिंगार (को०)।

सिंहाली—सज्ञा स्त्री० [स०] सिंहली पीपल।

सिहावलोक—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का वृत्त। दे० 'सिंहावलोकन'—३।

सिहावलोकन—सज्ञा पुं० [सं०] १ सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढना। २ आगे बढने के पहले पिछली बातो का सक्षेप मे कथन। ३ पद्यरचना की एक युक्ति जिसमे पिछले चरण के अत के कुछ शब्द या वाक्य लेकर अगला चरण चलता है। उ०—गाय गोरी सोहनी सुराग बाँसुरी के बीच कानन सुहाय मार मत्र को सुनायगो। नायगो री नेह डोरी मेरे गर मे फँसाय हिरदै थल बीच चाय बेलि को बँधायगो।—दीनदयाल (शब्द०)।

सिहावलोकित—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'सिंहावलोकन'।

सिहासन—सज्ञा पुं० [सं०] १ राजा या देवता के बैठने का आसन या चौकी।

विशेष—यह प्राय काठ, सोने, चाँदी, पीतल आदि का बना होता है। इसके हत्थो पर सिंह का आकार बना होता है।

२ कमल के पत्ते के आकार का बना हुआ देवताओ का आसन। ३. सोलह रतिवधो के अतर्गत चौदहवाँ वध। ४ मडूर। लौहकिट्ट। ५ दोनो भौंहो के बीच मे बैठकी के आकार का चदन या रोली का तिलक।

सिहासनचक्र—सज्ञा पुं० [स०] फलित ज्योतिष मे मनुष्य के आकार का सत्ताइस कोठो का एक चक्र जिसमे नक्षत्रो के नाम भरे रहते हैं।

**सिंहासनत्रय**—सज्ञा पु० [सं०] ज्योतिष का एक चक्र (को०)।

**सिंहासनच्युत, सिंहासनभ्रष्ट**—वि० [सं०] सिंहासन से हटाया हुआ। राज्यच्युत (को०)।

**सिंहासनयुद्ध, सिंहासनरण**—सज्ञा पुं० [सं०] राज्यसिंहासन की प्राप्ति के लिये होनेवाला सग्राम।

**सिंहासनस्थ**—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सिंहासनस्था] सिंहासन पर स्थित। सिंहासन पर आसीन (को०)।

**सिंहास्त्र**—सज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन अस्त्र (को०)।

**सिंहास्य**—सज्ञा पुं० [सं०] १ वासक। अडूसा। २ कोविदार। कचनार। ३ एक प्रकार की बडी मछली। ४ हाथो की एक विशिष्ट मुद्रा (को०)।

**सिंहास्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] अडूसा (को०)।

**सिंहिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक राक्षसी जो राहु की माता थी। उ०—जलधि लघन सिंह सिंहिका मद मथन, रजनिचर नगर उत्पात केनू।—तुलसी (शब्द०)। (ख) ललित श्रीगोपाल लोचन स्याम शोभा दून। मनु मयकहि अक दीन्ही सिंहिका के सून।—सूर (शब्द०)।

विशेष—यह राक्षसी दक्षिण समुद्र मे रहकर उडते हुए जीवो की परछाईं देखकर ही उनको खीचकर खाती थी। इसको लका जाते समय हनुमान ने मारा था।

यौ०—सिंहिकाचित्तनन्दन, सिंहिकातनय, सिंहिकापुत्र, सिंहिकासुत = सिंहिका का पुत्र, राहु।

२ शोभन छद का एक नाम। इसके प्रत्येक पद मे १४, १० के विराम से २४ मात्राएँ और अत मे जगण होता है। ३ दाक्षायणी देवी का एक रूप। ४ टेढे घुटनो की कन्या जो विवाह के अयोग्य कही गई है। ५ अडूसा। ६ वनभटा। ७ कटकारी।

**सिंहिकासूनु**—सज्ञा पु० [सं०] सिंहिका का पुत्र, राहु।

**सिंहिकेय**—सज्ञा पुं० [सं०] (सिंहिका का पुत्र) राहु।

**सिंहिनी**—सज्ञा स्त्री० [स० सिंहनी] मादा सिंह। शेरनी। उ०—श्वान सग सिंहिनी रति अजगुत वेद विरुद्ध असुर करै आइ। सूरदास प्रभु वेगि न आवहु प्राण गए कहा लैहौ आइ।—सूर (शब्द०)। २ बौद्धो के अनुसार एक देवी (को०)।

**सिंही**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सिंह की मादा। शेरनी। उ०—सिंही की गोद से छीनता है शिशु कौन?—अपरा, पृ० १०। २ अडसा। ३. स्नुही। थूहर। ४ मुद्गपर्णी। ५ चद्रशेखर के मत से आर्या का पचीसवाँ भेद। इसमे ३ गुरु और ५१ लघु होते है। ६ वृहती लता। ७ सिघा नाम का बाजा। ८ पीली कौडी। ९ धमनी। नस। नाडी (को०)। १० नाडी-शाक। करेमू। ११ राहु की माता सिंहिका।

**सिंहीलता**—सज्ञा स्त्री० [सं०] बैगन। भटा।

**सिंहेश्वरी**—सज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

**सिंहोड़**—सज्ञा पु० [सं० सेहुण्ड] दे० 'सेहुड' या 'थूहर'।

**सिंहोदरी**—वि० स्त्री० [सं०] सिंह के समान पतली कमरवाली। उ०—सकल सिंगार करि सोहै आजु सिंहोदरी सिंहासन बैठी सिंहवाहिनी भवानी सी।—देव० (शब्द०)।

**सिंहोद्धता**—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सिंहोन्नता' (को०)।

**सिंहोन्नता**—सज्ञा स्त्री० [स०] वसततिलका वृत्त का दूसरा नाम। उ०—इसकी अन्य सज्ञाएँ उद्धर्षिणी, सिंहोन्नता, वसततिलक प्रभृति हैं। छद०, पृ० १९५।

**सिअनि**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० सीवन, प्रा० सीवण, हिं० सीवन, सीअन] सिलाई। उ०—तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे। सिअनि सोहावनि टाट पटोरे।—मानस, १।१४।

**सिअर**Ⓤ†—वि० [स० शीतल] दे० 'सिअरा'। उ०—मेलेसि चदन मकु घिनु जागा। अधिकौ सूत सिअर तन लागा।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० २५२।

**सिअरा**Ⓤ[1]—वि० [स० शीतल, प्रा० सीअड] ठढा। शीतल। उ०—सिअरे वदन सूखि गए कैसे। परसत तुहिन ताम रस जैसे।—तुलसी (शब्द०)।

**सिअरा**—सज्ञा पुं० [सं० छाया, फा० सायह्] छाहँ। उ०—सिरसि टेपारो लाल नीरज नयन विसाल सुदर वदन ठाटे सुर तरु सिअरे।—तुलसी (शब्द०)।

**सिअरा**†[2]—सज्ञा पुं० [स० शृगाल, प्रा० सिआड] दे० 'सियार'।

**सिआना**—क्रि० स० [सं० सीव] दे० 'सिलाना'।

**सिआमग**—सज्ञा पु० [सं० श्यामाङ्ग (=काले शरीरवाला)] सुमात्रा द्वीप मे पाया जानेवाला एक प्रकार का बदर।

**सिआर**—सज्ञा पुं० [स० शृगाल, प्रा० सिआल] [स्त्री० सिआरी] शृगाल। गीदड। उ०—भयो चलत असगुन अति भारी। रवि के आछत फेकर सिआरी।—सबल सिंह (शब्द०)।

**सिउरना**‡—क्रि० स० [देश०] छाजन के लिये मुट्ठो को काडियो पर बिछाकर रस्सी से बाँधना।

**सिकजवीन**—सज्ञा स्त्री० [फा० सिकजुबीन] सिरके या नीबू के रस मे पका हुआ शरबत।

विशेष—यह शर्बत ठढा होता है और दवा के काम आता है। गर्मी के दिनो मे ठढक के लिये लोग इसे पीते है। यह सफरा और बलगम के लिये हितकर कहा गया है।

**सिकजा**—सज्ञा पुं० [फा० शिकजह्] दे० 'शिकजा'।

**सिकदर**—सज्ञा पु० [फा०] यूनान का एक प्रसिद्ध और प्रतापी नरेश जो मकदूनियाँ के राजा फिलिप्स (फैलकूस या फैलक्स) का पुत्र और अरस्तू का शागिद था। मिस्र, ईरान, अफगानिस्तान जय करता हुआ यह हिंदुस्तान तक आया था और इसने तक्षशिला और सिंध का कुछ अश भी जीत लिया था।

**सिकदरा**—सज्ञा पु० [फा० सिकदरा] रेल की लाइन के किनारे ऊँचे खभे पर लगा हुआ हाथ या डडा जो आती हुई गाडी की सूचना देता है। सिगनल।

विशेष—कथा प्रसिद्ध है कि सिकदर बादशाह जब सारी दुनिया जीतकर समुद्र पर भ्रमण करने गया, तब बडवानल के पास

पहुँचा। वही उसने जहाजियो को सावधान करने के लिये खभे के ऊपर एक हिलता हुआ हाथ लगवा दिया जो उधर जानेवाले यात्रियो को बराबर मना करता रहता है और 'सिकदरी भुजा' कहलाता है। इसी कहानी के अनुसार लोग सिगनल को भी 'सिकदरा' कहने लगे।

सिकदरी[1]—वि० [फा०] सिकदर का। सिकदर सबधी।

सिकदरी[2]—सज्ञा स्त्री० घोडे की ठोकर [को०]।

सिकटा†—सज्ञा पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० सिकटी] खपडे या मिट्टी के टूटे बरतनो का छोटा टुकडा।

सिकटी†—सज्ञा स्त्री० [देश०] छोटी ककडी या टुकडी।

सिकडी—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खला] १ किवाड की कुडी। साँकल। जजीर। २ जजीर के आकार का सोने का गले मे पहनने का गहना। ३ करधनी। तागडी। ४ चारपाई मे लगी हुई वह दाँवनी जो एक दूसरी मे गूँथ कर लगाई जाती है।

सिकड़ी पनवाँ†— सज्ञा पु० [हिं० सिकडी + पान] गले मे पहनने की वह सिकडी जिसके बीच मे पान सी चौकी होती है।

सिकत पु—सज्ञा स्त्री० [स० सिकता] सिकता। रेत।

सिकता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बालू। रेत। उ०—बारि मथे घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल। बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धात अपेल। तुलसी (शब्द०)। २ बलुई जमीन। ३ प्रमेह का एक भेद। अश्मरी। पथरी। ४ चीनी। शर्करा। ५ लोणिका या लोनी नामक शाक।

यौ०—सिकताप्राय = रेतीला तट। सिकतामय = (१) रेतीला तट। (२) रेतीला टापू। (३) रेतीला। सिकतामेह। सिकतावर्त्म। सिकता सेतु = बालू का बना बाँध।

सिकतामेह—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का प्रमेह जिसमे पेशाब के साथ बालू के से कण निकलते है।

सिकतावर्त्म—सज्ञा पु० [स० सिकतावर्त्मन्] आँख की पलको का एक रोग।

सिकतावान्—वि० [स० सिकतावत्] रेतीला। सिकतामय [को०]।

सिकतिल—सज्ञा स्त्री० [स०] रेतीला।

सिकतोत्तर—वि० [स०] रेतीभरा। बालुकामय। सिकतिल [को०]।

सिकत्तर†—सज्ञा पु० [अ० सेक्रेटरी] किसी सस्था या सभा का मत्री। सेक्रेटरी।

सिकर[1] पु—सज्ञा पु० [स० शृगाल] गीदड। सियार।

सिकर[2] पु—सज्ञा स्त्री० [हिं० सीकड] जजीर। सिकडी।

सिकरवार—सज्ञा पु० [देश०] क्षत्रियो की एक शाखा। उ०—वीर बडगूजर जसाउत सिकरवार, होत असवार जे करत निरवार हैं।—सूदन (शब्द०)।

सिकरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिकडी] दे० 'सिकडी'।

सिकली—सज्ञा स्त्री० [अ० सैकल] धारदार हथियारो को माँजने और उनपर सान चढाने की क्रिया। उ०—सकल कबीरा बोलै बीरा अजहूँ हो हुसियारा। कह कबीर गुर सिकली दरपन हरदम करौ पुकारा।—कबीर (शब्द०)।

सिकलीगढ—सज्ञा पु० [हिं० सिकली + फा० गर] दे० 'शिकलीगर'। उ०—बढई सगतराम बिसाती। सिकलीगढ कहार की पाती। —गिरधरदास (शब्द०)।

सिकलीगर—सज्ञा पु० [अ० सैकल + फा० गर] तलवार और हरी आदि पर बाढ रखनेवाला। सान धरनेवाला। चमक देनेवाला। उ०—यो छवि पावत है लखौ अजन आँजे नैन। सरस बाढ सैफन धरी जनु सिकलीगर मैन।—रसनिधि (शब्द०)।

सिकसोनी सज्ञा स्त्री० [देश०] काक जघा।

सिकहर, सिकहरा—सज्ञा पुं० [स० शिक्य + धर] छीका। झीका। सीका।

सिकहुती, सिकहुली—सज्ञा स्त्री० [हिं० सीक + औती या औली (प्रत्य०)] मूँज, कास आदि की बनी छोटी डलिया।

सिकाकोल—सज्ञा स्त्री० [देश०] दक्षिण की एक नदी।

सिकार‡—सज्ञा पु० [फा० शिकार] दे० 'शिकार'। उ०—(क) कपहिं सिकार गज तुड डर सब विघन गनपति हरय। —पृ० रा०, ६।९८। (ख) खिल्लत सिकार पिथ कुँअर डर पशु पीपर दल थरहरै।—पृ० रा०, ६।१००।

सिकारी—वि०, सज्ञा पु० [फा० शिकारी] दे० 'शिकारी'। उ०—मारत खोज सिकार सिकारी जे अति चातुर।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २६।

सिकिलि पु—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिकली] दे० 'सिकली'। उ०—गुरु के भेद को पाइ कै सिकिलि करु।—पलटू०, पृ० १६।

सिकुडन—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्कुचन, अथवा प्रा० सकुड, सकुडिअ] १ दूर तक फैली हुई वस्तु का सिमटकर थोडे स्थान मे होना। सकोच। आकुचन। २ वस्तु के सिमटने से पडा हुआ चिह्न। बल। शिकन सिलवट।

सिकुडना—क्रि० अ० [स० सङ्कुचन] १ दूर तक फैली वस्तु का सिमटकर थोडे स्थान मे होना। सुकडना। आकुचित होना। बटुरना। २ सकीर्ण होना। तग होना। ३ बल पडना। शिकन पडना।

सयो० क्रि०—जाना।

सिकुरना पु†—क्रि० अ० [हिं० सिकुडना] दे० 'सिकुडना'।

सिकोड—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिकुडना] दे० 'सिकुडना'। उ०—वृद्ध अनुभव की सिकोड। वृथा मुझे सात्वना मत दो।—ग्रथि, पृ० ८४।

सिकोडना—क्रि० स० [हिं० सिकुडना] १ दूर तक फैली हुई वस्तु को समेट कर थोडे स्थान मे करना। सकुचित करना। २ समेटना। बटोरना। ३ सकीर्ण करना। तग करना।

सयो० क्रि०—देना।

सिकोरना पु†—क्रि० स० [हिं० सिकोडना] दे० 'सिकोडना'। उ०—सुनि अघ नरकहु नाक सिकोरी।—तुलसी (शब्द०)।

सिकोरा सज्ञा पु० [हिं० कसोरा] दे० 'सकोरा या 'कसोरा'।

सिकोली—सज्ञा स्त्री० [देश०] बाँस के फट्टो, काम, मूँज, बेत आदि की बनी डलिया। उ०—प्रसादी जल की मथनी मे झारी ढलाय,

सिकोली मे बीडा ठलाय, कसेंडी मे चरणामृत ठलाय, पाछे पात्र सब धोय साजि के ठिकाने धरिए।—वल्लभ पु० (शब्द०)।

सिकोही—वि० [फा० शिकोह (तडक भडक)] १ आनबानवाला। गर्वीला। दर्पवाला। २ वीर। बहादुर। उ०—तरवार सिरोही सोहती। लाख सिकोही कोहती।—गोपाल (शब्द०)।

सिक्कक—सज्ञा पु० [सं०] बाँसुरी मे लगाने की जीभी या उसके स्वर को मधुर बनाने के लिये लगाया हुआ तार।

सिक्कड—सज्ञा पु० [स० शृडखल] दे० 'सीकड'।

सिक्कर—सज्ञा पु० [हिं० सीकड] दे० 'सीकड'। उ०—अकरि अकरि करि डकरि डकरि वर पकरि पकरि कर सिक्कर फिरावते।—गोपाल (शब्द०)।

सिक्का—सज्ञा पुं० [अ० सिक्कह्] १ मुहर। मुद्रा। छाप। ठप्पा। २ रुपए, पैसे आदि पर की राजकीय छाप। मुद्रित चिह्न। ३ राज्य के चिह्न आदि से अकित धातु खड जिसका व्यवहार देश के लेन देन मे हो। टकसाल मे ढला हुआ धातु का टुकडा जो निर्दिष्ट मूल्य का धन माना जाता है। रुपया, पैसा, अशरफी आदि। मुद्रा।

मुहा०—सिक्का बैठना या जमना = (१) अधिकार स्थापित होना। प्रभुत्व होना। (२) आतक जमना। प्रधानता प्राप्त होना। रोब जमना। धाक जमना। सिक्का बैठाना या जमाना = (१) अधिकार स्थापित करना। प्रभुत्व जमाना। (२) आतक जमाना। प्रधानता प्राप्त करना। रोब जमाना। सिक्का पडना = सिक्का ढलना।

४ पदक। तमगा। ५ माल का वह दाम जिसमे दलाली न शामिल हो। (दलाल)। ६ मुहर पर अक बनाने का ठप्पा। ७ नाव के मुँह पर लगी एक हाथ लबी लकडी। ८ लोहे की गावदुम पतली नली जिससे जलती हुई मशाल पर तेल टपकाते है। ९ वह धन जो लडकी का पिता लडके के पिता के पास सगाई पक्की होने के लिये भेजता है।

सिक्की—सज्ञा स्त्री० [अ० सिक्कह्] १ छोटा सिक्का। २ चार आने (२५ पैसे) का सिक्का। चवन्नी। सूकी। ३ आठ आने (पचास पैसे) का सिक्का। अठन्नी।

सिक्ख[1]—सज्ञा पु० [स० शिष्य] दे० 'सिख[1]'।

सिक्ख[2]—सज्ञा स्त्री० [स० शिक्षा, प्रा० सिक्खा, हिं० सीख] दे० 'सिख[2]'। उ०—दिन्नी जु सिक्ख तव सेख कौ, अप्प अप्प सिवरन गवय।—ह० रासो, पृ० ४३।

सिक्त—वि० [सं०] १ सिंचित। सीचा हुआ। २ भीगा हुआ। तर। गीला। ३ जिसे गर्भयुक्त किया गया हो। गर्भित (को०)।

सिक्तता—सज्ञा स्त्री० [स०] सिंचित होने या सीचे जाने की क्रिया या भाव (को०)।

सिक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सीचने की क्रिया। २. उद्गारण। स्राव। निषेक। निषेचन (को०)।

सिक्थ—सज्ञा पुं० [सं०] १ उबाले हुए चावल का दाना। भात का एक दाना। सीथ। २ भात का ग्रास या पिड। ३ मोम। ४ मोतियो का गुच्छा (जो तौल मे एक धरण हो)। ३२ रत्ती तौल का मोतियो का समूह। ५ नील।

सिक्थक—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'सिक्थ'।

सिक्थय—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शिक्थ' (को०)।

सिक्थ्य—सज्ञा पु० [सं०] स्फटिक। काँच। बिल्लौर (को०)।

सिखड—सज्ञा पु० [सं० शिखण्ड] मोर की पूँछ। मयूरपक्ष। उ०—सिरनि सिखड सुमन दल मडन बाल सुभाय बनाए।—तुलसी (शब्द०)।

सिखडी—सज्ञा पुं० [सं० शिखण्डी] दे० 'शिखडी'।

सिख[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शिक्षा, प्रा० सिक्खा, हिं० सीख] सीख। शिक्षा। उपदेश। उ०—(क) गुरु सिख देइ राय पहिं गएऊ।—मानस, २।१०। (ख) राजा जु सो कहा कहौ ऐसिन की सुनै सिख, माँपिनि सहित विप रहित फननि की।—केशव (शब्द०)। (ग) किती न गोकुल कुल वधू, काहि न किहि सिख दीन। कौने तजी न कुल गली ह्वै मुरली सुर लीन।—बिहारी (शब्द०)।

सिख(यौ)[2]—सज्ञा स्त्री० [स० शिखा] चोटी। जैसे,—नखसिख।

सिख[3]—सज्ञा पु० [स० शिष्य, प्रा० सिक्ख] १ शिष्य। चेला। २ गुरु नानक तथा गुरु गोविंदसिंह आदि दस गुरुओ का अनुयायी सप्रदाय। नानकपथी। ३ वह जो सिख सप्रदाय का अनुयायी हो।

विशेष—इस सप्रदाय के लोग अधिकतर पजाब मे हैं।

यौ०—सिखपाल = शिष्य का पालन। उ०—गुरु है दीनदयाल करै सिखपाल सदाई। अखै भक्ति परसग सदा सेवक सुखदाई।—राम० धर्म०, पृ० १७५।

सिख इमली—सज्ञा पुं० [हिं० सिख + अ० इल्म या इमला] भालू को नचाना सिखाने की रीति।

विशेष—कलदर लोग पहले हाथ मे एक लोहे की चूडी पहनते हैं और उसे एक लकडी से बजाते है। इसी के इशारे पर वे भालू को नचाना सिखाते है।

सिखना†—क्रि० स० [स० शिक्षण] दे० 'सीखना'।

सिखर[1]—सज्ञा पु० [स० शिखर] १ शृग। दे० 'शिखर'। उ०—अरुन अधर दसननि दुति निरखत, विद्रुम सिखर लजाने। सूर स्याम आछौ वपु काछे, पटतर मेटि बिराने।—सूर०, १०।१७५६। २ मुकुट का किरीट।

सिखर[2]—सज्ञा पुं० [स० शिक्य + धर] दे० 'सिकहर'।

सिखरन—सज्ञा स्त्री० [स० श्रीखण्ड] दही मिला हुआ चीनी का शरबत जिसमे केसर, गरी आदि मसाले पडे हो। उ०—(क) वासौधी सिखरन अति सोभी। मिलै मिरच मेटत चकचौधी।—सूर (शब्द०)। (ख) सिखरन सौध छनाई काढी। जामा दही दूधि सो साढी।—जायसी (शब्द०)।

सिखरबद—वि० [स० शिखर + फा० बद (प्रत्य०)] शिखरयुक्त। कलशयुक्त। उ०—तब थोरी सी दूरि एक सिखरबध एक देहरा दीस्यो।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ०, १७८।

सिखरी(पु)—सज्ञा पु० [स० शिखरिन्] १ पहाड। —अनेकार्थ०, पृ० ५३। २, मयूर। मोर।

सिखवाना—क्रि० स० [हिं० सिखाना] दे० 'सिखाना'।

सिखवन—सज्ञा पु० [स० शिक्षण, प्रा० सिक्खवण, सिक्खावण] शिक्षा। सीख। उ०—जो सिखवन समरथ का लेहो। ता काल हमार आगे करि देहो।—कबीर सा०, पृ० ६२८।

सिखवना(पु)†—क्रि० स० [प्रा० सिक्खवण] दे० 'सिखाना'।

सिखा—सज्ञा स्त्री० [स० शिखा] दे० 'शिखा'।

सिखाना—क्रि० स० [स० शिक्षण] १ शिक्षा देना। उपदेश देना। बतलाना। २ अध्ययन करना। पढाना। ३ धमकाना। दड देना। ताडन करना।

यौ०—सिखाना पढाना = चालें बताना। चालाकी सिखाना। जैसे,—उसने गवाहो को सिखा पढा कर खूब पक्का कर दिया है।

सिखापन(पु)—सज्ञा पुं० [सं० शिक्षा + हिं० पन या स० शिक्षापयन] १ शिक्षा। उपदेश। उ०—(क) साजि कै सिँगार ससिमुखी काज सजनी वै ल्याई केलि मदिर सिखापन निधानै सी। —प्रतापनारायण (शब्द०)। (ख) सचिव सिखापन मधुर सुनायौ। जुहित सदहुँ परनाम सुहायौ।—पद्माकर (शब्द०)। २ सिखाने का काम।

सिखावन—सज्ञा पु० [सं० शिक्षण या स० शिक्षापयन] सीख। शिक्षा। उपदेश। उ०—(क) का मैं मरन सिखावन सिखी। आयो मरैं मीच हति लिखी।—जायसी (शब्द०)। (ख) उनको मै यह दीन्ह सिखावन। थाहहु मध्यम काड सुहावन।—विश्राम (शब्द०)।

सिखावना(पु)†—क्रि० स० [स० शिक्षापयन] दे० 'सिखाना'।

सिखिर(पु)†—सज्ञा पुं० [स० शिखर] १ दे० 'शिखर'। २ पारसनाथ पहाड जो जैनो का तीर्थ है।

सिखी—सज्ञा पु० [स० शिखिन्] दे० 'शिखी'। उ०—(क) धुनि सुनि उतै लिखी नाचै, सिखी नाचै इते, पी करै पपीहा उतै इते प्यारी सी करै।—प्रतापनारायण (शब्द०)। (ख) सिखी सिखर तनु धातु विराजति सुमन सुगध प्रवाल।—सूर (शब्द०)।

सिगता†—सज्ञा स्त्री० [स०] सिकता। बालू। रेत।

सिगनल—सज्ञा पु० [अ०] १ दे० 'सिकदरा'। २ इशारा। सकेत।

सिगर—सज्ञा पु० [अ० सिगर] बाल्यावस्था। बचपन।

यौ०—सिगरसिन = छोटी उम्र का। सिगरसिनी = शिशुता। बचपन। छोटाई।

सिगरा(पु)†१—वि० [स० समग्र] [वि० स्त्री० सिगरी] सब। सपूर्ण। सारा। उ०—(क) त्यो पदमाकर साँझही ते सिगरी निशि केलि कला परगासी।—पद्माकर (शब्द०)। (ख) सिगरे जग माँझ हँसावत हैं। रघुवसिन्ह पाप नसावत है।—केशव (शब्द०)।

सिगरा(पु)†२—सज्ञा पुं० [स० सगुरु] सगुरा। दीक्षित। उ०—अरे हाँ रे पलटू निगरा सिगरा आहि कहो कोइ रोगी भोगी।—पलटू०, पृ० ७६।

सिगरेट—सज्ञा पु० [अ०] तवाकू भरी हुई कागज की बत्ती जिसका धुआँ लोग पीते हैं। छोटा सिगार।

सिगरो, सिगरो(पु)† वि० [स० समग्र] दे० 'सिगरा'। उ०—(क) सिगरोई दूध पियो मेरे मोहन बलहिं न देपहु बाटी। सूरदास नँद लेहु दोहनी दुहहु लाल को नाटी।—सूर (शब्द०)। (ख) कुल मडन छत्रसाल बुँदेला। आपु गुरु सिगरो जग चेला। —लाल कवि (शब्द०)।

सिगा—सज्ञा स्त्री० [फा० सेहगाह] सगीत मे चौबीस शोभाओ मे से एक।

सिगार—सज्ञा पु० [अ०] चुरुट।

सिगिनल†—सज्ञा [अ० सिगनल] दे० 'सिकदरा', 'सिगनल'। उ०—एक छोटा सा टुकडा बादल का भी सिगिनल सा झुका दिखाई देता है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १०।

सिगोती—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी चिडिया।

सिगोन—सज्ञा स्त्री० [स० सिगता, सिकता] नालो के पास पाई जानेवाली लाल रेत मिली मिट्टी।

सिचय—सज्ञा पु० [स०] १ कपडा। परिधान। पोशाक। वस्त्र। २ फटा पुराना कपडा। चीथडा [को०]।

सिचान(पु)—सज्ञा पु० [स० सञ्चान] बाज पक्षी।—उ० निति ससौ हँसौ बचतु, मानौ इहि अनुमान। विरह अगनि लपटिन सकै, झपट न मीच सिचान।—बिहारी (शब्द०)।

सिचाना(पु)—क्रि० स० [स० सिञ्चन] सिँचाना। सिचित कराना। उ०—नारि सहित मुनिपद सिर नावा। चरन सलिल सब भवन सिचावा।—मानस, २।६६।

सिच्छक(पु)—सज्ञा पु० [स० शिक्षक] शिक्षा देनेवाला। गुरु। उ०—आवत दूर दूर सो सिच्छक गुनी सिँगारी।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ३०। २ शास्ति करनेवाला। दड देनेवाला (को०)।

सिच्छन(पु)—सज्ञा पु० [स० शिक्षण] पढाना। अध्यापन। उ०—बहुदर्शी बहुतै जानत नीको सिच्छन विधि।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २०।

सिच्छा—सज्ञा स्त्री० [स० शिक्षा] दे० 'शिक्षा'। उ०—सैन बैन सब साथ है मन मे सिच्छा भाव। तिल आपन शृगार रस सकल रमन को राव।—मुबारक (शब्द०)।

सिच्छित(पु)—वि० पु० [स० शिक्षित] दे० 'शिक्षित'। उ०—भारत के भुज बल जग रक्षित। भारत विद्या लहि जग सिच्छित।—भारतेदु ग्र०, भा० १, पृ० ४९१।

सिजदा—सज्ञा पु० [अ० सिज्दह्] प्रणाम। दडवत। माथा टेकना। सिर झुकाना। (मुसल०)। उ०—सिजदा सिरजनहार को मुरशिद को ताजीम।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० २८९।

सिजदागाह—सज्ञा पुं० [अ० सिज्दा + फा० गाह] पूजा का स्थल। प्रार्थनागृह।

सिजरा†—संज्ञा पुं० [अ० शजरह्] वंशवृक्ष। वंशावली। कुर्सीनामा। उ०—कहि अतर सिजरा लिखि दीन्हा। कहि जादू कहि मैंगे कीन्हा।—सत० दरिया, पृ० ५५।

सिजल—वि० [हिं० सजीला] जो देखने मे अच्छा लगे। सुंदर।

सिजली—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पौधा जो दवा के काम मे आता है।

सिजादर—संज्ञा पुं० [लश०] पाल के चौखूटे किनारे से बँधा हुआ रस्सा, जिसके सहारे पाल चढाया जाता है।

सिज्या†—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या, प्रा० सिज्जा] दे० 'शय्या', 'सेज'। उ०—कोऊ सिज्या सम्हारत है।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० ३३।

यौ०—सिज्या भोग = वह भोग जो भगवान् को शयन कराने के उपरांत सिरहाने रखा जाता है। उ०—वाको श्रीनाथजी एक दिन सिज्या भोग को लड्डुवा उहाँई दियो।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २११।

सिझना—क्रि० अ० [सं० सिद्ध, प्रा० सिज्झ] आँच पर पकाना। सिकाया जाना।

सिझाना—क्रि० अ० [सं० सिद्ध, प्रा० सिज्झ + हिं० आना (प्रत्य०)] १ आँच पर गलाना। पकाकर गलाना। २ पकाना। राँधना। उबालना। ३ मिट्टी को पानी देकर पैर से कुचल और साफ करके बरतन बनाने योग्य बनाना। ४ शरीर को तपाना या कष्ट देना। तपस्या करना। उ०—लेत घूँट भरि पानि सु रस सुरदानि रिझाई। पपीहरचो तप साधि जपी तन तपन सिझाई।—सुधाकर (शब्द०)। ५ रासायनिक प्रक्रिया द्वारा पकाना। विशेष दे० 'चमडा सिझाना'।

सिटकिनी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] किवाडो के बद करने या अडाने के लिये लगी हुई लोहे या पीतल की छड। अगरी। चटकनी। चटखनी।

सिटनल†—संज्ञा पुं० [अ० सिगनल] दे० 'सिगनल'।

सिटपिटाना—क्रि० अ० [अनु०] १ दब जाना। मद पड जाना। २ किंकर्त्तव्य विमूढ होना। स्तब्ध हो जाना। ३. सकुचाना। उ०—पहले तो पचजी बहुत सिटपिटाए, किंतु सबो का बहुत कुछ आग्रह देख सभापति की कुर्सी पर जा डटे।—बालमुकुद (शब्द०)।

सिटी'—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना] दे० 'सिट्टी'।

मुहा०—सिटी बिटी भूलना = दे० 'सिट्टीपिट्टी भूलना'। उ०—हुश्न का रोब ऐसा छाया कि सब सिटी बिटी भूल गई।—फिसाना०, भा० ३, पृ० २६२।

सिटी'—संज्ञा स्त्री० [अ०] नगर। शहर।

यौ०—सिटी बस = नगर मे चलनेवाली राजकीय बस। सिटी बस सर्विस = राजकीय नगर परिवहन सेवा।

सिट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना] बहुत बढबढ कर बोलना। वाक्-पटुता।

मुहा०—सिट्टी गुम हो जाना = दे० 'सिट्टी भूलना'। उ०—अधिकारी वर्ग की सिट्टी गुम हुई।—किन्नर०, पृ० २६। सिट्टी पिट्टी भूल जाना = सिटपिटा जाना। सिट्टी भूलना = घबरा जाना। सिटपिटा जाना।

सिट्टू—वि० [हिं० सीटना] बहुत बढकर गप्प करनेवाला। बढकर बोलनेवाला। डींग मारनेवाला। उ०—सिपारसी डरपुकने सिट्टू बोलै बात अकासी—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ३३३।

सिट्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं० अशिष्ट] बचा हुआ। दे० 'सीठी'।

सिठनी†—संज्ञा स्त्री० [सं० अशिष्ट] विवाह के अवसर पर गाई जानेवाली गाली। सीठना।

सिठाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीठी] १ फीकापन। नीरसता। २ मदता।

सिड—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिडी] १ पागलपन। उन्माद। बावलापन। २ सनक। धुन।

क्रि० प्र० —चढना।

मुहा०—सिड सवार होना = सनक होना। धुन होना।

सिडपन, सिडपना—संज्ञा पुं० [हिं० सिड + पन (प्रत्य०)] १ पागलपन। बावलापन। २ सनक। धुन।

सिड़विल्ला, सिडविल्ला—संज्ञा पुं० [हिं० सिडी + बिल्ला] [स्त्री० सिडबिल्ली, सिडबिल्ली] १ पागल। बावला। २ बेवकूफ। मोदू। बुद्धू।

सिडिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींडी] डेढ हाथ लंबी लकडी जिसमे बुनते समय बादला बँधा रहता है।

सिडी—वि० [सं० शृंगिक] [स्त्री० सिडिन] १ पागल। दीवाना। बावला। उन्मत्त। उ०—यह तो सिडी हो गया है इनके साथ रहने से मैं भी ऐसी बाते कहने लगा।—शकुतला, पृ० १२१। २ सनकी। धुनवाला। ३ मनमौजी। मनमाना काम करनेवाला।

सिढी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी] दे० 'सीढी'। उ०—गहि शशिवृत्त नरिंद मिटी लघत ढहि थोरी। काम लता कन्हरी पेम मारत झकझोरी।—पृ० रा०, २५।३८१।

सितबर—संज्ञा पुं० [अ० सेप्टेंबर] अंग्रेजी नवाँ महीना अक्तूबर से पहले और अगस्त के पीछे का महीना।

सित'—वि० [सं०] १ श्वेत। सफेद। उजला। शुक्ल। उ०—अरुण असित सित वपु उनहार। करत जगत मे तुम अवतार।—सूर (शब्द०)। २ उज्ज्वल। शुभ्र। दीप्त। चमकीला। ३ स्वच्छ। साफ। निर्मल। ४ आबद्ध। बद्ध। बँधा हुआ (को०)। ५ घिरा हुआ। परिवेष्टित (को०)। ६, जाना हुआ। निश्चित। ज्ञात (को०)। ७ पूर्ण। समाप्त (को०)। ८ किसी से संयुक्त। युक्त (को०)।

सित'—संज्ञा पुं० १ शुक्र ग्रह। २ शुक्राचार्य। ३ शुक्ल पक्ष। उजाला पाख। ४ चीनी। शक्कर। ५ सफेद कचनार। ६ स्कंद के एक अनुचर का नाम। ७ मूली। मूलक। ८ चंदन। ९ भोजपत्र। १० सफेद तिल। ११ चाँदी। १२. श्वेत वर्ण। सफेद रंग (को०)। १३ तीर। बाण (को०)।

सितकंगु—सज्ञा स्त्री० [स० सितकङ्गु] राल। सर्जनिर्यास।

सितकटकारिका—सज्ञा स्त्री० [स० सितकण्टकारिका] सफेद कटकारी [को०]।

सितकटा—सज्ञा स्त्री० [स० सितकण्टा] श्वेत कटकारी [को०]।

सितकठ१—वि० [वि० सितकण्ठ] जिसकी गर्दन सफेद हो। सफेद गर्दनवाला।

सितकठ२—सज्ञा पु० मुर्गाबी। दात्यूह पक्षी।

सितकठ३—सज्ञा पु० [स० सितिकण्ठ] शितिकठ। महादेव। शिव। उ०—नीलकठ सितकठ शभु हर। महाकाल ककाल कृपाकर। सबलसिंह (शब्द०)।

सितकटभी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का पेड।

सितकमल—सज्ञा पु० [स०] सफेद कमल [को०]।

सितकर—सज्ञा पु० [स०] १ भीमसेनी कपूर। २ चद्रमा।

सितकरा—सज्ञा स्त्री० [स०] नीली दूब।

सितकर्णिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सितकर्णी' [को०]।

सितकर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] अडूसा। वासक।

सितकर्मा—वि० [स० सितकर्मन्] शुद्ध एव पूत कर्मोवाला [को०]।

सितकाच—सज्ञा पु० [स०] १ हलब्बी शीशा। २ बिल्लौर।

सितकारिका—सज्ञा स्त्री० [स०] बला या बरियारा नामक पौधा।

सितकार—सज्ञा पु० [स० सीत्कार] दे० 'सीत्कार'। उ०—(क) लै सितकार सखिहि घुरि गई।—नद० ग्र०, पृ० १२६। (ख) ज्यो तिय सरत समय सितकारा। निकल जाहि जौ बधिर भतारा।—नद० ग्र०, पृ० ११८।

सितकुजर—सज्ञा पु० [स० सितकुञ्जर] १ ऐरावती हाथी। श्वेत हस्ती। २ इद्र का गज जो श्वेत है। ३ (ऐरावत हाथीवाले) इद्र।

सितकुभी—सज्ञा स्त्री० [स० सितकुम्भी] श्वेत पाटल का वृक्ष। सफेद पाँडर का पेड।

सितक्षार—सज्ञा पु० [स०] सुहागा।

सितक्षुद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद फूल की भटकटैया। श्वेत कटकारी।

सितखड—सज्ञा पु० [स० सितखण्ड] दे० 'सिताखड'।

सितगुजा—सज्ञा स्त्री० [स० सितगुञ्जा] श्वेत गुजा। सफेद घुंघची [को०]।

सितचिल्ल—सज्ञा पु० [स०] खैरा मछली। छिपुआ मछली।

सितच्छत्र—सज्ञा पु० [स०] १ श्वेत राजछत्र। २ सूत्रजाल। मकरी आदि का जाला (को०)।

सितच्छत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. सौफ। २ सोवा।

सितच्छत्रित—वि० [स०] श्वेत राजछत्र युक्त। सित छत्रयुक्त [को०]।

सितच्छत्री—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सौंफ। शतपुष्पा। २ सोवा।

सितच्छद१—सज्ञा पु० [स०] १ हस। मराल। २ लाल सहिजन। रक्त शोभाजन।

सितच्छद२—वि० १. श्वेत पत्तो या श्वेत पखो वाला।

सितच्छदा—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद दूब।

सितजा—सज्ञा स्त्री० [स०] मधुखड। मधुशर्करा।

सितजाफल—सज्ञा पु० [स०] मधु नारियल।

सितजाम्रक—सज्ञा पु० [स०] कलमी आम।

सिततां—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेदी। श्वेतता।

सिततुरग—सज्ञा पु० [स०] अर्जुन (जिनके रथ के घोडे श्वेत वर्ण के है)।

सितदर्भ—सज्ञा पु० [स०] श्वेत कुश।

सितदीधिति—सज्ञा पु० [स०] (सफेद किरनवाला) चद्रमा।

सितधीप्य—सज्ञा पु० [स०] सफेद जीरा।

सितदूर्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] श्वेत दूर्वा। सफेद दूब [को०]।

सितद्रु—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की लता।

सितद्रुम—सज्ञा पु० [स०] १ शुक्लवर्ण का वृक्ष। अर्जुन। २ मोरट। क्षीर मोरट।

सितद्विज—सज्ञा पु० [स०] हस।

सितधातु—सज्ञा पु० [स०] १ शुक्लवर्ण की धातु। २, खरी। खरिया मिट्टी। दुद्धी।

सितपक्ष—सज्ञा पु० [स०] १ हस—जिसके पक्ष श्वेत हो। २ शुक्ल पक्ष। उजेला पाख (को०)। ३ श्वेत पख।

सितपच्छ—सज्ञा पु० [स० सितपक्ष, प्रा० सितपक्ख] दे० 'सितपक्ष'।

सितपत्र—सज्ञा पुं० [स० शतपत्र] शतपत्र। कमल। उ०—सत सितपत्र प्रमान उघारिय वीर वृ दाय।—पृ० रा०, ७।१२८।

सितपद्म—सज्ञा पु० [स०] सफेद कमल [को०]।

सितपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] अर्कपुष्पी। अधाहुली।

सितपाटलिका—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद पाँडर। श्वेत पाटला [को०]।

सितपुखा—सज्ञा स्त्री० [स० सितपुङ्खा] एक प्रकार का पौधा।

सितपुडरीक—सज्ञा पु० [स० सितपुण्डरीक] श्वेत कमल। सितपद्म [को०]।

सितपुष्प—सज्ञा पु० [स०] १ तगर का पेड या फूल। गुलचाँदनी। २ एक प्रकार का गन्ना। ३ सिरिस का पेड। श्वेत रोहित। ४ पिंड खजूर। ५ कैवर्त मुस्तक। केवटा मोथा (को०)। ६ काँस तृण। कास (को०)।

सितपुष्पा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बला। बरियारा। २ कधो का पोधा। ३ एक प्रकार की चमेली। मल्लिका।

सितपुष्पिका—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद दागवाला। कोढ। श्वेत कुष्ट। फूल। चरक।

सितपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ श्वेत अपराजिता। कैवर्त मुस्तक। केवटी मोथा नाम को घास। कास नामक तृण। ४ नागदती। ५ नागवल्ली। पान।

सितप्रभ१—सज्ञा पु० [स०] चाँदी।

सितप्रभ२—वि० [स०] श्वेत प्रभावाला। उज्ज्वल [को०]।

**सितभान**ⓖ—संज्ञा पु० [सं० सितभानु] चद्रमा। उ०—सुखहि अलक को छुटिबो अवमि करै दुतिमान। बिन विभावरी के नहीं जगमगात सितभान।—रामसहाय (शब्द०)।

**सितभानु**—संज्ञा पु० [सं०] चद्रमा।

**सितम**—संज्ञा पु० [फा०] १ गजब। अनर्थ। आफत। २ अनीति। जुल्म। अत्याचार।

मुहा०—सितम ढाना = अनर्थ करना। जुल्म करना।।

**सितमगर**—संज्ञा पुं० [फा०] जालिम। अन्यायी। दु खदायी। उ०—यार का मुझको इस सबब डर है। शोख जालिम है औ सितमगर है।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० २६।

**सितमणि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्फटिक। बिल्लौर।

**सितमना**—वि० [सं० सितमनस्] निर्मल मन का व्यक्ति। शुद्ध हृदयवाला [को०]।

**सितमरिच**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सफेद मिर्च। २ शिग्रुबीज। सहिजन के बीज।

**सितमाष**—संज्ञा पु० [सं०] राजमाष। लोबिया। बोडा।

**सितमेघ**—संज्ञा पु० [सं०] श्वेत बादल। शरत्कालीन मेघ [को०]।

**सितयामिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] चाँदनी रात। चद्रिका [को०]।

**सितरज**—संज्ञा पु० [सं० सितरञ्ज] कपूर। कर्पूर।

**सितरजन**—संज्ञा पु० [सं० सितरञ्जन] पीत वर्ण। पीला रग।

**सितरश्मि**—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद किरणोवाला। चद्रमा।

**सितराग**—संज्ञा पुं० [सं०] चाँदी। रजत। रौप्य।

**सितरुचि**—संज्ञा पु० [सं०] श्वेत किरणवाला। चद्रमा।

**सितरुती**—संज्ञा स्त्री० [देश०] गध पलाशी। कपूर कचरी।

विशेष—पहाडी लोग इसकी पत्तियों की चटाइयाँ बनाते हैं।

**सितलता**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] अमृतवल्ली नामक लता।

**सितलता**ⓖ[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतलता] शीतल होने का भाव। शीतलता। उ०—अगिनि के पुज हे सितलता तन नही। विष और अमृत दोनु एक सानी।—कबीर० रे०, पृ० २७।

**सितलशुन**—संज्ञा पु० [सं०] सफेद लहसुन [को०]।

**सितलाई**ⓖ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीतल + आई (प्रत्य०)] शीतलता। शैत्य। उ०—गोपद सिंधु अनल सितलाई।—मानस, ५।६।

**सितलाय**ⓖ—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतलता] शाति। शीतलता। ढडापन। नम्रता। उ०—त्यागि दे बकवाद बकना गहे रहु सितलाय।—जग० बानी०, पृ० ६६।

**सितली**—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल] वह पसीना जो बेहोशी या अधिक पीडा के समय शरीर से निकलता है।

क्रि० प्र०—छूटना।

**सितवराह**—संज्ञा पु० [सं०] श्वेत वाराह।

**सितवराहतिय**ⓖ—संज्ञा पु० [सं० सितवराह + हिं० तिय] पृथ्वी। धरा। उ०—सितवराहतिय ख्यात सुजस नरसिंह कोप धर। सँग भट बावन सहस सबै भृगुपति सम धनुधर।—गोपाल (शब्द०)।

**सितवराहपत्नी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। धरती।

**सितवर्ण**—संज्ञा स्त्री० [सं०] खिरनी। क्षीरिणी।

**सितवर्षाभू**—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद पुनर्नवा।

**सितवल्लरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] जगली जामुन। कठ जामुन।

**सितवल्लोज**—संज्ञा पु० [सं०] सफेद मिर्च।

**सितवाजी**—संज्ञा पु० [सं० सितवाजिन्] अर्जुन का नाम।

**सितवार, सितवारक**—संज्ञा पु० [सं०] शालिच शाक। शाति शाक।

**सितवारण**—संज्ञा पुं० [सं०] ऐरावत। श्वेत हाथी [को०]।

**सितवारिक**—संज्ञा पुं० [सं०] सैहली। सिंहली पीपल।

**सितशायका**—संज्ञा पु० [सं०] सफेद शरपुखा। सरफोका [को०]।

**सितशिबिक**—संज्ञा पु० [सं० सितशिम्बिक] एक प्रकार का गेहूँ।

**सितशिशपा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत शिशपा वृक्ष [को०]।

**सितशिव**—संज्ञा पु० [सं०] १ सेंधा नमक। २ शमी का पेड।

**सितशूक**—संज्ञा पुं० [सं०] जौ। यव।

**सितशूरण**—संज्ञा पुं० [सं०] वन सूरण। सफेद जमीकद।

**सितशृगी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शितशृङ्गी] अतीस। अतिविषा।

**सितसप्ति**—संज्ञा पुं० [सं०] (सफेद घोडेवाले) अर्जुन।

**सितसर्षप**—संज्ञा पु० [सं०] श्वेत सरप। पीली सरसो [को०]।

**सितसागर**—संज्ञा पु० [सं०] क्षीर सागर। उ०—सितसागर ते छवि उज्ज्वल जाकी। जनु बैठक सोहत है कमला की।—गुमान (शब्द०)।

**सितसायका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत सरफोका। सितशायक [को०]।

**सितसार, सितसारक**—संज्ञा पु० [सं०] शालिच शाक। शाति शाक। सोहमारक।

**सितसिधु**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सितसिन्धु] क्षीर समुद्र।

**सितसिधु**[2]—संज्ञा स्त्री० गगा नदी जिनका जल श्वेत है।

**सितसिही**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद भटकटैया। श्वेत कटकारी।

**सितसिद्धार्थ**—संज्ञा पु० [सं०] सफेद या पीली सरसो जो मत्र या झाड फूँक मे काम आती है।

**सितसिद्धार्थक**—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'सितसिद्धार्थ'।

**सितसूर्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] हुरहुर। आदित्यभक्ता।

**सितह**—संज्ञा स्त्री० [अ० सतह] दे० 'सतह'।

**सितहूण**—संज्ञा पु० [सं०] हूणो की एक शाखा।

**सिताक**—संज्ञा पुं० [सं० सिताङ्क] एक प्रकार की मछली। वालुकागड मत्स्य।

**सिताग**[1]—संज्ञा पु० [सं० सिताङ्ग] १ शिव का नाम (को०)। २ श्वेत रोहितक वृक्ष। रोहिडा सफेद। ३ बेला। वार्षिकी पुष्प वृक्ष। ४ दे० 'सिताक (को०)।

**सिताग**[2]—वि० श्वेत अगवाला।

**सिताबर**[1]—वि० [सं० सिताम्बर] श्वेत वस्त्र धारण करनेवाले।

**सिताबर**[2]—संज्ञा पु० जैनो का श्वेतावर सप्रदाय।

**सितांबुज**—संज्ञा पु० [सं० सिताम्बुज] श्वेत कमल।

**सिताभोज**—सज्ञा पु० [स० सिताम्भोज] दे० 'सितावुज'। उ०—उत्पल, राजिव, कोकनद, सिताभोज जलजात।—नद० ग्र०, पृ० ११०।

**सिताशु**—सज्ञा पु० [स०] १ चद्रमा। २ कपूर।

**सिताशुक**—वि० [स०] श्वेत वस्त्रधारी। सफेद वर्ण का वस्त्र धारण करनेवाला [को०]।

**सिताँ'**—सज्ञा पुं० [फा०] १ राष्ट्र। देश। २ निवासभूमि। ३ स्थान। जगह। ४ वह स्थान जहाँ किसी वस्तु का आधिक्य हो।

**सिताँ'**—वि० ग्रहण करनेवाला। ले लेनेवाला [को०]।

**सिता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चीनी। शक्कर। शर्करा। उ०—दूध औटि तेहि सिता मिलाऊँ मै नारायण भोग लगाऊँ। रघराज (शब्द०)। २ शुक्ल पक्ष। उ०—चैत चारु नौमी सिता मध्य गगन गत भानु। नखत जोग ग्रह लगन भल दिन मगल मोद विधानु।—तुलसी (शब्द०)। ३ मल्लिका। मोतिया। ४ श्वेत कटकारी। सफेद भटकटैया। ५ वकुची। सोमराजी। ६ विदारी कद। ७ श्वेत दूर्वा। ८ चाँदनी। चद्रिका। ९ कुट विनी का पौधा। १० मद्य। शराब। ११ पिंगा। १२ त्रायमाणा लता। १६ अर्कपुष्पी। अधाहुली। १४ वच। १५ सिहली पीपल। १६ आमडा। आम्रातक। १७ गोरोचन। १८ वृद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि। १९ चाँदी। रजत। रूपा। २० श्वेत निसोथ। २१ त्रिसधि नामक पुष्प वृक्ष। २२ पुनर्नवा। सफेद गदहपूरना। २३ पहाडी अपराजिता। २४ सफेद पाडर। पाटला वृक्ष। २५ सफेद सेम। २६ मूर्वा। गोकर्णी लता। मुरा। २७ आकर्षक महिला। सुदरी स्त्री (को०)। २८ गगा नदी (को०)। २९ मिस्री (को०)।

**सिताइश**—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ तारीफ। प्रशसा। २ धन्यवाद। शुक्रिया। ३ वाहवाही। शावाशी।

**सिताखड**—सज्ञा पु० [स० सिताखण्ड] १ मधुशर्करा। शहद से बनाई हुई शक्कर। २ मिस्री।

**सिताख्य**—सज्ञा पु० [स०] सफेद मिर्च।

**सिताख्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद दूब।

**सिताग्र**—सज्ञा पु० [स०] काँटा। कटक।

**सिताजाजी**—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद जीरा।

**सितातपत्र, सितातपवारण** सज्ञा पु० [स०] श्वेत आतपत्र। श्वेत चँदोवा या छत्र [को०]।

**सितादि**—सज्ञा पुं० [स०] शक्कर आदि का कारण या पूर्व रूप, गुड।

**सितानन'**—वि० [स०] सफेद मुँहवाला।

**सितानन'**—सज्ञा पु० १ गरुड। २ वेल। विल्व वृक्ष। ३ शिव का एक गण (को०)।

**सितापाग**—सज्ञा पु० [स० सितापाङ्ग] मयूर। मोर।

**सितापाक**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सिताखड'।

**सिताब(१)'**—वि० वि० [फा० शिताव] जल्दी। तुरत। झट। उ०—प्रीतम आवत जानिकै भिस्ती नैन सिताब। हित कर देत है अँसुवन को छिरकाव।—रसनिधि (शब्द०)

**सिताब'**—सज्ञा स्त्री० जल्दी। शीघ्रता। उ०—दिना दोइ मे कूँच होइ आगै नवाव कौ। तातै ढील न होइ काम यह है सिताव कौ।—सुजान०, पृ० ६२।

**सितावी'**—क्रि० वि० [फा० शिताव] दे० 'सिताव'।

**सितावी'**—सज्ञा स्त्री० १ चाँदनी। २ दे० 'सिताव'।

**सिताब्ज**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सितावुज' [को०]।

**सिताभ**—सज्ञा पु० [स०] १ कर्पूर। कपूर। २ शर्करा। ३ वह जिसकी प्रभा श्वेत हो।

**सिताभा**—सज्ञा स्त्री० [स०] तक्रा। तक्राह्वा क्षुप।

**सिताभ्र, सिताभ्रक**—सज्ञा पु० [स०] १ सफेद बादल। २ कपूर। कर्पूर।

**सितामोघा**—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद पाडर। श्वेत पाटला।

**सितायुध**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की मछली।

**सितार**—सज्ञा पु० [फा०, या स० सप्त+तार, फा० सेहतार] एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा जिसमे सात तार होते हे और जो लगे हुए तारो को उँगली से झनकारने से बजता है। एक प्रकार की वीणा।

**विशेष**—यह काठ की दो ढाई हाथ लबी और चार पाँच अगुल चौडी पोली पटरी के एक छोर पर गोल कद्दू की तुबी जडकर बनाया जाता है। इसका ऊपर का भाग समतल और चिपटा होता है और नीचे का गोल। समतल भाग पर पर्दे बँधे रहते हैं जो सप्तक के स्वरो को व्यक्त करते है। इनके ऊपर तीन से लेकर सात तार लबाई के बल मे बँधे रहते है। इन तारो को कोण द्वारा झनकारने से यह बजता हे।

**सितारबाज**—सज्ञा पुं० [हिं० सितार+फा० बाज] सितार बजानेवाला। सितारिया।

**सितारजन**—सज्ञा पुं० [फा० सितारजन] सितारवादक।

**सितारबाजी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सितार+फा० बाजी] सितार बजाना।

**सितारवादक**—सज्ञा पु० [हिं० सितार+स० वादक] सितार बजानेवाला। सितारिया।

**सितारा'**—सज्ञा पु० [फा० सितारह्] १. तारा। नक्षत्र। उ०—मनौ सितारे भूमि नभ फिरि आवत फिरि जात।—स० सप्तक, पृ० ३६३। २ भाग्य। प्रारब्ध। नसीब।

मुहा०—सितारा चमकना=भाग्योदय होना। अच्छी किस्मत होना। सितारा बलद या बुलद होना=दे० 'सितारा चमकना'। सितारा मिलना=(१) फलित ज्योतिष मे ग्रहमैत्री मिलना। गणना बैठना। (२) मन मिलना। परस्पर प्रेम होना।

३ चाँदी या सोने के पत्तर की बनी हुई छोटी गोल बिंदी के आकार की टिकिया जो कामदार टोपी, जूते आदि मे टाँकी जाती है या शोभा के लिये चेहरे पर चिपकाई जाती है। उ०—नील सलमे सितारे या बादले।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ८७। ४ दे० 'सितारा पेशानी'।

**सितारा[2]**—संज्ञा पुं० [हिं० सितार] दे० 'सितार'। उ०—जलतरंग कानून अमृत कुंडली सुबीना। सारंगी रु रबाब सितारा महुवर कीना।—सूदन (शब्द०)।

**सितारचश्म**—वि० [फा०] सितारे जैसे नेत्रोंवाला [को०]।

**सितारजबीं**—वि० [फा०] दे० 'सितारपेशानी'।

**सितारादाँ**—संज्ञा पुं० [फा०] नक्षत्रों का जानकार। ज्योतिषी।

**सितारापरस्त**—वि० [फा०] तारों का उपासक [को०]।

**सितारापेशानी**—वि० [फा०] (घोड़ा) जिसके माथे पर अँगूठे के छिप जाने योग्य सफेद टीका या बिंदी हो (ऐसा घोड़ा बहुत ऐबी समझा जाता है)।

**सितारावी**—वि० [फा०] ज्योतिषी। नजूमी [को०]।

**सितारावीनी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] ग्रहों के द्वारा फलाफल का ज्ञान। ज्योतिष विद्या [को०]।

**सिताराशनाम**—वि० [फा०] ज्योतिषी [को०]।

**सिताराशनासी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] ज्योतिष विद्या [को०]।

**सितारिया**—संज्ञा पुं० [फा० सितार+हिं० इया (प्रत्य०)] सितार बजानेवाला।

**सितारी[1]**—संज्ञा स्त्री० [फा० सितार] छोटा सितार। छोटा तंबूरा।

**सितारी[2]**—वि० [हिं० सितार] सितार बजानेवाला। सितारिया। उ०—कहाँ है रबाबी मृदंगी सितारी। कहाँ हैं गवैये कहाँ नृत्यकारी।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ७०५।

**सितारेहिंद**—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की उपाधि जो सरकार की ओर से सम्मानार्थ दी जाती है। उ०—राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद थे।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४१२।

विशेष—यह शब्द वास्तव में अँग्रेजी वाक्य 'स्टार आफ इंडिया' का अनुवाद है।

**सितार्कक**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सितालक' [को०]।

**सितार्जक**—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत तुलसी।

**सितालक, सितालर्क**—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत अर्क। सफेद मदार।

**सितालता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अमृतवल्ली। अमृतबेवा। २ सफेद दूब।

**सितालि**—वि० [सं०] श्वेत रेखाओं या पंक्तियोंवाला।

**सितालिकटभी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] किहिणी वृक्ष। सफेद कटभी।

**सितालिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] ताल की सीपी। जलशीप। शुक्ति। सितुही।

**सिताव**—संज्ञा स्त्री० [देश०] बरसात में उगनेवाला एक पौधा जो दवा के काम आता है। मंडूकपर्णी। पीतपुष्पा। विषापहा। दूर्वपत्रा। त्रिकोणबीजा।

विशेष—यह पौधा हाथ डेढ़ हाथ ऊँचा और झाड़दार होता है। इसकी पत्तियाँ दूब से मिलती जुलती होती हैं। इसके डंठल भी हरे रंग के होते हैं। इसका मूसला कत्थई रंग का और बहुत बारीक रेशों से युक्त होता है। इसमें अगुल डेढ़ अंगुल घेरे के गोल पीले फूल लगते हैं। इसके फलों की नोक पर बैंगनी रंग का लंबा सूत सा निकला होता है। फलों के भीतर तिकोने कत्थई रंग के बीज होते हैं। यही बीज 'सितावर' औषध के काम में आते हैं और 'सितावर' के नाम से बिकते हैं। ये बहुत कड़वे और गंधयुक्त होते हैं। इस पौधे की जड़ और पत्तियाँ भी दवा के काम में आती हैं। वैद्यक में सितावर गरम, कड़वी, दस्तावर तथा वात, कफ को नाश करनेवाली, रक्त को शुद्ध करनेवाली, बल, वीर्य और दूध को बढ़ानेवाली तथा पित्त के रोगों में लाभकारी कही गई है।

**सितावभेद**—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक पौधा जिसके सब अंग औषध के काम में आते हैं।

विशेष—इसकी पत्तियाँ लंबी, गँठीली और कटावदार होती हैं और उनमें से तेल की सी कटु गंध आती है। फूल पीलापन लिए होते हैं। फलों में चार बीजकोश होते हैं जिनमें से प्रत्येक में ७ या ८ बीज होते हैं।

**सितावर**—संज्ञा पुं० [सं०] सिरियारी। मुनिपर्णक शाक। सुसना का साग।

**सितावरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] जवासी। लोमशाजी।

**सिताश्व**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अर्जुन का एक नाम। २ चंद्रमा।

**सितासित**—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्वेत और श्याम। सफेद और काला। उ०—कुच तें श्रम जलधार चलि मिलि रोमावलि संग। मनो मेरु की तरहटी भयो सितासित संग।—मतिराम (शब्द०)। २ बलदेव। ३ शुक्र के सहित शनि। ४ जमुना के सहित गंगा।

**सितासितनीर(ङ्)**—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत और नीला या श्याम वर्ण का जल। गंगा यमुना का संगम। त्रिवेणी। उ०—तहँ सितासित नीर नहाने।—मानस, २।२०३।

**सितासितरोग**—संज्ञा पुं० [सं०] आयुर्वेद का एक रोग।

**सितासिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जवासी। लोमशाजी। २ गंगा और यमुना। यमुना और गंगा।

**सिताह्वय**—संज्ञा पुं० [सं०] १ शुक्र ग्रह। २ श्वेत रोहित वृक्ष। ३ सफेद फूलों का सहिंजन। ४ सफेद या हरे डंठल की तुलसी।

**सिति[1]**—वि० [सं०] दे० 'शिति'।

**सिति[2]**—संज्ञा स्त्री० १ श्वेत या श्याम वर्ण। २ बंधन। बाँधना [को०]।

**सितिकंठ**—संज्ञा पुं० [सं०] नीलकंठ। शिव। महादेव।

**सितिमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेतता। सफेदी।

**सितिवार, सितिवारक**—संज्ञा पुं० [सं० सितिवार] १ सिरियारी शाक। सुसना का साग। २ कुडा। कुटज वृक्ष। कोरैया।

**सितिवास**—संज्ञा पुं० [सं० सितिवासस्] (नीले वस्त्रवाले) बलराम।

**सितिसारक**—संज्ञा पुं० [सं०] शाति शाक। शालिंच शाक।

**सितुई**—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] ताल की सीपी। सुतही। सितुही।

**सितुही**—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्तिका] ताल की सीपी। सुतुही।

सितूदा—वि० [फा० सितूद्ह] प्रशसित। तारीफ के योग्य [को०]।
यौ०—सितूदाकार=उत्तम या प्रशसनीय कार्य करनेवाला।

सितून—सज्ञा पुं० [फा०] १ स्तभ। खभा। थूनी। २ लाट। मीनार।

सितेक्षु—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का गन्ना [को०]।

सितेतर[1]—वि० [स०] (श्वेत से भिन्न) काला या नीला।

सितेतर[2]—सज्ञा पु० १ कृष्ण धान्य। काला धान। २ कुलथी। कुरथी।

सितेतरगति—सज्ञा स्त्री० [स०] अग्नि। आग।

सितोत्पल—सज्ञा पु० [स०] सफेद कमल।

सितोदर सज्ञा पु० [सं०] (श्वेत उदरवाला) कुबेर।

सितोदरा—सज्ञा स्त्री० [स०] (श्वेत उदरवाली) एक प्रकार की कौडी।

सितोद्भव[1]—सज्ञा पुं० [स०] चदन। सदल।

सितोद्भव[2]—वि० चीनी से उत्पन्न या बना हुआ।

सितोपल—सज्ञा पुं० [सं०] १ कठिनी। खडी। खरिया मिट्टी। दुद्धी। २ बिल्लौर। स्फटिक मणि।

सितोपला—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ मिस्री। २ चीनी। शक्कर।

सितोष्णवारण—सज्ञा पु० [स०] सफेद आतपत्र या छाता [को०]।

सिथिल—वि० [स० शिथिल] दे० 'शिथिल'। उ०—पुलक सिथिल तनु वारि विमोचन। महि नख लिखन लगी सब सोचन। —मानस, २।२८०।

सिद—सज्ञा पुं० [देश०] बाफली।

सिदक†—सज्ञा स्त्री० [अ० सिद्क] निश्छलता। यथार्थता। सत्यता। उ०—व अव्वल जबाँ सू च इकरार कर। सो भई सिदक कर मानना दिल बेहतर।—दक्खिनी०, पृ० १९२।

सिदका—सज्ञा पु० [अ० सदकह्] दे० 'सदका'।

सिदना—क्रि० स० [स० सीदति] कष्ट पहुँचाना। पीडित करना। उ०—समै के दिलीप दिलीपति को सिदति है।—भूषण ग्र०, पृ० ८२।

सिदरी—सज्ञा स्त्री० [फा० सेहदरी] तीन दरवाजोवाला कमरा या बरामदा। तिदुवारी दालान। उ०—बहु बेलिन बूटन सयुत सोहै। परदा सिदरीन लगे मन मोहैं।—गुमान (शब्द०)।

सिदाकत—सज्ञा स्त्री० [अ० सदाक्त] सत्यता। सच्चाई। यथार्थता। उ०—मेरी हिमाकत का बयान आपकी लियाकत की सिदाकत करता है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २४।

सिदामा—सज्ञा पुं० [स० श्रीदामा] दे० 'श्रीदामा'।

सिदिक[1]—वि० [अ० सिदक] सच्चा। सत्य। उ०—अवावकर सिद्दीक सयाने। पहिले सिदिक दीन वै आने।—जायसी (शब्द०)।

सिदिक[2]—सज्ञा स्त्री० दे० 'सिदक'।

सिदौसी—सज्ञा स्त्री० [स० सद्यस्] १ तडके। मुँह अँधेरे। धुँधलका। उ०—खूब सिदौसी, मुँह अँधियारे वाकी चकिया जबै पुकारे, तब तू वाकी सुनियो ना, गुइयाँ, प्रीति को मरम काहूते बतैयो ना। —कुकुम, पृ० ८३। २ जल्दी। शीघ्र। बिना विलब लगाए। उ०—अमर नगर पहिचान सिदौसी तब नहि आवन जाना रे।—चरण० बानी, पृ० १०६।

सिद्गुड—सज्ञा पु० [स० सिगुद्ण्ड] वह वर्णसकर पुरुष जिसका पिता ब्राह्मण और माता पराजकी हो।

सिद्दीक—वि० [अ० सिद्दीक] बहुत सच्चा। ईमानदार [को०]।

सिद्धत—सज्ञा पु० [स० सिद्धान्त] दे० 'सिद्धात'। उ०—सोइ सुनिय सिद्धत सत सब भाषत वोई।—सुदर ग्र०, भा० १, पृ० ३९।

सिद्ध[1]—वि० [स०] १ जिसका साधन हो चुका हो। जो पूरा हो गया हो। जो किया जा चुका हो। सपन्न। सपादित। निवटा हुआ। अजाम दिया हुआ। जैसे,—कार्य सिद्ध होना। २ प्राप्त। सफल। हासिल। उपलब्ध। जैसे,—मनोरथ सिद्ध होना। प्रयत्न सिद्ध होना। उद्देश्य सिद्ध होना। ३ प्रयत्न मे सफल। कृतकार्य। जिसका मतलब पूरा हो चुका हो। कामयाब। ४ जिसका तप या योगसाधन पूरा हो चुका हो। जिसने योग या तप द्वारा अलौकिक लाभ या सिद्धि प्राप्त की हो। पहुँचा हुआ। जैसे,—बाबाजी बडे सिद्ध महात्मा है। ५ करामाती योग की विभूतियाँ दिखानेवाला। ६ मोक्ष का अधिकारी। ७ लक्ष्य पर पहुँचा हुआ। निशाने पर बैठा हुआ। ८ जो ठीक घटा हो। जिस (कथन) के अनुसार कोई बात हुई हो। जैसे,—वचन सिद्ध होना, आशीर्वाद सिद्ध होना। ९ जो तर्क या प्रमाण द्वारा निश्चित हो। प्रमाणित। साबित। निरूपित। जैसे,—अपराध सिद्ध करना। कथन को सत्य सिद्ध करना। व्याकरण का प्रयोग सिद्ध करना। १० जिसका फैसला या निबटारा हो गया हो। फैसल। निर्णीत। ११ शोधित। अदा किया हुआ। चुकता (ऋण आदि)। १२ सघटित। अतर्भूत। जैसे,—स्वभावसिद्ध बात। १३ जो अनुकूल किया गया हो। कार्यसाधन के उपयुक्त बनाया हुआ। गौ पर चढाया हुआ। जैसे,—उसको हम कुछ रुपये देकर सिद्ध कर लेगे। १४ आँच पर मुलायम किया हुआ। सीझा हुआ। पका हुआ। उबला हुआ। जैसे,—सिद्ध अन्न। उ०—वही के सिद्ध रग से उसे रगते।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २३६। १५ प्रसिद्ध। विख्यात। १६ बना हुआ। तैयार। प्रस्तुत। उ०—पाछे दरजी वे बागा सब सिद्ध करि लायो।—दो सौ बावन०, पृ० १७२। १७ बसा हुआ। स्थापित (को०)। १८ वैध। न्याय्य (को०)। १९ सच माना हुआ (को०)। २० वश मे किया गया। जीता गया (को०)। २२ पूर्णत विज्ञ दक्ष (को०)। २३ पावन। पवित्र। पुण्यात्मा (को०)। २४ दिव्य। अविनश्वर। नित्य (को०)। २५ सतुष्ट (को०)। २६ स्वकीय। निजी। व्यक्तिगत (को०)।

सिद्ध[2]—सज्ञा पुं० १ वह जिसने योग या तप मे सिद्धि प्राप्त की हो। योग या तप द्वारा अलौकिक शक्ति प्राप्त पुरुष। जैसे,—यहाँ

एक सिद्ध आए हैं। २ कोई ज्ञानी या भक्त महात्मा। मोक्ष का अधिकारी पुरुष। ३ एक प्रकार के देवता। एक देवयोनि।

विशेष—सिद्धो का निवास स्थान भुवलोक कहा गया है। वायु-पुराण के अनुसार उनकी सख्या अठासी हजार है और वे सूर्य के उत्तर और सप्तर्षि के दक्षिण अतरिक्ष मे वास करते है। वे अमर कहे गए हैं पर केवल एक कल्प भर तक के लिये। कही कही सिद्धो का निवास गधर्व, किन्नर आदि के समान हिमालय पर्वत भी कहा गया है।

४ अर्हत। जिन। ५ ज्योतिष का एक योग। ६ व्यवहार। मुकदमा। मामला। ७ काला धतूरा। ८ गुड। ९ ज्योतिष मे विष्कभ आदि २७ योगो मे से इक्कसीवाँ योग। १० कृष्ण सिंदुवार। काली निर्गुंडी। ११ सफेद सरसो। १२, सेधा नमक (को०)। १३ जादूगर। ऐद्रजालिक (को०)। १४ चौवीस की सख्या (को०)। १५ बाजीगरी। १६ अलौकिक शक्ति (को०)।

सिद्धक—सज्ञा पु० [स०] १ सँभालू। सिंदुवार वृक्ष। २ एक वृत्त या छद (को०)। ३ शाल वृक्ष। साखू।

सिद्धकज्जल—सज्ञा पुं० [स०] एक विशिष्ट प्रकार का अजन। जादू का काजल। सिद्धाजन (को०)।

सिद्धकाम—वि० [स०] १ जिसकी कामना पूरी हुई हो जिसका प्रयोजन सिद्ध हो चुका हो। २ सफल। कृतार्थ।

सिद्धकामेश्वरी—सज्ञा स्त्री० [स०] कामाख्या अर्थात् दुर्गा की पचमूर्ति के अतर्गत प्रथम मूर्ति।

सिद्धकारी—सज्ञा पुं० [सं० सिद्धकारिन्] [स्त्री० सिद्धकारिणी] धर्म-शास्त्र के अनुसार आचरण करनेवाला।

सिद्धकार्थ—वि० [स०] जिसकी कामना पूर्ण हो गई हो। सिद्धकाम। सफल। कृतकार्य (को०)।

सिद्धक्षेत्र—सज्ञा पु० [स०] १ वह स्थान जहाँ योग या तत्र प्रयोग जल्दी सिद्ध हो। २ वह स्थान जहाँ सिद्ध रहते हो। सिद्धो का क्षेत्र (को०)। ३ दडक वन के एक विशेष भाग का नाम।

सिद्धखड—सज्ञा पु० [स० सिद्धखण्ड] खाँड का एक भेद (को०)।

सिद्धगगा—सज्ञा स्त्री० [स०] मदाकिनी। आकाश गगा। स्वर्ग गगा।

सिद्धगति—सज्ञा स्त्री० [स०] जैन मतानुसार वे कर्म जिनसे मनुष्य सिद्ध हो।

सिद्धगुटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] वह मत्रसिद्ध गोली जिसे मुँह मे रख लेने से अदृश्य होने आदि की अद्भुत शक्ति आ जाती है। दे० 'सिद्धि गुटिका'।

सिद्धग्रह—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का प्रेत जो उन्माद रोग उत्पन्न करता है। २ एक प्रकार का प्रेतजन्य उन्माद (को०)।

सिद्धजल—सज्ञा पु० [स०] १ काजी। २ औटा हुआ जल।

सिद्धता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सिद्ध होने की अवस्था। २ प्रामाणिकता। सिद्धि। ३ पूर्णता।

सिद्धतापस—सज्ञा पुं० [स०] सिद्धिप्राप्त तपस्वी (को०)।

सिद्धत्व—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सिद्धता'।

सिद्धदर्शन—सज्ञा पुं० [स०] अलौकिक शक्तियुक्त सत का दर्शन।

सिद्धदात्री—सज्ञा स्त्री० [स०] नव दुर्गा मे से एक दुर्गा।

सिद्धदेव—सज्ञा पु० [स०] शिव। महादेव।

सिद्धद्रव्य—सज्ञा पु० [स०] वह द्रव्य या वस्तु जो सिद्ध की गई हो। ऐद्रजालिक या जादू की वस्तु (को०)।

सिद्धधातु—सज्ञा पु० [स०] पारा। पारद।

सिद्धनर—सज्ञा पु० [स०] दैवज्ञ। ज्योतिषी। भविष्य या भाग्यकथन करनेवाला (को०)।

सिद्धनाथ—सज्ञा पु० [स०] १ सिद्धेश्वर। महादेव। २ गुलतुर्रा।

सिद्धनामक—सज्ञा पुं० [स०] अश्मतक वृक्ष। आवुटा।

सिद्धपक्ष—सज्ञा पु० [स०] १ किसी प्रतिज्ञा या बात का वह अश जो प्रमाणित हो चुका हो। २ प्रमाणित बात। साबित बात।

सिद्धपथ—सज्ञा पुं० [स०] आकाश। अतरिक्ष।

सिद्धपात्र—सज्ञा पु० [स०] स्कद के एक अनुचर का नाम।

सिद्धपीठ—सज्ञा पु० [स०] वह स्थान जहाँ, योग, तप या तात्रिक प्रयोग करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त हो। उ०—साहसी समीरसुनु नीरनिधि लघि लखि लक सिद्धपीठ निसि जागो है मसान सो। तुलसी (शब्द०)।

सिद्धपुर—सज्ञा पुं० [स०] १ एक कल्पित नगर जो किसी के मत से पृथ्वी के उत्तरी छोर पर और किसी के मत से दक्षिण या पाताल मे है। (ज्योतिष)। २ गुजरात मे एक तीर्थ जहाँ माता का श्राद्ध किया जाता है। मातृगया।

सिद्धपुरी—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सिद्धपुर'।

सिद्धपुरुष—सज्ञा पु० [स०] वह पुरुष जिसे सिद्धिलाभ हो गया हो। वह व्यक्ति जिसे अलौकिक सिद्धि प्राप्त हो (को०)।

सिद्धपुष्प—सज्ञा पु० [स०] करवीर। कनेर का पेड।

विशेष—यह सिद्ध लोगो को प्रिय और यत्रसिद्धि मे प्रयुक्त किया जाता है।

सिद्धप्रयोजन—सज्ञा पु० [स०] सफेद सरसो। श्वेत सर्षप।

सिद्धभूमि—सज्ञा स्त्री० [स०] सिद्धपीठ। सिद्धक्षेत्र।

सिद्धमत्र—सज्ञा पुं० [सं० सिद्धमन्त्र] सिद्ध किया हुआ मत्र।

सिद्धमत—सज्ञा पु० [स०] १ वह सिद्धात या वाद जो पूर्णत प्रमाणित हो। २ सिद्ध व्यक्तियो या सतो का मत।

सिद्धमनोरम—सज्ञा पु० [स०] कर्म मास (को०)।

सिद्धमातृका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक देवी का नाम। २ एक प्रकार की लिपि।

सिद्धमानस—वि० [स०] पूर्ण सतुष्ट मन या मस्तिष्कवाला (को०)।

सिद्धमोदक—सज्ञा पु० [स०] तुरजबीन की खाँड। तवराजखड।

सिद्धयात्रिक—सज्ञा पु० [सं०] सिद्धिके निमित्त यात्रा करनेवाला व्यक्ति। दे० 'सिद्धियात्रिक' (को०)।

सिद्धयामल—सज्ञा पु० [स०] एक तत्र का नाम।

सिद्धयोग—सज्ञा पु० [स०] १ ज्योतिष का एक योग। २ एक यौगिक रसौषध।

सिद्धयोगिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक योगिनी का नाम।

सिद्धयोगी—सज्ञा पु० [स० सिद्धयोगिन्] शिव। महादेव।

सिद्धर—सज्ञा पु० [?] एक ब्राह्मण जो कस की आज्ञा से कृष्ण को मारने आया था। उ०—सिद्धर बाभन करम कसाई। कह्यौ कस सो वचन सुनाई।—सूर (शब्द०)।

सिद्धरत्न—वि० [स०] जिसके पास सिद्ध या अलौकिक शक्तिवाला रत्न हो [को०]।

सिद्धरस—सज्ञा पुं० [स०] १ पारा। पारद। २ रसेंद्र दर्शन के अनुसार वह योगी जिससे पारा सिद्ध हो गया हो। सिद्ध रसायनी।

सिद्धरसायन—सज्ञा पुं० [स०] वह रसौषध जिससे दीर्घ जीवन और प्रभूत शक्ति प्राप्त हो।

सिद्धलक्ष—वि० [स०] जिसका निशाना खूब सधा हो। जो कभी न चूके।

सिद्धलक्ष्मी—सज्ञा स्त्री० [स०] लक्ष्मी की एक विशेष मूर्ति [को०]।

सिद्धलोक—सज्ञा पु० [स०] सिद्धो का आवास या लोक [को०]।

सिद्धवटी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक देवी का नाम।

सिद्धवर्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] ऐंद्रजालिक या जादू की एक प्रकार की वत्ती [को०]।

सिद्धवस्ति—सज्ञा पु० [स०] तैल आदि की वस्ति या पिचकारी। (आयुर्वेद)।

सिद्धविद्या—सज्ञा स्त्री० [स०] एक महाविद्या का नाम।

सिद्धविनायक—सज्ञा पु० [स०] गणेश की एक मूर्ति।

सिद्धव्यजन—सज्ञा पु० [स० सिद्धव्यञ्जन] तपस्वी के वेश मे गुप्तचर [को०]।

सिद्धशावरतंत्र—सज्ञा पु० [स० सिद्धशावर तन्त्र] सावर तत्र।

सिद्धशिला—सज्ञा स्त्री० [सं०] जैन मत के अनुसार ऊर्ध्वलोक का एक स्थान।

विशेष—कहते है कि यह शिला स्वर्गपुरी के ऊपर ४५ लाख योजन लबी, इतनी ही चौडी तथा ८ योजन मोटी है। मोती के श्वेतहार या गोदुग्ध से भी उज्ज्वल है, सोने के समान दमकती हुई और स्फटिक से भी निर्मल हैं। यह चौदहवे लोक की शिखा पर है और इसके ऊपर शिवपुर धाम है। यहाँ मुक्त पुरुष रहते हैं। यहाँ किसी प्रकार का बधन या दु ख नही है।

सिद्धसकल्प—वि० [स० सिद्धसङ्कल्प] जिसकी सब कामनाएँ पूरी हो।

सिद्धसरित्—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आकाश गगा। २ गगा।

सिद्धसलिल—सज्ञा पुं० [स०] कांजी। सिद्धजल।

सिद्धसाधक—सज्ञा पुं० [स०] सब मनोरथ पूर्ण करनेवाला कल्प वृक्ष।

सिद्धसाधन—सज्ञा स० [स०] १ सिद्धि के लिये योग या तत्र की क्रिया या अनुष्ठान। २ तात्रिक क्रियाओ की सिद्धि मे काम आनेवाली वस्तु या पदार्थ (को०)। ३ सफेद सरसो। ४ प्रमाणित बात को फिर प्रमाणित करना।

सिद्धसाधित—वि० [स०] जिसने व्यवहार द्वारा ही चिकित्सा आदि का अनुभव प्राप्त किया हो, शास्त्र के अध्ययन द्वारा नही।

सिद्धसाध्य[1]—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का मत्र। २ सबूत। प्रमाण (को०)।

सिद्धसाध्य[2]—वि० १ जो किया जानेवाला काम पूरा कर चुका हो। २ प्रमाणित। साबित।

सिद्धसारस्वत—वि० [स०] जो सरस्वती को सिद्ध कर चुका हो [को०]।

सिद्धसिंधु—सज्ञा पु० [स० सिद्धसिन्धु] आकाश गगा। मदाकिनी।

सिद्धसिद्ध—वि० [स०] तत्रसार के अनुसार विशेष प्रभाव कारक एक मत्र [को०]।

सिद्धसुसिद्ध—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का मत्र।

सिद्धसेन—सज्ञा पु० [स०] कार्तिकेय।

सिद्धसेवित—सज्ञा पु० [स०] १ शिव या भैरव का एक रूप। बटुक भैरव। २ वह जो सिद्धो द्वारा सेवित हो।

सिद्धस्थल—सज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सिद्धस्थली] वह स्थान जो सिद्ध या प्रभावकर हो।

सिद्धस्थाली—सज्ञा स्त्री० [स०] सिद्ध योगियो की बटलोई जिसमे से आवश्यकतानुसार जो भी ईप्सित हो और जितना चाहे उतना भोजन निकाला जा सकता है।

विशेष—कहते है कि इस प्रकार की एक बटलोई व्यासजी ने पाडवो के बनवास के समय द्रौपदी को दी थी।

सिद्धहस्त—वि० [स०] १. जिसका हाथ किसी काम मे मँजा हो। २ कार्यकुशल। प्रवीण। निपुण।

सिद्धहस्तता—सज्ञा स्त्री० [स०] निपुणता। प्रवीणता। कौशल। उ०—उसकी सिद्धहस्तता पर मै मुग्ध हूँ।—कठहार (भू०), पृ० १।

सिद्धागना—सज्ञा स्त्री० [स० सिद्धाङ्गना] सिद्ध नामक देवताओ की स्त्रियाँ। वह नारी जिसे सिद्धि प्राप्त हो।

सिद्धाजन—सज्ञा पु० [स० सिद्धाञ्जन] वह अजन जिसे आँख मे लगा लेने से भूमि के नीचे की वस्तुएँ (गडे खजाने आदि) भी दिखाई देने लगती है।

सिद्धात—सज्ञा पु० [स० सिद्धान्त] १ भलीभाँति सोच विचार कर स्थिर किया हुआ मत। वह बात जिसके सदा सत्य होने का नि[illegible]। उसूल। २ प्रधान लक्ष्य। मुख्य उद्देश्य [illegible]क मतलब। ३ वह बात जो विद्वानो या उनके [illegible]प्रदाय द्वारा सत्य मानी जाती हो। मत।

[illegible]स्त्र मे सिद्धात चार प्रकार के [illegible], प्रतितत्र सिद्धात, अधिक [illegible]त। सर्वतत्र वह सिद्धात के

**सिद्धि[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

**सिद्धि[2]**—संज्ञा स्त्री० १ काम का पूरा होना। पूर्णता। प्रयोजन निकलना। जैसे,—कार्य सिद्ध होना। २ सफलता। कृतकार्यता। कामयाबी। ३ लक्ष्यवेध। निशाना मारना। ४ परिशोध। बेबाकी। चुकता होना (ऋण का)। ५ प्रमाणित होना। साबित होना। ६ किसी बात का ठहराया जाना। निश्चय। पक्का होना। ७ निर्णय। फैसला। निबटारा। ८ हल होना। ९ परिपक्वता। पकना। सीझना। १० वृद्धि। भाग्योदय। सुखसमृद्धि। ११ तप या योग के पूरे होने की अलौकिक शक्ति या सपन्नता। विभूति।

विशेष—योग की अष्टसिद्धियाँ प्रसिद्ध है—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, और वशित्व। पुराणो मे ये आठ सिद्धियाँ और बतलाई गई है—अजन, गुटका, पादुका, धातुभेद, बेताल, वज्र, रसायन और योगिनी। साख्य मे सिद्धियाँ इस प्रकार कही गई है तार, सुतार, तारतार, रम्यक, आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक।

१२ मुक्ति। मोक्ष। १३ अद्भुत प्रवीणता। कौशल। निपुणता। कमाल। दक्षता। १४ प्रभाव। असर। १५ नाटक के छत्तीस लक्षणो मे से एक जिससे अभिमत वस्तु की सिद्धि के लिये अनेक वस्तुओ का कथन होता है। जैसे,—कृष्ण मे जो नीति थी, अर्जुन मे जो विक्रम था, सब आपकी विजय के लिये आप मे आ जाय। १५ ऋद्धि या वृद्धि नाम की ओषधि। १७ बुद्धि। १८ सगीत मे एक श्रुति। १९ दुर्गा का एक नाम। २० दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो धर्म की पत्नी थी। २१ गणेश की दो स्त्रियो मे से एक। २२ मेढासिगी। २३ भाँग। विजया। २४ छप्पय छद के ४१ वे भेद का नाम जिसमे ३० गुरु और ९२ लघु कुल १२२ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है। २५ राजा जनक की पुत्रवधू। लक्ष्मीनिधि की पत्नी। २६ किसी नियम या विधि की वैधता (को०)। २७ समस्या का समाधान (को०)। २८ तत्परता (को०)। २९ सिद्धपादुका जिसे पहनकर जहाँ कही भी आवागमन किया जा सके (को०)। ३० अतर्धान। लोप (को०)। ३१ उत्तम प्रभाव। अच्छा असर (को०)।

**सिद्धिक**—संज्ञा पुं० [स०] सिद्धि से प्राप्त अलौकिक शक्ति [को०]।

**सिद्धिकर**—वि० [स०] १ सिद्धि करनेवाला। सफलता दिलानेवाला। २ समृद्धिकारक [को०]।

**सिद्धिकारक**—वि० [स०] १ प्रभावी। असर करनेवाला। २ दे० 'सिद्धिकर' [को०]।

**सिद्धिकारण**—संज्ञा पु० [स०] सिद्धि या मुक्ति का कारण [को०]।

**सिद्धिकारी**—वि० [स० सिद्धिकारिन्] सिद्धि करने या करानेवाला [को०]।

**सिद्धि गुटिका**ⓤ—संज्ञा स्त्री० [स०] वह गुटिका जिसकी सहायता से रसायन बनाया या इसी प्रकार की और कोई सिद्धि की जाती हो। उ०—सिद्धि गुटिका अब मो सँग कहा। भएउँ राँग सन हिय न रहा।—जायसी (शब्द०)।

**सिद्धिद[1]**—वि० [स०] १ सिद्धि देनेवाला। २ ईश्वर सायुज्य या मोक्ष देनेवाला (को०)।

**सिद्धिद[2]**—संज्ञा पु० १ बटुक भैरव। २ शिव (को०)। ३ पुत्रजीव नाम का वृक्ष। ४ बडा शाल वृक्ष।

**सिद्धिदर्शी**—वि० [सं० सिद्धिदर्शिन्] १ भविष्य की सफलता या स्थिति का ज्ञान रखनेवाला [को०]।

**सिद्धिदाता**—संज्ञा पुं० [सं० सिद्धिदातृ] [स्त्री० सिद्धिदात्री] (सिद्धि देनेवाले) गणेश।

**सिद्धिदात्री**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा का एक रूप। नव दुर्गा मे अतिम देवी [को०]।

**सिद्धिप्रद**—वि० [स०] [वि० स्त्री० सिद्धिप्रदा] सिद्धि देनेवाला।

**सिद्धिभूमि**—संज्ञा स्त्री० [स०] वह स्थान जहाँ योग या तप शीघ्र सिद्ध होता हो।

**सिद्धिमार्ग**—संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धि प्राप्त करने का उपाय। २ सिद्ध लोक की प्राप्ति का मार्ग [को०]।

**सिद्धियात्रिक**—संज्ञा पुं० [स०] वह यात्री जो योग की सिद्धि प्राप्त करने के लिये यात्रा करता हो।

**सिद्धियोग**—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष मे एक प्रकार का शुभ योग।

**सिद्धियोगिनी**—संज्ञा स्त्री० [स०] एक योगिनी का नाम।

**सिद्धियोग्य**—वि० [स०] जो सिद्धि के लिये जरूरी हो [को०]।

**सिद्धिरस**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिद्धरस'।

**सिद्धिराज**—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम।

**सिद्धिलाभ**—संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धि का प्राप्त होना [को०]।

**सिद्धिली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी पिपीलिका। छोटी चीटी।

**सिद्धिवर्ति**—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सिद्धवर्ति' [को०]।

**सिद्धिविनायक**—संज्ञा पु० [सं०] गणेश की एक मूर्ति। सिद्धविनायक गणेश [को०]।

**सिद्धिसाधक**—संज्ञा पु० [स०] १ सफेद सरसो। २ दमनक। दौने का पौधा।

**सिद्धिस्थान**—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुण्य स्थान। मोक्ष प्राप्ति का स्थान। तीर्थ। २. आयुर्वेद के ग्रथ मे चिकित्सा का प्रकरण।

**सिद्धीश्वर**—संज्ञा पुं० [स०] १ शिव। महादेव। २, एक पुण्य क्षेत्र का नाम।

**सिद्धेश्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सिद्धेश्वरी] १. बडा सिद्ध। महायोगी। उ०—सत्यनाथ आदिक सिद्धेश्वर। श्रीशैलादि बसै श्री शकर।—शकरदिग्विजय (शब्द०)। २ शिव। महादेव। ३ गुलतुर्रा। शखोदरी। ४ एक पर्वत का नाम। श्रीशैल नामक पर्वत (को०)।

**सिद्धेश्वरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नव देवियो मे एक का नाम [को०]।

**सिद्धोदक**—संज्ञा पुं० [स०] १. काँजी। काजिक। २ एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

**सिद्धौघ**—संज्ञा पुं० [स०] तात्रिको के गुरुओ का एक वर्ग। मत्र शास्त्र के आचार्य।

सयो० क्रि० - देना ।

**सिनट**—सज्ञा पु० [अ० सेनेट] १ शासन का समस्त अधिकार रखनेवाली सभा । २ विश्वविद्यालय का प्रबध करनेवाली सभा ।

**सिना**—सज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'सिनान' [को०] ।

यौ०—सिनाकश = तीरदाज । धनुर्धर ।

**सिनान**—सज्ञा स्त्री० [फा० सिनाँ] १ बाण की नोक । अनी । २, बरछा । भाला । ३ बरछी की नोक [को०] ।

**सिनिवाली**Ⓤ - सज्ञा स्त्री० [स० सिनीवाली] एक नदी । दे० 'सिनीवाली'—५ । उ०—सिनिवाली, रजनी, कुहू, मदा, राका, जानु । सरस्वती अरु जनुमती सातो नदी बखानु ।—केशव (शब्द०) ।

**सिनी**—सज्ञा पु० [स० शिनि] १ एक यादव का नाम जो सात्यकि का पिता था । उ०—सिनि स्यदन चढि चलेउ लाइ चदन जदुनदन । —गोपाल (शब्द०) । २ क्षत्रियो की एक प्राचीन शाखा ।

**सिनी**[1]—सज्ञा पु० [स० शिनि] एक यादव वीर । विशेष दे० 'शिनि'—३ । उ०—चलेउ सिनीपति विदित धीर धरनीपति अति मति ।—गोपाल (शब्द०) ।

यौ०—सिनीपति = क्षत्रियो की एक प्राचीन शाखा का प्रधान । विशेष दे० 'शिनि'—३ ।

**सिनी**[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ 'सिनीवाली' । २. गौर वर्ण की स्त्री (को०) ।

**सिनीत**—सज्ञा स्त्री० [देश०] सात रस्सियो को बटकर बनाई गई चिपटी रस्सी । (लश्करी) ।

**सिनीवाली**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक वैदिक देवी, मत्रो मे जिसका राका सरस्वती आदि के साथ मिलता है ।

विशेष—ऋग्वेद मे यह चौडी कटिवाली, सुदर भुजाओ और उँगलियोवाली कही गई है और गर्भप्रसव की अधिष्ठात्री देवी मानी गई है । अथर्ववेद मे सिनीवाली को विष्णु की पत्नी कहा है । पीछे की श्रुतियो मे जिस प्रकार राका शुक्ल पक्ष की द्वितीया की अधिष्ठात्री देवी कही गई है, उसी प्रकार सिनीवाली शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा की, जब कि नया चद्रमा प्रत्यक्ष निकला नही दिखाई देता, देवी बताई गई है ।

२ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा । ३ अगिरा की एक पुत्री का नाम । ४ दुर्गा । ५ मार्कंडेय पुराण मे वर्णित एक नदी का नाम ।

**सिनेट**—सज्ञा स्त्री० [अ० सेनेट] दे० 'सिनट' ।

**सिनेमा**—सज्ञा पु० [अ०] १, वह मकान जहाँ बायस्कोप दिखाया जाता है । २ छाया चित्र । चल चित्र ।

यौ०—सिनेमाघर, सिनेमा हाउस = वह स्थान जहाँ सिनेमा दिखाया जाय ।

**सिनेरियो**—सज्ञा स्त्री० [अ०] पटकथा । किसी कहानी का नाटय रूप । उ०—कौन सिनेरियो लिखता और किसे डायलॉग का ठेका मिलता ।—तारिका, पृ० २४ ।

**सिनेह**Ⓤ†—सज्ञा पु० [सं० स्नेह] दे० 'स्नेह' । उ०—(क) खत कुमेटा मन बुझल सिनेह ।—विद्यापति, पृ० ५६३ । (ख) सिनेह और ममता का भूखा ।—नई०, पृ० ८१ ।

**सिनो**—सज्ञा पु० [देश०] खेत की पहली जोताई ।

**सिन्न**—सज्ञा पु० [अ०] दे० 'सिन'[2] ।

**सिन्नी**†—सज्ञा स्त्री० [फा० शीरीनी] १ मिठाई । २ बताशे या मिठाई जो किसी खुशी मे बाँटी जाय । ३ बताशे या मिठाई जो किसी पीर या देवता को चढाकर प्रसाद की तरह बाँटी जाय ।

क्रि० प्र०—चढाना ।—बाँटना ।—मानना ।

**सिपर**—सज्ञा स्त्री० [फा०] वार रोकने का हथियार । ढाल । उ०—तूल भूल, लाल तूल लाल तल तूल नील टील, तूल नील सैल माथ पै सिपर है ।—गिरधर (शब्द०) ।

मुहा०—सिपर डालना, सिपर फेकना = लडाई मे हथियार डाल देना । पराजय स्वीकार कर लेना । सिपर मुँह पर लेना, सिपर लेना = आघात मे बचाव के लिये ढाल को आगे करना ।

यौ०—सिपर अदाजी = हार मान लेना ।

**सिपरा**—सज्ञा स्त्री० [स० सिप्रा] दे० 'सिप्रा' ।

**सिपह**—सज्ञा पु० [फा०] 'सिपाह' का लघु रूप । सेना । फौज [को०] ।

यौ०—सिपहगरी, सिपहदार = सेनानायक । सेनापति । सिपहबद, सिपहबुद = सिपहसालार ।

**सिपहगरी**—सज्ञा स्त्री० [फा०] सिपाही का काम । युद्ध व्यवसाय ।

**सिपहसालार**—सज्ञा पु० [फा०] फौज का सबसे बडा अफसर । सेनापति । सेनानायक ।

**सिपहसालारी**—सज्ञा स्त्री० [फा०] सेनापतित्व । सिपहसालार का कार्य [को०] ।

**सिपाई**‡—सज्ञा पु० [फा० सिपाही] दे० 'सिपाही' । उ०—कह्यो सिपाई अबहिं चोराई । इतै भागि अब कह सिर नाई । —रघुराज (शब्द०) ।

**सिपारस**‡—सज्ञा स्त्री० [फा० सिफारिश] दे० 'सिफारिश' । उ०—इतिय सिपारस आसु किय, देव करण लघु भाय । सुनत भूप परिमाल कहि, बिम्बा लेहु बुलाय ।—रा० रासो, पृ० ३० ।

**सिपारसी**‡—वि० [फा० सिफारिशी] दे० 'सिफारशी' । उ०—सिपारसी डरपुकने सिट्टू बोलै बात अकामी ।—भारतेदु ग्र०, भा० १, पृ० ३३३ ।

**सिपारह**—सज्ञा पु० [फा० सिपारह्] दे० 'सिपारा' । उ०—नमै निज साइय पच वपत्त । सिपारह तीस पढै दिन रत्त ।—पृ० रा०, ६।६७ ।

**सिपारा**—सज्ञा पु० [फा० सिपारह्] मुसलमानो के धर्मग्रथ कुरान के तीस भागो मे से कोई एक ।

विशेष—कुरान तीस भागो मे विभक्त किया गया है जिनमे से प्रत्येक सिपारा कहलाता है ।

**सिपारी**—सज्ञा स्त्री० [फा०] सुपारी । डली । छालिया [को०] ।

**सिपाव**—सज्ञा पु० [फा० सेहपाव] लकडी की एक प्रकार की टिकटी या तीन पायो का टाँचा जो छप्पर आदि मे आगे की ओर अडान के लिये दिया जाता है ।

**सिपावा भाथी**—सज्ञा स्त्री० [फा० सेहपाव + हि० भाथी] लोहारो की हाथ से चलाई जानेवाली धौंकनी।

**सिपास**—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ धन्यवाद। शुक्रिया। कृतज्ञताप्रकाशन। २ प्रशसा। बडाई। स्तुति।

यौ०—सिपासगुजार, सिपासगो = स्तुतिपाठक। प्रशसक। सिपासनामा।

**सिपासनामा**—सज्ञा पुं० [फा० सिपासनामह्] १ विदाई के समय का अभिनदनपत्र। २ प्रतिष्ठापत्र। मानपत्र।

**सिपाह**—सज्ञा स्त्री० [फा०] फौज। सेना। कटक। लश्कर। उ०—अरि जय चाह चले सगर उछाह रेल विविध सिपाह हमराह जदुनाह के।—गोपाल (शब्द०)।

**सिपाहगरी, सिपाहगिरी**—सज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ सिपाही का काम या पेशा। अस्त्र व्यवसाय। २ शूरता। बहादुरी (को०)।

**सिपाहियाना**—वि० [फा० सिपाहियानह्] १ सिपाहियो का सा। सैनिको का सा। जैसे,—सिपाहियाना ढग, सिपाहियाना ठाट। २ वीरतापूर्ण। शौर्ययुक्त। बहादुराना (को०)।

**सिपाही**—सज्ञा पु० [फा०] १ सैनिक। लडनेवाला। शूर। योद्धा। फौजी आदमी। २ कास्टेबिल। पुलिस। तिलगा। ३ चपरासी। अरदली।

**सिपुर्द**‡—वि० [फा० सिपुर्द] सौंपा हुआ। हवाले किया हुआ। दे० 'सुपुर्द'।

**सिपुर्दगी**—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ सिपुर्द करना। सौंपना। २ हवालात। हिरासत (को०)।

**सिपुर्दा**—वि० [फा० सिपुर्दह्] सौपा हुआ। हस्तातरित (को०)।

**सिपेद**—वि० [फा०] श्वेत। सफेद (को०)।

**सिपेद**—सज्ञा पु० [फा० सिपेदह्] सफेदी। धवलिमा (को०)।

**सिप्पर**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [फा० सिपर] दे० 'सिपर'। उ०—झम झमत सिप्पर सेल सांगरु जिरह जग्गो दीसिय। मनु सहित उडगन नव ग्रहनु मिल जुद्ध रक्कि वरीसिय।—सुजान (शब्द०)।

**सिप्पा**—सज्ञा पु० [देश०] १ निशाने पर किया हुआ वार। लक्ष्यवेध। २ कार्य साधन का उपाय। डौल। युक्ति। तदबीर। टिप्पस।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

मुहा०—सिप्पा लडना या भिडना = (१) युक्ति या तदबीर होना। अभिसधि होना। (२) युक्ति सफल होना। इधर उधर की कोशिश कामयाब होना। सिप्पा भिडाना या लडाना = युक्ति या तदबीर करना। लोगो से मिलकर उन्हे कार्यसाधन मे सहायक बनाना। इधर उधरकर कहसुनकर कोशिश करना। जैसे—जगह के लिये उसने बहुत सिप्पा लडाया पर न मिली।

३ डौल। सूत्रपात। प्रारभिक कार्रवाई।

मुहा०—सिप्पा जमाना = डौल खडा करना। किसी काम की नीव देना। किसी कार्य के अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करना। भूमिका बाँधना।

४ रग। प्रभाव। धाक।

क्रि० प्र०—जमना। जमाना।

**सिप्पी**†—सज्ञा स्त्री० [हि० सीपी] दे० 'सीपी'।

**सिप्र**—सज्ञा पुं० [स०] १ सुधाशु। चद्र। २ एक सरोवर का नाम। ३ पसीना। प्रस्वेद (को०)।

**सिप्रा**—सज्ञा पु० [स०] १ महिषी। भैंस। २ एक झील। ३ स्त्रियो का कटिबध। ४ मालवा की एक नदी जिसके किनारे उज्जैन (प्राचीन उज्जयिनी) बसा है। शिप्रा।

**सिफत**—सज्ञा स्त्री० [अ० सिफत] १ विशेषता। गुण। उ०—जबान बिना क्या सिफत आवै।—पलटू०, पृ० ६३। २ लक्षण। उ०—भला मखलूक खालिक की सिफत समझे कहाँ कुदरत। इसी से नेति नेति से पार वेदो ने पुकारा है।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ८५१। ३ स्वभाव। ४ प्रशसा। स्तुति (को०)। ५ सूरत। शक्ल।

**सिफति**Ⓤ†—सज्ञा स्त्री० [अ० सिफत] गुणगान। स्तुति। प्रशस्ति। उ०—सिफति करौं दिन राति टारे ना टरौंगा।—पलटू०, पृ० ८६।

**सिफर**—सज्ञा पु० [अ० सिफर, अ० साइफर, सिफर] १ शून्य। सुन्ना। बिंदी। २ रिक्त, साधारण या तुच्छ व्यक्ति (को०)।

**सिफलगी**—सज्ञा स्त्री० [अ० सिफलह् + फा० गी] ओछापन। कमीनापन।

**सिफला**—वि० [अ० सिफलह्, सिफ्लह्] १ नीच। कमीना। २ छिछोरा। ओछा।

यौ०—सिफलाकार = निम्न कोटि के काम करनेवाला। सिफलाखू = 'दे० सिफलामिजाज'। सिफलानवाज = नीचो, छिछोरो को उत्साहित करनेवाला। सिफलापन। सिफलापरवर = सिफलानवाज। सिफलामिजाज = क्षुद्र प्रकृतिवाला। निम्न स्वभाव का।

**सिफलापन**—सज्ञा पु० [अ० सिफलह् + हि० पन (प्रत्य०)] १ छिछोरापन। ओछापन। २ पाजीपन।

**सिफा**—सज्ञा स्त्री० [अ० शिफ] दे० 'शिफा'।

**सिफात**—सज्ञा स्त्री० [अ० सिफात] सिफ्त का बहुवचन। उ०—अलख सर्व नापै कहौ लखौ कौन विधि जाइ। पाक जात की रसिकनिधि जगत सिफात दिखाइ।—स० सप्तक, पृ० १७६।

**सिफाती**—वि० [अ० सिफाती] १ जो सहज या स्वाभाविक न हो। जो अभ्यास आदि से प्राप्त हो। २ सिफत से सबद्ध। गुण आदि से सबद्ध। उ०—सिफाती सिजदा करै जाती बेपरवाह। दादू०, पृ० ३५०।

**सिफारत**—सज्ञा स्त्री० [फा० सिफारत] १ दौत्य। दूत कार्य। २ किसी राज्य का प्रतिनिधिमडल (को०)।

**सिफारतखाना**—सज्ञा पुं० [फा० सिफारतखानह्] दूतावास। दूत के रहने तथा कार्य करने का स्थान (को०)।

**सिफारश**—सज्ञा पुं० [फा० सिफारिश] दे० 'सिफारिश'। उ०—इस्का लेन देन डेढ पौने दो बरस से एक दोस्त की सिफारश

पर लाला मदन मोहन के यहाँ हुआ है।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० १६४।

सिफारिश—सज्ञा स्त्री० [फा० सिफारिश] १ किसी के दोष क्षमा करने के लिये किसी से कहना सुनना। २ किसी के पक्ष मे कुछ कहना सुनना। किसी का कार्य सिद्ध करने के लिये किसी से अनुरोध। ३ माध्यम। जरिया। वसीला। ४ नौकरी देनेवाले से किसी नौकरी चाहनेवाले की तारीफ। नौकरी दिलाने के लिये किसी की प्रशसा। जैसे,—नौकरी तो सिफारिश से मिलती है। ५ सस्तुति।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सिफारिशनामा—सज्ञा पु० [फा० सिफारिशनामह्] सिफारिशी पत्र या चीठी।

सिफारिशी वि० [फा० सिफारिशी] १ सिफारिशवाला। जिसमे सिफारिश हो। जैसे,—सिफारिशी चिट्ठी। २ जिसकी सिफारिश की गई हो। जैसे,—सिफारिशी टट्टू। ३ अनुशसा या सिफारिश करनेवाला।

सिफारिशी टट्टू—सज्ञा पु० [फा० सिफारिशी + हिं० टट्टू] वह जो केवल सिफारिश या खुशामद से किसी पद पर पहुँचा हो।

सिफाल—सज्ञा स्त्री० [फा० सिफाल] १ मिट्टी का बरतन। मृत्पात्र। २ मिट्टी का ठीकरा [को०]।

सिफालगर वि० [फा० सिफालगर] मिट्टी के बरतन बनानेवाला। कुम्हार [को०]।

सिफाली—वि० [फा० सिफाली] मिट्टी का। मृत्तिकानिर्मित। मिट्टी का बना हुआ [को०]।

सिफ्त, सिफ्ति—सज्ञा स्त्री० [फा० सिफत] दे० 'सिफत'। उ०—(क) खुदा तुज को शाही सजावार है। सिफ्त को तेरी कुछ न आकार है।—दक्खिनी०, पृ० २९९। (ख) भी सुदर कहि न सकै कोइ तिमनो जिसदी सिफ्ति अलेपै।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० २७५।

सिविका—सज्ञा स्त्री० [स० शिविका] दे० 'शिविका'। उ०—सिविका सुभग ओहार उघारी।—मानस, १।३४८।

सिमंत—सज्ञा पु० [स० सीमन्त] दे० 'सीमत'। उ०—स्याम के सीस सिमत सराहि सनाल सरोज फिराइ कै मारो।—मन्नालाल (शब्द०)।

सिम—वि० [स०] पत्येक। सपूर्ण। समग्र। समस्त [को०]।

सिमई—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिँवई] दे० 'सिवँई,' 'सिवैयाँ'।

सिमट—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिमटना] सिमटने की क्रिया या भाव।

सिमटना—क्रि० अ० [स० समित (=एकत्र) + हिं० ना (प्रत्य०) या देश०] १ दूर तक फैली हुई वस्तु का थोडे स्थान मे आ जाना। सुकडना। सकुचित होना। २ शिकन पडना। मलवट पडना। ३. इधर उधर बिखरी हुई वस्तु का एक स्थान पर एकत्र होना। बटोरा जाना। वटुरना। इकट्ठा होना। ४ व्यवस्थित होना। तरतीव से लगना। ५ पूरा होना। निवटना। जैसे,—मारा काम सिमट गया। ६ सकुचित होना। लज्जित होना। ७ सहमना। सिटपिटा जाना।

संयो० क्रि०—जाना।

सिमटी—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कपड़ा जिसकी बुनावट खेस के समान होती है।

सिमर—सज्ञा पु० [स० शाल्मलि ?] सेमर। विशेष दे० 'सेमल'। उ०—चदन भरम सिमर आलिगल सालि रहल हिय काटे।—विद्यापति, पृ० ९१।

सिमरख—सज्ञा पुं० [फा० सगर्फ] दे० 'शिगरफ'।

सिमरगोला—सज्ञा पुं० [सिमर ? + गोला] एक प्रकार की मेहराब।

सिमरन—सज्ञा पु० [स० स्मरण] याद करना। स्मरण। स्मृति।

सिमरना—क्रि० स० [स० स्मरण] दे० 'सुमिरना'। उ०—(क) राम नाम का सिमरनु छोडिया माजा हाथ बिकाना।—तेग बहादुर (शब्द०)। (ख) सिमरे जो एक वार ताको राम बार वार बिसरे बिसारे नाही सो क्यो बिसराइये।—हृदयराम (शब्द०)।

सिमरिख—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिडिया।

सिमल—सज्ञा पु० [स० सीर (=हल) + माला] १ हल का जूआ। २ जूए मे पडी हुई खूँटी।

सिमला आलू—सज्ञा पु० [हिं० शिमला + आलू] एक प्रकार का पहाडी बडा आलू। मरबुली।

सिमसिम—वि० [?] जो कुछ कुछ आर्द्र या शीतल हो।

सिमसिमाना—क्रि० अ० [?] साधारण आर्द्रता या शीतलता प्रतीत होना।

सिमाना—सज्ञा पुं० [स० सीमान्त] सिवाना। हद।

सिमाना—क्रि० स० [हिं० सिलाना] दे० 'सिलाना'। उ०—लाओ वेगि याही छन मन की प्रवीन जानि लायो दुख मानि व्योत लई सो सिमाइ कै।—नाभा (शब्द०)।

सिमिटना—क्रि० अ० [स० समित + हिं० ना (प्रत्य०) या देश०] दे० 'सिमटना'। उ०—(क) यह सुनि जहाँ तहाँ ते सिमिटैं आइ होइ इक ठौर।—सूर (शब्द०)। (ख) जलचर वृद जाल अतरगत सिमिटि होत एक पास। एकहि एक खात लालच वस नहिं देखत निज नास।—तुलसी (शब्द०)।

सिमृति—सज्ञा स्त्री० [स० स्मृति] दे० 'स्मृति'। उ०—द्रुपद सुता को लज्जा राखी। वेद पुरान सिमृति सब साखी।—लाल कवि (शब्द०)।

सिमेट—पज्ञा पु० [अ० सीमेट] १. एक विशेष प्रकार के पत्थर का विशिष्ट प्रक्रिया से तैयार किया हुआ चूर्ण जो पलस्तर आदि करने के काम मे आता है। २ एक प्रकार का लसदार गारा जो सूखने पर बहुत कडा और मजबूत हो जाता है।

सिमेटना—क्रि० स० [स० समित + हिं० ना] दे० 'समेटना'।

सिम्त—सज्ञा स्त्री० [अ०] ओर। तरफ। दिशा। उ०—इस हिद से सब दूर हुई कुफ की जुल्मत, की तने व रहमत, नक्कारए ईमाँ को हरेक सिम्त बजाया।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ५३०।

सिय(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] सीता। जानकी। उ०—उपदेश यह जेहि तात तुम ते राम सिय सुख पावही।—तुलसी (शब्द०)।

सियना(पु)'—क्रि० स० [सं० सजन] उत्पन्न करना। रचना। उ०—जेहि विरंचि रचि सीय सँवरि औ रामहिं ऐसो रूप दियो री। तुलसिदास तेहि चतुर विधाता निज कर यह सजोग सियो री।—तुलसी (शब्द०)।

सियना†'—क्रि० स० [सं० सीवन] दे० 'सीना'।

सियर(पु)—वि० [सं० शीतल, प्रा० सीअल] दे० 'सियरा'। उ०—पदुमावति तन सियर सुवासा। नैहर राज कंत पर पासा।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० ३४६।

सियरा(पु)'—वि० [सं० शीतल, प्रा० सीअड] [स्त्री० सियरी] १ ठंढा। शीतल। उ०—(क) श्याम सुपेत कि राता पियरा अवरण वरण कि नाता सियरा।—कबीर (शब्द०)। (ख) सियरे वदन सूखि गए कैसे। परसत तुहिन तामरस जैसे।—तुलसी (शब्द०)। २ कच्चा। ३ छाया। छाँह।

सियरा'†—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल, प्रा० सिआल] सियार। शृगाल।

सियराई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल, प्रा० सीअल, हिं० सियरा+ई (प्रत्य०)] शीतलता। ठंढक। उ०—मुकुलित कुसुम नयन निद्रा तजि रूप सुधा सियराई।—सूर (शब्द०)।

सियराना(पु)—क्रि० अ० [हिं० सियरा+ना] ठंढा होना। जुडाना। शीतल होना। उ०—(क) हारन सो हहरात हियो मुकुता सियरात सुवेसर ही को।—पद्माकर (शब्द०)। (ख) पादप पुहुमि नव पल्लव ते पूरि आए हरि आए सियराए भाए ते शुमार ना।—रघुराज (शब्द०)।

सियरी'—वि० [सं० शीतल] दे० 'सियरा'। उ०—(क) लोचे परी सियरी पर्यंक पै बीती घरीन खरी खरी सोचैं।—पद्माकर (शब्द०)। (ख) खरे उपचार खरी सियरी सियरे तै खरोई खरो तन छीजै।—केशव (शब्द०)।

सियरी'—संज्ञा स्त्री० [फा० सैरी] तृप्ति। अघाव। शांति। मनस्तोष। तुष्टि। उ०—मैं तुम्हारा दिल लेने के लिये कहती थी। मर्दों की तो कैफियत यह है कि एक दर्जन भर भी औरतें हो तो भी उनकी सियरी नहीं होती।—सैर०, पृ० २५।

सियह—वि० [फा०] दे० 'सियाह'। उ०—मुझे तेरी जुल्फों का ध्यान आ गया। जो देखी सियह सिर पै छाई घटा।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ८६०।

सिया—संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] सीता। जानकी। उ०—तब अगद इक वचन कह्यो। तो करि सिंधु सिया सुधि लावै किहिं बल इतो लह्यो।—सूर (शब्द०)।

सियाक—संज्ञा पुं० [अ० सियाक] १ गणित। हिसाब। २ चलाना। ३. बाज के पैर की डोर [को०]।

सियादत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सैयद होने का भाव। २ प्रतिष्ठा। बुजुर्गी। ३ सरदारी। अध्यक्षता [को०]।

सियाना†'—वि० [सं० सज्ञान, सज्ञाण] दे० 'सयाना'। उ०—सो सतगुरु जो होय सियाना।—कबीर सा०, पृ० १६००।

सियाना'—क्रि० स० [सं० सीवन] दे० 'सिलाना'।

सियानी† वि० [सं० सज्ञान] १ चतुर। बुद्धिमती। अनुभवी। उ०—पाँच सखी मिलि दखन आई एक ते एक सियानी।—कबीर० सा० सं०, पृष्ठ ३१। २ वयस्का। वयप्राप्त। युवती। उ०—देखते देखते सियानी होने लगी।—फूलो०, पृ० २१६।

सियानोद—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

सियापा—संज्ञा पुं० [फा० सियाहपोश] वह दृश्य मनुष्य के शोक में कुछ काल तक बहुत सी स्त्रियों के प्रतिदिन इकट्ठा होकर रोने की रीति। मातम।

विशेष—यह रिवाज पंजाब आदि पश्चिमी प्रांतों में पाया जाता है।

सियार†—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल, पा० सिआल] [स्त्री० सियारी, सियारिन] गीदड। जंबुक।

सियार लाठी—संज्ञा पुं० [देश०] अमलतास।

सियारा'—संज्ञा पुं० [सं० सीता (=कृषिचिह्न), प्रा० सीआ+रा (प्रत्य०)] जुती हुई जमीन बराबर करने का लकड़ी का फावड़ा।

सियारा'—संज्ञा पुं० [सं० शीतकाल] दे० 'सियाला'।

सियारी—संज्ञा स्त्री० [सं० शृगाली] दे० 'सियार'।

सियाल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] शृगाल। गीदड। उ०—चहुँ दिसि सूर सोर करि धावैं ज्यों केहरिहि सियार।—सूर (शब्द०)।

सियाला'—संज्ञा पुं० [सं० शीतकाल] शीतकाल। जाड़े का मौसिम।

सियाला'—संज्ञा पुं० [सं० सीता, प्रा० सीआ+ला (प्रत्य०)] दे० 'सियारा'।

सियाला पोका—संज्ञा पुं० [हिं० सियारा (=शीतयुक्त, आर्द्र) (?) + पोका (=कीडा)] एक बहुत छोटा कीडा जो सफेद चिपटे कोश के भीतर रहता है और पुरानी लोनी मिट्टीवाली दीवारों पर मिलता है। लोना पोका।

सियाली'—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का चिडिया कद।

सियाली'—वि० [सं० शीतकालीन] १ जाड़े के मौसिम की। २ खरीफ की फसल।

सियावड—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सियावडी'।

सियावडी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ अनाज का वह हिस्सा जो खेत कटने पर खलियान में से साधुओं के निमित्त निकाला जाता है। २ वह काली हाँडी जो खेतों में चिडियों को डराने और फसल को नजर से बचाने के लिये रखी जाती है।

सियासत'—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ देश का शासन प्रबंध तथा व्यवस्था। २ नीति। कूटनीति। राजनीति (को०)। ३ छल। फरेब। धूर्तता। मक्कारी (को०)। ४ डाँट डपट। चेतावनी (को०)। ५ दंड। सजा (को०)।

**सियासत[2]**—सज्ञा स्त्री० [स० शास्ति] १ शासन। दड। पीडन। २. कष्ट। यत्रणा।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

यौ०—सियासतगर = दड देनेवाला। सियासतगाह = (१) दड देने का स्थान। (२) मक्कारी का अड्डा। सियासतदाँ = नीतिज्ञ। राजनीति मे पटु।

**सियासी**—वि० [फा०] १ राजनीति सबधी। राजनीति का। २ राजनीतिज्ञ [को०]।

**सियाह[1]**—वि० [फा०] १ दे० 'स्याह'। २ अशुभ। मातमी।

यौ०—सियाहकार = दुश्चरित्र। गुनाहगार। सियाहकारी = गुनाह। बुरा काम। सियाहगोश। सियाहचश्म = (१) जिसकी आँखे काली हो। (२) बेवफा। (३) शिकारी चिडिया। सियाहजवाँ = जिसका शाप तुरत सिद्ध हो। सियाहदस्त = कजूस। कृपण। सियाहदाना = (१) स्याहदाना। काला जीरा। (२) धनियाँ। (३) सौफ का फूल। सियाहदिल = (१) निष्ठुर। क्रूर। (२) गुनाहगार। अपराधी। सियाहपोश = (१) काले कपडे पहननेवाला। (२) मातम या शोक मनानेवाला। सियाहबख्त = अभागा। बदकिस्मत। सियाहबख्ती = दुर्भाग्य। अभाग्य। सियाहमस्त = मदमत्त। नशे मे चूर। सियाहमस्ती = अत्यधिक मस्ती। सियाहरू = (१) पापी। बदकार। (२) काले मुँह का। कृष्णमुख। सियाहसफेद = हित अहित। बुराई भलाई।

**सियाह[2]**—सज्ञा पु० [अ०] १ चीख पुकार। वावेला। चिल्लाहट। २ जोर की आवाज। निनाद। ३ रोना पीटना [को०]।

**सियाहगोश**—सज्ञा पु० [फा०] १ काले कानवाला। २ बिल्ली की जाति का एक जगली जानवर। वनबिलाव।

विशेष—इसके अग लबे होते है, पूँछ पर बालो का गुच्छा होता है और रग भूरा होता हे। खोपडी छोटी और दाँत लबे होते है। कान बाहर की ओर काले और भीतर की ओर सफेद होते है। इसकी लबाई प्राय ४० इच होती हे। यह घास की झाडियो मे रहता और चिडियो को मारकर खाता है। इसकी कुदान पाँच से छह फुट तक की होती हे। यह सारस और तीतर का शत्रु है। यह बडी सुगमता से पाला और चिडियो का शिकार करने के लिये सिखाया जा सकता हे। इसे अमीर लोग शिकार के लिये रखते हैं।

**सियाहत**—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ देश देश घूमना। पर्यटन। २ यात्रा। सफर [को०]।

**सियाहपोश**—वि० [फा० सियाह + पोश] १ काला या नीला कपडा पहननेवाला। २ अशुभ या भद्दा पोशाक पहने हुए। उ०—हरवक्त सियाहपोश मूँ मे लूको लगाए।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १५५।

**सियाहा**—सज्ञा पु० [फा० सियाहह्] १ आय व्यय की वही। रोजनामचा। वही खाता। २ सरकारी खजाने का वह रजिस्टर जिसमे जमीदारी से प्राप्त मालगुजारी लिखी जाती हे। ३. वह सूची जिसमे काश्तकारो से प्राप्त लगान दर्ज करते है।

मुहा०—सियाहा करना = हिसाब की किताब मे लिखना। टाँकना। चढाना। सियाहा होना = सियाहा मे दर्ज होना। लिखा जाना।

**सियाहानवीस**—सज्ञा पु० [फा०] सियाहा का लिखनेवाला। सरकारी खजाने मे सियाहा लिखने के लिये नियुक्त कर्मचारी।

**सियाही**—सज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'स्याही'।

यौ०—सियाहीचट, सियाहीसोख = सोखता। ब्लाटिंग पेपर।

**सिरग**ⓤ—सज्ञा पु० [हिं० सिर] शीर्ष अग। दे० 'सिर'। उ०—सेतीस सहस सज्जे फिरग। तिन लव झूल टोपी सिरग। —पृ० रा०, १३।१८।

**सिर[1]**—सज्ञा पुं० [स० शिरस्] १. शरीर के सबसे अगले या ऊपरी भाग का गोल तल जिसके भीतर मस्तिष्क रहता हे। कपाल। खोपडी। २ शरीर का सबसे अगला या ऊपर का गोल या लबोतरा अग जिसमे आँख, कान, नाक और मुँह ये प्रधान अवयव होते है और जो गरदन के द्वारा धड से जुडा रहता है। उ०—उत्थि सिर नवइ सब्ब कइ।—कीर्ति०, पृ० ५०।

मुहा०—सिर अलग करना = सिर काटना। प्राण ले लेना। सिर आँखो पर होना = सहर्ष स्वीकार होना। माननीय होना। जैसे,—आपकी आज्ञा सिर आँखो पर है। सिर आँखो पर बिठाना, बैठाना या रखना = बहुत आदर सत्कार करना। (भूत प्रेत या देवी देवता का) सिर आना = आवेश होना। प्रभाव होना। खेलना। सिर उठाना = (१) ज्वर आदि से कुछ फुरसत पाना। जैसे,—जब से बच्चा पडा है, तब से सिर नही उठाया है। (२) विरोध मे खड़ा होना। शत्रुता के लिये सनद्ध होना। मुकाबिल के लिये तैयार होना। जैसे,—बागियो ने फिर सिर उठाया। (३) ऊधम मचाना। दगा फसाद करना। शरारत करना। उपद्रव करना। (४) इतराना। अकड दिखाना। घमड करना। (५) सामने मुँह करना। बराबर ताकना। लज्जित न होना। जैसे,—ऊँची नीची सुनता रहा, पर सिर न उठाया। (६) प्रतिष्ठा के साथ खडा होना। इज्जत के साथ लोगो से मिलना। जैसे,—जब तक भारतवासियो की यह दशा है, तब तक सभ्य जातियो के बीच वे कैसे सिर उठा सकते है? उ०—मान के ऊँचे महल मे या जिसे, सिर उठाये जाति के बच्चे घुसे।—चुभते०, पृ० ५। सिर उठाने की फुरसत न होना = जरा सा काम छोडने को छुट्टी न मिलना। कार्य की अधिकता होना। सिर उठाकर चलना = इतराकर चलना। घमड दिखाया। अकडकर चलना। सिर उतरवाना = सिर कटाना। मरवा डालना। सिर उतारना = सिर काटना। मार डालना। (किसी का) सिर ऊँचा करना = समान का पात्र बनाना। इज्जत देना। (अपना) सिर ऊँचा करना = प्रतिष्ठा के साथ लोगो के बीच खड़ा होना। दस आदमियो मे इज्जत बनाए रखना। सिर आधाकर पडना = चिंता और शोक के कारण सिर नीचा किए पड़ा या बैठा

रहना। सिर काढना = प्रसिद्ध होना। प्रसिद्धि प्राप्त करना। सिर करना = (स्त्रियो के) बाल सँवारना। चोटी गूँथना। (कोई वस्तु) सिर करना = जबरदस्ती देना। इच्छा के विरुद्ध सपुर्द करना। गले मढना। सिर कलम करना या काटना = सिर उतारना। मार डालना। सिर का बोझ टलना = निश्चितता होना। झझट टलना। सिर का बोझ टालना = बेगार टालना। अच्छी तरह न करना। जो लगाकर न करना। सिर के बल चलना = बहुत अधिक आदरपूर्वक किसी के पास जाना। उ०—जो मिले जी खोलकर उनके यहाँ, चाह होती है कि सिर के बल चले।—चोखे०, पृ० १४। सिर खपाना = (१) सोचने विचारने मे हैरान होना। (२) कार्य मे व्यग्र होना। सिर खाली करना = (१) बकवाद करना। (२) माथा पच्ची करना। सोच विचार मे हैरान होना। सिर खाना = बकवाद करके जी उबाना। व्यर्थ की बाते करके तग करना। सिर खुजलाना = मार खाने को जी चाहना। शामत आना। नटखटी सूझना। सिर चकराना = दे० 'सिर घूमना'। सिर चढ जाना = (१) मुँह लग जाना। (२) गुस्ताख होना। निहायत बे अदब होना। उ० नवाब साहब ने जो हँसी हँसी मे उस दिन जरी मुँह लगाया तो सिर चढ गई।—सैर०, पृ० २६। सिर चढा = मुँह लगा। लाडला। धृष्ट। सिर चढाना = (१) माथे लगाना। पूज्य भाव दिखाना। आदरपूर्वक स्वीकार करना। सिर माथे लेना। उ० नृप दूतहि बीरा दीनो। उनि सिर चढाइ करि लीनो।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० १२०। (२) बहुत बढा देना। मुँह लगाना। गुस्ताख बनाना। (३) किसी देवी देवता के सामने सिर काटकर बलि चढाना। सिर घूमना = (१) सिर मे दर्द होना। (२) घबराहट या मोह होना। बेहोशी होना। सिर चढकर बोलना = (१) भूत प्रेत का सिर पर आकर बोलना। (२) स्वय प्रकट हो जाना। छिपाए न छिपना। सिर चढकर मरना = किसी को अपने खून का उत्तरदायी ठहराना। किसी के ऊपर जान देना। सिर चला जाना = मृत्यु हो जाना। सिर जोडकर बैठना = मिलकर बैठना। सिर जोडना = (१) एकत्र होना। पचायत करना। (२) एका करना। षड्यत्र रचना। सिर झाडना = बातों मे कमी करना। सिर झुकाना = (१) सिर नवाना। नमस्कार करना। (२) लज्जा से गरदन नीची करना (३) सादर स्वीकार करना। चुपचाप मान लेना। सिर टकराना = सिर फोडना। अत्यत परिश्रम करना। (किसी के) सिर डालना = सिर मढना। दूसरे के ऊपर कार्य का भार देना। सिर टूटना = (१) सिर फटना। (२) लडाई झगडा होना। सिर तोडना = (१) सिर फोडना। (२) खूब मारना पीटना। (३) वश मे करना। सिर दर्द के लिये मूँड कटाना = छोटी बात के लिये बडा नुकसान करना। उ०—रोजमर्रा की जलन से बचने के लिये अलबत्ता ऐसी स्त्री को अलग कर दिया जा सकता है, परतु वह सिर दर्द के लिये मूँड कटाने का इलाज है।—पिंजरे०, पृ० ११४। सिर देना = प्राण निछावर करना। जान देना। सिर धरना = सादर स्वीकार करना। मान लेना। अगीकार करना। (किसी के) सिर धरना = आरोप करना। लगाना। मढना। उत्तरदायी बनाना। सिर धुनना = शोक या पछतावे से सिर पीटना। पछताना। हाथ मलना। शोक करना। उ०—कीन्हे प्राकृत जन गुनगाना। सिर धुनि गिरा लगति पछिताना।—मानस, पृ० १०। सिर नगा करना = (१) सिर खोलना। (२) इज्जत उतारना। सिर नवाना = (१) सिर झुकाना। नमस्कार करना। (२) विनीत बनना। दीन बनना। आजिजी करना। सिर भिन्नाना = सिर चकराना। (अपना सिर) नीचे करना = अप्रतिष्ठा होना। इज्जत बिगडना। मान भग होना। (२) पराजय होना। हार होना। (३) लज्जा होना। सिर पचाना = (१) परिश्रम करना। उद्योग करना। (२) सोचने विचारने मे हैरान होना। सिर पटकना = (१) सिर फोडना। सिर धुनना। (२) बहुत परिश्रम करना। (३) अफसोस करना। हाथ मलना सिर पर कफन बाँधकर चलना = प्रति पल मृत्यु के लिये तैयार रहना। सिर पर किसी का न होना = निरकुश रहना। कोई रोकने टोकनेवाला न होना। उ०—कोई उनके सिर पर तो है नहीं, अपनी आप मुख्तार हैं।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ३७। सिर पर आ पडना = अपने ऊपर घटित होना। ऊपर आ बनना। सिर पर आ जाना = (१) बहुत समीप आ जाना। (२) थोडे ही दिन और रह जाना। सिर पर उठा लेना = ऊधम जोतना। धूम मचाना। सिर पर चढ जाना = गुस्ताखी करना। बेअदबी करना। मुँह लगना। उ०—एक दफा तरह दी तो अब सिर पर चढ गया।—फिसाना०, भा० ३, पृ० १२५। (अपने) सिर पर पाँव रखना = बहुत जल्द भाग जाना। हवा होना। (किसी के) सिर पर पाँव रखना = किसी के साथ बहुत उद्दडता का व्यवहार करना। सिर पर धरती या पृथ्वी उठाना = बहुत उत्पात करना। सिर पर पडना = (१) जिम्मे पडना। (२) अपने ऊपर घटित होना। गुजरना। सिर पर खेलना = जान को जोखो मे डालना। सिर पर जून चढना या सवार होना = (१) जान लेने पर उतारू होना। (२) हत्या के कारण आपे मे न रहना। सिर पर रखना = प्रतिष्ठा करना। मान करना। सिर पर छप्पर रखना = बोझ से दबाना। दबाव डालना। सिर पर मिट्टी डालना = शोक करना। सिर पर लेना = ऊपर लेना। जिम्मे लेना। सिर पर शैतान चढना = गुस्सा चढना। सिर पर जूँ न रेंगना = ध्यान न होना। चेत न होना। होश न आना। सिर रहना = मान रहना। प्रतिष्ठा बनी रहना। (किसी के) सिर डालना = माथे मढना। आरोपण करना। सिर पर बीतना = सिर पर पडना। सिर पर होना = थोडे ही दिन रह जाना। बहुत निकट होना। (किसी का किसी के) सिर पर होना = सरक्षक होना। रक्षा करनेवाला होना। सिर पर हाथ धरना या रखना = (१) सरक्षक होना। सहायक होना। (२) शपथ खाना। सिर पडना = (१) जिम्मे पडना। भार ऊपर दिया जाना। (२) हिस्से मे जाना। सिर पडी सहना = अपने जिम्मे आई विपत्ति या झझट को झेलना। उ०—पक गया जी नाक मे दम हो गया, तुम न सुधरे, सिर पड़ी हमने सही।—चोखे०, पृ०

४७। सिर पर हाथ फेरना = प्यार करना। आश्वासन देना। ढारस बँधाना। उ०—बेतरह फेर मे पडे हम है, फेरते हाथ क्यो नही सिर पर।—चुभते०, पृ० ४। सिर फिरना = (१) सिर घूमना। सिर चकराना। (२) पागल हो जाना। उन्माद होना। (३) बुद्धि नष्ट होना। सिर फोडना = (१) लडाई झगडा करना। (२) कपालक्रिया करना। सिर फेरना = कहा न मानना। अवज्ञा करना। अस्वीकार करना। सिर बाँधना = (१) सिर पर आक्रमण करना। (पटेवाजी)। (२) चोटी करना। सिर गूँथना। (३) घोडे की लगाम इस प्रकार पकडना कि चलते समय घोडे की गर्दन सीधी रहे। सिर बेचना = सिर देना। फौज की नौकरी करना। सिर भारी होना = सिर मे पीडा होना। सिर घूमना। सिर मारना = (१) समझाते समझाते हैरान होना। (२) सोचने विचारने मे हैरान होना। सिर खपाना। (३) चिल्लाना। पुकारना। (४) बहुत प्रयत्न करना। अत्यत श्रम करना। सिर मुँडाना = (१) बाल बनवाना। (२) जोगी बनना। फकीरी लेना। सन्यासी होना। सिर मुँडाते ही ओले पडना = आरभ मे ही कार्य बिगडना। कार्यारभ होते ही विघ्न पडना। सिर मढना = जिम्मे करना। इच्छा के विरुद्ध सपुर्द करना। सिर रँगना = सिर फोडना। सिर लोहू लोहान करना। सिर रहना = (१) किसी के पीछे पडना। (२) रात दिन परिश्रम करना। सिर सफेद होना = वृद्धावस्था आ जाना। सिर पर सेहरा होना = किसी कार्य का श्रेय प्राप्त होना। वाहवाही मिलना। सिर सहलाना = खुशामद करना। प्यार करना। सिर से बला टालना = बेगार टालना। जी लगाकर काम न करना। सिर से बोझ उतरना = (१) झझट दूर होना। (२) निश्चितता होना। सिर से पानी गुजरना = सहने की पराकाष्ठा होना। असह्य हो जाना। सिर घुटाना या घोटाना = सिर मुडाना। सिर से पैर तक = आरभ से अत तक। चोटी से एडी तक। सर्वांग मे। पूर्णतया। सिर से पैर तक आग लगना = अत्यत क्रोध होना। आग बबूला होना। सिर से चलना = बहुत समान करना। सिर के बल चलना। सिर से सिरवाहा है = सिर के साथ पगडी है। अर्थात् सरदार के साथ फौज अवश्य रहेगी। मालिक के साथ उसके आश्रित अवश्य रहेगे। सिर से कफन बाँधना = मरने के लिये उद्यत होना। सिर से खेलना = सिर पर भूत आना। सिर से खेल जाना = प्राण दे देना। सिर पर सीग होना = कोई विशेषता होना। खसूसियत होना। सुर्खाब का पर होना। सिर का पसीना पैर तक आना = बहुत परिश्रम होना। सिर हथेली पर लेना = मृत्यु के लिये हरदम तैयार रहना (किसी का किसी के) सिर होना। (१) पीछे पडना। पीछा न छोडना। साथ साथ लगा रहना। (२) बार बार किसी बात का आग्रह करके तग करना। (३) उलझ पडना। झगडा करना। (किसी बात के) सिर होना = ताड लेना। समझ लेना। (दोष आदि किसी के) सिर होना = जिम्मे होना। ऊपर पडना। जैसे,—यह अपराध **तुम्हारे सिर है।**

२ ऊपर की ओर। सिरा। चोटी। ३ किनारा। ४ किसी वस्तु का ऊपरी भाग ४. सरदार। प्रधान। जैसे, सिर से सिरवाहा। ५ दिमाग। अक्ल। ६ शुरुआत। प्रारभ।

**सिर[2]**—सज्ञा पुं० [स० शिर] पिपरामूल। पिप्पलीमूल।

**सिर[3]**—सज्ञा पु० [अ० सिर्र] रहस्य। मर्म। भेद। राज [को०]।

**सिरई**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिर + ई (प्रत्य०)] चारपाई मे सिरहाने की पट्टी।

**सिरकटा**—वि० [हिं० सिर + कटना] [वि० स्त्री० सिरकटी] १ जिसका सिर कट गया हो। जैसे,—सिरकटी लाश। २ दूसरो के सिर काटनेवाला। अनिष्ट करनेवाला। बुराई करनेवाला। अपकारी।

**सिरका**—सज्ञा पुं० [फा० सिरकह्] धूप मे पकाकर खट्टा किया हुआ ईख, अगूर, जामुन, आदि का रस। उ०—(क) भई मिठौरी सिरका बरा। सोठ लाय के खरसा धरा।—जायसी (शब्द०)। (ख) हे रे कलाली तैं क्या किया। सिरका साते प्याला दिया। —सतवाणी०, पृ० ३३।

**विशेष**—ईख, अगूर, खजूर, जामुन आदि के रस को धूप मे पकाकर सिरका बनाया जाता है। यह स्वाद मे अत्यत खट्टा होता है। वैद्यक मे यह तीक्ष्ण, गरम, रुचिकारी, पाचक, हलका, रूखा, दस्तावर, रक्तपित्तकारक तथा कफ, कृमि और पाडु रोग का नाश करनेवाला कहा गया है। यूनानी मतानुसार यह कुछ गरमी लिए ठढा और रुक्ष, स्निग्धताशोधक, नसो और छिद्रो मे शीघ्र ही प्रवेश करनेवाला, गाढे दोषो को छाँटनेवाला, पाचक, अत्यत क्षुधाकारक तथा रोध का उद्घाटक है। यह बहुत से रोगो के लिये परम उपयोगी है।

**सिरकाकश**—सज्ञा पु० [फा०] अरक खीचने का एक प्रकार का यत्र।

**सिरकाफरोश**—वि० [फा० सिरकह् फरोश] १ सिरका बेचनेवाला। जो सिरका बेचता हो। २. रूखी बाते करनेवाला। बेमुरव्वत [को०]।

**सिरकी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सरकडा] १ सरकडा। सरई। सरहरी। २ सरकडे या सरई की पतली तीलियो की बनी हुई टट्टी जो प्राय दीवार या गाडियो पर धूप और वर्षा से बचाव के लिये डालते है। उ०—विदित न सनमुख ह्वै सकै अँखिया बडी लजोर। बरुनी सिरकिन ओट ह्वै हेरत गोहन ओर।—रसनिधि (शब्द०)। ३ बाँस की पतली नली जिसमे बल बूटे काढने का कलाबत्तू भरा रहता है।

**सिरखप[1]**—वि० [हिं० सिर + खपना] १ सिर खपानेवाला। २ परिश्रमी। ३ निश्चय का पक्का।

**सिरखप[2]**—सज्ञा स्त्री० दे० 'सिरखपी'। उ०—जो तुमको यही समझ होती, तो मुझको इतनी सिरखप क्यो करनी पडती।—ठेठ०, पृ० ८।

**सिरखपी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिर + खपना] १ परिश्रम। हैरानी। २ जोखिम। साहसपूर्ण कार्य।

**सिरखिली**—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिडिया जिसका **सपूर्ण शरीर मटमैला, पर चोच और पैर काले होते हैं।**

सिरखिस्त—सज्ञा पु० [फा० शीरखिश्त] एक प्रसिद्ध पदार्थ जो कुछ पेडो की पत्तियो पर ओस की तरह जम जाता है और दवा के काम मे आता है। यव शर्करा। यवास शर्करा।

सिरखी—वि० [स० सदृश, प्रा० सरिक्ख, राज० सिरखी] [पुं० सिरखा (=सरीखा)] सदृश। समान। सरीखी। उ०—सूली सिरखी सेझडी, तो विण जाणे नाह।—ढोला०, दू० १६६।

सिरगनेस†—सज्ञा पु० [हिं० श्रीगणेश] आरभ। शुरुआत। उ०—पहले झगडा का सिरगनेम दो ही औरतो मे होता है।—मैला०, पृ० ७१।

सिरगा—सज्ञा स्त्री० [देश०] घोडे की एक जाति। उ०—सिरगा समँदा स्वाइ सेलिया सूर सुरगा। मुसकी पँचकल्यान कुमेता केहरिरगा।—सूदन (शब्द०)।

सिरगिरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिर+गिरि (=चोटी)] १ कलगी। शिखा। २ चिडियो के सिर की कलगी।

सिरगोला—सज्ञा पु० [दश०] दुग्धपाषाण।

सिरघुरई—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिर+घूरना (=घूमना), तुल० बँ० घुर] ज्वराकुश तृण।

सिरचद—सज्ञा पु० [हिं० सिर+चद] एक प्रकार का अर्धचद्राकार गहना जो हाथी के मस्तक पर पहनाया जाता है। उ०—सिरचद चद दुचद दुति आनद कर मनिमय वसै।—गोपाल (शब्द०)।

सिरचढा—वि० [हिं० सिर+चढना] मुँहलगा। वेअदब। ढीठ।

सिरजक—सज्ञा पु० [स० सर्जक, हिं० सिरिजन (<स० √सृज्>सिरिज+अन (प्रत्य०)] बनानेवाला। रचनेवाला। सृष्टिकर्ता। उ०—अब बदौ कर जोरि कै, जग सिरजक करतार। रामकृष्ण पद कमल युग, जाको सदा अधार।—रघुराज (शब्द०)।

सिरजन—सज्ञा पु० [स० सजन, (हिं० सृजन)] निर्माण। रचना। सृष्टि करना। जैसे, सिरजनहार।

सिरजनहार—सज्ञा पु० [हिं० सिरजन+हार (=वाला)] १ रचनेवाला। बनानेवाला। सृष्टिकर्ता। कर्तार। उ०—हे गुसाई तू सिरजनहारू। तुइ सिरजा एहि समुँद अपारू।—जायसी (शब्द०)। २ परमेश्वर। उ०—माया सगी न मन सगा, सगा न यह ससार। परशुराम यह जीव को, सगा तो सिरजनहार।—रघुराज (शब्द०)।

सिरजना[१]—क्रि० स० [स० सर्जन] रचना। उत्पन्न करना। सृष्टि करना। उ०—जग सिरजत पालत सहरत पुनि क्यो बहुरि करयो।—सूर (शब्द०)।

सिरजना[२]—क्रि० स० [स० सञ्चयन] सचय करना। हिफाजत से रखना।

सिरजित—वि० [स० सर्जित] सिरजा हुआ। रचा हुआ। उ०—तुम जदुनाथ अनन्य उपासी। नहिं मम सिरजित लोक विलासी।—रघुराज (शब्द०)।

सिरताज—सज्ञा पु० [स० सिर+फा० ताज] १ मुकुट। शिरोभूषण। २ शिरोमणि। सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु। सबसे उत्कृष्ट व्यक्ति या वस्तु। उ०—राम को बिसारिबो निषेध सिरताज रे। राम नाम महामनि फनि जगजाल रे।—तुलसी (शब्द०)। ३ पति। शौहर (को०)। ४ स्वामी। प्रभु। मालिक। उ०—कुजन मे क्रीडा करै मनु वाही को राज। कम सकुच नहिं मानई रहत भयो सिरताज।—सूर (शब्द०)। ५ सरदार। अग्रगण्य। अगुआ। मुखिया। उ०—सूर सिरताज महाराजनि के महाराज जाको नाम लेत है सुखेत होत उसरो।—तुलसी (शब्द०)। ६ एक प्रकार का आवरण, पर्दा या नकाब (को०)।

सिरतान—सज्ञा पु० [हिं० सिर+तान ?] १. आसामी। काश्तकार। २ मालगुजार।

सिरतापा—क्रि० वि० [फा० सर+ता+पा] १ सिर से पाँव तक। नख से लेकर शिख तक। उ०—केस मेघावरि सिर ता पाहिं।—जायसी (शब्द०)। २ आदि से अत तक। सपूर्ण। बिलकुल। सरासर

सिरती†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सीर] जमा जो आसामी जमीदार को देता है। लगान।

सिरत्राण—सज्ञा पुं० [स० शिरस्त्राण] दे० 'शिरस्त्राण'।

सिरदा—सज्ञा पुं० [अ० सिजदा] दे० 'सिजदा'। उ०—(क) एकादशी न रोजा करई। डडवत करै न सिरदा परई।—पलटू०, भा० ३, पृ० ६०। (ख) कई लाख तुम रडी छाँडी केते बेटी बेटा। कितने बैठे सिरदा करते माया जाल लपेटा।—मलूक०, पृ० १।

सिरदार‡—सज्ञा पु० [फा० सरदार] दे० 'सरदार'। उ०—ब्रज परगन सिरदार महरि तू ताकी करत नन्हाई।—सूर (शब्द०)। (ख) सिरदार जूझत खेत मैं। भजि गए बहुत अचेत मैं।—सूदन (शब्द०)।

सिरदारी‡—सज्ञा स्त्री० [फा० सरदार+ई (प्रत्य०)] दे० 'सरदारी'। उ०—साहिजहाँ यह चित्त विचारी। दारा को दीन्ही सिरदारी।—लाल कवि (शब्द०)।

सिरदुआली—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिर+फा० दुवाल] लगाम के कडो मे लगा हुआ कानो के पीछे तक का घोडो का एक साज जो चमडे या सूत का बना होता है।

सिरनाम—वि० [फा० सरनाम] ख्यात। मशहूर। प्रसिद्ध। उ०—रोम रोम जो अघ भर्यो पतितन मैं सिरनाम। रसनिधि वाहि निबाहिबो प्रभु तेरोई काम।—स० सप्तक, पृ० २२५।

सिरनामा—सज्ञा पु० [फा० सर+नामह् (=पत्र)] १ लिफाफे पर लिखा जानेवाला पता। २ पत्र के आरभ मे पत्र पानेवाले का नाम, उपाधि, अभिवादन आदि। ३ किसी लेख के विषय मे निर्देश करनेवाला शब्द या वाक्य जो ऊपर लिख दिया जाता है। शीर्षक। (अ०) हेडिंग। सुर्खी।

सिरनेत—सज्ञा पुं० [हिं० सिर+स० नेत्री (=धज्जी या डोरी)] १ पगडी। पटा। चीरा। उ०—(क) रे नेही मत डगमगै बाँध प्रीति सिरनेत।—रसनिधि (शब्द०)। (ख) अधम उधारन बिरद को तुम बाँधो सिरनेत।—स० सप्तक, पृ० २२६। २ क्षत्रियो की एक शाखा जो अपना मूल स्थान श्रीनगर

(गढवाल) बताती है। उ०—पुनि सिरनेतन्ह देस सिधारा। कीन्हो ब्याह, उछाह अपारा।—रघुराज (शब्द०)।

सिरपाँव†—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+पाँव] दे० 'सिरोपाव'।

सिरपाउ—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सिरोपाव'। उ०—सिरपाउ भाउ नप्पे सरस्स। को गनै द्रव्य भंडार अस्स।—पृ० रा०, ४।१२।

सिरपाव—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+पाँव] दे० 'सिरोपाव'। उ०—कीरतसिंह भी घोड़े और सिरपाव पाकर अपने बाप के साथ रवासत हुआ।—देवीप्रसाद (शब्द०)।

सिरपेंच, सिरपेच—संज्ञा पुं० [फा० सर+पेच] १ पगड़ी। २ पगड़ी के ऊपर का छोटा कपड़ा। ३ पगड़ी पर बाँधने का एक आभूषण। उ०—कलगी, तुर्रा और जग सिरपेच सुकुंडल।—सूदन (शब्द०)।

सिरपेंच†—संज्ञा पुं० [हिं० सिरपेच] दे० 'सिरपेच'। उ०—दीठि गई सिरपेंच पै फिर हारी मैं ऐंच। जो उरझी सुरझी न फिर परी पैंचि कै पेंच।—सं० सप्तक, पृ० ३७६।

सिरपोश—संज्ञा पुं० [फा० सरपोश] १ सिर पर का आवरण। टोप। कुलाह। २. बंदूक के ऊपर का कपड़ा। (लश्करी)।

सिरफूल—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+फूल] सिर पर पहना जानेवाला स्त्रियों का फूल की आकृति का एक आभूषण। उ०—(क) छतियाँ पर लोल लुरैं अलकैं सिरफूल अरुझि सो यौं दुति दै।—मन्नालाल (शब्द०)। (ख) बेनी चुनी चमकैं किरनैं सिरफूल लख्यो रवि तूल अनूपमैं।—मन्नालाल (शब्द०)।

सिरफेंटा—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+फेंटा] साफा। पगड़ी। मुरेठा। उ०—पीरो झग पटुका बिन छोर छरी कर लाल जरी सिरफेंटा।—मन्नालाल (शब्द०)।

सिरबंद—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+फा० बंद] साफा।

सिरबंदी[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिर+फा० बंदी] माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण।

सिरबंदी[2]—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+बंद] रेशम के कीड़े का एक भेद।

सिरबोझी—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+बोझ] एक प्रकार के पतले बाँस जो पाटन के काम में आते हैं।

सिरपच्चन†—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+पचाना] सिर खपाना। सिर मगजन।

सिरमगजन†—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+अ० मग्ज] माथा खोटी। माथा पच्ची। २ सिर खपाना। उ०—बेचारे वृद्ध आदमी को सुबह से शाम तक सिरमगजन करते गुजरता था।—रंगभूमि, भा० २, पृ० ६१६।

सिरमनि—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+मणि] दे० 'शिरोमणि'।

सिरमुँडा—वि० [हिं०] १ जिसका सिर मुँडा हो। २ निर्गुण। निगोड़ा। स्त्रियों की एक गाली।

सिरमौर—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+मौर] १ सिर का मुकुट। उ०—जाकें तीर सदा खुलि खेलत राजसभा रनिक सिरमौर।—घनानंद, पृ० ४४३। २ सिरताज। शिरोमणि। प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति। उ०—महिप मनोने राम सुअन लखि नाम जैसे गुने तैसेई दुँअर सिरमौर है।—तुलसी (शब्द०)।

सिररुह—संज्ञा पुं० [सं० शिरोरुह] दे० 'शिरोरुह'। उ०—बिगुनि सिररुह बरुथ कुंचित बिच सुमन धूप, मनिजुत सिथु फनि अनीक सगि समीप आई।—तुलसी (शब्द०)।

सिरवा†—संज्ञा पुं० [हिं० सिर] वह कपड़ा जिसमें खलिहान में अनाज बरसाने के समय हवा करते हैं। ओसाने में हवा करने का कपड़ा।

मुहा०—सिरवा मारना=भूसा उड़ाने के लिये कपड़े आदि से हवा करना।

सिरवार[1]—संज्ञा पुं० [सं० शैवाल] दे० 'सिवार'।

सिरवार[2]†—संज्ञा पुं० [हिं० सीर+कार] जमींदार का वह कारिंदा जो उसकी खेती का प्रबंध करता है।

सिरस—संज्ञा पुं० [सं० शिरीष] शीशम की तरह का लंबा एक प्रकार का ऊँचा पेड़।

विशेष—इसका वृक्ष बड़ा किंतु अचिरस्थायी होता है। इसकी छाल मोटापन लिए हुए चाकी रंग की होती है। लकड़ी सफेद या पीले रंग की होती है, जो टिकाऊ नहीं होती। हीर की लकड़ी कालापन लिए भूरी होती है। पत्तियाँ इमली के पत्तियों के समान परंतु उनसे लंबी चौड़ी होती हैं। चैत वैशाख में यह वृक्ष फूलता फलता है। इसके फूल सफेद, सुगंधित, अत्यंत कोमल तथा मनोहर होते हैं। कवियों ने इसके फूल की कोमलता का वर्णन किया है। इसके वृक्ष से बबूल के समान गोंद निकलता है। इसकी छाल, पत्ते, फूल और बीज औषध के काम में आते हैं। इसके तीन भेद होते हैं। काला, पीला और लाल। आयुर्वेद के अनुसार यह चरपरा, शीतल, मधुर, कड़वा, कसैला, हलका तथा वात, पित्त, कफ नाशक, विसर्प, खाँसी, घाव, विषविकार, रुधिरविकार, कोढ़, खुजली, बवासीर, पसीने और त्वचा के रोगों को हरण करनेवाला है। यूनानी मतानुसार यह ठंढा और रूखा है। उ०—(क) बाम विधि मेरो सुअ सिरस सुमन तातो छल छुरी तीछन तुलिस ने टेई है।—तुलसी (शब्द०)। (ख) फूलों ही के कामवाण है, यह सब कहने आते हैं। सिरस फूल से भी मृदुतर, हम उनके बाहु बताते हैं।—महावीरप्रसाद (शब्द०)।

सिरसा—संज्ञा पुं० [सं० शिरीष] दे० 'सिरस'।

सिरसी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का तीतर।

सिरहाना—संज्ञा पुं० [सं० शिरस्+आधान] चारपाई में सिर की ओर का भाग। खाट का सिर। मसवारी। उ०—छटी लटैं लटकैं सिरहाने हैं पैलि रच्यो सुअम्बेद का पानी (शब्द०)।

सिरांबु—संज्ञा पुं० [सं० शिरोम्बु] नाक। पृ० कों०।

सिराचा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पतला बाँस जिसमें छुरमियाँ और मोटे बनते हैं।

सिराह—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल प्रा० सीयल, सीअल, हिं० सियरा] शीतलता। छाँह या छाया जो शीतल हो। उ०—हुषो न

काम कछू काहू सो पालत प्रान रावरी आँह। आनँदघन दुखताप मेटियै कीजै कृपा सिराँह।—घनानद, पृ० ५०६।

**सिरा[१]**—सज्ञा पु० [हिं० सिर] १ लवाई का अत। लवाई के दो छोरो मे से कोई एक। छोर। टोक। जैसे,—एक सिरे से दूसरे सिरे तक। २ ऊपर का भाग। शीर्ष भाग। ३ अतिम भाग। आखिरी हिस्सा। ४ आरभ का भाग। शुरू का हिस्सा। जैसे,—(क) सिरे से कहो, मैंने सुना नही। (ख) अब वह काम नए सिरे से करना पडेगा। (ग) सिरे से आखीर तक। ५ नोक। अनी। ६ अगभाग। अगला हिस्सा।

मुहा०—सिरे का = अव्वल दरजे का। पल्ले सिरे का। सिरे का रग = सबसे प्रधान रग। जेठा रग। (रँगरेज)।

**सिरा[२]**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ रक्तनाडी। २ सिँचाई की नाली। ३ खेत की सिँचाई। ४ पानी की पतली धारा। ५ गगरा। कलसा। टोल।

**सिराज**—सज्ञा पुं० [अ०] १ सूर्य। २ दीपक। दिया [को०]।

**सिराजाल**—सज्ञा पु० [स०] १ नेत्र का एक रोग। शिराजाल। २ छोटी रक्तनाडियो का समूह। नाडीजाल [को०]।

**सिराजी**—सज्ञा पुं० [फा० शीराज (नगर)] शीराज का घोडा। उ०—अबलक अरबी लखी सिराजी। चौधर चाल समँद भल ताजी।—जायसी (शब्द०)।

**सिरात**—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ रास्ता। सीधा मार्ग। २ नर्क के आरपार बाल से भी पतला और तलवार की धार से भी तेज पुल।

विशेष—हदीस के अनसार इस पुल पर से सभी को कयामत के दिन गुजरना होगा। धर्मात्मा इसपर से पार हो जायँगे और पापी कट मर जायँगे।

**सिराना†**Ⓤ**[१]**—क्रि० अ० [हिं० सीरा + ना] १ ठढा होना। शीतल होना। २ मद पडना। हतोत्साह होना। उमग न रह जाना। हार जाना। उ०—वज्रायुध जल बरषि सिराने। परचो चरन नव प्रभु करि जाने।—सूर (शब्द०)। ३ समाप्त होना। खतम होना। अत को पहुँचना। जैसे,—काम सिराना। ४ शात होना। मिटना। दूर होना। उ०—अब रघुनाथ मिलाऊँ तुमको सुदरि सोग सिराइ।—सूर (शब्द)। ५ व्यतीत होना। बीत जाना। गुजर जाना। उ०—बेई चिरजीवी अमर निधरक फिरौ कहाइ। छिन बिछुरे जिनके न इहि पावस आयु सिराइ।—बिहारी (शब्द०)। ६ काम से छुट्टी मिलना। फुरसत या अवकाश मिलना।

**सिराना[२]**—क्रि० स० १ ठढा करना। शीतल करना। २ जल मे डुबाकर शीतल करना। जैसे, मौर सिराना। ३ समाप्त करना। खतम करना। ४ व्यतीत करना। बिताना।

**सिरापत्र**—सज्ञा पुं० [स०] १ अश्वत्थ वृक्ष। पीपल का वृक्ष। २ एक प्रकार की खजूर।

**सिराप्रहर्ष**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सिराहर्ष'।

**सिरामूल**—सज्ञा पु० [स०] नाभि।

**सिरामोक्ष**—सज्ञा पुं० [स०] फसद खुलवाना। शरीर का दूषित रक्त निकलवाना।

**सिरायत**—सज्ञा स्त्री० [अ०] जज्ब होना। प्रवेश करना। घुसना [को०]।

**सिरायना**—क्रि० स० [हिं० सिराना] दे० 'सिराना'।

**सिरार**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिरा] वह लकडी जो पाई के सिरे पर लगाई जाती है। (जुलाहे)।

**सिराल[१]**—वि० [स०] जिसमे बहुत नसें या रेशे हो।

**सिराल[२]**—सज्ञा पु० कमरख। दे० 'सिरानी' [को०]।

**सिरालक**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का अगूर।

**सिराला**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक प्रकार का पौधा। कमरख का फल। कर्मरग फल।

**सिरालो**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिर] मयूरशिखा। मोर की कलगी।

**सिरालु**—वि० [स०] बहुत शिराओवाला। सिराल [को०]।

**सिरावन[१]**—सज्ञा पु० [स० सीर (= हल)] जुता हुआ खेत बराबर करने का पाटा। हेंगा।

**सिरावन[२]**—वि० [हिं० सिराना] १ शीतल करनेवाला। सिरानेवाला। २ सताप या कष्ट दूर करनेवाला।

**सिरावना**Ⓤ**†**—क्रि० स० [हिं० सिराना] दे० 'सिराना'। उ०—जोइ जोइ भावे मेरे प्यारे। सोई सोइ देहा जु रेदुला। कहयौ है सिरावन सीरा। कछु हट न करौ बलबीरा।—सूर (शब्द०)।

**सिरावृत्त**—सज्ञा पुं० [स०] सीसा नामक धातु।

**सिरावेध, सिरावेधन**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सिरामोक्ष' [को०]।

**सिराव्यध, सिरा व्यधन**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सिरामोक्ष' [को०]।

**सिराहर्ष**—सज्ञा पुं० [स०] १ पुलक। रोमाच। २ आँख के डोरो की लाली।

**सिरिख**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० शिरीष] दे० 'सिरस'।

**सिरिन**—सज्ञा पु० [देश] रक्तशिरीष वृक्ष। लाल सिरस।

**सिरियारी**—सज्ञा स्त्री० [स० शिरियारी] सुचिपर्णक शाक। सुसना का साग। हाथीशुडी।

**सिरिश्ता**—सज्ञा पु० [फा० सरिश्तह्] विभाग। महकमा।

**सिरिश्तेदार**—सज्ञा पुं० [फा०] अदालत का वह कर्मचारी जो मुकदमो के कागजपत्र रखता है।

**सिरिश्तेदारी**—सज्ञा स्त्री० [फा०] सरिश्तेदार का काम या पद।

**सिरिस**—सज्ञा पु० [स० शिरीष, प्रा० सिरिस] दे० 'सिरस'। उ०—विधि केहि भाँति धरौ उर धीरा। सिरिस सुमन कन बेधिय हीरा।—मानस, १।२५८।

**सिरी[२]**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ करपा। २ कलिहारी। लागली।

**सिरी**Ⓤ**[२]**—सज्ञा स्त्री० [स० श्री] १ लक्ष्मी। २ शोभा। कांति। ३ रोली। रोचना। उ०—(क) धधकी है गुलाल की धूँधुर मे धरि गोरी लला मुख मीडि सिरी।—शभु (शब्द०)। (ख) सोन रूप मल भएउ पसारा। धवल सिरी पोतहिं घर बारा।—जायसी (शब्द०)।

विशेष—'श्री' का लाल चिह्न तिलक मे रोली से बनाते हैं, इसीलिये रोली को भी श्री या 'सिरी' कहते हैं।

४ ऐश्वर्य। विभव। सपत्ति। समृद्धि। ५ माथे पर का एक गहना। उ०—सुटा दड लसै जैसो वैसो रद दरमावै सोहे मभी सीम भारी सिरी कुभ पर है।—गोपाल (शब्द०)।

सिरीज—सज्ञा पु० [अ०] मगल और बृहस्पति के बीच का एक ग्रह जिसका पता आधुनिक पाश्चात्य ज्योतिषियो ने लगाया है।

विशेष—यह सूर्य से प्राय साढे अट्ठाइस कोटि मील की दूरी पर है। इसका व्यास १७६० मील का है। इस निजकक्षा की परिक्रमा मे १६८० दिन लगते है। १९वी शताब्दी मे सिसली नामक उपद्वीप मे यह ग्रह पहले देखा गया था। इसका वर्ण लाल है और यह आठवें परिमाण के तारे के समान दिखाई पडता है।

सिरीपचमी—सज्ञा स्त्री० [स० श्रीपञ्चमी] दे० 'श्रीपचमी'। उ०—दई दई कर सुरनि गँवाई। सिरीपचमी पूजै आई।—जायसी (शब्द०)।

सिरीराग—सज्ञा पु० [स० श्रीराग] सपूर्ण जाति का एक राग। छह प्रमुख रागो मे तीसरा राग। विशेष दे० 'श्रीराग'। उ०—पचएँ सिरी राग भल किये। छठएँ दीपक उठा बर दियो। —जायसी (शब्द०)।

सिरीस सज्ञा पु० [स० शिरीष, प्रा० सिरीस] दे० 'सिरस'।

सिरोत्पात—सज्ञा पुं० [स०] एक नेत्ररोग जिसमे आँखो के डोरे अधिक सुख हो जाते है [को०]।

सिरोना—सज्ञा पु० [हिं० सिर+ओना] रस्सी का बना हुआ मेडरा जिसपर घडा रखते है। ईंडुरी। बिडवा।

सिरोपाव—सज्ञा पु० [हिं० सिर+पाँव] सिर से पैर तक का पहनावा (अगा, पगडी, पाजामा, पटका और दुपट्टा) जो राज दरबार से समान के रूप मे दिया जाता है। खिलअत।

सिरोमनि—सज्ञा पु० [स० शिरोमणि] दे० 'शिरोमणि'।

सिरोरुह—सज्ञा पु० [स० शिरोरुह] दे० 'शिरोरुह'।

सिरोही[1]—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिडिया जिसकी चोच और पैर लाल और शेष शरीर काला होता है।

सिरोही[2]—सज्ञा पु० १ राजपुताने मे एक स्थान जहाँ की बनी हुई तलवार बहुत ही लचीली और बढिया होती है। उ०—तरवार सिरोही सोहती लाख सिकोही बोहती। जिमि सेना द्रोही जोहती लाज अरोही मोहती।—गोपाल (शब्द०)। २. तलवार। असि।

सिर्का—सज्ञा पु० [फा० सिरकह्] दे० 'सिरका'।

सिर्फ[1]—क्रि० वि० [अ० सिर्फ] केवल। मात्र।

सिर्फ[2]—वि० १ एक मात्र। अकेला। २, शुद्ध। खालिस।

सिर्री—वि० [स० शृगीक] दे० 'सिडी'।

सिल[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शिला] १ पत्थर। चट्टान। शिला। उ०—धोवै नीर उडप पग धरजै, रज मिल उठी, किसू वनदार। —रघु० रू०, पृ० ११०। २ पत्थर की बनी हुई एक प्रकार की चौकोर या लबोतरी पटिया जिसपर बट्टे से मसाला आदि पीसते हैं।

यौ०—सिल बट्टा।

३ पत्थर का गढा हुआ चौकोर टुकडा जो इमारतो मे लगता है। चौकोर पटिया। ४ काठ की पटरी जिसपर दबाकर रूई की पूनी बनाई जाती है।

सिल[2]—सज्ञा पु० [स० शिल] कटे हुए खेत मे गिरे अनाज चुनकर निर्वाह करने की वृत्ति। दे० 'शिल', 'शिलोछ'।

सिल[3]—सज्ञा पु० [देश०] बलूत की जाति का एक पहाडी पेड जो हिमालय पर होता है। बज। मारु।

सिल[4]—सज्ञा पु० [अ०] तपेदिक। राजयक्ष्मा। क्षय रोग।

सिलक[1]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सलग (=लगातार)] १ लडी। हार। २ पक्ति। पाँत।

सिलक[2] सज्ञा पु० तागा। धागा।

सिलकी—सज्ञा पु० [देश०] बेल। उ०—सुरभी सिलकी सदाफल बेल ताल मालूर।—अनेकार्थ० (शब्द०)।

सिलखड़ी सज्ञा स्त्री० [हिं० सिल+खडिया] १ एक प्रकार का चिकना मुलायम पत्थर जो बरतन बनाने के काम आता है।

विशेष—इसकी बुकनी चीजो को चमकाने के लिये पालिश और रोगन बनाने के भी काम मे आती है।

२ सेतखडी खरिया मिट्टी। दुद्धी।

सिलखरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिल+खडिया] दे० 'सिलखडी'।

सिलगना क्रि० अ० [हिं० सुलगना] दे० 'सुलगना'। उ० (क) विरहिन पै आयौ मनौ मैन दैन तर ग्रह। जुगन् न ही जामुगी मिलगत ब्याहमि ब्याह। -रसनिधि (शब्द०)। (ख) आग भी आतिशदान मे सिलग रही है। हवा उस समय सर्द चल रही थी।—शिवप्रसाद शब्द०)।

सिलप—सज्ञा पु० [स० शिल्प] दे० 'शिल्प'। उ०—विश्वकर्मा सुतिहार श्रुति धरि सुलभ सिलप दिखावनो। तेहि देखे त्रय ताप नाशै ब्रजवधू मन भावनो। सूर (शब्द०)।

सिलपची—सज्ञा स्त्री० [फा० चिलमची] दे० 'चिलमची'।

सिलपट[1]—वि० [स० शिलापट्ट] १ साफ। २ बराबर। चौरस।

क्रि० प्र०—करना। होना।

३ घिसा हुआ। मिटा हुआ। ४ चौपट। सत्यानाश।

सिलपट[2]—सज्ञा पु० [अ० स्लिपर] एडी की ओर खुली हुई जूती। चट्टी। चप्पल।

सिलपोहनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिल+पोहना] विवाह की एक रीति। उ०—सिंदूर बदन होम लावा होन लागी साँवरी। सिलपोहनी करि मोहनी मन हरयौ मूरति साँवरी।—तुलसी (शब्द०)।

विशेष—विवाह मे मातृकापूजन के समय वर और कन्या के माता पिता सिल पर थोडी सी भिगोई हुई उरद की दाल रखकर पीसते हैं। इसी को 'सिलपोहनी' कहते हैं।

सिलफची - सज्ञा स्त्री० [फा० चिलमची] दे० 'चिलमची'।

सिलफोडा--सज्ञा पु० [हिं० सिल + फोडना] पाषाणभेद। पत्थरचूर नाम का पौधा।

सिलवट्टा--सज्ञा पु० [हिं० सिल + वट्टा] सिल और वट्टा अर्थात् लोढिया।

सिलवरुआ--सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का बाँस जो पूरबी बगाल की ओर होता है।

सिलमाकुर--सज्ञा पु० [अँ० सेलमेकर] पाल बनानेवाला। (लश्करी)।

सिलवट[1]--सज्ञा स्त्री० [देश०] सुकडने से पडी हुई लकीर। चुनट। बल। शिकन। सिकुडन। वली।

क्रि० प्र०--डालना।--पडना।

सिलवट[2]--सज्ञा पुं० [हिं० सिल + वट्टा] १ दे० 'सिलवट्टा'। २ सिल जिसपर मसाला आदि पीसते हैं।

सिलवाना--क्रि० स० [हिं० सीना का प्रे० रूप] किसी को सीने मे प्रवृत्त करना। सिलाना।

सिलसिला[1]--सज्ञा पुं० [अ०] १ बँधा हुआ तार। क्रम। परपरा २ श्रेणी। पक्ति। जैसे,--पहाडो का सिलसिला। ३ जजीर। लडी। ४ व्यवस्था। तरतीब। जैसे,--कुरसियो को सिलसिले से रख दो। ५ कुलपरपरा। वशानुक्रम। ६ सबध। लगाव। वेश। ८ बेडी। शृखला। निगड।

सिलसिला[2]--वि० [सं० सिक्त] १ भीगा हुआ। आर्द्र। गीला। २ जिसपर पैर फिसले। रपटनवाला। रपटीला। ३ चिकना। मृदु। उ०--बैदी माल तमोल मुख, सीस सिलसिले वार। दृग आँजे राजे खरी, येही सहज सिंगार।--बिहारी (शब्द०)।

सिलसिलाबदी--सज्ञा स्त्री० [अ० सिलसिला + फा० बदी] १ क्रम का बधान। तरतीब। २ कतारबदी। पक्ति बँधाई।

सिलसिलेवार--वि० [अ० सिलसिला + फा० वार] तरतीबवार। क्रमानुसार।

सिलह सज्ञा पु० [अ० सिलाह] हथियार। शस्त्र। उ०--आपु गुमल करि सिलह करि हुवँ नगारे दोइ। देत नगारे तीसरे ह्वै सवार सब कोइ।--सूदन (शब्द०)।

यौ०--सिलहखाना। सिलहदस्त = शस्त्रपाणि। सशस्त्र। सिलहदार = (१) दे० 'सिलहपोश'। (२) योद्धा। सिपाही। शस्त्रजीवी। सिलहदारी = सिपाही का काम या पेशा। सिलहपोश = शस्त्रधारी। हथियारबद।

सिलहखाना--सज्ञा पुं० [अ० सिलाह + फा० खानह्] अस्त्रागार। हथियार रखने का स्थान।

सिलहट--सज्ञा पुं० [देश०] १ आसाम का एक नगर। २ एक प्रकार का अगहनी धान। ३ एक प्रकार की नारगी जो सिलहट (आसाम) मे होती है।

सिलहटिया[1]--सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की नाव जिसके आगे पीछे दोनो तरफ के सिक्के लबे होते है।

सिलहटिया[2]--वि० [सिलहट + हिं० इया (प्रत्य०)] सिलहट सबधी। सिलहट का।

सिलहार, सिलहारा--सज्ञा पुं० [सं० शिलकार] खेत मे गिरा हुआ अनाज बीननेवाला।

सिलहिला--वि० [हिं० सील, सीड + हीला (=कीचड)] [वि० स्त्री० सिलहिली] जिसपर पैर फिसले। रपटनवाला। रपटीला। कीचड से चिकना। उ०--घर कबीर का शिखर पर, जहाँ सिलहली गैल। पाँव न टिकै पिपीलिका, खलक न लादे बैल। --कबीर (शब्द०)।

सिलही--सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

सिला[1]--सज्ञा स्त्री० [स० शिला] दे० 'शिला'। उ०--ह्वैहै सिला सब चद्रमुखी परसे पद मजुल कज तिहारे। कीन्ही भली रघुनदन जू करुना करि कानन को पग धारे।--तुलसी (शब्द०)।

सिला[2]--सज्ञा पु० [स० शिल] १ खेत मे कटी फसल उठा ले जाने के पश्चात् गिरा हुआ अनाज। कटे खेत मे से चुना हुआ दाना। उ०--करौं जो कछु धरौं सचि पचि सुकृत सिला बटोरि। पैठि उर बरबस दयानिधि दभ लेत अँजोरि।--तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०--चुनना।--बीनना।

२ पछोडने या फटकने के लिये रखा हुआ अनाज का ढेर। ३ कटे हुए खेत मे गिरे अनाज के दानो को बीन या चुन कर उसी से जीवन निर्वाह करने की वृत्ति अथवा क्रिया। शिलवृत्ति।

सिला[3]--सज्ञा पुं० [अ० सिलह्] १ बदला। एवज। पलटा। प्रतीकार।

मुहा०--सिले मे = बदले मे। उपलक्ष मे।

२ इनाम। पुरस्कार (को०)। ३ उपहार। तोहफा (को०)।

सिलाई[1]--सज्ञा स्त्री० [हिं० सीना + आई (प्रत्य०)] १ सीने का काम। सूई का काम। २ सीने का ढग। जैसे,--इस कोट की सिलाई अच्छी नहीं है। ३ सीने की मजदूरी। ४ टाँका। सीवन।

सिलाई[2]†--सज्ञा स्त्री० [देश०] एक कीडा जो प्राय ऊख या ज्वार के खेतो मे लग जाता है। इसका शरीर भूरापन लिए हुए गहरा लाल होता है।

सिलाजीत--सज्ञा पु० [स० शिलाजतु] १ पत्थर की चट्टानो का लसदार पसेव जो बडी भारी पुष्टई माना जाता है। विशेष दे० 'शिलाजीत'। २ गेरू। गैरिक।

सिलाना[1]--क्रि० स० [हिं० सीना का प्रे० रूप] सीने का काम दूसरे से कराना। सिलवाना।

सिलाना[2]Ⓢ--क्रि० स० [हिं० सिराना] दे० 'सिराना'।

सिलावाक--सज्ञा पुं० [हिं० शिला + पाक] पथरफूल। छरीला। शैलज।

सिलाबी--वि० [हिं० सील, सीड + फा० आब (=पानी), अथवा फा० सैलाबी ?] सीडवाला। तर।

सिलामा--सज्ञा पुं० [अ० सिलामह] १ मसाला आदि पीसने की सिल। २ बट्टा। दे० 'सिलौट' (को०)।

**सिलारस**—सज्ञा पुं० [स० शिलारस] १ सिल्हक वृक्ष। २ सिल्हक वृक्ष का निर्यास या गोद जो बहुत सुगधित होता है।

**विशेष**—यह पेड एशियाई कोचक के दक्खिन के जगलो मे बहुत होता है। इसका निर्यास 'सिलारस' के नाम से बिकता है और औषध के काम मे आता है।

**सिलावट**—सज्ञा पु० [स० शिला + पट्ट] पत्थर काटने और गढनेवाले। सगतराश। उ०—अली मरदान खाँ को लिखा कि खाती वेलदार और सिलावट भेजकर रस्ता चौडा करे।—देवीप्रसाद (शब्द०)।

**सिलासार**—सज्ञा पुं० [सं० शिलासार] लोहा।

**सिलाह**—सज्ञा पु० [अ०] १ जिरह बकतर। कवच। उ०—जाली की आँगी कसो यो उरोजनि मानो सिपाही सिलाह किए द्वै। —मन्नालाल (शब्द०)। २ अस्त्र शस्त्र। हथियार।

**सिलाहखाना**—सज्ञा पुं० [अ० सिलाह + फा० खानह्] हथियार रखने का स्थान। शस्त्रालय। अस्त्रागार।

**सिलाहपोश, सिलाहबद**—वि० [अ० सिलाह + फा० बद] सशस्त्र। हथियारबद। शस्त्रो से सुसज्जित।

**सिलाहर**—सज्ञा पु० [स० शिल + हर] १ खेत मे से एक एक दाना अन्न बीनकर निर्वाह करनेवाला मनुष्य। सिला बीननेवाला। सिलहार। २ अकिंचन। दरिद्र।

**सिलाहसाज**—सज्ञा पुं० [अ० सिलाह + फा० साज] हथियार बनानेवाला।

**सिलाही**—सज्ञा पुं० [अ० सिलाह + ई (प्रत्य०)] शस्त्र धारण करनेवाला। सैनिक। सिपाही।

**सिलिगिया**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० शिलाग + इया (प्रत्य०)] पूरबी हिमालय के शिलाग प्रदेश मे पाई जानेवाली एक प्रकार की भेड।

**सिलि**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिल या सिल्ली] शिला। पत्थर की पटिया। उ०—सुख के माथे सिलि परै, (जो) नाम हृदय स जाय। बलिहारी वा दुख की पल पल नाम रटाय।—कबीर सा० स०, पृ० ५।

**सिलिप**Ⓤ[१]†—सज्ञा पु० [स० शिल्प] दे० 'शिल्प'। उ०—खेती, बनि विद्या, बनिज, सेवा, सिलिप सुकाज। तुलसी सुरतरु, धेनु, महि, अभिमत भोग विलास।—तुलसी (शब्द०)।

**सिलिप**[२]—सज्ञा स्त्री० [अँ० स्लिप] कागज का छोटा टुकडा जिसपर कोई सक्षिप्त बात टाँकी जाय या लिखकर कहीं भेजी जाय।

**सिलिपर**—स्त्री० पु० [अँ० स्लीपर] दे० 'सिलीपर'।

**सिलिया**—सज्ञा स्त्री० [सं० शिला] एक प्रकार का पत्थर जो मकान बनाने के काम मे आता है।

**सिलियार, सिलियारा**—सज्ञा पु० [स० शिल + हार या हारक] दे० 'सिलाहर'।

**सिलिसिलिक**—पज्ञा पुं० [सं०] गोद। लासा।

**सिलीध्र**—सज्ञा पु० [स० शिलीन्ध्र] दे० 'शिलीध्र'।

**सिलीपर**—सज्ञा पु० [अ० स्लीपर] १ लकड़ी की वह धरन जिनके ऊपर रेल की पटरी बिछाई जाती है। २ दे० 'स्लीपर'।

**सिलीमुख**Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० शिलीमुख] दे० 'शिलीमुख'। उ०—रावन सिर सरोज बन चारी। चलि रघुवीर सिलीमुख धारी। —मानस, ६।९१।

**सिलेक्ट कमिटी**—सज्ञा स्त्री० [अ०] वह कमिटी जिसमे कुछ चुने हुए मेबर या सदस्य होते है और जो किसी महत्व के विषय पर विचार कर अपना निर्णय साधारण सभा मे उपस्थित करती है।

**सिलेट**†—सज्ञा स्त्री० [अ० स्लेट] दे० 'स्लेट'।

**सिलोध**†—सज्ञ, स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बडी मछली जो भारत और बर्मा की नदियो मे पाई जाती है। यह छह् फुट तक लबी होती है।

**सिलोच्च**—सज्ञा पुं० [सं० शिलोच्च] एक पर्वत जो गगा तट पर विश्वामित्र के सिद्धाश्रम से मिथिला जाते समय राम को मार्ग मे मिला था। उ०—यह हिमवत सिलोच्च नामा। शृग गग तट अति अभिरामा।—रघुराज (शब्द०)।

**सिलौआ**—सज्ञा पु० [देश०] सन के मोटे रेशे जिनसे टोकरी बनाई जाती है।

**सिलौट, सिलौटा**—सज्ञा पु० [हिं० सिल + बट्टा] १. सिल। २ सिल तथा बट्टा।

**सिलौटी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिल + औटा (प्रत्य०)] भाँग, मसाला आदि पीसने की छोटी सिल।

**सिल्क**—सज्ञा पु० [अ०] १ रेशम। २ रेशमी कपडा।

**सिल्प**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० शिल्प] दे० 'शिल्प'।

**सिल्ल**—सज्ञा पु० [अ०] दे० 'सिल'।

**सिल्लकी**—सज्ञा स्त्री० [स०] शल्लकी वृक्ष। सलई का पेड।

**सिल्ला**—सज्ञा पु० [स० शिल] १. अनाज की बालियाँ या दाने जो फसल कट जाने पर खेत मे पडे रह जाते हैं और जिन्हे चुनकर कुछ लोग निर्वाह करते है।

**मुहा०**—सिल्ला बीनना या चुनना = खेत मे गिरे अनाज के दाने चुनना। उ०—कबिरा खेती उन लई, सिल्ला बिनत मजूर (शब्द०)। २ खलियान मे गिरा हुआ अनाज का दाना। ३ खलियान मे बरसाने के स्थान पर लगा हुआ भूसे का ढेर जिसमे कुछ दाने भी चले जाते है।

**सिल्ली**[१]—सज्ञा स्त्री० [स० शिला] १ पत्थर का सात आठ अगुल लबा छोटा टुकडा जिसपर घिसकर नाई उस्तरे की धार तेज करते हैं। हथियार को धार चोखी करने का पत्थर। सान। २ आरे से चारकर पेडी से निकाला हुआ तख्ता। फलक। पटरी। ३. पत्थर की छोटी पतली पटिया। ४ नदी मे वह स्थान जहाँ पानी कम और धारा बहुत तेज होती है। (माझी)।

**सिल्ली**[२]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिल्ला] फटकने के लिये लगाया हुआ अनाज का ढेर।

**सिल्ली**[३]—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का जलपक्षी जिसका शिकार किया जाता है।

किसी गाँव के छोर पर की भूमि। गाँव की हद। सीमा। ३ गाँव के अंतर्गत भूमि। ४ फसल तैयार हो जाने पर जमींदार और किसान में अनाज का बँटवारा।

सिवाय'—क्रि० वि० [अ० सिवा] अतिरिक्त। अलावा। छोड़कर। बाद देकर। उ०—समुद्र को चंद्रमा के सिवाय और कौन बढ़ा सकता है।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ३८९।

सिवाय'—वि० १ आवश्यकता से अधिक। जरूरत से ज्यादा। बेशी। २ अधिक। ज्यादा। ३ ऊपरी। बालाई। मामूली से अतिरिक्त और।

सिवाय'—संज्ञा पु० वह आमदनी जो मुकर्रर वसूली के ऊपर हो।

सिवार—संज्ञा स्त्री० पु० [सं० शैवाल] पानी में बालों के लच्छों की तरह फैलनेवाला एक तृण। उ०—(क) पग न इत उत धरत पावत उरझि मोह सिवार।—सूर (शब्द०)। (ख) चलती लता सिवार की, जनु तरंग के संग। बड़वानल की जनु धरयो, धूम धूमरो रंग।—तुलसी (शब्द०)।

विशेष—यह नदियों में प्राय होता है। इसका रंग हलका हरा होता है। यह चीनी साफ करने तथा दवा के काम में आता है। वैद्यक में यह कसैला, कड़ुआ, मधुर, शीतल, हलका, स्निग्ध, नमकीन, दस्तावर, घाव को भरनेवाला तथा त्रिदोष को नाश करनेवाला कहा गया है।

सिवाल—संज्ञा स्त्री०, पु० [सं० शैवाल] दे० 'सिवार'। उ०—नीलांबर नील जाल बीच ही उरझि सिवाल लट जाल में लपटि परयो।—देव (शब्द०)।

सिवाला—संज्ञा पु० [स० शिवालय] शिव का मंदिर।

सिवाली—संज्ञा पु० [सं० शैवाल] एक प्रकार का मरकत या पन्ना जिसका रंग कुछ हलका होता है और जिसमें कभी कभी ललाई की भी कुछ आभा रहती है।

सिवि(पु)—संज्ञा पु० [सं० शिवि] एक नरेश। विशेष दे० 'शिवि'। उ०—सिवि दधीचि हरिचंद कहानी।—मानस, २।८८।

सिविका(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शिविका] दे० 'शिविका'। उ०—राजा की रजाइ पाइ सचिव सहेली धाइ सतानंद त्याग सिय सिविका चढ़ाई कै।—तुलसी (शब्द०)।

सिविर—संज्ञा पु० [स० शिविर] दे० 'शिविर'। उ०—बसत सिविर मधि मगध अध सुत। जिमि उडगन मधि रवि ससि छवि जुत।—गि० दास (शब्द०)।

सिविल—वि० [अं०] १ नगर संबंधी। नागरिक। २ नगर की शांति के समय देखरेख या चाकरी करनेवाला। जैसे—सिविल पुलिस। ३ मुलकी। माली। ४ शालीन। सभ्य। मिलनसार।

सिविल डिसओबीडिएंस—संज्ञा पु० [अं०] दे० 'सविनय कानून भंग'।

सिविल नाफरमानी—संज्ञा पु० [अं० सिविल+फा० नाफर्मानी] सविनय अवज्ञा। सविनय कानून भंग।

सिविल प्रोसीजर कोड—संज्ञा पु० [अं०] न्यायविधान। जाब्ता दीवानी।

सिविल वार—सज्ञा पु० [अ०] दे० 'गृहयुद्ध'।

सिविल सर्जन—सज्ञा पु० [अँ०] सरकारी बडा डाक्टर जिसे जिले भर के अस्पतालो, जेलखानो तथा पागलखानो को देखने का अधिकार होता है।

सिविल सर्विस—सज्ञा स्त्री० [अँ०] ब्रिटिश शासनकाल मे अँगरेजी सरकार की एक विशेष परीक्षा जिसमे उत्तीर्ण व्यक्ति देश के प्रबध और शासन मे ऊँचे पद पर नियुक्त होते थे।

सिवीलियन—सज्ञा पु० [अँ०] १ सिविल सर्विस परीक्षा पास किया हुआ मनुष्य। २ मुल्की अफसर। देश के शासन और प्रबध विभाग का कर्मचारी।

सिवैयाँ—सज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सिवई'।

मुहा०—सिवैयाँ तोडना, सिवैयाँ पूरना या बटना = दे० 'सिवई बटना'।

सिष—सज्ञा पु० [स० शिष्य, शिष्य। चेला। उ०—ना गुर मिला न सिष भया लालच खेल्या डाव।—कबीर ग्र०, पृ० २।

सिष्ट[1]—सज्ञा स्त्री० [फा० शिस्त] बखी की डोरी। उ०—हस्ती लाय सिष्ट सब ढोला। दौड आय इक चाल्हहि लीला।—जायसी (शब्द०)।

सिष्ट[2]†—वि० [स० सृष्ट] रचित। उ०—सिष्ट धारण धारय वसुमती।—पृ० रा०, १।१।

सिष्ट[3]—वि० [स० शिष्ट] दे० 'शिष्ट'। उ०—वर्नाश्रम मे निष्ट इष्ट रत सिष्ट अदूषित।—श्यामा० (भू०), पृ० ४।

सिष्णासु—वि० [स०] स्नान का इच्छुक [को०]।

सिष्य‡—सज्ञा पु० [स० शिष्य] दे० 'शिष्य'। उ०—पाय रजायसु राय को ऋषिराज बोलाए। सिष्य सचिव सेवक सखा सादर सिर नाए।—तुलसी (शब्द०)।

सिस‡—सज्ञा पु० [स० शिशु] दे० 'सिसु'।

सिसकना—क्रि० अ० [अनु० या स० सीत्+करण] १ भीतर ही भीतर रोने मे रुक रुककर निकलती हुई साँस छोडना। जैसे,—लडका सिसक सिसककर राता है। २ रुक रुककर लबी साँस छोडते हुए भीतर ही भीतर रोना। शब्द निकालकर न राना। खुलकर न राना। उ०—पिय बिन जिय तरसत रहै, पल भर बिरह सताय। रैन दिवस माँह कल नहा, सिसक सिसक जिय जाय।—कबीर सा० स०, पृ० ४४।

मुहा०—सिसकता भिनकती = मैली कुचैली और रोनी सूरत की (स्त्री)।

३ जी धडकना। धकधकी होना। बहुत भय लगना। जैसे,—वहाँ जाते हुए जी सिसकता है। ४ उलटी साँस लेना। हिचकियाँ भरना। मरने के निकट होना। ५ (प्राप्ति के लिये) तरसना, रोना। (पाने के लिये) व्याकुल होना। उ०—प्रभुहि विलोकि मुनिगन पुलक कहत मूर भाग भए सब नीच नारि नर है। तुलसी सो सुख लाहु लूटत किरात कोल जाका सिसकत सुर विधि हरि हर है।—तुलसी (शब्द०)।

सिसकारना[1]—क्रि० अ० [अनु० सी सी+करना] १ जीभ दबाते हुए वायु मुँह से छोडना। सीटी का सा शब्द मुँह से निकालना। सुसकारना।

सयो० क्रि०—देना।

२ जीभ दबाते हुए मुँह से साँस खीचकर 'सी सी' शब्द निकालना। अत्यत पीडा या आनद के कारण मुँह से साँस खीचना। शीत्कार करना।

सिसकारना[2]—क्रि० स० सुसकार कर या सीटी के शब्द से कुत्ते को किसी ओर लपकाना। लहकारना।

सयो० क्रि०—देना।

सिसकारी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिसकारना] १ सिसकारने का शब्द जीभ दबाते हुए मुँह से वायु छोडने का शब्द। सीटी का सा शब्द। २ कुत्ते को किसी ओर लपकाने के लिये सीटी का शब्द। ३ जीभ दबाते हुए मुँह से साँस खीचने का शब्द। अत्यत पीडा या आनद के कारण मुँह से निकला हुआ 'सी सी' शब्द। शीत्कार।

क्रि० प्र०—देना।—भरना।

सिसकी—सज्ञा स्त्री० [अनु० सी सी या स० शीत्] १ भीतर ही भीतर रोने मे रुक रुककर निकलती हुई साँस का शब्द। खुलकर न रोने का शब्द। रुकती हुई लबी साँस भरने का शब्द।

क्रि० प्र०—भरना।—लेना।

२ सिसकारी। शीत्कार। उ०—भ्रुव मटकावति नैन नचावति। सिजित सिसकिन सोर मचावति।—पद्माकर ग्र०, पृ० २२७।

सिसिक्षा—सज्ञा स्त्री० [स०] सीचने की इच्छा। छिडकने या तर करने की इच्छा [को०]।

सिसिक्षु—वि० [स०] तर करने, सीचने का इच्छुक [को०]।

सिसियाद—सज्ञा स्त्री० [स०] मछली की सी गध। बिसायँध।

सिसिर—सज्ञा पु० [स० शिशिर] एक ऋतु। दे० 'शिशिर'। उ०—(क) चलत चलत लौ ले चले, सब सुख सग लगाय। ग्रीसम बासर सिसिर निसि, पिय मो पास बसाय।—बिहारी (शब्द०)। (ख) पावस परपि रहे उधरारै। सिसिर सम बसि नीर मझारै।—पद्माकर (शब्द०)।

सिसु—सज्ञा पु० [स० शिशु] दे० 'शिशु'। उ०—(क) लोचनाभिराम घनस्याम राम रूप सिसु, सखी कहे सखी सो तू प्रेम पय पालि री।—तुलसी (शब्द०)। (ख) दवर फूल हन जु सिसु उठी हरखि अँग फूल। हँसी करत औखध सखिनि देह ददारनि भूल।—बिहारी (शब्द०)।

सिसुघातिनी—वि० [स० शिशुघातिनी] शिशु को हत्या करनेवाली (पूतना)। उ०—सिसुघातिनी परम पापिनी। सतान को डसनो जु साँपिनी।—नद० ग्र०, पृ० २३६।

सिसुता—सज्ञा स्त्री० [स० शिशुता] दे० 'शिशुता'। उ०—(क) श्याम के सग सदा बिलसा ससुता म सुता म कछू नहा जान्या। —देवी (शब्द०)। (ख) छुटा न सिसुता की झलक, झलक्यो

जोवन अग। दीपति देहि दुहन मिलि दिपति ताफता रग। विहारी (शब्द०)।

सिसुपाल(पु)†—सज्ञा पु० [स० शिशुपाल] चेदि देश का राजा। विशेष दे० 'शिशुपाल'।

सिसुमार—सज्ञा पु० [स० शिशुमार] दे० 'शिशुमार'।

सिसुमार चक्र—सज्ञा पु० [स० शिशुमारचक्र] सौर जगत्। दे० 'शिशुमारचक्र'। उ०—एक एक नग देखि अनकन उडगन वारिय। वसत मनहुँ सिसुमार चक्र तन इमि निरधारिय। —गि० दास (शब्द०)।

सिसृक्षा—सज्ञा स्त्री० [स०] सृष्टि करने की इच्छा। रचने या वनाने की इच्छा।

सिसृक्षु—सज्ञा पु० [स०] सृष्ट करने की इच्छा रखनेवाला। रचना का इच्छुक। उ०—जाको मुमुक्षु जे प्रेम वुभुक्षु गुणी यह विश्व सिसृक्षु सदा ही। काल जिवृक्षु सरुक्षु कृपा की स्वपानन स्वक्ष स्वपक्ष प्रिया ही।—रघुराज (शब्द०)।

सिसोदिया—सज्ञा पु० [सिसोद (स्थान)] गुहिलौत राजपूतो की एक शाखा जिसकी प्रतिष्ठा क्षत्रिय कुलो मे सवसे अधिक है और जिसकी प्राचीन राजधानी चित्तौड थी और आधुनिक राजधानी उदयपुर है।

विशेष—क्षत्रियो मे चित्तौड या उदयपुर का घराना सूर्यवशीय महाराज रामचद्र की वशपरपरा मे माना जाता है। इन क्षत्रियो का पहले गुजरात के वल्लभीपुर नामक स्थान मे जाना कहा जाता है। वहाँ से वाप्पारावल ने आकर चित्तौड को तत्कालीन मोरी शासक से लेकर अपनी राजधानी वनाया। मुसलमानो के आने पर भी चित्तौड स्वतत्र रहा और हिदू शक्ति का प्रधान स्थान माना जाता था। चित्तौड मे वडे वड पराक्रमी राणा हो गए है। राणा समर सिह, राणा कुभा, राणा सांगा आदि मुसलमाना से वडो वोरता से लड़े थे। प्रसिद्ध वोर महाराणा प्रताप किस प्रकार अकवर से अपनी स्वाधीनता के लिये लडे, यह प्रसिद्ध ही है। सिसोद नामक स्थान मे कुछ दिन वसने के कारण गुहिलौतो को यह शाखा सिसोदिया कहलाई।

सिस्क(पु)†—वि० [स० शुष्क] दे० 'शुष्क'। उ०—करत देह को सिस्क।—व्रज० ग्र०, पृ० ४७।

सिस्टि(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० सृष्टि] दे० 'सृष्टि'।

सिस्न—सज्ञा पुं० [स० शिश्न] दे० 'शिश्न'।

सिस्य(पु)—सज्ञा पु० [स० शिष्य] दे० 'शिष्य'।

सिह—वि० [फा०] तीन। त्रय [को०]।

सिहद्दा—सज्ञा पु० [फा० सिह या सेह + अ० हद] वह स्थान जहाँ तीन हदे मिलती हो।

सिहपर्णी—सज्ञा पु० [स०] अडूसा। वासक वृक्ष।

सिहद—सज्ञा स्त्री० [स० शीतल] उ०—सिहरने की क्रिया या भाव। सिहरन। उ०—सिकता को रेखाएँ उभारभर जाती अपनी तरल सिहर।—लहर, पृ० २।

सिहरन—सज्ञा स्त्री० [स० शीतल] कँपकँपी। रोमाच। सिहरने की क्रिया।

सिहरना†—क्रि० अ० [स० शीत + हिं० ना] १ ठढ मे काँपना। २ काँपना। कपित होना। ३ भयभीत होना। दहलना। उ०—छनक वियोग कु याद परै अतिसै हिय सिहरत। —व्यास (शब्द०)। ४ रोगटे खड होना।

सिहरा—सज्ञा पु० [हि० सिर + हरा या हार] दे० 'सेहरा'।

सिहराना[1]—क्रि० स० [हिं० सिहरना] १ सरदी से कँपाना। शीत से कपित करना। २ कँपाना। कपित करना। ३ भयभीत करना। दहलाना।

सिहराना[2]—क्रि० स०, क्रि० अ० दे० 'सहलाना'। २ दे० 'सिहलाना'—१।

सिहरावन†—सज्ञा पुं० [हिं० सिहलाना] दे० 'सिहलावन'।

सिहरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिहरना] १ शीतजन्य कप। ठढ के कारण कँपकँपी। २ कप। कँपकँपी। ३ भय। दहलना। ४ जूडी का वुखार। ५ रोगटे खडे होना। रोमहप। लोमहर्प।

सिहरू—सज्ञा पु० [देश०] सभालू। सिदुवार।

सिहलाना†—क्रि० अ० [स० शीतल] १ सिराना। ठढा होना। २ शीत खा जाना। सीड खाना। नम होना। ३ ठढ पडना। सरदी पडना।

सिहलावन†—सज्ञा पु० [हिं० सिहलाना] सरदी। ठढ। जाडा।

सिहली—सज्ञा स्त्री० [स० शीतली] शीतली जटा। शीतली लता।

सिहान—सज्ञा पु० [स० सिहाण] मडूर। लोहकिट्ट।

सिहाना†[1]—क्रि० अ० [स० ईर्ष्या, पु० हिं० हिसिपा] १ ईर्ष्या करना। डाह करना। २ किसी अच्छा वस्तु को देखकर इस वात से दु खी होना कि वैसी वस्तु हमार पास नहो है। स्पर्धा करना। उ०—द्वारिका की देख छाव सुर असुर सकल सिहात।—सूर (शब्द०) ३. पाने के लिये ललचना। लुभाना। उ०—सूर प्रभु को निरखि गोपी मनहि मनहि सिहाति।—सूर (शब्द०)। ४ मुग्ध होना। मोहित होना। उ०—सूर श्याम मुख निरख जसोदा मनहो मनाह सिहानो।—सूर (शब्द०)। (ख) लाल अलौकिक लरिकइ लाख लखि सखो सिहाति—विहारा (शब्द०)।

सिहाना[2]—क्रि० स० १ ईर्ष्या की दृष्टि से देखना। २ अभिलाप की दृष्टि से देखना। ललचना। उ०—समउ समाज राज दशरथ को लोकप सकल सिहाही।—तुलसी (शब्द०)। ३ अभिलापुक अथवा मुग्ध होकर प्रशसा करना। उ०—देव मकल सुरपतिहि सिहाही। आज पुरदर सम कोउ नाही।—मानस १।३१७।

सिहारना(पु)†—क्रि० स० [देश०] तलाश करना। ढूढना। २ जुटाना। उ०—हम कन्यन को व्याह विचारो। इनहि जोग वर तुमहु सिहारो।—पद्माकर (शब्द०)।

सिहिकना—क्रि० अ० [स० शुष्क] सूखना। (फसल का)।

सिहिटि†(पु)—[स० सृष्टि] दे० 'सृष्टि'।

रहते हैं। तोमडी। उ०—सीगी भाकुर विनि सब धरी। —जायसी (शब्द०)।

**सींघन**—सज्ञा पु० [देश०] घोडो के माथे पर दो या अधिक भौंरीवाला टीका।

**सींच**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सीचना] १ सीचने की क्रिया या भाव। सिंचाई। छिडकाव।

**सींचना**—क्रि० स० [स० सिञ्चन] १ पानी देना। पानी से भरना। आबपाशी करना। पटाना। जैसे,—खेत सीचना, बगीचा सीचना। उ०—अति अनुराग सुधाकर सीचत दाडिम बीज समान।—सूर (शब्द०)। २ पानी छिडककर तर करना। भिगोना। ३ छिडकना। (पानी आदि) डालना या छितराना। उ०—(क) मार सुमार करी खरी अरी भरी हित मारि। सीच गुलाब घरी घरी अरी बरोहि न बारि। —बिहारी (शब्द०)। (ख) आँच पय उफनात सीचत सलिल ज्यो सकुचाइ।—तुलसी (शब्द०)।

**सींची**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सीचना] सीचने का समय।

**सींव, सींवँ** ⓤ—सज्ञा पु० [सं० सीमा] सीमा। हद। मर्यादा। उ०—(क) सुख की सींवँ अवधि आनँद की अवध बिलोकिहौ जाइहौ।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सुखनि की सीव सोहै सुजस समूह फैलो मानो अमरावती को देखि कै हँसतु है। —गुमान (शब्द०)।

मुहा०—सीव चरना या कोडना = अधिकार दिखाना। दबाना। जबरदस्ती करना। उ०—है काके द्वै सीस ईस के जो हठि जन की सीव चरै।—तुलसी (शब्द०)।

**सींवनि** ⓤ†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सीना] जोड या सधि का स्थान। जोड की रेखा या चिह्न। उ०—येडी वाम पाँव की लगावै सीवनि कै बीचि, वाही जोनि ठोर ताहि नीकै करि जानिए।—सुदर ग्र०, भा० १, पृ० ४२।

**सींवा** सज्ञा स्त्री० [स० सीमा] दे० 'सीमा'। उ०—निरखि सखि सुदरता की सीवा। अधर अनूप मुरलिका राजति, लटकि रहति अध ग्रीवा।—सूर०, १०।१८०८।

**सी**—वि० स्त्री० [सं० सम, हिं० सा] सम। समान। तुल्य सदृश। जैसे,—वह स्त्री बावली सी है। उ०—(क) मूरति की सूरति कही न परै तुलसी पै जानै सोई जाके उर कसकै करक सी। तुलसी (शब्द०)। (ख) दुरै न निधरघटौ दिए ए गवरी कुचाल। विष सी लागति है बुरी हँसी खिसी की लाल। —बिहारी (शब्द०। (ग) सरद चद की चादनी मद परति सी जाति।—पद्माकर (शब्द०)।

मुहा०—अपनी सी = अपने भरसक। जहाँ तक अपने से हो सके, वहाँ तक। उ०—मैं अपनी सी बहुत करी री।—सूर (शब्द०)।

**सी**[1]—सज्ञा स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो अत्यत पीडा या आनद रसास्वाद के समय मुँह से निकलता है। शीत्कार। सिसकारी। उ०—'सी' करनवारी मेद सीकरन वारी रति सी करन कारी सो बसीकरनवारी है।—पद्माकर (शब्द०)।

**सी**[2]—सज्ञा स्त्री० [स० सीत] बीज की बोआई।

**सी**†[4]—सज्ञा पु० [स० शीत] शीत। दे० 'भीउ'। उ०—माह माम सी पडयो अतिमार।—बी० रासो, पृ० ६७।

**सीउ** ⓤ[5]—सज्ञा स्त्री० [स० सीता] उ०—अपने अपने को सब चाहत नीको मूल दुहूँ को दयालु दलह सी को।—तुलसी ग्र०, पृ० ५४६।

**सी० आई० डी०**—सज्ञा पु० [अँ० क्रिमिनल इनवेस्टिगेशन डिपार्टमेंट का सक्षिप्त रूप] दे० 'क्रिमिनल इनवेस्टिगेशन डिपार्टमेंट'। खुफिया विभाग। जैसे,—सी० आई० डी० ने सदेह पर एक आदमी को गिरफ्तार किया। २ भेदिया। गुप्तचर।

**सीअ** ⓤ†—सज्ञा स्त्री० [स० सीता] दे० 'सीता'। उ० भयउ मोहु सिव कहा न कीन्हा। भ्रम बस बेषु सीअ कर लीन्हा। —मानस, पृ० ५५

**सीउ** ⓤ—सज्ञा पु० [सं० शीत] शीत। ठढ। उ०—(क) कीन्हेसि धूप सीउ औ छाहाँ।—जायसी (शब्द०)। (ख) जहाँ भानु तहँ रहा न सीउ।—जायसी (शब्द०)।

**सीकचा**—सज्ञा पुं० [फा० सीखचह्] लोहे की छड। सीखचा।

**सीकर**[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ जलकण। पानी की बूँद। छीटा। उ०—(क) श्रम स्वेद सीकर गुड मडित रूप अबुज कोर।—सूर (शब्द०)। (ख) राम नाम रति स्वाति सुधा सुभ सीकर प्रेम पियासा।—तुलसी (शब्द )। २ पसीना। स्वेदकण। उ०—आनन सीकर सी कहिए धक सोवत ते अकुलाय उठी क्यो।—केशव (शब्द०)।

**सीकर** ⓤ[2]—सज्ञा पु० [स० शृगाल] स्यार। गीदड।

**सीकर** ⓤ[3]—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खला] जजीर। सिकडी। उ०—भट भट धरे असी कर मे चटे सीकर सुडन मैं लसत।—गि० दास (शब्द०)।

**सीकरा** ⓤ—सज्ञा पु० [फा० शिकरह्] बाज। श्येन। एक शिकारी पक्षी। उ०—सीकरा सो काल है कलमरी सी लपेट लेहै, चगुल के तले दबे दबे चिचयायगे।—मलूक० बानी, पृ० ३१।

**सीकल**†[1]—सज्ञा पुं० [देश०] डाल का पका हुआ आम।

**सीकल**[2]—सज्ञा स्त्री० [अ० सैकल] हथियारो का मोरचा छुडाने की क्रिया। हथियार की सफाई।

**सीकस**—सज्ञा पु० [देश०] ऊसर। उ०—सिंह शार्दुल यक हर जोतिनि सीकस बोइनि धाना।—कबीर (शब्द०)।

**सीका**[1]—सज्ञा पुं० [सं० शीर्षक] १ सोने का एक आभूषण जो सिर पर पहना जाता है। २ सिक्का।

**सीका**[2]—सज्ञा पु० [स० शिक्या] ऊपर टाँगने की सुतरी आदि की जाली जिसपर दूध, दही आदि का बरतन रखते हैं। छीका। सिकहर।

**सीकाकाई**—सज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी फलियाँ रीठे की भाँति सिर के बाल आदि मलने के काम मे आती है। कुछ लोग इसे सातला भी मानते है।

सीकार(ब्र)—संज्ञा पु० [सं० सीत्कार] दे० 'सीत्कार'। उ०—चुवन करत कपोल मुखहि सीकार करावत। हृदय माँझ धँसि जात कुचन पर रोम बढावत।—ब्रज० ग्र०, पृ० १०३।

सीकारी(ब्र)—संज्ञा पुं० [फा० शिकार] शिकारी। उ०—बड़े बड़े सीकारी जोधा, आगे पग है डारा।—घरम० श०, पृ० २७।

सीकी[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीका] छोटा सीका या छीका। छोटा सिकहर।

सीकी[2]—संज्ञा पुं० [देश०] १ छेद। सूराख। २ मुँह। मुहँडा।

सीकुर—संज्ञा पु० [सं० शूक] गेहूँ, जौ आदि की बाल के ऊपर निकले हुए बाल के से कडे सूत। शूक। उ०—गडत पाँइ जव आइ, बडी बिथा सीकुर करत। क्यो न पीर सरसाइ याके हिय भूपति चुभ्यो।—गुमान (शब्द०)।

सीकोl†—संज्ञा पुं० [सं० शिक्य] दे० 'सीका'।

सीक्रेट[1]—वि० [अं०] छिपा हुआ। गुप्त। पोशीदा। जैसे, सीक्रेट पुलिस। सीक्रेट कमिटी।

सीक्रेट[2]—संज्ञा पुं० गुप्त बात। जैसे,—गवर्नमेंट सीक्रेट बिल।

सीख[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा, प्रा० सिक्खा] १ सिखाने की क्रिया या भाव। शिक्षा। तालीम। २ वह बात जो सिखाई जाय। उ०—(क) मोही मैं रहत रहै मोही सौं उदास सदा सीखत न सीख तन सीख निरधारी है।—ठाकुर० पृ० १२। ३ परामर्श। सलाह। मंत्रणा। उपदेश। उ०—(क) याकी चीख सुनै ब्रज को रे।—सूर (शब्द०)। (ख) मोल्हन कहत सीख मेरी सीस धर रे।—हम्मीर०, पृ० २०।

सीख[2]—संज्ञा स्त्री० [फा० सीख] १ लोहे की लंबी पतली छड। शलाका। तीली। २ वह पतली छड जिसमे गोदकर मास भूनते हैं। ३ बडी सूई। सूआ। शंकु। ४ लोहे की छड जिससे जहाज के पेंदे मे आया हुआ पानी नापते हैं। (लश०)।

सीखचा—संज्ञा पुं० [फा० सीखचह्] १ लोहे की सीख जिसपर मास लपेटकर भूनते हैं। २ लोहे की छड। ३ लोहेकी नुकीली छड।

यौ०—सीखचा कबाब=सीखचे पर गोद कर भूना हुआ कबाब।

सीखना(ब्र)—संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षण, प्रा० सिक्खण, हिं० सीखना] शिक्षा। सीख।

सीखना—क्रि० स० [सं० शिक्षण, प्रा० सिक्खण] १ ज्ञान प्राप्त करना। जानकारी प्राप्त करना। किसी से कोई बात जानना। जैसे,—विद्या सीखना, कोई बात सीखना। २ किसी कार्य के करने की प्रणाली आदि समझना। काम करने का ढंग आदि जानना। जैसे,—सितार सीखना, शतरंज सीखना। ३ अनुभव प्राप्त करना।

संयो० क्रि०—जाना।—लेना।

सीगा[1]—संज्ञा पु० [अ० सीगह्] १ साँचा। ढाँचा। २ व्यापार। पेशा। ३ पुरुष, काल आदि की दृष्टि से क्रिया का रूप (को०)। ४ विभाग। महकमा।

यौ०—सीगेवार=व्योरेवार।

५ एक प्रकार के वाक्य जो मुसलमानो के विवाह के समय कहे जाते हैं।

सीगा[2]—संज्ञा पुं० [अ० सिगार] दे० 'सिगार'।

सीगा(ब्र)†[1]—वि० [हिं० सगा] अपना। निकटस्थ। जो पराया न हो। संबंधी। उ०—नेडा वेसाँ जाय नित, सीगो मित्र समान।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ४५।

सीगारा[1]—संज्ञा पुं० [देश०] मोटा कपडा।

सीगारा[2]—संज्ञा पु० [अ० सिगार] दे० 'सिगार'।

सीच(ब्र)—संज्ञा स्त्री० [?] हाल।

सीचन—संज्ञा पुं० [देश०] खारी पानी से मिट्टी निकालने का एक ढंग।

सीचापू—संज्ञा स्त्री० [सं०] यक्ष्मिणी।

सीछन(ब्र)—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षण] दे० 'शिक्षण'। उ०—सीछन काज वजीरन को कहँ बोल यो एदिनवाहि समा मा।—भूषण ग्र०, पृ० १३५।

सीज[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्धि, प्रा० सिज्झि, हिं० सीझ] दे० 'सीझ'।

सीज[2]—संज्ञा पु० [देश०] थूहर। सेहुँड।

सीजना—क्रि० अ० [सं० सिद्ध, प्रा० सिज्झ, हिं० सीज+ना] दे० 'सीझना'।

सीझ—संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्धि, प्रा० सिज्झि] सीझने की क्रिया या भाव। गरमी से गलाव।

सीझना—क्रि० अ० [सं० सिद्ध, प्रा० सिज्झ, हिं० सीज, सीझ+ना (प्रत्य०)] १ आँच या गरमी पाकर गलना पकना। चुरना। जैसे,—दाल सीझना, रसोई सीझना। २ आँच या गरमी से मुलायम पडना। ताव खाकर नरम पडना। ३ सिद्ध होना। उ०—सबद बिदौ अबधू सबद बिदौ सबदे सीझत काया।—गोरख०, पृ० ४५। ४ सूखे हुए चमडे का मसाले आदि मे भीगकर मुलायम होना। ५ ताप या कष्ट सहना। क्लेश झेलना। ६ कायक्लेश सहना। तप करना। तपस्या करना। उ०—(क) एड वहि लागि जनम भरि सीझा। चहै न औगहि, ओही रीझा।—जायसी (शब्द०)। (ख) गनिका गीध अजामिल आदिक लै कामी प्रयाग कब सीझे।—तुलसी (शब्द०)। ७ मरदी से गलना। बहुत ठंढ खाना। ८ ऋण का निबटारा होना। ९ मिलने के योग्य होना। प्राप्तव्य होना। जैसे,—(क) बयाना हुआ और तुम्हारी दलाली सीझी। (ख) वह मकान रेहन रख लोगे तो १) सैकडे का ब्याज सीझेगा।

सीट[1]—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बैठने का स्थान। आसन। २ एक आदमी के बैठने की जगह (को०)। ३ किसी सभा, समिति मंडल आदि के सदस्य की संख्या (को०)।

सीट[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना] सीटने की क्रिया या भाव। जीट।

सीटना—क्रि० स० [अनु०] डींग मारना। शेखी मारना। बढ बढ कर बातें करना।

सीट पटाँग—सज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना + (ऊट) पटाँग] बढ बढकर की जानेवाली बातें। घमड भरी बात।

सीटी—सज्ञा स्त्री० [स० शीतृ] १ वह पतला महीन शब्द जो ओठो को गोल सिकोडकर नीचे की ओर आघात के साथ वायु निकालने से होता है।

क्रि० प्र०—बजाना।

मुहा०—सीटी देना = सीटी के शब्द से बुलाना या और कोई सकेत करना।

२ इसी प्रकार का शब्द जो किसी बाजे या यत्र आदि के भीतर की हवा निकालने से होता है। जैसे,—रेल की सीटी।

मुहा०—सीटी देना = (१) सीटी का शब्द निकालना। जैसे,—रेल सीटी दे रही है। (२) सीटी से सावधान करना।

३ वह बाजा या खिलौना जिसे फूँकने से उक्त प्रकार का शब्द निकले।

यौ०—सीटीबाज = मुँह से बार बार सीटी की आवाज निकालनेवाला।

सीठ—सज्ञा स्त्री० [स० शिष्ट, प्रा० सिट्ठ (= शेष)] दे० 'सीठी'।

सीठना—सज्ञा पु० [स० अशिष्ट, प्रा० असिट्ठ + हिं० ना (प्रत्य०)] अश्लील गीत जो स्त्रियाँ विवाहादि मागलिक अवसरो पर गाती हैं। सीठनी। विवाह की गाली।

सीठनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सीठना] विवाह की गाली।

सीठा—वि० [सं० शिष्ट, प्रा० सिट्टी (= बचा हुआ)] नीरस। फीका। बिना स्वाद का। बेजायका।

सीठापन—सज्ञा पुं० [हिं० सीठा + पन] नीरसता। फीकापन।

सीठी[1]—सज्ञा स्त्री० [सं० शिष्ट, प्रा० सिट्ठी (= बचा हुआ)] १ फल, फूल पत्ते आदि का रस निकल जाने पर बचा हुआ निकम्मा अश। वह वस्तु जिसका रस या सार निचुड गया हो। खूद। जैसे,—अनार की सीठी, भाँग की सीठी, पान की सीठी। २ निस्सार वस्तु। सारहीन पदार्थ। ३ नीरस वस्तु। फीकी चीज।

सीठी[2]—वि० स्त्री० दे० 'सीठा'।

सीड़—सज्ञा स्त्री० [स० शीतल या शीत + प्रा० ड (प्रत्य०)] सील। तरी। नमी।

सीढी—सज्ञा स्त्री० [स० श्रेणी या देशी सिड्ढी (= सीढी)] १ किसी ऊँचे स्थान पर क्रम क्रम से चढने के लिये एक के ऊपर एक बना हुआ पैर रखने का स्थान। निसेनी। जीना। पैडी। २ बाँस के दो बल्लो का बना लबा ढाँचा, जिसमे थोडी थोडी दूर पर पैर रखने के लिये डडे लगे रहते है और जिसे भिडाकर किसी ऊँचे स्थान तक चढते हैं। बाँस की बनी पैडी।

क्रि० प्र०—लगाना।

यौ०—सीढी का डडा = पैर रखने के लिये बाँस की सीढी मे जडा हुआ डडा।

मुहा०—सीढी सीढी चढना = क्रम क्रम से ऊपर की ओर बढना। धीरे धीरे उन्नति करना।

३ उत्तरोत्तर उन्नति का क्रम। धीरे धीरे आगे बढने की परपरा। ४ हैंड प्रेस का एक पुर्जा जिसपर टाइप रखकर छापने का प्लैटेन लगा रहता है। ५ घुटिया के आकार का लकडी का पाया जो खडमाल मे चीनी साफ करने के काम मे आता है। ६ एक गराडीदार लकडी जो गिरदानक की आड के लिये लपेटन के पास गडी रहती है। (जुलाहे)।

सीत(पु)†[1]—सज्ञा स्त्री० [स० सीता] दे० 'सीता'। उ०—बड कँवरि सीत विदेह री रघुनाथ वर राजेस।—रघु० रू०, पृ० ८४।

सीत†[2]—सज्ञा पु० [स० शीत] दे० 'शीत'।

सीत†[3]—सज्ञा पुं० [स० मिक्थ] दे० 'सीथ'। उ०—बटा महापरमाद सीत सतन कर छाडन।—पलटू०, भा० १, पृ० १५।

सीतकर—सज्ञा पुं० [स० शीतकर] चद्रमा। उ०—हौं ही बौरी विरह बस कै बौरो सबु गाउँ। कहा जानि ए कहत है ससिहिं सीतकर नाउँ।—बिहारी र०, दो० ६५।

सीतपकड—सज्ञा पुं० [हिं० शीत + पकडना] एक रोग जो हाथी को शीत से होता है।

सीतपति(पु)†—सज्ञा पुं० [स० सीतापति] दे० 'सीतापति'। उ०—प्रारभै दौलत पुन पाणा पुणै सुवाणा सीतपत।—रघु० रू०, पृ० २४।

सीतमयूख(पु)—सज्ञा पु० [सं० शीतमयूख] चद्रमा। सीतकर। सुधाकर। उ०—घोर अनल को भखत है सीतमयूख सहाय।—दीन० ग्र०, पृ० १७६।

सीतल‡(पु)—वि० [स० शीतल] दे० 'शीतल'।

सीतल चीनी—सज्ञा स्त्री० [सं० शीतल + हिं० चीनी] दे० 'शीतल-चीनी'।

सीतलपाटी—सज्ञा स्त्री० [स० शीतल + हिं० पाटी] १ एक प्रकार की बढिया चिकनी चटाई। २ पूर्व बगाल और आसाम के जगलो मे होनेवाली एक प्रकार की झाडी जिससे चटाई या सीतलपाटी बनती है। ३ एक प्रकार का धारीदार कपडा।

सीतल बुकनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० शीतल + बुकनी] १ सत्तू। सतुआ। २ सतो की बानी। (साधु)।

सीतला—सज्ञा स्त्री० [स० शीतला] दे० 'शीतला'।

यौ०—सीतला माई = शीतला माता।

सीता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह रेखा जो जमीन जोतते समय हल की फाल के धँसने से पडती जाती है। कूँड।

विशेष—वेदो मे सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी और कई मत्रो की देवता है। तैत्तिरीय ब्राह्मण मे सीता ही सावित्री और पाराशर गृह्यसूत्र मे इद्रपत्नी कही गई हैं।

२ मिथिला के राजा सीरध्वज जनक की कन्या जो श्रीरामचद्र जी की पत्नी थी।

विशेष—इनकी उत्पत्ति की कथा यो है कि राजा जनक ने सतति के लिये एक यज्ञ की विधि के अनुसार अपने हाथ से भूमि

जोती। जुती हुई भूमि की कूँड (सीता) से सीता उत्पन्न हुई। सयानी होने पर सीता के विवाह के लिये जनक ने धनुर्यज्ञ किया, जिसमे यह प्रतिज्ञा थी कि जो कोई एक विशेष धनुष को चढावे, उससे सीता का विवाह हो। अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र कुमार रामचद्र ही उस धनुष को चढा और तोड सके इससे उन्ही के साथ सीता का विवाह हुआ। जब विमाता की कुटिलता के कारण रामचद्र जी ठीक अभिषेक के समय पिता द्वारा १४ वर्षो के लिये वन मे भेज दिए गए, तब पतिपरायणा सती सीता भी उनके साथ वन मे गई और वहाँ उनकी सेवा करती रही। वन मे ही लका का राजा रावण उन्हे हर ले गया, जिसपर राम ने बदरो का भारी सेना लेकर लका पर चढाई की और राक्षसराज रावण को मारकर वे सीता को लेकर १४ वर्ष पूरे होने पर फिर अयोध्या आए और राजसिंहासन पर बैठे।

जिस प्रकार महाराज रामचद्र विष्णु के अवतार माने जाते है, उसी प्रकार सीता देवी भी लक्ष्मी का अवतार मानी जाती है और भक्तजन राम के साथ बराबर इनका नाम भी जपते हैं। भारतवर्ष मे सीता देवी सतियो मे शिरोमणि मानी जाती है। जब राम ने लोकमर्यादा के अनुसार सीता की अग्नि-परीक्षा की थी, तब स्वय अग्निदेव ने सीता को लेकर राम को सौपा था।

**पर्या०**—वैदेही। जानकी। मैथिली। भूमिसभवा। अयोनिजा।

**यौ०**—सीता की मचिया = एक प्रकार का गोदना जो स्त्रियाँ हाथ मे गुदाती है। सीता की रसोई = (१) एक प्रकार का गोदना। (२) बच्चो के खेलने के लिये रसोई के छोटे छोटे बरतन। सीता की पजीरी = कर्पूरवल्ली नाम की लता।

३ वह भूमि जिसपर राजा की खेती होती हो। राजा की निज की भूमि। सीर। ४ दाक्षायणी देवी का एक रूप या नाम। ५ आकाशगगा की उन चार धाराओ मे से एक जो मेरु पर्वत पर गिरने के उपरात हो जाती है।

**विशेष**—पुराणो के अनुसार यह नदी या धारा भद्राश्व वर्ष या द्वीप मे मानी गई है।

६ मदिरा। ७ ककही का पौधा। ८ पातालगारुडी लता। ९ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, तगण, मगण, यगण और रगण होते है। उ०—जन्म बीता जात सीता अब रीता बावरे! राम सीता राम सीता राम सीता गाव रे। छद०, पृ० २०७। १० सीताध्यक्ष के द्वारा एकत्र किया हुआ अनाज। ११ जैनो के अनुसार विदेह की एक नदी का नाम। १३, हल से जुती हुई भूमि (को०)। १४ कृषि। खेती (को०)। १५ इद्र की पत्नी (को०)। १६ उमा का नाम (को०)। १७ लक्ष्मी का नाम (को०)।

**सीताकुड**—सज्ञा पु० [स० सीताकुण्ड] वह कुड जो सीता देवी के सबध से पवित्र तीर्थ माना जाता हो।

**विशेष**—इस नाम के अनेक कुड और झरने भारतवर्ष मे प्रसिद्ध हैं। जैसे,—(१) मुगेर से ढाई कोस पर गरम पानी का एक कुड है। इसके विषय मे प्रसिद्ध है कि जब देवताओ ने सीता जी की पूजा नही स्वीकार की, तब वे फिर अग्निपरीक्षा के लिये अग्निकुड मे कूद पडी। आग चट बुझ गई और उसी स्थान पर पानी का एक सोता निकल आया। (२) भागलपुर जिले मे मदार पर्वत पर एक कुड। (३) चपारन जिले मे मोतिहारी से छह कोस पूर्व एक कुड। (४) चटगाँव जिले मे एक पर्वत की चोटी पर एक कुड। (५) मिरजापुर जिले मे विध्याचल के पास एक झरना और कुड।

**सीतागोप्ता**—सज्ञा पु० [स० सीतागोप्तृ] सीता का रक्षक। जुते हुए खेत का रक्षक (को०)।

**सीताजानि**—सज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी पत्नी सीता हैं—श्रीरामचद्र।

**सीतातीर्थ**—सज्ञा पुं० [सं०] वायुपुराण मे वर्णित एक तीर्थ।

**सीतात्यय**—सज्ञा पु० [स०] अर्थशास्त्र के अनुसार किसानो पर होनेवाला जुरमाना। खेती के सबध का जुरमाना (कौटि०)।

**सीताद्र-य**—सज्ञा पु० [स०] खेती के उपादान। काश्तकारी का सामान।

**सीताधर**—सज्ञा पु० [सं०] हलधर। बलराम जी।

**सीताध्यक्ष** सज्ञा पु० [स०] वह राजकर्मचारी जो राजा की निज की भूमि मे खेतीबारी आदि का प्रबध करता हो।

**सीतानवमी व्रत**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का व्रत।

**सीतानाथ**—सज्ञा पु० [स०] श्रीरामचद्र।

**सीतापति**—सज्ञा पु० [स०] (सीता के स्वामी) श्रीरामचद्र।

**सीतापहाड़**—सज्ञा पु० [स० सीता + हिं० पहाड] एक पर्वत जो बगाल के चटगाँव जिले मे है।

**सीताफल**—सज्ञा पु० [स०] १ शरीफा। २ कुम्हडा।

**सीताबट**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० सीतावट] दे० 'सीतावट'। उ०—विटप महीप सुरसरित समीप सोहै, सीताबट पेखत पुनीत होत पातकी। बारिपुर दिगपुर बीच बिलसति भूमि, अकित जो जानकी चरन जलजात की।—तुलसी ग्र०, पृ० २६२।

**सीतायज्ञ**—सज्ञा पु० [स०] हल जोतने के समय होनेवाला एक यज्ञ।

**सीतारमण**—सज्ञा पु० [स०] (सीता के पति) रामचद्र जी।

**सीतारमनⓊ**—सज्ञा पु० [स० सीतारमण] श्रीरामचद्र।

**सीतारवन, सीतारौन**‡—सज्ञा पु० [स० सीता + रमण, प्रा० रवण, हिं० रवन, रौन] दे० 'सीतारमण'।

**सीतालोष्ट**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सीतालोष्ठ'।

**सीतालोष्ठ**—सज्ञा पु० [स०] जुते हुए खेत की मिट्टी का ढेला (गोभिल श्राद्धकल्प)।

**सीतावट**—सज्ञा पुं० [सं०] प्रयाग और चित्रकूट के बीच एक स्थान जहाँ वट वृक्ष के नीचे राम और सीता दोनो ठहरे थे।

**सीतावन**—सज्ञा पुं० [स०] एक तीर्थ का नाम (को०)।

**सीतावर**—सज्ञा पु० [स०] श्रीरामचद्र।

**सीतावल्लभ**—संज्ञा पुं० [सं०] सीतापति। रामचंद्र।

**सीतास्वयंवर** संज्ञा पु० [सं० सीतास्वयम्वर] सीता जी का स्वयंवर। धनुषयज्ञ।

**सीताहरण**—संज्ञा पु० [सं०] रावण के द्वारा सीता जी का अपहरण।

**सीताहरन**Ⓤ—संज्ञा पु० [सं० सीताहरण] दे० 'सीताहरण'।

**सीताहार**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पौधा।

**सीतिनक**—संज्ञा पु० [सं०] १ मटर। २ दाल।

**सीतोलक** संज्ञा पु० [पु०] मटर।

**सीतोदा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैनों के अनुसार विदेह की एक नदी का नाम।

**सीत्कार**—संज्ञा पु० [सं०] वह शब्द जो अत्यंत पीड़ा या आनंद के समय मुँह से साँस खींचने से निकलता है। सी सी शब्द। सिसकारी।

**सीत्कारवाहुल्य**—संज्ञा पु० [सं०] वंशी के छह दोषों में से एक दोष।

विशेष—वंशी के छह दोष ये हैं—सीत्कारबाहुल्य, स्तब्ध, विस्वर खंडित, लघु और अमधुर।

**सी कृति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सीत्कार'।

**सीत्य**[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ धान्य। धान। २ खेत। कृषिक्षेत्र।

**सीत्य**[2]—वि० हल की फाल की रेखाओं से युक्त। कृष्ट। जोता हुआ।

**सीथ**—संज्ञा पु० [सं० सिक्थ, प्रा० सित्थ] पके हुए अन्न का दाना। भात का दाना। उ०—लहि सतन की सीथ प्रसादी। आयो मुक्ति मुक्ति मरयादी।—रघुराज (शब्द०)।

**सीथि**Ⓤ—संज्ञा पु० [सं० सिक्थ] दे० 'सीथ'।

**सीदंतीय**—संज्ञा पुं० [सं० सीदन्तीय] एक साम गान।

**सीद**—संज्ञा पुं० [सं०] ब्याज पर रुपया देना। सूदखोरी। कुसीद।

**सीदना**—क्रि० अ० [सं० सीदति] दुःख पाना। कष्ट झेलना। उ०—(क) जद्यपि नाथ उचित न होत अस प्रभु सों करौं ढिठाई। तुलसिदास सीदत निसि दिन देखत तुम्हारि निठुराई।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सीदत साधु साधुता सोचति, बिलसत खल, हुलसति खलई है।—तुलसी (शब्द०)।

**सीदी**—संज्ञा पु० [देश०] शक जाति का मनुष्य।

**सीद्य**—संज्ञा पु० [सं०] आलस्य। काहिली। सुस्ती।

**सीद्यमान**—वि० [सं०] दुःखी। पीड़ित। उ०—साधु सीद्यमान जानि रीति पाय दीन की।—तुलसी ग्र०, पृ० २४३।

**सीध**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीधा] १ ठीक सामने की स्थिति। सम्मुख विस्तार या लंबाई। वह लंबाई जो बिना कुछ भी इधर उधर मुड़े एक तार चली गई हो, जैसे—नाक की सीध में चले जाओ। २ ऋजुता। सरलता। ३. लक्ष्य। निशाना।

मुहा०—सीध बाँधना = (१) सड़क, क्यारी आदि बनाने में पहले रेखा डालना। (२) निशाना साधना। लक्ष्य ठीक करना।

**सीधा**[1]—वि० [सं० शुद्ध, ब्रज० सूधा, सूधो] [वि० स्त्री० सीधी] १ जो बिना कुछ इधर उधर मुड़े लगातार किसी ओर चला गया हो। जो टेढ़ा न हो। जिसमें फेर या घुमाव न हो। अवक्र। सरल। ऋजु जैसे—सीधी लकड़ी, सीधा रास्ता। २ जो किसी ओर ठीक प्रवृत्त हो। जो ठीक लक्ष्य की ओर हो।

मुहा०—सीधा करना = लक्ष्य की ओर लगाना। निशाना साधना, (बंदूक आदि का)। सीधी राह = सुमार्ग। अच्छा आचरण। सीधी सुनाना = (१) साफ साफ कहना। खरा खरा कहना। लगी लिपटी न रखना। (२) भला बुरा कहना। दुर्वचन कहना। गालियाँ देना। सीधा आना = सामना करना। भिड़ जाना।

३ जो कुटिल या कपटी न हो। जो चालबाज न हो। सरल प्रकृति का। निष्कपट। भोला भाला। ४ शांत और सुशील। शिष्ट। भला। जैसे—सीधा आदमी।

मुहा०—सीधी आँखों न देखना = (किसी का) सह न सकना। (किसी का) अच्छा न लगना। (किसी की) उपस्थिति खटकना। उ०—पढ़कर पुस्तक न फाड़ डालनेवालों को भी कदापि सीधी आँखों नहीं देख सकते।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २८६। सीधी तरह = शिष्ट व्यवहार से। नरमी से। जैसे—(क) सीधी तरह बोलो। (ख) वह सीधी तरह न मानेगा। सीधी अँगुली घी न निकलना = बिना कड़ाई के कार्य का न होना।

५ जो नटखट या उग्र न हो। जो बदमाश न हो। अनुकूल। शांत प्रकृति का। जैसे—सीधा जानवर, सीधा लड़का।

यौ०—सीधा सादा = (१) भोला भाला। निष्कपट। (२) जिसमें बनावट या तड़क भड़क न हो।

मुहा०—(किसी को) सीधा करना = दंड देकर ठीक करना। शासन करना। रास्ते पर लाना। शिक्षा देना। सीधा दिन = अच्छा दिन। शुभ दिन या मुहूर्त। जैसे—सीधा दिन देखकर यात्रा करना।

६ जिसका करना कठिन न हो। सुकर। आसान। सहल। जैसे,—सीधा काम, सीधा सवाल, सीधा ढंग। ७ जो दुर्बोध न हो। जो जल्दी समझ में आवे। जैसे—सीधी सी बात नहीं समझ में आती। ८ दहिना। बायाँ का उलटा। जैसे,—सीधा हाथ।

**सीधा**[2]—क्रि० वि० ठीक सामने की ओर। सम्मुख।

मुहा०—सीधा तीर सा = एकदम सीध में।

**सीधा**[1]—संज्ञा पु० [सं० असिद्ध, सिद्ध] १ बिना पका हुआ अन्न। जैसे,—दाल, चावल, आटा। २ वह बिना पका हुआ अनाज जो ब्राह्मण या पुरोहित आदि को भोजनार्थ दिया जाता है। जैसे—एक सीधा इस ब्राह्मण को भी दे दो।

क्रि० प्र०—छूना।—देना।—निकालना।—मनसना।

**सीधापन**—संज्ञा पुं० [हिं० सीधा + पन (प्रत्य०)] सीधा होने का भाव। सिधाई। सरलता। भोलापन।

**सीधा सादा**—वि० [हिं०] भोला भाला। जैसे—वह बहुत सीधा सादा व्यक्ति है।

सीधु—सज्ञा पु० [स०] १ गुड या ईख के रस से बना मद्य। गुड की बनी हुई शराब। २ मद्य। आसव। मदिरा (को०)। ३ अमृत। सुधा। (लाक्ष०)।

सीधुगध—सज्ञा पु० [स० सीधुगन्ध] मौलसिरी। बकुल।

सीधुप—वि० [स०] मदिरा पीनेवाला। मद्यप। शराबी।

सीधुपर्णी—सज्ञा स्त्री० [सं०] गभारी। काश्मरी वृक्ष।

सीधुपान—सज्ञा पु० [स०] मदिरापान।

सीधुपुष्प—सज्ञा पु० [स०] १ कदब। कदम। २. मौलसिरी। बकुल।

सीधुपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स०] धातकी। धव। धौ।

सीधुरस—सज्ञा पु० [स०] आम का पेड।

सीधुराक्ष—सज्ञा पु० [स०] बिजौरा नीबू। मातुलुग वृक्ष।

सीधुराक्षिक—सज्ञा पु० [स०] कसीस।

सीधुवृक्ष—सज्ञा पु० [स०] थूहर। स्नुही वृक्ष।

सीधुसज्ञ—सज्ञा पु० [स०] बकुल का पेड। मौलसिरी।

सीधे—क्रि० वि० [हिं० सीधा] १ सीध मे। बराबर सामने की ओर। सम्मुख। (२) बिना कहीं मुडे या रुके। जैसे—सीधे चले जाओ। ३ बिना और कहीं होते हुए। जैसे—सीधे राजा साहब के पास जाकर कहा। ४ मुलायमियत से। नरमी से। शिष्ट व्यवहार से। जैसे—वह सीधे रुपया न देगा। ५ शिष्टता के साथ। शांति के साथ। जैसे—सीधे बैठो।

सीध्र—सज्ञा पु० [स०] गुदा। मलद्वार।

सीन[1]—सज्ञा पु० [अं०] १ दृश्य। दृश्यपट। २ थियेटर के रगमच का कोई परदा जिसपर नाटक का कोई दृश्य चित्रित हो। ३. घटनाओं के घटित होने का जगह। घटनास्थल।—पद्माकर ग्र०, पृ० १८।

यौ०—सीन सीनरी = रगमच का दृश्यानुरूप सजावट।

सीन[2]—सज्ञा पु० [फा० सीनह्] द० 'सीना'। उ०—दोऊ तरफ के सुभट हाँकत जुटे गए रघु सीन सा।—हिम्मत०, पृ० २२।

यौ०—सीन साफ = द० 'सीनासाफ'। उ०—सीन साफ मुख नूर विराजै। शोभा सुदर बहु विधि छाजै।—सत० दरिया, पृ० १३।

सीनरी—सज्ञा स्त्री० [अ०] प्राकृतिक दृश्य।

सीना—क्रि० स० [स० सीवन] १ कपड, चमडे आदि के दो टुकडो को सूई के द्वारा तागा चलाकर जोडना। टाका से मिलाना या जोडना। टाका मारना। जैसे—कपडे सीना, जूते सीना। उ०—टुकड़े टुकड़े जोड़ जुगत से सीके अग लिबटाना। कर डारा भला पापन सो लाभ मोह में सीना। साच समझ आभमाना।—कबीर० श०, भा० १, पृ० ४।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

यौ०—सीना पिरोना = सिलाई तथा बेलबूटे आदि का काम करना।

सीना[1]—सज्ञा पु० [फा० सीनह्] छाती। वक्षस्थल।

यौ०—सीनाजोर। सीनातोड़। सीनाचाक।

मुहा०—सीने से लगाना = छाती से लगाना। आलिंगन कर २ स्तन। चूचुक (को०)।

सीना[2]—सज्ञा पुं० [स० सीमिक] १ एक प्रकार का कीडा जो कपडो को काट डालता है। सीवाँ।

क्रि० प्र०—लगना।

२ एक प्रकार का रेशम का कीडा। छोटा पाट।

सीनाचाक—वि० [फा० सीनह् चाक] विदीर्णहृदय। शोकाकुल

सीनाजन—वि० [फा० सीनह् जन] छाती पीटनेवाला। शोक या मनानेवाला (को०)।

सीनाजनी—सज्ञा स्त्री० [फा० सीनह् जनी] छातीपीटना। करना।

सीनाजोर—वि० [फा० सीनह् जोर] १ अत्याचारी। जालिम विद्रोही। बागी। २ उद्दड (को०)।

सीनाजोरी—सज्ञा स्त्री० [फा० सीनह् जोरी] १, अत्याचार। २ वि ३ उद्दडता। उ०—न कालिदास की चोरी है वल्कि सीनाजोरी है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४३३।

सीनातोड़—सज्ञा पु० [फा० सीनह् + हिं० तोडना] कुश्ती क पच।

विशेष—जब पहलवान अपने जोड की पीठ पर रहता है एक हाथ से वह उसकी कमर पकडता है और दूसरे उसके सामने का हाथ पकड और खीचकर झटके से गिरात

सीनापनाह—सज्ञा पुं० [फ़ा०] जहाज के निचले खड मे लबाई दाना और का किनारा। (लश०)।

सीनाबद—सज्ञा पुं० [फा०] १ अँगिया। चोली। २ गरेबान का हि ३ वह घोडा जो अगले पैरो से लँगडाता हो।

सीनाबसीना[1]—क्रि० वि० [फा० सीनह् बसीनह्] १ छाती से मिलाते हुए। २ मुकाबिले मे।

सीनाबसीना[2]—वि० (मत्र आदि) जो गुरु या वशपरपरा से क्र हो [को०]।

सीनाबाँह—सज्ञा पुं० [फ़ा० सीनह् + हिं० बाँह] एक प्रकार की व जिसमे छाती पर चोट दी जाती है।

सीनाबाज—वि० [फा० सीनह् बाज़] १ खुली छाती का। २ छातीवाला [को०]।

सीनासाफ—वि० [फा० सीनह् साफ] निश्चल। निष्कपट [को०]।

सीनासपर—वि० [फा० सीनह् सपर] डटकर मुकाबला करनेव छाती तानकर लड़नेवाला [को०]।

सीनियर—वि० [अ०] १ बडा। वयस्क। २ श्रेष्ठ। पद मे उ जैसे—सीनियर मेंबर, सीनियर परीक्षा।

सीनी—सज्ञा स्त्री० [फा०] तश्तरी। थाली।

सीप—सज्ञा पुं० [स० शुक्ति, प्रा० सुत्ति] १ कडे आवरण के बद रहनेवाला शख, घोघा आदि की जाति का एक ज जो छोटे तालाबो और झीलो से लेकर बड़े बड़े समुद्रो त

पाया जाता है। शुक्ति। मुक्तामाता। मुक्तागृह। सीपी। सितुही।

विशेष—तालो के सीप लबोतरे होते है और समुद्र के चौपूँटे विषम आकार के और बडे बडे होते है। इनके ऊपर दोहरे सपुट के आकार का बहुत बडा आवरण होता है जो खुलता और बद होता है। इसी सपुट के भीतर सीप का कोडा, जो बिना अस्थि और रीढ का होता है, जमा रहता है। ताल के सीपो का आवरण ऊपर से कुछ काला या मैला तथा समतल होता है, यद्यपि ध्यान से देखने से उसपर महीन महीन धारियाँ दिखाई पडती है। इस आवरण का भीतर की ओर रहनेवाला पार्श्व बहुत ही उज्ज्वल और चमकीला होता है, जिसपर प्रकाश पडने से कई रगो की आभा भी दिखाई पडती है। समुद्र के सीपो के आवरण के ऊपर पानी की लहरो के समान टेढी धारियाँ या लहरियाँ होती है। समुद्र के सीपो मे ही मोती उत्पन्न होते है। जब इन सीपो की भीतरी खोली और कडे आवरण के बीच कोई रोगोत्पादक बाहरी पदार्थ का कण पहुँच जाता है, तब जतु रक्षा के लिये उस कण के चारो ओर आवरण ही की शख धातु का एक चमकीला उज्वल पदार्थ जमने लगता है जो धीरे धीरे कडा पड जाता है। यही मोती होता है। समुद्री सीप प्राय छिछले पानी मे चट्टानो मे चिपके हुए पाए जाते है। ताल के सीपो के सपुट भी कोडो को साफ करके काम मे लाए जाते है। बहुत से स्थानो मे लोग छोटे बच्चो को इसी से दूध पिलाते है।

२ सीप नामक समुद्री जलजतु का सफेद कडा, चमकीला आवरण या सपुट जो बटन, चाकू के बेंट आदि बनाने के काम मे आता है। ३ ताल के सीप का सपुट जो चम्मच आदि के समान काम मे लाया जाता है। ४ वह लबातरा पात्र जिसमे देवपूजा या तर्पण आदि के लिये जल रखा जाता है। अरघा।

**सीपज**ⓤ—सज्ञा पुं० [हिं० सीप + स० ज] सीप से उत्पन्न, मोती। सीपिज। उ०—सीपज माल स्याम उर सोहै बिच बघनहँ छबि पावै री।—सूर०, १०।१३६।

**सीपति**ⓤ—सज्ञा पुं० [स० श्रीपति] विष्णु।

**सीपर**‡—सज्ञा पुं० [फा० सिपर] ढाल। उ०—मेरे मन की लाज इहाँ लौ हठि प्रिय पान दए हैं। लागत साँगि बिभीषण ही पर, सीपर आपु भए हे।—तुलसी (शब्द०)।

**सीपसुत**ⓤ—सज्ञा पुं० [हिं० सीप + सुत] मोती। उ०—देखि माई हरि जू की लोटनि। परसत आनन मनु रवि कुडल अबुज स्रवत सीपसुत जोटनि।—सूर०, १०।१८७।

**सीपारा**—सज्ञा पुं० [फा० सीपारह्] कुरान का एक भाग।

विशेष—कुरान मे कुल तीस भाग है जिनमे प्रत्येक को सीपारा (सिपारह भी) कहते है (को०)।

**सीपिज**ⓤ—सज्ञा पुं० [हिं० सीपी + स० ज] मोती। उ०—लाला हौं वारी तेरे मुख पर। कुटिल अलक मोहन मन बिहँसत भृकुटि विकट नैननि पर। दमकति द्वै द्वै दँतुलिया बिहँसति मनौ सीपिज धरे कियो वारिज पर।—सूर (शब्द०)।

**सीपी**—सज्ञा स्त्री० [स० शुक्ति?, हिं० सीप] दे० 'सीप'।

**सीबी**—सज्ञा स्त्री० [अनु० सी सी] वह शब्द जो पीडा या अत्यत आनद के समय मुँह से साँस खीचने से उत्पन्न होता है। सी सी शब्द। सिसकारी। शीत्कार उ०—नाक चढै सीबी करै जितै छबीली छैल। फिरि फिरि मूलि वहै गहै पिय कँकरीली गैल।—बिहारी (शब्द०)।

**सीभा**†—सज्ञा पुं० [देश०] दहेज।

**सीमत**—सज्ञा पुं० [स० सीमन्त] १ स्त्रियो की माँग। २ अस्थि-सधात। हड्डियो का सधिस्थान। हड्डियो का जोड।

विशेष—सुश्रुत के अनुसार इनकी सख्या १८ है। यथा—जाँघ मे १, वक्षण अर्थात् मूत्राशय तथा जघा के सधिस्थान मे १, पैर मे ३, दोनो बाहो मे ३-३, त्रिक या रीढ के नीचे के भाग मे १ और मस्तक मे १। भावप्रकाश के अनुसार हड्डियो का सधिस्थान सीमा कहता है, इसलिये इसे 'सीमत' कहते है।

३ हिंदुओं मे एक सस्कार जो प्रथम गर्भस्थिति के चौथे, छठे या आठवें महीने मे किया जाता है। दे० 'सीमतोन्नयन'।

**सीमतक**—सज्ञा पुं० [सं० सीमन्तक] माँग निकालने की क्रिया। २ ईगुर। सिंदूर जिसे स्त्रिया माँग के बीच मे लगाती है। ३ जैनो के सात नरको मे से एक नरक का अधिपति। ४ नरकावास। ५ एक प्रकार का मानिक या रत्न।

**सीमतकरण**—सज्ञा पुं० [सं० सीमन्तकरण] माँग निकालना या काटना (को०)।

**सीमतमणि**—सज्ञा पुं० [सं० सीमन्तमणि] चूडामणि (को०)।

**सीमतनी**ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० सीमन्तिनी] स्त्री। नारी। सीमतिनी।

**सीमतवान्**—वि० [सं० सीमन्तवत्] [स्त्री० सीमतवती] जिसे माँग हो। जिसकी माँग निकली हो।

**सीमतित**—वि० [सं० सीमन्तित] माँग निकाला हुआ। जैसे—सीमतित केश।

**सीमतिनी**—सज्ञा स्त्री० [स० सीमन्तिनी] स्त्री। नारी।

विशेष—स्त्रियाँ माँग निकालती है, इससे उन्हें सीमतिनी कहते है।

**सीमतोन्नयन**—सज्ञा पुं० [स० सीमन्तोन्नयन] द्विजो के दस सस्कारो मे से तीसरा सस्कार।

विशेष—गर्भस्थिति के तीसरे महीने मे पुसवन सस्कार करने के पश्चात् चौथे, छठे या आठवें महीने मे यह सस्कार करने का विधान है। इसमे वधू की माँग निकाली जाती है। कहते है, इस सस्कार के द्वारा गर्भस्थ सतान के गर्भ मे रहने के दोषो का निवारण होता है।

**सीम**ⓤ¹—सज्ञा पुं० [सं० सीमा] सीमा। हद। पराकाष्ठा। सरहद। मर्यादा।

मुहा०—सीम चरना या काँडना = अधिकार दबाना। दबाना। जबरदस्ती करना। उ०—ह काके द्वै सीस ईस के जो हठि बन की सीम चरै।—तुलसी (शब्द०)। सीम चाँपना = हद

दवाना। उ०—सीम कि चापि सकै कोइ तासू। बड रखवार रमापति जासू।—मानस, १।११६।

सीम[2]—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ धन दौलत। २ रजत। चाँदी [को०]।

यौ०—सीमकश। फजूलखर्च। अपव्ययी। सीमतन=सुदर। गौर।

सीमक—सज्ञा पुं० [स०] सीमा। हद [को०]।

सीमल—सज्ञा पुं० [स० शाल्मलि] दे० 'सेमल'।

सीमलिंग—सज्ञा पु० [स० सीमलिङ्ग] सीमा का चिह्न। हद का निशान।

सीमात—सज्ञा पु० [स० सीमान्त] १ सीमा का अत। वह स्थान जहाँ सीमा का अत होता हो। जहाँ तक हद पहुँचती हो। सरहद। २ गाँव की सीमा। ३ गाँव के अतर्गत दूर की जमीन। सिवाना।

सीमातपूजन—सज्ञा पु० [स० सीमान्तपूजन] १ वर का पूजन या अगवानी जब वह बारात के साथ गाँव की सीमा के भीतर पहुँचता है। २ ग्राम की सीमा का पूजन (को०)।

सीमातप्रदेश—सज्ञा पु० [स० सीमान्तप्रदेश] १ सीमात या सरहद पर स्थित भूभाग। २ दो देशो के बीच का प्रदेश [को०]।

सीमातबध—सज्ञा पुं० [स० सीमान्तबन्ध] आचरण का नियम या मर्यादा।

सीमातर—सज्ञा पुं० [स० सीमान्तर] गाँवो की सीमा [को०]।

सीमातलेखा—सज्ञा स्त्री० [स० सीमान्तलेखा] आखिरी किनारा। अतिम छोर [को०]।

सीमा[1]—सज्ञा स्त्री० [स० सीमन्] दे० 'सीमा' २।

सीमा[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ माँग। २ किसी प्रदेश या वस्तु के विस्तार का अतिम स्थान। हद। सरहद। मर्यादा। ३ आचरण व्यवहार आदि की शिष्टता। मर्यादा।

मुहा०—सीमा के बाहर जाना=उचित से अधिक बढ जाना। मर्यादा का उल्लघन करना। हद से ज्यादा बढना।

४ खेत, गाँव आदि की सीमा पर का बाँध या मेड (को०)। ५ चिह्न। निशान (को०)। ६. किनारा। तीर। समुद्रतट (को०)। ७ क्षितिज (को०)। ८ उच्चतम या अधिकतम सीमा (को०)। ९ खेत (को०)। १० ग्रीवा के पृष्ठ भाग मे खोपडी आदि का जोड (को०)। ११ अडकोप (को०)। १२ एक आभूषण।

सीमाकर्षक—सज्ञा पु० [स०] पाराशर स्मृति के अनुसार ग्राम की सीमा पर हल जोतने या खेती करनेवाला।

सीमाकृषाण—वि० [स०] सिवान की खेती करनेवाला। दे० 'सीमाकर्षक'।

सीमागिरि—सज्ञा पं० [स०] सीमा पर स्थित पर्वत (को०)।

सीमाज्ञान—सज्ञा पुं० [स० सीमा+अज्ञान] सीमा के बारे मे ज्ञान का अभाव।

सीमातिक्रमणोत्सव—सज्ञा पु० [स०] युद्धयात्रा मे सीमा पार करने का उत्सव। विजययात्रा। विजयोत्सव।

विशेष—प्राचीन काल मे विजयादशमी को क्षत्रिय राजा अपने राज्य की सीमा लाँघते थे।

सीमाधिप—सज्ञा पुं० [स०] १ पडोसी राजा। सीमा प्रदेश का रक्षक या अधिकारी [को०]।

सीमानिश्चय—सज्ञा पुं० [स०] सीमारेखा या हदबदी के सबध मे विधिसमत निर्णय [को०]।

सीमापहारी—वि० [स० सीमापहारिन्] सीमा के प्रदेश पर अधिकार करनेवाला। सीमा के चिह्न मिटानेवाला।

सीमापाल—सज्ञा पु० [स०] सीमा की रखवाली करनेवाला। सीमा-रक्षक।

सीमाबध—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सीमातबध' [को०]।

सीमाब—सज्ञा पु० [फा०] पारा।

सीमाबद्ध—सज्ञा पु० [स०] रेखा से घिरा हुआ। हद के भीतर किया हुआ।

सीमाबियत—सज्ञा स्त्री० [फा०] पारद की तरह चचल होना। अस्थिरता। चचलता [को०]।

सीमाबी—वि० [फा०] पारे का। पारे से सबधित [को०]।

सीमावरोध—सज्ञा पु० [स०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार सीमा स्थिर होना। हदबदी।

सीमालिंग—सज्ञा पु० [स० सीमालिङ्ग] दे० 'सीमलिंग' [को०]।

सीमावाद—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सीमाविवाद' [को०]।

सीमाविनिर्णय—सज्ञा पु० [स०] सीमा सबधी झगडो का निपटारा [को०]।

सीमाविवाद—सज्ञा पुं० [स०] सीमा सबधी विवाद। सरहद का झगडा। अठारह प्रकार के व्यवहारो मे या मुकदमो मे से एक।

विशेष—स्मृतियो मे लिखा है कि यदि दो गाँवो मे सीमा सबधी झगडा हो, तो राजा को सीमा निर्देश करके झगडा मिटा डालना चाहिए। इस काम के लिये जेठ का महीना श्रेष्ठ बताया गया है। सीमास्थल पर बड, पीपल, साल, पलास आदि बहुत दिन टिकनेवाले पेड लगाने चाहिए। साथ ही तालाब, कूआँ बनवा देना चाहिए, क्योकि ये सब चिह्न शीघ्र मिटनेवाले नही है।

यौ०—सीमाविवाद धर्म=सीमाविवाद सबधी नियम या कानून।

सीमावृक्ष—सज्ञा पु० [स०] वह वृक्ष जो सीमा पर हो। हद बतानेवाला पेड।

विशेष—मनुसहिता मे सीमा स्थान पर बहुत दिन टिकनेवाले पेड लगाने का विधान है। बहुधा सीमाविवाद सीमा पर का वृक्ष देखकर मिटाया जाता था।

सीमासधि—सज्ञा स्त्री० [स० सीमासन्धि] दो सीमाओ का एक जगह मिलान। वह स्थान जहाँ सीमाएँ मिलती हैं।

सीमासेतु—सज्ञा पुं० [स०] वह पुश्ता, बाँध या मेड जो सीमा का निर्देश करता है। हदबदी।

सीमिक—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार का वृक्ष। २. दीमक। एक प्रकार का छोटा कीडा। ३ दीमको का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर।

**सीमिका**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ दीमक या चीटी। २ वल्मीक। विमौट। ३ जीभ के नीचे की फुसी [को०]।

**सीमिया**—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ परकायप्रवेश विद्या। २ जादू। इद्रजाल। नजरबदी [को०]।

**सीमी**—वि० [फा०] १ चाँदी जैसा। २ चाँदी का। चाँदी का बना हुआ [को०]।

**सीमीक**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सीमिक' [को०]।

**सीमुर्ग**—सज्ञा पुं० [फा० सीमुर्ग] एक विशाल पक्षी जिसका निवास काफ पहाडी पर माना गया है [को०]।

**सीमेट**—सज्ञा पु० [अँ०] एक प्रकार के पत्थर का चूर्ण। दे० 'सिमेट'।

**सीमोल्लघन**—सज्ञा पुं० [स० सीमोल्लङ्घन] १ सीमा का उल्लघन करना। सीमा को लाँघना। हद पार करना। २ विजययात्रा। विशेष दे० 'सीमातिक्रमणोत्सव'। ३ मर्यादा के विरुद्ध कार्य करना।

**सीय**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० सीता] सीता। जानकी। उ०—राम सीय सिर सेंदुर देही।—मानस, १।३२५।

**सीयक**—सज्ञा पुं० [स०] मालवा के परमार राजवश के दो प्राचीन राजाओ के नाम जिनमे पहला दसवी शताब्दी के आरभ मे और दूसरा ग्यारहवी शताब्दी के आरभ मे था। इसी दूसरे सीयक का पुत्र मुज था जो प्रसिद्ध राजा भोज का चाचा था।

**सीयन**†—सज्ञा स्त्री० [स० सीवन] दे० 'सीवन'।

**सीयरा**†—वि० [स० शीतल] दे० 'सियरा'।

**सीर**'—सज्ञा पु० [स०] १ हल। २ हल जोतनेवाले बैल। ३ सूर्य। ४ अर्क। आक का पौधा।

**सीर**²—सज्ञा स्त्री० [सं० सीर (=हल)] १. वह जमीन जिसे भूस्वामी या जमीदार स्वय जोतता आ रहा हो, अर्थात् जिसपर उसकी निज की खेती होती आ रही हो। २ वह जमीन जिसकी उपज या आमदनी कई हिस्सेदारो मे बँटती हो। ३ साझा। मेल।

मुहा०—सीर मे=एक साथ मिलकर। इकट्ठा। एक मे। जैसे—भाइयो का सीर मे रहना।

**सीर**³—सज्ञा पु० [स० शिरा (=रक्तनाडी)] रक्त की नाडी। रक्त की नली।

मुहा०—सीर खुलवाना=नश्तर से शरीर से दूषित रक्त निकलवाना। फसद खुलवाना।

**सीर**†Ⓤ⁴—वि० [स० शीतल, प्रा० सीअड, हिं० सीड, सील, सीरा] ठढा। शीतल। उ०—सीर समीर धीर अति सुरभित वहत सदा मन भायो।—रघुराज (शब्द०)।

**सीर**⁵—सज्ञा पुं० १ चौपायो का एक सक्रामक रोग। २ पानी की काट। (लश०)।

**सीर**⁶—सज्ञा पुं० [फा०] लशुन। लहसुन [को०]।

**सीरक**'—सज्ञा पु० [सं०] १ हल। २ शिशुमार। सूस। ३ सूर्य।

**सीरक**Ⓤ²—वि० [हिं० सीरा] ठढा करनेवाला।

**सीरक**Ⓤ³—सज्ञा पु०, स्त्री० शीतलता। ठढक। शैत्य। उ०—देखियत है करुणा की मूरति सुनियत है परपीरक। सोइ करौ जो मिटै हृदय को, दाहु परै उर सीरक।—सूर (शब्द०)।

**सीरख**Ⓤ—सज्ञा पुं० [सं० शीर्ष] 'शीर्ष'।

**सीरत**—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ स्वभाव। प्रकृति। आदत। २ जीवनचरित। ३. सौजन्य।

यौ०—सूरत सीरत=रूप और गुण।

**सीरतन**—वि० [अ०] स्वभावत। स्वभाव से। आदत से [को०]।

**सीरधर**—सज्ञा पुं० [सं०] १ हल धारण करनेवाला। २ बलराम।

**सीरध्वज**—सज्ञा पु० [स०] १ राजा जनक का नाम।

विशेष—जब ये पुत्र की कामना से यज्ञभूमि जोत रहे थे तब हल की कूट या रेखा से सीता की उत्पत्ति हुई। इसी से लोग इन्हें 'सीरध्वज' कहने लगे।

२ बलराम का नाम।

**सीरन**—सज्ञा पुं० [देश०] बच्चो का पहनावा।

**सीरनी**—सज्ञा स्त्री० [फा० शीरीनी] मिठाई।

**सीरपाणि**—सज्ञा पुं० [स०] हलधर। बलदेव।

**सीरभृत्**—सज्ञा पुं० [स०] १ हलधर। बलदेव। २ हल धारण करनेवाला।

**सीरयोग**—सज्ञा पुं० [स०] हल मे जुते हुए बैलो की जोडी। २ बैलो को हल मे जोतना [को०]।

**सीरवाह**—सज्ञा पु० [सं०] १ हल धारण करनेवाला। हलवाहा। २ जमीदार की ओर से उसकी खेती का प्रबध करनेवाला कारिंदा।

**सीरवाहक**—सज्ञा पुं० [स०] हलवाहा। किसान।

**सीरष**Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० शीर्ष] दे० 'शीर्ष'।

**सीरा**'—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नदी का नाम।

**सीरा**²—सज्ञा पुं० [फा० शीर] १ पकाकर मधु के समान गाढा किया हुआ चीनी का रस। चाशनी। २ मोहनभोग। हलवा।

**सीरा**³—सज्ञा पुं० [हिं० सिर] चारपाई का वह भाग जिधर लेटने मे सिर रहता है। सिरहाना।

**सीरा**†Ⓤ⁴—वि० [सं० शीतल, प्रा० सीअड] [वि० स्त्री० सीरी] १ ठढा। शीतल। उ०—सीरी पौन अगिनि सी दाहति, कोकिल अति सुखदाई।—सूर (शब्द०)। २ शात। मौन। चुपचाप। उ०—दुर्जन हँसे न कोय आपु सीरे ह्वै रहिए।—गिरिधर (शब्द०)।

**सीरियल**—सज्ञा पु० [अँ०] १ वह लबी कहानी या दूसरा लेख जो कई बार और कई हिस्सो मे निकले। २ वह कहानी या किस्सा जो बायस्कोप मे कई बार कई हिस्सो मे दिखाया जाय।

**सीरी**'—सज्ञा पु० [स० सीरिन्] (हल धारण करनेवाले) बलराम।

**सीरी**²—वि० स्त्री० [सं० शीतल, प्रा० सीअड, सीयड़, हिं० सीरा] दे० 'सीरा'।

सीरीज—सज्ञा स्त्री० [अ० सीरीज] एक ही वस्तु का लगातार क्रम। सिलसिला। श्रेणी। लडी। माला। जैसे,—बालसाहित्य सीरीज की पुस्तकें अच्छी होती है।

सीरोसा—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार की मिठाई।

सीलघ—सज्ञा स्त्री० [सं० सीलन्ध] एक प्रकार की मछली।

विशेष—वैद्यक मे यह श्लेष्मावर्धक, वृष्य, पाक मे मधुर और गुरु, वातपित्तहर, हृद्य और ग्रामवातकारक कही गई है।

सील¹—सज्ञा स्त्री० [स० शीतल, प्रा० सीअड] भूमि मे जल की आर्द्रता सीढ। नमी। तरी।

सील²—सज्ञा पुं० [स० शलाका] लकडी का एक हाथ लबा औजार जिसपर चूडियाँ गोल और सुडौल की जाती है।

सील³ Ⓤ—सज्ञा पु० [स० शील] दे० 'शील'।

यौ०—सीलवत, सीलवान=शीलयुक्त। सुशील।

सील⁴—सज्ञा पु० [अ०] १ मुहर। मुद्रा। ठप्पा। छाप। २ एक प्रकार की समुद्री मछली जिसका चमडा और तेल बहुत काम आता है।

सील⁵—सज्ञा पु० [स०] हल [को०]।

सीला¹—सज्ञा पुं० [स० शिल] १ अनाज के वे दाने जो फसल कटने पर खेत मे पडे रह जाते है जिन्हें तपस्वी या गरीब लोग चुनते है। सिल्ला। उ०—(क) कविता खेती उन लई सीला विनत मजूर।—(शब्द०)। (ख) विष समान सब विषय विहाई। बसै तहाँ सीला विनि खाई।—रघुराज (शब्द०)। २ खेत मे गिरे दानो को चुनकर निर्वाह करने की मुनियो की वृत्ति।

सीला²—वि० [सं० शीतल] [वि० स्त्री० सीली] गीला। आर्द्र। तर। नम।

सीवक सज्ञा पु० [स०] सीनेवाला। सिलाई करनेवाला।

सीवडो—सज्ञा पु० [स० सीमन्त] ग्राम का सीमात। सिवाना (डिं०)।

सीवन—सज्ञा पुं० [स०] १ सीने का काम। सिलाई। २ सीने से पडी हुई लकीर। कपडे के दो टुकडो के बीच की सिलाई का जोड। ३ दरार। दराज। सधि। ४ वह रेखा जो अडकोश के बीचो-बीच से लेकर मलद्वार तक जाती है।

सीवना¹—सज्ञा पु० [स० सीमान्त] दे० 'सिवान'।

सीवना²—क्रि० स० [स० सीवन] दे० 'सीना'।

सीवनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुई। सूचिका। सूची। २. वह रेखा जो लिंग के नीचे से गुदा तक जाती है।

विशेष—सुश्रुत मे यह चार प्रकार की कही है—गोफणिश, तुल्लसीवनी, वेल्लित और ऋजुग्रथि।

३ घोडे का गुदा के नीचे का भाग (को०)।

सीवी—सज्ञा स्त्री० [अनु० सी० सी०] दे० 'सीवी'।

सीव्य—वि० [सं०] सीने लायक। सीने के योग्य [को०]।

सीस¹—सज्ञा पु० [स० शीर्ष] १ सिर। माथा। मस्तक। ३. कधा। (डिं०)। ३ अतरीप (लश०)।

सीस²—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सीसा'।

सीसक—सज्ञा पु० [स०] सीसा नामक धातु।

सीसज—सज्ञा पुं० [स०] सिंदूर।

सीसताज—सज्ञा पु० [हिं० सीस+फा० ताज] वह टोपी या ढक्कन जो शिकार पकडने के लिये पाले हुए जानवरो के सिर चढा रहता है और शिकार के समय खोला जाता है। कुलहा। उ०—तुलसी निहारि कपि भालु किलकत ललकत लखि ज्यो कँगाल पातरी सुनाज की। राम रुख निरखि हरष्यो हिय हनुमान मानो खेलवार खोली सीसताज बाज की।—तुलसी (शब्द०)।

सीसताण—सज्ञा पुं० [सं०] अफगानिस्तान और फारस के बीच का प्रदेश। सीस्तान।

सीसत्रान Ⓤ—सज्ञा पु० [स० शिरस्त्राण] टोप। कूँड। शिरस्त्राण। उ०—सीसत्रान अवतसजुत मनिहाटक मय नाह। लेहु हरपि उर सजहु सिर बहु सोभा जिहि माह।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

सीसपत्र—सज्ञा पुं० [सं०] सीसा धातु।

सीसपत्रक—सज्ञा पु० [स०] सीसा धातु।

सीसफूल—सज्ञा पु० [हिं० सीस+फूल] सिर पर पहनने का फूल के आकार का एक गहना।

सीसम—सज्ञा पुं० [फा० शीशम] एक वृक्ष। दे० 'शीशम'।

सीसमहल—सज्ञा पु० [फा० शीशा+अ० महल] वह मकान जिसकी दीवारो मे चारो ओर शीशे जडे हो। शीशे का महल।

सीसर—सज्ञा पु० [स०] १ पराशर गृह्यसूत्र के अनुसार सरमा नाम की देवताओ की कुतिया का पति। २. एक बालग्रह जिसका रूप कुत्ते का माना गया है।

सीसल—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का पेड जो केवडे या केतकी की तरह का होता है और जिसका रेशा बहुत काम आता है। रामबाँस।

सीसा¹—सज्ञा पु० [सं० सीसक] एक मूल धातु जो बहुत भारी और नीलापन लिए काले रग की होती है।

विशेष—आधुनिक रसायन मे यह मूल द्रव्यो मे माना गया है। यह पीटने से फैल सकता है, और तार रूप मे भी हो सकता है, पर कुछ कठिनता से। इसका रग भी जल्दी बदला जा सकता है। इसकी चद्दरे, नलियाँ और बदूक की गोलियाँ आदि बनती है। इसका घनत्व ११ ३७ और परमाणुमान २०६४ है। सीसा दूसरी धातुओ के साथ बहुत जल्दी मिल जाता और कई प्रकार की मिश्र धातुएँ बनाने मे काम आता है। छापे के टाइप की धातु इसी के योग से बनती है।

आयुर्वेद मे सीसा सप्त धातुओ मे है और अन्य धातुओ के समान यह भी रसौषध के रूप मे व्यवहृत होता है। इसका भस्म कई रोगो मे दिया जाता है। वैद्यक मे सीसा आयु, वीर्य और काति को बढानेवाला, मेहनाशक, उष्ण तथा कफ को दूर करनेवाला माना जाता है। इसकी उत्पत्ति की कथा भावप्रकाश मे इस

प्रकार है,—वासुकि एक नाग कन्या को देखकर मोहित हुए थे। उन्ही के स्खलित वीर्य से इस धातु की उत्पत्ति हुई।

पर्या०—सीस। सीसक। गडपदभव। सिंदूरकारण। वर्ध। स्वर्णादि। यवनेष्ट। सुवर्णक। वध्रक। चिच्चट। जड। भुजगम। अग। कुरग। पिरपिष्टक। वहुमल। चीनपिष्ट। त्रपु। महावल। मृदुकृष्णायस। पद्म। तारशुद्धिकर। शिरावृत्त। वयोवग।

सीमा‡ ⓤ[२]—सज्ञा पुं० [फा० शीशह्] दे० 'शीशा'।

सीसी[३]—सज्ञा स्त्री० [अनु०] १ पीडा या अत्यत आनद के समय मुँह से साँस खीचने से निकला हुआ शब्द। शीत्कार। सिसकारी। उ०—सीसी किए ते सुधा सीसी सी ढरकि जाति—(शब्द०)।

कि० प्र०—करना।

२ शीत के कष्ट के कारण निकला हुआ शब्द।

सीसी†ⓤ[२]—सज्ञा स्त्री० [हिं० शीशा] दे० 'शीशी'।

सीसो, सीसों†—सज्ञा पुं० [फा० शीशम] दे० 'शीशम'।

सीसोदिया—सज्ञा पु० [सिसोद (=स्थान)] दे० 'सिसोदिया'।

सीसोपधातु—सज्ञा पुं० [स०] सिंदूर। ईगुर।

सीसौदिया—सज्ञा पु० [सिसोद स्थान] दे० 'सिसोदिया।

सीस्तान—सज्ञा पुं० [फा०] अफगानिस्तान और फारस का मध्यवर्ती प्रदेश। सीसताण।

सीस्मोग्राफ—सज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का यत्र जिससे भूकप होने का पता लगता है।

विशेष—इस यत्र से यह मालूम हो जाता है कि भूकप किस दिशा मे, कितनी दूर पर हुआ है, और उसका वेग हल्का था या जोर का।

सीह[१]—सज्ञा स्त्री० [स० सीधु (=मद्य)] महक। गध।

सीह[२]—सज्ञा पुं० [देश०] साही नामक जतु। सेही।

सीह ⓤ[३]—सज्ञा पु० [स० सिंह] दे० 'सिंह'।

सीहगोस—सज्ञा पुं० [फा० सियहगोश] एक प्रकार का जतु जिसके कान काले होते हैं। उ०—केसव सरभ सिंह सीहगोस रोस गति कूकरनि पास ससा सूकर गहाए हैं।—केशव (शब्द०)।

सीहुड—सज्ञा पुं० [स० सीहुण्ड] सेहुँड का पेड। स्नुही। थूहर।

सु ⓤ† प्रत्य० [प्रा० सुन्तो] दे० 'सो'।

सु खड - सज्ञा पु० [देश०] साधुओ का एक सप्रदाय।

सु गवश—सज्ञा पु० [स० शुङ्गवश] मौर्य वश के अतिम सम्राट् वृहद्रथ के प्रधान सेनापति पुष्यमित्र द्वारा प्रतिष्ठित एक प्राचीन राजवश।

विशेष—ईसा से १८४ वर्ष पूर्व पुष्यमित्र सुग ने वृहद्रथ को मारकर मौर्य साम्राज्य पर अपना अधिकार जमाया। यह राजा वैदिक या ब्राह्मण धर्म का पक्का अनुयायी था। जिस समय पुष्यमित्र मगध के सिंहासन पर बैठा, उस समय साम्राज्य नर्मदा के किनारे तक था और उसके अंतर्गत आधुनिक विहार, सयुक्त प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि थे। कलिंग के राजा खारवेल्ल तथा पजाब और काबुल के यवन (यूनानी) राजा मिनाडर (बौद्ध मिलिंद) ने सुग राज्य पर कई बार चढाइयाँ की, पर वे हटा दिए गए। यवनो का जो प्रसिद्ध आक्रमण साकेत (अयोध्या) पर हुआ था, वह पुष्यमित्र के ही राजत्व काल मे। पुष्यमित्र के समय का उसी के किसी सामत या कर्मचारी का एक शिलालेख अभी हाल मे अयोध्या मे मिला है जो अशोक लिपि मे होने पर भी सस्कृत मे है। यह लेख नागरीप्रचारिणी पत्रिका मे प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार के एक और पुराने लेख का पता मिला है, पर वह अभी प्राप्त नही हुआ है। इससे जान पडता है कि पुष्यमित्र कभी कभी साकेत (अयोध्या) मे भी रहता था और वह उस समय एक समृद्धिशाली नगर था।

पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र ने विदर्भ के राजा को परास्त करके दक्षिण मे वरदा नदी तक अपने पिता के राज्य का विस्तार बढाया। जैसा कालिदास के मालविकाग्निमित्र नाटक से प्रकट है, अग्निमित्र ने विदिशा को अपनी राजधानी बनाया था जो वेत्रवती और विदिशा नदी के सगम पर एक अत्यत सुदर पुरी थी। इस पुरी के खँडहर भिलसा (ग्वालियर राज्य मे) से थोडी दूर पर दूर तक फले हुए है। चक्रवर्ती सम्राट् बनने की कामना से पुष्यमित्र ने इसी समय बडी धूमधाम से अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान किया। इस यज्ञ के समय महाभाष्यकार पतजलि जी विद्यमान थे। अश्वरक्षा का भार पुष्यमित्र के पौत्र (अग्निमित्र के पुत्र) वसुमित्र को सौंपा गया जिसने सिंधु नदी के किनारे यवनो को परास्त किया। पुष्यमित्र के समय मे वैदिक या ब्राह्मण धर्म का फिर से उत्थान हुआ और बौद्ध धर्म दबने लगा। बौद्ध ग्रथो के अनुसार पुष्यमित्र ने बौद्धो पर बडा अत्याचार किया और वे राज्य छोडकर भागने लगे। ईसा से १४८ वर्ष पहले पुष्यमित्र की मृत्यु हुई और उसका पुत्र अग्निमित्र सिंहासन पर बैठा। उसके पीछे पुष्यमित्र का भाई सुज्येष्ठ और फिर अग्निमित्र का पुत्र वसुमित्र गद्दी पर बैठा। फिर धीरे धीरे इस वश का प्रताप घटता गया और वसुदेव ने विश्वासघात करके कण्व नामक ब्राह्मण राजवश की प्रतिष्ठा की।

सुँघनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूघना] तबाकू के पत्ते की खूब बारीक बुकनी जो सूँघी जाती है। हुलास। नस्य। मग्जरोशन।

कि० प्र०—सूँघना।

सुँघाना—क्रि० स० [हिं० सूँघना का प्रेर० रूप] आघ्राण कराना। सूँघने की क्रिया कराना।

सुठि—सज्ञा स्त्री० [स० शुण्ठि] दे० 'शुठि', 'सोठ'।

सु ड—सज्ञा पुं० [स० शुण्ड] 'शुड', 'सूँड'।

सु डदड—सज्ञा पुं० [स० शुण्डदण्ड] दे० 'शुडादड'।

सुडभुसुड—सज्ञा पुं० [स० शुण्डभुशुण्डि] हाथी जिसका अस्त्र सूँड है। उ०—चढि चित्रित सुडभुसुड पै, सोभित कचन कुड पै। नृप सजेउ चलत जदु शुड पै, जिमि गज मृग सिर पुड पै।—गोपाल (शब्द०)।

सु डस—सज्ञा पु० [देश०] लदुए गधे की पीठ पर रखने की गद्दी।

सु डा[१]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूँड] सूँड। शुड।

सुंडा²—संज्ञा पुं० [देश०] लदुए गधे की पीठ पर रखने की गद्दी या गद्दा।

सुंडाल—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डाल] हाथी। हस्ती। वह जो सूंडवाला हो। उ०—सुंडाल चलत सुंडनि उठाइ। जिनकै जँजीर झनझनत पाइ।—सूदन (शब्द०)।

सुंडाली—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्डाल (=सूंडवाला)] एक प्रकार की मछली।

सुंडीबेंत—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बेंत जो बंगाल, आसाम और खसिया की पहाड़ी पर पाया जाता है।

सुंद—संज्ञा पुं० [सं० सुन्द] १ एक वानर का नाम। २ एक राक्षस का नाम। ३ विष्णु। ४ सह्लाद का पुत्र। ५ एक असुर जो निसुंद (निकुंभ) का पुत्र और उपसुंद का भाई था।

विशेष—सुंद और उपसुंद दोनो बड़े बलवान असुर थे। इन्होने ब्रह्मा से यह वर प्राप्त किया था कि वे तब तक मर नही सकते जब तक दोनो भाई परस्पर एक दूसरे को न मारे। इस तरह इन्हे कोई हरा नही सकता था। इंद्र द्वारा भेजी गई तिलोत्तमा नाम की अप्सरा के लिये अंतत दोनो आपस मे ही लड़कर मर गए थे।

सुंदरमन्य—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरम्मन्य] जो अपने को सुंदर मानता या समझता हो।

सुंदर¹—वि० [सं० सुन्दर] [वि० स्त्री० सुंदरी] १ जो देखने मे अच्छा लगे। प्रियदर्शन। रूपवान। शोभन। रुचिर। खूबसूरत। मनोहर। मनोज्ञ। २ अच्छा। भला। बढ़िया। श्रेष्ठ। शुभ। जैसे,—सुंदर मूहूर्त।

सुंदर²—संज्ञा पुं० १ एक प्रकार का पेड़। २ कामदेव। ३ एक नाग का नाम। ४ लंका का एक पर्वत। ५ एक छंद।

सुंदरई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुंदर+ई (प्रत्य०)] सौंदर्य। सुंदरता। उ०—रीझै स्याम देखि वा मुख पर छवि मुख सुंदरई।—सूर० (राधा०), १९७९।

सुंदरक—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरक] १ एक तीर्थ का नाम। २ एक ह्रद का नाम।

सुंदरकांड—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरकाण्ड] १ रामायण के पाँचवें कांड का नाम जो लंका के सुंदर पर्वत के नाम पर रखा गया है। २ सुंदर सुडौल कांड या पर्व (को०)।

सुंदरता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुन्दरता] सुंदर होने का भाव। सौंदर्य। खूबसूरती। रूपलावण्य।—उ०—सुंदरता कहु सुंदर करई। छविगृह दीपसिखा जनु बरई।—मानस, १।२३०।

सुंदरताई—संज्ञा स्त्री० [सं० सुन्दरता] दे० 'सुंदरता'। उ०—(क) हम भरि जन्म सुनहु सब भाई। देखी नहि असि सुंदरताई।—राम०, पृ० ३९३। (ख) अंग विलोकि त्रिलोक मे ऐसी को नारि निहारिन नार नवाई। मूरतिवंत शृंगार समीप शृंगार किए जानो सुंदरताई।—केशव (शब्द०)।

सुंदरत्व—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरत्व] सुंदरता। सौंदर्य।

सुंदरवती—संज्ञा स्त्री० [सं० सुन्दरवती] एक नदी का नाम।

सुंदरवन—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरवन] गंगा के डेल्टा मे स्थित वन जहाँ की भूमि दलदली है।

सुंदराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुंदर+आई (प्रत्य०)] दे० 'सुंदरता'।

सुंदरापा—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दर, हिं० सुंदर+आपा (प्रत्य०)] सुंदरता।

सुंदरी¹—वि० स्त्री० [सं० सुन्दरी] रूपवती। खूबसूरत।

सुंदरी²—संज्ञा स्त्री० १ सुंदर स्त्री। २ हलदी। हरिद्रा। ३ एक प्रकार का बड़ा जंगली पेड़।

विशेष—यह पेड़ सुंदर वन मे बहुत होता है। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है और नाव, संदूक, मेज, कुरसी आदि सामान बनाने के काम मे आती और इमारतों मे भी लगती है। यह पेड़ खारे पानी के पास ही उग सकता है, मीठा पानी पाने से सूख जाता है।

४ त्रिपुरसुंदरी देवी। ५ एक योगिनी का नाम। ६ सवैया नामक छंद का एक भेद जिसमे आठ सगण और एक गुरु होता है। उ०—सब सो गाँह पानि मिले रघुनंदन भेंटि कियो सबको सुखभागी। यहि औसर की हर सुंदरि मूरति राखि जपैं हिय मे अनुरागी।—छंद०, पृ० २४७। ७ बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसमे एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है। द्रुतविलंबित। ८, तेईस अक्षरो की एक वर्णवृत्ति जिसमे क्रमश दो सगण, एक भगण, एक सगण, एक नगण, दो जगण और एक लघु तथा एक एक गुरु होता है। छंदप्रभाकर मे इसे 'सुंदरि' कहा है। उ०—सस भा स तजो जो लगि सखि! ढूढ़ौ कुंजगली बिछुरी हरि सों।—छंद०, पृ० २३७। ९ एक प्रकार की मछली। १०. माल्यवान राक्षस की पत्नी जो नर्मदा नामक गंधर्वी की कन्या थी। ११ श्वफल्क की कन्या का नाम (को०)। १२ वैश्वानर की एक दुहिता (को०)।

सुंदरी³—संज्ञा स्त्री० [?] सितार, इसराज आदि मे लगे वे लोहे या पीतल के परदे जो विभिन्न स्वरों के स्थान होते है।

सुंदरीमंदिर—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरीमन्दिर] अंत पुर। जनानखाना (को०)।

सुंदरेश्वर—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरेश्वर] शिव जी की एक मूर्ति।

सुंदोपसुंद—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दोपसुन्द] निसुंद (निकुंभ) नामक दैत्य के दोनो पुत्र सुंद और उपसुंद। विशेष दे० 'सुंद'।

यौ०—सुंदोपसुंद न्याय=एक न्याय। दे० 'न्याय' शब्द के अंतर्गत १०५ वा न्याय।

सुंदरौदन—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दर+ओदन] अच्छा भात। अच्छी तरह पका हुआ चावल।

सुँघाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुँघा+आई (प्रत्य०)] दे० 'सुँघावट'।

सुँघावट—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्ध, हिं० सुँघा+आवट (प्रत्य०)] सूंघने का भाव। सूंघाव। सूंघी महक।

सुँघिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूंघा+इया (प्रत्य०)] १ एक प्रकार की

ज्वार। २ गुजरात में होनेवाली एक प्रकार की वनस्पति जो पशुओं के चारे के काम में आती है।

**सुपलुठ**—संज्ञा पु० [सं० सुम्पलुण्ठ] कर्पूरक। कपूर कचरी।

**सुबा**—संज्ञा पुं० [देश०] १ इस्पंज। २ दागी हुई तोप या बंदूक की गरम नली को ठंढा करने के लिये उसपर डाला हुआ पानी। कपडा। पुचारा। (लश०)। ३ तोप की नली साफ करने का गज। (लश०) ४ लोहे का एक औजार जिससे लोहार लोहे में सूराख करते हैं।

**सुबी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] छेनी जिससे लोहे में छेद किया जाता है।

**सुबुल**—संज्ञा पु० [फा० सबुल] १ एक सुगंधित घास। बालछड़। २. गेहूँ या जौ की बाल। ३ अलक। जुल्फ।

**सुबुला**—संज्ञा पु० [अ० सुबुलह्] १ गेहूँ की बाल। २ कन्या-राशि [को०]।

**सुभ**[1]—संज्ञा पु० [सं० शुम्भ] दे० 'शुंभ'।

**सुभ**[2]—संज्ञा पुं० [सं० सुम्भ] दे० 'सुंभ'।

**सुभा**—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सुआ'।

**सुभी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] लोहा छेदने का एक औजार जिसमें नोक नहीं होती।

**सुसारी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का लंबा काला कीड़ा जो अनाज के लिये हानिकारक होता है।

**सु**[1]— उप० [सं०] एक उपसर्ग जो संज्ञा के साथ लगकर विशेषण का काम देता है। जिस शब्द के साथ यह उपसर्ग लगता है, उसमें (१) अच्छा, बढ़िया, भला, श्रेष्ठ, जैसे, सुगंधित (२) सुंदर मनोहर, जैसे, सुकेशी, सुमध्यमा, (३) खूब, सर्वथा, पूरी तरह, ठीक प्रकार से, जैसे, सुजीर्ण, (४) आसानी से, सुभीते से, तुरत, जैसे,—सुकर, सुलभ, (५) अत्यधिक, बहुत अधिक, जैसे, सुदारुण सुदीर्घ आदि का भाव आ जाता है। जैसे—सुनाम, सुपथ, सुशील, सुवास आदि।

**सु**[2]—वि० १ सुंदर। अच्छा। २ उत्तम। श्रेष्ठ। समानयोग्य। ३ शुभ। भला।

**सु**[3]—संज्ञा पु० १ उत्कर्ष। उन्नति। २ सुंदरता। खूबसूरती। हर्ष। आनंद। प्रसन्नता। ४ पूजा। ५ समृद्धि। ६ अनुमति। आज्ञा। ७ कष्ट। तकलीफ।

**सु**ँ[4]—अव्य० [सं० सह] तृतीया, पंचमी और षष्ठी विभक्ति का चिह्न।

**सु**[5]—सर्व० [सं० स] सो। वह।

**सुअंग**—वि० [सं० सुअङ्ग] सुडौल शरीरवाला। सुगठित बदनवाला। सुंदर [को०]।

**सुअ**ँ—संज्ञा पु० [सं० सुत, प्रा० सुअ] दे० 'सुअन'।

**सुअच्छ**—वि० [सं०] १ अच्छे सुंदर नेत्रोंवाला। २ दृढांग। पुष्ट अंगोंवाला [को०]।

**सुअटा**†—संज्ञा पु० [सं० शुक, प्रा० सुअ, हिं० सूआ + टा प्रत्य०] सुग्गा। शुक। तोता। उ०—सुअटा रहे खुरुक जिउ अवहिं काल सो भाव। सतु अहै जो करिया कवहुँ सो बोरै नाव।—(शब्द०)।

**सुअन**ँ—संज्ञा पुं० [सं० सुत, प्रा० सुअ] आत्मज। पुत्र। बेटा। लड़का। उ०—बहु दिन धौं कब आइहै लालै सुअन बिवाह। निज नयनन हम देखिहैं हे विधि यहु उत्साह।—स्वामी रामकृष्ण (शब्द०)।

**सुअनजर्द**ँ—संज्ञा पुं० दे० [सुवर्ण, हिं० सोना + फा० जर्द] दे० 'सोनजर्द'। उ०—कोई सुअनजर्द ज्यों केसर। कोइ सिंगारहार नागेसर।—जायसी (शब्द०)।

**सुअना**ँ[1]—क्रि० अ० [सं० भवन (= प्रभव) अथवा हिं० उगना (= उत्पन्न होना) या हिं० सुअन] उत्पन्न होना। उगना। उदय होना। उ०—जैसो साँचो ग्यान प्रकाशत पाप दोष सब सुअत। धर्म विराग आदि सतगुन से तनमन के सुख सुअत।—देवस्वामी (शब्द०)।

**सुअना**[2]—संज्ञा पुं० [सं० शुक] दे० 'सुअटा'।

**सुअर**—संज्ञा पुं० [सं० शूकर]। दे० 'सूअर'।

**सुअरदता**†[1]—वि० [हिं० सुअर + दता (= दाँतवाला)] सूअर के से दाँतोंवाला।

**सुअरदता**[2]—संज्ञा पुं० एक प्रकार का हाथी जिसके दाँत पृथ्वी की ओर झुके रहते हैं। ऐसा हाथी ऐबी समझा जाता है।

**सुअर्गपताली**†—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ग + पातालिका] वह बैल जिसका एक सींग स्वर्ग की ओर दूसरा पाताल की ओर अर्थात् एक आकाश की ओर और दूसरा जमीन की ओर रहता है।

**सुअवसर**—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा अवसर। अच्छा मौका।

**सुआ**—संज्ञा पुं० [सं० शुक] दे० 'सूआ'।

**सुआउ**ँ—वि० [सं० सु + आयु] जिसकी आयु बड़ी हो। दीर्घायु। उ०—सुघन न सुमन सुआउ सो।—तुलसी (शब्द०)।

**सुआद**[1]—संज्ञा पुं० [हिं० अथवा सं० स्मरण या हिं० सु + फा० याद] स्मरण। याद।

**सुआद**[2]—संज्ञा पुं० [सं० स्वाद] दे० 'स्वाद'।

**सुआन**ँ—संज्ञा पुं० [सं० श्वन्] दे० 'श्वान'। उ०—सुआन पूछ जिउ भयो न सूधउ बहुत जतन मैं कीनेउ।—तेगबहादुर (शब्द०)।

**सुआना**†—क्रि० स० [हिं० सूना का प्रेर० रूप] उत्पन्न कराना। पैदा कराना। सूने में प्रवृत्त करना।

**सुआमी**ँ—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी] दे० 'स्वामी'। उ०—भुगत मुकति का कारन सुआमी मूढ़ ताहि बिसरावै। जन नानक कोटन मैं कोऊ भजन राम को पावै।—तेगबहादुर (शब्द०)।

**सुआर**ँ‡—संज्ञा पुं० [सं० सूपकार] रसोइया। भोजन बनानेवाला। पाककार। उ०—(क) परुसन लगे सुआर सुजाना।—मानस १,३२९।, (ख) परुसन लगे सुआर बिबुध जन जेवहिं। देहिं गारि बरनारि मोद मन भेवहिं।—तुलसी (शब्द०)।

सुआरव ⓤ—वि० [सं० सु+आरव (=शब्द, आवाज)] उत्तम शब्द करनेवाला। मीठे स्वर से बोलने या बजनेवाला। उ०—नाना सुआरव जतरी नट चेटकी ज्वारी जिते। तेली तमोली रजक सूची चित्रकारक पुर तिते।]रामाश्वमेध (शब्द०)।

सुआसन—सज्ञा पु० [सं०] बैठने का सुदर आसन या पीढा।

सुआसिन†—सज्ञा स्त्री० [स० सुवासिनी] दे० 'सुआसिनी'।

सुआसिनी†ⓤ[१]—सज्ञा स्त्री० [स० सुवासिनी ?] स्त्री, विशेषत आस पास मे रहनेवाली औरत। उ०—(क) विप्र वधू सनमानि सुआसिनि जब पुरजन बहिराइ। सनमाने अवनीस असीसत ईसुर मे समनाइ।—तुलसी (शब्द०)। (ख) देव पितर गुर विप्र पूजि नृप दिए दान रचि जानी। मुनि बनिता पुरनारि सुआसिनि सहम भाँति सनपाइ अघाइ असीसत निकसत जाचक जग भए दानी।—तुलसी (शब्द०)।

सुआसिनीⓤ[२]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुहागिन] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सौभाग्यवती स्त्री।

सुआहित—सज्ञा पुं० [स० सु+आहत ?] तलवार के ३२ हाथो मे से एक हाथ। उ०—तिमि सव्य जानु विजानु सकोचित सुआहित चित्र को। धृत लवन कुद्रव छिप्र सव्येतर तथा उत्तरत को। —रघुराज (शब्द०)।

सुइया†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूआ] एक प्रकार की चिडिया।

सुई—सज्ञा स्त्री० [सं० सूची] दे० 'सूई'।

सुकवत्—सज्ञा पु० [स० सुकच्छवत्] एक पर्वत का नाम जो मार्कंडेय पुराण के अनुसार मेरु के दक्षिण मे है।

सुकटका—सज्ञा स्त्री० [सं० सुकण्टका] १ घृतकुमारी। घीकुआर। गुआरपाठा। २ पिंडखजूर।

सुकठ[१]—वि० [स० सुकण्ठ] १. जिसका कठ सुदर हो। २. जिसका स्वर मीठा हो। सुरीला। उ०—द्वारे ठाढे है द्विज वावन। चारौ वेद पढत मुख आगर अति सुकठ सुर गावन। सूर०, ८।१३।

सुकठ[२]—सज्ञा पु० रामचद्र के सखा, सुग्रीव। उ०—वालि से बीर विदारि सुकठ थप्यौ हरषे सुर बाजन बाजे। पल मे दल्यौ दासरथी दसकधर लक विभीषण राज विराजे।—तुलसी (शब्द०)।

सुकठी—सज्ञा स्त्री० [सं० सुकण्ठी] मादा कोयल [को०]।

सुकडु—सज्ञा पुं० [स० सुकण्डु] कडु रोग। खाज। खुजली [को०]।

सुकद—सज्ञा पु० [स० सुकन्द] १. कसेरू। २. पलाडु। प्याज (को०)। ३ आलू, कचालू, शकरकद आदि कद (को०)।

सुकदक—सज्ञा पु० [स० सुकन्दक] १ वाराहीकद। भिर्वोली कद। गेंठी। २ प्याज। ३. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम। ४ इस देश का निवासी।

सुकदकरण—सज्ञा पुं० [स० सुकन्दकरण] प्याज। श्वेत पलाडु।

सुकदन—सज्ञा पुं० [सं० सुकन्दन] १ वैजयती तुलसी। २ बर्बरक। बबई तुलसी।

सुकदा—सज्ञा स्त्री० [सं० सुकन्दा] १ लक्ष्मणकंद। पुत्रदा। २ बध्या कर्कोटकी। बाँझककोडा।

सुकदी—सज्ञा पुं० [स० सुकन्दिन्] सूरन। जमीकद।

सुक[१]—सज्ञा पु० [स० शुक] १ तोता। शुक। करी। सुग्गा। २ व्यासपुत्र। शुकदेव मुनि। ३ एक राक्षस जो रावण का दूत था।

सुक[२]—सज्ञा पु० [सं० सुकटु] शिरीष वृक्ष। सिरस का पेड।

सुकच्छ—सज्ञा पु० [स०] अगिरा वश मे उत्पन्न एक ऋषि जो ऋग्वेद के कई मत्रो के द्रष्टा थे।

सुकचण†—सज्ञा पु० [स० सङ्कुचन] लज्जा। सकोच (डिं०)।

सुकचानाⓤ—क्रि० अ० [हिं० सकुच] दे० 'सकुचाना'।

सुकटि—वि० [स०] अच्छी कमरवाली। जिसकी कमर सुदर हो।

सुकटु[१]—सज्ञा पुं० [स०] शिरीष वृक्ष। सिरस का पेड।

सुकटु[२]—वि० अत्यत कटु। बहुत कडुआ।

सुकडना—क्रि० अ० [सं० सङ्कुचन] दे० 'सिकुडना'।

सुकदेव—सज्ञा पुं० [स० शुकदेव] व्यास जी के पुत्र। दे० 'शुकदेव'।

सुकना†[१]—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का धान जो भादो महीने के अत और आश्विन के आरभ मे होता है।

सुकनाⓤ[२]—क्रि० अ० [स० शुष्क, प्रा० सुक्क+हिं० ना (प्रत्य०)] शुष्क होना। सूखना। उ०—चलत पवन पावक समान परसत सुताप मन। सुकत सरोवर मचत कीच तलफत मीन तन।—पृ० रा०, ६१।१७।

सुकनासाⓤ—वि० [स० शुक+नासिका] जिसकी नाक शुक पक्षी के ठोर के समान हो। सुदर नाकवाला।

सुकन्यक—वि० [स०] जिसकी कन्या सुदर हो [को०]।

सुकन्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शर्याति राजा की कन्या और च्यवन ऋषि की पत्नी। २ शोभन कन्या। सुदरी कन्या (को०)।

सुकन्याक—वि० [स०] दे० 'सुकन्यक' [को०]।

सुकपर्दा—वि० [स०] (वह स्त्री) जिसने उत्तमता से केश बाँधे हो। जिसने उत्तमता से चोटी की हो।

सुकपिच्छक—सज्ञा पुं० [डिं०] गधक।

सुकबिⓤ—सज्ञा पु० [स० सुकवि] उत्तम काव्यकर्ता कवि। श्रेष्ठ कवि। उ०—या छवि को पटतर दीवे को सुकवि कहा टकटोहै।—सूर०, १०।१५८।

सुकमार†—वि० [स० सुकुमार] दे० 'सुकुमार'।

सुकमारता†—सज्ञा स्त्री० [स० सुकुमारता] दे० 'सुकुमारता'।

सुकर[१]—वि० [स०] १ जो अनायास किया जा सके। सहज मे होनेवाला। सुसाध्य। २ जिसका प्रबध या व्यवस्था आसानी से की जा सके (को०)।

सुकर[२]—सज्ञा पुं० १ सरलता से वश मे होनेवाला घोडा। सीधा घोडा। २ दान। उदारता। परोपकारिता [को०]।

सुकरता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुकर का भाव। सहज मे होने का

भाव । सुकरत्व । सौकर्य । २ सुंदरता । उ०—जहाँ क्रिया की सुकरता वरणत काज विरोध । तहाँ कहत व्याघात है औरो वुद्धि विवोध ।—मतिराम (शब्द०) ।

सुकरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुशील गाय । अच्छी और सीधी गौ ।

सुकरात—संज्ञा पु० [अ०] यूनान का एक प्रसिद्ध दार्शनिक जिसका शिष्य प्लेटो (अफलातून) था ।

सुकराना—संज्ञा पु० [फा० शुकानह्] दे० 'शुकराना' । उ०—अरज अन्यारे जे भरे अति ही मदन मजेज । दये तुव दृग वारवै रच सुकराना भेज ।—रतनहजारा (शब्द०) ।

सुकरित—वि० [सं० सुकृत] शुभ । सत । अच्छा । भला । उ०—सुकरित मारग चालना बुरा न कबहूँ हाइ । अस्तिन खात परानिया मुआ न सुनिया कोइ ।—दादू (शब्द०) ।

सुकरीहार—संज्ञा पु० [सुकरी ? + हिं० हार] गले में पहनने का एक प्रकार का हार ।

सुकर्णक'—संज्ञा पु० [सं०] हस्तीकंद । हाथीकंद ।

सुकर्णक'—वि० जिसके कान सुंदर हों । अच्छे कानोंवाला ।

सुकर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूषाकर्णी । मूसाकानी नाम की लता । २ महाबला ।

सुकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] रुद्रवाकणी । रुद्रायन ।

सुकर्म—संज्ञा पु० [सं०] १ अच्छा काम । सत्कर्म । २. देवताओं की एक श्रेणी या कोटि ।

सुकर्मा'—संज्ञा पु० [सं० सुकर्मन्] १ विष्कंभ आदि सत्ताईस योगों में से सातवाँ योग ।

विशेष—ज्योतिष में यह योग सब प्रकार के कार्यों के लिये शुभ माना गया है और कहा गया है कि जो बालक इस योग में जन्म लेता है, वह परोपकारी, कलाकुशल, यशस्वी, सत्कर्म करनेवाला और सदा प्रसन्न रहनेवाला होता है ।

२ उत्तम कर्म करनेवाला मनुष्य । ३ विश्वकर्मा । ४ विश्वामित्र ।

सुकर्मा'—वि० १ सत्कार्य करनेवाला । सुकर्मी । पुण्यात्मा । २ सक्रिय । कार्यकुशल (को०) ।

सुकर्मी—वि० [सं० सुकर्मिन्] १ अच्छा काम करनेवाला । २ धार्मिक । पुण्यवान् । ३ सदाचारी ।

सुकल'—संज्ञा पु० [सं०] १ वह जो अपनी संपत्ति का उपयोग दान और भोग में करता है । दाता और भोला । २ मधुर, पर अस्फुट शब्द करनेवाला ।

सुकल'—संज्ञा पु० [सं० शुक्ल] दे० 'शुक्ल' । उ०—दिन दिन बढै बढाइ अनदा । जेस सुकल पच्छ को चदा ।—लाल कवि (शब्द०) ।

यौ०—सुकलपच्छ = दे० 'शुक्ल पक्ष' । उ०—नौमी तिथि मधु-मास पुनीता । सुकलपच्छ अभिजित हरि प्रीता ।—मानस, १।१९१ ।

सुकल'—संज्ञा पु० [?] एक प्रकार का आम जो सावन के अंत में होता है ।

सुकलिल—वि० [सं०] भली भाँति मग्न हुआ (को०) ।

सुकल्प—वि० [सं०] अत्यंत सुंदर या योग्य । अत्यंत कुशल या निष्णात (को०) ।

सुकल्पित—वि० [सं०] साज या सुसज्जित । अच्छी सजा (को०) ।

सुकल्य—वि० [सं०] पूर्ण स्वस्थ । उत्तम (को०) ।

सुकवाना—क्रि० अ० [?] सूखने में आना । आश्चर्यान्वित होना । उ०—पर्वत बाना पर नहीं, पैर लाव नहिं पाय । सिरवानहु अति तीर तकि सीझहुगे सुकवाय ।—रामसहाय (शब्द०) ।

सुकवि—संज्ञा पु० [सं०] अच्छा कवि । सत्कवि । उत्तम कविता करनेवाला ।

सुकष्ट—वि० [सं०] १ अति कष्टकर । २ (रोग आदि) जो कष्ट-साध्य हो (को०) ।

सुकाँट'—संज्ञा पु० [सं० सुकाण्ड] फलने की लता ।

सुकाँड'—वि० सुंदर तना, डाल या डालवाला ।

सुकाँडिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुकाण्डिका] फलने की लता ।

सुकाँडी'—संज्ञा पु० [सं० सुकाण्डिन्] भ्रमर । भौंरा ।

सुकाँडी'—वि० १ सुंदर काँड या डालवाला । २ सुंदर ढंग से संयुक्त या जुड़ा हुआ (को०) ।

सुकांत—वि० [सं० सुकान्त] अत्यंत सुंदर । अति सुंदर (को०) ।

सुकाज—संज्ञा पु० [सं० सु+हिं० काज] उत्तम कार्य । अच्छा काम । सुकार्य ।

सुकातिज—संज्ञा पु० [सं० सुकिञ्ज] सोनी । (दि०) ।

सुकाना—क्रि० अ० [सं० शुष्क प्रा० सुक्क, पु०हिं० सुकना] दे० 'सुखाना' ।

सुकानी—संज्ञा पु० [अ० सुक्कानी] मांझी । दे० 'सुखानी' । (दि०) ।

सुकाम—वि० [सं०] उत्तम कामनावाला (को०) ।

सुकामद—वि० [सं०] कामना पूर्ण करनेवाला (को०) ।

सुकामव्रत—संज्ञा पु० [सं०] वह व्रत जो किसी उत्तम कामना से किया जाता है । काम्यव्रत ।

सुकामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु लता । कामधेनु ।

सुकार'—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुकारा] १ सहज साध्य । सहज में होनेवाला । २ सहज में वश में आनेवाला (घोड़ा या गाय आदि) । ३ सहज में प्राप्त होनेवाला ।

सुकार'—संज्ञा पु० १ अच्छे स्वभाव का घोड़ा । २ कुंकुम शालि ।

सुकाल—संज्ञा पु० [सं०] १ सुसमय । उत्तम समय । २ वह समय जो अन्न आदि की उपज के विचार से अच्छा हो । अकाल का उलटा ।

सुकालिन—संज्ञा पु० [सं०] पितरों का एक गण । मनु के अनुसार ये शूद्रों के पितर माने जाते हैं ।

सुकालो—संज्ञा पु० [सं० सुकालिन्] दे० 'सुकालिन' ।

सुकालुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] भटकटैया ।

सुकावना—क्रि० स० [सं० शुष्क, हिं० सुखाना] दे० 'सुखाना' ।

उ०—भूमि भार दीवे को कि सुर ढाँप लीवे को, समुद्र कीच कीवे को कि पान कँ सुकावनो ।—हनुमन्नाटक (शब्द०) ।

**सुकाशन**—वि० [सं०] अत्यत दीप्तिमान् । वहुत प्रकाशमान् । वहुत चमकीला ।

**सुकाष्ठ**—सज्ञा पु० [सं०] १ जलावन की लकडी । २ अच्छी लकडी ।

**सुकाष्ठक**—सज्ञा पु० [स०] १ देवदारु । २ वृक्ष आदि जिसमे काष्ठ अच्छा हो ।

**सुकाष्ठा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कुटकी । २ काष्ठ कदली । वन-कदली । कटकेला ।

**सुकिज**Ⓤ—सज्ञा पु० [स०] शुभ कर्म । उत्तम कार्य । उ०—सोचत हानि मानि मन गुनि गुनि गए निघटि फल सकल सुकिज को । —तुलसी (शब्द०) ।

**सुकिया**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० स्वकीया] वह स्त्री जो अपने ही पति मे अनुराग रखती हो । स्वकीया नायिका । उ०—ता नायक की नायिका ग्रथनि तीनि वखान । सुकिया परकीया अवर सामान्या सुप्रमान ।—केशव (शब्द०) ।

**सुकी**—सज्ञा स्त्री० [स० शुक] तोते की मादा । सुग्गी । सारिका । तोती । उ०—कूजत हैं कलहस कपोत सुकी सुक सोर करैं सुनि ताहू । नेकहू वयो न लला सकुचौ जिय जागत हे गुरु लोग लजाहू ।—देव (शब्द०) ।

**सुकीउ**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० स्वकीया] अपने ही पति मे अनुराग रखनेवाली स्त्री । स्वकीया नायिका । उ०—याही के निहोरे झूँठे साँचे राम मारे वाली लोग कहत तीय लै दई सुकीउ है । सुन्यो जाको नाँव मेरो देश देश गाँव सव शाखामृग राउर विमूरति सुग्रीउ है ।—हनुमन्नाटक (शब्द०) ।

**सुकीरति**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० सुकीर्ति] सुकीर्ति । सुयश । उ०—राम सुकीरति भनिति भदेसा । असमजस अस मोहि अँदेसा ।—मानस, १।१४ ।

**सुकीर्ति**[1]—सज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम कीर्ति । सुयश ।

**सुकीर्ति**[2]—वि० उत्तम कीर्तियुक्त । यशस्वी ।

**सुकुडल, सुकुतल**—सज्ञा पुं० [स० सुकुण्डल सुकुन्तल] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

**सुकुद**—सज्ञा पु० [स० सुकुन्द] राल । धूना ।

**सुकुदक**—सज्ञा पुं० [सं० सुकुन्दक] प्याज ।

**सुकुदन**—सज्ञा पुं० [सं० सुकुन्दन] वर्वरी । ववई तुलसी ।

**सुकुआर**—वि० [स० सुकुमार, वि० सुकुआरी] सुकुमार । उ०—इह न होइ जैसे माखन चोरी । तव वह मुख पहचानि मानि सुख देती जान हानि हुति छोरी । उन दिननि सुकुआर हते हरि हौं जानत अपनो मन मोरी ।—सूर (शब्द०) ।

**सुकुट्ट, सुकुट्य**—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम ।

**सुकुडना**—क्रि० अ० [सं० सङ्कुचन] दे० 'सिकुडना' ।

**सुकुति**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० शुक्ति] सीप । शुक्ति । उ०—पूरन परमानद वही अहिवदन हलाहल । कदलीगत घनसार मुकुति महँ मुक्ता कोलाहल ।—सुधाकर (शब्द०) ।

**सुकुमार**[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० सुकुमारी] १ जिसके अग वहुत कोमल हो । अति कामल । नाजुक । २ सौदर्ययुक्त । तरुण (को०) ।

**सुकुमार**[2]—सज्ञा पु० १ कोमलाग वालक । नाजुक लडका । २ ऊख । ईख । ३ वनचपा । ४ अपामार्ग । लटजीरा । ५ साँवाँ धान । ६ कँगनी । ७ एक दैत्य का नाम । ८ एक नाग का नाम । ९ काव्य का एक गुण ।

**विशेष**—जो काव्य कोमल अक्षरो या शब्दो से युक्त होता है, वह सुकुमार-गुण-विशिष्ट कहलाता है ।

१० तवाकू का पत्ता । ११ वैद्यक मे एक प्रकार का मोदक ।

**विशेष**—यह मोदक निसोथ, चीनी, शहद, इलायची और काली मिर्च के योग से वनता है और विरेचक तथा रक्तपित्त और वायु रोगो का नाशक माना जाता है ।

**सुकुमारक**—सज्ञा पु० [स०] १ तवाकू का पत्ता । २ तेजपत्र । तेजपत्ता । ३ साँवा धान । ४ सुदर वालक । ५ कान का एक विशेष अश (को०) । ६ दे० 'सुकुवार'—२ । ७ जाववान् के एक पुत्र का नाम ।

**सुकुमारता**—सज्ञा स्त्री० [स०] सुकुमार होने का भाव या धर्म । कोमलता । सौकुमार्य । नजाकत ।

**सुकुमारत्व**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सुकुमारता' ।

**सुकुमारवन**—सज्ञा पु० [स०] एक कल्पित वन जो भागवत के अनुसार मेरु के नीचे है । कहते हैं इसमे भगवान् शकर भगवती पार्वती के साथ क्रीडा किया करते हैं ।

**सुकुमारा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जूही । २ नवमल्लिका । ३ कदली । केला । ४ स्पृक्का । ५ एक नदी का नाम (को०) । ६ मालती ।

**सुकुमारिक**—वि० [स०] जिसकी कन्या सुदर हो (को०) ।

**सुकुमारिका**—सज्ञा स्त्री० [सं०] केले का पेड ।

**सुकुमारी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नवमल्लिका । चमेली । २ शखिनी नाम की ओषधि । ३ वनमल्लिका । ४ एक प्रकार की फली । जैसे—मूँग आदि की । ५ वडा करेला । ६ ऊख । ७ कदली वृक्ष । केले का पेड । ८ त्रिसधि नामक फूलदार पेड । ९ स्पृक्का नामक गधद्रव्य । १० सुकुमार कन्या । ११ लडकी । वेटी ।

**सुकुमारी**[2]—वि० कोमल अगोवाली । कोमलागी ।

**सुकुरना**Ⓤ[1]—क्रि० अ० [स० सङ्कुचन] दे० 'सिकुडना' । उ०—मुकुर विलोकी लाल रहे क्यो धुकुरपुकुर है । नरमाने हो कहा रहे क्यो अग सुकुर कै ।—अविकादत्त व्यास (शब्द०) ।

**सुकुर्कुर**—सज्ञा पु० [सं०] वालको का एक प्रकार का रोग जिसकी गणना वालग्रहो मे होती है ।

सुकेशी'—सज्ञा स्त्री० [स०] १ उत्तम केशोवाली स्त्री। वह स्त्री जिसके वाल वहुत सुदर हो। २ महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम।

सुकेशी'—सज्ञा पु० [स० सुकेशिन्] [वि० स्त्री० सुकेशिनी] वह जिसके वाल वहुत सुदर हो।

सुकेसर—सज्ञा पुं० [स०] १ सिंह। शेर। २ दे० 'सुकेशर'।

सुकोली—सज्ञा स्त्री० [सं०] क्षीर काकोली नामक कद। पयस्का। पयस्विनी।

सुकोशक—सज्ञा पु० [स०] एक वृक्ष। दे० कोशम।

सुकोशला—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नगरी का नाम।

सुकोशा—सज्ञा स्त्री० [स०] कोशातकी। तुरई। तरोई।

सुक्कडि—सज्ञा पु० [स० श्रीखण्ड, प्रा० सिरिखड, गुज० सुखड] एक प्रकार का सूखा चदन।

विशेष—वैद्यक मे यह चदन मूत्रकृच्छ्र, पित्तरक्त और दाह को दूर करनेवाला तथा शीतल और सुगधिदायक वताया गया है।

सुक्कान'—सज्ञा पु० [अ० ?] पतवार (जहाज की)। (लश०)।

मुहा०—सुक्कान पकडना या मारना = जहाज चलाना। (लश०)।

सुक्कान'—सज्ञा पु० [अ० साकिन का वहु व०] निवासी लोग। रहनेवाले लोग।

सुक्कानी—सज्ञा पु० [अ० मल्लाह] माझी। (लश०)।

सुक्ख—सज्ञा पुं० [सं० सुख] दे० 'सुख'। उ०—जे जन भीजै रामरस विकसित कवहुँ न रुक्ख। अनुभव भाव न दरसै ते नर सुक्ख न दुक्ख।—कबीर (शब्द०)।

सुक्त—सज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल की एक प्रकार की काँजी जो पानी मे घी या तेल, नमक और कद या फल आदि गलाकर वनाई जाती थी।

विशेष—वैद्यक मे इसे रक्तपित्त और कफनाशक, वहुत उष्ण, तीक्ष्ण, रुचिकर, दीपन, और कृमिनाशक माना है।

सुक्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] इमली।

सुक्ति'—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन पर्वत का नाम।

सुक्ति'—सज्ञा स्त्री० [स० शुक्ति] दे० 'शुक्ति'।

सुक्र'—सज्ञा पु० [स० शुक्र] दे० 'शुक्र'।

सुक्र'—सज्ञा पु० अग्नि। (डिं०)।

सुक्रतु'—वि० [स०] उत्तम कर्म करनेवाला। सत्कर्म करनेवाला।

सुक्रतु'—सज्ञा पु० १ अग्नि। २ शिव। ३ इद्र। ४ मित्रावरुण। ५ सूर्य। ६ चद्र। सोम [को०]।

सुक्रतूया—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शुभ कर्म करने की इच्छा। २ प्रज्ञा। बुद्धि (को०)। ३ दक्षता। पाटव (को०)।

सुक्रय—सज्ञा पु० [स०] अच्छी खरीद। अच्छा या लाभकर सौदा [को०]।

सुक्रित—सज्ञा पु० [सं० सुकृत] दे० 'सुकृत'। उ०—कहहि सुमति सब कोय सुक्रित मत जनम क जागै। तौ तुरतहि सिलि जायँ सात रिखि सो मत भागै।—सुधाकर (शब्द०)।

सुक्रीडा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम।

सुक्ल—वि० [स० शुक्ल] दे० 'शुक्ल'। उ०—उनइस तेतालीस को सवत माघ सुमास। सुक्ल पचमी को भयो सुकवि लेख परकास।—अविकादत्त व्यास (शब्द०)।

सुक्षत्र'—वि० [स०] १ अत्यत धनशाली। २ सुराज्यशाली। ३ शक्तिशाली। वलवान्। दृढ।

सुक्षत्र'—सज्ञा पु० निरमित्र के पुत्र का नाम।

सुक्षद—सज्ञा पु० [स०] सुदर यज्ञशाला। वढिया यज्ञमडप।

सुक्षम—वि० [स० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—कारण सुक्षम तीन देह धरि भक्ति हत तृण तोरी। धर्मनि निरखि परखि गुरु मूरति जाहि के काज वनो री।—कबीर (शब्द०)।

सुक्षिति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुदर निवास स्थान। २ वह जो सुदर स्थान मे रहता हो। ३ वह जिसे यथेष्ट पुत्र पौत्रादि हो। धन धान्य और सतान आदि से सुखी।

सुक्षेत्र'—सज्ञा पु० [स०] १ मार्कडेय पुराण के अनुसार दसवे मनु के पुत्र का नाम। २ वह घर जिसके दक्षिण, पश्चिम और उत्तर की ओर दीवारे या मकान आदि हो। पूर्व ओर से खुला हुआ मकान जो वहुत शुभ माना जाता है।

सुक्षेत्र'—वि० [स०] उत्तम क्षेत्र या कुक्षि से उत्पन्न [को०]।

सुक्षेम' सज्ञा पु० [स०] अतिशय समृद्धि। अत्यत सुख शाति [को०]।

सुक्षेम'—सज्ञा पु० [स० सुक्षेमन्] जल [को०]।

सुखंकर—वि० [स० सुखङ्कर] सुखकर। सुकर। सहज।

सुखकरी—सज्ञा स्त्री० [स० सुखङ्करी] जीवती। डोडी। विशेष दे० 'जीवती'।

सुखघुण—सज्ञा पु० [स० सुखङ्घुण] शिव का अस्त्र। शिवपट्वाग।

सुखडरा—सज्ञा पुं० [देश०] वैश्यो की एक जाति।

सुखडी'—सज्ञा स्त्री० [हि० सूखना + डी (प्रत्य०)] एक प्रकार का रोग जिसमे शरीर सूखकर काँटा हो जाता है। यह रोग बच्चो को वहुत होता है।

सुखडो'—वि० वहुत दुवला पतला।

सुखद—वि० [स० सुखद] सुखदायी। आनददायक। उ०—धनगन वेली वनवदन सुमन सुरति मकरद। सुदर नायक श्रीरवन दच्छिन पवन सुखद।—रामसहाय (शब्द०)।

सुख'—सज्ञा पु० [स०] १ मन की वह उत्तम तथा प्रिय अनुभूति जिसके द्वारा अनुभव करनेवाले का विशेष समाधान और सतोष होता है और जिसके वरावर वने रहने की वह कामना करता है। वह अनुकूल और प्रिय वेदना जिसकी सवको अभिलाषा रहती है। दु ख का उलटा। आराम। जैसे,—(क) वे अपने वाल वच्चो मे वडे सुख से रहते है। (ख) जहाँ तक हो सके सवको सुख पहुँचाने का प्रयत्न करना चाहिए।

विशेष—कुछ लोग सुख को हर्ष का पर्यायवाची समझते है, पर दोनो मे अतर है। कोई उत्तम समाचार सुनने अथवा कोई उत्तम पदार्थ प्राप्त करने पर मन मे सहसा जो वृत्ति उत्पन्न होती है, वह हर्ष है। परतु सुख इस प्रकार आकस्मिक नही

होता, और हर्ष की अपेक्षा अधिक स्थायी होता है। अनेक प्रकार की चिंताओं, कष्टों आदि से निरंतर बचे रहने पर और अनेक प्रकार की वासनाओं आदि की तृप्ति होने पर मन में जो प्रिय अनुभूति होती है, वह सुख है। हमारे यहाँ कुछ लोगों ने सुख को मन का और कुछ लोगों ने आत्मा का धर्म माना है। न्याय और वैशेषिक के अनुसार सुख आत्मा का एक गुण है। यह सुख दो प्रकार का कहा गया है—(१) नित्य सुख जो परमात्मा के विशेष सुख के अंतर्गत है और (२) जन्य सुख जो जीवात्मा के विशेष सुख के अंतर्गत है। यह धन या मित्र की प्राप्ति, आरोग्य और भोग आदि से उत्पन्न होता है। सांख्य और पातंजल के मत से सुख प्रकृति का धर्म है और इसकी उत्पत्ति सत्य से होती है। गीता में सुख तीन प्रकार का कहा गया है—(१) सात्विक जो ज्ञान, वैराग्य और ध्यान आदि के द्वारा प्राप्त होता है। (२) राजसिक जो विषय तथा इंद्रियों के संयोग से उत्पन्न होता है। (जैसे संगीत सुनने, सुंदर रूप देखने, स्वादिष्ट भोजन करने और संभोग आदि से होता है।) और (३) तामस जो आलस्य और उन्माद आदि के कारण उत्पन्न होता है।

**पर्या०**—प्रीति। मोद। आमोद। प्रमोद। आनंद। हर्ष। सौख्य।

**क्रि० प्र०**—देना।—पाना।—भोगना।—मिलना।

**मुहा०**—सुख मानना = परिस्थिति आदि की अनुकूलता के कारण ठीक अवस्था में रहना। जैसे,—यह पेड़ सभी प्रकार की जमीनों में सुख मानता है। सुख लूटना = यथेष्ट सुख का भोग करना। मौज करना। आनंद करना। सुख की नींद सोना = निश्चिंत होकर आनंद से सोना या रहना। खूब मजे में समय बिताना।

२ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ८ सगण और २ लघु होते हैं। ३ आरोग्य। तंदुरुस्ती। ४ स्वर्ग। ५ जल। पानी। ६ वृद्धि नाम की अष्टवर्गीय ओषधि। ७ समृद्धि (को०)। ८ आसानी। सुभीता। सहूलियत (को०)। ९. कल्याण। शुभ। १० अभ्युन्नति। वृद्धि। बढ़ती।

**सुख[२]**—वि० [सं०] १ स्वाभाविक। सहज। उ०—जाके सुख मुखवास ते वासित होत दिगंत।—केशव (शब्द०)। २ सुख देनेवाला। सुखद। ३ प्रसन्न। खुश (को०)। ४ रुचिकर। मधुर (को०)। ५ सद्गुणी। पुण्यात्मा (को०)। ६ योग्य। उपयुक्त (को०)।

**सुख[३]**—क्रि० वि० १ स्वाभाविक रीति से। साधारण रीति से। उ०—कहुँ द्विज गण मिलि सुख श्रुति पढ़ही।—केशव (शब्द०)। २ शांतिपूर्वक। यथेच्छया। सुखपूर्वक। आराम से। ३ प्रसन्नता या हर्ष के साथ (को०)। ४ सरलता से। आसानी से (को०)।

**सुखआसन**Ⓤ—संज्ञा पु० [सं० सुख + आसन] सुखपाल। पालकी। डोली। उ०—चढ़ि सुखआसन नृपति सिधायो। तहाँ कहार एक दुख पायो।—सूर (शब्द०)।

**सुखकंद**—वि० [सं० सुख + कन्द] सुखमूल। सुख देनेवाला। आनंद देनेवाला। उ०—अहो पवित्र प्रभाव यह रूप नयन सुखकंद। रामायन रचि मुनि दियो वानिहि परम अनंद।—सीताराम (शब्द०)।

**सुखकंदन**Ⓤ—वि० [सं० सुख + कन्दन] दे० 'सुखकंद'। उ०—श्री वृषभानु सुता दुलही दिन जोरी बनी विधना सुखकंदन। रसखानि न आवत मो पै कह्यो कछु दोउ फंदे छवि प्रेम के कंदन।—रसखान (शब्द०)।

**सुखकंदर**Ⓤ—वि० [सं० सुख + कन्दर] सुख का घर। सुख का आकर। उ०—सुंदर नंद महर के मंदिर प्रगट्यो पूत सकल सुखकंदर।—सूर (शब्द०)।

**सुखक**Ⓤ†—वि० [सं० शुष्क, हिं० सूखा] सूखा। शुष्क। उ०—सुखक वृक्ष एक जक्त उपाया। समुझि न परी विषय कछु माया।—कबीर (शब्द०)।

**सुखकर**—वि० [सं०] १ सुख देनेवाला। सुखद। २ जो सहज में सुख से किया जाय। सुकर। ३ सुखद या हलके हाथवाला। उ०—परम निपुण सुखकर वर नापित लीन्ह्यो तुरत बुलाई। क्रम सो चारि कुमारन को नृप दिय मुंडन करवाई।—रघुराज (शब्द०)।

**सुखकरण**—वि० [सं० सुख + करण] सुख उत्पन्न करनेवाला। आनंद देनेवाला। उ०—सब सुखकरण हरण दुख भारी। जपैं जाहि शिव शैलकुमारी।—विश्राम (शब्द०)।

**सुखकरन**Ⓤ—वि० [सं० सुख + करण] दे० 'सुखकरण'। उ०—सुखकरन सब ते परम करवर वेनु वरकर धरत हैं। सुर मधुर तान बँधान तें प्रभु मनहुँ को मन हरत है।—गिरधरदास (शब्द०)।

**सुखकार, सुखकारक**—वि० [सं०] सुखदायक। सुख देनेवाला। आनंददायक।

**सुखकारी**—वि० [सं० सुखकारिन्] सुख देनेवाला। आनंददायक।

**सुखकृत्**—वि० [सं०] १ जो सुख या आराम से किया जाय। सुकर। सहज। २ सुख करनेवाला। सुखद (को०)।

**सुखक्रिया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुख से किया जानेवाला काम। सहज काम। २. वह काम जिसे करने से सुख हो। आराम देनेवाला काम। ३ आराम या सुख देना।

**सुखगंध**—वि० [सं० सुखगन्ध] जिसकी गंध आनंद देनेवाली हो। सुगंधित।

**सुखग**—वि० [सं०] सुख से जानेवाला। आराम से चलने या गमन करनेवाला।

**सुखगम**—वि० [सं०] १ सरल। सुगम। सहज। २ दे० 'सुखगम्य'।

**सुखगम्य**—वि० [सं०] सुख से जाने योग्य। आराम से जाने योग्य। २ जिसमें सुखपूर्वक गमन किया जा सके।

**सुखग्राह्य**—वि० [सं०] १. सुख से ग्रहण करने योग्य। जो सहज में लिया जा सके। २ सुखबोध्य। सुबोध।

**सुखघात्य**—वि० [सं०] जिसका घात या हनन सरलता से किया जा सके।

**सुखचर**—वि० [सं०] सुख से चलनेवाला। आराम से चलनेवाला।

**सुखचार**—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम घोड़ा। बढ़िया घोड़ा।

सुखच्छाय—वि० [स०] शीतल छाया देनेवाला। सुखद छायावाला।

सुखच्छेद्य—वि० [स०] सरलता से छेदने या काटने योग्य।

सुखजनक—वि० [स०] सुखदायक। आनददायक। सुखद।

सुखजननि(पु), सुखजननी—वि० [स०] सुख उपजानेवाली। सुख देनेवाली। उ०—मदन जीविका सुखजननि मनमोहनी विलास। निपट कृपाणी कपट की रति शोभा मुखवास। —केशव (शब्द०)।

सुखजात—वि० [स०] १ सुखी। प्रसन्न २. जो सुख से जात या उत्पन्न हो।

सुखज्ञ—वि० [स० सुख+ज्ञ] सुख का जाननेवाला। सुख का ज्ञाता। उ०—जागरत भाखि सुप्त सुखमाभिलाख जे सुखज्ञ सुखभाषी ह्वै तुरीयमय माने है। गुणत्रय भेद के अवस्था त्रय खेदहू के लच्छन के लच्छ ते विलच्छन बखाने है।—चरणचद्रिका (शब्द०)।

सुखड़ैना—सज्ञा पु० [हिं० सूखना+डैना (प्रत्य०)] बैलो का एक प्रकार का रोग जो उनका तालू खुल या फूट जाने से होता है। इसमे बैल खाना पीना छोड देता है जिससे वह बहुत दुबला हो जाता है।

सुखढरन(पु)—वि० [स० सुख+हिं० ढलना] सुख देनेवाला। सुखदायक। उ०—सज्जन सुखढरन भक्तजन कठाभरन।—सरस्वती (शब्द०)।

सुखतला, सुखतल्ला—सज्ञा पु० [हिं० सुखतला] चमडे का वह टुकडा जो जूते के भीतर चिपकाया जाता है जिससे तलवे को आराम मिले।

सुखता—सज्ञा स्त्री० [स०] सुख का भाव या धर्म। सुखत्व।

सुखत्व—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'सुखता'।

सुखथर(पु)†—सज्ञा पु० [स० सुख+स्थल] सुख का स्थल। सुख देनेवाला स्थान। उ०—निपट भिन्न वा सब सो जो पहले हो सुखथर। विविध त्रास सो पूरित हैं वे भूमि भयकर।—श्रीधर पाठक (शब्द०)।

सुखद[1]—वि० [स०][वि० स्त्री० सुखदा] सुख देनेवाला। आनद देनेवाला। सुखदायो। आरामदेह।

सुखद[2]—सज्ञा पु० १ विष्णु का स्थान। विष्णु का आसन। २ विष्णु। ३ सगीत मे एक प्रकार का ताल।

सुखदगीत—वि० [स० सुखद+गात] [वि० स्त्री० सुखदगीता] जिसकी बहुत अधिक प्रशसा हो। प्रशसनीय। उ०—जनक सुखदगाता पुत्रका पाय साता।—केशव (शब्द०)।

सुखदनियाँ(पु)—वि० [स० सुखदानी] दे० 'सुखदायी'। उ०—सुदर स्याम सरोजवरन तन सब अँग सुभग सकल सुखदनियाँ।—तुलसी (शब्द०)।

सुखदा[1]—वि० स्त्री० [स०] सुख देनेवाली। आनद प्रदान करनेवाली। सुखदायिनी।

सुखदा[2]—सज्ञा स्त्री० १ गगा का एक नाम। २ अप्सरा। ३ शमी वृक्ष। ४ एक प्रकार का छद।

सुखदाइन(पु)—वि० [स० सुखदायिनी] दे० 'सुखदायिनी'। उ०—आइ हती अन्हवावन नाइनि, सोधो लिए कर सूधे सुभाइनि। कचुकि छोरि उतै उपटैवै को ईगुर से अँग की सुखदाइनि।—दे० (शब्द०)।

सुखदाई(पु)—वि० [स० सुखदायिन्] दे० 'सुखदायी'।

सुखदात(पु)—वि० [स० सुखदातृ] दे० 'सुखदाता'। उ०—जो सब देव को देव अहै, द्विजभक्ति मे जाकी घनी निपुणाई। दासन को सिगरो सुखदात प्रशात स्वरूप मनोहरताई।—रघुराज (शब्द०)।

सुखदाता—वि० [स० सुखदातृ] सुख देनेवाला। आनद देनेवाला। आराम देनेवाला। सुखद। उ०—सुखदाता मातापिता सेवक सरन सधार। उपवन बैठे चद जहँ द्वै पचास पधार।—पृ० रा०, ६।३२।

सुखदान(पु)—वि० [स० सुख+देना] [स्त्री० सुखदानी] सुख देनेवाला। आनद देनेवाला। उ०—(क) खेलति है गुडियान को खेल लए सँग मै सजनी सुखदान री।—सुदरीसर्वस्व (शब्द०)। (ख) जब तुम फूलन के दिवस आवत है सुखदान। फूली अग समाति नहिं उत्सव करति महान।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

सुखदानी[1]—वि० स्त्री० [हिं० सुखदान] सुख देनेवाली। आनद देनेवाली।

सुखदानी[2]—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे ८ सगण और १ गुरु होता है। इसे सुदरी, मल्ली और चद्रकला भी कहते है।

सुखदाय—वि० [स० सुखदायक] दे० 'सुखदायक'।

सुखदायक[1]—वि० [स०] सुख देनेवाला। आराम देनेवाला। सुखद।

सुखदायक[2]—सज्ञा पु० एक प्रकार का छद।

सुखदायिनी[1]—वि० स्त्री० [सं०] सुख देनेवाली। सुखदा।

सुखदायिनी—सज्ञा स्त्री० मासरोहिणी नाम की लता। रोहिणी।

सुखदायी—वि० [स० सुखदायिन्] [वि० स्त्री० सुखदायिनी] सुख देनेवाला। आनद देनेवाला। सुखद।

सुखदायो(पु)—वि० [स० सुखदायक] दे० 'सुखदायी'। उ०—देखि श्याम मन हरष बढाया। तैसिय शरद चादिनी निर्मल तैसोइ रास रग उपजायो। तैसिय कनकबरन सब सुदरि यह साभा पर मन ललचायो। तैसो हससुता पवित्र तट तैसोइ कल्पवृक्ष सुखदायो।—सूर (शब्द०)।

सुखदाव(पु)—दे० [स० सुखदायक] दे० 'सुखदायी'। उ०—जल दल चदन चक्रदर घट शिला हरि ताव। अष्ट वस्तु मिलि होत है चरणामृत सुखदाव।—विश्राम (शब्द०)।

सुखदास—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का धान जो अगहन महीने मे तैयार होता है और जिसका चावल बरसो तक रह सकता है।

सुखदुःख—सज्ञा पु० [स०] आराम और कष्ट। सुख और दुःख का जोडा। द्वद्व। २ भले और बुरे समय का क्रम। भाग्य और अभाग्य।

मुहा०—सुखदुःख का साथी=भले और बुरे मे बराबर साथ देनेवाला।

**सुखदृश्य**—वि० [स०] जिसे देखने को जी चाहे। सुदर [को०]।

**सुखदेनी**Ⓤ—वि० [स० सुखदायिनी] दे० 'सुखदायिनी'। उ०—राजत रोमन की तन राजिव है रसबीज नदी मुखदेनी। आगे भई प्रतिबिंबित पाछे बिलबित जो मृगनैनी कि बेनी।—सुदरी-सर्वस्व (शब्द०)।

**सुखदैन**Ⓤ—वि० [हिं० सुख + देना] दे० 'सुखदायी,' 'सुखदान'। उ०—जियके मन मजु मनोरथ आनि कहै हनुमान जगे पै जगे। मुखदैन सरोज कली से भले उभरैं ये उरोज लगे पै लगैं।—सुदरीसर्वस्व (शब्द०)।

**सुखदैनी**Ⓤ—वि० [स० सुखदायिनी] सुख देनेवाली। आनद देनेवाली। सुखद। उ०—भान गुही गुन लाल लटै लपटी लर मोतिन की सुखदैनी।—केशव

**सुखदोहा**—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह गाय जो सुखपूर्वक दूही जाय [को०]।

**सुखदोह्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] वह गाय जिसको दुहने मे किसी प्रकार का कष्ट न हो। बहुत सहज मे दूही जा सकनेवाली गौ।

**सुखधाम**—सज्ञा पु० [स०] १ सुख का घर। आनदसदन। उ०—सो सुखधाम राम अस नामा।—मानस, १। २ वह जो स्वय सुखमय हो, या जो बहुत अधिक सुख देनेवाला हो। ३ वैकुठ। स्वर्ग।

**सुखन**—सज्ञा पुं० [अ० सुखन] दे० 'सखुन'। (सुखन शब्द के मुहा० और यौ० के लिये दे० 'सखुन' शब्द के मुहा० और यौ०)।

**सुखना**Ⓤ—क्रि० अ० [हिं० सूखना] दे० 'सूखना'।

**सुखनीय**—वि० [सं०] सुखद। आनदप्रद [को०]।

**सुखपर**—वि० [स०] १ सुखी। खुश। प्रसन्न। २ सुख चाहनेवाला। आरामतलब।

**सुखपाल**—सज्ञा पुं० [स० सुख + पाल (की)] एक प्रकार की पालकी जिसका ऊपरी भाग शिवाले के शिखर का सा होता है। उ०—(क) सुखपाल और चडोलो पर और रथो पर जितनी रानियाँ और महारानी लक्ष्मीवास पीछे चली आती थी।—शिवप्रसाद (शब्द०)। (ख) घोडन के रथ दोइ दिए जरवाफ मढी सुखपाल सुहाई।—रघुनाथ (शब्द०)। (ग) हम सुख-पाल लिए खडे हाजिर लगन कहार। पहुँचायौ मन मजिल तक तुहिं लै प्रान अधार।—रतनहजारा (शब्द०)।

**सुखपूर्वक**—क्रि० वि० [सं०] सुख से। आनद से। आराम के साथ। मजे मे। जैसे,—आप यदि उनके यहाँ पहुँच जायँगे तो बहुत सुखपूर्वक रहेगे।

**सुखपेय**—वि० [स०] जिसके पीने मे सुख हो। जिसके पान करने से आनद मिले। सुपेय।

**सुखप्रणाद**—वि० [स०] सुखद ध्वनि या नादवाला [को०]।

**सुखप्रतीक्ष**—वि० [स०] सुख की प्रतीक्षा करने, राह देखने या आशा करनेवाला [को०]।

**सुखप्रद**—वि० [सं०] सुख देनेवाला। सुखदायक। सुखद।

**सुखप्रबोधक**—वि० [स०] सुबोध। सरलता से बोध होनेवाला।

**सुखप्रविचार**—वि० [स०] सरलता से ग्रहण करने योग्य [को०]।

**सुखप्रवेय**—वि० [स०] जिसे आसानी से कपित किया जा सके। (वृक्ष आदि) जो आसानी से हिल सके।

**सुखप्रश्न**—सज्ञा पु० [सं०] कुशलक्षेम की जिज्ञासा। कुशल समाचार पूछना [को०]।

**सुखप्रसव, सुखप्रसवन** सज्ञा पुं० [स०] बिना कष्ट के होनेवाला प्रसव [को०]।

**सुखप्रसवा**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] सुख से प्रसव करनेवाली गौ, स्त्री आदि। आराम से जननेवाली स्त्री।

**सुखप्रसवा**[2]—वि० स्त्री० सुखपूर्वक जनन करनेवाली (गाय, स्त्री)।

**सुखप्राप्त**—वि० [सं०] १ जिसे सुख प्राप्त हो। २ जो सुख से लभ्य हो।

**सुखप्राप्य** वि० [स०] सुख से प्राप्त करने योग्य। सरलता से मिल जानेवाला [को०]।

**सुखबधन**—वि० [सं० सुखबन्धन] सुखो से आबद्ध। विलासी [को०]।

**सुखबद्ध**—वि० [सं०] सुदर [को०]।

**सुखबोध**—सज्ञा पुं० [स०] १ आनद की अनुभूति। २ सहज ज्ञान। सुगम ज्ञान [को०]।

**सुखभज**—सज्ञा पु० [स० सुखभञ्ज] सफेद मिर्च।

**सुखभक्ष**—सज्ञा पु० [स०] सफेद सहिजन। श्वेत शिग्रु।

**सुखभक्षिकाकार**—सज्ञा पु० [स०] कादबिक। हलवाई [को०]।

**सुखभाक्, सुखभाग्** वि० [स० सुखभागिन्] प्रसन्न [को०]।

**सुखभागी**—वि० [सं० सुखभागिन्] दे० 'सुखभाग्'।

**सुखभुक्**—वि० [स० सुखभुज्] १ प्रसन्न। सुखी। हर्षित। २ भाग्य-शाली [को०]।

**सुखभेद्य**—वि० [स०] जो सरलता से तोडा या भेदा जा सके। कोमल। भगुर [को०]।

**सुखभोग**—सज्ञा पुं० [सं०] सुख का उपभोग। आनदभोग [को०]।

**सुखभोगी**—वि० [स० सुखभोगिन्] सुख भोगनेवाला [को०]।

**सुखभोग्य**—सज्ञा पुं० [स०] जिसका भोग सुखपूवक हो सके [को०]।

**सुखमद**—वि० [सं०] जिसका मद सुखद हो [को०]।

**सुखमन**Ⓤ†—सज्ञा स्त्री० [स० सुषुम्ना] सुषुम्ना नाम की नाडी। मध्यनाडी। विशेष दे० 'सुषुम्ना'। उ०—कहाँ पिंगला सुख-मन नारी। सूनि समाधि लागि गइ तारी।—जायसी (शब्द०)।

**सुखमा**—सज्ञा स्त्री० [स० सुषमा] १ शोभा। छवि। उ०—तिय मुख सुखमा सो दृगनि बाँध्यो प्रेम अधार। रही अलक ह्वै लगी मनु बटुरी पुतरी तार।—मुबारक (शब्द०)। २ एक प्रकार का वृत्त जिसमे एक तगण, एक यगण, एक मगण और एक गुरु होता है। इसे वामा भी कहते है।

**सुखमानी**—वि० [स० सुखमानिन्] सुख माननेवाला। हर अवस्था मे सुखी रहनेवाला।

सुखमुख —सज्ञा पु० [स०] यक्ष ।

सुखमूल ⓤ—वि० [स०] सुखराशि । उ०—सुखमूल दूलह देखि दपति पुलक तन हुलस्यो हियो ।—मानस, १।३२४ ।

सुखमोद—सज्ञा पु० [स०] लाल सहिजन । शोभाजन वृक्ष ।

सुखमोदा—सज्ञा स्त्री० [स०] शल्लकी का वृक्ष । सलई ।

सुखयिता—वि० [सं० सुखयितृ] सुख देनेवाला । हर्षप्रद [को०] ।

सुखरात्रि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दिवाली की रात । कार्तिक महीने की अमावस्या की रात । २ सुहागरात (को०) । ३ लक्ष्मी [को०] ।

सुखरात्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] लक्ष्मी [को०] ।

सुखराशि—वि० [स०] जो सुख की पुजीकृत राशि हो । जो सर्वथा सुखमय हो ।

सुखरास ⓤ—वि० [स० सुख + राशि] जो सर्वथा सुखमय हो । जो सुख की राशि हो । उ०—मदिर के द्वार रूप सुदर निहारो करैं लग्यो गीत गात सकलात दई दास है । सोचे सग जाइबे की रीति को प्रमान वहै वैसे सब जानो माधवदास सुखरास है ।—भक्तमाल (शब्द०) ।

सुखरासी—वि० [स० सुख + राशि] दे० सुखरास' । उ०—पूरन काम राम सुखरासी ।—मानस, ३।२४ ।

सुखरूप—वि० [स०] मनोहर रूप, आकृतिवाला [को०] ।

सुखलक्ष्य—वि० [स०] आसानी से लक्षित होनेवाला । सुख से पहचान मे आनेवाला [को० ।

सुखलभ्य—वि० [स०] जो सुखपूर्वक लभ्य हो । सुलभ ।

सुखलिप्सा - सज्ञा स्त्री० [सं०] सुख की लालसा । सुखाकाक्षा ।

सुखलाना— क्रि० स० [हिं० सूखना का प्रे० रूप] दे० 'सुखाना' ।

सुखवत—वि० [सं० सुखवत्] १ सुखी । प्रसन्न । खुश । २ सुखदायक । आनद देनेवाला । उ०—इसके कुद कली से दत । वचन तोतले है सुखवत ।—सगीत शा० (शब्द०) ।

सुखवत्—वि० [स०] सुखयुक्त । सुखी । प्रसन्न ।

सुखवती—वि० स्त्री० [सं०] सुख से युक्त । सुखी (स्त्री) ।

सुखवत्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] सुख का भाव या धर्म । सुख । आनद ।

सुखवन†[१]—सज्ञा पुं० [हिं० सूखना] वह फसल जो सूखने के लिये धूप मे डाली जाती है । २ वह कर्म जो किसी चीज मे उसके सूखने के कारण होती है ।

सुखवन[२]—सज्ञा पु० [हिं० सूखना] वह बालू जिसे लिखे हुए अक्षरो आदि पर डालकर उनकी स्याही सुखाते है । उ०—किलक ऊख ह्वै जाइ मसी हू होत सुधा सी । खाजा के परतन की सी छवि पत्र प्रकासी । सुखवन की बारूहू तहाँ चीनी सी ढरकी । सुकवि करैं किमि कविता मधुरे वधू अपर की ।—अबिकादत्त (शब्द०) ।

सुखवर्चक—सज्ञा पु० [स०] सज्जी मिट्टी । सर्जिका क्षार ।

सुखवर्चस—सज्ञा पु० [स०] सज्जी मिट्टी ।

सुखवह—वि० [स०] जो सुखपूर्वक या आसानी से वहन किया जाय ।

सुखवा† —सज्ञा [स० सुख] सुख । आनंद । मोद । उ० सुखवा सकल बलविरवा के घर, दुख नैहर गवन नाहि देत ।—रा० कृ० वर्मा (शब्द०) ।

सुखवाद सज्ञा पु० [स०] भौतिक सुख को ही सर्वोपरि माननेवाला मत ।

सुखवादी—वि०, सज्ञा पुं० [स० सुख + वादिन्] (वह) जो इद्रियसुख को ही सब कुछ समझता या मानता हो । (वह) जो भोग विलास आदि को ही जीवन का मुख्य उद्देश्य समझता हो । विलासी ।

सुखवान्—वि० [स० सुखवत्] सुखी ।

सुखवार—वि० [स० सुख + हिं० वार (प्रत्य )] [वि० स्त्री० सुखवारी] सुखी । प्रसन्न । खुश । उ०—जहाँ दीन, घरहीन परी ठिठुरत बहु नारी । रहीं कदाचित कबहुँ गाम मे सो सुखवारी । रोय चुकी पै निरदोषिन की सुनि सुनि ख्वारी ।—श्रीधर पाठक (शब्द०) ।

सुखवास—सज्ञा पु० [स०] १ तरबूज । शीर्णवृत । २ वह स्थान जहाँ का निवास सुखकर हो । आनद का स्थान । सुख की जगह ।

सुखविहार—वि० [स०] सुखपूर्वक विहार करनेवाला । आनद की जिदगी बसर करनेवाला ।

सुखवेदन—सज्ञा पु० [स०] सुखानुभव । आनदानुभूति [को०] ।

सुखशयन—सज्ञा सं० [पु०] सुखपूवक सोना ।

सुखशयित—वि० [स०] जो सुख या आराम से सोया हो ।

सुखशय्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुख की नीद । २ सुखदायक शय्या ।

सुखशाति—सज्ञा स्त्री० [स० सुखशान्ति] अमन चैन ।

सुखशायी—वि० [स० सुखशायिन्] सुखपूर्वक सोया हुआ । जो आराम से सोया हो ।

सुखश्रव, सुखश्राव्य—वि० [स०] कानो को मधुर लगनेवाला । श्रुतिमधुर । सुरीला [को०] ।

सुखश्रुति—वि० [स०] दे० 'सुखश्रव' ।

सुखसग सज्ञा पु० [सं० सुखसङ्ग] सुख के प्रति आसक्ति ।

सुखसगी—वि० [स० सुखसङ्गिन्] सुख का साथी । सुख के समय साथ देने या रहनेवाला [को०] ।

सुखसदूह्या —सज्ञा स्त्री० [स० सुखसन्दूह्या] वह गाय जो सुख से दूही जाय । जिस गाय को दूहने मे किसी प्रकार की कठिनाई न हो ।

सुखसदोह—सज्ञा पुं० [स०] सुख की राशि । सुख का मूल । उ०—सुखसदोह मोहपर ग्यान गिरा गोतीत ।—राम०, पृ० ११६ ।

सुखसदोह्या—सज्ञा स्त्री० [स० सुखसन्दोह्या] दे० 'सुखसदूह्या' ।

सुखसपद, सुखसपत्ति—सज्ञा स्त्री० [स० सुखसम्पद, सुखसम्पत्ति] सुख और धन दौलत ।

सुखसयोग —सज्ञा पुं० [स०] लोकोत्तर आनद की प्राप्ति [को०] ।

सुखसलिल —सज्ञा पुं० [स०] उष्ण जल । गरम पानी ।

विशेष—पानी गरम करने से उसमे कोई दोष नही रह जाता । वैद्यक मे ऐसा जल बहुत उपकारी बताया गया है, और इसी लिये इसे 'सुखसिलल' कहा गया है ।

**सुखसागर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुख के सागर। आनंद के समुद्र। २ हिंदी का एक ग्रंथ जो भागवत के दशम स्कंध का अनुवाद है। इसके अनुवादक मुंशी सदासुखलाल थे।

**सुखसाध्य**—वि० [सं०] जिसका साधन सुकर हो। जिसके साधन में कोई कठिनाई न हो। सुख या सहज में होनेवाला। सुकर। सहज। २ (रोग आदि) जो सरलता से अच्छा हो सके।

**सुखसार**—संज्ञा पुं० [सं० सुख + सार] मुक्ति। मोक्ष। उ०—केशव तिन सौं यो कह्यौ क्यो पाऊँ सुखसारु।—केशव (शब्द०)।

**सुखसुप्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुख की नींद।

**सुखसेव्य**—वि० [सं०] १ सुख से सेवन या भोग करने योग्य। २ सुलभ [को०]।

**सुखस्पर्श**—वि० [सं०] १ छूने में सुखकर। २ तृप्तिकर [को०]।

**सुखस्वप्न**—संज्ञा पुं० [सं०] सुखमय जीवन की कल्पना [को०]।

**सुखहस्त**—वि० [सं०] जिसके हाथ कोमल एवं मृदु हों। मुलायम हाथोंवाला [को०]।

**सुखांत**—संज्ञा पुं० [सं० सुखान्त] १ वह जिसका अंत सुखमय हो। सुखद परिणामवाला। जिसका परिणाम सुखकर हो। २ मित्रता-पूर्ण। मैत्रीयुक्त [को०]। ३ सुख का नाश या विघात करनेवाला (को०)। ४ पाश्चात्य नाटकों के दो भेदों में से एक। वह नाटक जिसके अंत में कोई सुखपूर्ण घटना (जैसे संयोग, अभीष्टसिद्धि, राज्यप्राप्ति आदि) हो। दुखांत (ट्रैजेडी) का उलटा। कॉमेडी।

**सुखांबु**—संज्ञा पुं० [सं० सुखाम्बु] गरम जल। उष्ण जल।

**सुखा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वरुण की पुरी का नाम। २ दयालुता। पुण्य (को०)। ३ संगीत की एक मूर्छना। ४ शिव की नौ शक्तियों में से एक शक्ति (को०)। ५ मुक्ति प्राप्त करने की साधना। मोक्षप्राप्ति की चेष्टा या उपाय (दर्शन)।

**सुखाकर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुख का आकर या निधि। २ बौद्धों के एक लोक का नाम [को०]।

**सुखागत**—संज्ञा पुं० [सं०] स्वागत [को०]।

**सुखाजात**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

**सुखात्मा**—संज्ञा पुं० [सं० सुखात्मन्] ईश्वर। ब्रह्म।

**सुखाधार**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

**सुखाधार**[2]—वि० जो सुख का आधार हो। जिसपर सुख अवलंबित हो। जैसे—हमारे तो आप ही सुखाधार हैं।

**सुखाधिष्ठान**—संज्ञा पुं० [सं०] सुख का स्थान।

**सुखाना**[1]—क्रि० स० [हिं० सूखना का प्रे० रूप] १ किसी गीली या नम चीज को धूप या हवा में अथवा आँच पर इस प्रकार रखना या ऐसी ही और कोई क्रिया करना जिससे उसकी आर्द्रता या नमी दूर हो या पानी सूख जाय। जैसे,—धोती सुखाना, दाल सुखाना, मिर्च सुखाना, जल सुखाना। २ कोई ऐसी क्रिया करना जिससे आर्द्रता दूर हो। जैसे,—इस चिंता ने तो मेरा सारा खून सुखा दिया।

**सुखाना**[2]†—क्रि० अ० दे० 'सूखना'।

**सुखानी**—संज्ञा पुं० [अ० सुक्कानी] मांझी। मल्लाह। (लश०)।

**सुखानुभव**—संज्ञा पुं० [सं०] सुख का अनुभव या अनुभूति [को०]।

**सुखाय**—वि० [सं०] जो सुखपूर्वक प्राप्त या लभ्य हो [को०]।

**सुखाप्लव**—वि० [सं०] जहाँ सुखपूर्वक स्नान किया जाय। निःशंक, आराम से नहाने योग्य [को०]।

**सुखायत, सुखायन**—संज्ञा पुं० [सं०] सहज में वश में आनेवाला घोड़ा। सीधा और सधा हुआ घोड़ा।

**सुखापन्न**—वि० [सं०] सुखयुक्त। सुखी।

**सुखारा**†—वि० [सं० सुख + हिं० आरा (प्रत्य०)] १ जिसे यथेष्ट सुख हो। सुखी। आनंदित। प्रसन्न। उ०—(क) इहि विधान निसि रहहिं सुखारे। करहिं कूँच उठि बड़े सकारे।—गिरधरदास (शब्द०)। (ख) नित ये मंगल मोद अवध सब विधि सब लोग सुखारे।—तुलसी (शब्द०)। २ सुख देनेवाला। सुखद। उ०—जे भगवान प्रधान अजान समान दरिद्रन ते जन सारा। हेतु विचार हिये जग के भग त्यागि लखूँ निज रूप सुखारा।—(शब्द०)।

**सुखारि**—वि० [सं०] उत्तम हवि भक्षण करनेवाले (देवता आदि)।

**सुखारी**—वि० [सं० सुख + हिं० आरी] दे० 'सुखारी'। उ०—(क) राम संग सिय रहति सुखारी।—मानस, २।१४०। (ख) मुये असुर सुर भए सुखारी।—सूर (शब्द०)। (ग) चौरासी लख के अधिकारी। भक्त भए सुनि नाद सुखारी।—गिरधरदास (शब्द०)।

**सुखारो**—वि० [सुख + हिं० आरो] दे० 'सुखारा'।

**सुखारोह**—वि० [सं०] सुखपूर्वक आरोहण करने या चढ़ने योग्य।

**सुखार्थी**—वि० [सं० सुखार्थिन्] [वि० स्त्री० सुखार्थिनी] सुख चाहनेवाला। सुख की इच्छा करनेवाला। सुखकामी।

**सुखाला**—वि० [सं० सुख + हिं० आला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सुखाली] सुखदायक। आनंददायक। उ०—लगै सुखाली साँझ दिवस की तरुनाई से ताप नसै।—सरस्वती (शब्द०)।

**सुखालुका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की जीवंती। डोडी। विशेष दे० 'जीवंती'।

**सुखालोक**—वि० [सं०] मनोहर। सुंदर [को०]।

**सुखावत्**—वि० [सं० सुखवत्] दे० 'सुखवत्'।

**सुखावती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक स्वर्ग का नाम।

**सुखावतीदेव**—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्धदेव जो सुखावती नामक स्वर्ग के अधिष्ठाता माने जाते हैं। बौद्ध।

**सुखावतीश्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुद्धदेव। २ बौद्धों के एक देवता।

**सुखावल**—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार नृचक्षु राजा के एक पुत्र का नाम।

**सुखावह**—वि० [सं०] सुख देनेवाला। आराम देनेवाला। सुखद।

**सुखाश**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुखपूर्वक खाना। २ वह जो खाने में बहुत अच्छा जान पड़े। ३ तरबूज। ४ वरुण देवता का एक नाम।

सुखाश[2]—वि० जिसे सुख की आशा हो।

सुखाशक—सज्ञा पु० [सं०] तरबूज।

सुखाशा—सज्ञा स्त्री० [सं०] सुख की आशा। आराम की उम्मीद।

सुखाश्रय—वि० [स०] जिसपर सुख अवलबित हो। सुखाधार।

सुखासक्त[1]—सज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम।

सुखासक्त[2]—वि० सुख के प्रति आसक्तियुक्त। सुख मे डूबा हुआ।

सुखासन—सज्ञा पु० [स०] १ वह आसन जिसपर बैठने से सुख हो। सुखद आसन। २ पद्मासन (को०)। ३ नाव पर बैठने का उत्तम आसन। ४ एक प्रकार की पालकी या डोली। सुखपाल। उ०—कहेउ बनावन पालकी सजन सुखासन जान।—मानस, २।१८६।

सुखासिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १. स्वास्थ्य। तदुरुस्ती। २ आराम। सुख। चैन।

सुखास्वाद[1]—वि० [स०] १ मधुर स्वाद का। मीठा। २ आनददायक। रुचिकर [को०]।

सुखास्वाद[2]—सज्ञा पु० १ मधुर गध। प्रिय गध। २ आनदानुभूति। सुखानुभूति [को०]।

सुखासीन—वि० [स०] आराम से बैठा हुआ [को०]।

सुखिआ—वि० [सं० सुख + हिं० इया (प्रत्य०)] दे० 'सुखिया'। उ०—कहु नानक सोई नर सुखिआ राम नाम गुन गावै। अऊर सकल जगु माया मोहिआ निरभै पद नहि पावै।—तेगबहादुर (शब्द०)।

सुखित[1]—वि० [हिं० सूखना] सूखा हुआ। शुष्क। उ०—पथ थकित मद मुकित मुखित सरसिदुर जोवत। काकोदर करकोश उदर तर केहरि सोवत।—केशव (शब्द०)।

सुखित[2]—वि० [स०] सुखी। आनदित। प्रसन्न। खुश। उ०—(क) औरनि के औगुननि तजि कविजन राव होत है सुखित तेरो कितिवर न्हाय कै।—मतिराम (शब्द०)। (ख) दृग थिर, कौहे अधखुले देह थकौहैं ढार। सुरत सुखित सी देखियत, दुखित गरभ के भार।—बिहारी (शब्द०)।

सुखित[3]—सज्ञा पु० आनद। प्रसन्नता। सुख। हर्ष [को०]।

सुखिता—सज्ञा स्त्री० [सं०] सुखी होने का भाव। सुख। आनद।

सुखित्व—सज्ञा पुं० [स०] सुखी होने का भाव। सुख। सुखिता। आनद। प्रसन्नता।

सुखिया—वि० [हिं० सुख + इया (प्रत्य०)] जिसे सब प्रकार का सुख हो। सुखी। प्रसन्न। उ०—लखि के सुदर वस्तु अरु मधुर गीत सुनि कोइ। सुखिया जनहु के हिये उत्कठा एहि होइ।—लक्ष्मण सिंह (शब्द०)।

सुखिर—सज्ञा पुं० [देश०] साँप के रहने का बिल। बाँबी। उ०—याकी असि साँपिनि कढत म्यान सुखिर सो लहलही श्याम महा चपल निहारी है।—गुमान (शब्द०)।

सुखी[1]—वि० [सं० सुखिन्] सुख से युक्त। जिसे किसी प्रकार का कष्ट न हो, सब प्रकार का सुख हो। आनदित। खुश। जैसे,—जो लोग सुखी है, वे दीन दुखियो का हाल क्या जाने।

सुखी[2]—सज्ञा पुं० यति। सत [को०]।

सुखीन—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी जिसकी पीठ लाल, छाती और गर्दन सफेद तथा चोच चिपटी होती है।

सुखीनल—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार राजा नृचक्षु के एक पुत्र का नाम।

सुखेतर[1]—सज्ञा पु० [स०] सुख से भिन्न अर्थात् दुःख। क्लेश। कष्ट।

सुखेतर[2]—वि० सुखरहित। सुखहीन। अभागा [को०]।

सुखेन[1]—सज्ञा पुं० [सं० सुपेण] दे० 'सुपेण'। उ०—सुग्रीव विभीषण जाववत। अगद केदार सुखेन सत। सूर (शब्द०)। (ख) वरुन सुखेन सरत परजन्यहु। मारुत हनुमानहि उतपन्यहु।—पद्माकर (शब्द०)।

सुखेन[2]—क्रि० वि० [सं०] सुखपूर्वक। सहर्ष। उ०—जाहु सुखेन बनहि बलि जाऊँ। करि अनाथ जन परिजन गाऊँ।—मानस, २।५७।

सुखेलक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे न, ज भ, ज, र, आता है। इसे 'प्रभद्रिका' और 'प्रभद्रक' भी कहते है।

सुखेष्ट सुखेष्ठ—सज्ञा पुं० [स०] शिव। महादेव।

सुखैधित—वि० [स०] सुख मे पला हुआ [को०]।

सुखैना—वि० [स० सुख + अयन] सुख देनेवाला। सुखदायक। उ०—तो शभुइ भावै मुनिजन ध्यावै कागभुशुडि सुखैना। विश्राम। (शब्द०)।

सुखैषी—वि० [सं० सुखैषिन्] [वि० स्त्री० सुखैषिणी] सुख का अभिलाषी। सुख चाहनेवाला [को०]।

सुखोचित—वि० [स०] १ सुख के उपयुक्त या योग्य। २ जो सुख आराम आदि का आदी हो। सुख का अभ्यस्त।

सुखोत्सव—सज्ञा पुं० [सं०] १ पति। स्वामी। २ प्रसन्नता। आनद [को०]।

सुखोदक—सज्ञा पुं० [स०] गरम जल। सुखसलिल।

सुखोदय—सज्ञा पु० [स०] सुख का उदय या आगम। सुख की प्राप्ति। २ एक प्रकार का मादक पेय। ३ पुराणानुसार एक वप या भूखड [को०]।

सुखोदर्क—वि० [स०] सुखद परिणामवाला [को०]।

सुखोद्भवा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हरीतकी। २ छोटा आँवला [को०]।

सुखोद्य—वि० [स०] सुख से उच्चारण योग्य। जिसके उच्चारण मे कोई कठिनाई न हो (शब्द, नाम, आदि)।

सुखोपविष्ट—वि० [सं०] सुख से बैठा हुआ। चैन से बैठनेवाला [को०]।

सुखोपाय[1]—सज्ञा पु० [स०] १ सुख की प्राप्ति का उपाय। २ सुगम साधन या उपाय [को०]।

सुखोपाय[2]—वि० [स०] सुलभ। सहज। प्राप्य [को०]।

सुखोर्जिक—सज्ञा पुं० [स०] सज्जी मिट्टी। सर्जिकाक्षार।

सुखोष्ण[1]—सज्ञा पुं० [स०] थोडा गरम जल। कुनकुना जल।

सुखोष्ण[2]—वि० थोडा गरम। कुनकुना [को०]।

सुखख⑤—सज्ञा पुं० [स० सुख] दे० 'सुख'।

सुख्य—वि० [स०] १ सुखकर। सुखद। सुखदायक। २ सुख सबधी। सुख का [को०]।

सुख्यात—वि० [स०] प्रसिद्ध। मशहूर। यशस्वी।

सुख्याति—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रसिद्धि। शोहरत। कीर्ति। यश। बडाई।

सुगध'—सज्ञा पुं० [स० सुगन्ध] १ अच्छी और प्रिय महक। सुवास। सौरभ। खुशबू। विशेष दे० 'गध'।

क्रि० प्र०—आना।—उडना।—निकलना।—फैलना।

विशेष—यह शब्द सस्कृत मे पुलिंग है पर हिंदी मे इस अर्थ मे स्त्रीलिंग ही बोलते हैं।

२ वह पदार्थ जिससे अच्छी महक निकलती हो।

क्रि०प्र०—मलना।—लगाना।

३ गधतृण। गधेज घास। रसघास। अगिया घास। ४ श्रीखड। चदन। ६ गधराज। ७ नीला कमल। ८ राल। धूना। ९ काला जीरा। १० गठैला। ग्रथिपर्ण। गठिवन। ११ एलुआ। एलवालुक। १२ बृहद् गधतृण। १३ भतृण। १४ चना। १५ भूपलाश। १६ लाल सहिजन। रक्तशिग्रु। १७ शालिधान्य। वासमती चावल। १८ मरुआ। मरुवक। १९ माधवीलता। २० कमेरू। २१ सफेद ज्वार। २२ शिलारस। २३ तुवुरू। २४ केवडा। श्वेतकेतकी। २५ रूसा घास जिससे तेल निकलता है। २६ एक प्रकार का कीडा। २७ गधक (को०)। २८ व्यापारी (को०)। २९ एक पर्वत का नाम (को०)। ३० एक तीर्थ (को०)।

सुगध'—वि० सुगधित। सुवासित। महकदार। खुशबूदार। उ०—(क) शीतल मद सुगध समीर से मन की कली मानो फूल सी खिल जाती थी।—शिवप्रसाद (शब्द०)। (ख) अजलिगत शुभ सुमन, जिमि सम सुगध कर दोउ।—मानस, १।३।

सुगधक—सज्ञा पुं० [स० सुगन्धक] १ द्रोणपुष्पी। गूमा। गोमा। २ २ रक्तशालिधान्य। साठी धान्य। ३ धरणी कद। कदालु। ४ गधतुलसी। रक्त तुलसी। ५ गधक। ६ बृहद्गधतृण। ७ नारगी। ८ अलाबु। कटुतुबी (को०)। ९ कर्कोटक। ककोडा।

सुगधकेसर—सज्ञा पु० [स० सुगन्धकेसर] लाल सहिजन। रक्तशिग्रु।

सुगधकोकिला—सज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्ध कोकिला] एक प्रकार का गधद्रव्य। गधकोकिला।

विशेष—भावप्रकाश मे इसका गुण गधमालती के समान अर्थात् तीक्ष्ण, उष्ण और कफनाशक बताया गया है।

सुगधगधक—सज्ञा पु० [स० सुगन्धगन्धक] गधक।

सुगधगधा—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धगन्धा] दारु हलदी। दारुहरिद्रा।

सुगधगण—सज्ञा पु० [स० सुगन्धगण] सुगधित द्रव्यो का एक गण या वर्ग।

विशेष—सुगधगण वर्ग मे कपूर, कस्तूरी, लता कस्तूरी, गधमार्जारवीर्य, चोरक, श्रीखडचदन, पीलाचदन, शिलाजतु, लाल चदन, अगर, काला अगर, देवदारु, पतग, सरल, तगर, पद्माक, गूगल, सरल का गोद, राल, वुदुरु, शिलारस, लोबान, लौंग, जावित्री, जायफल, छोटी इलायची, बडी इलायची, दालचीनी, तेजपत्र, नागकेसर, सुगधवाला, खस, बालछड, केसर, गोरोचन, नख, सुगध, वीरन, नेत्रवाला, जटामाँसी, नागरमोथा, मुलेठी, आँवा हलदी, कचूर, कपूरकचरी आदि सुगधित पदार्थ कहे गए है।

सुगधचद्री—सज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धचन्द्री] गधेज घास। गँधारण। गधपलाशी। कपूर कचरी।

सुगधतृण—सज्ञा पुं० [स० सुगन्धतृण] गधतृण। रूसा घास।

सुगधतैलनिर्यास—सज्ञा पुं० [स० सुगन्धतैल निर्यास] एक गधद्रव्य। जवादि [को०]।

सुगधत्रय—सज्ञा पु० [स० सुगन्धत्रय] चदन, वला और नागकेसर इन तीनो का समूह।

सुगधत्रिफला—सज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धत्रिफला] जायफल, लौंग और इलायची अथवा जायफल, सुपारी तथा लौंग इन तीनो का समूह।

सुगधन—सज्ञा पु० [स० सुगन्धन] जीरा।

सुगधनाकुली—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धनाकुली] एक प्रकार की रासना।

सुगधपत्रा—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धपत्रा] १ सतावर। शतावरी। शतमूली। २ कठजामुन। क्षुद्रजबू। ३ वनभटा। कटाई। बृहती। ४ छोटी धमासा। क्षुद्र दुरालभा। ५ अपराजिता। ६ लाल अपराजिता। रक्तापराजिता। ७ जीरा। वरियारा। वला। ९ विधारा। वृद्धदारु। १० रुद्रजटा। रुद्रलता। ईश्वरी।

सुगधपत्री—सज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धपत्री] १ जावित्री। २ रुद्रजटा।

सुगधप्रियगु—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धप्रियङ्गु] फूलफेन। फूलप्रियगु। गधप्रियगु।

विशेष—वैद्यक मे इसे कसैला, कटु, शीतल और वीर्यजनक तथा वमन, दाह, रक्तविकार, ज्वर, प्रमेह, मेद, रोग आदि को नाश करनेवाला बताया है।

सुगधफल—सज्ञा पुं० [स० सुगन्धफल] ककोल। कक्कोल।

सुगधवाला—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्ध + हिं० वाला] क्षुप जाति की एक प्रकार की वनौषधि।

विशेष—यह पश्चिमोत्तर प्रदेश, सिंध, पश्चिमी प्रायद्वीप, लका आदि मे अधिकता से होती है। सुगधि के लिये लोग इसे बगीचो मे भी लगाते है। इसका पौधा सीधा, गाँठ और रोएँदार होता है तथा पत्ते ककही के पत्तो के समान २॥—३ इच के घेरे मे गोलाकार, कटे किनारेवाले तथा ३ से ५ नोकवाले होते हैं। पत्रदड लबा होता हैं और शाखाओ के अत मे लबे सीको पर गुलाबी रग के फूल होते हैं। बीजकोष कुछ लबाई लिए गोलाकार होता है। वैद्यक मे इसका गुण शीतल, रूखा, हलका, दीपक तथा केशो को सुदर करनेवाला और कफ पित्त, हृल्लास, ज्वर, अतिसार, रक्तस्राव, रक्तपित्त, रक्तविकार, खुजली और दाह को नाश करनेवाला बताया गया है।

पर्या०—दलक। वारिद। ह्रीवेर। कुतल। केश्य। वारितोय।

सुगधभूतृण—सज्ञा पुं० [स० सुगन्धभूतृण] रूसा घास। अगिया घास। दे० 'भूतृण'।

सुगधमय—वि० [स० सुगन्धमय] जो सुगध से भरा हो। सुगधित। सुवासित। खुशबूदार।

सुगंधमुख—सज्ञा पुं० [स० सुगन्धमुख] एक बोधिसत्व का नाम [को०]।

सुगंधमुख्या—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धमुख्या] कस्तूरी। कस्तूरिका मृगनाभि।

सुगधमूत्रपतन—सज्ञा पु० [स० सुगन्धमूत्रपतन] एक प्रकार का बिलाव जिसका मूत्र गधयुक्त होता है। मुश्कबिलाव। सुगध मार्जार।

सुगंधमूल—सज्ञा पु० [स० सुगन्धमूल] हरफारेवडी। लवलीफल।

विशेष—वैद्यक मे इसे रुधिरविकार, ववासीर, कफपित्तनाशक तथा हृदय को हितकारी बताया गया है।

पर्या०—पाडु। कोमलत्वत्कला। घना। स्निग्धा।

सुगधमूला—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धमूला] १ स्थलकमल। स्थलपद्म। २ रासना। रासन। ३ आँवला। ४ गधपलाशी। कपूरकचरी। ५ हरफारेवडी। लवलीवृक्ष।

सुगधमूली—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धमूली] गधपलाशी। गधशरी। कपूरकचरी।

सुगधमूषिका—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धमूषिका] छछूंदर।

सुगधरा—सज्ञा पु० [स० सुगन्ध + हिं० रा] एक प्रकार का फूल।

सुगधरौहिष—सज्ञा पुं० [स० सुगन्धरौहिष] रोहिष घास। गधेज घास। मिरचिया गध। अगियाघास।

सुगधवल्कल—सज्ञा पुं० [स० सुगन्धवल्कल] दालचीनी। गुडत्वक्।

सुगधवैरजात्य—सज्ञा पु० [स० सुगन्धवैरजात्य] गधेजघास। रोहिप घास। हरद्वारी कुशा।

सुगंधशालि†—सज्ञा पु० [स० सुगन्धशालि] एक प्रकार का बढिया शालिधान। वासमती चावल।

विशेष—वैद्यक मे यह चावल बलकारक तथा कफ, पित्त और ज्वरनाशक बताया गया है।

सुगधषट्क—सज्ञा पुं० [स० सुगन्धषट्क] छह सुगधि द्रव्य, यथा जायफल, ककोल(शीतलचीनी), लौग, इलायची, कपूर और सुपारी।

सुगधसार—सज्ञा पु० [स० सुगन्धसार] सागोन। शालवृक्ष।

सुगधा—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धा] १ रामन। रासना। २ काला जीरा। कृष्ण जीरक। ३ गधपलाशी। गंधशटी। कपूरकचरी। ४ रुद्रजटा। शकरजटा। ५ शेखपुष्पी। सौफ ६ बाँझ ककोडा। वनककोडा। वध्याकर्कोटकी। ७ नेवारी। नवमल्लिका। ८ पीली जूही। स्वर्णयूपिका। ९ नकुलकद। नाकुली। १० असवरग। स्पृक्का। ११ गगापत्री। १२ सलई। शल्लकी वृक्ष। १३ माधवीलता। अतिमुक्तक। १४ काली अनतमूल। १६ बिजौरा नीबू। मानुलुगा। १७ तुलसी। १८ गधकोकिला। १९ निर्गुंडी। नील सिंधुवार। २० एलुआ। एलवालुक। २१ वनमल्लिका। सेवती। २२ वकुची। सोमराजी। २३ २२ पीठस्थानो मे से एक पीठस्थान मे स्थित देवी का नाम। देवीभागवत के अनुसार इस देवी का स्थान माधववन मे है।

सुगधाढ्य—वि० [स० सुगन्धाढ्य] सुगधित। सुवासित। सुगधयुक्त। खुशबूदार।

सुगधाढ्या—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धाढ्या] १ त्रिपुरमाली। त्रिपुरमल्लिका। वृत्तमल्लिका। २ बासमती चावल। सुगधित शालिधान्य।

सुगधार—सज्ञा पु० [स० सुगन्धार] शिव [को०]।

सुगधि'—स० पु० [स० सुगन्धि] १ अच्छी महक। सौरभ। सुगध। सुवास। खुशबू।

विशेष—यद्यपि यह शब्द सस्कृत मे पुल्लिग है, तथापि हिंदी मे इस अर्थ मे स्त्रीलिंग ही बोला जाता है।

२ परमात्मा। ३ आम। ४ कसेरू। ५ गधतृण। अगिया घास। ६ पीपलामूल। पिप्पलीमूल। ७ धनिया। ८ मोथा। मुस्तक। ९ एलुवा। एलवालुक। १० फूट। कचरिया। गोरखककडी। भकुर। गुरुभीहुँ। चिर्मिटा। ११ बबई। बर्बरिका। बनतुलसी। १२. बरबर चदन। बर्बर चदन। १३. तुवरू। तुबुरू। १४ अनतमूल। १५ सिंह (को०)।

सुगधि'—वि० सुगधियुक्त। सुवासित। सुगधित। २ पुण्यात्मा। पवित्रहृदय। धर्मपरायण (को०)।

सुगंधिक'—सज्ञा पुं० [स० सुगन्धिक] १ गाँडर की जड। खस। वीरन। उशीर। २ कुँई। कुमुदिनी। लाल कमल। ३ पुष्करमूल। पुहकरमूल। ४ गौरसुवर्ण शाक। दे० 'गौरसुवर्ण'। ५ कालाजीरा। कृष्णजीरक। ६ मोथा। मुस्तक। ७ एलुआ। एलवालुक। ८ माचीपत्र। सुरपर्ण। ९ शिलारस। सिल्हक। १० वासमती चावल। महाशालि। ११ कैथ। कपित्थ। १२ गधक। गधपाषाण। १३ सुलतान चपक। पुन्नाग। १४ श्वेत कमल। श्वेत पद्म (को०)। १५ सिंह। केसरी (को०)।

सुगधिक'—वि० सुगधयुक्त। खुशबूदार [को०]।

सुगधिका—सज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धिका] १ कस्तूरी। मृगनाभि। २ केवडा। पीली केतकी। ३ सफेद अननमूल। श्वेत सारिवा। ४ कृष्ण निर्गुंडी। ५ सिंहिनी। केसरी।

सुगधिकुसुम—सज्ञा पु० [स० सुगन्धिकुसुम] १ पीला कनेर। पीत करवीर २ असवरग। स्पृक्का। ३ वह फूल जिसमे किसी प्रकार की सुगध हो। सुगधित फूल।

सुगधिकुसुमा—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धिकुसुमा] असवर्ग। पृक्का [को०]

सुगधिकृत—सज्ञा पु० [स० सुगन्धिकृत] शिलारस। सिल्हक।

सुगधित वि० [स० सुगन्धित] जिसमे अच्छी गध हो। सुगधयुक्त। खुशबूदार। सुवासित।

सुगधिता—सज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धिता] सुगधि। अच्छी महक। खुशबू।

सुगधितेजन—सज्ञा पुं० [स०] रूसा या गधेज नाम की घास। अगिया घास। रोहिप तृण।

सुगन्धित्रिफला[1]—संज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धित्रिफला] जायफल, सुपारी और लौंग इन तीनों का समूह।

सुगन्धिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धिनी] १ आरामशीतला नाम का शाक जिसे सुनदिनी भी कहते हैं। २ पीली केतकी।

सुगन्धिपुष्प—संज्ञा पुं० [स० सुगन्धिपुष्प] १ धाराकदंब। केलिकदंब। २ वह फूल जिसमें सुगंधि हो। खुशबूदार फूल।

सुगन्धिफल—संज्ञा पुं० [स० सुगन्धिफल] शीतलचीनी। कबाबचीनी। ककोल।

सुगन्धिमाता—संज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धिमातृ] पृथिवी।

सुगन्धिमुस्तक—संज्ञा पु० [स० सुगन्धिमुस्तक] मोथा नामक घास की एक जाति [को०]।

सुगन्धिमूत्रपतन—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धिमूत्रपतन] दे० 'सुगंधमूत्रपतन'। गंधमार्जार।

सुगन्धिमूल—संज्ञा पु० [स० सुगन्धिमूल] १ खश। उशीर। २. मूलिका। मूली (को०)।

सुगन्धिमूषिका—संज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धिमूषिका] छछूंदर।

सुगन्धी[1]—वि० [स० सुगन्धिन्] जिसमें अच्छी गंध हो। सुवासित। सुगंधयुक्त। खुशबूदार।

सुगन्धी[2]—संज्ञा पुं० एलुआ। एलवालुक।

सुगन्धी[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धि] अच्छी महक। खुशबू। सुगंधि।

सुग[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ सुख। २ गंधर्व। ३ सन्मार्ग। उत्तम मार्ग। ४ पुरीष। विष्ठा। मल [को०]।

सुग[2]—वि० १ सुंदर। ललित। चारु। २ अच्छी चाल या सुंदर गतिवाला। ३ सुबोध। सरल। ४ सुलभ। सुगम [को०]।

सुगठन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सु+गठन] १ सुंदर गढन। उत्तम बनावट। सुघडता। २ शरीर की सुंदर बनावट। अंगसौष्ठव।

सुगठित—वि० [हिं०] १ सुंदर गढन या बनावटवाला। २ गठा या कसा हुआ। ३ जिसके अंग सौष्ठवयुक्त हों।

सुगणक—वि० [स०] अच्छा गणक या ज्योतिषी [को०]।

सुगणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्कंद की एक मातृका [को०]।

सुगत[1]—संज्ञा पु० [स०] १ बुद्धदेव का एक नाम। २ बुद्ध भगवान् के धर्म को माननेवाला। बौद्ध।

सुगत[2]—वि० १ सद्गतिप्राप्त। २ सुंदर गति या चाल से युक्त। ३ सरल। आसान [को०]।

सुगतदेव—संज्ञा पु० [स०] बुद्ध भगवान्।

सुगतशासन—संज्ञा पुं० [स०] बुद्धमत। बौद्धसिद्धांत [को०]।

सुगतायन, सुगतालय—संज्ञा पु० [सं०] विहार। बौद्धमंदिर।

सुगति[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मरने के उपरांत होनेवाली उत्तम गति। मोक्ष। उ०—सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्ह रघुनाथ। नाम उधारे अमित खल वेद बिदित गुन गाथ।—तुलसी (शब्द०)। २ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात मात्राएँ और अंत में एक गुरु होता है। इसे शुभगति भी कहते हैं। ३ कल्याण। सुख (को०)। ४ सुरक्षित आश्रय या शरण (को०)।

सुगति[2]—वि० १ सुंदर गतिवाला [को०]। २ जिसकी स्थिति सुंदर हो।

सुगति[3]—संज्ञा पु० एक अर्हत् का नाम।

सुगन—संज्ञा पु० [देश०] छकडे में गाडीवान के बैठने की जगह के सामने आडी लगी हुई दो लकडियाँ, जिनकी सहायता से बैल खोल लेने पर भी गाडी खडी रहती है।

सुगना[1]—संज्ञा पु० [स० शुक, हिं० सुग्गा] तोता। सूआ।

सुगना[2]—संज्ञा पु० दे० 'सहिंजन'।

सुगभस्ति—वि० [स०] १ दीप्तिमान्। प्रकाशमान। चमकीला। २ सुंदर गभस्तिवाला। कुशल हाथोवाला।

सुगम[1]—वि० [स०] १ जो सहज में जाने योग्य हो। जिसमें गमन करने में कठिनता न हो। २ जो सहज में जाना, किया या पाया जा सके। आसानी से होने या मिलनेवाला। सरल। सहज। आसान।

सुगम[2]—संज्ञा पुं० एक दानव का नाम [को०]।

सुगमता—संज्ञा स्त्री० [स०] सुगम होने का भाव। सरलता। आसानी। जैसे,—यदि आप उनकी समति मानेंगे, तो आपके कार्य में बहुत सुगमता हो जायगी।

सुगम्य—वि० [स०] १ जिसमें सहज में प्रवेश हो सके। सरलता से जाने योग्य। जैसे,—जंगली और पहाडी प्रदेश, उतने सुगम्य नहीं होते, जितने खुले मैदान होते हैं। २ दे० 'सुगम'।

सुगर[1]—संज्ञा पुं० [स०] शिंगरफ। हिंगुल।

सगर(पु)[2]—वि० १ चतुर। कुशल। २ सुंदर कंठ या गलेवाला। ३ सुडौल। सुघर।

सुगरूप—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की सवारी जो प्रायः रेतीले देशों में काम आती है।

सुगर्भक—संज्ञा पु० [सं०] खीरा। त्रपुष।

सुगल(पु)—संज्ञा पु० [स० सु+हिं० गल (=गला)] वालि का भाई सुग्रीव। उ०—पुनि पावस महँ बसे प्रवर्षण वर्षावर्णन कीन्ह्यो। सरद सराहि सकोप सुगल पहँ लषन पठै जिमि दीन्ह्यो।—रघुराज (शब्द०)।

सुगवि—संज्ञा पु० [स०] विष्णुपुराण के अनुसार प्रसुश्रुत के एक पुत्र का नाम।

सुगहन—वि० [स०] अत्यंत गहन। घोर। निबिड या घना [को०]।

सुगहना—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुगहनावृत्ति'।

सुगहनावृत्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] वह घेरा या बाड जो यज्ञस्थल में अस्पृश्यों आदि को रोकने के लिये लगाई जाती है। कुवा।

सुगात्री—संज्ञा स्त्री० [स०] सुंदर देहयष्टिवाली स्त्री [को०]।

सुगाध—वि० [स०] १ (नदी) जिसमें सुख से स्नान किया जा सके, अथवा जिसे सहज से पार किया जा सके। २ जो कम

गहरा हो। जिसकी थाह मेहँज में लग जाय। अगाध का उलटा (को०)।

सुगानाअ(पु)[१]—क्रि० अ० [स० शोक] १ दुखित होना। २. बिगडना। नाराज होना। उ०—आजुहि ते कहुँ जान न दैहौं मा तेरी कछु अकथ कहानी। सूर श्याम के सँग ना जैहौं जा कारण तू मोहिं सुगानी।—सूर (शब्द०)।

सुगाना[२]—क्रि० अ० [अ० शक] सदेह करना। शक करना। उ०—जो पावँरु अपनो जडताई। तुम्हहिं सुगाइ मातु कुटिलाई।—तुलसी (शब्द०)।

सुगीत[१]—सज्ञा पु० [स०] १ एक छद। दे० 'सुगीतिका'। २ सुदर गीत या गाना।

सुगीत[२]—वि० जो अच्छी तरह गाया गया हो।

सुगीति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुदर गायन। अच्छा गाना। २ आर्या छद का एक भेद (को०)।

सुगीतिका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १५+१० के विराम से २५ मात्राएँ और आदि मे लघु और अत मे गुरु लघु होते है।

सुगीथ—सज्ञा पु० [स०] एक ऋषि का नाम (को०)।

सुगुडा—सज्ञा स्त्री० [स० सुगुण्डा] गुडासिनी तृण। गुडाला। तृणपत्री।

सुगुप्त—वि० [स०] अच्छी तरह गुप्त या छिपाया हुआ। सुरक्षित (को०)।

सुगुप्तभाड—वि० [स० सुगुप्तभाण्ड] [वि० स्त्री० सुगुप्तभाडा] घर गृहस्थी के बरतनो को भली भाति देखभाल करनेवाला (को०)।

सुगुप्तभाडता—सज्ञा स्त्री० [स० सुगुप्तभाण्डता] घर गृहस्थी के बरतनो को अच्छी देखभाल (को०)।

सुगुप्तलेख—सज्ञा पु० [स०] १ गोपनीय पत्र। २ सांकेतिक भाषा या चिह्न मे लिखा गया पत्र जिस हर कोइ न पढ सके (को०)।

सुगुप्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] कियाँच। कोछ। कपिकच्छु। विशेष दे० 'काच'।

सुगुरा—सज्ञा पु० [स० सुगुरु] वह जिसने अच्छे गुरु से मत्र लिया हो।

सुगृद्ध—वि० [स०] लालसायुक्त। सतृष्ण (को०)।

सुगृह—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का बत्तख या हस। २ सुदर मकान। बढिया घर (को०)।

सुगृही[१]—वि० [स० सुगृहिन्] सुदर घरवाला। जिसका घर बढिया हो। २ सुदर स्त्रीवाला। जिसकी पत्नी सुदर हो।

सुगृही[२]—सज्ञा पुं० [स०] सुश्रुत के अनुसार प्रतुद जाति का एक पक्षी। सुगृह।

सुगृहीत—वि० [स०] १ अच्छी तरह गृहीत। भली भाति समझा हुआ। २ समुचित ढग से व्यवहृत। शुभ रीति से प्रयुक्त (को०)।

सुगृहीतनामा—वि० [स० सुगृहीतनामन्] कल्याण की भावना से जिसका नाम लिया जाय। प्रातःस्मरणीय। २ अत्यत आदरणीय (को०)।

सुगृहीतग्रास—सज्ञा पुं० [स०] स्वादिष्ट भोजन का कौर।

सुगेष्णा—सज्ञा स्त्री० [स०] किन्नरी (को०)।

सुगैया†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुग्गा+एया (प्रत्य०)] अँगिया। चोर उ०—मोहिं लखि सोवत बिथोरिगो सुबेनी-बनी, तोरिगो हिं हरा, छोरिगो सुगैया को।—रसकुसुमाकर (शब्द०)।

सुगौतमें—सज्ञा पु० [स०] शाक्य मुनि। गौतम।

सुग्गा†—सज्ञा पु० [स० शुक] [स्त्री० सुग्गी] तोता। सुआ। शुक।

सुग्गा पखो—सज्ञा पु० [हिं० सुग्गा+पख] एक प्रकार का धान अगहन के महीने म होता हे और जिसका चावल बरसा रह सकता ह।

सुग्गासाँप—सज्ञा पु० [हिं० सुग्गा+साँप] एक प्रकार का साँप।

सुग्रथि[१]—सज्ञा पु० [स० सुग्रन्थि] १ चोरक नाम गधद्रव्य। २ पीप मूल। पिप्पलीमूल।

सुग्रथि—वि० सुदर गाँठ या पोरवाला (को०)।

सुग्रह[१]—सज्ञा पु० [स०] फलित ज्योतिष के अनुसार शुभ या अ ग्रह। जैसे,—बृहस्पति, शुक्र आदि।

सुग्रह[२]—वि० [स०] १ जो सुखपूर्वक लभ्य हो। सुलभ। २ जिस मूँठ या हत्था उत्तम हो। ३ जो सीखने या समझने मे स हो। सुगम। सुबोध (को०)।

सुग्रीव[१]—सज्ञा पु० [स०] १ बालि का भाई, वानरो का राजा श श्रीरामचद्र का सखा।

विशेष—जिस समय श्रीरामचद्र सीता को ढूँढते हुए किष्किधा प थे, उस समय मतग आश्रम मे सुग्रीव स उनकी भेट हुई हनुमान जी ने श्रीरामचद्र जी से सुग्रीव की मित्रता करा दी। व ने सुग्रीव को राज्य से भगा दिया था। उसके कहने से श्रीराम ने बालि का वध किया, सुग्रीव को किष्किधा का राज्य दिल और बालि के पुत्र अगद का युवराज बनाया। रावण की जी मे सुग्रीव ने श्रीरामचद्र की बहुत सहायता की थी। सुग्रीव के पुत्र माने जाते है। विशेष दे० 'बालि'।

२ विष्णु या कृष्ण के चार घोडो मे से एक। ३ शुभ और निश का दूत जो भगवती चडी के पास उन दोनो का विवाह सब सदसा लेकर गया था। ४ वर्तमान अवसर्पिणी के नव अर्हत पिता का नाम। ५. इद्र। ६ शिव। ७ पाताल का एक नाग ८ एक प्रकार का अस्त्र। ९ शख। १० राजहस। ११ प पर्वत का नाम। १२ एक प्रकार का मडप। १३ नायक १४ जलखड। जलाशय (को०)।

सुग्रीव[२]—वि० जिसकी ग्रीवा सुदर हो। सुदर गरदनवाला।

सुग्रीवा[१]—सज्ञा स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम।

सुग्रीवी[१]—सज्ञा स्त्री० [स०] दक्ष की एक पुत्री और कश्यप की पत्नी जो घोडा, ऊँटा तथा गधो को जननी कही जाती है।

सुग्रीवेश—सज्ञा पु० [स०] श्रीरामचद्र।

सुग्लै—वि० [स०] अत्यत थका हुआ। श्रात (को०)।

**सुघट**—वि० [सं०] १ अच्छा बना हुआ। सुंदर। सुडौल। उ०—भृकुटि अमर चचल कपोल मृदु बोल अमृतसम सुघट। ग्रीव रस सीव कठ मुकता विघटत तम।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। २ जो सहज मे हो या बन सकता हो।

**सुघटित**—वि० [स० सुघट+इत] जिसका निर्माण सुदर हो। अच्छी तरह से बना हुआ। उ०—धवल धाम मनि पुरट पट सुघटित नाना भाँति। सियनिवास सुदर सदन सोभा किमि कहि जाति। —तुलसी (शब्द०)।

**सुघट्टित**—वि० [स०] दुरुस्त किया हुआ। समतल या हमवार किया हुआ।

**सुघड**—वि० [सं० सुघट] १ सुदर। सुडौल। उ० नील परेव कठ के रगा। वृप से कध सुघड सब अगा।—उत्तररामचरित (शब्द०)। २ निपुण। कुशल। दक्ष। प्रवीण। जैसे,—सुघडबाहु।

**सुघड़ई**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड+ई (प्रत्य०)] १ सुदरता। सुडौलपन। अच्छी बनावट। उ०—विपय के भोगो मे तृप्त हुए विना ही उस (राजा) को, अधिक सुघडई के कारण विलासिनियो के भोगने योग्य को, वृथा ईर्ष्या करनेवाली जरा ने स्त्रीव्यवहार मे असमर्थ होकर भी हरा दिया।—लक्ष्मण सिंह (शब्द०)। २ चतुरता। निपुणता। कुशलता। उ०—इसमे बडी बुद्धि और सुघडई का काम है।—ठाकुरप्रसाद (शब्द०)।

**सुघड़ता**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड+ता (प्रत्य०)] १ सुघड होने का भाव। सुदरता। मनोहरता। २ निपुणता। कुशलता। दक्षता। सुघडपन।

**सुघडपन**—सज्ञा पुं० [हिं० सुघड+पन (प्रत्य०)] १ सुघड होने का भाव। सुघडाई। सुदरता। २ निपुणता। दक्षता। कुशलता।

**सुघडाई**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड] दे० 'सुघडई'।

**सुघड़ापा**—सज्ञा पुं० [हिं० सुघड+आपा (प्रत्य०)। सुघडाई। सुदरता। सुडौलपन। २ दक्षता। निपुणता। कुशलता।

**सुघड़ी**—सज्ञा स्त्री० [स० सुघटी] अच्छी घडी। शुभ समय।

**सुघर**—वि० [स० सुघट] दे० 'सुघड'। उ०—(क) सयुत सुमन सुबेलि सी सेली सी गुणग्राम। लसत हवेली सी सुघर निरखि नवेली वाम।—पद्माकर (शब्द०)। (ख) सुघर सौति वस पिय सुनत दुलहिनि दुगुन हुलास। लखी सखी तन दीठि करि सगरव सलज सहास।—अविकादत्त (शब्द०)।

**सुघरई**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड+ई (प्रत्य०)] दे० 'सुघडई'।

**सुघरता**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड+ता प्रत्य०)] दे० 'सुघड़ता'।

**सुघरपन**—सज्ञा पुं० [हिं० सुघड+पन (प्रत्य०)] दे० 'सुघडपन'। उ०—(क) छन मे जैहै सुघरपनो पीरो परिहै तन। परकर परि कै सुकवि फर फिरि आवत नहिं मन।—अविकादत्त (शब्द०)।

**सुघराई**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड+आई (प्रत्य०)] १ दे० 'सुघडई'। उ०—(क) काम नाश करने के कारण जिन्हैं न मोहै सुघराई। ऐसे शिव को किया चाहती हे अपना पति सुखदाई।—महावीरप्रसाद (शब्द०)। (ख) सुघराई सुकाम विरचि की है, तिय तेरे नितवनि की छवि मे।—सुदरीसर्वस्व (शब्द०)। २ सपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसके गाने का समय दिन मे १० से १६ दड तक है।

**सुघराई कान्हड़ा**—सज्ञा पुं० [हिं० सुघराई+कान्हडा] सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

**सुघराई टोडी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुघराई+टोडी] सपूर्ण जाति की एक रागिनी।

**सुघरी**¹—सज्ञा स्त्री० [हिं० सु+घडी] अच्छी घडी। शुभ समय। उ०—आनंद की सुघरी उघरी सिगरे मनवाछित काज भए है। —व्यगार्थ० (शब्द०)।

**सुघरी**²—वि० स्त्री० [हिं० सुघड] सुदर। सुडौल। उ०—(क) माग सोहाग भरी सुघरी पति प्रेम प्रनाली कथा अपढ़ैना।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)। (ख) सुंदरि हौ सुघरी हौ सलौनी हौ सीलभरी रस रूप सनाई।—देव (शब्द०)।

**सुघोष**¹—सज्ञा पुं० [सं०] १ चौथे पाडव नकुल के शख का नाम। २ एक बुद्ध का नाम। ३ एक प्रकार का यत्र। ४ सुंदर घोप। मधुर ध्वनि।

**सुघोष**²—वि० १ जिसका स्वर सुदर हो। अच्छे गले या आवाजवाला। २ तीव्र निनाद करनेवाला। ऊँची आवाजवाला।

**सुघोषक**—सज्ञा पु० [स०] एक बाजे का नाम [को०]।

**सुचंग**—सज्ञा पुं० [हिं०] घोडा।

**सुचचुका**—सज्ञा स्त्री० [स० सुचञ्चुका] बडा चचुक शाक। महाचचु। दीर्घपत्री।

**सुचदन**—सज्ञा पुं० [स० सुचन्दन] पतग या बक्कम नाम की लकडी जिसका व्यवहार औपध और रग आदि मे होता है। रक्तसार। सुरग।

**सुचद्र**—सज्ञा पुं० [सं० सुचन्द्र] १ एक देवगधर्व का नाम। २ एक बोधिसत्व (को०)। ३ सिंहिका के पुत्र का नाम। ४ इक्ष्वाकुवशी राजा हेमचद्र का पुत्र और धूम्राश्व का पिता।

**सुचद्रा**—सज्ञा स्त्री० [स० सुचन्द्रा] बौद्धो के अनुसार एक प्रकार की समाधि।

**सुचि(यु)**—वि० [स० शुचि] दे० 'शुचि'।

**सुचक्षु**¹—सज्ञा पु० [स० सुचक्षुस्] १ गूलर। उदुंबर। २ शिव का एक नाम। ३. विद्वान् व्यक्ति। पडित।

**सुचक्षु**²—वि० जिसके नेत्र सुदर हो। सुंदर आँखोवाला।

**सुचक्षु**³—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम।

**सुचना**—क्रि० स० [सं० सञ्चय] सचय करना। एकत्र करना। इकट्ठा करना। उ०—तरुवर फल नहिं खात है सरवर पियहिं न पानि। कहि रहीम परकाज हित सपति सुचहि सुजान।—रहीम (शब्द०)।

**सुचरित**¹—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसका चरित्र शुद्ध हो। उत्तम आचरणवाला। नेकचलन। २ सच्चरित्रता। ३ गुण (को०)।

सुचरित[2]—वि० १ शुद्ध चरित्रवाला। २ अच्छी तरह किया हुआ।

सुचरिता—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुचरित्रा'।

सुचरित्र—वि०, सज्ञा पु० [स०] दे० 'सुचरित'।

सुचरित्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पतिपरायणा स्त्री। साध्वी। सती। २ रानी। धनियाँ (को०)।

सुचर्मा[1]—सज्ञा पु० [स० सुचर्मन्] भोजपत्र।

सुचर्मा[2]—वि० सुदर चर्म, ढाल या छाल से युक्त (को०)।

सुचा[1]—वि० [स० शुचि] दे० 'शुचि'। उ०—सील सुचा ध्यान धोवती काया कलस प्रेम जल।—दादू (शब्द०)।

सुचा[2]—सज्ञा स्त्री० [स० सूचना] ज्ञान। चेतना। सुध। उ०—रही जो मुइ नागिनि जस तुचा। जिउ पाएँ तन कै भइ सुचा।—जायसी (शब्द०)।

सुचाना—क्रि० स० [हिं० सोचना का प्रेर० रूप] १ किसी को सोचने या समझने मे प्रवृत्त करना। सोचने का काम दूसरे से कराना। २ दिखलाना। ३ किसी का ध्यान किसी बात की ओर आकृष्ट कराना।

सुचार(यु)[1]—सज्ञा स्त्री० [स० सु+हिं० चाल] सुचाल। अच्छी चाल। उ०—थाई भाव थिरु है विभाव अनुभावनि सो सातुकनि सतत ह्वै सचरि सुचार है।—सूर (शब्द०)।

सुचार[2]—वि० [स० सुचारु] सुचारु। सुदर। मनोहर। उ०—अजहूँ लौ राजत नीरधि तट करत साख्य त्रिस्तार। साख्यायन से बहुत महामुनि सेवत चरण सुचार।—सूर (शब्द०)।

सुचारा—सज्ञा स्त्री० [स०] यदुवशी श्वफल्क की पुत्री जो अक्रूर की सास थी।

सुचारु[1]—सज्ञा पु० [स०] १ रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र। २ विश्वक्सेन का पुत्र। ३ प्रतीर्थ। ४ बाहु का पुत्र।

सुचारु[2]—वि० अत्यत सुदर या सुरूपवान्। अतिशय मनोहर। बहुत खूबसूरत। जैसे,—वहाँ के सब कार्य बहुत ही सुचारु रूप से सपन्न हो गए।

यौ०—सुचारुदशना=सुदर दाँतोवाली नारी। सुचारुरूप=स्वरूपवान। खूबसूरत। सुचारुस्वन=सुरीले कठवाला। सुरीला।

सुचारुता—सज्ञा स्त्री० [स०] सुचारु होने का भाव। सुचारुत्व अत्यत सुदरता (को०)।

सुचारुत्व—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सुचारुता'।

सुचाल—सज्ञा स्त्री० [सं० सु+हिं० चाल] उत्तम आचरण। अच्छी चाल। सदाचार। उ०—कह गिरिधर कविराय बडन की याही बानी। चलिए चाल सुचाल राखिए अपनो पानी।—गिरिधर (शब्द०)।

सुचालो[1]—वि० [स० सु+हिं० चाल+ई (प्रत्य०)] जिसके आचरण उत्तम हो। अच्छे चाल चलनवाला। सदाचारी। उ०—मातु मदि मै साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली।—मानस, २।६०।

सुचाली[2]—सज्ञा स्त्री० [हिं०] पृथ्वी।

सुचाव†—सज्ञा पु० [हिं० सुचा] सुचाने की क्रिया या भाव। सोचाना। सुझाव।

सुचिंतन—सज्ञा पु० [स० सुचिन्तन] गभीर चिंतन या सोच-विचार (को०)।

सुचिंतित—वि० [स० सुचिन्तित] खूब सोचा विचारा हुआ। भली भाँति सोचा हुआ। उ०—सास्त्र सुचिंतित पुनि पुनि देखिअ।—मानस, ३।३१।

सुचिंतितार्थ—सज्ञा पु० [स० सुचिन्तितार्थ] बौद्धो के अनुसार मार के पुत्र का नाम।

सुचि[1]—वि० [स० शुचि] दे० 'शुचि'। उ०—(क) सहज सचिक्कन स्याम रुचि सुचि सुगध सुकुमार। गनत न मन पथ अपथ लखि बिथुरे सुथरे बार।—बिहारी (शब्द०)। (ख) तुलसी कहत बिचारि गुरु राम सरिस नहिं आन। जासु क्रिया सुचि होत रुचि बिसद बिवेक अमान।—तुलसी (शब्द०)।

सुचि[2]—सज्ञा स्त्री० [स० सूची] सूई। उ०—सुचि वेध ते नाको सकीर्न तहाँ परतीत को टाँडो लदावनो है।—हरिश्चद्र (शब्द०)।

सुचिकरमा(यु)—वि० [स० शुचिकर्मन्] दे० 'शुचिकर्मा'। उ०—चलेउ सुभेस नरेस छत्रधरमा सुचिकरमा। बिसुकरमा कृत सुरथ बैठि रव कचन बरमा।—गोपाल (शब्द०)।

सुचित[1]—वि० [स० सुचित्त] १ जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो। उ०—(क) ऐसी आज्ञा कर यमराज जब सुचित भए, तब नारद मुनि ने फिर उनसे पूछा कि किस कारण से तुम इहाँ से भाग गए सो मुझसे कहो।—सदल मिश्र (शब्द०)। (ख) अतिथि साधु यति सबनि खवाई। मैं हूँ सुचित भई पुनि खाई।—रघुराज (शब्द०)। २ निश्चित। चिंतारहित। बेफिक्र। ३ धान्य धन से युक्त। सपन्न। सुखी। ४ एकाग्र। स्थिर। सावधान। उ०—(क) सुचित सुनहु हरि सुजस कह बहुरि भई जो बात।—गिरिधरदास (शब्द०)। (ख) इहि विधान एकादशी करै सुचित चित होई।—गिरिधरदास (शब्द०)।

सुचित[2]—वि० [स० शुचि] पवित्र। शुद्ध (क्व०)।

सुचितई†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुचित+ई (प्रत्य०)] १ सुचित होने का भाव। निश्चितता। बेफिक्री। उ०—(क) इमि देव दुदुभी हरषि बरसत फूल सुफल मनोरथ भो सुख सुचितई है।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सुकवि सुचितई पैहै सब ह्वै हैं कबै मरन।—अबिकादत्त (शब्द०)। २ एकाग्रता। स्थिरता। शाति। ३ छुट्टी। फुर्सत। उ०—ब्रजवासिनु कौ उचित धनु, जो धनु रुचित न कोई। सुचित न आयौ, सुचितई कहौ कहाँ तै होइ।—बिहारी र०, दो० ५६१।

सुचिता(यु)—सज्ञा स्त्री० [स० शुचिता] शुद्धता। पवित्रता। शुचिता। उ०—मकरदु जिनको सभु सिर सुचिता अवधि सुर बरनई।—मानस १।३२४।

सुचिती† वि० [हिं० सुचित + ई (प्रत्य०)] १ जिसका चित्त किसी बात पर स्थिर हो। जो दुविधा मे न हो। स्थिरचित्त। शात। उ०—(क) सुचिती ह्वै औरै सबै समिहि विलोकै आय। (ख) ससिहि विलोकै आय सबै करि करि मन सुचिती।—अबिकादत्त (शब्द०)। २ निश्चित। चितारहित। बेफिक्र। उ०—धाय सो जाय कै धाय कह्यौ कहूँ धाय कै पूछिए करते ठई है। बैठि रही सुचिती सी कहा मुनि मेरी सबै सुधि भूलि गई है।—सुदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सुचित्त—वि० [स०] १ जिसका चित्त स्थिर हो। स्थिरचित्त। शात। २ जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो। जो छुट्टी पा गया हो। निश्चित। उ०—(क) ब्राह्मणो को नाना प्रकार के दान दे नित्य कर्म से सुचित हो।—लल्लू० (शब्द०)। (ख) कन्या तो पराया धन है ही, उसको पति के घर भेज दिया, सुचित हो गए।—सगीत शाकुतल (शब्द०)।

क्रि० प्र०—होना।

सुचित्तता—सज्ञा स्त्री० [स०] निश्चितता। २ इत्मीनान।

सुचित्ती†—सज्ञा स्त्री० [स० सुचित्त] दे० 'सुचित्तता'।

सुचित्र[1]—सज्ञा पु० [स०] एक सर्प।

सुचित्र[2]—वि० [स०] १ रग बिरगा। विभिन्न रगो का। २ विभिन्न प्रकार का।

सुचित्रकर्म[1]—सज्ञा पु० [स०] मुर्गाबी। मत्स्यरग पक्षी। २ चित्रसर्प। चितला साँप। ३ अजगर।

सुचित्रक[2]—वि० रगबिरगा। विभिन्न प्रकार का [को०]।

सुचित्रबोजा—सज्ञा स्त्री० [स०] बायबिडग। बिडग।

सुचित्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] चिभिटा या फूट नामक फल।

सुचिमत—वि० [स० शुचि + मत्] शुद्ध आचरणवाला। सदाचारी। शुद्धाचारी। पवित्र। उ०—सो सुकृती सुचिमत सुसत सुशील सयान सिरोमनि ख्वै। सुरतीरथता सुमनावन आवत पावन होत हे तात न ख्वै।—तुलसी (शब्द०)।

सुचिर[1]—सज्ञा पु० [स०] बहुत अधिक समय। दीर्घकाल।

सुचिर[2]—वि० १ बहुत दिनो तक रहनेवाला। २ पुराना। प्राचीन।

सुचिरायु—सज्ञा पु० [स० सुचिरायुस्] देवता।

सुची—सज्ञा स्त्री० [स० शची] दे० 'शची'। उ०—सोइ सुरपति जाके नारि सुची सी। निस दिन ही रँगराती, काम हेतु गौतम गहि गयऊ निगम देतु हे साखी।—कबीर (शब्द०)।

सुचीरा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुचारा'।

सुचीण्डध्वज—सज्ञा पु० [स०] कुभाडो के एक राजा का नाम (बौद्ध)।

सुचुक्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] इमली।

सुचुटी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चिमटा। २ कैंची। ३ सँडसी।

सुचेत—वि० [स० सुचेतस्] चौकन्ना। सतर्क। होशियार। उ०—(क) कोई नशे मे मस्त हो कोई सुचेत हो। दिलबर गले से लिपटा हो सरसो का खेत हो।—नजीर (शब्द०)। (ख) भाई तुम सुचेत रहो, केटो की दृष्टि बडी पैनी है।—तोताराम (शब्द०)। २ प्रज्ञावान्। बुद्धिमान (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।—रहना।

सुचेतन[1]—सज्ञा पुं० [सं०] विष्णु। (डिं०)।

सुचेतन[2]—वि० दे० 'सुचत'।

सुचेता[1]—वि० [स० सुचेतस्] दे० 'सुचेत'। उ०—सदरता सौभाग्य निकेता। पकज लोचन अहहिं सुचेता।—श० दि० (शब्द०)।

सुचेता[2]—सज्ञा पु० प्रचेता के एक पुत्र का नाम।

सुचेतीकृत—वि० [सं०] भली भाँति सावधान किया हुआ।

सुचेल—वि० [स०] उत्तम वस्त्रयुक्त। दे० 'सुचेलक' [को०]।

सचेलक[1]—सज्ञा पुं० [स०] सुदर और महीन कपडा। पट।

सुचेलक[2]—वि० जिसका वस्त्र उत्तम हो।

सुचेष्टरूप—सज्ञा पुं० [सं०] बुद्धदेव।

सुच्छद(पु)†—वि० [स० स्वच्छन्द] दे० 'स्वच्छद'। उ०—बैठि इकत होय सुच्छदा। लहिए मर्छू परमानदा।—निश्चल (शब्द०)।

सुच्छ(पु)†—वि० [स० स्वच्छ, प्रा० सुअच्छ] उ०—(क) मुच्छ पर हत्थ तन सुच्छ अवर धरे तुच्छ नहिं वीर रस रग रत्ते।—सूदन (शब्द०)। (ख) कही मैं तो नून तुच्छ बोले हमहू ते सुच्छ जाने कोऊ नाहि तुम्हैं मेरी मति भीजिए।—नाभादास (शब्द०)।

सुच्छत्र—सज्ञा पुं० [स०] शिव [को०]।

सुच्छत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] सतलज नदी।

सुच्छत्री—सज्ञा स्त्री० [स०] शतद्रु या सतलज नदी का एक नाम।

सुच्छद—वि० [सं०] सुदर पत्तो या आवरण से युक्त [को०]।

सुच्छम[1]—वि० [स० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'।

सुच्छम[2]—सज्ञा पुं० [?] घोडा। (डिं०)।

सुच्छाय—वि० [स०] १ जिसकी छाया अच्छी हो। २ (रत्न आदि) जिसकी प्रभा सुदर हो [को०]।

सुछद(पु)—वि० [स० स्वच्छन्द, प्रा० सुछद] दे० 'स्वच्छद'। उ०—निपट लागत अनम ज्यो जल चरहिं गमन सुछद। न जरै जे नजरै रहै प्रीतम तुव मुखचद।—रतनहजारा (शब्द०)।

सुजगो†—सज्ञा पुं० [गढवाली] भाँग के वे पौधे जिनमे बीज होते हैं।

विशेष—गढवाल मे भाँग के बीजदार पौधो को सुजगो या कलगो कहते हैं।

सुजघ—वि० [सं० सुजङ्घ] सुदर उरु या जाँघोवाला [को०]।

सुजघन—वि० [सं०] १ जिसकी श्रोणी, नितब या कटि सुदर हो। २ जिसका अत या परिणाम भला हो [को०]।

सुजड—सज्ञा पुं० [डिं०] तलवार।

सुजडी—सज्ञा स्त्री० [डिं०] कटारी।

सुजन[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ सज्जन। सत्पुरुष। भलामानस। भला आदमी। शरीफ। २ इद्र के सारथी का नाम (को०)।

सुजन¹—वि० १ भला। अच्छा। २ दयालु। परोपकारी (को०)।

सुजन²—संज्ञा पुं० [सं० स्वजन, प्रा० सुजन] परिवार के लोग। आत्मीय जन। उ०—(क) माँगत भीख फिरत घर घर ही सुजन कुटुंब वियोगी।—सूर (शब्द०)। (ख) हरषित सुजन सखा त्रिय बालक कृष्ण मिलन जिय भाए।—सूर (शब्द०)। (ग) रामराज नहिं कोऊ रोगी। नहिं दुर्भिक्ष न सुजन वियोगी। पद्माकर (शब्द०)।

सुजनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुजन का भाव। सौजन्य। भद्रता। भलमनसाहत। नेकी (को०)। २ भले लोगों का समूह। ३ धैर्य। पराक्रम। साहस (को०)।

सुजनी—संज्ञा स्त्री० [फा० सोजनी] एक प्रकार की बड़ी चादर जो कई परत की होती और बिछाने के काम आती है। ऊपर साफ कपड़े देकर इसकी महीन सिलाई की जाती है। यह बीच बीच में बहुत जगहों में सी (सिली) हुई रहती है। २ पलंग पर बिछाने की चादर (को०)।

सुजन्मा—वि० [सं० सुजन्मन्] १ जिसका उत्तम रूप से जन्म हुआ हो। उत्तम रूप से जन्मा हुआ। सुजातक। २ विवाहित स्त्री पुरुष का औरस पुत्र। ३ अच्छे कुल में उत्पन्न। उ०—सूतक घर के आस पास फैले हुए उस सुजन्मा के स्वाभाविक तेज से आधी रात के दीपक सहज ही मद्यज्योति हो गए।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

सुजय—संज्ञा पुं० [सं०] १ भारी जीत। महान् विजय। २ वह देश, स्थान आदि जो सरलता से जीतने योग्य हो (को०)।

सुजल¹—वि० सुंदर जल से युक्त।

सुजल²—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल। पद्म। २ सुंदर और अच्छा जल। उ०—कीन्ह सुजल हित कूप बिसेखा।—मानस, २।

सुजला—वि० स्त्री० [सं०] सुंदर जल से युक्त। जलप्राय। अनूप। सुजलाम् सुफलाम् सस्य श्यामलाम् मातरम्। वंदे मातरम्। —राष्ट्रगीत।

सुजल्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ उज्ज्वलनीलमणि के अनुसार वह भाषण या कथन जो सहृदयता उत्साह, उत्कंठा, ऋजुता, गांभीर्य, नम्रता, चापल्य तथा भावपूर्ण हो। २ उत्तम कथन। श्रेष्ठ भाषण।

सुजस—संज्ञा पुं० [सं० सुयश] दे० 'सुयश'। उ०—सुजस बखानत याट चलहि बहु भाट गुनी गन। अमर राट सम सुरथ राजभट ठाट प्रबल तन —गिरधर (शब्द०)।

सुजाक—संज्ञा पुं० [फा० सूजाक] दे० 'सूजाक'।

सुजागर—वि० [सं० सु (=भली भाँति)+जागर (=जागर=प्रकाशित होना)] जो देखने में बहुत सुंदर जान पड़े। प्रकाशमान। सुशोभित। उ०—मुरली मृदंगन अगाउनी भरत स्वर गाउती सुजागरैं भरी है गुन आगरे।—देव (शब्द०)।

सुजात¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुजाता] १ उत्तम रूप से जन्मा हुआ। जिसका जन्म उत्तम रूप से हुआ हो। २ विवाहित स्त्री पुरुष से उत्पन्न। ३ अच्छे कुल में उत्पन्न। ४ सुंदर। ५ अत्यंत मधुर (को०)। ६ अच्छी तरह वर्धित या बढ़ा हुआ। लंबा (को०)। ७ अच्छे ढंग से निर्मित किया हुआ (को०)।

सुजात²—संज्ञा पुं० [सं०] १ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २ भरत के पुत्र का नाम। ३ साँड़ (बौद्ध)।

सुजातक—संज्ञा पुं० [सं०] सौंदर्य। सुंदरता।

सुजातका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शालि धान्य। कुंकुमशालि।

सुजातरिपु—संज्ञा पुं० [सं०] युधिष्ठिर।

सुजाता¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गोपीचंदन तुवरी सौराष्ट्र की मिट्टी। सौराष्ट्रमृत्तिका। २ उद्दालक ऋषि की पुत्री का नाम। ३ बुद्ध भगवान के समय की एक ग्रामीण कन्या जिसने उन्हें बुद्धत्व प्राप्त करने के उपरांत भोजन कराया था।

सुजाता²—वि० स्त्री० १ सुंदर। सौंदर्यशीला। २ सत्कुलीना (स्त्री)।

सुजाति¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम जाति। उत्तम कुल।

सुजाति²—संज्ञा पुं० वीतिहोत्र का एक पुत्र।

सुजाति³—वि० उत्तम जाति का। अच्छे कुल का।

सुजातिया¹—वि० [सं० सु+जाति+हिं० इया (प्रत्य०)] अच्छे कुल का। उत्तम जाति का।

सुजातिया²—संज्ञा पुं० [सं० स्व+जाति+इया (प्रत्य०)] अपनी जाति या वर्ग का। स्वजाति का। उ०—लखि बउवार सुजातिया अनख धरै मन नाहि। बड़े नैन लखि अपुन पै नैना सही सिहाहिं।—रतनहजारा (शब्द०)।

सुजातीय—वि० [सं०] उत्तम जाति का।

सुजान—वि० [सं० सज्ञान] १ समझदार। चतुर। सयाना। उ०—(क) करत करत अभ्यास के जडमति होत सुजान।—रहीम (शब्द०)। (ख) दोबल कहा देति मोहिं सजनी तू तो बड़ी सुजान। अपनी सी मैं बहुतै कीन्ही रहति न तेरी आन।—सूर (शब्द०)। (ग) ब्याही सो सुजान सील रूप वसुदेव जू को, विदित जहान जाकी अतिहि बड़ाई है।—गिरधर (शब्द०)। २ निपुण। कुशल। प्रवीण। ३ विज्ञ। पंडित। ४ सज्जन।

सुजान²—संज्ञा पुं० १ पति या प्रेमी। उ०—अरी नींद आवै चहै जिहि दृग बसत सुजान। नेकी सुनी धरी कहूँ दो अँखि एक मयान।—रतनहजारा (शब्द०)। २. परमात्मा। ईश्वर। उ०—बार बार सेवक सराहना करत राम, तुलसी सराहैं रीति साहिब सुजान की। तुलसी (शब्द०)।

सुजानता—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुजान+ता (प्रत्य०)] सुजान होने का भाव या धर्म। सुजानपन। उ०—(क) केशोदास सकल सुजान की सी सेज किधौं सकल सुजनता की सखी सुखदानी है। किधौं मुखपंज में पंकज को नो गेवँ द्विज कविता की छवि ताकी कविता निसानी है।—केशव (शब्द०)। (ख) किधौं केशोदास कलगानता सुजानता निधानता को बचन विचित्रता किशोरी की।—केशव (शब्द०)।

सुजानी –वि० [सं० सु+ज्ञान हिं० सुजान] विज्ञ। पंडित। ज्ञानी। उ०—(क) लखि विप्र सुजानी कहि मृदुवानी, अरे पुत्र! यह काह किय्यो।—विश्राम (शब्द०)। (ख) मैं ह्यां ल्याई सुवन सुजानी। मुनि लखि हँसि भागत नदरानी।—गिरधर (शब्द०)।

सुजामि—वि० [सं०] अनेक भाई बहनों तथा सबंधियों से समृद्ध (को०)।

सुजाव†—संज्ञा पुं० [सं० सुजात] पुत्र (डिं०)।

सुजावा†—संज्ञा पुं० [देश०] बैलगाड़ी में की वह लकड़ी जो पैजनी और फड़ में जड़ी रहती है (गाड़ीवान)।

सुजिह्व¹—वि० [सं०] १ जिसकी जिह्वा या जीभ सुंदर हो। २ मधुरभाषी। मीठा बोलनेवाला।

सुजिह्व²—संज्ञा पुं० अग्नि। पावक। कृशानु।

सुजीर्ण—वि० [सं०] १ अच्छी तरह पका या पचा हुआ अन्न। २ (खाना) जो खूब पच गया हो। ३ जीर्णशीर्ण। जर्जर।

सुजीवती—संज्ञा स्त्री० [सं० सुजीवन्ती] पीली जीवती। सुनहरी जीवती।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह वात-वीर्य-वर्धक, नेत्रों को हितकारी तथा वात, रक्त, पित्त, और दाह को दूर करनेवाली है।

पर्या०—स्वर्णलता। स्वर्णजीवती। हेमवल्ली। हेमपुष्पी। हेमा। सौम्या।

सुजीवित¹—संज्ञा पुं० [सं०] सुखमय जीवन (को०)।

सुजीवित²—वि० १ जिसका जीना सफल हो। २ सुखी जीवन व्यतीत करनेवाला (को०)।

सुजेय—वि० [सं०] जो सरलता से जीता जा सके।

सुजोग†—संज्ञा पुं० [सं० सु+योग] १ अच्छा अवसर। उपयुक्त अवसर। सुयोग। २ अच्छा संयोग। अच्छा मेल।

सुजोधन—संज्ञा पुं० [सं० सुयोधन] दे० 'सुयोधन'। उ०—चलत सुजोधन कटक हलत किल बिकल सकल महि। कच्छप भारन छपत नाग चिक्करत अहि।—गिरधर (शब्द०)।

सुजोर—वि० [सं० सु या फा० शह+जोर] १ दृढ़। मजबूत। उ०—सरल बिसाल बिराजहि बिद्रुम खंभ सुजोर। चारु पाटि पटि पुरट की झलकत मरकत भोर।—तुलसी (शब्द०)। २ शक्तिशाली। शहजोर। बलवान् (को०)।

सुज्ञ—वि० [सं०] १ जो अच्छी तरह जानता हो। भली भाँति जाननेवाला। सुविज्ञ। २ पंडित। विद्वान्।

सुज्ञान¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तम ज्ञान। अच्छी जानकारी। २. एक प्रकार का साम।

सुज्ञान²—वि० [सं०] ज्ञानी। पंडित। जानकार। सुविज्ञ।

सुज्येष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] भागवत के अनुसार शुंगवंशी राजा अग्निमित्र के पुत्र का नाम।

सुझाना¹—क्रि० स० [हिं० सूझना का प्रेर० रूप] ऐसा उपाय करना जिसमें दूसरे को सूझे। दूसरे के ध्यान या दृष्टि में लाना। दिखाना। बताना। जैसे,—आपको यह तरकीब उसी ने सुझाई है।

सुझाना²—क्रि० अ० दिखाई पड़ना। सूझना। समझ में आना। उ०—तब तें अब गाड़ी परी सोझा कछु न सुझाइ।—सूर० (राधा०), ५८९।

सुझाव—संज्ञा पुं० [हिं० सूझ+आव (प्रत्य०)] १ किसी को कुछ सुझाने की क्रिया। सुझाने या बताने का भाव। २ किसी नई बात, किसी विशेष पक्ष या अंग की ओर ध्यान दिलाना। ३ सुझाने या ध्यान दिलाने के लिये कही हुई बात। संकेत। मंतव्य। राय।

सुटंक—वि० [सं० सुटङ्क] तीव्र। कर्कश। उग्रांशु (को०)।

सुटकन, सुटकुन—संज्ञा स्त्री० [अनु०] आँख की कीच।

सुटुकना¹—क्रि० अ० [अनु०] १ दे० 'सुटकना'। २ दे० 'सिटुकना'।

सुटुकना²—क्रि० स० [अनु०] सुटका मारना। चालाकी लगाना। उ०—नीच मतीधर सिखर सम देखि बिसाल बराह। चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हाँकि न होइ निबाहु।—तुलसी (शब्द०)।

सुटुकना³†—क्रि० अ० [अनु०] चुपके या धीरे से भाग जाना। सरकना।

सुठ—वि० [सं० सुष्ठु] दे० 'सुठि'। उ०—राम धनुरभंग अभिराम सुठ कामहू ते ताते हौ परशुराम क्रोध मत जोगिए।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

सुठहर†—संज्ञा पुं० [सं० सु+स्थान, हिं० ठहर(=जगह)] अच्छा स्थान। बढ़िया जगह। उ०—यदि मुदित कपि यातुधि मिलि ने देखि पूत को साज सुठहर बन लागो।—देवस्वामी (शब्द०)।

सुठहरे†—क्रि० वि० [हिं० सुठहर] अच्छी जगह पर। अच्छे स्थान पर।

सुठान—क्रि० वि० [हिं० सु+ठान(=स्थान)] अच्छे ढंग से। भली प्रकार से। उ०—भौंह कमान सँधान सुठान जे नारि बिलोकन बान ते बाँचे।—तुलसी ग्र०, पृ० २२६।

सुठार†—वि० [सं० सुष्ठु, प्रा० सुठ्ठ] [वि० स्त्री० सुठारी] सुडौल। सुंदर। उ०—(क) सुठि सुठार ठोटी अति सुंदर सुंदर ताको सार। चितवन चुभत सुधारस मानो रहि गई बूँद मझार।—सूर (शब्द०)। (ख) चपल नैन नासा बिच सोभा अधर सुरंग सुठार। मनो मध्य रंजन सुक बैठ्यो लुब्ध्यो बिंब बिचार।—सूर (शब्द०)। (ग) जावक रंजित अँगुरियन्ह मृदुल सुठारी हो। प्रभु कर चरन पछालत अति सुकुमारी हो।—तुलसी ग्र०, पृ० ५।

सुठि†¹—वि० [सं० सुष्ठु] १ सुंदर। बढ़िया। अच्छा। उ०—(क) तून सरासन बान धरे तुलसी बन मारग में सुठि सोहै।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सग नारि सुकुमारि सुभग सुठि राजति बिन भूषन बसति।—तुलसी (शब्द०)। (ग) बहुत प्रकार किए सब व्यंजन अमित बरन मिष्ठान। अति उज्वल कोमल सुठि सुंदर देखि महरि मन मान।—सूर०,

१०।८६। २ अतिशय। अत्यत। बहुत। उ०—सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू। पाके छत जनु लाग अँगारू।—मानस, २।१६१।

सुठि(पु)[2]—अव्य० [स० सुष्ठु] पूरा पूरा। बिलकुल। उ०—हिए जो आखर तुम लिखे से सुठि लीन्ह परान।—जायसी (शब्द०)।

सुठोना(पु)†—वि० [हिं०]दे० 'सुठि'। उ०—रसखानि निहारि सकै जु सम्हारि कै को तिय है वह रूप सुठोनो।—रसखान (शब्द०)।

सुडकना—क्रि० स० [अनु०] १ किसी वस्तु जैसे, नस्य, जल आदि को नाक से भीतर खीचना। २ नाक की रेट को बाहर छिनकने के बजाय ऊपर खीच लेना। जैसे—नाक सुडक जाना। ३ किसी तरल पदार्थ को पी जाना।

सुडसुड—सज्ञा स्त्री० [अनुध्व०] नली आदि द्वारा जल मे वायु के घुमने से होनेवाली आवाज। गुडगुड।

सुडसुडाना—क्रि० स० [अनु०] सुडसुड शब्द उत्पन्न करना। जैसे, नाक सुडसुडाना। हुक्का सुडसुडाना।

सुडीन, सुडीनक—सज्ञा पु० [स०] पक्षियो के उडने का एक ढग या प्रकार।

सुडुकना—क्रि० स० [अनु०] दे० 'सुडकना'।

सुडौल—वि० [स० सु+ हिं० डौल] सुदर डौल या आकार का। जिसकी बनावट बहुत अच्छी हो। जिसके सब अग ठीक और बराबर हो। सुदर।

सुड्ढा†—सज्ञा पुं० [देश०] धोती की वह लपेट जिसमे रुपया पैसा रखते है। अटी। आँट।

सुड्ढी—सज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सुड्ढा'।

सुढग[1]—सज्ञा पु० [स० सु+ हिं० ढग] १ अच्छा ढग। अच्छी रीति। २ सुघडता। सुदरता।

सुढग[2]—वि० १ अच्छे रग का। अच्छी चाल या स्वभाव का। २. उत्तम रीति या ढग से युक्त। उ०—मिरदग औ मुहचग चग सुढग सग बजावही।—गिरधर (शब्द०)। ३ सुदर। सुघड। उ०—अग उतग सुढग अति रग देखि के दग। सह उमग अरि भग कर जग मग मातग।—गिरधर (शब्द०)।

सुढर[1]—वि० [स० सु+हि० ढलना] प्रसन्न और दयालु। जिसकी अनुकपा हो। अनुकूल। उ०—(क) तुलसी सराहै भाग कौसिक जनक जू के विधि के सुढर होत सुढर सुहाय के।—तुलसी (शब्द०)। (ख) तुलसी सबै सराहत भूपहि, भले पैत पामे सुदर ढरे री।—तुलसी (शब्द०)।

सुढर[2]—वि० [हिं० सुघढ] सुदर। सुडौल। उ०—भौहन चढाइ कोई कहूँ चित्त चढयो चढी सुढर सिढोनि मूढ चढी ये सुहाती जे। —देव (शब्द०)।

सुढार(पु)†—वि० [स० सु+ हिं०, ढलना] [वि० स्त्री० सुढारी] १ सुदर ढला या बना हुआ। उ०—गृह गृह रचे हिडोलना महि गच काच सुढार। चित्र विचित्र चहूँ दिसि परदा फटिक पगार।—तुलसी (शब्द०)। २ सुदर। सुडौल। उ०—हिय मनिहार सुढार चार हय सहित सुरथ चढि। निसित धार तरवार धरि जिय जय विचार मढि।—गिरधर (शब्द०)। (ख) दीरघ मोल कह्यो व्यापारी रहे ठगे से कौतुकहार। कर ऊपर लै राखि रहे हरि देत न मुक्ता परम सुढार।—सूर (शब्द०)। (ग) लखि विंदुरी पिय भाल भाल तुअ खौरि निहारी। लखि तुअ जूरा उनकी बेनी गुही सुढारी।—अबिकादत्त (शब्द०)।

सुढारु(पु)—वि० [हिं० सु+ ढलना] दे० 'सुढार'। उ०—घर बारन असवारु चारु बखतर सुढारु तन। सग लसत चतुरग करन रनरग समुद मन।—गिरधर (शब्द०)।

सुणघड़िया—सज्ञा पुं० [हिं० सोना+ घडना (=गढना)] सुनार। (डिं०)।

सुणना(पु)†—क्रि० स० [हिं० सुनना] श्रवण करना। दे० 'सुनना'। उ०—महिमा नाँव प्रताप की सुणौ सरवण चित्त लाइ। रामचरण रसना रटौ भ्रम सकल झड जाइ।

सुतगम—सज्ञा पुं० [स० सुतङ्गम] पुत्रवान् पिता [को०]।

सुतत(पु)—वि० [स० स्वतन्त्र, प्रा० सु+ तत] स्वतत्र। स्वाधीन। बधनहीन। स्वच्छद। उ०—बँधुआ को जैसे लखत कोई मनुष सुतत।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

सुततर(पु)†—वि० [स० स्वतन्त्र] दे० 'स्वतत्र'।

सुततु—सज्ञा पु० [स० सुतन्तु] १ शिव। विष्णु। ३ एक दानव का नाम।

सुतत्र(पु)[1]—वि० [स० स्वतन्त्र] दे० 'स्वतत्र'। उ०—(क) महावष्टि चलि फटि कियारी। जिमि सुतत्र भए बिगरहिं नारी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) या ब्रज मैं हौ बसत ही हेली आइ सुतत्र। हेरन मैं कछु पढि दियौ मोहन मोहन मत्र।—रतन-हजारा (शब्द०)।

सुतत्र[2]—क्रि० वि० स्वतत्रतापूर्वक। स्वच्छदतापूर्वक। उ०—विधि लिख्यो शोधि सुतत्र। जनु जपाजप के मत्र।—केशव (शब्द०)।

सुतंत्र[1]—वि० [सं० सुतन्त्र] १ जिसका तत्र, सेना आदि ठीक हो। जिसके पास अच्छा सैन्य बल हो। २ तत्र का ज्ञाता। सिद्धातो का जानकार।

सुतन्त्रि—सज्ञा पु० [स० सुतन्त्रि, सुतन्त्री] १ वह जो तार के बाजे (वीणा आदि) बजाने मे प्रवीण हो। वह जो तत्र वाद्य अच्छी तरह बजाता हो। २ वह जो कोई बाजा अच्छी तरह बजाता हो। ३ वह जिसका स्वर मधुर और लय ताल से युक्त हो।

सुतभर—सज्ञा पु० [स० सुतम्भर] एक प्राचीन वैदिक ऋषि का नाम।

सुत[1]—सज्ञा पु० [स०] १ पुत्र। आत्मज। बेटा। लडका। २ दसवे मनु का पुत्र। ३ जन्मकुडली मे लग्न से पाँचवाँ घर। ४ नरेश। भूपति। राजा (को०)। ५ निचोडा हुआ सोमरस (को०)। ६ सोम याग (को०)। ७ सोमवल्लि (को०)।

सुत[२]—वि० १ पार्थिव। २ उत्पन्न। जात। ३ उडेला हुआ (को०)। ४ निचोडकर निकाला हुआ (को०)।

सुत†[३]—सज्ञा पु० [?] बीस की सख्या। कोडी।

सुतकारी†—सज्ञा स्त्री० [देश०] स्त्रियो के पहनने की जूती।

सुतजा—सज्ञा स्त्री० [स०] पौत्री। पोती [को०]।

सुतजीवक—सज्ञा पु० [स०] पुत्रजीव नाम का वृक्ष। पितिजिया। विशेष दे० 'पुत्रजीव'।

सुतडा—सज्ञा पु० [हिं० सूत + डा (प्रत्य०)] दे० 'सुतरा'।

सुतत्व—सज्ञा पुं० [स०] सुत का भाव या धर्म।

सुतदा[१]—वि० स्त्री० [सं०] सुत या पुत्र देनेवाली।

सुतदा[२]—सज्ञा स्त्री० दे० 'पुत्रदा' (लता)।

सुतनय—वि० [सं०] उत्तम सतानवाला।

सुतना[१]—सज्ञा पुं० [?] दे० 'सूथन'।

सुतना[२]—क्रि० अ० [स० शयन] दे० 'सूतना'।

सुतनिर्विशेष—वि० [स०] पुत्रवत्। पुत्रकल्प। २. जिसका पुत्र के समान पालन पोषण किया गया हो [को०]।

सुतनु[१]—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक गधर्व का नाम। २ उग्रसेन के एक पुत्र का नाम। ३ एक बदर का नाम।

सुतनु[२]—वि० १ सुदर शरीरवाला। २ अत्यत सुकुमार। बहुत ही क्षीण। पतला (को०)। ३ कृशकाय। दुर्बलशरीर (को०)।

सुतनु[३]—सज्ञा स्त्री० १ सुदर शरीरवाली स्त्री। कृशागी। २ आहुक की पुत्री और अक्रूर की पत्नी का नाम। ३ उग्रसेन की एक कन्या का नाम। ४ वसुदेव की एक उपपत्नी का नाम।

सुतनुज—वि० [स०] दे० 'सुतनय'।

सुतनुता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुतनु होने का भाव। २. शरीर की सुदरता।

सुतनू—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुतनु'[३] [को०]।

सुतप[१]—वि० [स०] सोम पान करनेवाला।

सुतप[२]—सज्ञा पुं० [सं० सुतपस्] तप। तपश्चर्या [को०]।

सुतपस्वी—वि० [स० सुतपस्विन्] अत्यत तपस्या करनेवाला। बहुत अच्छा और बडा तपस्वी।

सुतपा[१]—सज्ञा पुं० [स० सुतपस्] १ सूर्य। २ एक मुनि का नाम। ३ रौच्य मनु के एक पुत्र का नाम। ४ विष्णु। ५ कठोर तपस्या। दीर्घ साधना (को०)।

सुतपा—वि० १ कठोर तपस्या की साधना करनेवाला वानप्रस्थाश्रमी। २ जो अतिशय तापयुक्त हो [को०]।

सुतपादिका—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटी जाति की एक प्रकार की हसपदी नाम की लता।

सुतपेय—सज्ञा पुं० [स०] यज्ञ मे सोम पीने की क्रिया। सोमपान।

सुतयाग—सज्ञा पु० [स०] वह यज्ञ जो पुत्र की इच्छा से किया जाता है। पुत्रकाम यज्ञ। पुत्रेष्टि यज्ञ।

सुतर†[१]—सज्ञा पुं० [फा० शुतुर] दे० 'शुतुर'। उ०—सबके आगे सुतर सवार अपार शृगार बनाए। धरे जमूरक तिन पीठिन पर सहित निसान सुहाये।—रघुराज (शब्द०)। (ख) भरि चले सुतर रथ एक राह। बीसल तड़ाग दिय दारिगाह।—पृ० रा०, १।४२०।

सुतर[२]—वि० [स०] सुख से तैरने या पार करने योग्य। जो सुख या आराम से पार किया जा सके। (नदी आदि)।

सुतरण—वि० [सं०] सरलता से पार करने योग्य।

सुतरनाल—सज्ञा स्त्री० [फा० शुतुरनाल] दे० 'शुतरनाल'। उ०—तिमि घरनाल और करनालै सुतरनाल जजालै। गुरगुराव रहँकलै भले तहँ लागे विपुल बयालै।—रघुराज (शब्द०)।

सुतरसवार—सज्ञा पुं० [फा० शुतुरसवार] ऊँट सवार। साँडनी सवार।

सुतरा—अव्य० [सं० सुतराम] १ अत। इसलिये। निदान। २ अपितु। और भी। किं बहुना। ३ अगत्या। लाचार। ४ अत्यत। ५ अवश्य।

सुतरा—सज्ञा पुं० [हिं० सूत + रा (प्रत्य०)] नाभून के ऊपर या बगल के चमडे का सूत की तरह महीन छोटा अश।

सुतरी(पु)[१]—सज्ञा स्त्री० [हिं० तुरही] तुरही। तूर। उ०—नौबत झरत द्वार द्वारन मे शख सुतरि सहनाई। औरहु विविध मनोहर बाजे बजत मधुर सुर छाई।—रघुराज (शब्द०)।

सुतरी[२]—सज्ञा पुं० [देश० या फा० शुतुर, हिं० सुतर (=ऊँट)] वह बैल जिसका ऊँट का सा रग हो। (यह मध्यम श्रेणी का मजबूत और तेज माना जाता है)।

सुतरी[३]—सज्ञा स्त्री० [देश०] वह लकडी जो पाई मे साँथी अलग करने के लिये साँथी के दोनो तरफ लगी रहती है। इसे जुलाहो की परिभाषा मे 'सुतरी' कहते है।

सुतरी[४]—सज्ञा स्त्री० [स० सूत्रकार] दे० 'सुनारी'[१]।

सुतरी[५]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूत + री (प्रत्य०)]। दे० 'सुतली'।

सुतरेशाही—सज्ञा पु० [सुथरा शाह (=एक सत का नाम)] दे० 'सुथरे शाही'।

सुतर्कारी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक लता। सौनैया। घघ बेल। वेदाल। विशेष दे० 'देवदाली'।

सुतर्दन—सज्ञा पु० [स० सुतर्दन] कोकिल पक्षी। कोयल।

सुतर्मा—वि० [सं० सुतर्मन्] तरण करने या पार करने योग्य [को०]।

सुतल—सज्ञा पुं० [स०] १ सात पाताल लोको मे से एक (किसी पुराण के मत से दूसरा और किसी के मत से छठा) लोक।

विशेष—भागवत के अनुसार इस पाताल लोक के स्वामी विरोचन के पुत्र बलि हैं। देवीभागवत मे लिखा है कि विष्णु भगवान् ने बलि को पाताल भेजकर ससार की सारी सपदा दी थी और स्वय उसके द्वार पर पहरा देते थे। एक बार रावण ने इसमे प्रवेश करना चाहा था, पर विष्णु भगवान् ने उसे अपने पैर के अँगूठे से हजारो योजन दूर फेक दिया। विशेष दे० 'लोक'[१]।

२ किसी बडे भवन की नीव (को०)।

सुतली—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूत + ली (प्रत्य०)] रुई, सन या इसी प्रकार के और रेशो के सूतो या डोरो को एक मे बटकर बनाया हुआ लबा और कुछ मोटा खड जिसका उपयोग चीजे बाँधने, कुएँ से पानी खीचने, पलग बुनने तथा इसी प्रकार के और कामो मे होता है। रस्सी। डोरी। सुतरी।

सुतवत्[१]—वि० [स०] १ पुत्रवाला। जिसके पुत्र हो। २ पुत्र के समान। पुत्रतुल्य।

सुतवत्[२]—सज्ञा पु० पुत्र का पिता।

सुतवत्सल—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० सुतवत्सला] वह पिता जो पुत्र के प्रति वात्सल्य से युक्त हो [को०]।

सुतवत्करा—सज्ञा स्त्री० [स०] सात पुत्र प्रसव करनेवाली स्त्री। वह स्त्री जिसके सात पुत्र हैं।

सुतवान्—वि०, सज्ञा पु० [स० सुतवत्] दे० 'सुतवत्'।

सुतवाना—क्रि० स० [हिं० सुताना] दे० 'सुलवाना'। उ०—फिर सेजचतुर को अच्छा बिछौना करवा पलग पर सुतवाया।—लल्लू (शब्द०)।

सुतश्रेणी—सज्ञा स्त्री० [स०] मूसाकानी। मूषिकपर्णी। विशेष दे० 'मूसाकानी'।

सुतसुत—सज्ञा पु० [स०] पुत्र का लडका। पौत्र [को०]।

सुतसोम—सज्ञा पु० [स०] १ भीमसेन के एक पुत्र का नाम। २ वह जो सोम का सेवन करता हो। सोम तर्पण करनेवाला।

सुतसोमा—सज्ञा स्त्री० [स०] श्रीकृष्ण की एक पत्नी [को०]।

सुतस्थान—सज्ञा पु० [स०] जन्मकुडली मे लग्न से पचम स्थान।

विशेष—फलित ज्योतिष क अनुसार सुतस्थान पर जितने ग्रहो की दृष्टि रहती है, उतनी ही सताने हाती ह। पुल्लिग ग्रहो की दृष्टि से पुत्र और स्त्री ग्रहा को दृष्टि स कन्याए होती ह।

सुतर—सज्ञा पु० [स० सूत्रधर, प्रा० सूत + हर] दे० सुतर'। उ०—सुधरि मुबारक तिय वदन परी अलक अभिराम। मनो सोम पर सूत ह्वै राखी सुतहर काम।—मुबारक (शब्द०)।

सुतहा[१]—सज्ञा पु० [हिं० सूत + हा (प्रत्य०)] सूत का व्यापारी। सूत बचनवाला।

सुतहा—वि० सूत का। सूत सबधी।

सुतहा[२]—सज्ञा पु० [स० शुक्ति] दे० 'सुतही'।

सुतहार—सज्ञा [स० सूत्रधार, प्रा० सुत्तधार, सुत्तहार] दे० 'सुतार[२]'। उ०—कनक रतनमय पालनो रच्यो मनहुँ मार सुतहार। विविध खेलौना किंकिनी लागे मजुल मुकुताहार।—तुलसी (शब्द०)।

सुतहिबुक योग—सज्ञा पु० [स०] विवाह का एक योग।

विशेष—विवाह के समय लग्न मे यदि कोई दोष हो और सुतहिबुक योग हो, ता सारे दोष दूर हो जाते ह।

सुतही—सज्ञा स्त्री० [स० शुक्ति] दे० 'सुतुही'।

सुतहौनिया—सज्ञा पु० [देश०] दे० 'सुथौनिया'।

सुता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लडकी। कन्या। पुत्री। बेटी। २ सखी। सहेली। (डिं०)।

सुतात्मज—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० सुतात्मजा] १ लडके का लडका। पोता। २ लडकी का लडका। नाती।

सुतादान—सज्ञा पु० [स०] कन्यादान [को०]।

सुतान—वि० [स०] मधुर स्वरवाला। सुस्वर। सुकठ [को०]।

सुताना†—क्रि० स० [हिं० सुलाना] दे० 'सुलाना'।

सुतापति—सज्ञा पु० [स०] कन्या का पति। दामाद। जामाता।

सुतार[१]—सज्ञा पु० [स० सूत्रकार, प्रा० सुत्तआर>सुत्तार] १ बढई। २ शिल्पकार। कारीगर।

सुतार[२]—वि० [स० सु + तार] अच्छा। उत्तम। उ०—कनक रतन मणि पालनो अति गढनो काम सुतार। विविध खिलौना भाँति भाति के गजमुक्ता बहुधार।—सूर (शब्द०)।

सुतार[३]†—सज्ञा पु० सुभीता। उपयुक्त समय। सुविधा।

क्रि० प्र०—बठना।

सुतार[४]—वि० [स०] १ अत्यत उज्वल। २ जिसकी आँख की पुतलियाँ सुदर हो। ३ अत्यत उच्च।

सुतार[५]—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का सुगधिद्रव्य। २ एक आचार्य का नाम। ३ साख्य दर्शन के अनुसार एक प्रकार की सिद्धि। गुरु से पढे हुए अध्यात्मशास्त्र का ठीक ठीक अर्थ समझना।

सुतार[६]—सज्ञा पु० [देश०] हुदहुद नामक पक्षी।

सुतारका—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्धो की चौबीस शासन देवियो मे से एक देवी का नाम।

सुतारा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ साख्य के अनुसार नौ प्रकार की तुष्टियो मे से एक। २ साख्य के अनुसार आठ प्रकार की सिद्धियो मे से एक। दे० 'सुतार[४]'। ३ एक आभूषण।

सुतारी[१]—सज्ञा स्त्री० [स० सूत्रकार] १ मोचियो का सूआ जिससे वे जूता सात ह। २ सुतार या बढई का काम।

सुतारी[२]—सज्ञा पु० [हिं० सुतार] शिल्पकार। कारीगर। उ०—हरिजन माण का काठरा आप सुतारी आहि। मुएहू न त्यागत टक निज ताह त छाडचा नाहि।—विश्राम (शब्द०)।

सुतार्थी—वि० [स० सुतार्थिन्] पुत्र का कामना करनेवाला। जिसे पुत्र का अभिलाषा हो। पुत्रार्थी।

सुताल—सज्ञा पु० [स०] सगीत म ताल का भेद [को०]।

सुतालो—सज्ञा स्त्री० [स० सूत्रकार] दे० 'सुतारी[२]'।

सुतासिधु—सज्ञा स्त्री० [स० सिन्धुसुता] लक्ष्मी। सिधुसुता। उ०—चाकत होई नीर म बहुरि बुडका दई सहित सुतासिधु तहँ दरस पाए।—सूर० (राधा०), प० २५७७।

सुतासुत—सज्ञा पु० [स०] पुत्रो का पुत्र। दोहित्र। नाती।

सुतातडा, सुतितिडी—सज्ञा स्त्री० [सुतिन्तिडा, सुतिन्तिडी] इमली [को०]।

सुति—सज्ञा स्त्री० [स०] सामरस का निष्कर्षण [को०]।

सुतिअ@—सज्ञा स्त्री० [स० सु + हिं० तिय] सुदर स्त्री। उ०—भगति सुतिअ कल करन विभूषन।—मानस, १।२०।

सुतिक्त[१]—सज्ञा पु० [स०] पित्तपापड़ा। पर्पटक।

सुतिक्त[1]—वि० जो बहुत तिक्त हो। अधिक तीता।

सुतिक्तक—सज्ञा पु० [स०] १ चिरायता। २ करहद। पारिभद्र। ३ पित्तपापडा।

सुतिक्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ तोरई। कोशातकी। २ सप्तपर्ण। शल्लकी।

सुतिन(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० सुतनु] सुदर बाला। रूपवती स्त्री। (क्व०)। उ०—जो नहि देतौ अतन कहुँ दृगन हरबली आय। मन मानस जे सुतिन के को सर करतो जाय।—रतनहजारा। (शब्द०)।

सुतिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसके पुत्र हो। पुत्रवती।

सुतिय(पु) सज्ञा स्त्री० [स० सु+हिं० तिया] सुदर स्त्री।

सुतिया—सज्ञा स्त्री० [देश०] सोने या चाँदी का एक गहना जो स्त्रियाँ गले मे पहनती है। हँसली।

सुतिया—सज्ञा पुं० [हिं० सु+तिया] सुदर स्त्री।

सुतिहार(पु)†—सज्ञा पुं० [स० सूत्रकार, सूत्रधार, प्रा० सुत्तहार] दे० 'सुतार[1]'। उ०—(क) मोतिन भालरि नाना भाँति खिलौना रचे विश्वकर्मा सुतिहार। देखि देखि किलकत दँतिला दो राजत त्रीडत विविध विहार।—सूर (शब्द०)। (ख) विश्वकर्मा सुतिहार श्रुतिधरि सुलभ सिलय दिखावनो। तेहि देखे त्रय ताप नाशै ब्रजवधू मनभावनो।—सूर (शब्द०)।

सुती—सज्ञा पु० [स० सुतिन] १ वह जो पुत्र की इच्छा करता हो। २ वह जिसे पुत्र हो। पुत्रवाला।

सुतीक्षण(पु)—सज्ञा पुं० [स० सुतीक्ष्ण] दे० 'सुतीक्ष्ण[1]'। उ०—दरसन दियो सुतीक्षण गौतम पचवटी पग धारे। तहाँ दुष्ट सूर्पनखा नारी करि बिन नाक उधारे।—सूर (शब्द०)।

सुतीक्षण(पु)—वि० अत्यत तीक्ष्ण। अत्यत नुकीला।

सुतीक्ष्ण[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ अगस्त्य मुनि के भाई जो वनवास के समय श्रीरामचद्र से मिले थे। २ सहिजन वृक्ष। शोभाजन।

सुतीक्ष्ण[2]—वि० १, अत्यत तीक्ष्ण। बहुत तेज। २ अत्यत तीखा (को०)। ३ अत्यत पीडाकारक।

सुतीक्ष्णक—सज्ञा पु० [स०] मुष्कक या मोखा नामक वृक्ष।

सुतीक्ष्णका—सज्ञा स्त्री० [स०] सरसो। सर्षप।

सुतीक्ष्ण दशन—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम [को०]।

सुतीखन(पु)—सज्ञा पु० [स० सुतीक्ष्ण, प्रा० सु+तिक्खन] दे० 'सुतीक्ष्ण'। उ०—तीखन तन को कियो सुतीखन को द्विज तुलसी।—सुधाकर (शब्द०)।

सुतीच्छन(पु)—सज्ञा पुं० [स० सुतीक्ष्ण] दे० 'सुतीक्ष्ण'।

सुतीर्थ[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ सुपथ। २ स्नान का उत्तम स्थान। ३ शिव। ४ पूज्य पात्र। ५ योग्य आचार्य।

सुतीर्थ[2]—वि० [स०] सहज मे पार करने योग्य।

सुतीर्थराज—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

सुतुग[1]—सज्ञा पु० [स० सुतुङ्ग] १ नारियल का पेड। २ ग्रहो का उच्चाश।

विशेष—ज्योतिष के अनुसार ग्रहो के सुतुग स्थान पर रहने से शुभ फल होता है।

सुतुग[2]—वि० अत्यत उच्च। बहुत ऊँचा।

सुतुआ—सज्ञा पुं० [हिं० सुतुही] [स्त्री० सुतुई] दे० 'सुतही'।

सुतुमुल—वि० [सं०] बहुत जोर का। अत्यत घोर [को०]।

सुतुस—वि० [स०] ठीक उच्चारण करने या बोलनेवाला [को०]।

सुतुही†—सज्ञा स्त्री० [स० शुक्ति] १ सीपी, जिसमे प्राय छोटे बच्चो को दूध पिलाते है। वह सीप जिसके द्वारा पोस्ते मे अफीम खुरची जाती है। सुतुआ। सुनहा। सूती[2]। ३ वह सीप जिससे अचार के लिए कच्चा आम छीला जाता है। सीपी।

विशेष—इसे बीच मे घिसकर इसके तल मे छेद कर लेते हैं, और उसी छेद के चारो ओर के तेज किनारो मे आम, आलू आदि छीलते है।

सुतून—सज्ञा पुं० [फा०] खभा। स्तभ।

सुतूर—सज्ञा स्त्री० [अ०] सतर का बहुवचन। लकीरें [को०]।

सुतेकर—सज्ञा पु० [स०] वह जो यज्ञ करता हो। यज्ञकर्ता। यज्ञकारी। ऋत्विक्।

सुतेजन[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ धामिन। धन्वन वृक्ष। २ बहुत नुकीला बाण या तीर।

सुतेजन—वि० १ नुकीला। २ तेज। धारदार।

सुतेजा[1]—सज्ञा पुं० [सं० सुतेजस्] १ जैनो के अनुसार गत उत्सर्पिणी के दसवे अर्हत् का नाम। २ गृत्समद का पुत्र। ३ हुरहुर। आदित्यभक्ता।

सुतेजा[2]—वि० १ बहुत तेज या धारदार। २ अत्यत दीप्त या ज्योतित (को०)। ३ अत्यत शक्तिशाली (को०)।

सुतेजित—वि० [स०] दे० 'सुतेजन'।

सुतेमन—सज्ञा पु० [स० सुतेमनस्] एक वैदिक आचार्य का नाम।

सुतैला—सज्ञा स्त्री० [स०] महाज्योतिष्मती नामक एक लता। विशेष दे० 'मालकँगनी' [को०]।

सुतोत्पत्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] पुत्रजन्म [को०]।

सुतोर—सज्ञा पुं० [फा०] १ वृष। बैल। २. उष्ट्र। ऊँट। ३ अश्व। घोडा [को०]।

सुतोष[1]—सज्ञा पुं० [स०] सतोष। सत्र।

सुतोष[2]—वि० जिसका सतोष हो गया हो। सतुष्ट। प्रसन्न।

सुतोषण—सज्ञा पुं० [स०] सम्यक् तोष या तुष्टि [को०]।

सुत्ता†—वि० [हिं० सोना] सोया हुआ। सुषुप्त। (पश्चिम)।

सुत्तुर†—सज्ञा पु० [हिं० सूत या फा० शुतुर] जुलाहो के करघे का एक बाँस जिसमे कघी बँधी रहती है। कुलवाँसा।

सुंत्थन सुत्थना—सज्ञा पु० [देश०] दे० 'सूथन'।

सुत्य—सज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ के लिये सोमरस निकालने का दिन।

सुत्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जनन। उत्पति। प्रसव। २ दे० 'सूत्या'।
यौ०—सुत्याकाल = दे० 'सुत्य'।

सुत्रामा—सज्ञा पु० [स० सुत्रामन्] १ इद्र। २ पुराणानुसार एक मनु का नाम। ३ वह जो उत्तम रूप से रक्षा करता हो।

सुत्रामा—सज्ञा स्त्री० पृथ्वी [को०]।

सुथना—सज्ञा पु० [देश०] दे० 'सूथन'।

सुथनिया†—सज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सुथनी'।

सुथनी—सज्ञा स्त्री० [देश०] १ स्त्रियो के पहनने का एक प्रकार का ढीला पायजामा। सूथन। २ एक कद। पिंडालु। रतालू।

सुथरा—वि० [स० स्वच्छ, सुस्थल या स्वस्थ] [वि० स्त्री० सुथरी] स्वच्छ। निर्मल। साफ। उ०—(क) लरिकाई कहुँ नेक न छाँडत सोई रहो सुथरी सेजरियाँ। आए हरि यह बात सुनत ही धाइ लिये यशुमति महतरियाँ।—सूर (शब्द०)। (ख) मोतिन माँग भरी सुथरी लसै कठ सिरीगर सी अवगाही।—मुदरीसर्वस्व (शब्द०)।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्राय 'साफ' शब्द के साथ होता है। जैसे,—साफ सुथरा मकान। साफ सुथरी भाषा = परिष्कृत भाषा।

सुथराई—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुथरा + ई (प्रत्य०)] सुथरापन। स्वच्छता निर्मलता। सफाई।

सुथरायन—सज्ञा पु० [हिं० + पन (प्रत्य०)] दे० 'सुथराई'।

सुथराशाह—सज्ञा पु० [हिं०] एक सत जो गुरुनानक के शिष्य थे।

सुथरेशाही—सज्ञा पुं० [सुथराशाह (महात्मा)] १ गुरु नानक के शिष्य सुथराशाह का चलाया सप्रदाय। २ उस सप्रदाय के अनुयायी या माननेवाले जो प्राय सुथराशाह और गुरुनानक आदि के बनाए हुए भजन गाकर भिक्षा माँगते हैं।

सुथौनिया†—सज्ञा पुं० [देश०] मस्तूल के उपरी भाग मे वह छेद या घर जिसमे पाल लगाने के समय उसकी रस्सी पहनाई जाती है। (लश०)।

सुदड—सज्ञा पु० [स० सुदण्ड] बेत। बेंत।

सुदडिका—सज्ञा स्त्री० [स० सुदण्डिका] १ गोरख इमली। गोरक्षी। ब्रह्मदंडी। अजदडी।

सुदत१—सज्ञा पु० [स० सुदन्त] १ वह जो अभिनय करता हो। नट। २ नर्तक। नचनेवाला। ३ सुदर दाँत [को०]।

सुदत२—वि० सुदर दाँतोवाला।

सुदता१—सज्ञा स्त्री० [स० सुदन्ता] पुराणानुसार एक अप्सरा का नाम।

सुदता—वि० स्त्री० सुदर दाँतोवाली।

सुदती—सज्ञा स्त्री० [स० सुदन्ती] १ हथिनी। हस्तिनी। २ वायव्य कोण के एक दिग्गज (पुष्पदत) की हथिनी का नाम।

सुदभ—वि० [स० सुदम्भ] दे० 'सुदभ'।

सुदशित—वि० [स०] १ अच्छी तरह डँसा हुआ। २ शस्त्र आदि से युक्त। ३ बहुत सघन, घन [को०]।

सुदष्ट१—सज्ञा पु० [स०] १ कृष्ण का एक पुत्र। २ सवर का एक पुत्र। ३ एक राक्षस का नाम

सुदष्ट२—वि० सुदर दाँतोवाला।

सुदष्टा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक किन्नरी का नाम।

सुदक्षिण१—सज्ञा पु० [स०] १ पौंड्रक राजा का पुत्र। २ विदर्भ का एक राजा।

सुदक्षिण२—वि० १ निष्कपट। खरा। २ उदार। यज्ञमे बहुत दक्षिणा-देनेवाला। ३ अत्यत चतुर। ४ अत्यत मृदुल स्वभाव-वाला [को०]।

सुदक्षिणा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ राजा दिलीप की पत्नी का नाम। २ पुराणानुसार श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।

सुदग्धिका—सज्ञा स्त्री० [स०] कुरुह नामक वृक्ष। दधा।

सुदच्छिन—सज्ञा पुं० [स० सुदक्षिण] दे० 'सुदक्षिण'। उ०—चलेउ सुदच्छिन दच्छ समर जुध दच्छिन दच्छिन।—गिरधर (शब्द०)।

सुदत्—वि० [स०] [वि० स्त्री० सुदती] सुदर दाँतोवाला।

सुदती—वि० [स०] सुदर दाँतोवाली स्त्री। सुदता। सुदरी। उ०—(क) धीर धरो सोच न करो मोद भरो यदुराय। सुदति सँदेसे सनि रही अधरनि मैं मुसुकाय।—सृ० सत (शब्द०)। (ख) मौन भरी सब सपति दपति श्रीपति ज्यो सुख सिधु मे सोवै। देव सो देवर प्राण सो पूत सुकौन दशा सुदती जिहि रोवै।—केशव (शब्द०)।

सुदम—वि० [स०] जो सुकरता से पराजित या वशीभूत हो सके [को०]।

सुदमन—सज्ञा पुं० [स०] आम। आम्रवृक्ष।

सुदरसन(पु)१—सज्ञा [स० सुदर्शन] दे० 'सुदर्शन'। उ०—नकुल सुदरसन दरसनी क्षेमकरी चुपचाप। दस दिसि देखत सगुन सुभ पूजहिं मन अभिलाष।—तुलसी (शब्द०)।

सुदरसन२—सज्ञा पुं० दे० 'सुदर्शन'।

सुदरसनपानि(पु)—सज्ञा पुं० [स० सुदर्शनपाणि] दे० 'सुदर्शन पाणि'। उ०—ज्यो धाए गजराज उधारन सपदि सुदरसनपानि।—तुलसी (शब्द०)।

सुदर्भा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का तृण जिसे इक्षुदर्भा कहते है।

सुदर्श—वि० [स०] १ दे० 'सुदर्शन'। २. जिसे सरलता से देख जा सके [को०]।

सुदर्शन१—सज्ञा पु० [स०] १ विष्णु भगवान् के चक्र का नाम २ शिव। ३ अग्नि का एक पुत्र। ४ एक विद्याधर। ५ मत्स्य। मछली। ६ जबू वृक्ष। जामुन। ७ नौ बलदेवो से एक। (जैन)। ८ वर्तमान अवसर्पिणी के अट्ठारहवे अर के पिता का नाम। (जैन)। ९ शखन का पुत्र। १० ध्रुवसधि का एक पुत्र। ११ अर्थसिद्धि का पुत्र। १२ दधीचि का एक पुत्र। १३ अजमीढ का एक पुत्र। १४ भरत का एक पुत्र। १५ एक नाग असुर। १६ प्रतीक का जामाता। १७ सुमेरु। १८ एक द्वीप का नाम। १९ सिद्ध। २० एक क

की संगीतरचना। २१ संन्यासियों का एक दंड जिसमें छह गाँठें होती हैं। इस वे भूत प्रेतों से अपना बचाव करने के लिये अपने पास रखते हैं। २२ मदनमस्त। २३ सोमवल्ली। विशेष दे० सुदर्शना[1]। २४ इंद्रनगरी। अमरावती (को०)।

सुदर्शन[2]—वि० जो १ जो देखने में सुंदर हो। प्रियदर्शन। सुखदर्शन। सुंदर। मनोरम। २ जो आसानी से देखा जा सके।

सुदर्शन चक्र—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का आयुध।

विशेष—मत्स्य पुराण के अनुसार सूर्य के असह्य तेज को कम करने के लिये यंत्र के द्वारा उनका तेज विभक्त किया गया और उस विभक्त तेज से सुदर्शन चक्र, शिव का त्रिशूल और इंद्र के वज्र का निर्माण किया गया। पद्म पुराण के अनुसार सभी देवों के तेज में अपने तेज को मिलाकर शिव ने इस द्वादशारयुक्त सुदर्शन चक्र को बनाया और विष्णु को प्रदान किया।

सुदर्शन चूर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार ज्वर की एक प्रसिद्ध औषध।

विशेष—इस चूर्ण के बनाने की विधि यह है—त्रिफला, दारुहल्दी, दोनों कटेरी, कनेर, काली मिर्च, पीपल, पीपलामूल, मूर्वा, गुडूच, धनियाँ, अडूसा, कुटकी, त्रायमान, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, कमलतंतु, नीम की छाल, पोहकर मूल, मुंगने (महिजन) के बीज, मुलहठी, अजवायन, इंद्रयव, भारंगी, फिटकरी, बच, तेजपत्र, कमलगट्टा, पद्मकाष्ठ, चंदन, अतीस, खरेंटी, वायविडंग, चित्रक, देवदारु, चव्य, लवंग, वंशलोचन, पद्माख, ये सब चीजें बराबर बराबर और इन सबकी तौल से आधा चिरायता लेकर सबको कूट पीसकर चूर्ण बनाते हैं। मात्रा एक टंक प्रति दिन सवेरे ठंढे जल के साथ है। कहते हैं, इसके सेवन से सब प्रकार के ज्वर, यहाँ तक कि विषमज्वर भी दूर हो जाता है। इसके सिवा खाँसी, साँस, पांडु, हृद्रोग, बवासीर, गुल्म आदि रोग भी नष्ट होते हैं।

सुदर्शन दंड—संज्ञा पुं० [सं० सुदर्शनदण्ड] वैद्यक के अनुसार ज्वर की एक औषध।

सुदर्शन द्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] जंबू द्वीप का एक नाम।

सुदर्शनपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] (हाथ में सुदर्शनचक्र धारण करनेवाले) श्री विष्णु।

सुदर्शना[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सोमवल्ली। चकवँगी। मधुपर्णिका।

विशेष—यह क्षुप जाति की वनस्पति है। यह रोएँदार होती है। पत्ते तीन से छह इंच के घेरे में गोलाकार तथा त्रिकोणाकार से होते हैं। इसमें गोल फूलों के गुच्छे लगते हैं जिनका रंग नारंगी का सा होता है वैद्यक के अनुसार इसका गुण मधुर, गरम और कफ, सूजन तथा वातरक्त दूर करनेवाला है।

२ एक प्रकार की मदिरा। ३ एक गंधर्वी का नाम। ४ पद्मसरोवर। ५ जंबू वृक्ष। ६ इंद्रपुरी। अमरावती। ७ शुक्ल पक्ष की रात्रि। ८ आज्ञा। आदेश। हुक्म। ९ सुंदर स्त्री। प्रियदर्शना स्त्री (को०)। १० स्त्री। औरत। नारी (को०)। ११ एक प्रकार की औषध।

सुदर्शना[2]—वि० स्त्री० जो देखने में सुंदर हो। सुंदरी।

सुदर्शनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्रपुरी। अमरावती। सुंदरी स्त्री।

सुदल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोरट या क्षीरमोरट नाम की लता। २ मुचकुंद। ३ सेना। दल।

सुदल[2]—वि० अच्छे दलों या पत्तोंवाला।

सुदला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरिवन। शालपर्णी। २ सेवती।

सुदशन—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुदशना] सुंदर दाँतोंवाला। जिसके सुंदर दाँत हों। सुदत।

सुदांत[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुदान्त] १ शाक्यमुनि के एक शिष्य का नाम। २ एक प्रकार की समाधि। ३ शतधन्वा का पुत्र।

सुदांत[2]—वि० अति शांत। बहुत सीधा। सधा हुआ। (घोड़ा)।

सुदाम—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रीकृष्ण के सखा एक गोप का नाम। २ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद। ३ दे० 'सुदामा'।

सुदामन—संज्ञा पुं० [सं०] १ जनक के एक मंत्री का नाम। २ एक प्रकार का दैवास्त्र।

सुदामा[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुदामन्] १ एक दरिद्र ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण का सहपाठी और परम सखा था और जिसे पीछे श्रीकृष्ण ने ऐश्वर्यवान् बना दिया था। २ श्रीकृष्ण का एक गोपसखा। ३ कंस का एक माली जो श्रीकृष्ण से उस समय मथुरा में मिला था, जब वे कंस के बुलाने से वहाँ गए थे। ४ एक पर्वत। ५ इंद्र का हाथी। ऐरावत। ६ समुद्र। सागर। ७ मेघ। बादल। ८ एक गंधर्व का नाम।

सुदामा[2]—संज्ञा स्त्री० १ स्कंद की एक मातृका। २ रामायण के अनुसार उत्तर भारत की एक नदी का नाम।

सुदामा[3]—वि० उत्तम रूप से दान करनेवाला। खूब देनेवाला।

सुदामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भागवत के अनुसार शमीक की पत्नी का नाम।

सुदाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तम दान। २ यज्ञोपवीत संस्कार के समय ब्रह्मचारी को दी जानेवाली भिक्षा। ३ विवाह के अवसर पर कन्या या जामाता को दिया जानेवाला दान। दहेज। ४ वह जो उक्त प्रकार के दान करे। (अर्थात् पिता, माता आदि)।

सुदारु—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवदारु। देवदार। २. धूप। सरल। सरल वृक्ष। ३ सुंदर काष्ठ। अच्छी लकड़ी। ४ विंध्य पर्वत का एक अंश। पारियात्र पर्वत।

सुदारुण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का दैवास्त्र।

सुदारुण[2]—वि० अत्यंत क्रूर या भयानक।

सुदावन ॐ—संज्ञा पुं० [सं० सुदामन] जनक का एक मंत्री। दे० 'सुदामन'। उ०—जाय सुदावन कह्यो जनक सों आवत रघुकुल नाहा। देखन को धाए पुरवासी भरि उमाह मन माँहा। —रघुराज (शब्द०)।

सुदास[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिवोदास का पुत्र तथा त्रित्सु का राजा। २ ऋतुपर्ण का पुत्र। ३. सर्वकाम का पुत्र। ४ च्यवन का

पुत्र। ५ बृहद्रथ का एक पुत्र। ६ एक प्राचीन जनपद। ७ अच्छा दास या सेवक।

सुदास[2]—वि० ईश्वर की सम्यक् रूप से पूजा या आराधना करनेवाला।

सुदि[1]—क्रि० वि० [सं०] शुक्ल पक्ष में।

सुदि[2]—संज्ञा स्त्री० दे० 'सुदी'।

सुदिन—संज्ञा पुं० [सं० सु+दिन] शुभ दिन। अच्छा दिन। मुबारक दिन। उ०—(क) मुनि तथास्तु कहि सुदिन विचारी। करवाई मख राख तयारी।—रघुराज (शब्द०)। (ख) तहाँ तुरत सुमत गणक गण ल्यायो तलकि निवाई। गुरु वशिष्ठ आज्ञानुसार ते दीन्ह्यो सुदिन बनाई रघुराज (शब्द०)। (ग) अस कहि कौशिक सुदिन बनायो। तहँ तुरत प्रस्थान पठायो।—रघुराज (शब्द०)।

मुहा०—सुदिन बनाना, सुदिन विचारना, सुदिन शोधना = किसी शुभ काम के लिये ज्योतिष शास्त्रानुसार अच्छा मुहूर्त निकालना।

सुदिनता संज्ञा स्त्री० [सं०] सुदिन का भाव।

सुदिनाह—संज्ञा पु० [सं०] पुण्य दिन। पुण्याह। शुभ दिन। प्रशस्त दिन।

सुदिव्—वि० [सं०] बहुत दीप्तिमान्। चमकीला।

सुदिवस—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुदिन'।

सुदिवातति—संज्ञा पुं० [सं० सुदिवातन्ति] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सुदिह्—वि० [सं०] १ सुतीक्ष्ण। (जैसे, दाँत)। २ बहुत चिकना या उज्वल।

सुदी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुदिव (=शुक्ल या शुद्ध) या सुदि] किसी मास का उजाला पक्ष। शुक्ल पक्ष। जैसे—चैत सुदी १, सावन सुदी ६।

सुदीक्षा संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

सुदीति[1]—संज्ञा पुं० [सं०] आंगिरस गोत्र के एक ऋषि का नाम।

सुदीति[2]—संज्ञा स्त्री० सुदीप्ति। उज्वल दीप्ति।

सुदीति[3]—वि० बहुत दीप्तिमान्। चमकीला।

सुदीपति—संज्ञा स्त्री० [सं० सुदीप्ति] दे० 'सुदीप्ति'। उ०—बाजतु है मृदु हाम मृदंग सुदीपति दीपनि को उजियारो —केशव (शब्द०)।

सुदीप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत अधिक प्रकाश। खूब उजाला।

सुदीप्त[1]—संज्ञा पुं० [सं०] चिचड़ा। चिचिड़क।

सुदीर्घ[2]—वि० बहुत अधिक लंबा। अति विस्तृत।

सुदीर्घवर्मा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपराजिता। कोयल लता। अमनपर्णी।

सुदीर्घजीवफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुदीर्घराजीवफला' [को०]।

सुदीर्घफलका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुदीर्घफलिका' [को०]।

सुदीर्घफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] ककड़ी। कर्कटी।

सुदीर्घफलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का बैंगन।

सुदीर्घराजीवफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की ककड़ी।

सुदीर्घा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चीना ककड़ी।

सुदीर्घा[2]—वि० स्त्री० अति दीर्घ। बहुत लंबी।

सुदुःख[1]—संज्ञा पुं० [सं०] अत्यंत कष्ट, पीड़ा या शोक।

सुदुःख[2]—वि० अति दारुण। कष्टकर।

सुदुःखित—वि० [सं०] अति पीड़ित। शोकातुर। व्यथित।

सुदुःश्रव—वि० [सं०] जो सुनने में बुरा हो। कानों को अप्रिय। जैसे,—अपशब्द निंदा, गाली, कर्कश शब्द आदि।

सुदुःसह—वि० [सं०] असह्य। जो सहने में कठिन हो।

सुदुकूल—वि० [सं०] उत्तम वस्त्र से निर्मित।

सुदुग्धा—वि० [सं०] अच्छा दूध देनेवाली। खूब दूध देनेवाली (गौ)।

सुदुराचार—वि० [सं०] अत्यंत बुरे आचरणवाला। निहायत बदचलन [को०]।

सुदुरापर्ष—वि० [सं०] १ जिसकी प्राप्ति अत्यंत कठिन हो। २ अत्यंत असह्य [को०]।

सुदुरार्त—वि० [सं०] जिसे समझाना अत्यंत कठिन हो [को०]।

सुदुरासद—वि० [सं०] जिस तक पहुँच बहुत कठिन हो। पहुँच के बाहर [को०]।

सुदुर्जय[1]—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्यूह [को०]।

सुदुर्जय[2]—वि० जिसे जीतना बड़ा कठिन हो [को०]।

सुदुर्जया—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों के अनुसार सिद्धि की दस अवस्थाओं में से एक [को०]।

सुदुर्जर—वि० [सं०] जिसका पाक कठिन हो। गुरुपाक [को०]।

सुदुर्दर्श—वि० [सं०] जिसे देखना कष्टदायक हो। अत्यंत विरूप। जो प्रियदर्शन न हो [को०]।

सुदुर्भग—वि० [सं०] अत्यंत भाग्यहीन। अभागा [को०]।

सुदुर्भिद—वि० [सं०] जिसका भेदन कठिन हो। अभेद्य [को०]।

सुदुर्मनस्—वि० [सं०] १ अत्यंत दुष्ट हृदयवाला या छोटे स्वभाव का। २ विक्षुब्ध मनवाला। परेशानियों में पड़ा हुआ [को०]।

सुदुर्मर्ष—वि० [सं०] जो सहनशक्ति से बाहर हो। एकदम असह्य [को०]।

सुदुर्लभ—वि० [सं०] १ जो अत्यंत दुर्लभ हो। अद्वितीय। नायाब २ जिसका पाना प्रायः असंभव हो। अप्राप्य [को०]।

सुदुर्वच—वि० [सं०] जिसकी बात का जवाब न हो [को०]।

सुदुर्विद, सुदुर्वेद—वि० [सं०] अत्यंत दुर्बोध। जो समझने में बहुत ही कठिन हो [को०]।

सुदुश्चर—वि० [सं०] १ जिसका करना अत्यंत कठिन हो। २ जो अत्यंत दुर्गम हो [को०]।

सुदुष्कर—वि० [सं०] अत्यंत कठिन। अत्यंत कष्टसाध्य [को०]।

सुदुश्चिकित्स—वि० [सं०] जिसका इलाज बहुत कठिन हो।

सुदुःप्रभ—संज्ञा पुं० [सं०] नकुल। नेवला [को०]।

सुदुष्प्राप—वि० [सं०] जिसकी प्राप्ति कठिन हो। जो सुलभ हो [को०]।

सुदु'तर, सुदुस्तार—वि० [स०] जिसे पार करना बडा कठिन हो [को०]।

सुदुस्त्यज—वि० [स०] जिसे त्यागना बहुत कठिन हो [को०]।

सुदूर[1]—वि० [स०] बहुत दूर का। अति दूरवर्ती। जैसे—सुदूर पूर्व मे।

सुदूर[2]—अव्य० बहुत दूर। अतिदूर।

सुदूर पराहत—वि० [स०] १ जो बहुत पहले नष्ट हो चुका हो। पूर्ण ध्वस्त। २ जो पूर्वनिर्णीत हो। पूर्वनिराकृत।

सुदूरपूर्व—सज्ञा पु० [स०] अति दूरस्थ पूर्वीय देश।

सुदूरमूल—सज्ञा पुं० [स० सुदृढमूल] धमासा। हिंगुआ।

सुदृढ—वि० [स० सुदृढ] बहुत दृढ। खूब मजबूत। जैसे,—सुदृढ बधन।

सुदृढत्वचा—सज्ञा स्त्री० [स० सुदृढत्वचा] गभारी। गम्हार।

सुदृश[1]—वि० [स०] २ सुदर नेत्रोवाला। २ पैनी या तीक्ष्ण दृष्टि वाला। ३ जो सुदर हो [को०]।

सुदृश[2]—सज्ञा पुं० [स०] बौद्धो का एक देववर्ग [को०]।

सुदृश[3]—सज्ञा स्त्री० [स०] रूपवती स्त्री [को०]।

सुदृष्टि[1]—सज्ञा पु० [स०] गिद्ध।

सुदृष्टि[2]—सज्ञा स्त्री० उत्तम दृष्टि।

सुदृष्टि[3]—वि० १ दूरदर्शी। २ तीक्ष्णदृष्टि। तीखी चितवनवाला।

सुदेल्ल—सज्ञा पु० [स०] सुदेष्ण पर्वत का एक नाम। (महाभारत)।

सुदेव—सज्ञा पु० [स०] १ उत्तम देवता। २ उत्तम क्रीडा करनेवाला। ३ एक काश्यप। ४ अक्रूर का एक पुत्र। ५ पौड्र वासुदेव का एक पुत्र। ६ देवल का पुत्र। ७ विष्णु का एक पुत्र। ८ अबरीष का एक सेनापति। ९ एक ब्राह्मण जिसने दमयती के कहने से राजा नल का पता लगाया था। १० परावसु गधर्व के नौ पुत्रो मे से एक जो ब्रह्मा के शाप से हिरण्याक्ष दैत्य के घर उत्पन्न हुआ था। ११ हर्यश्व का पुत्र और काशी का राजा।

सुदेवा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अरिह की पत्नी। २ विकुठन की पत्नी।

सुदेवी—सज्ञा स्त्री० [स०] भागवत के अनुसार नाभि की पत्नी और ऋषभ की माता।

सुदेव्य—सज्ञा पु० [स०] श्रेष्ठ देवताओ का समूह।

सुदेश[1]—पज्ञा पु० [स०] १ सुदर देश। उत्तम देश। अच्छा मुल्क। २ उपयुक्त स्थान। उचित स्थान। उ०—छूटि जात लाज तहाँ भूषण सुदेश केश टूट जात हार सब मिटत शृगार है। —भूषण (शब्द०)।

सुदेश[2]—वि० सुदर। उ०—(क) श्याम सुदर सुदेश पीत पट शीश मुकुट उर माला। जनु घन दामिनि रवि तारागण उदित एक ही काला।—सूर (शब्द०)। (ख) लटकन चारु भृकुटिया टेढी मेढी सुभग सुदेश सुभाए।—तुलसी (शब्द०)। (ग) सीय स्वयवर जनकपुर मुनि सुनि सकल नरेश। आए साज समाज सजि भूषन वसन सुदेश।—तुलसी (शब्द०)।

सुदेशिक—सज्ञा पुं० [स०] उत्तम पथप्रदर्शक [को०]।

सुदेष्ण—सज्ञा पुं० [स०] १ रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र। २ एक प्राचीन जनपद का नाम। ३ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। सुदेल्ल पर्वत। ४ राजा सगर के ज्येष्ठ पुत्र असमजस का दत्तक पुत्र।

सुदेष्णा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बलि की पत्नी। २ विराट की पत्नी और कीचक की बहन।

सुदेष्णु—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुदेष्णा'।

सुदेस[1]—सज्ञा पुं० [स० सुदेश] दे० 'सुदेश'।

सुदेश[1]—सज्ञा पु० [स० स्वदश] अपना देश। स्वदेश।

सुदेस[2]—वि० सुदर। उ०—अति सुदे ममृदु हरत चिकुर मन मोहन मुख बगराइ। मानो प्रगट कज पर मजुल अलि अवली फिर आइ। सूर०, १०।१०८।

सुदेसी†—वि० [स० स्व + देश, हिं० सुदेस + ई (प्रत्य०)] स्वदेशी। अपने देश का।

सुदेह[1]—सज्ञा पु० [स०] सुदर देह। सुदर शरीर।

सुदेह[2]—वि० सुदर। कमनीय। उ०—चले विदेह सुदेह हृदय हरि नेह बसाए। जरासध बल अध सैन सन बध मिलाए।—गिरधर (शब्द०)।

सुदैव—सज्ञा पुं० [स०] १ सौभाग्य। अच्छा भाग्य। अच्छी किसमत। २ अच्छा सयोग।

सुदोग्ध्री—वि० [स०] अधिक दूध देनेवाली (गौ आदि)।

सुदोघ[1]—वि० स्त्री० [स०] बहुत दूध देनेवाली (गौ)।

सुदोघ[2]—वि० दानशील। उदार।

सुदोह, सुदोहना—वि० [स०] सुख या आराम से दूहने योग्य। जिसे दूहने मे कोई कष्ट न हो।

सुदौमी—वि० [?] शीघ्रतापूर्वक। त्वरित।

सुद्दा—सज्ञा पुं० [अ० सुद्दह] दे० 'सुद्दी'।

सुद्दी—सज्ञा स्त्री० [अ० सुद्दह्] पेट का जमा हुआ वह सूखा मल जो फुलाकर निकाला जाय।

सुद्ध—वि० [स० शुद्ध, प्रा० सुद्ध] दे० 'शुद्ध'।

सुद्धाँ†—अव्य० [स० सह] सहित। समेत। मिलाकर। जैसे,—उसके सुद्धाँ सात आदमी थे।

सुद्धात—सज्ञा स्त्री० [स० शुद्धान्त] जनाना। (डि०)।

सुद्धा†—अव्व० [स० सह] दे० 'सुद्धाँ'।

सुद्धि[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शुद्ध (बुद्धि)] दे० 'सुध'। उ०—(क) हिम्मति गई वजीर की ऐसी कीनी बुद्धि। होनहार जैसी कछू तैसीयै मन सुद्धि।—सूदन (शब्द०)। (ख) जैसी हो भवितव्यता तैसी उपजै बुद्धि। होनहार हिरदे बसै बिसर जाय सब सुद्धि।—लल्लू (शब्द०)।

सुद्धि[2]—सज्ञा स्त्री० [स० शुद्धि] दे० 'शुद्धि'।

सुद्यु—सज्ञा पुं० [स०] पुरुवशी राजा चाम्पद के पुत्र का नाम।

सुद्युत्—वि० [स०] खूब प्रकाशमान। सुदीप्त।

सुद्युम्न—सज्ञा पुं० [स०] वैवस्वत मनु का पुत्र जो इल नाम से प्रसिद्ध है।

**विशेष**—अग्निपुराण मे इसकी कथा इस प्रकार दी है—एक बार हिमालय मे महादेव जी पार्वती जी के साथ क्रीड़ा कर रहे थे।

उस समय वैवस्वत मनु का पुत्र इड शिकार के लिये वहाँ जा पहुँचा। महादेव जी ने उसे शाप दिया, जिससे वह स्त्री हो गया। एक बार सोम का पुत्र बुध उसे देख कामासक्त हो गया और उसके सहवास से उसके गर्भ से पुरुरवा का जन्म हुआ। अत को बुध की आराधना करने पर महादेव जी ने उसे शाप-मुक्त कर दिया और वह फिर पुरुष हो गया।

सुद्रष्ट—वि० [सं० सदृष्ट] सौम्य दृष्टिवाला। जो दयावान हो। कृपा युक्त कृपालु। (डिं०)।

सुद्रष्टा—वि० [सं० सुद्रष्टृ] जिसकी दृष्टि तीक्ष्ण या पैनी हो।

सुद्विज—वि० [सं०] सुदर दाँतोवाला।

सुद्विजानन—वि० [स०] जिसका मुख सुदर दतपक्तियो से युक्त हो।

सुधंग—सज्ञा पुं० [हिं० सीधा + अग या सु + ढग?] अच्छा ढग। उ०—(क) नृत्य करहिं नट नदी नारि नर अपने अपने रग। मनहुँ मदनरति विविध वेष धरि नटत सुदेहु सुधग।—तुलसी (शब्द०)। (ख) कबहुँ चलत सुधग गति मो कबहुँ उघटत वैन। लोल कुडल गडमडल चपल नैननि सैन।—सूर (शब्द०)।

सुध[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शुद्ध (बुद्धि) या सु + धी] १ स्मृति। स्मरण। याद। चेत।

क्रि० प्र०—करना। रखना। होना।

मुहा०—सुध दिलाना = याद दिलाना। स्मरण करना। सुध न रहना = विस्मृत हो जाना। भूल जाना। याद न रहना। जैसे,—तुम्हारी तो किसी को सुध ही नही रह गई थी। सुध बिसरना = विस्मृत होना भूल जाना। सुध बिसराना या बिसारना = किसी को भूल जाना। किसी को स्मरण न रखना। उ०—तुम्हे कौन अनरीत सिखाई, सजन सुध बिसराई।—गीत (शब्द०)। सुध भूलना = दे० 'सुध बिसरना'। सुध भुलाना = दे० 'सुध बिसराना'।

२ चेतना। होश।

यौ०—सुध बुध = होश हवास।

मुहा०—सुध बिसरना = अचेत होना। होश मे न रहना। सुध बिसराना = अचेत करना। होश मे न रहने देना। सुध न रहना = होश न रहना। अचेत हो जाना। उ०—सुध न रही देखतु रहै कल न लखै बिनु तोहि। देखै अनदेखै तुहे कठिन दुहूँ विधि मोहि।—रतनहजारा (शब्द०)। सुध सँभालना = होश सँभालना। होश मे आना।

३ खबर। पता।

मुहा०—सुध लेना = पता लेना। हालचाल जानना। सुध रखना = चौकसी रखना। उ०—(क) जब प्रसमन की विलँब भयो तब सत्राजित सुध लीन्ही।—सूर (शब्द०)। (ख) दरदहिं दै जानत लला सुध लै जानत नाहिं। कहो विचारे नेहिया तब घाले किन जाहिं।—रतनहजारा (शब्द०)।

सुध[2]—वि० [स० शुद्ध] दे० 'शुद्ध'। उ०—सुकृत नीर मे नहाय ले भ्रम भार टरे सुध होय देह।—कबीर (शब्द०)।

सुंध[1]—सज्ञा स्त्री० [स० सुधा] दे० 'सुधा'। उ०—जाके रस को इंद्रहु तरसत सुधहु न पावत दाँज।—देव स्वामी (शब्द०)।

सुधन[1]—सज्ञा पु० [सं०] परावसु गधर्व के नौ पुत्रो मे से एक जो ब्रह्मा के शाप से (कोलकल्प मे) हिरण्याक्ष दैत्य के नौ पुत्रो मे से एक हुआ था।

सुधन[2]—वि० [स०] बहुत धनी। बडा अमीर।

सुधना—क्रि० अ० [हिं० शोधना] शुद्ध होना। ठीक होना। सूधा होना।

सुधनु—सज्ञा पुं० [स० सुधनुस] १ राजा कुरु का एक पुत्र जो सूर्य की पुत्री तपती के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। २ गौतम बुद्ध के एक पूर्वज।

सुधन्वा—वि० [स० सुधन्वन्] १ उत्तम धनुष धारण करनेवाला। २ अच्छा धनुर्धर।

सुधन्वा[2]—सज्ञा पु० १ विष्णु। २ विश्वकर्मा। ३ आगिरस। ४ वैराज का एक पुत्र। ५ सभूत का एक पुत्र। ६ कुरु का एक पुत्र। ७ शाश्वत का एक पुत्र। ८ विदुर। ९ एक राजा जिसे माधाता ने परास्त किया था। १० व्रात्य वैश्य और सवर्णा स्त्री से उत्पन्न एक जाति। ११ अनत। शेषनाग (को०)।

सुधन्वाचार्य—सज्ञा पु० [स०] व्रात्य वैश्य और सवर्णा स्त्री से उत्पन्न एक सकर जाति।

सुध बुध—सज्ञा स्त्री० [स० सु + धी + बुद्धि] होश हवास। चेत। ज्ञान। दे० 'सुध'।

मुहा०—सुध बुध जाती रहना = होश हवास जाता रहना। सुध बुध ठिकाने न होना = बुद्धि ठिकाने न होना। होश हवास दुरुस्त न होना। सुध बुध न रहना, सुध बुध मारी जाना = बुद्धि का लोप हो जाना। होश हवास न रहना। सुध बुध बिसराना = अचेत करना। होश मे न रहने देना। उ०—कान्हा ने कैसी बाँसुरी बजाई, मेरी सुध बुध बिसराई।—गीत। (शब्द०)।

सुधमना †[1] वि० [हिं० सुध (= होश) + मन] [वि० स्त्री० सुधमनी] जिसे होश हो। सचेत। उ०—जब कबहूँ कै सुधमनी होति तब सुनौ एहो रघुनाथ गात तकि पाए परिकै। भावते की मूरति को ध्यान आए त्यावति हे आँखै मूँदि गावति है आँसुन सो भरिकै।—रघुनाथ (शब्द०)।

सुधर[1] सज्ञा पुं० [स०] एक अर्हत् का नाम। (जैन)।

सुधर[2]—सज्ञा पुं० [डिं०] बया नामक पक्षी।

सुधरना—क्रि० अ० [स० शोधन, हिं० सुधना] बिगडे हुए का बनना। दोष या त्रुटियो का दूर होना। सशोधन होना। सस्कार होना। जैसे,—काम सुधरना, भाषा सुधरना, चाल सुधरना, घर सुधरना।

सयो० क्रि०—जाना।

सुधरवाना—क्रि० स० [हिं० सुधरना] सुधार कराना। सुधार करने के लिये किसी को प्रेरित करना।

सुधराई—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुधरना + आई (प्रत्य०)] १ सुधारने की क्रिया। सुधारने का काम। सुधार। २ सुधारने की मजदूरी।

सुधराव—सज्ञा पु० [हिं० सुधरना + आव (प्रत्य०)] सुधराई। बनाव। सशोधन।

सुधर्म[1]—सज्ञा पु० [स०] १ उत्तम धर्म। पुण्य कर्तव्य। २ जैन तीर्थंकर महावीर के दस शिष्यो मे से एक। ३ किन्नरो के एक राजा का नाम। ४ देवताओ का एक वर्ग (को०)।

सुधर्म[2]—वि० धर्मपरायण। धर्मनिष्ठ।

सुधर्मनिष्ठ—वि० [सं०] अपने धर्म पर दृढ रहनेवाला। सुधर्मी।

सुधर्मा[1]—वि० [सं० सुधर्म्मन्] अपने धर्म पर दृढ रहनेवाला। धर्मपरायण।

सुधर्मा[2]—सज्ञा पु० १ गृहस्थ। कुटुबपालक। कुटुबी। २ क्षत्रिय। ३ दशार्णो का एक राजा। ४ दृढनेमि का पुत्र। ५ जैनो के एक गणाधिप। ६ एक विश्वेदेव (को०)।

सुधर्मा[3]—सज्ञा स्त्री० १ इद्र का सभाकक्ष। देवसभा। २ द्वारकापुरी का एक नाम (को०)।

सुधर्मी[1]—वि० [स० सुधर्मिन्] धर्मपरायण। धर्मनिष्ठ।

सुधर्मी[2]—सज्ञा स्त्री० १ देवसभा। २ द्वारकापुरी (को०)।

सुधवाना—क्रि० स० [हिं० सुधरना या स० शोधन, हिं० सोधना का प्रेर० रूप] दोष या त्रुटि दूर कराना। शोधन कराना। ठीक कराना। दुरुस्त कराना।

सुधाँ—अव्य० [सं० सार्ध] दे० 'सुद्धाँ'। उ०—हाथी सुधाँ सब्ब हाथी परचो खेत। सग्राम मे स्वामि के काम के हेत।—सूदन (शब्द०)।

सुधाग—सज्ञा पुं० [सं० सुधाङ्ग] चद्रमा।

सुधाशु—सज्ञा पु० [स०] १ चद्रमा। २ कपूर।

सुधाशुतैल—सज्ञा पुं० [स०] कपूर का तेल।

सुधाशुरत्न—सज्ञा पुं० [सं०] मोती। मुक्ता।

सुधा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अमृत। पीयूष। अमी। २ मकरद। ३ गगा। ४ जल। ५ दूध। ६ रस। अर्क। ७ मूर्विका। मरोडफली। ८ आँवला। आमलकी। ९ हर्रे। हरीतकी। १० सेहुँड। थूहर। ११ सरिवन। शालपर्णी। १२ बिजली। विद्युत्। १३ पृथ्वी। धरती। जमीन। १४ विष। जहर। हलाहल। १५ चूना। १६. ईंट। इष्टका। १७ गिलोय। गुडुची। १८ रुद्र की स्त्री। १९ एक प्रकार का वृत्त। २० पुत्री। २१ वधू। २२ धाम। घर। २३ मधु। शहद। २४ श्वेतता। सफेदी (को०)।

सुधाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूधा (=सीधा)] सीधापन। सिधाई। सरलता। उ०—(क) सूधी सुहाँसी सुधाकर सो मुख शोध लई वसुधा की सुधाई। सूधे स्वभाव वसै सजनी वश कैसे किए अति टेढे कन्हाई।—केशव (शब्द०)। (ख) सीख सुधाई तीर तै तन गति कुटिल कमान। भावे छिल्ला बैठ तूँ भावै विच मैदान।—रतनहजारा (शब्द०)।

सुधाकठ—सज्ञा पु० [स० सुधाकण्ठ] कोकिल। कोयल।

सुधाकर—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा।

सुधाकार—सज्ञा पुं० [सं०] १ चूना पोतनेवाला। सफेदी करनेवाला। २ मिस्तरी। राज। मजूर। ३ सुधाकर। चद्रमा (को०)।

सुधाक्षार—सज्ञा पुं० [स०] चूने का खार।

सुधाक्षालित—वि० [सं०] सफेदी किया हुआ। जिसपर चूना पुता हुआ हो।

सुधागेह—सज्ञा पुं० [सं० सुधा + गेह (=घर)] चद्रमा। उ०—देह सुधागेह ताहि मृगहु मलीन कियो ताहु पर वाहु विनु राहु गहियतु है।—तुलसी (शब्द०)।

सुधाघट—सज्ञा पुं० [सं० सुधा + घट] चद्रमा। उ०—मुकता माल नदनदन उर अर्घ सुधाघट काति। तनु श्रीकठ मेघ उज्वल अति देखि महाबल भाँति।—सूर (शब्द०)।

सुधाजीवी—सज्ञा पुं० [सं० सुधाजीविन्] वह जो चूना पोतकर जीविका निर्वाह करता हो। सफेदी करनेवाला। मजदूर।

सुधात—वि० [सं०] अत्यत स्वच्छ (को०)।

सुधाता—वि० [स० सुधातृन्] सजानेवाला। सयोजित और सुव्यवस्थित करनेवाला।

सुधातु[1]—सज्ञा पुं० [स०] सोना। स्वर्ण।

सुधातु[2]—वि० जिसके पास स्वर्ण हो। धनी।

सुधातुदक्षिण—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो यज्ञादि मे सुवर्ण दक्षिणा देता हो। २ वह जिसे यज्ञयागादि मे बहुत अधिक दक्षिणा मिली हो।

सुधादीधिति—सज्ञा पुं० [सं०] सुधाशु। चद्रमा।

सुधाद्रव—सज्ञा पुं० [सं०] १ अमृत तुल्य एक प्रकार का द्रव पदार्थ। २ एक प्रकार की चटनी। ३ सफेदी (को०)।

सुधाधर[1]—सज्ञा पुं० [सं० सुधा + धर (=धारण करनेवाला)] चद्रमा। उ०—(क) श्री रघुवीर कह्यो सुन वीर वृक्ष शशी किधौ राहु डरायो। नाउँ सुधाधर है विष को घर ल्याई विरचि कलक लगायो।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। (ख) धार सुधार सुधाधर तें सुमनो वसुधा मे सुधा ढरकी परै।—सुदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सुधाधर[2]—वि० [सं० सुधा + अधर] जिसके अधरो मे अमृत हो। उ०—वासो मृग अक कहै तोसो मृगनैनी सबै वासो सुधाधर तोहूँ सुधाधर मानिए।—केशव (शब्द०)।

सुधाधरण—सज्ञा पुं० [सं० सुधा + धरण (=धारणकर्ता)] चद्रमा। (डिं०)।

सुधाधवल—वि० [सं०] १ सुधा या चूने के समान सफेद। २ चूना पुता हुआ। सफेदी किया हुआ।

सुधाधवलित—वि० [सं०] दे० 'सुधाधवल'।

सुधाधाम—सज्ञा पुं० [सं० सुधा + धाम] चद्रमा। उ०—धूमपुर के निकेत मानो धूमकेतु की शिखा की धूमयोनि मध्य रेखा सुधाधाम की।—केशव (शब्द०)।

सुधाधामा—सज्ञा पुं० [सं० सुधाधामन्] चद्रमा। चाँद।

सुधावार—सज्ञा पु० [स०] १. चद्रमा। २ सुरा का आधार। अमृतपात्र।

सुधावो—वि० [स० सुधा + धी] सुधा के समान। सुधायुक्त। अमृत के तुल्य। उ०—या कहि कौशिल्यहि वह आधी। देत भए नृप खीर सुधाधी।—सूदमाकर (शब्द०)।

सुधावौत—वि० [स०] चूना किया हुआ। सफेदी किया हुआ।

सुधानजर—वि० [स० सुधा या हिं० सूधा (=सीधी) + अ० नजर] दयावान्। कृपालु। (डिं०)।

सुधाना—क्रि० स० [हिं० सुध (=स्मृति)] सुध कराना। चेत कराना। स्मरण कराना। याद दिलाना।

सुधाना—क्रि० स० १ शोधने का काम दूसरे से कराना। दुरुस्त कराना। ठीक कराना। २ (लग्न या कुडली आदि) ठीक कराना। उ०—(क) पालनो आन्यो बनाइ, अति मन मान्यो सुहाइ। नीको सुभ दिन सुधाइ झूलौ हो झुलैया। सूर०, १०।४१। (ख) लिय तुरत ज्योतिषी बुलाई। लग्न घरी सब भाँति सुधाई।—रघुराज (शब्द०)।

सुधानिधि—सज्ञा पु० [स०] १ चद्रमा। उ०—मनहुँ सुधानिधि वर्षत घन पर अमृत धार चहुँ ओर।—सूर (शब्द०)। २ समुद्र। उ०—श्रीरामानुज उदार सुधानिधि अवनि कल्पतरु।—नाभादास (शब्द०)। ३ कपूर (को०)। ४ दडक वृत्त का एक भेद, जिसमे ३२ वर्ण होते हैं और १६ वार क्रम से गुरु लघु आते हैं।

सुधानिधि रस—सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो पारे, गधक, सोनामक्खी और लोहे आदि के योग से बनता है। इसका व्यवहार रक्तपित्त मे किया जाता है।

सुधापय—सज्ञा पु० [स० सुधापयस्] थूहर का दूध। स्नुहीक्षीर।

सुधापाणि—सज्ञा पुं० [स०] धन्वतरी। पीयूषपाणि।

विशेष—पुराणो के अनुसार समुद्रमथन के समय धन्वतरी जी हाथ मे सुधा या अमृत लिए हुए निकले थे, इसी से उनका नाम सुधापाणि या पीयूषपाणि पडा।

सुधापाषाण—सज्ञा पु० [स०] सफेद खली। सेतखरी।

सुधापूर—सज्ञा पुं० [स०] अमृत का प्रवाह या धारा।

सुधाभवन—सज्ञा पु० [स०] अस्तरकारी किया हुआ मकान।

सुधाभित्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सफेदी की हुई दीवार। २ इष्टकानिर्मित भित्ति। ईंटे की दीवाल (को०)। ३ पाँचवें मुहूर्त की आख्या या नाम (को०)।

सुधाभुज—सज्ञा पुं० [स० सुधाभुक्] अमृत भोजन करनेवाले, देवता।

सुधाभृत—सज्ञा पु० [स०] १ चद्रमा। २ कपूर (को०)। ३ यज्ञ।

सुधाभोजी—सज्ञा पुं० [स० सुधाभोजिन्] अमृत भोजन करनेवाले, देवता।

सुधाम—सज्ञा पु० [स० सुधामन्] १ चद्रमा। २ एक प्राचीन ऋषि का नाम। ३ रैवतक मन्वतर के देवताओ का एक गण। ४. पुराणानुसार क्रौच द्वीप के अतर्गत एक वर्ष के राजा का नाम।

सुधामय—वि० [स०] [वि० सुधामयी] १ सुधा से भरा हुआ। अमृतस्वरूप। २ चूने का बना हुआ।

सुधामय—सज्ञा पु० १ राजभवन। राजप्रासाद। २ ईंट या प्रस्तर से बना हुआ मकान (को०)।

सुधामयूख—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा।

सुधामुखी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम।

सुधामूली—सज्ञा स्त्री० [स०] सालम मिस्री। सालव मिस्री।

सुधामोदक—सज्ञा पुं० [स०] १ यवास शर्करा। शीर खिश्त। २ कपूर। कर्पूर (को०)। ३ वसलोचन। वशकर्पूर। विशेष दे० 'वसलोचन'।

सुधामोदकज—सज्ञा पुं० [स०] तुरजबिन की खाँड। तवराज खड।

सुधाय—सज्ञा पुं० [स०] सुख शाति। आराम चैन (को०)।

सुधायोनि—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा।

सुधार—सज्ञा पुं० [हिं० सुधरना] सुधरने की क्रिया या भाव। दोष या त्रुटियो का दूर किया जाना। सशोधन। सस्कार। इसलाह।

क्रि० प्र०—करना। होना।

सुधार—वि० तीक्ष्ण धारवाला जिसकी धार या नोक अत्यत तीक्ष्ण हो, जैसे, बाण (को०)।

सुधारक—सज्ञा पुं० [हिं० सुधार + क (प्रत्य०)] १ वह जो दोषो या त्रुटियो का सशोधन या सुधार करता हो। सस्कारक। सशोधक। २ वह जो धार्मिक, सामाजिक या राजनीतिक सुधार या उन्नति के लिये प्रयत्न या आदोलन करता हो।

सुधारना—क्रि० स० [हिं० सुधरना] १ दोष या बुराई दूर करना। बिगडे हुए को बनाना। दुरुस्त करना। सशोधन करना। २ सस्कार करना। सँवारना। उ०—दुहु कर कमल सुधारत बाना।—मानस, ६।११।

सुधारना—वि० [वि० स्त्री० सुधारनी] सुधारनेवाला। ठीक करनेवाला। (क) उ०—भगति गोपाल को सुधारनो है नर देह, जगत अधारनी है जगत उधारनो।—गिरधर (शब्द०)।

सुधारश्मि—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा।

सुधारस—सज्ञा पुं० [स०] १ सुधा। अमृत। २ दुग्ध। दूध (को०)।

सुधारा—वि० [हिं० सूधा + आरा (प्रत्य०)] सीधा। सरल। निष्कपट। उ०—आयो घोष बडो व्यापारी। लादि खेप गुणगान योग की ब्रज मे आनि उतारी। फाटक दै के हाटक माँगत भोरे निपट सुधारी। इनके कहे कौन दुहकार्थै ऐसो कोन अनारी।—सूर (शब्द०)।

सु ० [हिं० सुधार + ऊ (प्रत्य०)] सुधारनेवाला। नेवाला। सशोधक।

ो० [स०] एक प्रकार की गिलोय।

[स० सुधा + अवदात] दे० 'सुध

ा पुं० [स०] एक पर्वत का ना

**सुधावर्ष**—सज्ञा पुं० [स०] अमृत की वर्षा [को०]।

**सुधावर्षी**[1]—वि० [स० सुधावर्षिन्] अमृत बरसानेवाला।

**सुधावर्षी**[2]—सज्ञा पु० १ ब्रह्मा। २ कपूर (को०)। ३ चद्रमा (को०)। ४ एक बुद्ध का नाम।

**सुधावाप**—सज्ञा पुं० [स०] १ चद्रमा। २ कपूर। कपूर (को०)। ३ खीरा। त्रपुषी।

**सुधावामा**—सज्ञा स्त्री० [स०] खीरा। त्रपुषी।

**सुधावृष्ट**—सज्ञा स्त्री० [स०] अमृत की वर्षा। सुधा की वर्षा। उ०—सुधावृष्टि भै दुहु दल ऊपर।—मानस, ६।११३।

**सुधाशर्करा**—सज्ञा स्त्री० [स०] खली। खरी। सेतखरी।

**सुधाशुभ्र**—वि० [सं०] १ सुधा सदृश श्वेत। सुधामित। २ जो सुधा द्वारा शुभ्र हो। सफेदी किया हुआ [को०]।

**सुधाश्रवा**[1]—सज्ञा पुं० [स० सुधा + श्रवा (=प्रवाह), स्रव, स्रवण (=गिराना, बहाना)] अमृत बरसानेवाला। उ०—चल्यो तवा सो तप्त दवा दुति भूरिश्रवा भट। सुधाश्रवा सिर छत्र हवा जव सुरथ नवा पट।—गोपालचद (शब्द०)।

**सुधासदन**—सज्ञा पु० [सं० सुधा + सदन] चद्रमा। उ०—सरद सुधासदन छविहि निंदै वदन अरुन आयत नव नलिन लोचन चारु।—तुलसी (शब्द०)।

**सुधासमुद्र**—सज्ञा पुं० [सं०] अमृत का समुद्र।

**सुधासागर**—सज्ञा पुं० [स०] अमृत का समुद्र।

**सुधासिंधु**—सज्ञा पु० [स० सुधासिन्धु] दे० 'सुधासागर' [को०]।

**सुधासिक्त**—वि० [स०] अमृत से सिचित।

**सुधासित**—वि० [स०] १ सफेदी किया हुआ। चूना पुता हुआ। २ चूना या अमृत की तरह दीप्त और श्वेत (को०)।

**सुधासू**—सज्ञा पु० [स०] अमृत उत्पन्न करनेवाला, चद्रमा।

**सुधासूति**—सज्ञा पु० [सं०] १ चद्रमा। २ यज्ञ। ३ कमल।

**सुधास्पर्धी**—वि० [स० सुधास्पर्धिन] अमृत की बराबरी करनेवाला। अमृत के समान मधुर। (भाषण आदि)।

**सुधास्रवा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गले के अदर की घटी। छोटी जीभ। कौवा। २ रुद्रवती। रुदती।

**सुधाहर**—सज्ञा पु० [स०] गरुड।

**सुधाहर्ता**—सज्ञा पु० [सं० सुधाहर्तृ] गरुड का नाम [को०]।

**सुधाहृत्**—सज्ञा पु० [स०] गरुड।

**सुधाह्रद**—सज्ञा पु० [सं०] अमृत का सरोवर।

**सुधि**—सज्ञा स्त्री० [सं० शुद्ध (बुद्धि) या सु + धी (=बुद्धि)] दे० 'सुध'। उ०—(क) वह सुधि आवत तोहि सुदामा। जब हम तुम बन गए लकरियन पठए गुरु की भामा।—सूर (शब्द०)। (ख) रामचद्र विख्यात नाम यह सुर मुनि की सुधि लीनी। —सूर (शब्द०)।

**सुधित**—वि० [सं०] १ सुव्यवस्थित। सुरक्षित। २ अच्छी तरह सिद्ध। जैसे, अन्न आदि (को०)। ३ सुधा या अमृत के समान। ४ सदय। कृपालु। साधु। भद्र (को०)। ५ लक्ष्य पर ठीक ठीक साधा हुआ। जैसे, बाण, कुत आदि (को०)।

**सुधिति**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कुठार। कुल्हाडी। परशु। २ वज्र।

**सुधी**[1]—सज्ञा पु० [स०] विद्वान् व्यक्ति। पडित। शिक्षक।

**सुधी**[2]—सज्ञा स्त्री० १ सद्बुद्धि। सुबुद्धि [को०]।

**सुधी**[1]—वि० १ उत्तम बुद्धिवाला। बुद्धिमान्। चतुर। २ धार्मिक।

**सुधीर**—वि० [स०] जिसमे यथेष्ट धैर्य हो। धैर्यवान्।

**सुधुम्नानी**—सज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार पुष्कर द्वीप के सात खडो मे से एक। उ०—एक सुधुम्नानी कह और मनोजल जानु। चित्ररेफ है तीसरो चौथो गणि पवमानु। पचम जानि पुरोजवहि छठो विमल वहु रूप। विश्वधातु है सात जो यह खडनि को रूप।—केशव (शब्द०)।

**विशेष**—यह शब्द सस्कृत के कोशो मे नही मिलता।

**सुधूपक**—सज्ञा पुं० [स०] श्रीवेष्ट नामक गधद्रव्य।

**सुधूम्य**—सज्ञा पु० [स०] स्वादु नामक एक गधद्रव्य।

**सुधूम्रवर्णा**—सज्ञा स्त्री० [स०] अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक जिह्वा का नाम।

**सुधृति**—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक राजा का नाम जो मिथिला के महावीर का पुत्र था। २ राज्यवधन का पुत्र।

**सुधोद्भव**—सज्ञा पु० [स०] धन्वतरि।

**विशेष**—समुद्रमथन के समय धन्वतरि सुधा लिए हुए निकले थे, इसी से इन्हे 'सुधोद्भव' कहते है।

**सुधोद्भवा**—सज्ञा स्त्री० [स०] हरीतकी। हर्रे। हड।

**सुधौत**—वि० [स०] १ अच्छी तरह साफ किया हुआ। धुला हुआ। स्वच्छ [को०]।

**सुध्युपास्य**—सज्ञा पु० [स०] १ परमेश्वर, जो सुधी जनो के उपास्य है। २ एक प्रकार का राजप्रासाद। ३ कृष्ण का एक सखा। ४ बलदेव का मूसल [को०]।

**सुध्युपास्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ औरत। नारी। स्त्री। २ पार्वती। उमा। ३ पार्वती की एक सखी। ४ एक प्रकार का राग।

**सुनद**[1]—सज्ञा पुं० [स० सुनन्द] १ एक देवपुत्र। २ श्रीकृष्ण का एक पार्षद्। ३ बलराम का मूसल। ४ कुजृभ दैत्य का मूसल जो विश्वकर्मा का बनाया हुआ माना जाता है। ५ बारह प्रकार के राजभवनो मे से एक।

**विशेष**—यह सुनद नामक राजप्रासाद राजाओ के लिये विशेष शुभकर माना गया है। कहते है, इसमे रहनेवाले राजा को कोई परास्त नही कर सकता। 'युक्तिकल्पतरु' के अनुसार इस भवन की लबाई राजा के हाथ के परिमाण मे २१ हाथ और चौडाई ४० हाथ होनी चाहिए।

६ एक बौद्ध श्रावक।

**सुनद**[2]—वि० आनददायक।

**सुनदक**—सज्ञा पु० [सं० सुनन्दन] शिव का एक गण।

**सुनदन**—सज्ञा पुं० [सं० सुनन्दक] १ पुराणानुसार कृष्ण के एक पुत्र का नाम। २ पुरीषभीरु का एक पुत्र। ३ भूनदन का भाई।

सुनंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुनन्दा] १ उमा। गौरी। २ उमा की एक सखी। ३ कृष्ण की एक पत्नी। ४ बाहु और वालि की माता। ५ चेदि के राजा सुबाहु की बहन। ६ सार्वभौम दिग्गज की पत्नी। ७ दुष्यत के पुत्र भरत की पत्नी। ८ प्रतीप की पत्नी। ९. एक नदी का नाम। १० सर्वार्थसिद्धि नद की बडी स्त्री। ११ सफेद गौ। १२ गोरोचना। गोरोचन। १३ अर्क-पत्री। इसरौल। १४ एक तिथि। १५ नारी। स्त्री। औरत।

सुनंदिनी—संज्ञा स्त्री० [स० सुनन्दिनी] १ आरामशीतला नामक पत्रशाक। २ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे 'स ज स ज ग' रहते हैं। इसे प्रबोधिता और मजुभाषिणी भी कहते हैं।

सुन†—वि०, संज्ञा पु० [स० शून्य] दे० 'सुन्न'।

सुनका†—संज्ञा पु० [देश०] चौपायो का एक रोग जो उनके कठ मे होता है। गरारा। घुरकवा।

सुनकातर—संज्ञा पुं० [स० स्वन, हिं० सोन + कातर] १ एक प्रकार का साँप।

सुनकिरवा—संज्ञा पु० [हिं० सोना + किरवा (= कीडा)] एक प्रकार का कीडा जिसके पर पन्ने के रग के होते है। उ० - गोरी गद-कारी परे हँसत कपोलनि गाड। कैसी लसति गँवारि यह सुन-किरवा की आड।—बिहारी (शब्द०)। २ † एक प्रकार का क्षुप।

सुनक्षत्र[1]—संज्ञा पु० [स०] १ उत्तम नक्षत्र। २ एक राजा का नाम जो मन्देव का पुत्र था। ३ निरमित्र का पुत्र।

सुनक्षत्र[2]—उत्तम नक्षत्रवाला।

सुनक्षत्रा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ कर्म मास का दूसरा नक्षत्र। २ कार्तिकेय की एक मातृका।

सुनखरी†—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का धान जो आश्विन के अत और कार्तिक के प्रारभ मे होता है।

सुनगुन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना + अनु + गुन] १ किसी बात का भेद। टोह। सुराग।

क्रि० प्र०—मिलना।—लगना।

२ कानाफूसी। अस्पष्ट चर्चा।

सुनजर—वि० [स० सु + फा० नजर] दयावान्। कृपालु। (डिं०)।

सुनत[1]—संज्ञा स्त्री० [अ० सुन्नत] दे० 'सुन्नत'।

सुनत[2]—वि० [स०] अत्यत नम्र या झुका हुआ।

सुनति†—संज्ञा स्त्री० [अ० सुन्नत] दे० 'सुन्नत'। उ०—(क) जो तुरुक तुरुकिनी जाया। पेटै काहे न सुनति कराया।—कबीर (शब्द०)। (ख) कासिहु ते कला जाती मथुरा मसीद होती सिवाजी न होते तो सुनति होत सब की।—भूषण (शब्द०)।

सुनना—क्रि० स० [स० श्रवण तुल० प्रा० सुणोति] १. श्रवणेंद्रिय के द्वारा शब्द का ज्ञान प्राप्त करना। कानो के द्वारा उनका विषय ग्रहण करना। श्रवण करना। जैसे,—फिर आवाज दो, उन्होंने सुना नहोगा।

सयो० क्रि०—पडना।—रखना।

मुहा० सुनी अनसुनी कर देना = कोई बात सुनकर भी उसपर ध्यान न देना। किसी बात को टाल जाना। सुनी सुनाई = जिसे केवल सुनकर जाना गया हो, प्रत्यक्ष देखा न गया हो। जैसे, सुनी सुनाई बात।

२ किसी के कथन पर ध्यान देना। किसी की उक्ति पर ध्यान-पूर्वक विचार करना। कान देना। जैसे,—कथा सुनना, पाठ सुनना, मुकदमा सुनना। ३ भली बुरी या उलटी सीधी बाते श्रवण करना। जैसे,—(क) मालम होता है, तुम भी कुछ सुनना चाहते हो। (ख) जो एक कहेगा, वह चार सुनेगा।

सुनफा—संज्ञा स्त्री० [स०] ज्योतिष का एक योग।

विशेष—सूर्य के अतिरिक्त जब कोई ग्रह चद्रमा के बाद द्वितीय स्थिति मे आ बैठता है तब 'सुनफा योग' होता है।

सुनबहरा†—वि० [हिं० सुनना + बहरा] पूरी तरह सुनकर या श्रवण करके भी बधिर का सा आचरण करना। सुनकर भी न सुनने का भाव व्यक्त करना।

सुनबहरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुन्न + बहरी ?] १ एक प्रकार का रोग जिसमे पैर फूल जाता है। श्लीपद। फोलपा। २ एक प्रकार का कुष्ठ रोग जिसमे रोग से आक्रांत अग या शरीर का भाग सुन्न हो जाता है और वहाँ स्पर्श या आघात की अनुभूति नही होती।

सुनय—संज्ञा पु० [स०] १ सुनीति। उत्तम नीति। २. सदाचार। सद्व्यवहार (को०)। ३ परिप्लव राजा का पुत्र। ४ ऋत का एक पुत्र। ५. खनित्र का पुत्र।

सुनयन[1]—संज्ञा पु० [स०] मृग। हरिन।

सुनयन[2]—वि० [स्त्री० सुनयना] सुदर आँखोवाला। सुलोचन।

सुनयना—संज्ञा स्त्री० [स०] १ राजा जनक की पत्नी। २ नारी। स्त्री। औरत। ३ सुदर नेत्रोवाली स्त्री (को०)।

सुनर—संज्ञा पुं० [स० सु + नर] १ अर्जुन। (डिं०)। २ सुदर पुरुष।

सुनरिया‡—संज्ञा स्त्री० [स० सुन्दरी, सु + नरी + इया (प्रत्य०)] सुदर नारी। सुदर स्त्री। उ०—प्यारे की पियरिया जगत से नियरिया सुनरिया अनूठी तोरी चाल।—बलबीर (शब्द०)।

सुनरी†—संज्ञा स्त्री० [स० सुन्दरी] दे० 'सुनरिया'।

सुनर्द—वि० [स०] गभीर गर्जन या नाद करनेवाला (को०)।

सुनवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना + वाई (प्रत्य०)] १ सुनने की क्रिया या भाव। २ मुकदमे आदि का पेश होकर सुना जाना। ३ किसी शिकायत, फरियाद आदि का सुना जाना। जैसे, तुम लाख चिल्लाया करो, वहाँ कुछ सुनवाई ही नही होगी।

सुनवैया—वि० [हिं० सुनना + वैया (प्रत्य०)] १ सुननेवाला। २ सुनानेवाला। उ०—मगल सदा ही करै राम ह्व प्रसन्न, सदा राम रसिकावली सुनैया सुनवैया को।—रघुराज (शब्द०)।

सुनस—वि० [स०] सुदर नाकवाला।

सुनसर—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का गहना।

सुनसान[1]—वि० [स० शून्य + स्थान] १ जहाँ कोई न हो। खाली। निर्जन। जनहीन। उ०—(क) ये तेरे वनपथ परे सुनसान

उजारू।—श्रीधर पाठक (शब्द०)। (ख) स्वामी हुए बिना सेवक के नगर मनुष्यो बिन सुनसान।—श्रीधर पाठक (शब्द०)। (ग) सुनसान कहुँ गभीर बन कहुँ सोर बन पशु करत है।—उत्तररामचरित्र (शब्द०)। २ उजाड। वीरान।

सुनसान[2]—सज्ञा पुं० सन्नाटा। उ०—निशा काल अतिशय अँधियारा छाय रहा सुनसान।—श्रीधर पाठक (शब्द०)।

सुनह—सज्ञा पुं० [स०] जन्हु का एक पुत्र।

सुनहरा—वि० [हिं० सोना] [वि० स्त्री० सुनहरी] दे० 'सुनहला'।

सुनहला—वि० [हिं० सोना+हला(प्रत्य०)] [स्त्री० सुनहली] सोने के रग का। सोने का सा। जैसे,—सुनहला काम। सुनहला रग।

सुनाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना+आई (प्रत्य०)] दे० 'सुनवाई'।

सुनाकुत, सुनाकृत—सज्ञा पुं० [स०] काली हलदी। कचूर। कर्पूरक।

सुनाद[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ शख। २ सुदर नाद या ध्वनि।

सुनाद[2]—वि० सुदर नाद या शब्दवाला।

सुनादक—सज्ञा पुं० वि० [स०] दे० 'सुनाद'।

सुनाना—क्रि० स० [हिं० सुनना का प्रेर० रूप] १ दूसरे को सुनने मे प्रवृत्त करना। कर्णगोचर कराना। श्रवण कराना। २ खरी-खोटी कहना। जैसे,—तुमने भी उसे खूब सुनाया।

सयो० क्रि०—डालना —देना।

सुनानी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना+आनी (प्रत्य०)] दे० 'सुनावनी'।

सुनाभ[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ सुदर्शन चक्र। २ मैनाक पर्वत। ३ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ४ वरुण का एक मत्री। ५ गरुड का एक पुत्र। ६ पर्वत। महीधर (को०)। ७ एक प्रकार का मल्ल जिसका प्रयोग अस्त्रो पर किया जाता था।

सुनाभ[2]—वि० १ सुदर नाभि या मध्य भागवाला।

सुनाभक—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुनाभ'।

सुनाभा—सज्ञा स्त्री० [स०] कटभी। करही। हरिमल।

सुनाभि—वि० [स०] सुदर नाभिवाला।

सुनाम—सज्ञा पुं० [सं०] यश। कीर्ति। ख्याति।

सुनाम द्वादशी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक व्रत जो वर्ष की बारहो शुक्ला द्वादशियो को किया जाता है।

विशेष—अगहन महीने की शुक्ला द्वादशी को इस व्रत का आरभ होता है। अग्निपुराण मे इसका बडा माहात्म्य लिखा है।

सुनामा[1]—सज्ञा पु० [स० सुनामन्] १ कस के आठ भाइयो मे से एक। २ सुकेतु के एक पुत्र का नाम। ३ स्कद का एक पार्षद। ४ वैनतेय का एक पुत्र।

सुनामा[2]—वि० १ यशस्वी। कीर्तिशाली। २ सुदर नामवाला (को०)।

सुनामिका—सज्ञा स्त्री० [स०] लायमाणा लता। लायमान।

सुनामी—सज्ञा स्त्री० [स०] देवक की पुत्री और वसुदेव की पत्नी।

सुनायक—सज्ञा पु० [स०] १ कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम। २ एक दैत्य का नाम। ३ वैनतेय के एक पुत्र का नाम। ४ वह व्यक्ति जो अच्छा या योग्य नायक हो।

सुनार[1]—सज्ञा पुं० [स० स्वर्णकार] [स्त्री० सुनारिन, सुनारी] सोने, चाँदी के गहने आदि बनानेवाली जाति। स्वर्णकार।

सुनार[2]—सज्ञा पुं० [स०] १ कुतिया का दूध। २ साँप का अडा। ३ चटक पक्षी। गोरा। गौरैया।

सुनार[3]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सु+नार (=नारी)] सुदर स्त्री।

सुनारी[1]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुनार+ई (प्रत्य०)] १ सुनार का काम। २ सुनार की स्त्री। उ०—धाइ जनी नायन नटी प्रकट परोसिन नारि। मालिन बरइन शिल्पिनी चुरहेरनी सुनारि।—केशव (शब्द०)।

सुनारी[2]—सज्ञा स्त्री० [स० सु+नारी] सुदर स्त्री।

सुनाल[1]—सज्ञा पुं० [सं०] रक्त कमल। लाल कमल। लामज्जक।

सुनाल[2]—वि० जिसकी नाल सुदर हो [को०]।

सुनालक—सज्ञा पुं० [स०] अगस्त। वकपुष्प का वृक्ष।

सुनावनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना+आवनी (प्रत्य०)] १. कहीं विदेश से किसी सबधी आदि की मृत्यु का समाचार आना।

क्रि० प्र०—आना।

२ वह स्नान आदि कृत्य जो परदेश से किसी सबधी की मृत्यु का समाचार आने पर होता है।

क्रि० प्र०—मे जाना।

सुनासीर—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुनासीर'।

सुनास[1]—वि० [सं०] वि० 'सुनस'।

सुनासा[2]—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुदर एव सुडौल नासिका। २ कौआठोठी। काकनासा।

सुनासिक—वि० [सं०] जिसकी नाक सुदर हो। सुदर नाकवाला। सुनास।

सुनासिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ कौआठोठी। काकनासा। २ सुदर नासिका।

सुनासीर—सज्ञा पुं० [स०] १ इद्र। उ०—सुनासीर सत सरिस सो सतत करै विलास।—मानस, ६।१०। २ देवता। अमर।

सुनाहक(पु)—क्रि० वि० [हिं० सु+फा० ना+अ० हक] दे० 'नाहक'।

सुनिगूढ—वि० [स०] जो अत्यत निगूढ हो। सुनिभृत [को०]।

सुनिग्रह—वि० [सं०] जो भली प्रकार नियत्रित हो। २ जो सरलता से नियत्रण के योग्य हो। दुर्निग्रह का उलटा।

सुनिद्र—वि० [सं०] जिसे अच्छी नीद आई हो। अच्छी तरह सोया हुआ। सुनिद्रित।

सुनिद्रित—वि० [सं०] दे० 'सुनिद्र'।

सुनिनद, सुनिनाद—वि० [स०] १ सुदर नाद या शब्द करनेवाला। २ जिसका स्वर सुदर हो।

सुनिभृत—वि० [स०] अत्यत निभृत या एकात। अत्यत गूढ।

सुनिमय—वि० [सं०] जो सरलता से विनिमय के योग्य हो।

सुनियत—वि० [स०] १ सुव्यवस्थित। सुनिर्धारित। सुनिश्चित। २ जिसके रखने मे सावधानी बरती गई हो।

**सुनियम**—सज्ञा पुं० [सं०] अच्छी व्यवस्था। उत्तम नियम या मर्यादा।

**सुनियाना**† क्रि० अ० [हिं० सुन्न + इयाना (प्रत्य०)] (फसल का) रोग से सूख जाना या मारा जाना (रुहेलखड)।

**सुनिरुहन** सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का वस्तिकर्म।

**सुनिरूढ** वि० [सं०] जिसे ओषधि से अच्छी तरह रेचन कराया गया हो [को०]।

**सुनिरूहण**—सज्ञा पु० [स०] उत्तम जुलाब या रेचन। दे० 'सुनिरुहन'।

**सुनिर्णिक्त**—वि० [स०] सम्यक् परिष्कार किया हुआ। अच्छी तरह प्रमृष्ट [को०]।

**सुनिर्यास**—सज्ञा पुं० [स०] लिगिनी नामक वृक्ष।

**सुनिर्यासा**—सज्ञा स्त्री० [सं०] जिगिनी वृक्ष। विशेष दे० 'जिगिन' [को०]।

**सुनिश्चय** सज्ञा पुं० [स०] १ अच्छा निश्चय। २ दृढ निश्चय

**सुनिश्चल**[1]—सज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

**सुनिश्चल**[2] वि० अचल। अटल [को०]।

**सुनिश्चित**[1]—सज्ञा पुं० [स०] एक बुद्ध का नाम।

**सुनिश्चित**[2]—वि० दृढता से निश्चय किया हुआ। भली भाँति निश्चित किया हुआ।

**सुनिश्चितपुर**—सज्ञा पुं० [स०] काश्मीर का एक प्राचीन नगर।

**सुनिषण्ण**—सज्ञा पुं० [स०] चौपतिया या सुसना नाम का साग। शिग्रियारी। उटगन।

विशेष—कहते है, यह साग खाने से अच्छी नीद आती है, इसी से इसका नाम सुनिषण्ण (जिससे अच्छी नीद आवे) पडा है।

**सुनिषण्णक**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सुनिषण्ण'।

**सुनिष्टप्त**—वि० [स०] १ जो खूब निष्टप्त किया गया हो। अच्छी तरह तपाया या गलाया हुआ। २ खूब पकाया हुआ [को०]।

**सुनिस्त्रिंस**—सज्ञा पुं० [स०] तेज धारवाली तलवार।

**सुनीच**—सज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के अनुसार किसी ग्रह का किसी राशि के किसी विशेष अश मे अवस्थान। जैसे,—रवि यदि मेष और तुला राशि मे हो तो नीचस्थ कहलाता है, और इसी तुला राशि के किसी विशेष अश मे पहुँच जाने पर 'सुनीच'।

**सुनीत**[1]—सज्ञा पु० [सं०] १ बुद्धिमत्ता। समझदारी। २ नीतिमत्ता। ३ शिष्टता। विनम्रता [को०]। ४ एक राजा का नाम जो सुबल का पुत्र था।

**सुनीत**[2]—वि० भद्र। शिष्ट। विनम्र [को०]।

**सुनीति**[1]—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्तम नीति। २ राजा उत्तानपाद की पत्नी और ध्रुव की माता।

विशेष—विष्णुपुराण मे लिखा है कि राजा उत्तानपाद की दो पत्नियाँ थी सुनीति और सुरुचि। सुरुचि को राजा बहुत चाहता था और सुनीति से बहुत घृणा करता था। सुनीति को 'ध्रुव' नामक एक पुत्र हुआ जिसने तप द्वारा भगवान् को प्रसन्न कर राजसिंहासन प्राप्त किया। विशेष दे० 'ध्रुव'।

**सुनीति**[2]—सज्ञा पुं० १ शिव। २ विदूरथ का एक पुत्र।

**सुनीति**[3]—वि० अच्छा नीतिज्ञ या नीतियुक्त [को०]।

**सुनीथ**[1] सज्ञा पुं० [स०] १ कृष्ण का एक पुत्र। २ सतति का पुत्र। ३ सुपेण का एक पुत्र। ४ सुबल का एक पुत्र। ५ शिशुपाल का एक नाम। ६ एक दानव का नाम। ७ एक प्रकार का वृत्त। ८ ब्राह्मण (को०)।

**सुनीथ**[2] वि० न्यायपरायण। नीतिमान्।

**सुनीथा**—सज्ञा स्त्री० [स०] मृत्यु की पुत्री और अग की पत्नी।

**सुनील**[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ अनार का पेड। दाडिम वृक्ष। २ लालमज्जक। लाल कमल।

**सुनील**[2]—वि० अत्यत नील वर्ण। बहुत नील रग।

**सुनीलक**—सज्ञा पुं० [सं०] १ नील भृगराज। काला भँगरा। २ नीलकात मणि। नीलम। ३ पियासाल का वृक्ष। नीलासन (को०)।

**सुनीला**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चणिका तृण। चनिका घास। २ नीलापराजिता। नीली अपराजिता। नीली कोयल। ३ अतसी। अलसी। तीसी।

**सुनु**—सज्ञा पु० [सं०] जल।

**सुनेत्र**[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। २ तेरहवें मनु का एक पुत्र। ३ बौद्धो के अनुसार मार का एक पुत्र। ४ चक्रवाक। चकवा।

**सुनेत्र**[2]—वि० [वि० स्त्री० सुनेत्रा] सुदर नेत्रोवाला। सुलोचन।

**सुनेत्रा**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] साख्य के अनुसार नौ तुष्टियो मे से एक।

**सुनेत्रा**[2]—वि० स्त्री० सुदर नेत्रोवाली। सुलोचना।

**सुनैया**Ⓢ—वि० [हिं० सुनना + ऐया (प्रत्य०)] १ सुननेवाला। जो सुने। उ०—द्रौपदी विचारैं रघुराज आज जाति लाज सब हैं घरैया पै न टेर को सुनैया है।—रघुराज (शब्द०)। २ सुनानेवाला।

**सुनोची**—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का घोडा। उ०—जरदा औ जाग जिरही से जग जाहर, जवाहर हुकुम सौ जवाहर झलक के। मगसी मुजनस सुनोची स्यामकर्न स्याह, सिरगा सजाए जे न मदिर अलक के।—सूदन (शब्द०)।

**सुनौ**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] अच्छी नौका या नाव।

**सुनौ**[2]—सज्ञा पु० १ जल। २ वह जिसके पास अच्छी नौका हो [को०]।

**सुन्न**[1]—वि० [सं० शून्य, प्रा० सुन्न] निर्जीव। स्पदनहीन। निस्तब्ध। जडवत्। निश्चेष्ट। निश्चल। जैसे,—ठढ के मारे उसके हाथ पैर सुन्न हो गए। उ०—(क) यह बात सुनकर भाग्यवती सुन्न सी हो गई।—श्रद्धाराम (शब्द०)। (ख) तहाँ लगी विरहागि

नाहिं क्यो चलि कै पेखत। सुकवि सुन्न ह्वै जाय न प्यारी देखत देखत।—अम्बिकादत्त (शब्द०)। (ग) निरखि कम की छाती धडकी। सुन्न समान भई गति धडकी।—गिरधर (शब्द०)।

सुन्न—सज्ञा पुं० शून्य। सिफर। उ०—(क) यथा सुन्न दस गुन्न बिन अक गने नहिं जात।—श्रद्धाराम (शब्द०)। (ख) अगनित बढत उदोत लखउ इक बेदी दीने। कह्यो सुन्न को ऐसो गुन को गनित नवीने।—अम्बिकादत्त (शब्द०)।

सुन्न[1]—वि० दे० 'सुन्नसान', 'सुनसान'।

सुन्नत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मुसलमानो की एक रस्म जिसमे लडके की लिंगेंद्रिय के अगले भाग का बढा हुआ चमडा काट दिया जाता है। खतना। मुसलमानी। २ तरीका। पद्धति। कायदा (को०)। ३ प्रकृति। स्वभाव (को०)। ४ मार्ग। राह। सरणि (को०)। ५ वह पद्धति या मार्ग जिसपर मुहम्मद चले (को०)।

सुन्नति—सज्ञा स्त्री० [अ० सुन्नत] खतना। मुसलमानी। दे० 'सुन्नत'। उ०—(क) सकति सनेह करि सुन्नति करिए मैं न बढौगा भाई।—कबीर ग्र०, पृ० ३३१। (ख) सुन्नति किए तुरक जे होइगा औरत का क्या करिए।—कबीर ग्र०, पृ० ३३१।

सुन्नसान—वि० [स० शून्य+स्थान] दे० 'सुनसान'।

सुन्ना[1]—क्रि० स० [हिं० सुनना] दे० 'सुनना'।

सुन्ना[2]—सज्ञा पुं० [स० शून्य] बिंदी। सिफर, जैसे,—(१) पर सुन्ना (०) लगाने से (१०) होता है।

सुन्नी—सज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानो का एक भेद जो चारो खलीफाओ को प्रधान मानता है। चारयारी।

सुपख—वि० [स० सुपक्ष] १ सुदर तीरो से युक्त। २ सुदर परो से युक्त।

सुपथ—सज्ञा पुं० [स० सुपन्था] १ उत्तम मार्ग। सुमार्ग। सत्पथ। सन्मार्ग। २ सीधा रास्ता। सही रास्ता। उ०—सखहि सनेह बिवस मग भूला। कहि सुपथ सुर बरसहि फूला।—मानस, २।२३७।

सुपक्व—वि० [स० सुपक्व] अच्छी तरह पका हुआ। सुपक्व। उ०—गोपाल राइ दधि माँगत गरु रोटी। माखन सहित देहि मेरि जननी सुपक्व सुमगल मोटी।—सूर (शब्द०)।

सुपक्व[1]—वि० [स०] १ अच्छी तरह पका हुआ (फल आदि)। २ जिसे अच्छी तरह पकाया गया हो। जैसे, अन्न (को०)।

सुपक्व[2]—सज्ञा पुं० [स०] सुगधित आम।

सुपक्ष—वि० [स०] जिसके सुदर पख हो। सुदर पखोवाला।

सुपक्ष्मा—वि० [स० सुपक्ष्मन्] जिसकी पलकें सुदर हो। सुदर पलकोवाला।

सुपच—सज्ञा पुं० [स० श्वपच] १ चाडल। डोम। उ०—तुलसी भगत सुपच भलो भजै रहनि दिन राम। ऊँचो कुल केहि काम को जहाँ न हरि को नाम।—तुलसी (शब्द०)। २ भगी। (डिं०)।

सुपट[1]—वि० [स०] सुदर वस्त्रो से युक्त। अच्छे वस्त्रोवाला।

सुपट[2]—सज्ञा पुं० सुदर वस्त्र।

सुपठ—वि० [स०] सुपाठ्य। जो सरलता से पढा जा सके।

सुपडा†—सज्ञा पुं० [देश०] लगर का अँकुडा जो जमीन मे धँसाया जाता है।

सुपत—वि० [स० सु+हिं० पत (=प्रतिष्ठा)] प्रतिष्ठायुक्त। मानयुक्त उ०—वह जूठो शशि जानि बदन विधु रच्यो विरचि हठ री। सौंप्यो सुपत विचारि श्याम हित सु तू रही नटि लैरी।—सूर (शब्द०)।

सुपतिक—सज्ञा पुं० [देश०] रात को पहरा देनेवाला डाका (डिं०)।

सुपत्य—सज्ञा पुं० [स० सुपन्थ] दे० 'सुपथ'। उ०—इन अवध मे श्रीराम लक्ष्मन वृद्ध पितु दशरथ थ को। गेला तरन निज रहन मे गहि रीति निगम सुपन्थ की।—पद्माकर (शब्द०)।

सुपत्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह महिला जिसका पति सुखपूरित हो। २ सुदर पत्नी। सुगृहिणी (को०)।

सुपत्र[1]—सज्ञा पु० [स०] १ तेजपत्र। तेजपत्ता। २ आदित्यपत्र। सूर-सुर का एक भेद। ३ पल्लिवाह नाम की घास। ४ इगुदी। गोदी। हिंगोट। ५ एक पौराणिक पक्षी।

सुपत्र[2]—वि० १ सुदर पत्तो से युक्त। २ जिसके पख या पैने सुदर हो। सुदर पखोवाला। ३ सुदर पख या पत्र से युक्त। जैसे, बाण (को०)।

सुपत्रक—सज्ञा पुं० [स०] सहिजन। शिग्रु।

सुपत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ रुद्रजटा। २ शतावरी। सतावर। ३ शालपर्णी। सरिवन। ४ शमी। छोकर। सफेद कीकर। ५ पालक का साग।

सुपत्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] जतुका। पपटी।

सुपत्रित—वि० [स०] पखो या तीरो से युक्त। जिसमे पख या तीर हो।

सुपत्री[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का पौधा। गगापत्री।

सुपत्री[2]—वि० [स० सुपत्रिन्] पखो या तीरो से भली भाँति युक्त।

सुपथ[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ उत्तम पथ। अच्छा रास्ता। २ सन्मार्ग। सदाचरण। ३. एक वृत्त का नाम जो एक रगण, एक नगण, एक भगण और दो गुरु का होता है।

सुपथ[2]—वि० [स० सु+पथ] १ समतल। हमवार। (जमीन)। उ०—किधौ हरि मनोरथ रथ को सुपथ भूमि मीनरथ मनहूँ की गति न सकति छ्वै।—केशव (शब्द०)। २ सुदर पथ या मार्गवाला।

सुपथी[1]—सज्ञा पुं० [स० सुपथिन्] अच्छी राह। सन्मार्ग।

सुपथी[2]—वि० सन्मार्गगामी। सुपथयुक्त (को०)।

सुपथ्य—सज्ञा पुं० [स०] १ वह आहार या भोजन जो रोगी के लिये हितकर हो। अच्छा पथ्य। २ आम। ३ अच्छा पथ या मार्ग।

सुपथ्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सफेद बथुवा। बडा बथुवा। श्वेत चिल्ली। २ लाल बथुवा। लघु वास्तूक।

सुपद्—वि० [स०] सुदर पैरोवाला।

सुपद—वि० [स०] १ सुदर पैरोवाला। २ तेज चलनेवाला। ३ सुदर पद, शब्द या वाक्ययुक्त। †४ पद के अनुकूल। वाजिब। उचित।

सुपद्मा—सज्ञा स्त्री० [स०] बच। वचा।

सुपनतर(पु)—सज्ञा पुं० [स० स्वप्नान्तर] निद्रा या स्वप्न की अवस्था। उ०—सुपनतर की प्यास ज्यौं भजै मही किहि भति। जब दैहौ तब पूजिहै मो मन मभझह खति।—पृ० रा०, १७।२७।

सुपन†—सज्ञा पु० [स० स्वप्न] दे० 'स्वप्न'। उ०—(क) सुपन सुफल दिल्ली कथा कही चद वरदाय।—पृ० रा०, ३।५८। (ख) नित के जागत मिटि गयो वा सँग सुपन मिलाप। चित्र दरशहू को लग्यो आँखिन आँसू पाप।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)। (ग) आज मैं निहारे कारे कान्ह को सुपन बीच उठि कै सकारे जमुना पै जल को गई। तबही ते दीनदयाल ह्वै रही मनीखा लटू एरी भटू मेरी भटभेटी मग मैं भई।—दीनदयाल (शब्द०)।

सुपनक—वि० [स० स्वप्न] स्वप्न देखनेवाला। जिसे स्वप्न दिखाई देता हो।

सुपना—सज्ञा पु० [स० स्वप्न] दे० 'स्वप्न'। उ०—तहाँ भूप देख्यो अस सुपना। पकरचौ पैर गादरी अपना।—निश्चल (शब्द०)।

सुपनाना(पु)[१]—क्रि० स० [हिं० सुपना या स० स्वप्नायते] स्वप्न देना। स्वप्न दिखाना। (क्व०)। उ०—विह्वल तन मन चकित भई सुनि सा प्रतच्छ सुपनाए। गदगद कठ सूर कोशलपुर सोर सुनत दुख पाए।—सूर (शब्द०)।

सुपनाना[२]—क्रि० अ० स्वप्न देखना। सपना देखना।

सुपरकास†—सज्ञा पु० [स० सुप्रकाश] ताप। गरमी। (डिं०)।

सुपरडट—सज्ञा पु० [अ० सुपरिंटेडेंट] दे० 'सुपरिंटेडेंट'।

सुपरण—सज्ञा पुं० [स० सुपर्ण] दे० 'सुपर्ण'।

सुपरन(पु)—सज्ञा पु० [स० सुपर्ण, हिं० सुपरण] दे० 'सुपर्ण'।

सुपरमतुरिता—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्धो की एक देवी का नाम।

सुपररायल—सज्ञा पु० [अ०] छापेखाने मे कागज आदि की एक नाप जो २२ इच चौडी और २९ इच लबी होती है।

सुपरवाइजर—सज्ञा पु० [अ०] वह जो किसी काम की देखभाल या निगरानी करता हो। निरीक्षण करनेवाला। निगरानी करनेवाला।

सुपरस(पु)—सज्ञा पु० [स० सुस्पर्श] दे० 'स्पर्श'। उ०—राम सुपरस मय कौतुक निरखि सखी सुख लटैं।—सूर (शब्द०)।

सुपरिंटेडेंट—सज्ञा पुं० [अ०] निरीक्षण करनेवाला। निगरानी करनेवाला। प्रधान निरीक्षक। जैसे,—पुलिस विभाग का सुपरिंटेडेंट, तार विभाग का सुपरिंटेडेंट।

यौ०—सुपरिंटेडेंट पुलिस = जिले का प्रधान पुलिस अधिकारी।

सुपरीक्षित—वि० [स०] जो अच्छी तरह जाँचा गया हो [को०]।

सुपर्ण—सज्ञा पु० [स०] १ गरुड। २ मुरगा। ३ पक्षी। चिडिया। ४ किरण। ५ विष्णु। ६ एक असुर का नाम। ७ देवगधर्व। ८ एक पर्वत का नाम। ९ घोडा। अश्व। १० सोम। ११ वैदिक मत्रो की एक शाखा का नाम। १२ अतरिक्ष का एक भुवन। १३ सेना की एक प्रकार की व्यूहरचना। १४ नागकेसर। नागपुष्प। १५ अमलतास। स्वर्णपुष्प। १६ ज्ञानस्वरूप (को०)। १७ कोई दिव्य पक्षी (को०)। १८ सुदर पत्र या पत्ता।

विशेष—सुदर किरणो से युक्त होने के कारण इस शब्द का प्रयोग चद्रमा और सूर्य के लिये भी होता है।

सुपर्ण[२]—वि० [वि० स्त्री० सुपर्णा, सुपर्णी] १ सुदर दलो या पत्तोवाला। २ सुदर परोवाला।

सुपर्णक[१]—सज्ञा पु० [स०] १ गरुड या कोई दिव्य पक्षी। २ अमलतास। स्वर्णपुष्प। आरग्वध। ३ सतवन। सतोना। सप्तपर्ण।

सुपर्णक[२]—वि० १ सुदर पत्तोवाला। २ सुदर पखोवाला।

सुपर्णकुमार—सज्ञा पु० [स०] जैनियो के एक देवता।

सुपर्णकेतु सज्ञा पु० [स०] १ विष्णु।

विशेष—विष्णु भगवान् की ध्वजा या केतु मे गरुड जी विराजते है, इसी से विष्णु का नाम सुपर्णकेतु पडा।

२ श्रीकृष्ण।

सुपर्णधातु - सज्ञा पु० [स०] एक दैत्य का नाम।

सुपर्णराज—सज्ञा पु० [स०] पक्षिराज। गरुड।

सुपर्णसद्[१]—वि० [स०] पक्षी पर चढनेवाला।

सुपर्णसद्[२]—सज्ञा पुं० विष्णु।

सुपर्णाड—सज्ञा पु० [स० सुपर्णाण्ड] शूद्रा माता और मूत पिता से उत्पन्न पुत्र।

सुपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पद्मिनी। कमलिनी। २. गरुड की माता का नाम। ३ एक नदी का नाम।

सुपर्णाख्य - सज्ञा पु० [स०] नागकेसर। नागपुष्प।

सुपर्णिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ स्वर्ण जीवती। पीली जीवती। २ रेणुका बीज। २ पलाशी। ४. शालपर्णी। सरिवन। ५. वकुची। बाकुची।

सुपर्णी[१]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गरुड की माता। सुपर्णा। २ मादा चिडिया। ३ कमलिनी। पद्मिनी। ४ एक देवी जिसका उल्लेख कद्रु के साथ मिलता है। (इसे कुछ लोग छदो की माता या वाग्देवी भी मानते है)। ५ अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक। ६ रात्रि। रात। ७ पलाशी। ८ रेणुका। रेणुक बीज।

सुपर्णी[२]—सज्ञा पु० [स० सुपर्णिन्] गरुड।

सुपर्णीतनय—सज्ञा पु० [स०] सुपर्णी के पुत्र, गरुड।

सुपर्णेय—सज्ञा पु० [स०] सुपर्णी के पुत्र, गरुड।

सुपर्यवदात—वि० [स०] अत्यत स्वच्छ, साफ [को०]।

सुपर्याप्त—वि० [स०] १ सम्यक् प्रशस्त। सुविस्तृत। सावकाश। २. अच्छी तरह युक्त। पूर्णत उपयुक्त या ठीक [को०]।

दक्षिण भारत के अन्य स्थानो मे होते हैं। सुपारी (फल) टुकडे करके पान के साथ खाई जाती है। यो भी लोग खाते है। यह औषध के काम मे भी आती है। वैद्यक के अनुसार यह भारी, शीतल, रूखी, कसैली, कफ-पित्त-नाशक, मोहकारक, रुचिकारक दुर्गंध तथा मुँह की निरसता दूर करनेवाली है।

पर्या०—घोंटा। पूग। क्रमुक। गुवाक। खपुर। सुरजन। पूग वृक्ष। दीर्घपादप। वल्कतरु। दृढवल्क। चिक्कण। पूगी। गोपदल। राजताल। छटाफल। क्रमु। कुमुकी। अकोट। ततुसार।

यौ०—चिकनी सुपारी=एक प्रकार की बनाई हुई सुपारी। विशेष दे० 'चिकनी सुपारी'।

मुहा०—सुपारी लगना=सुपारी का कलेजे मे अटकना। सुपारी खाते समय, कभी कभी पेट मे उतरते समय अटक जाती है। इसी को सुपारी लगना कहते हैं। उ०—राधिका भाँकि झरोखन ह्वै कवि केशव रीझि गिरे सुविहारी। सोर भयो सकुचे समुझे हरवाहि कह्यो हरि लागि सुपारी।—केशव (शब्द०)।

२ लिंग का अग्र भाग जो प्राय सुपारी (फल) के आकार का होता है। (बाजारू)।

**सुपारी का फूल**—संज्ञा पुं० [हिं० सुपारी+फूल] मोचरस या सेमर का गोंद।

**सुपारी पाक**—संज्ञा पुं० [हिं० सुपारी+सं० पाक] एक पौष्टिक औषध।

विशेष—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—पहले आठ टके भर चिकनी सुपारी का चूर्ण आठ टके भर गौ के घी मे मिलाकर तीन बार गाय के दूध मे डालकर धीमी आँच मे खोवा बनाते हैं। फिर बग, नागकेसर नागरमोथा, चदन, सोंठ, पीपल, काली मिर्च, आँवला, कोयल के बीज, जायफल, धनिया, चिरौंजी, तेजपत्र, इलायची, सिंघाडा, बशलोचन, दोनो जीरे (प्रत्येक पाँच पाँच टंक) इन सब का महीन कपडछान चूर्ण उक्त खोवे मे मिलाकर ५० टंक भर मिस्री की चाशनी मे डालकर एक टके भर की गोलियाँ बना ली जाती है। एक गोली सवेरे और एक गोली सध्या को खाई जाती है। इसके सेवन से शुक्रदोष, प्रमेह, प्रदर, जीर्ण ज्वर, अम्लपित्त, मदाग्नि और अर्श का निवारण होकर शरीर पुष्ट होता है।

**सुपार्श्व**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ पराग पीपल। गजदड। गदभाड। २ पाकर। प्लक्ष वृक्ष। ३ रुक्मरथ का एक पुत्र। ४ श्रुतायु का पुत्र। ५ दृढनेमि का पुत्र। ६ एक पर्वत का नाम। ७ एक राक्षस का नाम। ८ सपाति (गिद्ध) का बेटा। ९ देवी भागवत के अनुसार एक पीठस्थान। यहाँ की देवी का नाम नारायणी है। १० जैनियो के २४ जिनो या तीर्थंकरो मे से सातवें तीर्थंकर। १५ सुदर पार्श्व (की०)।

**सुपार्श्व**[2]—वि० सुदर पार्श्ववाला।

**सुपार्श्वक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ चित्रक के एक पुत्र का नाम। २ भावी उत्सर्पिणी के तीसरे अर्हत् का नाम। ३ श्रुतायु का एक पुत्र। ४ गदभाड वृक्ष। पराग पीपल [को०]।

सुपालि—वि० [स०] ज्ञात। प्रतिबोधित [को०]।

सुपास—सज्ञा पु० [देश०] सुख। आराम। सुभीता। उ०—(क) चलौ वसी वृ दावन माही। सकल सुपास सहित सो आही।—विश्राम (शब्द०)। (ख) जाया ताकी सवन निहारी। बैठा सिमिटि सुपास विचारी।—विश्राम (शब्द०)। (ग) यात्रियो के लिये सब तरह का सुपास और आराम है।—गदाधर सिंह (शब्द०)।

सुपासी—वि० [हिं० सुपास+ई (प्रत्य०)] १ सुख देनेवाला। आनददायक। उ०—(क) बालक सुभग देखि पुरवासी। होत भए सब तासु सुपासी।—रघुराज (शब्द०)। (ख) षोडश भक्त अनन्य उपासी। पयहारी के शिष्य सुपासी। रघुराज (शब्द०)। २ सुखी। सुपास युक्त। सुखयुक्त। उ०—कहत पुरान रची केशव निज कर करतूति कलासी। तुलसी बसि हरपुरी राम जपु जो भयो चहै सुपासी।—तुलसी ग्र०, पृ० ४६५।

सुपिंगला—सज्ञा स्त्री० [स० सुपिङ्गला] १ जीवती। डोडी शाक। २ ज्योतिष्मती। मालकगनी।

सुपीडन—सज्ञा पु० [स० सुपीडन] १ अगमर्दन। शरीर दवाना। मालिश। चपी। २ जोर से दवाना (को०)।

सुपीत[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ गाजर। गर्जर। २ पीली कटसरैया। पीत झिंटी। ३ पीतसार या चदन। ४ ज्योतिष मे पाँचवे मुहूर्त्त का नाम।

सुपीत[2]—वि० १ उत्तम रूप से पीया या पान किया हुआ। २ बिलकुल पीला। गहरा पीला।

सुपीन—वि० [स०] बहुत मोटा या बडा।

सुपीवा—वि० [स० सुपीवन्] अच्छी तरह पीनेवाला [को०]।

सुपुंख—वि० [स० सुपुङ्ख] जिसमे भली प्रकार पख लगे हो [को०]।

सुपुंसी—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसका पति सुपुरुष हो।

सुपुट[1]—सज्ञा पु० [स०] १. कोलकद। चमार आलू। २. विष्णुकद।

सुपुट[2]—वि० सुदर पुट या नथुनोवाला [को०]।

सुपुटा—सज्ञा स्त्री० [स०] सेवती। वनमल्लिका।

सुपुत्र[1]—सज्ञा पु० [स० सुपुत्र] १ जीवक वृक्ष। २ उत्तम पुत्र।

सुपुत्र[2] वि० जिसका पुत्र सुदर और उत्तम हो। अच्छे पुत्रवाला।

सुपुत्रिका[1]—सज्ञा स्त्री० [सं०] जतुका लता। पपडी।

सुपुत्रिका[2]—वि० सुदर या उत्तम पुत्रवाली।

सुपुर—सज्ञा पुं० [स०] सुदृढ दुर्ग।

सुपुरुष—सज्ञा पु० [स०] १ सुदर पुरुष। २ सत्पुरुष। सज्जन। भलामानस।

सुपुर्द—सज्ञा पु० [फा०] दिया हुआ। सौपा हुआ। हवाले किया हुआ।

सुपुर्दगी—सज्ञा स्त्री० [फा०] सुपुर्द करने का भाव। सुपुर्द करना।

सुपुष्करा†—सज्ञा स्त्री० [स०] स्थल कमलिनी। स्थल पद्मिनी।

सुपुष्प[1]—सज्ञा पु० [स०] १ लौग। लवंग। २. आहुल्य। तरवट। तरवड। ३ प्रपौडरीक। पुडेरिया। पुडेरी। ४ परिपाश्वत्थ। परास पीपल। ५ मुचकुद वृक्ष। ६ शहतूत। तूत। ७ ब्रह्मदारु। ८ पारिभद्र। फरहद। ९. शिरीष। सिरिस। १० हरिद्रु। हलद्या। ११ वडी सेवती। राजतरुणी। १२ श्वेतार्क। सफेद आक। १३ देवदारु। देवदार। १४ स्त्री का रज (को०)।

सुपुष्प[2]—वि० सुदर पुष्पो या फूलोवाला। जिसमे सुदर फूल हो।

सुपुष्पक—सज्ञा पुं० [स०] १ शिरीष वृक्ष। सिरिस। २ मुचकुद। ३ श्वेतार्क। सफेद आक। ४ हरिद्रु। हलदुआ। ५ गर्दभाड। परास पीपल। ६ राजतरुणी। वडी सेवती।

सुपुष्पा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ कोशातकी। तरोई। तुरई। २ द्रोणपुष्पी। गूमा। ३ शतपुष्पा। सौफ। ३ शतपत्री। सेवती।

सुपुष्पिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक प्रकार का विधारा। जीर्णादार। २ शतपुष्पी। सौफ। ३ मिश्रेया। सोआ। ४ पाटला। पाढर। ५ माहिषवल्ली। पाताल गारुडी। ६ शतपुष्पी। वनसनई।

सुपुष्पित—वि० [स०] जो अच्छी तरह पुष्पयुक्त हो। जिसमे खूब फूल खिले हो [को०]।

सुपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ श्वेत अपराजिता। सफेद कोयल लता। २ शतपुष्पी। सौफ। ३ मिश्रेया। सोआ। ४ कदली। केला। ५ द्रोणपुष्पी। गूमा। ६ वृद्धदारु। विधारा।

सुपूत[1]—वि० [स०] अत्यत पूत या पवित्र।

सुपूत[2]—वि० [स० सु+पुत्र, प्रा० पुत्त, हिं० पूत] अच्छा पुत्र। सुपुत्र। सपूत।

सुपूती—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुपूत+ई (प्रत्य०)] १ सुपूत होने का भाव। सपूतपन। उ०—करे सुपूती सोइ सुत ठीको।—कबीर (शब्द०)। २ अच्छे पुत्रवाली स्त्री।

सुपूर[1]—सज्ञा पु० [सं०] बीजपूर। बिजौरा नीबू।

सुपूर[2]—वि० सहज मे पूर्ण होने या भरा जाने योग्य।

सुपूरक—सज्ञा पु० [स०] १ अगस्त। वकवृक्ष। २ बिजौरा नीबू।

सुपेत†—वि० [फा० सुफैद] दे० 'सफेद'।

सुपेती—सज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुफैदी] १ दे० 'सफेदी'। २ बिछाने की चादर या तोशक। उ०—सुभग सुरभि पय फेनु समाना। कोमल कलित सुपेती नाना।—मानस, १।३५६।

सुपेद—वि [फा० सुफैद] दे० 'सफेद'।

सुपेदी†—सज्ञा स्त्री० [फा० सुफैदी] १ सफेदी। उज्वलता। २ ओढने की रजाई। ३ बिछाने की तोशक। ४ बिछौना। बिस्तर।

सुपेली—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूप+एली (प्रत्य०)] १ छोटा सूप। २ दे० 'सुपलिया'।

सुपेश—सज्ञा पुं० [स०] उत्तम बुना हुआ वस्त्र। बारीक बुना हुआ कपडा [को०]।

सुपेशल—वि० [स०] अत्यत सलोना या श्लक्ष्ण [को०]।

सुपेशस्—वि० [स०] सलोना। अत्यत सु दर [को०]।

सुपैदा—सज्ञा पु० [फा० सुफैदह्] दे० 'सफेदा'।

सुपोष—वि० [सं०] जो सुगमता से पालने पोसने योग्य हो [को०]।

सुप्त'—वि० [सं०] १ सोया हुआ। निद्रित। शयित। २ सोने के लिये लेटा हुआ। ३ ठिठुरा हुआ। ४ बद। मुँदा हुआ। मुद्रित। जैसे—फूल। ५ अकर्मण्य। बेकार। ६ सुस्त। ७ सुन्न। सज्ञा रहित (को०)। ८ अविकसित। जिसका विकास न हुआ हो। जैसे, शक्ति (को०)।

सुप्त'—सज्ञा पु० गहरी नीद। गाढी निद्रा।

सुप्तक—सज्ञा पु० [स०] निद्रा। नीद।

सुप्तघातक—वि० [स०] १ निद्रित अवस्था मे हनन या वध करनेवाला। २ हिंस्र। खूँखार।

सुप्तघ्न'—सज्ञा पु० [स०] एक राक्षस का नाम।

सुप्तघ्न'—वि० दे० 'सुप्तघातक'।

सुप्तच्युत—वि० [स०] जो नीद के कारण नीचे गिर पडा हो [को०]।

सुप्तजन—सज्ञा पु० [स०] १ अर्धरात्रि (इस समय प्राय लोग सोए रहते हैं)। २ सुप्त आदमी। सोया हुआ आदमी (को०)।

सुप्तज्ञान—सज्ञा पुं० [स०] स्वप्न।

विशेष—निद्रितावस्था मे जो स्वप्न दिखाई देता है वह जाग्रत अवस्था के समान ही जान पडता है, इसी से उसे सुप्तज्ञान कहते है।

सुप्तता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुप्त होने का भाव। २ निद्रा। नीद।

सुप्तत्व—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सुप्तता'।

सुप्तत्वक्—वि० [स० सुप्तत्वच्] जिसके अग सुन्न हो। जिसे लकवा मार गया हो [को०]।

सुप्तप्रबुद्ध—वि० [स०] जो अभी सोकर उठा हो।

सुप्तप्रलपित—सज्ञा पु० [स०] निद्रितावस्था मे होनेवाला प्रलाप। सोए सोए बकना या बर्राना।

सुप्तमास—वि० [स०] सज्ञाशून्य। चेतनाशून्य। सुन्न। निश्चेष्ट।

सुप्तमाली—सज्ञा पु० [स० सुप्तमालिन्] पुराणानुसार तेईसवें कल्प का नाम।

सुप्तमीन—वि० [स०] तालाब जिसमे मछलियाँ सोई हो [को०]।

सुप्तवाक्य—सज्ञा पु० [स०] निद्रित अवस्था मे कहे हुए शब्द या वाक्य।

सुप्तविग्रह—वि० [स०] १ निद्रित। सोया हुआ। २ जिसका विग्रह या शरीर निद्रा की तरह हो। कृष्ण के लिये प्रयुक्त विशेषण [को०]।

सुप्तविज्ञान—सज्ञा पु० [स०] स्वप्न। सुपना। ख्वाब।

सुप्तविनिद्रक—वि० [स०] निद्रा त्याग करनेवाला। जाग्रत होनेवाला। जागनेवाला [को०]।

सुप्तस्थ—वि० [स०] निद्रित। सोया हुआ।

सुप्तस्थित—वि० [सं०] दे० 'सुप्तस्थ'।

सुप्ताग—सज्ञा पु० [स० सुप्ताङ्ग] वह अग जिसमे चेष्टा न हो। निश्चेष्ट अग।

सुप्तागता—सज्ञा स्त्री० [स० सुप्ताङ्गता] सुप्ताग का भाव। अगो की निश्चेष्टता।

सुप्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ निद्रा। नीद। २ निदास। उँघाई। ३ अग की निश्चेष्टता। सुप्तागता। ४ प्रत्यय। विश्वास। एतबार। ५ सपना। स्वप्न (को०)।

सुप्तोत्थित—वि० [सं०] निद्रा से जागरित। जो अभी अभी सोकर उठा हो।

सुप्रकाश—वि० [सं०] १ अत्यत प्रकाशित। २ अत्यत गोचर। प्रत्यक्ष। ३ विख्यात। प्रसिद्ध [को०]।

सुप्रकेत—वि० [स०] १ ज्ञानवान्। बुद्धिमान। २ जो अत्यत सावधान हो (को०)।

सुप्रचार—वि० [स०] १ उचित मार्ग पर चलनेवाला। २ भला दिखाई पडनेवाला [को०]।

सुप्रचेता—वि० [स० सुप्रचेतस्] बहुत बुद्धिमान्। बहुत समझदार।

सुप्रज—वि० [स०] दे० 'सुप्रजा'।

सुप्रजा'—वि० [स० सुप्रजस्] उत्तम और बहुत सतान से युक्त। उत्तम और अधिक सतानवाला।

सुप्रजा'—सज्ञा स्त्री० १ उत्तम सतान। अच्छी औलाद। २ उत्तम प्रजा। अच्छी रिआया।

सुप्रजात—वि० [स०] बहुत सी सतानोवाला। जिसके बहुत से बाल-बच्चे हो।

सुप्रज्ञ—वि० [सं०] बहुत बुद्धिमान्।

सुप्रज्ञान—वि० [स०] जिसका प्रज्ञान या बोध सरलता से हो सके [को०]।

सुप्रतर—वि० [स०] सहज मे पार होने योग्य (नदी आदि)।

सुप्रतर्क—सज्ञा पुं० [स०] युक्तियुक्त एव प्रौढ विचार [को०]।

सुप्रतर्दन—सज्ञा [स०] एक राजा।

सुप्रतार—वि० [स०] दे० 'सुप्रतर'।

सुप्रतिकार—वि० [स०] जिसका सरलता से प्रतिकार हो सके [को०]।

सुप्रतिज्ञ—वि० [सं०] जो अपनी प्रतिज्ञा से न हटे। दृढप्रतिज्ञ।

सुप्रतिपन्न—वि० [स०] सदाचारी। धार्मिक [को०]।

सुप्रतिभ—वि० [स०] प्रतिभासपन्न। प्रखर प्रतिभावाला।

सुप्रतिभा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मदिरा। मद्य। शराब। २ अच्छी या सुदर प्रतिभा (को०)।

सुप्रतिम—सज्ञा पुं० [स०] एक राजा का नाम।

सुप्रतिष्ठ'—वि० [स०] १ उत्तम प्रतिष्ठावाला। जिसकी लोग खूब प्रतिष्ठा या आदर समान करते हो। २ बहुत प्रसिद्ध। सुविख्यात। मशहूर। ३ सुदर टाँगो या पैरोवाला। ४ दृढता से स्थित रहनेवाला (को०)।

सुप्रतिष्ठ'—सज्ञा पुं० १ सेना की एक प्रकार की व्यूहरचना। २. एक प्रकार की समाधि। (बौद्ध)।

सुप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पाँच वर्ण होते हैं। इनमें से तीसरा और पाँचवाँ गुरु तथा पहला, दूसरा और चौथा वर्ण लघु होता है। २ मंदिर या प्रतिमा आदि की स्थापना। ३ स्कंद की एक मातृका का नाम। ४ अभिषेक। ५ उत्तम स्थिति। ६ सुनाम। प्रसिद्धि। शोहरत। ७ उत्तम प्रतिष्ठा। स्थापना।

सुप्रतिष्ठित'—वि० [स०] १ उत्तम रूप से प्रतिष्ठित। २ दृढ़तापूर्वक स्थित या स्थापित (को०)। सुदृढ़ जमावाला। ३ अभिषिक्त (को०)। ४ विख्यात। प्रसिद्ध (को०)।

सुप्रतिष्ठित'—संज्ञा पुं० १ गूलर। उदुंबर। २ एक प्रकार की समाधि। ३ एक देवपुत्र (को०)।

सुप्रतिष्ठितचरण—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की समाधि। सुप्रतिष्ठित समाधि।

सुप्रतिष्ठितचरित्र—संज्ञा पुं० [स०] एक बोधिसत्व का नाम।

सुप्रतिष्ठिता—संज्ञा स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम।

सुप्रतिष्ठितासन—संज्ञा पुं० [सं०] समाधि का एक भेद।

सुप्रतिष्णात—वि० [सं०] १ किसी विषय का अच्छा जानकार या पंडित। निष्णात। २ जिसकी खूब ऊहापोह की गई हो। आलोचित। सुनिश्चित। ३ सुस्नात। भली प्रकार शुद्ध किया हुआ।

सुप्रतीक'—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ कामदेव। ३ ईशान कोण का दिग्गज। ४ विश्वसनीय व्यक्ति (को०)। ५ एक यक्ष (को०)।

सुप्रतीक'—वि० १ सुरूप। सुंदर। खूबसूरत। २ साधु। सज्जन। ३ सुंदर स्कंधवाला (को०)।

सुप्रतीकिनी—संज्ञा स्त्री० [स०] सुप्रतीक नामक दिग्गज की स्त्री।

सुप्रददि—वि० [स०] बहुत उदार। बड़ा दानी। दाता।

सुप्रदर्श—वि० [सं०] जो देखने में सुंदर हो। प्रियदर्शन। खूबसूरत।

सुप्रदोहा—वि० [स०] सहज में दही जानेवाली (गाय)। जिस (गाय) को दूहने में कठिनाई न हो।

सुप्रधृष्य—वि० [सं०] जो सहज में अभिभूत या पराजित किया जा सके। आसानी से जीता जानेवाला।

सुप्रबुद्ध'—संज्ञा पुं० [सं०] शाक्य बुद्ध।

सुप्रबुद्ध'—वि० जिसे यथेष्ट बोध या ज्ञान हो। अत्यंत बोधयुक्त।

सुप्रभ'—संज्ञा पुं० [स०] १ एक दानव का नाम। २ जैनियों के नौ बलों (जिनों) में से एक। ३ पुराणानुसार शाल्मली द्वीप के अंतर्गत एक वर्ष।

सुप्रभ'—वि० १ सुंदर प्रभा या प्रकाशयुक्त। २ सुंदर। सुरूप। खूबसूरत।

सुप्रभदेव—संज्ञा पुं० [सं०] शिशुपालवध महाकाव्य के प्रणेता महाकवि माघ के पितामह का नाम।

सुप्रभा'—संज्ञा स्त्री० [स०] १ चाँदनी। सामग्री। २ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। ३ स्कंद की एक मातृका का नाम। ४ सात सरस्वतियों में से एक। ५ सुंदर प्रकाश।

सुप्रभा'—संज्ञा पुं० एक वर्ष का नाम जिसके देवता सुप्रभ माने जाते हैं।

सुप्रभात—संज्ञा पुं० [स०] १ सुंदर प्रभात या प्रातःकाल। २ मंगल-सूचक प्रभात। ३ प्रातःकाल पढ़ा जानेवाला स्तोत्र।

सुप्रभाता—संज्ञा स्त्री० [स०] १ पुराणानुसार एक नदी का नाम। २ वह रात जिसका प्रभात सुंदर हो।

सुप्रभाव—संज्ञा पुं० [स०] १ जिसमें सब प्रकार की शक्तियाँ हों। सर्वशक्तिमान्। २ सर्वसामर्थ्य। अनंतशक्तियुक्त होना। सर्वशक्तिता (को०)।

सुप्रमय—वि० [सं०] जो सरलता से मापा जा सके। जो सरलतापूर्वक मापने योग्य हो।

सुप्रमाण—वि० [स०] बड़े आकार का। विशाल (को०)।

सुप्रयुक्त—वि० [स०] १ सुपठित। २ सुंदर ढंग से चलाया हुआ। सुचालित। ३ सुविचारित योजनावाला (षड्यंत्र आदि)। ४ जो सुव्यवस्थित हो। ५ भली प्रकार सबद्ध (को०)।

सुप्रयुक्तशर—संज्ञा पुं० [स०] वह जो बाण चलाने में सिद्धहस्त हो। अच्छा धनुर्धर।

सुप्रयोग'—संज्ञा पुं० [स०] १ सुंदर प्रबंध। उत्तम व्यवस्था। २ उत्तम उपयोग करना। अच्छे ढंग से काम में लाना। ३ निकट संपर्क। ४ दक्षता। निपुणता। पाटव (को०)।

सुप्रयोग'—वि० १ जिसका प्रयोग या अभिनय अच्छे ढंग से हो। २ जो ठीक ढंग से प्रयुक्त किया गया हो।

सुप्रयोगविशिख—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'सुप्रयुक्तशर'।

सुप्रयोगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वायु पुराण के अनुसार दाक्षिणात्य की एक नदी का नाम।

सुप्रलभ—वि० [स० सुप्रलम्भ] १ जो अनायास प्राप्त किया जा सके। सहज में मिल सकनेवाला। सुलभ। २ जो सरलता से धोखे में आ जाय। जिसे सरलतापूर्वक वंचित किया जा सके (को०)।

सुप्रलाप—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुवचन। २ वाग्मिता। सुंदर भाषण।

सुप्रवेदित—वि० [स०] भली भाँति उद्घोषित। पूर्णतः प्रकटित (को०)।

सुप्रशस्त—वि० [सं०] १ खूब प्रशंसित। २ सुप्रसिद्ध (को०)।

सुप्रश्न—संज्ञा पुं० [स०] कुशलप्रश्न। कुशलक्षेम संबंधी जिज्ञासा (को०)।

सुप्रसन्न'—संज्ञा पुं० [स०] कुबेर का एक नाम।

सुप्रसन्न'—वि० १ अत्यंत प्रफुल्ल। २ अत्यंत निर्मल। ३ हर्षित। बहुत प्रसन्न। ४ जो प्रतिकूल न हो। अनुकूल (को०)।

सुप्रसन्नक—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली बकरी। वन बकरिका। कृष्णाजंक।

सुप्रसरा—संज्ञा स्त्री० [स०] प्रसारिणी लता। गंधप्रसारिणी। पनरन।

सुप्रसव—संज्ञा पुं० [सं०] सहज प्रसव। वह प्रसव जो बिना कष्ट का हो।

**सुप्रसाद**[1]—पञ्चा पु० [सं०] १ शिव। २ विष्णु। ३ स्कंद का एक पार्षद। ४ एक असुर का नाम। ५ अत्यत प्रसन्नता।

**सुप्रसाद**[2]—वि० १ अत्यत प्रसन्न या कृपालु। २ सरलता से अनुकूल या प्रसन्न करने योग्य (को०)।

**सुप्रसादक**—वि० [स०] दे० सुप्रसाद'।

**सुप्रसादा**—सज्ञा स्त्री० [स०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

**सुप्रसारा**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुप्रसरा'।

**सुप्रसिद्ध**—वि० [सं०] बहुत प्रसिद्ध। सुविख्यात। बहुत मशहूर।

**सुप्रसू** सज्ञा स्त्री० [स०] सरलता से प्रसव करनेवाली स्त्री (को०)।

**सुप्राकृत**—वि० [स०] ग्राम्य। असभ्य। अशिष्ट (को०)।

**सुप्राप**—वि० [स०] जो सरलता से प्राप्त हो। सुलभ (को०)।

**सुप्रिय**[1]—सज्ञा पुं० [स०] बौद्धो के अनुसार एक गधर्व का नाम।

**सुप्रिय**[2]—वि० [वि० स्त्री० सुप्रिया] अत्यत प्रिय। बहुत प्यारा।

**सुप्रिया**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक अप्सरा का नाम। २ सोलह मात्राओ का एक वृत्त जिसमे अतिम वर्ण के अतिरिक्त शेष सब वर्ण लघु होते है। यह एक प्रकार की चौपाई है। यथा—तबहुँ न लखन उतर कछु दयऊ। ३ मनोहारिणी स्त्री। सुदर स्त्री (को०)। ४ प्रियतमा। प्रेमिका। प्रेयसी (को०)।

**सुप्रीम**—वि० [अ०] सर्वोच्च। सबसे ऊँचा (को०)।

**सुप्रीम कोर्ट**—सज्ञा पु० [अ०] १ प्रधान या उच्च न्यायालय। २ सबसे बडी कचहरी। सर्वोच्च न्यायालय।

विशेष—ईस्ट इडिया कपनी के राजत्वकाल मे कलकत्ते मे सुप्रीम कोर्ट था, जिसमे तीन जज बैठते थे। अनतर महारानी विक्टोरिया के राजत्वकाल मे यह सुप्रीम कोर्ट तोड दिया गया और इसके स्थान पर हाई कोर्ट की स्थापना की गई। इगलैड मे प्रिवी कौसिल था जो सर्वोच्च माना जाता था। भारत के स्वतत्र होने पर दिल्ली मे सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना हुई जिसे सुप्रीम कोर्ट भी कहते है।

**सुप्रौढा**—सज्ञा स्त्री० [सं०] विवाह के योग्य कन्या (को०)।

**सुफरा**—सज्ञा पुं० [देश०] टेबुल पर बिछाने का कपडा।

**सुफल**[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ छोटा अमलतास। कर्णिकार। २ बादाम। ३ अनार। दाडिम। ४ बैर। बदर। ५ मूँग। मुद्ग। ६ कैथ। कपित्थ। ७ बिजौरा नीबू। मातुलुग। ८ सुदर फल। ९ अच्छा परिणाम।

**सुफल**[2]—वि० १ सुदर फलवाला (अस्त्र)। २ सुदर फलो से युक्त। ३ सफल। कृतकार्य। कृतार्थ। कामयाब।

**सुफलक**—सज्ञा पुं० [स०] एक यादव जो अक्रूर का पिता था।

**सुफलकसुत**—सज्ञा पुं० [स०] अक्रूर।

**सुफला**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ इद्रायण। इद्रवारुणी। २ पेठा। कुम्हडा। कुष्माड। ३ गभारी। काश्मरी। ४ केला। कदली। ५ मुनक्का। कपिला द्राक्षा।

**सुफला**[2]—वि० १ सुदर या बहुत फल देनेवाली। अधिक फलोवाली। २ सुदर फलवाली। जैसे,—तलवार।

**सुफुल्ल**—वि० [स०] फूलो से संपन्न। सुदर फूलो से युक्त।

**सुफेद**—वि० [अ० सुफ़ैद] दे० 'सफेद'।

**सुफेदी** स्त्री० [अ० सुफ़ैदी] दे० 'सफेदी'।

**सुफेन**—सज्ञा पुं० [स०] समुद्रफेन।

**सुबत**—वि० [स० सुबन्त] जिसके अत मे सुप् विभक्ति हो। सस्कृत व्याकरण मे विभक्तियुक्त (शब्द, सज्ञा)।

**सुबंतपद**—सज्ञा पुं० [सं० सुबन्तपद] विभक्तियुक्त सज्ञा या शब्द।

**सुबध**[1]—सज्ञा पु० [स० सुबन्ध] तिल।

**सुबध**[2]—वि० अच्छी तरह बँधा हुआ।

**सुबधविमोचन**—सज्ञा पुं० [स० सुबन्धविमोचन] शिव का एक नाम (को०)।

**सुबधु**[1]—सज्ञा पु० [सं० सुबन्धु] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ अच्छा भाई। उ०—होहि कुठायँ सुबधु सहाए।—मानस, २।३०५। ३ बाणभट्ट का समकालीन सस्कृत गद्यकाव्य 'वासवदत्ता' का प्रख्यात रचयिता।

**सुबधु**[2]—वि० उत्तम बधुओवाला। जिसके अच्छे बधु या मित्र हो।

**सुबडा**—सज्ञा पु० [देश०] टलही चाँदी। ताँबा मिली हुई चाँदी।

**सुबभ्रु**—वि० [स०] १ धूसर। २. चिकनी भौहवाला।

**सुबर**ⓤ—सज्ञा पुं० [स० सुबल] वीर। योद्धा। सुभट।

**सुबरन**ⓤ—सज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण] १ सोना। २ सुदर अक्षर। ३ सुदर रग। उ०—सुबरन को खोजत फिरैं कवि व्यभिचारी चोर।—

**सुबरनी**—सज्ञा स्त्री० [स० सुवर्ण ?] छडी।

**सुबल**[1]—सज्ञा पुं० [स०] शिव जी का एक नाम। २ एक पक्षी (वैनतेय की सतान)। ३ सुमति के एक पुत्र का नाम। ४ गाधार का एक राजा जो शकुनि का पिता और धृतराष्ट्र का ससुर था। ५ पुराणानुसार भौत्य मनु के पुत्र का नाम। ६ श्रीकृष्ण का एक सखा।

**सुबल**[2]—वि० अत्यत बलवान। बहुत मजबूत।

**सुबलपुत्र**—सज्ञा पुं० [स०] राजा सुबल का पुत्र, शकुनि (को०)।

**सुबलपुर**—सज्ञा पुं० [स०] कीकट राज्य का एक प्राचीन नगर।

**सुबह**—सज्ञा स्त्री० [अ०] प्रात काल। सवेरा।

**सुबहान**ⓤ—सज्ञा पुं० [अ० सुबहान] दे० 'सुभान'। उ०—आब आतश अर्श कुरसी सूरते सुबहान। सिर्र सिफत करदा बूदद मारफत मुकाम।—दादू (शब्द०)।

**सुबहान अल्ला**—अव्य० [अ०] अरबी का एक पद जिसका प्रयोग किसी बात पर हर्ष या आश्चर्य प्रकट करते हुए किया जाता है। वाह वाह! क्यो न हो! धन्य है!

**सुबाधव**—सज्ञा पुं० [स० सुबान्धव] १ शिव। २ उत्तम मित्र।

**सुबाल**[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ एक देवता। २ एक उपनिषद् का नाम। ३ उत्तम बालक।

**सुबाल**[2]—वि० बालक के समान निर्बोध। अज्ञान।

**सुबालिश**—वि० [सं०] बच्चो जैसा अज्ञ या अबोध ।

**सुबास¹**—सज्ञा स्त्री० [स० सु + वास] अच्छी महक । सुगध ।

**सुबास²**—सज्ञा पुं० १ एक प्रकार का धान जो अगहन महीने मे होता है और जिसका चावल वर्षो तक रहता है । २ सुदर निवास-स्थान ।

**सुबासना**Ⓤ¹—सज्ञा स्त्री० [स० सु + वास] सुगध । खुशबू । अच्छी महक । उ०—कहि लहि कौन सकै दुरी सोनजुही मैं जाइ । तन की सहज सुवासना देती जो न बहाइ ।—बिहारी (शब्द०) ।

**सुबासना**²—क्रि० स० सुवासित करना । सुगधित करना । महकाना ।

**सुबासिक**—वि० [स० सु + वास] सुवासित । सुगधित । खुशबूदार । उ०—रहा जो कनक सुवासिक ठाऊँ । कस न होए हीरा मनि नाऊँ ।—जायसी (शब्द०) ।

**सुबासित**Ⓤ—वि० [सं० सुवासित] दे० 'सुवासित' ।

**सुबाहु¹**—सज्ञा पु० [सं०] १ नागासुर । २ स्कद का एक पार्षद । ३ एक दानव का नाम । ४ एक राक्षस का नाम । ५ एक यक्ष का नाम । ६ धृतराष्ट्र का पुत्र और चेदि का राजा । ७ पुराणानुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम । ८ शत्रुघ्न का एक पुत्र । ९ प्रतिबाहु का एक पुत्र । १० कुवलयाश्व का एक पुत्र । ११ एक बोधिसत्व का नाम । १२ एक वानर का नाम ।

**सुबाहु²**—वि० दृढ या सुदर बाहोवाला । जिसकी बाहें अच्छी और मजबूत हो ।

**सुबाहु³**—सज्ञा स्त्री० [स० सुबाहुस्] एक अप्सरा का नाम ।

**सुबाहु**Ⓤ⁴—सज्ञा स्त्री० [स० सु + वाहु] सेना । फौज । उ०—रैयत राज समाज कर तन धन धरम सुवाहु । शात सुसचिवन सौपि सुख बिलसहि नित नरनाहु । तुलसी (शब्द०) ।

**सुबाहुक**—सज्ञा पुं० [स०] एक यक्ष का नाम ।

**सुबाहुशत्रु** सज्ञा पुं० [स०] श्रीरामचद्र का एक नाम ।

**सुबिस्ता**†—सज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सुभीता' ।

**सुबिहान**Ⓤ—सज्ञा पु० [अ० सुबहान] दे० 'सुभान' ।

**सुबीज¹**—सज्ञा पु० [स०] १ शिव । महादेव । २ पोस्तदाना । खसखस । ३ उत्तम बीज ।

**सुबीज²**—वि० उत्तम बीजवाला । जिसके बीज उत्तम हो ।

**सुबीता**—सज्ञा पु० [देश०, तुल० 'सुविधा'] दे० 'सुभीता' ।

**सुबुक**—वि० [फा०] १ हलका । कम बोझ का । भारी का उलटा । २ सुदर । खूबसूरत । उ०—बसन फटे उपटे सुबुक निबुक ददोरे हाय ।—रामसहाय (शब्द०) ।

यौ०—सुबुक रग = सोना रँगने का एक प्रकार ।

३ कोमल । नाजुक । मृदु (को०) । ४ तेज । फुर्तीला । चुस्त । जैसे, सुबुक रफ्तार ।

**सुबुक²**—सज्ञा पुं० घोडे की एक जाति ।

विशेष—इस जाति के घोडे मेहनती और हिम्मती होते है । इनका कद मझोला होता है । दौडने मे ये बडे तेज होते है । इन्हें दौडाक भी कहते है ।

**सुबुकदस्त**—वि० [फा०] फुर्तीले हाथोवाला [को०] ।

**सुबुकदस्ती**—सज्ञा स्त्री० [फा०] हाथो का फुर्तीलापन । हस्तलाघव [को०] ।

**सुबुक रदा**—सज्ञा पुं० [फा० सुबुक + हिं० रदा] लोहे का एक औजार जो बढइयो के पेचकश की तरह का होता है । इसकी धार तेज होती है । इससे बर्तनो की कोर आदि छीलते है ।

**सुबुक रफ्तार**—वि० [फा० सुबुक रफ्तार] द्रुतगामी । तेज चालवाला ।

**सुबुकी**—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ हलकापन । २ सुदरता । ३ तेजी । ४ अप्रतिष्ठा ।

**सुबुद्धि¹**—वि० [स०] उत्तम बुद्धिवाला बुद्धिमान् ।

**सुबुद्धि²**—सज्ञा स्त्री० उत्तम बुद्धि । अच्छी अक्ल ।

**सुबुध¹**—सज्ञा पुं० [स० बुद्धि, बुद्धि] अक्ल । (डि०) ।

**सुबुध²**—वि० [स०] १ बुद्धिमान् । अक्लमद । २ सावधान । सतर्क ।

**सुबू¹**—सज्ञा पुं० [फा० सुबह] दे० 'सुबह' । उ०—जो निसि दिवस न हरि भजि पैए । तदपि न साँझ सुबू बिसरैए ।—विश्राम (शब्द०) ।

**सुबू²**—सज्ञा पुं० [फा०] कुभ । घट । मटका [को०] ।

**सुबूचा**—सज्ञा पुं० [फा० सुबूचह्] ठिलिया । गगरी [को०] ।

**सुबूत**—सज्ञा पुं० [अ०] १ वह जिससे कोई बात साबित हो । प्रमाण । साक्ष्य सबूत । २ तर्क । दलील । ३ उदाहरण । मिसाल [को०] ।

**सुबोध¹**—वि० [सं०] १ अच्छी बुद्धिवाला । २ जो कोई बात सहज मे समझ सके । जिसे अनायास समझाया जा सके ।

**सुबोध²**—सज्ञा पु० अच्छी बुद्धि । अच्छी समझ ।

**सुब्रह्मण्य¹**—सज्ञा पु० [सं०] १ शिव । २ विष्णु । ३ कार्तिकेय । ४ उद्गाता पुरोहित या उसके तीन सहकारियो मे से एक । ५ दक्षिण भारत का एक प्राचीन प्रांत ।

**सुब्रह्मण्य²**—वि० ब्रह्मणप्रयुक्त । जिसमे ब्रह्मण्य हो ।

**सुब्रह्मण्य क्षेत्र**—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन तीर्थ जो मद्रास प्रदेश के दक्षिण कनारा जिले मे है ।

**सुब्रह्मण्य तीर्थ**—सज्ञा पुं० [स०, दे० 'सुब्रह्मण्य क्षेत्र' ।

**सुब्रह्मण्यासुदेव**—सज्ञा पुं० [स०] श्रीकृष्ण ।

**सुभग¹**—सज्ञा पुं० [स० सुभडग] नारियल का पेड । नारिकेल वृक्ष ।

**सुभग²**—वि० सरलता से टूट जानेवाला [को०] ।

**सुभत**Ⓤ—वि० [प्रा० सोभन्त स० शोभमान] शोभित । जो शोभायुक्त हो ।

**सुभ**Ⓤ¹—वि० [स० शुभ, प्रा० सुभ] दे० 'शुभ' ।

**सुभ²**—वि० [स०] शुभ नक्षत्र या ग्रह [को०] ।

**सुभगमन्य**—वि० [सं० सुभगम्मन्य] दे० 'सुभगमानी' [को०] ।

**सुभग¹**—वि० [सं०] १ सुदर । मनोहर । मनोरम । २ ऐश्वर्यशाली । ३. भाग्यवान् । खुशकिस्मत । ४ प्रिय । प्रियतम । ५ सुखद । आनददायक ।

सुभग[१]—सज्ञा पुं० १ शिव। २ सोहागा। टकण। ३ चपा। चपक। ४ अशोक वृक्ष। ५ पीली कटसरैया। पीतझिंटी। ६ लाल कटसरया। रक्तझिंटी। ७ भूरि छरीला। पत्थर का फूल। शैलेय। शैलाख्य। शिलापुष्प। ८ गधक। गधपाषाण। ९ सुबल के एक पुत्र का नाम। १० जैनो अनुसार वह कर्म जिससे जीव सौभाग्यवान होता है। ११ अच्छा भाग्य। सौभाग्य (को०)।

सुभगता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुभग होने का भाव। २ सुदरता। सौदर्य। खूबसूरती। उ०—जागै मनोभव मुएँहु मन वन सुभगता न परै कही।—मानस, १।८६। ३ प्रेम। ४ स्त्री के द्वारा होनेवाला सुख।

सुभगदत्त—सज्ञा पु० [स०] भौमासुर का पुत्र।

सुभगमानी—वि० [स० सुभगमानिन्] अपने को सौभाग्यशाली समझनेवाला (को०)।

सुभगसेन—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन राजा जो सिकंदर के आक्रमण के समय पश्चिम भारत के एक प्रात मे शासन करता था।

सुभगा[१]—वि० स्त्री० [स०] १ सुदरी। खूबसूरत (स्त्री)। २ (स्त्री) जिसका पति जीवित हो। सौभाग्यवती। सुहागिन।

सुभगा[२]—सज्ञा स्त्री० १ वह स्त्री जो अपने पति को प्रिय हो। प्रियतमा पत्नी। २ स्कद की एक मातृका का नाम। ३ पाँच वर्ष की कुमारी। ४ एक प्रकार की रागिनी। ५ केवटी मोथा। कैवर्ती मुस्तक। ६ नीली दूब। नील दूर्वा। ७ हलदी। हरिद्रा। ८ तुलसी। सुरसा। ९ दहिंगना। प्रियगु। वनिता। १० कस्तूरी। मगनाभि। ११ सोना केला। सुवर्ण कदली। १२ वेला मोतिया। वनमल्लिका। १३ चमेली। जाति पुष्प। १४ आदरणीया माता। समानित माँ (को०)। १५ सौभाग्यवती नारी। सधवा स्त्री (को०)।

सुभगातनय—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सुभगासुत'।

सुभगानदनाथ—सज्ञा पु० [स० सुभगानन्दनाथ] तात्रिको के अनुसार एक भैरव का नाम। कालीपूजा के समय इनकी भी पूजा का विधान है।

सुभगासुत—सज्ञा पु० [स०] प्रियतमा पत्नी से उत्पन्न पुत्र (को०)।

सुभगाह्वया—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कैवर्तिका लता। २ हलदी। ३ सरिवन। ४ तुलसी। ५ नीली दूब। ६ सोना केला।

सुभग्ग—वि० [स० सुभग] दे० 'सुभग'। उ०—मालव भूप उदग्ग चलेउ कर खग्ग जग्ग जित। तन सुभग्ग आभरन मग्ग जगमग्ग नग्ग सित।—गि० दास (शब्द०)।

सुभट—सज्ञा पु० [स०] महान् योद्धा। अच्छा सैनिक। उ०—रुक्म और कलिंग को राउ मारयो प्रथम, बहुरि तिनके बहुत सुभट मारे।—सूर (शब्द०)।

सुभटवत—वि० [स० सुभट+वत्] अच्छा योद्धा। उ०—लख्यो बलराम यह सुभटवत है कोऊ हल मुशल शस्त्र अपनो सँभारयो।—सूर (शब्द०)।

सुभट वर्मा—सज्ञा पुं० [स० सुभटवर्मन्] एक हिंदू राजा जो ईस्वी १२वी शताब्दी के अत और १३वी के प्रारभ मे विद्यमान था।

सुभट्ट[१]—सज्ञा पु० [सं०] अत्यत विद्वान् व्यक्ति। बहुत बडा पडित।

सुभट्ट[२]—सज्ञा पु० [स० सुभट] वीर। सुभट।

सुभड—सज्ञा पुं० [स० सुभट] सुभट। शूरवीर (डि०)।

सुभद्र[१]—सज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु। २ सनत्कुमार का नाम। ३ वसुदेव का एक पुत्र जो पौरवी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। ४ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ५ इध्मजिह्व के एक पुत्र का नाम। ६ प्लक्ष द्वीप के अतर्गत एक वर्ष का नाम। ७ सौभाग्य। ८ कल्याण। मगल। ९ एक पर्वत का नाम (को०)।

सुभद्र[२]—वि० १ भाग्यवान्। २ भला। सज्जन। ३ अत्यत शुभ। मागलिक (को०)।

सुभद्रक—सज्ञा पु० [स०] १ देवरथ। २ बेल। बिल्वक वृक्ष।

सुभद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी जो अभिमन्यु की माता थी।

विशेष—एक बार अर्जुन रैवतक पर्वत पर सुभद्रा को देखकर मोहित हो गया। यह देख श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सुभद्रा का बलपूर्वक हरण कर उससे विवाह करने का आदेश दिया। तदनुसार अर्जुन सुभद्रा को द्वारका से हरण कर ले गया।

२ दुर्गा का एक रूप। ३ पुराणानुसार एक गौ का नाम। ४ सगीत मे एक श्रुति का नाम। ५ दुर्गम की पत्नी। ६ अनिरुद्ध की पत्नी। ७ एक चत्वर का नाम। ८ बलि की पुत्री और अवीक्षित की पत्नी। ९ एक नदी। १० सरिवन। अननमूल। श्यामलता। ११ गभारी। काश्मरी। १२ मकडा घास। घृतमडा।

सुभद्राणी - सज्ञा स्त्री० [स०] त्रायती। त्रायमान। त्रायमाण लता।

सुभद्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ श्रीकृष्ण की छोटी बहन। २ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे न न र ल ग (।।।, ।।।, ऽ।ऽ, ।, ऽ) होता है। ३ त्रायती लता (को०)। ४ वेश्या (को०)।

सुभद्रेश—सज्ञा पु० [स०] अर्जुन।

सुभर—वि० [हिं० सु+भरा] अच्छी तरह भरा हुआ। सुपुष्ट।

सुभर[२]—वि० [स० शुभ्र] दे० 'शुभ्र'। उ०—सुभर समुंद अस नयन दुइ, मानिक भरे तरग। आवहि तीर फिरावही काल भवँर तेहि सग।—जायसी (शब्द०)।

सुभर[१]—वि० [स०] १ ठोस। घना। २ अधिक। प्रचुर। ३ सरलतापूर्वक वहन करने या प्रयोग करने योग्य। ४ पूर्णत मश्क या अभ्यस्त। ५ सुपोष (को०)।

सुभव[१]—वि० [स०] उत्तम रूप से उत्पन्न।

सुभव[२]—सज्ञा पुं० १ एक इक्ष्वाकुवशी राजा का नाम। २ साठ सवत्सरो मे से अतिम सवत्सर का नाम।

सुभसत्तरा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो पति को अत्यत प्रिय हो। सुभगा स्त्री।

सुभाजन—सज्ञा पु० [स० सुभाञ्जन] शुभाजन वृक्ष । सहिंजन ।

सुभा—सज्ञा स्त्री० [सं० शुभा] १ अमृत । पीयूष । सुधा । २ शोभा । काति । छवि । ३ परनारी । परस्त्री । ४ हरीतकी । हड । उ०—सुधा सुभा सोभा सुभा सुभा सिद्ध पर नारि । बहुरी सुभा हरीतकी हरिपद की रजधार ।—अनेकार्थ० (शब्द०) ।

सुभाइ Ⓤ†[1]—सज्ञा पुं० [स० स्वभाव] दे० 'स्वभाव' । उ०—कमल नाल सज्जन हियौ दोनौ एक सुभाइ ।—रसनिधि (शब्द०) ।

सुभाइ[2]—क्रि० वि० सहज भाव से । स्वभावत । उ०—(क) कटक सो कटक कटयो अपने हाथ सुभाइ ।—सूर (शब्द०) । (ख) अग सुभाइ सुवास प्रकाशित लोपिहौ केशव क्यो करिकै ।—केशव (शब्द०) ।

सुभाउ Ⓤ†—सज्ञा पुं० [सं० स्वभाव] दे० 'स्वभाव' । उ०—मुख प्रसन्न शीतल सुभाउ, नित देखत नैन सिराइ ।—सूर (शब्द०) ।

सुभाग[1]—वि० [सं०] भाग्यवान् । खुशकिस्मत ।

सुभाग Ⓤ‡[2]—सज्ञा पु० [स० सौभाग्य] दे० 'सौभाग्य' ।

सुभागा—सज्ञा स्त्री० [स०] रौद्राश्व की एक पुत्री का नाम ।

सुभागी—वि० [स० सुभाग] भाग्यवान् । भाग्यशाली । खुशकिस्मत । उ०—कौन होगा जो न लेगा उस सुधा का स्वाद । छोड प्रातिक गर्व अपना और व्यर्थ विवाद । जो सुभागी चख सकेगे वह रसाल प्रसाद । वे कदापि नही करेंगे नागरी प्रतिवाद ।—सरस्वती (शब्द०) ।

सुभागीन—सज्ञा पुं० [स० सौभाग्य, हिं० सुभाग + ईन (प्रत्य०)] [स्त्री० सुभागिन] अच्छे भाग्यवाला । भाग्यवान् । सुभग । उ०—कोक कलान कै वेनी प्रवीन वही अवलानि मैं एक पढी है । आजु ललै (लखै ?) विपरीत मै आँगी, सुभागीन यो मुख ऐसी कढी हे ।—सुदरीसर्वस्व (शब्द०) ।

सुभाग्य[1]—वि० [स० सु + भाग्य] अत्यत भाग्यशाली । बहुत बडा भाग्यवान् ।

सुभाग्य[2]—सज्ञा पु० दे० 'सौभाग्य' ।

सुभान—अव्य० [अ० सुबहान] धन्य । वाह वाह । जैसे,—सुभान तेरी कुदरत ।

यौ०—सुभान अल्ला = ईश्वर धन्य है । (प्राय इस पद का व्यवहार कोई अद्भुत पदार्थ या अनोखी घटना देखकर किया जाता है ।)

सुभाना Ⓤ†—क्रि० अ० [हिं० शोभना] शोभित होना । देखने मे भला जान पडना । (क्व०) । उ०—भो निकुज सुख पुज सुभाना । मडप मडन मडित नाना ।—गोपाल (शब्द०) ।

सुभानु[1]—सज्ञा पु० [स०] १ चतुर्थ इतास नामक युग के दूसरे वर्ष का नाम । २ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

सुभानु[2]—वि० सुदर या उत्तम प्रकाश से युक्त । सुप्रकाशमान् ।

सुभाय Ⓤ†—सज्ञा पु० [सं० स्वभाव] दे० 'स्वभाव' । उ०—फल आए तरुवर झुके झुकत मेघ जल लाय । विभौ पाय सज्जन झुके यह परकाजि सुभाय ।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०) ।

सुभायक Ⓤ—वि० [स० स्वाभाविक] स्वाभाविक । स्वभावत । उ०—अभिराम सचिक्कण श्याम सुगध के धामहु ते जे सुभायक के । प्रतिकूल भए दुख शूल सबै किधौ शाल शृगार के घायक के ।—केशव (शब्द०) ।

सुभाव Ⓤ†—सज्ञा पुं० [स० स्वभाव] दे० 'स्वभाव' । उ०—(क) कहा सुभाव परयो सखि तेरो यह विनवत हौ तोहिं ।—सूर (शब्द०) । (ख) और कै हास विलास न भावत साधुन को यह सिद्ध सुभाव ।—केशव (शब्द०) ।

सुभावित वि० [स०] उत्तम रूप से भावना की हुई (औषध) ।

सुभाषचद्र (वसु)—सज्ञा पु० 'नेता जी' नाम से विख्यात भारतीय स्वतत्रता सग्राम के अद्वितीय देशभक्त योद्धा ।

विशेष—इनका जन्म २३ जनवरी, १८९७ को बगाल प्रात मे हुआ था । कहते है, १९४५ की एक विमान दुर्घटना मे इनका निधन हुआ ।

सुभाषण—सज्ञा पु० [स०] १. युयुधान के एक पुत्र का नाम । २. सुदर भाषण ।

सुभाषित[1]—सज्ञा पु० [स०] १ एक बुद्ध का नाम । २. उचित कथन । उपयुक्त कथन । ३ आनदप्रदायक कथन या कवित्वमय उक्ति (को०) ।

सुभाषित[2]—वि० १ सुदर रूप से कहा हुआ । अच्छी तरह कहा हुआ । २ वाक्पटु । वाग्मी (को०) ।

सुभाषी—वि० [स० सुभाषिन्] उत्तम रूप से बोलनेवाला । मिष्ठभाषी ।

सुभास[1]—सज्ञा पु० [सं०] १ सुधन्वा के एक पुत्र का नाम । २ एक दानव (को०) ।

सुभास[2]—वि० सुप्रकाशमान् । खूब चमकीला ।

सुभास्वर[1]—वि० [सं०] देदीप्यमान् । चमकदार । चमकीला ।

सुभास्वर[2]—सज्ञा पु० [स०] पितरो का एक गण ।

सुभिक्ष—सज्ञा पु० [स०] १ ऐसा काल या समय जिसमे भिक्षा या भोजन खूब मिले और अन्न खूब हो । सुकाल । उ०—पुनि पद परत जलद बहु वर्षे । भयो सुभिक्ष प्रजा सब हर्षे ।—रघुराज (शब्द०) । २ दुर्भिक्ष की अवस्था न रहना । अन्न आदि की सुलभता (को०) ।

सुभिक्षा—सज्ञा स्त्री० [सं०] धौ के फूल । धातुपुष्पिका ।

सुभिषज्—सज्ञा पुं० [सं०] उत्तम चिकित्सक । वह जो अच्छी चिकित्सा करनेवाला हो ।

सुभी Ⓤ—वि० स्त्री० [स० शुभ] शुभकारक । मगलकारक । उ०—है जलधार हार मुकुता मनो वक पगति कुमुदमाल सुभी । गिरा गभीर गरज मनु सुनि सखी खानि के श्रवन देखु भी ।—सूर (शब्द०) ।

सुभीता—सज्ञा पु० [अ०] १ सुगमता । आसानी । सहूलियत । २. सुअवसर । सुयोग । ३ आराम । चैन (क्व०) ।

सुभीम[1]—सज्ञा पु० [स०] एक दैत्य का नाम ।

सुभीम[१]—वि० [वि० स्त्री० सुभीमा] अत्यत भीषण। वहुत भयावना।

सुभीमा—सज्ञा स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।

सुभीरक, सुभीरव—सज्ञा पु० [सं०] ढाक का पेड। पलाश वृक्ष।

सुभीरुक—सज्ञा पु० [स०] चाँदी। रजत।

सुभुज[१]—वि० [स०] सुदर भुजाओवाला। सुवाहु।

सुभुज[२]—सज्ञा पुं० [स०] सुवाहु नामक राक्षस। उ०—जो मारीच सुभुज मदमोचन।—मानस, १।२२१।

सुभुजा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम।

सुभूता—सज्ञा स्त्री० [स०] उत्तर दिशा का नाम जिसमे प्राणी भले प्रकार स्थित होते हैं। (छादोग्य०)।

सुभूति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कुशल। क्षेम। मगल। २ उन्नति। तरक्की। ३ तित्तिर नाम का पक्षी (को०)।

सुभूतिक—सज्ञा पुं० [स०] बेल का पेड। विल्ववृक्ष।

सुभूम—सज्ञा पुं० [स०] कार्तवीर्य जो जैनियो के आठवे चक्रवर्ती थे।

सुभूमि[१]—सज्ञा पुं० [स०] उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

सुभूमि[२]—वि० सुदर भूमि। अच्छी जगह (को०)।

सुभूमिक—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन जनपद का नाम जो महाभारत के अनुसार सरस्वती नदी के किनारे था।

सुभूमिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुभूमिक'।

सुभूमिय—सज्ञा पुं० [स०] उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

सुभूषण[१]—सज्ञा पुं० [स०] उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

सुभूषण[२]—वि० सुदर भूषणो से अलकृत। जो अच्छे अलकार पहने हो।

सुभूषित—वि० [स०] उत्तम रूप से भूषित। भली भाँति अलकृत।

सुभृत—वि० [स०] १ सम्यक्प्रदत्त। भली भाँति प्रदत्त। २ सुरक्षित। रक्षित। ३ अच्छी तरह लदा हुआ। जिसपर खूब बोझ लदा हो (को०)।

सुभृश, सुभृष—वि० [स०] अत्यत अधिक। वहुत अधिक।

सुभैक्ष—सज्ञा पु० [सं०] उत्तम भिक्षा। श्रेष्ठ भिक्षा (को०)।

सुभोग्य—वि० [स०] सुख से भोगने योग्य। अच्छी तरह भोगने के लायक।

सुभोज—सज्ञा पु० [सं०] १ सुदर भोजन। इच्छा भर भोजन करना। भोजन से तृप्त होना (को०)।

सुभौटी†—सज्ञा स्त्री० [स० शोभा + वती या हिं० औटी (प्रत्य०)] शोभा। उ०—मौन ते कौन सुभौटी रहे, विन बोले खुले घर को न किवारो।—हनुमान (शब्द०)।

सुभौम—सज्ञा पु० [सं०] जैनियो के एक चक्रवर्ती राजा का नाम जो कार्तवीर्य का पुत्र था।

विशेष—जैन हरिवश मे लिखा है कि जब परशुराम ने कार्तवीर्यार्जुन का वध किया, तब कार्तवीर्य की पत्नी अपने बच्चे सुभौम को लेकर कुशिकाश्रम मे चली गई और वही उसका लालन पालन तथा शिक्षा दीक्षा हुई। बडे होने पर सुभौम ने अपने पिता के वध का बदला लेने के लिये २० बार पृथ्वी को ब्राह्मणशून्य किया और इस प्रकार क्षत्रियो का प्राधान्य स्थापित किया।

सुभ्र[१]—वि० [स० शुभ्र] दे० 'शुभ्र'।

सुभ्र[२]—सज्ञा पु० [सं० श्वभ्र, द्वि०] जमीन मे का बिल या गड्ढा।

सुभ्राज—सज्ञा पुं० [सं०] देवभ्राज के एक पुत्र का नाम।

सुभ्रु[१]—सज्ञा स्त्री० [स०] १. नारी। स्त्री। औरत। २ सुदर नेत्रोवाली नारी। ३. स्कद की एक मातृका का नाम।

सुभ्रु[२]—वि० सुदर भौहोवाला। जिसकी भवें सुदर हो।

सुभ्रू[१]—वि० [सं०] दे० 'सुभ्रु[२]'।

सुभ्रू[२]—सज्ञा स्त्री० तिरछी भौहोवाली सुदरी। आकर्षक नारी (को०)।

सुमगल[१]—वि० [सं० सुमङ्गल] १. अत्यत शुभ। कल्याणकारी। २ सदाचारी। ३ यज्ञो से पूर्ण (को०)।

सुमगल[२]—सज्ञा पुं० १ एक प्रकार का विष। २ शुभ या मगलप्रद वस्तु (को०)।

सुमगला—सज्ञा स्त्री० [सं० सुमङ्गला] १ मकडा नामक घास। २ स्कद की एक मातृका का नाम। ३ एक अप्सरा का नाम। ४ एक नदी जो कालिकापुराण के अनुसार हिमालय मे निकलकर मणिकूट (कामाक्षा) प्रदेश मे वहती है।

सुमगली—सज्ञा स्त्री० [स० सुमङ्गल + ई (प्रत्य०)] विवाह मे सप्तपदी पूजा के बाद पुरोहित को दी जानेवाली दक्षिणा।

विशेष—सप्तपदी पूजा के बाद कन्या पक्ष का पुरोहित वर के हाथ मे सिंदूर देता है और वर उसे वधू के मस्तक मे लगा देता है। इसके उपलक्ष मे पुरोहित को जो नेग दिया जाता है, उसे सुमगली कहते हैं।

सुमगा—सज्ञा स्त्री० [स० सुमङ्गा] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

सुमत—सज्ञा पुं० [स० सुमन्त्र] राजा दशरथ का मत्री और सारथि।

विशेष—जब रामचद्र वन को जाने लगे थे, तब यही सुमत (सुमत्र) उन्हें रथ पर बैठाकर कुछ दूर छोड आया था।

सुमतु[१]—सज्ञा पुं० [सं० सुमन्तु] १ एक मुनि का नाम जो वेदव्यास के शिष्य, अथर्ववेद के शाखाप्रचारक तथा एक स्मृति या धर्मशास्त्र के प्रणेता थे। २ जह्नु के एक पुत्र का नाम। ३ अच्छा सलाहकार। उत्कृष्ट मत्री (को०)।

सुमतु[२]—वि० १ अच्छी मत्रणा या सलाह देनेवाला। २ जो अत्यत निंद्य हो। दोषावह। सापराध (को०)।

सुमत्र—सज्ञा पु० [सं० सुमन्त्र] १ राजा दशरथ का मत्री और सारथि। १ अतरिक्ष के एक पुत्र का नाम। ३ कल्कि का बडा भाई। ४ आयव्यय का प्रबध करनेवाला मत्री। अर्थसचिव।

विशेष—सुमत्र का कर्तव्य यह बतलाया गया है कि वह राजा को सूचित करे कि इस वर्ष इतना द्रव्य सचित हुआ है, इतना व्यय हुआ, इतना शेष है, इतनी स्थावर सपत्ति है और इतनी जगम सपत्ति है।

५ अच्छी सलाह। उत्तम मत्रणा। अच्छा मत्र (को०)। ६ बाभ्रव गौतम नाम के एक आचार्य (को०)।

सुमत्रक—सज्ञा पुं० [स० सुमन्त्रक] कल्कि का बंडा भाई।

विशेष—कल्किपुराण मे लिखा है कि कल्कि ने अपने तीन बडे भाइयो (प्राज्ञ, कवि और सुमत्रक) के सहयोग से अधर्म का नाश और धर्म का स्थापन किया था।

सुमत्रज्ञ—वि० [स० सुमन्त्रज्ञ] धर्मशास्त्र का ज्ञाता।

सुमत्रित[1]—सज्ञा पुं० [स० सुमन्त्रित] अच्छी मत्रणा। उत्कृष्ट सलाह [को०]।

सुमत्रित[2]—वि० १ जिसकी सलाह या मत्रणा सुविचारित हो। २ जिसे उत्तम मत्रणा या सलाह दी गई हो [को०]।

सुमत्री—वि० [सं० सुमन्त्रिन] जिसका मत्री या अमात्य योग्य हो। सुयोग्य मत्रीवाला।

सुमथन—सज्ञा पुं० [स० सु+मन्थ (=पर्वत)] मदर पर्वत। उ०—श्रुति कदव पय सागर सुदर। गिरा सुमथन शैल धुरधर। —श० दि० (शब्द०)।

सुमद—वि० [स० सुमन्द] अत्यत सुस्त। काहिल।

सुमदबुद्धि—वि० [सं० सुमन्दबुद्धि] मदबुद्धि। कुदजेहन। कूढमग्ज।

सुमदभाज्—वि० [स० सुमन्दभाज्] अत्यत अभागा। बदकिस्मत [को०]।

सुमदमति—वि० [सं० सुमन्दमति] दे० 'सुमदबुद्धि'।

सुमदर—सज्ञा पुं० [सं० सुमन्द्र] दे० 'सुमद्र'।

सुमदा—सज्ञा स्त्री० [सं० स० सुमन्दा] एक प्रकार की शक्ति।

सुमद्र—सज्ञा पुं० [स० सुमन्द्र] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे १६+११ के विराम से २७ मात्राएँ तथा अत मे गुरु लघु होते है। यह सरसी नाम से प्रसिद्ध है। (होली मे जो 'कबीर' गाए जाते है, वे प्राय इसी छद मे होते है।)

सुम[1]—सज्ञा पु० [स०] १ पुष्प। कुसुम। २ चद्रमा ३. आकाश। व्योम। ४ कर्पूर (को०)।

सुम[2]—सज्ञा पु० [फा०] घोडे या दूसरे चौपायो के खुर। टाप।

सुम[3]—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पेड जो आसाम मे होता है और जिसपर 'मूँगा' (रेशम) के कीडे पाले जाते है।

सुमख[1]—वि० [स०] जिसने उत्तम यज्ञ किए हो। उत्तम यज्ञो से सपन्न।

सुमख[2]—सज्ञा पुं० उत्तम यज्ञ। आनद समारोह।

सुमखारा—सज्ञा पुं० [फा० सुम+खार] वह घोडा जिसकी एक (आँख की) पुतली बेकार हो गई हो।

सुमगधा—सज्ञा स्त्री० [सं०] अनाथपिंडिका की पुत्री का नाम।

सुमणि—सज्ञा पुं० [सं०] १ स्कद के एक पार्षद का नाम। २. श्रेष्ठ रत्न। उत्तम रत्न। ३. वह जो उत्तम रत्नो से भूषित हो (को०)।

सुमत[1]—वि० [स०] उत्तम ज्ञान से युक्त। ज्ञानवान्। बुद्धिमान्।

सुमत[2]—सज्ञा स्त्री० [सं० सुमति] दे० 'सुमति'।

सुमतराश—सज्ञा पुं० [फा० सुम+तराश] घोडे के नाखून या खुर काटने का औजार।

सुमतिजय—सज्ञा पुं० [सं० सुमतिञ्जय] विष्णु।

सुमति[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ एक दैत्य का नाम। २ सावर्ण मन्वतर के एक ऋषि का नाम। ३ सूत के एक पुत्र या शिष्य का नाम। ४. भरत के एक पुत्र का नाम। ५ सोमदत्त के एक पुत्र का नाम। ६ सुपार्श्व के एक पुत्र का नाम। ७ जनमेजय के एक पुत्र का नाम। ८ दृढसेन के एक पुत्र का नाम। ९. विदूरथ का एक पुत्र। १० वर्तमान अवसर्पिणी के पाँचवें अर्हत् या गत उत्सर्पिणी के तेरहवें अर्हत् का नाम। ११ इक्ष्वाकुवशी राजा कुकुत्थ के पुत्र का नाम। १२ नृग के एक पुत्र का नाम (को०)।

सुमति[1]—सज्ञा स्त्री० १ सगर की पत्नी का नाम। (पुराणो के अनुसार यह ६०,००० पुत्रो की माता थी।) २ ऋतु की पुत्री का नाम। ३ विष्णुयश की पत्नी और कल्कि की माता। ४ सुदर मति। सुबुद्धि। अच्छी बुद्धि। ५ मेल। ६ भक्ति। प्रार्थना। ७ सारिका पक्षी। मैना। ८ भाग्य की अनुकूलता। देव की कृपा (को०)। ९ शुभकामना। मगलकामना। दुआ (को०)। १० आकाक्षा। कामना। इच्छा (को०)।

सुमति[2]—वि० अच्छी बुद्धिवाला। अत्यत बुद्धिमान्।

सुमति बाई—सज्ञा स्त्री० [स० सुमति+हिं० बाई] एक भक्तिन का नाम जो ओडछा के राजा मधुकर शाह की रानी गणेशबाई की सहचरी थी।

सुमतिमेरु—सज्ञा पु० [स०] हल का एक भाग।

सुमतिरेणु—सज्ञा पु० [स०] १ एक यक्ष का नाम। २ एक नागासुर का नाम।

सुमद[1]—वि० [सं०] मदोन्मत्त। मतवाला।

सुमद[2]—सज्ञा पुं० एक वानर जो रामचद्र की सेना का सेनापति था।

सुमदन—सज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड। आम्रवृक्ष।

सुमदना—सज्ञा स्त्री० [सं०] कालिकापुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

सुमदनात्मजा, सुमदात्मजा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम।

सुमदुम—वि० [अनु० या देश०] मोटा। तोदल। स्थूल।

सुमधुर[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार का शाक। जीव शाक। २. मधुर वचन। स्वीकरणीय कथन। मीठी बात (को०)।

सुमधुर[2]—वि० अत्यत मधुर। बहुत मीठा।

सुमध्यमा—वि० [सं०] सुदर कमरवाली।

सुमध्या—वि० स्त्री० [स०] दे० 'सुमध्यमा'।

सुमन पत्र—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सुमन पत्रिका'।

सुमन पत्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] जावित्री। जातीपत्री।

सुमन फल—सज्ञा पुं० [सं०] १. कैथ। कपित्थ। २. जायफल। जातीफल।

सुमन[1]—सज्ञा पुं० [सं० सुमनस्] १ देवता। पडित। विद्वान्। ३ पुष्प। फूल। ४. गेहूँ। ५ धतूरा। ६ नीम। ७ घीकरज। घृतकरज। ८ एक दानव का नाम। ९. उरु और आग्नेयी के पुत्र का नाम। १० उल्मुक के एक पुत्र का नाम। ११ हर्यश्व के पुत्र का नाम। १२ प्लक्ष द्वीप के अतर्गत एक पर्वत का नाम (बौद्ध)। १४. मित्र। (डिं०)।

**सुमन[२]**—वि० १ उत्तम मनवाला। सहृदय। दयालु। २ मनोहर। सुदर।

**सुमनचाप**—सज्ञा पु० [स० सुमन + चाप] कामदेव जिसका धनुष फूलो का माना गया है।

**सुमनमाल**—सज्ञा पु० [सं० सुमन + हिं० माल] पुष्प की माला। फूलो का हार। उ०—मुरतरु सुमनमाल बहु बरषहिं। मनहुँ बलाक अवलि मनु करषहिं।—मानस, १।३४७।

**सुमनराज**Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० सुमन + राज] सुमन अर्थात् देवताओ का राजा देवराज—इद्र।

**सुमनस[१]**—सज्ञा पु० [स० सुमनस्] १ देवता। २ पुष्प। फूल।

**सुमनस[२]**—वि० प्रसन्नचित्त। उ०—अधकार तव मिट्यो निशानन। भए प्रसन्न देव मुनि आनन। बरषहिं सुमनस सुमनम सुमनस। जय जय करहिं भरे आनंद रस।—रघुराज (शब्द०)।

**सुमनसधुज**—सज्ञा पुं० [स० सुमनस् + ध्वज] कामदेव। (डिं०)।

**सुमनस्क**—वि० [सं०] प्रसन्न। सुखी।

**सुमना[१]**—सज्ञा पुं०, वि० [स० सुमनस्] दे० 'सुमन'।

**सुमना[२]**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चमेली। जातीपुष्प। २ सेवती। शतपत्री। ३ कबरी गाय। ४ कैकेयी का वास्तविक नाम। ५ दम की पत्नी का नाम। ६ मधु की पत्नी और वीरव्रत की माता का नाम।

**सुमनामुख**—वि० [स०] सुदर मुखवाला।

**सुमनायन**—सज्ञा पुं० [स०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

**सुमनास्य**—सज्ञा पुं० [स०] एक यक्ष का नाम।

**सुमनित**—वि० [सं० सुमणि + त (प्रत्य०)] सुदर मणि से युक्त। उत्तम मणियो से जडा हुआ। उ०—केशव कमल मूल अलि-कुल कुनितकि कंधौं प्रतिधुनित सुमनित निचयके।—केशव (शब्द०)।

**सुमनोज्ञघोष**—सज्ञा पु० [सं०] बुद्धदेव।

**सुमनोत्तारा**—सज्ञा स्त्री० [स०] राजाओ के अत पुर मे रहनेवाली स्त्री।

**सुमनोदाम**—सज्ञा पुं० [स० सुमनोदामन्] पुष्पहार। पुष्पमाला (को०)।

**सुमनोभर**—वि० [स०] फूलो से सजा हुआ।

**सुमनोमुख**—सज्ञा पुं० [स०] एक यक्ष का नाम।

**सुमनोरज**—सज्ञा स्त्री० [स० सुमनोरजस्] फूल का रज। पराग। पुष्पधूलि। पुष्परेणु (को०)।

**सुमनौकस**—सज्ञा पु० [स०] देवलोक। स्वर्ग।

**सुमन्यु[१]**—सज्ञा पुं० [स०] एक देवगधर्व का नाम।

**सुमन्यु[२]**—वि० अत्यत क्रोधी। गुस्सेवर।

**सुमफटा**†—सज्ञा पुं० [फा० सुम + हिं० फटना] एक प्रकार का रोग जो घोडो के खुर के ऊपरी भाग से तलवे तक होता है। यह अधिकतर अगले पाँवो के अदर तथा पिछले पाँवो के खुरो मे होता है। इससे घोडो के लँगडे हो जाने की सभावना रहती है।

**सुमर**—सज्ञा पुं० [स०] १ वायु। हवा। २ सहज मृत्यु।

**सुमरन**Ⓤ—सज्ञा पुं० [सं० स्मरण] दे० 'स्मरण'।

**सुमरन[२]**—सज्ञा स्त्री० दे० 'सुमरनी'।

**सुमरना**Ⓤ—क्रि० स० [सं० स्मरण] १ स्मरण करना। चिंतन करना। ध्यान करना। २ बारबार नाम लेना। जपना।

**सुमरनी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुमरना + ई (प्रत्य०)] नाम जपने की छोटी माला जो सत्ताइस दानो की होती है।

**सुमरा**—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

विशेष—यह मछली भारत की नदियो और विशेषकर गरम झरनो मे पाई जाती है। यह पाँच इच तक लबी होती है। इसे महुवा भी कहते हैं।

**सुमरीचिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] सास्य के अनुसार पाँच प्रकार की बाह्यतुष्टियो मे से एक।

**सुममंग**—वि० [स०] मर्मस्थल तक वेधनेवाला (बाण)।

**सुमल्लिक**—सज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद का नाम।

**सुमसायक**—सज्ञा पुं० [सं० सुमन + सायक] कामदेव। (डिं०)।

**सुमसुखडा[१]**—वि० [फा० सुम + हिं० सूखना] (घोडा) जिसके खुर सूखकर सिकुड गए हों।

**सुमसुखडा[२]**—सज्ञा पुं० एक प्रकार का रोग जिसमे घोडे के खुर सूखकर सिकुड जाते हैं।

**सुमह**—सज्ञा पु० [स०] जह्नु के एक पुत्र का नाम।

**सुमहाकपि**—सज्ञा पु० [सं०] एक दानव का नाम।

**सुमहात्यय**—वि० [स०] अत्यधिक विनाश करनेवाला (को०)।

**सुमात्रा**—सज्ञा पु० मलय द्वीपपुज का एक बडा द्वीप जो बोर्नियो के पश्चिम और जावा के उत्तरपश्चिम मे है।

**सुमाद्रेय**—सज्ञा पुं० [स० माद्रेय] महदेव (डिं०)।

**सुमानस**—वि० [स०] अच्छे मन का। सहृदय।

**सुमानिका**—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे सात अक्षर होते है जिनमे से पहला, तीसरा, पाँचवा और सातवाँ अक्षर लघु तथा अन्य अक्षर गुरु होते हैं।

**सुमानी**—वि० [स० सुमानिन्] बडा अभिमानी। स्वाभिमानी।

**सुमाय**—वि० [स०] १ अत्यत बुद्धिमान्। २ मायायुक्त।

**सुमार**Ⓤ—सज्ञा पु० [फा० शुमार] गिनती। गणना। दे० 'शुमार'।

**सुमार्ग**—सज्ञा पुं० [सं०] उत्तम मार्ग। अच्छा रास्ता। सुपथ। सन्मार्ग।

**सुमार्त्स्न**—वि० [स०] १ अत्यत सुदर। २ बहुत छोटा। सूक्ष्म (को०)।

**सुमाल**—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

**सुमालिनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे छह वर्ण होते हैं। इनमे से दूसरा और पाँचवाँ लघु तथा अन्य वर्ण गुरु होते है। २ एक गधर्वी का नाम।

**सुमाली[१]**—सज्ञा पुं० [सं० सुमालिन्] १ एक वानर का नाम। २ एक राक्षस का नाम जो सुकेश राक्षस का पुत्र था।

विशेष—इसी सुमाली की कन्या कैकसी के गर्भ से विश्रवा से रावण, कुभकर्ण, शूर्पनखा और विभीषण उत्पन्न हुए थे।

सुमाली[2]—सज्ञा पु० [फा० शुमाल] एक अरब जाति।

विशेष—अफ्रिका के पश्चिमी किनारे पर तथा अदन मे इस जाति का निवास है। गुलामो का व्यवसाय करनेवाले अफ्रिका से इन्हे ले आए थे।

सुमाली लैंड—सज्ञा पु० [अ०] अफ्रीका का पूर्वी तटवर्ती एक देश।

सुमाल्य—सज्ञा पुं० [स०] महापद्म के एक पुत्र का नाम।

सुमाल्यक—सज्ञा पु० [स०] पुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम।

सुमावलि—सज्ञा [स०] पुष्पहार।

सुमित्र[1]—सज्ञा पु० [स०] १ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २ अभिमन्यु के सारथि का नाम। ३. मगध का एक राजा जो अर्हत् व्रत का पिता था। ४ गद के एक पुत्र का नाम। ५ श्याम का एक पुत्र। ६ शमीक का एक पुत्र। ७ वृष्णि का एक पुत्र। ८ इक्ष्वाकु वश के अतिम राजा सुरथ के पुत्र का नाम। ९ एक दानव का नाम। १० सौराष्ट्र के अतिम राजा का नाम।

विशेष—कर्नल टाड के अनुसार ये विक्रमादित्य के सममामयिक थे। इन्होने राजपूताने मे जाकर मेवाड के राणा वश की स्थापना की थी। भागवत मे इनका उल्लेख है।

११ अच्छा मित्र। सन्मित्र। वफादार दोस्त (को०)।

सुमित्र[2]—वि० उत्तम मित्रोवाला।

सुमित्रभू—सज्ञा पुं० [स०] १ जैनियो के चक्रवर्ती राजा सगर का नाम। २ वर्तमान अवसर्पिणी के बीसवें अर्हत् का नाम।

सुमित्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दशरथ की एक पत्नी जो लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता थी। २ मार्कडेय की माता का नाम। ३ एक यक्षिणी का नाम (को०)।

सुमित्रातनय—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सुमित्रानदन'।

सुमित्रानदन—सज्ञा पु० [स० सुमित्रानन्दन] १. लक्ष्मण। २ शत्रुघ्न।

सुमित्राभू—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सुमित्रानंदन'।

सुमित्र्य—वि० [स०] उत्तम मित्रोवाला। जिसके अच्छे मित्र हो।

सुमिरण—सज्ञा पुं० [स० स्मरण] दे० 'स्मरण'।

सुमिरन—सज्ञा पु० [स० स्मरण] दे० 'सुमिरण'।

सुमिरना—क्रि० स० [स० स्मरण] दे० 'सुमरना'। उ०—जेहि सुमिरत सिधि होइ गणनायक करिवर वदन।—तुलसी (शब्द०)।

सुमिरनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुमिरन + ई (प्रत्य०)] दे० 'सुमरनी'। उ०—अथवा सुमिरनी डारि दीन्ह्यो तुरत ही धारा बढी।—रघुराज (शब्द०)।

सुमिरिनिया—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुमिरनी + इया (प्रत्य०)] दे० 'सुमिरनी'। उ०—पीतय हक सुमिरिनिया मुहि देइ जाहु।—रहीम (शब्द०)।

सुमुख[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ शिव। २ गणेश। ३ गरुड के एक पुत्र का नाम। ४ द्रोण के एक पुत्र का नाम। ५ एक नागासुर। ६ एक असुर। ७ किन्नरो का राजा। ८ एक ऋषि। ९ एक वानर। १० पडित। आचार्य। ११ एक प्रकार का जलपक्षी। १२ एक प्रकार का शाक। १३ एक राजा का नाम। १४ राई। राजिका। राजसर्षप। १५ वनबर्बरी। जगली बर्बरी। १६ श्वेत तुलसी। १७ सुदर मुख। १८ एक प्रकार का भवन (को०)। १९ नख की खरोच। नखक्षत (को०)।

सुमुख[2]—वि० १ सुदर मुखवाला। २ सुन्दर। मनोरम। मनोहर। ३ प्रसन्न। ४ अनुकूल। कपालु। ५ जिनकी नोक अच्छी हो। धारदार। अनीवाला जैसे, बाण (को०)। ६ जिसके दरवाजे सुदर हो। सुदर द्वारवाला (को०)।

सुमुखा—सज्ञा स्त्री० [स०] सुदर मुखवाली स्त्री। सुदरी स्त्री।

सुमुखी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह स्त्री जिसका मुख सुदर हो। सुदर मुखवाली स्त्री। २ दर्पण। आईना। ३ सगीत मे एक प्रकार की मूर्छना। ४ एक अप्सरा का नाम। ५ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे ११ अक्षर होते है। इनमे से पहला, आठवाँ तथा ग्यारहवाँ लघु और अन्य अक्षर गुरु होते है। ६ नील अपराजिता। नीली कोयल। ७ शखपुष्पी। शखाहुली। कौडियाली।

सुमुष्टि—सज्ञा पु० [स०] वकायन। विषमुष्टि। महानिव।

सुमूर्ति—सज्ञा पुं० [स०] शिव के एक गण का नाम।

सुमूल[1]—सज्ञा पु० [स०] १ सफेद सहिजन। श्वेत शिग्रु। २ उत्तम मूल।

सुमूल[2]—वि० उत्तम मूलवाला। जिसकी जड अच्छी हो।

सुमूलक—सज्ञा पु० [स०] गाजर।

सुमूला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सरिवन। शालपर्णी। २. पिठवन। पृष्णिपर्णी।

सुमृग—सज्ञा पु० [स०] वह भूमि जहाँ बहुत से जगली जानवर हो। शिकार खेलने के लिये अच्छा मैदान।

सुमृत[1]—वि० [स०] मृत। मरा हुआ (को०)।

सुमृत[2]—सज्ञा पु० [स० स्मृति] दे० 'स्मृति'। उ०—श्रुति गुरु साधु सुमृत समत यह दृश्य सदा दुखकारी।—तुलसी (शब्द०)।

सुमृति—सज्ञा स्त्री० [स० स्मृति] दे० 'स्मृति'। उ०—देव कवितान पुण्य कीरति वितान, तेरे सुमृति पुराण गुणवान श्रुति भरिए।—देव (शब्द०)।

सुमेखल[1]—सज्ञा पु० [स०] मूँज। मुजतृण।

सुमेखल[2]—वि० जिसकी मेखला सुदर हो। सुदर मेखलावाला।

सुमेध—सज्ञा पु० [सं०] रामायण के अनुसार एक पवत का नाम।

सुमेडी†—सज्ञा स्त्री० [देश०] खाट बुनने का बाध।

सुमेध—वि० [स० सुमेधस्] दे० 'सुमेधा'। उ०—ताहि कहत आछेय हैं भूपन सुकवि सुमेध।—भूषण (शब्द०)।

सुमेधा[1]—वि० [स० सुमेधस्] उत्तम बुद्धिवाला। सुबुद्धि। बुद्धिमान्।

सुमेधा[2]—सज्ञा पुं० १ चाक्षुप मन्वतर के एक ऋषि का नाम। २. वेदमित्र के एक पुत्र का नाम। ३ पाँचवें मन्वतर के विशिष्ट देवता। ४ पितरो का एक गण या भेद।

सुमेधा[3]—सज्ञा स्त्री० मालकगनी। ज्योतिष्मती लता।

सुमेध्य—वि० [सं०] अत्यत पवित्र। बहुत पवित्र।

सुमेर⑤ संज्ञा पुं० [सं० सुमेरु] १ सुमेरु पर्वत। उ०—(क) शोभित सुंदर केशव कामिनि। जिमि सुमेर पर घन सहगामिनि।—गिरिधर (शब्द०)। (ख) संपति सुमेर की कुबेर की जु पावै ताहि तुरत लुटावत बिलंब उर धारै ना। पद्माकर (शब्द०)। २ गगाजल रखने का बड़ा पात्र।

सुमेरु[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा गया है।

विशेष भागवत के अनुसार सुमेरु पर्वतों का राजा है। यह सोने का है। इस भूमंडल के सात द्वीपों में प्रथम द्वीप जंबू द्वीप के—जिसकी लंबाई ४० लाख कोस और चौड़ाई चार लाख कोस है—नौ वर्षों में से इलावृत्त नामक अभ्यंतर वर्ष में यह स्थित है। यह ऊँचाई में उक्त द्वीप के विस्तार के समान है। इस पर्वत का शिरोभाग १२८ हजार कोस, मूल देश ६४ हजार कोस और मध्यभाग चार हजार कोस का है। उसके चारों ओर मंदर, मेरुमंदर, सुपार्श्व और कुमुद नामक चार आश्रित पर्वत हैं। इनमें से प्रत्येक की ऊँचाई और फैलाव ४० हजार कोस है। इन चारों पर्वतों पर आम, जामुन, कदंब और बड़ के पेड़ हैं जिनमें से प्रत्येक की ऊँचाई चार सौ कोस है। इनके पास ही चार ह्रद भी हैं जिनमें पहला दूध का, दूसरा मधु का, तीसरा ऊख के रस का और चौथा शुद्ध जल का है। चार उद्यान भी हैं जिनके नाम नंदन, चैत्ररथ, वैभ्राजक और सर्वतोभद्र हैं। देवता इन उद्यानों में सुरांगनाओं के साथ विहार करते हैं। मंदार पर्वत के देवच्युत वृक्ष और मेरुपर्वत के जंबू वृक्ष के फूल, बहुत स्थूल और विराट्काय होते हैं। इनसे दो नदियाँ—अरुणोदा और जंबू नदी—बन गई हैं। जंबू नदी के किनारे की जमीन की मिट्टी तो रस से सिक्त होने के कारण सोना ही हो गई है। सुपार्श्व पर्वत के महाकदंब वृक्ष से जो मधुधारा प्रवाहित होती है, उसको पान करनेवाले के मुँह से निकली हुई सुगंध चार सौ कोस तक जाती है। कुमुद पर्वत का वट वृक्ष तो कल्पतरु ही है। यहाँ के लोग आजीवन सुख भोगते हैं। सुमेरु के पूर्व जठर और देवकूट, पश्चिम में पवन और पारियात्र, दक्षिण में कैलास और करवीर गिरि तथा उत्तर में त्रिशृंग और मकर पर्वत स्थित है। इन सबकी ऊँचाई कई हजार कोस है। सुमेरु पर्वत के ऊपर मध्यभाग में ब्रह्मा की पुरी है, जिसका विस्तार हजारों कोस है। यह पुरी भी सोने की है। नृसिंहपुराण के अनुसार सुमेरु के तीन प्रधान शृंग हैं, जो स्फटिक, वैदूर्य और रत्नमय हैं। इन शृंगों पर २१ स्वर्ग हैं जिनमें देवता लोग निवास करते हैं।

२ शिव जी का एक नाम। ३ जपमाला के बीच का बड़ा दाना जो और सब दानों के ऊपर होता है। इसी से जप का आरंभ और इसी पर इसकी समाप्ति होती है। ४ उत्तर ध्रुव। विशेष दे० 'ध्रुव'। ५ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १२+५ के विश्राम से १७ मात्राएँ होती हैं, अंत में लघु गुरु नहीं होते, पर यगण अत्यंत श्रुतिमधुर होता है। इसकी १, ८ और १५ वीं मात्राएँ लघु होती हैं। किसी किसी ने इसके एक चरण में १६ और किसी ने २० मात्राएँ मानी हैं। पर यह सर्वसम्मत नहीं है। ६ एक विद्याधर (को०)।

सुमेरु[२]—वि० १ बहुत ऊँचा। २ बहुत सुंदर।

सुमेरुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुमेरु पर्वत से निकली हुई नदी।

सुमेरुवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] वह रेखा जो उत्तर ध्रुव से २३॥ अक्षांश पर स्थित है।

सुमेरुसमुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तर महासागर।

सुमन—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऋषि। मंत्र। २ आनंद। प्रसन्नता। ३. कृपा। अनुग्रह। रक्षण। ४ मन (को०)।

सुम्नी—वि० [सं० सुम्निन्] १ दयालु। कृपालु। मेहरबान। २ अनुकूल।

सुम्मा—संज्ञा पुं० [देश०] १ बकरा (बाजार)। २ दे० 'सुआ'।

सुम्मी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ सुनारों का एक औजार जिससे वे घुंडी और पेंचों की नाप उतारते हैं। २ दे० 'सुमी'।

सुम्मीदार सवरा—संज्ञा पुं० [हिं० सुम्मी+फा० दार (प्रत्य०)+सवरा (=औजार)] वह सवरा जिससे कमेरे पत्तर में बुंदकी निकालते हैं।

सुम्ह[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुम्भ] एक जाति का नाम।

सुम्ह[२]—संज्ञा पुं० [फा० सुम] दे० 'सुम'।

सुम्हार—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धान जो उत्तर प्रदेश में होता है।

सुय⑤—अव्य० [सं० स्वयम्] दे० 'स्वयम्'।

सुयत्रित—वि० [सं० सुयन्त्रित] १ भली प्रकार कीलित। आरक्षित। २ भली प्रकार बँधा हुआ। सुबद्ध। ३ संयत। जितेंद्रिय आत्मनिग्रही।

सुयवर⑥—संज्ञा पुं० [सं० स्वयम्वर] दे० 'स्वयंवर'।

सुयजु—संज्ञा पुं० [सं० सुयजुष्] महाभारत के अनुसार भूमंजु के एक पुत्र का नाम।

सुयज्ञ[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ रुचि प्रजापति के एक पुत्र का नाम जो आकूति के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। २ वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम। ३ ध्रुव के एक पुत्र का नाम। ४ उशीनर के एक राजा का नाम। ५ उत्तम यज्ञ।

सुयज्ञ[२]—वि० उत्तमता या सफलता से यज्ञ करनेवाला। जिसने उत्तमता से यज्ञ किया हो।

सुयज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] महाभौम की पत्नी का नाम।

सुयत—वि० [सं०] १ उत्तम रूप से संयत। सुसंयत। २ जितेंद्रिय।

सुयम—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार देवताओं का एक गण जिनका जन्म सुयज्ञ की पत्नी दक्षिणा के गर्भ से हुआ था।

सुयमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रियंगु।

सुयवस—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तम गोचर भूमि। २ हरी हरी उत्तम घास (को०)।

सुयश[१]—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा यश। अच्छी कीर्ति। सुख्याति। सुकीर्ति। सुनाम। जैसे,—आजकल चारों ओर उनका सुयश फैल रहा है।

**सुयश[१]**—वि० [स० सुयशस्] उत्तम यशवाला। यशस्वी कीर्तिमान्।

**सुयश[२]** संज्ञा पुं० भागवत के अनुसार अशोकवर्धन के पुत्र का नाम।

**सुयशा**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ दिवोदास की पत्नी का नाम। २ एक अर्हत् की माता का नाम। ३ परीक्षित की एक स्त्री का नाम। ४ एक अप्सरा का नाम। ५ अवसर्पिणी।

**सुयष्टव्य**—संज्ञा पुं० [सं०] रैवत मनु के एक पुत्र का नाम।

**सुयाति**—संज्ञा पुं० [स०] हरिवंश के अनुसार नहुष के एक पुत्र का नाम।

**सुयाम**—संज्ञा पुं० [स०] ललितविस्तर के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

**सुयामन्**—संज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु। २ राजभवन। राजप्रासाद। ३ एक प्रकार का मेघ। ४ एक पर्वत का नाम। ५ वत्सराज (उदयन) का एक नाम (को०)।

**सुयुक्त**—संज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम (को०)।

**सुयुक्ति**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ अच्छी युक्ति। उत्तम तर्क। २ उत्तम उपाय।

**सुयुद्ध**—संज्ञा पुं० [सं०] १ धर्मयुद्ध। न्यायसंगत युद्ध। २ अच्छी तरह लड़ना। जमकर लड़ना (को०)।

**सुयोग**—संज्ञा पुं० [सं०] सुंदर योग। संयोग। सुअवसर। अच्छा मौका। जैसे,—बड़े भाग्य से यह सुयोग हाथ आया है।

**सुयोग्य**—वि० [सं०] बहुत योग्य। लायक। काबिल। जैसे,—उनके दोनों पुत्र सुयोग्य हैं।

**सुयोधन**—संज्ञा पुं० [सं०] धृतराष्ट्र के बड़े पुत्र दुर्योधन का एक नाम।

**सुरग[१]**—वि० [सं० सुरङ्ग] १ जिसका रंग सुंदर हो। सुंदर रंग का। २ सुंदर। सुडौल। उ०—(क) सब पुर देखि धनुषपुर देख्यो देखे महल सुरंग।—सूर (शब्द०)। (ख) अलकावलि मुक्तावलि गूँथी डोर सुरंग बिराजै। सूर (शब्द०)। (ग) गति हेरि कुरंग कुरंग फिरै चतुरंग तुरंग सुरंग बने।—गि० दास (शब्द०)। ३ रसपूर्ण। उ०—रसनिधि सुंदर मीत के रंग चुचोंहे नैन। मन पट को कर देत है तुरत सुरंग ये नैन।—रसनिधि (शब्द०)। ४ लाल रंग का। रक्तवर्ण। उ०—पहिरे वसन सुरंग पावकयुत स्वाहा मनो।—केशव (शब्द०)। ५ निर्मल। स्वच्छ। साफ। उ०—अति वदन शोभ सरसी सुरंग। तहँ कमल नयन नासा तरंग।—केशव (शब्द०)।

**सुरंग[२]**—संज्ञा पुं० १ शिंगरफ। हिंगुल। २ पतंग। बक्कम। ३ नारंगी। नागरंग। ४ रंग के अनुसार घोड़ों का एक भेद।

**सुरंग[३]**—संज्ञा स्त्री० [स० सुरङ्ग] १ जमीन या पहाड़ के नीचे खोदकर या बारूद से उड़ाकर बनाया हुआ रास्ता जो लोगों के आने जाने के काम में आता है। जैसे,—इस पहाड़ में रेल कई सुरंगें पार करके जाती हैं। २ किले या दीवार आदि के नीचे जमीन के अंदर खोदकर बनाया हुआ वह तंग रास्ता जिसमें बारूद आदि भरकर उसमें आग लगाकर किला या दीवार उड़ाते हैं। उ०—भरि बारूद सुरंग लगावैं। पुरी सहित जदु भटन उड़ावैं।—गोपाल (शब्द०)।

क्रि० प्र०—उड़ाना। लगाना।

३ एक प्रकार का यंत्र जिसमें बारूद से भरा हुआ एक पीपा होता है और जिसके ऊपर एक तार निकला हुआ होता है।

विशेष—यह यंत्र समुद्र में डुबा दिया जाता है और इसका तार ऊपर की ओर उठा रहता है। जब किसी जहाज का पेंदा इस तार से छू जाता है, तो अपनी भीतरी विद्युत् शक्ति की सहायता से बारूद में आग लग जाती है जिसके फूटने से ऊपर का जहाज फटकर डूब जाता है। इसका व्यवहार प्रायः शत्रुओं के जहाजों को नष्ट करने में होता है।

४ वह सूराख जो चोर लोग दीवार में बनाते हैं। सेंध।

क्रि० प्र०—लगाना।

मुहा०—सुरंग मारना = सेंध लगाकर चोरी करना।

**सुरंगद**—संज्ञा पुं० [स० सुरङ्गद] पतंग। बक्कम। आल।

**सुरंगधातु**—संज्ञा पुं० [स० सुरङ्गधातु] गेरू मिट्टी।

**सुरंगधूलि**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरङ्गधूलि] नारंगी का पराग (को०)।

**सुरंगभुक**—संज्ञा पुं० [स० सुरङ्गभुज्] सेंध लगानेवाला। चोर।

**सुरंगा**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरङ्गा] १ कैवर्तिका लता। २ सेंध।

**सुरंगिका**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरङ्गिका] १ मूर्वा। मुर्हरी। चुरनहार। २ उपोदिका। पोई का साग। ३ श्वेत काकमाची। मकोय।

**सुरंगी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरङ्गी] १ काकनासा। कौआठोठी। २ पुन्नाग। सुलतान चंपा। ३ रक्त शोभांजन। लाल सहिंजन। ४ आल का पेड़ जिससे आल का रंग बनता है।

**सुरंजन**—संज्ञा पुं० [स० सुरञ्जन] सुपारी का पेड़।

**सुरंधक, सुरंध्र**—संज्ञा [स० सुरन्धक, सुरन्ध्र] १, एक प्राचीन जनपद का नाम। २ उस जनपद का निवासी।

**सुर[१]**—संज्ञा पुं० [स०] १ देवता। २ सूर्य। ३ पंडित। विद्वान। ४ मुनि। ऋषि। ५ पुराणानुसार एक प्राचीन नगर का नाम जो चंद्रप्रभा नदी के तट पर था। ६ अग्नि का एक विशिष्ट रूप। ७ देवविग्रह। देवप्रतिमा (को०)। ८ ३३ की संख्या।

**सुर[२]**—संज्ञा पुं० [स० स्वर] स्वर। ध्वनि। आवाज। विशेष दे० 'स्वर'।

यौ०—सुरतान। सुरटीप।

क्रि० प्र०—छेड़ना।—देना।—भरना।—मिलाना।

मुहा०—सुर में सुर मिलाना = हाँ में हाँ मिलाना। चापलूसी करना। सुर भरना = किसी गाने या बजानेवाले को सहारा देने के लिये उसके साथ कोई एक सुर अलापना या बाजे आदि से निकालना।

**सुरकत**ⓤ—संज्ञा पुं० [सं० सुर + कान्त] उद्र। उ०—मतिमंत महा छितिकंत मनि चढ़ि द्विदंत सुरकंत सम।—गि० दास (शब्द०)।

सुरक[1]--संज्ञा पुं० [सं० सुर] नाक पर का वह तिलक जो भाले की आकृति का होता है। उ०- खौरि पनिच भृकुटी धनुष बधिकु समरु, तजि कानि। हनतु तरुन मृग तिलकसर सुरक भाल, भरि तानि।--बिहारी (शब्द०)।

सुरक[2]--संज्ञा स्त्री० [हिं० सुरकना] सुरकने की क्रिया या भाव।

सुरकना--क्रि० [अनु०] १ किसी तरल पदार्थ को धीरे धीरे हवा के साथ खीचते हुए पीना। हवा के साथ ऊपर की ओर धीरे धीरे खीचना।

सुरकरीद्र--संज्ञा पु० [स० सुरकरीन्द्र] देवहस्ती। ऐरावत [को०]।

यौ०--सुरकरीद्रदर्पहा=गगा का एक नाम।

सुरकरी--संज्ञा पुं० [स० सुरकरिन्] देवताओ का हाथी। सुरराज का हाथी। ऐरावत दिग्गज। उ०--जु तू इच्छा वाके करि विमल पानी पियन की। झुके आधो लवे तन गगन मे ज्यो सुरकरी। --राजा लक्ष्मण सिंह (शब्द०)।

सुरकली--संज्ञा स्त्री० [हिं० सुर+कली] एक रागिनी का नाम।

सुरकाज Ⓤ संज्ञा पुं० [स० सुरकार्य] देवताओ का काम या हित। वह काम जो देवताओ को इष्ट हो। उ०--(क) सुरकाज धरि कर राज तनु चले दलन खल निसिचर अनी।--मानस, २।१२६। (ख) उठे हरखि सुरकाजु सँवारन।--मानस ३।२१।

सुरकानन संज्ञा पुं० [स०] देवताओ के विहार करने का वन। नदन कानन।

सुरकामिनी--संज्ञा स्त्री० [स०] देवागना। सुरागना। अप्सरा [को०]।

सुरकारु--संज्ञा पु० [स०] देवताओ के शिल्पकार, विश्वकर्मा।

सुरकार्मुक--संज्ञा पु० [स०] इद्रधनुष।

सुरकार्य--संज्ञा पुं० [सं०] देवताओ की तुष्टि के लिये किया हुआ कर्म। देवकार्य। जैसे--पूजन हवन आदि।

सुरकाष्ठ--संज्ञा पु० [स०] देवदारु। देवकाष्ठ।

सुरकुदाव Ⓤ--संज्ञा पुं० [सं० सुर (=स्वर), स० कु+हिं० दाँव (=धोखा)] स्वर के द्वारा धोखा देना। स्वर बदलकर बोलना, जिससे लोग धोखे मे आ जायँ। उ०--चौक चारु करि कूप ढारु धरियार बाँधि घर। मुक्ति मोल करि खड्ग खोलि सिधिहि निचोल वर। हय कुदाव दे सुरकुदाव गुन गान रग को। जानु भाव शिवधाम धाव धन ल्याउ लक को।--केशव (शब्द०)।

सुरकुनठ--संज्ञा पुं० [सं०] बृहत्सहिता के अनुसार ईशानकोण मे स्थित एक देश का नाम।

सुरकुल--संज्ञा पुं० [स०] देवताओ का निवासस्थान।

सुरकृत्[1]--संज्ञा पुं० [स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

सुरकृत्[2]--वि० देवताओ द्वारा किया हुआ।

सुरकृता--संज्ञा स्त्री० [स०] गिलोय। गुडुची।

सुरकेतु--संज्ञा पु० [सं०] १ देवताओ या इद्र की ध्वजा। २ इद्र। उ०--द्वारपाल के वचन सुनत नृप उठे समाज समेतू। लेन चले मुनि की अगुवाई जिमि विधि कहँ सुरकेतू।--रघुराज (शब्द०)।

सुरक्त--वि० [सं०] १ सुदर रँगा हुआ। अच्छी तरह रँगा हुआ। २ गाढ रक्त वर्ण का। ३ प्रभावित। वशीभूत। ४ अनुरक्त। ५ मधुर ध्वनियुक्त। ६ अत्यत सुदर। बहुत खूबसूरत [को०]।

सुरक्तक--संज्ञा पुं० [सं०] १ कोशम। कोशाम्र। विशेष दे० 'कोशम'। २ एक प्रकार का आम्रफल (को०)। ३ सोन गेरु। स्वर्ण गैरिक।

सुरक्ष[1]--संज्ञा पुं० [स०] १ एक मुनि का नाम। २ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

सुरक्ष[2]--वि० उत्तम रूप से रक्षित। जिसकी भली भाँति रक्षा की गई हो।

सुरक्षण--संज्ञा पु० [स०] उत्तम रूप से रक्षा करने की क्रिया। रखवाली। हिफाजन।

सुरक्षा--संज्ञा स्त्री० [स०] सुरक्षण। सम्यक् रक्षा [को०]।

सुरक्षित--वि० [सं०] जिसकी भली भाँति रक्षा की गई हो। उत्तम रूप से रक्षित। अच्छी तरह रक्षा किया हुआ।

सुरक्षी--संज्ञा पु० [स० सुरक्षिन्] उत्तम या विश्वस्त रक्षक। अच्छा अभिभावक या रक्षक।

सुरक्ष्य--वि० [स०] १ जो सम्यक् रक्षणीय हो। २ सरलतापूर्वक जिसकी रक्षा की जा सके [को०]।

सुरखडनिका--संज्ञा स्त्री० [स० सुरखण्डनिका] एक प्रकार की वीणा जो 'सुरमडलिका' भी कहलाती है।

सुरख Ⓤ--वि० [फा० सुर्ख] दे० 'सुर्ख'। उ०--हरषि हिये पर तिय धरयो सुरख सीप को हार।--पद्माकर (शब्द०)।

सुरखा[1]--वि० [फा० सुर्ख] दे० 'सुर्ख'। उ०--सुरखा अरु संजाव सुरमई अवलख भारी।--सूदन (शब्द०)।

सुरखा[2]--संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का लबा पौधा जिसमे पत्ते बहुत कम होते हैं।

सुरखाब[1]--संज्ञा पु० [फा० सुरखाब] चकवा।

मुहा०--सुरखाब का पर लगना=विलक्षणता या विशेषता होना। अनोखापन होना। जैसे--तुम मे क्या कोई सुरखाब का पर है, जो पहले तुम्हे दे।

सुरखाब[2]--संज्ञा स्त्री० [फा० सुरखाब] एक नदी का नाम जो बलख मे बहती है।

सुरखिया--संज्ञा पु० [फा० सुर्ख+इया (प्रत्य०)] एक प्रकार का पक्षी।

विशेष--यह सर से गरदन तक लाल होता है। इसकी पीठ भी लाल होती है, पर चोच पीली और पैर काले होते है।

सुरखिया बगला--संज्ञा पुं० [हिं० सुर्ख+बगला] १ एक प्रकार का बगला जिसे गाय बगला भी कहते है।

सुरखी--संज्ञा स्त्री० [फा० सुर्ख] १ ईंटो का बनाया हुआ महीन चूरा जो इमारत बनाने के काम मे आता है। २ दे० 'सुर्खी'।

यौ०--सुरखी चूना।

सुरखुरू--वि० [फा० सुर्खरू] दे० 'सुर्खरू'। उ०--अलहदार भल तेहि करगुरु। दीन दुनी रासन सुरखुरु।--जायसी (शब्द०)।

सुरगड—सज्ञा पुं० [सं० सुरगण्ड] एक प्रकार का फोडा।

सुरग(पु)[1]—सज्ञा पुं० [सं० स्वर्ग] दे० 'स्वर्ग'। उ०—जीत्यौ सुरग जीति दिसि चारयौ।—लाल कवि (शब्द०)।

सुरगज—सज्ञा पुं० [सं०] देवताओ या इद्र का हाथी।

सुरगण—सज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ देवगण। देवताओ का वर्ग या समूह।

सुरगति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ दैवी गति। भावी। २ देवताओ की स्थिति या अवस्था (को०)।

सुरगन(पु)—सज्ञा [स० सुरगण] देवताओ का समूह। देवगण। सुरगण। उ०—सुरगन सहित सभय सुरराजू।—मानस, २।२६४।

सुरगवेसाँ—सज्ञा स्त्री० [स० स्वर्गवेश्या] अप्सरा। (डिं०)।

सुरगर्भ—सज्ञा पुं० [सं०] देवसतान।

सुरगाय—सज्ञा स्त्री० [पुं० सुर+गो] कामधेनु।

सुरगायक—सज्ञा पु० [स०] देवताओ के गायक। गधर्व।

सुरगायन—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुरगायक'।

सुरगिरि—सज्ञा पुं० [स०] देवताओ के रहने का पर्वत, सुमेरु।

सुरगी(पु)—सज्ञा पुं० [सं० स्वर्गीय] देवता। (डिं०)।

सुरगी नदी(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० स्वर्गीय+नदी] स्वर्नदी। देवनदी। गगा। (डिं०)।

सुरगुरु—सज्ञा पु० [स०] देवताओ के गुरु, बृहस्पति। उ०—वचन सुनत सुरगुरु मुसकाने।—मानस, २।२१७।

सुरगुरुदिवस—सज्ञा पुं० [स०] बृहस्पतिवार।

सुरगृह—सज्ञा पुं० [सं०] देवताओ का मदिर। सुरकुल।

सुरगैया(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० सुर+हिं० गैया] कामधेनु।

सुरग्रामणी—सज्ञा पुं० [स०] देवताओ का नेता, इद्र।

सुरचाप—सज्ञा पुं० [सं०] इद्रधनुष।

सुरच्छन(पु)—सज्ञा पु० [स० सुरक्षण] दे० 'सुरक्षण'। उ०—रन परम विचच्छन गरम तर धरम सुरच्छन करम कर।—गि० दास (शब्द०)।

सुरज फल—सज्ञा पुं० [स०] कटहल। पनस।

सुरज[1]—वि० [स० सुरजस्] (फूल) जिसमे उत्तम या प्रचुर पराग हो।

सुरज(पु)[2]—सज्ञा पुं० [सं० सूर्य] दे० 'सूर्य'।

सुरजन[1]—सज्ञा पुं० [स०] देवताओ का वर्ग। देवसमूह।

सुरजन(पु)[2]—वि० [स० सज्जन] १ सज्जन। सुजन। २ चतुर। चालाक। उ०—कहो नैक समुझाइ मुहि सुरजन प्रीतम आप। बस मन मैं मन को हरौ क्यो न विरह सताप।—रसनिधि (शब्द०)।

सुरजनपन—सज्ञा पुं० [हिं० सुरजन+पन (प्रत्य०)] १ सज्जनता। भलमनसत। २ चालाकी। होशियारी। चतुराई।

सुरजा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक अप्सरा का नाम। २ पुराणानुसार एक नदी का नाम।

सुरजेठो(पु)—सज्ञा पुं० [सं० सुरज्येष्ठ] ब्रह्मा। (डिं०)।

सुरज्येष्ठ—सज्ञा पुं० [सं०] देवताओ मे बडे, ब्रह्मा।

सुरझन(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुलझना] दे० 'सुलझन'। उ०—गरजन मैं पुनि आप ही बरसन मैं पुनि आप। सुरझन मैं पुनि आप त्यो उरझन मैं पुनि आप।—रसनिधि (शब्द०)।

सुरझना—क्रि० अ० [हिं०] दे० 'सुलझना'। उ०—अरी करेजै नैन तुव सरसि करेजे वार। अजहूँ सुरझत नाहिं ते सुर हित करत पुकार।—रसनिधि (शब्द०)।

सुरझाना—क्रि० स० [हिं० सुलझाना] दे० 'सुलझाना'। उ०—क्यो सुरझाऊँ री नँदलाल सो अरुझि रह्यो मन मेरो।—सूर (शब्द०)।

सुरझावना(पु)—क्रि० स० [हिं० सुलझाना] दे० 'सुलझाना'। उ०—उरझ्यो काहू रूख मे कहूँ न वलकल चीर। सुरझावन के मिस तऊ ठिठकी मोरि शरीर।—लक्ष्मणसिंह शब्द०)।

सुरटीप—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुर+टीप] स्वर का आलाप। सुर की तान।

सुरत[1]—सज्ञा पुं० [स०] १. रतिक्रीडा। कामकेलि। सभोग। मैथुन। उ०—सुरत ही सब रैन बीती कोक पूरण रग। जलद दामिनि सग सोहत भरे आलस सग।—सूर (शब्द०)।

यौ०—सुरतकेलि, सुरतक्रीडा=रतिक्रीडा। सुरतगुप्ता। सुरतगुरु=पति। शौहर। सुरतगोपना। सुरतग्लानि। सुरततांडव=तीव्रतम कामवेग। प्रचड सभोग। सुरततली। सुरतप्रसग=कामक्रीडा मे आसक्ति। सुरतभेद=एक प्रकार का रतिबध। सुरतमुदित=रतिक्रीडा मे मसल दिया हुआ। सुरतरगी=सभोग मे आसक्त। सुरतवाररात्रि=सुरतक्रीडा की रात। सुरतविशेष=एक रतिबध। सुरतस्थ।

२ उत्कृष्ट आनद की अनुभूति (को०)। ३ एक बौद्ध भिक्षु का नाम।

सुरत[2]—सज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] ध्यान। याद। सुध। उ०—(क) धीर मढत मन छन नही कढत बदन तें बैन। तुरत सुरत की सुरत कै जुरत मुरत हँसि नैन।—शृगार सतसई (शब्द०)। (ख) करत महातम विपिन बधि चलो गयो करतार। तहँ अखड लागी सुरत यथा तैल की धार।—रघुराज (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—दिलाना।—होना।—लगना।

मुहा०—सुरत बिसारना=भूल जाना। विस्मृत होना। सुरत सँभालना=होश सँभालना।

सुरतगुप्ता, सुरतगोपना—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुरतिगोपा' (को०)।

सुरतग्लानि—सज्ञा स्त्री० [स०] रति या सभोगजनित थकान, ग्लानि या शिथिलता।

सुरततली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दूती। २ शिरोमाल्य। सेहरा।

सुरतबध—सज्ञा पुं० [सं०] सभोग का एक प्रकार।

सुरतरगिणी—सज्ञा स्त्री० [सं० सुरतरङ्गिणी] गगा।

सुरतरु—सज्ञा पु० [सं०] देवतर। कल्पवृक्ष।

सुरतरुवर—सज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष।

सुरतस्थ—वि० [सं०] स्त्रीप्रसग मे रत। सभोगरत [को०]।

सुरतात—सज्ञा पुं० [स० सुरतान्त] रति या सभोग का अत।

सुरता[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुर या देवता का भाव या कार्य। २ देवत्व। २. सुरसमूह। देवसमूह। देव जाति। ३ सभोग का आनद। ४ पत्नी। स्त्री। ५ एक अप्सरा का नाम।

सुरता[2]—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की बाँस की नली जिसमे से दाना छोडकर बोया जाता है।

सुरता[3]—सज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति, हिं० सुरत] १ चिंता। ध्यान। २ चेत। सुध। उ०—छाँडि शासना बौध की अरहत की ना मानि। सुरता छाँडि पिशाचता काहे को करि बानि।—(शब्द०)।

सुरता(पु)[4]—वि० ध्यान लगानेवाला। ध्यानी।

सुरता†[5]—वि०, सज्ञा पुं० [सं० श्रोता] दे० 'श्रोता'।

सुरता[6]—वि० [हिं० सुरत] समझदार। होशियार। बुद्धिमान्। सयाना। चालाक।

सुरतात—सज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओ के पिता, कश्यप। २ देवताओ के अधिपति, इद्र।

सुरतान[1]—सज्ञा स्त्री० [हिं सुर+तान] स्वर का आलाप। सुर टीप।

सुरतान[2]—सज्ञा पुं० [फा० सुलतान] दे० 'सुलतान'।

सुरताल—सज्ञा पुं० [स० स्वर+ताल] स्वर और ताल (सगीत)।

सुरति[1]—सज्ञा स्त्री० [सं० सु+रति] विहार। भोगविलास। काम-केलि। सभोग। उ०—विरची सुरति रघुनाथ कुजधाम बीच, काम बस नाम करे ऐसे भाव थपनो। जघनि सो मसकै सिकोरै नाक, ससकै मरोरै भौह हस कै सरीर डारै कपनो।—काव्यकलाधर (शब्द०)।

सुरति[2]—सज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] स्मरण। सुधि। चेत। उ०—छिनछिन सुरति करत यदुपति की परत न मन समुझायो। गोकुलनाथ हमारे हित लगि लिखिहू क्यो न पठायो।—सूर (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—दिलाना।—लगना।—होना।

सुरति[3]—सज्ञा स्त्री० [फा० सूरत] दे० 'सूरत'। उ०—सोवत जागत सपनवस रस रिस चैन कुचैन। सुरति श्यामघन की सुरति बिसरेहू बिसरै न।—बिहारी (शब्द०)।

सुरतिगोपना—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो रतिक्रीडा करके आई हो और अपने सखियो आदि से यह बात छिपाती हो।

सुरतिरव—सज्ञा पुं० [सं०] रतिक्रीडा के समय होनेवाली भूषणो की ध्वनि।

सुरतिवत(पु)—वि० [स० सुरत+वान्] कामातुर। उ०—हरि हँसि भामिनी उर लाइ। सुरतिवत गुपाल रीझे जानी अति सुखदाई।—सूर (शब्द०)।

सुरतिविचित्रा—सज्ञा स्त्री० [सं०] मध्या के चार भेदो मे से एक। वह मध्या जिसकी रतिक्रिया विचित्र हो। उ०—मध्या आरूढयौवना प्रगलभवचना जान। प्रादुर्भूत मनोभवा सुरति-विचित्रा मान।—केशव (शब्द०)।

सुरती—सज्ञा स्त्री० [सूरत (नगर)+ई] खाने के तमाकू के पत्तो का चूरा जो पान के साथ या यो ही चूना मिलाकर खाया जाता है। खैनी।

विशेष—अनुमान किया जाता है कि पुर्तगालवालो ने पहले पहल इसका प्रचार सूरत नगर मे किया था, इसी से इसका यह नाम पडा।

सुरतुग—सज्ञा पुं० [सं० सुरतुङ्ग] सुरपुन्नाग नामक वृक्ष।

सुरतोषक—सज्ञा पुं० [स०] १ कौस्तुभ मणि। २ वह जो देवताओ को तुष्ट करता है [को०]।

सुरतन[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ सोना। स्वर्ण। २ माणिक्य। लाल।

सुरतन[2]—वि० १ सर्वश्रेष्ठ। २ उत्तम रत्नो से युक्त।

सुरत्राण[1]—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुरत्राता'। उ०—राजन घोर निसान मान मरत्रान लजावत।—गि० दास (शब्द)।

सुरत्राण(पु)[2]—सज्ञा पुं० [फा० सुलतान] दे० 'सुलतान'।

सुरत्राता—सज्ञा पुं० [सं० सुर+त्रातृ] १ विष्णु। श्रीकृष्ण। २ इद्र।

सुरथ[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक चद्रवशी राजा।

विशेष—पुराणो के अनुसार ये स्वारोचिष मन्वतर मे हुए थे और इन्होंने पहले पहल दुर्गा की आराधना की थी। दुर्गा के वर से ये सावर्णि मनु के नाम से प्रसिद्ध हुए। दुर्गा सप्तशती मे इनका विस्तृत वृत्तात है।

२ द्रुपद के एक पुत्र का नाम। ३ जयद्रथ के एक पुत्र का नाम। ४ सुदेव के एक पुत्र का नाम। ५ जनमेजय के एक पुत्र का नाम। ६ अधिरथ के एक पुत्र का नाम। ७ कुशक के एक पुत्र का नाम। ८ रणक के एक पुत्र का नाम। ९ चारुपुरी के राजा हसध्वज का पुत्र। १० सुदर रथ। अनूप रथ (को०)। ११ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

सुरथ[2]—सुदर रथ से युक्त [को०]।

सुरथ[3]—सज्ञा पुं० [सं० सुरथम्] कुश द्वीप के अतर्गत एक वर्ष।

सुरथा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक अप्सरा का नाम। २ पुराणानुसार एक नदी का नाम।

सुरथाकार—सज्ञा पुं० [स०] एक वर्ष का नाम।

सुरथान—सज्ञा पुं० [सं० सुर+स्थान] स्वर्ग। (डिं०)।

सुरदार—वि० [हिं० सुर+फा दार] जिसके गले के स्वर सुदर हो। सुस्वर। सुरीला।

सुरदारु—सज्ञा पुं० [सं०] देवदार। देवदारु वृक्ष।

सुरदीर्घिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] आकाशगगा।

सुरदुदुभी—सज्ञा स्त्री० [सं० सुरदुन्दुभि] १ देवताओ का नगाडा। २ तुलसी।

सुरदेवी—सज्ञा स्त्री० [सं०] योगमाया जिसने यशोदा के गर्भ मे अवतार लिया था और जिसे कस पटकने चला था।

सुरदेश—सज्ञा पुं० [सं० सुर+देश] स्वर्ग। देवलोक।

सुरदोषी(पु)—सज्ञा पुं० [सं० सुरद्विष] देवद्रोही, असुर।

सुरद्रु—सज्ञा पुं० [स०] १ देवदारु। २ सुरद्रुम।

सुरद्रुम—सज्ञा पुं० [स०] १ कल्पवृक्ष। २ देवदारु (को०)। ३ देवनल। वडा नरकट। वडा नरसल।

सुरद्विप—सज्ञा पुं० [स०] १ देवताओ का हाथी। देवहस्ती। २ इद्र का हाथी। ऐरावत।

सुरद्विष्—सज्ञा पु० [सं०] १ देवताओ का शत्रु। असुर। दानव। राक्षस। २ राहु।

सुरधनु, सुरधनुष—सज्ञा पु० [स० सुरधनुस्] १ इद्रधनुष। २ नखक्षत का चिह्न [को०]।

सुरधाम—सज्ञा पु० [स० सुरधामन्] देवलोक। स्वर्ग। उ०—तनु परिहरि रघुवर बिरह राउ गएउ सुरधाम।—मानस, २।१५५।

मुहा०—सुरधाम सिधारना = मर जाना।

सुरधुनी—सज्ञा स्त्री० [स०] गगा।

सुरधूप—सज्ञा पुं० [स०] धूना। राल। सर्जरस।

सुरधेनु—सज्ञा स्त्री० [स० सुर+धेनु] देवताओ की गाय, कामधेनु।

सुरध्वज—सज्ञा पुं० [स०] सुरकेतु। इद्रध्वज।

सुरनदा—सज्ञा स्त्री० [स० सुरनन्दा] एक नदी का नाम।

सुरनगर—सज्ञा पु० [स०] स्वर्ग।

सुरनदी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गगा। २ आकाशगगा।

सुरनाथ—सज्ञा पु० [स०] इद्र।

सुरनायक—सज्ञा पुं० [स०] सुरपति। इद्र।

सुरनारी—सज्ञा स्त्री० [स०] देवागना। देववाला। देववधू।

सुरनाल—सज्ञा पु० [सं०] वडा नरसल। देवनल।

सुरनाह—सज्ञा पु० [स० सुरनाथ] देवराज इद्र। उ०—परिघा कहँ जादव हेरि हयो। सुरनाह तवे गत चेत भयो।—गिरिधर (शब्द०)।

सुरनिम्नगा—सज्ञा स्त्री० [स०] गगा।

सुरनिर्गंध—देश० पुं० [सं० सुरनिर्गन्ध] तेजपत्ता। तेजपत्र। पत्रज।

सुरनिर्झरिणी—सज्ञा स्त्री० [सं०] आकाशगगा।

सुरनिलय—सज्ञा पु० [स०] सुमेरु पर्वत, जहाँ देवता रहते है।

सुरप—सज्ञा पु० [सं० सुरपति] इद्र। उ०—या कहि सुरप गयहु सुरधाम।—पद्माकर (शब्द०)।

सुरपति—सज्ञा पुं० [स०] १ देवराज, इद्र। उ०—सुरपति निज रथु तुरत पठावा।—मानस, २।८८। २ विष्णु का एक नाम। उ०—सुरपति गति मानी, सासन मानी, भृगुपति को सुख भारी।—केशव (शब्द०)।

सुरपतिगुरु—सज्ञा पु० [स०] बृहस्पति।

सुरपतिचाप—सज्ञा पु० [स०] इद्रधनुष।

सुरपतितनय—सज्ञा पुं० [स०] १ इद्र का पुत्र, जयत। २ अर्जुन।

सुरपतित्व—सज्ञा पुं० [स०] सुरपति का भाव या पद।

सुरपतिपुर—सज्ञा पु० [स०] देवलोक। स्वर्ग। उ०—भूपति सुरपतिपुर पगु धारेउ।—मानस, २।१६०।

सुरपतिसुत—सज्ञा पु० [सं०] इद्र का पुत्र, जयत। उ०—सुरपतिसुत धरि बाइस बेखा।—मानस, ३।१।

सुरपथ—सज्ञा पु० [सं०] आकाश।

सुरपन—सज्ञा पु० [सं० सुरपुन्नाग] पुन्नाग। सुरगी। सुलताना चपा।

सुरपर्ण—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का सुगधित शाक।

पर्या०—देवपर्ण। सुगधिक। मार्जीपत्र। गधपत्रक।

विशेष—यह क्षुप जाति की सुगधित वनस्पति है। वैद्यक के अनुसार यह कटु, उष्ण तथा कृमि, श्वास और कास को नाशक तथा दीपन है।

सुरपर्णिक—सज्ञा पु० [स०] पुन्नाग वृक्ष।

सुरपर्णिका—सज्ञा स्त्री० [स०] पुन्नाग। सुलताना चपा।

सुरपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पलासी। पलाशी। २ पुन्नाग। पुलाक।

सुरपर्वत—सज्ञा पु० [स०] सुमेरु।

सुरपासुला—सज्ञा स्त्री० [स०] अप्सरा।

सुरपादप—सज्ञा पु० [स०] देवद्रुम। कल्पतरु।

सुरपाल—सज्ञा पुं० [स० सुर+पालक] इद्र। उ०—सुरन सहित तहँ आइ कै वज्र हन्यो सुरपाल।—गिरिधर (शब्द०)।

सुरपालक—सज्ञा पुं० [स०] इद्र। उ०—आनद के कद, सुरपालक के बालक ये।—केशव (शब्द०)।

सुरपुन्नाग—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का पुन्नाग जिसके गुण पुन्नाग के समान ही होते हैं।

सुरपुर—सज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० सुरपुरी] १ देवताओ की पुरी, अमरावती। २ देवलोक। स्वर्ग। उ०—नृप कर सुरपुर गवनु सुनावा।—मानस, २।२४६।

मुहा०—सुरपुर सिधारना = मर जाना, गत हो जाना।

सुरपुरकेतु—सज्ञा पु० [स०] इद्र। उ०—नृप केतु बल के केतु सुरपुरकेतु छन महँ मोहही।—गि० दास (शब्द०)।

सुरपुरी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुरपुर'।

सुरपुरोधा—सज्ञा पुं० [स० सुरपुरोधस्] देवताओ के पुरोहित, बृहस्पति।

सुरपुष्प—सज्ञा पुं० [स०] देवकुसुम। स्वर्गीय पुष्प।

सुरप्रतिष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स०] देवमूर्ति की स्थापना।

सुरप्रवीर—सज्ञा पु० [स०] एक अग्नि।

सुरप्रिय[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ इद्र। २ बृहस्पति। ३ एक प्रकार का पक्षी। ४ अगस्त्य। अगस्तिया। ५ एक पर्वत का नाम।

सुरप्रिय[2]—वि० जो देवताओ को प्रिय हो।

सुरप्रिया—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक अप्सरा का नाम। २ चमेली। जाती पुष्प। ३ सोना केला। स्वर्णरभा।

सुरफाँक ताल—सज्ञा पुं० [हिं० सुर+फाँक (=खाली)+ताल] मृदग का एक ताल। इसमे तीन आघात और एक खाली होता है। जैसे,—धा (+) धेडे, नागध (०), धेडे नाग, गद्दी (२), धेडे नाग धा (+)।

सुरबहार—सज्ञा पु० [हिं० सुर+फा० बहार] सितार की तरह का एक प्रकार का बाजा।

सुरबाला—सज्ञा स्त्री० [सं०] देवता की स्त्री। देवागना।

सुरबुली—सज्ञा स्त्री० [सं० सुरवल्ली ?] एक पौधा जिसकी जड से लाल रग निकालते हैं। चिरवल।

विशेष—यह पौधा बगाल और उडीसा से लेकर मद्रास और सिंहल तक होता है। इसकी जड की छाल से एक प्रकार का सुदर लाल रग निकलता है जिससे मछलीपट्टन, नेलोर आदि स्थानो मे कपडे रँगे जाते है।

सुरबृच्छ(पु)—सज्ञा पुं० [स० सुरवृक्ष] कल्पवृक्ष। दे० 'सुरवृक्ष'। उ०—मुख ससि मगर अधिक वचन श्री अमृत ऐसी। सुर सुरभी सुरवृच्छ देनि करतल मँह वैसी।—गि० दास (शब्द०)।

सुरबेल—सज्ञा स्त्री० [स० सुर+वल्ली] कल्पलता।

सुरभग—सज्ञा पु० [सं० स्वरभङ्ग] प्रेम, आनद, भय आदि मे होनेवाला स्वर का विपर्यास जो सात्विक भावो के अतर्गत है। उ०—(क) स्तभ स्वर रोमाच सुरभग कप वैवर्ण। अश्रु प्रलाप बखानिए आठो नाम सुवर्ण।—केशव (शब्द०)। (ख) निसि जागे पागे अमल हित को दरसन पाइ। बोल पातरो होत जो सो सुरभग बताइ।—काव्यकलाधर (शब्द०)। (ग) क्रोध हरख मद भीत तें वचन और विधि होय। ताहि कहत सुरभग है कवि कोविद सब कोय।—मतिराम (शब्द०)।

सुरभवन—सज्ञा पुं० [स०] १ देवताओ का निवासस्थान। मदिर। २ सुरपुरी। अमरावती।

सुरभानु(पु)—सज्ञा पुं० [सं० सुर+भानु] १ इद्र। उ०—राधे सो रस वरनि न जाइ। जा रस को सुरभानु, शीश दियो, सो तैं पियो अकुलाइ।—सूर (शब्द०)। २ सूर्य। उ०—सुनि सजनी सुरभानु है अति मलान मतिमद। पूनो रजनी मैं जु गिलि देत उगिलि यह चद।—शृगार सतसई (शब्द०)।

सुरभि[1]—सज्ञा पु० [स०] १ सुगध। २ वसत काल। चैत्र मास। ३ सोना। स्वर्ण। ४ गधक। ५ चपक। चपा। ६ जायफल। ७ कदव। ८ वकुल। मौलसिरी। ९ शमी। सफेद कीकर। १० कणगुग्गुल। ११ गधतृण। रोहिस घास। १२ राल। धूना। १३ कपित्थ। गधफल। १४ वर्वर चदन। १५ वह अग्नि जो यज्ञयूप की स्थापना मे प्रज्वलित की जाती है। १६ जातीफल। जायफल (को०)। १७ सुगधित वस्तु (को०)।

सुरभि[2]—सज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी। २ गौ। ३ गायो की अधिष्ठात्री देवी तथा गो जाति की आदि जननी। ४ कार्तिकेय की एक मातृका का नाम। ५ सुरा। शराब। ६ गगापत्नी। ७ वनमल्लिका। सेवती। ८ तुलसी। ९ शल्लकी। सलई। १० रुद्रजटा। ११ एलवालुक। एलुवा। १२ सुगधि। खुशबू। १३ पूर्व दिशा (को०)।

सुरभि[3]—वि० १ सुगधित। सुवासित। २ मनोरम। सुदर। प्रिय। ३ ख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर (को०)। ४ बुद्धिमान। ज्ञानवान्। विद्वान् (को०)। ५ उत्तम। श्रेष्ठ। बढिया। ६ सदाचारी। सद्भावयुक्त। गुणवान्।

सुरभिकदर—सज्ञा पु० [स० सुरभिकन्दर] एक पर्वत का नाम।

सुरभिकाता—सज्ञा स्त्री० [स० सुरभिकान्ता] वासती पुष्प वृक्ष। नेवारी।

सुरभिका—सज्ञा स्त्री० [स०] स्वर्ण कदली। सोना केला।

सुरभिगध[1]—सज्ञा पुं० [सं० सुरभिगन्ध] तेजपत्ता।

सुरभिगध[2]—वि० सुगधित। सुवासित। खुशबूदार।

सुरभिगधा—सज्ञा स्त्री० [स०] चमेली।

सुरभिगधि—वि० [स० सुरभिगन्धि] सुगधियुक्त (को०)।

सुरभिगधी—सज्ञा स्त्री० [स० सुरभिगन्धी] सुगधित वस्तु।

सुरभिगोत्र—सज्ञा पु० [स०] गाय बैलो का झुड। पशुसमूह (को०)।

सुरभिघृत—सज्ञा पु० [स०] अच्छी तरह तपाया हुआ सुगधित घी। गोघृत (को०)।

सुरभिचूर्ण—सज्ञा पुं० [स०] सुवासित बुकनी या चूरा।

सुरभिच्छद—सज्ञा पु० [सं०] १ कैथ। कपित्थ। २ सुगधित जबूफल।

सुरभित—वि० [सं०] १ सुगधित। सुवासित। २ विख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर (को०)।

सुरभितनय—सज्ञा पु० [सं०] बैल। साँड।

सुरभितनया—सज्ञा स्त्री० [स०] गाय।

सुरभिता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुरभि का भाव। २ सुगधि। खुशबू।

सुरभित्रिफला—सज्ञा स्त्री० [स०] जायफल, सुपारी और लौग इन तीनो का समूह।

सुरभित्वक्—सज्ञा स्त्री० [स०] बडी इलायची।

सुरभिदारु—सज्ञा पु० [स०] धूप सरल।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह सरल, कटु, तिक्त, उष्ण तथा कफ, वात, त्वचा रोग, सूजन और व्रण का नाशक है। यह कोठे को भी साफ करता है।

सुरभिदारुक—सज्ञा पु० [स०] सरलवृक्ष। विशेष दे० 'सुरभिदारु'।

सुरभिपत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] राजजबू वृक्ष। गुलाब जामुन। विशेष दे० 'गुलाब जामुन'।

सुरभिपुत्र—सज्ञा पुं० [स०] १ साँड। २ बैल।

सुरभिबाण—सज्ञा पु० [स०] कामदेव (को०)।

सुरभिमजरी—सज्ञा स्त्री० [स० सुरभिमञ्जरी] श्वेत तुलसी।

सुरभिमान्[1]—वि० [स० सुरभिमत्] सुगधित। सुवासित।

सुरभिमान्[2]—सज्ञा पुं० अग्नि।

सुरभिमास—सज्ञा पुं० [स०] चैत्र मास। चैत का महीना।

सुरभिमुख—सज्ञा पु० [स०] वसत ऋतु का आरभ।

सुरभिवल्कल—सज्ञा पुं० [स०] दालचीनी। गुडत्वक्।

सुरभिवाण—सज्ञा पुं० [स०] कामदेव का एक नाम।

सुरभिशाक—सज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का सुगधित शाक।

सुरभिषक्—सज्ञा पुं० [स०] देवताओ के वैद्य, अश्विनीकुमार।

**सुरभिसमय**—सज्ञा पुं० [सं०] वसतकाल।

**सुरभिस्रग्धर**—वि० [स०] सुगधित माला धारण करनेवाला।

**सुरभिस्रवा**—सज्ञा स्त्री० [स०] शल्लकी। सलई।

**सुरभी**[1]—सज्ञा स्त्री० [सं० सुर + भी (=भय)] देवताओ का डर या भय। आधिदैविक भीति [को०]।

**सुरभी**[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुगधि। खुशबू। २ गाय। ३ सलई। शल्लकी। ४ किवाँछ। कौंच। कपिकच्छु। ५ ववई तुलसी। ६ रुद्रजटा। शकर जटा। ७ एलुवा। एलवालुक। ८ मालिका शाक। पोइया। ९ सुगधित शालिधान्य। १० मुरामासी। एकागी। ११ रासन। रास्ना। १२ चदन।

**सुरभीगध**—सज्ञा पुं० [स० सुरभीगन्ध] तेजपत्ता [को०]।

**सुरभीगोत्र**—सज्ञा पु० [स०] १ बैल। २ साँड।

**सुरभीपट्टन**—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नगर।

**सुरभीपत्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] राजजबू। दे० 'सुरभिपत्रा' [को०]।

**सुरभीपुर**—सज्ञा पुं० [स०] गोलोक। उ०—अज विष्णु अनादि मुकुद प्रभो। सुरभीपुर नायक विश्व विभो।—गिरिधर (शब्द०)।

**सुरभीमूत्र**—सज्ञा पुं० [स०] गोमूत्र। गोमूत।

**सुरभीरसा**—सज्ञा स्त्री० [स०] सलई। शल्लकी।

**सुरभीरुह**—सज्ञा पुं० [स०] देवदारु का वृक्ष [को०]।

**सुरभूप**[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ इद्र। २ विष्णु। उ०—सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।—तुलसी (शब्द०)।

**सुरभूय**—सज्ञा पुं० [सं०] किसी देवता के साथ एकाकार होना। देवत्व या देवलीनता की प्राप्ति होना [को०]।

**सुरभूरुह**—सज्ञा पुं० [स०] देवतरु। कल्पतरु। २ देवदारु का वृक्ष। देवदार।

**सुरभूषण**—सज्ञा पु० [सं०] देवताओ के पहनने का मोतियो का हार जो चार हाथ लवा होता है और जिसमे १,००८ दाने होते है।

**सुरभोग**—सज्ञा पुं० [स०] अमृत। उ०—सोम सुधा पीयूष मधु अगदकार सुरभोग। अमी अमृत जहँ हरि कथा मते रहत सब लोग।—नददास (शब्द०)।

**सुरभौन**—सज्ञा पुं० [सं० सुरभवन] दे० 'सुरभवन'।

**सुरमडल**—सज्ञा पुं० [स० सुरमण्डल] १ देवताओ का मडल। २ एक प्रकार का बाजा। इसमे एक तख्ते मे तार जडे होते है। इसे जमीन पर रखकर मिजराब से बजाते हैं।

**सुरमडलिका**—सज्ञा स्त्री० [स० सुरमण्डलिका] दे० 'सुरखडनिका'।

**सुरमत्री**—सज्ञा पुं० [स० सुरमन्त्रिन्] देवगुरु बृहस्पति।

**सुरमदिर**—सज्ञा पुं० [स० सुरमन्दिर] देवताओ का स्थान। मदिर। देवालय।

**सुरमई**[1]—वि० [फा०] सुरमे के रग का। हलका नीला। सफेदी लिए नीला या काला।

**सुरमई**[2]—सज्ञा पुं० १ एक प्रकार का रग जो सुरमे के रग से मिलता जुलता या हलका नीला होता है। २ इस रग मे रँगा हुआ एक प्रकार का कपडा जो प्राय अस्तर आदि के काम मे आता है। ३ इस रग का कबूतर।

**सुरमई**[3]—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चिडिया जो बहुत काली होती है तथा जिसकी गरदन हरे रग की और चमकदार होती है।

**सुरमई कलम**—सज्ञा स्त्री० [फा०] सुरमा लगाने की सलाई। सुरमचू।

**सुरमचू**—सज्ञा पु० [फा० सुरमह् + चू (प्रत्य०)] सुरमा लगाने की सलाई।

**सुरमणि**—सज्ञा पु० [सं०] चितामणि। उ०—लोयन नील सरोज से भूपर मसि बिंदु विराज। जनु विधु मुखछवि अमिय को रच्छक राख्यो रसराज।—तुलसी (शब्द०)।

**सुरमण्य**—वि० [स०] बहुत अधिक रमणीय। बहुत सुदर।

**सुरमनि**—सज्ञा पु० [स० सुरमणि] चितामणि। कौस्तुभमणि। उ०—परिहरि सुरमुनि सुनाम गुजा लखि लटत।—तुलसी ग्र०, पृ० १२९।

**सुरमा**[1]—सज्ञा पुं० [फा० सुरमह्] एक प्रकार का प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो प्राय नीले रग का होता है और जिसका महीन चूर्ण स्त्रियाँ आँखो मे लगाती है।

**विशेष**—यह फारस मे लहौल, पजाब मे झेलम तथा बरमा मे टेनासारिम नामक स्थान पर पाया जाता है। यह बहुत भारी, चमकीला और भुरभुरा होता है। इसका व्यवहार कुछ औषधो और कुछ धातुओ को दृढ करने मे होता है। प्राय छापे के सीसे के अक्षरो मे उन्हें मजबूत करने के लिये इसका मेल दिया जाता है। आजकल बाजारो मे जो सुरमा मिलता है, वह प्राय कावुल और बुखारे के गलोना नामक धातु का चूर्ण होता है।

**यौ०**—सुरमा सुलेमानी = सुलेमान का सुरमा। वह सुरमा जिसे लगाने पर निधियाँ दिखाई पडे। सुरमे का डोरा = आँखो मे लगी हुई सुरमे की रेखा। सुरमे की कलम = पेंसिल।

२ आँखो मे लगाने की सूखी और पीसी हुई दवा। रसाजन (को०)।

**क्रि० प्र०**—देना।—लगाना।

**यौ०**—सफेद सुरमा = दे० 'सुरमा सफेद'।

**सुरमा**[2]—वि० अत्यत बारीक पीसा हुआ।

**सुरमा**[1]—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी। वि० दे० 'सूरमा'।

**सुरमा**[2]—सज्ञा स्त्री० एक नदी जो आसाम के सिलहट जिले मे बहती है।

**सुरमाकश**—सज्ञा पुं० [फा०] १ वह जो सुरमा लगाता हो। सुरमा लगानेवाला। २ सुरमा लगाने की सलाई।

**सुरमादान**—सज्ञा पुं० [फा०] दे० 'सुरमादानी'।

**सुरमादानी**—सज्ञा स्त्री० [फा० सुरमह् + दान (प्रत्य०)] लकडी या धातु का शीशीनुमा पात्र जिसमे सुरमा रखा जाता है।

**सुरमानी**—वि० [स० सुरमानिन्] अपने को देवता समझनेवाला।

**सुरमा सुफेद**—सज्ञा पु० [फा०] १ एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो 'जिपसम' नाम से प्रसिद्ध है।

विशेष—इसका रग पीलापन लिए सफेद होता है। इससे 'पेरिस प्लास्टर' बनाया जा सकता है जिससे एलक्ट्रो टाइप और रबड की मोहर के साँचे बनाए जाते हैं। यह मुख्यत शीशे और धातु की चीजे जोडने के काम मे आता है।

२ एक खनिज पदार्थ जो फिटकरी के समान होता है और काबुल के पहाडो पर पाया जाता है। आँखो की जलन, प्रमेह, आदि रोगो मे इसका प्रयोग होता है।

**सुरमृत्तिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] गोपीचदन। सौराष्ट्रमृत्तिका।

**सुरमेदा**—सज्ञा स्त्री० [स०] महामेदा।

**सुरमै**Ⓤ—वि० [फा० सुरमई] दे० 'सुरमई'।

**सुरमौर**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० सुर + हिं० मौर] विष्णु। उ०—जाके विलोकत लोकप होत विसोक लहैं सुरलोक सुठौरहि। सो कमला तजि चचलता अरु कोटि कला रिझवै सुरमौरहि।—तुलसी (शब्द०)।

**सुरम्य**—वि० [स०] अत्यत मनोरम। अत्यत रमणीय। बहुत सुदर।

**सुरया** सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की दाँती जो झाडी काटने के काम मे आती है।

**सुरयान**—सज्ञा पुं० [स०] देवताओ की सवारी का रथ।

**सुरयुवती**—सज्ञा स्त्री० [स० सुरयुवति] अप्सरा।

**सुरयोषा, सुरयोषित्**—सज्ञा स्त्री० [स०] अप्सरा।

**सुरराई**Ⓤ—सज्ञा पुं० [सं० सुरराज] १ इद्र। २ विष्णु। उ०—रानी ते बूझेउ सुरराई। माँगी जो कुछ वाको भाई। रमानाथ नारी ते भाषा। माँगहु वर जो मन अभिलाषा।—विश्राम (शब्द०)।

**सुरराज्, सुरराज, सुरराट्**—सज्ञा पुं० [सं०] इद्र।

यौ०—सुरराज शरासन = इद्रधनुष।

**सुरराजगुरु**—सज्ञा पुं० [स०] बृहस्पति।

**सुरराजता**—सज्ञा स्त्री० [स०] सुरराज होने का भाव या पद। इद्रत्व। इद्रपद।

**सुरराजमत्री**—सज्ञा पुं० [सं० सुरराजमन्त्रिन्] दे० 'सुरराजगुरु'।

**सुरराजवस्ति**—सज्ञा पुं० [सं०] पिडली। इद्रवस्ति।

**सुरराजवृक्ष** सज्ञा पुं० [सं०] पारिजात तरु। परजाता।

**सुरराजा**—सज्ञा पुं० [सं० सुरराजन्] इद्र।

**सुरराम**Ⓤ—सज्ञा पु० [सं० सुरराज, प्रा० सुरराय] दे० 'सुरराज'।

**सुरराव**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० सुरराज, प्रा० सुरराय] दे० 'सुरराज'। उ०—नल कृत पुल लखि सिंधु मे भए चकित सुरराव।—पद्माकर (शब्द०)।

**सुररिपु**—सज्ञा पुं० [सं०] देवताओ के शत्रु, असुर। राक्षस।

**सुररूख, सुररूप**Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० सुर + हिं० रूख (=वृक्ष)] कल्पवृक्ष। उ०—(क) नव पल्लव फल सुमन सुहाए। निज सपति सुररूख लजाए।—मानस, १।२२७। (ख) राम नाम सज्जन सुररूखा। राम नाम कलि मृतक पियूषा।—रघुराज (शब्द०)।

**सुरर्षभ**—सज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओ मे श्रेष्ठ, इद्र। २ शिव। महादेव।

**सुरर्षि**—सज्ञा पु० [सं० सुर + ऋषि] देवऋषि। देवर्षि।

**सुरलता**—सज्ञा स्त्री० [स०] बडी मालकगनी। महाज्योतिष्मती लता।

**सुरललना**—सज्ञा स्त्री० [स०] देववाला। देवागना।

**सुरला**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ गगा। २ एक नदी का नाम।

**सुरलासिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वशी। २ वशी की ध्वनि।

**सुरली**—सज्ञा स्त्री० [सं० सु + हिं० रली] सुदर क्रीडा। उ०—नाभि सु उदर रोमावली अली चली यह बात। नाग लली सुरली करैं मन त्रिवली के पात।—शृगार सतसई (शब्द०)।

**सुरलोक**—सज्ञा पु० [सं०] स्वर्ग। देवलोक।

यौ०—सुरलोकराज्य = देवलोक का राज्य।

**सुरलोक सुदरी**—सज्ञा स्त्री० [सं० सुरलोक सुन्दरी] १ अप्सरा। देवागना। २ दुर्गा का एक नाम [को०]।

**सुरवधू**—सज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओ की पत्नी। देवागना।

**सुरवर**—सज्ञा पुं० [सं०] देवताओ मे श्रेष्ठ, इद्र।

**सुरवर्त्म**—सज्ञा पुं० [सं० सुरवर्त्मन्] देवताओ का मार्ग। आकाश।

**सुरवल्लभा**—सज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत दूर्वा। सफेद दूब।

**सुरवल्ली**—सज्ञा स्त्री० [सं०] तुलसी।

**सुरवस**—सज्ञा पुं० [देश०] जुलाहो की वह पतली हलकी छडी, पतला बाँस या सरकडा जिसका व्यवहार ताना तैयार करने मे होता है।

विशेष—ताना तैयार करने के लिये जो लकडियाँ जमीन मे गाडी जाती है, उनमे से दोनो सिरो पर रहनेवाली लकडियाँ तो मोटी और मजबूत होती हैं जिन्हे 'पारिया' कहते हैं, और इनके बीच मे थोडी थोडी दूर पर जो चार चार पतली लकडियाँ एक साथ गाडी जाती है, वे 'सुरवस' या 'सुरस' कहलाती है।

**सुरवा**[1]—सज्ञा पुं० [सं० श्रुवस्] छोटी करछी के आकार का लकडी का बना हुआ एक प्रकार का पात्र जिससे हवन आदि मे घी की आहुति देते है। श्रुवा।

**सुरवा**[1]—सज्ञा पुं० [फा० शोरवा] दे० 'शोरवा'।

**सुरवाडी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूअर + वाडी (प्रत्य०)] सूअरो के रहने का स्थान। सूअरखाडा।

**सुरवाणी**—सज्ञा स्त्री० [स०] देववाणी। सस्कृत भाषा।

**सुरवाल**[1]—सज्ञा पु० [फा० शलवार] पायजामा। पैजामा।

**सुरवाल**[2]—सज्ञा पु० [देश०] सेहरा।

सुरवास—सज्ञा पुं० [स०] देवस्थान। स्वर्ग।

सुरवाहिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] गगा।

सुरविटप—सज्ञा पुं० [स०] कल्पवृक्ष।

सुरविद्विष्—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सुरवैरी'।

सुरविलासिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] अप्सरा [को०]।

सुरवीथी—सज्ञा स्त्री० [सं०] नक्षत्रो का मार्ग।

सुरवीर सज्ञा पुं० [स०] इद्र। उ०—गने पदाती वीर सब अरिघाती रनधीर। दोउ आँखैं राती किए लखि मोहे सुरवीर। गि० दास (शब्द०)।

सुरवृक्ष—सज्ञा पुं० [स०] कल्पतरु।

सुरवेला—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नदी का नाम।

सुरवेश्म—सज्ञा पु० [स० सुरवेश्मन्] स्वर्ग। देवलोक।

सुरवैद्य—सज्ञा पुं० [स०] देवताओ के वैद्य, अश्विनीकुमार।

सुरवैरी—सज्ञा पु० [सं० सुरवैरिन्] देवताओ के शत्रु, असुर।

सुरशत्रु—सज्ञा पु० [स०] असुर।

सुरशत्रुहन्—सज्ञा पु० [स०] असुरो का नाश करनेवाले, शिव।

सुरशयनी—सज्ञा स्त्री० [स०] आषाढ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी। विष्णुशयनी एकादशी।

सुरशाखी—सज्ञा पुं० [स० सुरशाखिन] कल्पवृक्ष।

सुरशिल्पी—सज्ञा पुं० [स० सुरशिल्पिन्] विश्वकर्मा।

सुरश्रेष्ठ—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो देवताओ मे श्रेष्ठ हो। २ विष्णु। ३ शिव। ४ गणेश। ५ धर्म। ६ इद्र।

सुरश्रेष्ठा सज्ञा [स०] ब्राह्मी।

सुरश्वेता—सज्ञा स्त्री० [स०] एक जाति की श्वेत छिपकली। वम्हनी।

सुरसघ सज्ञा पुं० [सं० सुरसङ्घ] देववर्ग। देवसमूह।

सुरसत—सज्ञा स्त्री० [सं० सरस्वती] दे० 'सरस्वती'।

सुरसभवा—सज्ञा स्त्री० [स०] हुरहुर। आदित्यभक्ता।

सुरस[1]—सज्ञा पुं० [स०] १. बोल। हीरा बोल। बर्बर रस। २ दालचीनी। गुडत्वक्। ३ तेजपत्ता। तेजपत्र। ४ रूसा घास। गधतृण। ५ तुलसी। ६ सँभालू। सिंधुवार। ७ शाल्मली वृक्ष का निर्यास। मोचरस। ८ पीतशाल। ९ एक असुर नाग (को०)। १० धूना। राल (को०)।

सुरस[2] वि० १ सरस। रसीला। २ स्वादिष्ट। मधुर। ३ सुदर। उ०—हरि श्याम घन तन परम सुदर तडित वसन विराजई। अँग अग भूषण सुरस शशि पूरणकला जनु भ्राजई।—सूर (शब्द०)।

सुरस[3]—सज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सुरवस'।

सुरसख—सज्ञा पु० [सं०] १ देवताओ के सखा इद्र। २ गधर्व।

सुरसत—सज्ञा स्त्री० [स० सरस्वती] सरस्वती। (डिं०)।

सुरसतजनक—सज्ञा पुं० [सं० सरस्वती + जनक] ब्रह्मा। (डिं०)।

सुरसती—सज्ञा पुं० [सं० सरस्वती] १ सरस्वती। उ०—उर उरवी सुरसरि सुरसती जमुना मिलहिं प्रयाग जिमि।—गि० दास (शब्द०)। २ एक प्रकार की नाव।

विशेष—यह नाव तीस हाथ लबी होती है और इसका आगा तथा पीछा आठ आठ हाथ चौडा होता है। इस नाव के पेंदे मे एक कुड बना रहता है जिसमे उतरकर लोग स्नान कर सकते है।

सुरसत्तम—सज्ञा पु० [स०] देवताओ मे श्रेष्ठ, विष्णु।

सुरसदन—सज्ञा पुं० [स०] देवताओ के रहने का स्थान, स्वर्ग।

सुरसद्म—सज्ञा पु० [स० सुरसद्मन्] स्वर्ग।

सुरसभा—सज्ञा स्त्री० [सं०] देवमडली। देवसभा [को०]।

सुरसमघ सज्ञा स्त्री० [सं०] देवदारु।

सुरसर[1]—सज्ञा पु० [स० सुर + सर] मानसरोवर। उ०—सुरसर सुभग वनज वन चारी। डावर जोग कि हसकुमारी।—तुलसी (शब्द०)।

सुरसर[2]—सज्ञा स्त्री० [स० सुरसरित्] दे० 'सुरसरि'।

सुरसरयुता—सज्ञा स्त्री० [सं०] सरयू नदी। उ०—तुलसी उर सुरसरसुता लसत सुथल अनुमानि।—तुलसी (शब्द०)।

सुरसरि[1]—सज्ञा स्त्री० [सं० सुरसरित्] १. गगा। उ०—सुरसरि जब भुव ऊपर आवै। उनको अपनो जल परसावै।—सूर (शब्द०)। २ गोदावरी नदी। उ०—सुरसरि ते आगे चले मिलिहैं कपि सुग्रीव। देहैं सीता की खबरि बाढै सुख अति जीव।—केशव (शब्द०)।

सुरसरि[2]—सज्ञा स्त्री० १ कावेरी नदी। (डिं०)। २ दे० 'सुरसुरी'।

सुरसरित्—सज्ञा स्त्री० [स०] गगा।

यौ०—सुरसरित्सुत = भीष्म।

सुरसरिता—सज्ञा स्त्री० [स० सुर + सरिता] दे० 'सुरसरित्'। उ०—मानहुँ सुरसरिता विमल, जल उछलत जुग मीन।—बिहारी (शब्द०)।

सुरसरी—सज्ञा स्त्री० [सं० सुरसरित] दे० 'सुरसरि'।

सुरसर्षपक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की सरसो। देवसर्षपक।

सुरसा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक प्रसिद्ध नागमाता जो समुद्र मे रहती थी और जिसने हनुमान् जी को समुद्र पार करने के समय रोका था।

विशेष—जिस समय हनुमान् जी सीता जी की खोज मे लका जा रहे थे, उस समय देवताओ ने सुरसा से, जो समुद्र मे रहती थी, कहा कि तुम विकराल राक्षस का रूप धारण कर उनको रोको। इससे उनकी बुद्धि और बल का पता लग जायगा। तदनुसार सुरसा ने विकराल रूप धारण कर हनुमान् जी को रोककर कहा कि मैं तुम्हे खाऊँगी। यह कहकर उसने मुँह फैलाया। हनुमान् जी ने उससे कहा कि जानकी जी की खबर राम जी को देकर मैं तुम्हारे पास आऊँगा। सुरसा ने कहा ऐसा नही हो सकता। पहले तुम्हें मेरे मुँह मे प्रवेश करना होगा, क्योकि मुझे ऐसा वर मिला है कि सबको मेरे मुँह मे प्रवेश करना पडेगा। यह कह वह मुँह फैलाकर हनुमान् जी के सामने आई। हनुमान् जी ने अपना शरीर उससे भी अधिक बढाया। ज्यो ज्यो

सुरसा अपना मुँह बढ़ाती गई, त्यों त्यों हनुमान् जी भी अपना शरीर बढ़ाते गए। अंत में हनुमान् जी ने बहुत छोटा रूप धारण करके उसके मुँह में प्रवेश किया और बाहर निकल कर कहा देवि, अब तो तुम्हारा वर सफल हो गया। इसपर सुरसा ने हनुमान् जी को आशीर्वाद दिया और उनकी सफलता की कामना की। (रामायण)।

२ एक अप्सरा का नाम। ३ एक राक्षसी का नाम। ४ तुलसी। ५ रासन। रास्ना। ६ मौंफ। मिश्रेया। ७ ब्राह्मी। ८ बड़ी मनावर। मनावर। ९ जूही। श्वेत यूथिका। १० सफेद निर्गुंडी। श्वेत सिंदुवार। ११ मलई। शल्लकी। १२ नील निर्गुंडी। निर्गुंडी। १३ कटाई। वनभटा। बृहती। वार्ताकी। १४ भटकटैया। कटेरी। कटकारी। १५ एक प्रकार की रागिनी। १६ दुर्गा का एक नाम। १७ रुद्राश्व की एक पुत्री का नाम। १८ पुराणानुसार एक नदी का नाम। १९ अंकुश के नीचे का नुकीला भाग। २० बोल नामक एक गंधद्रव्य (को०)। २१ एक वृत्त का नाम।

**सुरसाई**Ⓤ—संज्ञा पुं० [सं० सुर+हिं० साई (=स्वामी)] १ इंद्र। उ०—आपु लख जैसे सुरसाई। सब नरेश जनु सुर समुदाई। —सबलसिंह (शब्द०)। २ शिव। उ०—सब विद्या के ईश गुसाईं। चरण वंदि विनवौं सुरसाईं।—शंकरदिग्विजय (शब्द०)। ३ विष्णु। उ०—बोले मधुर वचन सुरसाई। मुनि कहँ चले बिकल की नाईं। तुलसी (शब्द०)।

**सुरसाग्र**—संज्ञा पुं० [सं०] समालू की मंजरी। सिंधुवार मंजरी।

**सुरसाग्रज**—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत तुलसी।

**सुरसाग्रणी**—संज्ञा पुं० दे० 'सुरसाग्रज'।

**सुरसाच्छद**—संज्ञा पुं० [सं०] सुरक्य का पत्ता। श्वेत तुलसी का पत्र (को०)।

**सुरसादिवर्ग**—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में कुछ विशिष्ट ओषधियों का एक वर्ग।

विशेष—इस वर्ग में तुलसी (सुरसा), श्वेत तुलसी, गंधतृण, गंधेज घास (सुगंधक), काली तुलसी, कसौंधी (काममर्द), लटजीरा (अपामार्ग), वायविडंग (विडंग), कायफल (कट-फल), सम्हालू (निर्गुंडी), जंगली टेंटी (मारंगी), मकोय (काकमाची), बकायन (विषमुष्टिक), मूसाकानी (मूषाकर्णी), नीला सम्हालू (नील सिंधुवार), भुई कदंब (भूमि कदंब), नाम की ओषधियाँ आती हैं। वैद्यक के अनुसार यह प्रयोग कफ, कृमि, सर्दी, अरुचि, श्वास, खाँसी आदि का नाश करने-वाला और व्रणशोधक है।

इसी नाम से आयुर्वेद में एक दूसरा वर्ग भी है जो इस प्रकार है—सफेद तुलसी, काली तुलसी, छोटे पत्तोंवाली तुलसी, बबई (बबरी), मूसाकानी, कायफल, टेंटी, नकछिकनी (छिकनी), सम्हालू, मारंगी, भुँइकदंब, गंधतृण, नीला सम्हालू, मीठी नीम (कैंथ), और अतिमुक्तलता (मालती लता)।

**सुरसारी**Ⓤ—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसरित्] दे० 'सुरसरी'।

**सुरसाल, सुरसालु**Ⓤ—वि० [सं० सुर+हिं० सालना] देवताओं को सतानेवाला। उ०—राम नाम नर केसरी कनककसिपु कलि कालु। जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसालु। —तुलसी (शब्द०)।

**सुरसाष्ट**—संज्ञा पुं० [सं० सुरस+अष्ट] सम्हालू, तुलसी, ब्राह्मी, वन-भटा, कटकारी और पुनर्नवा इन सबका समूह।

**सुरसाहिब**Ⓤ—संज्ञा पुं० [सं० सुर+फा० साहब] देवताओं के स्वामी। दे० 'सुरसाई'। उ०—ब्रह्म जो व्यापक वेद कहै गम नाही गिरा गुन ज्ञान गुनी को। जो करता, भरता, हरता सुरसाहिब साहिब दीन दुनी को।—तुलसी (शब्द०)।

**सुरसिंधु**—संज्ञा पुं० [सं० सुरसिन्धु] गंगा।

**सुरसुंदर**[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुरसुन्दर] १ सुंदर देवता। २ कामदेव।

**सुरसुंदर**[2]—वि० देवता के समान सुंदर। अत्यंत सुंदर।

**सुरसुंदरी** संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसुन्दरी] १ अप्सरा, उ०—सुरसुंदरी करहिं कल गाना। सुनत श्रवन छूटहिं मुनि ध्याना। —मानस, १।६१। २ दुर्गा। ३ देवकन्या। ४ एक योगिनी का नाम।

**सुरसुंदरी गुटिका** संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसुन्दरी गुटिका] वैद्यक के अनुसार वाजीकरण या बलवीर्य बढ़ाने की एक ओषधि।

विशेष—यह ओषधि अभ्रक, स्वर्णमाक्षिक, हीरा, स्वर्ण और पारे को सम भाग में लेकर हिज्जल (समुद्रफल) के रस में घोटकर पुटपाक के द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

**सुरसुत**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सुरसुता] देवपुत्र।

**सुरसुरभी** संज्ञा स्त्री० [सं० सुर+सुरभी] देवताओं की गाय। काम-धेनु। उ०—मुख ससि सरगर अधिक वचन श्री अमृत जैसी। सुरसुरभी सुरवृच्छ देनि करतल महँ वैसी।—गि० दास (शब्द०)।

**सुरसुराना**—क्रि० अ० [अनु०] १ कीड़ों आदि का रेंगना। २ खुजली होना।

**सुरसुराहट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुरसुराना+आहट (प्रत्य०)] १ सुर-सुर होने का भाव। २ खुजलाहट। ३ गुदगुदी।

**सुरसुरी**Ⓤ[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसरित्] गंगा। सुरसरी।

**सुरसुरी**[2]—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ दे० 'सुरसुराहट'। २ एक प्रकार का कीड़ा जो चावल, गेहूँ आदि में होता है। ३ एक प्रकार की आतिशबाजी जिसे छछूंदर भी कहते हैं। ४ एक प्रकार का कीड़ा जिसके शरीर पर रेंगने से खुजली और जलन पैदा होती है।

**सुरसेनप**—संज्ञा पुं० [सं० सुर+सेनापति] देवताओं के सेनापति कार्तिकेय। उ०—सुरसेनप उर बहुत उछाहू। बिधि ते डेवढ़ लोचन लाहू।—मानस, १।३१७।

**सुरसेना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओं की सेना।

**सुरसैया**Ⓤ—संज्ञा पुं० [सं० सुर+हिं० सैयाँ (स्वामी)] इंद्र। दे० 'सुरसाई'। उ०—तुलसी बात कहि मुख निरखत बरषत सुमन सहित सुरसैयाँ।—तुलसी (शब्द०)।

**सुरसैनी**—सज्ञा स्त्री० [सं० सुरशयनी] विष्णुशयनी। दे० 'सुरशयनी'।

**सुरस्कंध**—सज्ञा पु० [स० सुरस्कन्ध] एक असुर का नाम।

**सुरस्त्री**—सज्ञा स्त्री० [स०] अप्सरा। दे० 'सुरसुदरी'।

**सुरस्त्रीश**—सज्ञा पुं० [सं०] अप्सराओ के स्वामी इद्र।

**सुरस्थान**—सज्ञा पुं० [सं०] देवताओ के रहने का स्थान। स्वर्ग। सुरलोक।

**सुरस्रवंती**—सज्ञा स्त्री० [स० सुरस्रवन्ती] आकाशगगा।

**सुरस्रोतस्विनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] गगा।

**सुरस्वामी**—संज्ञा पु० [स० सुरस्वामिन्] देवताओ के स्वामी, इद्र। दे० 'सुरसाईं'।

**सुरहना**Ⓤ—क्रि० अ० [?] घाव का सूखना। जख्म भरना।

**सुरहरा**—वि० [अनु०] जिसमे सुरसुर शब्द हो। सुरसुर शब्द से युक्त। उ०—फेरि दृग फीके मुख लेति फुरहरी देव साँसै सुरहरी भुज चुरी झहरैबै की।—देव (शब्द०)।

**सुरहित**[1]—सज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सुरही'।

**सुरहित**[2]—सज्ञा पुं० [स०] देवताओ का कल्याण।

**सुरही**[1]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोलह + ई (=सोरही)] १ एक प्रकार की सोलह चित्तीकौडियाँ जिनसे जूआ खेलते हैं। २ सोलह चित्ती कौडियो से होनेवाला जूआ।

विशेष—इस जूए मे कौडियाँ मुट्ठी मे उठाकर जमीन पर फेकी जाती है और उनकी चित्त पट की गिनती से हार जीत होती है। प्राय बडे जुआरी लोग इसी से जुआ खेलते हैं।

**सुरही**[2]—सज्ञा स्त्री० [स० सुरभी] १ चमरी गाय। २ गौ। गाय। एक प्रकार की घास जो पडती जमीन मे होती है।

**सुरहुरी**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुरसुरी ?] १ श्वासनलिका मे अन्न के टुकडे, जल आदि का चढ जाना। २. उससे होनेवाली एक प्रकार की पीडा या वेदना।

**सुरहोनी**—सज्ञा पुं० [कर्ना० सुरुहोनेय] पुन्नाग जाति का एक पेड जो पश्चिमी घाट मे होता है। यह प्राय डेढ सौ फुट तक ऊँचा होता है।

**सुरागना**—सज्ञा स्त्री० [स० सुराङ्गना] १ देवपत्नी। देवागना। २ अप्सरा।

**सुरात**—सज्ञा पुं० [स० सुरान्त] एक राक्षस का नाम।

**सुरा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मद्य। मदिरा। वारुणी। शराब। दारू। विशेष दे० 'मदिरा'। २ जल। पानी। ३ पीने का पात्र। ४ सर्प। ५. सोम (को०)।

**सुराई**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० शूर + आई (प्रत्य०)] शूरता। वीरता। बहादुरी। उ०—सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई।—तुलसी (शब्द०)।

**सुराकर**—सज्ञा पुं० [सं०] १. भट्ठी जहाँ शराब चुआई जाती है। २ नारियल का पेड। नारिकेल वृक्ष।

**सुराकर्म**—सज्ञा पुं० [स० सुराकर्मन्] वह यज्ञकर्म या सस्कार जो सुरा द्वारा किया जाता है।

**सुराकार**—सज्ञा पुं० [स०] शराब चुआनेवाला। शराब बनानेवाला। शौंडिक। कलवार।

**सुराकुभ**—सज्ञा पुं० [सं० सुराकुम्भ] वह पात्र या घडा जिसमे मद्य रखा जाता है। शराब रखने का घडा।

**सुराख**[1]—सज्ञा पुं० [फा० सूराख] छेद। छिद्र।

**सुराख**[2]—सज्ञा पु० [अ० सुराग] दे० 'सुराग'।

**सुराग**[1]—सज्ञा पुं० [स० सु + राग] १ गाढ प्रेम। अत्यत प्रेम। अत्यत अनुराग। उ०—मुनि बाजति बीन प्रवीन नवीन सुराग हिये उपजावति सी।—केशव (शब्द०)। २ सुदर रग या वर्ण। ३ सुदर राग। उ०—गाय गोरी मोहनी सुराग बाँसुरी के बीच कानन सुहाय मारयत्र को सुनायगो।—दीनदयाल (शब्द०)।

**सुराग**[2]—सज्ञा पु० [अ० सुराग] १ सूत्र। टोह। पता। २ खोज। तलाश (को०)। ३. पाँव का निशान। पदचिह्न (को०)। ४ लकीर। लीक (को०)। ५ वृक्ष। पेड (को०)।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लगना।—लगाना।

यौ०—सुरागरसाँ = (१) टोह या पता लेनेवाला। (२) भेदिया। गुप्तचर। सुरागरसी = अन्वेषण। तलाश। खोज। टोह।

**सुरागाय**—सज्ञा स्त्री० [स० सुर + गाय] एक प्रकार की दोनस्ली गाय जिसकी पूँछ गुप्फेदार होती है और जिससे चँवर बनता है। चमरी गाय।

विशेष—यह एक प्रकार के जगली साँड—जो तिब्बत और हिमालय मे होते है और जिनके बाल लबे और मुलायम होते हैं, और भारतीय गाय के सयोग से उत्पन्न है। यह प्राय पहाडो पर ही रहती है। मैदान की जलवायु इसके अनुकूल नही होती।

**सुरागार** सज्ञा पु० [स०] १ वह स्थान जहाँ मद्य विकता हो। कलवरिया। शराबखाना। २ देवगृह।

**सुरागी**—सज्ञा पु० [अ० सुराग] १ टोह लेनेवाला। २ मुखबिर। ३ इकबाली गवाह (को०)।

**सुरागृह**—सज्ञा पु० [स०] शराबखाना। सुरागार।

**सुराग्रह**—सज्ञा पु० [सं०] मद्य पीने का एक प्रकार का पात्र।

**सुराग्र्य**—सज्ञा पु० [स०] अमृत।

**सुराघट**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सुराकुभ'।

**सुराचार्य**—सज्ञा पु० [स०] देवताओ के आचार्य बृहस्पति।

**सुराज**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० सुराज्य] १ दे० 'सुराज्य'। २ दे० 'स्वराज्य'।

**सुराजक**—सज्ञा पुं० [स०] भृगराज। भँगरा।

**सुराजा**[1]Ⓤ—सज्ञा पु० [स० सुराजन्] उत्तम राजा। अच्छा राजा।

**सुराजा**[2]Ⓤ—सज्ञा पु० दे० 'सुराज्य'।

**सुराजिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] गृह गोधा। छिपकली।

**सुराजी**†—सज्ञा पु० [स० स्वराज्य, हिं० सुराज + ई] स्वराज्य की कामना करने एव उसके लिये आदोलन करनेवाला। भारतीय स्वतत्रता के सघर्ष मे भाग लेनेवाला।

**सुराजीव**—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु।

सुराजीवी—सज्ञा पुं० [स० सुराजीविन्] शराब चुआने या बेचनेवाला। शौंडिक। कलवार।

सुराज्य[1]—सज्ञा पु० [स०] वह राज्य जिसमे प्रधानत शासितो के हित पर दृष्टि रखकर शासन कार्य किया जाता हो। वह राज्य या शासन जिसमे सुख और शाति विराजती हो। अच्छा और उत्तम राज्य।

सुराज्य[2]—सज्ञा पुं० [स० स्वराज्य] दे० 'स्वराज्य'।

सुराढ्त—सज्ञा पु० [सं०] वह स्थान जहाँ मद्य बिकता हो। शराब-खाना। कलवरिया।

सुराढ्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] चमडे का वह पात्र या कुप्पा जिसमे मदिरा रखी जाती है।

सुराथी†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सु+रेतना] लकडी का वह डडा या लवेदा जिससे अनाज के दाने निकालने के लिये बाल आदि पीटते हैं।

सुराद्रि—सज्ञा पुं० [स०] देवताओ का पर्वत, सुमेरु।

सुराधम[1]—वि० [सं०] देवताओ मे निकृष्ट।

सुराधम[2]—सज्ञा पु० निकृष्ट देवता।

सुराधर—सज्ञा पुं० [स०] एक राक्षस।

सुराधा[1]—वि० [स० सुराधस्] १ उत्तम दान देनेवाला। बहुत बडा दाता। उदार। २ धनी। अमीर।

सुराधा[2]—सज्ञा पुं० एक ऋषि का नाम।

सुराधानी—सज्ञा स्त्री० [स०] वह कुभी या छोटा घडा जिसमे मदिरा रखी जाती है। शराब रखने की गगरी।

सुराधिप—सज्ञा पुं० [सं०] देवताओ के स्वामी, इद्र।

सुराधीश—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सुराधिप'।

सुराध्यक्ष—सज्ञा पुं० [स०] १ ब्रह्मा। २ श्रीकृष्ण। ३ शिव।

सुराध्वज—सज्ञा पु० [सं०] मद्यपात्र का वह चिह्न जो प्राचीनकाल मे मद्यपान करनेवालो के मस्तक पर लोहे से दागकर किया जाता था।

विशेष—मनु ने मद्यपान की गणना चार महापातको मे की है, और कहा है कि राजा को उचित है कि मद्यपान करनेवाले के मस्तक पर मद्यपात्र का चिह्न लोहे से दागकर अकित करा दे। यही चिह्न सुराध्वज कहलाता था।

सुरानक—सज्ञा पु० [स०] देवताओ का नगाडा।

सुरानीक—सज्ञा पुं० [स०] देवताओ की सेना।

सुरप—वि० [स०] १ सुरा या मद्यपान करनेवाला। मद्यप। शराबी। २ बुद्धिमान्। मनीषी। ३ आनदप्रद। सुखपूर्वक ग्राह्य (को०)।

सुरापगा—सज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओ की नदी। गगा।

सुरापाण, सुरापान—सज्ञा पुं० [स०] १ मद्यपान करने की क्रिया। शराब पीना। २ मद्यपान करने के समय खाए जानेवाले चटपटे पदार्थ। चाट। अवदश।

सुरापात्र—सज्ञा पुं० [स०] मदिरा रखने या पीने का पात्र।

सुरापाना—सज्ञा पुं० [सं० सुरापाना] पूर्व देश के लोग।

विशेष—सुरापान करने के कारण इस देश के लोगों का यह नाम पडा है।

सुरापी—वि० [सं०] १ दे० 'सुराप'। २ जिसके यहाँ शराबी लोग रहते हो (को०)।

सुरापीत—वि० [स०] जिसने मदिरापान किया हो (को०)।

सुरापीथ—सज्ञा पु० [सं०] सुरापान। मद्यपान। शराब पीना।

सुराप्रिय—वि० [स०] जिसे मदिरा प्रिय हो (को०)।

सुराबलि—वि० [स०] जिसे मदिरा अर्पण की जाय (को०)।

सुराबीज—सज्ञा पुं० [स०] मद्य बनाने मे प्रयुक्त एक पदार्थ या तत्व। दे० 'सुरासार' (को०)।

सुराब्धि—सज्ञा पुं० [स०] सुरा का समुद्र।

विशेष—पुराणो के अनुसार यह सात समुद्रो मे से तीसरा है। मार्कंडेयपुराण मे लिखा है कि लवणसमुद्र से दूना इक्षुसमुद्र और इक्षुसमुद्र से दूना सुरासमुद्र है।

सुराभाड—सज्ञा पुं० [सं० सुराभाण्ड] दे० 'सुरापात्र' (को०)।

सुराभाग—सज्ञा पुं० [सं०] शराब की माँड।

सुराभाजन—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुरापात्र'।

सुरामड—सज्ञा पुं० [सं० सुरामण्ड] शराब की माँड।

सुरामत्त—वि० [सं०] शराब के नशे मे चूर। मदोन्मत्त। मतवाला।

सुरामद—सज्ञा पुं० [स०] शराब का नशा (को०)।

सुरामुख—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसके मुँह मे शराब हो। २ एक नागासुर का नाम।

सुरामूल्य—सज्ञा पु० [सं०] मदिरा का मूल्य। शराब का दाम (को०)।

सुरामेह—सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक के अनुसार प्रमेह रोग का एक भेद।

विशेष—कहते हैं, इस रोग मे रोगी को शराब के रग का पेशाब होता है। पेशाब शीशी मे रखने मे नीचे गाढा और ऊपर पतला दिखलाई पडता है। पेशाब का रग मटमैला या लाली लिए होता है।

सुरामेही—वि० [सं० सुरामेहिन्] सुरामेह रोग से पीडित। जिसे सुरामेह रोग हुआ हो।

सुराय—सज्ञा पु० [स० सु+हिं० राय (=राजा)] श्रेष्ठ नृपति। अच्छा राजा। उ०—बहु भाँति पूजि सुराय। कर जोरि कै परिपाय।—केशव (शब्द०)।

सुरायुध—सज्ञा पु० [स०] देवताओ का अस्त्र।

सुरारणि—सज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओ की माता, अदिति।

सुरारि—सज्ञा पुं० [स०] १ असुर। राक्षस। २ एक दैत्य का नाम। ३ झिल्ली की झनकार। टिड्डा या झींगुर का आह्लादक स्वर। (को०)।

सुरारिघ्न—सज्ञा पु० [सं०] असुरो का नाश करनेवाले, विष्णु।

सुरारिहता—सज्ञा पुं० [सं० सुरारिहन्तृ] असुरो का नाश करनेवाले, विष्णु।

**सुरारिहन्**—सज्ञा पुं० [सं०] असुरो का नाश करनेवाले, शिव।

**सुरारो**—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की बरसाती घास जो राजपूताने और बुदेलखड मे होती है। यह चारे के लिये बहुत अच्छी समझी जाती है। इसे लव भी कहते हैं।

**सुरार्चन**—सज्ञा पुं० [सं०] देवार्चन। देवाराधन [को०]।

**सुरार्चविश्म**—सज्ञा पुं० [स० सुरार्चाविश्मन्] वह स्थान या मदिर जहाँ अनेक देवताओ की प्रतिमा हो। देवकुल [को०]।

**सुरार्दन**—सज्ञा पु० [स०] सुरो या देवताओ को पीडा देनेवाले, राक्षस या असुर।

**सुरार्ह**—सज्ञा पु० [स०] १ हरिचदन। २ स्वर्ण। सोना। ३ कुकुमागरु चदन।

**सुरार्हक**—सज्ञा पु० [सं०] १ बर्बरक। बबई। २ वैजयती। तुलसी।

**सुराल**[1]—सज्ञा पुं० [सं०] धूना। राल।

**सुराल**[2]—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार की लता जिसकी जड विलाई-कद कहलाती है। विशेष दे० 'घोडा वेल'।

**सुरालय**—सज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओ के रहने का स्थान। स्वर्ग। २. सुमेरु। ३ देवमदिर। ४ वह स्थान जहाँ सुरा मिलती हो। शराबखाना। कलवरिया।

**सुरालिका**—सज्ञा स्त्री० [सं०] सातला या सप्तला नाम की बेल जो जगलो मे होती है।

विशेष—इसके पत्ते खैर के पत्तो के समान छोटे छोटे होते हैं। इसका फल पीला होता है और इसमे एक प्रकार की पतली चिपटी फली लगती है। फली मे काले बीज होते हैं जिसमे से पीले रग का दूध निकलता है। वैद्यक के अनुसार यह लघु, तिक्त, कटु तथा कफ, पित्त, विस्फोट, व्रण और शोथ को नाश करनेवाली है।

**सुराव**—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का घोडा। २ उत्तम ध्वनि।

**सुरावट**—सज्ञा पुं० [सं० स्वरावर्त] १ स्वर का माधुर्य। २ स्वरो का उतार चढाव या आरोह अवरोह।

**सुरावती**—सज्ञा स्त्री० [सं० सुरावनि] कश्यप की पत्नी और देवताओ की माता, अदिति। उ०—विनतासुत खगनाथ चद्र सोमावति केरे। सुरावती के सूर्य रहत जग जासु उजेरे।—विश्राम (शब्द०)।

**सुरावनि**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवताओ की माता, अदिति। २ पृथिवी। भूमि। धरती।

**सुरावारि**—सज्ञा पुं० [स०] सुरा का समुद्र। विशेष दे० 'सुराब्धि'।

**सुरावास**—सज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु।

**सुरावृता**—सज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

**सुराश्रय**—सज्ञा पुं० [स०] सुमेरु।

**सुराष्ट्र**[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्राचीन देश का नाम जो भारत के पश्चिम मे था। (किसी के मत से यह सूरत और किसी के मत से काठियावाड है)। २ राजा दशरथ के एक मत्री का नाम।

**सुराष्ट्र**[2]—वि० जिसका राज्य अच्छा हो।

**सुराष्ट्रज**[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ गोपीचदन। सौराष्ट्रमृत्तिका। २ काली मूँग। कृष्ण मुद्ग। ३ लाल कुलथी। रक्त कुलत्थ। ४. एक प्रकार का विष।

**सुराष्ट्रज**[2]—वि० सुराष्ट्र देश मे उत्पन्न।

**सुराष्ट्रजा**—सज्ञा स्त्री० [स०] गोपीचदन।

**सुराष्ट्रोद्भव**—सज्ञा स्त्री० [सं०] फिटकरी।

**सुरासधान**—सज्ञा पुं० [स० सुरासन्धान] शराब चुआने की क्रिया।

**सुरासमुद्र**—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुराब्धि'।

**सुरासव**—सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का आसव जो तीक्ष्ण, बलकारक, मूत्रवर्धक, कफ और वायुनाशक तथा मुख-प्रिय कहा गया है।

**सुरासार** सज्ञा पुं० [स०] मद्य का सार जो अगूर या माडी के खमीर से बनता है। इसके बिना शराब नही बनती। इसी मे नशा होता है।

**सुरासुर**—सज्ञा पु० [सं०] सुर और असुर। देवता और दानव।

यौ०—सुरासुरगुरु। सुरासुरविमर्द = देवासुर सग्राम।

**सुरासुरगुरु**—सज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ कश्यप।

**सुरास्पद**—सज्ञा पुं० [स०] देवताओ का घर। देवगृह। मदिर।

**सुराही**—सज्ञा स्त्री० [अ०] जल रखने का एक प्रकार का प्रसिद्ध पात्र जो प्रायः मिट्टी का और कभी कभी पीतल या जस्ते आदि धातुओ का भी बनता है।

विशेष—यह पात्र बिलकुल गोल हडी के आकार का होता है, पर इसका मुँह ऊपर की ओर कुछ दूर तक निकला हुआ गोल नली के आकार का होता है। प्राय गरमी के दिनो मे पानी ठढा करने के लिये इसका उपयोग होता है। इसे कहीं कहीं कुज्जा भी कहते हैं।

यौ०—सुराहीदार। सुराहीनुमा = सुराही जैसा। सुराही के समान। कुज्जे के आकार का।

२ बाजू, जोशन या बरेखी के लटकते हुए सूत मे घुडी के ऊपर लगनेवाला सोने या चाँदी का सुराही के आकार का बना हुआ छोटा लबोतरा टुकडा। ३ कपडे की एक प्रकार की काट जो पान के आकार की होती है। इसमे मछली की दुम की तरह कुछ कपडा तिकोना लगा रहता है। (दर्जी)। ४ नैचे मे सबसे ऊपर की ओर वह भाग जो सुराही के आकार का होता है और जिसपर चिलम रखी जाती है।

**सुराहीदार**—वि० [अ० सुराही + फा० दार] सुराही के आकार का। सुराही की तरह का गोल और लबोतरा। जैसे,—सुराहीदार गरदन। सुराहीदार घूँघरू। सुराहीदार मोती।

**सुराह्व**—सज्ञा पुं० [सं०] १. देवदारु। २ मरुआ। मरुवक। ३. हलदुआ। हरिद्र।

**सुराह्वय**—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का पौधा। २ देवदारु।

**सुरि**—वि० [सं०] बहुत धनी। बडा अमीर।

**सुरिय**—सज्ञा पुं० [सं० सुर] इद्र। (डिं०)।

सुरिय.खार—सज्ञा पुं० [फा० शोरा + हिं० खार] शोरा।

सुरी—सज्ञा स्त्री० [स०] देवपत्नी। देवागना।

सुरीला—वि० [हिं० सुर + ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सुरीली] मीठे सुरवाला। मधुर स्वरवाला। जिसका सुर मीठा हो। सुस्वर। सुकठ। जैसे—सुरीला गला, सुरीला बाजा, सुरीला गवैया, सुरीली तान।

सुरुग—सज्ञा पुं० [स० सुरङ्ग] १ सहिंजन। शोभाजन वृक्ष। २ दे० 'सुरग'।

सुरुगयुक्—सज्ञा पुं० [स०, सुरङ्गयुक्] दे० 'सुरगयुक्'।

सुरुगा—सज्ञा स्त्री० [स० सुरङ्गा] दे० 'सुरग'।

सुरुगाहि—सज्ञा पुं० [स० सुरङ्गाहि] सेंध लगानेवाला चोर। सेंधिया चोर।

सुरुदला—सज्ञा स्त्री० [स० सुरुन्दला] एक प्राचीन नदी का नाम।

सुरुचम—वि० [सं०] अच्छी तरह प्रकाशित। प्रदीप्त।

सुरुख'—वि० [स० सु + फा० रुख (=प्रवृत्ति)] अनुकूल। सदय। प्रसन्न। उ०—सुरुख जानकी जानि कपि कहे सकल सकेत। —तुलसी शब्द०)।

सुरुख'—वि० [फा० सुर्ख] दे० 'सुख।' उ०—रच न देरि करहु सुरुख अब हरि हेरि परै न। विनय वचन मा सुनि भए सुरुख तरुनि के नैन।—शृगार सतसई (शब्द०)।

सुरुखुरू—वि० [फा० सुखरू] जिसे किसी काम मे यश मिला हो। यशस्वी। उ०—अलहदाद भल तेहिकर गुरू। दीन दुनी रोसन सुरुखुरू।—जायसी (शब्द०)।

सुरुच'—सज्ञा पुं० [सं०] उज्वल प्रकाश। अच्छी रोशनी।

सुरुच'—वि० सुदर प्रकाशवाला।

सुरुचि'—सज्ञा स्त्री० [स०] १ राजा उत्तानपाद की दो पत्नियो मे से एक जो उत्तम की माता थी। ध्रुव की विमाता। २ उत्तम रुचि। ३ सुदर दीप्ति। ४ अत्यत प्रसन्नता।

सुरुचि'—वि० १ उत्तम रुचिवाला। जिसकी रुचि उत्तम हो। २ स्वाधीन। (डिं०)।

सुरुचि'—सज्ञा पुं० १ एक गधर्व राजा का नाम। २. एक यक्ष का नाम।

सुरुचिर—वि० [स०] १ सुदर। दिव्य। मनोहर। २ उज्वल। प्रकाशमान्। दीप्तिशाली।

सुरुज'—वि० [स०] बहुत बीमार। अस्वस्थ। रुग्ण।

सुरुज—सज्ञा पुं० [सं० सूर्य] दे० 'सूर्य'। उ०—तहँ ही से सब ऊपजे चद सुरुज आकाश।—दादू (शब्द०)।

सुरुजमुखी—सज्ञा पु० [स० सूर्यमुखी] दे० 'सूर्यमुखी'। उ०—विचरि चहूँ दिसि लखत हैं वर पूजै वृजराज। चद्रमुखी को लखि सखी सुरुजमुखी सी आज।—शृगार सतसई (शब्द०)।

सुरुद्रि—सज्ञा स्त्री० [स०] शतद्रु या वर्तमान सतलज नदी का एक नाम।

सुरुल—सज्ञा पुं० [देश०] मूगफली पौधे का एक रोग।

विशेष—मूँगफली के इस रोग में कुछ कीडो के खाने के कारण उसके पत्ते और डठल टेढ़े हो जाते हैं। इस पौधे मे यह रोग प्राय सभी जगहो मे होता है और इससे बडी हानि होती है।

सुरुवा'—सज्ञा पुं० [फा० शोरवा] दे० 'शोरवा'।

सुरुवा'—सज्ञा पुं० [सं० श्रुवा] दे० 'सुरवा'।

सुरूप'—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुरूपा] १ सुदर रूपवाला। रूपवान्। खूबसूरत २ विद्वान्। बुद्धिमान्।

सुरूप'—सज्ञा पुं० १ शिव का एक नाम। २ एक असुर का नाम। ३ कपास। तूल। ४ पलास पीपल। परिपाश्वत्य। ५ कुछ विशिष्ट देवता और व्यक्ति।

विशेष—कामदेव, दोनो अश्विनीकुमार, नकुल, पुरुरवा, नलकूबर और शाव ये सुरूप कहलाते हैं।

सुरूप'—सज्ञा पुं० [सं० स्वरूप] दे० 'स्वरूप'। उ०—रूप सवाई दिन दिन चढा। विधि सुरूप जग ऊपर गढा।—जायसी (शब्द०)।

सुरूपक—वि० [सं०] दे० 'स्वरूप'।

सुरूपता—सज्ञा स्त्री० [सं०] सुरूप होने का भाव। सुदरता। खूबसूरती।

सुरूपा'—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरिवन। शालपर्णी। २ वमनेठी। भारगी। ३ सेवती। वनमल्लिका। ४ बेला। वार्षिकी मल्लिका। ५ पुराणानुसार एक गौ का नाम। ६ एक नागकन्या और एक अप्सरा का नाम (को०)।

सुरूपा'—वि० स्त्री० सुदर रूपवाली। सुदरी।

सुरूर—सज्ञा पुं० [फा०] दे० 'सरूर'।

मुहा०—दे० 'सरूर' के मुहा०।

यौ०—सुरूर अगेज = हलका नशा लानेवाला। मादक।

सुरूहक—सज्ञा पुं० [सं०] खच्चर। गर्दभाश्व।

सुरेंद्र—सज्ञा पु० [सं० सुरेन्द्र] १ सुरराज। इद्र। २ लोकपाल। राजा। ३ विष्णु। उपेंद्र (को०)।

सुरेंद्रकद—सज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रकन्द] दे० 'सुरेंद्रक'।

सुरेंद्रक—सज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रक] कटु शूरण। काटनेवाला जमीकद। जगली ओल।

सुरेंद्रगोप—सज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रगोप] वीरबहूटी। इद्रगोप नामक कीडा।

सुरेंद्रचाप—सज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रचाप] इद्रधनुष।

सुरेंद्रजित्—सज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रजित्] इद्र को जीतनेवाला, गरुड।

सुरेंद्रता—सज्ञा स्त्री० [सं० सुरेन्द्रता] सुरेंद्र होने का भाव या धर्म। इद्रत्व।

सुरेंद्रपूज्य—सज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रपूज्य] बृहस्पति।

सुरेंद्रमाला—सज्ञा स्त्री० [सं० सुरेन्द्रमाला] एक किन्नरी का नाम।

सुरेंद्रलुप्त—सज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रलुप्त] इद्रलुप्त। बाल झडने का रोग। गजापन (को०)।

सुरेंद्रलोक—सज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रलोक] इद्रलोक।

सुरेंद्रवज्रा—सज्ञा स्त्री० [सं० सुरेन्द्रवज्रा] एक वर्णवृत्त का नाम जिसमे दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते है। इद्राणी।

सुरेंद्रवती—सज्ञा स्त्री० [सं० सुरेन्द्रवती] शची। इद्राणी।

सुरेंद्रा—सज्ञा स्त्री० [स० सुरेन्द्रा] एक किन्नरी का नाम।

सुरेख—वि० [स०] सुदर रेखाकन करनेवाला [को०]।

सुरेखा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुदर रेखा। २ हाथ पाँव मे होनेवाली वे रेखाएँ जिनका रहना शुभ समझा जाता है।

सुरेज्य—सज्ञा पुं० [स०] बृहस्पति।

सुरेज्ययुग—सज्ञा पु० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति का युग जिसमे पाँच वर्ष है। इन पाँचो वर्षो के नाम ये हैं—अगिरा, श्रीमुख, भाव, युवा और धाता।

सुरेज्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ तुलसी। २ ब्राह्मी।

सुरेणु[1]—सज्ञा पु० [स०] १ त्वष्टरेणु। २ एक प्राचीन राजा का नाम।

सुरेणु[2]—सज्ञा स्त्री० १ त्वाष्ट्री की पुत्री और विवस्वान् की पत्नी। २ एक नदी का नाम जो सप्त सरस्वतियो मे समझी जाती है।

सुरेणुपुष्पध्वज—सज्ञा पुं० [स०] बौद्धो अनुसार किन्नरो के एक राजा का नाम।

सुरेतना†—क्रि० स० [देश०] खराब अनाज से अच्छे अनाज को अलग करना।

सुरेतर—सज्ञा पु० [स०] असुर।

सुरेता—वि० [स० सुरेतस्] बहुत वीर्यवान्। अधिक सामर्थ्यवान्।

सुरेतोधा—वि० [स० सुरेतोधस्] वीर्यवान्। पौरुषसपन्न।

सुरेथ—सज्ञा पुं० [देश०] सूँस। शिशुमार। उ०—रथ सुरेथ भुज मीन समाना। शिरकच्छप गजग्राह प्रमाना।—विश्राम (शब्द०)।

सुरेनुका—सज्ञा स्त्री० [स० सुरेणु] दे० 'सुरेणु'। उ०—सोमनाथ त्रिरत ह्वै आलनाथ एकग। हरिक्षेत्र नैमिष सदा अशतीशु चित्रग। प्रगट प्रभासु सुरेनुका हर्म्य जापु उज्जैनि। शकर पूरनि पुष्करु अरु प्रयाग मृगनैनि।—केशव (शब्द०)।

सुरेभ[1]—सज्ञा पु० [स०] १ सुरहस्ती। देवहस्ती। २ दिन (को०)।

सुरेभ[2]—वि० सुस्वर। सुरीला।

सुरेवट—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का सुपारी का पेड। रामपूग।

सुरेश—सज्ञा पु० [स०] १ देवताओ के स्वामी इद्र। २ शिव। ३ विष्णु। ४ कृष्ण। ५ लोकपाल। ६ अग्नि का एक नाम (को०)।

सुरेशलोक—सज्ञा पु० [स०] इद्रलोक।

सुरेशी—सज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

सुरेश्वर[1]—सज्ञा पु० [स०] १ देवताओ के स्वामी, इद्र। २ ब्रह्मा। ३ शिव। ४ रुद्र। ५ विष्णु (को०)।

सुरेश्वर[2]—वि० देवताओ मे श्रेष्ठ।

सुरेश्वरी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ देवताओ की स्वामिनी, दुर्गा। २ लक्ष्मी। ३ राधा। ४ स्वर्गगगा।

सुरेश्वराचार्य—सज्ञा पुं० [स०] मडन [illegible] नाम।

सुरेष्ठ—सज्ञा पुं० [स०] १ सफेद अगस्ते का वृक्ष। २ लाल अगस्त। ३ सुरपुन्नाग। ४ शिवमल्ली। बडी मौलसिरी। ५ साल वृक्ष। साखू।

सुरेष्टक—सज्ञा सं० [स०] शाल। साखू। अश्वकर्ण।

सुरेष्टा—सज्ञा स्त्री० [स०] ब्राह्मी।

सुरेस—सज्ञा पु० [स० सुरेश] दे० 'सुरेश'।

सुरै[1]—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की अनिष्टकारी घास जो गर्मी के मौसम मे पैदा होती है।

सुरै[2]—सज्ञा स्त्री० [स० सुरभी] गाय। (डिं०)।

सुरै[3]—वि० बहुत धनी। प्रचुर सपत्तियुक्त [को०]।

सुरैत—सज्ञा स्त्री० [स० सुरति] वह स्त्री जिससे विवाह सबध न हुआ हो बल्कि जो यो ही घर मे रख ली गई हो। सुरैतिन। उपपत्नी रखनी। रखेली।

सुरैतवाल—सज्ञा पु० [हिं० सुरैत + वाल] सुरैत का लडका।

सुरैतवाला—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सुरैतवाल'।

सुरैतिन—सज्ञा स्त्री० [स० सुरति] दे० 'सुरैत'।

सुरैया—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ तीसरा नक्षत्र। कृत्तिका। २ कान मे पहनने का झुमका। ३ रोशनी का झाड [को०]।

सुरोचन—सज्ञा पु० [स०] १ यज्ञबाहु के एक पुत्र का नाम। २ एक वर्ष का नाम।

सुरोचना—सज्ञा स्त्री० [स०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

सुरोचि—वि० [स० सुरुचि] सुदर। उ०—गिरि जात न जानत पान न खात विरी कर पकज के दल की। विहँसी सब गोप-सुता हरि लोचन मूँदि सुरोचि दृगचल की।—केशव (शब्द०)।

सुरोची—सज्ञा पुं० [सं० सुरोचिस्] वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम।

सुरोत्तम—सज्ञा पु० [स०] १ देवताओ मे श्रेष्ठ, विष्णु। २ सूर्य। ३ इद्र (को०)। ४ सुरा का फेन (को०)।

सुरोत्तमा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम।

सुरोत्तर—सज्ञा पुं० [स०] चदन।

सुरोद[1]—सज्ञा पु० [सं०] सुरासमुद्र। मदिरा का समुद्र।

सुरोद[2]—सज्ञा पु० [स० स्वरोद] दे० 'सरोद'।

सुरोद[3]—सज्ञा पु० [फा०] गायन। गाना [को०]।

सुरोदक—सज्ञा पु० [हिं० सुरोदक] दे० 'सुरोद'।

सुरोदय—सज्ञा पु० [स० स्वरोदय] दे० 'स्वरोदय'।

सुरोध—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार तसु के एक पुत्र का नाम।

सुरोधा—सज्ञा पुं० [सं० सुरोधस्] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

सुरोपम—वि० [स०] सुरतुल्य। देवता के समान।

सुरोपयाम—सज्ञा पुं० [स०] मदिरापात्र [को०]।

सुरोमा[1]—वि० [स० सुरोमन्] सुदर रोमवाला। जिसके रोम सुदर हो।

सुरोमा[2]—सज्ञा पुं० १. एक यज्ञ का नाम। २ एक असुरनाग (को०)।

सुरोषण—सज्ञा पु० [स०] देवताओ के एक सेन [illegible] नाम।

**सुरौका**—संज्ञा पु० [सं० सुरौकस्] १ स्वर्ग। २ देवमंदिर।

**सुर्ख**[१] वि० [फा० सुख] रक्त वर्ण का। लाल।

**सुर्ख**[२]—संज्ञा पुं० गहरा लाल रंग।

**सुर्ख**[३]—संज्ञा स्त्री० १ घुँघुची। गुंजा। एक रत्ती २ गजीफा की एक क्रीडा [को०]।

यौ०—सुर्खचश्म = जिसकी आँखें लाल हों। सुर्खपोश = रक्तांबर। लाल कपडे पहननेवाला। सुर्खपोशी = लाल वस्त्र पहनना। सुर्खरंग = लाल रंग का। रक्तवर्णवाला।

**सुर्खरू**—वि० [फा०] १ जिसके मुख पर तेज हो। तेजस्वी। कांतिमान्। २ प्रतिष्ठित। समान्य। ३ किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के कारण जिसके मुँह की लाली रह गई हो।

**सुर्खरूई**—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ सुर्खरू होने का भाव। २ यश। कीर्ति। ३ मान। प्रतिष्ठा।

**सुर्खा**—संज्ञा पु० [फा० सुर्ख] १ एक प्रकार का कबूतर जो लाल रंग का होता है। २ सुर्ख रंग का अश्व। ३ सुर्ख रंग का आम।

**सुर्खाब**—संज्ञा पुं० [फा० सुर्खाब] दे० 'सुरखाब'।

**सुर्खी**—संज्ञा स्त्री० [फा० सुर्खी] १ लाली। ललाई। अरुणता। २ लेख आदि का शीर्षक, जो प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों में प्रायः लाल स्याही से लिखा जाता था। लेख, समाचार आदि का शीर्षक। ३ रक्त। लहू। खून। ४ दे० 'सुरखी'।

**सुर्खीदार सुरमई**—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का सुरमई या बैंजनी रंग जो कुछ लाली लिए होता है।

**सुर्खी मायल**—वि० [फा०] लालिमायुक्त। ललौहाँ। उ०—ओठ पतले तथा गुलाबी रंग में रँगे मालूम होते थे और गाल भरे तथा सुर्खी मायल थे।—कठ०, पृ० ५०।

**सुर्जना**—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सहिजन'।

**सुर्ता**—वि० [हिं० सुरति (=स्मृति)] समझदार। होशियार। बुद्धिमान्। उ०—हीरा लाल की कोठरी मोतिया भरे भंडार। सुर्ता सुर्ता चुनिया मूरख रहे झख मार।—कबीर (शब्द०)।

**सुर्ती**—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सुरती'।

**सुर्मा**—संज्ञा पु० [फा० सुर्मह्] दे० 'सुरमा'।

**सुर्री**[१]—संज्ञा पुं० [देश०] १ प्रकार एक की मछली। २ थैली। बटुआ।

**सुर्री**[२]—संज्ञा पुं० [सुर से अनु०] तेज हवा।

क्रि० प्र०—चलना।

**सुलक**—संज्ञा पुं० [हिं० सोलकी] दे० 'सोलकी'। उ०—तब सुलक नृप आनँद पायो। द्वै सुत निज तिय महँ जनमायो।—रघुराज (शब्द०)।

**सुलकी**—संज्ञा पुं० [हिं० सोलकी] दे० 'सोलकी'। उ०—पौरच पुडीर परिहार औ पँवार बैस, सेंगर सिसौदिया सुलकी दितवार है।—सूदन (शब्द०)।

**सुलघित**—वि० [सं० सुलङ्घित] १ जिसे लघन या फाका कराया गया हो। जिसे उपवास कराया गया हो। २ जो लाँघा गया हो।

**सुलच्च**—वि० [सं० सुलक्षण] दे० 'सुलक्षण'।

**सुलच्छण**[१]—वि० [स०] १ शुभ लक्षणों से युक्त। अच्छे लक्षणोंवाला। २ भाग्यवान्। किस्मतवर।

**सुलच्छण**[२]—संज्ञा पु० १ शुभ लक्षण। शुभ चिह्न। २ एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ होती हैं और सात मात्राओं के बाद एक गुरु, एक लघु और तब विराम होता है।

**सुलच्छणत्व**—संज्ञा पुं० [स०] सुलक्षण का भाव। सुलक्षणता।

**सुलच्छणा**[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती की एक सखी का नाम। २ श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।

**सुलच्छणा**[२]—वि० स्त्री० शुभ लक्षणों से युक्त। अच्छे लक्षणोंवाली।

**सुलच्छणी**—वि० स्त्री० [स० सुलक्षणा] दे० 'सुलक्षणा'।

**सुलक्षित**—वि० [सं०] १ जो सम्यक्रूपेण निश्चित हो। २ जो अच्छी तरह लक्षित अथवा परीक्षित हो [को०]।

**सुलक्ष्य**—वि० [सं०] जो ठीक ठीक लक्षित किया जा सके।

**सुलग**—अव्य० [हिं० सु + लगना] पास। समीप। निकट। उ०—मुनि वेष धरे धनु सायक सुलग हैं। तुलसी हिये लसत लोने लोने डग हैं।—तुलसी (शब्द०)।

**सुलगन**[१]—संज्ञा स्त्री० [स० सु + हिं० लगना अथवा देश०] सुलगने की क्रिया या भाव।

**सुलगन**[२]—संज्ञा पुं० [स० सुलग्न] दे० 'सुलग्न'।

**सुलगना**—क्रि० अ० [सं० सु + हिं० लगना] १ (लकडी, कोयले आदि का) जलना। प्रज्वलित होना। दहकना। २ बहुत अधिक संताप होना। ३ गाँजा, तंबाकू आदि का पीने लायक होना।

**सुलगाना**—क्रि० स० [हिं० सुलगना का स० रूप] १ जलाना। दहकाना। प्रज्वलित करना। जैसे—लकडी सुलगाना, आग सुलगाना, कोयला सुलगना।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।—रखना।

२ संतप्त करना। दुखी करना। ३ चिलम पर रखे गाँजे तंबाकू आदि को फूँककर पीने लायक करना।

**सुलग्न**[१]—संज्ञा पुं० [स०] शुभ मुहूर्त। शुभ लग्न। अच्छी साइत।

**सुलग्न**[२]—वि० दृढता से लगा हुआ।

**सुलच्छन**—वि० [सं० सुलक्षण] दे० 'सुलक्षण'। उ०—(क) अहि भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग। होइ कुवस्तु सुवस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग।—तुलसी (शब्द०)। (ख) नृप लस्यो ततच्छन भरम हर। परम सुलच्छन वरम धर।—गि० दास (शब्द०)।

**सुलच्छनी**—वि० [हिं० सुलच्छन] दे० 'सुलक्षणा'। उ०—जाय सुहागिनि बसति जो अपने पीहर धाम। लोग बुरी शंका करैं यदपि सती हू बाम। यातें चाहत बधूजन रहे सदा पतिगेह। प्रमुदा नारि सुलच्छनी बिनहु पिया के नेह।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

**सुलच्छ**—वि० [सं० सुलक्ष] सुंदर। उ०—सुलच्छ लोचन चारु नासा परम रुचिर बनाइ। युगल खंजन लरत अवनित बीच कियो बनाइ।—सूर (शब्द०)।

**सुलझन**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुलझना] सुलझने की क्रिया या भाव। सुलझाव।

**सुलझना**—क्रि० अ० [हिं० उलझना] १ किसी उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर होना या खुलना। उलझन का खुलना। २ गुत्थी या पेचीदगी का खुलना। जटिलताओ का निवारण होना।

**सुलझाना**—क्रि० स० [हिं० सुलझना का सक० रूप] १ किसी उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर करना। २ उलझन या गुत्थी खोलना। जटिलताओ को दूर करना।

**सुलझाव**—सज्ञा पुं० [हिं० सुलझना + आव (प्रत्य०)] सुलझने की क्रिया या भाव। सुलझन।

**सुलटा**—वि० [हिं० उलटा] [वि० स्त्री० सुलटी] सीधा। उलटा का विपरीत।

**सुलतान**—सज्ञा पुं० [फा०] बादशाह। सम्राट्।

**सुलताना**—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ रानी। मलिका। २ सुलतान की स्त्री। ३ सम्राट् की माता।

**सुलताना चपा**—सज्ञा पु० [फा० सुलतान + हिं० चपा] एक प्रकार का पेड। पुन्नाग।

**विशेष**—यह वृक्ष मद्रास प्रात मे अधिकता से होता है और कही कही उत्तरप्रदेश और पजाब मे भी पाया जाता है। इसके हीर की लकडी लाली लिए भूरे रग की और बहुत मजबूत होती है। यह इमारत, मस्तूल आदि बनाने के काम मे आती है। रेल की लाइन के नीचे पटरी की जगह रखने के भी काम आती है। सस्कृत मे इसे पुन्नाग कहते है।

**सुलतानी**[1]—सज्ञा स्त्री० [फा० सुलतान] १ बादशाही। बादशाहत। राज्य। उ०—चढि धौराहर देखहि रानी। धनि तुइँ अस जाकर सुलतानी।—जायसी (शब्द०)। २ एक प्रकार का बढिया महीन रेशमी कपडा।

**यौ०**—सुलतानी बनात = एक प्रकार की लाल रग की बनात। सुलतानी बुलबुल = बडी जाति की बुलबुल।

**सुलतानी**[2]—वि० १ लाल रग का। उ०—सोई हुती पलँगा पर बाल खुले अँचरा नहिं जानत कोऊ। ऊँचे उरोजन कचुकी ऊपर लालन के चरचे दृग दोऊ। सो छबि पीतम देखि छके कवि तोष कहै उपमा यह होऊ। मानो मढे सुलतानी बनात मे साह मनोज के गुबज दोऊ।—तोष (शब्द०)। २ शासन। राज्य। बादशाही (को०)।

**सुलप**ⓤ[1]—वि० [स० स्वल्प] १ दे० 'स्वल्प'। उ०—नृत्यति उघटति गति सगीत पद सुनत कोकिला लाजति। सूर श्याम नागर अरु नागरि ललना सुलप मडली राजति।—सूर (शब्द०)। २ मद। उ०—चलि सुलप गज हस मोहित कोक कला प्रवीन।—सूर (शब्द०)।

**सुलप**[2]—सज्ञा पु० [सं० सु + आलाप] सुदर आलाप। (क्व०)।

**सुलफ**—वि० [स० सु + हिं० लपना] १ लचीला। लचनेवाला। २. नाजुक। कोमल। मुलायम। उ०—(क) दीरघ उसास लै लै ससिमुखी सिसकति सुलफ सलौनो लक लहकै लहकि लहकि।—देव (शब्द०)। (ख) मोती सियरात हित जानि कै प्रभात ढिग ढीले करि पीतम के गात सुलफनि के।—देव (शब्द०)।

**सुलफा**—सज्ञा पुं० [फा० सुल्फह्] १ वह तमाकू जो चिलम मे बिना तवा रखे भरकर पिया जाता है। २ सूखा तमाकू जिसे गाँजे की तरह पतली चिलम मे भरकर पीते हैं। ककड। ३ चरस।

**यौ०**—सुलफेबाज।

**क्रि० प्र०**—भरना।—पीना।

**सुलफेबाज**—वि० [हिं० सुल्फा + फा० बाज] गाँजा या चरस पीनेवाला। गँजेडी या चरसी।

**सुलब**—सज्ञा पु० [डिं०] गधक।

**सुलभ**[1]—वि० [स०] १ सुगमता से मिलने योग्य। सहज मे मिलनेवाला। जिसके मिलने मे कठिनाई न हो। २ सहज। सरल। सुगम। आसान। ३ साधारण। मामूली। ४ उपयोगी। लाभकारी।

**यौ०**—सुलभकोप = जिसकी नाक पर गुस्सा हो।

**सुलभ**[2]—सज्ञा पु० [स०] अग्निहोत्र की अग्नि।

**सुलभता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुलभ का भाव। सुलभत्व। २ सुगमता। आसानी।

**सुलभत्व**—सज्ञा पुं० [स०] १ सुलभ का भाव। सुलभता। २ सुगमता। सरलता। आसानी।

**सुलभा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वैदिक काल की एक ब्रह्मवादिनी स्त्री का नाम (गर्ग्यसत्र)। २ तुलसी। ३ मधवन। जगली उडद। मासपर्णी। ४ तमाकू। धूम्रपत्रा। ५ बेला। वार्षिकी मल्लिका।

**सुलभेतर**—वि० [स०] १ जो सहज मे प्राप्त न हो सके। दुर्लभ। कठिन। २ महार्घ। महँगा।

**सुलभ्य**—वि० [स०] सुगमता से मिलने योग्य। सहज मे मिलनेवाला। जिसके मिलने मे कठिनाई न हो।

**सुललिक**—सज्ञा पु० [स०] एक मिश्र जाति [को०]।

**सुललित**—वि० [स०] १ अति ललित। २ अत्यत सुदर। ३ प्रसन्न। हर्षित। ४. क्रीडारत। क्रीडाशील (को०)।

**सुलवण**—सज्ञा पुं० [स०] जिसमे नमक ठीक पडा हो [को०]।

**सुलस**—सज्ञा पुं० [देश०] स्वीडेन देश का एक प्रकार का लोहा।

**सुलह**ⓤ[1]—वि० [स० सुलभ, प्रा० सुलह] दे० 'सुलभ'।

**सुलह**[2]—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ मेल। मिलाप। २ वह मेल जो किसी प्रकार की लडाई या झगडा समाप्त होने पर हो। ३ दो राजाओ या राज्यो मे होनेवाली सधि।

**यौ०**—सुलहनामा।

**सुलहनामा**—सज्ञा पुं० [अ० सुलह + फा० नामह्] १ वह कागज जिसपर दो या अधिक परस्पर लडनेवाले राजाओ या राष्ट्रो की ओर से मेल की शर्तें लिखी रहती है। सधिपत्र। २. वह कागज

जिसपर परस्पर लडनेवाले दो व्यक्तियो या दलो की ओर से समझौते की शर्तें लिखी रहती है, अथवा यह लिखा रहता है कि अब हम लोगो मे किसी प्रकार का झगड़ा नही है।

**सुलाक[१]**—सज्ञा पुं० [फा० सूराख] सूराख। छेद। (लश०)।

**सुलाक[२]**—सज्ञा स्त्री० [फा० सलाख] दे० 'सलाख'।

**सुलाखना‡[१]**—क्रि० स० [स० सु+हिं० लखना (=देखना)] सोने या चाँदी को तपाकर परखना।

**सुलाखना‡[२]**—क्रि० स० [फा० सूराख] सूराख या छेद करना।

**सुलागना**Ⓤ† क्रि० अ० [हिं० सुलगना] दे० 'सुलगना'। उ०—अगिनि सुलागत मोस्यो न अँग मन विकट बनावत बेहु। बकती कहा बाँसुरी कहि कहि करि करि तामस तेहु।—सूर (शब्द०)।

**सुलाना**—क्रि० स० [हिं० सोना का प्रेर० रूप] १ सोने मे प्रवृत्त करना। शयन कराना। निद्रित कराना। २ लिटाना। डाल देना।

**सुलाभ**—वि० [स०] दे० 'सुलभ'।

**सुलाभी**—सज्ञा पुं० [स० सुलाभिन] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

**सुलाह**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [अ० सुलह] १ मेल। अनुकूलता। २ समझौता।

**सुलिखित**—वि० [स०] १ सुदर एव सुस्पष्ट लिखा हुआ। २ दर्ज किया हुआ [को०]।

**सुलिप**Ⓤ—वि० [सं० स्वल्प, हिं० सुलप] थोडा। स्वल्प।

**सुलिपि**—सज्ञा स्त्री० [स०] सुदर एव सुस्पष्ट लिपि। साफ लिखावट।

**सुलुलित**—वि० [स०] १ आनद से इतस्तत हिलता हुआ। क्रीडापूर्वक इधर उधर घूमता हुआ। २ अत्यत क्षतिग्रस्त। नष्टभ्रष्ट किया हुआ [को०]।

**सुलुस**—सज्ञा पुं० [अ०] तीसरा भाग। तृतीयाश [को०]।

**सुलू**—वि० [सं०] अच्छी तरह छेदने या काटनेवाला [को०]।

**सुलूक**—सज्ञा पु० [अ०] दे० 'सलूक'।

**सुलेक**—पज्ञा पुं० [सं०] एक आदित्य का नाम।

**सुलेख[१]**—वि० [सं०] १ सुदर लिखनेवाला। सुदर रेखाएँ बनानेवाला। २ जो शुभ रेखाओ से युक्त हो।

**सुलेख[२]**—पज्ञा पु० सुदर लेख। अच्छी और साफ लिखावट। खुशखती।

**सुलेखक**—सज्ञा पुं० [स०] १ अच्छा लेख या निबध लिखनेवाला। जिसकी रचना उत्तम हो। उत्तम ग्रथकार या लेखक। २ सुदर और साफ अक्षर लिखनेवाला। खुशखत।

**सुलेमाँ**—सज्ञा पु० [फा०] दे० 'सुलेमान'। उ०—हाथ सुलेमाँ केरि अँगूठी। जग कहँ दान दीह भरि मूठी।—जायसी (शब्द०)।

**सुलेमान**—सज्ञा पुं० [फा०] १ यहूदियो का एक प्रसिद्ध बादशाह जो पैगबर माना जाता है।

**विशेष**—कहते हैं, इसने देवो और परियो को वश मे कर लिया था और यह पशुपक्षियो तक से काम लिया करता था। इसका जन्म ई० पू० १०३३ और मृत्यु ई० पू० ९७५ मानी जाती है।

२ एक पहाड जो बलोचिस्तान और पजाब के बीच मे है।

**सुलेमानी[१]**—सज्ञा पुं० [फा०] १ वह घोडा जिसकी आँखें सफेद हो। २ एक प्रकार का दोरगा पत्थर जिसका कुछ अश काला और कुछ सफेद होता है।

**सुलेमानी[२]**—वि० सुलेमान का। सुलेमान सबधी। जैसे,—सुलेमानी नमक।

**यौ०**—सुलेमानी नमक=एक प्रकार का बनाया हुआ नमक जो अत्यत पाचक होता है। सुलेमानी सुरमा=दे० 'सुरमा सुलेमानी'।

**सुलोक**—सज्ञा पुं० [स० सु+लोक] स्वर्ग।

**सुलोचन[१]**—वि० [स०] [वि० स्त्री० सुलोचना] सुदर आँखोवाला। जिसके नेत्र सुदर हो। सुनेत्र। सुनयन।

**सुलोचन[२]**—सज्ञा पुं० १ हरिन। २ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

**विशेष**—महाभारत के आदि पर्व के ६७ वें अध्याय मे इसका उल्लेख मिलता है अत किसी किसी के मत से दुर्योधन का ही यह एक नाम था क्योकि जलस्तभन (जलसघ) विद्या इसी को आती थी।

३ एक दैत्य का नाम। ४ रुक्मिणी के पिता का नाम। ५ चकोर। ६ एक बुद्ध (को०)।

**सुलोचना**—पज्ञा स्त्री० [स०] १ एक अप्सरा का नाम। २ राजा माधव की पत्नी का नाम जो आदर्श पत्नी मानी जाती है। ३ वासुकी की पुत्री और मेघनाद की पत्नी का नाम। ४ सुदर महिला। मोहक नेत्रोवाली औरत (को०)।

**सुलोचनि, सुलोचनी**Ⓤ—वि० स्त्री० [सं० सुलोचना] सुदर नेत्रोवाली। जिसके नेत्र सुदर हो। उ०—सुदरि सुलोचनि सुवचनि सुदति, तैसे तेरे मुख आखर पदुप रुख मानिए।—केशव (शब्द०)।

**सुलोम**—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुलोमा] सुदर लोमो या रोमा से युक्त। जिसके रोएँ सुदर हो।

**सुलोमनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] जटामासी। बालछड।

**सुलोमश**—वि० [स०] दे० 'सुलोम'।

**सुलोमशा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ काकजघा। २ जटामासी।

**सुलोमा[१]**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ ताम्रवल्ली। २ मासरोहिणी। मासच्छुदा।

**सुलोमा[२]**—वि० दे० 'सुलोम'।

**सुलोल**—वि० [स०] १ अत्यत लोल या लालायित। २ अतीव चचल [को०]।

**सुलोह**—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बढिया लोहा।

**सुलोहक**—सज्ञा पुं० [स०] पीतल।

**सुलोहित[१]**—सज्ञा पुं० [स०] सुदर रक्त वर्ण। अच्छा लाल रग।

**सुलोहित[२]**—वि० सुदर रक्त वर्ण से युक्त। सुदर लाल रगवाला।

**सुलोहिता**—सज्ञा स्त्री० [स०] अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक जिह्वा का नाम।

**सुलोही**—सज्ञा पुं० [स० सुलोहिन्] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

**सुल्त**—सज्ञा पु० [अ०] जौ। यव [को०]।

सुल्तान—सज्ञा पुं० [अ०] दे० 'सुलतान'।

सुल्तानी—वि०, सज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'सुलतानी'।

सुल्फ—सज्ञा पुं० [देश०] १ बहुत चढी या तेज लय। २ नाव। किश्ती। (लश०)।

सुल्फा—सज्ञा पु० [अ० सुल्फह्] नाश्ता। जलपान। उपाहार [को०]।

सुल्स—सज्ञा पु० [अ०] दे० 'सुलुस' [को०]।

सुवश—सज्ञा पु० [स०] १ भागवत के अनुसार वसुदेव के एक पुत्र का नाम। २ सुदर वश। अच्छा कुल या खानदान।

सुवशघोष—सज्ञा पु० [स०] वशी की तरह मीठे स्वर का वाद्य [को०]।

सुवशेक्षु—सज्ञा पु० [स०] सफेद ईख या ऊख। श्वेतेक्षु।

सुवंस—सज्ञा पुं० [स० सुवश] दे० 'सुवश'। उ०—गिरिधर अनुज सुवस चल्यो जदुवस बढावन।—गोपाल (शब्द०)।

सुव(पु)—सज्ञा पुं० [स० सुत, प्रा० सुअ, अप० सुव] दे० 'सुअन'। उ०—हिंदुवान पुन्य गाहक वनिक तासु निवाहक साहि सुव। वरवाद वान किरवान धरि जस जहाज सिवराज तुव।—भूषण (शब्द०)।

सुवक्ता—वि० [सं० सु+वक्तृ] सुदर बोलनेवाला। उत्तम व्याख्यान देनेवाला। वाक्पटु। व्याख्यानकुशल। वाग्मी।

सुवक्त्र'—सज्ञा पु० [सं०] १ शिव। २ स्कद के एक पारिषद का नाम। ३ दतवक्त्र के एक पुत्र का नाम। ४ वनतुलसी। वन वर्वरी। ५ सुदर मुखाकृति (को०)। ६ सुदर एव सुस्पष्ट उच्चारण (को०)।

सुवक्त्र'—वि० सुदर मुँहवाला। सुमुख।

सुवक्ष—वि० [स० सुवक्षस्] सुदर या विशाल वक्षवाला। जिसकी छाती सुदर या चौडी हो।

सुवक्षा'—वि० [स० सुवक्षस्] दे० 'सुवक्ष'।

सुवक्षा'—सज्ञा स्त्री० [स०] मय दानव की पुत्री और त्रिजटा तथा विभीषण की माता का नाम।

सुवच—वि० [स०] सहज मे कहा जानेवाला। जिसके उच्चारण मे कोई कठिनता न हो।

सुवचन'—वि० [सं०] १ सुदर बोलनेवाला। सुवक्ता। वाग्मी। २ मधुरभाषी। मिष्टभाषी।

सुवचन'—सज्ञा पु० सुदर वचन। शुभ वचन। मीठी एव प्रिय बात। उ०—सुनि सुवचन भूपति हरखाना।—मानस, १।१६४।

सुवचनि(पु)—वि० [सं० सुवचन] दे० 'सुवचनी'। उ०—सुदरि सुलोचनि सुवचनि सुदति तैसे तेरे मुख आखर परुष रुख मानिए।—केशव (शब्द०)।

सुवचनी'—सज्ञा स्त्री० [स०] एक देवी का नाम।

विशेष—बगाल प्रदेश की स्त्रियो मे इस देवी की पूजा का अधिक प्रचार है।

सुवचनी'—वि० [स० सुवचना] सुदर एव प्रिय वचन बोलनेवाली। मधुरभाषिणी।

सुवचा'—सज्ञा स्त्री० [स०] एक गधर्वी का नाम।

सुवचा'—वि०, सज्ञा पु० [स० सुवचस्] सुदर वचन बोलनेवाला। सुवक्ता [को०]।

सुवज्र—सज्ञा पु० [स०] सुदर वज्रवाला, इद्र का एक नाम।

सुवटा(पु)—सज्ञा पुं० [हिं० सुआ+टा (प्रत्य०)] दे० 'सुअटा'। उ०—पिजर पिड सरीर का सुवटा सहज समाइ।—दादू (शब्द०)।

सुवत्सा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह स्त्री जिसके वत्स सुदर एव सौम्य हो। २ एक दिक्कुमारी [को०]।

सुवण(पु)—सज्ञा पु० [स०] सोना। सुवर्ण। (डिं०)।

सुवदन'—वि० [स०] [वि० स्त्री० सुवदना] सुदर मुखवाला। जिसका मुख सुदर हो। सुमुख।

सुवदन'—सज्ञा पुं० वनतुलसी। बर्बरक।

सुवदना—सज्ञा स्त्री० [स०] सुदरी स्त्री।

सुवदना—सज्ञा स्त्री० [स०] ११ अक्षरो की एक वृत्ति जिसमे क्रमश न, ज, ज, लघु और गुरु होते है। इसे 'सुमुखी' भी कहते है [को०]।

सुवन'—सज्ञा पु० [सं०] १ सूर्य। २ अग्नि। ३ चद्रमा।

सुवन(पु)'—सज्ञा पु० [स० सुत, प्रा० सुअ] १ दे० 'सुअन'। उ०—सुरसरि सुवन रणभूमि आए।—सूर (शब्द०)।

सुवन(पु)'—सज्ञा पुं० [स० सुमन] दे० 'सुमन'। उ०—दामिनि दमक देखि दीप की दिपति देखि देखि शुभ सेज देखि सदन सुवन को।—केशव (शब्द०)।

सुवनारा(पु)—सज्ञा पु० [हिं० सुअन+आर (प्रत्य०)] दे० 'सुअन' (पुत्र)। उ०—एक दिना तौ धर्म भुवारा। द्रुपदी हेतु सग सुवनारा।—सबलसिंह (शब्द०)।

सुवपु'—सज्ञा स्त्री० [सं० सुवपुस्] एक अप्सरा का नाम।

सुवपु'—वि० सुदर शरीरवाला। सुदेह।

सुवया—सज्ञा स्त्री० [स० सुवयस्] १ प्रौढा स्त्री। मध्यमा स्त्री। २ वह जिसमे स्त्री पुरुष दोनो के चिह्न या लक्षण वर्तमान हो (को०)।

सुवरकोना—सज्ञा पु० [हिं० सूअर+कोना, अथवा कन्ना (=कान)] वह हवा जिसमे पाल नही उडता। (मल्लाह)।

सुवरण—सज्ञा पु० [स० सुवर्ण] दे० 'सुवर्ण'।

सुवर्चक, सुवर्च्चक—सज्ञा पु० [स०] १ सज्जी। स्वर्जिकाक्षार। २ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सुवर्चना, सुवर्च्चना—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुवर्च्चला'।

सुवर्चल, सुवर्च्चल—सज्ञा पु० [सं०] १ एक प्राचीन देश का नाम। २. काला नमक। सौवर्चल लवण। ३ शिव (को०)।

सुवर्चला, सुवर्च्चला—सज्ञा [स०] १ सूर्य की पत्नी का नाम। २ परमेष्ठी की पत्नी और प्रतीह की माता का नाम। ३ ब्राह्मी। ४ तीसी। अतसी। ५. हुरहुर। आदित्यभक्ता। ६ सूर्यमुखी नाम का फूल (को०)।

सुवर्चस, सुवर्च्चस—सज्ञा पुं० [स०] १ शिव का एक नाम। २ वह जो अत्यत दीप्तियुक्त हो (को०)।

सुवर्चसी, सुवर्च्चसी—सज्ञा पु० [स० सुवर्च्चसिन्] १ शिव का एक नाम। २ स्वर्जिकाक्षार। सज्जी (को०)।

सुवर्चस्क सुवर्च्चस्क—वि० [सं०] दीप्तियुक्त। चमकता हुआ। कातियुक्त (को०)।

सुवर्चा, सुवर्च्चा[1]—सज्ञा पु० [स० सुवर्च्चस्] १ गरुड के एक पुत्र का नाम। २ स्कद के एक पारिषद नाम। ३ दसवें मनु के एक पुत्र का नाम। ४ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सुवर्चा, सुवर्च्चा[2]—वि० तेजस्वी। शक्तिवान्।

सुवर्चिक, सुवर्च्चिक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सुवर्च्चक'।

सुवर्चिका, सुवर्च्चिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सज्जी। स्वर्जिकाक्षार। २ पहाडी लता। जतुका।

सुवर्ची, सुवर्च्ची—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सुवर्च्चक'।

सुवर्जिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] पहाडी लता। जतुका।

सुवर्ण[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ सोना। स्वर्ण। २ धन। सपत्ति। दौलत। ३ प्राचीन काल की एक प्रकार की स्वर्णमुद्रा जो दस माशे की होती थी। ४ सोलह माशे का एक मान। ५ स्वर्णगैरिक। ६ हरिचदन। ७ नागकेशर। ८ हलदी। हरिद्रा। ९ धतूरा। १० कणगुग्गुल। ११ पीला। धतूरा। १२ पीली सरसो। गौर सर्षप। १३ एक प्रकार का यज्ञ। १४ एक वृत्त का नाम। १५ एक देवगधर्व का नाम। १६ दशरथ के एक मत्री का नाम। १७ अतरीक्ष के एक पुत्र का नाम। १८ एक मुनि का नाम। १९ उत्तम जाति या अच्छा वर्ण (को०)। २० सुवर्णालु कद (को०)। २१ स्वर का शुद्ध उच्चारण (को०)। २२ एक तीर्थ (को०)। २३ उत्तम वर्ण। अच्छा रग (को०)।

सुवर्ण[2]—वि० १ सुदर वर्ण या रग का। उज्वल। चमकीला (को०)। २ सोने के रग का। स्वर्णिम। पीला। ३ उत्तम वश या अच्छी जाति का (को०)। ४ ख्यात। प्रसिद्ध (को०)।

सुवर्णक[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ सोना। २ सोने की एक प्राचीन तौल जो सोलह माशे की होती थी। सुवर्णकर्ष। ३ पीतल जो देखने मे सोने के समान होता है। ४ अमलतास। आरग्वध वृक्ष। ५ सुवर्णक्षीरी। ६ सीसा धातु (को०)।

सुवर्णक[2]—वि० १ सोने का। २ सुदर वर्ण या रग का।

सुवर्णकदली—सज्ञा स्त्री० [स०] चपा केला। चपक रभा।

सुवर्णकमल—सज्ञा पु० [सं०] लाल कमल। रक्तकमल।

सुवर्णकरणी—सज्ञा स्त्री० [स० सुवर्ण + करण] एक प्रकार की जडी। इसका गुण यह बताया जाता है कि यह रोगजनित विवर्णता को दूर कर सुवर्ण अर्थात् सुदर कर देती है।

सुवर्णकरनी—पज्ञा स्त्री० [स० सुवर्ण + हिं० करनी] दे० 'सुवर्ण करणी'। उ०—दक्षिण शिखर द्रोणगिरि माही। औषधि चारिहु अहै तहाँ ही। एक विशल्पकरनी सुखदाई। एक सुवर्णकरनी भनाई। एक सजीवनकरनी जोई। एक सधानकरन मुदमोई।—रघुराज (शब्द०)।

सुवर्णकर्ता—सज्ञा पुं० [स० सुवर्णकर्त्तृ] सोने के गहने बनानेवाला। सुनार। स्वर्णकार।

सुवर्णकर्ष—सज्ञा [सं०] सोने की एक प्राचीन तौल जो सोलह माशे की होती थी।

सुवर्णकार—सज्ञा पुं० [सं०] सोने के गहने बनानेवाला, सुनार।

सुवर्णकृत्—सज्ञा पुं० [सं०] सुवर्णकार। सुनार (को०)।

सुवर्णकेतकी—सज्ञा स्त्री० [सं०] लाल केतकी। रक्त केतकी।

सुवर्णकेश—सज्ञा पुं० [सं०] बौद्धो के अनुसार एक नागासुर का नाम।

सुवर्णक्षीरिणी—सज्ञा स्त्री० [सं०] कटेरी। सत्यानासी। कटुपर्णी। स्वर्णक्षीरी।

सुवर्णक्षीरी—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुवर्णक्षीरिणी' (को०)।

सुवर्णगणित—सज्ञा पु० [सं०] बीजगणित का वह अग जिसके अनुसार सोने की तौल आदि मानी जाती है और उसका हिसाब लगाया जाता है।

सुवर्णगर्भ[1]—सज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

सुवर्णगर्भ[2]—वि० जिसमे स्वर्ण भरा हो।

सुवर्णगर्भा—वि० [सं०] जहाँ सोने की खाने हो (भूमि)।

सुवर्णगिरि—सज्ञा पुं० [सं०] १ राजगृह के एक पर्वत का नाम। अशोक की एक राजधानी जो किसी के मत से पश्चिमी घाट मे थी।

सुवर्णगैरिक—सज्ञा पुं० [सं०] लाल गेरु।
पर्या०—स्वर्णधातु। सुरक्तक। सधभ्र। वभ्रधातु। शिलाधातु।

सुवर्णगोत्र—सज्ञा पुं० [सं०] बौद्धो के अनुसार एक प्राचीन राज्य का नाम।

सुवर्णघ्न—सज्ञा पुं० [स०] राँगा। वग।

सुवर्णचपक—सज्ञा पुं० [सं० सुवर्णचम्पक] पीत चपा (को०)।

सुवर्णचक्रवर्ती—सज्ञा पुं० [सं० सुवर्णचक्रवर्तिन] नृपति। राजा।

सुवर्णचूड—सज्ञा पुं० [सं० सुवर्णचूड] १ गरुड के एक पुत्र का नाम। २ एक प्रकार का पक्षी।

सुवर्णचूल—सज्ञा पुं० [सं० सुवर्णचूड] दे० 'सुवर्णचूड'।

सुवर्णचौरिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] सोना चुराना। सोने की चोरी। स्वर्ण की तस्करता (को०)।

सुवर्णजीविक—सज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल की एक वर्णसकर जाति जो सोने का व्यापार करती थी।

सुवर्णज्योति—वि० [स० सुवर्णज्योतिस्] स्वर्णिम कातिवाला। सुनहली चमकवाला (को०)।

सुवर्णता—सज्ञा स्त्री० [सं०] सुवर्ण का भाव या धर्म। सुवर्णत्व।

सुवर्णतिलका—सज्ञा स्त्री० [सं०] मालकगनी। ज्योतिष्मती लता।

सुवर्णत्व—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुवर्णता'।

सुवर्णदुग्धी—सज्ञा स्त्री० [सं०] कटेरी। भटकटैया। स्वर्णक्षीरिणी।

सुवर्णद्वीप—सज्ञा पुं० [स०] सुमात्रा टापू का प्राचीन नाम।

सुवर्णधेनु—सज्ञा स्त्री० [सं०] दान देने के लिये सोने की बनाई हुई गौ।

सुवर्णनकुली—सज्ञा स्त्री० [सं०] बडी मालकंगनी। महाज्योतिष्मती लता।

सुवर्णपक्ष[1]—सज्ञा पुं० [स०] गरुड।

सुवर्णपक्ष[2]—वि० सोने के पखोवाला। जिसके पर सोने के हो।

सुवर्णपत्र—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पक्षी।

सुवर्णपद्म—सज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल। रक्त कमल।

सुवर्णपद्मा—सज्ञा स्त्री० [स०] स्वर्गगगा।

सुवर्णपर्ण—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सुवर्णपक्ष'

सुवर्णपार्श्व—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन जनपद का नाम।

सुवर्णपालिका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का सोने का बना हुआ पात्र।

सुवर्णपिजर—वि० [सं० सुवर्णपिञ्जर] सोने के समान पीला। स्वर्णाभ [को०]।

सुवर्णपुष्प—सज्ञा पु० [स०] १ बडी सेवती। राजतरुणी। २ अम्लान पुष्प (को०)।

सुवर्णपुष्पित—सज्ञा पु० [स०] १ स्वर्ण से परिपूर्ण। सोने से भरपूर। २ दीप्त। तेजोमय [को०]।

सुवर्णपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा [को०]।

सुवर्णपृष्ठ—वि० [स०] जो सोने के पत्तर से मडित हो। स्वर्णमडित। जिसपर सोना चढा हो [को०]।

सुवर्णप्रतिमा—सज्ञा स्त्री० [स०] सोने की मूर्ति।

सुवर्णप्रभास—सज्ञा पुं० [सं०] बौद्धो के अनुसार एक यक्ष का नाम।

सुवर्णप्रसर—सज्ञा पु० [सं०] एलुआ। एलवालुक।

सुवर्णप्रसव—सज्ञा पुं० [सं०] एलुआ। एलवालुक।

सुवर्णफला—सज्ञा स्त्री० [स०] चपा केला। सुवर्ण कदली।

सुवर्णबिंदु—सज्ञा पुं० [सं० स्वर्णबिन्दु] १ विष्णु का नाम। २ शिव का एक नाम (को०)।

सुवर्णभाड, सुवर्णभाडक—सज्ञा पुं० [स० सुवर्णभाण्ड, सुवर्णभाण्डक] सोना या रत्न रखने की पेटी।

सुवर्णभू सज्ञा पुं० [स०] ईशान कोण मे स्थित एक देश का नाम।

विशेष—बृहत्सहिता के अनुसार सुवर्णभू, वसुधन, दिविष्ट, पौरव आदि देश रेवती, अश्विनी और भरणी नक्षत्रो मे अवस्थित है।

सुवर्णभूमि—सज्ञा पु० [स०] १ सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) का एक नाम। २ स्वर्ण से भरी भूमि।

सुवर्णमाक्षिक—सज्ञा पुं० [स०] सोनामक्खी। स्वर्णमाक्षिक।

सुवर्णमाषक—सज्ञा पु० [सं०] बारह धान का एक मान जिसका व्यवहार प्राचीन मे काल मे होता था।

सुवर्णमित्र—सज्ञा पु० [स०] सुहागा, जिसकी सहायता से सोना जल्दी गल जाता है।

सुवर्णमुखरी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नदी का नाम।

सुवर्णमेखली—सज्ञा स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम।

सुवर्णमोचा—सज्ञा स्त्री० [स०] सुवर्ण कदली। चपा केला [को०]।

सुवर्णयूथिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] सोनजुही। पीली जुही। पीतयूथिका।

सुवर्णयूथी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुवर्णयूथिका' [को०]।

सुवर्णरभा—सज्ञा स्त्री० [स० सुवर्णरम्भा] चपा केला। सुवर्ण कदली।

सुवर्णरूप्यक—सज्ञा पु० [स०] सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) का एक प्राचीन नाम। २ वह भूमि या स्थान जहाँ सोने चाँदी की बहुलता हो (को०)।

सुवर्णरेख—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दे० 'स्वर्णरेखा'। २ बिहार प्रदेश की एक नदी का नाम।

विशेष—यह नदी बिहार के राँची जिले से निकलकर मानभूम, सिंहभूम और उडीसा होती हुई बगाल की खाडी मे गिरती है। इसकी कई शाखाएँ है।

सुवर्णरेतस—सज्ञा पु० [स०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

सुवर्णरेता—सज्ञा पु० [स० सुवर्णरेतस्] शिव का एक नाम।

सुवर्णरोमा[1]—सज्ञा पु० [स० सुवर्णरोमन्] १ भेड। मेष। २ महारोम के एक पुत्र का नाम।

सुवर्णरोमा[2]—वि० सुनहरे रोएँ या बालोवाला।

सुवर्णलता—सज्ञा स्त्री० [स०] मालकगनी। ज्योतिष्मती लता।

सुवर्णवणिक्—सज्ञा पु० [सं०] बगाल की एक वणिक जाति।

विशेष—हिंदू राजत्वकाल मे इस जाति के लोग सोने का कारबार करते थे और अब भी बहुतेरे करते है। यह जाति निम्न और पतित समझी जाती है। ब्राह्मण और कायस्थ इनके यहाँ का जल नही ग्रहण करते। बगाल मे इन्हे 'सोनारबेणे' कहते हैं।

सुवर्णवान्—वि० [सं० सुवर्णवत्] [वि० स्त्री० सुवर्णवती] १ स्वर्णिम। स्वर्णनिर्मित। सोने का। २ सोने की तरह कातियुक्त। सौदर्ययुक्त। शोभायुक्त [को०]।

सुवर्णवर्ण[1]—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का एक नाम।

सुवर्णवर्ण[2]—वि० सोने के रग का। सुनहरा।

सुवर्णवर्णा—सज्ञा स्त्री० [स०] हलदी। हरिद्रा।

सुवर्णवृषभ—सज्ञा पु० [स०] स्वर्णनिर्मित वृषभ। सोने का बना हुआ बैल [को०]।

सुवर्णशिलेश्वर—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सुवर्णश्री—सज्ञा स्त्री० [सं०] आसाम की एक नदी जो ब्रह्मपुत्र की मुख्य शाखा है।

सुवर्णष्ठीवी—सज्ञा पु० [स० सुवर्णष्ठीविन्] महाभारत के अनुसार सजय के एक पुत्र का नाम।

सुवर्णसज्ञ—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'सुवर्णकर्पर'।

सुवर्णसिंदूर—सज्ञा पुं० [स० सुवर्णसिन्दूर] दे० 'स्वर्णसिंदूर'।

सुवर्णसिद्ध -सज्ञा पुं० [स०] वह जो इद्रजाल या जादू के बल से सोना बना या प्राप्त कर सकता है।

सुवर्णसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का तार। सोने की जंजीर या सिकड़ी (को०)।

सुवर्णस्तेय—संज्ञा पुं० [सं०] सोने की चोरी।

विशेष—मनु के अनुसार सोने की चोरी पाँच महापातकों में से एक है।

सुवर्णलोपी—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णलोपिन्] सोना चुरानेवाला जो मनु के अनुसार महापातकी होता है।

सुवर्णस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन जनपद का नाम। २ सुमात्रा द्वीप का एक प्राचीन नाम।

सुवर्णहलि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वृक्ष।

सुवर्णा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक का नाम। २ इक्ष्वाकु की पुत्री और सुहोत्र की पत्नी का नाम। ३ हलदी। हरिद्रा। ४ काला अगर। कृष्णागुरु। ५ खिरैटी। बरियारा। बला। ६ कटेरी। सत्यानासी। स्वर्णक्षीरी। ७ इंद्रायन। इंद्रवारुणी। ८ कटुतुंबी। तितलौकी (को०)।

सुवर्णा[2]—वि० स्त्री० सुंदर वर्णवाली। दे० 'सुवर्ण'[2]।

सुवर्णाकर—संज्ञा पुं० [सं०] सोने की खान जिससे सोना निकलता है।

सुवर्णाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

सुवर्णाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ नागकेसर। २ धतूरा। धुस्तूर। ३ एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सुवर्णाभ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शंखपद के एक पुत्र का नाम। २ रेवती। राजावर्तमणि।

सुवर्णाभ[2]—वि० सुनहला। स्वर्णिम। दीप्त (को०)।

सुवर्णाभिषेक—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का टुकड़ा डालकर वरवधू के ऊपर जल छिड़कने की क्रिया (को०)।

सुवर्णार—संज्ञा पुं० [सं०] कचनार। रक्तकांचन वृक्ष।

सुवर्णालु—संज्ञा पुं० [सं०] एक कंद का नाम (को०)।

सुवर्णाविभासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक गंधर्वी का नाम।

सुवर्णाह्व—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीली जूही। सोनजूही। स्वर्णयूथिका।

सुवर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीली जीवंती। स्वर्णजीवंती।

सुवर्णिम—वि० [सं०] दे० 'स्वर्णिम' (को०)।

सुवर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूसाकानी। आखुपर्णी।

सुवर्तित—वि० [सं०] १ अच्छी तरह गोलाकार घुमाया हुआ। २ जो सुव्यवस्थित हो (को०)।

सुवर्तुल[1]—संज्ञा [सं०] तरबूज।

सुवर्तुल[2]—वि० पूर्णतः गोलाकार (को०)।

सुवर्मा[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्मन्] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सुवर्मा[2]—वि० उत्तम कवच से युक्त। जिसके पास उत्तम कवच हो।

सुवर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २ एक बौद्ध आचार्य का नाम।

सुवर्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मोतिया। मल्लिका का पुष्प। २ अच्छी बरसात (को०)।

सुवल्लरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुत्रदात्री लता।

सुवल्लि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुवल्लिका'।

सुवल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जतुका नाम की लता। २ सोमराजी।

सुवल्लिज—संज्ञा पुं० [सं०] १ मूँगा। प्रवाल। २ जमीकंद (को०)।

सुवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बकुची। सोमराजी। २ कुटकी। कटुकी। ३ पुत्रदात्री लता।

सुवश्य—वि० [सं०] सुगमता से वश में करने योग्य (को०)।

सुवसंत—संज्ञा पुं० [सं० सुवसन्त] १ चैत्र पूर्णिमा। चैत्रावली। २ मदनोत्सव जो चैत्र पूर्णिमा को होता था। ३ सुंदर वसंत-ऋतु (को०)।

सुवसंतक—संज्ञा पुं० [सं० सुवसन्तक] १ मदनोत्सव जो प्राचीन काल में चैत्र पूर्णिमा को होता था। २ बासंती। नेवारी।

सुवसंता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माधवीलता। २ चमेली। जातीपुष्प।

सुवस(पु)—वि० [सं० स्व + वश] जो अपने वश या अधिकार में हो। उ०—वरुण कुबेर अग्नि यम मारुत सुवस किये क्षण मार्यं। —सूर (शब्द०)।

सुवस्त्रा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक नदी का नाम। २ सुंदर वस्त्रोंवाली महिला।

सुवह[1]—वि० [सं०] १ सहज में वहन करने या उठाने योग्य। जो सहज में उठाया जा सके। २ धैर्यवान्। धीर। ३ अच्छी तरह उठाने या वहन करनेवाला (को०)।

सुवह[2]—संज्ञा पुं० एक प्रकार की वायु।

सुवहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वीणा। बीन। २ शेफालिका। ३, रासन। रास्ना। ४ सँभालू। नील सिंधुवार। ५ रुद्रजटा। ६ हंसपदी। ७ मूसली। तालमूली। ८ सलई। शल्लकी। ९ गंधनाकुली। नकुलकंद। १० निसोथ। त्रिवृत्ता।

सुवाँग—संज्ञा पुं० [सं० सु + अङ्ग या स्व + अङ्ग] दे० 'स्वाँग'।

सुवाँगी—संज्ञा पुं० [हिं० सुवाग] दे० 'स्वाँगी'।

सुवा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शुक, प्रा० सुअ] दे० 'सुआ'। उ०—सुवा चलि ता वन को रस पीजै। जा वन राम नाम अमृतरस श्रवणपात्र भरि लीजै।—सूर (शब्द०)।

सुवाक्य[1]—वि० [सं०] सुंदर वचन बोलनेवाला। मिष्ठभाषी। मधुरभाषी। सुवाग्मी।

सुवाक्य[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुंदर वचन (को०)।

सुवाग्मी—वि० [सं० सुवाग्मिन्] बहुत सुंदर बोलनेवाला। व्याख्यानपटु। सुवक्ता।

सुवाच्य—वि० [सं०] सरलता से पढ़ा जाने योग्य।

सुवाजी—वि० [सं० सुवाजिन्] सुंदर पंखों से युक्त (तीर)।

सुवादिक—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम वाद्य। अच्छा बाजा (को०)।

सुवाना(पु)—क्रि० स० [सं० शयन] दे० 'सुलाना'। उ०—पांडव न्योते अधसुत घर के बीच सुवाय। अर्ध रात्रि चहुँ ओर ते दीनी आग लगाय।—लल्लूलाल (शब्द०)।

सुवामा—संज्ञा स्त्री० [स०] वर्तमान रामगंगा नदी का प्राचीन नाम।

सुवार(उ)[1]—संज्ञा पु० [स० सूपकार] रसोइया। भोजन बनानेवाला। पाचक। उ०—पुनु नृप नाम जयत हमारा। राज युधिष्ठिर केर सुवारा।—सबलसिंह (शब्द०)।

सुवार(उ)†[2]—संज्ञा पु० [स० सु+वार] उत्तम वार। अच्छा दिन। उ०—अगाढ की अँधियारी अष्टमी मगलवार सुवारी रामा।—हिंदी प्रदीप (शब्द०)।

सुवार्ता—संज्ञा स्त्री० [स०] १. श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम। २ सुदर वार्ता या बातचीत (को०)। ३. शुभ सूचना या समाचार (को०)।

सुवाल(उ)†[1]—संज्ञा पु० [फा० सवाल] दे० 'सवाल'।

सुवाल[2]—वि० जिसकी पूँछ बाल से युक्त हो। जैसे,—हाथी।

सुवालुका—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की लता।

सुवास[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ सुगध। अच्छी महक। खुशबू। २ उत्तम निवास। सुदर घर। ३ शिव जी का एक नाम। ४ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे न, ज, ल (।।।, ।ऽ।, ।) होना है।

सुवास[2]—वि० [स० सुवासस्] [वि० स्त्री० सुवासा] सुदर वस्त्रो से युक्त।

सुवास[1]—संज्ञा पुं० [स० श्वास] श्वास। साँस। (डिं०)।

सुवासक—संज्ञा पु० [स०] तरबूज।

सुवासन—संज्ञा पुं० [स०] दसवें मनु के एक पुत्र का नाम।

सुवासरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हालो नाम का पौधा। चसुर। चद्रशूर।

सुवासिका—वि० स्त्री० [स० सुवासिक] सुवास करनेवाली। सुगध करनेवाली। उ०—केशव सुगध श्वास सिद्धनि के गुहा किधौं परम प्रसिद्ध शुभ शोभत सुवासिका।—केशव (शब्द०)।

सुवासित—वि० [स०] सुवासयुक्त। सुगधयुक्त। खुशबूदार।

सुवासिनी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ युवावस्था मे भी पिता के यहाँ रहनेवाली स्त्री। चिरटी। २ सधवा स्त्री। ३ सधवा स्त्री के लिये प्रयुक्त आदरार्थक शब्द (को०)।

सुवासी—वि० [सं० सुवासिन्] उत्तम या भव्य भवन मे रहनेवाला।

सुवास्तु[1]—संज्ञा स्त्री० [स०] एक नदी का नाम जिसे स्वात कहते हैं और जो प्राचीन भारत के उत्तरपश्चिमी सरहदी प्रदेश मे बहती है।

सुवास्तु[2]—संज्ञा पु० १ सुवास्तु नदी के निकटवर्ती देश का नाम। २ इस देश के रहनेवाले।

सुवास्तुक—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम।

सुवाह[1]—संज्ञा पु० [स०] १ स्कद के एक पारिषद का नाम। २. अच्छा घोडा।

सुवाह[2]—वि० १ सहज मे उठाने योग्य। २ सुदर घोडोवाला।

सुवाहन—संज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन मुनि का नाम।

सुविक्रम[1]—स० पुं० [स०] १ वत्सप्री के एक पुत्र का नाम। २. प्रबल शक्ति अथवा पराक्रम (को०)।

सुविक्रम[2]—वि० १ अत्यत साहसी, शक्तिशाली या वीर। २ सुदर चाल। विशिष्ट गतिवाला (को०)।

सुविक्रात[1]—वि० [स० सुविक्रान्त] अत्यत विक्रमशाली। अतिशय पराक्रमी। अत्यत साहसी या वीर।

सुविक्रात[2]—संज्ञा पु० १ शूर। वीर। बहादुर। २ वीरता। बहादुरी।

सुविक्लव—वि० [स०] १ अतिशय विह्वल। बहुत बेचैन। २ डरपोक। भीरु। कायर (को०)।

सुविख्यात—वि० [स०] बहुत प्रसिद्ध। सुप्रसिद्ध। बहुत मशहूर।

सुविगुण—वि० [स०] १ जिसमे कोई गुण या योग्यता न हो। गुणहीन। योग्यतारहित। २. अत्यत दुष्ट। नीच। पाजी।

सुविग्रह—वि० [स०] सुदर शरीर या रूपवाला। सुदेह। सुरूप।

सुविचक्षण—वि० [स०] कुशाग्रबुद्धि। अत्यत विद्वान् (को०)।

सुविचार—संज्ञा पु० [स०] १ सूक्ष्म या उत्तम विचार। २ अच्छा फैसला। सुदर न्याय। ३ रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

सुविचारित—वि० [स०] सूक्ष्म या उत्तम रूप से विचार किया हुआ। अच्छी तरह सोचा हुआ।

सुविचित—वि० [स०] १ पूर्णत अन्वेषित। अच्छी तरह खोजा हुआ। २ जिसका अच्छी तरह परीक्षण किया गया हो (को०)।

सुविज्ञ—वि० [स०] अतिशय विज्ञ या या बुद्धिमान्। बहुत चतुर।

सुविज्ञान—वि० [स०] १ जो सहज मे जाना जा सके। २ विवेकी। विवेकशील (को०)। ३ अतिशय चतुर या बुद्धिमान्।

सुविज्ञापक—वि० [स०] जो आसानी से समझाया या सिखाया जा सके (को०)।

सुविज्ञेय[1]—वि० [सं०] जो सहज मे जाना जा सके। सहज मे जानने समझने योग्य।

सुविज्ञेय[2]—संज्ञा पुं० शिव जी का एक नाम।

सुवित[1]—वि० [स०] १ सहज मे पहुँचने योग्य। सहज मे पाने योग्य। २ उन्नतिशील (को०)।

सुवित[2]—संज्ञा पु० १ अच्छा मार्ग। सुमार्ग। सुपथ। २ कल्याण। शुभ। ३ सौभाग्य।

सुवितत—वि० [सं०] अच्छी तरह फैला हुआ। सुविस्तृत।

सुवितल—संज्ञा पुं० [स०] विष्णु की एक प्रकार की मूर्ति।

सुवित्त[1]—वि० [स०] बहुत धनी। बडा अमीर।

सुवित्त[2]—संज्ञा पु० अत्यत समृद्धि या ऐश्वर्य (को०)।

सुवित्ति—संज्ञा पुं० [सं०] एक देवता का नाम।

सुविद्—संज्ञा पुं० [स०] पडित। विद्वान्।

सुविद—संज्ञा पु० [स०] १ अत पुर या रनिवास का रक्षक। सौविद्। कचुकी। २ एक राजा का नाम। ३ तिलक। तिलकपुष्प या उसका वृक्ष।

**सुविदग्ध**—वि० [सं०] [वि० सुविदग्धा] बहुत चतुर। बहुत चालाक।

**सुविदत्**—संज्ञा पु० [स०] राजा।

**सुविदत्र**—वि० [स०] १ अतिशय सावधान। २ सहृदय। ३ उदार। दयालु।

**सुविदत्र**—संज्ञा पु० १ कृपा। दया। २ धन। संपत्ति। ४ कुटुंब। ४ ज्ञान।

**सुविदन्**—संज्ञा पु० [स०] दे० 'सुविदत्त'।

**सुविदर्भ**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जाति का नाम।

**सुविदला**—संज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसका ब्याह हो गया हो। विवाहिता स्त्री।

**सुविदल्ल**—संज्ञा पुं० [स०] १ अंत पुर। जनानखाना। जनाना महल। २ सौविदल्ल का असाधु प्रयोग। अंत पुर का रक्षक [को०]।

**सुविदल्ला**—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुविदला' [को०]।

**सुविदा**—संज्ञा स्त्री० [स०] बुद्धिमती स्त्री। गुणवती नारी [को०]।

**सुविदित**—वि० [सं०] भली भाँति विदित। अच्छी तरह जाना हुआ।

**सुविद्य**—वि० [स०] उत्तम विद्वान्। अच्छा पंडित।

**सुविद्युत्**—संज्ञा पु० [स०] एक असुर का नाम।

**सुविध**—वि० [स०] १ अच्छे स्वभाव का। सुशील। नेकमिजाज। २ उत्तम प्रकार का। अच्छी किस्म का (को०)।

**सुविधा**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुभीता] दे० 'सुभीता'।

**सुविधान**[1]—संज्ञा पुं० [स०] सुंदर विधान या उत्तम व्यवस्था। सुप्रबंध [को०]।

**सुविधान**[2]—वि० जो सुंदर व्यवस्थायुक्त हो।

**सुविधि**[1]—संज्ञा [स०] जैनियों के अनुसार वर्तमान अवसर्पिणी के नवें अर्हत् का नाम।

**सुविधि**[2]—संज्ञा स्त्री० सुंदर विधि या विधान। अच्छा नियम [को०]।

**सुविनय**—वि० [सं०] अनुशासित या सुशिक्षित [को०]।

**सुविनीत**—वि० [सं०] १ अतिशय नम्र। २ अच्छी तरह सिखाया हुआ। सुशिक्षित (जैसे घोड़ा या और कोई पशु)।

**सुविनीता**—वि० [स०] वह गौ जो सहज में दूही जा सके।

**सुविनेय**—वि० [स०] सरलतापूर्वक शिक्षित होने योग्य [को०]।

**सुविपिन**—संज्ञा पु० [स०] अच्छा जंगल। घना जंगल [को०]।

**सुविभीषण**—वि० [सं०] अत्यंत भयंकर [को०]।

**सुविभु**—संज्ञा पुं० [स०] एक राजा का नाम जो विभु का पुत्र था।

**सुविरज**—वि० [सं०] वासनाओं से सम्यक् मुक्त [को०]।

**सुविविक्त**—वि० [स०] १ अकेला। जो बिल्कुल अलग हो। २ अत्यंत निर्जन या एकांत। ३ अलग अलग किया हुआ। निर्णीत [को०]।

**सुविशाल**—वि० [स०] बहुत बड़ा [को०]।

**सुविशाला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

**सुविशुद्ध**[1]—संज्ञा पु० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक लोक का नाम।

**सुविशुद्ध**[2]—वि० अत्यंत शुद्ध। पूर्णतः मार्जित या स्वच्छ [को०]।

**सुविषाण**—वि० [स०] जिसके विषाण बड़े बड़े हों। बड़े दाँतोंवाला।

**सुविष्टंभी**[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुविष्टम्भिन्] शिव का एक नाम।

**सुविष्टंभी**[2]—वि० १ सहारा देनेवाला। सम्यक् रूप से पालन या वहन करनेवाला। २ विष्टंभ से युक्त [को०]।

**सुविस्तार**[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ अत्यधिक विस्तार या फैलाव। २ आधिक्य। प्रचुरता [को०]।

**सुविस्तर**[2]—वि० १ अत्यंत विस्तृत या विशाल। २ अत्यधिक। प्रचुरतम। ३ अतीव उग्र। तीव्रतम।

**सुविस्मय**—वि० [सं०] अत्यंत विस्मययुक्त या चकित [को०]।

**सुविस्मित**—वि० [सं०] १ आश्चर्य पैदा करनेवाला। कौतूहलजनक। २ दे० 'सुविस्मय' [को०]।

**सुविहित**—वि० [सं०] १ अच्छी तरह रखा हुआ या स्थापित। सम्यक् न्यस्त। २ जिसे अच्छी तरह क्रमयुक्त या व्यवस्थित किया गया हो। ३ अच्छी तरह किया हुआ। सम्यक् कृत या संपन्न। ४ अच्छी तरह तुष्ट या तृप्त किया हुआ। अच्छी तरह तृप्त या संतुष्ट [को०]।

**सुवीज**—संज्ञा पुं० वि० [सं०] दे० 'सुबीज'।

**सुवीथीपथ**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रासाद में जानेवाली विशिष्ट पद्धति या राह [को०]।

**सुवीर**[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ स्कंद का एक नाम। २ शिव जी का एक नाम। ३ शिव जी के एक पुत्र का नाम। ४ द्युतिमान् के एक पुत्र का नाम। ५ देवश्रवा के एक पुत्र का नाम। ६ क्षेम्य के एक पुत्र का नाम। ७ एकवीर नामक वृक्ष। १० बेर का पेड़ (को०)। ११ छाछ की खड़ी (डि०)।

**सुवीर**[2]—वि० १ अतिशय वीर। महान् योद्धा। २ जिसे अनेक पुत्र हों (को०)। ३ अनेक वीरों से युक्त (को०)।

**सुवीरक**—संज्ञा पु० [स०] १ बेर। बदरी। २ एकवीर नामक वृक्ष। २ एक प्रकार का सुरमा। ४ काजिक। कांजी (को०)।

**सुवीरज**—संज्ञा पुं० [स०] सुरमा। सौवीरांजन।

**सुवीराम्ल**—संज्ञा पुं० [सं०] कांजी। काजिक।

**सुवीर्य**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] बेर। बदरी फल।

**सुवीर्य**[2]—वि० महान् शक्तिशाली। बहुत बड़ा बहादुर।

**सुवीर्या**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ वनकपास। वनकार्पासी। २ बड़ी शतावरी। महाशतावरी। ३ कलपत्ती हींग। डिकामाली। नाड़ी हींग।

**सुवृत्त**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूरन। जमीकंद। ओल। २ सत् चरित्र। सत् वृत्त या व्यवहार (को०)।

**सुवृत्त**[2]—वि० १ सच्चरित्र। २ गुणवान्। ३ साधु। ४ सुंदर गोलाकार। वर्तुलाकार (को०)। ५ सुंदर छंदोबद्ध (काव्य०)।

**सुवृत्ता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक अप्सरा का नाम। २ किशमिश। काकोली द्राक्षा। ३ सेवती। शतपत्री। ४ एक वृत्त का नाम

जिसके प्रत्येक चरण मे १६ अक्षर होते हैं, जिनमे १, ७, ८, ६, १०, ११, १४ और १७ वाँ अक्षर गुरु तथा अन्य अक्षर लघु होते हैं।

**सुवृत्ति[1]**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ उत्तम वृत्ति। उत्तम जीविका। २ सदाचार। पवित्र जीवन। पवित्रता का जीवन (को०)। ३ ब्रह्मचर्य (को०)। ४ सद् व्यवहार या वृत्ति (को०)।

**सुवृत्ति[2]**—वि० १ जिसकी वृत्ति या जीविका उत्तम हो। २ सदाचारी। सच्चरित्र।

**सुवृद्ध[1]**—सज्ञा पुं० [स०] दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम।

**सुवृद्ध[2]**—वि० १ बहुत वृद्ध। २ बहुत प्राचीन।

**सुवेग**—वि० [स०] अत्यत वेगवान्। तीव्र गतिवाला।

**सुवेगा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मालकगनी। महाज्योतिष्मती लता। २ एक गिद्धनी का नाम।

**सुवेणा**—सज्ञा स्त्री० [स०] हरिवश के अनुसार एक नदी का नाम जिसका महाभारत मे भी उल्लेख है।

**सुवेद**—वि० [स०] १ आध्यात्मिक ज्ञान मे पारगत। अध्यात्मशास्त्र का अच्छा ज्ञाता। २ सुखपूर्वक लभ्य। सुलभ (को०)।

**सुवेदा**—सज्ञा पुं० [स० सुवेदस्] एक वैदिक ऋषि का नाम।

**सुवेल[1]**—सज्ञा पुं० [स०] त्रिकूट पर्वत का नाम, जो रामायण के अनुसार समुद्र के किनारे लका मे था और जहाँ रामचद्र सेना सहित ठहरे थे। उ०—कौतुक ही वारिधि बँधाइ उतरे सुवेल तट जाइ। तुलसीदास गढ देखि फिरे कपि प्रभु आगमनु सुनाइ। —तुलसी (शब्द०)।

**सुवेल[2]**—वि० १ बहुत झुका हुआ। प्रणत। २ शात। नम्र।

**सुवेश[1]**—वि० [सं०] १ भली भाँति या अच्छे कपडे पहने हुए। वस्त्रादि से सुसज्जित। सुदर वेशयुक्त। २ सुदर रूपवाला। रूपवान्।

**सुवेश[2]**—सज्ञा पु० १ सफेद ईख। श्वेतेक्षु। २ सुदर वेश। भव्य वेशभूषा (को०)।

**सुवेशता**—सज्ञा स्त्री० [स०] सुवेश का भाव या धर्म।

**सुवेशी**—वि० [स० सुवेशिन्] दे० 'सुवेश'।

**सुवेष**—वि० [स०] दे० 'सुवेश'।

**सुवेषित**—वि० [स० सुवेष+इत] सुदर वेशयुक्त। दे० 'सुवेश'१। गलीचे पर एक सुवेषित यवन बैठा पान खा रहा है।—गदाधरसिंह (शब्द०)।

**सुवेषी**—वि० [स० सुवेषिन्] दे० 'सुवेश'।

**सुवेस**(पु)—वि० [स० सुवेश] दे० 'सुवेश'।

**सुवेसल**—वि० [स० सुवेश+हिं० ल (प्रत्य०)] सुदर। मनोहर। उ०—सुभग सुसम वधुर रुचिर कात काम कमनीय। रम्य सुवेसल भव्य अरु दर्शनीय रमणीय।—अनेकार्थ०। (शब्द०)।

**सुवैण**(पु)—सज्ञा पुं० [स० सु+वचन, प्रा० वयण, हिं० वैन] मित्रता। दोस्ती। (डिं०)।

**सुवैया**—वि० [हिं० सोना+ऐया (प्रत्य०)] सोनेवाला। शयन करनेवाला।

**सुवो**(पु)—सज्ञा पु० [स० शुक, प्रा० सुअ, सुव] शुक पक्षी। सुग्गा। तोता। (डिं०)।

**सुव्यक्त**—वि० [सं०] १ उत्तम रूप से व्यक्त। बहुत स्पष्ट। २. चमकदार। दीप्तियुक्त। सुप्रकाशित। ३ साफ। स्वच्छ (को०)।

**सुव्यवस्था**—सज्ञा स्त्री० [स०] उत्तम व्यवस्था उत्तम प्रबध। अच्छी योजना।

**सुव्यवस्थित**—वि० [स०] उत्तम रूप से व्यवस्थित। जिसकी व्यवस्था भली भाँति की गई हो।

**सुव्यस्त**—वि० [सं०] छितराया हुआ। इतस्तत अस्तव्यस्त। छिन्न भिन्न। तितर बितर (को०)।

**सुव्याहृत**—वि० [स०] १ अच्छी उक्ति सूक्ति। सुदर वचन। २ आधारवाक्य। सिद्धातवाक्य (को०)।

**सुव्यूहमखा**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम।

**सुव्यूहा**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुव्यूहमुखा'।

**सुव्रत[1]** सज्ञा पुं० [सं०] १ स्कद के एक अनुचर का नाम। २ एक प्रजापति का नाम। ३ रौच्य मनु के एक पुत्र का नाम। ४ उशीनर के एक पुत्र का नाम। ५ प्रियव्रत के एक पुत्र का नाम। ३ ब्रह्मचारी। ७ वर्तमान अवसर्पिणी के २०वें अर्हत् का नाम। इन्हें मुनि सुव्रत भी कहते है। ८ भावी उत्सर्पिणी के ११वें अर्हत् का नाम।

**सुव्रत[2]**—वि० १ दृढता से व्रत का पालन करनेवाला। २ धर्मनिष्ठ। ३ विनीत। नम्र (घोडा या गाय आदि पशुओ के लिये प्रयुक्त।)

**सुव्रता[1]**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गधपलाशी। कपूरकचरी। २ सहज मे दूही जानेवाली गाय। ३ गुणवती और पतिव्रता पत्नी। ४ एक अप्सरा का नाम। ५ दक्ष की पुत्री का नाम। ६ वर्तमान कल्प के १५वें अर्हत् की माता का नाम।

**सुव्रता[2]**—वि० सुदर व्रतवाली। पतिव्रता। साध्वी (को०)।

**सुशंस**—वि० [सं०] १ प्रसिद्ध। विख्यात। यशस्वी। २ प्रशसनीय। ३ शुभ शसा करनेवाला। शुभाकाक्षी (को०)।

**सुशंसी**—वि० [स० सुशासिन्] शुभ शसा करनेवाला। शुभाकाक्षी। शुभाभिलाषी।

**सुशक**—वि० [स०] सहज मे होने योग्य। सुकर। आसान।

**सुशक्त**—वि० [स०] अच्छी शक्तिवाला। शक्तिशाली। समर्थ। ताकतवर।

**सुशक्ति**—वि० [स०] दे० 'सुशक्त'।

**सुशब्द**—वि० [स०] अच्छा शब्द या ध्वनि करनेवाला। जिसकी आवाज अच्छी हो।

**सुशरण्य[1]**—सज्ञा पुं० [स०] शिव। महादेव।

**सुशरण्य[2]**—वि० [स०] शरण देनेवाला (को०)।

**सुशरीर**—वि० [स०] जिसका शरीर सुदर हो। सुडौल। सुदेह।

**सुशर्मा**[1]—सज्ञा पु० [स० सुशर्मन्] १ एक मनु के एक पुत्र का नाम। २ एक वैशालि का नाम। ३ एक काण्व का नाम। ४ निंदित ब्राह्मण। ५ विषय का इच्छुक व्यक्ति (को०)। ६ एक देव-वर्ग (को०)। ७ एक असुर (को०)।

**सुशर्मा**[2]—वि० बहुत प्रसन्न। अत्यत सुखी।

**सुशल्य**—सज्ञा पु० [स०] खैर। खदिर।

**सुशवी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ काला जीरा। कृष्णजीरक। २ करेला। कारवेल्ल। ३ काली जीरी। सूक्ष्म कृष्णजीरक। ४ करज।

**सुशात**—वि० [स० सुशान्त] १ अत्यत शात। स्थिर। उ०—बहुत काल लौ विचरे जल मे तब हरि भए सुशात। बीस प्रलय विविध नानाकर सृष्टि रची बहु भाँति।—सूर (शब्द०)। २ शात। प्रशमित (को०)।

**सुशाता**—सज्ञा स्त्री० [सं० सुशान्ता] राजा शशिध्वज की एक पत्नी का नाम।

**सुशाति**[1]—सज्ञा पुं० [स० सुशान्ति] १ तीसरे मन्वतर के इद्र का नाम। २ अजमीढ के एक पुत्र का नाम। ३ शाति के एक पुत्र का नाम।

**सुशाति**[2]—सज्ञा स्त्री० पूर्णत शाति (को०)।

**सुशाक**—सज्ञा पुं० [स०] १ अदरक। आर्द्रक। २ चौलाई का साग। तडुलीय शाक। ३ चचु। चेंच। ४ भिंडी।

**सुशाकक**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सुशाक'।

**सुशारद**—सज्ञा पु० [स०] १ शालकायन गोत्र के एक वैदिक आचार्य का नाम। २ शिव का एक नाम (को०)।

**सुशासन**—सज्ञा पुं० [स०] उत्तम शासन। अच्छी राज्यव्यवस्था।

**सुशासित**—वि० [स०] १ जिसका अच्छी तरह शासन किया गया हो। २ अच्छी तरह नियत्रित।

**सुशास्य**—वि० [स०] सहज मे शामित या नियत्रित होने योग्य।

**सुशिविका**—सज्ञा स्त्री० [स० सुशिम्विका] एक प्रकार की शिबी।

**सुशिक्षित**—वि० [स०] १ उत्तम रूप से शिक्षित। अच्छी तरह शिक्षा पाया हुआ। जिसने विशेष रूप से शिक्षा पाई हो। २ जो अच्छी तरह से सधाया हुआ हो। प्रशिक्षित। जैसे, घोडा आदि।

**सुशिख**[1]—सज्ञा [स०] अग्नि का एक नाम।

**सुशिख**[2]—वि० १ सुदर शिखावाला। २ जिसकी शिखा या लौ सुदर हो। जैसे, दीप (को०)।

**सुशिखा**—सज्ञा [स०] १ मोर की चोटी। मयूरशिखा। २ मुर्गे की कलँगी। कुक्कटकेश।

**सुशिर**[1]—वि० [स० सुशिरस्] सुदर शिरवाला। जिसका सिर सुदर हो।

**सुशिर**[2]—सज्ञा पु० [स० सुपिर] वह बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता हो। जैसे,—बशी आदि। (सगीत)। दे० 'सुपिर'।

**सुशिष्ट**[1]—वि० [स०] अच्छी तरह शासित (को०)।

**सुशिष्ट**[2]—सज्ञा पुं० विश्वसनीय अमात्य। वह मत्री जिसपर भरोसा किया जाय (को०)।

**सुशीत**[1]—सज्ञा पु० [स०] १ पीला चदन। हरिचदन। २ पाकर। ह्रस्व प्लक्षवृक्ष। ३ जलवेंत। जलवेतस। ४ शीतलता। शैत्य (को०)।

**सुशीत**[2]—वि० अत्यत शीतल। बहुत ठढा।

**सुशीतल**[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ गधतृण। २ सफेद चदन। ३ नागदमनी। नागदवन। ४ शीतलता (को०)।

**सुशीतल**[2]—वि० अत्यत शीतल। बहुत ठढा।

**सुशीतला**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ खीरा। त्रपुष। २ ककटी। कर्कटिका।

**सुशीता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सेवती। शतपत्री। २ स्थलकमल।

**सुशीम**—सज्ञा पुं०, वि० [स०] दे० 'सुषीम'।

**सुशील**[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० सुशीला] १ उत्तम शीलवाला। २ उत्तम स्वभाववाला। शीलवान्। ३ सच्चरित्र। साधु। ४ विनीत। नम्र। ५ सरल। सीधा।

**सुशील**[2]—सज्ञा पु० सुदर शील। सत्स्वभाव।

**सुशीलता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुशील का भाव। सुशीलत्व। २ सच्चरित्रता। ३ नम्रता।

**सुशीलत्व**—सज्ञा पुं० [स०] सुशील का भाव। सुशीलता।

**सुशीला**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ श्रीकृष्ण की आठ पटरानियो मे से एक का नाम। २ राधा की एक अनुचरी का नाम। ३ यम की पत्नी का नाम। ४ सुदामा की पत्नी का नाम।

**सुशीला**[2]—वि० स्त्री० दे० 'सुशील'।

**सुशीली**—वि० [सं० सुशीलिन्] दे० 'सुशील'।

**सुशीविका**—सज्ञा स्त्री० [स०] गेंठी। वाराहीकद।

**सुशृग**[1]—वि० [स०] सुदर शृगयुक्त। सदर सीगोवाला।

**सुशृग**[2]—सज्ञा पुं० शृगी ऋषि। उ०—कस्यपसुत सुविभाडकै ह्वैहै सिष्य सुशृग। ब्रह्मचरजरत वनहि मैं बनचारिन के ढग।—पद्माकर (शब्द०)।

**सुशृगार**—वि० [स० सुशृङ्गार] अच्छी तरह भूषित या सज्जित।

**सुशृत**—वि० [स०] अत्यत तप्त। बहुत गरम।

**सुशेव**—वि० [स०] प्रसन्नता से परिपूर्ण।

**सुशोण**—वि० [सं०] गहरा लाल (को०)।

**सुशोभन**—वि० [स०] १ अत्यत शोभायुक्त। दिव्य। २ जो देखने मे बहुत भला मालूम हो। बहुत सुदर। प्रियदर्शन।

**सुशोभित**—वि० [स०] उत्तम रूप से शोभित। अत्यत शोभायमान।

**सुश्रम**—सज्ञा पुं० [सं०] धर्म के एक पुत्र का नाम।

**सुश्रवा**[1]—सज्ञा पुं० [स० सुश्रवस्] १ एक प्रजापति का नाम। २ एक ऋषि का नाम। ३ नागासुर का नाम।

**सुश्रवा**[2]—वि० १ उत्तम हवि से युक्त। २ प्रसिद्ध। कीर्तिमान। ३ जो हर्षपूर्वक श्रवण करता हो। ४ दयायुक्त (को०)।

सुश्रवा[1]—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक वैदर्भी का नाम जो जयत्सेन की पत्नी थी।

सुश्राव्य—वि० [स०] जो सुनने मे अच्छा जान पडे।

सुश्री—वि० [स०] १ बहुत सुदर। शोभायुक्त। स्त्रियो के नाम के पूर्व आदरार्थ प्रयुक्त। सुशोभना स्त्री। (आधु० प्रयोग)। २ बहुत धनी। बडा अमीर।

सुश्रीक[1]—सज्ञा पुं० [स०] सलई। शल्लकी।

सुश्रीक[2]—वि० दे० 'सुश्री'।

सुश्रीका—सज्ञा स्त्री० [स०] शल्लकी वृक्ष [को०]।

सुश्रुत[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ आयुर्वेदीय चिकित्साशास्त्र के एक प्रसिद्ध आचार्य।

विशेष—इनका रचा हुआ 'सुश्रुतसहिता' नामक ग्रथ बहुत मान्य समझा जाता है। गरुड पुराण मे लिखा है कि ये विश्वामित्र के पुत्र थे और इन्होने काशी के राजा दिवोदास से, जो धन्वतरि के अवतार थे, शिक्षा पाई थी। आयुर्वेद के आचार्यो मे इनका और इनके ग्रथ का भी वही स्थान है, जो चरक और उनके ग्रथ का।

२ सुश्रुत का रचा हुआ सुश्रुत सहितानामक ग्रथ। ३. गोष्ठी श्राद्ध के अत मे ब्राह्मण से यह पूछना कि आप तृप्त हो गए न।

सुश्रुत[2]—वि० १ अच्छी तरह सुना हुआ। २ जिसे प्रसन्नतापूर्वक सुना गया हो। ३ प्रसिद्ध। मशहूर। ४ वेद मे पारगत (को०)।

सुश्रुतसहिता—सज्ञा स्त्री० [स०] आचार्य सुश्रुत का बनाया हुआ आयुर्वेद का एक प्राचीन, प्रसिद्ध और सर्वमान्य ग्रथ।

सुश्रुम—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार धर्म के एक पुत्र का नाम।

सुश्रुखा⑤—सज्ञा स्त्री० [स० शुश्रूषा] दे० 'शुश्रूषा'।

सुश्रूषा—सज्ञा स्त्री० [स० सुश्रूषा] दे० 'शुश्रूषा'।

सुश्रोणा—सज्ञा स्त्री० [स०] हरिवश के अनुसार एक नदी का नाम।

सुश्रोणि[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] एक देवी का नाम।

सुश्रोणि[2]—वि० सुदर नितववाली।

सुश्लिष्ट—वि० [स०] १. अच्छे ढग से सयोजित। सुस्पष्ट। २ दृढता से सलग्न या जुडा हुआ। सटा हुआ।

सुश्लेष—सज्ञा पुं० [स०] १ घनिष्ठ या प्रगाढ सबध। २ प्रगाढ आलिगन [को०]।

सुश्लोक—वि० [स०] १ पुण्यात्मा। पुण्यकीर्ति। २ ख्यात। सुप्रसिद्ध। मशहूर।

सुषधि—सज्ञा पु० [स० सुपन्धि] १ रामायण के अनुसार माधाता के एक पुत्र का नाम। २ पुराणानुसार प्रसुश्रुत के एक पुत्र का नाम।

सुष⑤—सज्ञा पु० [स० सुख] दे० 'सुख'।

सुषन्धा—सज्ञा पु० [स० सुषद्मन्] एक ऋषि का नाम।

सुषम[1]—वि० [स०] १ बहुत सुदर। शोभायुक्त। २ सम। समान। ३. समझ मे आने योग्य। बोधगम्य (को०)।

सुषम[2]—सज्ञा पु० शुभ वर्ष [को०]।

सुषमदुःषमा—सज्ञा स्त्री० [स०] जैन मतानुसार कालचक्र के दो आरे।

सुषमन, सुषमना⑤—सज्ञा स्त्री० [स० सुषुम्ना] दे० 'सुषुम्ना'। उ०—(क) इगला पिंगला सुषमना नारी। शून्य सहज मे वसहि मुरारी।—सूर (शब्द०)। (ख) गधनाल द्विराह एक सम राखिए। चढो सुषमना यार अभी रस चाखिए।—कबीर (शब्द०)।

सुषमनि⑤—सज्ञा स्त्री० [स० सुषुम्ना] दे० 'सुषुम्ना'। उ०—इगला पिंगला सुषमनि नारी बक नाल कै सुधि पावै।—कबीर (शब्द०)।

सुषमा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ परम शोभा। अत्यत सुदरता। २ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे दस अक्षर रहते जिनमे तीसरा, चौथा, आठवाँ और नवाँ गुरु तथा अन्य अक्षर लघु होते है। ३ एक प्रकार का पौधा। ४ जैनो के अनुसार काल का एक नाम। ५ एक देवागना (को०)।

सुषमाशाली—वि० [स० सुषमाशालिन्] जिसमे बहुत अधिक शोभा या सुदरता हो।

सुषमित—वि० [स०] शोभायुक्त। सुषमायुक्त।

सुषवी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ करेला। कारवेल्ल। २ क्षुद्रका वेल्ल। करेली। ३ जीरा। जीरक।

सुषा—सज्ञा स्त्री० [स०] काला जीरा [को०]।

सुषाढ—सज्ञा पुं० [स० सुषाढ] शिव जी का एक नाम।

सुषाना⑤[1]—क्रि० अ० [हिं० सूखना] दे० 'सुखाना'। उ०—स्यामघन सीचिए तुलसी सालि सफल सुपाति।—तुलसी (शब्द०)।

सुषाना⑤[2]—क्रि० स० शुष्क करना। सुखाना।

सुषारा⑤—वि० [हिं० सुख] [वि० स्त्री० सुषारी] दे० 'सुखारा'। उ०—रावन वश सहित सहारा। सुनत सकल जग भएउ सुपारा।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

सुषि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ छिद्र। छेद। सूराख। बिल। २ नलिका। नली (को०)।

सुषिक[1]—सज्ञा पुं० [स०] शीतलता। ठढक।

सुषिक[2]—वि० शीतल। ठढा।

सुषिक्त—वि० [स०] सुसिक्त।

सुषिमदि—सज्ञा पुं० [स०] विष्णुपुराण के अनुसार एक राजा का नाम।

सुषिम—सज्ञा पुं०, वि० [स०] दे० 'सुषीम' [को०]।

सुषिर[1]—सज्ञा पुं० [स०] १. बाँस। २ बेत। ३ अग्नि। आग। ४ चूहा। ५ सगीत मे वह यत्र जो वायु के जोर से बजता हो। ६ छेद। सूराख। ७ वायुमडल। ८ लौग। लवग। ९ काठ। लकडी। १० वशी आदि मुँह से फूँककर बजा जानेवाली बाजो मे से निकलनेवाली ध्वनि।

सुषिर[2]—वि० १ छिद्रयुक्त। छेदवाला। २ पोला। सावकाश। ३ उच्चारण मे मद या विलवित (को०)।

सुषिरच्छेद—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की वशी।

सुषिरविवर—सज्ञा पुं० [स०] बिल, विशेषकर साँप का विल।

सुषिर—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कलिका। विद्रुम लता। २. नदी।

सुषिलीका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की चिडिया।

सुषीम[1]—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का सर्प। २ चद्रकात मणि। ३ शैत्य। शीतलता (को०)।

सुषीम[2]—वि० १ शीतल। ठढा। २ मनोरम। मनोज्ञ। सुदर।

सुषुपु—वि० [स० सुषुपुस्] सोने की इच्छा करनेवाला। निद्रातुर।

सुषुप्त[1]—वि० [सं०] गहरी नीद मे सोया हुआ। घोर निद्रित।

सुषुप्त[2]—सज्ञा स्त्री० दे० 'सुषुप्ति'।

सुषुप्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ घोर निद्रा। गहरी नीद। २ अज्ञान। (वेदात)। ३ पातजलिदर्शन के अनुसार चित्त की एक वृत्ति या अनुभूति।

विशेष—कहते हैं, इस अवस्था मे जीव नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता है परतु उसे इस बात का ज्ञान नही होता कि मैंने ब्रह्म की प्राप्ति की है।

सुषुप्स—वि० [स० सुषुप्सु] सोने की इच्छा करनेवाला। निद्रातुर।

सुषुप्सा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शयन की अभिलाषा। सोने की इच्छा। २ तद्रा। ऊँघ (को०)।

सुषुप्सु—वि० [स०] दे० 'सुषुप्स'।

सुषुम्ण, सुषुम्न—सज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की सप्तरश्मियो मे से एक का नाम।

सुषुम्णा, सुषुम्ना—सज्ञा स्त्री० [स०] हठयोग और तत्र के अनुसार शरीर के अतर्गत तीन प्रधान नाडियो मे से एक।

विशेष—दस नाडियो मे इडा, पिंगला और सुषुम्ना ये तीन प्रधान नाडियाँ मानी गई हैं। कहते हैं, इडा और पिंगला नाडियो के मध्य मे सुषुम्ना है, अर्थात् नासिका के वाम भाग मे इडा, दक्षिण भाग मे पिंगला और मध्य भाग (ब्रह्मरध्र) मे सुषुम्ना नाडी स्थित है। सुषुम्ना त्रिगुणमयी और चद्र, सूर्य तथा अग्नि-स्वरूपिणी है।

२ वैद्यक के अनुसार चौदह प्रधान नाडियो मे से एक जो नाभि के मध्य मे स्थित है और जिससे अन्य सब नाडियाँ लिपटी हुई है।

सुषेण—सज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु का एक नाम। २ एक गधर्व का नाम। ३ एक यक्ष का नाम। ४ एक नागासुर का नाम। ५ दूसरे मनु के एक पुत्र का नाम। ६ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ७ शूरसेन के एक राजा का नाम। ८ परीक्षित के एक पुत्र का नाम। ९ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। १० वसुदेव के एक पुत्र का नाम। ११ विश्वगर्भ के एक पुत्र का नाम। १२. शबर के एक पुत्र का नाम। १३ एक वानर का नाम।

विशेष—रामायण आदि के अनुसार यह वरुण का पुत्र, वाली का ससुर और सुग्रीव का वैद्य था। इसने राम रावण के युद्ध मे रामचद्र की विशेष सहायता की थी।

१४ करौंदा। करमर्दक। १५ वेंत। वेतस्।

सुषेणिका—सज्ञा स्त्री० [स०] काली निसोथ। कृष्ण त्रिवृता।

सुषेणी—सज्ञा स्त्री० [स०] निसोथ। त्रिवृता।

सुषोपति—सज्ञा स्त्री० [स० सुषुप्ति] दे० 'सुषुप्ति'। उ०—सूत्रातमा प्रकाशित भोपति। तस्य अवस्था आहि सुपोपति।—विश्राम (शब्द०)।

सुषोप्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुषुप्ति'। उ०—जागृत नारी सुपोप्ति तुरिया, और गोपा मे घर छावै।—कबीर (शब्द०)।

सुषोमा—सज्ञा स्त्री० [स०] भागवत के अनुसार एक नदी का नाम।

सुष्कत—सज्ञा पु० [स० सुष्कन्त] पुराणानुसार धर्मनेत्र के एक पुत्र का नाम।

सुष्ट—सज्ञा पुं० [सं० दुष्ट का अनु०, स० शिष्ट या सुष्ठु का विलोम] अच्छा। भला। दुष्ट का उलटा; जैसे,—बादशाह अपनी सेना लेकर सुष्ट अर्थात् तृणचर पशुओ की रक्षा के निमित्त दुष्ट अर्थात् मासाहारी जीवो के नाश करने को चढता था।—शिवप्रसाद (शब्द०)।

सुष्ठु[1]—अव्य० [स०] १ अतिशय। अत्यत। २ भली भाँति। अच्छी तरह। ३. यथायोग्य। ठीक ठीक।

सुष्ठु[2]—सज्ञा पु० १ प्रशसा। तारीफ। २ सत्य।

सुष्ठुता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ मगल। कल्याण। भलाई। २ सौभाग्य। ३ सुदरता। उ०—शब्दो की अनोखी सुष्ठुता द्वारा मन को चमत्कृत करने की शक्ति है।—निवधमालादर्श (शब्द०)।

सुष्मत—सज्ञा पुं० [सं० सुष्मन्त] दे० 'सुष्कत'।

सुष्म—सज्ञा पुं० [स०] रस्सी। रज्जु।

सुष्मना—सज्ञा स्त्री० [सं० सुषुम्ना] दे० 'सुषुम्ना'। उ०—चद सूरहि चद कै मग सुष्मनागत दीश। प्राणरोधन को करै जेहि हेत सर्व ऋषीश।—केशव (शब्द०)।

सुसकट[1]—वि० [स० सुसङ्कट] १. दुर्बोध। जिसकी व्याख्या कठिन हो। २ सुयत्रित। मजबूती से बद किया हुआ [को०]।

सुसकट[2]—सज्ञा पु० १ दुष्कर कार्य। कठिन काम। २. बाधा। कठिनता।

सुसकुल—सज्ञा पुं० [स० सुसङ्कुल] महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम।

सुसक्षेप—सज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम।

सुसग[1]—सज्ञा पुं० [सं० सु+हिं० सग] उत्तम सगति। सत्सग। अच्छी सोहबत।

सुसग[2]—वि० [स० सुसङ्ग] जो अत्यत प्रिय हो। जिसके साथ बराबर सलग्न रहा जाय।

सुसगत—वि० [स० सुसङ्गत] उत्तम रूप से सगत। बहुत युक्तियुक्त। बहुत उचित।

सुसगति—सज्ञा स्त्री० [स० सु+हिं० संगत या स० सुसङ्गति] अच्छी सगत। अच्छी सोहबत। सत्सग। साधुसग।

सुसगम—सज्ञा पुं० [स० सुसङ्गम] १ उत्तम सगम या जमाव। २ उत्तम सभास्थल या मडप [को०]।

सुसंगृहीत—वि० [स० सुसङ्गृहीत] १ अच्छी तरह शासित या वशीभूत। जैसे, सुसगृहीत राष्ट्र। २ जिसका सम्यक् रूप ग्रहण किया गया हो। ३ अच्छी तरह न्यस्त या रखा हुआ। ४ जिसका सम्यक् सक्षेप किया हुआ हो [को०]।

सुसंधि—वि० [सं० सुसन्धि] अपने वचन का पक्का।

सुसधि—सज्ञा पु० [सं० सुसन्धि] दे० 'सुपधि'।

सुसगत—वि० [सं० सुसङ्गत] १ उपयुक्त। उचित। वाजिब। २ जिसे अच्छी तरह लक्ष्य पर रखा गया हो।

सुसपत्, सुसंपद्—सज्ञा स्त्री० [स० सुसम्पत्, सुसम्पद्] अतिशय सपन्नता। धनाढ्यता [को०]।

सुसपन्न—वि० [स० सुसम्पन्न] खूब धनाढ्य। सपत्तिशाली [को०]।

सुसभाव्य[1]—सज्ञा पु० [स० सुसम्भाव्य] रैवत मनु के एक पुत्र का नाम।

सुसंभाव्य[2]—वि० जो अधिक सभाव्य या होनेवाला हो [को०]।

सुसंस्कृत—वि० [स०] १. उत्तम सस्कारवाला। सभ्य। शिष्ट। २. घृत आदि के साथ सुपक्व। ३ भली प्रकार शुद्ध किया हुआ [को०]।

सुस—सज्ञा स्त्री० [स० स्वसृ] दे० 'सुसा'। उ०—परी कामवश ताकी सुस जाके मुड दश कीने हाव भाव चित्त चाव एक वद सो। दीप सुत नैन दै सुनैनन चलाय रही जानकी निहार मन रही न आनद सो।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

सुसकना—क्रि० अ० [हिं० सिसकना] दे० 'सिसकना'। उ०—(क) पालने झूलो मेरे लाल पियारे। सुसकनि की हौं बलिबलि करौं तिल तिल हठ न करहु जे दुलारे।—सूर (शब्द०)। (ख) कपि पति काम सँवार, बाली अध सुसकत परयो। तव ताही की नार रघुपति सो बिनती करे।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। (ग) अति कठोर दोउ काल से भरम्यो अति झझक्यो। जागि परयो तहँ कोउ नही जिय ही जिय सुसक्यो। —सूर (शब्द०)। (घ) घूँघट मैं सुसकै भरै साँसै ससै मुख नाह के सोहे न खोलै। —सुदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सुसकल्यो†—सज्ञा पुं० [स० शश] खरगोश। खरहा। शशा (डिं०)।

सुसका†—सज्ञा पुं० [अनु०] हुक्का। (सुनार)।

सुसज्जित—वि० [सं०] भली भाँति सजा या सजाया हुआ। भली भाँति शृगार किया हुआ। शोभायमान।

सुसताना—क्रि० अ० [फा० सुस्त+हिं० आना (प्रत्य०)] श्रम मिटाना। थकावट दूर करना। विश्राम करना। आराम करना। जैसे,—इतनी दूर से आते आते थक गए हैं, जरा सुस्ता लें, तो आगे चलें।

सुसती—सज्ञा स्त्री० [फा० सुस्ती] दे० 'सुस्ती'।

सुसत्या—सज्ञा स्त्री० [स०] कालिका पुराण के अनुसार राजा जनक की एक पत्नी का नाम।

सुसत्व—वि० [स० सुसत्त्व] १. दृढ। मजबूत। २ शूर। वीर। बहादुर [को०]।

सुसन, सुसना—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का साग। विच्छुत्रक [को०]।

सुसनी†—सज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सुसना'।

सुसबद—सज्ञा पुं० [स० सुशब्द] कीर्ति। यश। (डिं०)।

सुसभेय—वि० [स०] उत्तम सभासद्। सुसभ्य। सभाचतुर [को०]।

सुसम—वि० [सं०] १ समतल। भली प्रकार चौरस। २ सुचिक्कण। खूब चिकना। ३ आकार प्रकार मे शुद्ध। सुडौल [को०]।

सुसमय—सज्ञा पुं० [स०] वे दिन जिनमे अकाल न हो। अच्छा समय। सुकाल। सुभिक्ष।

सुसमा[1]—सज्ञा स्त्री० [स० उष्मा] अग्नि। (डिं०)।

सुसमा[2]—सज्ञा स्त्री० [सं० सुषमा] दे० 'सुषमा'।

सुसमाहित—वि० [सं०] १ अच्छे ढग से एकत्र किया हुआ। अच्छी तरह भूषित। २ अत्यत सुदर। ३ पूरी तरह भारयुक्त अथवा पूरित। ४ अत्यत एकनिष्ठ या अवहित [को०]।

सुसर—सज्ञा पु० [सं० श्वसुर] दे० 'ससुर'। उ०—वधू ने स्वर्गवासी सुसर की दोनो रानियो की समान भक्ति से वदना की। —लक्ष्मण सिंह (शब्द०)।

सुसरण—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम।

सुसरा सज्ञा पु० [सं० श्वसुर] दे० 'ससुर'। उ०—कोई कोई दुष्ट राजपूत अपनी लडकियो को मार डालते है कि जिसमे किसी का सुसरा न बनना पडे।—शिवप्रसाद (शब्द०)।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्राय गाली मे अधिक होता है। जैसे,—(क) सुसरे ने कम तौला है। (ख) सुसरा कही का।

सुसरार—सज्ञा स्त्री० [हिं० ससुराल] दे० 'ससुराल'।

सुसरारि—सज्ञा स्त्री० [हिं० ससुराल] दे० 'ससुराल'।

ससुराल—सज्ञा स्त्री० [सं० श्वसुरालय] ससुर का घर। ससुराल।

सुसरित—सज्ञा स्त्री० [स० सु+सरित] नदियो मे श्रेष्ठ, गगा। उ०—गे मुनि अवध विलोकि सुसरित नहाएउ। सतानद दस कोटि नाम फल पाएउ।—तुलसी (शब्द०)।

सुसरी[1]—सज्ञा स्त्री० [हिं० ससुर] दे० 'ससुरी'।

सुसरी[2]—सज्ञा स्त्री० [अनु०] दे० 'सुरसुराहट', 'सुरसुरी'।

सुसतु—सज्ञा स्त्री० [स०] ऋग्वेद के अनुसार एक नदी का नाम।

सुसर्मा—सज्ञा पुं० [स० सुशर्मन्] दे० 'सुशर्मा'।

सुसह[1]—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम।

सुसह[2]—वि० १ सहज मे उठाने या सहने योग्य। जो सहज मे उठाया या सहन किया जा सके। २. जो सहन कर सके। सहनशील [को०]।

सुसहाय—वि० [सं०] जिसके अच्छे साथी या सहायक हो [को०]।

सुसा(पु)[१]—सज्ञा स्त्री० [स० स्वसृ] बहन। भगिनी। स्वसा। उ०—उ०—पचवटी सुदर लखि रामा। मोहत भई सुपनखा वामा। रावन सुसा राम ते भाषा। पुनि सीता भोजन अभिलाषा।—गिरिधरदास (शब्द०)।

सुसा[२]—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी। उ०—हनत सुसा वुज्जर उतग।—सूदन (शब्द०)।

सुसाइटी—सज्ञा स्त्री० [अ० सोसाइटी] दे० 'सोसाइटी'।

सुसाधन—वि० [स०] जो सरलता से साधा जा सके या प्रमाणित हो सके [को०]।

सुसाधित—वि० [स०] १ अच्छी तरह साधा हुआ या शिक्षित। २ सम्यक् पाचित। पकाया या सिद्ध किया हुआ।

सुसाध्य—वि० [स०] [सज्ञा सुसाधन] जिसका सहज मे साधन किया जा सके। जो सहज मे किया जा सके। सुखसाध्य। सहज-साध्य। २ सरलता से नियन्त्रित करने योग्य। ३ सरल। आसान। साधारण।

सुसाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० साँस] सिसकना। उ०—रामहि राज्य विदेश वसे सुत सोच कियो यह बात न चगी। एक उपाय करो सु फिरे मत ह्वै वर वेलेउ माँग सुरगी। भूपण डारन आँचर लेत है जात सुसात सुपाइन नगी। दौर चली पिय पै वर माँगत मानहु काल कराल भुजगी।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

सुसामुझि(पु)—वि० [स० सु+हिं० समझ] अच्छी समझवाला। सुबुद्धि। समझदार। उ०—नाम रूप दुइ ईस उपाधी। अकथ अनादि सुसामुझि साधी।—तुलसी (शब्द०)।

सुसायटी—सज्ञा स्त्री० [अ० सोसायटी] दे० 'सोसाइटी'।

सुसार[१]—सज्ञा पुं० [स०] १ नीलम। इद्रनील मणि। २ लाल खैर। रक्त खदिर वृक्ष। ३ उत्तम सार या तत्व (को०)। ४ क्षमता। सामर्थ्य (को०)। ५ सारयुक्त वस्तुएँ। पक्वान्न आदि। उ०—पठई जनक अनेक सुसारा।—मानस, १।३३३।

सुसार[२]—वि० अत्यत सारयुक्त [को०]।

सुसारना†—क्रि० स० [हिं० सु+सारना] अच्छी तरह समझाना या सारना।

सुसारवत्[१]—सज्ञा पुं० [स०] बिल्लौर। स्फटिक।

सुसारवत्[२]—वि० उत्तम सार या तत्व से युक्त [को०]।

सुसिकता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ चीनी। शर्करा। २ ककड। कँकरी। बजरी। ३ अच्छी रेत या बालू [को०]।

सुसिक्त—वि० [स०] अच्छी तरह सीचा हुआ।

सुसिद्ध—वि० [स०] १ जिसे उत्तम सिद्धि प्राप्त हो। २ भली प्रकार सिद्ध किया हुआ। पका या पकाया हुआ [को०]।

सुसिद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] साहित्य मे एक प्रकार का अलकार। जहाँ परिश्रम एक मनुष्य करता है, पर उसका फल दूसरा ही भोगता है, वहाँ यह अलकार माना जाता है। उ०—साधि साधि औरै मरै औरै भोगै सिद्ध। तासो कहत सुसिद्धि सब जे है बुद्धि समृद्ध।—केशव (शब्द०)।

सुसिर—सज्ञा पु० [स०] दाँत का एक रोग।

विशेष—वाग्भट के अनुसार यह रोग पित्त और रक्त के कुपित होने से होता है। इसमे दाँतो की जड फूल जाती है, उसमे बहुत दर्द होता है, खून निकलता है और मास कटने या गिरने लगते है

सुसीतलताई(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० सुशीतलता] दे० 'सुशीतलता'।

सुसीता—सज्ञा स्त्री० [स०] सेवती। शतपत्री।

सुसीम[१]—वि० [स० सुसम] शीतल। ठढा। (डिं०)।

सुसीम[२]—वि० [स०] जिसका सीमत या सीम शोभन हो।

सुसीम[३]—सज्ञा पुं० विंदुसार का एक पुत्र [को०]।

सुसीमा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जैनो के अनुसार छठे अर्हत् की माता का नाम। २ उत्तम सीमा। सुदर सीमा (को०)।

सुसुकना†—क्रि० अ० [हिं० सिसकना] दे० 'सिसकना'।

सुसुडी—सज्ञा स्त्री० [सुर सुर से अनु०] एक प्रकार का कीडा जो जौ मे लगता है और उसके सार भाग को खा जाता है। सुरसुरी।

सुसुनिया—सज्ञा पुं० [देश०] एक पहाड जो बगाल प्रदेश के बाँकुडा जिले मे है।

विशेष—यहाँ चौथी शताब्दी का एक शिलालेख है जिससे जाना जाता है कि पुष्कर के राजा चद्रवर्मा ने इस पहाड पर चक्रस्वामी की स्थापना की थी।

सुसुप्ती(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुषुप्ति] दे० 'सुषुप्ति'। उ०—सुख दुख है मन के धरम नही आतमा माँहि। ज्यौं सुसुप्ती मैं द्वददुख मन विन भासै नाहिं।—दीनदयाल (शब्द०)।

सुसुम(पु)—वि० [सं० सुषमा] सुदर। उ०—जहँ पिय सुसुम कुसुम लै मुकर गुही हे वेनी।—नद० ग्र०, पृ० १६।

सुसुरप्रिया—सज्ञा स्त्री० [सं०] चमेली। जातीपुष्प।

सुसूक्ष्म[१]—सज्ञा पुं० [स०] परमाणु।

सुसूक्ष्म[२]—वि० अत्यत सूक्ष्म। बहुत बारीक या छोटा। २ अत्यत कोमल। अतीव मृदु (को०)। ३ तेज। तीव्र। तीक्ष्ण। प्रखर। जैसे सूक्ष्म बुद्धि (को०)।

सुसूक्ष्मपत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] आकाशमासी। जटामासी। बालछड।

सुसूक्ष्मेश—सज्ञा पु० [स०] (परमाणुओ के प्रभु या स्वामी) विष्णु का एक नाम।

सुसृत—वि० [स०] खूब तप्त।

सुसेन—सज्ञा पुं० [स० सुषेण] दे० 'सुषेन'।

सुसेव्य—वि० [स०] १ अच्छी तरह सेवा करने योग्य। २ सरलता से गमन करने योग्य। जैसे, पथ, मार्ग [को०]।

सुसैधवी—सज्ञा स्त्री० [सं० सुसैन्धवी] सिंध देश की अच्छी घोडी।

सुसो(पु)—सज्ञा पुं० [स० शश] खरगोश। खरहा। (डिं०)।

सुसौभग—सज्ञा पु० [स०] दापत्य सुख। पति पत्नी सबधी सुख।

सुस्कदन—सज्ञा पुं० [स० सुस्कन्दन] बर्बर वृक्ष।

सुस्कंध—वि० [स० सुस्कन्ध] सुदर स्कध या तनेवाला।

**सुस्नात**—सज्ञा पुं० [स०] वह जिसने यज्ञ के उपरात स्नान किया हो। २ वह जिसने भली भाँति स्नान किया हो [को०]।

**सुस्निग्धा**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक लता का नाम।

**सुस्पर्श**—वि० [स०] १ जिसका स्पर्श सुखद हो। २ नरम। मृदु। कोमल [को०]।

**सुस्फीत**—वि० [स०] १ जो सम्यक् रूप से स्फीत हो। २ खूब उन्नति करनेवाला [को०]।

**सुस्मित**—सज्ञा पु० [स०] [वि० स्त्री० सुस्मिता] हँसमुख। हँसोड।

**सुस्मिता**—सज्ञा स्त्री० [स०] मधुर हासयुक्त महिला। प्रसन्न वदनवाली स्त्री [को०]।

**सुस्रग्धर**—वि० [स०] सुदर माला धारण करनेवाला [को०]।

**सुस्रोता**—सज्ञा स्त्री० [स० सुस्रोतस्] हरिवश के अनुसार एक नदी का नाम।

**सुस्वध**—सज्ञा पु० [स०] पितरो की एक श्रेणी या वर्ग।

**सुस्वधा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कल्याण। मगल। २ सौभाग्य। खुशकिस्मती।

**सुस्वन**¹—सज्ञा पु० [स०] १ शख। २ सुदर ध्वनि।

**सुस्वन**²—वि० १. उत्तम शब्द या ध्वनि से युक्त। २. बहुत ऊँचा। बुलद। ३ सुदर। ४ सुस्वर।

**सुस्वप्न**—सज्ञा पुं० [सं०] १ शुभ स्वप्न। अच्छा सपना। २ शिव जी का एक नाम।

**सुस्वर**¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुस्वरा] सुदर या उत्तम स्वरयुक्त। जिसका सुर या कठध्वनि मधुर हो। सुकठ। सुरीला। २ अत्यत ऊँचा या तीक्ष्ण। बुलद। घोर (ध्वनि)।

**सुस्वर**²—सज्ञा पु० १ सुदर या उत्तम स्वर। २ गरुड के एक पुत्र का नाम। ३ शख। ४ जैनो के अनुसार वह कर्म जिसमे मनुष्य का स्वर मधुर और सुरीला होता है।

**सुस्वरता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुस्वर का भाव या धर्म। २ वशी के पाँच गुणो मे से एक।

**सुस्वरयन्त्रक**—सज्ञा पुं० [स० सुस्वरयन्त्रक] एक प्रकार का मधुर स्वरयुक्त तत्रवाद्य [को०]।

**सुस्वात**—वि० [स० सुस्वान्त] अच्छे अत करणवाला। प्रसन्नचित्त।

**सुस्वाद**—वि० [सं०] दे० 'सुस्वादु'।

**सुस्वादु**¹—वि० [स०] अत्यत स्वादयुक्त। बहुत स्वादिष्ट। बहुत जायकेदार। खुशजायका।

**सुस्वादु**²—सज्ञा पु० अच्छा जायका या स्वाद।

**सुस्वाप**—सज्ञा पु० [सं०] गहरी नीद [को०]।

**सुस्विन्न**—वि० [स०] १ अच्छी तरह उबाला या पकाया हुआ। २ अच्छी तरह सिक्त या तर [को०]।

**सुहग**Ⓤ—वि० [हिं० महँगा का अनु०] कम मूल्य का। सस्ता। महँगा का उलटा।

**सुहगम**Ⓤ—वि० [स० सुगम] सहज। आसान।

**सुहँगा**—वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता। जो महँगा न हो। उ०—मुलतानी धर मन वसी सुहँगा नइ सेलार। —ढोला०, दू० २२६।

**सुहटा**Ⓤ—वि० [हिं० सुहावना, तुल० सुघटित] [वि० स्त्री० सुहटी] सुहावना। सुदर। उ०—सुनु ए कपटी दशकध हठी दोउ राम रटी न कछूक घटी। हर धूरजटी कमठी खपटी सम तारे रटी जनवाचकटी। न ठटी रतिनाथ छटी तिनको नित नाचत मुक्त नटी सुहटी।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

**सुहड़**—सज्ञा पुं० [सं० सुभट, प्रा० सुहड] सुभट। योद्धा। शूरवीर। (डिं०)।

**सुहनी**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोहनी] दे० 'सोहनी'।

**सुहनु**¹—सज्ञा पु० [स०] एक असुर का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

**सुहनु**²—वि० जिसकी ठुड्डी सुदर या सुडौल हो [को०]।

**सुहवत**—सज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'सोहबत'।

**सुहवती**—वि० [अ० सुहवत] मेलजोल या दोस्ती रखनेवाला। साथ उठने बैठनेवाला।

**सुहर**—सज्ञा पु० [स०] एक असुर का नाम।

**सुहराना**—क्रि० स० [हिं० सहलाना] दे० 'सहलाना'।

**सुहराब**—सज्ञा पु० [फा०] ईरान का एक प्रसिद्ध वीर जो अपने पिता रुस्तम के हाथो मारा गया।

**सुहल**Ⓤ¹—सज्ञा पुं० [अ० सुहैल] एक तारा।

**सुहल**²—वि० [स०] अच्छे हलवाला।

**सुहव**—सज्ञा पुं० [हिं० सूहा] दे० 'सूहा' (राग)। उ०—सारग गुड मलार सोरठ सुहव सुघरनि बाजही। बहु भाँति तान तरग मुनि गधर्व किन्नर लाजही।—तुलसी (शब्द०)।

**सुहवि**¹—सज्ञा पुं० [सं० सुहविस्] १ एक आगिरस का नाम। २ भुमन्यु के एक पुत्र का नाम।

**सुहवि**²—वि० सुदर हवि देनेवाला। धार्मिक [को०]।

**सुहवी**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सूहा' (राग)। उ०—राग राजी साँचि मिलाई गावै सुघर मलार। सुहवी सारग टोडी अरु भैरवी केदार।—सूर (शब्द०)।

**सुहसानन**—वि० [स०] हँसमुख। विहसितवदन [को०]।

**सुहस्त**¹—सज्ञा पुं० [स०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

**सुहस्त**²—वि० [वि० स्त्री० सुहस्ता] १ सुदर हाथोवाला। २ कार्य मे कुशल हाथोवाला।

**सुहस्ती**—सज्ञा पुं० [स० सुहस्तिन्] एक जैन आचार्य का नाम।

**सुहस्त्य**¹—सज्ञा पु० [स०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

**सुहस्त्य**²—वि० दे० 'सुहस्त²' [को०]।

**सुहा**—सज्ञा पुं० [हिं० सुग्रा] [स्त्री० सुही] लाल नामक पक्षी।

**सुहाग**¹—सज्ञा पुं० [सं० सौभाग्य] १ स्त्री की सधवा रहने की अवस्था। अहिवात। सौभाग्य।

मुहा०—सुहाग उजडना = पति की मृत्यु होना। वेवा होना। सुहाग उतरना = (१) दे० 'सुहाग उजडना'। (२) पति की मृत्यु पर सधवा स्त्री के सौभाग्यचिह्न सिंदूर, आभूषण आदि का उतारा जाना। सुहाग मनाना = अखड भाग्य की कामना करना। पति-सुख के अखड रहने के लिये कामना करना। सुहाग भरना = माँग भरना।

२ वह वस्त्र जो वर विवाह के समय पहनता है। जामा। ३ मगल-गीत जो वरपक्ष की स्त्रियाँ विवाह के अवसर पर गाती हैं। ४ वे आभूषण, वस्त्र आदि जो सौभाग्यवती स्त्रियाँ पहनती हैं। ५ एक प्रकार का इत्र। ६ प्यार भरी वाते।

यौ०—सुहाग डला = वह डलिया जिसमे विवाह के समय की आवश्यक सामग्री जैसे,—रोली, मेहदी, नारा आदि रखकर वरपक्ष की ओर से कन्या के घर जाता है। सुहाग घोडी = विवाह के समय दूल्हे के घर पर गाए जानेवाले गीत। सुहाग पिटरिया, सुहाग पिटारा, सुहाग पिटारी = वह पेटी जिसमे गहने आदि तथा सोहाग की अन्य सामग्री विवाह के समय कन्या के लिये वरपक्ष से भेजी जाती है। सुहागपुडा या पुडिया = एक प्रकार की कागज की पुडिया जिसमे मागलिक वस्तुएँ रखकर वरपक्ष की ओर से दी जाती हैं।

सुहाग[2]—सज्ञा पुं० [हिं० सुहागा] दे० 'सुहागा'।

सुहागन—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुहाग] दे० 'सुहागिन'।

सुहागा[1]—सज्ञा पुं० [स० सुभग] एक प्रकार का क्षार जो गरम गधकी स्रोतो से निकलता है। कनकक्षार। टकण।

विशेष—यह तिब्बत, लद्दाख और कश्मीर मे बहुत मिलता है। यह छीट छापने, मोना गलाने तथा औषधि के काम मे आता है। इसे घाव पर छिडकने से घाव भर जाता है। मीना इसी का किया जाता है और चीनी के बर्तनो पर इसी मे चमक दी जाती है। वैद्यक के अनुसार यह कटु, उष्ण तथा कफ, विष, खाँसी और श्वास को हरनेवाला है।

पर्या०—लोहद्रावी। टकण। सुभग। स्वर्णपाचक। रसशोधन। कनकक्षार आदि।

सुहागा[2]—सज्ञा पुं० [स० समभाग] १ हेंगा। २ दे० 'सोहागा'।

सुहागिन—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुहाग + इन (प्रत्य०)] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सधवा स्त्री। सौभाग्यवती स्त्री। उ०—(क) मान कियो सपने मैं सुहागिन भाँहैं चढी मतिराम रिसौंहै।—मतिराम (शब्द०)। (ख) तव मुरली नँदलाल पै भई सुहागिन आइ।—रसनिधि (शब्द०)।

सुहागिनि, सुहागिनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुहाग + इनी (प्रत्य०)] दे० 'सुहागिन'। उ०—जाय सुहागिनी वसति जो अपने पीहर धाम। लोग बुरी शका करैं यदपि सती हू वाम।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

सुहागिल—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुहाग + इल (प्रत्य०)] दे० 'सुहागिन'। उ०—तोसो दुरावति हौं न कछू जिहि ते न सुहागिल सौति कहावै।—व्यगार्थकौमुदी (शब्द०)।

सुहागी—वि० [हिं० सुहाग] सौभाग्यशील। भाग्यशाली।

सुहाता—वि० [हिं० सहना] जो सहा जा सके। सहने योग्य। सह्य। उ०—वही (वायु) मध्याह्नकालीन सूर्य की तीक्ष्ण तपन को सुहाता करती है।—गोल विनोद (शब्द०)। (ख) तेल को तपाकर सुहाता सुहाता कान मे डालो।—नूतनामृतसागर (शब्द०)।

सुहान—सज्ञा पु० [सं० शोभन] १ वैश्यो की एक जाति। २ दे० 'सोहाल'।

सुहाना[1]—क्रि० अ० [स० शोभन] १ शोभायमान होना। शोभा देना। उ०—(क) शकर शैल शिलातल मध्य किधौ शुक की अवली फिरि आई। नारद बुद्धि विशारद दीप किधौ तुलसीदल माल सुहाई।—केशव (शब्द०)। (ख) यज्ञ नाम हरि तव चलि आए। कोटि अर्क सम तेज सुहाए।—गि० दास (शब्द०)। (ग) कामदेव कहँ पूजती ऐसी रही सुहाय। नव पल्लव युत पेड जनु लता रही लपटाय।—बालमुकुद गुप्त (शब्द०)। २ अच्छा लगना। भला मालूम होना। उ०—(क) भयो उदास सुहात न कछु ये छन सोवत छन जागे।—सूर (शब्द०)। (ख) फूली लता द्रुम कुज सुहान लगे।—सुदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सुहाना[2]—वि० [वि० स्त्री० सुहानी] दे० 'सुहावना'। उ०—(क) सारी पृथ्वी इस वसत की वायु से कैसी सुहानी हो रही है।—हरिश्चद्र (शब्द०)। (ख) सौतिन दियो सुहाग ललन हू आजु सयानी। जामिनि कामिनि स्याम काम की समै सुहानी।—व्यास (शब्द०)।

सुहाया—वि० [हिं० सुहाना] [वि० स्त्री० सुहाई] जो देखने मे भला जान पडता हो। सुहावना। सुदर। उ०—(क) सबै सुहाये ही लगैं बसे सुहाये ठाम। गोरे मुँह बँदी लसे अरुन पीत सित स्याम।—बिहारी (शब्द०)। (ख) यमुना पुलिन मल्लिका मनोहर शरद सुहाई यामिनि। सुंदर शशि गुण रूप राग निधि अग अग अभिरामिनि।—सूर (शब्द०)। (ग) भयहु बतावत राह सुहाई। तव तिहि सौ बोले दुहु भाई।—पद्माकर (शब्द०)। (घ) मेरे तो नाहिंने चचल लोचन नाहिंने केशव बानि सुहाई। जानो न भूषण भेद के भाव न भूलहू नैनहिं भौह चढाई।—केशव (शब्द०)।

सुहारी—सज्ञा स्त्री० [सं० सु + आहार] सादी पूरी नामक पकवान जिसमे पीठी आदि नही भरी रहती।—उ०—(क) कान्ह कुँवर को कनछेदनो है हाथ सुहारी भेली गुर की।—सूर (शब्द०)। (ख) घी न लगे, सुहारी होय। (कहा०)।

सुहाल—सज्ञा पुं० [सं० सु + आहार] एक प्रकार का नमकीन पकवान जो मैदे का बनता है। यह बहुत मोयनदार होता है और इसका आकार प्राय तिकोना होता है।

सुहाली—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुहारी] दे० 'सुहारी'।

सुहाव[1]—वि० [हिं० सुहाना] सुहावना। सुदर। भला। अच्छा। उ०—(क) सरवर एक अनूप सुहावा। नाना जतु कमल बहु छावा।—सबल (शब्द०)। (ख) देखि मानसर रूप सुहावा। हिय हुलास पुरइन होइ छावा।—जायसी (शब्द०)।

**सुहाव[2]**—सज्ञा पुं० [स० सु + हाव] सुदर हाव। उ०—किधौं यह केशव शृगार की है सिद्धि किधौं भाग की सहेली कै सुहाग को सुहाव है।—केशव (शब्द०)।

**सुहावता**—वि० [हिं० सुहाना] [वि० स्त्री० सुहावती] अच्छा लगनेवाला। सुहावना। भला। उ०—इस समय इसके मनभावती सुहावती बात कहूँ।—लल्लू (शब्द०)।

**सुहावन**Ⓤ—वि० [हिं० सुहाना] दे० 'सुहावना'। उ०—जगमगात नृप गात वरम वर परम सुहावन।—गिरिधर (शब्द०)।

**सुहावना[1]**—वि० [हिं० सुहाना] [वि० स्त्री० सुहावनी] जो देखने मे भला मालूम हो। सुदर। प्रियदर्शन। मनोहर। जैसे, सुहावना समय, सुहावना दृश्य, सुहावना रूप।

**सुहावना[2]**—क्रि० अ० दे० 'सुहाना'। उ०—कछु औरहु बात सुहावत है।—श्रीनिवास (शब्द०)।

**सुहावनापन**—सज्ञा पु० [हिं० सुहावना + पन (प्रत्य०)] सुहावना होने का भाव। सुदरता। मनोहरता।

**सुहावला**Ⓤ—वि० [हिं० सुहावना] दे० 'सुहावना'। उ०—पारसी पाँति की पीपर पत्र लिख्यौ किधौ मोहिनी मत्र सुहावली।—सुदरीसर्वस्व (शब्द०)।

**सुहास[1]**—वि० [स०] [वि० स्त्री० सुहासा] चारु या मधुर हास्ययुक्त। सुदर या मधुर मुसकानवाला। उ०—उतते नेकु इतै चितै राति वितै तजि कोह। तेरो वदन सुहास से ससि प्रकास सो सोह।—शृगारसतसई (शब्द०)।

**सुहास[2]**—सज्ञा पु० सुदर हास्य। मोहक हँसी।

**सुहासिनी[1]**—वि० [स०] सुदर हँसी हँसनेवाली। मधुर मुसकानवाली।

**सुहासिनी[2]**—सज्ञा स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री। सधवा स्त्री।

**सुहासी**—वि० [स० सुहासिन्] [स्त्री० सुहासिनी] सुदर हँसनेवाला। मधुर मुसकानवाला। चारुहासी।

**सुहित**—वि० [स०] १ बहुत लाभकारी। उपयोगी। २ किया हुआ। सपादित। ३ तृप्त। सतुष्ट। ४ मित्र। स्नेही (को०)। ५ उपयुक्त। ठीक।

**सुहिता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक जिह्वा का नाम। २ रुद्रजटा।

**सुहिया**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुआ] दे० 'सुहा'।

**सुही**—वि० [देश०] लाल। लाल रगवाला। उ०—इदीवर दलनि मिलाय सोनजुही गुही, सुही माल हाल रूप, गुन न परै गनै।—घनानद, पृ० १२३।

**सुहू**—सज्ञा पु० [स०] उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

**सुहूँ**Ⓤ—वि० [स० शुद्ध ?] ठीक। पूरा। उ०—घन आनँद जान सजीवन सो कहिये तौ समै लहिये न सुहूँ।—घनानद, पृ० ७४।

**सुहृत्**—सज्ञा पु० [स०] १ अच्छे हृदयवाला। २ मित्र। सखा। बधु। दोस्त।

यौ०—सुहृत्याग = सुहृत् का परित्याग। सुहृत्प्राप्ति = मित्र का मिलना। सुहृत्प्रेम = मित्र के प्रति प्रेम।

३ ज्योतिष के अनुसार लग्न से चौथा स्थान जिससे यह जाना जाता है कि मित्र आदि कैसे होगे।

**सुहृत्ता**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुहृत् होने का भाव या धर्म। २ मित्रता। दोस्ती।

**सुहृत्व**—सज्ञा पु० [स०] सुहृत्ता। मैत्री।

**सुहृद्**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सुहृत्'।

यौ०—सुहृद्बल = मित्र राष्ट्र की सेना। सुहृद्भेद = (१) मित्र का अलग होना। मैत्री न रहना। (२) हितोपदेश का दूसरा परिच्छेद। सुहृद्वाक्य = मित्र की सलाह। अच्छी सलाह। उत्तम मत्र।

**सुहृद**—सज्ञा पुं० [स०] १ शिव का एक नाम। २ मित्र। सखा। दोस्त।

**सुहृदय**—वि० [स०] १ अच्छे हृदयवाला। उन्नतमना। २ सहृदय। स्नेहशील।

**सुहेल**—सज्ञा पु० [अ०] एक प्रसिद्ध चमकीला सितारा जो फारसी तथा अरबी के कवियो के अनुसार यमन देश मे उगता है। उ०—बिछुरता जब भेंटै सो जानै जेहि नेह। सुक्ख सुहेला उग्गवै दु ख झरे जिमि मेह।—जायसी (शब्द०)।

विशेष—कहते हैं, इसके उदय होने पर सब कीडे मकोडे मर जाते हैं और चमडे मे सुगध उत्पन्न हो जाती है। यह शुभ और सौभाग्य का सूचक माना जाता है।

**सुहेलरा**Ⓤ—वि० [हिं० सुहेला + रा (प्रत्य०)] दे० 'सुहेला'। उ०—आज सुहेलरो सोहावन सतगुरु आए मोरे धाम।—कबीर (शब्द०)।

**सुहेला[1]**—वि० [स० शुभ या सुखकेलि, प्रा० सुहेल्लि] १ सुहावना। सुदर। उ०—साँझ समै ललना मिलि आई खरो जहाँ नँदलाल अलबेलो। खेलन को निसि चाँदनी माँह बनै न मतो मतिराम सुहेलो।—मतिराम (शब्द०)। २ सुखदायक। सुखद। उ०—मरना मीत सुहेला। बिछुरन खरा दुहेला।—दादू (शब्द०)।

**सुहेला[2]**—सज्ञा पु० १ मगलगीत। २ स्तुति। स्तव।

**सुहेस**‡—वि० [स० शुभ] अच्छा। सुदर। भला।

**सुहैल**—सज्ञा पु० [अ०] एक बहुत ऊँचा तारा जिसका दर्शन शुभ माना जाता है।

**सुहोता**—सज्ञा पु० [स० सुहोतृ] १ वह जो उत्तम रूप से हवन करता हो। अच्छा होता। २ भुमन्यु के एक पुत्र का नाम। ३ वितथ के एक पुत्र का नाम।

**सुहोत्र**—सज्ञा पु० [स०] १ एक वैदिक ऋषि का नाम। २ एक बार्हस्पत्य का नाम। ३ एक आग्नेय का नाम। ४ एक कौरव का नाम। ५ सहदेव के एक पुत्र का नाम। ६ भुमन्यु के एक पुत्र का नाम। ७ बृहत्क्षत्र के एक पुत्र का नाम। ८ बृहदिषु के एक पुत्र का नाम। ९ सुधन्वा के एक पुत्र का नाम। १० एक

दैत्य का नाम। ११ एक वानर का नाम। १२ वितथ के एक पुत्र का नाम। १३ क्षत्रवृद्ध के एक पुत्र का नाम।

सुह्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन प्रदेश का नाम जो गौड़ देश के पश्चिम में था। २ यवनों की एक जाति। ३ सुह्म प्रदेश का निवासी (को०)।

सुह्मक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुह्म'।

सूँ(ऊ)—अव्य० [सं० सह, प्रा० सहुं, सयं० सउँ, सउ] करण और अपादान कारक का चिह्न। सो। से। उ०—(क) कह्यो द्विजन मूं सुनहु पियारे।—रघुराज (शब्द०)। (ख) कहत थकी ये चरन की नई अरुनई बाल। जाके रँग रँगि स्याम सूं विदित कहावत लाल।—शृंगारसतसई (शब्द०)।

सूँइस—संज्ञा स्त्री० [सं० शिशुमार] दे० 'सूँस'।

सूँघना—क्रि० स [सं० √शिङ्घ् (=आघ्राण) = शिङ्घति, प्रा० सिंघ, देशी सुघ] १ घ्राणेंद्रिय या नाक द्वारा किसी प्रकार की गंध का ग्रहण या अनुभव करना। आघ्राण करना। वास लेना। महक लेना।

मुहा०—सिर सूँघना = बड़ों का मंगलकामना के लिये छोटों का मस्तक सूँघना। बड़ों का गद्गद होकर छोटों का मस्तक सूँघना। जमीन सूँघना = (१) पिनक लेना। ऊँघना। (२) किसी अस्त्र के वार से जमीन पर गिर पड़ना।

२ बहुत अल्प आहार करना। बहुत कम भोजन करना। (व्यंग)। जैसे,—आप तो खाली सूँघकर उठ बैठे। ३ साँप का काटना। जैसे,—बोलता क्यों नहीं? क्या साँप सूँघ गया है?

सूँघा—संज्ञा पुं० [हिं० सूँघना] १ वह जो नाक से केवल सूँघकर यह बतलाता हो कि अमुक स्थान पर जमीन के अंदर पानी या खजाना आदि है। २ सूँघकर शिकार तक पहुँचनेवाला कुत्ता। ३ भेदिया। जासूस। मुखबिर।

सूँठ†—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ठि, हिं० सोंठ] दे० 'सोंठ'।

सूँड—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ड] हाथी की नाक जो बहुत लंबी होती है और नीचे की ओर प्रायः जमीन तक लटकती रहती है। शुंड। शुंडादंड।

विशेष—यह लंबाई में प्रायः हाथी की ऊँचाई तक होती है। इसमें दो नथने होते हैं। हाथी इसी से हाथ का भी काम लेता है। यह इतनी मजबूत होती है कि हाथी इससे पेड़ उखाड़ सकता है और भारी से भारी चीज उठाकर फेंक सकता है। इसी में वह खाने की चीजें उठाकर मुँह में रखता है और दमकल की तरह पानी फेंकता और पीता है। इससे वह जमीन पर से सूई तक उठा सकता है।

सूँडदंड†—संज्ञा पुं० [हिं० सूँड + दंड] हाथी। (डिं०)।

सूँडहल†—संज्ञा पुं० [सं० शुण्ड + हल (प्रत्य० ?)] हाथी। (डिं०)।

सूँडा†—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डा] हाथी की सूँड या नाक। (डिं०)।

सूँडाल(ऊ)—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डाल] दे० 'शुंडाल'।

सूँडि†—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ड, प्रा० सुंड] दे० 'सूँड'।

सूँडी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्डी] एक प्रकार का सफेद कीड़ा जो कपास, अनाज, रेंड़ी, ऊख आदि के पौधों को हानि पहुँचाता है।

सूँतना†—क्रि० स० [सं० सम्मृज्+हिं० ना (प्रत्य०)] मँजना। साफ करना। काछना। उ०—श्रीनाथ जी की गाँडन तरें की वह पटेल कीच सूँतत रहे।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २१४।

सूँधी—संज्ञा स्त्री० [सं० शोधन] मज्जी मिट्टी।

सूँपना†—क्रि० स० [सं० समर्पण, प्रा० समप्पण, हिं० सउँपना, सौंपना] दे० 'सौंपना'। उ०—बनडा नूँ सूँपै बनी, हतलेवे मिल हाथ।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ५८।

सूँब—वि० [हिं० सूम] दे० 'सूम'। उ०—सूँब सूँब कहै मरब दिन, जाचक पाउँ बूँब।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ३५।

सूँस[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिशुमार] एक प्रसिद्ध बड़ा जलजंतु जो लंबाई में ८ से १२ फुट तक होता है और जिसके हर एक जबड़े में तीस दाँत होते हैं। सूँस। सूसमार। उ०—लेन गया वह थाह सूँसि लै गा घिसिआई।—पलटू०, पृ० ८८।

विशेष—यह पानी के बहाव में पाया जाता है और एक जगह नहीं रहता। साँस लेने के लिये यह पानी के ऊपर आता है और पानी की सतह पर थोड़ी देर तक रहता है। शीतकाल में कभी कभी यह जल के बाहर निकल आता है। इसकी आँखें बहुत कमजोर होती हैं और यह मटमैले पानी में नहीं देख सकता। इसका आहार मछलियाँ और झिंगवा है। यह जाल में फँसाकर या बर्छियों से मार मारकर पकड़ा जाता है, इसका तेल जलाने तथा कई दूसरे कामों में आता है।

सूँस†[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शपथ] सौंह। उ०—सूँस करे कवड़ी सटे, ते गुण घटे तमाम।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ४२।

सूँह[1]—अव्य० [सं० सम्मुख पु०हिं० सौंहें] समुख। सामने। उ०—साध सती औ सूरमा, दई न मोड़ै मूँह। ये तीनों भागे बुरे, साहेब जा की मूँह।—कबीर सा० सं०, भा० १, पृ० २४

सू[1]—वि० [सं०] उत्पन्न करने या पैदा करनेवाला। (समासांत में प्रयुक्त)। जैसे, वीरसू।

सू[2]—संज्ञा स्त्री० १ उत्पत्ति। पैदाइश। प्रसव। जन्म। २ माता। जननी (को०)।

सू[3]—संज्ञा स्त्री० [फा०] ओर। तरफ। दिशा। उ०—नजर आती है हर सू सूरते ही सूरते मुझको।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ११९।

सू[4]—संज्ञा स्त्री० [तुर्की] शराब। मद्य। मदिरा (को०)।

सूअर—संज्ञा पुं० [सं० शूकर, सूकर, प्रा० सुअर, सूअर] [स्त्री० सुअरी, सूअरी] १ एक प्रसिद्ध स्तन्यपायी वन्य जंतु। वराह। शूकर।

विशेष—यह मुख्यतः दो प्रकार का होता है। (१) वन्य या जंगली और (२) ग्राम्य या पालतू। ग्राम्य सूअर घास आदि के सिवा विष्ठा भी खाता है, पर जंगली सूअर घास और कंद मूल आदि ही खाता है। यह ग्राम्य शूकर की अपेक्षा बहुत बड़ा और बलवान् होता है। यह प्रायः मनुष्यों पर ही आक्रमण करता है, और उन्हें मार डालता है। इसके कई भेद हैं। इसका लोग शिकार करते हैं और कुछ जातियाँ इसका मांस भी खाती

हैं। राजपूतो मे जगली सूअरो के शिकार की प्रथा बहुत दिनो से प्रचलित है। इसके शिकार मे बहुत अधिक वीरता और साहस की आवश्यकता होती है। कही कही इसकी चरबी मे पूरियां पकाई जाती है, और इसका मास पकाकर या अचार के रूप मे खाया जाता है। वैद्यक के मत से जगली सूअर मेद, बल और वीर्यवर्धक है।

पर्या०—शूकर। सूकर। दंष्ट्री। मूदार। स्थूलनासिक। दतायुध। वक्रवस्त्र। दीर्घतर। आखनिक। भूक्षित। स्तब्धरोया। मुखलागूल आदि।

२ निकृष्टता सूचक एक प्रकार की गाली। जैसे,—सूअर कही का।

**सूअरबियान**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूअर + बियाना (=जनना)] १ वह स्त्री जो प्रति वर्ष बच्चा जनती हो। बरस बियानी। बरसाइन। २ हर साल अधिक बच्चे जनने की क्रिया।

**सूअरमुखी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूअर + मुखी] ज्वार का एक प्रकार। बडी जोन्हरी या ज्वार।

**सूआ**[1]—सज्ञा पुं० [स० शुक, प्रा० सूअ] सुग्गा। तोता। शुक। कीर। उ०—सूआ सरस मिलत प्रीतम सुख सिंधुवीर रस मान्यो। जानि प्रभात प्रभाती गायो भोर भयो दोउ जान्यो।—सूर (शब्द०)।

**सूआ**[2]—सज्ञा पुं० [स० शूक (=नुकीला अग्रभाग)] १ बडी सूई। २ सीख। (लश०)।

**सूआन**—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का बडा वृक्ष।

विशेष—यह वृक्ष बरमा, चटगाँव और स्याम मे होता है इसके पत्ते प्रति वर्ष झड जाते है। इसकी लकडी इमारत और नाव के काम मे आती है। इससे एक प्रकार का तेल भी निकलता है।

**सूई**—सज्ञा स्त्री० [स० सूची] १ पक्के लोहे का छोटा पतला तार जिसके एक छोर मे बहुत बारीक छेद होता है और दूसरे छोर पर तेज नोक होती है। छेद मे तागा पिरोकर इससे कपडा सिया जाता है। सूची।

यौ०—सूई तागा। सूई डोरा। सूई का काम = सूई से बनाई हुई कारीगरी जो कपडो पर होती है। सूई का छेका = सूई का छेद।

क्रि० प्र० पिरोना।—सीना।

मुहा०—सूई का फावडा बनाना = जरा सी बात को बहुत बडा बनाना। बात का बतगड करना। सूई का भाला बनाना = दे० 'सूई का फावडा बनाना'। उ०—जो लोग प्रिम हुमायूं फर के खिलाफ थे उन्होने सूई का भाला और तिनके का झडा बनाया।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ३०६।

२ पिन। ३ महीन तार का काँटा। तार या लोहे का काँटा जिससे कोई बात सूचित होती है। जैसे,—घडी की सूई, तराजू की सूई। ४ अनाज, कपास आदि का अँखुआ। ५ सूई के आकार का एक पतला तार जिससे गोदना गोदा जाता है। ६ सूई के आकार का एक तार जिससे पगडी की चुनन बैठाते है।

**सूईकार**—सज्ञा पुं० [सं० सूचीकार] सूई से सिलाई करनेवाला दर्जी। उ०—जरकसी सूईकार के बहु भाँति तन पै धारही।—प्रेमघन०, पृ० ११५।

**सूईडोरा**—सज्ञा पुं० [हिं० सूई + डोरा] मालखभ की एक कसरत।

विशेष—पहले सीधी पकड के समान मालखभ के ऊपर चढने के समय एक बगल मे से पाँव मालखभ को लपेटते हुए बाहर निकालना और सिर को उठाना पडता है। उस समय हाथ छूटने का बडा डर रहता है। इसमे पीठ मालखभ की तरफ और मुँह लोगो की तरफ होता है। जब पाँव नीचे आ चुकता है, तब ऊपर का उलटा हाथ छोडकर मालखभ को छाती से लगाए रहना पडता है। यह पकड बडी ही कठिन है।

**सूक**[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ तीर। बाण। २ वायु। हवा। ३ कमल। ४ ह्रद के एक पुत्र का नाम।

**सूक**ⓤ†[2]—सज्ञा [स० शुक्र] शुक्र नक्षत्र। शुक्र तारा। उ०—(क) जग सूझा एकै नयनाहीं। उआ सूक जस नखतन्ह माहीं।—जायसी (शब्द०)। (ख) नासिक देखि लजानेउ सूआ। सूक आइ बेसर होइ ऊआ।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० १८२।

**सूकछम**†—वि० [सं० सूक्ष्म, पु०हिं० सूकछम, सूच्छम] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—गुरु जी औ सूकछम का कुछ भेद पाऊँ। तुमारे चरन के तो बलिहार जाऊँ।—दक्खिनी०, पृ० २६०।

**सूकना**ⓤ†—क्रि० अ० [सं० शुष्क, प्रा० सुक्क + हिं० ना (प्रत्य०)] दे० 'सूखना'। उ०—(क) माँगो वर कोटि चोट बदलो न चूकत है, सूकत है मुख सुधि आये वहाँ हाल है।—भक्तमाल (शब्द०)। (ख) जैसे सूकत सलिल के बिकल मीन मति होय।—दीनदयाल (शब्द०)। (ग) सुनि कागर नृपराज प्रभु भौ आनद नुभाइ। मानौ बल्ली सूकते वीरा रस जल पाइ।—पृ० रा०, १२।६६।

**सूकर**[1]—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० सूकरी] १ सूअर। शूकर। २ एक प्रकार का हिरन। ३ कुम्हार। कुभकार। ४ सफेद धान। ५ एक नरक का नाम। ६ एक मछली (को०)।

**सूकर**[2]—सज्ञा पुं० [स० सु + कर] सुकर्म करनेवाले। सुकर्मी। उ०—बहु न्हाइ न्हाइ जेहि जल स्नेह। सब जात स्वर्ग सूकर सुदेह।—राम च०, पृ० ४।

**सूकरकद**—सज्ञा पुं० [स० सूकर + कन्द] वाराहीकद।

**सूकरक**—सज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का शालिधान्य।

**सूकरक्षेत्र**—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जो मयुरा जिले मे है और जो अब 'सोरो' नाम से प्रसिद्ध है।

**सूकरखेत**—सज्ञा पुं० [स० सूकरक्षेत्र] दे० 'सूकरक्षेत्र'। उ०—मैं पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो सूकरखेत। समुझी नहिं तस बालपन तब अति रहेऊँ अचेत।—मानस, १।३०।

**सूकरगृह**—सज्ञा पु० [सं०] शूकरो के रहने का स्थान। खोभार।

**सूकरता**—सज्ञा स्त्री० [सं०] सूअर होने का भाव। सूअर की अवस्था। सूअरपन।

**सूकरदंष्ट्र**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का गुदभ्रश (काँच निकलने का) रोग जिसमे खुजली और दाद के साथ बहुत दर्द होता है और ज्वर भी हो जाता है।

सूकरदंष्ट्रक—संज्ञा [सं०] दे० 'सूकरदंष्ट्र' [को०]।

सूकरनयन—संज्ञा पु० [सं०] काठ मे किया जानेवाला एक प्रकार का छेद।

सूकरपादिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किवाँच। कपिकच्छु। कौंछ। २ सेम। कोलशिंबी।

सूकरप्रिया, सूकरप्रेयसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथिवी का एक नाम।

सूकरमुख—संज्ञा पुं० [सं०] एक नरक का नाम।

सूकराक्रांता—संज्ञा स्त्री० [सं० सूकराक्रान्ता] वराहक्रांता।

सूकराक्षता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का नेत्र रोग।

सूकरास्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक बौद्ध देवी का नाम जिसे वाराही भी कहते है।

सूकराह्वया—संज्ञा पुं० [सं०] गठिवन। ग्रंथिपर्ण।

सूकरिक—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का पौधा।

सूकरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चिडिया।

सूकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूअरी। शूकरी। मादा सूअर। २ वराहक्रांता। ३ वाराहीकंद। गेठी। ४ एक देवी का नाम। वाराही। ५ एक प्रकार की चिडिया।।

सूकरेष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १ कसेरू। २ एक प्रकार का पक्षी।

सूकशम⑤‡—वि० [सं० सूक्ष्म, पु०हिं० सूक्षम, सूच्छम] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—ना सूल सूँ ना सूकशम सूँ है काम। है मूल सूँ तुज मेरा सरजाम।—दक्खिनी०, पृ० १७२।

सूका†[1]—संज्ञा पुं० [सं० सपादक (=चतुर्थांश सहित)] [स्त्री० सूकी] १ चार आने के मूल्य का सिक्का। चवन्नी। २ सिक्को के लिखने मे चवन्नी का चिह्न जो एक खडी रेखा (।) के रूप मे लगाते हैं।

सूका[2]—वि० [सं० शुष्क, पा० सुक्ख, प्रा० सुक्क] सूखा। शुष्क। नीरस। उ०—दादू सूका रूँखडा काहे न हरिया होइ। आपै खीचै अमीरस, सुफल फलिया सोइ।—दादू०, पृ० ४६१।

सूका⑤[3]—संज्ञा पु० अवर्षण। सूखा। उ०—अति काल सूका पडै, तौ निरफल कदे न जाइ।—कबीर ग्र०, पृ० ५८।

सूकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूका(=चवन्नी ?)] रिश्वत। घूस।

सूकूत—संज्ञा पु० [अ०] चुप्पी। खामोशी। मौन। उ०—यह आपके बेजार होने का इजहार है और सूकूत के आलम का सुबूत ह। —प्रेमघन०, भा० २, पृ० २४।

सूकृत⑤—संज्ञा पु० [सं० सुकृत] पुण्य। पुण्य कार्य। उ०—जगजिवन दास गुरु चरन गहि, सत सूकृत धन धाम।—जग० श०, भा० २, पृ० ६६।

सूक्त[1]—संज्ञा [सं०] १ वेदमत्रो या ऋचाओ का समूह। वैदिक स्तुति या प्रार्थना। जैसे—देवीसूक्त, अग्निसूक्त, श्रीसूक्त आदि। २ उत्तम कथन। उत्तम भाषण। ३ महद्वाक्य।

सूक्त[2]—वि० उत्तम रूप से कथित। भली भाति कहा हुआ।

यौ०—सूक्तद्रष्टा=सूक्तदर्शी। सूक्तभाक्=जिसके लिये सूक्त कहे जायँ। सूक्तवाक=(१) मत्र का पाठ। (२) एक यज्ञ। सूक्तवाक्य=उत्तम वाणी। सूक्ति।

सूक्तवारी—वि० [सं० सूक्तदर्शिन्] उत्तम वाक्य या परामर्श माननेवाला।

सूक्तदर्शी—संज्ञा पु० [सं० सूक्तदर्शिन्] वह ऋषि जिसने वेदमत्रो का अर्थ किया हो। मत्रद्रष्टा।

सूक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मैना। शारिका।

सूक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम उक्ति या कथन। सुदर पद या वाक्य आदि। बढिया कथन।

सूक्तिक—संज्ञा पु० [सं०] सगीत मे प्रयुक्त एक प्रकार का करताल या झाँझ।

सूक्ष्म⑤[1]—वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—साँचे की सी ढारी अति सूक्षम सुधारि, कढी केशोदास अग अग भाइ के उतारी सी।—केशव (शब्द०)।

सूक्ष्म⑤[2]—संज्ञा पु० एक काव्यालकार। सूक्ष्म नामक अलकार। उ०—कौनहु भाव प्रभाव ते जानै जिय की वा। इगित ते आकार ते कहि सूक्षम अवदात।—केशव (शब्द०)।

सूक्ष्म[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सूक्ष्मा] १ बहुत छोटा। जैसे,—सूक्ष्मजतु। २ बहुत बारीक या महीन। जैसे,—सूक्ष्म बात। ३ उत्तम। श्रेष्ठ। कलात्मक। उम्दा (को०)। ४ तेज। चोखा (को०)। ५ ठीक। सही (को०)। ६ कोमल। मृदु (को०)। ७ धूर्त। चालाक।

सूक्ष्म[2]—संज्ञा पु० १ परमाणु। अणु। २ परब्रह्म। ३ लिंगशरीर। ४ शिव का एक नाम। ५ एक दानव का नाम। ६ एक काव्यालकार जिसमे चित्तवृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से लक्षित कराने का वर्णन होता है। दे० 'सूक्ष्म'। ७ निर्मली। ८ जीरा। जीरक। ९ छल। कपट। १० रीठा। अरिष्टक। ११ सुपारी। पूग। १२ वह ओषधि जो रोमकूप के मार्ग से शरीर मे प्रविष्ट करे। जसे—नीम, शहद, रेडी का तेल, सेधा नमक, आदि। १३ बृहत्सहिता के अनुसार एक देश का नाम। १४ जैनियो के अनुसार एक प्रकार का कर्म जिसके उदय से मनुष्य सूक्ष्म जीवो की योनि मे जन्म लेता है। १५ योग की तीन शक्तियो मे से एक (को०)। १६ दाँत का खोखला या खोढर (को०)। १७ सूक्ष्म होने का भाव। सूक्ष्मता (को०)। १८ बारीक, महीन या उत्तम डोरा (को०)।

सूक्ष्मकृशफला, सूक्ष्मकृष्णफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] कठजामुन। छोटा जामुन। क्षुद्र जबू।

सूक्ष्मकोण—संज्ञा पुं० [सं०] वह कोण जो समकोण से छोटा हो।

सूक्ष्मघटिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सूक्ष्मघण्टिका] सनई। क्षुद्र शणपुष्पी।

सूक्ष्मचक्र—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का चक्र।

सूक्ष्मतडुल—संज्ञा पु० [सं० सूक्ष्मतण्डुल] १ पोस्त दाना। खसखस। २ सर्जरस। धूना।

सूक्ष्मतडुला—संज्ञा स्त्री० [सं० सूक्ष्मतण्डुला] १ पीपल। पिप्पली। २ राल। सर्जरस। ३ एक प्रकार की घास (को०)।

सूक्ष्मता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूक्ष्म होने का भाव। बारीकी। महीनपन। सूक्ष्मत्व।

सूक्ष्मतुड—संज्ञा पुं० [सं० सूक्ष्मतुण्ड] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीडा।

**सूक्ष्मत्व**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूक्ष्मता'।

**सूक्ष्मदर्शक यत्र**—सज्ञा पु० [स० सूक्ष्मदर्शक + यन्त्र] एक यत्र जिसके द्वारा देखने पर सूक्ष्म पदार्थ बडे दिखाई देते है। अणुवीक्षण यत्र। खुर्दबीन।

**सूक्ष्मदर्शिता**—सज्ञा स्त्री० [स०] सूक्ष्मदर्शी होने का भाव। सूक्ष्म या बारीक बात सोचने समझने का गुण।

**सूक्ष्मदर्शी**—वि० [स० सूक्ष्मदर्शिन्] १ सूक्ष्म विषय को समझनेवाला। बारीक बात को सोचने समझनेवाला। कुशाग्रबुद्धि। २ अत्यत बुद्धिमान्। ३ तीव्र या तीखी दृष्टिवाला (को०)।

**सूक्ष्मदल**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की सरसो। देवसर्षप।

**सूक्ष्मदला**—सज्ञा स्त्री० [स०] धमासा। दुरालभा।

**सूक्ष्मदारु**—सज्ञा पुं० [स०] काठ की पतली पटरी या तख्ता।

**सूक्ष्मदृष्टि**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बाते भी दिखाई दें या समझ मे आ जायँ।

**सूक्ष्मदृष्टि**[2]—सज्ञा पु० वह व्यक्ति जो सूक्ष्म से सूक्ष्म बातें भी देख या समझ लेता है।

**सूक्ष्मदेह**—सज्ञा स्त्री० [स०] लिंग शरीर। सूक्ष्म शरीर (को०)।

**सूक्ष्मदेही**[1]—सज्ञा पुं० [स० सूक्ष्मदेहिन्] परमाणु जो बिना अणुवीक्षण के दिखाई नही पडता।

**सूक्ष्मदेही**[2]—वि० सूक्ष्म शरीरवाला। जिसका शरीर बहुत ही सूक्ष्म या छोटा हो।

**सूक्ष्मनाभ**—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का एक नाम।

**सूक्ष्मपत्र**—सज्ञा पु० [स०] १ धनिया। धन्याक। २ काली जीरी। वनजीरक। ३ देवसर्षप। ४ छोटा बैर। लघु बदरी। ५ माचीपत्र। सुरपर्ण। ६ जगली बर्बरी। वन बर्बरी। ७ लाल ऊख। लोहितेक्षु। ८ कुकरौंदा। कुकुदर। ९ कीकर। बबूल। १०. धमासा। मुरालभा। ११ उडद। माष। १२ अर्कपत्र।

**सूक्ष्मपत्रक**—सज्ञा पु० [स०] १ पित्तपापडा। पर्पटक। वनतुलसी। बनबर्बरी।

**सूक्ष्मपत्रा**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ वनजामुन। २ शतमली। ३ बृहती। ४ धमासा। ५ अपराजिता या कोयल नाम की लता। ६ लाल अपराजिता। ७ जीरे का पौधा। ८ बला।

**सूक्ष्मपत्रिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सौफ। शतपुष्पा। २ सतावर। शतावरी। ३ लघु ब्राह्मी। ४ पोई। क्षुद्रपोदकी। ५ धमासा। मुरालभा (को०)। ६ आकाशमासी (को०)।

**सूक्ष्मपत्री**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आकाशमासी। २ सतावर। शतावरी।

**सूक्ष्मपर्णा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विधारा। वृद्धदारु। २ छोटी शणपुष्पी। छोटी सनई। ३ वनभटा। बृहती।

**सूक्ष्मपर्णी**—सज्ञा स्त्री० [स०] रामतुलसी। रामदूती।

**सूक्ष्मपाद**—वि० [सं०] छोटे पैरोवाला। जिसके पैर छोटे हो।

**सूक्ष्मपिप्पली**—सज्ञा स्त्री० [स०] जगली पीपल। वनपिप्पली।

**सूक्ष्मपुष्पा**—सज्ञा स्त्री० [स०] सनई। शणपुष्पी।

**सूक्ष्मपुष्पी**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ शखिनी। २ यवनिका नाम की लता।

**सूक्ष्मफल**—सज्ञा पुं० [स०] १ लिसोडा। २ शूकर्दुंबर। सूक्ष्म बदर।

**सूक्ष्मफला**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ भुई आँवला। भूम्यामलकी। २ तालीसपत्र। ३ मालकगनी। महाज्योतिष्मती लता।

**सूक्ष्मबदर**—सज्ञा पुं० [स०] लघुबदर। झरबेर (को०)।

**सूक्ष्मबदरी**—सज्ञा स्त्री० [सं०] झरबेर। सूक्ष्मदरी।

**सूक्ष्मबीज**—सज्ञा पु० [स०] पोस्तदाना। खसखस।

**सूक्ष्मबुद्धि**[1]—वि० [स०] सूक्ष्म या तत्सम्पर्शी बुद्धिवाला (को०)।

**सूक्ष्मबुद्धि**[2]—सज्ञा स्त्री० दे० 'सूक्ष्ममति' (को०)।

**सूक्ष्मभूत**—सज्ञा पुं० [सं०] आकाशादि शुद्ध भूत जिनका पचीकरण न हुआ हो।

विशेष—साख्य के अनुसार पचतन्मात्र अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गध तन्मात्र, ये अलग अलग सूक्ष्मभूत हैं। इन्हीं पचतन्मात्र से पचमहाभूतो की उत्पत्ति हुई है। पचीकृत होने पर आकाशादि भूत स्थूलभूत कहलाते है। विशेष दे० 'तन्मात्र'।

**सूक्ष्ममक्षिक**—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० सूक्ष्ममक्षिका] मच्छड। मशक।

**सूक्ष्ममति**—वि० [सं०] तीक्ष्णबुद्धि। जिसकी बुद्धि तेज हो।

**सूक्ष्ममान**—सज्ञा पुं० [स०] १ ठीक ठीक तौल या नाप। स्थूलमान का उलटा। २ वह मान जिससे सूक्ष्म अतर भी ज्ञात हो सके (को०)।

**सूक्ष्ममूला**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ जयती। जियती। २ ब्राह्मी।

**सूक्ष्मलोभक**—सज्ञा पुं० [स०] जैन मतानुसार मुक्ति की चौदह अवस्थाओं मे से दसवी अवस्था।

**सूक्ष्मवल्ली**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ ताम्रवल्ली। २ जतुका नाम की लता। ३ करेली। लघु कारवेल्ल।

**सूक्ष्मशरीर**—सज्ञा पुं० [सं०] पाँच प्राण, पाच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच सूक्ष्मभूत, मन और बुद्धि इन सत्रह तत्वो का समूह।

विशेष—साख्य के अनुसार शरीर दो प्रकार का होता है—स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर। हाथ, पैर, मुँह, पेट आदि अगो से युक्त शरीर स्थूल शरीर कहलाता है। परतु इस स्थूल शरीर के नष्ट हो जाने पर इसी प्रकार का एक और शरीर बच रहता है। जो उक्त सत्रह अगो और तत्वो का बना हुआ होता है। इसी को सूक्ष्म शरीर कहते हैं। यह भी माना जाता है कि जब तक मुक्ति नही होती, तब तक इस सूक्ष्म शरीर का आवागमन बराबर होता रहता है। स्वर्ग और नरक आदि का भोग भी इसी सूक्ष्म शरीर को करना पडता है।

**सूक्ष्मशर्करा**—सज्ञा स्त्री० [स०] बालू। बालुका।

**सूक्ष्मशाक**—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की बबुरी जिसे जलबबुरी भी कहते हैं।

**सूक्ष्मशालि**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का महीन सुगधित चावल जिसे सोरो कहते है।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह मधुर, लघु तथा पित्त, अर्श और दाहनाशक है।

सूक्ष्मषट्चरण—सज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का सूक्ष्म कीडा जो पलको की जड मे रहता है।

सूक्ष्मस्फोट—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का कोढ। विचर्चिका रोग।

सूक्ष्मा[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जूही। यूथिका। २ छोटी इलायची। ३. करुणी नाम का पौधा। ४. मूसली। तालमूली। ५ बालू। बालुका। ६ सूक्ष्म जटामासी। ७ विष्णु की नौ शक्तियो मे से एक।

सूक्ष्मा[2]—वि० स्त्री० दे० 'सूक्ष्म[1]'।

सूक्ष्माक्ष—वि० [स०] सूक्ष्म दृष्टिवाला। तीव्रदृष्टि। तेज नजर का।

सूक्ष्मात्मा—सज्ञा पु० [स० सूक्ष्मात्मन] शिव। महादेव।

सूक्ष्माह्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] महामेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि।

सूक्ष्मेक्षिका—सज्ञा स्त्री० [स०] सूक्ष्म दृष्टि। तेज नजर।

सूक्ष्मैला—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटी इलायची।

सूख(पु)‡—वि० [स० शुष्क] दे० 'सूखा'। उ०—(क) कद मूल फल असन, कबहुँ जल पवनहिं। सूख बेल के पात खात दिन गवनहिं। —तुलसी ग्र०, पृ० ३२. (ख) धर्मपाश और कालपाश पुनि दुव दारुन दोउ फाँसी। सूख ओद लीजै असनी युग रघुनदन सुखरासी।—रघुराज (शब्द०)। (ग) सूख सरोवर निकट जिमि सारस बदन मलीन।—शकरदिग्विजय (शब्द०)।

सूखना—क्रि० अ० [स० शुष्क, हिं० सूख + ना (प्रत्य०)] १ आर्द्रता या गीलापन न रहना। नमी या तरी का निकल जाना। रसहीन होना। जैसे,—कपडा सूखना, पत्ता सूखना, फूल सूखना। उ०—वन मे रूख सूख हर हर ते। मनु नृप सूख बरूथ न करते।—गिरिधर (शब्द०)। २ जल का बिलकुल न रहना या बहुत कम हो जाना। जैसे,—तालाब सूखना, नदी सूखना। ३ उदास होना। तेज नष्ट होना। जैसे,—चेहरा सूखना। ४ नष्ट होना। बरबाद होना। जैसे,—फसल सूखना। ५ आर्द्रता न रहने से कडा होना। ६ डरना। सन्न होना। जैसे,—जान सूखना। ७. दुबला होना। कृश होना। जैसे,—लडका सूख गया।

मुहा०—सूखकर काँटा होना = अत्यत कृश होना। बहुत दुबला-पतला होना। उ०—बदन सूख के दो ही दिन मे काँटा हो गया। —फिसाना०, भा० ३, पृ० २३८। सूखे खेत लहलहाना = अच्छे दिन आना। सूखे धानो पानी पडना = पूर्णतः निराशा की हालत मे अकस्मात् इच्छा पूरी होना। ईप्मित की प्राप्ति होना। उ०—(क) सूखत धानु परा जनु पानी।—मानस, १।२६३। (ख) बेगम समझी थी कि सूखे धानो पानी पडा।—फिसाना०, भा० ३, पृ० २२६।

सयो० क्रि०—जाना।

सूखम(पु)—वि० [स० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—कवन सूखम कवन अस्थूला।—प्राण०, पृ० १।

सूखमना(पु)—सज्ञा स्त्री० [सं० सुषुम्ना, पु०हिं० सुषमन] दे० 'सुषुम्ना'। उ०—सूखमना सुर की सरिता अघ ओघहि दीन-दयाल हरै।—दीन० ग्र०, पृ० १७४।

सूखर—सज्ञा पुं० [स० सूक्ष्म (= शिव)] एक शैव सप्रदाय।

सूखा[1]—वि० [स० शुष्क] [वि० स्त्री० सूखी] १ जिसमे जल न रह गया हो। जिसका पानी निकल, उड या जल गया हो। जैसे—सूखा तालाब, सूखी नदी, सूखी धोती। २ जिसका रस या आर्द्रता निकल गई हो। रसहीन। जैसे,—सूखा पत्ता, सूखा फूल। ३ उदास। तेजरहित। जैसे,—सूखा चेहरा। ४ हृदयहीन। कठोर। रूढ। जैसे,—वह बडा सूखा आदमी है। ५ कोरा। जैसे,—सूखा अन्न, सूखी तरकारी। ६ केवल। निरा। खाली। जैसे,—(क) वह सूखा शेखीबाज है। (ख) उसे सूखी तनखाह मिलती है।

मुहा०—सूखा टरकाना या टालना = आकाक्षी या याचक आदि को बिना उसकी कामना पूरी किए लौटाना। सूखा जवाब देना = साफ इनकार करना। उ०—वे भला आप सूख जाते क्या। मुख न सूखा जवाब सूखा सुन।—चुभते०, पृ० १३। सूखी नसो मे लहू भरना = निराशा मे आशा का सचार करना। उ०—हम सूखी नसो मे लहू भरते थे। चुभते० (दो दो०), पृ० २।

सूखा[2]—सज्ञा पु० १ पानी न बरसना। वृष्टि का अभाव। अवर्षण। अनावृष्टि। उ०—बारह मासउ उपजई तहाँ किया परवेस। दादू सूखा ना पडइ हम आए उस देस।—दादू (शब्द०)।

क्रि० प्र०—पडना।

२ नदी के किनारे की जमीन। नदी का किनारा। जहाँ पानी न हो।

मुहा०—सूखे पर लगना = नाव आदि का किनारे लगना।

३ ऐसे स्थान जहाँ जल न हो। ४ सूखा हुआ तबाकू का पत्ता जो चूना मिलाकर खाया जाता है। उ०—भग तमाखू सुलफा गाँजा, सूखा खूब उडाया रे।—कबीर० श०, भा० १, पृ० २५। ५ भाँग। विजया। ६ एक प्रकार की खाँसी जो बच्चो को होती है, जिससे वे प्राय मर जाते है। हब्बा डब्बा। ७ खाना अग न लगने से या रोग आदि के कारण होनेवाला दुबलापन।

मुहा०—सूखा लगना = सुखडी नामक रोग होना। ऐसा रोग लगना जिससे शरीर बिलकुल सूख जाय।

सूखासण(पु)†—सज्ञा पुं० [स० सुखासन] दे० 'सुखासन'। उ०—जाइ सूखासण बइठो छइ राय।—बी० रासो, पृ० २७।

सूखिम(पु)—वि० [स० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—गई द्वारिका सूखिम वेषा।—नद० ग्र०, पृ० १२८।

सूगध(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्ध] दे० 'सुगध'। उ०—दरबार भीर बरनी न जाइ, सूगध बास नासा अघाइ। विगसत बदन छत्तीस बस, जदुनाथ जनम जनु जदुन बस।—पृ० रा०, १।७१५।

सूघर(पु)—वि० [सं० सुघट] दे० 'सुघड'।

सूच[1]—सज्ञा पु० [स०] कुश का अकुर। दर्भाकुर।

सूच[2]—वि० [स० शुचि] निर्मल। पवित्र। (डिं०)। उ०—चारि वरण सो हरिजन ऊँचे। भए पवित्तर हरि के सुमिरे। मन के उज्ज्वल मन के सूचे।—शब्दवर्णन, पृ० ३०८।

**सूचक**[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० सूचिका] १ सूचना देनेवाला। बतानेवाला। दिखानेवाला। ज्ञापक। बोधक। २ भेद की खबर देनेवाला।

**सूचक**[2]—सज्ञा पुं० १ सूई। सूची। २ सीनेवाला दरजी। ३ नाटककार। सूत्रधार। ४ कथक। ५ बुद्ध। ६ सिद्ध। ७ पिशाच। ८ कुत्ता। ९ बिल्ली। १० कौआ। ११ सियार। गीदड़। १२. कटहरा। जँगला। १३ बरामदा। छज्जा। १४ ऊँची दीवार। १५ खल। विश्वासघातक। १६ गुप्तचर। भेदिया। १७ अयोगव माता और क्षत्रिय पिता से उत्पन्न पुत्र। १८ एक प्रकार का महीन चावल। सूक्ष्म शालिधान्य। सोरो। १९ चुगलखोर। पिशुन। २० शिक्षक (को०)।

यौ०—सूचक वाक्य=भेदिए द्वारा बताई गई बात। भेदिए से मिलनेवाली सूचना।

**सूचन**—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० सूचनी] १ बताने या जताने की क्रिया। ज्ञापन। २ सुगधि फैलाने की क्रिया। दे० 'सूचना'।

**सूचना**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह बात जो किसी को बताने, जताने या सावधान करने के लिये कही जाय। प्रकट करने या जतलाने के लिये कही हुई बात। विज्ञापन। विज्ञप्ति।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—पाना —मिलना।

२ वह पत्र आदि जिसपर किसी को बताने या सूचित करने के लिये कोई बात लिखी हो। विज्ञापन। इश्तहार। ३ अभिनय। ४ दृष्टि। ५ वेधना। छेदना। ६ भेद लेना। ७ हिंसा। मारना। ८ गधयुक्त करना।

**सूचना**(पु)[2]—क्रि० अ० [स० सूचन] बतलाना। जतलाना। प्रकट करना। उ०—हृदय अनुग्रह इदु प्रकासा। सूचत किरन मनोहर हासा।—तुलसी (शब्द०)।

यौ०—सूचनापट्ट=वह पट्ट या तख्ती जिसपर आवश्यक निर्देश लगाए जायँ। नोटिस बोर्ड। सूचनापत्र। सूचनामत्री=सूचना विभाग का सर्वश्रेष्ठ अधिकारी। सूचना विभाग=आवश्यक जानकारी एकत्र करने और उन्हें सबद्ध जनो को विभिन्न प्रकारो से बतानेवाला विभाग।

**सूचनापत्र**—सज्ञा पुं० [स०] वह पत्र या विज्ञप्ति जिसके द्वारा कोई बात लोगों को बताई जाय। वह पत्र जिसमे किसी प्रकार की सूचना हो। विज्ञापन। विज्ञप्ति। इश्तहार।

**सूचनिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] किसी ग्रथ मे क्या वर्णित है इसका सिलसिलेवार विवरण देनेवाली सूची। विषयनिर्देशिका। उ०—या मे इतनी कथा बखानी। ताकी सूचनिका यह जानी। —ब्रज०, पृ० ३।

**सूचनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] सूचनिका। सूची। विषयसूची।

**सूचनीय**—वि० [स०] सूचना करने के योग्य। जताने लायक।

**सूचयितव्य**—वि० [स०] दे० 'सूचनीय'।

**सूचा**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सूचना'।

**सूचा**(पु)[2]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूचित] जो होश मे हो। सावधान। उ०—नागमती कहँ अगम जनावा। गई तपनि बरषा जनु आवा। रही जो मुइ नागिन जस तूचा। जिउ पाएँ तन कै भइ सूचा। —जायसी (शब्द०)।

**सूचा**(पु)[3]—वि० [स० शुद्ध] शुद्ध। साफ। सुच्चा। निखालिस। पवित्र। उ०—यह ससार सकल जग मैला। नाम गहे तेहि सूचा।—कबीर श०, भा०, पृ० ९।

**सूचाचारी**(पु)—वि० [हिं० सूचा+स० आचारी] शुद्धता और आचार विचार माननेवाला। शौचाचारी। उ०—पडित मिसरा सूचाचारी। पाठ पढहिं अतरि अहकारी।—प्राण०, पृ० १८०।

**सूचि**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सूई। २ एक प्रकार का नृत्य। ३ केवडा। केतकी पुष्प। ४ सेना का एक प्रकार का व्यूह जिसमे थोडे मे बहुत तेज और कुशल सैनिक अग्रभाग मे रखे जाते हैं और शेष पिछले भाग मे होते हैं। ५ कटहरा। जँगला। ६ दरवाजे की सिटकनी। ७ निषाद पिता और वैश्य माता से उत्पन्न पुत्र। ८ एक प्रकार का मैथुन। ९ सूप बनानेवाला। शूर्पकार। १० करण। ११ कुशा। श्वेतदर्भ। १२ दृष्टि। नजर। १३ कोई भी सूई की तरह नुकीला सिरा। जैसे, कुशसूचि (को०)। १४ दे० 'सूची'। १५ नाटकीय कर्म। नाट्य अभिनय (को०)। १६ स्तूप (को०)। १७ अगचेष्टा द्वारा सकेत। हावभाव (को०)। १८ वेधन या छेदन क्रिया (को०)।

**सूचि**[2]—वि० [स० शुचि] पवित्र। शुद्ध। (डिं०)।

**सूचिक**—सज्ञा पुं० [स०] सिलाई के द्वारा जीविका निर्वाह करनेवाला, दरजी। सौचिक।

**सूचिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सूई। २ हाथी की सूँड। हस्तिशुड। ३ एक अप्सरा का नाम। ४ केवडा। केतकी।

**सूचिकागृह, सूचिकागृहक**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूचिगृहक'।

**सूचिकाधर**—सज्ञा पुं० [स०] हाथी। हस्ती।

**सूचिकाभरण**—सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार की ओषधि जो सनिपात, विसूचिका आदि प्राणनाशक रोगो की अतिम औषध मानी गई है।

विशेष—इस औषध का बिलकुल अतिम अवस्था मे ही प्रयोग किया जाता है। यदि इससे फल न हुआ तो, कहते हैं, फिर रोगी नही बच सकता। इसके बनाने की कई विधियाँ है। एक विधि यह है कि रस, गधक, सीसा, काष्ठविष और काले साँप का विष इन सबको खरल कर क्रम से रोहित मछली, भैंस, मोर, बकरे और सूअर के पित्त मे भावना देकर सरसो के बराबर गोली बनाई जाती है, जो अदरक के रस के साथ दी जाती है। दूसरी विधि यह है कि काष्ठविष, सर्पविष, दारुमुच प्रत्येक एक एक भाग, हिंगुल तीन भाग, इन सबको रोहित मछली, भैंस, मोर, बकरे और सूअर के पित्त मे एक एक दिन भावना देकर सरसो के बराबर गोली बनाते हैं जो नारियल के जल के साथ देते है। तीसरी विधि यह है कि विष एक पल और रस चार माशे, इन दोनो को एक साथ शरावपुट मे बद करके सुखाते है और बाद दो प्रहर तक बराबर आँच देते है। सनिपात के रोगी को—चाहे वह अचेत हो या मृतप्राय—सिर पर उस्तुरे से क्षत कर सूई की नोक से यह रस लेकर उसमे भर

देते है। साँप के काटने पर भी इसका प्रयोग किया जाता है। कहते है, इन सब प्रयोगो के कारण रोगी के शरीर मे बहुत अधिक गरमी आने लगती है, इसीलिये इनके उपरात अनेक प्रकार के शीतल उपचार किए जाते है।

सूचिकामुख—सज्ञा पुं० [सं०] शख।

सूचिगृहक—सज्ञा पु० [स०] सूई रखने का डब्बा या खोली [को०]।

सूचित—वि० [स०] १ जिसकी सूचना दी गई हो। जताया हुआ। बताया हुआ। कहा हुआ। ज्ञापित। प्रकाशित। २ बहुत उपयुक्त या योग्य। ३ जिसकी हिंसा की गई हो। ४ सकेतित (को०)। ५ वेधन किया हुआ। छिद्रित (को०)।

सूचितव्य—वि० [स०] सूचना के योग्य। सूच्य [को०]।

सूचिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सूई। सूचिका। २ रात्रि। रात [को०]।

सूचिपत्र—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का ऊख। २ शिरियारी। चौपतिया। सिनिवार शाक। ३ दे० 'सूचीपत्र'।

सूचिपत्रक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सूचिपत्र'।

सूचिपुष्प—सज्ञा पु० [स०] केवडा का फूल या केतकी वृक्ष।

सूचिभिन्न—वि० [स०] फूलो की कली जो सूई जैसी नुकीली और ऊपर की ओर विभक्त हो [को०]।

सूचिभेद्य—वि० [स०] १ सूई से भेदने योग्य। २ बहुत घना। जैसे,—सूचिभेद्य अधकार।

सूचिमल्लिका—सज्ञा [स०] नेवारी। नवमल्लिका।

सूचिमुख—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूचीमुख' [को०]।

सूचिरदन—सज्ञा पु० [स०] नेवला।

सूचिरोमा—सज्ञा पु० [स० सूचिरोमन्] सूअर। वराह।

सूचिवत्—सज्ञा पुं० [स०] १ गरुड। २ सूई की तरह नोकदार कोई वस्तु। नुकीली चीज (को०)।

सूचिवदन—सज्ञा पु० [स०] १ नेवला। नकुल। २ मच्छर। मशक।

सूचिशालि—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का महीन चावल। सूक्ष्म शालिधान्य। सोरो।

सूचिशिखा—सज्ञा स्त्री० [स०] सूई की नोक।

सूचिसूत्र—सज्ञा पुं० [स०] सूई मे पिरोने या सीने का धागा।

सूची'—सज्ञा पुं० [स० सूचिन्] १ चर। भेदिया। २. पिशुन। चुगुलखोर। ३ खल। दुष्ट।

सूची'—सज्ञा स्त्री० १ कपडा सीने की सूई। २ दृष्टि। नजर। ३. केतकी। केवडा। ४ सेना का एक प्रकार का व्यूह, जिसमे सैनिक सूई के आकार मे रखे जाते है। दे० 'सूचि'। ५ सफेद कुश। ६ एक ही प्रकार की बहुत सी चीजो या उनके अगो, विषयो आदि की नामावली। तालिका। फेहरिस्त।

यौ०—सूचीपत्र।

७ साक्षी के पाँच भेदो मे से एक भेद। वह साक्षी जो बिना बुलाए स्वय आकर किसी विषय मे साक्ष्य दे। स्वयमुक्ति। ८ पिंगल के अनुसार एक रीति जिसके मात्रिक छदो की सख्या की शुद्धता और उनके भेदो मे आदि अत लघु या आदि अत गुरु की सख्या जानी जाती है। ९ सुश्रुत के अनुसार सूई के आकार का एक प्रकार का यत्र जिसके द्वारा शरीर के क्षतो मे टाँके लगाए जाते थे।

सूची'—वि० [स० सूचिन्] १ रहस्य खोज निकालनेवाला। भेद लेनेवाला। २ गुप्त बात, रहस्य या भेद बतानेवाला। ३ भेदन या छेदन करनेवाला। ४ बतानेवाला। जतानेवाला। व्यक्त या प्रकट करनेवाला। उ०—प्रधान सैनिक के आसन को छीन स्वय विजय सूची चिह्नो को लगा'।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २७०।

सूचीक—सज्ञा पु० [स०] मच्छर आदि ऐसे जतु जिनके डक सूई के समान होते है।

सूचीकटाहन्याय—सज्ञा पुं० [स०] सहज काम पूरा करके कठिन काम करने का दृष्टात। विशेष दे० 'न्याय' (१०४)।

सूचीकर्म—सज्ञा पु० [स० सूचीकर्मन्] सिलाई या सूई का काम जो ६४ कलाओ मे से एक है।

सूचीतुड—सज्ञा पु० [स० सूचीतुण्ड] मशक। मच्छर [को०]।

सूचीदल—सज्ञा पु० [स०] सितावर या सुनिषण्णक नामक शाक। शिरियारी।

सूचीपत्र—सज्ञा पुं० [स०] १ वह पत्र या पुस्तिका आदि जिसमे एक ही प्रकार की बहुत सी चीजो अथवा उनके अगो की नामावली हो। तालिका। २ व्यवसायियो का वह पत्र या पुस्तक आदि जिसमे उनके यहाँ मिलनेवाली सब चीजो के नाम, दाम और विवरण आदि दिए रहते है। तालिका। फेहरिस्त। ३ दे० 'सूचिपत्र'।

सूचीपत्रक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सूचीपत्र'।

सूचीपत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] गाँडर दूब। गड दूर्वा।

सूचीपद्म—सज्ञा पुं० [स०] सेना का एक प्रकार का व्यूह।

सूचीपाश—सज्ञा पु० [स०] सूई का छेद या नाका जिसमे धागा पिरोया जाता है।

सूचीपुष्प—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूचिपुष्प'।

सूचीभेद्य—वि० [स०] दे० 'सूचिभेद्य'। उ०—सूचीभेद्य अधकार मे छिपनेवाली रहस्यमयी का—प्रज्वलित कठोर नियति का—नील आवरण उठाकर झाँकनेवाला।—स्कद०, पृ० २५।

सूचीमुख—सज्ञा पु० [स०] १ सूई का नोक या छेद जिसमे धागा पिरोया जाता है। २ एक नरक का नाम। उ०—सूचीमुख नरकहि कर नाऊँ। ते तहँ जाइ बसावै गाँऊ।—कबीर सा०, भा० ४, पृ० ४६५। ३ हीरक। हीरा। ४ श्वेत कुश। ५ हाथ की एक मुद्रा (को०)। ६ मशक। मच्छर (को०)। ७. पक्षी। चिडिया। (को०)।

सूचीरोमा—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूचिरोमा'।

सूचीवक्त्र'—सज्ञा पुं० [स०] १ स्कद के एक अनुचर का नाम। २. एक असुर का नाम।

सूचीवक्त्र'—वि० १ सूई की तरह मुखवाला। २ अत्यत सँकरा [को०]।

सूचीवक्त्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह योनि जिसका छेद इतना छोटा हो कि वह पुरुष के समग के योग्य न हो। वैद्यक के अनुसार यह बीस प्रकार के योनिरोगो मे से एक है।

सूचीव्यूह—सज्ञा पु० [स०] कौटिल्य द्वारा निर्दिष्ट वह व्यूह जिसमे सैनिक एक दूसरे के पीछे खडे किए गए हो।

सूचीसूत्र—सज्ञा पु० [स०] धागा। दे० 'सूचिसूत्र' [को०]।

सूच्छम(पु) वि० [स० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—ब्रह्म लौ सूच्छम हे कटि राधे कि, देखी न काहू सुनी सुन राखी। सुदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सूच्य—वि० [स०] १ सूचना के योग्य। जनाने लायक। २ जो व्यजित हो। व्यग्य। जैसे, सूच्य अर्थ।

सूच्यग्र—सज्ञा पु० [स०] १ सुई का अग्रभाग। सूई की नोक। २ कटक। काटा (को०)। ३ सूई की नोक के बराबर कोई भी वस्तु। (लश०)।

सूच्यग्रविद्ध—वि० [स०] काँटा या सूई की नोक से छेदा हुआ।

सूच्यग्रस्तभ—सज्ञा पुं० [स० सूच्यग्रस्तम्भ] मीनार।

सूच्यग्रस्थूनक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का तृण। जूर्णा। उलूक। उलप।

सूच्याकार—वि० [स० सूची + आकार] सूई के आकार का। जो लबा और नुकीला हो।

सूच्यार्थ—सज्ञा पुं० [स०] साहित्य मे किसी पद आदि का वह अर्थ जो शब्दो की व्यजना शक्ति से जाना जाता है।

सूच्याम्य[1]—सज्ञा पु० [सं०] चूहा। मूषिक।

सूच्याम्य[2]—वि० [स०] जिसका मुँह सूई की तरह पतला और नुकीला हो।

सूच्याह्व—सज्ञा पुं० [स०] शिरियारी। सितिवर। सुनिषण्णक शाक।

सूछम(पु)—वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'।

यौ०—सूछमतर।

सूछमतर(पु)—वि० [स० सूक्ष्मतर] अत्यत सूक्ष्म। उ०—किधौं वासुकी वधु वासु कीनो रथ ऊपर। आदि शक्ति की शक्ति किधौं सोहनि सूछमतर।—गिरिधर (शब्द०)।

सूछिम(पु)—वि० [स० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—जाके जैसी पीर है तैसी करइ पुकार। को सूछिम को सहज मे को मिरतक तेहि वार।—दादू (शब्द०)।

सूगध—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्ध] सुगध। खशबू। (डिं०)।

सूज(पु)[1]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूझ] दे० 'सूझ'। उ०—मन माँही मव सूज ज राखै, बाहरि के बधन सब नापै।—रामानद०, पृ० ५३।

सूज(पु)[2]—सज्ञा पुं० [स० सूच (=दर्भाकुर)] सूजा का लघु रूप। सूई।

सूज[3]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूजना] दे० 'सूजन'।

सूजन—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूजना] १ सूजने की क्रिया या भाव। २ सूजने की अवस्था। फुलाव। शोथ।

सूजना[1]—क्रि० अ० [फा० सोजिश, तुल० स० शोथ] रोग, चोट या वातप्रकोप आदि के कारण शरीर के किसी अश का फूलना। शोथ होना।

सूजना(पु)[2]—क्रि० अ० [हिं० सूझना] सूझना। दिखाई देना। उ०—गुरुदेव बिना नहि मारग सूजय, गुरु बिन भक्ति न जानै।—सुदर ग्र०, भा० १ (भू०), पृ० ११७।

सूजनी—सज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सुजनी'।

सूजा—सज्ञा पु० [सं० सूची, हिं० सूई, सूजी] १ बडी मोटी सूई। सूआ। उ०—तन कर गुन औ मन कर सूजा सब्द परोहन भारत।—कबीर श०, भा० ३, पृ० १०। २ लोहे का एक औजार जिसका एक सिरा नुकीला और दूसरा चिपटा और छिदा हुआ होता है। इससे कूचबद लोग कूँचे को छेदकर बाँधते है। ३ रेशम फेरनेवालो का सूजे के आकार का लोहे का एक औजार जो 'मझेरू' मे लगा रहता है। ४ खूँटा जो छकडा गाडी के पीछे की ओर उसे टिकाने के लिये लगाया जाता है।

सूजाक—सज्ञा पुं० [फा० सूजाक] मूत्रेद्रिय का एक प्रदाहयुक्त रोग जो दूषित लिंग और योनि के ससर्ग से उत्पन्न होता है। औपसर्गिक प्रमेह।

विशेष इस रोग मे लिंग का मुँह और छिद्र सूज जाता है, ऊपर की खाल सिमट जाती है तथा उसमे खुजली और पीडा होती है। मूत्रनाली मे बहुत जलन होती है और उसे दबाने से सफेद रग का गाढा और लसीला मवाद निकलता है। यह पहली अवस्था है। इसके बाद मूत्रनाली मे घाव हो जाता है, जिससे मूत्रत्याग करने के समय अत्यत कष्ट और पीडा होती है। इद्रिय के छेद मे से पीव के समान पीला गाढा या कभी कभी पतला स्राव होने लगता है। शरीर के भिन्न भिन्न अगो मे पीडा होने लगती है। कभी कभी पेशाब बद हो जाता है या रक्तस्राव होने लगता है। स्त्रियो को भी इससे बहुत कष्ट होता है, पर उतना नही जितना पुरुषो को होता है। इसका प्रभाव गर्भाशय पर भी पडता है जिससे स्त्रियाँ बध्या हो जाती हैं।

सूजी[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शुचि (=शुद्ध) या स० सूची (=सूई सा महीन)] गेहूँ का दरदरा आटा जो हलुआ, लड्डू तथा दूसरे पकवान बनाने के काम मे आता है।

सूजी[2]—सज्ञा स्त्री० [स० सूची] १ सूई। उ०—ता दिन सो नेह भरे, नित मेरे गेह आइ गूथन न देत कहै मैं ही देऊँगी बनाय। वरज्यो न मानै केहू मोहि लागै डर यही कमल मे कर कहूँ सूजी मति गडि जाय।—काव्यकलाप (शब्द०)। २ वह सूआ जिससे गडेरिए लोग कबल की पट्टियाँ सीते है।

सूजी[3]—सज्ञा पुं० [स० सूची] कपडा सीनेवाला। दरजी। सूचिक। उ०—एक सूजी ने आप दडवत कर खडे होकर जोड के कहा, महाराज ! ' ' दया कर कहिए तो बागे पहराऊँ।—लल्ल (शब्द०)।

सूजी[4]—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का सरेस जो माँड और चूने के मल से बनता है और बाजो के पुर्जे जोडने के काम मे आता है।

सूझ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूझना] १ सूझने का भाव। २ दृष्टि। नजर।

यौ०—सूझबूझ = समझ। अक्ल।

३ मन मे उत्पन्न होनेवाली अनूठी कल्पना। उद्भावना। उपज। जैसे—कवियो की सूझ।

सूझना—क्रि० अ० [सं० सज्ञान] १ दिखाई देना। देख पडना। प्रत्यक्ष होना। नजर आना। जैसे,—हमे कुछ नही सूझ पडता। उ०—आँखि न जो सूझत न कानन तैं सुनियत केसोराइ जैसे तुम लोकन मे गाये हो।—केशव (शब्द०)। २ ध्यान मे आना। खयाल मे आना। जैसे,—(क) इतने मे उसे एक ऐसी बात सूझी जो मेरे लिये असभव थी। (ख) उसे कोई बात ही नही सूझती। उ०—असमजस मन को मिटै सो उपाइ न सूझै।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—देना।—पडना।

३ छुट्टी पाना। मुक्त होना। उ०—राजा लियो चोर सो गोला। गोला देत चोर अस बोला। जो महि जनम कियो मैं चोरी। दहै दहन तौ मोरि गदोरी। अस कहि सो गोला दै सूझ्यौ। साहु सिपाही सो द्रुत बूझ्यौ।—रघुराज (शब्द०)।

सूझबूझ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूझना+बूझना] देखने और समझने की शक्ति। समझ। अक्ल।

सूझा—सज्ञा पु० [देश०] फारसी सगीत मे एक मुकाम (राग) के पुत्र का नाम।

सूट—सज्ञा पु० [अ०] १ पहनने के सब कपडे, विशेषत कोट और पतलून आदि। उ०—तन अँगरेजी सूट, बूट पग, ऐनक नैनन।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० १४।

यौ०—सूटकेस।

२ दावा। नालिश। जैसे,—उसने हाईकोट मे तुमपर सूट दायर किया है।

सूटकेस—सज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का चिपटा बक्स जिसमे पहनने के कपडे रखे जाते है।

सूटना—क्रि० स० [देश०] चलाना। फेकना। उ०—हथियारन सूटै नेकु न हूटै खलदल कूटै लपटि लरै।—पद्माकर ग्र०, पृ० २७।

सूटा—सज्ञा पु० [अनु०] मूँह से तवाकू, चरस या गाँजे का धूआँ जोर से खीचना।

क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

सूटन—सज्ञा पुं० [स० शुक, प्रा० सुअ+ट (प्रत्य०), राज० सूट, सूडा, सूओ, सूअडो, सूवटो, सूअटो] सुग्गा। तोता। शुक। उ०—पाँच डार सूटन की आई, उतरे खेत मझारे।—कबीर श०, भा०, पृ० ३५।

सूठरी†—सज्ञा स्त्री० [देश०] भूसा। सठुरी।

सूड—सज्ञा स्त्री० [स० शुण्ड] दे० 'सूँड'।

सूडा, सूडो†—सज्ञा पु० [स० शुक] शुक पक्षी। तोता। उ०—(क) सुणि सूडा सुदरि कहय, पखी पडगन पालि।—ढोला०, दू० ३६७। उ०—(ख) साल्ह कुँवर सूडउ कहइ मालवणी मुख जोइ।—ढोला०, दू० ४०२।

सूत[१]—सज्ञा पुं० [स० सूत्र, प्रा० सुत्त, हिं० सूत] १ रूई, रेशम आदि का महीन तार जिससे कपडा बुना जाता है। ततु। सूत्र।

क्रि० प्र०—कातना।

मुहा०—सूत सूत=जरा जरा। तनिक तनिक। सूत बराबर=बहुत सूक्ष्म। बहुत महीन।

२ रूई का बटा हुआ तार जिससे कपडा आदि सीते है। तागा। धागा। डोरा। सूत्र। ३ बच्चो के गले मे पहनने का गडा। ४ करधनी। उ०—कुजगृह मजु मधु मधुप अमद राजै तामै काल्हि स्यामै विपरीत रति राची री। द्विजदेव कीर कीलकठ की धुनि जैसी तैसियै अभूत भाई सूत धुनि माची री।—रसकुसुमाकर (शब्द०)।

क्रि० प्र०—पहनना।

५ नापने का एक मान। इमारती गज।

विशेष—चार सूत की एक पइन, चार पइन का एक तसू, और चौबीस तसू का एक इमारती गज होता है।

६ पत्थर पर निशान डालने की डोरी।

विशेष—सगतराश लोग इसे कोयला मिले हुए तेल मे डुबाकर इससे पत्थर पर निशान कर उसकी सीध मे पत्थर काटते है।

७ लकडी चीरने के लिये उस पर निशान डालने की डोरी।

मुहा०—सूत धरना=निशान करना। रेखा खीचना। बढई लोग जब किसी लकडी को चीरने लगते हैं, तब सीधी चिराई के लिये सूत को किसी रग मे डुबाकर उससे उस लकडी पर रेखा करते हैं। इसी को सूत धरना कहते है। उ०—मनहुँ भानु मडलहि सवारत, धरयो सूत विधिसुत विचित्र मति।—तुलसी (शब्द०)।

सूत[२]—सज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सूती] १ एक वर्णसकर जाति, मनु के अनुसार जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय के औरस और ब्राह्मणी के गर्भ से है और जिसकी जीविका रथ हाँकना था। २ रथ हाँकनेवाला। सारथि। उ०—कर लगाम लै सूत धूत मजबूत विराजत। देखि बृहदरथपूत सुरथ सूरज रथ लाजत।—गि० दास (शब्द०)। ३ बदी जिनका काम प्राचीन काल मे राजाओ का यशोगान करना था। भाट। चारण। उ०—(क) मागध सूत और बदीजन ठौर ठौर यश गायो।—सूर (शब्द०)। (ख) बहु सूत मागध बदिजन नृप बचन गुनि हरषित चले।—रामाश्वमेध (शब्द०)। ४ पुराणवक्ता। पौराणिक। उ०—बाँचन लागे सूत पुराणा। मागध वशावली बखाना।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—सबसे अधिक प्रसिद्ध सूत लोमहर्षण हुए हैं, जो वेदव्यास के शिष्य थे और जिन्होने नैमिषारण्य मे ऋषियो को सब पुराण सुनाए थे।

५ विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। ६ बढई। सूत्रकार। ७ सूर्य। ८ पारा। पारद। ९ सजय का एक नाम (को०)। १० क्षत्रिया स्त्री मे उत्पन्न वैश्य का पुत्र (को०)।

सूत[३]—वि० १. प्रसूत। उत्पन्न। उ०—राम नही, काम के सूत कहलाए।—अपरा, पृ० २०२। २ प्रेरणा किया हुआ। प्रेरित।

सूति[1]—संज्ञा पु० [स०] १ विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। २ हम।

सूतिका—संज्ञा स्त्री० [स०] १ वह स्त्री जिसने अभी हाल मे बच्चा जना हो। सद्य प्रसूता। जच्चा। २ वह गाय जिसने हाल मे बछडा जना हो। ३ दे० 'सूतिका रोग'।

सूतिका काल—संज्ञा पुं० [स०] प्रसव का समय। जननकाल।

सूतिकागार—संज्ञा पुं० [स०] वह कमरा या कोठरी जिसमे स्त्री बच्चा जने। सौरी। प्रसवगृह। अरिष्ट।

विशेष—वैद्यक के अनुसार सूतिकागार आठ हाथ लंबा और चार हाथ चौडा होना चाहिए तथा इसके उत्तर और पूर्व की ओर द्वार होने चाहिए।

सूतिकागृह—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूतिकागार'।

सूतिकागेह—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूतिकागार'।

सूतिकाभवन—संज्ञा पु० [स०] दे० 'सूतिकागार'।

सूतिकामारुत—संज्ञा पुं० [स०] प्रसव की पीडा [को०]।

सूतिकारोग—संज्ञा पु० [सं०] प्रसूता को होनेवाले रोग।

विशेष—वैद्यक के अनुसार सूतिकारोग अनुचित आहार विहार, क्लेश, विषमासन तथा अजीर्णावस्था मे भोजन करने से होते हैं। प्रसूता के अगो का टूटना, अग्निमाद्य, निर्बलता, शरीर का काँपना, सूजन, ग्रहणी, अतिसार, शूल, खाँसी, ज्वर, नाक, मुँह से कफ निकलना आदि सूतिकारोग के लक्षण है।

सूतिकाल—संज्ञा पुं० [स०] प्रसव करने या बच्चा जनने का समय।

सूतिकावल्लभ रस—संज्ञा पुं० [स०] सूतिकारोग की एक औषध।

विशेष—यह रस पारे, गधक, सोने, चाँदी, स्वर्णमाक्षिक, कपूर, अभ्रक, हरताल, अफीम, जावित्री और जायफल के सयोग से बनता है। ये सब चीजे बराबर बराबर लेकर इनमे मोथे, खिरैटी और मोचरस की भावना दी जाती है। अनतर दो दो रत्ती की गोलियाँ बनाई जाती हैं। वैद्यक के अनुसार इसके सेवन से सूतिकारोग शीघ्र दूर हो जाता है।

सूतिकावास संज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूतिकागार'।

सूतिकाषष्ठी—संज्ञा स्त्री० [स०] सतान के जन्म से छठे दिन होनेवाली पूजा तथा अन्य कृत्य। छठी।

सूतिकाहर रस—संज्ञा पु० [सं०] सूतिकारोग का एक औषध।

विशेष—इस रस के निर्माण मे हिंगुल, हरताल, शखभस्म, लौह, खर्पर, धतूरे के बीज, यवक्षार और सुहागे का लावा बराबर बराबर पडता है। इन चीजों मे बहेडे के क्वाथ की भावना देकर मटर के बराबर गोली बनाते हैं। कहते हैं, इसके सेवन से सूतिकारोग दूर हो जाता है।

सूतिग[1]—संज्ञा पुं० [स० सूतक] दे० 'सूतक'।

सूतिगृह—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूतिकागार'।

सूतिमारुत—संज्ञा पुं० [स०] बच्चा जनने की समय की पीडा। प्रसव-पीडा।

सूतिमास—संज्ञा पुं० [सं०] वह मास जिसमे किसी स्त्री को सतान उत्पन्न हो। प्रसवमास। बजनन।

सूतिरोग—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूतिकारोग' [को०]।

सूतिवात—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'सूतिमारुत'।

सूती[1]—वि० [हिं० सूत + ई (प्रत्य०)] सूत का बना हुआ। जैसे—सूती कपडा। सूती गलीचा।

सूती[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति प्रा० सुत्ति] १ सीपी। उ०—सूती मे नहिं सिंधु समाई।—विश्राम (शब्द०)। २ वह सीपी जिससे डोडे मे की अफीम काछते है।

सूती[3]—संज्ञा स्त्री० [स० सूत] सूत की पत्नी। भाटिन।

सूतीगृह—संज्ञा पु० [स०] बच्चा होने का स्थान। प्रसवगृह। उ०—अखुटत परत, सुविह्वल भयी। डरत डरत सूतीगृह गयो।—नद० ग्र०, पृ० २३१।

सूतीघर—संज्ञा पु० [हिं० सूती + घर] दे० 'सूतीगृह'।

सूतीमास—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूतिमास'।

सूत्कार—संज्ञा पु० [स०] दे० 'सीत्कार'।

सूत्तर—वि० [सं०] १ बहुत श्रेष्ठ। बहुत बढकर। २ माकूल या उचित (जवाब)। ३ अत्यत उत्तर। धुर उत्तर [को०]।

सूत्थान[1]—वि० [सं०] चतुर। होशियार।

सूत्थान[2]—संज्ञा पुं० सम्यक् उत्थान या चेष्टा [को०]।

सूत्पर—संज्ञा पुं० [स०] शराब चुवाने की क्रिया। सुरासधान।

सूपत्लावती—संज्ञा स्त्री० [स०] मार्कंडेयपुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

सूत्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुत्य'।

सूत्यशौच—संज्ञा, पुं० [स०] 'सूतकाशौच' [को०]।

सूत्याशौच—संज्ञा स्त्री० [स०] १ यज्ञ के उपरात होनेवाला स्नान। अवभृत। २ सोमरस निकालने की क्रिया। ३ सोमरस पीने की क्रिया।

सूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूत। ततु। तार। तागा। डोरा। २ यज्ञसूत्र। यज्ञोपवीत। जनेऊ। ३ प्राचीन काल का एक मान। ४ रेखा। लकीर। ५ करधनी। कटिभूषण। ६ नियम। व्यवस्था। ७ थोडे अक्षरो या शब्दो मे कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करता हो। सारगर्भित सक्षिप्त पद या वचन। जैसे,—ब्रह्मसूत्र, व्याकरणसूत्र।

विशेष—हमारे यहाँ के दर्शन आदि शास्त्र तथा व्याकरण सूत्र रूप मे ही ग्रथित है। ये सूत्र देखने मे तो बहुत छोटे वाक्यो के रूप मे होते है, पर उनमे बहुत गूढ अर्थ गर्भित होते है।

८ सूत्र रूप मे रचित ग्रथ। जैसे, अष्टाध्यायी, गृह्यसूत्र आदि (को०)। ९ कारण। निमित्त। मूल। १० पता। सूराग। सकेत। ११ एक प्रकार का वृक्ष। ११ सूत का टेर (को०)। १२ योजना। १३ ततु। रेशा। जैसे, मृणालसूत्र (को०)। १४ कठपुतली मे लगी हुई वह डोरी जिसके आधार पर उन्हें नचाते हैं (को०)।

सूत्रकंठ—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रकण्ठ] १ ब्राह्मण।

विशेष—सूत्र कठस्थ रहने के कारण अथवा गले में यज्ञसूत्र पहनने के कारण ब्राह्मण सूत्रकठ कहलाते है।

२ कबूतर। कपोत। ३ खजन। खजरीट।

सूत्रक—सज्ञा पुं० [ सं० ] १ सूत। ततु। तार। २ हार। ३ आटे या मैदे की बनी हुई सेवई। ४ कौटिल्य के अनुसार लोहे के तारो का बना हुआ कवच।

सूत्रकर्ता—सज्ञा पुं० [ स० सूत्रकर्तृ ] सूत्रग्रथ का रचयिता। सूत्रो का प्रणेता।

सूत्रकर्म—सज्ञा पुं० [ सं० सूत्रकर्मन् ] १ बढई का काम। २ मेमार या राज का काम।

सूत्रकर्मकृत—सज्ञा पुं० [ सं० ] १। २ गृहनिर्माणकारी। वास्तु-शिल्पी। मेमार। राज।

सूत्रकार—सज्ञा पुं० [ सं० ] १ वह जिसने सूत्रो की रचना की हो। सूत्रो का रचयिता। २. बढई। ३ जुलाहा। ततुवाय। ४ मकडी।

सूत्रकृत्—सज्ञा पुं० [सं०] १ सूत्रो का रचयिता। सूत्रकार। २ बढई। ३ मेमार। राज।

सूत्रकोण—सज्ञा पुं० [ सं० ] डमरु।

सूत्रकोणक—सज्ञा पुं० [ सं० ] दे० 'सूत्रकोण'।

सूत्रकोश—सज्ञा पुं० [ सं० ] सूत की अटी। पेचक। लच्छा।

सूत्रक्रीडा—सज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार का सूत का खेल, जो ६४ कलाओ मे से एक है।

सूत्रगडिका—सज्ञा स्त्री० [ सं० सूत्रगण्डिका ] एक प्रकार का लकडी का औजार जिसका उपयोग प्राचीन काल मे ततुवाय लोग कपडा बुनने मे करते थे।

सूत्रग्रथ—सज्ञा पुं० [ सं० सूत्रग्रन्थ ] सूत्र रूप मे रचित ग्रथ। वह ग्रथ जो सूत्रो मे हो। जैसे—साख्यसूत्र।

सूत्रग्रह—वि० [ सं० ] सूत धारण या ग्रहण करनेवाला।

सूत्रग्राही—सज्ञा पुं० [ सं० सूत्रग्राहिन् ] राजगीर। वास्तुशिल्पी [को०]।

सूत्रण—सज्ञा पुं० [ स० ] १ सूत्र बनाने या रचने की क्रिया। २ सूत्र बटने की क्रिया। सूत्र बटने का काम। ३ क्रमबद्ध या सिलसिले से सजाना (को०)।

सूत्रततु—सज्ञा पुं० [ सं० सूत्रतन्तु ] १ सूत। तार। २ अध्यवसाय। शक्ति [को०]।

सूत्रतर्कुटी—सज्ञा स्त्री० [ सं० ] तकला। टेकुआ।

सूत्रदरिद्र—वि० [ स० ] ( वस्त्र ) जिसमे सूत कम हो। सूतहीन। झँझरा। झिल्लड।

सूत्रधर—सज्ञा पुं० [ सं० ] १ वह जो सूत्रो का पडित हो। २ दे० 'सूत्रधार'—१। उ०—विधि हरि वदित पाय, जग नाटक के सूत्रधर। —शकर दि० (शब्द०)।

सूत्रधर'—वि० सूत्र या सूत धारण करनेवाला।

सूत्रधार—सज्ञा पुं० [सं०] १ नाट्यशाला का अधिष्ठाता या प्रधान नट, जो भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार, पूर्वरग अर्थात् नादी-पाठ के उपरात सब जोगो को नाटक की प्रस्तावना करता है। विशेष दे० 'नाटक'। २ बढई। सुथार। ३ शिव का एक नाम। ४ पुराणानुसार एक वर्णसकर जाति जो लकडी आदि बनाने और चारण या भाटो का काम करती है।

विशेष—ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार इस जाति की उत्पत्ति सुद्रा माता और विश्वकर्मा पिता से है।

सूत्रधारी'—सज्ञा स्त्री० [सं०] सूत्रधार अर्थात् नाट्यशाला के अधिष्ठायक की पत्नी। नटी।

सूत्रधारी'—सज्ञा पुं० [सं० सूत्रधारिन्] सूत धारण करनेवाला।

सूत्रधृक्—सज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'सूत्रधार'। २ वास्तुशिल्पी। मेमार। राज।

सूत्रपदी—वि० स्त्री० [सं०] गद्य से अर्थात् पद्य बनानेवाली [को०]।

सूत्रपात—सज्ञा पुं० [सं०] १ प्रारभ। शुरू। क्रि० प्र०—करना।—होना—इस काम का सूत्रपात हो गया। २ नाश। नाशना (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सूत्रपिटक—सज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध धर्म का एक प्रसिद्ध ग्रथ (पाली० सुत्तपिटक)। विशेष दे० 'पिटक'।

सूत्रपुष्प—सज्ञा पुं० [सं०] कपास का पौधा।

सूत्रप्रोत—वि० [सं०] सूत मे गथित या बद्ध [को०]।

सूत्रबद्ध—वि० [सं०] १ दे० 'सूत्रप्रोत'। २ सूत्र के रूप मे निबद्ध या रचित (को०)।

सूत्रभिद्—सज्ञा पुं० [सं०] कपडे सीनेवाला। दर्जी।

सूत्रभृत्—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूत्रधार'।

सूत्रमध्यभू—सज्ञा पुं० [सं०] यज्ञोपवीत। जनेऊ। विशेष। तुदुस। धुना।

सूत्रयत्र—सज्ञा पुं० [सं० सूत्रयन्त्र] १ करघा। २ अरगनी। अलगनी। ३ सूत का बना जाल।

सूत्रयी—वि० [सं० सूत्र] सूत्र जानने या रचनेवाला। उ०—त्रिवेद त्रिकाल त्रयी वेदज्ञर्ता। त्रिशोला सूती सूत्रयी लोकभर्ता।—केशव (शब्द०)।

सूत्रला—सज्ञा स्त्री० [सं०] तकला। टेकुआ।

सूत्रवान कर्मात—सज्ञा पुं० [सं० सूत्रवान् कर्मान्त] कपडा बुनने का कारखाना।

विशेष—चद्रगुप्त के समय मे राज अपनी ओर से इस ढग के कारखाने खडा करता था और लोगो को मजदूरी देकर उनसे काम लेता था।

सूत्रवाप—सज्ञा पुं० [सं०] सूत बुनने की क्रिया। वपन। बुनाई।

सूत्रविद्—सज्ञा पुं० [सं०] सूत्रो का ज्ञाता या पडित।

सूत्रवीणा—सज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन काल की एक प्रकार की वीणा जिसमे तार की जगह बजाने के लिये सूत्र लगे रहते थे।

सूत्रवेष्टन—सज्ञा पुं० [सं०] १ करघा। ढरकी। २ बुनने की क्रिया। वयन। बुनना। ३ सूत का बधन।

सूत्रशाख—पज्ञा पुं० [सं०] शरीर।

सूत्रशाला—सज्ञा स्त्री० [स०] सूत कातने या इकट्ठा करने का कारखाना।

विशेष—चंद्रगुप्त के समय मे यह नियम था कि जो स्त्रियाँ बडे तडके अपना काता हुआ सूत सूत्रशाला मे ले जाती थी, उनको उसी समय उसका मूल्य मिल जाता था। इस प्रकार स्त्रियो की जीविका का उपयुक्त प्रबध हो जाता था।

सूत्रसग्रह—सज्ञा पुं० [स० सूत्रसङ्ग्रह] १ वह व्यक्ति जो लगाम पकडता है। अश्व के निश्चित स्थान पर रुकने के समय बागडोर को थामनेवाला जिससे सवार नीचे उतर सके। २ सूत्रो का सग्रह (को०)।

सूत्रस्थान—सज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत का प्रथम अध्याय जिसमे शरीर और रोगादि का विवरण है [को०]।

सूत्राग—सज्ञा पुं० [स० सूत्राङ्ग] उत्तम काँसा।

सूत्रात—सज्ञा पु० [स० सूत्रान्त] बौद्ध सूत्र।

सूत्रातक—सज्ञा पु० [स० सूत्रान्तक] बौद्ध सूत्रो का ज्ञाता या पडित।

सूत्रा—सज्ञा स्त्री० [स० सूत्रकार] मकडी। (अनेकार्थ०)।

सूत्रात्मा—सज्ञा पु० [स० सूत्रात्मन्] १ जीवात्मा। २ एक प्रकार की परम सूक्ष्म वायु जो धनजय से भी सूक्ष्म कही गई है।

सूत्राध्यक्ष—सज्ञा पुं० [स०] कपडो के व्यापार का अध्यक्ष।

सूत्रामा—सज्ञा पुं० [सं० सूत्रामन्] इद्र का एक नाम।

सूत्राली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ माला। हार। २ गले मे पहनने की मेखला।

सूत्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हार। सूत्रक। २ सेवई [को०]।

सूत्रित—वि० [स०] १. सूत्र रूप मे कथित या रचित। २ सूत से युक्त। ३ सिलसिलेवार लगाया हुआ [को०]।

सूत्री[1]—सज्ञा पुं० [सं० सूत्रिन्] [वि० स्त्री० सूत्रिणी] १ कौआ। काक। २ दे० 'सूत्रधार'।

सूत्री[2]—वि० १ सूत्रयुक्त। जिसमे सूत्र हो। २ क्रम से युक्त। नियम-युक्त। सिलसिलेवार (को०)।

सूत्रीय—वि० [स०] सूत्र सबधी। सूत्र का।

सूथन[1]—सज्ञा स्त्री० [देश०] पायजामा। सुथना। उ०—बेनी सुभग नितबनि डोलत मदगामिनी नारी। सूथन जघन बाँधि नाराबँद तिरनी पर छबिभारी।—सूर (शब्द०)।

सूथन[2]—सज्ञा पुं० बरमा, स्याम और मणिपुर के जगलो मे होनेवाला एक प्रकार का पेड।

विशेष—इसकी लकडी बहुत अच्छी होती है और इसका रस वारनिश का काम देता है। इसे 'खेऊ' भी कहते हैं।

सूथनी—सज्ञा स्त्री० [देश०] १ स्त्रियो के पहनने का पायजामा। सुथना। २ एक प्रकार का कद।

सूथार†—सज्ञा पुं० [स० सूत्रकार प्रा० सुत्त+आर, पु०हिं० सुतार] बढई। सुतार। खाती। उ०—जब बोल्यो बीदो सूथारू। है स्वामी की गती अपारू।—राम० धर्म०, पृ० ३६५।

सूद[1]—सज्ञा पुं० [फा०] १ लाभ। फायदा। २. व्याज। वृद्धि।

क्रि० प्र०—चढना।—देना।—पाना।—लगना।—लेना।—होना।

मुहा०—सूद दर सूद=व्याज पर व्याज। चक्रवृद्धि। सूद पर लगाना=सूद लेकर रुपया उधार देना।

सूद[2]—सज्ञा पुं० [स०] १ रसोइया। सूपकार। पाचक। २ पकी हुई दाल, रसा, तरकारी, आदि। ३ सारथि का काम। सारथ्य। ४ अपराध। पाप। ५ दोष। ऐब। ६ एक प्राचीन जनपद का नाम। ७ लोध्र। लोध। ८ विध्वस। विनाश (को०)। ९ कूप। कुआँ (को०)। १०. कीचड। कर्दम (को०)। ११ व्यजन। १२ स्रोत। चश्मा। झरना (को०)। १३ गिराना। चुआना। ढालना (को०)।

सूदक—वि० [सं०] विनाश करनेवाला।

सूदकर्म—सज्ञा पु० [स० सूदकर्मन्] रसोइए का काम। रधन। पाक-क्रिया। भोजन बनाना।

सूदकशाला—सज्ञा स्त्री० [स० सूदशाला] रसोईघर। पाकशाला। (डिं०)।

सूदखोर—सज्ञा पुं० [फा० सूदखोर] वह जो खूब सूद या व्याज लेता हो।

सूदखोरी—सज्ञा स्त्री० [फा० सूदखोरी] सूदखोर का काम। सूद या व्याज का कारोबार [को०]।

सूदता—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूदत्व'।

सूदत्व—पज्ञा पुं० [स०] सूद या रसोइए का पद या काम। रसोईदारी।

सूदन[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० सूदनी] १ विनाश करनेवाला। जैसे—मधुसूदन। रिपुसूदन। उ०—नमो नमस्ते बारबार। मदन सूदन गोबिद मुरार।—सूर (शब्द०)। २ प्यारा। प्रिय (को०)।

सूदन[2]—सज्ञा पु० १ बध या विनाश करने की क्रिया। हनन। २ अगीकार या स्वीकार करने की क्रिया। अगीकरण। ३ फेकने की क्रिया। ४ हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि का नाम जो मथुरा के रहनेवाले थे और जिनका लिखा 'सुजानचरित्र' वीर रस का एक प्रसिद्ध काव्य है।

सूदना(५)—क्रि० स० [स० सूदन] नाश करना। उ०—मुदित मन वर वदन सोभा उदित अधिक उछाहु। मनहुँ दूरि कलक करि ससि समर सूदयो राहु।—तुलसी (शब्द०)।

सूदर†—सज्ञा पु० [स० शूद्र] शूद्र। (डिं०)।

सूदशाला—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ भोजन बनता हो। रसोईघर। पाकशाला।

सूदशास्त्र—सज्ञा पुं० [सं०] भोजन बनाने की कला। पाकशास्त्र।

सूदा—सज्ञा पुं० [देश०] ठगो के गरोह का वह आदमी जो यात्रियो को फुसलाकर अपने दल मे ले आता है। (ठग०)।

सूदाध्यक्ष—सज्ञा पुं० [स०] रसोइयो का मुखिया या सरदार। पाक-शाला का अधिकारी।

सूदि—वि० स्त्री० [स०] दे० 'सूदी'।

**सूदित**—वि० [स०] १ आहत। घायल। जख्मी। २ जो नष्ट हो गया हो। विनष्ट। ३ जो मार डाला गया हो। निहत।

**सूदितृ[1]**—वि० [सं०] वध या विनाश करनेवाला।

**सूदितृ[2]**—संज्ञा पु० रसोइया। पाककर्ता। पाचक।

**सूदी**—वि० [फा० सूद] १ (पूँजी या रकम) जो सूद या ब्याज पर हो। ब्याजू। २ ब्याज पर लिया हुआ (रुपया)।

**सूदी[1]**—वि० [स० सूदिन्] उफनकर या ऊपर से बहनेवाला [को०]।

**सूद्र**—संज्ञा पुं० [सं० शूद्र] दे० 'शूद्र'।

**सूध(ऊ)[1]**—वि० [स० शुद्ध, प्रा० सुद्ध] दे० 'सूधा'। उ०—(क) नाथ करहु बालक पर छोहू। सूध दूधमुख करिय न कोहू।—तुलसी (शब्द०)। (ख) काह करउँ सखि सूध सुभाऊ। दाहिन बाम न जानउँ काऊ।—तुलसी (शब्द०)।

**सूध[2]**—वि० दे० 'शुद्ध'। उ०—माया सो मन बीगडा ज्यो काँजी करि दूध। है कोई ससार मे मन करि देवइ सूध।—दादू (शब्द०)।

**सूधा[1]**—क्रि० वि० सीधा। उ०—दूसर मारग सुनु मन लाई। देश विदर्भ सूध यह जाई।—सबलसिंह (शब्द०)।

**सूधना(ऊ)**—क्रि० अ० [स० शुद्ध] सिद्ध होना। सत्य होना। ठीक होना। उ०—ऐसे सुतहि पिया जो दूधा गुन हरि तासु मनोरथ सूधा। —गिरिधरदास (शब्द०)।

**सूधरा(ऊ)**—वि० [स० शुद्धतर] दे० 'सूधा'।

**सूधा**—वि० [स० शुद्ध] [वि० स्त्री० सूधी] १ सीधा। सरल। भोला। निष्कपट। उ०—को अस दीन दयाल भयो दशरत्थ के लाल से सूधे सुभायन। दौरे गयद उबारिबे को प्रभु वाहन छोडि उवाहने पायन।—पद्माकर (शब्द०)। २ जो टेढा न हो। सीधा। उ०—इमि कहि सबन सहित तब ऊधो। गए नद गह गहि मग सूधो।—गिरिधरदास (शब्द०)। ३ इस प्रकार पडा हुआ कि मुँह, पेट आदि शरीर का अगला भाग ऊपर की ओर हो। चित। ४ समुख का। सामने का। उ०—मुदित मन वर वदन सोभा उदित अधिक उछाह। मनहु दूरि कलक करि ससि समर सूधो राहु।—तुलसी (शब्द०)। ५ जो उलटा न हो। जो ठीक और साधारण स्थिति मे हो। ६ जो सीधी रेखा मे चला गया हो। जिसमे वक्रता न हो। उ०—सूधी अँगुरि न निकसै घीऊ।—जायसी (शब्द०)।

**मुहा**—सूधी सूधी सुनाना = खरी खरी कहना। सूधी सहना = खरी खरी सुनना। उ०—कबहूँ फिर पाँव न दैहौं यहाँ भजि जैहौ तहाँ जहाँ सूधी सहौ।—पद्माकर (शब्द०)।

**विशेष**—और अधिक अर्थों तथा मुहावरो के लिये दे० 'सीधा'।

**सूधि[1]**—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सुधि'। उ०—तातें इनको देखि कै श्रीठाकुर जी को श्रीस्वामिनी जी की सूधि आवति हैं।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १०८।

**सूधे**—क्रि० वि० [हिं० सूधा] सीधे से। उ०—(क) सूधे दान काहे न लेत। —सूर (शब्द०)। (ख) हौं बड हौं बड बहुत कहावत सूधे कहत न बात। योग न युक्ति ध्यान नहिं पूजा वृद्ध भए अकुलात।—सूर (शब्द०)। (ग) भावै सोतै करि वाको भामिनी भाग बडे वश चौकडि पायो। कान्ह ज्यो सूधे जू चाहत नाहिनै चाहति है अब पाइ लगायो।—केशव (शब्द)।

**मुहा०**—सूधे सूध = कोरा। साफ साफ। उ०—सूधै सूध जवाब न दीजै।—विश्राम (शब्द०)।

**सून[1]**—संज्ञा पुं० [स०] १ प्रसव। जनन। २ कली। कलिका। ३ फूल। पुष्प। प्रसून। उ०—चुनते वे मुनि हेतु सून थे।—साकेत, पृ० ३४४। ४ फल। ५ पुत्र। उ०—(क) नद सून पद लालन लोभै। रमा रसिकिनी पावति छोभै।—घनानद, पृ० २६४। (ख) श्री वसुदेव सून है नद कुमार कहावत।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ६१।

**सून[2]**—वि० १ खिला हुआ। विकसित (पुष्प)। २ उत्पन्न। जात। ३ रिक्त। खाली। शून या शून्य (को०)।

**सून(ऊ)[3]**—संज्ञा पुं० [स० शून्य, प्रा० सुण्ण (सून)] दे० 'शून्य'। उ०—(क) तुलसी निज मन कामना चहत सून कहँ सेइ। वचन गाय सबके विविध कहहु पयस केहि देइ।—तुलसी (शब्द०)। (ख) नाम राम को अक है सब साधन है सून। अक गए कछु हाथ नहिं अक रहे दस गून।—तुलसी (शब्द०)।

**सून[4]**—वि० १ निर्जन। जनशून्य। सूना। सुनसान। खाली। उ०—(क) इहाँ देखि घर सून चोर मूसन मन लायो। हीरा हेरि निकारि भवन बाहर धरि आयो।—विश्राम (शब्द०)। (ख) हनहु सक हमको एहि काला। अब मोहि लगत जगत जजाला। नहिं कल बिना शेषपद देखे। बिन प्रभु जगत सून मम लेखे।—रघुराज (शब्द०)। (ग) मँदिर सून पिउ अनतै बसा। सेज नागिनी फिर फिर डसा।—जायसी (शब्द०)। २ रहित। हीन। उ०—निरखि रावण भयावन अपावन महा जानकी हरण करि चलो शठ जात है। मन्यो अति कोप करि हनन की चोप करि लोप करि धर्म अब क्यो न ठहरात है। जानि थैल सून नृप सूत रमणी हरी करी करणी कठिन अब न बचि जात है। —रघुराज (शब्द०)।

**सून[5]**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत बडा सदाबहार पेड जो शिमले के आसपास के पहाडो पर बहुत होता है। इसकी लकडी बहुत मजबूत होती है और इमारतो मे लगती है। इसे 'चिन' भी कहते हैं।

**सूनशर**—संज्ञा पु० [स०] कामदेव।

**सूनसान**—वि० [स० शून्य स्थान] दे० 'सुनसान'। उ०—पर तनक थिर होकर सुनने से ऐसे सूनसान और सन्नाटे मे भी किसी की दुखभरी रुलाई सुनाई पडती है।—ठेठ०, पृ० ३२।

**सूना[1]** वि० [स० शून्य] [वि० स्त्री० सूनी] जिसमे या जिसपर कोई न हो। जनहीन। निर्जन। सुनसान। खाली। जैसे—सूना घर, सूना रास्ता, सूना सिंहासन। उ०—(क) जात हुती निज गोकुल मे हरि आवै तहाँ लखिकै मग सूना। तासो कहौं पदमाकर यो अरे साँवरौ बावरे तै हमैं छू ना।—पद्माकर

( शब्द० )। (ख) राम कहाँ गए री माता। सून भवन सिंहासन सूनो नाही दशरथ ताता।—सूर ( शब्द० )।

क्रि० प्र०—पडना।—करना।—होना।

मुहा०- सूना लगना या सूना सूना लगना = निर्जीव मालूम होना। उदास मालूम होना।

सूना¹—सज्ञा पुं० [ सं० शून्य ] एकात। निर्जन स्थान।

सूना²—सज्ञा स्त्री० [ सं०] १ पुत्री। बेटी। २ वह स्थान जहाँ पशु मारे जाते हैं। बूचडखाना। कसाईखाना। ३ मास का विक्रय। मास की बिक्री। ४ गृहस्थ के यहाँ ऐसा स्थान या चूल्हा, चक्की, ओखली, घडा, झाड मे से कोई चीज जिससे जीवहिंसा की सभावना रहती है। विशेष दे० 'पचसूना'। ५ गलशुडी। जीभी। ६ हाथी के अकुश का दस्ता। ७ हत्या। घात। विध्वसन। ८ प्रकाश की किरण (को०)। ९ नदी। सरिता (को०)। १० गले की ग्रथियो का शोथ (को०)। ११ हाथी की सूँड (को०)। १२ मेखला। शृखला (को०)।

यौ०—सूनाध्यक्ष—बूचडखाने का निरीक्षक। सूनावत् = बूचडखाने का मालिक।

सूनादोष—सज्ञा पुं० [स०] चूल्हा, चक्की, ओखली, मूसल, झाड और पानी के घडे से होनेवाली जीवहिंसा का दोष या पाप। विशेष दे० 'पचसूना'।

सूनापन—संज्ञा पुं० [हिं० सूना+पन (प्रत्य०)] १ सूना होने का भाव। २ सन्नाटा। एकात।

सूनिक—सज्ञा पुं० [स०] १ मास बेचनेवाला। व्याध। २ शिकारी। अहेरी (को०)।

सूनी—सज्ञा पु० [स० सूनिन्] १ मास बेचनेवाला। व्याध। बूचड। २ शिकारी (को०)।

सूनु—सज्ञा पुं० [सं०] १ पुत्र। सतान। २ छोटा भाई। अनुज। ३ नाती। दौहित्र। ४ एक वैदिक ऋषि का नाम। ५ सूर्य। ६ आक। अर्क वृक्ष। ७ वह जो सोमरस चुवाता हो।

सूनू—सज्ञा स्त्री० [सं०] कन्या। पुत्री। बेटी। लडकी।

सूनृत¹—संज्ञा पुं० [स०] १ सत्य और प्रिय भाषण (जो जैन धर्मानुसार सदाचरण के पाँच गुणो मे से एक है)। २ आनद। मगल। कल्याण।

सूनृत²—वि० १ सत्य और प्रिय। २ अनुकूल। दयालु। ३ प्रिय (को०)। ४ सदाशापूर्ण (को०)।

सूनृता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सत्य और प्रिय भाषण। २ सत्य। ३. धर्म की पत्नी का नाम। ४ उत्तानपाद की पत्नी का नाम। ५ एक अप्सरा का नाम। ६ ऊषा (को०)। ७. खाद्य। आहार (को०)। ८ उत्कृष्ट सगीत।

सून्मद—वि० [सं०] दे० 'सून्माद'।

सून्माद—वि० [सं०] जिसे उन्माद रोग हुआ हो। पागल।

सून्य—सज्ञा पुं० [स० शून्य] दे० 'शून्य'। उ० सून्य मे जोति जगमग जगाई।—कबीर श०, भा० ४, पृ १६।

सूप¹—सज्ञा पुं० [सं०] १ मूँग, मसूर, अरहर आदि की पकी हुई दाल। २ दाल का जूस। रसा। ३ रसे की तरकारी आदि मसालेदार व्यजन। ४ बरतन। भाड। भाँडा। ५ रसोइया। पाचक। ६ बाण। तीर। ७ मनाना।

सूप²—सज्ञा पुं० [सं० शूर्प] अनाज फटकने का बना हुआ पात्र। सरई या सीक का छाज। उ०—(क) देखो अद्भुत अविगति की गति कैसो रूप धरयो है हो। तीन लोक जाके उदरभवन सो सूप के कोन परयो है हो।—सूर (शब्द०)। (ख) राजन दीन्हे हाथी रानिन्ह हार हो। भरिगे रतन पदारथ सूप हजार हो। —तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—फटकना।

मुहा०—सूपभर = बहुत सा। बहुत अधिक। सूप क्या कहे छलनी को जिसमे नौ सौ छेद = जिसमे खुद ऐब हो वह दूसरे के ऐब एव बुराई को दूर भगानेवाले से क्या कह सकता है। उ०—सूप क्या कहे छलनी को जिसमे नौ सौ छेद। तुम और हमको ललकारो।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ४७१।

सूप³—सज्ञा पु० [देश०] १ कपडे या मन का झाडू जिससे जहाज के डेक आदि साफ किए जाते हैं। (लश०)। २. एक प्रकार का काला कपडा।

सूपक—सज्ञा पुं० [सं० सूप] रसोइया। उ०—धीर सूर विद्वान् जो मिष्ट बनावै अन्न। सूपक कीजै ताहि जो पुत्र पौत्र सपन्न।—सीताराम (शब्द०)।

सूपकर्ता—सज्ञा पुं० [स० सूपकर्तृ] दे० 'सूपकार'।

सूपकार—सज्ञा पुं० [स०] भोजन बनानेवाला। रसोइया। पाचक। उ०—तहाँ सूपकारन मुनिराई। मुनिन हेत किय पाक बनाई। —रामाश्वमेध (शब्द०)।

सूपकारी—सज्ञा पुं० [स० सूपकारिन] दे० 'सूपकार'। उ०—आमन उचित सबहि नृप दीन्हें। बोलि सूपकारी सब लीन्हें।—तुलसी (शब्द०)।

सूपकृत्—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूपकार'।

सूपच—सज्ञा पुं० [सं० श्वपच] दे० 'श्वपच'। उ०—सूपच रस स्वादै का जानै।—विश्राम (शब्द०)।

सूपगधि—वि० [स० सूपगन्धि] जिसमे मसाला न हो। सादा (को०)।

सूपचर—वि० [सं०] १ शीघ्र नीरोग होनेवाला। २ शीघ्र आर्द्रचित्त होनेवाला (को०)।

सूपचार—वि० [स०] दे० 'सूपनर'।

सूपफरना—सज्ञा पुं० [हिं० सूप+झरना] सूप की तरह का सरई का एक बरतन।

विशेष—सूप से इसमे अतर इतना ही है कि इसमे हर दो सरइयो के बीच मे एक सरई नही होती जिसके कारण सूप के बीच मे ही झरना सा बन जाता है। इसमे बारीक अनाज नीचे गिर जाता है और मोटा ऊपर रह जाता है।

सूपट(पु)—सज्ञा पुं० [स० सम्पुट] दे० 'सपुट'। उ०—प्रेम कँवल जल भीतरै, प्रेम भँवर लै वास। होत प्रात सूपट खुलै, भान तेज परगास।—सत० दरिया, पृ० ४३।

सूपडा—सज्ञा पुं० [हिं० सूप+डा (प्रत्य०)] सूप। छाज। (डिं०)।

सूपतीर्थ—वि० [स०] दे० 'सूपतीर्थ्य'।

सूपतीर्थ्य—वि० [सं०] स्नान के लिये अच्छी सीढियो से युक्त [को०]।

सूपधूपक—सज्ञा पुं० [सं०] हीग।

सूपधूपन—सज्ञा पुं० [सं०] हीग।

सूपनखा—सज्ञा स्त्री० [स० शूर्पणखा] दे० 'शूर्पणखा'। उ०—सूपनखा रावण कै वहिनी। दुष्ट हृदय दारुन जसि अहिनी।—तुलसी (शब्द०)।

सूपना(पु)—सज्ञा पुं० [स० स्वप्न, प्रा० सुपण, पु०हिं० सुपन] दे० 'सुपना'। उ०—जागत मे एक सूपना मुझको पडा है देख।—पलटू० पृ० ७।

सूपपर्णी—सज्ञा स्त्री० [सं०] बनमूँग। मुँगवन। मुद्गपर्णी।

सूपरस—सज्ञा पुं० [स०] सूप का स्वाद। रसे का जायका।

सूपशास्त्र—सज्ञा पुं० [स०] भोजन बनाने की कला। पाकशास्त्र।

सूपश्रेष्ट—सज्ञा पुं० [स०] मूँग। मुद्ग।

सूपससृष्ट—वि० [सं०] मसालेदार। मसाले से युक्त।

सूपसास्त्र(पु)—सज्ञा पुं० [सं० सूपशास्त्र] पाकशास्त्र। सूदशास्त्र। उ०—भाँति अनेक भई जेवनारा। सूपसास्त्र जस किछु व्यवहारा।—मानस, १।९९।

सूपस्थान—सज्ञा पुं० [सं०] पाकशाला। रसोईघर।

सूपाग—सज्ञा पु० [सं० सूपाङ्ग] हीग। हिंगु।

सूपा†—सज्ञा पुं० [हिं० सूप] सूप। छाज। शूर्प।

सूपाय—सज्ञा पुं० [स०] सुदर ढग, तरीका या उपाय [को०]।

सूपिक—सज्ञा पुं० [स०] १ पकी हुई दाल या रसा आदि। २ सूपकार। रसोइया।

सूपीय—वि० [स०] दे० 'सूप्य'।

सूपोदन—सज्ञा पुं० [स० सूप+ओदन] दाल और भात। उ०—सूपोदन सुरभी सरपि सुदर स्वादु पुनीत। छन महुँ सबके परसि ये चतुर सुआर विनीत।—मानस, १।३२८।

सूप्य[1]—वि० [स०] १ दाल या रसे के लायक। २ सूप सबधी।

सूप्य[2]—सज्ञा पु० रसेदार खाद्य पदार्थ।

सूप्या—सज्ञा स्त्री० [स०] मसूर या अरहर की दाल [को०]।

सूफ[1]—सज्ञा पु० [अ० सूफ] १ पश्म। ऊन। २ वह लत्ता जो देशी काली स्याहीवाली दावात मे डाला जाता है। ३ गोटा बुनने के लिये बाना (को०)। ४ घाव के भीतर भरा जानेवाला वस्त्र जिसे बत्ती भी कहते हैं। ५ बकरी या भेड के बाल (को०)।

सूफ[2]—सज्ञा पु० [हिं० सूप] दे० 'सूप'।

सूफार—सज्ञा पुं० [फा० सूफार] बाण का वह हिस्सा जिसे प्रत्यचा पर रखकर चुटकी से खीचकर चलाते हैं [को०]।

सूफिया—सज्ञा पुं० [अ० सूफिया] सूफी का बहुवचन।

सूफियाना—वि० [फा० सूफियानह्] १ सूफी लोगो की तरह। २ अच्छे ढग या प्रकृति का। ३ हलके रग का [को०]।

सूफी[1]—सज्ञा पुं० [फा० सुफी] [बहुव० सुफिया] १ मुसलमानो का एक धार्मिक सप्रदाय। इस सप्रदाय के लोग एकेश्वरवादी होते हैं और साधारण मुसलमानो की अपेक्षा अधिक उदार विचार के होते है। २ इस सप्रदाय को माननेवाला व्यक्ति (को०)।

सूफी[2]—वि० १ ऊनी वस्त्र पहननेवाला। २ साफ। पवित्र। ३ निरपराध। निर्दोष।

सूब—सज्ञा पुं० [देश०] ताँबा। (सुनार)।

सूबडा—सज्ञा पुं० [स० सुवर्ण] वह चाँदी जिसमे ताँबे और जस्ते का मेल हो। (सुनार)।

सूबडी—सज्ञा स्त्री० [देश०] पैसे का आठवाँ भाग। दमडी। (सुनार)।

सूबम(पु)—वि० [स० स्ववश] अपने वश या अधिकार मे। स्वाधीन। उ०—दादू रावत राजा राम का, कदे न विसारी नाँव। आत्मा राम सँभालिए तौ सूबस काया गाँव।—दादू०, पृ० ३६।

सूबा—सज्ञा पु० [फा० सूबह्] १ किसी देश का कोई भाग या खड। प्रात। प्रदेश।

यौ०—सूबेदार।

२ दे० 'सूबेदार'। उ०—कीन्हो समर वीर परिपाटी। लीन्हों सूवा का सिर काटी।—रघुराज (शब्द०)।

सूबेदार—सज्ञा पुं० [फा० सूबह्+दार (प्रत्य०)] १ किसी सूबे या प्रात का बडा अफसर या शासक। प्रादेशिक शासक। २ एक छोटा फौजी ओहदा।

सूबेदार मेजर—सज्ञा पु० [फा०] सूबेदार+अ० मेजर] फौज का एक छोटा अफसर।

सूबेदारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ सूबेदार का ओहदा या पद। २ सूबेदार का काम। ३ सूबेदार होने की अवस्था।

सूभर(पु)—वि० [स० शुभ्र] १ सुदर। दिव्य। उ०—दादू सहज सरोवर आत्मा, हसा करै कलोल। सुख सागर सूभर भरया, मुक्ताहल मन मोल।—दादू० बानी, पृ० ९५। २ श्वेत। सफेद। उ०—हस सरोवर तहाँ रमैं सूभर हरि जल नीर। प्रानी आप पखालिए निर्मल सदा हो सरीर।—दादू (शब्द०)।

सूम[1]—सज्ञा पु० [स०] १ दूध। २ जल। ३. आकाश। ४ स्वर्ग।

सूम[2]—सज्ञा पुं० फूल। पुष्प। (डिं०)।

सूम[3]—वि० [अ० शूम (=अशुभ)] कृपण। कजूस। बखील। उ०—मरै सूम जजमान मरै कटखन्ना टट्टू। मरै कर्कसा नारि मरै की खसम निखट्टू।—गिरिधरदास (शब्द०)।

सूम[4]—सज्ञा पु० [अ०] लशुन। लहसुन [को०]।

सूमडा—वि० [हिं० सूम+डा (प्रत्य०)। दे० 'सूम'। उ०—सूमडे ताड आकाश मे जा अपने कलकलाए।—प्रेमघन०, भा० २ पृ० १९।

सूमलू—सज्ञा पु० [ देश० ] चित्रा या चीता नामक पौधा ।

सूयाँ†—सज्ञा स्त्री० [ देश० ] टूटी हुई चारपाई की रस्सी ।

सूमारग—सज्ञा पु० [ स० सुमार्ग ] सत्पथ । अच्छा मार्ग । उ०—भक्त काम देखि चलहि सूमारग, भजन नाहि मन आनी ।—जग० श०, भा० २, पृ० ६१ ।

सूमी—सज्ञा पु० [ देश० ] एक बहुत बडा पेड जो मध्य तथा दक्षिण भारत के जगलो मे होता है ।

विशेष—इसकी लकडी इमारतो मे लगती और मेज, कुर्सी आदि बनाने के काम मे आती है । इसे रोहन और सोहन भी कहते हैं ।

सूय—सज्ञा पु० [ स० ] १ सोमरस निकालने की क्रिया । २ यज्ञ ।

सूरजान—सज्ञा पु० [ फा० सूरिन्जान ] केसर की जाति का एक पौधा जिसका कद दवा के काम मे आता है ।

विशेष—यह पश्चिमी हिमालय के समशीतोष्ण प्रदेशो मे पहाडो की ढाल पर घासो के बीच उगता है और एक बालिश्त ऊँचा होता है । फारस मे भी यह बहुत होता है । इसमे बहुत कम पत्ते होते है और प्राय फूलो के साथ निकलते हैं । फूल लबे होते है और सीका मे लगते हैं । इसकी जड मे लहसुन के समान, पर उससे बडा कद होता है जो कडवा और मीठा दो प्रकार का होता है । कडवे को 'सूरजान तल्ख' और मीठे को 'सूरजान शीरी' कहते है । मोटा कद फारस से आता है और खाने की दवा मे काम आता है । कडवा कद केवल तेल आदि मे मिलाकर मालिश के काम आता है । इसके बीज विषैले होते है, इससे बडी सावधानी से थोडी मात्रा मे दिए जाते है । यूनानी चिकित्सा के अनुसार सूरजान रूखा, रुचिकर तथा वात, कफ, पाडुरोग, प्लीहा, सधिवात आदि को दूर करनेवाला माना जाता है ।

सूर१—सज्ञा पु० [ स० ] [ स्त्री० सूरी ] १ सूर्य । उ०—सूर उदय आए रही दृगन साँझ सी फूलि ।—बिहारी (शब्द०) । २ अर्कवृक्ष । आक । मदार । ३ पडित । आचार्य । ४ सोम (को०) । ५ जैन धर्म मे वर्तमान अवसर्पिणी के सत्रहवे अर्हत् कुथु के पिता का नाम । ६ ममूर । ७ राजा । नायक (को०) ।

सूर२—सज्ञा पु० [देशज] १ भक्त कवि सूरदास । उ०—कछु सकोच सूर बरनत अब लघु मति दुर्बल बाल ।—सूर (शब्द०) । २ नेत्र-विहीन व्यक्ति । दृष्टिरहित व्यक्ति । अधा ।

विशेष—सूरदास अधे थे, इससे 'अधा' के अर्थ मे यह शब्द प्रचलित हो गया है ।

३ छप्पय छद के ७१ भेदो मे से ५५वे भेद का नाम जिसमे १६ गुरु, १२० लघु, कुल १३६ वर्ण और १५२ मात्राएँ होती हैं ।

सूर३—सज्ञा पु० [ स० शूर, प्रा० सूर, अथवा स० सूर ( = नायक)] शूरवीर । बहादुर । उ०—सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आप ।—तुलसी ( शब्द० ) ।

सूर४—सज्ञा पु० [ स० शूकर, प्रा० सूअर ] १ सूअर । २. भूरे रग का घोडा ।

सूर५—सज्ञा पुं० [ स० शूल, प्रा० सूल ( = सूर) ] दे० 'शूल' । उ०—(क) कर बरछी विष भरी सूरसुत सूर फिरावत ।—गोपाल ( शब्द० ) । ( ख ) दादू सिख स्रवनन सुना सुमिरत लागा सूर ।—दादू० (शब्द०) ।

सूर६—सज्ञा पु० [ देश० ] पठानो की एक जाति । जैसे—शेरशाह सूर । उ०—जाति सूर औ खाँडै सूर ।—जायसी (शब्द०) ।

सूर७—सज्ञा पुं० [ स० सूर ( = सूर्य ) ] हठयोग साधना मे चद्रमा मे स्रवित होनेवाले अमृत का शोषण करनेवाला द्वादश कला-युक्त सूर्य । पिंगला नाडी का दूसरा नाम । उ०—उलटिवा सूर गगन भेदन किया, नवग्रह डक छेदन किया, पोथिया चद जहाँ कला सारी ।—रामानद०, पृ० ४ ।

सूर८—सज्ञा पुं० [अ०] नर्सिंहा नामक बाजा । उ०—कन्न मे सोए है महशर का नही खटका 'रसा' । चौकनेवाले है कब हम सूर की आवाज से ।

विशेष—मुसलमानो के अनुसार हजरत असाफील प्रलय या कयामत के दिन मुरदो को जिलाने के लिये इसे फूँककर बजाते है ।

सूर९—सज्ञा पु० [ फा० ] १ लाल वर्ण । लाल रग । २ प्रसन्नता । मोद । हर्ष । ३. अफगानिस्तान का एक नगर और एक जाति [को०] ।

सूरकद—सज्ञा पुं० [ सं० सूरकन्द ] जमीकद । सूरन । ओल ।

सूरकात—सज्ञा पुं० [ स० सूरकान्त ] दे० 'सूर्यकात' ।

सूरकुमार—सज्ञा पु० [ स० शूर ( = सूरसेन ) कुमार ( = पुत्र)] वसुदेव । उ०—तेज रूप ये सूरकुमारा । जिमि उदयस्थ सूर उजियारा ।—गि० दास (शब्द०) ।

सूरकृत—सज्ञा पु० [ स० ] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

सूरचक्षा—वि० [ स० सूरचक्षस् ] सूर्य की तरह ज्योतिवाला [को०] ।

सूरचक्षुग्—वि० [स०] दे० 'सूरचक्षा' [को०] ।

सूरज१—सज्ञा पुं० [ स० सूर्य ] १ सूर्य । विशेष दे० 'सूर्य' । उ०—दरिया सूरज ऊगिया, नैन खुला भरपूर । जिन अधे देखा नही, तिन मे माहव दूर ।—दरिया० बानी, ३७ ।

क्रि० प्र०—अस्त होना ।—उगना ।—उदय होना ।—निकलना ।—डूबना ।—छिपना ।

मुहा०—सूरज को चिराग दिखाना = दे० 'सूरज को दीपक दिखाना' । उ०—आगे मेरे फरोग पाना, सूरज को है चिराग दिखाना । —फिसाना, भा० ३, पृ० ६२४ । सूरज पर थूकना = किसी निर्दोष या साधु व्यक्ति पर लाछन लगाना जिसके कारण स्वय लाछित होना पडे । सूरज को दीपक दिखाना = (१) जो स्वय अत्यत गुणवान् हो, उसे कुछ बतलाना । (२) जो स्वय विख्यात हो उसका परिचय देना । सूरज पर धूल फेकना = किसी निर्दोष या साधु व्यक्ति पर कलक लगाना ।

२. एक प्रकार का गोदना जो स्त्रियाँ दाहिने हाथ मे गुदाती है ।

३ दे० 'सूरदास' ।

सूरज[2]—सज्ञा पु० [स० सूर+ज] १ शनि। २ सुग्रीव। उ०—(क) सूरज मुसल नील पट्टिस परिघ नल जामवत असि हनु तोमर प्रहारे ह। परसा सुखेन कुत केशरी गवय मूल विभीषण गदा गज भिदिपाल तारे है।—रामच०, पृ० १३५। (ख) करि आदित्य अदृष्ट नष्ट यम करौ अष्टवसु। रुद्रनि वोरि समुद्र करौ गधर्व सर्व पसु। वलित अवेर कुवेर वलिहिं गहि देहुँ इद्र अव। विद्याधरनि अविद्य करौं विन सिद्धि सिद्ध सव। लै करौं अदिति की दासि दिति अनिल अनल मिलि जाहि जल। सुनि सूरज सूरज उगत ही करौ असुर ससार सव।—केशव (शब्द०)। ३ कर्ण का एक नाम। ४ यमराज।

सूरज[1]—सज्ञा पु० [स० शूर+ज (प्रत्य०)] शूर या वीर का पुत्र। वहादुर का लडका। उ०—डारि डारि हथ्यार सूरज जीव लै लै भज्जही।—केशव (शब्द०)।

सूरजतनी Ⓤ†—सज्ञा स्त्री० [सं० सूर्यतनया] दे० 'सूर्यतनया'। उ०—सु दरि कथा कहै है अपनी। हौं कन्या हौं सूरजतनी। कालिदी है मेरो नाम। पिता दियो जल मे विश्राम।—लल्लूलाल (शब्द०)।

सूरजनरायन—सज्ञा पुं० [स० सूर्यनारायण] हिं० सूरजनरायन, नारायण स्वरूप सूर्य। उ०—और सूर्यनारायण को सूरजनरायन कहने लग पडे थे।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३६२।

सूरजवशी—सज्ञा पुं० [स० सूर्यवशीय] दे० 'सूर्यवशी'।

सूरजभगत—सज्ञा पुं० [स० सूर्य+भक्त] एक प्रकार की गिलहरी जो लवाई मे १६ इच होती है और भिन्न भिन्न ऋतुओ के अनुसार रग बदलती है। यह नेपाल और आसाम मे पाई जाती है।

सूरजमुख Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० सूर्य, पु० हिं० सूरज+स० मुख] सूर्यकात नाम का प्रस्तर (स्फटिक)। उ०—सूरजमुख पषान एक होई। रवि सनमुख तेहि पावक जोई।—घट०, पृ० २१७।

सूरजमुखी—सज्ञा पु० [सं० सूर्यमुखिन्] १ एक प्रकार का पौधा जिसमे पीले रग का वहुत वडा फूल लगता है।

विशेष—यह ४-५ हाथ ऊँचा होता है। इसके पत्ते डठल की ओर पतले तथा कुछ खुरदुरे और रोईदार होते हैं। फूल का मडल एक वालिश्त के करीव होता है। वीच मे एक स्थूल केंद्र होता है जिसके चारो ओर गोलाई मे पीले पीले दल निकले होते हैं। सूर्यास्त के लगभग यह फूल नीचे की ओर झुक जाता है और सूर्योदय होने पर फिर ऊपर उठने लगता है। इसमे कुसुम के से वीज पडते है। वीज हर ऋतु मे वोए जा सकते है, पर गरमी और जाडा इसके लिये अच्छा है। यह पौधा दूषित वायु को शुद्ध करनेवाला माना जाता है। वैद्यक मे यह उष्णवीर्य, अग्निदीपक, रसायन, चरपरा, कडुवा, कसैला, रुखा, वस्तावर, स्वर शुद्ध करनेवाला तथा कफ, वात, रक्तविकार, खाँसी, ज्वर, विस्फोटक, कोढ, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, गुल्म आदि का नाशक कहा गया है।

पर्या०—आदित्यभक्ता। वरदा। सुवर्चला। सूर्यलता। अर्ककाता। भास्करेष्टा। विकोता। सुतेजा। सौरि। अर्कहिता।

२ एक प्रकार की आतिशवाजी। ३ एक प्रकार का छत्र या पखा। ४ वह हलकी वदली जो मध्या सवेरे सूर्य मडल के आसपास दिखाई पडती है।

सूरजसुत—Ⓤसज्ञा पुं० [हिं० सूरज+सं० सुत] सुग्रीव। उ०—अगद जो तुम पै वल होतो। तो वह सूरज को सुत को तो।—केशव (शब्द०)।

सूरजसुता Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूरज+सं० सुता] यमुना नदी। दे० 'सूर्यसुता'।

सूरजा—सज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की पुत्री, यमुना। उ०—जै जै श्री सूरजा कलिंद नदिनी। गुल्म लता, तरु, सुरभित, कुद कुसुम मोदमत भ्रमत मधुप, पुलिन सुरभि वायु नदिनी।—छीत०, पृ० ८०।

सूरण—सज्ञा पुं० [सं०] सूरन। जमीकद।

सूरत[1]—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ रूप। आकृति। शक्ल। उ०—(क) उनकी सूरत तो राजकुमारी की सी है।—वालमुकुद गुप्त (शब्द०)। (ख) मन धन लै दृग जौहरी, चले जात वह वाट। छवि मुकता मुकते मिलै जिहि सूरत की हाट।—रसनिधि (शब्द०)।

यौ०—सूरत शक्ल=चेहरा मोहरा। आकृति। सूरत सीरत=आकृति या रूप और गुण।

मुहा०—सूरत विगडना=चेहरा विगडना। चेहरे की रगत फीकी पडना। सूरत विगाडना=(१) चेहरा विगाडना। कुरूप करना। वदसूरत वनाना। विद्रूप करना। (२) अपमानित करना। (३) दड देना। सूरत वनाना=(१) रूप वनाना। (२) भेस वदलना। (३) मुँह वनाना। नाक भौं सिकोडना। अरुचि प्रकट करना। (४) चित्र वनाना। सूरत दिखाना=सामने आना।

२ छवि। शोभा। सौंदर्य। उ०—साँवली सूरत तुमारी साँवले। जव हमारी आँख मे है घूमती।—चोखे०, पृ० १। ३ उपाय। युक्ति। ढग। तदवीर। ढव। उ०—(क) कोई उम्मीद वर नही आती, कोई सूरत नजर नही आती। मौत का एक दिन मुएयन है, नीद क्यो रात भर नही आती।—कविता कौ०, पृ० ४७२। (ख) जाडे मे उनके जीने की कौन सूरत थी।—शिवप्रसाद (शब्द०)।

क्रि० प्र०—देखना। जैसे,—वह उनसे छुटकारा पाने की कोई सूरत नही देखता।—निकालना। जैसे—रुपया पैदा करने की कोई सूरत निकालो।

४ अवस्था। दशा। हालत। जैसे—उस सूरत मे तुम क्या करोगे। उ०—आपको खयाल न गुजरे कि हमारी किसी सूरत मे तहकीर हुई।—केशवराम (शब्द०)।

सूरत[2]—सज्ञा पुं० [सं० सौराष्ट्र] वबई प्रदेश के अतर्गत एक नगर।

सूरत[3]—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार जहरीला पौधा जो दक्षिण हिमालय, आसाम, वरमा, लका, पेराक और जावा मे होता है। इसे चोरपट्टा भी कहते है। विशेष दे० 'चोरपट्ट'।

सूरत[4]—सज्ञा स्त्री० [अ० सूरह्] कुरान का कोई प्रकरण।

सूरत(पु)[1]—सज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] सुध। स्मरण। ध्यान। याद। विशेष दे० 'सुरति'। जैसे,—सब आनद मे ऐसे मग्न थे कि कृष्ण की सूरत किसी को भी न थी।—लल्लू (शब्द०)।

सूरत[2]—वि० [स०] १ अनुकूल। मेहरवान। कृपालु। २ शात। सीधा [को०]।

सूरता(पु)[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शूरता] दे० 'शूरता'। उ०—विश्वासी के ठगन मै नही निपुनता होय। कहा सूरता तासु हनि रह्यो गोद जो सोय।—दीनदयाल (शब्द०)।

सूरता[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] सीधी गाय।

सूरताई(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूरता+ई (प्रत्य०)] दे० 'शूरता'। उ०—गरजन घोर जोर पवन चलत जैसो अवर सो सोभित रहत मिलि कै अनेक। पुत्र जे धरत तिन्हैं तोषत हैं भली भाँति सूर सूरताई लोप करत सहित टेक।—गोपाल (शब्द०)।

सूरति(पु)[1]—सज्ञा स्त्री० [फा० सूरत] छवि। दे० 'सूरत'। उ०—(क) मूरति की सूरति कही न परै तुलसी पै, जानै सोई जाके उर कसकै करक सी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) चद भलो मुख-चद सखी लखि सूरति काम की कान्ह की नीकी। कोमल पकज कै पदपकज प्राणप्रियारे की मूरति पी की।—केशव (शब्द०)।

सूरति(पु)[2]—सज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] सुध। स्मरण ध्यान। याद। उ०—तुलसिदास रघुवीर की सोभा सुमिरि भई है मगन नहिं तन की सूरति।—तुलसी (शब्द०)।

सूरतीखपरा—सज्ञा पुं० [हिं० सूरती (=सूरत शहर का)+सं० खर्परी] खपरिया।

सूरदास—सज्ञा पुं० [सं०] उत्तर भारत के प्रसिद्ध कृष्णभक्त महाकवि और महात्मा जो अधे थे।

विशेष—ये हिंदी भाषा के दो सर्वश्रेष्ठ कवियो मे से एक है। जिस प्रकार रामचरित का गान कर गोस्वामी तुलसीदास जी अमर हुए है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण की लीला कई सहस्र पदो मे गाकर सूरदास जी भी। ये अकबर के काल मे वर्त्तमान थे। ऐसा प्रसिद्ध है कि बादशाह अकबर ने इन्हे अपने दरबार मे फतहपुर सीकरी मे बुलाया, पर ये न आए। इन्होने यह पद कहा 'मोको कहा सीकरी सो काम'। इसपर तानसेन के साथ अकबर स्वय इनके दर्शन को मथुरा गया। इनका जन्म सवत् १५४० के लगभग ठहरता है। ये वल्लभाचार्य की शिष्यपरपरा मे थे और उनकी स्तुति इन्होने कई पदो मे की है जैसे,—'भरोसो दृढ इन चरनन केरो। श्रीवल्लभ नखचद्र छटा विनु हो हिय माँझ अँधेरो'। इनकी गणना 'अष्टछाप' अर्थात् व्रज के आठ महाकवियो और भक्तो मे थी। अष्टछाप मे ये कवि गिने गए है—कुभनदास, परमानददास, कृष्णदास, छीतस्वामी, गोविद स्वामी, चतुर्भुजदास, नददास और सूरदास। इनमे से प्रथम चार कवि तो वल्लभाचार्य जी के शिष्य थे और शेष सूरदास आदि चार कवि उनके पुत्र विट्ठलनाथ जी के। अपने अष्टछाप मे होने का उल्लेख सूरदास जी स्वय करते है। यथा—'थापि गोसाई करी मेरी आठ मध्ये छाप'। विट्ठलनाथ के पुत्र गोकुलनाथ जी ने अपनी 'चौरासी वैष्णवो की वार्ता' मे सूरदास जी को सारस्वत ब्राह्मण लिखा है और उनके पिता का नाम 'रामदास' बताया है। सूरसारावली मे एक पद मे इनके वश का जो परिचय है, उसके अनुसार ये महाकवि चद बरदाई के वशज थे और सात भाई थे। पर उक्त पद के असली होने मे कुछ लोग सदेह करते हैं।

इनका जन्मस्थान भी अनिश्चित है। कुछ लोग इनका जन्म दिल्ली के पास 'सीही' गाँव मे बतलाते है। जनश्रुति इन्हे जन्माध कहती है, पर ये जन्माध न थे। ऐसी भी किवदती है कि किसी परस्त्री के सौदर्य पर मोहित हो जाने पर इन्होने नेत्रो का दोष समझ उन्हे फोड डाला था। भक्तमाल मे लिखा है कि आठ वर्ष की अवस्था मे इनका यज्ञोपवीत हुआ और ये एक बार अपने माता पिता के साथ मथुरा गए। वहाँ से वे घर लौटकर न आए, कहा कि यही कृष्ण की शरण मे रहूँगा। 'चौरासी वैष्णवो की वार्ता' के अनुसार ये गऊघाट मे रहते थे जो आगरा और मथुरा के बीच मे है। यही पर ये विट्ठलनाथ जी के शिष्य हुए और इन्ही के साथ गोकुलस्थ श्रीनाथ जी के मदिर मे बहुत काल तक रहे। इसी मदिर मे रहकर ये पद बनाया करते थे। यो तो पद बनाने का इनका नित्य नियम था, पर मदिर के उत्सवो पर उसी लीला के सबध मे बहुत सा पद बनाकर गाया करते थे। ऐसा प्रसिद्ध है कि ये एक बार कूएँ मे गिर पडे और छह दिन तक उसी मे पडे रहे। सातवे दिन स्वय भगवान् श्रीकृष्ण ने हाथ पकडकर इन्हें निकाला। निकलने पर इन्होने यह दोहा पढा—'बाँह छुडाए जात हौ निबल जानि कै मोहि। हिरदै सो जब जायहौ मरद बदौगो तोहि।'

इसमे सदेह नही कि व्रजभाषा के ये सर्वश्रेष्ठ कवि है, क्योकि इन्होने केवल व्रजभाषा मे ही कविता की है, अवधी मे नही। गोस्वामी तुलसीदास जी का दोनो भाषाओ पर समान अधिकार था और उन्होने जीवन की नाना परिस्थितियो पर रसपूर्ण कविता की है। सूरदास मे केवल शृगार और वात्सल्य की पराकाष्ठा है। सवत् १६०७ के पूर्व इनका सूरसागर समाप्त हो गया था, क्योकि उसके पीछे इन्होने जो 'साहित्य लहरी' लिखी है, उसमे सवत् १६०७ दिया हुआ है।

सूरन—सज्ञा पुं० [ सं० सूरण ] एक प्रकार का कद जो सब शाको मे श्रेष्ठ माना गया है। जमीकद। ओल। शूरण। सूरन।

विशेष—सूरन भारतवर्ष मे प्राय सर्वत्र होता है पर बगाल मे अधिक होता है। इसके पौधे २ से ४ हाथ तक के होते है। पत्तो मे बहुत से कटाव होते है। इसके दो भेद है। सूरन जगली भी होता है जो खाने योग्य नही होता और बेतरह कटैला होता है। खेत के सूरन की तरकारी, अचार आदि बनते है जिन्हें लोग बडे चाव से खाते है। वैद्यक मे यह अग्निदीपक, रूखा, कसैला, खुजली उत्पन्न करनेवाला, चरपरा, विष्टभकारक, विशद, रुचिकारक, लघु, प्लीहा तथा गुल्म नाशक और अर्श (बवासीर) रोग के लिये विशेष उपकारी माना गया है। दाद,

खाज, रक्तविकार और कोढवालो के लिये इसका खाना निषिद्ध है।

पर्या०—शूरण। सूरकद। कदल। अर्शोघ्नि, आदि।

**सूरपनखा**—सज्ञा स्त्री० [स० शूर्प (हिं० सूरप)+स० नखा] दे० 'शूर्पनखा'। उ०—सूरपनपहु तहँहि चलि आई। काटि श्रवन अरु नाक भगाई।—पद्माकर (शब्द०)।

**सूरपुत्र**—सज्ञा पु० [स०] (सूर्य के पुत्र) सुग्रीव। उ०—सूरपुत्र तब जीवन जान्यो। वालि जोर बहु भाँति बखान्यो।—केशव (शब्द०)। २ शनि (को०)। ३ कर्ण का एक नाम (को०)।

**सूरबार**—सज्ञा पु० [देशज] पायजामा। सूथन।

**सूरबीर**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० शूरवीर] दे० 'शूरवीर'।

**सूरबीरता**—सज्ञा स्त्री० [स० शूरता+वीरता] दे० 'शूरता'। उ०—तव वा समै सूरबीरता को आवेस रहत है।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ९६।

**सूरनस**—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन जनपद और उसके निवासी।

**सूरमा**—सज्ञा पुं० [स० शूरमानी] योद्धा। वीर। बहादुर। उ०—और बहुत उमडे सुभट कहौ कहाँ लगि नाउँ। उतै समद के सूरमा भिरे रोप रन पाउँ।—लालकवि (शब्द०)।

**सूरमापन**—सज्ञा पुं० [हिं० सूरमा+पन (प्रत्य०)] वीरत्व। शूरता। बहादुरी।

**सूरमुखी**Ⓤ—सज्ञा पु० [स०] सूर्यमुखी शीशा। उ०—बहु साँग भल्लगन मधि लसत, सूरमुखी रथ छत्रवर। मनु चले जात मुनि दड चढि उडगन मैं ससि दिवसकर।—गोपाल (शब्द०)।

**सूरमुखीमनि**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० सूर्यमुखीमणि] सूर्यकातमणि। उ०—मुरछल चारहु ओर अमल बहु भृत्य फिरावहिं। सूरमुखीमनि जटित अनेकन सोभा पावहिं।—गिरिधरदास (शब्द०)।

**सूरय**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० सूर्य, प्रा० सूरिअ] दे० 'सूर्य'। उ०—(क) सूरय करि कै देखिए तव आरसी होय। सूरय सूरय सौ हसे सुदर समझे कोय।—सुदर० ग्र०, भा० २, पृ० ८१२। (ख) तीनि लोक मैं भया तमासा सूरय कियो सकल अधेर। मूरष होई सु अर्थहि पावै सुदर कहै शब्द मैं फेर।—सुदर ग्र०, भा० २, पृ० ५१३।

**सूरवाँ**Ⓤ, **सूरवा**Ⓤ—सज्ञा पु० [हिं० सूरमा] दे० 'सूरमा'। उ०—जन हरिया गुरु सूरवा करै शब्द की चोट। सिख सूरा तन जो लहे आनि धरै नहिं ओट।—राम० धर्म०, पृ० ५४।

**सूरस**—सज्ञा पु० [देश०] परिया की लकडी। (जुलाहा)।

**सूरसागर**—सज्ञा पु० [हिं० सूर+सागर] हिंदी के महाकवि सूरदासकृत ग्रथ का नाम जिसमे भागवत के आधार पर श्रीकृष्णलीला अनेक राग रागिनियो मे वर्णित है।

**सूरसावत, सूरसॉवत**Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० शूर+सामन्त] १ युद्धमल्ली। २ नायक। सरदार। उ०—धनुविजुरी चमकाय बान जल वरषि अमोलो। गरजि जलद सम जलद सूरसावँत यह बोलो।—गिरिधरदास (शब्द०)।

**सूरसुत**—सज्ञा पुं० [स०] १ शनिग्रह। २ सुग्रीव।

**सूरसुता**—सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य की पुत्री यमुना। उ०—ज्योति जगै जमुना सी लगै जग लोचन लालित पाप विछोहै। सूरसुता शुभ सगम तुग तरग तरग तरग सी सोहै।—केशव (शब्द०)।

**सूरसूत**—सज्ञा पुं० [स०] सूर्य के सारथि अरुण।

**सूरसेन**Ⓤ—सज्ञा पुं० [सं० शूरसेन] दे० 'शूरसेन'।

**सूरसेनपुर**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० शूरसेन+पुर] मथुरा। उ०—चित्रसेन नृप चल्यो सेन सह सूरसेन पुर। झपटि चलै जिमि मेन लेन जै देन चेन उर।—गोपाल (शब्द०)।

**सूरा**[1]—सज्ञा पुं० [हिं० सुडी] एक प्रकार का कीडा जो अनाज के गोले मे पाया जाता है। यह किसी प्रकार की हानि नही पहुँचाता। अनाज के व्यापारी इसे शुभ समझते हैं।

**सूरा**[2]—सज्ञा पु० [अ० सूरह्] कुरान का कोई एक प्रकरण।

**सूराख**—सज्ञा पु० [फा० सूराख] १ छेद। छिद्र। २. शाला। खाना। घर। (लश०)।

**सूरातन**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० शूरत्व, प्रा० सूरत्तण] वीरता। उ०—(क) सुदर सूरातन बिना बात कहै मुख कोरि। सूरातन जब जाणिए जाइ देत दल मोरि।—सुदर ग्र०, भा० २, पृ० ७३९। (ख) सूरातन सूराँ चढे, सत सतिया मम दोप।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ३।

**सूरिजान**—सज्ञा पु० [फा० सूरिन्जान] दे० 'सूरजान'।

**सूरि**—सज्ञा पु० [स०] १ यज्ञ करानेवाला। ऋत्विज्। २ पडित। विद्वान्। आचार्य। (विशेषकर जैनाचार्यो के नामो के पीछे यह शब्द उपाधिस्वरूप प्रयुक्त होता है)। ३ वृहस्पति का एक नाम। ४ कृष्ण का नाम। ५ यादव। ६ अर्चना, पूजन करनेवाला व्यक्ति। ७ सूर्य।

**सूरिवाँ**Ⓤ—सज्ञा पुं० [हिं० सूरमा] दे० 'सूरमाँ'। उ०—सतगुरु साँचा सूरिवाँ, सवद जु वाह्या एक। लागत ही मे मिलि गया, पडया कलेजै छेक।—कबीर ग्र०, पृ० १।

**सूरी**[1]—सज्ञा पुं० [स० सूरिन्] [स्त्री० सूरिणी] १ विद्वान्। पडित्। आचार्य।

**सूरी**[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विदुषी। पडिता। २ सूर्य की पत्नी। ३ कुती। ४ राई। राजसर्षप।

**सूरी**Ⓤ[3]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूली] दे० 'सूली'। उ०—नृप कह देहु चोर कहँ सूरी। सतवेप यह चोर कसूरी। तुरत दूत पुर बाहिर लाई। सूरी महँ दिय मुनिहिं चढ़ाई।—रघुराज (शब्द०)।

**सूरी**Ⓤ[4]—सज्ञा पु० [सं० शूल] भाला। उ०—पटक्यो कस ताहि गति रूरी। धेनुक भिर्‌यौ तबै गहि सूरी।—गोपाल (शब्द०)।

**सूरुज**Ⓤ†—सज्ञा पु० [स० सूर्य] दे० 'सूर्य'।

**सूरुवाँ**Ⓤ—सज्ञा पु० [हिं० सूरमा] दे० 'सूरमा'। उ०—जीवहिं का ससा पडा को काको तारहिं। दादू सोई सूरुवाँ जो आप उवारहिं।—दादू० (शब्द०)।

सूरेठ—सज्ञा पु० [ देश० ] बाँस की हाथ भर की एक लकडी जिससे बहेलिए चोगे मे से लासा निकालते हे।

सूर्क्षण—सज्ञा पु० [ स० ] अनादर।

सूर्क्ष्य—सज्ञा पु० [ स० ] उडद। माष।

सूर्क्ष्यण—सज्ञा पु० [ स० ] दे० 'सूर्क्षण' [को०]।

सूर्ज(पु)—सज्ञा पु० [ स० सूर्य, प्रा० सूर, सूरिअ, सुज्ज ] दे० 'सूर्य'। उ०—चाँद सूर्ज तारागन नाही, मच्छ कच्छ औतारा।—कबीर श०, भा०३, पृ० ३।

सूर्प—सज्ञा पु० [ स० ] दे० 'शूर्प'। सूप [को०]।

सूर्पनखा—सज्ञा स्त्री० [ स० शूर्पणखा ] दे० 'शूर्पणखा'।

सूर्मि, सूर्मी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लोहे की बनी स्त्री की प्रतिमूर्ति।

विशेष—मनु ने लिखा है कि गुरुपत्नी मे व्यभिचार करनेवाला अपने पाप को कहकर तपी हुई लोहे की शय्या पर शयन करे अथवा तपी हुई लोहे की स्त्री की प्रतिमूर्ति का आलिगन करे। इस प्रकार मरने से उसका पाप नष्ट होता है—'सूर्मी ज्वलन्ती वाश्लिष्येन्मृत्युना स विशुद्धयति'।

२ पानी का नल। ३ गृह का स्तभ (को०)। ४ काति। प्रकाश (को०)। ५ ज्वाला (को०)।

सूर्य—सज्ञा पु० [ स० ] [ स्त्री० सूर्या, सूर्याणी ] १ अतरिक्ष मे पृथ्वी, मगल, शनि आदि ग्रहो के बीच सबसे बडा ज्वलत पिंड जिसकी सब ग्रह परिक्रमा करते है। वह बडा गोला जिससे पृथ्वी आदि ग्रहो को गरमी और रोशनी मिलती है। सूरज। आफताब।

विशेष—सूर्य पृथ्वी से चार करोड पैंसठ लाख मील दूर है। उसका व्यास पृथ्वी के व्यास से १०८ गुना अर्थात् ४,३३,००० कोस है। घनफल के हिसाब से देखे तो जितना स्थान सूर्य घेरे हुए है, उतने मे पृथ्वी के ऐसे ऐसे १२,५०,००० पिंड आएँगे। साराश यह कि सूर्य पृथ्वी से बहुत ही बडा हे। परतु सूर्य जितना बडा है, उसका गुरुत्व उतना नही है। उसका सापेक्ष गुरुत्व पृथ्वी का चौथाई है। अर्थात् यदि हम एक टुकडा पृथ्वी का और उतना ही बडा टुकडा सूर्य का ले तो पृथ्वी का टुकडा तौल मे सूर्य के टुकडे का चौगुना होगा। कारण यह है कि सूर्य पृथ्वी के समान ठोस नही है। वह तरल ज्वलत द्रव्य के रूप मे है। सूर्य के तल पर कितनी गरमी है, इसका जल्दी अनुमान ही नही हो सकता। वह २०,००० डिग्री तक अनुमान की गई है। इसोताप के अनुसार उसके अपरिमित प्रकाश का भी अनुमान करना चाहिए। प्राय हम लोगो को सूर्य का तल बिलकुल स्वच्छ और निष्कलक दिखाई पडता है, पर उसमे भी बहुत से काले धब्बे है। इनमे विचित्रता यह है कि एक निश्चित नियम के अनुसार ये घटते बढते रहते है, अर्थात् कभी इनकी सख्या कम हो जाती है, कभी अधिक। जिस वर्ष इनकी सख्या अधिक होती है, उस वर्ष मे पृथ्वी पर चुबक शक्ति का क्षोभ बहुत बढ जाता है और विद्युत् की शक्ति के अनेक काड दिखाई पडते है। कुछ वैज्ञानिको का अनुमान है कि इन लाछनो का वर्षा से भी सबध है। जिस साल ये अधिक होते है, उस साल वर्षा भी अधिक होती है। भारतीय ग्रथो मे सूर्य की गणना नव ग्रहो मे है। आधुनिक ज्योतिर्विज्ञान के अनुसार सूर्य ही मुख्य पिंड है जिसके पृथ्वी, शनि, मगल आदि ग्रह अनुचर है और उसकी निरतर परिक्रमा किया करते है। विशेष दे० 'खगोल'।

सूर्य की उपासना प्राय सब सभ्य प्राचीन जातियो मे प्रचलित है। आर्या के अतिरिक्त असीरिया के असुर भी 'शम्श' ( सूर्य ) की पूजा करते थे। अमेरिका के मेक्सिको प्रदेश मे बसनेवाली प्राचीन सभ्य जनता के भी बहुत से सूर्यमदिर थे। प्राचीन आर्य जातियो के तो सूर्य प्रधान देवता थे। भारतीय और पारसीक दोनो शाखाओ के आर्यो के बीच सूर्य को मुख्य स्थान प्राप्त था। वेदो मे पहले प्रधान देवता सूर्य, अग्नि और इद्र थे। सूर्य आकाश के देवता थे। इनका रथ सात घोडो का कहा गया है। आगे चलकर सूर्य और सविता एक माने गए और सूर्य की गणना द्वादश आदित्यो मे हुई। ये आदित्य वष के १२ महीनो के अनुसार सूर्य के ही रूप थे। इसी काल मे सूर्य के सारथि अरुण ( सूर्योदय की ललाई ) कहे गए जो लँगडे माने गए है। सूर्य का ही नाम विवस्वत् या विवस्वान भी था जिनकी कई पत्नियाँ कही गई है, जिनमे सज्ञा प्रसिद्ध है।

पर्या०—भास्कर। भानु। प्रभाकर। दिनकर। दिनपति। मार्तड। रवि। तरणि। सहस्राशु। तिग्मदीधिति। मरीचिमाली। चडकर। आदित्य। सविता। सूर। विवस्वान। दिवाकर।

२ बारह की सख्या। ३ अर्क। आक। मदार। ४ बलि के एक पुत्र का नाम। ५ शिव का एक नाम (को०)।

सूर्यक—वि० [स०] सूर्य के समान। सूर्य जैसा [को०]।

सूर्यकमल—सज्ञा पु० [सं०] सूरजमुखी फूल।

सूर्यकर—सज्ञा पु० [स०] सूर्य की किरण।

सूर्यकरोज्ज्वल—सज्ञा पु० [स०] सूर्य की किरणो से दीप्त।

सूर्यकात—सज्ञा पु० [सं० सूर्यकान्त] १ एक प्रकार का स्फटिक या बिल्लौर, सूर्य के सामने रखने से जिसमे से आँच निकलती है।

पर्या०—सूर्यमणि। तपनमणि। रविकात। सूर्याश्मा। ज्वलनाश्मा दहनोपम। दीप्तोपल। तापन। अर्कोपल। अग्निगर्भ।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह उष्ण, निर्मल, रसायन, वात और श्लेष्मा को हरनेवाला और बुद्धि बढानेवाला हे।

२ सूरजमुखी शीशा। आतशी शीशा।

विशेष—यह विशेष बनावट का मोटे पेटे का गोल शीशा होता है जो सूर्य की किरनो को एक केंद्र पर एकत्र करता है, जिससे ताप उत्पन्न हो जाता हे। इसके भीतर से देखने पर वस्तुएँ बडे आकार की दिखाई पडती है।

३ एक प्रकार का फूल। आदित्यपर्णी। ४ मार्कंडेयपुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम।

सूर्यकाति'—सज्ञा स्त्री० [स० सूर्यकान्ति] १ सूर्य की दीप्ति या प्रकाश। २. एक प्रकार का पुष्प। ३ तिल का फूल।

सूर्यकांति[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सूर्यकान्ति] सूर्यकांत मणि। विशेष दे० 'सूर्यकांत'। उ०—चंद्रकांति अमृत उपजावै। सूर्यकांति मे अग्नि प्रजावै।—रत्नपरीक्षा (शब्द०)।

सूर्यकाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिन का समय। २ फलित ज्योतिष मे शुभाशुभ निर्णय के लिये एक चक्र।

सूर्यकालानलचक्र—संज्ञा पु० [सं०] एक ज्योतिषचक्र जिससे मनुष्य का शुभाशुभ जाना जाता है।

सूर्यक्रांत—संज्ञा पु० [सं० सूर्यकान्त] १ संगीत मे एक प्रकार का ताल। २ एक प्राचीन जनपद।

सूर्यक्षय—संज्ञा पु० [सं०] सूर्यमंडल।

सूर्यगर्भ—संज्ञा पु० [सं०] १ एक बोधिसत्व का नाम। २ एक बौद्ध सूत्र का नाम।

सूर्यग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १ नव ग्रहो मे से प्रथम ग्रह—सूर्य। २ सूर्यग्रहण। ३ राहु और केतु। ४ जलपात्र या घड़े का पेंदा।

सूर्यग्रहण—संज्ञा पु० [सं०] सूर्य का ग्रहण। विशेष दे० 'ग्रहण'।

सूर्यचक्षु—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यचक्षुस्] रामायण के अनुसार एक राक्षस का नाम।

सूर्यज—संज्ञा पुं० [सं०] १ शनि ग्रह। २ यम। ३ सावर्णि मनु। ४ रेवंत। ५ सुग्रीव। ६ कर्ण।

सूर्यजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना नदी।

सूर्यतनय—संज्ञा पु० [सं०] १ शनि। २ सावर्णि मनु। ३ रेवंत। ४ सुग्रीव। ५ यम। ६ कर्ण।

सूर्यतनया—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।

सूर्यतपा—संज्ञा पु० [सं० सूर्यतपस्] एक मुनि का नाम।

सूर्यतापिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

सूर्यतीर्थ—संज्ञा पु० [सं०] एक तीर्थ का नाम। (महाभारत)।

सूर्यतेज—संज्ञा पु० [सं०] सूर्य का प्रकाश। धूप। घाम [को०]।

सूर्यदास—संज्ञा पु० [सं०] १ संस्कृत के एक प्राचीन कवि का नाम। २ हिंदी के प्रसिद्ध कवि सूरदास।

सूर्यदृक्—वि० [सं० सूर्यदृश्] सूर्य की ओर देखनेवाला।

सूर्यदेव—संज्ञा पु० [सं०] भगवान् सूर्य।

सूर्यदेवत—वि० [सं०] जिसके उपास्य सूर्य हो। जिसके देवता सूर्य हो [को०]।

सूर्यद्वार—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का मार्ग। उत्तरायण [को०]।

सूर्यध्वज—संज्ञा पु० [सं०] शिव का एक नाम।

यौ०—सूर्यध्वजपताकी = शिव।

सूर्यनंदन, सूर्यनक्षत्र—संज्ञा पु० [सं० सूर्यनन्दन] १ शनि। २ कर्ण। दे० 'सूर्यज'।

सूर्यनगर—संज्ञा पु० [सं०] काश्मीर के एक प्राचीन नगर का नाम।

सूर्यनाभ—संज्ञा पु० [सं०] एक दानव का नाम। (हरिवंश)।

सूर्यनारायण—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य देवता।

सूर्यनेत्र—संज्ञा पु० [सं०] गरुड के एक पुत्र का नाम।

सूर्यपक्व—वि० [सं०] सूर्यातप द्वारा पकाया हुआ [को०]।

सूर्यपति—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य देवता।

सूर्यपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संज्ञा। २ छाया।

सूर्यपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ इमरमूल। अर्कपत्री। २ हुरहुर। आदित्यभक्ता। ३ मदार का पौधा।

सूर्यपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इमरमूल। अर्कपत्री। २ मयूरवन। वन उडदी। मापपर्णी।

सूर्यपर्व—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यपर्वन्] वह काल जिसमे सूर्य किसी नई राशि मे प्रवेश करता है।

सूर्यपाद—संज्ञा पु० [सं०] सूर्य की किरण।

सूर्यपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ शनि। २ यम। ३ वरुण। ४ अश्विनीकुमार। ५ सुग्रीव। ६ कर्ण।

सूर्यपुत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ यमुना। २ विद्युत्। ३ बिजली। (वैद्य०)।

सूर्यपुर—संज्ञा पुं० [सं०] काश्मीर के एक प्राचीन नगर का नाम।

सूर्यपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] एक छोटा ग्रंथ जिसमे सूर्यमाहात्म्य वर्णित है।

सूर्यप्रदीप—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध धर्मानुसार एक प्रकार का ध्यान या समाधि।

सूर्यप्रभ[१]—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य के समान दीप्तिमान्।

सूर्यप्रभ[२]—संज्ञा पुं० १ एक प्रकार की समाधि। २ श्रीकृष्ण की पत्नी लक्ष्मणा के प्रासाद या भवन का नाम। ३ एक बोधिसत्व का नाम। ४ एक नाग का नाम।

सूर्यप्रभव[१]—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य से उत्पन्न।

सूर्यप्रभव[२]—संज्ञा पुं० १ शनि। २ कर्ण।

सूर्यप्रशिष्य—संज्ञा पु० [सं०] जनक का एक नाम।

सूर्यफाणिचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक ज्योतिश्चक्र जिससे कोई कार्य आरंभ करते समय उसका शुभाशुभ फल निकालते है।

सूर्यबिंब—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यबिम्ब] सूर्य का मंडल।

सूर्यभ—वि० [सं०] सूर्य की तरह ज्योतियुक्त [को०]।

सूर्यभक्त—संज्ञा पु० [सं०] १. दुपहरिया। बंधूक-पुष्प-वृक्ष। २ सूर्य का उपासक व्यक्ति।

सूर्यभक्तक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य का उपासना करनेवाला व्यक्ति। २ दुपहरिया। बंधूक।

सूर्यभक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] हुरहुर। आदित्य भक्ता।

सूर्यभा—वि० [सं०] सूर्य के समान दीप्तिमान्।

सूर्यभागा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम।

सूर्यभानु—संज्ञा पु० [सं०] १ रामायण के अनुसार एक यक्ष का नाम। २ एक राजा का नाम।

सूर्यभ्राता—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यभ्रातृ] ऐरावत हाथी का नाम।

सूर्यमंडल—संज्ञा पु० [सं० सूर्यमण्डल] १ सूर्य का घेरा।

पर्या०—परिधि। परिवेश। मंडल। उपसूर्यक।

२ रामायण के अनुसार एक गधर्व का नाम।

**सूर्यमणि**—सज्ञा पुं० [स०] १ सूर्यकात मणि। २ एक प्रकार का पुष्पवृक्ष।

**सूर्यमाल**—सज्ञा पु० [स०] सूर्य की माला धारण करनेवाले अर्थात् शिव। महादेव।

**सूर्यमास**—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौरमास'।

**सूर्यमुखी**—सज्ञा पुं० [स० सूर्यमुखिन्] दे० 'सूरजमुखी'। उ०—वह सूर्यमुखी प्रसन्न थी। —साकेत पृ० ३४८।

**सूर्ययत्र**—सज्ञा पु० [स० सूर्ययन्त्र] १ सूर्य की उपासना मे सूर्यस्थानीय प्रतिमा या चक्र। २ सूर्यवेध की प्रक्रिया मे व्यवहृत एक प्रकार का यत्र (फो०)।

**सूर्यरश्मि**—सज्ञा पुं० [स०] सूर्य की किरन। रविकिरण। २ सविता का एक नाम।

**सूर्यरुच**—सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य की प्रभा या दीप्ति [को०]।

**सूर्यर्क्ष**—सज्ञा पुं० [सं०] वह नक्षत्र जिसमे सूर्य की स्थिति हो।

**सूर्यलता**—सज्ञा स्त्री० [स०] हुरहुर। हुलहुल। आदित्यभक्ता लता।

**सूर्यलोक**—सज्ञा पुं० [स०] सूर्य का लोक।

विशेष—कहते हैं, युद्ध मे मरनेवाले और काशीखड के अनुसार सूर्य के भक्त भी इसी लोक को प्राप्त होते हैं।

**सूर्यलोचना**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक गधर्वी का नाम।

**सूर्यवश**—सज्ञा पुं० [स०] क्षत्रियो के दो आदि और प्रधान कुलो मे से एक जिसका आरभ इक्ष्वाकु से माना जाता है।

विशेष—पुराणानुसार परमेश्वर के पुत्र ब्रह्मा, ब्रह्मा के मरीचि, मरीचि के कश्यप, कश्यप के सूर्य, सूर्य के वैवस्वत मनु और वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु थे। इक्ष्वाकु का नाम वैदिक ग्रथो मे भी आया है। ये इक्ष्वाकु त्रेता युग मे अयोध्या के राजा थे। त्रेता और द्वापर की सधि मे इसी वश मे दशरथ के यहाँ श्रीरामचद्र जी ने जन्म लिया था। द्वापर के प्रारभ मे श्रीरामचद्र के पुत्र कुश हुए। कुश के वश ने सुमित्र तक द्वापर मे एक हजार वर्ष राज्य किया। इसके बाद इस वश की विश्राति हुई।

**सूर्यवंशी**—वि० [स० सूर्यवशिन्] सूर्यवश का। जो क्षत्रियो के सूर्यवश मे उत्पन्न हुआ हो।

**सूयवश्य**—वि० [स०] सूर्यवश मे उत्पन्न।

**सूर्यवक्त्र**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की ओषधि।

**सूर्यवर**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की ओषधि।

**सूर्यवर्चस्**[1]—सज्ञा पु० [स०] १ एक देवगधर्व का नाम। २ एक ऋषि का नाम।

**सूर्यवर्चस्**—वि० सूर्य के समान दीप्तिमान्।

**सूर्यवर्मा**—सज्ञा पुं० [सं० सूर्यवर्मन्] महाभारत मे वर्णित त्रिगर्त के एक राजा का नाम।

**सूर्यवल्लभा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हुरहुर। आदित्यभक्ता। २ कमलिनी। पद्मिनी।

**सूर्यवल्ली**—सज्ञा स्त्री० [स०] १. दधियार। अधाहुली। अर्कपुष्पी। २ क्षीर काकोली।

**सूर्यवान**—सज्ञा पुं० [स० सूर्यवत्] रामायण के अनुसार एक पर्वत का नाम।

**सूर्यवार**—सज्ञा स० [स०] रविवार। आदित्यवार।

**सूर्यविकासी**—वि० [स० सूर्यविकासिन्] सूर्योदय होने पर विकसित या प्रसन्न होनेवाला [को०]।

**सूर्यविघ्न**—सज्ञा पुं० [पु०] विष्णु।

**सूर्यविलोकन**—सज्ञा पुं० [स०] एक मागलिक कृत्य जिसमे बच्चे को सूर्य का दर्शन कराया जाता है। यह बच्चे के चार महीने के होने पर किया जाता है।

**सूर्यवृक्ष**—सज्ञा पु० [स०] १ आक। मदार। अर्कवृक्ष। २ दधियार। अधाहुली। अर्कपुष्पी।

**सूर्यवेश्म**—सज्ञा पु० [स० सूर्यवेश्मन्] सूर्यमडल।

**सूर्यव्रत**—सज्ञा पुं० [स०] १ एक व्रत जो सूर्य भगवान् के प्रीत्यर्थ रविवार को किया जाता है। २ ज्योतिष मे एक चक्र।

**सूर्यशत्रु**—सज्ञा पुं० [स०] रामायण मे वर्णित एक राक्षस का नाम।

**सूर्यशिष्य**—सज्ञा पु० [स०] १ याज्ञवल्क्य का एक नाम। २ जनक का एक नाम।

**सूर्यशिष्यातेवासी**—सज्ञा पु० [स० सूर्यशिष्यान्तेवासिन्] दे० 'सूर्यशिष्य'।

**सूर्यशोभा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सूर्य का प्रकाश। धूप। २ एक प्रकार का फूल।

**सूर्यश्री**—सज्ञा पु० [स०] विश्वेदेवा मे से एक।

**सूर्यसक्रम**—सज्ञा पुं० [स० सूर्यसङ्क्रम] दे० 'सूर्यसक्रमण' [को०]।

**सूर्यसक्रमण**—सज्ञा पुं० [स० सूर्यसङ्क्रमण] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि मे प्रवेश। सूर्य की सक्राति। विशेष दे० 'सक्राति'।

**सूर्यसक्राति**—सज्ञा स्त्री० [स० सूर्यसङ्क्रान्ति] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि मे प्रवेश। विशेष दे० 'सक्राति'।

**सूर्यसज्ञ**—सज्ञा पु० [स०] १ सूर्य। २ आक। अर्क वृक्ष। ३ केसर। कुकुम। ४ ताँवा। ताम्र। ४ एक प्रकार का मानिक या चुन्नी।

**सूर्यसदृश**—सज्ञा पुं० [सं०] लोलावज्र का एक नाम। (बौद्ध)।

**सूर्यसाम**—सज्ञा पु० [स० सूर्यसामन्] एक साम का नाम।

**सूर्यसारथि**—सज्ञा पु० [सं०] सूर्य का सारथि—अरुण।

**सूर्यसावर्णि**—सज्ञा पुं० [स०] मार्कंडेय पुराण के अनुसार आठवे मनु का नाम।

विशेष—ये सूर्य के औरस हैं और सूर्य की पत्नी सज्ञा के गर्भ से उत्पन्न माने जाते हैं।

**सूर्यसावित्र**—सज्ञा पु० [सं०] १ विश्वेदेवा मे से एक। २ एक प्रसिद्ध ग्रथ का नाम।

विशेष—इसके तत्व का उपदेश पहले पहल सूर्य से प्राप्त कहा गया है।

सूर्यसिद्धात—सज्ञा पुं० [स० सूर्यसिद्धान्त] गणित ज्योतिष का भास्कराचार्य द्वारा विरचित एक ग्रथ [को०]।

सूर्यसुत—सज्ञा पु० [स०] १ शनि। २ कर्ण। ३ सुग्रीव। ४ यम।

सूर्यसूक्त—सज्ञा पु० [स०] ऋग्वेद के एक सूक्त का नाम जिसमे सूर्य की स्तुति की गई है।

सूर्यसूत—सज्ञा पु० [स०] सूर्य का सारथि, अरुण।

सूर्यस्तुत—सज्ञा पुं० [स०] एक दिन मे होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

सूर्यस्तुति—सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य का स्तवन। सूर्य की प्रार्थना [को०]।

सूर्यस्तोत्र—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूर्यस्तुति'।

सुर्यहृदय—सज्ञा पु० [स०] सूर्य का एक स्तोत्र [को०]।

सूर्यांशु—सज्ञा पु० [स०] सूर्य की किरण।

सूर्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सूर्य की पत्नी सज्ञा।

विशष—कई मत्रो मे यह सूर्य की कन्या भी कही गई हैं। कही ये सविता या प्रजापति की कन्या और अश्विनी की स्त्री कही गई हैं और कही सोम की पत्नी। एक मत्र मे इनका नाम ऊर्जानी आया हैं और ये पूषा की भगिनी कही गई हैं। सूर्या सावित्री ऋग्वेद के सूर्यसूक्त की द्रष्टा मानी जाती हैं।

२ नवोढा। नवविवाहिता स्त्री। ३ इद्रवारुणी। ४ सूर्य के विवाह से सबद्ध सूक्त या ऋचाएँ (को०)।

सूर्याकर—सज्ञा पुं० [स०] रामायण मे वर्णित एक जनपद का नाम।

सूर्याक्ष[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु। २ महाभारत मे एक राजा का नाम। ३ रामायण मे वर्णित एक बदर का नाम।

सूर्याक्ष[2]—वि० १ सूर्य के समान आँखोवाला। २ जिसकी आँख सूर्य हो (को०)।

सूर्याणी—सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य की पत्नी—सज्ञा।

सूर्यातप—सज्ञा पु० [स०] सूर्य की गरमी। धूप। घाम। उ०—विद्रुम औ, मरकत की छाया, सोने चाँदी का सूर्यातप।—युगात, पृ० ८६।

सूर्यात्मज—सज्ञा पु० [स०] १ शनि। २ कर्ण। ३ सुग्रीव। ४ यम (को०)।

सूर्याद्रि—सज्ञा पुं० [स०] मार्कंडेय पुराण मे आगत एक पर्वत का नाम।

सूर्यापाय—सज्ञा पुं० [स०] सूर्यास्त।

सूर्यापीड—सज्ञा पु० [स० सूर्यापीड] परीक्षित के एक पुत्र का नाम।

सूर्यायाम—सज्ञा पुं० [स०] सूर्यास्त का समय।

सूर्यार्घ्य—सज्ञा पु० [स०] सूर्य को दिया जानेवाला अर्घ्य [को०]।

सूर्यालोक—सज्ञा पुं० [स०] १ सूर्य का प्रकाश। २ गरमी। आतप।

सूर्यावर्त—सज्ञा पु० [स०] १ हुलहुल का पौधा। हुरहुर। आदित्यभक्ता। २ सूवर्चला। ब्रह्मसौवली। ३ गजपिप्पली। गजपीपल। ४ एक प्रकार की शिर की पीडा। आधासीसी।

विशेष—यह रोग वातज कहा गया है। इसमे सूर्योदय के साथ ही मस्तक मे दोनो भँवो के बीच पीडा आरभ होती है और सूर्य की गरमी बढने के साथ साथ बढती जाती है। सूरज ढलने के साथ ही पीडा घटने लगती है और शात हो जाती है।

५ बौद्ध मतानुसार एक प्रकार का ध्यान या समाधि। ६ एक प्रकार का जलपात्र।

सूर्यावर्तरस—सज्ञा पुं० [स०] श्वास रोग की एक रसौषध जो पारे, गधक और ताँबे के सयोग से बनती है।

सूर्यावर्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सूर्यावर्त' [को०]।

सूर्याश्म—सज्ञा पु० [स० सूर्याश्मन्] सूर्यकात मणि।

सूर्याश्व—सज्ञा पु० [स०] सूर्य का घोडा। वाताट हरित।

सूर्यास्त—सज्ञा पु० [स०] सूर्य का डूबना। सूर्य के छिपने का समय। सायकाल।

क्रि० प्र०—होना।

सूर्याह्व—सज्ञा पु० [स०] १ ताँबा। ताम्र। २ आक। मदार। अर्कवृक्ष। ३ महेंद्रवारुणी। बडी इद्रायन। ४ वह जो सूर्यसज्ञक हो (को०)।

सूर्येंदुसगम—सज्ञा [स० सूर्य + इन्दु + सङ्गम] सूर्य और चद्रमा का सगम या मिलन, अर्थात् दोनो की एक राशि मे स्थिति। अमावस्या।

सूर्योज्ज्वल—वि० [स०] सूर्य की तरह ज्योतित। उ०—भूत शिखर के चरम चूड सा, शत सूर्योज्ज्वल।—युगपथ, पृ० ११८।

सूर्योढ[1]—वि० [स०] सूर्य द्वारा लाया हुआ। सूर्यास्त के समय आया हुआ।

सूर्योढ[2]—सज्ञा स० १ सूर्यास्त का समय। २ वह अतिथि जो सूर्यास्त होने पर अर्थात् सध्या समय आता है।

सूर्योत्थान—सज्ञा पु० [स०] सूर्योदय। सूर्य का चढना।

सूर्योदय—सज्ञा पुं० [स०] १ सूर्य का उदय या निकलना। सूर्य के निकलने का समय। प्रात काल।

क्रि० प्र०—होना।

सूर्योदया गिरि—सज्ञा पु० [स०] वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे से सूर्य का उदित होना माना जाता है। उदयाचल।

सूर्योद्यान—सज्ञा पु० [सं०] सूर्यवन नामक तीर्थ।

सूर्योपनिषद्—सज्ञा स्त्री० [स०] एक उपनिषद् का नाम।

सूर्योपस्थान—सज्ञा पु० [स०] सूर्य की एक प्रकार की उपासना।

विशेष—प्रात, मध्याह्न और सायकाल को सध्या करते समय सूर्याभिमुख हो एक पैर से खडे होकर सूर्य की उपासना करने का विधान है।

सूर्योपासक—सज्ञा पुं० [स०] सूर्य की उपासना करनेवाला। सूर्यपूजक। सौर।

सूर्योपासना—सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य की आराधना या पूजा।

सूल—सज्ञा पु० [स० शूल, प्रा० सूल] १ बरछा। भाला। साँग। उ०—(क) वर्म चर्म कर कृपान सूल सेल धनुपवान, धरनि दलनि दानव दल रन करालिका—तुलसी। ग्र०, पृ० ४६२। (ख) लिए सूल सेल पास परिघ प्रचड दड भाजन सनीर धीर धरे धनुवान हैं।—तुलसी ग्र०, पृ० १७१। २ कोई चुभनेवाली

नुकीली चीज । काँटा । उ०—(क) सर सो समीर लाग्यो सूल सो सहेली सब विष सो विनोद लाग्यो बन सो निवास री ।—मतिराम (शब्द०) । (ख) ऐंती नचाइ कै नाच वा राँड को लाल रिझावन को फल येती । मेती सदा रसखानि लिए कुवरी के करेजनि सूल सी भेती ।—रसखान (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—चुभना ।—लगना ।

३ भाला चुभने की सी पीडा । कसक । उ०—बसिहौ बन लखिहौ मुनिन भखिहौ फल दल मूल । भरत राज करिहै अवधि मोहि न कछु अब सूल ।—पद्माकर (शब्द०) । ४ दर्द । पीडा । जैसे—पेट मे सूल ।

क्रि० प्र०—उठना ।—मिटना ।

विशेष—इस शब्द का स्त्रीलिंग प्रयोग भी सूर आदि कवियो मे मिलता है । जैसे—मेरे मन इतनी सूल रही ।—सूर (शब्द०) ।

५ माला का ऊपरी भाग । माला के ऊपर का फुलरा । उ०—मनि फूल रचित मखतूल की झूल न जाके तूल कोउ । सजि सोहे उघारि दुकुल वर सूल सबै अरि शूल सोउ ।—गोपाल (शब्द०) ।

**सूलधर**—सज्ञा पु० [स०शूलधर] दे० 'शूलधर' ।

**सूलधारी**—सज्ञा पु० [हिं० सूल + स० धारिन्] दे० 'शूलधर' ।

**सूलना**[1]—क्रि० स० [हिं० सूल + ना (प्रत्य०)] । भाले से छेदना । २ पीडित करना ।

**सूलना**[2]—क्रि० अ० भाले से छिदना । चुभना । २ पीडित होना । व्यथित होना । दुखना । उ०—फूलि उठ्यो वृदावन, भूलि उठे खग मृग, सूलि उठ्यो उर, विरहागि वगराई है ।—देव (शब्द०) ।

**सूलपानि**Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० शूलपाणि] दे० 'शूलपाणि' ।

**सूली**[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शूल] १ प्राणदड देने की एक प्राचीन प्रथा जिसमे दडित मनुष्य एक नुकीले लोहे के डडे पर बैठा दिया जाता था और उसके ऊपर मुँगरा मारा जाता था । २ फाँसी ।

क्रि० प्र०—चढना ।—चढाना ।—देना ।—पाना ।—मिलना ।

३ एक प्रकार का नरम लोहा जिसकी छडे बनती है ।—(लुहार) ।

**सूली**[2]—सज्ञा पुं० [देश०] दक्षिण दिशा । (लश०) ।

**सूली**Ⓤ[3]—सज्ञा पुं० [स० शूलिन्] महादेव । शिव । उ०—चदन की वर चौकी पै बैठि जु न्हाई जुन्हाई सी जोति समूली । अवर के धर अवर पूजि वरवर देव दिगवर सूली ।—देव (शब्द०) ।

**सूवना**Ⓤ[1]—क्रि० अ० [स० स्रवण] वहना । प्रवाहित होना । उ०—कहा करौ अति सूवै नयना उमगि चलत पग पानी । सूर सुमेर समाइ कहाँ धौ बुधिवासना पुरानी ।—सूर (शब्द०) ।

**सूवना**[2]—सज्ञा पु० [स० शुक] दे० सूआ । उ०—सेमर केरा सूवना सिहुले बैठा जाय । चोच चहोरे सिर धुनै यहु वाही को भाव । —कबीर (शब्द०) ।

**सूवर**†—सज्ञा पु० [स० शूकर] दे० 'सूअर' ।

**सूवा**[1]—सज्ञा पु० [१] फारसी सगीत के अनुसार २४ शोभाओ मे से एक ।

**सूवा**[2]—सज्ञा पुं० [स० शुक, प्रा० सुअ, सुव] १ तोता । सुग्गा । सूआ । उ०—(क) सूवा, एक सदेसडउ, वार सरेसी तुझ्झ । —ढोला०, दू० ३६८ । (ख) सारो सूवा कोकिल बोलत वचन रसाल । सुदर सबकौ कान दे वृद्ध तरुन अरु बाल ।—सुदर ग्र०, भा० २, पृ० ७३६ । २ शुक की तरह हरा रग । (लश०) । उ०—सूवा पाग केसरिया जामा जापर गजब किनारी ।—नट०, पृ० १२३ ।

**सूलूल**—सज्ञा पु० [अ०] स्तनाग्र । चूचुक । कुचाग्र [को०] ।

**सूस**[1]—सज्ञा पु० [अ०, मि०सं० शिशुमार] मगर की तरह का एक बडा जलजतु जो गगा मे बहुत होता है । सूइँस । उ०—सिर विनु कवच सहित उतराही । जहँ तहँ सुभट ग्राह जनु जाही । विनु सिर ते न जात पहिचाने । मनहुँ सूस जल मे उतराने । —सबल (शब्द०) ।

विशेष—इसका रंग काला होता है और यह प्राय जल के ऊपर आया करता है, पर किनारे पर नही आता । यह घडियाल या मगर के समान जल के बाहर के जतु नही पकडता ।

**सूस**[2]—सज्ञा पु० [अ०] १ रेशम के कपडो मे लगनेवाला कीट । २ मुलेठी का पेड [को०] ।

**सूसतौ**Ⓤ—वि० [स० स्वस्थ, प्रा० सुस्थ] दे० 'स्वस्थ[2]' । उ०—सूसतौ जी मे वीरा जोगिया । पदमणि आगलि घालइ छइ वाई ।—वी० रासो, पृ० ६३१ ।

**सूसमार**—सज्ञा पु० [स० शिशुमार] सूस ।

**सूसला** - सज्ञा पु० [स० शश] खरगोश ।

**सूसि**Ⓤ—सज्ञा पुं० [अ० सूस] दे० 'सूस' । उ०—फिरत चक्र आवर्त्त अनेका । उदरहि शीश सूसि ढिग एका ।—रघुनाथदास (शब्द०) । २ जलीय जतु । मगर । नक्र । उ०—बीच मिला दरियाव अध को ठाढ कराई । लेन गया वह धाह सूसि लैगा घिसियाई । —पलटू० बानी, पृ० ८८ ।

**सूसी**—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का धारीदार या चारखानेदार कपडा ।

**सूहटा**‡—सज्ञा पुं० [हिं० सुअटा, सुवटा, सूवटा] उ०—मुक्तिकरी नानक गुरू, रचक रामानद । ना पिंजर ना सूहटा, ना वाणी ना वद । —प्राण०, पृ० १९९ ।

**सूहर**†—सज्ञा पु० [स० शूकर, प्रा० सूअर (= सूहर)] शूकर । वराह । उ०—यह उल्लेख है कि उन्होने सूहर, हिरन, बकरे तथा निषिद्ध मोर का मास खाया था ।—प्रा० भा० प०, पृ० १९८ ।

**सूहा**[1]—सज्ञा पु० [हिं० सोहना] १ एक प्रकार का लाल रग । २. सपूर्ण जाति का एक सकर राग ।

विशेष—किसी के मत मे यह विभास और मालश्री के मेल से और किसी किसी के मत से विभास और वागीश्वरी के मेल से बना है। इसमे गाधार, धैवत और निषाद तीनो कोमल लगते हैं। इसके गाने का समय ६ दड से १० दड तक है। हनुमत् के मत मे यह दीपक राग का और अन्य मतो से हिंडोल या भैरव राग का पुत्र है। कुछ लोगो ने इसे रागिनी कहा है और भैरव की पुत्रवधू बताया है।

सूहा[2]—वि० [वि० स्त्री० सूही] विशेष प्रकार के लाल रग का। लाल। उ०—(क) सूहा चोला पहिर अमोला पिया घट पिया को रिझाओ रे।—कबीर श० भा० १, पृ० ७१। (ख) सजि सूहे दुकूल सबै सुख साधा।—पद्माकर (शब्द०)।

सूहाकान्हड़ा—सज्ञा पु० [हिं० सूहा + कान्हड़ा] सपूर्ण जाति का एक सकर राग जिसमे सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

सूहाटोडी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूहा + टोडी] सपूर्ण जाति की एक सकर रागिनी जिसमे सब कोमल स्वर लगते हैं।

सूहाविलावल—सज्ञा पु० [हिं० सूहा + विलावल] सपूर्ण जाति का एक सकर राग।

सूहाश्याम—सज्ञा पु० [स० सूहा + श्याम] सपूर्ण जाति का एक सकर राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

सूही—वि० स्त्री० [हिं० सूहा] दे० 'सूहा'। उ०—गावत चढी हैं हिंडोरे सूही सारी सोहै।—नद० ग्र०, पृ० ३७५।

सृका—सज्ञा स्त्री० [स० सृङ्का] १ दीप्त या प्रकाशयुक्त रत्नो की माला। २ पथ। राह। रास्ता [को०]।

सृखला—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खला] दे० 'शृखला'। उ०—तुलसिदास प्रभु मोह सृ खला छुटहि तुम्हारे छोरे।—तुलसी (शब्द०)।

सृग—सज्ञा पु० [स० शृङ्ग] दे० 'शृग'।

सृगवेर—सज्ञा पु० [स० शृङ्गवेर] दे० 'शृगवेर' [को०]।

सृगवेरपुर—सज्ञा पु० [सं० शृङ्गवेरपुर] दे० 'शृगवेरपुर'। उ०—सीता सचिव सहित दोउ भाई। सृ गवेरपुर पहुँचे आई।—तुलसी (शब्द०)।

सृगार—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गार] दे० 'शृगार'। उ०—महा सुघट्ट पट्टिय। सृ गार भूमि फट्टिय।—ह० रासो, पृ० १३३।

सृगी—सज्ञा पु० [स० शृङ्गिन्] दे० 'शृगी'।

सृजय—सज्ञा पु० [स० सृञ्जय] १ ऋग्वेद मे देवरात के एक पुत्र का नाम। २ मनु के एक पुत्र का नाम। ३ पुराणोक्त एक वश जिसमे धृष्टद्युम्न हुए थे और जिस वश के लोग महाभारत युद्ध मे पाडवो की ओर से लडे थे। ४ ययातिवश के कालनर के एक पुत्र का नाम।

सृजयी—सज्ञा स्त्री० [स० सृञ्जयी] हरिवश मे वर्णित यजमान की दो पत्नियो का नाम।

सृजरी—सज्ञा स्त्री० [स० सृञ्जरी] दे० 'सृ जयी'।

सृकडु, सृकडू—सज्ञा स्त्री० [स० सृकण्डु, सृकण्डू] खाज। खुजली। कडु।

सृक[1]—सज्ञा पु० [स०] १ शूल। भाला। २ बाण। तीर। ३ वायु। हवा। ४ कैरव। कमल का फूल। ५ वज्र [को०]।

सृक[2]—सज्ञा पु० [स० स्रज्, स्रक्] माला। उ०—दरसन हू नासै जम सैनिक जिमि नह बालक सेनी। सूर परस्पर करत कुलाहल, गर सृक पहरावैनी।—सूर (शब्द०)।

सृकाल—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शृगाल'। उ०—तुलसिदास हरिनाम सुधा तजि सठ हठि पियत विषम विष मागी। सूकर स्वान सृकाल सरिस जन जनमत जगत जननि दुख लागी।—तुलसी (शब्द०)।

सृक्क, सृक्कन्—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सृक्व'।

सृक्कणी, सृक्किणी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सृक्व'।

सृकथा—सज्ञा स्त्री० [स०] जोक।

सृक्की—सज्ञा स्त्री० [सं०] जोक।

सृक्व सृक्वन्—सज्ञा पु० [स०] ओठो का छोर। मुँह का कोना।

सृक्वणी सृक्विणी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सृक्व'।

सृक्वी सृक्वी—सज्ञा पुं० [स० सृक्विन्, सृक्विन्] दे० 'सृक्क' [को०]।

सृग[1]—सज्ञा पु० [स०] १ बरछा। भाला। भिदिपाल। २ तीर। बाण। शर।

सृग[2]—सज्ञा पु० [स० स्रक्, स्रज] माला। गजरा। हार। उ०—खेलत टूटि गए मुकता सृग मुकुतवृ द छहराने। मनु अपार सुख लेन तारकन द्वार द्वार दरसाने।—रघुराज (शब्द०)।

सृगाल—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० सृगाली] १ सियार। शृगाल। २ एक प्रकार का वृक्ष। ३ एक दैत्य का नाम। ४ हरिवश मे करवीरपुर के राजा वासुदेव का नाम। ५ प्रतारक। धूर्त। धोखेबाज। ६ कायर। भीरु। डरपोक। ७ दुशील मनुष्य। बदमिजाज। आदमी।

सृगालकटक—सज्ञा पुं० [स० सृगालकण्टक] सत्यानासी का पौधा। कटेरी। स्वर्णक्षीरी। भडभाँड।

सृगालकोलि—सज्ञा पु० [सं०] बेर का पेड या फल।

सृगालघटी—सज्ञा स्त्री० [स० सृगालघण्टी] तालमखाना। कोकिलाक्ष।

सृगालजबु—सज्ञा पु० [स० सृगालजम्बु] १ तरबूज। गोडुब। २ झडबेरी। छोटा बेर।

सृगालरूप—सज्ञा पुं० [स०] शिव। महादेव।

सृगालवदन—सज्ञा पु० [स०] हरिवश मे वर्णित एक असुर का नाम।

सृगालवास्तुक—सज्ञा पु० [स०] बथुआ साग का एक भेद।

सृगालविन्ना—सज्ञा स्त्री० [स०] पिठवन। पृश्निपर्णी।

सृगालवृंता—सज्ञा स्त्री० [स० सृगालवृन्ता] दे० 'सृगालविन्ना'।

सृगालिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सियारिन। गीदडी। २ लोमडी। ३ विदारीकद। भूमिकुष्माड। ४ पलायन। भगदड। ५ दगा फसाद। हगामा।

सृगालिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] सियारिन। गीदडी।

सृगाली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सियारिन। गीदडी। २ लोमडी। ३ पलायन। भगदड। ४ उपद्रव। हगामा। ५ तालमखाना। कोकिलाक्ष। ६ विदारीकद।

सृग्विनी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'स्रग्विणी'।

**सृजक**(यु)—संज्ञा पु० [√सृज् + हिं० क (प्रत्य०)] सृष्टि करनेवाला। उत्पन्न करनेवाला। सर्जक।

**सृजन**(यु)—संज्ञा पु० [सं० √सृज् > सर्जन] १ सृष्टि करने की क्रिया। उत्पादन। २ सृष्टि। उत्पत्ति। ३ छोडना। निकालना।

यौ०—सृजनधर्मा, सृजनधर्मी = दे० 'सृजनहार'। उ०—साहित्य उसी तरह सृजनधर्मी है।—सा० दर्शन, पृ० ५३। सृजनशीलता = निर्माण या सृजन की क्षमता।

**सृजनहार**(यु)—संज्ञा पु० [सं० √सृज् > सर्जन + हिं० हार] सृष्टिकर्ता। सृष्टि रचनेवाला। उत्पन्न करनेवाला। बनानेवाला।

**सृजना**(यु)—क्रि स० [सं० √सृज् + हिं० ना (प्रत्य०)] सृष्टि करना। उत्पन्न करना। रचना करना। बनाना। उ०—(क) कत विधि सृजी नारि जग माही। पराधीन सपनेहु सुख नाही।—तुलसी (शब्द०)। (ख) जाके अंश मोर अवतारा। पालत सृजत हरत संसारा।—सबलसिंह (शब्द०)। (ग) मेरा सुंदर विश्राम बना सृजता हो मधुमय विश्व एक।—कामायनी, पृ० १४८।

**सृजय**—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का पक्षी।

**सृजया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नीलमक्षिका।

**सृजिकाक्षार**—संज्ञा पु० [सं०] सज्जीखार [को०]।

**सृज्य**—वि० [सं०] १ जो उत्पन्न किया जानेवाला हो। २ जो छोडा या निकाला जानेवाला हो।

**सृणि**[१]—संज्ञा पु० [सं०] १ शत्रु। २ चंद्रमा।

**सृणि**[२]—संज्ञा पुं०, स्त्री० १. अंकुश। २ दाँती। हँसिया। हँसुआ [को०]।

**सृणिक**[१]—संज्ञा पु० [सं०] अंकुश।

**सृणिक**[२]—संज्ञा स्त्री० थूक। निष्ठीवन। लार।

**सृणिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सृणी'।

**सृणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दाँती। हँसिया। २. अंकुश (को०)।

**सृणीक**—संज्ञा पु० [सं०] १ वायु। २. अग्नि। ३ वज्र। ४ मदोन्मत्त या उन्मत्त व्यक्ति।

**सृणीका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] थूक। लार।

**सृत**[१]—वि० [सं०] १ जो खिसक गया हो। सरका हुआ। २ विचलित। २ गत। जो चला गया हो।

**सृत**[२]—संज्ञा पु० पलायन। गमन या विचलना [को०]।

**सृता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गमन। पलायन।

**सृति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मार्ग। रास्ता। २ जन्म। ३ आवागमन। ४. निर्माण। ५ गमन। संसरण। गति (को०)। ६ मारना। चोट पहुँचाना (को०)।

**सृत्वन्**—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रजापति। २ विसर्प रोग। ३. संसरण। सरकना। ४ बुद्धि।

**सृत्वर**—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सृत्वरी] गमनोद्यत। गमनशील [को०]।

**सृत्वरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माता। २. प्रवाह। धारा। ३. नदी (को०)।

**सृदर**—संज्ञा पु० [सं०] सर्प। साँप।

**सृदाकु**[१]—संज्ञा पु० [सं०] १ वायु। २ अग्नि। ३ वनाग्नि। दावानल। ४ वज्र। ५ गोध। गोह। ६ मृग। हिरन। ७ परिधि। परिवेश। ८ सूर्यमंडल (को०)।

**सृदाकु**[२]—संज्ञा स्त्री० नदी। धारा।

**सृप**—संज्ञा पु० [सं०] १ हरिवंश में वर्णित एक असुर। २. चंद्रमा।

**सृपमन्**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सर्प। २ शिशु। ३ तपस्वी।

**सृपाट**—संज्ञा पुं० [सं०] १ फूल के नीचे की छोटी पत्ती। २ एक प्रकार की माप (को०)।

**सृपाटिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] चोंच। चंचु।

**सृपाटी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चोंच। चंचु। २ एक प्रकार की माप (को०)। ३. उपानह। जूता (को०)। ४ मिश्रित धातु, काँसा आदि (को०)। ५ लघु पुस्तिका। छोटी पुस्तक (को०)।

**सृप्त**[१]—वि० [सं०] सरका हुआ। फिसला हुआ [को०]।

**सृप्त**[२]—वि० [सं०] १ चिकना। चिक्कण। स्निग्ध। २ जिसपर हाथ या पैर फिसले।

**सृप्मा**—संज्ञा पु० [सं० सृप्मन्] दे० 'सृपमन्' [को०]।

**सृप्र**—संज्ञा पुं० १ चंद्रमा। २ मधु। शहद।

**सृप्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम। सिप्रा नदी।

**सृंबिंद**—संज्ञा पु० [सं० सृविन्द] ऋग्वेद में वर्णित एक दानव जिसे इंद्र ने मारा था।

**सृम**—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर का नाम।

**सृमर**[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का पशु। (किसी के मत से बाल मृग) २ एक असुर का नाम।

**सृमर**[२]—वि० गत्वर। गमनशील [को०]।

**सृमल**—संज्ञा पुं० [सं०] हरिवंश में वर्णित एक असुर का नाम।

**सृष्ट**[१]—वि० [सं०] १ उत्पन्न। पैदा। उ०—सदा सत्यमय सत्य व्रत सत्य एक पति इष्ट। विगत असूया सील सैं ज्यौं अनसूया सृष्ट।—सं० सप्तक, पृ० ३६६। २ निर्मित। रचित। ३ युक्त। ४ छोडा हुआ। निकाला हुआ। ५ त्यागा हुआ। ६ निश्चित। संकल्प में दृढ। तैयार। ७ अगणित। बहुल। ८ अलंकृत। भूषित।

**सृष्ट**[२]—संज्ञा पुं० तेंदू। तिंदुक।

**सृष्टमारुत**—वि० [सं०] पेट की वायु को निकालनेवाला। (सुश्रुत)।

**सृष्टमूत्रपुरीष**—वि० [सं०] जिससे पेशाब और दस्त हो। मूत्र और दस्त लानेवाला [को०]।

**सृष्टि**[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्पत्ति। पैदाइश। बनाने या पैदा होने की क्रिया या भाव। २ निर्माण। रचना। बनावट। ३ संसार की उत्पत्ति। जगत् का आविर्भाव। दुनिया की पैदाइश। ४ उत्पन्न जगत्। संसार। दुनिया। चराचर पदार्थ। जैसे,—सृष्टि भर में ऐसा कोई न होगा। ५ प्रकृति। निसर्ग। कुदरत। ६ दानशीलता। उदारता। ७ त्याग। विसर्ग। परित्याग

(को०)। ८ सतान (को०)। ९ गभारी का पेड। खभारी। १० एक प्रकार की ईट जो यज्ञ की वेदी बनाने के काम मे आती थी।

**सृष्टि[2]**—सज्ञा पु० उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

**सृष्टिकर्ता**—सज्ञा पु० [स० सृष्टिकर्तृ] १ सृष्टि या ससार की रचना करनेवाला, ब्रह्मा। २ ईश्वर।

**सृष्टिकृत्**—सज्ञा पुं० [स०] १ दे० 'सृष्टिकर्ता'। २ पित्तपापडा। पर्पटक।

**सृष्टिदा**—सज्ञा पु० [स०] १ ऋद्धि नामक एक अष्टवर्गीय ओषधि। २ दे० 'सृष्टिप्रदा'।

**सृष्टिपत्तन**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की मत्रशक्ति।

**सृष्टिप्रदा**—सज्ञा स्त्री० [स०] गर्भदात्री क्षुप। श्वेत कटकारी। सफेद भटकटैया।

**सृष्टिविज्ञान**—सज्ञा पु० [स०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे सृष्टि की रचना आदि पर विचार किया गया हो।

**सृष्टिशास्त्र**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सृष्टिविज्ञान'।

**सृष्टिसृज्**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सृष्टिकर्ता' [को०]।

**सृष्ट्यचतर**—सज्ञा पुं० [स० सृष्ट्यन्तर] वह सतान जो अन्य जाति के विवाह से हुई हो [को०]।

**सेंजी**—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जो पजाब मे चौपायो को खिलाई जाती है। यह कपास के साथ बोई जाती है।

**सेंट**—सज्ञा पुं० [अ० सेन्ट] १ सुगधियुक्त द्रव्य। २ महक। गध। खुशबू। उ०—वेणी सेंट से महकाई सी, जरा रेडियो को ऊँचा कर दीजो, दुलहन।—वदनवार, पृ० ४४। ३ शत। सौ। ४ किसी बडे सिक्के का सौवाँ भाग।

**सेंटर**—सज्ञा पु० [अ० सेन्टर] १ गोलाई या वृत्त के बीच का बिंदु। केंद्र। मध्यबिंदु। २ प्रधान स्थान। जैसे,—परीक्षा का सेंटर।

**सेंटेंस**—सज्ञा पु० [अ० सेन्टेन्स] वाक्य। उ०—अग्रेजी का एक सेंटेंस भी ठीक से नही बोल सकते।—सन्यासी, पृ० १७५।

**सेंट्रल**—वि० [अ० सेन्ट्रल] जो केंद्र या मध्य मे हो। केंद्रीय। प्रधान। मुख्य। जैसे,—सेंट्रल गवर्नमेंट, सेंट्रल कमेटी, सेंट्रल जेल।

**सेंद्रिय**—वि० [स० सेन्द्रिय] [वि० स्त्री० सेन्द्रिया] १ इद्रियसपन्न। जिसमे इद्रियाँ हो। सजीव। जैसे,—सेंद्रिय द्रव्य। उ०—सेंद्रिया मैं, अगुणता से नित्य उकता ही रही थी, सजन मैं आ ही रही थी।—क्वासि, पृ० ८५। २ पुरुषत्वयुक्त। जिसमे मर्दानगी हो। पुसत्वयुक्त।

**सेंद्रियता**—सज्ञा स्त्री० [स० सेन्द्रिय + ता (प्रत्य०)] इद्रियसपन्न होने का भाव, स्थिति या क्रिया। सजीवता। साकारता। उ०—नभ विहारिणी, अलख प्राण, निज जन की सुधि करिए। हे अतीद्रिये सेंद्रियता से क्यो इतना डरिए।—अपलक, पृ० २२।

**सेंसर**—सज्ञा पु० [अ० सेन्सर] वह सरकारी अफसर जिसे पुस्तक, पुस्तिकाएँ विशेषकर समाचारपत्र छपने या प्रकाशित होने, नाटक खेले जाने, फिल्म दिखाए जाने, या तार कही भेजे जाने के पूर्व देखने या जाँचने का अधिकार होता है। यह जाँच इसलिये होती है कि कही उनमे कोई आपत्तिजनक या भडकानेवाली बात तो नही है।

**विशेष**—बायस्कोप के फिल्मो या नाटको की जाँच और काट छाँट करने के लिये तो सेंसर बराबर रहता है, पर समाचारपत्रो और तारघरो मे उसी समय सेंसर बैठाए जाते है जब देश मे विद्रोह या किसी प्रकार की उत्तेजना फैली होती है अथवा किसी देश से युद्ध छिडा होता है। सेंसर ऐसी बातो को प्रकाशित नही होने देता जिनसे देश मे और भी उत्तेजना फैल सकती हो अथवा शत्रु या विरोधी को किसी प्रकार का लाभ पहुँचता हो।

**यौ०**—सेंसर बोर्ड = सेंसर करनेवाले अनेक अधिकारियो का समूह या समिति।

**सेंसस**—सज्ञा पुं० [अ० सेन्सस] दे० 'मर्दुमशुमारी'।

**से**ँ**(यु)**—अव्य० [स० स्वयम्, प्रा० सय, सइँ = से] स्वय। खुद। उ०—से बुझै सुरतान दूत पच्छिम सुविहान।—पृ०, रा०, १०।८।

**से**ँ**क[1]**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेकना] १ आँच के पास या दहकते अगारे पर रखकर भूनने की क्रिया। २ आँच के द्वारा गरमी पहुँचाने की क्रिया। जैसे,—दद मे सेँक से बहुत लाभ होगा।

**क्रि० प्र०**—करना।—देना।—होना।

**यौ०**—सेँकसाँक।

**से**ँ**क[2]**—सज्ञा स्त्री० लोहे की कमाची जिसका व्यवहार छीपी कपडे छापने मे करते हैं।

**से**ँ**कना**—क्रि० स० [स० श्रेपण (= जलाना, तपाना)] १ आँच के पास या आग पर रखकर भूनना। जैसे,—रोटी सेँकना। २ आँच के द्वारा गरमी पहुँचाना। आँच दिखाना। आग के पास ले जाकर गरम करना। जैसे,—हाथ पैर सेँकना।

**सयो० क्रि०**—डालना।—देना।—लेना।

**मुहा०**—आँख सेँकना = सुदर रूप देखना। नजारा करना। धूप सेँकना = धूप मे रहकर शरीर मे गरमी पहुँचाना। धूप खाना।

**से**ँ**की†**—सज्ञा स्त्री० [फा० सीनी, हिं० सीनिकी, सनहकी] तश्तरी। रकाबी।

**से**ँ**गर[1]**—सज्ञा पु० [सं० शृङ्गार] १ एक पौधा जिसकी फलियो की तरकारी बनती है। २ इस पौधे की फली। ३ बबूल की फली या छीमी।

**विशेष**—ओषधिकार्य मे भी इसका प्रयोग विहित है। अधिकतर यह भैंस, बकरी, ऊँट आदि को खाने को दी जाती है। ४ एक प्रकार का अगहनी धान जिसका चावल बहुत दिनो तक रहता है।

**से**ँ**गर[2]**—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गीवर] क्षत्रियो की एक जाति या शाखा। उ०—कूरम, राठौर, गौड, हाडा, चहुवान, मौर, तोमर, चँदेल, जादौ जग जितवार है। पौरच, पुँडीर, परिहार और पँवार बैस, सेँगर, सिसोदिया, सुलकी दितवार हैं।—सूदन (शब्द०)। (ख) सेँगर सपूती सो भरे। जे सुद्ध जुद्धन मे लरे।—पद्माकर ग्र०, पृ० ८।

**सेँगरा**†—सज्ञा पुं० [देश०] पोखते बाँस का वह डडा जिसमे लटकाकर भारी पत्थर या धरन एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते है।

**सेँटा**†—सज्ञा स्त्री० [स० स्रोत] धार। स्रोत। उ०—कुछ इधर उधर से अकस्मात्, जल की सेँटो के भी फुहार। हे खनक किए जा कूपखनन तू यहाँ बीच मे ही न हार।—दैनिकी, पृ० ३१। २ गाय की छीमी से निकली हुई दूध की धार।

**सेँठा**[1]—सज्ञा पुं० [देश०] १ मूँज या सरकडे के सीके का निचला मोटा मजबूत हिस्सा जो मोढे आदि बनाने के काम मे आता है। कन्ना। २ एक प्रकार की घास जो छप्पर छाने के काम मे आती है। ३ जुलाहो की वह पोली लकडी जिसमे ऊरी फँसाई जाती है। डोंड।

**सेँठा**[2]—वि० [स० सुष्ठु या स्व + इष्ट] [स्त्री० सेँठी] १ दृढतापूर्वक। ठीक। मजबूत। श्रेष्ठ। उ०—सब सुख छाँड भज्यो इक साँई राम नाम लिव लागी। सूरवीर सेँठा पग रोप्या जरा मरण भव भागी।—राम० धर्म०, पृ० ४५। (ख) परगह ले बाँधी पगाँ, सेँठी गूजर साथ। हजारो सारो हुकम, हुओ रँगीली हाथ।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ११। २ इच्छित। इष्ट। अभिलषित। उ०—खोजी खोज पकडिया सेँठा। सब सता माही मिलि बेठा।—राम० धर्म०, पृ० २०८।

**सेँड़, सेँढ**—सज्ञा पुं० [सं० सेव्र (=बधन, निगड) अथवा देश०] एक प्रकार का खनिज पदार्थ जिसका व्यवहार सुनार करते है। उ०—राज्य के विभिन्न भागो मे कोयला, मैंगनीज, सिलिका, सेँड आदि अनेक खनिज पदार्थ विपुल मात्रा मे पाए जाते है।—शुक्ल अभि० ग्र०, पृ० १६।

**सेँत**—सज्ञा स्त्री० [स० सहति (=किफायत, समूह, राशि) या देश०] १ कुछ व्यय का न होना। पास का कुछ न लगना। कुछ खर्च न होना। २ ⓤ†समूह। राशि। ढेर। उ०—अपनो गाँव लेहु नँदरानी। बडे बाप की बेटी तातें पूतहि भले पढावति बानी।··· सुनु मैया याके गुन मोसो, इन मोहि लियो बुलाई। दधि मे परी सेँति की चीटी, मोतैं सबै कढाई।—सूर (शब्द०)।

मुहा०—सेँत का = (१) जिसमे कुछ दाम न लगा हो। जो बिना मूल्य दिए मिले। जिसके मिलने मे कुछ खर्च न हो। मुफ्त का। जैसे—(क) सेँत का सौदा नही है। (ख) सेँत की चीज की कोई परवाह नही करता। २ बहुत सा। ढेर का ढेर। बहुत ज्यादा। उ०—चलहु जु मिलि उनही पै जैए, जिन्ह तुम टोकन पथ पठाए। सखा सग लीने जु सेँति के फिरत रैनि दिन बन मे पाए। नाहिन राज कस को जान्यौ बाट रोकते फिरत पराये।—सूर (शब्द०)।

विशेष—यह मुहावरा पूरबी अवधी का है और बस्ती, गोडा, फैजाबाद आदि जिलो मे बोला जाता है। सेँत मे = (१) बिना कुछ दाम दिए। बिना कुछ खर्च किए। बिना मूल्य के। मुफ्त मे। जैसे—यह घडी मुझे सेँत मे मिल गई। (२) व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फजूल। जैसे—क्यो सेँत मे झगडा लेते हो।

**सेँतना**ⓤ—क्रि० स० [हिं० सेँतना] दे० 'सेँतना'।

**सेँतमेँत**—क्रि० वि० [हिं० सेत + मेँत (अनु०) १ बिना दाम दिए। मुफ्त मे। फोकट मे। सेत मे। उ०—(क) कलकी और मलीन बहुत मैं सेतैमेत बिकाऊँ।—सूर (शब्द०)। (ख) नाम रतन धन मुज्झ मे, खान खुली घट माहिं। सेँतमेँत ही देत हौं, गाहक कोई नाहिं।—सतवानी०, पृ० ५। (ग) सेँतमेँत के यश का भागी प्रिये, तुम्हारा है भर्ता।—साकेत, पृ० ३७६। २ वृथा। फजूल। निष्प्रयोजन। बेमतलब। जैसे—क्यो सेँतमेँत झगडा मोल लेते हो ?

**सेँति, सेँती**[1]—सज्ञा स्त्री०[हिं० सेंत] दे० 'सेत'। उ० साई सेँति न पाइए, बातन मिलै न कोय। कबीर सौदा नाम का, सिर बिन कबहुँ न होय। (ख) एक तुम्है प्रभु चाहौ राज। भूपति रक सेंति नहिं पूँछौ चरन तुम्हार सवाँरचौ काज।—मलूक०, पृ० ६।

**सेँति, सेँती**[2]—प्रत्य० [प्रा० सुतो, पचमी विभक्ति] पुरानी हिंदी की करण और अपादान की विभक्ति। से। उ०—(क) तोहि पीर जो प्रेम की पाका सेँती खेल।—कबीर (शब्द०)। (ख) हिंदू व्रत एकादसि साधै दूध सिंघाडा सेँती। कबीर (शब्द०)। (ग) राजा सेँति कुँवर सब कहही। अस अस मच्छ समुद मँह अहही।—जायसी (शब्द०)। (घ) सजीवन तब कचहिं पढाई। ता सेँती यो कह्यो समुझाई।—सूर (शब्द०)।

**सेँथा**†—सज्ञा पुं० [हिं० सेठा] दे० 'सेठा'।

**सेँथी**†—सज्ञा स्त्री० [स० शक्ति] बरछी। भाला। शक्ति शर्वला। उ०—इद्रजीत लीनी जब सेँथी देवन हहा करचो। छूटी बिज्जु राशि वह मानो भूतल बधु परचो।—सूर (शब्द०)।

**सेँद**‡—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेध] दे० 'सेँध'।

**सेँदुर**ⓤ‡—सज्ञा पु० [स० सिंदूर] ईंगुर की बुकनी। सिंदूर। उ०—(क) माँग मै सेँदुर सोहि रह्यो गिरधारन है उपमा न तिहूँ पुर। मानो मनोज की लागी कृपान, परचो कटि बीच ते राहु बहादुर—सुदरीसर्वस्व (शब्द०)। (ख) बिन सेँदुर जानउँ दिआ। उँजियर पथ रइनि मँह किआ।—जायसी (शब्द०)

विशेष—सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ इसे माँग मे भरती है। यह सौभाग्य का चिह्न माना जाता है। विवाह के समय मे वर कन्या की माँग मे सिंदूर डालता है और उसी घडी से वह उसकी स्त्री हो जाती है।

क्रि० प्र०—पहनना।—देना।—भरना।—लगाना।

मुहा०—सेंदुर चढना = स्त्री का विवाह होना। सेँदुर देना विवाह के समय पति का पत्नी की माँग भरना। उ०—रा सीय सिर सेँदुर देही। सोभा कहि न जाय बिधि केही।—तुल (शब्द०)।

**सेँदुरदानी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेंदुर + फा० दानी] सिंदूर रखने डिबिया। सिंदूरा।

**सेँदुरबहोरा**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेंदुर + बहोरना (=पलटना या ० करना)] विवाह के अवसर पर वर द्वारा कन्या के शीश सिंदूर दान के बाद कन्या की कोई भी बडी बहन या कि

सौभाग्यवती स्त्री द्वारा सिंदूर को एक ढग से सज्जित करने की क्रिया।

**सेँदुरा[1]**—वि० [हिं० सेंदुर] [वि० स्त्री० सेंदुरी] सिंदूर के रग का। लाल। जैसे,—सेँदुरी गाय। सेँदुरा आम।

**सेँदुरा[2]**—सज्ञा पु० [हिं० सिंदूर, सिंधोरा] सिंदूर रखने का डिब्बा। सिंदूरा।

**सेँदुरिया**—सज्ञा पु० [स० सिन्दूरिका, सिन्दूरी] एक सदाबहार पौधा जिसमे सिंदूर के रग के लाल फूल लगते है।

विशेष—इसके पत्ते ६-७ अगुल लबे और ४-५ अगुल चौडे, नुकीले और अरवी के पत्ते से मिलते जुलते हैं। फूल दो ढाई अगुल के घेरे मे पाँच दलो के और सिंदूर के रग के लाल होते है। इस पौधे की गुलाबी, बैगनी और सफेद फूलवाली जातियाँ भी होती हैं। गरमी के दिनो मे यह फूलता है और बरसात के अत मे इसमे फल लगने लगते हैं। फल लबोतरे, गोल, ललाई लिए भूरे तथा कोमल महीन महीन काँटो से युक्त होते हैं। गूदे का रग लाल होता है। गूदो के भीतर जो बीज होते हैं, उन्हें पानी मे डालने से पानी लाल हो जाता है। बहुत स्थानो पर रग के लिये ही इस पौधे की खेती होती है। शोभा के लिये यह बगीचो मे भी लगाया जाता है। आयुर्वेद मे यह कडवा, चरपरा, कसैला, हलका, शीतल तथा विषदोष, वातपित्त, वमन, माथे की पीडा, आदि को दूर करनेवाला माना गया है।

पर्या०—सिंदूरपुष्पी। सिंदूर। तृणपुष्पी। रक्तबीजा। रक्तपुष्पी। वीरपुष्पा। करच्छदा। शोणपुष्पी।

**सेँदुरिया[2]**—वि० सिंदूर के रग का। खूब लाल।

यौ०—सेँदूरिया आम=वह आम का फल जिसका छिलका लाल सिंदूर के रग का हो।

**सेँदुरी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेंदुर+ई (प्रत्य०)] सिंदूर के रग की लाल गाय। उ०—कजरी धुमरी सेँदुरी धौरी मेरी गैया। दुहि ल्याऊँ मैं तुरत ही तू करि दै छैया।—सूर (शब्द०)।

**सेँध[1]**—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धि] चोरी करने के लिये दीवार मे किया हुआ बडा छेद जिसमे से होकर चोर किसी कमरे या कोठरी मे घुसता है। सधि। सुरग। सेन। नकब।

विशेष—सस्कृत के नाटक 'मृच्छकटिक' मे इसके अनेक प्रकार वर्णित हैं।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगना।

**सेँध[2]**—सज्ञा स्त्री० [देश०] १ गोरखककडी। फूट। मृगेर्वारु। २ पेहँटा। कचरी।

**सेँधना[1]**—क्रि० स० [हिं० सेंध+ना (प्रत्य०)] सेंध या सुरग लगाना।

**सेँधना[2]**—क्रि० स० [स० सन्धान] सबधित करना। स्थापित करना। सधान करना। उ०—पज सो पज सनेह मिल कर सेँधिय दारि सुधारि सुध भिर।—पृ० रा०, १२। ३६६।

**सेँधा[1]**—सज्ञा पु० [स० सैन्धव] एक प्रकार का नमक जो खान से निकलता है। सैंधव। लाहौरी नमक।

विशेष—इसकी खाने खेवडा, शाहपुर, कालानाग और कोहाट मे हैं। यह सब नमको मे श्रेष्ठ है। वैद्यक मे यह स्वादु, दीपक, पाचक, हल्का स्निग्ध, रुचिकारक, शीतल, वीर्यवर्धक, सूक्ष्म, नेत्रो के लिये हितकारी तथा त्रिदोषनाशक माना गया है। इसे 'लाहौरी नमक' भी कहते है।

**सेँधा[2]**—वि० [स० सन्ध] १ सधान या सबधवाला। जानकार। उ०—(क) दे नँह सेँधा नूं दगो, ग्रहे कुतो ही ज्ञान।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ६८। २ मुलाकाती। मिलनेवाला। (ख) देवे सेँधा नू दगो साह करे सनमान।—बाँकी० ग्र०, भा०२, पृ० ६८।

**सेँधानी**—सज्ञा स्त्री० [सं० सज्जन, सज्ञान या सन्धान] दे० 'महिदानी'। उ०—यह श्रीनाथ जी ने वा पटेल को हार की सेँधानी दीनी।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २२१।

**सेँधि**—सज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सेंध'। उ०—चोर पैठि जस सेँधि सवारी। जुआ पैत जेउँ लाख जुआरी।—जायसी ग्र० (गुप्ता०), पृ० २६५। २ सेँधा नमक।

**सेँधिया**—वि० [हिं० सेंध] सेंध लगानेवाला। दीवार मे छेद करके चोरी करनेवाला। जैसे—सेँधिया चोर।

**सेँधिया[2]**—सज्ञा पुं० [सं० मेटु] १ ककडी की जाति की एक बेल जिसमे तीन चार अगुल के छोटे छोटे फल लगते हैं। कचरी। सेंध। पेहँटा। २ एक प्रकार की ककडी। फूट।

विशेष—यह खेतो मे प्राय आपसे आप उपजता है।

३ एक प्रकार का विष।

**सेँधिया[1]**—सज्ञा पुं० [मरा० शिंदे] ग्वालियर का प्रसिद्ध मराठा राजवश जिसके सस्थापक रणोजी शिंदे थे।

**सेँधी[1]**—सज्ञा स्त्री० [सिंध (देश, जहाँ खजूर बहुत होता है, मरा० शिंदी] १ खजूर। २ खजूर की शराब। मीठी शराब।

**सेँधी[2]**—सज्ञा स्त्री० [सं० सेटु] १. खेत की ककडी। फूट। २ कचरी। पेहँटा।

**सेँधु**—सज्ञा पुं० [स० सिन्धु] समुद्र। सिंधु। उ०—साधु के महिमा कहि नहि जाई। जैसे सेँधु जल थाह न पाई।—सत० दरिया, पृ० १२।

**सेँधुर[1]**—सज्ञा पु० [स० सिन्धु, हिं० सेंधु+र (प्रत्य०)] दे० 'समुद्र'। उ०—एह भव सेँधुर कत सभ खाई। भँवर तरग धार कठिनाई।—सत० दरिया, पृ० २०।

**सेँधुर[2]**—सज्ञा पु० [स० सिन्धुर] दे० सिंधुर।

**सेँधुर[3]**—सज्ञा पुं० [स० सिन्दूर] दे० 'सेंदुर'।

**सेँबल**—सज्ञा पु० [स० शाल्मली, हिं० सेंवर] दे० सेमल। उ०—यहु ससार सेँवल कै सुख ज्यूं तापर तूं जिनि फूलै।—सतबानी०, भा० २, पृ० ६२।

**सेँभा**—सज्ञा पु० [देश०] घोडो का एक वात रोग।

**सेँभु**—सज्ञा पु० [स० स्वयम्भू] दे० 'स्वयभू'। उ०—वर सिरदार विभार सेँभु चहुआन नाह वर।—पृ० रा० २५-३०७।

**सेँभरी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेँवई] दे० 'सेँवई'। उ०—घर घर ढूढे अम्मा मेरी सेँभरी जी, राजा आयो तीजँन को त्यौहार। —पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ६४४।

**सेँमुष**—वि० [सं० सम्मुख] अनुकूल। अभिमुख। उपयुक्त। उ०—सेँमुष धनि धनि उच्चरै भल छोरयो चहुआन।—पृ० रा०, ६६।४०६।

**सेँलोटना**—क्रि० अ० [स० स० + लुठन] धराशायी होना। ढहना। लोट जाना। उ०—गढन कोट सेँलोट धममि, धम धम्म अरिनि पुर।—पृ० रा०, १।७१६।

**सेँवई**—सज्ञा स्त्री० [स० सेविका] मैदे के सुखाए हुए सूत के लच्छे जो घी मे तलकर और दूध मे पकाकर खाए जाते है।

मुहा०—सेँवई पूरना या वटना = गुँधे हुए मैदे को हथेलियो से से रगड रगडकर सूत के आकार मे वढाते जाना।

**सेँवर**ⓤ—सज्ञा पु० [हिं० सेवल] दे० 'सेमल'। उ० - (क) बार बार निशि दिन अति आतुर फिरत दशो दिशि धाए। ज्यो शुक सेँवर फूल विलोकत जात नही विन खाए।—सूर (शब्द०)। (ख) राजँ कहा सत्य कहु सूआ। विनु सत जस सेँवर कर भूआ।—जायसी (शब्द०)।

**सेँहा**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेँध] दे० 'सेँध'।

**सेँहा**[१]—सज्ञा पु० [हिं० सेँध] कूआँ खोदनेवाला। कुइहाँ।

**सेँहा**[२]—सज्ञा पु० [देश०] दे० 'सेँधि'।

**सेँही**—सज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सेँध'।

**सेँहुआ**—सज्ञा पुं० [हिं० सेहुआँ] दे० 'सेहुआँ'।

**सेँहुड**—सज्ञा पुं० [स० सेहुण्ड] थूहर। वि० दे० 'थूहर'। उ०—छतै नेह कागद हिये भई लखाइ न टाँक। विरह तचे उधरयो सु अब सेँहुड को सो आँक।—विहारी (शब्द०)।

**से**[१]—प्रत्य० [प्रा० सुतो, पु०हिं० सेंति] करण और अपादान कारक का चिह्न। तृतीया और पचमी की विभक्ति। जैसे—(क) मैंने अपनी आँखो से देखा। (ख) पेड से फल गिरा। (ग) वह तुमसे वढ जायगा।

**से**[२]—वि० [हिं० 'सा' का वहुवचन] समान। सदृश। सम। जैसे,—इसमे अनार से फल लगते हे। उ०—नासिका सरोज गधवाह से सुगधवाह, दारयो से दसन, कैसे बीजुरी सो हास है।—केशव (शब्द०)।

**से**ⓤ[३]—सर्व० [हिं० 'सो' का वहुवचन] वे। उ०—अवलोकिहौ सोच विमोचन को ठगि सी रही, जो न ठगे धिक से।—तुलसी (शब्द०)।

**से**[४]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सेवा। खिदमत। चाकरी। २ कामदेव की पत्नी का नाम।

**से**†[५]—वि० [फा० सेह] तीन। उ०—उन्हे से चहार दिन हो जजवे वहोश। आपस के जात कूँ कर कर फरामोश।—दक्खिनी०, पृ० १६६।

**सेई**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेर] अनाज नापने का काठ का एक गहरा वरतन।

**सेउ**ⓤ†—सज्ञा पु० [हिं० सेव] दे० 'सेव'। उ०—किसिमिसि सेउ फरे नउ पाता। दारिउँ दाख देखि मन राता।—जायसी (शब्द०)।

**सेकड**[१]—सज्ञा पु० [अ० सेकन्ड] एक मिनट का ६० वाँ भाग।

**सेकड**[२]—वि० दूसरा। जैसे,—सेकड पार्ट। सेकड हैड।

**सेक**—सज्ञा पुं० [स०] १ जलसिंचन। सिंचाव। २ जलप्रक्षेप। सेचन। छिडकाव। छीटा। मार्जन। तर करना। उ०—और जु अनुसयना कही, तिनके विमल विवेक। वरनत कवि मतिराम यह रस सिंगार को सेक।—मतिराम ग्र०, पृ० २८६। ३ अभिषेक। उ०—वोली ना नवेली कछू वोल सतराय वह, मनसिज ओज को सुहानो कछु सेक है।—मतिराम ग्र०, पृ० ३३७। ४ तैल सेचन या मर्दन। तेल लगाना या मलना। (वैद्यक)। ५ एक प्राचीन जाति का नाम। ६ (वीर्य का) पतन या स्राव (को०)। ७ स्नान करने का फुहारा (को०)। ८ किसी भी द्रव पदार्थ की बूंद (को०)।

**सेकट्टर**†—सज्ञा पुं० [अ० सेक्रेटरी] दे० 'सेक्रटरी'। उ०—सेकट्टर साहब बोलटा है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४५५।

**सेकड़ा**—सज्ञा पुं० [देश०] वह चाबुक या छडी जिससे हलवाहे वल हाँकते है। पैना।

**सेकतव्य**ⓤ—वि० [सं० सेक्तव्य] १ सीचने योग्य। २ जिसे सीचना या तर करना हो।

**सेकपात्र**—सज्ञा पुं० [स०] सीचने का वरतन। डोल। डोलची।

**सेकभाजन**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सेकपात्र'।

**सेकमिश्रान्न**—सज्ञा पु० [स०] वह खाद्य पदार्थ जिसमे दही पडा हो।

**सेकिम**[१]—वि० [सं०] १ सीचा हुआ। तर किया हुआ। २ ढाला हुआ (लोहा)।

**सेकिम**[२]—सज्ञा पुं० [स०] मूली। मूलक। गाजर।

**सेकुवा**—सज्ञा पुं० [देश०] काठ के दस्ते का लवा करछा या डौवा जिससे हलवाई दूध औटाते है।

**सेकूरी**—सज्ञा स्त्री० [देश०] धान। (सुनार)।

**सेक्त-य**—वि० [सं०] १ सीचने योग्य। २ जिसे सीचना या तर करना हो।

**सेक्ता**[१]—वि० [स० सेक्तृ] [वि० स्त्री० सेक्त्री] १. सीचनेवाला। २ वरदानेवाला। जो गाय, घोडी आदि को वरदाता है। ३ जल लानेवाला (को०)।

**सेक्ता**[२]—सज्ञा पु० १ पति। शौहर। २ जलवाहक व्यक्ति (को०)। ३ वह जो सेक करता हो (को०)।

**सेक्त्र**—सज्ञा पुं० [स०] सीचने का वरतन। जल उलीचने का वरतन। डोल। डोलची।

**सेक्रेटरी**—सज्ञा पुं० [अ०] १ वह उच्च कर्मचारी या अफसर जिसके अधीन सरकार या शासन का कोई विभाग हो। मत्री।

सचिव। जैसे, —फारेन सेक्रटरी। स्टेट सेक्रेटरी। २ वह पदाधिकारी जिसपर किसी सस्था के कार्यसपादन का भार हो। जैसे,—काग्रेस सेक्रेटरी। ३ वह व्यक्ति जो दूसरे की ओर से उसके आदेशानुसार पत्रव्यवहार आदि करे। मुशी। जैसे,—महाराज के सेक्रेटरी।

**सेक्रेटेरियट**—सज्ञा पुं० [अ०] किसी सरकार के सेक्रेटरियो का कार्यालय या दफ्तर। शासक या गवर्नर का दफ्तर। उ०—तरक्की करते करते सेक्रेटेरियट की अँगनई मे दाखिल हो बैठे थे।—नई०, पृ० ८।

**सेक्शन**—सज्ञा पुं० [अ०] विभाग। जैसे,—इस दर्जे मे दो सेक्शन हैं।

**सेख(पु)[1]**—सज्ञा पुं० [स० शेष] १ शेषनाग। विशेष दे० 'शेष'—८। उ०—महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेख।—तुलसी (शब्द०)। २ समाप्ति। अत। खातमा। उ०—पियत बात तन सेख कियो द्विज रात विहरि वन। मिटै वासना नाहिं विना हरिपद रज के तन।—सुधाकर (शब्द०)।

**सेख[2]**—सज्ञा पुं० [अ० शैख] दे० 'शेख'। उ०—इनमे इते बलवान हैं। उत सेख मुगल पठान हैं।—सूदन (शब्द०)।

**सेखर(पु)**—सज्ञा पुं० [स० शेखर] दे० 'शेखर'। उ०—मोर मुकुट की चद्रिकन यौ राजत नँदनद। मनु ससिसेखर को अकस किय सेखर सतचद।—विहारी (शब्द०)।

**सेखवा†**—सज्ञा पुं० [अ० शैख, हिं० सेख + वा (प्रत्य०)] दे० 'शेख'। उ०—ना हुवाँ ब्राह्मन सूद्र न सेखवा।—कबीर श०, पृ० ४७।

**सेखावत**—सज्ञा पुं० [फा० शैख + हिं० सेख + आवत (प्रत्य०), अथवा 'शेखावाटी' नाम का एक स्थान] राजपूतो की एक जाति या शाखा। शेखावत।

विशेष—इनका स्थान राजपूताने का शेखावाटी नाम का कसवा है। राजस्थान मे स्थान, जाति, वश और विशिष्ट व्यक्ति आदि के आगे यह सबधवाचक प्रत्यय लगाते है। जैसे,—ऊदावत, कूपावत आदि।

**सेखी‡**—सज्ञा स्त्री० [फा० शेखी] दे० 'शेखी'।

**सेगव**—सज्ञा पु० [सं०] नेकडे का बच्चा।

**सेगा**—सज्ञा पुं० [अ० सीगह] १ विभाग। महकमा। २ विषय। पढाई या विद्या का कोई क्षेत्र। जैसे,—वह इम्तहान मे दो सेगो मे फेल हो गया।

**सेगुन†**—सज्ञा पु० [देश०] दे० 'सागोन'।

**सेगोन, सेगौन**—सज्ञा पु० [देश०] मटमैले रग की लाल मिट्टी जो नालो के पास पाई जाती है।

**सेच**—सज्ञा पु० [स०] सेक। सिचाई। छिडकाव [को०]।

**सेचक[1]**—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सेचिका] सीचनेवाला। छिडकनेवाला। तर करनेवाला।

**सेचक[2]**—सज्ञा पुं० मेघ। बादल।

**सेचन**—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० सेचनीय, सेचित, सेच्य] १ जलसिचन। सिचाई। २ माजन। छिडकाव। छीटे देना। ३ अभिषेक। ४ ढलाई (धातु की)। ५ (नाव से) जल उलीचने का बरतन। लोहँदी। ६ दे० 'सेक' (को०)।

**सेचनक**—सज्ञा पुं० [स०] १ अभिषेक २ स्नान का फुहारा [को०]।

**सेचनघट**—सज्ञा पु० [स०] वह बरतन जिससे जल सीचा जाता है।

**सेचनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] सीचने की छोटी बालटी [को०]।

**सेचनीय**—वि० [स०] सीचने योग्य। छिडकने योग्य।

**सेचिका**—वि० स्त्री० [स०] दे० 'सेचक'।

**सेचित**—वि० [स०] १ जो सीचा गया हो। तर किया हुआ। २ जिसपर छीटे दिए गए हो।

**सेच्य**—वि० [स०] १ सीचने योग्य। जल छिडकने योग्य। २ जिसे सीचना हो। जिसे तर करना हो।

**सेछागुन**—सज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का पक्षी।

**सेज**—सज्ञा [स० शय्या, प्रा० सज्जा, सिज्जा, सेज्ज, सेज्जा] शैया। पलग और बिछौना। उ०—(क) सेज रुचिर रुचि राम उठाए। प्रेम समेत पलँग पौढाए।—तुलसी (शब्द०)। (ख) चाँदनी महल फैल्यो चाँदनी फरस सेज, चाँदनी बिछाय छवि चाँदनी रितै रही।—प्रतापसाहि (शब्द०)।

**सेजदह**—वि० [फा० सेज़दह] त्रयोदश। तेरह [को०]।

**सेजदहुम**—वि० [फा० सेज़दहुम] तेरहवाँ [को०]।

**सेजपाल**—सज्ञा पुं० [सं० शय्यापाल, हिं० सेज + पाल] राजा की शैया या सेज पर पहरा देनेवाला। शयनगृह पर पहरा देनेवाला। शयनागार का रक्षक। शैयापाल। उ०—राजा उस समय शैया पर पौढे थे और सेजपाल लोग अस्त्र बाँधे पहरा दे रहे थे।—गदाधरसिह (शब्द०)।

**सेजबद(पु)**—वि० [हिं० सेज + फा० बद] दे० 'सेजबध'। उ०—खासा पलँग सेजवद तकिया, तोसक फूल बिछाया।—कबीर० श०, भा०, पृ० २३।

**सेजबध(पु)**—सज्ञा पु० [हिं० सेज + बध] वह रस्सी जिससे बिछौने की चादर को पायो मे बाँधते है। उ०—सेजबध बाँधि कै पान को चाभते।—पलटू०, भा० २, पृ० ११।

**सेजरिया(पु)‡**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेज] दे० 'सेज'। उ०—रस रँग पगी है देखो लाल की सेजरिया।—कबीर (शब्द०)।

**सेजरी†**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेज + री (प्रत्य०)] शय्या। दे० 'सेज'।

**सेजवार†**—सज्ञा पु० [सं० शय्यापाल, हिं० सेजपाल] दे० 'सेजपाल'। —वर्ण०, पृ० ६।

**सेजा[1]**—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पेड जो आसाम और बगाल मे होता है और जिस पर टसर के कीडे पाले जाते हैं।

**सेजा[2]**—सज्ञा स्त्री० [स० शय्या] दे० 'शय्या'। उ०—कुसुमे रचित सेजा दीप रहल तेजा, परिमल अगर चाँदने।—विद्यापति, पृ० २५२।

**सेजा†[3]**—सज्ञा पु० [स० सह्य, प्रा० सेज्झ, सेझ (=सह्याद्रि पर्वत)] १ पर्वत। अद्रि। पहाड। २ सोता। प्रवाह। झरना। उ०—बाँसुरी समान मेरी पाँसुरी हरेक डोलै, उठत असाध पीर मनो

घाव नेजा ज्यो। हाय नटनागर जू ग्राह तौ कढै है नीठि, लोयन वहै हैं दोऊ भरे जल सेजा ज्यो।—नट० वि०, पृ० ७७।

**सेजिया**‡—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेज + इया] दे० 'सेज'।

**सेज्या**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] दे० 'शय्या'। उ०—सूर श्याम सुख जानि मुदित मन सेज्या पर सँग लै पौढावति।—सूर (शब्द०)।

**सेझ**Ⓤ‡—सज्ञा स्त्री० [स० शय्या, हिं० सेज, राज० सेझ] शय्या। सेज। उ०—सुरति शब्द मिल एक एकठा ता विच रही न काण। जन हरिया सुन सेझ का सहजाँई सुख माण।—राम० धर्म०, पृ०, ६३।

**सेझड़ी**†—सज्ञा स्त्री० [स० शय्या, प्रा० सेज्ज, राज० सेझ + डी (प्रत्य०)] शय्या। सेजरी। सेज। उ०—मुख नीसाँसाँ मूँकती, नयणे नीर प्रवाह। सूली सिरखी सेझडी तो विण जाणो नाह।—ढोला०, दू० १६६।

**सेझदादि**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० सह्याद्रि] दे० 'सह्याद्रि'। उ०—सेझदादि तै गिरि वहु रहईं। गगादिक सरिता वहु वहईं।—रघुनाथदास (शब्द०)।

**सेझना**—क्रि० अ० [सं० √सिध्, सेधन (=दूर करना, हटाना)] दूर होना। हटना। उ०—सो दारू किस काम की जाने दरद न जाइ। दादू काटइ रोग को सो दारू ले लाइ। अनुभव काटइ रोग को अनहद उपजइ आइ। सेझै काजर निर्मला पीवइ रुचि लव लाइ।—दादू (शब्द०)।

**सेझा**—सज्ञा पु० [स०√सिध्, सेधन, प्रा० सेझण] प्रवाह। झरना। दे० 'सेजा'[3]। उ०—जहँ तन मन का मूल है, उपजै ओकार। अनहद सेझा सवद का, आतम करै विचार।—दादू० बानी, पृ० ८६।

**सेत्रोफ**†—सज्ञा पु० [देश० तुल० स० शतपुष्पी] दे० 'सौफ'।—वर्ण०, पृ० २।

**सेट**[1]—सज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन तौल या मान।

**सेट**[2]—सज्ञा स० [देश०] काँख, नाक, उपस्थ आदि के वाल या रोएँ।

**सेट**[3]—सज्ञा पुं० [अ०] एक ही प्रकार मेल की कई चीजो का समूह। जैसे,—किताबो का सेट, खाने के बरतनो का सेट।

**सेटना**Ⓤ—क्रि० अ० [स० श्रुत (=विश्वास करना)] १ समझना। मानना। उ०—जो कलिकाल भुजँगभय मेटत। शरणागत भवरुज लघु सेटत।—रघुराज (शब्द०) २ कुछ समझना। महत्व स्वीकार करना। जैसे—अपने आगे वह किसी को नही सेटता।

**सेटिल**—वि० [अ० सेटिल्ड] जो निपट गया हो। जो तै हो गया हो। जैसे,—उन दोनो का मामला आपस मे सेटिल हो गया।

**सेटिलमेंट**—सज्ञा पु० [अ० सेटिलमेन्ट] १ खेती के लिये भूमि को नापकर उसका राजकर निर्धारित करने का काम। जमीन नापकर उसका लगान नियत करने का काम। वदोवस्त। २ एक देश के लोगो की दूसरे देश मे वसी हुई वस्ती। उपनिवेश।

**सेटु**—सज्ञा पु० [स०] १ खेत की ककडी। फूट। २ कचरी। पेहँटा।



**सेठ**—सज्ञा पु० [स० श्रेष्ठि, प्रा० सिट्ठि] [सेट्ठि, स्त्री० सेठानी] १ वडा साहूकार। महाजन। कोठीवाल। २ वडा या थोक व्यापारी। ३ धनी मनुष्य। मालदार आदमी। लखपती। ४ धनी और प्रतिष्ठित वणिको की उपाधि। ५ खत्रियो की एक जाति। ६ दलाल। (डि०)। ७ सुनार।

**सेठन**—सज्ञा पु० [देश०] झाडू। वुहारी।

**सेठा**—सज्ञा पु० [देश०] दे० 'सेंठा'।

**सेठिया**—सज्ञा पु० [स० श्रेष्ठिक, प्रा० सेट्ठिय, गुज० सेठिया] दे० 'सेठ'।

**सेड़ा**†—सज्ञा पु० [देश०] भादो मे होनेवाला एक प्रकार का धान।

**सेड़ी**—सज्ञा स्त्री० [स० चेटी, प्रा० चेडि, हिं० चेरी अथवा स० सखि, प्रा० सहि + हिं० ली (प्रत्य०), हि० सहेली] सहेली। सखी। (डि०)।

**सेढ**—सज्ञा पु० [अ० मेल] वादवान। पाल। (लश०)।

मुहा०—सेढ करना=पाल उडाना। जहाज खोलना। सेढ़ खोलना=पाल उतारना। सेढ वजाना=पाल मे से हवा निकालना जिसमे वह लपेटा जा सके। सेढ सपटाना=रस्से को खीचकर पाल तानना। (लश०)।

**सेढ़खाना**—सज्ञा पुं० [अ० सेल + फा० खाना] १ जहाज में वह कमरा या कोठरी जिसमे पाल भरे रहते है। २ वह कमरा या कोठरी जहाँ पाल काटे और वनाए जाते है। (लश०)।

**सेढमसानी**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० सिद्ध + श्मशान] श्मशानवासी देवी। काली। उ०—(क) खर का सोर भूँस कूकर की देखादेखी चाली। तैसे कलुआ जाहिर भैरो सेढमसानी काली।—चरण० बानी, पृ० ७२। (ख) सेढमसानी के दरवान, नौहबति वाजि रही।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ६२२।

**सेढा**†[1]—सज्ञा पु० [हिं० सेडा] दे० 'सेडा'।

**सेढा**[2]—सज्ञा पु० [अ० सेल, हिं० सेढ] १ दे० 'सेढ'। उ०—कही सुवीते से नाव का सेढा नही लगा।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ११८। २ मिरा।

**सेढा**Ⓤ[1]—सज्ञा स्त्री० [देश०] नाक का मैल। उ०—थूक रु लार भरचो मुख दीसत आँखि मे गीज रु नाक मे सेढो।—सुदर ग्र०, भा० २, पृ० ४३६।

**सेण**Ⓤ†—सज्ञा पु० [स० स्वजन, प्रा० सयण] मित्रमडली। आत्मीय जन। स्वजन। उ०—ज्याँ री जीभ न ऊपडै सेणाँ माँही सेत। वारॉ कर किम ऊपरै खलाँ घिरचा विच खेत।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० १७।

**सेणि**Ⓤ†—सज्ञा स्त्री० [स० श्रेणि, प्रा० सेणि] श्रेणी। कतार। उ०—कबीर तेज अनत का मानौं ऊगौ सूरज सेणि। पति सँगि जागी सुदरी, कौतिग दीठा तेणि।—कबीर ग्र०, पृ० १२।

**सेत**†[1]—सज्ञा पुं० [स० सेतु] दे० 'सेतु'। उ०—(क) सिला तरै जल बीच सेत मे कटक उतारी।—पलटू०, पृ० ८। (ख) काज कियो नहि समै पर पछतानै फिरि काह। सूखी सरिता सेत ज्यौ जोवन वितै विवाह।—दीनदयाल (शब्द०)।

**सेत**ⓤ[३]—वि० [सं० श्वेत, प्रा० सेअ, अप० सेत्त] दे० 'श्वेत'। उ०—पैन्ह सेत सारी बैठी फानुस के पास प्यारी, कहत विहारी प्राणप्यारी धौं कितै गई।—दूलह (शब्द०)।

**सेत**ⓤ[४]—वि० [स० श्वेत, प्रा० सेत] १ स्पष्ट। साफ। उ०—ज्यौंरी जीभ न ऊपडे सेणाँ माँही सेत।—बाँकी ग्र०, भा० २, पृ० १७। २ कीर्ति। यश। मर्यादा। उ०—सबें सेतबधी रहे सेत मुक्के। गयौ हव्वसी रोम साध्रम चुक्के।—पृ० रा०, २४। २५७।

यौ०—सेतबधी = कीर्तिवाले। यशस्वी।

**सेत**†[४]—सज्ञा पु० [स० स्वेद, प्रा० सेअ, सेद] दे० 'स्वेद'।

**सेतकुली**—सज्ञा पुं० [स० श्वेतकुलीय] सर्पों के अष्टकुल मे से एक। सफेद जाति के नाग। उ०—मोको तुम अब यज्ञ करावहु। तक्षक कुटुँब समेत जरावहु। विप्रन सेतकुली जब जारी। तब राजा तिनसो उच्चारी।—सूर (शब्द०)।

**सेतज**ⓤ†—वि० [सं० स्वेदज, प्रा० सेदज] दे० 'स्वेदज'। उ०—उन्मूनि ध्यान न सेतज कीने।—प्राण०, पृ० ५८।

**सेतदीप**ⓤ—सज्ञा पु० [स० श्वेतदीप] दे० 'श्वेतद्वीप'।

**सेतदुति**ⓤ—सज्ञा पु० [सं० श्वेतद्युति] चद्रमा।

**सेतना**—क्रि० स० [हिं० सैतना] दे० 'सैतना'।

**सेतबद**ⓤ—सज्ञा पुं० [स० सेतुबन्ध, प्रा० सेतबध] उ०—(क) सेतबद पुन कीन्ह ठिकाना। पुष्कर क्षेत्र आय जम थाना।—कबीर सा०, पृ० ८०४। (ख) सेतबद पर जाय पूजि रामेस्वर नीकै।—ह० रासो, पृ० १६३।

**सेतबध**‡—सज्ञा पु० [सं० सेतुबन्ध] दे० 'सेतुबध'।

**सेतवा**—सज्ञा पुं० [स० शुक्ति, हिं० सितुही] पतले लोहे की करछी जिससे अफीम काछते हैं।

**सेतवारी**†—सज्ञा स्त्री० [स० सिकता (= बालू) + हिं० वारी (प्रत्य०)] हरापन लिए हुए बलुई चिकनी मिट्टी।

**सेतवाल**—सज्ञा पु० [?श०] वैश्यो की एक जाति।

**सेतवाह**ⓤ—सज्ञा पुं० [स० श्वेतवाहन] १ अर्जुन। २ चद्रमा (डिं०)।

**सेतव्य**—वि० [सं०] साथ रखने योग्य। सह बधन योग्य [को०]।

**सेतिका**—सज्ञा स्त्री० [सं०] साकेत। अयोध्या।

**सेती**ⓤ†—प्रत्य० [हिं०] से। साथ। उ०—(क) नारी सेती नेह लगायौ।—रामानद०, पृ० ६। (ख) कर सेती माला जपे हिरदै वहै डँडूल। पग तौ पाला मैं गिल्या, भाजण लागी सूल।—कबीर ग्र०, पृ० ४५। (ग) जैसे भूखे प्रीत अनाजा। तृण-वत जल सेती काजा।—दक्खिनी०, पृ० ४४।

**सेतु**[१]—सज्ञा पुं० [स०] १ बधन। बँधाव। २ मिट्टी का ऊँचा पटाव जो कुछ दूर तक चला गया हो। बाँध। घुस्स। ३ मेड। डाँड। ४ किसी नदी, जलाशय, गड्ढे, खाई आदि के आर पार जाने का रास्ता जो लकडी, बाँस, लोहे आदि बिछाकर या पक्की जोडाई करके बना हो। पुल। उ०—आवत जानि भानुकुल केतू। सरितन्ह जनक बँधाए सेतू।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—बनाना।—बाँधना। उ०—सेतु बाँधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार।—मानस, ७।६७।

५ सीमा। हदबदी। ६ मर्यादा। नियम या व्यवस्था। प्रतिबध। उ०—अतुर गति धरि धीरहि सुन्ह राखहि निज श्रुतिसेतु। जग विस्तारहि विशद जस, रामजनम कर हेतु।—तुलसी (शब्द०)। ७ प्रणव। ओकार। ८ टीका या व्याख्या। ९ बरुण वृक्ष। बरना। १० एक प्राचीन स्थान। ११ दृह्यु के एक पुत्र और बभ्रु के भाई का नाम। १२ सकीर्ण पर्वतीय मार्ग। सँकरा पहाडी रास्ता (को०)। १३ वह मकान जिसमे धरनें छत के साथ लोहे की कीलो से जडी हो। १४ दे० 'सेतुबध'—४।

**सेतु**ⓤ[२]—वि० [स० श्वेत, प्रा० सेअ, अप० सेत्त] दे० 'श्वेत'।

**सेतुक**[१]—सज्ञा पुं० [सं०] १ पुल। २ बाँध। घुस्स। ३. बरुण वृक्ष। बरना। ४ दर्रा। तग पर्वतपथ (को०)।

**सेतुक**ⓤ[२]—अव्य० [हिं० सौंतुख] समुख। सामने।

**सेतुकर**—सज्ञा पु० [स०] सेतुनिर्माता। पुल बनानेवाला।

**सेतुकर्म**—सज्ञा पु० [स० सेतुकर्मन्] सेतु या पुल बनाने का काम।

**सेतुज**—सज्ञा पु० [सं०] दक्षिणापथ के एक स्थान का नाम।

**सेतुपति**—सज्ञा पु० [स०] रामनद के (जो मद्रास प्रदेश के मदुरा जिले के अतर्गत है) राजाओ की वशपरपरागत उपाधि।

**सेतुपथ**—सज्ञा पुं० [स०] दुर्गम स्थानो मे जानेवाली सडक। ऊँची नीची पहाडी घाटियो मे जानेवाली सडक।

**सेतुप्रद**—सज्ञा पु० [स०] कृष्ण का एक नाम।

**सेतुबध**—सज्ञा पु० [स० सेतुबन्ध] १ पुल की बँधाई। २ वह पुल जो लका पर चढाई के समय रामचद्र जी ने समुद्र पर बँधवाया था। उ०—सेतुबध भइ भीर अति कपि नभ पथ उडाहिं।—मानस, ६।४।

विशेष—नल नील ने बदरो की सहायता से शिलाएँ पाटकर यह पुल बनाया था। वाल्मीकि ने यहाँ शिव की स्थापना का कोई उल्लेख नही किया है। केवल लका से लौटते समय रामचद्र ने सीता से कहा है—'यहाँ पर सेतु बाँधने के पहले शिव ने मेरे ऊपर अनुग्रह किया था (युद्धकाड, १२५वाँ अध्याय)। पर अध्यात्म आदि पिछली रामायणो मे शिव की स्थापना का वर्णन है। इस स्थान पर रामेश्वर महादेव का दर्शन करने के लिये लाखो यात्री जाया करते है। 'सेतुबध रामेश्वर' हिंदुओं के चार मुख्य धामो मे से एक है। आजकल कन्याकुमारी और सिंहल के बीच के छिछले समुद्र मे स्थान स्थान पर जो चट्टानें निकली है, वे ही उस प्राचीन सेतु के चिह्न बतलाई जाती है।

३ बाँध या पुल (को०)। ४ नहर।

विशेष—कौटिल्य ने नहरें दो प्रकार की कही है—आहार्योदक और सहोदक। आहार्योदक वह है जिसमे पानी नदी, ताल आदि से खीचकर लाया जाता है। सहोदक मे झरने से पानी आता रहता है। इनमे से दूसरे प्रकार की नहर अच्छी कही गई है।

सेतुबंधन—संज्ञा पु० [स० सेतुबन्धन] १ सेतुनिर्माण । पुल बाँधना । २ पुल । ३ बाँध । सीमा की मेड ।

सेतुबंध रामेस्वर—संज्ञा पु० [स० सेतुबन्धरामेश्वर] दे० १ 'सेतुबंध' और २ 'रामेश्वर' ।

सेतुभेत्ता—संज्ञा पु० [स० सेतुभेतृ] वह व्यक्ति जो पुल, बाँध आदि को तोडता हो [को०] ।

सेतुभेद—संज्ञा पु० [स०] सेतु का भग होना । पुल का टूटना । बाँध का टूटना ।

सेतुभेदी१—संज्ञा पुं० [स० सेतुभेदिन्] दती । उदुबरपर्णी । तिरीफल ।

सेतुभेदी२—वि० १ मर्यादा, सीमा आदि का विनाशक । २ निरोधक । बाधक (को०) ।

सेतुवा†—संज्ञा पु० [स० सक्तु, सक्तुक, हिं० सतुआ], दे० 'सतुआ' और 'सत्तू' ।उ०—सोइ भुजाइ सेतुवा बनवायो । तामे चारिउ भाग लगायो । —रघुनाथदास (शब्द०) ।

सेतुवृक्ष—संज्ञा पुं० [स०] वरुण वृक्ष । बरना ।

सेतुशैल—संज्ञा पु० [स०] वह पहाड जो दो देशो के बीच मे हो । सरहद का पहाड ।

सेतुषाम—संज्ञा पु० [स० सेतुषामन्] एक साम का नाम ।

सेत्र—वि० पु० [स०] बेडी । जजीर । बधन । शृखला ।

सेथिया—संज्ञा पुं० [तेलगू चेट्टि, चेट्टिया, हिं० सेठिया] नेत्रो की चिकित्सा करनेवाला । आँखो का इलाज करनेवाला ।

सेयो(पु)—अव्य० [स० सहित] दे० 'सहित' । उ०—काधा सेयी टूट कर जमी पडो वा जीह ।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ५५ ।

सेद(पु)—संज्ञा पु० [स० स्वेद, प्रा० सेद] दे० 'स्वेद' । उ०—कान मैं कामिनी के यह आनिकै बोल परयो जनु वज्र सो नायो । सूखि गयो अँग, पीरो भयो रँग, सेद कपोलन मे सँग धायो ।—रघुनाथ बदीजन (शब्द०) ।

सेदज(पु)—वि० [स० स्वेदज] दे० 'स्वेदज' । उ०—बिन सनेह दुख होय न कैसे । शुक मूषक सुत सेदज जैसे ।—रघुनाथदास (शब्द०) ।

सेदरा—संज्ञा पु० [फा० सेह (=तीन) + दर (=दरवाजा)] वह मकान जो तीन तरफ से खुला हो । तिदरी ।

सेदिवस्—वि० [स०] [वि० स्त्री० सेदुषी] बैठा हुआ । उपविष्ट [को०] ।

सेदुक—संज्ञा पु० [स०] महाभारत मे वर्णित एक राजा का नाम ।

सेद्धव्य—वि० [स०] १ निवारण योग्य । हटाने या दूर करने योग्य । २ जिसे हटाना या दूर करना हो ।

सेध१—संज्ञा पु० [स०] १ निषेध । निवारण । मनाही । २ जाना । पहुचना । ३ द्रुम । पुच्छ । (को०) ।

सेध२—वि० दूर रखनेवाला । हटानेवाला [को०] ।

सेधक—वि० [स०] प्रतिरोधक । हटाने या रोकनेवाला ।

सेधा—संज्ञा स्त्री० [स०] साही नाम का जानवर जिसकी पीठ पर काँटे होते है । खारपुश्त ।

सेन१—संज्ञा पुं० [स०] १ शरीर । तन । देह । २. जीवन । ३ बगाल की वैद्य जाति की उपाधि ।

यौ०—सेनकुल = दे० 'सेनवश' ।

४ एक भक्त नाई ।

विशेष—इसकी कथा भक्तमाल मे इस प्रकार है । यह रीवाँ के महाराज की सेवा मे था और बडा भारी भक्त था । एक दिन साधुसेवा मे लगे रहने के कारण यह समय पर राजसेवा के लिये न पहुँच सका । उस समय भगवान् ने इसका रूप धरकर राजभवन मे जाकर इसका काम किया । यह वृत्तात ज्ञात होने पर यह विरक्त हो गया और राजा भी परम भक्त हो गए ।

५ एक राक्षस का नाम । ६ दिगबर जन साधुओ के चार भेदो मे से एक ।

सेन२—वि० [सं०] १. जिसके सिर पर कोई मालिक हो । सनाथ । २ आश्रित । अधीन । ताबे ।

सेन(पु)३—संज्ञा पु० [सं० श्येन, प्रा० सेण] बाज पक्षी । उ०—ज्यो गच काँच विलोकि सेन जड, छाँह आपने तन की । टूटत अति आतुर अहारवस, छति बिसारि आनन की ।—तुलसी (शब्द०)।

सेन(पु)४—संज्ञा स्त्री० [स० सैन्य, प्रा० सेण] दे० 'सेना' । उ०—हय गय सेन चलै जग पूरी ।—जायसी (शब्द०) ।

सेन†५—संज्ञा स्त्री० [स० सन्धि] दे० 'सेंध' ।

सेन†६—संज्ञा पु० [हिं० सैन] सकेत । इशारा । उ०—(क) तासो बहू ने सेन ही मो नाही करो ।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २६० । (ख) अपने घर इन चारो को सेन दै कै पधराइ लै गई ।—दो सौ बावन०, भाग १, पृ० ७२ ।

सेन†७—संज्ञा पु० [स० शयन] दे० 'शयन' । उ०—(क) सो श्री गोवधननाथ जी को उत्थापन किए । पाछ सेन पर्यत की सब सेवा ।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० २३ । (ख) श्री नवनीत प्रिय जी को उत्थापन ते सेन पर्यत की सेवा सो पहोचि · · · सुबोधिनी को कथा कहे ।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ६६ ।

यौ०—सेन आर्ति = शयनकाल की आरती । उ०—श्री ठाकुर जी की सेन आर्ति करि कै अपने घर तें चलतो ।—दो सौ बावन०, भा०, पृ० २६ । सेनभोग = शयनकालीन भोग । उ०—पाछें सेन भोग धरि श्री ठाकुर जी की रसाई पोति, भोग सराइ, आर्ति करि · · मुरारीदास सोवते ।—दो सौ बावन०, भा०, पृ० १०२ ।

सेनक—संज्ञा पु० [स०] १ हरिवश वर्णित शबर के एक पुत्र का नाम । २ एक वैयाकरण का नाम ।

सेनजित्१—वि० [स०] सेना को जीतनेवाला ।

सेनजित्२—संज्ञा पुं० १ एक राजा का नाम । २ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम । विश्वजित् के एक पुत्र का नाम । ४ बृहत्कर्मा के एक पुत्र का नाम । ५ कृशाश्व के एक पुत्र का नाम । ६ विशद के एक पुत्र का नाम ।

सेनजित्३—संज्ञा स्त्री० एक अप्सरा का नाम ।

**सेनप**—सज्ञा पु० [स० सेना + प (=पति)] सेनापति। उ०—सूर सचिव सेनप बहुतेरे। नृपगृह सरिस सदन सब केरे।—तुलसी (शब्द०)।

**सेनपति**—सज्ञा पु० [स० सेनापति] दे० 'सेनापति'। उ०—कपि पुनि उपवन वारिहु तोरी। पच सेनपति सेन मरोरी।—पद्माकर (शब्द०)।

**सेनयार**—सज्ञा पुं० [इटा०] [स्त्री० सेनयोरा] इटली मे नाम के आगे लगाया जानेवाला आदरसूचक शब्द। अँगरेजी 'मर' या 'मिस्टर' शब्द का समानार्थवाची शब्द। महाशय। महोदय।

**सेनवश**—सज्ञा पु० [स०] बगाल का एक हिंदू राजवश जिसने ११ वी शताब्दी से १४ वी शताब्दी तक राज्य किया था। इसे 'सेन-कुल' भी कहा जाता है।

**सेनस्कध**—वि० पुं० [स० सेनस्कन्ध] हरिवश मे शबर का एक नाम।

**सेनहा**—सज्ञा पुं० [स० सेनाहन्] शबर का एक पुत्र [को०]।

**सेनाग**—सज्ञा पुं० [स० सेनाङ्ग] १ सेना का कोई एक अग। जैसे,—पैदल, हाथी, घोडे, रथ।

२ फौज का हिस्सा। सिपाहियो का दल या टुकडी।

**यौ०**—सेनागपति = सिपाहियो की टुकडी का अधिकारी।

**सेना**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ युद्ध की शिक्षा पाए हुए और अस्त्र-शस्त्र से सजे मनुष्यो का बडा समूह। सिपाहियो का गरोह। फौज। पलटन।

**विशेष**—भारतीय युद्धकला मे सेना के चार अग माने जाते थे—पदाति, अश्व, गज और रथ। इन अगो से पूर्ण समूह सेना कहलाता था। सैनिको या सिपाहियो को समय पर वेतन देने की व्यवस्था आजकल के समान ही थी। यह वेतन कुछ तो भत्ते या अनाज के रूप मे दिया जाता था और कुछ नकद। महाभारत के सभापर्व मे नारद ने युधिष्ठिर को उपदेश दिया है कि 'कच्चिद्बलस्य भक्त च वेतन च यथोचितम्। सम्प्राप्तकाले दातव्य ददासि न विकर्षसि'। चतुरग दल के अतिरिक्त सेना के और चार विभाग होते थे—विष्टि, नौका, चर और देशिक। सब प्रकार के सामान लादने और पहुँचाने का प्रबध 'विष्टि' कहलाता था। 'नौका' का भी लडाई मे काम पडता था। 'चरो' के द्वारा प्रतिपक्ष के समाचार मिलते थे। 'देशिक' स्थानीय सहायक हुआ करते थे जो अपने स्थान पर पहुँचने पर सहायता पहुँचाया करते थे। सेना के छोटे छोट दलो को 'गुल्म' कहते थे।

**पर्या०**—चतुरग। बल। ध्वजिनी। वाहिनी। पृतना। चमू। अनीकिनी। सैन्य। वरूथिनी। अनीक। चक्र। वाहना। गुल्मिनी। वरचक्षु।

२ भाला। बरछी। शक्ति। साँग। ३ इद्र का वज्र। ४ इद्राणी। ५ वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे अर्हत् शभव की माता का नाम (जन)। ६ एक उपाधि जो पहले अधिकतर वेश्याओ के नामो मे लगी रहती थी। जैसे,—वसतसेना। ७ सेना की छोटी टुकडी जिसमे ३ हाथी, ३ रथ, ९ अश्व और १५ पदाति रहते हैं (को०)।

**सेना**[2]—क्रि० स० [स० सेवन] १ सेवा करना। खिदमत करना। किसी को आराम देना या उसका काम करना। नौकरी बजाना। टहल करना। उ०—सेइय ऐसे स्वामि को जो राखै निज मान। —कबीर (शब्द०)।

मुहा०—चरण सेना = तुच्छ से तुच्छ चाकरी बजाना।

२ आराधना करना। पूजना। उपासना करना। उ०—(क) ताते सइय श्री जदुराई। (ख) सेवत सुलभ उदार कल्पतरु पारवतीपति परम सुजान।—तुलसी (शब्द०)। ३ नियम-पूर्वक व्यवहार करना। काम मे लाना। इस्तेमाल करना। नियम के साथ खाना पीना या लगाना। उ०—(क) आसव सेइ सिखाए सबीन के सुदरि मदिर मे सुख सोवैं।—देव (शब्द०)। (ख) निपट लजीली नवल तिय वहँकि बारुनी सेइ। त्यो त्यो अति मीठी लगै ज्यो ज्यो ढीठो देइ।—बिहारी (शब्द०)। ४ किसी स्थान को लगातार न छोडना। पडा रहना निरतर वास करना। जैसे,—चारपाई सेना, कोठरी सेना, तीर्थ सेना। उ०—(क) सेइय सहित सनेह देह भरि कामधेनु कलि कामी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) उत्तम थल सेवै सुजन, नीच नीच के बस। सेवत गीध मसान को, मानसगेवर हस।—दीनदयाल (शब्द०)। ५ लिए बैठे रहना। दूर न करना। जैसे,—फोडा सेना। ६ मादा चिडिया का गरमी पहुँचाने के लिये अपने अडो पर बैठना।

**सेनाकक्ष**—सज्ञा पु० [स०] सेना का पार्श्व। फौज का बाजू।

**सेनाकर्म**—सज्ञा पु० [स० सेनाकर्मन्] १. सेना का सचालन या व्यवस्था। २ सेना का काम।

**सेनाकल्प**—सज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम [को०]।

**सेनागोप**—सज्ञा पु० [स०] सेना का सरक्षक। सेना का एक विशेष अधिकारी।

**सेनाग्र**—सज्ञा पु० [स०] सेना का अग्रभाग। फौज का अगला हिस्सा।

**सेनाग्रग**—सज्ञा पुं० सेना का प्रधान। सेनापति।

**सेनाचर**—सज्ञा पुं० [स०] सेना के साथ जानेवाला सैनिक। योद्धा। सिपाही।

**सेनाजीव**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सेनाजीवी'।

**सेनाजीवी**—सज्ञा पुं० [स० सेनाजीविन्] वह जो सेना मे रहकर अपनी जीविका चलावे। सैनिक। सिपाही। योद्धा।

**सेनादार**—सज्ञा पु० [स० सेना + फा० दार] सेनानायक। फौजदार। उ०—मल्हारराव हुल्कर भाग्य के बल से पेशवा बहादुर की सेना का सेनादार हो गया।—शिवप्रसाद (शब्द०)।

**सेनाधिकारी**—सज्ञा पु० [स० सेनाधिकारिन्] सेनानायक। फौज का अफसर।

**सेनाधिनाथ**—सज्ञा पु० [स०] सेनापति। फौज का अफसर। सिपहसालार।

**सेनाधिप**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सेनाधिपति'।

**सेनाधिपति**—सज्ञा पु० [स०] फौज का अफसर। सेनापति।

**सेनाधीश**- सज्ञा पु० [स०] सेनापति ।

**सेनाध्यक्ष**—सज्ञा पु० [स०] फौज का अफसर । सेनापति ।

**सेनानायक**—सज्ञा पु० [स०] सेना का अफसर । फौजदार ।

**सेनानिवेश**—सज्ञा पुं० [स०] सेना का पडाव । सैन्यशिविर [को०] ।

**सेनानी**—सज्ञा पुं० [स०] १ सेनापति । फौज का अफसर । उ०—आँधी मे उडते पत्तो से, दलित हुए सब सेनानी ।—साकेत, पृ० ३९५ । २ कार्तिकेय का एक नाम । ३ एक रुद्र का नाम । ४ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । ५ शबर के एक पुत्र का नाम । ६ एक विशेष प्रकार का पासा ।

**सेनापति**—सज्ञा पु० [स०] १ सेना का नायक । फौज का अफसर । २ कार्तिकेय का एक नाम । ३ शिव का नाम । ४ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । ५ हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि का नाम ।

यौ०—सेनापतिपति = सेनापतियो का प्रधान अधिकारी । प्रधान सेनापति ।

**सेनापत्य**—सज्ञा पु० [स०] सेनापति का कार्य या पद । सेनापति का अधिकार ।

**सेनापरिच्छद्**—वि० [स०] सेनाओ से घिरा हुआ या आवृत [को०] ।

**सेनापाल**—सज्ञा पु० [स० सेना + पाल] सेनापति । उ०—हरुये बोल्यो भूप तब सेनापाल बुलाय । धाइ सुशर्मा वीर जे सुरभी लेहु छुडाय ।- सबलसिंह (शब्द०) ।

**सेनापृष्ठ**—सज्ञा पु० [सं०] सेना का पिछला भाग ।

**सेनाप्रणेता**—सज्ञा पुं० [स० सेनाप्रणेतृ] सेनानायक । सेनापति । फौज का मुखिया ।

**सेनाबेधी**—सज्ञा पु० [स० सेना + वेध] सैन्य दल का भेदन करनेवाला । सेना को बेधनेवाला—शूरवीर । (डिं०) ।

**सेनाभग**—सज्ञा पु० [स० सेनाभङ्ग] सेना का अस्तव्यस्त, छिन्न भिन्न या तितर बितर होना [को०] ।

**सेनाभक्त**—सज्ञा पुं० [स०] कौटिल्य के अनुसार सेना के लिये रसद और बेगार ।

**सेनाभिगोप्ता**—सज्ञा पुं० [स० सेनाभिगोप्तृ] सेनारक्षक । सेनापति ।

**सेनामुख**—सज्ञा पु० [स०] १ सेना का अग्रभाग । २ सेना का एक खड जिसमे ३ या ९ हाथी, ३ या ९ रथ, ९ या २७ घोडे और १५ या ४५ पैदल होते थे । ३ नगरद्वार के सामने का ढका हुआ या गुप्त रास्ता । ४ नगर द्वार के सामने निर्मित सेतु (को०) ।

**सेनायोग**—सज्ञा पु० [स०] सैन्यसज्जा । फौज की तैयारी ।

**सेनारक्ष**—सज्ञा पु० [स०] पहरुआ । सतरी । प्रहरी [को०] ।

**सेनावास**—सज्ञा पुं० [स०] १ वह स्थान जहाँ सेना रहती हो । छावनी ।

विशेष—वृहत्सहिता के अनुसार जहाँ राख, कोयला, हड्डी, तुष, केश, गड्ढे न हो, जो स्थान ऊसर न हो, जहाँ हिसक जतुओ और चूहो के बिल और वल्मीक न हो तथा जिस स्थान की भूमि घनी, चिकनी, सुगधित मधुर और समतल हो ऐसे स्थान पर राजा को सेनावास या छावनी बनानी चाहिए ।

२ डेरा । खेमा । शिविर । कैंप ।

**सेनावाह**—सज्ञा पुं० [स०] सेनानायक ।

**सेनाव्यूह**—सज्ञा पुं० [स०] युद्ध के समय भिन्न भिन्न स्थानो पर की हुई सेना के भिन्न भिन्न अगो की स्थापना या नियुक्ति । सैन्य-विन्यास । विशेष दे० 'व्यूह' ।

**सेनासमुदय**—सज्ञा पुं० [स०] सम्मिलित सेना । एकत्र हुई सेना ।

**सेनास्थ**—सज्ञा पु० [स०] सिपाही । फौजी आदमी ।

**सेनास्थान**—सज्ञा पु० [स०] १ छावनी । २. शिविर । खेमा । डेरा ।

**सेनाहृ**—सज्ञा पु० [स०] हरिवश के अनुसार शबर के एक पुत्र का नाम ।

**सेनि**(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० श्रेणि, प्रा० सेणि] दे० 'श्रेणी' । उ०—जनु कलिदनदिनि मनि नील सिखर पर सिध सति लसति हस सेनि सकुल अधिकी है ।—तुलसी (शब्द०) ।

**सेनिका**—सज्ञा स्त्री० [स० श्येनिका] १ बाज पक्षी । उ०—श्यामदेह दुकूल दुति छवि लसत तुलसी माल । तडित घन सभोग मानो सेनिका शुक जाल ।—सूर (शब्द०) । २ एक छद । विशेष दे० 'श्येनिका' । उ०—आठ ओर आठ दीठि दै रह्यो । लोक नाथ आश्चर्य वै रह्यो ।—गुमान (शब्द०) ।

**सेनी**[1]—सज्ञा स्त्री० [फा० सीनी] १ तश्तरी । रकाबी । २ नक्काशी-दार छोटी छिछली थाली ।

**सेनी**(पु)[2]—सज्ञा स्त्री० [स० श्यनी] १ बाज की मादा । मादा बाज पक्षी । २ दक्ष प्रजापति की कन्या और कश्यप की पत्नी ताम्रा से उत्पन्न पाँच कन्याओ मे से एक ।

**सेनी**(पु)[3]—सज्ञा स्त्री० [स० श्रेणी] १ पक्ति । कतार । उ०—जोबन फूल्यो बसत लसै तेहि अगलता अलि सेनी ।—बेनी (शब्द०) । २ सीढी । जीना ।

**सेनी**(पु)[4]—सज्ञा पु० विराट के यहाँ अज्ञातवास करते समय का सहदेव का रखा हुआ नाम । उ०—नाम धनजय को कह्यो बृहन्नडा ऋषि व्यास । सेनी सहदेवहि कह्यो सकल गुनन की रास ।—सबल (शब्द०) ।

**सेनीटोरियम**—सज्ञा पुं० [अ०] स्वास्थ्यगृह । चिकित्सालय ।

**सेनुर**, **सेन्हूर**—सज्ञा पु० [सं० सिन्दूर] दे० 'सिंदूर' ।

**सेनेट**—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ प्रधान व्यवस्थापिका सभा या का बनानेवाली सभा । २ विश्वविद्यालय की प्रबधकारिणी सभा विश्वविद्यालयो मे पुराने कोर्ट का नाम । ३. अमेरिका व्यवस्थापिका सभा का एक भाग । ४ प्राचीन काल मे रो साम्राज्य की शासक सभा ।

**सेनेटर**—सज्ञा पुं० [अ०] १ सेनेट या देश की प्रधान का सदस्य । २ जज या मजिस्ट्रेट ।

विशेष—अमेरिका, फ्रांस, इटली आदि देशों की बड़ी व्यवस्थापिका सभाएँ 'सेनेट' कहलाती हैं और उनके सदस्य 'सेनेटर' कहलाते हैं।

**सेनेट हाउस** संज्ञा पुं० [अं०] वह मकान जिसमें सेनेट का अधिवेशन होता है।

**सेफ**[1]—संज्ञा पुं० [स० शेफ, सेफ, प्रा० सेफ] दे० 'शेफ'।

**सेफ**[2]—संज्ञा पुं० [अं०] लोहे का बड़ा मजबूत बक्स जिसमें रोकड़ और बहुमूल्य पदार्थ रखे जाते हैं।

**सेफालिकी**—संज्ञा स्त्री० [स० शेफालिका, प्रा० सफालिआ, सेहालिया, सेहाली] दे० 'शेफालिका'।

**सेव**—संज्ञा पुं० [फा०] नाशपाती की जाति का मझोले आकार का एक पेड़ जिसका फल मेवों में गिना जाता है।

विशेष—यह पेड़ पश्चिम का है, पर बहुत दिनों से भारतवर्ष में भी हिमालय प्रदेश (काश्मीर, कुमाऊँ, गढ़वाल, कांगड़ा आदि), पंजाब आदि में लगाया जाता है, और अब सिंध, मध्य-भारत और दक्षिण तक फैल गया है। काश्मीर में कहीं कहीं यह जंगली भी देखा जाता है। इसके पत्ते कुछ कुछ गोल और पीछे की ओर कुछ सफेदी लिए और रोईंदार होते हैं। फूल सफेद रंग के होते हैं जिन पर लाल लाल छींटे से होते हैं। फल गोल और पकने पर हलके हरे रंग के होते हैं, पर किसी किसी का कुछ भाग बहुत सुंदर लाल रंग का होता है जिससे देखने में बड़ा सुंदर लगता है। गूदा इसका बहुत मुलायम और मीठा होता है। मध्यम श्रेणी के फलों में कुछ खटास भी होती है। सेव फागुन से वैशाख के अंत तक फूलता है और जेठ से फल लगने लगते हैं। भादों में फल अच्छी तरह पक जाते हैं। ये फल बड़े पाचक माने जाते हैं। भावप्रकाश के अनुसार सेव वात-पित्त-नाशक, पुष्टिकारक, कफकारक, भारी, पाक में मधुर, शीतल तथा शुक्रकारक है। भावप्रकाश के अतिरिक्त किसी प्राचीन ग्रंथ में सेव का उल्लेख नहीं मिलता। भावप्रकाश ने सेव, सिचिलिका फल आदि इसके कुछ नाम दिए हैं।

**सेवाट**(पं)—वि० [देशी या हिं० सपाट] दे० 'सपाट'। उ०—ऊँचे-ऊँचे परवत विषय के घाट। तिहाँ गोरखनाथ कै लिया सेवाट। —गोरख०, पृ० १३४।

**सेभ्य**[1]—संज्ञा पुं० [स०] शीतलता। शैत्य। ठंढक।

**सेभ्य**[2]—वि० शीतल। ठंढा।

**सेभंतिका**—संज्ञा स्त्री० [स० सेमन्तिका] दे० 'सेमंती'।

**सेभंती**—संज्ञा स्त्री० [स० सेमन्ती] सफेद गुलाब का फूल। सेवंती।

**सेम**—संज्ञा स्त्री० [स० शिम्बी] एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी खाई जाती है।

विशेष—इसकी लता लिपटती हुई बढ़ती है। पत्ते एक एक सींके पर तीन तीन रहते हैं और वे पान के आकार के होते हैं। सेम सफेद, हरी, मजटा आदि कई रंगों की होती है। फलियाँ लंबी, चिपटी और कुछ टेढ़ी होती हैं। यह हिंदुस्तान में प्रायः सर्वत्र बोई जाती है। वैद्यक में सेम मधुर, शीतल, भारी, कसैली, बलकारी, वातकारक, दाहजनक, दीपन तथा पित्त और कफ का नाश करनेवाली मानी गई है।

**यौ०**—सेम का गोंद = एक प्रकार के कचनार का गोंद जो देहरादून की ओर से आता है और श्लेष्मिक जुलाब या रक्त स्रावन के लिये दिया जाता है। विशेष दे० 'कचनार'।

**सेमई**[1]—संज्ञा पुं० [हिं० सेम + ई (प्रत्य०)] हलका सब्ज रंग।

**सेमई**[2]—वि० हलके हरे रंग का।

**सेमई**(पं)[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सेविका, हिं० सेंवई] दे० 'सेवई'। उ०—मोतीचूर मूर के मोदक आदक की उजियारी जी। सेमई सेव सँजना सूरन नावा सरस सोहारी जी।—विश्राम (शब्द०)।

**सेमर**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] दलदली जमीन।

**सेमर**[2]—संज्ञा पुं० [स० शाल्मली, हिं० सेमल] दे० 'सेमल'।

**सेमल**—संज्ञा पुं० [सं० शिम्बल (=शाल्मलि (नायण)] पत्ते झाड़नेवाला एक बहुत बड़ा पेड़ जिसमें बड़े आकार और मोटे दलों के लाल फूल लगते हैं, और जिसके फलों या डोडों में केवल रूई होती है गूदा नहीं होता।

विशेष—इस पेड़ के धड़ और डालों में दूर दूर पर काँटे होते हैं, पत्ते लंबे और नुकीले होते हैं तथा एक एक डाँड़ी में पंजे की तरह पाँच पाँच छह छह लगे होते हैं। फूल मोटे दल के, बड़े बड़े और गहरे लाल रंग के होते हैं। फूलों में पाँच दल होते हैं और उनका घेरा बहुत बड़ा होता है। फागुन में जब इस पेड़ की पत्तियाँ बिल्कुल झड़ जाती हैं और यह ठूँठा हो जाता है तब यह इन्हीं लाल फूलों से गुछा हुआ दिखाई पड़ता है। दलों के झड़ जाने पर डोडा या फल रह जाता है जिसमें बहुत मुलायम और चमकीली रूई या घूए के भीतर बिनौले से बीज बद रहते हैं। सेमल के डोडे या फलों की निस्सारता भारतीय कविपरंपरा में बहुत काल से प्रसिद्ध है और यह अनेक अन्योक्तियों का विषय रहा है। 'सेमर सेइ सुवा पछताने' यह एक कहावत सी हो गई है। सेमल की रूई रेशम सी मुलायम और चमकीली होती है और गद्दों तथा तकियों में भरने के काम में आती है, क्योंकि काती नहीं जा सकती। इसकी लकड़ी पानी में खूब ठहरती है और नाव बनाने के काम में आती है। आयुर्वेद में सेमल बहुत उपकारी ओषधि मानी गई है। यह मधुर, कसैला, शीतल, हलका, स्निग्ध, पिच्छिल तथा शुक्र और कफ को बढ़ानेवाला कहा गया है। सेमल की छाल कसैली और कफनाशक, फूल शीतल, कड़वा, भारी, कसैला, वातकारक, मलरोधक, रूखा तथा कफ, पित्त और रक्तविकार को शांत करनेवाला कहा गया है। फल के गुण फूल ही के समान हैं। सेमल के नए पौधे की जड़ को सेमल का मूसला कहते हैं, जो बहुत पुष्टिकारक, कामोद्दीपक और नपुंसकता को दूर करनेवाला माना जाता है। सेमल का गोंद मोचरस कहलाता है। यह अतिसार को दूर करनेवाला

और बलकारक कहा गया है। इसके बीज स्निग्धताकारक और मदकारी होते हैं, और काँटो मे फोडे, फुसी, घाव, छीप आदि दूर करने का गुण होता है।

फलो के रग के भेद से सेमल तीन प्रकार का माना गया है—एक तो साधारण लाल फूलोवाला, दूसरा सफेद फूलो का और तीसरा पीले फूलो का। इनमे से पीले फूलो का सेमल कही देखने मे नही आता। सेमल भारतवर्ष के गरम जगलो मे तथा बरमा, सिहल और मलाया मे अधिकता से होता है।

पर्या०—शाल्मलि। शाल्मली। पिच्छला। मोचा। स्थिरायु। तूलिफला। दृढारोहा। शाल्मलिनी। शाल्मल। अपूरणी। पूरणी। निर्गंधपुष्पी। तुलनी। कुक्कुटी। रक्तपुष्पा। कटकारी। मोचनी। शीमूल। कदला। चिरजीवी। पिच्छल। रक्तपुष्पक। तूलवृक्ष। मोचाढ्य। कटकद्रुम। कुकुटी। रक्तोत्पल। वन्यपुष्प। बहुवीर्य। यमद्रुम। दीर्घद्रुम। स्थूलफल। दीर्घायु। कटकाष्ठ। निस्सारा। दीर्घपादपा।

सेमलमूसला—सज्ञा पु० [स० शिम्बलमूल] सेमल की जड जो वैद्यक मे वीर्यवर्धक, कामोद्दीपक और नपुसकता नष्ट करनेवाली मानी गई है।

सेमलसफेद—सज्ञा पु० [स० श्वेतशिम्बल] सेमल का एक भेद जिसके फूल सफेद होते हैं।

विशेष—यह सेमल के समान ही विशाल होता है। इसका उत्पत्ति-स्थान मलाया है। यह हिंदुस्तान के गरम जगलो और सिहल मे पाया जाता है। नए वृक्ष की छाल हरे रग की और पुराने की भूरे रग की होती है। पत्ते सेमल के समान ही एक साथ पाँच पाँच सात सात रहते है। फूल सेमल के फूल से छोटे और मटमैले सफेद रग के होते हैं। इसके फल कुछ बडे गोल, धुँधले और पाँच फाँकवाले होते हैं। फलो के अदर बहुत कोमल रूई होती है और रुई के बीच मे चिपटे बीज होते है। वैद्यक मे सेमल के समान ही इसके भी गुण बताए गए हैं।

सेमा—सज्ञा पु० [हिं० सेम] बडी सेम।

सेमिटिक—सज्ञा पु० [अ० शाम (=एक देश का नाम तथा इसराईल की सतति मे से एक)] १ मनुष्यो के आधुनिक वर्ग विभाग मे वह वर्ग जिसके अतर्गत यहूदी, अरब, सीरियन, मिस्री आदि लाल समुद्र के आस पास बसनेवाली, नई पुरानी जातियाँ है।

विशेष—मूसा, ईसा और मुहम्मद इसी वर्ग के थे जिन्होने पैगबरी मत चलाए। यह वर्ग आर्य वर्ग से भिन्न है जिसमे हिंदू, पारसी, युरोपियन आदि हैं।

२ उक्त वर्ग के लोगो द्वारा बोली जानेवाली भाषाओ का वर्ग।

विशेष—इस भाषावर्ग के इबरानी और अरबी तथा असीरियन, फिनीशियन आदि प्राचीन भाषाएँ है। यह वर्ग आर्यवर्ग से सर्वथा भिन्न है जिसके अतर्गत सस्कृत, पारसी, लैटिन, ग्रीक आदि प्राचीन भाषाएँ और हिंदी, मराठी, बँगाली, पजाबी, पश्तो, गुजराती आदि उत्तर भारत की भाषाएँ तथा अँगरेजी, फ्रासीसी, जर्मन आदि योरप की आधुनिक भाषाएँ है।

सेमिनरी—सज्ञा स्त्री० [अ०] शिक्षालय। स्कूल। विद्यालय। मदरसा।

सेमिनार—सज्ञा पु० [अ०] किसी विषय पर निर्देश ग्रहण करते हुए व्यवस्थित रूप से कालिज या विश्वविद्यालयीय छात्रो का अनुसधान कार्य। विचारगोष्ठी। शोधगोष्ठी।

सेमीकोलन—सज्ञा पु० [अ०] एक विराम जिसका चिह्न इस प्रकार है—;।

सेयन—सज्ञा पु० [स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

सेर[१]—सज्ञा पु० [स० ('लीलावती' मे प्रयुक्त)] १ एक मान या तौल जो सोलह छँटाक या अस्सी तोले की होती है। मन का चालीसवाँ भाग। २ १०६ टोली पान (तमोली)।

सेर[२]—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

सेर[३]—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धान जो अगहन महीने मे तैयार हो जाता है और जिसका चावल बहुत दिनो तक रह सकता है।

सेर[४]—सज्ञा पु० [फा० शेर] दे० 'शेर'। उ०—(क) गएन राए तौ वधिअ, तौन सेर विहार चायिअ।—कीर्ति०, पृ० ५८। (ख) अरि अजा जूथ पै सेर ही।—गोपाल (शब्द०)।

यौ०—सेर बच्चा=एक प्रकार की बदूक। भोका। उ०—छुटे सेर बच्चे। भजे वीर कच्चे।—हिम्मत०, पृ० १०।

सेर[५]—वि० [फा०] तृप्त। उ०—रे मन साहसी साहस राखु गुसाहस सो सब जेर फिरेंगे। ज्यो पदमाकर या सुख मे दुख त्यो दुख मे सुख सेर फिरेंगे।—पद्माकर (शब्द०)।

सेरन—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक घास जो राजपूताना, बुदेलखड और मध्य भारत के पहाडी हिस्सो मे होती है।

सेरवा†[१]—सज्ञा पुं० [स० शणपट] वह कपडा जिससे हवा करके अन्न बरसाते समय भूसा उडाया जाता है। झूली। परती।

सेरवा†[२]—सज्ञा पुं० [हिं० सिर] चारपाई की वे पाटियाँ जो सिरहाने की ओर रहती है।

सेरवा[३]—सज्ञा पु० [हिं० सेराना (=ठटा करना, शात करना)] दीवाली के प्रात काल 'दरिद्दर' (दरिद्रता) भगाने की रस्म जो सूप बजाकर की जाती है।

सेरवाना†—क्रि० स० [हिं० सेराना] दे० 'सेराना[२]'। उ०—उसी कजरहिया पोखरे पर जाती, नहाती और जयी (जई) सेरवाती, अर्थात् पानी मे छोड देती हैं।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३२६।

सेरसाहि—सज्ञा पु० [फा० शेरशाह] दिल्ली का बादशाह शेरशाह। उ०—सेरसाहि देहली सुलतानू।—जायसी (शब्द०)।

सेरही—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेर] एक प्रकार का कर या लगान जो किसान को फसल की उपज के अपने हिस्से पर देना पडता है।

सेरा[१]—सज्ञा पुं० [हिं० सिर] चारपाई की वे पाटियाँ जो सिरहाने की ओर रहती हैं।

सेरा[२]—सज्ञा पुं० [फा० सेराब] आबपाशी की हुई जमीन। सीची हुई जमीन।

सेरा†[३]—सज्ञा पु० [अ० सल, लश० सेढ] दे० 'सेढ'।

**सेराना**ⓤ[1]—क्रि० अ० [सं० शीतल, प्रा० सीअड, हिं० सीयर सीरा] १ ठंडा होना। शीतल होना। उ०—नैन सेराने, भूखि गइ, देखे दरस तुम्हार।—जायसी (शब्द०)। २ तृप्त होना। तुष्ट होना। ३ जीवित न रहना। जीवन समाप्त होना। ४ समाप्त होना। खतम होना। उ०—उठयो अखारा नृत्य सेराना। अपने गृह सुर कियो पयाना।—सबल (शब्द०)। ५ चुकना। तै करना। करने को न रह जाना। उ०—पथी कहाँ कहाँ सुमताई। पथ चलै तब पथ सेराई।—जायसी (शब्द०)।

**सेराना**[2]—क्रि० स० १ ठंडा करना। शीतल करना। २ मूर्ति, प्रतीक आदि जल मे प्रवाहित करना या भूमि मे गाडना। जैसे,—ताजिया सेराना।

**सेराब**—वि० [फ़ा०] १ पानी से भरा हुआ। २ सींचा हुआ। तराबोर।

क्रि० प्र०—होना।

यौ०—सेराब हासिल=जरखेज। उपजाऊ। लाभकर।

**सेराबी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ सराब। सिंचाई। २ तरी।

**सेराल**[1]—संज्ञा पु० [स०] हलका पीलापन।

**सेराल**[2]—वि० हलका पीला। पीताभ।

**सेराह**—संज्ञा पुं० [स०] दूध के समान सफेद रंग का घोडा। दुग्ध वर्ण का अश्व।

**सेरी**ⓤ[1]—संज्ञा स्त्री० [देशी] रथ्या। वीथी। तंग गली। उ०—(क) ढोलउ नरवर सेरियाँ धण पूगल गलियाँह।—ढोला०, दू० १८६। (ख) सेरी कबीर साँकडी चंचल मनवाँ चोर।—कबीर ग्र०, पृ० २२७।

**सेरी**†[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी, सेणी, सेढि, सेढी, हिं० सीढी] दे० 'सीढी'। उ०—बाह्य लक्ष्य और बहुतेरी। सो जानै जो पावै सेरी।—सुंदर० ग्र०, भा० १, पृ० १०५।

**सेरी**[3]—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ तृप्ति। संतोष। २ मन भरना। अघाने का भाव। ३ ऊबने की स्थिति या भाव। ऊब।

**सेरीना**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेर] अनाज या चारे का वह हिस्सा जो असामी जमींदार को देता है।

**सेरु**—वि० [स०] बाँधनेवाला। जकडनेवाला।

**सेरुआ**[1]—संज्ञा पु० [सं० सेर (=एक तौल)+हिं० उवा (प्रत्य०)] वैश्य। (सुनार)।

**सेरुआ**[2]—संज्ञा पुं० [देशज] दे० 'सेरवा'।

**सेरुआह**—संज्ञा पु० [स०] वह सफेद घोडा जिसके माथे पर दाग हो।

**सेरुवा**—संज्ञा पुं० [स० स्वैर, प्रा० सेर (=स्वतंत्र)] १ स्वेच्छाचारी। स्वैराचारी। २ मुजरा सुननेवाला या वेश्यागामी। (वेश्या)।

**सेरू**†—संज्ञा पु० [स० शेलु] लिसोडे का पेड़। लसेडा।

**सेर्ष्य** वि० [स०] १ ईर्ष्यायुक्त। ईर्ष्यालु। डाह करनेवाला। २ ईर्ष्यापूर्वक (क्रि०)।

**सेल**—संज्ञा पुं० [स० शल्य, प्रा० सेल अथवा देश० सेल्ल] बरछा। भाला। साँग। उ०—(क) बरसहिं बान सेल घनघोरा। —जायगी। (शब्द)। (ख) देखि जालाजाल हाहाकार दसकंध सुनि, कह्यो धरो धरो धाए बीर बलवान हैं। बिए मूल सेल पास परिघ प्रचंड दंड, भाजन गदा धीर धरे धनुबान हैं।—तुलसी (शब्द०)।

विशेष—यद्यपि यह शब्द कादंबरी में आया है, तथापि प्राकृत ही जान पडता है, संस्कृत नहीं।

**सेल**[2]—संज्ञा स्त्री० [देशी० सेल्लि (=रज्जु)] रस्सी। माला। उ०—साँपो की सेल पहने मुडमाल गले मे डाले रहने लगे।—लल्लू (शब्द०)।

**सेल**†[3]—संज्ञा पुं० [देश०] नाव मे पानी उलीचने का पात्र या बरतन।

**सेल**[4]—संज्ञा पुं० [सं० सिलना (=एक पौधा जिसके रेशों से रस्से बनते थे) अथवा देशी सेल्लि (=रज्जु)] १ एक प्रकार का सन का रस्सा जो पहाडों में पुल बनाने के काम में आता है। २ हल में लगी हुई वह नली जिसमें से होकर कूँड में का बीज जमीन पर गिरता है।

**सेल**[5]—संज्ञा पुं० [अं० शेल] लोहे का वह गोला जिसमें गोलियाँ आदि भरी रहती हैं। (फौज)।

यौ०—सेल का गोला।

**सेलखडी**—संज्ञा स्त्री० [देश० सेटिका] दे० 'सिलखडी', 'खडिया'। उ०—मूर्ति बनाने के लिये सेलखडी लाई जाती थी।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १६।

**सेलग**—संज्ञा पुं० [सं०] लुटेरा। डाकू।

**सेलना**†—क्रि० अ० [सं० शैल, सेल (=जाना)] मर जाना। चल बसना। जैसे—वह सेल गया। (बाजारू)।

**सेला**[1]—संज्ञा पु० [सं० शल्यक, शाल्क (=छिलका, भूसी का सेहरा)] १ रेशमी चादर या दुपट्टा। २ साफा। पगडी शिरोवेष। उ०—कोऊ कुंद सेला सुगंध नवेला धरे कोऊ पाग सेला कोऊ सजे साज छैला सो।—गोपाल (शब्द०)।

**सेला**[2]—संज्ञा पु० [स० शालि] वह धान जो भूसी छाटने के पहले कुछ उबाल लिया गया हो। भुँजिया धान।

**सेलान**ⓤ—वि० [हिं० सैल (=घूमना), अथवा सं० शैल, प्रा० सेल, सेल्ल] १ घुमक्कड। स्वच्छंदी। मनमौजी। २ ठिकाना। टिकान। उ०—आँखो मे दीखै नही, शब्द न पावै जान। मन बुध तहाँ पहुँचै नही, कौन कहै सेलान।—दरिया० बानी, पृ० २२।

**सेलानी**ⓤ—वि० [हिं० सैलानी] दे० 'सैलानी'। उ०—मन तूँ निपट भयो सेलानी। तै मन सीख नहिं मानी।—राम० धर्म०, पृ० ४३।

**सेलार**ⓤ[1]—संज्ञा पु० [सं० सेराल (=हलका पीला)] अश्व की एक उत्तम जाति। उ०—मुलतानणी वर मन बसी मुहँगा नई सेलार। हिरणाखी हसि नइ कहइ आँणउ हेडि तुखार।—ढोला०, दू० २२६।

**सेलार**[2]—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का छदबद्ध या गीत।—रघु० रू०, पृ० १३४।

सेलिया[1]—सज्ञा पु० [देश०] घोडे की एक जाति। उ०—सिरगा समँदा स्याह सेलिया सूर सुरगा। मुसकी पँचकल्यान कुमेदा केहरि रँगा।—सुजान०, पृ० ८।

सेलिया[2]—सज्ञा स्त्री० [सं०] बिल्ली।

सेलिस—सज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का सफेद हिरन।

सेलि(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेल] छोटा भाला। दे० 'सेली'। उ०—लहलहे जोवन लुहारिनि लुहारी मैं ही सारसी लहलहाति लोहसार सेलि सी। भृकुटी कमान खरी देव दृगन बान भरी जोवन की सान धरी धार विष मेलि सी।—देव (शब्द०)।

सेली[1]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेल + हिं० ई (प्रत्य०)] छोटा भाला। बरछी। उ०—सेलियाँ बाँकियाँ देख अवधूत की जीवत मरै सोइ ठोड पावै।—राम० धर्म०, पृ० ३८३।

सेली[2]—सज्ञा स्त्री० [सं० शूल, हिं० सूली] दे० 'सूली'। उ०—उठे कबीर करम किया, बरसे फूल अकास। गरीबदास सेली चले, चाँवर करे रेदास।—कबीर ग्र०, पृ० १२१।

सेली[3]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेला] १ छोटा दुपट्टा। उ०—मगलदास रहे गुरुभाई। टोपी सेली तेहि पहिराई।—घट०, पृ० १९२। २ गाँती। ३. सूत, ऊन, रेशम या बालो की बद्धी या माला जिसे योगी यती गले मे डालते या सिर मे लपेटते है। उ०—सीस सेली केस, मुद्रा कनक बीरी बीर। बिरह भस्म चढाइ बैठी, सहज कथा चीर।—सूर (शब्द०)। ४ स्त्रियो का एक गहना। उ०—मनि इद्रनील सु पद्मराग कृत सेली भली।—रघुराज (शब्द०)।

सेली[4]—सज्ञा स्त्री० [स० शाल्क (=मछली का सेहरा)] एक प्रकार की मछली।

सेली[5]—सज्ञा स्त्री० [देश०] दक्षिण भारत का एक छोटा पेड जिसकी लकडी कडी और मजबूत होती है और खेती के औजार बनाने के काम मे आती है।

सेलु—सज्ञा पु० [स०] १ लिसोडा। श्लेष्मातक। लमेडा। सेरू। २ एक सख्या (बौद्ध)।

सेलून—सज्ञा पु० [अ०] १ जहाज का प्रधान कमरा। २ बढिया कमरे के समान सजा हुआ रेल का बडा लबा डब्बा जिसमे अत्यत महत्वपूर्ण व्यक्ति और बडे बडे अफसर सफर करते है। ३ सार्वजनिक आमोद प्रमोद का स्थान। ४ अँगरेजी ढग के बाल बनानेवाले हज्जामो की दुकान। ५ जलपान का स्थान ६ वह स्थान जहाँ अँगरेजी शराब बिकती है। ७ जगह। (लश०)।

सेलो†—सज्ञा पु० [देश०] सायादार जमीन।

सेल्ल—सज्ञा पु० [स० शल्य या शल] दे० 'सेल्ला', 'सेल्हा'।—वर्ण०, पृ० ३।

सेल्ला—सज्ञा पु० [स० शल्य या शल] एक प्रकार का अस्त्र। भाला। सेल।



सेल्ह—सज्ञा पु० [स० शल्य या शल] दे० 'सेल'। उ०—गोलिन तीरन की झर लाई। मची सेल्ह समसेरन घाई। त्यौं लच्छे रावत प्रभु आगै। सेल्हन मार करी रिस पागै।—लाल कवि (शब्द०)।

सेल्हना†—क्रि० अ० [हिं० सेलना] मर जाना। जीवित न रहना। (बोल०)।

सेल्हर†—सज्ञा पु० [स० शल्क, हिं० सरहना, सेहरा] मछलियो के ऊपर की पर्त। सेहरा। चोई। उ०—सेल्हरो की परो की थी गड्डियाँ।—कुकुर०, पृ० १५७।

सेल्हा[1]—सज्ञा पु० [स० शालि] एक प्रकार का अगहनी धान जिसका चावल बहुत दिनो तक रह सकता है।

सेल्हा[2]—सज्ञा पु० [हिं० सेला] दे० 'सेली'।

सेल्ही—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेला, सेल्हा] १ छोटा दुपट्टा। २ गाँती। ३ रेशम, सूत बाल आदि की बद्धी या माला। उ०—ओझरी की झोरी काँधे, आँतनि की सेल्ही बाँधे, मूँड के कमडल, खपर किए कोरि कै। जोगिनी झुटुग झुड झुड बनी तापसी सी तीर तीर बैठी सो समर सरि खोरि कै।—तुलसी (शब्द०)। दे० 'सेली'[3]।

सेव—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा पेड जिसकी लकडी कुछ पीलापन या ललाई लिए सफेद रग की, नरम, चिकनी, चमकीली और मजबूत होती है। कुमार।

विशेष—इसकी आलमारी, मेज, कुरसी और आरायशी चीजें बनती है। बरमा मे इसपर खुदाई का काम अच्छा होता है। इसकी छाल और जड औषध के काम आती है और फल खाया जाता है। इसकी कलम लगती है और बीज भी बोया जाता है। यह वृक्ष पहाडो पर तीन हजार फुट की ऊँचाई तक मिलता है। यह बरमा, आसाम, अवध, बरार और मध्य प्रात मे बहुत होता है।

सेवँई[1]—सज्ञा स्त्री० [स० सेविका] गुँधे हुए मैदे के सूत के लच्छे जो घी मे तलकर और दूध मे पकाकर खाए जाते है।

सेवँई[2]—सज्ञा स्त्री० [स० श्यामक, हिं० सावाँ] एक प्रकार की लबी घास जिसमे सावे की सी बालें लगती हैं जो चारे के काम मे आती है।

सेवँढी†—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का धान जो उत्तर प्रदेश मे होता है।

सेवत—सज्ञा पु० [स० सामन्त] एक राग जो हनुमत के अनुसार मेघ राग का पुत्र है।

सेवँर(पु)†—सज्ञा पुं० [सं० शिम्बल, हिं० सेमल] दे० 'सेमल'। उ०—राजै कहा सत्य कहु सूआ। बिनु सत जस सेँवँर कर भूआ।—जायसी (शब्द०)।

सेव[1]—सज्ञा पु० [सं० सेविका] सूत या डोरी के रूप मे बेसन का एक पकवान।

विशेष—गुँधे हुए बेसन को छेददार चौकी या झरने मे दबाते हैं जिससे उसके तार से बनकर खौलते घी या तेल की कढ़ाई

मे गिरते और पकते जाते हैं। यह अधिकतर नमकीन होता है। पर गुड मे पागकर मीठे सेव भी बनाते हैं।

**सेव**(पु)[२]—सज्ञा स्त्री० [स० सेवा] दे० 'सेवा' उ०—करै जो सेव तुम्हारी सो सेइ भो विष्णु, शिव, ब्रह्म मम रूप सारे।—सूर (शब्द०)।

**सेव**[३]—सज्ञा पु० [स० सेव, सेवि, मि० फा० सेब] दे० 'सेव'। उ०—कहुँ दारव दाडिम सेव कटहल तूत अरु जभीर हैं।—भूषण ग्र०, पृ० १५।

**सेव**[४]—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सेवन' [को०]।

**सेवक**[१]—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० सेविका, सेवकनी, सेवकिन, सेवकिनी] १ सेवा करनेवाला। खिदमत करनेवाला। भृत्य। परिचारक। नौकर। चाकर। उ०—(क) मत्री, भृत्य, सखा मो सेवक याते कहत सुजान।—सूर (शब्द०)। (ख) सिसुपन तें पितु, मातु, बधु, गुरु, सेवक, सचिव सुखाउ। कहत राम विधु बदन रिसौहैं सपनेहु लखेउ न काउ।—तुलसी (शब्द०)। (ग) व्याहि कै आई है जा दिन सो रवि ता दिन सो लखी छाँह न बाकी। हैं गुरु लोग सुखी रघुनाथ, निहालन है सेवकनी सुखदा की।—रघुनाथ (शब्द०)। (घ) उन्होने क्षीरोद नामक एक सेवकिन से कहवा भेजा।—गदाधरसिंह (शब्द०)। (च) अष्टसिद्धि नवनिद्धि देहुँ मथुरा घर घर को। रमा सेवकिनी देहुँ करि कर जोरैं दिन जाम।—सूर (शब्द०)। २ भक्त। आराधक। उपासक। पूजा करनेवाला। जैसे,—देवी का सेवक। उ०—मानिए कहै जो वारिधार पर दवारि औ अँगार बरसाइबो बतावै वारि दिन को। मानिए अनेक विपरीत की प्रतीति, पैन भीति आई मानिए भवानी सेवकन को।—चरणचद्रिका (शब्द०)। ३ व्यवहार करनेवाला। काम मे लानेवाला। इस्तेमाल करनेवाला। जैसे,—मद्यसेवक। ४ पडा रहनेवाला। छोडकर कही न जानेवाला। वास करनेवाला। जैसे,—तीर्थसेवक। ५ सीनेवाला। दरजी। ६ बोरा।

**सेवक**[२]—वि० १ सेवा करनेवाला। समान करनेवाला। २ अभ्यास या अनुगमन करनेवाला। ३ परतत्र। आश्रित (को०)।

**सेवकाई**—सज्ञा स्त्री० [सं० सेवक + आई (प्रत्य०)] सेवक का काम। सेवा। टहल। खिदमत। उ०—(क) करि पूजा सब विधि सेवकाई। गयउ राउ गृह विदा कराई।—तुलसी (शब्द०)। (ख) नाना भाँति करहु सेवकाई। अस कहि अग्र चले जदुराई।—सबलसिंह (शब्द०)।

**सेवकालु**—सज्ञा पुं० [स०] दुग्धपेया नामक पौधा। निशाभग।

**सेवकी**(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० सेवक + ई (प्रत्य०)] १ सेवावृत्ति। सेवकता। सेवक धर्म। उ०—ताके पास तीन तूँबा, काँधे पर तो खासा कौ, पीछे पीठ पर तो मर्यादी सेवकी कौ, आगे कटि पर बाहिर कौ, या भाँति सो रहै आवें।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ४३। २. दासी। सेविका। टहलुई। उ०—(क) दायज बसन मनि धेनु धन हय गय सुसेवक सेवकी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सेवकी सदा की बारबधू दस बीस आई ए हो रघुनाथ छकी बारुनी अमल सो।—रघुनाथ (शब्द०)।

**सेवग**(पु)—सज्ञा पुं० [सं० सेवक] दे० 'सेवक'। उ०—यह विचारि सिव कै मदिर गए और आप एक सेवग कनै राखि सिव को पोडस प्रकार पूजन करचौ।—ह० रासो०, पृ० १६१।

**सेवडा**[१]—सज्ञा पु० [स० श्वेतपट, प्रा० सेअवड, सेवड, अथवा सं० श्वेताम्बर प्रा० सेअबर, सेँवर, सेवरा, सेवडा] १ जैन साधुओ का एक भेद। उ०—श्री शकराचार्य जी ने उस काम कौतुक वाद को इस ढग से समझ के कुवादी सेवडो को वाद मे परास्त किया।—भक्तमाल, पृ० ४६७। २ एक ग्राम देवता।

**सेवडा**[२]—सज्ञा पुं० [हिं० सेव + डा (प्रत्य०)] मैदे का एक प्रकार का मोटा सेव या पकवान जो खस्ता और मुलायम होता है।

**सेवति**(पु)‡—सज्ञा स्त्री० [सं० स्वाति, सेवाति] दे० 'स्वाति' (नक्षत्र)। उ०—शशिहि चकोर रविहि अरविंदा। पपिहा को सेवति कर बिंदा।—गोपाल (शब्द०)।

**सेवती**—सज्ञा स्त्री० [सं०] गुलाब का एक भेद जिसके फूल सफेद रग के होते है। सफेद गुलाब। चैती गुलाब।

**विशेष**—वैद्यक मे यह शीतल, तिक्त, कटु लघु ग्राहक, पाचक, वर्णप्रसादक, त्रिदोषनाशक तथा वीर्यवर्धक कही गई है।

**पर्या०**—शतपत्री। सेमती। कर्णिका। चारुकेशा। महाकुमारी। गधाढ्या। लक्षपुष्पा। अतिमजुला।

**सेवधि**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शेवधि'।

**सेवन**[१]—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० सेवनीय, सेवित, सेव्य, सेवितव्य] १ परिचर्या। खिदमत। २, उपासना। आराधना। पूजन। ३ प्रयोग। उपयोग। नियमित व्यवहार। इस्तेमाल। जैसे,—सुरासेवन, औषधसेवन। ४ छोडकर न जाना। वास करना। लगातार रहना। जैसे,—तीर्थसेवन, गगा-तट-सेवन। ५ सयोग। उपभोग। जैसे,—स्त्रीसेवन। ६ सीना। गूँथना। ७ बोरा। ८ बाँधने की क्रिया। बाँधना (को०)। ९ दूर दूर पर सीना या टाँके लगाना (को०)।

**सेवन**†[२]—सज्ञा पुं० [हिं० सावाँ] सावाँ की तरह की एक घास जो चारे के काम मे आती है और जिसके महीन दाने बाजरे मे मिलाकर मरुस्थल मे खाए भी जाते हैं। सेवँई। सवँई।

**सेवना**(पु)†[१]—क्रि० स० [सं० सेव + हिं० ना (प्रत्य०)] दे० 'सेना'। उ०—हम सेवत वारी बागसर सरिता बापी कूपतट। खोवत हैं यों ही आपु कौ भए निपट ही निघरघट।—ब्रज० ग्र०, पृ० १२५।

**सेवना**[२]—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सेवन' [को०]।

**सेवनी**[१]—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूई। सूची। सिवनी। २ सीवन। जोड। टाँका। सधिस्थान। ३ शरीर के वे अग जहाँ सीवन सी दिखाई देती हो। (ऐसे स्थान सात हैं पाँच मस्तक मे), एक जीभ मे और लिंग मे एक। ४ जुही। जूही।

**सेवनी**(पु)[२]—सज्ञा स्त्री० [सं० सेविन्, सेविनी] दासी। उ०—निज सेविनी पहिचानि कै वहई अनुग्रह आनिहै। करिहैं पवित्र चरित्र मेरी जीभ अवगुण बानि है।—गुमान (शब्द०)।

**सेवनी[1]**—सज्ञा पुं० [सं० सेवनिन्] खेत जोतनेवाला। हलवाहा [को०]।

**सेवनीय**—वि० [सं०] १ सेवा योग्य। २ पूजा के योग्य। ३ व्यवहार करने या रखने योग्य। ४ सीने योग्य।

**सेवर[1]**—सज्ञा पु० [स० शवर] दे० 'शवर'। उ०—हरिजू तिनको दुखित देख। कियो तुरत सेवरि को भेष।—(शब्द०)।

**सेवर(पु)[2]**—सज्ञा पुं० [स० शिम्बल] दे० 'सेमल'।

**सेवर[2]**—वि० [देशी] जो कम पका हुआ हो। जो पूरी तौर से पका हुआ न हो (बोल०)।

**सेवरा(पु)†**—सज्ञा पुं० [हिं० सेवडा] दे० 'सेवडा'। उ०—सेवरा, खेवरा, वानपरस्ती, सिध साधक अवधूत। आसन मारे बैठ सब जारि आतमा भूत।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० ३०।

**सेवरी(पु)**—सज्ञा स्त्री० [सं० शवरी] दे० 'शवरी'। उ०—बहुरि कवधहि निरखि प्रभु गीध कीन्ह उद्धार। सेवरी भवन प्रवेश करि पपासरहि निहार।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

**सेवल**—सज्ञा पु० [देश०] व्याह की एक रस्म।

विशेष—इसमे वर की कोई सधवा आत्मीया वर के हाथ मे पीतल की एक थाली देती है जिसपर एक दिया रहता है, अनतर उसके दुपट्टे के दोनो छोर पकडकर पहले उस थाली से वर का माथा और फिर अपना माथा छूती है।

**सेवाजलि**—सज्ञा स्त्री० [स० सेवाञ्जलि] १ भक्त या सेवक का दोनो हथेलियो के जुडे हुए सपुट मे स्वामी या उपास्य को कुछ अर्पण। २ सेवाभाव को व्यक्त करने की अजलि या सपुट।

**सेवा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दूसरे को आराम पहुँचाने की क्रिया। खिदमत। टहल। परिचर्या। जैसे—हमारी बीमारी मे इसने बडी सेवा की।

यौ०—सेवा शुश्रूषा। सेवा टहल।

२ दूसरे का काम करना। नौकरी। चाकरी।

विशेष—राज्य की सेवा के अतिरिक्त और प्रकार की सेवावृत्ति अधम कही गई है।

३ आराधना। उपासना। पूजा। जैसे,—ठाकुर जी की सेवा।

मुहा०—सेवा मे=पास। समीप। सामने। जैसे—(क) मैं कल आपकी सेवा मे उपस्थित हूँगा। (ख) मैंने आपकी सेवा मे एक पत्र भेजा था। (आदरार्थ प्राय बडो के लिये)।

४ आश्रय। शरण। जैसे,—आप मुझे अपनी सेवा मे ले लेते तो बहुत अच्छा था। ५. रक्षा। हिफाजत जैसे,—(क) सेवा बिना ये पौधे सूख गए। (ख) वे अपने शरीर की बडी सेवा करते है। उ०—वे अपने बालो की बडी सेवा करती हैं।—महावीर-प्रसाद द्विवेदी (शब्द०)। ६ सप्रयोग। सभोग। मैथुन। जैसे,—स्त्रीसेवा। ७ प्रयोग। व्यवहार (को०)। ८. लगाव। आसक्ति (को०)। ९. चापलूसी। चाटु (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

**सेवाकाकु**—सज्ञा स्त्री० [सं०] सेवाकाल मे स्वरपरिवर्तन या आवाज बदलना, (अर्थात् कभी जोर से बोलना, कभी मुलायमियत से, कभी क्रोध से और कभी दुख भाव से)।

**सेवाजन**—सज्ञा पु० [सं०] नौकर। सेवक। दास।

**सेवाटहल**—सज्ञा [स० सेवा+हिं० टहल] परिचर्या। खिदमत। सेवा-शुश्रूषा। उ०—इस प्रकार पिता का उपदेश सुन, वह बड-भागिन सप्रेम सेवाटहल दिन रात करने लगी।—भक्तमाल, पृ० ४७०।

क्रि प्र०—करना। होना।

**सेवाती**—सज्ञा स्त्री० [स० स्वाति] दे० 'स्वाति'। उ०—(क) रातुरग जिमि दीपक बाती। नैन लाउ होइ सीप सेवाती।—जायसी (शब्द०)। (ख) नयन लागु तेहि मारग पदुमावति जेहि दीप। जइस सेवातिहि सेवई बन चातक जल सीप।—जायसी (शब्द०)।

**सेवादक्ष**—वि० [स०] जो परिचर्या के काम मे कुशल हो [को०]।

**सेवाधर्म**—सज्ञा पु० [स०] सेवक का धर्म या कर्तव्य।

**सेवाधारी**—सज्ञा पुं० [सं० सेवा+धारिन्] वह जो किसी मदिर मे ठाकुर जी या मूर्ति की पूजा सेवा करता हो। पुजारी। (साधुओ की परि०)।

**सेवापन**—सज्ञा पु० [सं० सेवा+हिं० पन (प्रत्य०)]। दासत्व। सेवावृत्ति। नौकरी। टहल।

**सेवाबंदगी**—सज्ञा स्त्री० [स० सेवा, फा० बदगी]। आराधना। पूजा। उ०—यह मसीति यह देवहरा सतगुरु दिया दिखाइ। भीतर सेवाबदगी बाहर काहे जाइ।—दादू (शब्द०)।

**सेवाभिरत**—वि० [सं०] १. सेवाकार्य मे रत या लीन। २ सेवा मे आनद प्राप्त करने या माननेवाला [को०]।

**सेवाभृत्**—वि० [स०] सेवा करता हुआ। सेवाकार्य मे सलग्न [को०]।

**सेवाय[1]**—वि० [अ० सिवा] अधिक। ज्यादा।

**सेवाय[2]**—अव्य० दे० 'सिवा', 'सिवाय'।

**सेवार**—सज्ञा स्त्री० [सं० शैवाल] १ बालो के लच्छो की तरह पानी मे फैलनेवाली एक घास। उ०—(क) संवुक भेक सेवार समाना। इहाँ न विषय कथा रस नाना।—तुलसी (शब्द०)। (ख) राम और जादवन सुभट ताके हते रुधिर की नहर सरिता बहाई। सुभट मनो मकर अरु केस सेवार ज्यो, धनुष त्वच चर्म कूरम बनाई।—सूर (शब्द०)।

विशेष—यह अत्यत निम्न कोटि का उद्भिद् है, जिसमे जड आदि अलग नही होती। यह तृण नदियो और तालो मे होता है और चीनी साफ करने तथा औषध के काम मे आता है। वैद्यक मे सेवार कसैली, कडवी, मधुर, शीतल, हलकी, स्निग्ध, दस्तावर, नमकीन, घाव भरनेवाली तथा त्रिदोषनाशक बताई गई है।

२ मिट्टी की तहें जो किसी नदी के आसपास जमी हो।

**सेवार[2]**—सज्ञा पुं० [फा० सेह (=तीन)] पान। (सुनार)।

**सेवारा**—सज्ञा पुं० [हिं० सेवरा] दे० 'सेवडा[1]'।

**सेवाल**—सज्ञा स्त्री० [सं० शैवाल] दे० 'सेवार'। उ०—दूब वश कुवलय नलिन अनिल व्योम तृणवाल। मरकत मणि हय सूर के नील वर्ण सेवाल।—केशव (शब्द०)।

सेवावलंब—वि० [स० सेवावलम्ब] सेवा या परिचर्या पर निर्भर रहनेवाला [को०]।

सेवाविलासिनी—संज्ञा स्त्री० [स०] सेवा करनेवाली। सेविनी। दासी। टहलुई [को०]।

सेवावृत्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] नौकरी। दासत्व। चाकरी की जीविका।

सेवाव्यवहार—संज्ञा पु० [सं०] सेवा या परिचर्या का काम [को०]।

सेविंग बैंक—संज्ञा पु० [अं० सेविंग्स बैंक] वह बैंक जो छोटी छोटी रकमें ब्याज पर ले।

विशेष—ऐसे बैंक डाकखानों में भी होते हैं जहाँ गरीब और मध्य वित्त के लोग अपनी बचत के लिये रुपए जमा करते हैं।

सेवि[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ बदर फल। बेर। २ सेव (इस अर्थ में पीछे प्रयुक्त हुआ है)।

सेवि[2]—संज्ञा पुं० 'सेवी' का वह रूप जो समास में होता है।

सेवि(यु)[3]—वि० [सं० सेव्य] दे० 'सेव्य', 'सेवित'। उ०—जय जय जगजननि देवि, सुरनर मुनि असुर सेवि, भुक्ति मुक्तिदायिनि दुखहरन कालिका।—तुलसी (शब्द०)।

सेविका—संज्ञा स्त्री० [स०] १ सेवा करनेवाली। दासी। परिचारिका। नौकरानी। २ सेवँई नामक पकवान।

सेवित[1]—वि० [स०] १ जिसकी सेवा टहल की गई हो। परिवस्थित। उपचरित। २ जिसकी पूजा की गई हो। पूजित। उपासित। आराधित। उ०—जटाजूट रवि कोटि समाना। मुनिगन सेवित ज्ञान निधाना।—गिरिधरदास (शब्द०)। ३ जिसका प्रयोग या व्यवहार किया गया हो। व्यवहृत। ४ आश्रित। ५ युक्त या सपन्न (को०)। ६ उपभोग किया हुआ। उपभुक्त।

सेवित[2]—संज्ञा पुं० १ बदर फल। बेर। २ सेव।

सेवितमन्मथ—वि० [स०] प्रेमासक्त। कामुक [को०]।

सेवितव्य—वि० [स०] १ सेवा के योग्य। उपासना के योग्य। सेवनीय। उपासनीय। २ आश्रय के योग्य। आश्रयणीय। ३ सीने के योग्य। ४ प्रयोग या व्यवहार के योग्य।

सेविता[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सेवक का कर्म। सेवा। दासवृत्ति। चाकरी। २ उपासना। ३—आश्रय। सहारा। शरण।

सेविता[2]—संज्ञा पु० [सं० सेवितृ] सेवा करनेवाला। सेवक।

सेविता[3]—वि० १ अनुगमन अथवा अनुसरण करनेवाला। २ पूजा या आराधना करनेवाला [को०]।

सेवी—वि० [स० सेविन्] १ सेवा करनेवाला। सेवारत। २ पूजा करनेवाला। आराधना करनेवाला। पूजक। आराधक। ३ सभोग करनेवाला। मैथुन करनेवाला। ३ आदी। व्यसनी (को०)।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्राय यौगिक शब्द के अंत में हुआ करता है। जैसे,—साहित्यसेवी, स्वदेशसेवी, चरणसेवी, स्त्रीसेवी।

सेवुम[1]—वि० [फा०] तीसरा, तृतीय [को०]।

सेवुम[2]—संज्ञा पु० मृतक का तीसरा दिन। तीजा [को०]।

सेव्य—वि० [स०][वि० स्त्री० सेव्या] १ सेवा के योग्य। जिसकी सेवा करना उचित हो। खिदमत के लायक। जैसे,—गुरु, स्वामी, पिता। उ०—नाते सबै राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं।—तुलसी (शब्द०)। २ जिसकी सेवा करनी हो या जिनकी सेवा की जाय। जैसे,—वे तो हर प्रकार से हमारे सेव्य है। ३ पूजा के योग्य। आराधना योग्य। जिसकी पूजा या उपासना कर्तव्य हो। जैसे,—ईश्वर। ४ व्यवहार योग्य। काम में लाने लायक। इस्तेमाल करने लायक। ५ रक्षण करने के योग्य। जिसकी हिफाजत मुनासिब हो। ६ सभोग के योग्य। ७ अध्ययन मनन के योग्य (को०)। ८ सचय करने या रखने के योग्य (को०)।

सेव्य[1]—संज्ञा पुं० १ स्वामी। मालिक।

यौ०—सेव्यसेवक।

२ खस। उशीर। ३ अश्वत्थ। पीपल का पेड़। ४ हिज्जल वृक्ष। ५ लामज्जक तृण। लामज घास। ६ गौरैया नामक पक्षी। चटक पक्षी। ७ एक प्रकार का मद्य। ८ सुगधवाला। ९ लाल चदन। १० समुद्री नमक। ११. दही का पक्का। १२ जल। पानी।

सेव्यसेवक—संज्ञा पुं० [सं०] स्वामी और सेवक।

यौ०—सेव्य-सेवक-भाव = स्वामी और सेवक के बीच जो भाव होना चाहिए, वह भाव। उपास्य को स्वामी या मालिक के रूप में समझना।

विशेष—भक्ति मार्ग में उपासना जिन जिन भावों से की जाती है, यह उनमें से एक है। इसे सेवक-सेव्य-भाव के रूप में भी प्रयुक्त किया गया है। जैसे,—सेवक-सेव्य-भाव बिनु भव न तरिय उरगारि।—मानस।

सेव्या—संज्ञा स्त्री० [स०] १ बदा या बाँदा नामक पौधा जो दूसरे पेड़ों के ऊपर उगता है। बदाक। २ आँवला। आमलकी। ३ एक प्रकार का जगली अनाज या धान।

सेशन—संज्ञा पुं० [अं०] १ न्यायालय, पार्लमेंट, व्यवस्थापिका सभा आदि सस्थाओं का एक बार निरंतर कुछ दिनों तक होनेवाला अधिवेशन। लगातार कुछ दिन चलनेवाली बैठक। जैसे,—(क) हाईकोर्ट का सेशन शुरू हो गया। (ख) पार्लमेंट का सेशन अक्टूबर में शुरू होगा।

मुहा०—सेशन सुपुर्द करना = दौरा सुपुर्द करना। (आसामी या मुकदमे को) विचार या फैसले के लिये सेशन जज के पास भेजना, (डाकेजनी, खून आदि के मामले सेशन जज के पास भेजे जाते हैं)। सेशन सुपुर्द होना = दौरा सुपुर्द होना। सेशन जज के पास विचारार्थ भेजा जाना।

२ स्कूल या कालेज की एक साथ निरंतर कुछ दिनों तक होनेवाली पढ़ाई। जैसे,—कालेज का सेशन जुलाई से शुरू होगा। ३ दौरा अदालत।

सेशन कोर्ट—संज्ञा पु० [अं०] जिले की वह बड़ी अदालत जहाँ जूरी या अफसरों की सहायता से डाकेजनी, खून आदि फौजदारी के बड़े मामलों पर विचार होता है। दौरा अदालत।

**सेशन जज**—संज्ञा पु० [अ०] वह जज जो खून आदि के बड़े बड़े मामलों का फैसला करता है दौरा जज।

**सेशुम**—वि० [फा०] छठा। उ०—सेशुम रात को शहर देखा अजब। मकानदार वहाँ के है बीमार सब।—दक्खिनी०, पृ० ३०१।

**सेश्वर**—वि० [सं०] १ ईश्वरयुक्त। २ जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी गई हो। जैसे,—न्याय और योग सेश्वर दर्शन हैं।

**सेष**(पु)[१]—संज्ञा पु० [सं० शेष] दे० 'शेष'—८। उ०—तपबल सेषु करहि महारा। तपबल शेष धरइ महि भारा।—तुलसी (शब्द०)।

**सेष**[२]—संज्ञा पु० [अ० शैख] दे० 'शेख'। उ०—भूला जोगी और सेष औलिया मुनि जन कोटि अठासी।—रामानंद०, पृ० ३५।

**सेषु**—वि० [सं०] इषुयुक्त। बाणयुक्त [को०]।

**सेषुक**—वि० [सं०] इषु सहित। बाणयुक्त [को०]।

**सेस**(पु)[१]—संज्ञा पुं०, वि० [सं० शेष, प्रा० सेस] दे० 'शेष'। उ०—(क) सेस छबीहि न कहि सकै अगम कबीहि सुधीर। स्याम सबीहि बिलोकि कै बाम भई तसबीर।—शृंगार सतसई (शब्द०)। (ख) तबहिं सेस रहि जात पार नहिं कोऊ पावत। या सो जग में सेस नाम सुर नर मुनि गावत।—गोपाल (शब्द०)।

**सेस**†[२]—संज्ञा पुं० [सं० शेष (=बचा हुआ)] सीरणी। प्रसाद। उ०—सूझ हमेस बाँटणो सेस।—बाँकी ग्र०, भा० ३, पृ० ११०।

**सेस**[३]—संज्ञा पु० [अ०] कर। टैक्स। जैसे, रोड सेस।

**सेसनाग**(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० शेषनाग] दे० 'शेषनाग'।

**सेसरँग**(पु)—संज्ञा पु० [सं० शेष+रंग] सफेद रंग। (शेष नाग का रंग श्वेत माना गया है।) उ०—गहि कर केस हमेस परहि दायक कलेम को। वेस सेसरँग बसन तेज मोहत दिनेस को।—गोपाल (शब्द०)।

**सेसर**—संज्ञा पुं० [फा० सेह (=तीन)+सर (=बाज़ी)] १ ताश का एक खेल जिसमें तीन ताश हर एक आदमी को बाँटे जाते हैं और बिंदियों को जोड़कर हार जीत होती है। नौ बिंदी आने पर 'सेसर' होता है। आठवाले को दाँव का दूना और नौवाले को तिगुना मिलता है। २ जालसाजी। ३ जाल। उ०—मदमाती मनोज के आसव सो, अँग जासु मनो रँग केसरि को। सहजै नथ नाक ते खोलि धरी, करचो कौन धौं फंद या सेसरि को।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)।

**सेसरिया**—वि० [हिं० सेसर+इया (प्रत्य०)] छल कपट करके दूसरों का माल मारनेवाला। जालिया।

**सेसी**—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का बहुत ऊँचा पेड़ जिसकी लकड़ी के सामान बनते हैं। पगूर।

विशेष—इसकी लकड़ी भीतर से काली निकलती है। यह आसाम और सिलहट की पूर्वी और दक्षिणपूर्वी पहाड़ियों में बहुत होता है। लकड़ी से कई तरह की सजावट की और कीमती चीजें तैयार की जाती हैं। इसे आग में जलाने से बहुत अच्छी गंध निकलती है।

**सेह**[१]—संज्ञा पुं० [सं० सन्धि, हिं० सेंध] दे० 'सेंध'।

**सेह**[२]—वि० [फा०] तीन। (हिंदी में यह शब्द फारसी के कुछ यौगिक शब्दों के साथ ही मिलता है।

**सेहखाना**—संज्ञा पु० [फा० सेह (=तीन)+खाना (=घर)] तीन मंजिल का मकान। तिमंजिला मकान।

**सेहत**—संज्ञा स्त्री० [अ० सेह्हत] १ सुख। चैन। राहत। २ रोग से छुटकारा। रोगमुक्ति। बीमारी से आराम।

क्रि० प्र०—आना।—मिलना।—होना।

यौ०—सेहतनामा (१) शुद्धिपत्र। (२) स्वास्थ्य का प्रमाणपत्र। सेहतबख्श=स्वास्थ्यप्रद।

**सेहतखाना**—संज्ञा पु० [अ० सेहत+फा० खानह्] पेशाब आदि करने और नहाने धोने के लिये जहाज पर बनी एक छोटी सी कोठरी। (लश०)।

**सेहथना**†—क्रि० स० [सं० सह+हस्त=महस्य+हिं० ना (प्रत्य०)] १ हाथ से लीपकर साफ करना। सँतना। २ झाड़ना। बुहारना।

**सेहर**(पु)—संज्ञा पु० [सं० शेखर, शिखर, प्रा० सेहर, सिहर] १ दे० 'शिखर'। उ०—पथी एक संदेसडइ, लग ढोलइ पैहच्चाइ। विरह बाघ बनि तनि बसइ, सेहर माजइ आइ।—ढोला०, दू० १२८। २ सेहरा। विजयमुकुट। युद्ध में जाने के पूर्व सिर में बाँधी हुई पगड़ी। उ०—लरैं सिर सेहर बाँधि सजोर।—ह० रासो, पृ० ९२।

**सेहरा**—संज्ञा पु० [सं० शीर्षहार, हिं० सिरहार, सिरहरा] १ फूल की या तार और गोटे की बनी मालाओं की पंक्ति या जाल जो दूल्हे के मौर के नीचे लटकता रहता है। उ०—तीन गुनन के सेहरा दुलह पहिरावहिं हो।—धरम० श०, पृ० ४८। २ विवाह का मुकुट। मौर। उ०—(क) लटकत सिर सेहरो मनो शिखी शिखंड सुभाव।—सूर (शब्द०)। (ख) मानिक सुपन्ना पदिक मोतिन जाल सोहत सेहरा।—रघुराज (शब्द०)।

क्रि० प्र०—पहिराना।—बँधना।—बाँधना।

मुहा०—किसी के सिर सेहरा बँधना=किसी का कृतकार्य होना। औरों से अधिक यश या कीर्ति होना। श्रेय मिलना। सेहरा बँधाई=वह नेग जो दूल्हे को सेहरा बाँधने पर दिया जाता है। सेहरे के फूल खिलना=विवाह की अवस्था को प्राप्त होना। विवाह योग्य होना। सेहरे जलवे की=जो विधिपूर्वक ब्याह कर आई हो। (मुसल०)।

३ वे मांगलिक गीत जो विवाह के अवसर पर वर के यहाँ गाए जाते हैं।

**सेहरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] छोटी मछली। सहरी।

**सेहवन**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का रोग जो गेहूँ के छोटे छोटे पौधे को होता है।

**सेहहजारी**—संज्ञा पुं० [फा०] एक उपाधि जो मुसलमान बादशाहों के समय में सरदारों और दरबारियों को मिलती थी।

विशेष—ऐसे लोग या तो तीन हजार सवार या सैनिक रख सकते थे या तीन हजार सैनिकों के नायक बनाए जाते थे।

**सेहा**—सज्ञा पु० [स० सन्धि, हिं० सेंध] कूआँ खोदनेवाला।

**सेहिथान**†—सज्ञा पुं० [हिं० सेहथना] वह बुहारी या कूचा जिससे खलिहान साफ किया जाता है।

**सेही**—सज्ञा स्त्री० [स० सेधा, सेधी, प्रा० सेह] लोमडी के आकार का एक जतु जिसकी पीठ पर कडे और नुकीले काँटे होते हैं। साही। खारपुश्त। उ०—सेही सियाल लगूर बहु कुड कदम भरि तर रहिय। पिप्पे सु जीव कवि चद नें तुच्छ नाम चोपद कहिय।—पृ० रा०, ६।९४।

विशेष—कुद्ध होने पर यह जतु काँटो को खडे कर लेता है और इनसे चोट करता है। लबाई मे ये काँटे एक बालिश्त तक होते है।

**सेहुड, सेहुडा**—सज्ञा स्त्री० [स० सेहुण्ड, सेहुण्डा] थूहर। सेहुड।

**सेहुँड**ⓤ†—सज्ञा पुं० [स० सेहुण्ड] थूहर का पेड। उ०—छतौ नेह कागद हिए भई लखाय न टाँक। विरह तचे उधरयो सु अब सेहुँड को सो आँक।—बिहारी (शब्द०)।

**सेहुआँ**—सज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का चर्मरोग जिसमे शरीर पर भूरी भूरी महीन चित्तियाँ सी पड जाती हैं।

**सेहआन**—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का करमकल्ला जिसके बीज से तेल निकलता है।

**सेह्र**—सज्ञा पुं० [अ०] १ इद्रजाल। कीमियागरी। २ यत्र मत्र। जादू टोना।

यौ०—सेह्रबयान=ललित एव मुग्ध करनेवाली भाषा का व्यवहार करनेवाला। सेह्रसाज=कीमियागर। जादूगर। सेह्रसाजी=इद्रजाल। जादूगरी।

**सेंदूर**—वि० [स०] सिंदूर से रँगा हुआ। २ सिंदूर के रग का। सिंदूरी।

**सेंदेही**ⓤ—वि० [स० सह+देहिन्] सदेह। सशरीर। प्रत्यक्ष। उ०—करसी तप्ति मगहर गया कबीर भरोसै राम। सेंदेही साँई मिल्या दादू पूरे काम। दादू० पृ० ३४६।

**सेंध**ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धि] दे० 'सधि'। उ०—ता पच्छै सामत नाथ मिलि एक सुवत्तिय। भोरा राइ दिसान सेंध सगपन की कथ्थिय।—पृ० रा०, १२। पृ० ४५५।

**सेंधव**१—सज्ञा पुं० [स० सैन्धव] १ सेंधा नमक। विशेष दे० 'सेंधा'। २ सिंध देश का घोडा। सिंधी घोडा। ३ सिंध के राजा जयद्रथ का नाम। ४ एक प्रदेश का नाम। सिंधु देश (को०)। ५ प्राकृत भाषा मे निबद्ध एक प्रकार की गीत रचना (को०)। ६ सिंध देश का निवासी।

यौ०—सैंधवखिल्य, सैंधवघन=नमक का डला। सैंधवचूर्ण=नमक का बूरा। सैंधव शिला=एक प्रकार का पत्थर जो मुलायम होता है।

**सेंधव**२—वि० १ सिंध देश मे उत्पन्न। २ सिंध देश का। सिंधुदेशीय। ३. समुद्र सबधी। समुद्रीय। ४ समुद्र मे उत्पन्न।

**सैंधवक**—वि० [स० सैन्धवक] [वि० स्त्री० सैंधविकी] सैंधव सबधी।

**सैंधवपति**—सज्ञा पुं० [स० सैन्धव (=सिंध निवासी)+पति (=राजा)] सिंधवासियों के राजा, जयद्रथ। उ०—सोमदत्त शशिविंद सुवेशा। सैंधवपति अरु शल्य नरेशा।—सबलसिंह (शब्द०)।

**सैंधवादिचूर्ण**—सज्ञा पुं० [स० सैन्धवादि चूर्ण] एक अग्निदीपक चूर्ण जिसमे सेंधा नमक, हर्रे, पीपल और चीतामूल बराबर पडता है।

**सैंधवायन**—सज्ञा पुं० [स० सैन्धवायन] १ एक ऋषि का नाम। २ उनके वशज।

**सैंधवारण्य**—सज्ञा पुं० [स० सैन्धवारण्य] महाभारत मे वर्णित एक वन का नाम।

**सैंधवी**—सज्ञा स्त्री० [स० सैन्धवी] सपूर्ण जाति की एक रागिनी।

विशेष—यह भैरव राग की पुत्रवधू मानी गई है। यह दिन के दूसरे पहर की दूसरी घडी मे गाई जाती है। इसकी स्वरलिपि इस प्रकार है—धा सा रे म म प प ध ध। सा नि ध ध प प म ग ग ग ग रे सा। धा सा रे म म ग रे ग रे म प ग रे। नि नि ध म प म ग रे। प प म रे ग ग ग रे सा। किसी किसी के मत से यह षाडव है और इसमे रि वर्जित है।

**सैंधी**—सज्ञा स्त्री० [स० सैन्धी] एक प्रकार की मदिरा जो खजूर या ताड के रस से बनती है। ताडी।

विशेष—वैद्यक मे यह शीतल, कषाय, अम्ल, पित्तदाहनाशक तथा वातवर्धक मानी गई है।

**सैंधुक्षित**—सज्ञा पुं० [स० सैन्धुक्षित] एक साम भेद का नाम।

**सैंधू**—सज्ञा स्त्री० [स० सिन्धू, सैन्धवी] दे० 'सैंधवी'। उ०—करि लावदार दीरघ दवान। गहि सेल सांग हुव सावधान। केतेक धीर सधी कमान। केतेन तेग राखी भुजान। गुन गाइक किय वीरनु बखान। सैंधू सुर पूरिय तिहीं थान।—सूदन (शब्द०)।

**सैंपुल**—सज्ञा पुं० [अ० सेम्पुल] नमूना। जैसे,—कपडे का सैंपुल।

**सेंह**१—वि० [स०] [वि० स्त्री० सैंही] १ सिंह सबधी। सिंह का। २ सिंह के समान।

**सेंह**ⓤ†२—क्रि० वि० [हिं० सौंह] दे० 'सौंह'१।

**सैंहल**—वि० [स०] [वि० स्त्री० सैंहली] १ सिंहल द्वीप सबधी। सिंहल द्वीप का। २ सिंहली। सिंहल मे उत्पन्न।

**सैंहलक**—सज्ञा पुं० [स०] पीतल (को०)।

**सैंहली**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की पीपल। सिंहली पीपल।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह कटु, उष्ण, दीपन, कोष्ठशोधक, कफ, श्वास और वायुनाशक है।

पर्या०—सर्पदडा। सर्पाक्षी। उत्कटा। पार्वती। शैलजा। ब्रह्मभूमिजा। लबबीजा। ताम्रा। अद्रिजा। सिंहलस्था। जीवला। लबदडा। जीवनेत्री। जीवाला। कुरुवी।

**सैंहाद्रिक**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन जाति का नाम।

**सैंहिक**१—सज्ञा पुं० [स०] सिंहिका से उत्पन्न, राहु। सिंहिका का पुत्र। सैंहिकेय।

**सैंहिक[1]**—वि० सिंह के समान। सिंह तुल्य। सिंह जैसा।

**सैंहिकेय**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिंहिका का पुत्र राहु। २ दानवों का एक वर्ग [को०]।

**सैंगर**—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सेंगर' ३।

**सैंजल**Ⓤ‡—वि० [सं० सम+जल] जल के समान। जलयुक्त। जल या पानी के साथ। उ०—झिरिमिरि झिरिमिरि वरषिया पाँहण ऊपरि मेह। माँटी गलि सैंजल भई पाहण वोही तेह। —कबीर ग्र०, पृ० ५५।

**सैंणर**—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी+नर, हिं० साईंनर, या स० स्वजन, प्रा० सजण, सयण, पु० हिं० सैंण+अर (प्रत्य०)] पति। खाविंद (डिं०)।

**सैंतना**—क्रि० स० [सं० सञ्चयन या हिं० सँचय+ना (प्रत्य०)] १ सचित करना। एकत्र करना। बटोरना। इकट्ठा करना। उ०—(क) सोई पुरुष दरव जेइ सैंती। दरवहि तें सुनु बातें एती।—जायसी (शब्द०)। (ख) कहा होत जल महा प्रलय को राख्यो सैंति सैंति है जेह। भुव पर एक बूंद नहिं पहुँची निझरि गए सब मेह।—सूर (शब्द०)। २ हाथों से समेटना। इधर उधर से सरकाकर एक जगह करना। बटोरना। उ०—सखि वचन सुनि कौसिला लखि सुढर पासे ढरनि। लेति भरि भरि अंक, सैंतति पैंत जनु दुहुँ करनि।—तुलसी (शब्द०)। ३ सहेजना। सँभालकर रखना। सावधानी से अपनी रक्षा मे करना। सवाचना। जैसे,—जो रुपया मैंने दिया है, उसे सैंतकर रखना। ४ मार डालना। ठिकाने लगाना। (बाजारू)। ५ घन मारना। चोट लगाना।

**सैंतालिस**—वि०, संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सैंतालीस'।

**सैंतालीस[1]**—वि० [सं० सप्तचत्वारिंशत्, पा० सत्तचत्तालीसति, प्रा० सत्तालिस] जो गिनती मे चालीस से सात अधिक हो। चालिस और सात।

**सैंतालीस[2]**—संज्ञा पुं० चालिस से सात अधिक की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४७।

**सैंतालीसवाँ**—वि० [हिं० सैंतालीस+वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम मे छियालिस और वस्तुओं के उपरांत हो। क्रम मे जिसका स्थान सैंतालिस पर हो।

**सैंतिस**—वि० [स० सप्तत्रिंशत्] दे० 'सैंतीस'।

**सैंतीस[1]**—वि० [सं० सप्तत्रिंशत्, पा० सत्ततिंसति, प्रा० सत्तिसइ] जो गिनती मे तीस से सात अधिक हो। तीस और सात।

**सैंतीस[2]**—संज्ञा पुं० तीस से सात अधिक का अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—३७।

**सैंतीसवाँ**—वि० [हिं० सैंतीस+वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम मे छत्तीस और वस्तुओं के उपरांत हो। क्रम मे जिसका स्थान सैंतीस पर हो।

**सैंथी**Ⓤ†—संज्ञा पुं० [स० शक्ति] एक प्रकार का शस्त्र। उ०—इंद्रजीत लीनी जब सैंथी देवन हहा करयो।—सूर०, ९।१४४।

**सैंपना**†—क्रि० स० [स० समर्पण पु० हिं० सउँपना, सौंपना] दे० 'सौंपना'। उ०—भारी कठोर हियो करि के तिय सैंपि विदा भो विदेस के ईछे।—पजनेस०, पृ० ३२।

**सैंबल**Ⓤ†—संज्ञा पुं० [सं० शिम्बल] दे० 'सेंमर'। उ०—विष तामो अमृत करि जानै सो सँग आवै साथ। सैंबल के फूलन परि फूल्यो चूको अबकी घात।—दादू०, पृ० ६२९।

**सैंयाँ**—संज्ञा पुं० [हिं० सैंयाँ] दे० 'सैंयाँ'।

**सैंवर**†—संज्ञा पु० [हिं०] दे० 'साँभर'। उ०—सज्जी मीचर सैंवर सोरा। साँखाहूली सीप सिकोरा।—सूदन (शब्द०)।

**सैंवार**†—संज्ञा पुं० [स० शैवाल या पुं० शत+वाट्] १ दे० 'सेवार।' २ शतधा। टुकडे टुकडे। उ०—कबीर देवल ढहि पडया ईंट भई सैंवार।—कबीर ग्र०, १२, पद्य १८।

**सैंहथी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] दे० 'सैंथी'।

**सैंहुड़**—संज्ञा पुं० [स० सेहुण्ड] दे० 'सेहुँड'।

**सैंहूँ**—संज्ञा पुं० [हिं० गेहूँ का अनु०] गेहूँ के वे दाने जो छोटे काले और बेकार होते है।

**सै**†[1]—वि०, संज्ञा पु० [सं० शत, प्रा० सय, सइ] सौ। उ०—सवत सोरह सै इकतीसा। करउँ कथा हरिपद धरि सीसा।—तुलसी (शब्द०)।

**विशेष**—इसका प्रयोग अधिकतर किसी संख्या के आगे होता है।

**सै**[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्व, प्रा० सत्त] १ तत्व। सार। माद्दा। २ वीर्य। शक्ति। ओज। उ०—विनती सो परसन्न सद ती सो प्रसन्न मन। विनसै देखत सत्रु अहै यह मैं जाके तन। —गोपाल (शब्द०)। ३ बढती। बरकत। लाभ।

**सै**Ⓤ‡[1]—वि० [स० सदृश, प्रा० सदिस, सइस] समान। तुल्य। उ०—लखण बतीसे मारुवी निधि चद्रमा निलाट। काया कूँ कूँ जेहवी कटि केहरि सै घाट। —ढोला०, दू० ४६९।

**सैकट**—संज्ञा पुं० [सं० शतकण्टक] बबूल की जाति का एक पेड जिसकी छाल सफेद होती है। धौला खैर। कुमतिया।

**विशेष**—यह बगाल, बिहार, आसाम तथा दक्षिण और मध्यप्रदेश आदि मे विंध्य की पहाडियों पर होता है।

**सैकड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० शतकाण्ड, प्रा० सयकड] १. सौ का समूह। शत की समष्टि। जैसे,—२ सैकडे आम। २ १०६ ढोली पान। (तबोली)।

**सैकड़े**—क्रि० वि० [हिं० सैकडा] प्रति सौ के हिसाब मे। प्रतिशत। फीसदी। जैसे,—५) सैकडे ब्याज।

**सैकड़ो**—वि० [हिं० सैकडा] १ कई सौ। २ बहुसंख्यक। गिनती मे बहुत। जैसे,—सैकडो आदमी।

**सैकत[1]**—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सैकती] १ रेतीला। बलुआ। बालुका मय। २ बालू का बना।

**सैकत[2]**—संज्ञा पुं० १ बलुआ किनारा। रेतीला तट। २ तट। किनारा (को०)। ३. रेतीली मिट्टी। बलुई जमीन। ४ बालू का ढेर

सिकतापुज (को०)। ५ एक ऋषिवश या सप्रदाय जिन्हे वान-प्रस्थियो का भेद भी माना गया है।

**सैकतिक**[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ साधु। सन्यासी। क्षपणक। २ वह सूत्र या सूत जो मगल के लिये कलाई या गले मे धारण किया जाता है। मगलसूत्र। गडा या रक्षा।

**सैकतिक**[2]—वि० [स०] [वि० स्त्री० सैकतिकी] १ सैकत सबधी। २ भ्रम या सदेह मे रहनेवाला। सदेहजीवी। भ्रातिजीवी।

**सैकतिनी**—वि० स्त्री० [स०] दे० 'सैकती' [को०]।

**सैकती**—वि० [स० सैकतिन्] [वि० स्त्री० सैकतिनी] सिकतायुक्त। रेतीला। बलुआ (तट या किनारा)।

**सैकतेष्ट**—सज्ञा पु० [स०] आर्द्रक। अदरक (जो बलुई जमीन मे अधिक होता है)।

**सैकयत**—सज्ञा पु० [स०] पाणिनि के अनुसार एक प्राचीन जनपद या जाति का नाम।

**सैकल**—सज्ञा पु० [अ० सैकल] १ हथियारो को साफ करने और उन-पर सान चढाने का काम। २ सफाई। स्वच्छता। जिला (को०)।

**सैकलगर**—सज्ञा पुं० [अ० सैकल+गर] तलवार, छुरी आदि पर बाढ़ रखनेवाला। सान धरनेवाला। चमक देनेवाला। सिकलीगर।

**सैका**‡[1]—सज्ञा पु० [स० सेक (=पात्र)] १ घडे की तरह का मिट्टी का एक बरतन जिससे कोल्हू से गन्ने का रस निकालकर कडाहे मे डाल देते हैं। २ मिट्टी का छोटा बरतन जिससे रेशम रँगने का रग ढाला जाता है। ३ खेत से कटकर आई हुई रबी की फसल का अटाला। राशि।

**सैका**[2]—सज्ञा पुं० [सं० शतक, प्रा० सय, हिं० सै(=सौ)] १ दस ढोके। २ एक सौ पूले।

**सैकी**ⓤ‡—सज्ञा स्त्री० [हिं० सैका] छोटा सैका।

**सैक्य**[1]—वि० [स०] १ एकतायुक्त। २ सिंचाई पर निर्भर। ३ सिंचन सबधी। सिंचन के लायक।

**सैक्य**[2]—सज्ञा पु० सोनपीतल। शोणपित्तल।

**सैक्षव**—वि० [स०] जिसमे चीनी हो। मीठा।

**सैक्सन**—सज्ञा पुं० [अ०] योरप की एक जाति जो पहले जर्मनी के उत्तरी भाग मे रहती थी। फिर पाँचवी और छठी शताब्दी मे इसने इगलैड पर धावा किया और वहाँ बस गई।

**सैजन**—सज्ञा पुं० [हिं० सहिंजन] दे० 'सहिजन'।

**सैढ**†—सज्ञा पु० [देश०] गेहूँ की कटी हुई फसल जो दाँई गई हो, पर ओसाई न गई हो।

**सैण**†—सज्ञा पुं० [स० स्वजन, प्रा० सयण] १ मित्र। साजन। प्रिय। उ०—ढोला खिल्यौरी कहइ, सुणे कुढगा वैण। म्हारु म्हाँजी गोठणी, सै मारूदा सैण।—ढोला०, दू० ४३८। २ स्वजन। इष्टमित्र। बधुबाधव। उ०—(क) बातां वैर विसावणा, सैणाँ तोडे नेह।—बाकी० ग्र०, भा० १, पृ० ६६। (ख) ज्यारै थोडी सैण जग, वैरी घणा वसत।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ६६।

**सैणाचार**†—सज्ञा पु० [सं० सजन+आचार] मैत्री व्यवहार। स्वजना-चरण। मित्रता। उ०—किण मूँ राख कहरी, सैणाचार सनेह। —बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० २१।

**सैतव**—वि० [सं०] सेतु सबधी।

**सैतवाहिनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] ब्राह्मणी नदी का नाम।

**सैत्य**—सज्ञा पुं० [सं०] धवलिमा। श्वेतता। सुफेदी [को०]।

**सैथी**—सज्ञा स्त्री० [स० शक्ति, प्रा० सत्ति अथवा सहस्र, प्रा० सहस्स, पु० हिं० सैथी, सैंहथी] बरछी। साँग। छोटा भाला। उ०—पहर रात भर भई लराई। गोलिन सर सैथिन झर लाई। खाइ घाउ सब खान अघानै। लोह मानि तजि कोह परानै।—लाल कवि (शब्द०)।

**सैद**ⓤ‡[1]—सज्ञा पु० [अ० सैयद] दे० 'सैयद'। उ०—सूज्यो बहुरि सुरभी बतावाना। शेख सैद अरु मुगल पठाना।—रघुराजसिंह (शब्द०)।

**सैद**[2]—सज्ञा पु० [अ०] १ शिकार। आखेट। उ०—जुल्फ के हलके मे देखा जब से दाना खाल का। मुर्ग दिल आशिक का तब से सैद है इस जाल का।—कविता को०, भा० ४, पृ० २३। २ शिकार का पशु। वह जानवर जिसका शिकार किया जाय (को०)।

यौ०—सैदगाह=शिकार करने का स्थान। सैदे हरम=जनान-खाने का जानवर जिसका शिकार करना वर्जित है।

**सैदपुरी**—सज्ञा स्त्री० [सैदपुर स्थान] एक प्रकार की नाव जिसके आगे पीछे दोनो ओर के सिरे लबे होते हैं।

**सैदानी**—सज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'सैयदा'।

**सैद्धातिक**[1]—सज्ञा पु० [स० सैद्धान्तिक] १ सिद्धात को जाननेवाला। सिद्धातज्ञ। विद्वान्। तत्वज्ञ। २ नास्तिक।

**सैद्धातिक**[2]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सैद्धान्तिकी] सिद्धात सबधी। तत्व सबधी।

**सैध्रक**—वि० [सं०] सिध्रक वृक्ष की लकडी का बना हुआ।

**सैध्रिक**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का वृक्ष।

**सैन**[1]—सज्ञा स्त्री० [स० सज्ञपन, प्रा० सण्णवन] १ अपना भाव प्रकट करने के लिये आँख या उँगली आदि से किया हुआ इगित या इशारा। उ०—(क) जदपि चवायनि चीकनी, चलति चहूँ दिस सैन। तदपि नैन छाँडत दुहुनि के हँसी रसीले नैन।—बिहारी (शब्द०)। (ख) सुनि श्रवण दशावदन दशन अभिमान कर नैन की सैन अगद बुलायो। देखि लकेश कपि भेष दर दर हँस्यो सुन्यो भट कटक को पार पायो।—सूर (शब्द०)। (ग) सीतहि सभय देखि रघुराई। कहा अनुज सन सैन बुझाई।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—मारना।

२ चिह्न। निशान। सूचक वस्तु। परिचायक लक्षण। उ०—यह श्रमकन नख खतन की सैन जुदी अँग मैन। नील निचोल चितै भए तरुनि चोल रँग नैन।—शृंगार सतसई (शब्द०)।

सैन(पु)†[1]—सज्ञा पुं० [सं० शयन, प्रा० सयण] दे० 'शयन'। उ०—भटन विदा करि रैन मुख जाइ कीन्ह गृह सैन।—गोपाल (शब्द०)। (ख) साजि सैन भूषण वसन सबकी नजर बचाय। रही पौढ़ि मिस नीद के दृग दुवार से लाय।—पद्माकर (शब्द०)। (ग) जानि परैगी जात हो रात कहूँ करि सैन। लाल ललौहैं नैन लखि सुनि अनखौहैं बैन।—शृगार सतसई (शब्द०)।

सैन(पु)†[2]—सज्ञा स्त्री० [स० सेना या सैन्य] दे० 'सेना'। उ०—(क) सप्त दीप के कपि दल आए जुरी सैन अति भारी। सीता की सुधि लेन चले कपि ढूँढत विपिन मँझारी।—सूर (शब्द०)। (ख) सजी सैन छवि वरनि न जाई। मनु विधि करामाति सब आई।—गोपाल (शब्द०)।

सैन(पु)†[3]—सज्ञा पु० [स० श्येन] दे० 'श्येन'। बाज पक्षी। उ०—चल्यो प्रसैन ससैन सैन जिमि अपर खगन पर।—गोपाल (शब्द०)।

सैन[4]—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बगला।

सैनक—सज्ञा पुं० [फा० सनी, सहनक] थाली। रिकाबी। तश्तरी।

सैनपति(पु)—सज्ञा पुं० [सं० सेनापति] दे० 'सेनापति'। उ०—चहुँ सैन तीनु बुलाइ लिए। तिन सौ यह आइसु आपु दिए।—सूदन (शब्द०)।

सैनभोग(पु)—सज्ञा पुं० [सं० शयन + भोग] शयन के समय का भोग। रात्रि का नैवेद्य जो मदिरो मे चढता है। उ०—भए दिन तीनि ये तौ-भूख के अधीन नहिं, रहे हरि लीन प्रभु शोच परे उभारिए। दियो सैनभोग आप लक्ष्मी जू लै पधारी, हाटक की थारी झनझन पाँव धारिए।—भक्तमाल (शब्द०)।

सैना(पु)†[1]—सज्ञा स्त्री० [स० सैन्य] दे० सेना'। उ०—मीत नीत की चाल ये चल जानतहू रैन। छवि सैना सजि धावही अवलन पै तुव नैन।—रसनिधि (शब्द०)।

सैना(पु)[2]—सज्ञा स्त्री० [हि० सैन] सकेत। इशारा।

सैना[3]—सज्ञा पुं० [अ०] एक पर्वत जो शाम मे है। कहते है, इसी पर हजरत मूसा को ईश्वरदर्शन हुआ था [को०]।

सैनानिक—वि० [सं०] सेना के अग्रभाग का।

सैनानीक—वि० [सं०] दे० सैनानिक'।

सैनान्य—सज्ञा पुं० [स०] सेनानी या सेनापति का कार्य। सैनापत्य। सेनापतित्व।

सैनापति(पु)†—सज्ञा पुं० [स० सैन्यपति] दे० 'सेनापति'।

सैनापत्य[1]—सज्ञा पुं० [सं०] सेनापति का पद या कार्य। सेनापतित्व।

सैनापत्य[2]—वि० सेनापति सबधी।

सैनिक[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ सेना या फौज का आदमी। सिपाही। लश्करी। तिलगा। २ सैन्यरक्षक। प्रहरी। सतरी। ३ समवेत सेना का भाग। व्यूहबद्ध दल। ४ वह जो किसी प्राणी का वध करने के लिये नियुक्त किया गया हो। ५ शंबर के एक पुत्र का नाम।

सैनिक[2]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सैनिकी] सेना सबधी। सेना का।

यौ०—सैनिकवाद। सैनिकवादी। सैनिकीकरण = किसी राष्ट्र की पूरी आबादी को युद्ध करनेवाली सेना के रूप मे सयोजित करना या सबल बनाना। समर्थ जनसाधारण को सैनिक प्रशिक्षण देने का कार्य। उ०—मार्च, १९३४ मे हिटलर ने सैनिकीकरण का कार्य कर दिया।—आ० अ० रा०, पृ० १९।

सैनिकता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सेना या सैनिक का कार्य। सैनिकों का जीवन। २ युद्ध। लडाई भिडाई।

सैनिकवाद—सज्ञा पु० [सं० सैनिक + वाद] दे० सामरिकवाद'।

सैनिका—सज्ञा स्त्री० [स० श्येनिका] एक छद का नाम। यथा—सो सुजाननद सोचि वा घरी। आइयौ ब्रजेस पास ता घरी। सीख माँगि श्री ब्रजेस सौं तबै। दै निसान कूँच कै चमू सबै।—सूदन (शब्द)।

सैनिटरी—वि० [अ०] सार्वजनिक स्वास्थ्य, शुद्धता, रक्षा और उन्नति से सबध रखनेवाला। जैसे—सैनिटरी डिपार्टमेंट, सैनिटरी कमिश्नर।

सैनिटेरियम—सज्ञा पुं० [अ०] दे० 'सैनेटोरियम'।

सैनिटेशन—सज्ञा पुं० [अ०] स्वास्थ्यरक्षा सबधी विज्ञान [को०]।

सैनी(पु)[1]—सज्ञा पुं० [सं० √एण शौचे ? अथवा हिं० सेना भगत (जो जाति के नाई थे)] नाई। हजाम। उ०—दरशन हूँ नाशे यम सैनिक जिमि नह बालक सैनी। एकै नाम लेत सब भाजैं पीर सुभूमि रसैनी।—सूर (शब्द०)।

सैनी(पु)†[2]—सज्ञा स्त्री० [सं० सेना] दे० 'सेना'। उ०—जानि कठिन कलिकाल कुटिल नृप सग सजी अघ सैनी। जनु ता लगि तरवार त्रिविक्रम धरि करि कोप उपैनी।—सूर (शब्द)।

सैनी(पु)[3]—सज्ञा स्त्री० [सं० शयनीया (= शय्या)] शय्या। सेज। उ०—नददास प्रभु को नेह देखि हाँसी आवै, वे बैठे री रचि रचि सैनी।—नद० ग्र०, पृ० ३६८।

सैनी(पु)[4]—सज्ञा स्त्री० [स० श्रेणी] श्रेणी। पंक्ति। कतार। उ०—आगे चलि पुनि अवलोकी नवपल्लव सैनी। जहँ पिय सुसुम कुसुम लै सुकर गुही है वैनी।—नद० ग्र०, पृ० १६।

सैनी†[5]—सज्ञा पु० [स० सेना ?] एक सैनिक जाति। एक युद्धक जाति जो अपने को शूरसेन से सबधित बतलाती है।

सैनू—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बूटेदार कपडा। नैनू।

सैनेटोरियम—सज्ञा पुं० [अ०] वह स्थान जहाँ लोग स्वास्थ्यसुधार के लिये जाकर रहते है। स्वास्थ्यनिवास।

सैनेय(पु)—वि० [स० सेना + इय (प्रत्य०)] सेना के योग्य। लडने के योग्य। उ०—कैतवेय नृप चल्यो श्रेय गुनि बल अमेय तन। सँग अजेय सैनेय सैन पर प्रान तेय रन।—गोपाल (शब्द०)।

सैनेश—सज्ञा पुं० [सं० सैन्य + ईश > सैन्येश] सेनापति। उ०—हँसि बोले सैनेशकुमारा। कहिए नाथ महित विस्तारा।—सबलसिंह (शब्द०)।

सैनेस(पु)—सज्ञा पुं० [स० सैन्येश, प्रा० सैनेस] दे० 'सैनेश'।

सैन्य[1]—सज्ञा पु० [स०] १ सैनिक। सिपाही। २. सेना। फौज। ३ सेनादल। पलटन। ४ प्रहरी। सतरी। ५ शिविर। छावनी।

सैन्य[३]—वि० सेना सबधी। फौज का। फौजी।

सैन्यकक्ष—सज्ञा पुं० [सं०] सेना का पार्श्व भाग। दे० 'सेनाकक्ष'।

सैन्यक्षोभ—सज्ञा पु० [सं०] सेना का विद्रोह। फौज की बगावत।

सैन्यघातक—वि० [स०] सेना का विनाश करनेवाला [को०]।

सैन्यघातकर—वि० [सं०] दे० 'सैन्यघातक'।

सैन्यनायक—सज्ञा सं० [सं०] सेना का अध्यक्ष। सेनापति।

सैन्यनिवेशभूमि—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्थान जहाँ सेना पड़ाव डाले। शिविर। पडाव। छावनी।

सैन्यपति—सज्ञा पुं० [स०] सेनापति।

सैन्यपाल—सज्ञा पु० [स०] सेनापति।

सैन्यपृष्ठ—सज्ञा पुं० [स०] फौज का पिछला हिस्सा। सेना का पश्चात् भाग। प्रतिग्रह। परिग्रह। चदावल।

सैन्यमुख—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सेनामुख'।

सैन्यवास—सज्ञा पुं० [स०] पडाव। छावनी।

सैन्यशिर—सज्ञा पुं० [सं० सैन्यशिरस्] सेना का अग्रभाग।

सैन्यसज्जा—सज्ञा स्त्री० [स०] सेना की तैयारी [को०]।

सैन्यहता—सज्ञा पुं० [सं० सैन्यहन्तृ] शबर के एक पुत्र का नाम [को०]।

सैन्याधिपति—सज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।

सैन्याध्यक्ष—सज्ञा पुं० [स०] सेनापति।

सैन्योपवेशन—सज्ञा पुं० [सं०] सेना का पडाव।

सैफ—सज्ञा स्त्री० [अ० सैफ] तलवार। उ०—(क) यो छवि पावत हैं लखौ अजन आँजे नैन। सरस बाढ सैफन धरी जनु सिकलीगर मैन। —रसनिधि (शब्द०)। (ख) कोउ कहीत भामिनि भ्रुकुटि विकट विलोकि श्रवण समीप लौं। ये साफ सैफ करैं कतल नहिं छमै जानि तिय सजनी पलौ।—रघुराज (शब्द०)।

यौ०—सैफ जबान = वह जिसकी जबान सत्य हो। जिसकी वाणी या कथन पुर असर हो। सैफवान = तलवार लटकानेवाला परतला।

सैफग—सज्ञा पुं० [स० शतफल ?] लाल देवदार।

विशेष—इसका सुदर पेड चटगाँव से सिक्किम तक और कोकण तथा दक्षिण से मैसूर, मालावार और लका तक के जगलो मे पाया जाता है। इसकी लकडी पीलापन लिए भूरे रग की होती है और मेज, कुरसी, बाजो के सदूक आदि बनाने के काम आती है।

सैफा—सज्ञा पुं० [अ० सैफह्] जिल्दसाजो का वह औजार जिससे वे किताबो का हाशिया काटते है।

सैफी[१]—वि० [अ० सैफ (=तलवार)] तिरछा। तिर्यक्। उ०—नेहनि उर आवत लखौ जबही धीरज सैन। सैफी हेरन मैं पटे कैफी तेरे नैन।—रसनिधि (शब्द०)।

सैफी[२]—सज्ञा स्त्री० [अ० सैफी] १ माला। सबीह। २ एक अभिचार। मारण का एक प्रयोग [को०]।

सैमतिक—सज्ञा पुं० [स० सैमन्तिक] सिंदूर। सेंदुर।

विशेष—सधवा स्त्रियो के सीमत अर्थात् माँग मे लगाने के कारण सिंदूर का यह नाम पडा।

सैम—सज्ञा पुं० [देश०] धीवरो के एक देवता या भूत।

सैयद—सज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० सैयदा, सैयदानी, सैदानी] १. मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वश का आदमी। २ मुसलमानो के चार वर्गों या जातियो मे दूसरी जाति। उ०—सैयद अशरफ पीर पियारा। जेइ मोहि दीन्ह पथ उजियारा।—जायसी (शब्द०)।

सैयदा, सैयदानी—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ सैयद वर्ग या जाति की स्त्री। २ सैयद की पत्नी। सैदानी [को०]।

सैयाँ(पु)‡—सज्ञा पुं० [सं० स्वामी, हिं० साईं, या सं० स्वजन, प्रा० सयण] स्वामी। पति। उ०—(क) सैयाँ भये तिनैंगवा बहुअरि चली नहाय।—गिरिधर (शब्द)। (ख) अपने सैयाँ बाँधी पाट। लै रे बेचौ हाटै हाट।—कबीर (शब्द०)।

सैया(पु)—सज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] दे० 'शय्या'। उ०—सैया अगन वसन सुख होई। कल्पवृक्ष नामक तरु सोई।—गोपाल (शब्द०)।

सैयाद—सज्ञा पुं० [अ०] १ व्याध। बहेलिया। शिकारी। २ मछुआ। मल्लाह। उ०—यक लोक यक वेद दो दरिया के किनारे। सैयाद के काबू मे हैं सब जीव बेचारे।—कबीर म०, पृ० १५०।

सैयार[१]—वि० [अ०] घूमनेवाला। भ्रमण करनेवाला [को०]।

सैयार[२]—सज्ञा पुं० ग्रह। नक्षत्र। तारक [को०]।

सैयारा—सज्ञा पुं० [अ० सैयारह्] वह ग्रह जो सूर्य की परिक्रमा करे। नक्षत्र। तारक [को०]।

सैयाल—वि० [अ०] जो ठोस न हो। द्रव। तरल। जैसे—जल, तैल आदि पदार्थ [को०]।

सैयाह—सज्ञा पुं० [अ०] पर्यटक या घुमतू व्यक्ति।

सैयाही—सज्ञा स्त्री० [अ०] घूमना। फिरना। सैरसपाटा करना। पर्यटन [को०]।

सैरध्र—सज्ञा पुं० [सं० सैरन्ध्र] [स्त्री० सैरन्ध्री] १ गृहदास। घर का नौकर। २. एक सकर जाति जो स्मृतियो मे दस्यु और अयोगवी से उत्पन्न कही गई है।

सैरध्रिका—सज्ञा स्त्री० [सं० सैरन्ध्रिका] परिचारिका। दासी।

सैरध्री—सज्ञा स्त्री० [सं० सैरन्ध्री] १ सैरध्र नामक सकर जाति की स्त्री। २ अत पुर या जनाने मे रहनेवाली दासी। अत पुर की परिचारिका। महल्लिका। ३ वह कारीगर स्त्री जो दूसरो के घरो मे काम करे। स्वतत्र शिल्पजीवनी। ४. द्रौपदी का एक नाम।

विशेष—जब पाँचो पाडवो ने छद्मवेश मे मत्स्य देश के राजा विराट् के यहाँ सेवावृत्ति स्वीकार कर ली थी, तब द्रौपदी ने भी उनके साथ एक वर्ष तक 'सैरध्री' का काम किया था। इसी से द्रौपदी का नाम सैरध्री पड़ा।

**सैर[1]**—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ मन बहलाव के लिये घूमना फिरना। मनोरजन या वायुसेवन के लिये भ्रमण। उ०—शहर की सैर करते हुए राजा के महलो के नीचे आए। —लल्लू (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना। होना।

२ बहार। मौज। आनद। ३ मित्रमडली का कही बगीचे मे खानपान और नाचरग। ४ किसी पुस्तक का मनोरजन की दृष्टि से अध्ययन वा अवलोकन (लाक्ष०)। ५ घूमना फिरना। पर्यटन। चक्रमण। भ्रमण (को०)। ६ मनोरजक दृश्य, कौतुक। तमाशा। उ०—मम वधु को तैं हने शक्ति, विशेष लेही बैर। तव पुत्र, पौत्र सँहारि मैं दिखराय हौं रन सैर। —रघुराज (शब्द०)।

यौ०—सैरसपाटा = मन बहलाव के लिये घूमना, फिरना।

**सैर[2]**—वि० [स०] सीर या हल सबधी।

**सैर[3]**—सज्ञा पुं० कार्तिक का महीना [को०]।

**सैरगाह**—सज्ञा पुं० [फा०] १ सैर करने की जगह या स्थान। २ एक प्रकार का कदील जिसमे कागजी चित्रो की चलती फिरती छाया दिखाई पडती है।

**सैरबीन**—सज्ञा पुं० [अ० सैर (= तमाशा) + फा० बीन (= जिससे देखने मे मदद मिले)] १ देखना भालना। निरीक्षण। २ एक प्रकार का दो तालो से युक्त यत्र जिसे आँखो से लगाकर चित्र देखे जाते हैं। उ०—जिस तरह आप और अनेक कौतुक देखते हैं, कृपापूर्वक इस प्रजा के चित्तरूपी आतशी शीशे से (क्योकि वह आपके वियोग और अपनी दुर्दशा से सतप्त हो रहा है), बनी हुई सैरबीन को भी सैर कीजिए।—भारतेदु ग्र०, भा० ३, पृ० ७२२।

**सैरिंध्र[1]**—सज्ञा पुं० [सं० सैरिन्ध्र] वृहत्सहिता मे वर्णित एक प्राचीन जनपद का नाम।

**सैरिंध्र[2]**—सज्ञा पुं० दे० 'सैरध्र'।

**सैरिंध्री**—सज्ञा स्त्री० [सं० सैरिन्ध्री] दे० 'सैरन्ध्री'।

**सैरि**—सज्ञा पुं० [सं०] १ कार्तिक महीना। २ वृहत्सहिता के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

**सैरिक[1]**—सज्ञा पुं० [सं०] १ हलवाहा। हलधर। किसान। कृषक। २ हल मे जुतनेवाला बैल। ३ आकाश।

**सैरिक[2]**—वि० सीर सबधी। हल सबधी।

**सैरिभ**—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० सैरिभी] १ भैसा। महिष। २ स्वर्ग। ३ आकाश। व्योम।

**सैरिभी**—सज्ञा स्त्री० [सं०] भैस। महिषी।

**सैरिष्ठ**—सज्ञा पुं० [सं०] मार्कंडेय पुराण मे वर्णित एक प्राचीन जनपद का नाम।

**सैरीय**—सज्ञा पुं० [सं०] १ सफेद कटसरैया। श्वेत भिंटी। २ नीली कटसरैया। नील भिंटी।

**सैरीयक**—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सरीय'।

**सैरेय**—सज्ञा पुं० [सं०] १ सफेद फूलवाली कटसरैया। श्वेत भिंटी। २ दे० 'सैरीय'।

**सैरेयक**—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सैरेय'।

**सैर्य**—सज्ञा पुं० [स०] अश्ववाल नामक तृण।

**सैल(पु)[1]**—सज्ञा स्त्री० [फा० सैर] दे० 'सैर'। उ०—(क) गोप अथाइन तें उठे गोरज छाई गैल। चलि चलि अलि अभिसार की भली सँझोखी सैल।—बिहारी (शब्द०)। (ख) मोहि मधुर मुसकान सो सबै गाँव के छैल। सकल शैल वनकुज मे तरुनि सुरति की सैल।—मतिराम (शब्द०)।

**सैल[2]**—सज्ञा पुं० [सं० शैल, प्रा० सैल] पवत। दे० 'शैल'।

**सैल[3]**—सज्ञा स्त्री० [स० शल्य] दे० 'सेल'।

**सैल[4]**—सज्ञा स्त्री० [अ० सैल, फा० सैलाव] १ बाढ। जलप्लावन। २ स्रोत। बहाव।

**सैलकुमारी**—सज्ञा स्त्री० [सं० शैलकुमारी] पार्वती। दे० 'शैलकुमारी'।

**सैलग**—सज्ञा पुं० [स०] लुटेरा। डाकू।

**सैलजा(पु)**—सज्ञा स्त्री० [सं० शैलजा] दे० 'शैलजा'। उ०—जाइ बियाहहु सैलजहि यहि मोहि मागें देहु।—मानस, १।७६।

**सैलतनया(पु)**—सज्ञा स्त्री० [सं० शैलतनया] पार्वती। शैलजा।

**सैलवेशन आर्मी**—सज्ञा स्त्री० [अ०] यूरोपियन समाजसेवको का एक सघटन जिसका उद्देश्य जनता की धार्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। मुक्ति फौज।

विशेष—इस सघटन के कार्यकर्ता फौज के ढग पर जेनरल, मेजर, कप्तान आदि कहलाते हैं। ये लोग गेरुआ साफा, गेरुआ धोती और लाल रग का कोट पहनते है। ईसाई होने के कारण ये लोग ईसाई मजहब का ही प्रचार करते है। इनका प्रधान कार्यालय इगलैंड मे है और शाखाएँ प्राय समस्त ससार मे फैली हुई हैं।

**सैलसुता(पु)**—सज्ञा स्त्री० [स० शैलसुता] दे० 'शैलसुता'।

**सैला[1]**—सज्ञा स्त्री० [सं० शल्य] [स्त्री० अल्पा० सैली] १ लकडी की गुल्ली या गच्चड जो किसी छेद या सधि मे ठोका जाय। किसी छेद मे डालने या फँसाने का टुकडा। मेख। २ लकडी का छोटा डडा या मेख। ३ लकडी का छोटा डडा या मेख जो हल के जूए के दोनो सिरो के छेदो मे इसलिये डालते हैं जिसमे जूआ बैलो के गले मे फँसा रहे। ४ नाव की पतवार की मुठिया। ५ वह मुँगरी जिसमे कटी हुई फसल के डठल दाना झाडने के लिये पीटते हैं।

**सैला[2]**—सज्ञा पुं० [स० शाकल, प्रा० साअल] [स्त्री० अल्पा० सैली] चीरा हुआ टुकडा। चैला। जैसे,—लकडी का सैला।

**सैलात्मजा(पु)**—सज्ञा स्त्री० [स० शैलात्मजा] पार्वती।

**सैलानी**—वि० [फा० सैर, हिं० सैल] १ जिसे सैर करने मे आनद आवे। सैर करनेवाला। मनमाना घूमनेवाला। २ आनदी। मनमौजी।

**सैलाब**—सज्ञा पुं० [फा०] बाढ। जलप्लावन।

**सैलावा**—सज्ञा पुं० [फा० सैलाव] वह फसल जो पानी मे डूब गई है।

**सैलावी**[1]—वि० [फ़ा०] जो बाढ आने पर डूब जाता हो। बाढवाला। जैसे,—सैलावी जमीन।

**सैलाबी** सज्ञा स्त्री० १ तरी। सील। सीड। २ बाढ के समय डूब जानेवाली भूमि।

**सैलि**—सज्ञा पु० [स०] बृहत्सहिता के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

**सैली**[1]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सैला] १ छोटा सैला। २ ढाक की जड के रेशो की बनी रस्सी।

**सैली**[2]—सज्ञा स्त्री० [देश०] वह टोकरी जिसमे किसान तिन्नी का चावल इकट्ठा करते है।

**सैली**Ⓤ[3]—सज्ञा स्त्री० [स० शैली] परिपाटी। ढग। चाल। परपरा। दे० 'शैली'। उ०—यो कवि भूषन भाखत हैं यक तो पहिले कलिकाल की सैली।—भूषण ग्र०, पृ० ६६।

**सैली**Ⓤ†[4]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सहेली] दे० 'सहेली'। उ०—सैली मेरी गोद ममोला। दिल मेरा बाँई लिया माँ।—दक्खिनी०, पृ० ३६०।

**सैलूख**Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० शैलूप] १ बेल का वृक्ष। २ बिल्वफल। दे० 'शैलूष'।

**सैलूष**Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० शैलूष] १ नट। अभिनेता। २ धूर्त। ३ बेल का वृक्ष या फल। उ०—नहिं दाडिम सैलूप यह सुक न भूलि भ्रम लागि।—दीन० ग्र०, पृ० १०२। दे० 'शैलूप'।

**सैव**Ⓤ†—सज्ञा पुं० [स० शैव] दे० 'शैव'। उ०—माधौदास के माता पिता सैव बहिर्मुख हते।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १६५।

**सैवल**Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० शैवल] दे० 'शैवाल'। उ०—नाभि सरसि त्रिवली निसेनिका रोमराजि सैवल छवि पावति।—तुलसी (शब्द०)।

**सैवलिनी**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [स० शैवलिनी] दे० 'शैवलिनी'।

**सैवाल**Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० शैवाल] दे० 'शैवाल'। उ०—कहुँ सैवालन मध्य कुमुदिनी लगि रहि पाँतिन।—भारतेदु ग्र०, भा० १, पृ० ४५५।

**सैवी**Ⓤ†—वि० [स० शैविन्> शैवी] शैव मतानुयायी। उ०—घर मे मा बाप सैवी हैं।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १६४।

**सैवुम**—वि० [फा०] तीसरा। तृतीय [को०]।

**सैव्य**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० शैव्य] दे० 'शैव्य'।

**सैसगी**Ⓤ—वि० [स० सत्सङ्गिन्] सत्सग करनेवाला। साथी। सतसगी। उ०—प्रेम के साथ लगे सैसगी।—इद्रा०, पृ० १६८।

**सैस**—वि० [सं०] १ सीसे का बना हुआ। २ सीसा सबधी।

**सैसक**—वि० [सं०] [स्त्री० सैसकी] दे० 'सैस'।

**सैसव**Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० शैशव] दे० 'शैशव'। उ०—पत्त पुरातन झरिग पत्त अकुरिय उट्ठ तुछ। ज्यौ सैसव उत्तरिय चढिय वैसव किसोर कुछ।—पृ० रा०, २५।१६६।

**सैसवता**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सैसव+ता (प्रत्य०)] दे० 'शैशव'। उ०—सैसवता मे हे सखी जोवन कियो प्रवेस। कहाँ कहाँ छवि रूप की नखशिख अग सुदेस।—(शब्द०)।

**सैसाजल**Ⓤ‡—सज्ञा पुं० [स० शेष] लक्ष्मण। उ०—सैसाजल हनुमत जिमि ही सरसाई। वीराँ अवरोधी कीधी वडाई।—रघु० रू०, पृ० २४४।

**सैसिकत**—सज्ञा पुं० [स०] महाभारत मे वर्णित एक प्राचीन जनपद।

**सैसिरध्र**—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'सैसिकत'।

**सैह**—वि० [फा०] तीन।

**सैहचरी**Ⓤ†—सज्ञा स्त्री० [स० सहचरी] दे० 'सहचरी'। उ०—कहि उपदेस सैहचरी मोसो, कहाँ जाउ कहाँ पाऊँ।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० २३६।

**सैहज**Ⓤ†—वि० [स० सहज] दे० 'सहज'। उ०—सैहज सिंघासन बैठे स्वामी, आगै सेव करै गुलामी।—रामानद०, पृ० ५३।

**सैहजानद**Ⓤ†—सज्ञा पुं० [सं० सहज+आनन्द] दे० 'सहजानद'। उ०—ब्रह्मानद ममता टरी सदगुरु सैहजानद सो।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ४२६।

**सैहत**Ⓤ†—सज्ञा स्त्री० [सं० सहित] दे० 'सहित'। उ०—सील भाव छम्या उर धारै। धीरज सैहत दया व्रत पारै।—रामानद०, पृ० ५३।

**सैहथी**—सज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति, प्रा० सत्ति अथवा सं० सहस्र, प्रा० सहत्थ] शक्ति। बरछी। साँग। उ०—(क) ब्रह्ममत्र पढ़ि सैहथी रावण कर चमकाय। काल जलद मे बीजुरी जनु प्रगटी है आय।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। (ख) कह्यो लकपति मारो तोही। दीन्ही कपट सैहथी मोहीं।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। (ग) आपुस माँझ इसारत कीनी। कर उलछारि सैहथी लीनी।—लाल कवि (शब्द०)।

**सैहा**†—सज्ञा पुं० [स० सेक या सेचन (=सिचाई)+हिं० हा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० सैही] पानी, रस आदि ढालने का मिट्टी का बरतन।

**सैही**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सैहा] छोटा सैहा।

**सैहैर**‡—सज्ञा पुं० [फा० शहर] दे० शहर। उ०—दिसि पस्चम गुरजर सुघर, सैहैर अहमदावाद।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ४२१।

**सों**Ⓤ‡[1]—प्रत्य० [प्रा० सुन्तो] करण और अपादान कारक का चिह्न। द्वारा। उ०—(क) विद्यापति मन उगना सों काज नहि हितकर मोर त्रिभुवन राज।—विद्यापति, पृ०, ५१४। (ख) बार बार करतल कहँ मलिके। निज कर पीठ रदन सों दलिकै।—गोपाल (शब्द०)। (ग) गिरत सिंदूर मतवारिन की माँगन सों, चहुँ ओर फैलि रही जासु अरुनाई है।—बालमुकुद गुप्त (शब्द०)।

**सों**Ⓤ‡[2]—वि० [सं० सम] तुल्य। समान। दे० 'सा'। उ०—तीर सों धीर समीर लगे पद्माकर बूझि हू बोलत नाही।—पद्माकर (शब्द०)।

**सों**Ⓤ[3]—अव्य० [हिं० सौंह] दे० 'सौं'। उ०—मथुरा मैं भेम बढे राम। श्याम बल पाय, मारयो कंस राय करे करम अलीके सों। ता

को वैर लैहो मारि मद्रुन नसैहौं महि, जामे फरै पापिन के मुख फेरि फीके सो। धनी धरनी के नीके आपुनी अनी के सग आवै जर जी के मोन जी के गरजी के सो।—गोपाल (शब्द०)।

**सौं**(पु)²—क्रि० वि० [स० सह] सग। साथ। उ०—मन हरि सौं तनु घर हि चलावति। ज्यो गजमत्त जाल अकुश कर गुरुजन सुधि आवति।—सूर (शब्द०)।

**सौं**(पु)³—सर्व० [सं० स] दे० 'सो'। उ०—राज समाज खवर सौं वरनी। आगे नृपदल सौं भरि भरनी।—गोपाल (शब्द०)।

**सौं**(पु)⁴—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौंह] दे० 'सौंह'। उ०—वात सुने ते वहुत हँसोगे चरण कमल की सौं। मेरी देह छुटत यम पठए जितक दूत घर मौं।—सूर (शब्द०)।

**सौंइटा**†—सज्ञा पुं० [हिं० सटना ?] चिमटा। दस्तपनाह।

**सौंच**—सज्ञा पुं० [हिं० सोच] दे० 'सोच'। उ०—इधर उधर से सौंच सौंच कही से जवाव के वदले कुछ कह देना।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २४।

**सौंचर नमक**—सज्ञा पुं० [स० सौवर्चल + फा० नमक] एक प्रकार का नमक। काला नमक।

**विशेष**—यह मामूली नमक तथा हड, वहेड और सज्जी के संयोग मे वनाया जाता है। वैद्यक मे यह उष्णवीर्य, कटु, रोचक, भेदक, दीपक, पाचक, स्नेहयुक्त, वातनाशक, अत्यत पित्तजनक, विशद हलका, डकार को शुद्ध करनेवाला, सूक्ष्म तथा विवध, आनाह तथा शूल का नाश करनेवाला माना गया है।

**पर्या०**—अक्ष। सौवर्चल। रुच्य। दुर्गंध। शूलनाशन। रुचक। कृष्णलवण, आदि।

**सौंज**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौंज] दे० 'सौज'। उ०—सव सौंज रूपचद नदा के ही घर लै आए।—दो सौ वावन०, भा०, पृ० १९३।

**सौंझ**†—सज्ञा स्त्री० [स० सार्द्ध] आधा साझा। साझेदारी।

**सौंझा**†—वि० [स० शुद्ध, सुज्झ, हिं० सोझ] सीधा।

**सौंट**†—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सौंटा'।

**सौंटा**†—सज्ञा पुं० [सं० शुण्ड या सुवृत्त>सुवट्ट>सुअट, हिं० सटना] मोटी लवी सीधी लकडी या वाँस जिसे हाथ मे ले सकें। मोटी छडी। डडा। लाठी। लट्ठ। उ०—मार मार सौंटन प्रान निकासत।—कवीर श०, पृ० १९।

क्रि० प्र०—चलाना। —जमाना। —वाँधना। —मारना।

उ०—वहाँ से आज्ञा हुई कि ऐ मूसा तू नदी मे सोटा मार तव मूसा ने सौंटा मारा।—कवीर ग्र०, पृ० ५४।

मुहा०—सौंटा चलना = सौंटे से मार पीट होना। सौंटा चलाना = सौंटे से प्रहार करना। सौंटा जमाना = दे० 'सौंटा चलाना'।

**सौंटा**²—सज्ञा पु० १ भग घोटने का मोटा डडा। भगघोटना। उ०—तन कर कूँडी मन कर सौंटा प्रेम को भँगिया रगरि पियावै।—कवीर (शब्द०)। २ लोविया का पौधा। रदास। ३ मस्तूल वनाने लायक लकडी।

**सौंटाबरदार**—सज्ञा पुं० [हिं० सौंटा + फा० वरदार] सौंटा या आसा लेकर किसी राजा या अमीर की सवारी के साथ चलनेवाला। आसावरदार। वरलमदार।

**सौंटिआ**(पु)—सज्ञा पु० [हिं० सौंटा + इया (प्रत्य०)] दे० सौंटिया'। उ०—चहुँदिसि आवि सौंटि अन्हि फेरी। मै कटकाई राजा केरी।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० २०६।

**सौंठ**—सज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ठी] १ सुखाया हुआ अदरक। शठि। शुठी।

**विशेष**—वैद्यक के अनुसार सौंठ रुचिकर, पाचक, हलकी, स्निग्ध, उष्णवीर्य, पाक मे मधुर वीर्यवर्धक, सारक, कफ, वात, विवध, हृद्रोग, श्लीपद, शोक, ववासीर, अफारा, उदर रोग तथा वात रोग का नाशक है।

२ शुष्क। खुक्ख। खोखला। निर्धन या कजूस। (लाक्ष०)। उ०—जान पडता है ससुरालवाले पूरे सौंठ हैं।—शरावी, पृ० १९५।

**सौंठमिट्टी**—सज्ञा स्त्री० [सौंठ ? + हिं० मिट्टी] एक प्रकार की पीले रग की मिट्टी जो ताल या धान के खेत मे पाई जाती है। यह कागज वनाने के काम मे आती है।

**सौंठराय**—सज्ञा पुं० [हिं० सौंठ + राय (= राजा)] कजूसो का सरदार। भारी मक्खीचूस। (व्यग्य)।

**सौंठौरा**†—सज्ञा पुं० [हिं० सौंठ + औरा (प्रत्य०)] शर्करा या गुड, हरिद्रा आदि से युक्त एक प्रकार का सूजी का लड्डू जिसमे मेवो के सिवा सौंठ भी पडती है। यह लड्डू प्रायः प्रसूता स्त्री को खिलाया जाता है।

**सौंड़**‡—सज्ञा पुं० [स० शुण्ड, प्रा० सुड] दे० 'सूँड'। उ०—करे गजेंद्र सौंड की चोट। नामा उभरे हर की ओट।—दक्खिनी०, पृ० २०।

**सौंड़कहा**—सज्ञा पुं० [देश०] घी। घृत। (सुनार)।

**सौंध**(पु)—क्रि० वि० [हिं० सौंह] दे० 'सौंह'।

**सौंध**(पु)²—सज्ञा पुं० [डि० सौध] महल। अटारी। उ०—यह श्यामा है कौन की छविधामा मुसकाय। सौंध यहि कौंध सी चौंध गई चख छाय।—शृगार सतसई (शब्द०)।

**सौंध**†³—वि०, सज्ञा पुं० [स० सुगन्ध, हिं० सौधा] सुगधयुक्त। दे० 'सौंधा'।

**सौंधा**¹—वि० [सं० सुगन्ध] [वि० स्त्री० सौंधी] १. सुगधयुक्त। सुगंधित। खुशवूदार। महकनेवाला। उ०—(क) सौंधे समीरन को सरदार मलिदन को मनसा फलदायक। किंसुक जालन को कलपद्रुम मान्निनी वालक हूँ को मनायक।—रस कुसुमाकर (शब्द०)। (ख) सहर सहर सौंधी सीतल समीर डोलै घहर घहर घन घोरि कै घहरिया।—देव (शब्द०)। (ग) सौंधे कैसी सौंधी देह सुधा सो सुधारी, पाउँधारी देवलोक तै कि सिधु ते उधारी सी।—केशव (शब्द०)। २ मिट्टी के नए वरतन या सूखी जमीन पर पानी पडने या चना, वेसन आदि भुनने से निकलनेवाली सुगध के समान। जैसे,—सौंधी मिट्टी, सौंधा चना।

**सौंधा[2]**—संज्ञा पु० १ एक प्रकार का सुगधित मसाला जिससे स्त्रियाँ केश धोती हैं। उ०—(क) आइ हुती अन्हवावन नाइनि सोंधो लिए कर मूधे सुभाइनि। कचुकि छोरि उतै उपटैवे की ईगुर से अँग की सुजदाइनि। (ख) सोंधे की सुवास आस पास भरि भवन रह्यो भरत उनास वास वासन वसात है।—देव (शब्द०)। (ग) देखी है गुपाल एक गोपिका मे देवता सी सोनो सो सरीर सब सोंधे की सी वास है।—केशव (शब्द०)। २ इत्र। फुलेल। अतर। उ०—लेइ के फूल बैठि फुलहारी। पान अपूरब धरे सँवारी। सोंधा सबै बैठलै गाँधी। फूल कपूर खिरौरी बाँधी।—जायसी (शब्द०)। ३ एक प्रकार का सुगधित मसाला जो बगाल मे स्त्रियाँ नारियल के तेल मे उसे सुगधित करने के लिये मिलाती हैं।

**सौंधा[3]**—सज्ञा पुं० सुगध। महक। खुशबू। उ०—(क) सूरदास प्रभु की बानक देखे गोपी ग्वाल टारे न टरत निपट आवै सोंधे की लपट। —सूरदास (शब्द०)। (ख) गढी सो सोने सोंधै भरी सो रूपै भाग। सुनत रूखि भइ रानी हिये लोन आस आग।—जायसी (शब्द०)।

**सौंधिया**—सज्ञा पु० [हिं० सोंधा (=सुगध) + इया (प्रत्य०)] सुगध तृण। रोहिप तृण। गधेज घास।

**सौंधी**—सज्ञा पुं० [हिं० सोंधा] एक प्रकार का बढिया धान जो दलदली जमीन मे होता है।

**सौंधु**Ⓤ—वि० [हिं० सोंधा] उ०—सोंधु सुरद्रुम विद्रुम विदुलै फली दल फूलन दारयो दरे रे।—देव (शब्द०)।

**सौंपना**—क्रि० स० [हिं० सौंपना] समर्पण करना। सौंपना। उ०—(क) राम को राज्य लक्ष्मी सौंपो।—लक्ष्मण सिंह (शब्द०)। (ख) तुम यह हुडी चाँपाभाई भडारी को सोंपि आओ।—दो सौ बावन०, भा०, पृ० २०२।

**सौंवन**†—सज्ञा पुं० [स० स्वर्ण] सोना। स्वर्ण। हेम।

**सौंवनिया**—सज्ञा पु० [सं० सुवर्ण, प्रा० सुवण्ण, सोवण्ण + हिं० इया (प्रत्य०)] एक प्रकार का आभूषण जो नाक मे पहना जाता है। उ०—पहुँची करनो पदिक उर हरिनख कँठुला कठ मजु गजमनिया। रुचि रुचि शुक द्विज अधर नासिका सुदर राजत सोंवतिया।—सूर (शब्द०)।

**सौंह**Ⓤ†[1]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौंह] दे० 'सौंह'। उ०—प्यारे को प्यार परोसिनी सो है कह्यो तुम सो तव साचु न लेखौ। मोही को झूठी कहौ झगरौ करि सौंह करौं तव औरऊ तेखौ।—काव्य कलाधर (शब्द०)।

**सौंह**[2]—अव्य० दे० 'सौंह'। उ०—बाउर अध प्रेम कर लागू। सौंह धसा कछु सूझ न आगू।—जायसी (शब्द०)।

**सौंहट**†—वि० [सं० सुघट, प्रा० सुहट ?] सीधा सादा। सरल।

**सौंहना**Ⓤ†—वि० [स० शोभन, प्रा० सोहण] सुदर। सुहावना। उ०—सखि सोभित मदन गुपाल कटि बाँधे पट सौंहनो।—नद० ग्र०, पृ० ३८४।

**सौंहनी**Ⓤ†—वि० स्त्री० [स० शोभनीय] शोभनीय। शोभन। उ०—इहि कन्या मैं स्याम को, माँगो गोद पसारि, कि जोरी सौंहनी। —नद० ग्र०, पृ० १९४।

**सौंहीं**—अव्य० [हिं०] दे० 'सौंह'। उ०—(क) आज रिसौंही न सौंही चितौनि कितौ न सखी प्रति प्रीति बढावै।—देव (शब्द०)। (ख) इतने मे सौंही आ एक बोली व्रजनारी।—लल्लू (शब्द०)।

**सो[1]**—सर्व० [स० स] वह। उ०—(क) व्याही सो सुजान शील रूप वसुदेव जू कौ विदित जहान जाकी अतिहि बडाई है।—गोपाल (शब्द०)। (ख) सो मो सन कहि जात न कैसे। साक बनिक मनि गन गुन जैसे।—तुलसी (शब्द०)। (ग) अरे दया मैं जो मजा सो जुलमन मैं नाह।—रसलीन (शब्द०)।

**सो[2]**—वि० [हिं०] दे० 'सा'। उ०—(क) विधि हरि हर मय वेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो।—तुलसी (शब्द०)। (ख) नासिका सरोज गधवाह से सुगधवाह, दारयो से दशन कैसो बीजुरी सो हास है।—केशव (शब्द०)।

**सो[3]**—अव्य० अत। इसलिये। निदान। जैसे,—पराधीनता सब दु खों का कारण है, सो, भाइयो, इससे मुक्त होने के उद्योग मे लगे रहिए। उ०—सो जब हम तुम सो मिले जुद्ध। नव अग लहहु खै समर सुद्ध।—गोपाल (शब्द०)।

**सो[4]**—सज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती का एक नाम।

**सोⓊ†[5]**—सज्ञा पुं० [स० शत, प्रा० सय, सउ] दे० 'सौ'। उ०—सो बरस अट्ठ तप राज कीन। आनद मेव सिर छत्र दीन।—पृ० रा०, १। पृ० १२।

**सोऽहम्**—पद [स० स + अहम्] वही मैं हूँ—अर्थात् मैं ब्रह्म हूँ।

**विशेष**—वेदात का सिद्धात है कि जीव और ब्रह्म एक ही हैं, दोनो मे कोई अतर नही है। जीव और कुछ नही, ब्रह्म ही है। इसी सिद्धात का प्रतिपादन करने के लिये वेदाती लोग कहा करते हैं—सोऽहम्, अर्थात् मैं वही ब्रह्म हूँ। उपनिषदो मे भी यह बात 'अह ब्रह्मास्मि' और 'तत्त्वमसि' रूप मे कही गई है।

**सोऽहमस्मि**—पद [स० स + अहम् + अस्मि] वही मैं हूँ—अर्थात् मैं ही ब्रह्म हूँ। विशेष दे० 'सोऽहम्'।

**सोआना**Ⓤ—क्रि० अ० [सं० स्वपन] दे० 'सोना'। उ०—(क) गोरे गात कपोल पर अलक अडोल सोहाय। सोअति है साँपिनि मनो पकज पात बिछाय।—मुबारक (शब्द०)। (ख) सुक्लजीत जहाँ बसत जे जागत सोअत रामै राम बके।—देवस्वामी (शब्द०)।

**सोअर**‡—सज्ञा स्त्री० [स० सूतिगृह] दे० 'सौरी'।

**सोआ**—सज्ञा पु० [स० मिश्रेया] एक प्रकार का साग।

**विशेष**—इसका क्षुप १ से ३ फुट तक ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ बहुत सूक्ष्म और फूल पीले होते है। वैद्यक के अनुसार यह चरपरा, कडवा, हलका, पित्तजनक, अग्निदीपक, गरम, मेधाजनक, वस्तिकर्म मे प्रशस्त तथा कफ, वात, ज्वर, शूल, योनिशूल, आध्मान, नेत्ररोग, व्रण और कृमि का नाशक है।

**पर्या०**—शताह्वा। शतपुष्पा। शताक्षी। शतपुष्पिका। कारवी। तालपर्णी। माधवी। शोफका। मिसी।

**सोइ**ⓤ—सर्व० [हिं० सैव] वही । वह ही । उ०—(क) मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोइ । जा तन की झाईं परे स्याम हरित दुति होइ ।—बिहारी (शब्द०) । (ख) सातो द्वीप कहे शुक मुनि ने सोइ कहत अब सूर ।—सूर (शब्द०) । (ग) सोइ रघुवर सोइ लछिमन सीता । देखि सती अति भई सभीता ।—तुलसी (शब्द०) ।

**सोई**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० स्रोत, स्रोतिका, हिं० सोता] वह जमीन या गड्ढा जहाँ बाढ या नदी का पानी रुका रह जाता है और जिसमे अगहनी धान की फसल रोपी जाती है । डाबर ।

**सोई**[2]—सर्व० [सं० सैव] दे० 'वही' । उ०—बहुरि आइ देखा सुत सोई । हृदय कप मन धीर न होई ।—मानस, १।२०१ ।

**सोई**[3]—अव्य० [हिं०] दे० 'सो' । उ०—सोई मैं स्वशुरालय जाती थी ।—प्रताप (शब्द०) ।

**सोक**[1]—संज्ञा पुं० [देश०] चारपाई बुनने के समय बुनावट मे का वह छेद जिसमे से रस्सी या निवार निकाल कर कसते है ।

**सोक**[2]—संज्ञा पुं० [सं० शोक, प्रा० सोक] दे० 'शोक' । उ०—समन पाप सताप सोक के । प्रिय पालक परलोक लोक के ।—तुलसी (शब्द०) ।

**सोकड़ली**ⓤ†—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सौत' । उ०—सोकडल्यां चख मांहि करै कडवाइयां ।—बाँकी० ग्र०, भा० ३, पृ० ३१ ।

**सोकन**—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सोखन' ।

**सोकना**[1]ⓤ—क्रि० स० [स० शोक प्रा० सोक+हिं० ना (प्रत्य०)] शोक करना । दुख करना । रज करना । उ०—तुव पन पालि विपिन करि दैहौं । पुनि तुव पद पकज सिर नैहो । यो सुनि नृपति मनहिं मन सोक्यौ । पुनि पुनि रामवदन अवलोक्यौ ।—पद्माकर (शब्द०) ।

**सोकना**[2]—क्रि० स० [स० शोषण] दे० 'सोखना' । उ०—(क) आठ मास जो सूर्य जल सोकता है, सोई चार महीने बरसता है ।—लल्लू० (शब्द०) । (ख) बुद सोकिगो कुहा महासमुद्र छीजई । —केशव (शब्द०) ।

**सोकनी**†—वि० [हिं० सोकन] कालापन लिए सफेद रग का (बैल) ।

**सोकरहा**†—संज्ञा पुं० [हिं० सोकार] वह आदमी जो कूएँ पर खडा होकर पानी से भरे हुए चरसे या मोट को नाली मे उलटकर खाली करता है । वारा ।

**सोकार**†—संज्ञा पुं० [हिं० सोकना, सोखना] वह स्थान जहाँ खेत सीचनेवाले कूएँ से मोट निकालकर गिराते है । सिंचाई के लिये पानी गिराने की कूएँ पर की नाली । छिउलारा । चौढा ।

**सोकित**ⓤ—वि० [स० शोकित] शोकयुक्त । उ०—मुहि स्वारथ ढीठ बनायो तुमको जब सोकित देख्यो ।—प्रताप (शब्द०) ।

**सोक्कन**—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सोखन' ।

**सोख**ⓤ†[1]—वि० [फा० शोख] दे० 'शोख' ।

**सोख**[2]—वि० [स० शुष्क, प्रा० सुक्क] शुष्क करनेवाला या सुखानेवाला । जैसे—स्याही सोख ।

**सोखक**ⓤ—वि० [स० शोषक] १ शोषण करनेवाला । २ नाश करनेवाला । उ०—चाल चलि चद्रमुखी साँवरे सखा पै बेगि, सोखक जु केसोदास अरि सुख साज के । चढि चढि पवन तुरगन गगन घन, चाहत फिरत चद योधा यमराज के ।—केशव (शब्द०) ।

**सोखता**[1]—वि० [फा० सोखना] दे० 'सोख्ता' । उ०—मैं मुहदा तन सोखता विरहा दुख जारै । जिय तरसै दीदार को दादू न विसारै ।—दादू० बनी, पृ० ५०४ ।

**सोखता**[2]—संज्ञा पु० दे० 'सोख्ता' ।

**सोखन**[1]—संज्ञा पुं० [देश०] १ स्याही लिए सफेद रग का बैल । २ एक प्रकार का जगली धान जो नदी की घाटी मे बलुई जमीन मे बोया जाता है ।

**सोखन**ⓤ[2]—संज्ञा पुं० [स० शोषण] काम का एक बाण । दे० 'शोषण' । उ०—सोखन दहन उचाटन छोभन । तिन मैं निपट बुरौ समोहन ।—नद० ग्र०, पृ० १४० ।

**सोखना**—क्रि० स० [स० शोषण] १ शोषण करना । रस खीच लेना । चूस लेना । सुखा डालना । उ०—(क) यह मिट्टी·····पानी को खूब सोखती है ।—खेतीविद्या (शब्द०) । (ख) सेर भर चावल सेर ही भर घी सोखता है ।—शिवप्रसाद (शब्द०) । (ग) उदित अगस्त पथजल सोखा । जिमि लोभहि सोखइ सतोषा । —तुलसी (शब्द०) । (घ) उतै रुखाई है घनी थोरो मो पै नेह । जाही अग लगाइए सोई सोखै लेह ।—रसनिधि (शब्द०) । (ड) वाही हाथ कुच गहि पूतना के प्राण सोखे पाय ऊँचो पद निज धाम को सिधारी है ।—ब्रजचरित्र०, पृ० १३ । २ पीना । पान करना । (व्यग्य) ।

संयो० क्रि०—जाना ।—डालना ।—लेना ।

**सोखरी**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोखना या सुखाना या स० शुष्कफली] पेड का सूखा हुआ महुआ ।

**सोखा**†—संज्ञा पुं० [स० सूक्ष्म या चोखा ?] १ चतुर मनुष्य । होशियार आदमी । २ जादूगर । ३ झाड फूक, जतर मतर करनेवाला व्यक्ति ।

**सोखाई**[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोखा+ई (प्रत्य०)] जादू । टोना ।

**सोखाई**[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोखना] १ सोखने की क्रिया या भाव । २ सोखने या सोखाने की मजदूरी ।

**सोखाना**†—क्रि० स० [हिं० सुखाना] दे० 'सुखाना' ।

**सोखावना**ⓤ†—क्रि० स० [हिं० सुखाना] दे० 'सुखाना' । उ०—मधवानल वहि अगिन समानी । अगिन अगस्त सोखावत पानी । —हिंदी प्रेमा०, पृ० २७५ ।

**सोखीन**†—वि० [अ० शौक, शौकीन] दे० 'शौकीन' । उ०—घर भर अमल सब जने खावे सोखीन माही उनर ज्यावे ।—दक्खिनी०, पृ० १२४ ।

**सोख्त**—संज्ञा स्त्री० [फा० सोख्त] जलन । दाह [को०] ।

**सोख्तनी**—वि० [फा० सोख्तनी] दाह या जलन योग्य । जलनशील । जलाने लायक [को०] ।

**सोख्ता¹**—संज्ञा पुं० [फा० सोख्तह्] १ जला हुआ कोयला। २ एक प्रकार का मोटा खुरदुरा कागज जो स्याही सोख लेता है। स्याही सोख। स्याही चट। (अ० ब्लाटिंग पेपर)]। ३ बारूद से संपृक्त या रंजित वस्त्र जो शीघ्र जल उठता है (को०)।

**सोख्ता²**—वि० १ जला हुआ। २ विषादयुक्त। खिन्नमनस्क [को०]। ३ प्यार करनेवाला। प्रेमी (को०)।

**सोगद**—संज्ञा स्त्री० [सं० सौगन्ध, हिं० सौगद] दे० 'सौगद'।

**सोग**Ⓤ—संज्ञा पुं० [सं० शोक, प्रा० सोक, सोग] शोक। दुःख। रंज। उ०—(क) जाके बल गरजे महि काँपे। रोग सोग जाके निकट न चाँपे —रामानंद०, पृ० ७। (ख) निसि दिन राम राम की भक्ति, भय रुज नहिं दुख सोग।—सूर (शब्द०)। (ग) छिन पितु घातक जोग लखि भयौ भएँ सुत सोग। फिर हुलस्यौ जिय जोयसी समुझ्यो जारज जोग।—बिहारी (शब्द०)।

मुहा०—सोग मनाना = किसी प्रिय या संबंधी के मर जाने पर शोकसूचक चिह्न धारण करना और किसी प्रकार के उत्सव या मनोविनोद आदि में सम्मिलित न होना।

**सोगन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौगंद] सौगंद। कसम। (डिं०)। उ०—(क) नयणाँरा सोगन करै, भै मानै सुण भूत। रामत दूला री रमै राडूला री पूत।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० १३। (ख) लेखण तोला ताकडी, सोगन नै जीकार।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ६६।

**सोगिनी**Ⓤ—वि० स्त्री० [हिं० सोग + इनी (प्रत्य०)] शोक करनेवाली। शोकार्ता। शोकाकुला। शोकमग्ना। उ०—मुख कहत आजु बधि धृष्ट अरि तरपहुँ चौसठ जोगिनी। बिललात फिरैं बन पात प्रति मगध सुंदरी सोगनी।—गोपाल (शब्द०)।

**सोगी**—वि० [सं० शोकिन्, हिं० सोग] [स्त्री० सोगिनी] १ शोक मनानेवाला। शोकार्त। शोकाकुल। दुःखित। २ सोच विचार करता हुआ। चिंतित। उदास।

**सोच¹**—संज्ञा पुं० [सं० शोच] १ सोचने की क्रिया या भाव। जैसे,—तुम अच्छी तरह सोच लो कि तुम्हारे इस काम का क्या फल होगा।

यौ०—सोचसमझ। सोचविचार। सोचसाच = दे० 'सोचविचार'। उ०—हमें भी बहुत सोच साच के धन्यवाद देना पड़ा।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २३।

२ चिंता। फिक्र। जैसे,—(क) तुम सोच मत करो, ईश्वर भला करेंगे। (ख) तुम किस सोच में बैठे हो? उ०—(क) चल्यो अनखाइ समझाइ हारे बातनि सो, 'मन! तू समझ, कहा कीजै? सोच भारी है!'—भक्तमाल (प्रिया०), पृ० ५०५। (ख) नारि तजी सुत सोच तज्यो नव।—केशव (शब्द०)। ३ शोक। दुःख। रंज। अफसोस। उ०—(क) तुलसी के दुहूँ हाथ मोदक हैं, ऐसी ठाउँ जाके मुए जिए सोच करिहैं न लरिको।—तुलसी (शब्द०)। (ख) नेह कै मोहि बुलायो इतै अब बोरत मेह महीतल को है। आई सभार महावत मैं तन मैं श्रम सीकर की झलको है। न मिले अब नौल किसोर पिया हियो बेनी प्रवीन कहै कलको है। सोच नहीं धन पावन को सखि सोच यहै उनके छल को है।—बेनी प्रवीन (शब्द०)। ४ पछतावा। पश्चात्ताप। उ—देखिकै उमा कौ रुद्र लज्जित भए, कह्यो मैं कौन यह काम कीनो। इंद्रजित हौं कहावत हुतो आपु कौं, समुझि मन माहिं ह्वै रह्यो खीनो। चतुरभुज रूप धरि आइ दरसन दियौ कह्यौ शिव सोच दीजै बिहाई।—सूर०, ७।२०।

**सोचक**Ⓤ—संज्ञा पुं० [सं० सौचिक] दरजी। (डिं०)। उ०—गुरु गीत बाद वाजित्र नृत्य। सोचक सु वाच्य सविचार कृत्य। मनि मंत्र जंत्र वास्तुक विनोद। नैपथ्य विलास सुनि तत्त मोद।—पृ० रा०, १।७३२।

**सोचना**—क्रि० अ० [सं० शोचन, शोचना (= दुःख, शोक, अनुताप)] १ किसी प्रकार का निर्णय करके परिणाम निकालने या भवितव्य को जानने के लिये बुद्धि का उपयोग करना। मन में किसी बात पर विचार करना। गौर करना। जैसे,—(क) मैं यह सोचता हूँ कि तुम्हारा भविष्य क्या होगा। (ख) कोई बात कहने से पहले सोच लिया करो कि वह कहने लायक है या नहीं। (ग) इस बात का उत्तर मैं सोचकर दूँगा। (घ) तुम तो सोचते सोचते सारा समय बिता दोगे। उ०—सोचत है मन ही मन मैं अब कीजै कहा बतियाँ जगछाई। नीचो भयो ब्रज को सब सीस मलीन भई रसखानि दुहाई।—रसखान (शब्द०)। २ चिंता करना। फिक्र करना। उ०—(क) अब हरि आइहैं जिन सोचै। सुन विधुमुखी वारि नयनन ते अब तू काहे मोचै।—सूर (शब्द०)। (ख) कौनहुँ हेतन आइयो प्रीतम जाके धाम। ताको सोचति सोच हिय केशव उक्ताधाम।—केशव (शब्द०) ३ खेद करना। दुःख करना। उ०—माथे हाथ मूँदि दोउ लोचन। तनु धरि सोचु लाग जनु सोचन।—तुलसी (शब्द०)।

**सोचविचार**—संज्ञा पुं० [हिं० सोच + सं० विचार] समझबूझ। गौर। जैसे,—(क) सोचविचार कर काम करो। (ख) अच्छी तरह सोचविचार लो।

**सोचाना**—क्रि० स० [हिं० सोचना] दे० 'सूचाना'। उ०—सुदिन सुनखत सुघरी सोचाई। बेगि बेदबिधि लगन धराई।—तुलसी (शब्द०)।

**सोचु**Ⓤ—संज्ञा पुं० [हिं० सोच] दे० 'सोच'। उ०—सती सभीत महेस पहिं चली हृदय बड सोचु।—तुलसी (शब्द०)।

**सोच्छ्वास¹**—वि० [सं०] १ प्रसन्न। खुश। २ उच्छ्वासयुक्त। जोरों से साँस लेता हुआ। ३. शिथिल। सुस्त। ढीला [को०]।

**सोच्छ्वास²**—क्रि० वि० आराम। प्रसन्नतापूर्वक [को०]।

**सोछ**Ⓤ—क्रि० वि० [सं० स्वच्छ प्रा० सुच्छ] साफ साफ। सुस्पष्ट स्वच्छ। उ०—ऐसा इष्ट सँभारिये चरनदास कहि सोछ।—चरण० बानी, पृ० ४६।

**सोज¹**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूजना] १ सूजने की क्रिया, भाव या अवस्था। सूजन। शोथ। २ दे० 'सौज'। उ०—तुलसी

समिध सोज लक जग्यकुड लखि जातधान पुग फल जव तिल धान है।—तुलसी (शब्द०)।

सोज[1]—सज्ञा पुं० [फा० सोज] १ जलन। ज्वाला। उ०—अगन कूँ दिया सोज सो रोशनी। जमीन कूँ दिया खिलग्रत गुलशनी। —दक्खिनी, पृ० ११७। २ वेदना। मनस्ताप। पीडा [को०]।

सोजन[1]—सज्ञा पुं० [फा० सोजन] १ सूई। उ०—अरे निरदई मालिया कहुँ जताय यह बात। केहि हित सुमनन तोरि तै छेदत सोजन गात।—रसनिधि (शब्द०)। २ कटक। काँटा। (लश०)।

सोजन[1]—सज्ञा पु० [फा० सोजनी] बिछाने का बिस्तर। उ०—भाई साहेब, अपने तो ऊ पछी काम का जे भोजन सोजन दूनो दे। —भारतेदु ग्र०, भा० १, पृ० ३२८।

सोजनकारी—सज्ञा स्त्री० [फा० सोजनकारी] सूई का काम। सूईकारी। उ०—लहँगे के खूब दाव देकर सिए पल्लो पर फूलो और पक्षियो की सोजनकारी की हुई थी।—जनानी०, पृ० ३।

सोजनी—सज्ञा स्त्री० [फा० सोजनी] दे० 'सुजनी'।

सोजाँ—वि० [फा० सोज़ाँ] १ ज्वलनशील। दाहक। २ पीडा-दायक। दु खद [को०]।

सोजाक—सज्ञा पुं० [फा० सूजाक] दे० 'सूजाक'।

सोजिश—सज्ञा स्त्री० [फा० सोजिश] १ सूजन। फुलाव। शोथ। २ दे० 'सोज[2]'।

सोझ(पु)—वि०, क्रि० वि० [हिं० सोझा] १ दे० 'सोझा'। उ०—(क) काहु ओ वहल भार वोझ, काहु वाट कहल सोझ।—कीर्ति०, पृ० २४। (ख) कहै कवीर नर चलै न सोझ। भटकि मुए जस वन के गोझ।—कवीर (शब्द०)। २ ठीक सामने की ओर गया हुआ। सीधा। उ०—सोझ वान अस आवहिं राजा। वासुकि डरै सीस जनु वाजा।—जायसी (शब्द०)।

सोझना(पु)†—क्रि० स० [सं० शोधन] शोधना। खोजना। उ०—(क) वारड वहतई आपणाइँ। कुँवर परणावौ, सोझउ वीद। —वी० रासो, पृ० ६। (ख) अवधेसरा मे सुभट आया सोझवा सीता।—रघु० रू०, पृ० १६१।

सोझा[1]—वि० [स० सम्मुख, म०प्रा० समुज्झ ?, अथवा स० शुद्ध, प्रा० सुद्ध, सुज्झ] [वि० स्त्री० सोझी] १ सीधा। सरल। उ०—(क) दादू सोझा राम रस अस्थित काया कूल।—दादू (शब्द०)। (ख) है वहँ डोर सुरति कर सोझी गुरु के शब्द चढि जइए हो।—धरम० श०, पृ० ११। २ ठीक सामने की ओर गया हुआ। दे० 'सोझ'—२।

सोझा[2]—सज्ञा स्त्री० [सं० शोध (=अन्वेषण), शुद्ध, प्रा० सुज्झ] सुधि। शोध। स्मृति। स्मरण। याद। उ०—ईत ऊत की सोझो परै। कौन कर्म मेरा करि करि मरै।—कबीर ग्र०, पृ० ३२७।

सोझोव†—सज्ञा पु० [सं० सोढव्य (=सहनशील)] जवान बछडा।

सोटा[1]—सज्ञा पु० [स० शुण्ड] दे० 'सोंटा'।

सोटा[2]—सज्ञा पुं० [हिं० सुग्रटा] दे० 'सुग्रटा'। उ०—लै संदेस सोटा गा तहाँ। मूली देहि रतन को जहाँ।—जायसी (शब्द०)।

सोठ—सज्ञा स्त्री० [स० शुण्ठि] दे० 'सोंठ'।

सोठ मिट्टी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोठ+मिट्टी] दे० 'सोंठ मिट्टी'।

सोडा—सज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का क्षार पदार्थ जो सज्जी को रासायनिक क्रिया से साफ करके बनाया जाता है।

विशेष—इसके कई भेद है। जिसे लोग सिर धोने के काम मे लाते है, उसे अँगरेजी मे 'सोडा क्रिस्टल' कहते है। यह सज्जी को उबालकर बनाते हैं। ठढा होने पर साफ सोडा नीचे बैठ जाता है। जो सोडा साबुन, कागज, काँच आदि बनाने के काम मे आता है, उसे 'सोडा कास्टिक' कहते है। यह चूने और सज्जी के सयोग से बनता है। दोनो को पानी मे घोल और उबालकर पानी उडा देते है। इसी प्रकार 'बाइकारबोनेट आफ सोडियम' भी साबुन, काँच आदि बनाने के काम मे आता है। यह नमक को अमोनिया मे घोलकर कारबोनिक गैस की भाप का तरारा देने से निकलता है। इसे एकत्र करके तपाने से पानी और कारबोनिक गैस उड जाता है। जो सोडा खाने के काम मे आता है, उसे 'बाइकारबोनेट आफ सोडा' कहते हैं। यह सोडे पर कारबोनिक गैस का तरारा देने से बनता है।

सोडावाटर—सज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का पाचक पानी जो प्राय. मामूली पानी मे कारबोनिक एसिड का सयोग करके बनाते हैं और बोतल मे हवा के जोर से बद करके रखते हैं। विलायती पानी। खारा पानी।

सोढ—वि० [स०] १ सहनशील। सहिष्णु। २ जो सहन किया गया हो। ३ (पु) समर्थ। शक्तिमान्। उ०—सोढ हुओ तूं भाँण सुत रावाँ सिरहर राव।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ८३।

सोढर—वि० [देश०] भोदू। बेवकूफ। उ०—(क) गदहो मे हम सोढर गन्हा है।—बालकृष्ण भट्ट (शब्द०)। (ख) भगति सुतिय के हाथ सुमिरिनी सोहत टोडर। सोढर खोडर बूढ ऊढ द्विज खोँडर ओडर।—सुधाकर (शब्द०)।

सोढवत्—वि० [स०] जिसने सहन किया हो। सहनेवाला।

सोढव्य—वि० [सं०] सहन करने के योग्य। सह्य।

सोढा—वि० [सं० सोढृ] १ दे० सहनशील। 'सोढ'। २ शक्तियुक्त। ताकतवर [को०]।

सोढी—वि० [स० सोढिन्] जिसने सहन किया हो। सहनकारी।

सोणक—वि० [सं० शोण] लाल रग का। रक्त।

सोणत—सज्ञा पुं० [सं० शोणित] खून। लोहू। रक्त। (डिं०)।

सोत—सज्ञा स० [स० स्रोत] दे० 'स्रोत' या 'सोता'। उ०—(क) लोन लोचनी कठ लखि सख समुद के सोत। अरु उडि कानन को गए केकी गोल कपोत।—शृगारसतसई (शब्द०)। (ख) धन कुल की मरजाद कछु प्रेम पथ नहिं होत। राव रक सब एक से लगत प्रेम रस सोत।—हरिश्चद्र (शब्द०)। (ग)

वैरिवधुवरन कलानिधि मलीन भयो सकल सुखानो परपानिप को सोत है।—मतिराम (शब्द०)।

**सोता[1]**—संज्ञा पु० [सं० स्रोत] १ जल की बराबर बहनेवाली या निकलनेवाली छोटी धारा। झरना। चश्मा। जैसे—पहाड का सोता, कूएँ का सोता। उ०—(क) भूख लगे सोता मिले उथरे अरु बिन मैल। पी तिनको पानी तुरत लीजौ अपनी गैल।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)। (ख) दस दिसा निर्मल मुदित उडगन भूमिमडल सुख छयो। सागर सरित सोता सरोवर सबन उज्वल जल भयो।—गिरिधरदास (शब्द०)। २ नदी की शाखा। नहर। उ०—जिसका (जमना की नहर का) एक सोता पश्चिम मे हरियाने तक पहुँचकर रेगिस्तान मे खप जाता है।—शिवप्रसाद (शब्द०)। ३ मूल। उद्गम। परपरा।

**सोता[2]**—वि० [स० सोतृ] उत्पन्न करनेवाला। सतान उत्पन्न करनेवाला (को०)।

**सोतिया**Ⓖ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोता+इया (प्रत्य०)] सोता। उ०—नौ दस नदिया अगम बहे सोतिया, बिचे मे पुरइन दहवा लागल रे री।—कबीर (शब्द०)।

**सोतिहा**†—संज्ञा पु० [हिं० सोता+इहा (प्रत्य०)] कूआँ जिसमे सोते का पानी आता है।

**सोती[1]**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोता] स्रोत। धारा। सोता। उ०—तेहि पर पूरि धरी जो मोती। जवुँना माँझ गाँग कइ सोती।—जायसी (शब्द०)।

**सोती[2]**—संज्ञा स्त्री० [स० स्वाति] दे० 'स्वाती'। उ०—एक वर्ष बरष्यो नहिं सोती। भयो न मानसरोवर मोती।—रघुराजसिंह (शब्द०)।

**सोती[3]**—संज्ञा पुं० [स० श्रोत्रिय, प्रा० सोत्तिय] दे० 'श्रोत्रिय'।

**सोतु**—संज्ञा पुं० [स०] सोम निकालने की क्रिया।

**सोत्कठ**—वि० [स० सोत्कण्ठ] १ उत्कठायुक्त। लालसायुक्त। २ शोक या पश्चात्तापयुक्त। उनमना।

**सोत्कप**—वि० [स० सोत्कम्प] काँपता हुआ। हिलता डुलता हुआ। कपित (को०)।

**सोत्क**—वि० [स०] जिसे उत्कठा हो। उत्कठापूर्ण। सोत्कठ।

**सोत्कर्ष**—वि० [स०] उत्कर्षयुक्त। उत्तम। दिव्य।

**सोत्तरपणव्यवहार**—संज्ञा पुं० [सं०] पाराशर स्मृति के अनुसार इस प्रकार की शर्त कि वाद विवाद मे जो जीते, वह हारनेवाले से इतना धन ले।

**सोत्प्रास[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] १ चाटु। प्रिय बात। २ व्याजस्तुति। ३ शब्दयुक्त हास्य। सशब्द हास्य। यथा—सोत्प्रास आच्छुरितकमवच्छुरितक तथा अट्टहासो महाहासो हास प्रहास इत्यादि।—शब्दरत्नावली (शब्द०)। ४ व्यग्यवाक्य या कथन (को०)।

**सोत्प्रास[2]**—वि० १ बढाकर कहा हुआ। अतिरजित। २ अतीव। अत्यत। ३ व्यग्ययुक्त। जिसमे व्यग्य हो।

**सोत्प्रेक्ष**—वि० [स०] १ उपेक्षा के योग्य। २ उदासीनतापूर्वक।

**सोत्सग**—वि० [सोत्सङ्ग] शोकाकुल। दु खित।

**सोत्सर्ग समिति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मल मूत्र आदि का इस प्रकार यत्नपूर्वक त्याग करना जिसमे किसी व्यक्ति को कष्ट या जीव को आघात न पहुँचे। (जैन)।

**सोत्सव**—वि० [सं०] १ उत्सवयुक्त। उत्सवसहित। २ प्रफुल्ल। प्रसन्न। खुश। ३ हर्ष या उल्लासयुक्त। उत्साहसहित।

**सोत्सुक**—वि० [सं०] १ उत्सुकतायुक्त। उत्सुकतासहित। उत्कठित। २ जिज्ञासायुक्त। जानने की कामना से युक्त। जिज्ञासु (को०)। ३ शोकयुक्त। शोकातु। शोकान्वित (को०)।

**सोत्सेक**—वि० [सं०] अभिमानी। घमडी। ऐंठू।

**सोत्सेध**—वि० [पुं०] ऊँचाईयुक्त। उच्च। ऊँचा।

**सोथ**—संज्ञा पु० [सं० शोथ] दे० 'शोथ'।

**सोदकुभ**—संज्ञा पुं० [सं० सोदकुम्भ] एक प्रकार का श्राद्ध जो पितरों के उद्देश्य से किया जाता है।

**सोदघित्व**—वि० [सं०] लघु। अल्प। थोडा। कम।

**सोदन**—संज्ञा पु० [देश०] रफूगरों के काम मे आनेवाला एक टुकडा जिसपर सूई से छेदकर बेल बूटे बनाए होते हैं।

**विशेष**—जिस कपडे पर बेल बूटा बनाना होता है, उसपर इसे रखकर बारीक सूत बिछा देते हैं, जिससे कपडे पर चिह्न बन जाता है। जिसके आधार पर बेल बूटे काढे जाते हैं।

**सोदय[1]**—वि० [सं०] १ ब्याज या सूद समेत। वृद्धियुक्त। २ आगे शीघ्र गहो के उदय से सबद्ध (को०)। ३ धनवान् उगनेवाला (को०)।

**सोदय[2]**—संज्ञा सं० ब्याज सहित मूल धन। असल मय सूद।

**सोदर[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सोदरा, सोदरी] सहोदर भ्राता। सगा भाई।

**सोदर[2]**—वि० एक गर्भ से उत्पन्न।

**सोदरा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहोदरा भगिनी। सगी बहिन।

**सोदरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सोदरा'। उ०—काम की दुहाई की सुहाई सखी माधुरी की इदिरा के मदिर मे झाँई उपजति है। सुरनि की सूरी किधौं मोदद की सोदरी कि चातुरी की माता ऐसी बातनि सिजति है। केशव (शब्द०)।

**सोदरीय**—वि० [सं०] दे० 'सोदर'।

**सोदर्क[1]**—वि० [सं०] १ परिणाम से युक्त। फलयुक्त। २ कगूरे या बुर्जियों से युक्त (को०)।

**सोदर्क[2]**—संज्ञा पुं० गान का पूरक जो अतिम हो (को०)।

**सोदर्य**—वि० संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सहोदर'।

**सोदागर**Ⓖ†—संज्ञा पुं० [फा० सौदागर] दे० 'सौदागर'। उ०—ना साथ मे सोदागर बोहोत आए।—दो सौ बावन०, पृ० १६८।

**सोद्यम**—वि० [सं०] १ सचेष्ट। सक्रिय। २ युद्धार्थ कृतनिश्चय (को०)।

**सोद्योग**—वि० [सं०] १ उद्योगी। कर्मशील। उद्योग मे लगा हुआ। २ शक्तिशाली। मजबूत। हिंसक। ३ खतरनाक (को०)।

**सोन**[४]—वि० [सं० शोण] लाल। अरुण। रक्त। उ०—सुभग सोन सरसीरुह लोचन। वदन मयक तापत्रय मोचन।—तुलसी (शब्द०)।

**सोन**[५]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना] एक प्रकार की वेल जो बारहो महीने बराबर हरी रहती है। इसके फूल पीले रग के होते है।

**सोन**[६]—सज्ञा पुं० [स० रसोनक या सोनह] लहसुन। (डिं०)।

**सोनकिरवा**‡—सज्ञा पुं० [हिं० सोना + किरवा (=कीडा)] १ एक प्रकार का कीडा जिसके पर पन्ने के रग के चमकीले होते है। २ खद्योत। जुगनू।

**सोनकीकर**—सज्ञा पुं० [हिं० सोना + कीकर] एक प्रकार का बहुत बडा पेड।

विशेष - यह वृक्ष उत्तर बगाल, दक्षिण भारत तथा मध्यभारत मे बहुत होता है। इसके हीर की लकडी मूसली सी, पर बहुत ही कडी और मजबूत होती है। यह इमारत और खेती के औजार बनाने के काम मे आती है। इसका गोद कीकर के गोद के समान ही होता है और प्राय औषध आदि मे काम आता है।

**सोनकेला**—सज्ञा पु० [हिं० सोना + केला] चपा केला। सुवर्ण कदली। पीला केला।

विशेष—वैद्यक मे यह शीतल, मधुर, अग्निदीपक, बलकारक, वीर्यवर्धक, भारी तथा तृषा, दाह, वात, पित्त और कफ का नाशक माना गया है।

**सोनगढी**†—सज्ञा पु० [सोनगढ (स्थान)] एक प्रकार का गन्ना।

**सोनगहरा**—सज्ञा पु० [हिं० सोना + गहरा] गहरा सुनहरा रग।

**सोनगेरू**—सज्ञा पुं० [हिं० सोना + गेरू] दे० 'सोनागेरू'।

**सोनचपा**—सज्ञा पु० [हिं० सोना + चपा] पीला चपा। सुवर्ण चपक। स्वर्ण चपक।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह चरपरा, कडुवा, कसैला, मधुर, शीतल तथा विष, कृमि, मूत्रकृच्छ्र, कफ, वात और रक्तपित्त को दूर करनेवाला है।

**सोनचिरई**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + चिरई] दे० 'सोनचिरी'।

**सोनचिरी**Ⓖ—सज्ञा स्त्री० [सोना + चिरी (=चिडिया)] नटी। उ०—पातरे अग उडै बिनु पाँखरी कोमल भाषनि प्रेम झिरी की। जोवन रूप अनूप निहारि कै लाज मरै निधिराज सिरी की। कौल से नैन कलानिधि सो मुख को गनै कोटि कला गहिरी की। बाँस कै सीस अकास मे नाचत को न छकै छवि सोनचिरी की।—देव (शब्द०)।

**सोनजरद**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + फा० जर्द] दे० 'सोनजर्द'। उ०—कोइ गुलाल सुदरसन कूजा। कोइ सोनजरद पाव भल पूजा।—जायसी (शब्द०)।

**सोनजर्द**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + फा० जर्द] पीली जूही। स्वर्णयूथिका।

**सोनजुही**Ⓖ†—सज्ञा स्त्री० [स० स्वर्ण + हिं० जूही] दे० 'सोनजूही'। उ०—(क) देखी सोनजुही फिरनि सोनजुही से अग। दुति लपटनि पट सेत हूँ करति बनौटी रग।—बिहारी (शब्द०) (ख) ह्वै रीझी लखि रीझिहौ छविहि छबीले लाल। सोनजुही सी होति दुति मिलत मालती माल।—बिहारी (शब्द०)।

**सोनजूही**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + जूही] एक प्रकार की जूही जिसके फूल पीले रग के होते है पर जिसमे सफेद जूही से सुगधि अधिक होती है। पीली जूही। स्वर्णयूथिका। उ०—सोनजूही की पँखुरियो से गुँथे ये दो मदन के बान, मेरी गोद मे। हो गए बेहाश दो नाजुक, मृदुल तूफान, मेरी गोद मे!—ठडा०, पृ० ११।

**सोनपटीला**Ⓖ—वि० [हिं० सोना + सं० पत्र या पत्रिल] सोने के पत्र (वर्क) के समान चमकनेवाला। उ०—बारह मास दामिनी दमकै। सोनपटीला जुगनू झमकै।—चरण० बानी, पृ० ७६।

**सोनपेडुकी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + पेडुकी] एक प्रकार का पक्षी जो सुनहलापन लिए हरे रग का होता है। इसकी चोच सफेद तथा पैर लाल होते है।

**सोनभद्र**—सज्ञा पुं० [स० शोणभद्र] दे० 'सोन'। उ०—सोनभद्र तट देश नवेला। तहाँ बसै बहु अबुध बघेला।—रघुराज (शब्द०)।

**सोनवाना**†—वि० [स० स्वर्णवर्णक ? अथवा हिं० सोना + वाना (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सोनवानी] सोने का। सुनहला। उ०—राखा आनि पाट सोनवानी। विरह वियोगिनी बैठी रानी।—जायसी (शब्द०)।

**सोनह**—सज्ञा पु० [सं०] लशुन। लहसुन (को०)।

**सोनहटा**Ⓖ‡—सज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण, हिं० सोन + हाट] सोनारो का बाजार। स्वर्ण हाट। सराफा। उ०—प्रचूर पौर जनपद सम्हार सम्हीन, धनहटा, सोनहटा, पनहटा, पक्वानहटा, मछहटा करेआ सुखरव कथा कहते।—कीर्ति०, पृ० ३०।

**सोनहटिया**‡—सज्ञा स्त्री० [स० श्वान या शुन + हाट (=हटिया)] वह बस्ती जहाँ श्वान हो। चर्मकार, मेहतर, डोम आदि का मुहल्ला या निवास। (बोल०)।

**सोनहला**[१]—सज्ञा पुं० [हिं० सोना + हला (प्रत्य०)] भटकटैया का काँटा। (कहार)।

विशेष—पालकी ले जाते है। उस समय जब कही रास्ते मे भटकटैया के काँटे पडते हैं, तब उन्हे बचाने के लिये आगे के कहार 'सोनहुला' या 'सोनहला है' और 'सोदर' पीछे के कहारो को सचेत करते है। ये काँटे पीले होते है। इसी परिणाम से

**सोनहला**[२]—वि० [वि० स्त्री० सो[illegible] दे० सुनहला'। उ०—उसपर वहाँ के राजा के पैर की जो सोनहली छाप थी।—भारतेदु ग्र०, भा० ३, पृ० २८३।

**सोनहा**—सज्ञा पुं० [स० शुन (=कुत्ता)] १ कुत्ते की जाति का एक छोटा जगली जानवर। २—दो

विशेष—यह जानवर झुड मे रहता है और बडा हिंसक होता है। यह शेर को भी मार डालता है। कहते हैं, जहाँ यह रहता है, वहाँ शेर नही रहते। इसे 'कोगी' भी कहते

हैं। उ०—डाइन डारे सोनहा डोरे सिंह रहे वन घेरे। पाँच कुटुंब मिलि जूझन लागे बाजन बाज घनेरे।—कबीर (शब्द०)। २ शिकारी श्वान। कुत्ता। उ०—किए डोर सब सोनहा ताजी। भल भल गुरजी और सिराजी।—चित्रा०, पृ० २३।

सोनहार⑤—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का समुद्री पक्षी। उ०—और सोनहार सोन कै डाँडी। सारदूल रूपे के काँडी।—जायसी (शब्द०)।

सोना[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण, स्वर्ण, प्रा० सोण्ण (=सोण)] १ सुंदर उज्वल पीले रंग की एक प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु जिसके सिक्के और गहने आदि बनते हैं।

विशेष—यह खानों में या स्लेट अथवा पहाड़ों की दरारों में पाया जाता है। यह प्रायः ककड़ के रूप में मिलता है। ककड़ को चूर कर और पानी का तरारा देकर धूल, मिट्टी आदि बहा दी जाती है और सोना अलग कर लिया जाता है। कभी कभी सोना विशुद्ध अवस्था में भी मिल जाता है। पर प्रायः लोहे, तांबे तथा अन्य धातुओं में मिली हुई अवस्था में ही पाया जाता है। यह सीसे के समान नरम होता है पर चाँदी, तांबे आदि के मेल से यह कड़ा हो जाता है। यह बहुत वजनी होता है। भारीपन में प्लैटिनम और इरिडियम धातुओं के बाद इसी का स्थान है। यह पीटकर इतना पतला किया जा सकता है कि पारदर्शक हो जाता है। इस प्रकार का इसका बहुत पतला तार भी बनाया जा सकता है। सोने पर जंग नहीं लगता। इसपर कोई खास तेजाब असर नहीं करता। हाँ, गंधक और शोरे के तेजाब में आँच देने से यह गल जाता है। हिंदुस्तान में प्रायः सभी प्रांतों में सोना पाया जाता है, पर मैसूर और हैदराबाद की खानों में अधिक मिलता है। पिछली शताब्दी में कैलिफोर्निया और आस्ट्रेलिया में भी इसकी बहुत बड़ी खानें मिली हैं।

सोना सब धातुओं में श्रेष्ठ माना गया है। हिंदू इसे बहुत पवित्र और लक्ष्मी का रूप मानते हैं। कमर और पैर में सोना पहनने का निषेध है। सोना कितनी ही रसौषधों में भी पड़ता है। वैद्यक में यह त्रिदोषनाशक तथा बलवीर्य, स्मरण शक्ति और कांतिवर्धक माना गया है।

पर्या०—स्वर्ण। कनक। काचन। हेम। गांगेय। हिरण्य। तपनीय। चांपेय। शातकुंभ। हाटक। जातरूप। रुक्म। महारजत। भर्म्म। गैरिक। लोहवर। चामीकर। कार्तस्वर। मनोहर। तेज। दीप्तक। कर्व्वूर। कर्च्चूर। अग्निवीर्य। मुख्यधातु। भद्रधातु। भद्र। उद्धसारुक। शातकौंभ। भूरि। कल्याण। स्पर्शमणि। प्रभव। अग्नि। अग्निशिख। भास्कर। मांगल्य। आग्नेय। भरु। चंद्र। उज्वल। भृंगार। कलधौत। पिंजान। जांबव। अग्निबीज। द्रविण। अग्निभ। दीप्त। सौमजक। जांबुनद। जांबूनद। निष्क। रुग्म। अष्टापद। अर्पिजर।

मुहा०—सोना कसना=परखने के लिये कसौटी पर सोने की लकीर खींचना। सोना कसवाना या कसाना=कसौटी पर सोने की जाँच कराना। परखवाना। सोने का कौर खिलाना=अत्यधिक सुखी रखना। उ०—तुम रहते ही हो तो कौन सोने का कौर खिला देते हो।—मान०, भा० ५, पृ० १६७। सोने का घर मिट्टी होना=लाख का खाक होना। सारा वैभव नष्ट होना। सोने का पानी=किसी धातु पर चढ़ाया हुआ सोने का आब। मुलम्मा। सोने का महल उठाना=(१) अत्यंत धनी होना। (२) किसी कार्य में अत्यधिक व्यय करना। सोने का होना=बहुमूल्य होना। गुणी होना। उ०—उनके यहाँ ब्याह करने में ही हमारी पत रहेगी, देवकीनंदन सोने का भी हो तो, हमारे काम का नहीं है।—ठेठ०, पृ० ११। सोने की चिड़िया=वह जिससे सदा लाभ ही लाभ होता रहे। मालदार आदमी। उ०—अम्मा दस दिन में झख मार के आप ही मिलेंगी। सोने की चिड़िया को कोई छोड़ता है भला।—सैर०, पृ० २८। सोने की चिड़िया हाथ से उड़ जाना या निकल जाना=किसी मालदार आदमी का चंगुल में न आना। सोने की चिड़िया हाथ आना या लगना=(१) कोई ईप्सित वस्तु अकस्मात् प्राप्त होना। उ०—सुब्हान अल्ला सुब्हान अल्ला! सोने की चिड़िया हाथ आई। कहा, हुजूर खुदा के लिये चिक उठवा दें।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ६८। (२) जिससे अत्यधिक लाभ हो उसका एकाएक मिल जाना। सोने की तौल तौलना=साधारण वस्तु भी सोने की तरह तौलना कि बाल बराबर भी फर्क न रहे। सोने के मोल होना=अत्यधिक मूल्य का होना। बहुमूल्य होना। सोने में घुन लगना=असंभव बात का होना। अनहोनी होना। उ०—काहू चीटी लगे पाँख, काहू यम मारे काख, सुनो है न देख्यो घुन लागो है कनक को।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। सोने में सुगंध=किसी बहुत बढ़िया चीज में और अधिक विशेषता होना। सोने में सुहागा=रंग में निखार आना आना। और भी उत्कृष्ट होना। सोने से लदे रहना=(१) अत्यधिक स्वर्णभूषण पहनना। (२) ऐश्वर्य का उपभोग करना।

क्रि० प्र०—गलना।—गलाना। तपना।—तपाना।

२ अत्यंत बहुमूल्य वस्तु। बहुत महँगी चीज। ३ अत्यंत सुंदर वस्तु। उज्वल या कांतिमान् पदार्थ। जैसे,—शरीर सोना हो जाना। ४ एक प्रकार का हंस। राजहंस।

सोना[2]—संज्ञा पुं० मझोले कद का एक वृक्ष जो बरार और दारजिलिंग की तराइयों में होता है। कोलपार।

विशेष—इस वृक्ष में कलियाँ लगती हैं जिनका मुरब्बा बनता है। इसकी लकड़ी मजबूत होती है और इमारत तथा खेती के औजार बनाने के काम में आती है। चीरने के समय लकड़ी का रंग अंदर से गुलाबी निकलता है, पर हवा लगने से वह काला हो जाता है।

सोना[3]—संज्ञा स्त्री० प्रायः एक हाथ लंबी एक प्रकार की मछली जो भारत और बरमा की नदियों में पाई जाती है।

सोना[4]—क्रि० अ० [सं० शयन] १. उस अवस्था में होना जिसमें चेतन क्रियाएँ रुक जाती हैं और मन तथा मस्तिष्क दोनों विश्राम

करते हैं। नीद लेना। शयन करना। आँख लगना। २ लेटना। आराम करना।

संयो० क्रि०—जाना।

मुहा०—सोते जागते=हर घडी। हर समय।

२ शरीर के किसी अग का सुन्न होना। जैसे,—मेरे पैर सो गए। उ०—आगे किसू के क्या करे दस्ते तमादराज। वह हाथ सो गया है सिर्हाने धरे धरे।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० १६३।

विशेष—यह क्रिया प्राय एक अग को एक ही अवस्था मे कुछ अधिक समय तक रखने पर हो जाती है।

**सोनागेरू**—सज्ञा पुं० [हिं० सोना+गेरू] गेरू का एक भेद जो जो मामूली गेरु से अधिक लाल और मुलायम होता है।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह स्निग्ध, मधुर, कसैला, नैनो को हितकर, शीतल, बलकारक, व्रणशोधक, विशद, कातिजनक तथा दाह, पित्त, कफ, रक्तविकार ज्वर, विष, विस्फोटक, वमन, अग्निदग्धव्रण, ववासीर और रक्तपित्त को नाश करनेवाला है।

पर्या०—सुवर्णगैरिक। सुरक्त। स्वर्णधातु। शिलाधातु। सध्याग्र। वभ्रु धातु। सुरक्तक।

**सोनाचाँदी**—सज्ञा पुं० [हिं० सोना+चाँदी] धन दौलत। माल सपत्ति।

**सोनापाठा**—सज्ञा पुं० [स० शोण+हिं० पाठा] १ एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष जिसकी छाल, बीज और फल औषधि के काम आते है।

विशेष—यह वृक्ष भारत और लका मे सर्वत्र होता है। इसकी छाल चौथाई इच तक मोटी, हरापन लिए पीले रग की, चिकनी, हलकी और मुलायम होती है। काटने से इसमे से हरा रस निकलता है। लकडी पीलापन लिए सफेद रग की हलकी और खोखली होती है तथा जलाने के सिवा और किसी काम मे नही आती। पेड की टहनियो पर तीन से पाँच फुट तक लबी झुकी हुई सीके होती है जो भीतर से पोली होती है। प्रत्येक प्रधान सीक पर पाँच पाँच गाँठें होती हैं और उन गाँठो के दोनो ओर एक एक और सीक होती है। पहली सीक की चार गाँठें सीको सहित क्रम क्रम से छोटी रहती हैं। इनमे पहली गाँठ पर तीन जोडे पत्ते, दूसरी और तीसरी गाँठ पर एक एक जोडा और चौथी गाँठ पर तीन पत्ते लगे रहते हैं। दूसरी और तीसरी सींको पर भी इसी क्रम से पत्ते रहते है। चौथी गाँठवाली सीक पर पाँच पाँच पत्ते (दो जोडे और एक छोर पर) होते हैं। पाँचवी पर तीन पत्ते (एक जोडा और एक छोर पर) होते हैं। इसी प्रकार अत मे तीन पत्ते होते हैं। पत्ते करज के पत्ते के समान २॥ से ४॥ इच तक चौडे, लबोतरे और कुछ नुकीले होते हैं। फूल १–२ फुट लबी डडी पर २॥–३ इच लबोतरे और सिल-सिलेवार आते हैं। फूलो के भीतर का रग पीलापन लिए लाल और बाहर का रग नीलापन लिए लाल होता है। फूलो मे पाँच पखडियाँ और भीतर पीले रग के पाँच केसर होते हैं। फूल बहुधा गिर जाया करते है, इसलिये जितने फूल आते हैं, उतनी फलियाँ नही लगती। फलियाँ २–२॥ फुट लबी और ३–४ इच चौड़ी, चिपटी तथा तलवार की तरह कुछ मुडी हुई टेढी नोक-वाली होती हैं। इनके अदर भोजपत्र के समान तहदार पत्ते सटे रहते हैं और इन पत्तो के बीच मे छोटे, गोल और हलके बीज होते हैं। कलियाँ और कोमल फलियाँ प्राय कच्ची ही गिर जाया करती है। कार्तिक और अगहन के आरभ तक इसके वृक्ष पर फूल फल आते रहते है और शीतकाल के अत और वसत ऋतु मे फलियाँ पककर गिर जाती है और बीज हवा मे उड जाते हैं। इन बीजो के गिरने से वर्षा ऋतु मे पौधे उत्पन्न होते हैं।

वैद्यक के अनुसार यह कसैला, कटुवा, चरपरा, शीतल, रुक्ष, मल-रोधक, बलकारी, वीर्यवर्धक, जठराग्नि को दीपन करनेवाला तथा वात, पित्त, कफ, त्रिदोष, ज्वर, सन्निपात, अरुचि, आम-वात, कृमि रोग, वमन, खाँसी, अतिसार, तृषा, कोढ, श्वास और वस्ति रोग का नाश करनेवाला है। इसकी छाल, फल और बीज औषध के काम मे आते है, पर छाल का ही अधिक उपयोग होता है। इसका कच्चा फल कसैला, मधुर, हलका, हृदय और कठ को हितकारी, रुचिकर, पाचक, अग्निदीपक, गरम, कटु, क्षार तथा वात, गुल्म, कफ और ववासीर तथा कृमिरोग का नाश करनेवाला है।

पर्या०—श्योनाक। शुकनास। कट्वग। कटभर। मयूरजघ। अरलुक। प्रियजीवी। कुटन्नट।

२ इसी वृक्ष का एक और भेद जो सयुक्त प्रदेश (उत्तर प्रदेश), पश्चिमोत्तर प्रदेश, बबई, कर्नाटक, कारमडल के किनारे तथा बिहार मे अधिकता से होता है और राजपूताने मे भी कही कही पाया जाता है।

विशेष—यह पेड ६० से ८० फुट तक ऊँचा होता है और पत्तेवाली सीक प्राय ८ इच से १ फुट तक लबी होती है, और कही कही सीको की लबाई २–३ फुट तक होती है। सीको पर आठ से चौदह जोडे समवर्ती पत्ते होते हैं। इसके फूल बडे और कुछ पीले होते हैं। फलियाँ ताँबे के रग की, दो इच लबी तथा चौथाई इच चौडी, गोल, दोनो ओर नुकीली और जड की ओर ऐंठी सी रहती हैं। पेड की छाल सफेद रग की होती है और गुण भी सोनापाठा—'१' के समान ही है।

पर्या०—टुटुक। दीर्घवृत। टिटुक। कीरनाशन। पूतिवृक्ष। पूतिनारा। भूतिपुष्पा। मुनिद्रुम, आदि।

**सोनापेट**—सज्ञा पुं० [हिं० सोना+पेट (=गर्भ) सोने की खान।

**सोनाफूल**—सज्ञा पुं० [हिं० सोना+फूल] एक प्रकार की झाडी जो आसाम और खासिया पहाडियो पर होती है। गुलाबजम।

विशेष—इस झाडी की पत्तियो से एक प्रकार का भूरा रग निकलता है और इसकी छाल के रेशो से रस्सियाँ भी बनती हैं। इसे गुलाबजम भी कहते हैं।

**सोनामक्खी**—सज्ञा स्त्री० [स० स्वर्णमाक्षिक] १ एक खनिज पदार्थ जो भारत मे कई स्थानो मे पाया जाता है।

विशेष—आयुर्वेद मे इसकी गणना उपधातुओ मे है। इसमे सोने का कुछ अश और गुण वर्तमान रहने के कारण इसका नाम

स्वर्णमाक्षिक पडा है। सोने के अभाव मे औषधियो मे इसका उपयोग किया जाता है। सोने के सिवा अन्य धातुओ का समिश्रण रहने से इसमे और भी गुण आ गए हैं। उपधातु होने के कारण, यथोचित रीति से शोधन कर इसका व्यवहार करना चाहिए, अन्यथा यह मदाग्नि, बलहानि, विष्टम्भिता, नेत्ररोग, कोढ, गडमाला, क्षय, आध्मान, कृमि आदि अनेक रोग उत्पन्न करती है। शोधितावस्था मे यह वीर्यवर्धक, नेत्रो के लिये हितकर, स्वरशोधक, व्यवायी, कोढ, सूजन, प्रमेह, ववासीर, वस्ति, पाडुरोग, उदरव्याधि, विषविकार, कठरोग खुजली, क्षय, भ्रम, हुल्लास, मूर्छा, खाँसी, श्वास आदि रोगो का नाश करनेवाली मानी गई है।

पर्या०—स्वर्णमाक्षिक। माक्षिक। हेममाक्षिक। धातुमाक्षिक। स्वर्णवर्ण। स्वर्णाह्वय। पीतमाक्षिक। माक्षिकधातु। तापीज। मधुमाक्षिक। तीक्ष्ण। मधुधातु।

२ एक प्रकार का रेशम का कीडा।

**सोनामाखी**—सज्ञा स्त्री० [स० स्वर्णमाक्षिक] दे० 'सोनामक्खी'।

**सोनामुखी**—[स० स्वर्णमुखी] दे० 'स्वर्णपत्री'।

**सोनार**—सज्ञा पुं० [स० स्वर्णकार, प्रा० सोण्णार, सोणार] [स्त्री० सोनारिन] दे० 'सुनार'। उ०—कहाँ सोनार पास जेहि जाऊँ। देइ सोहाग करै एक ठाऊँ।—जायसी ग्र० (गुप्त) पृ० ८९।

**सोनारी**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोनार + ई (प्रत्य०)] सुनार का काम। सोने आदि के गहने बनाने का काम।

**सोनिजरद**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + फा० जर्द] दे० 'सोनजर्द'।

**सोनित**Ⓤ—सज्ञा पुं० [सं० शोणित] दे० 'शोणित' उ०—नव सोनित को प्यास तृपित राम सायक निकर।—मानस, ६।३२।

**सोनी**Ⓤ[१]—सज्ञा पुं० [हिं० सोना] सुनार। स्वर्णकार। उ०—(क) देव दिखावति कचन से तन औरन को मन तावै अगोनी। सुदरि साँचे मे दै भरि काढी सी आपने हाथ गढी विधि सोनी।—देव (शब्द०)। (ख) सुदर काढै सोधि करि सद-गुरु सोनी होइ। शिवसुवर्ण निर्मल करै टाँका रहै न कोइ।—सुदर० ग्र०, भा० २, पृ० ६७३।

**सोनी**[२]—सज्ञा पुं० [देश०] १ एक जातिविशेष का नाम। २ तुन की जाति का एक वृक्ष।

**सोनेइया**—सज्ञा पु० [देश०] वैश्यो की एक जाति।

**सोनैया**—सज्ञा स्त्री० [देश०] देवदाली। घघरवेल। बदाल। विशेष दे० 'देवदाली'।

**सोन्मद, सोन्माद**—वि० [स०] उन्मादयुक्त। पागल। विक्षिप्त [को०]।

**सोप**[१]—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की छपी हुई चादर।

**सोप**[२]—सज्ञा पुं० [अ०] साबुन।

**सोप**[३]—सज्ञा पुं० [अ० स्वाब] बुहारी। झाडू। (लश०)।

**सोपकरण**—वि० [स०] साधन या उपकरण से युक्त [को०]।

**सोपाकर**—सज्ञा पु० [स०] १ ब्याज सहित मूलधन। असल मै सूद। २ उपकृत व्यक्ति (को०)।

**सोपकार**[१]—वि० १ सहायताप्राप्त। उपकृत। २ लाभकर। लाभ देनेवाला। ३ उपकरण या साधन से युक्त। ४ सूद देनेवाला। जिससे सूद प्राप्त हो। सूद पर लगाया या दिया हुआ [को०]।

**सोपकार आधि**—सज्ञा स्त्री० [स०] वह धरोहर जो किसी फायदे के काम मे (जैसे रुपए का सूद पर दे दिया जाना, आदि) लगा दी गई हो।

**सोपचार**—वि० [सं०] आदर और समानपूर्वक व्यवहार करनेवाला [को०]।

**सोपत**Ⓤ—सज्ञा पुं० [सं० सूपपत्ति] सुबीता। सुपास। आराम का प्रबध। उ०—बन बन बागत बहुत दिनन ते कृश तनु ह्वैहैं प्यारे। करत रह्यो ह्वैहै को सोपत दूध बदन दोउ बारे।—रघुराज (शब्द०)।

क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।—बैठना।—बैठाना।—लगना। लगाना।

**सोपध**—वि० [स०] १ झूठ और कपट से भरा हुआ। २ उपात्य सहित। अतिम से पूर्ववाले वर्ण के साथ [को०]।

**सोपधान**—वि० [स०] १ गद्दा आदि से युक्त। सज्जित। २ उत्तम कोटि का [को०]।

**सोपधि**[१]—वि० [स०] कपटी। झूठा। छली।

**सोपधि**[२]—क्रि० वि० झूठा मूठा। छलयुक्त या कपटपूर्ण ढग से [को०]।

**सोपधि प्रदान**—सज्ञा पुं० [स०] ऋण लेनेवाले या धरोहर रखनेवाले से किसी बहाने से ऋण की रकम बिना दिए गिरवी की वस्तु वापस ले लेना।

**सोपधिशेष**—सज्ञा पु० [सं०] वह व्यक्ति जिसमे छल, कपट शेष हो। वह व्यक्ति जो निश्छल न हो [को०]।

**सोपप्लव**—वि० [स०] १ उपप्लव अर्थात् बाढ, उपद्रव आदि से युक्त। २ ग्रहण से युक्त [को०]।

**सोपाक**—सज्ञा पुं० [स०] १ वह व्यक्ति जो चाडाल पुरुष और पुक्कसी के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। चडाल। श्वपाक। २ काष्ठौषधि बेचनेवाला। वनौषधि बेचनेवाला।

**सोपाधि**—वि० [स०] १ परिणाम एव इयत्ता से युक्त। नाम और गुणयुक्त। सीमित। सगुण। सीमा या गुण विशिष्ट। उ०—व्यवहार पक्ष मे शकराचार्य ने जिस उपासनागम्य ब्रह्म का अवस्थान किया है वह सोपाधि या सगुण ब्रह्म है, अव्यक्त पारमार्थिक सत्ता नही।—चिंतामणि भा० २, पृ० ८०। २ कुछ विशिष्टता या खासियत रखनेवाला। ३ विशिष्ट। प्रधान। श्रेष्ठ (को०)।

**सोपाधिक**—वि० [स०] [वि० स्त्री० सोपाधिकी] दे० 'सोपाधि'। उ०—किंतु यह सब व्यापार सोपाधिक आकार ग्रहण करने पर ही सभव है।—सपूर्णा० अभि० ग्र०, पृ० ११२।

**सोपान**—सज्ञा पुं० [स०] १ सीढी। जीना। २ जैनो के अनुसार मोक्ष-प्राप्ति का उपाय।

यौ०—सोपानकूप = वह कुआँ जिसमे सीढियाँ बनी हैं। सोपानपथ, सोपानपथ, सोपानपद्धति, सोपानपरपरा = सीढियो का क्रम या सिलसिला। जीना। सोपानमार्ग = जीना। सोपानमाला = चक्करदार सीढियाँ, जो प्राय बुर्ज, मीनार आदि मे होती है।

**सोपानक**—सज्ञा पु० [स०] १ सोने के तार मे पिरोई हुई मोतियो की माला। २ दे० 'सोपान'।

यौ०—सोपानक पद्धति = सीढियो का क्रम, सिलसिला।

**सोपानिक**—वि० [स०] सोपान से युक्त। सीढियो से युक्त। उ०—सरयू तीर हेम सोपानित सब थल करहिं प्रकासा।—रघुराज (शब्द०)।

**सोपारी**‡—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुपारी] दे० 'सुपारी'।

**सोपाश्रय**¹—वि० [सं०] उपाश्रय या अवलब से युक्त।

**सोपाश्रय**²—सज्ञा पुं० योग का एक आसन [को०]।

**सोपासन**—वि० [सं०] १ उपासनायुक्त। २ जो पवित्र अग्नि से युक्त हो। होमाग्नियुत।

**सोपि, सोपी**—वि० [स० स + अपि, सोऽपि] १ वही। उ०—आकर चारि जीव जग अहही। कासी मरत परम पद लहही। सोपि राम महिमा मुनिराया। सिव उपदेश करत करि दाया।—तुलसी (शब्द०)। २ वह भी। उ०—सब ते परम मनोहर गोपी। नदनँदन के नेह मेह जिनि लोक लीक लोपी। हरि कुबजा के रगहि राचे तदपि तजी सोपी। तदपि न तजै भजै निसि वासर नैकहु न कोपी।—सूर (शब्द०)।

**सोफ**—सज्ञा पुं० [अ० सोफ] दावात मे डालनेवाला कपडा। उ०—मन ममिदानी साँच की स्याही, सुरति सोफ भरि डारी।—धरनी० वानी०, पृ० ३।

**सोफता**—सज्ञा पुं० [सं० सुविधा] १ एकात स्थान। निराली जगह। उ०—(क) इनका मन किसी और बात मे लगा हुआ है, तुम कडो की बात फिर कभी सोफते मे पूछ लेना।—श्रद्धाराम (शब्द०)। (ख) वह उसे सोफते मे ले गया। २ रोग आदि मे कुछ कमी होना।

**सोफा**—सज्ञा पु० [अ०] लबी, दो तीन व्यक्तियो के बैठने योग्य, प्राय गद्दीदार, कुरसी।

**सोफियाना**—वि० [अ० सूफी + फा० इयाना] (प्रत्य०)] १ सूफियो का। सूफी सबधी। २ जो देखने मे सादा पर बहुत भला लगे। जैसे,—सोफियाना कपडा, सोफियाना ढग।

विशेष—सूफी लोग प्राय बहुत सादे, पर सुदर ढग से रहते थे, इसी से इस शब्द का इस अर्थ मे व्यवहार होने लगा।

**सोफी**—सज्ञा पुं० [फा० सूफी] स्त्री० सोफनि, सोफिन] दे० 'सूफी'। उ०—दादू, सोइ जोगी सोइ जगमा, सोइ सोफी सोइ सेख। जोगिणि ह्वै जोगी गहे, सोफणि ह्वै करि सेख।—दादू० वानी, पृ० २३९।

**सोब**—सज्ञा पु० [देश०] दे० 'सोप'।

**सोबरन**—सज्ञा पुं० [स० सुवर्ण] दे० 'सुवर्ण'। उ०—उदित अँधेरी मे आज भृगु है, कि जिनमे आभा हे सोबरन की।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ८८९।

**सोबरि, सोबरी**†—सज्ञा स्त्री० [स० सूति + गृह] सूतिकागृह। सौरी। उ०—आवौ, आवौ, सासु मेरी आवौ, मेरी सोबरि के बीच चरुआ धरावौ।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ९१३।

**सोबरन, सोबर्न**†—सज्ञा पु० [सं० सुवर्ण, स्वर्ण] दे० 'सुवर्ण'।

**सोभ**¹—सज्ञा स्त्री० [स० शोभा] उ०—(क) अग अग आनँद उमगि उफनत बैनन माझ। सखी सोभ सब बसि भई मनो कि फूली साँझ।—पृ० रा०, १४।५५। उ०—अति सुदर शीतल सोभ बसै। जहँ रूप अनेकन लोभ लसै।—केशव (शब्द०)।

**सोभ**²—सज्ञा पुं० [सं०] गधर्वों के नगर का नाम।

**सोभन**—सज्ञा पुं०, वि० [स० शोभन] दे० 'शोभन'।

**सोभना**†—क्रि० अ० [स० शोभन] सोहना। शोभित होना। उ०—(क) सिंधु मे बडवाग्नि की जनु ज्वाल माल विराजई। पद्मरागनि सो किधौ दिवि धूरि पूरित सोभई।—केशव (शब्द०)। (ख) कुडल सुदर सोभिजै स्याम गात छवि दान। —केशव (शब्द०)।

**सोभनीक**—वि० [सं० शोभन] शोभायुक्त। सुदर। दे० 'शोभित'। उ०—और काहू रैति कै स्वरूप होइ सोभनीक, ताहू कौ तौ देखि करि निकट बुलाइए।—सुदर ग्र०, भा० २, पृ० ४८०।

**सोभर**—सज्ञा पुं० [सं० सूतिगृह ?] वह कोठरी या कमरा जिसमे स्त्रियाँ प्रसव करती है। सौरी। जच्चाखाना। सूतिकागार।

**सोभरि**—सज्ञा पु० [स०] एक वैदिक ऋषि।

**सोभाजन**—सज्ञा पुं० [सं० सोभाञ्जन] दे० 'शोभाजन'।

**सोभा**—सज्ञा स्त्री० [सं० शोभा, प्रा० सोभा] दे० 'शोभा'। उ०—(क) सब सोभा ससि सानि कै साँची इछिनि एक।—पृ० रा०, १४।५६। (ख) राधा दामिनि के सँग सोभा सरस्यो करै। —प्रेमघन०, भा० २, पृ० २०१।

**सोभाकारी**—वि० [सं० शोभाकर] जो देखने मे अच्छा हो। सुदर। बढिया। उ०—शीश पर धरे जटा मानौ रूप कियो त्रिपुरारि। तिलक ललित ललाट केसर बिंद सोभाकारि।—सूर (शब्द०)।

**सोभायमान**—वि० [स० शोभायमान] दे० 'शोभायमान'।

**सोभार**—वि० [सं० स (= सह) + हिं० + उभार] उभार के साथ। उभरा हुआ। उ०—मुक्त नभ वेणी मे सोभार, सुहाती रक्त पलाश समान।—गुजन, पृ० ४६।

**सोभित**—वि० [स० शोभित] दे० 'शोभित'।

**सोभिल**†—वि० [स० शोभिल, प्रा० सोहिल्ल] शोभायुक्त। शोभित। उ०—गूजत ग्राम सोभिल कुँआरि। तिहि हरत हरनि मनमत्थ रारि।—पृ० रा०, १४।९७।

**सोम**—सज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल की एक लता का नाम।

विशेष—इस लता का रस पीले रग का और मादक होता था और इसे प्राचीन वैदिक ऋषि पान करते थे। इसे पत्थर से कुचल

कर रस निकालते थे और वह रस किसी ऊनी कपडे मे छान लेते थे। यह रस यज्ञ मे देवताओ को चढाया जाता था और अग्नि मे इसकी आहुति भी दी जाती थी। इसमे दूध या मधु भी मिलाया जाता था। ऋक् सहिता के अनुसार इसका उत्पत्ति स्थान मूजवान पर्वत है, इसी लिये इसे 'मौजवत्' भी कहते थे। इसी सहिता के एक दूसरे सूक्त मे कहा गया है कि श्येन पक्षी ने इसे स्वर्ग से लाकर इद्र को दिया था। ऋग्वेद मे सोम की शक्ति और गुणो की बडी स्तुति है। यह यज्ञ की आत्मा और अमृत कहा गया है। देवताओ को यह परम प्रिय था। वेदो मे सोम का जो वर्णन आया है, उससे जान पडता है कि यह बहुत अधिक बलवर्धक, उत्साहवर्धक, पाचक और अनेक रोगो का नाशक था। वैदिक काल मे यह अमृत के समान बहुत ही दिव्य पेय समझा जाता था, और यह माना जाता था कि इसके पान से हृदय से सब प्रकार के पापो का नाश तथा सत्य और धर्मभाव की वृद्धि होती है। यह सब लताओ का पति और राजा कहा गया है। आर्यो की ईरानी शाखा मे भी इस लता के रस का बहुत प्रचार था। पर पीछे इस लता के पहचाननेवाले न रह गए। यहाँ तक कि आयुर्वेद के सुश्रुत आदि आचार्यों के समय मे भी इसके सबध मे कल्पना ही कल्पना रह गई जो सोम (चद्रमा) शब्द के आधार पर की गई। पारसी लोग भी आजकल जिस 'होम' का अपने कर्मकाड मे व्यवहार करते हैं, वह असली सोम नही है। वैद्यक मे सोमलता की गणना दिव्योपधियो मे है। यह परम रसायन मानी गई है और लिखा गया है कि इसके पद्रह पत्ते होते हैं जो शुक्लपक्ष मे—प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक—एक एक करके उत्पन्न होते है और फिर कृष्ण पक्ष मे—प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक—पद्रह दिनो मे एक एक करके वे सब पत्ते गिर जाते हैं। इस प्रकार अमावस्या को यह लता पत्रहीन हो जाती है।

पर्या०—सोमवल्ली। सोमा। क्षीरी। द्विजप्रिया। शशा। यज्ञश्रेष्ठा। धनुलता। सोमाह्वा। गुल्मवल्ली। यज्ञवल्ली। सोमक्षीरा। यज्ञाह्वा।

२ एक प्रकार की लता जो वैदिक काल के सोम से भिन्न है।

विशेष—यह दूसरी सोम लता दक्षिण की सूखी पथरीली जमीन मे होती है। इसका क्षुप झाडदार और गाँठदार तथा पत्रहीन होता है। इसकी शाखा राजहस के पर के समान मोटी और हरी होती है और दो गाँठो के बीच की शाखा ४ से ६ इच तक लबी होती है। इसके फूल ललाई लिए बहुत हलके रग के होते हैं। फलियाँ ४–५ इच लबी और तिहाई इच गोल होती हैं। बीज चिपटे और $\frac{1}{8}$ से $\frac{1}{6}$ इच तक लबे होते है।

३ वैदिक काल के एक प्राचीन देवता जिनकी ऋग्वेद मे बहुत स्तुति की गई है। इद्र और वरुण की भाँति इन्हे मानवी रूप नही दिया गया है।

विशेष—ये सूर्य के समान प्रकाशमान, बहुत अधिक वेगवान्, जेता, योद्धा और सबको सपत्ति, अन्न तथा गौ, बैल आदि देनेवाले माने जाते थे। ये इद्र के साथ उसी के रथ पर बैठकर लडाई मे जाते थे। कही कही ये इद्र के सारथी भी कहे गए है। आर्यों की ईरानी शाखा मे इनकी पूजा होती थी और आवस्ता मे इनका नाम 'हओम' या 'होम' आया है।

४ चद्रमा। ५ सोमवार। ६ सोमरस निकालने का दिन। ७ कुबेर। ८ यम। ९ वायु। १० अमृत। ११ जल। १२. सोमयज्ञ। १३ एक वानर का नाम। १४ एक पर्वत का नाम। १५ एक प्रकार की ओषधि। १६ स्वर्ग। आकाश। १७ अष्ट वसुओ मे से एक। १८ पितरो का एक वर्ग। १९ माँड। २० काँजी। २१ हनुमत के अनुसार मालकोश राग के एक पुत्र का नाम। (सगीत)। २२ विवाहित पति। —सत्यार्थप्रकाश। २३ एक बहुत बडा ऊँचा पेड।

विशेष—इस पेड की लकडी अदर से बहुत मजबूत और चिकनी निकलती है। चीरने के बाद इसका रग लाल हो जाता है। यह प्राय इमारत के काम मे आती है। आसाम मे इसके पत्तो पर मूँगा रेशम के कीडे पाले जाते हैं।

२४ एक प्रकार का स्त्रीरोग। सोमरोग। २५ यज्ञद्रव्य। यज्ञ की सामग्री। २६ सुग्रीव (को०)। २७ (पदात मे) श्रेष्ठ। उत्कृष्ट। प्रधान। जैसे, नृसोम।

**सोम**[1]—सज्ञा पुं० [स० सोमन्] १ वह जो सोमरस चुआता या बनाता हो। २ सोमयज्ञ करनेवाला। ३ चद्रमा।

**सोमक**—सज्ञा पु० [सं०] १ एक ऋषि का नाम। २ एक राजा का नाम। ३ भागवत के अनुसार कृष्ण के एक पुत्र का नाम। ४ द्रुपद वश या इस वश का कोई राजा। ५ स्त्रियो का सोम नामक रोग। ६ एक देश या जाति। ७ सहदेव के एक पुत्र का नाम।

**सोमकन्या**—सज्ञा स्त्री० [सं०] चद्र या सोम की पुत्री [को०]।

**सोमकर**—सज्ञा पु० [स० सोम+कर] चद्रमा की किरण। उ०—मधुर प्रिया घर सोमकर माखन दाख समान। बालक बाते तोतरी कवि कुल उक्ति प्रमान।—(शब्द०)।

**सोमकर्म**—सज्ञा पु० [सं० सोमकर्मन्] सोम प्रस्तुत करने की किया। सोम रस तैयार करना।

**सोमकलश**—सज्ञा पुं० [स०] वह कलश जो सोमयुक्त हो। सोम का घडा [को०]।

**सोमकल्प**—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार २१वें कल्प का नाम।

**सोमकात**[1]—सज्ञा पुं० [स० सोमकान्त] चद्रकात मणि।

**सोमकात**[2]—वि० १ चद्रमा के समान प्रिय या सुदर। २ जिसे चद्रमा प्रिय हो।

**सोमकाम**[1]—वि० [स०] सोमपान करने का इच्छुक। सोमकामी।

**सोमकाम**[2]—सज्ञा पुं० सोमपान करने की इच्छा।

**सोमकामी**—वि०, सज्ञा पुं० [सं० सोमकामिन्] दे० 'सोमकाम' [को०]।

**सोमकीर्ति**—सज्ञा पु० [सं०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

**सोमकुल्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] मार्कंडेय पुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

**सोमकेश्वर**—सज्ञा पु० [स०] १ वामन पुराण के अनुसार एक राजर्षि का नाम जो भरद्वाज के शिष्य थे। २ सोमक जाति या देश का राजा।

**सोमक्रतवीय**—सज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम।

**सोमक्रतु**—सज्ञा पुं० [स०] सोमयज्ञ।

**सोमक्रयण**—सज्ञा पुं० [स०] सोम के मूल्य पर कार्य करनेवाला [को०]।

**सोमक्रयणी**—सज्ञा स्त्री० [स०] सोममूल्य के रूप मे प्राप्त गो।

**सोमक्षय**—सज्ञा पु० [स०] अमावस्या तिथि, जिसमे चद्रमा के दर्शन नही होते।

**सोमक्षीरा**—सज्ञा स्त्री० [स०] सोमवल्ली। सोमराजी। वकुची।

**सोमक्षीरी**—सज्ञा स्त्री० [स०] वकुची। सोमवल्ली।

**सोमखडा**—सज्ञा स्त्री० [स० सोमखण्डा] वकुची। सोमवल्ली।

**सोमखड्डक**—सज्ञा पुं० [स०] नेपाल के एक प्रकार के शैव साधु।

**सोमगधक**—सज्ञा पुं० [स० सोमगन्धक] रक्त पद्म। लाल कमल।

**सोमगति**Ⓤ†—वि० [अ० शूम, हिं० सूम] सूम का आचरण करनेवाला। कृपण। उ०—अजा कठ कुच पै नही क्या पीवै दुहि ग्वाल। ज्यो रज्जव सिख सोमगति गुरु भेपा वेहाल।—रज्जव० वानी, पृ० १४।

**सोमगर्भ**—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का एक नाम।

**सोमगा**—सज्ञा स्त्री० [स०] वकुची। सोमराजी। सोमवल्ली।

**सोमगिरि**—सज्ञा पु० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक पर्वत का नाम। २ मेरुज्योति। ३ एक आचार्य का नाम।

**सोमगृष्टिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] पेठा। कुष्माड लता।

**सोमगोपा** सज्ञा पुं० [स०] अग्नि।

**सोमग्रह**—सज्ञा पु० [स०] १ चद्रमा का ग्रहण। २ घोडो का एक ग्रह जिससे ग्रस्त होने पर वे काँपा करते हैं। ३ सोमपात्र। सोम रस का पात्र (को०)।

**सोमग्रहण**—सज्ञा पुं० [स०] १ चद्रमा का ग्रहण। चद्रग्रहण। २ वह जो सोमरस को ग्रहण या धारण करे (को०)।

**सोमघृत**—सज्ञा पुं० [स०] स्त्रीरोगो की एक औषध।

विशेष—इसके वनाने की विधि इस प्रकार है—सफेद सरसो, वच, ब्राह्मी, शखाहुली, पुनर्नवा, दूधी (क्षीर काकोली) खिरैटी, कुटकी, खभारी के फल (जरिश्क), फालसा, दाख, अनतमूल, काला अनतमूल, हलदी, पाठा, देवदारु, दालचीनी, मुलैठी, मजीठ, त्रिफला, फूल प्रियगु, अडूसे के फूल, हुरहुर, सोचर नमक और गेरू ये सव मिलाकर एक सेर घृतपाक विधि के अनुसार चार सेर गौ के घी मे पाक करना चाहिए। गर्भवती स्त्री को दूसरे महीने से छह महीने तक इसका सेवन कराया जाता है। इससे गर्भ और योनि के समस्त दोपो का निवारण होता है, रजवीर्य शुद्ध होता है और स्त्री वलिष्ठ तथा सुदर सतान उत्पन्न करती है। पुरुषो को भी दूषित वीर्य की शुद्धि के लिये यह दिया जा सकता है।

**सोमचमस**—सज्ञा पु० [स०] सोम पान करने का पात्र।

**सोमज**[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ सोम का पुत्र, वुध ग्रह। २ दूध।

**सोमज**[2]—वि० चद्रमा से उत्पन्न।

**सोमजाजी**Ⓤ—सज्ञा पुं० [सं० सोमयाजिन्] दे० 'सोमयाजी'। उ०—व्याध अपराध की साध राखी कौन? पिंगला कौन मति भक्ति भेई। कौन धौ सोमजाजी अजामिल अधम? कौन गजराज धौ वाजपेई।—तुलसी (शब्द०)।

**सोमतीर्थ**—सज्ञा पुं० [स०] एक तीर्थ का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है। इसे प्रभास क्षेत्र भी कहते है।

**सोमदर्शन**—सज्ञा पुं० [स०] एक यक्ष का नाम। (बौद्ध)।

**सोमदा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ रामायण के अनुसार एक गधर्वी का नाम। २ गधपलाशी। कपूरकचरी।

**सोमदिन**—सज्ञा पुं० [स० सोम+दिन] सोमवार। चद्रवार। उ०—रस गोरस खेती सकल विप्र काज सुभ साज। राम अनुग्रह सोम दिन प्रमुदित प्रजा सुराज।—तुलसी (शब्द०)।

**सोमदेव**—सज्ञा पुं० [सं०] १ सोम देवता। २ चद्रमा देवता। ३ कथासरित्सागर के रचयिता का नाम जो काश्मीर मे ११वी शताब्दी मे हुए थे।

**सोमदेवत**—वि० [स०] जिसके देवता सोम हो।

**सोमदेवत्य**—वि० [सं०] दे० 'सोमदेवत'।

**सोमदैवत**—सज्ञा पुं० [स०] मृगशिरा नक्षत्र।

**सौमदैवत्य**—वि० [स०] दे० 'सोमदेवत'।

**सोमधान**—वि० [सं०] जिसमे सोम हो। सोमयुक्त।

**सोमधारा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आकाश। आसमान। २ स्वर्ग।

**सोमधेय**—सज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद और जाति।

**सोमनदी**—सज्ञा पुं० [स० सोमनन्दिन्] १. महादेव के एक अनुचर का नाम। २ एक प्राचीन वैयाकरण का नाम।

**सोमनदीश्वर**—सज्ञा पुं० [स० सोमनन्दीश्वर] शिव जी के एक लिंग का नाम।

**सोमन**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० सौमन] एक प्रकार का अस्त्र। उ०—तथा पिशाच अस्त्र अरि मोहन लेहु राज दुलहेटे। तामस सोमन लेहु वार बहु शत्रुन को दरभेटे।—रघुराज (शब्द०)।

**सोमनस**Ⓤ—सज्ञा पुं० [सं० सौमनस्य] दे० 'सौमनस्य'। उ०—पारिभाद्र सोमनस अरु अविज्ञात सुरवर्ष। रमणक अप्याजन सहित देउ सुरोवन हर्ष।—केशव (शब्द०)।

**सोमनाथ**—सज्ञा पुं० [सं०] १ प्रसिद्ध द्वादश ज्योतिर्लिंगो मे से एक। २ काठियावाड के पश्चिम तट पर स्थित एक प्राचीन नगर जहाँ उक्त ज्योतिर्लिंग का मदिर है।

विशेष—इतिहासज्ञो के अनुसार इस मदिर के विपुल धन, रत्न की प्रसिद्धि सुनकर सन् १०२४ ई० मे महमूद गजनवी ने इस-

पर चढाई की और यहाँ से करोडों की सपत्ति उसके हाथ लगी। मूर्ति तोडने पर उसमे से भी बहुमूल्य हीरे पन्ने आदि रत्न निकले थे। आस पास के लोगो ने महमूद के काम मे बाधा दी थी, पर वे सफल नही हुए। अनतर वह देवशर्मा नामक एक ब्राह्मण को वहाँ का शासक नियुक्त कर गजनी लौट गया। चौलुक्यराज दुर्लभराज ने उसमे सोमनाथ का उद्धार किया। इसके बाद राठौरो ने उसपर अधिकार जमाया। पर सन् १३०० मे यह फिर मुसलमानो के अधिकार मे आ गया। सन् १९४८ के पहले तक यह जूनागढ के नवाब वश के शासनाधीन रहा। इसे सोमनाथ पट्टन या सोमनाथ पत्तन भी कहते हैं। सन् १९४८ मे देश की स्वतत्रता घोषित होने पर विभिन्न देशी राज्यो की तरह यह भी भारत सघ मे सम्मिलित कर लिया गया।

**सोमनाथरस**—सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक मे एक रसौषध जिसके सेवन से प्रमेह की अनेक प्रकार की व्याधियाँ दूर होती हैं।

**विशेष**—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—फरहद (पारिभद्र) के रस मे शोधा हुआ पारा दो तोले और मूसाकानी के रस मे शोधी हुई गधक दो तोले, दोनो की कज्जली कर उसमे आठ तोले लोहा मिलाकर घीकुआर के रस मे घोटते हैं। फिर अभ्रक, वग, खपरिया, चाँदी, सोनामक्खी तथा सोना एक एक तोला मिलाकर घीकुआर के रस मे भावना देते है। इसकी दो दो रत्ती की गोली बनाई जाती है जो शहद के साथ खाई जाती है। इसके सेवन से सब प्रकार के प्रमेह और सोम-रोग का निवारण होता है।

**सोमनेत्र**—वि० [स०] १ सोम जिसका नेता या रक्षक हो। २ सोम के समान नेत्रोवाला।

**सोमप**[1]—वि० [सं०] १ जिसने यज्ञ मे सोमरस का पान किया हो। २. सोमरस पीनेवाला। सोमपायी। सोमपा।

**सोमप**[2]—सज्ञा पुं० १ सोमयज्ञ करनेवाला। २ विश्वेदेवा मे से एक का नाम। ३ स्कद के एक पारिषद का नाम। ४ हरिवश के अनुसार एक असुर का नाम। ५ एक ऋषिवश का नाम। ६ पितरो की एक श्रेणी। ७ बृहत्सहिता के अनुसार एक जनपद का नाम।

**सोमपति**—सज्ञा पुं० [सं०] सोम के स्वामी इद्र का एक नाम।

**सोमपत्र**—सज्ञा पुं० [स०] कुश जाति की एक घास। डाभ। दर्भ।

**सोमपद**—सज्ञा पुं० [सं०] १ हरिवश के अनुसार एक लोक का नाम। २ एक तीर्थ का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

**सोमपरिश्रयण**—सज्ञा पुं० [सं०] सोम निचोडने का कपडा। वह वस्त्र जिससे सोम निचोडते हैं [को०]।

**सोमपर्याणहन**—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सोमपरिश्रयण'।

**सोमपर्व**—सज्ञा पुं० [स० सोमपर्वन्] सोम उत्सव का काल। सोमपान करने का उत्सव या पुण्यकाल।

**सोमपा**[1]—वि० [सं०] १ जिसने यज्ञ मे सोमपान किया हो। २ सोम-पान करनेवाला। सोमपायी।

**सोमपा**[2]—सज्ञा पुं० १ सोमयज्ञ करनेवाला। २ पितरो की, विशेषकर ब्राह्मणो के पितृपुरुषो की एक श्रेणी। ३ ब्राह्मण।

**सोमपात्र**—सज्ञा पुं० [स०] १ सोम रखने का बरतन। २ सोम पीने का बरतन।

**सोमपान**—सज्ञा पु० [सं०] सोम पीने की क्रिया। सोम पीना।

**सोमपायी**—वि० [स० सोमपायिन्] [वि० स्त्री० सोमपायिनी] सोम पीनेवाला। सोमपान करनेवाला।

**सोमपाल**—सज्ञा पु० [स०] १ सोम का रक्षक। २ गधर्व, जो सोम की रक्षा करनेवाले माने गए हैं।

**सोमपावन**—वि० [स०] सोमपान करनेवाला। जो सोमपान करता हो।

**सोमपिती**—सज्ञा स्त्री० [स० सोम + पात्री] रगडा हुआ चदन रखने का बरतन।

**सोमपीति**—सज्ञा स्त्री० [स०] १. सोमपान। २ सोमयज्ञ।

**सोमपीती**—सज्ञा पु० [स० सोमपीतिन्] सोमपान करनेवाला। सोम पीनेवाला।

**सोमपीथ**—सज्ञा पुं० [स०] सोमपान। सोम पीने की क्रिया।

**सोमपीथी**—वि० [स० सोमपीथिन्] सोमपान करनेवाला। सोमपायी।

**सोमपुत्र**—सज्ञा पु० [सं०] सोम या चद्रमा के पुत्र। बुध।

**सोमपुर**—सज्ञा पु० [स०] १ सोम का नगर। २ पाटलिपुत्र का एक नाम [को०]।

**सोमपुरुष**—सज्ञा पुं० [स०] १ सोम का रक्षक। २ सोम का अनुचर या दास।

**सोमपृष्ठ**—वि० [सं०] (पर्वत) जिस पर सोम हो।

**सोमपेय**—सज्ञा पु० [स०] १ एक यज्ञ जिसमे सोमपान किया जाता था। २ सोमपान। सोम पीने की क्रिया।

**सोमप्रदोष**—सज्ञा पु० [स०] सोमवार को किया जानेवाला एक व्रत। सोमव्रत।

**विशेष**—इस व्रत मे दिन भर उपवास करके सध्या को शिव जी की पूजा कर भोजन किया जाता है। स्कदपुराण मे लिखा है कि यह व्रत मनस्कामना पूर्ण करनेवाला है। आजकल लोग प्राय श्रावण के सोमवारो को ही यह व्रत करते है।

**सोमप्रभ**—वि० [सं०] सोम या चद्रमा के समान प्रभावाला। कातिवान्।

**सोमप्रवाक**—सज्ञा पु० [स०] सोमयज्ञ मे घोषणा करनेवाला।

**सोमबधु**—सज्ञा पुं० [स० सोमबन्धु] १ कुमुद। २ सूर्य। ३ बुध।

**सोमबसी**—सज्ञा पु० [स० सोमवशीय] दे० 'सोमवशीय'। उ०—परी भीर सोमेस सोमवसी सहाय भय। मार मार उचरत सेन चतुरग हयग्गय।—पृ० रा०, १।६५६।

**सोमबेल**—सज्ञा स्त्री० [स० सोम + हिं० बेल] गुलचाँदनी या चाँदनी का पौधा।

**सोमभक्ष**—सज्ञा पुं० [स०] सोम का पीना। सोमपान।

**सोमभवा**—सज्ञा स्त्री० [स०] नर्मदा नदी का एक नाम।

**सोमभू[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] १ चद्रमा के पुत्र बुध। २ चौथे कृष्ण वासुदेव का नाम। (जैन)।

**सोमभू[2]**—वि० १ सोम से उत्पन्न। २ चद्रवशीय।

**सोमभृत**—वि० [सं०] सोम लानेवाला।

**सोमभोजन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ गरुड के एक पुत्र का नाम। २ सोमपान।

**सोममख**—संज्ञा पुं० [सं०] सोमयज्ञ।

**सोममद**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोम का नशा। २ सोम का रस जिसके पीने से नशा होता है।

**सोमयज्ञ**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सोमयाग'।

**सोमयाग**—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमे सोमरस पान किया जाता था।

**सोमयाजी**—संज्ञा पुं० [सं० सोमयाजिन्] वह जो सोमयाग करता हो। सोमयाग करनेवाला।

**सोमयोगी**—वि० [सं० सोमयोगिन्] जिसमे सोम या चद्र का योग हो। चद्रमा के योगवाला।

**सोमयोनि**—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवता। २ ब्राह्मण। ३ पीत चदन। हरिचदन।

**सोमरक्ष**—वि० [सं०] सोम का रक्षक।

**सोमरक्षी**—वि० [सं० सोमरक्षिन्] दे० 'सोमरक्ष'।

**सोमरस**—संज्ञा पुं० [सं०] सोमलता का रस। विशेष दे० 'सोम'।

यौ०—सोमरसोद्भव = दुग्ध। दूध।

**सोमरा[1]**—संज्ञा पुं० [देश०] १. जुते हुए खेत का दुबारा जोता जाना। दो चरस। २ समचतुर्भुज खेत का चौडाई मे जोता जाना।

**सोमराग**—संज्ञा पुं० [सं०] सगीत मे एक प्रकार का राग।

**सोमराज**—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

**सोमराजसुत**—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा का पुत्र बुध।

**सोमराजिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सोमराजी'।

**सोमराजी[1]**—संज्ञा पुं० [सं० सोमराजिन्] बाकुची। बकुची। विशेष दे० 'बकुची'।

**सोमराजी[2]**—संज्ञा स्त्री० १ बकुची। २ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे छह वर्ण होते हैं। यह दो यगण का वृत्त है। इसे शखनारी भी कहते हैं। उ०—चमू बाल देखो सुरगी सुभेखो। धरे याहि आजी। कहैं सोमराजी।—छद प्रभाकर (शब्द०)।

**सोमराजी तैल**—संज्ञा पुं० [सं०] कुष्ठादि चर्मरोगो की एक तैलौषध।

विशेष—इस औषध के बनाने की विधि इस प्रकार है—बकुची का काढा, हलदी, दारुहलदी, सफेद सरसो, कुट, करज, पँवार के बीज, अमलतास के पत्ते, ये सब चीजे एक सेर लेकर चार सेर सरसो के तेल और सोलह सेर पानी मे पकाते है। इस तेल के लगाने से अठारहो प्रकार के कोढ, नासूर, दुष्ट व्रण, नीलिका व्यग, फुसी, गभीरसज्ञक वातरक्त, कडु, कच्छु, दाद और खाज का निवारण होता है। इसका एक और भेद होता है जो महासोमराजी तैल कहलाता है। यह कुष्ठ रोग के लिये परम उपकारी माना गया है। इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—चित्रक, कलियारी, सोंठ, कुट, हलदी, करज, हरताल, मैनशिल, विष्णुक्रांता, आक, कनेर, छतिवन, गाय का गोबर, खैर, नीम के पत्ते, मिर्च, दारुहलदी ये सब चीजें दो दो तोले लेकर इनका काढा कर १२॥ सेर बकुची के काढे और ६४ सेर पानी और १६ सेर गोमूत्र मे पकाते हैं।

**सोमराज्य**—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रलोक।

**सोमराष्ट्र**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद का नाम।

**सोमरोग**—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियो का एक रोग।

विशेष—इस रोग मे वैद्यक के अनुसार अति मैथुन, शोक, परिश्रम आदि कारणो से शरीरस्थ जलीय धातु क्षुब्ध होकर योनि मार्ग से निकलने लगती है। यह पदार्थ श्वेत वर्ण, स्वच्छ और गधरहित होता है। इसमे कोई वेदना नही होती, पर वेग इतना प्रबल होता है कि सहा नही जाता। रोगिणी अत्यत कृश और दुबल हो जाती है। रग पीला पड जाता है। शरीर शिथिल और अकर्मण्य हो जाता है। सिर मे दद हुआ करता है। गला और तालू सूखा रहता है। प्यास बहुत लगती है। खाना पीना नही रुचता और मूर्छा आने लगती है। यह रोग पुरुषो के बहुमूत्र रोग के सदृश होता है।

**सोमर्षि**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

**सोमल**—संज्ञा पुं० [देश०] सखिया का एक भेद जिसे सफेद सखिया भी कहते हैं।

**सोमलता[1]**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गिलोय। गुडूची। २ ब्राह्मी। ३ सोम नाम की वैदिक लता। ४ गोदा या गोदावरी नदी का नाम (को०)।

**सोमलतिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गिलोय। गुडूची। गुरुच। २ दे० 'सोम'।

**सोमलदेवी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजतरगिणी के अनुसार एक राजपुत्री का नाम।

**सोमलोक**—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा का लोक। चद्रलोक।

**सोमवश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. युधिष्ठिर का एक नाम। २ चद्रवश। उ०—सोमदत्त अरि जोम चलेउ भट सोमवश वर। पुलकि रोमवल तोम महत मुदरोम रोमधर।—गिरिधर (शब्द०)।

**सोमवशीय**—वि० [सं०] १ चद्रवश मे उत्पन्न। २ चद्रवश सबधी। चद्रवश का।

**सोमवश्य**—वि० [सं०] दे० सोमवशीय'।

**सोमवत्**—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सोमवती] १ सोमयुक्त। चद्रयुक्त। २ चद्रमा के समान।

**सोमवती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोमवार को पडनेवाली अमावस्या। सोमवती अमावस्या।

**सोमवती अमावस्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] सोमवार को पडनेवाली अमावस्या जो पुराणानुसार पुण्यतिथि मानी जाती है। प्राय लोग इस दिन गगास्नान और दान पुण्य करते है। विशेषत स्त्रियाँ इस तिथि पर वासुदेव का पूजन और उनकी १०८ परिक्रमा किसी फल, मिष्ठान्न, अन्न आदि से करती है।

**सोमवती तीर्थ**—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

**सोमवचस्**[१]—सज्ञा पु० [स०] १ विश्वेदेवाओ मे से एक का नाम। २ हरिवश के अनुसार एक गधर्व का नाम।

**सोमवर्चस्**[२]—वि० सोम के समान तेजयुक्त।

**सोमवल्क**—सज्ञा पु० [स०] १ सफेद खैर। श्वेत खदिर। २ कायफल। कटफल। ३ करज। ४ रीठा करज। गुच्छपुष्पक। ५ बबूर। बबूर।

**सोमवल्लरी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ ब्रह्मा। २ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, जगण, रगण, जगण और रगण होते हैं। इसे 'चामर' और 'तूण' भी कहते है। उ०—रोज रोज राधिका सखीन सग आइकै। खेल रास कान्ह सग चित्त हर्ष लाइकै। बाँसुरी समान बोल सप्त ग्वाल गाइकै। कृष्णही रिझावही सु चामरै डुलाइकै।—छद प्रभाकर (शब्द०)।

**सोमवल्लिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] वकुची। सोमराजी। २ दे० 'सोम'। ३ दे० 'सोम'—१।

**सोमवल्ली**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गिलोय। गुडूची। २ वकुची। सोमराजी। ३ छिरैंटी। पाताल गारुडी। ४ ब्राह्मी। ५ सुदर्शन। ६ लताकरज। कठकरजा। ७ गजपीपल। गज पिप्पली। ८ वन कपास। वनकार्पास। दे० 'सोम'।

**सोमवामी**[१]—वि० [स० सोमवामिन्] सोम वमन करनेवाला।

**सोमवामी**[२]—सज्ञा पुं० वह ऋत्विज् जो खूब सोमपान करता हो।

**सोमवायव्य**—सज्ञा पुं० [स०] एक ऋषिवश का नाम।

**सोमवार**—सज्ञा पु० [स०] सात वारो मे से एक वार जो सोम अर्थात् चद्रमा का माना जाता है। यह रविवार के बाद और मगलवार के पहले पडता है। चद्रवार।

**सोमवारी**[१]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोमवार+ई (प्रत्य०)] दे० 'सोमवती अमावस्या'।

**सोमवारी**[२]—वि० सोमवार सबधी। सोमवार का। जैसे,—सोमवारी बाजार, सोमवारी अमावस्या।

**सोमवासर**—सज्ञा पुं० [स०] सोमवार। चद्रवार।

**सोमविक्रयी**—सज्ञा पु० [स० सोमविक्रयिन्] सोमरस बेचनेवाला। विशेष—मनु मे सोमरस बेचनेवाला दान के अयोग्य कहा गया है। उसे दान देने मे दाता दूसरे जन्म मे विष्ठा खानेवाली योनि मे उत्पन्न होता है।

**सोमवीथी**—सज्ञा स्त्री० [स०] चद्रमडल। चद्रमा की वीथी।

**सोमवीर्य**—वि० [स०] सोम की तरह वीर्य अर्थात् शक्तिवाला [को०]।

**सोमवृक्ष**—सज्ञा पु० [सं०] १ कायफल। कटफल। २. सफेद खैर। श्वेत खदिर।

**सोमवृद्ध**—वि० [स०] जो खूब सोमपान करता हो। जिसकी उमर सोमपान करने मे ही बीती हो।

**सोमवेश**—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन मुनि का नाम।

**सोमव्रत**—सज्ञा पु० [स०] १ एक साम का नाम। २ दे० 'सोमप्रदोष'।

**सोमशकला**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की ककडी।

**सोमशुभ्र**—सज्ञा पु० [स०] एक वैदिक ऋषि का नाम।

**सोमसज्ञ**—सज्ञा पुं० [स०] कपूर। कर्पूर।

**सोमसभवा**—सज्ञा स्त्री० [स० सोमसम्भवा] १ नर्मदा। सोमोद्भवा। २ गधपलाशी। कपूरकचरी।

**सोमसस्था**—सज्ञा स्त्री० [स०] सोमयज्ञ का का एक प्रारम्भिक कृत्य।

**सोमसद**—सज्ञ पु० [स०] मनु के अनुसार विराट् के पुत्र और साध्यगण के पितर।

**सोमसलिल**—सज्ञा पु० [सज्ञा] सोम का जल। सोमरस।

**सोमसव**—सज्ञा पु० [स०] यज्ञ मे किया जानेवाला एक प्रकार का कृत्य जिसमे सोम का रस निकाला जाता था।

**सोमसवन**—सज्ञा पु० [स०] १ वह जिससे सोम का रस तैयार किया जाय। २ दे० सोमसव' [को०]।

**सोमसाम**—सज्ञा पुं० [स० सोमसामन्] एक साम का नाम।

**सोमसार**—सज्ञा पु० [सं०] १ सफेद खैर। श्वेत खदिर। २ ग्वबूल। कीकर। बबर।

**सोमसिधु**—सज्ञा पुं० [स० सोमसिन्धु] विष्णु का एक नाम।

**सोमसिद्धात**—सज्ञा पु० [स० सोमसिद्धान्त] १ एक बुद्ध का नाम। २ वह शास्त्र जिससे भविष्य की बाते जानी जाती है। ३ शैव कापालिको का एक मत या सिद्धात [को०]।

**सोमसुदर**—वि० [स० सोमसुन्दर] चद्रमा के समान सुदर। बहुत सुदर।

**सोमसुत**—सज्ञा पुं० [स०] १ सोमरस निकालनेवाला। २ यज्ञ मे सोम रस चढानेवाला ऋत्विज्।

**सोमसुत**—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा का पुत्र बुध।

**सोमसुता**—सज्ञा स्त्री० [स०] चद्रमा की पुत्री, नर्मदा नदी।

**सोमसुति**—सज्ञा स्त्री० [स०] सोम का रस निकालने की क्रिया।

**सोमसुत्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सोमसुति'।

**सोमसुत्वा**—सज्ञा पुं० [स० सोमसुत्वन्] वह जो यज्ञ मे सोमरस चढाता हो। सोमरस चढानेवाला।

**सोमसूक्त**—सज्ञा पु० [स०] सोम से संबधित ऋचाएँ या मत्र।

**सोमसूक्ष्म**—सज्ञा पु० [स० सोमसूक्ष्मन्] एक प्राचीन वैदिक ऋषि का नाम।

**सोमसूद**—सज्ञा पु० [स० सोमसूदन] शिवलिंग की जलधरी से जल निकलने का स्थान या नाली।

**सोमसूत्र**—सज्ञा पु० [सं०] यौ०—सोमसूत्र प्रदक्षिणा = इस प्रकार परिक्रमा करना जिससे सोमसूत्र का लघन न हो।

**सोमसेन**—सज्ञा पु० [स०] शवर के एक पुत्र का नाम।

**सोमहार**—वि० [स०] सोमहरण या निष्पीडन करनेवाला।

**सोमहारी**—वि० [स० सोमहारिन्] दे० 'सोमहार'।

**सोमहूति**—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

**सोमाग**—सज्ञा पु० [स० सोमाङ्ग] सोम याग का एक अग।

**सोमाश, सोमाशक**—सज्ञा पु० [सं०] चद्रमा का अश।

**सोमाणु**—सज्ञा पुं० [सं०] १ चद्रमा की किरण। २ सोमलता का अकुर। ३ सोमयाग का एक अंग।

**सोमा**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सोमलता। २ महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम। ३ मारकडेय पुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

**सोमा**[2]—सज्ञा पु० [स० सोमन्] १. सोम यज्ञ का कर्ता। २ सोम को निचोडनेवाला व्यक्ति। ३ यज्ञ का उपकरण। ४ चद्रमा। सोम [को०]।

**सोमाख्य**—सज्ञा पुं० [स०] लाल कमल।

**सोमाद**—वि० [स०] सोम भक्षण करनेवाला।

**सोमाधार**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार के पितर।

**सोमापि**—सज्ञा पुं० [सं०] पुराण के अनुसार सहदेव के एक पुत्र का नाम।

**सोमापूषण**—सज्ञा पुं० [स०] सोम और पूषण नामक देवता।

**सोमापौष्ण**—वि० [स०] सोम और पूषण का। सोम और पूषण सबधी।

**सोमाभ**—वि० [सं०] चद्र की तरह दीप्तिमान् [को०]।

**सोमाभा**—सज्ञा स्त्री० [स०] चद्रावली। चद्ररश्मि।

**सोमाभिषव**—सज्ञा पु० [सं०] सोम के रस को चुआना [को०]।

**सोमायन**—सज्ञा पु० [सं०] महीने भर का एक व्रत जिसमे २७ दिन दूध पीकर रहने और ३ दिन तक उपवास करने का विधान है।

विशेष—याज्ञवल्क्य के अनुसार यह व्रत करनेवाला पहले सप्ताह (सात रात) गौ के चार स्तनो का, दूसरे सप्ताह तीन स्तनो का, तीसरे सप्ताह दो स्तनो का और ६ रात एक स्तन का दूध पीए और तीन दिन उपवास करे।

**सोमार**Ⓤ†—सज्ञा पुं० [स० सोमवार, प्रा० सोम+आर या सोमार] सोमवार का दिन। उ०—मं० १६६२ शाके १४६३ मार्ग वदी ५ सोमार गगादास सुत महाराजा वीरवल श्री तीर्थराज प्रयाग की यात्रा सुफल लिखित।—अकबरी०, पृ० ७६।

**सोमारुद्र** सज्ञा पुं० [सं०] सोम और रुद्र नामक देवता।

**सोमारौद्र**—वि० [स०] सोम और रुद्र का। सोम और रुद्र सबधी।

**सोमार्चि, सोमार्ची**—सज्ञा पुं० [सं० सोमार्च्चिस्] वाल्मीकि रामायण वर्णित देवताओ के एक प्रासाद का नाम।

**सोमार्थी**—वि० [स० सोमार्थिन्] सोम की कामना करनेवाला या इच्छुक [को०]।

**सोमार्धधारी**—सज्ञा पु० [स० सोमार्द्धधारिन्] मस्तक पर अर्ध चद्र धारण करनेवाले, शिव।

**सोमार्धहारी**—सज्ञा पुं० [सं० सोमार्द्धहारिन्] शिव [को०]।

**सोमार्ह**—वि० [स०] सोम के योग्य। सोमपान का अधिकारी [को०]।

**सोमाल**—वि० [सं०] कोमल। नरम। मुलायम। स्निग्ध। चिक्कण।

**सोमालक**—सज्ञा पु० [स०] पुखराज। पुष्पराग मणि।

**सोमावती**—सज्ञा स्त्री० [स०] चद्रमा की माता का नाम। उ०—विनता सुत खगनाथ चद्र सोमावति केरे। सुरावती के सूर्य रहत जग जासु उजेरे।—विश्राम (शब्द०)।

**सोमावर्त**—सज्ञा पु० [स०] वायुपुराण के अनुसार एक स्थान का नाम।

**सोमाश्रम**—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम।

**सोमाश्रय**—सज्ञा पुं० [सं०] शिव। रुद्र।

**सोमाश्रयायण**—सज्ञा पु० [स०] १ महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम। २ शिव जी का स्थान।

**सोमाष्टमी**—सज्ञा स्त्री० [सं०] सोमवार को पडनेवाली अष्टमी तिथि।

**सोमाष्टमी व्रत**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का व्रत जो सोमवार को पडनेवाली अष्टमी को किया जाता है।

**सोमास्त्र**—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र जो चद्रमा का अस्त्र माना जाता है। उ०—सोमास्त्रहु सौरास्त्र सु निज निज रूपनि धारै। रामहि सो कर जोरि सब बोलै इक बारै।—पदमाकर (शब्द०)।

**सोमाह**—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा का दिन। सोमवार।

**सोमाहुत**—वि० [स०] जिसकी सोमरस द्वारा तृप्ति की गई हो।

**सोमाहुति**[1]—सज्ञा पु० [स०] भार्गव ऋषि का नाम। ये मत्रद्रष्टा थे।

**सोमाहुति**[2]—सज्ञा स्त्री० सोम की आहुति।

**सोमाह्वा**—सज्ञा स्त्री० [सं०] महासोमलता।

**सोमित्रि**—सज्ञा पुं० [सं० सौमित्र] लक्ष्मण।—(डिं०)।

**सोमी**[1]—वि० [सं० सोमिन्] १ जिसमे सोम हो। सोमयुक्त। २ सोमयज्ञ करनेवाला (को०)।

**सोमी**[2]—सज्ञा पु० १ सोम की आहुति देनेवाला। २ सोमयज्ञ करनेवाला। सोमयाजक।

**सोमीय** वि० [सं०] सोम सबधी। सोम का।

**सोमेद्र**—वि० [स० सोमेन्द्र] सोम और इद्र का। सोम और इद्र सबधी।

**सोमेज्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] सोम यज्ञ।

**सोमेश्वर**—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक शिवलिंग जो काशी मे स्थापित है। कहते हैं, भगवान् सोम ने यह शिवलिंग प्रतिष्ठित किया था। २ दे० 'सोमनाथ'—१। ३ श्रीकृष्ण का एक नाम। ४ राजतरगिणी मे वर्णित एक देवता का नाम। ५ सगीत शास्त्र के एक आचार्य का नाम। ६ चौहान नरेश पृथ्वीराज के पिता का नाम जो नागौर के नरेश थे।

**सोमेश्वररस**—सज्ञा पुं० [स०] एक रसौषधि जो 'भैषज्य रत्नावली' के अनुसार सब प्रकार के प्रमेह, मूत्रघात, सन्निपातिक ज्वर, भगदर, यकृत, प्लीहा, उदररोग तथा सोमरोग का शीघ्र शमन करनेवाली है।

विशेष—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—सेमल की छाल, कोह (अर्जुन) की छाल, लोध, अगर, गनियारी की छाल, रक्त चदन, हलदी, दारुहलदी, आँवला, अनारदाना, गोखरू के बीज, जामुन की छाल, खस और गुग्गुल प्रत्येक चार चार तोले और पारा, गधक, लोहा, धनियाँ, मोथा, इलायची, तेजपत्ता, पद्मक (पद्मकाष्ठ), पाढ (पाठा), रसौत, वायविडग, सुहागा और जीरा आध आध तोला, इन सबका खूब बारीक चूर्ण कर दो दो रत्ती की गोली बनाते है। बकरी के दूध या नारियल के जल के साथ इसका सेवन किया जाता है।

**सोमोत्पत्ति**—सज्ञा पुं० [सं०] १ चद्रमा का जन्म। २ अमावस्या के उपरात चद्रमा का फिर से निकलना।

**सोमोद्गीत**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का साम।

**सोमोद्भव**[1]—सज्ञा पु० [स०] (चद्रमा को उत्पन्न करनेवाले) श्री कृष्ण का एक नाम।

**सोमोद्भव**[2]—वि० चद्रमा से उत्पन्न।

**सोमोद्भवा**—सज्ञा स्त्री० [सं०] नर्मदा नदी का एक नाम।

**सोमोती**†—सज्ञा स्त्री० [स० सोमवती] दे० 'सोमवती अमावस्या'।

**सोम्य**[1]—वि० [स०] १ सोमयुक्त। २ सोम सबधी। ३ सोम का। ४ सोमपान के योग्य। ५ सोम की आहुति देनेवाला। ६ मृदु। कोमल। चिक्कण (को०)।

**सोम्य**Ⓤ[2]—वि० [स० सौम्य] दे० 'सौम्य'। उ०—इपु अर्ध अरगा को प्रसिद्ध। रवि अयन सोम्य जान्यौ प्रसिद्ध।—ह० रासो, पृ० १४।

**सोय**Ⓤ[1]—सर्व० [हिं० सो + ही, ई] वही।

**सोय**[2]—सर्व० दे० 'सो'। उ०—कै लघु कै वड मीत भल, सग सनेह दुख सोय। तुलसी ज्यो घृत मधु सरिस, मिले महा विष होय। —तुलसी (शब्द०)।

**सोयम**—वि० [फा०] तृतीय। तीसरा। उ०—सोयम जब मौत आवेगा उसे पेश, होवे सूरत मे ओ तबदील सरकश।—दक्खिनी०, पृ० ११४।

**सोया**—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सोआ'।

**सोरजान**—सज्ञा स्त्री० [फा० सूरन्जान्] दे० 'सूरजान', 'सुरजान'।

**सोरभ**Ⓤ—वि०, सज्ञा पु० [स० सौरभ या सौरभ्य, प्रा० सौरभ] दे० 'सौरभ'।

**सोरभना**Ⓤ—क्रि० अ० [स० सौरभ, प्रा० सौरभ + हिं० ना (प्रत्य०)] सुरभित या सुगधियुक्त होना। उ०—ढोलउ मन आणदियउ, चतुर तणे वचनेह। मारू मुख सोरभियउ, आवि भमर भण केह।—ढोला०, दू० ४४०।

**सोर**Ⓤ—सज्ञा पुं० [फा० शोर, मिला० स० स्वर, सोर] १. शोर। हल्ला। कोलाहल। उ०—(क) भएउ कोलाहल अवध अति सुनि नृप राउर सोर।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सोर भयो घोर चारो ओर नभ मडल मे आए घन, आए घन आयकै उमरिगे। २ ख्याति। प्रसिद्धि। नाम। उ०—तुम अनियारे दृगन को सुनियत जग मे सोर।—रसनिधि (शब्द०)।

**सोर**†[3]—सज्ञा स्त्री० [स० शटा, प्रा० सड] जड। मूल।

**सोर**[1]—सज्ञा पुं० [स०] वक्र गति। टेढी चाल।

**सोर**[2]—सज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सौरी'।

**सोर**[3]—सज्ञा पुं० [अ० शोर] तट। किनारा।

मुहा०—सोर पडना = (जहाज का) किनारे लगना।

**सोर**Ⓤ[4]—सज्ञा पुं० [अ० शोरह्] दे० 'शोरा'। उ०—(क) उडै सोर प्याले निराले चमकै। घटा जोट मैं दामिनी सो दमकै।—हम्मीर०, पृ० ३२। (ख) उठै सोर झालाँ अनल, आभ धुआँ अँधियार।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ६८।

**सोरट्ठ**—सज्ञा पुं० [स० सौराष्ट्र, प्रा० सोरट्ठ] दे० 'सोरठ'।

**सोरठ**[1]—सज्ञा पुं० [सं० सौराष्ट्र, प्रा० सोरट्ठ] १ भारत का एक प्रदेश जो राजस्थान के दक्षिणपश्चिम पडता है। गुजरात और दक्षिणी काठियावाड का प्राचीन नाम। २. सोरठ देश की राजधानी, सूरत। उ० नृप इक वीरभद्र अस नामा। सोरठ नगर माँहि तेहि धामा।—विश्राम (शब्द०)।

**सोरठ**[2]—सज्ञा पुं०, स्त्री० [देश०] ओडव जाति का एक राग जो हिंडोल का पुत्र कहा गया है।

विशेष—इसमे गाधार और धवत स्वर वर्जित हैं। यह पचम, भैरवी, गुर्जरी, गाधार और कल्याण के सयोग से बना माना जाता है। इसके गाने का समय रात १६ दड से २० दड तक है। कोई सोरठ को पाडव जाति की रागिनी मानते हैं।

मुहा०—खुली सोरठ कहना = खुले आम कहना। कहने मे सकोच या भय न करना।

**सोरठ मल्लार**—सज्ञा पुं० [हिं० सोरठ + मल्लार] सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

**सोरठा**—सज्ञा पुं० [स० सौराष्ट्र, हिं० सोरठ (देश)] अडतालीस मात्राओ का एक छद जिसके पहले और तीसरे चरण मे ग्यारह ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरण मे तेरह तेरह मात्राएँ होती हैं। इसके सम चरणो मे जगण का निषेध है। दोहे को उलट देने से सोरठा हो जाता है। जैसे,—जेहि सुमिरत सिधि होइ, गननायक करिवर वदन। करउ अनुग्रह सोइ, बुद्धिरासि सुभ गुन सदन। उ०—छद सोरठा सुदर दोहा। सोइ बहुरग कमल कुल सोहा।—मानस, १।३७।

विशेष—जान पडता है, इस छद का प्रचार अपभ्रश काल में पहले पहल सोरठ या सौराष्ट्र देश मे हुआ था, इसी से यह नाम पडा।

**सोरठी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोरठ (देश)] एक रागिनी जो सिंधूडा और वडहस के सयोग से बनी है। हनुमत के मत से यह मेघ राग की पत्नी है।

**सोरण**[1]—वि० [स०] कुछ कसैला, मीठा, खट्टा और नमकीन। चरपरा। २ शीतल। ठढा। ३. रक्तस्राव रोधक (को०)।

**सोरण**[2]—सज्ञा पुं० दे० 'सोल[2]' [को०]।

**सोरन**†—सज्ञा पुं० [स० शूरण] जमीकद। सूरन।

**सोरनी**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सँवरना + ई (प्रत्य०)] १ झाड। बुहारी। कूँचा। २. मृतक का एक सस्कार जो तीसरे दिन होता है और

जिसमें उसकी चिता की राख बटोरकर नदी या जलाशय मे फेंक दो जाती है। त्रिरात्रि।

**सोरवा**—सज्ञा पु० [फा० शोरवा] दे० 'शोरवा'।

**सोरभखो**†—सज्ञा स्त्री० [स० शूरभक्षी] तोप या बदूक। (डिं०)।

**सोरस**Ⓤ—वि० [स० सुरस] रसीला। सुदर। दे० 'सरस'। उ०—रग भूमि को 'कोरस' सोरस कब बरसावैं।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ४६।

**सोरसती**‡—सज्ञा स्त्री० [स० सरस्वती] सरस्वती नदी। विशेष दे० 'सरस्वती'। उ०—गगा जमुना सोरसती जहाँ अमी का वास। —सत० दरिया०, पृ० ३।

**सोरह**Ⓤ‡—वि०, सज्ञा पु० [स० षोडश, प्रा० सोलस, सोलह] दे० 'सोलह'। उ०—सवत् सोरह सै इकतीसा। करउँ कथा हरि-पद धरि सीसा।—तुलसी (शब्द०)।

**सोरहिया**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोरह + इया (प्रत्य०)] १ दे० 'सोरही'। २ भाद्र शुक्ल अष्टमी (राधाष्टमी) से सोलह दिन तक चलने-वाला लक्ष्मीपूजन एव व्रतविधान जिसकी समाप्ति आश्विन कृष्ण अष्टमी (जीवत्पुत्रिका या जिउतिया व्रत) के दिन होती हैं। इस दिन स्त्रियाँ २४ घटे का निर्जल उपवास, व्रत एव लक्ष्मीपूजन करती है। इसे १६ दिन तक चलने के कारण सोरहिया भी कहते है। यह व्रत वाराणसी मे बहुप्रचलित है जहाँ लक्ष्मीकुड पर विशाल मेला भी लगता है। दे० 'जिउतिया'।

**सोरही**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोलह + ई (प्रत्य०)] १ जूआ खेलने के लिये सोलह चित्ती कौडियो का समूह। २ वह जूआ जो सोलह कौडियो से खेला जाता है। ३ कटी हुई फसल की सोलह अँटियो या पूलो का बोझ, जिससे खेत की पैदावार का अदाज लगाते हैं। जैसे,—फी बीघा सौ सोलही। ४ वैश्यो के कुछ वर्गो मे मृतक के लिये उसकी मृत्यु के सोलहवें दिन किया जाने-वाला ब्राह्मणभोज आदि कर्म।

**सोरा**Ⓤ‡—सज्ञा पुं० [फा० शोरह] दे० 'शोरा'। उ०—सीतलताऊ सुगध की घटै न महिमा मूर। पीनसवारे ज्यौं तजै सोरा जानि कपूर।—बिहारी (शब्द०)।

**सोराना**†—क्रि० अ० [हिं० सोर (=जड) से नाम०] जड पकडना। उ०—तब क्या करोगे मधुवन! अभी एक पानी और चाहिए। तुम्हारा आलू सोरा कर ऐसा ही रह जायगा? ढाई रुपए के बिना।—तितली, पृ० ३३।

**सोरावास**—सज्ञा पुं० [स०] बिना नमक का मास का रसा। बिना नमक का शोरवा।

**सोराष्ट्रिक**—सज्ञा पुं० [स० सौराष्ट्रिक] दे० 'सौराष्ट्रिक'।

**सोरी**†—सज्ञा स्त्री० [स० स्रवण (=बहना या चूना)] बरतन मे महीन छेद जिसमे से होकर पानी आदि टपककर बह जाता हो।

**सोर्णभ्रू**—वि० [स०] जिसकी दोनो भवो के बीच रोएँ की भँवरी सी हो।

**सोर्मि, सोर्मिक**—वि० [स०] लहरो से युक्त। तरगमय [को०]।

**सोलकी**—सज्ञा पु० [देश०] क्षत्रियो का एक प्राचीन राजवश जिसका अधिकार गुजरात पर बहुत दिनो तक था।

विशेष—ऐसा माना जाता है कि सोलकियो का राज्य पहले अयोध्या मे था जहाँ से वे दक्षिण की ओर गए और वहाँ से फिर गुजरात, काठियावाड, राजपूताने और बघेलखड मे उनके राज्य स्थापित हुए। उत्तरी भारत मे जिस समय थानेश्वर और कन्नौज के परम प्रतापी सम्राट् हर्षवर्धन का राज्य था, उस समय दक्षिण मे सोलकी सम्राट् द्वितीय पुलकेशी का राज्य था, जिससे हर्षवर्धन ने हार खाई थी। रीवाँ का बघेलवश इसी सोलकी वश की एक शाखा है। इस समय सोलकी और बघेल अपने को अग्निवशी बतलाते हैं और अपने मूल पुरुष चालुक्य को वशिष्ठ ऋषि द्वारा आबू पर के यज्ञकुड से उत्पन्न कहते है। पर यह बात पृथ्वीराज रासो आदि पीछे के ग्रथो के आधार पर ही कल्पित जान पडती है, क्योकि विक्रम स० ६३५ से लेकर १६०० तक के अनेक शिलालेखो, दानपत्रो आदि मे इनका चद्रवशी और पाडवो का वशधर होना लिखा है। बहुत दिनो तक इनका मुख्य स्थान गुजरात था।

**सोल**[1]—वि० [स०] १ शीतल। ठढा। २ कसैला, खट्टा और तीता। चरपरा।

**सोल**[2]—सज्ञा पु० १ शीतलता। ठढापन। २ कसैलापन, खट्टापन, तीतापन, चरपापन आदि। ३ स्वाद। जायका।

**सोल**Ⓤ†[3]—वि० [स० षोडश] दे० 'सोलह'। उ०—सुदर सोल सिंगार सजि गई सरोवर पाल। चद मुलक्खउ, जल हँस्यउ, जलहर कपी पाल।—ढोला०, दू० ३६४।

**सोल**[4]—सज्ञा पुं० [अ०] जूते मे लगाने का चमडे का तल्ला।

**सोलपापो**†—सज्ञा पु० [देशी] बेकडा। (डिं०)।

**सोलपोल**†—वि० [हिं० पोल + अनु० सोल] बेफायदा। व्यर्थ का। उ०—ना से सोलपोल तुम लाई। पकरै तो कुछु ज्वाब न आई। —घट०, पृ० १६३।

**सोलवाँ**†—वि० [हिं० सोलह + वाँ (प्रत्य०) दे० 'सोलहवाँ'।

**सोलह**[1]—वि० [स० षोडश, प्रा० सोलस, सोलह] जो गिनती मे दस से छह अधिक हो। षोडश।

**सोलह**[2]—सज्ञा पु० दस और छह की सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१६।

मुहा०—सोलह आने, सोलहो आने = सपूर्ण। पूरा पूरा। जैसे,—तुम्हारी बात सोलहो आने सही है। उ०—अरे न सोलह आने तो पाई ही सही।—प्रेमघन०, पृ० ४५८। सोलह सोलह गडे सुनाना = खूब गालियाँ देना।

**सोलहनहाँ**—सज्ञा पु० [हिं० सोलह + नहँ (=नख)] वह हाथी जिसके सोलह नख या नाखून हो। सोलह नाखूनवाला हाथी जो ऐबी समझा जाता है।

**सोलहवाँ**—वि० [हिं० सोलह + वाँ (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सोलहवीं] जिसका स्थान पद्रहवे स्थान के बाद हो। जिसके पहले पद्रह और हो।

**सोलह सिंगार**—सज्ञा पु० [हिं० सोलह + सिंगार] सिंगार की एक विधि जिसमे १६ उपकरण है।

विशेष—इसके अतर्गत अग मे उबटन लगाना, नहाना, स्वच्छ वस्त्र धारण करना, बाल सँवारना, काजल लगाना

सेंदुर से माँग भरना, महावर लगाना, भाल पर तिलक लगाना, चिबुक पर तिल बनाना, मेहदी लगाना, सुगध लगाना, आभूषण पहनना, फूलो की माला पहनना, मिस्सी लगाना, पान खाना और होठो को लाल करना ये सोलह बातें है। (विशेष विवरण के लिये 'शृगार' और 'षोडश शृगार' शब्द भी देखिए)।

**सोलही**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोलह + ई (प्रत्य०)] दे० 'सोरही'।

**सोला**[1]—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा झाड।

विशेष—यह प्राय सारे भारत की दलदली भूमि मे पाया जाता है। यह वर्षा ऋतु मे फूलता है। इसकी डालियाँ बहुत सीधी और मजबूत होती हैं। सोला हैट नाम की अग्रेजी ढग की टोपी इन्हीं डालियो के छिलको से बननी है।

**सोला**‡[2]—वि० [हिं० सोलह] दे० 'सोलह'। उ०—बारा कला सोषै सोला कला पोषै। चारि कला साधै अनत कला जीवै।—गोरख०, पृ० ३१।

**सोलाना**—क्रि० स० [हिं० सुलाना] दे० 'सुलाना'।

**सोलाली**—सज्ञा स्त्री० [देश०] पृथ्वी। (डिं०)।

**सोलिक**—वि०, सज्ञा पु० [सं०] दे० 'सोल'।

**सोल्लास**[1]—वि० [सं०] उल्लासयुक्त। प्रसन्न। आनदित।

**सोल्लास**[2]—क्रि० वि० उल्लास के साथ। आनंदपूर्वक।

**सोल्लुठ**[1]—वि० [सं० सोल्लुण्ठ] परिहासयुक्त। व्यग्य, हास्य से युक्त। चुटकी के साथ।

यौ०—सोल्लुठकथन, सोल्लुठभाषण, सोल्लुठभाषित, सोल्लुठवचन = परिहासयुक्त। व्यग्य, हास्य से युक्त वाक्य।

**सोल्लुठ**[2]—सज्ञा पुं० व्यग्य। परिहास। चुटकी।

**सोल्लुठन**—वि०, सज्ञा पुं० [सं० सोल्लुण्ठन] दे० 'सोल्लुठ'।

**सोल्लुठोक्ति**—सज्ञा स्त्री० [सं० सोल्लुण्ठोक्ति] परहासयुक्त वचन। व्यग्योक्ति। दिल्लगी। बोली ठोली। ठट्ठा। चुटकी।

**सोल्लेख**—क्रि० वि० [स०] अलग अलग उल्लेखपूर्वक। स्पष्टत [को०]

**सोवज**—सज्ञा पुं० [हिं० सावज] दे० 'सावज', 'सौजा'। उ०—जब सोवज पिंजर धर पाया बाज रह्या वन माही।—दादू (शब्द०)।

**सोवड**†—सज्ञा पुं० [स० सूतका, प्रा० सूडआ] वह कोठरी जिसमे स्त्रियाँ बच्चा जनती है। सूतिकागार। सौरी।

**सोवणी**—सज्ञा स्त्री० [स० शोधनी] बुहारी। झाड़ू। (डिं०)।

**सोवन**Ⓤ†[1]—सज्ञा पुं० [स० स्वपन, प्रा० सोवण, हिं० सोवना] सोने की क्रिया या भाव। उ०—सुरापान करि सोवन जानै। कबहुँ न जान्यो गहन कमानै।—रघुराज (शब्द०)।

**सोवन**Ⓤ[2]—सज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण, प्रा० सोवण्ण, अप० सोवण] स्वर्ण। सोना। उ०—सु दरि सोवन वर्ण तसु अहर अलत्ता रगि। केसरि लकी खीण कटि कोमल नेत्र कुरगि।—ढोला०, दू० ८७।

यौ०—सोवनवानी = स्वर्णिम। सोने के वर्णवाला। सुनहरा। उ०—सोवनवानी घूघरा चालण रइ परियाण। —ढोला०, दू० ३४३। सोवनसिंगी = स्वर्णमडित शृगवाली। सोने से मढी सीगोवाली। उ०—सोवनसिंगी कपिला गाई। —वी० रासो, पृ० २५।

**सोवना**Ⓤ†—क्रि० अ० [स० स्व पु, प्रा० सुव, सोव + हिं० ना (प्रत्य०)] दे० 'सोना'। उ०—(क) क्योकरि झूठी मानिये सखि सपने की बात। जो हरि हरचो सोवत हियो सो न पाइयत प्रात।—पद्माकर (शब्द०)। (ख) पथ थकित मद मुकित मुखित सर सिधुर जोवत। काकोदर कर कोश उदर तर केहरि सोवत। —केशव (शब्द०)।

**सोवनार**Ⓤ—सज्ञा पुं० [स० स्वपनागार] शयनकक्ष। शयनागार। उ०—औ बड जूड तहाँ सोवनारा।—जायसी ग्र०, पृ० १४६।

**सोवा**—सज्ञा पुं० [हिं० सोआ] एक शाक। दे० 'सोआ'। उ०—साग चना सँग सब चौराई। सोवा अरु सरसो सरसाई।—सूर (शब्द०)।

**सोवाक**—सज्ञा पु० [स०] सुहागा।

**सोवाना**—क्रि० स० [हिं० सोवना का प्रे० रूप] दे० 'सुलाना'। उ०—प्रभुहि सोवाय समाल उतारी। लियो आपने गल महँ धारी। —रघुराज (शब्द०)।

**सोवारी**[1]—सज्ञा पु० [?] पद्रह मात्राओ का एक ताल जिसमे पाँच आघात और तीन खाली होते है। इसका बोल यह है,—धिन धा धिन धा कत तागे दिनतो तेटे कता गदिघेन धा।

**सोवारी**Ⓤ‡[2]—सज्ञा स्त्री० [देशी] सवारी। उ०—सोवारी रहट घाट कौ सीस प्रकार पुर विन्यास कथा कहुलो का।—कीर्ति०, पृ० २८।

**सोवाल**[1]—वि० [स०] काले या धूँए के रग का। धुँधला। धूमला।

**सोवाल**[2]—सज्ञा पु० धूम्र वर्ण। धुँधला रग। धूएँ का रंग।

**सोवियत**—सज्ञा पु० [रू० सोवियत्] १ रूस का आधुनिक शासनतत्र। २ रूस मे किसी भी प्रदेश, गाँव या जिले की वह सभा जो मजदूरो, सिपाहियो, निर्वाचित प्रतिनिधियो से तैयार की गई हो।

**सोवैया**Ⓤ†—सज्ञा पुं० [हिं० सोवना + इया (प्रत्य०)] सोनेवाला। उ०—धमकै कछु यो भ्रम कै उठि आवै छपावति छाह सोवैयन तें।—(शब्द०)।

**सोव्रन, सोव्रन्न**Ⓤ—सज्ञा पु० [स० स्वर्ण] दे० 'सुवर्ण'। सोना। उदा०—दसै रती सोव्रन के खरीचा।—कबीर सा०, पृ० ८८३।

**सोशल**—वि० [अ०] १ समाज सबधी। सामाजिक। जैसे,—सोशल कानफरेस। २ समाज मे मिलने जुलनेवाला। मिलनसार।

**सोशलिज्म**—सज्ञा पु० [अ०] दे० 'समाजवाद'।

**सोशलिस्ट**—सज्ञा पुं० [अ०] 'समाजवादी'।

**सोष**—वि० [स०] खारी मिट्टी मिला हुआ। क्षार मृत्तिका से मिश्रित।

**सोषक**—सज्ञा पु० [स० शोषक] १ दे० 'शोषक'। उ०—सम प्रकास तम पाख दुहूँ नाम भेद विधि कीन्ह। ससि पोषक सोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह।—मानस, १।७। २ समाज का वह व्यक्ति या वर्ग जो न्यूनतम पारिश्रमिक एव सुविधा देकर मजदूरो, मेहनत कश वर्ग का शोषण करता है। आधु०)। विशेष दे० 'शोषक'—६।

सोषण, सोषन(पु)—सज्ञा पुं० [स० शोषण] दे० 'शोषण'। उ०—मोहन वसीकरन उच्चाटन। सोषन दीपन थभन घातन।—गोपाल (शब्द०)।

सोषना(पु)—क्रि० अ० [स० शोषण] दे० 'सोखना'। उ०—पुनि अतहकोप निर्मल चोप नाँही धोष गुन सोष।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० २४३।

सोषु, सोसु(पु)—वि० [हिं० सोखना] सोखनेवाला। उ०—दभ हू कलि नाम कुभज सोच सागर सोषु।—तुलसी (शब्द०)।

सोष्णीष[1]—सज्ञा पुं० [स०] वृहत्सहिता मे उल्लिखित वास्तु विद्या के अनुसार एक प्रकार का भवन जिसके पूर्व भाग मे वीथिका हो।

सोष्णीष[2]—वि० उष्णीपयुक्त। पाग धारण करनेवाला [को०]।

सोष्म[1]—वि० [सं० सोष्मन्] १ ऊष्मा से युक्त। ऊष्म (वर्ण अक्षर)। २ ऊष्ण। गरम। तप्त [को०]।

सोष्म[2]—सज्ञा पु० उष्म वर्ण।

सोष्यती—सज्ञा स्त्री० [सं० सोष्यन्ती] वह स्त्री जो प्रसव करनेवाली हो। आसन्नप्रसवा।

सोष्यती कर्म—सज्ञा पुं० [सं० सोष्यन्ती कर्मन्] आसन्नप्रसवा (प्रसूता) स्त्री के सबध मे किया जानेवाला कृत्य या सस्कार।

सोष्यती सवन—सज्ञा पुं० [सं० सोष्यन्ती सवन] एक प्रकार का सस्कार।

सोष्यती होम—सज्ञा पुं० [सं० सोष्यन्ती होम] एक प्रकार का होम जो आसन्नप्रसवा स्त्री की ओर से किया जाता है।

सोस(पु)—सज्ञा पु० [स० शोच] दे० 'सोच'। उ०—बार बार यातें कहत यह मेरे जिय सोस। क्यो सँहै सुकुमार वह तुमरी आतप रोस।—स० सप्तक, पृ० ३९७। (ख) जफा इस अँदेशे का ना सोस कर, कहे मन मे यूँ आह अफसोस कर।—दक्खिनी०, पृ० १३९।

सोसन—सज्ञा पुं० [फा० सौसन] फारस की ओर का एक प्रसिद्ध फूल का पौधा जो भारतवर्ष मे हिमालय के पश्चिमोत्तर भाग अर्थात् काश्मीर आदि प्रदेशो मे भी पाया जाता है।

विशेष—इसकी जड मे से एक साथ ही कई डठल निकलते हैं। पत्ते कोमल, रेशेदार, हाथ भर के लबे, आध अगुल चौडे और नोकदार होते हैं। फूलो के दल नीलापन लिए लाल, छोर पर नुकीले और आध अगुल चौडे होते हैं। बीजकोश ५ या ६ अगुल लबे, छहपहले और चोचदार होते हैं। हकीमी मे इसके फूल और पत्ते औषध के काम मे आते हैं और गरम, रूखे तथा कफ और वातनाशक माने जाते हैं। इसके पत्तो का रस सिरदर्द और आँख के रोगो मे दिया जाता है। इसे शोभा के लिये बगीचे मे लगाते है। फारसी के शायर जीभ की उपमा इसके दल से दिया करते हैं।

सोसनी—वि० [फा० सौसन] सोसन के फूल के रग का। लाली लिए नीला। उ०—(क) सोसनी दुकूलनि दुराए रूप रोसनी है, बूटेदार घाँघरी की घूमनि घुमाइकै। कहै पदमाकर त्यो उन्नत उरोजन पै तग अँगिया है तनी तननि तनाइकै।—पद्माकर ग्र०, पृ० १२६। (ख) अग अनग की रोसनी मैं सुभ सोसनी चीर चुभ्यो चित चाइन। जानि चली वृज ठाकुर मैं ठमका ठमका ठुमकी ठकुराइन।—पदमाकर ग्र० १३०।

सोसाइटी, सोसायटी—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ समाज। गोष्ठी। जैसे—हिंदू सोसायटी। बगाली सोसाइटी। २ सगत। सोहबत। जैसे—उसकी सोसायटी अच्छी नही है।

सोसि(पु)—पद [सं० स + असि] सो हो। वह हो। उ०—जोसि सोसि तन चरन नमामी।—मानस, १।१६१।

सोस्मि(पु)—पद [सं० स + अस्मि] दे० 'सोऽहमस्मि'। उ०—निज शरीर नाम तब पावै। जब नर अजपा मे मन लावै। अजपा कि जो सोस्मि उमामा। सुमिरै नाम सहित विश्वासा।—विश्राम (शब्द०)।

सोह—पद [सं० सोऽहम्] दे० 'सोऽहम्'। उ०—मानन लगे ब्रह्म जिय काही। सोह रटन मची चहुँ घाही।—रघुराज (शब्द०)।

सोहग‡—पद [सं० सोऽहम + हिं० ग (प्रत्य०)] दे० 'सोऽहम्'। उ०—साधु सजे मिलि बैठे आई। वह बिधि भक्ति करो चित लाई। कहैं कबीर सुनो भइ साधो। वोहग सोहग शब्द अराधो।—कबीर (शब्द०)।

सोहंगम—पद [हिं० सोहग + म] दे० 'सोऽहम्'। उ०—फुरति सोहगम डेरि है, अग्र सोहगम नाम। सार शब्द टकसार है, कोइ विरले पावै नाम।—कबीर (शब्द०)।

सोहजि—सज्ञा पुं० [सं० सोहञ्जि] भागवत वर्णित कुतिभोज के एक पुत्र का नाम।

सोहँ(पु)‡—क्रि० वि० [हिं०] दे० 'सौंह'। उ०—सोहँहु भौंहन ऐंठति है कैसो तुम हिरदय। सुकवि लखी नहिं सुनी बात ऐसी कहुँ निरदय।—व्यास (शब्द०)।

सोहँग(पु)‡—पद [हिं० सोहग] दे० 'सोऽहम्'। उ०—जब नहिं पाँच अमी निर्माया, नहिं सोहँग विस्तारा।—कबीर म०, पृ० १६४।

सोहँगी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाग] १ तिलक चढ़ने के बाद की एक रस्म जिसमे लडकेवाले के यहाँ से लडकी के लिये कपडे, गहने, मिठाई, मेवे, फल, खिलौने, आदि सजाकर भेजे जाते हैं। उ०—अति उत्तम विचारि कै जोरी। भए मुदित सबधहि जोरी। भेज्यो तिलक दाम भरि बहँगी। तुमहु सुता हित साजहु सोहँगी।—(शब्द०)।

सोहगी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाग] १ दे० 'सोहँगी'। उ०—कदाचित् बारात वा सोहगी निकलने का समय है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ११९। २ सिंदूर, मेहदी आदि सुहाग की वस्तुएँ।

सोहगैला†—सज्ञा पुं० [हिं० सुहाग या सोहाग + ऐला (प्रत्य०)] [स्त्री० सोहगैली] लकडी की कगूरेदार डिबिया जिसमें विवाह के दिन सिंदूर भरकर देते हैं। सिंदूरा।

सोहड‡—सज्ञा, पुं० [सं० सुभट, प्रा० सुहड, राज० सोहड] दे० 'सुभट'। उ०—पिंगल बोलावा दिया, सोहड सो असवार।—ढोला०, दू० ५९७।

**सोहण**(पु)†—सज्ञा पुं० [सं० स्वप्न, प्रा० सोहण] दे० 'स्वप्न'। उ०—सोहण याई फर गया मइँ सर भरिया रोइ। आव सोहागण नीदडी वलि प्रिय देखूं सोइ।—ढोला०, दू० ५१०।

**सोहणा**†—सज्ञा पु० [स० स्वप्न, प्रा० सुहिणा] सपना। स्वप्न। उ०—(क) जउ सोहणो साचेइ होअइ सोहणो वडी वसत्त। —ढोला०, दू० ५०६।

**सोहदा**—सज्ञा पु० [फा० शुहदह्] दे० 'शोहदा'।

**सोहन**[1]—वि० [सं० शोभन, प्रा० सोहण] [वि० स्त्री० सोहनी] अच्छा लगनेवाला। सुदर। सुहावना। मनभावना। मनोहर। उ०—(क) तहँ मोहन सोहन राजत है। जिमि देखि मनोभव लाजत हैं। (ख) हीर जराऊ मुकुट सीस कचन को सोइन।—गोपाल (शब्द०)। (ग) चित चोरना विवि खभ वातक रतन डाँडी सोहनी।—नद० ग्र०, पृ० ३७५।

**सोहन**[2]—सज्ञा पुं० सुदर पुरुष। नायक। उ०—प्यारी की पीक कपोल मे पीके विलोकि सखीन हँसी उमडी सी। सोहन सोह न लोचन होत सुलोचन सुदरि जाति गडी सी।—देव (शब्द०)।

**सोहन**[3]—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक वडी चिडिया जिसका शिकार करते है।

**विशेष**—यह विहार, उडीसा, छोटा नागपुर और वगाल को छोड हिंदुस्तान मे सर्वत्र पाई जाती है। यह कीडे, मकोडे, अनाज, फल, घास के अकुर आदि सब कुछ खाती है। पूँछ से लेकर चोच तक इसकी लवाई डेढ हाथ तक होती है और वजन भी बहुत भारी, प्राय दस सेर तक, होता है। इसका मास बहुत स्वादिष्ट कहा जाता है।

**सोहन**[4]—सज्ञा पुं० एक वडा पेड जो मध्यभारत तथा दक्षिण के जगलो मे बहुत होता है।

**विशेष**—इसके हीर की लकडी बहुत कडी, मजबूत, चिकनी, टिकाऊ तथा ललाई लिए काले रग की होती है। यह मकानो मे लगती है तथा मेज, कुरसी आदि सजावट के सामान बनाने के काम मे आती है। सोहन शिशिर मे झाड पत्ते देनेवाला पेड है। इसे रोहन और सूमी भी कहते हैं।

**सोहन**[5]—सज्ञा पु० [फा० सोहान] एक प्रकार की बढइयो की रेती या रदा।

**यौ०**—तिकोनिया सोहन = तीन कोने की रेती।

**सोहन चिड़िया**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोहन + चिडिया] दे० 'सोहन'-३।

**सोहन पपड़ी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोहन + पपडी] एक प्रकार की मिठाई जो जमे हुए कतरो के रूप मे होती है।

**सोहन हलवा**—सज्ञा पुं० [हिं० सोहन + अ० हलवा] एक प्रकार की स्वादिष्ट मिठाई जो जमे हुए कतरो के रूप मे और घी से तर होती है।

**सोहना**[1]—क्रि० अ० [स० शोभन, प्रा० सोहण] १ शोभित होना। सुदरता के साथ होना। सजना। उ०—(क) नासिक कीर, कँवल मुख सोहा। पदमिनि रूप देखि जग मोहा।—जायसी (शब्द०)। (ख) काक पच्छ सिर सोहत नीके।—तुलसी (शब्द०)। (ग) रत्न जटित ककन वाजूवँद नगन मुद्रिका सोहै।—सूर (शब्द०)। (घ) सोहत ओढ़े पीत पट स्याम सलोने गात।—विहारी (शब्द०)। २. अच्छा लगना। उपयुक्त होना। फबना। जैसे,—(क) यह टोपी तुम्हारे सिर पर नही सोहती। (ख) ऐसी बातें तुम्हे नही सोहती। उ०—(क) यह पाप क्या हम लोगो को मोहता है।—प्रताप (शब्द०)। (ख) ऐसी नीति तुम्हैं नहिं सोहत।—गोपाल (शब्द०)।

**सोहना**†[2]—वि० [वि० स्त्री० सोहनी] १ सोहन। सुहावना। शोभायुक्त। उ०—को है सरद ससि मुख रहे लसि चपल नैना सोहना। —नद० ग्र०, पृ० ३७५। २ सुदर। मनोहर। जैसे,—सोहनी लकडी, सोहना बगीचा।

**सोहना**[1]—क्रि० स० [सं० शोधन, प्रा० सोहण] खेत मे उगी घास निकालकर अलग करना। निराना।

**सोहना**[2]—सज्ञा पुं० [फा० सोहान] कसेरो का एक नुकीला औजार जिससे वे घरिया या कुठाली मे, साँचे मे गली धातु गिराने के लिये, छेद करते है।

**सोहनाइत**†—सज्ञा पुं० [देशी] एक ओहदा या पद। उ०—गोसालिन माझिहे-रनाहे-मलिक्ह सोहनाइत महामालिक वोनओ, अगुआडी।—वर्ण०, पृ० २।

**सोहनी**[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शोधनी] १ झाड़। बुहारी। सरहट। २ खेत मे से उगी घास खोदकर निकालने की क्रिया। निराई।

**सोहनी**[2]—वि० स्त्री० [हिं० सोहना] सुदर। सुहावनी। मनभावनी। उ०—साँवरी सी रही सोहनी सूरवि हेरत को जुवती नहिं मोहैं?—सुदरीसर्वस्व (शब्द०)।

**सोहनी**[3]—सज्ञा स्त्री० सोहिनी नाम की रागिनी।

**सोहबत**—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ सग साथ। सगत। २ सभोग। स्त्री-प्रसग।

**सोहबती**—वि० [फा०] सगी। साथी। सोहवतवाला।

**सोहमस्मि**—पद [सं० स + अहम् + अस्मि, सोऽहमस्मि] दे० 'सोऽहमस्मि'। उ०—सोहमस्मि इति वृत्ति अखडा। दीप सिखा सोइ परम प्रचडा।—तुलसी (शब्द०)।

**सोहर**[1]—सज्ञा पुं० [स० सूतिगृह। हिं० सोहना, सोहला] १ एक प्रकार का मगलगीत जो स्त्रियाँ घर मे बच्चा पैदा होने पर गाती है। सोहला। उ०—रानि कौसिला ढोटा जायो रघुकुल कुमुद जुन्हैया। सोहर सोर मनोहर नोहर माचि रह्यौ चहुँ घैया।—रघुराज (शब्द०)। २ मागलिक गीत। उ०—कौसिल्यै सीतै करि आगे। चली अवध मदिर अनुरागे। सहसन सग सहचरी भावै। महामनोहर सोहर गावै।—रघुराज (शब्द०)।

**सोहर**[2]—सज्ञा स्त्री० [सं० सूतका, अथवा स० सूतिगृह, सूतागृह, प्रा० सुइहर, सूआहर] सूतिकागृह। सौड। सौरी।

**सोहर**[3]—सज्ञा स्त्री० [देश०] १ नाव के भीतर की पाटन या फर्श। २ नाव का पाल खीचने की रस्सी।

**सोहरना**†—क्रि० अ० [स० सु + √स्तृ > स्तर, स्तार] ऊपर से नीचे तक फैलकर लटकना। फैल जाना। फैलना। विस्तृत होना। जैसे,—पहिरे के आँटे न सोहरा जाय (लोकोक्ति)।

**सोहरा**(पु)†[1]—वि० [सं० शोभन] शोभायुक्त। उपयुक्त। अच्छा। उ०—लेखा देणाँ सोहरा, जे दिल साँचा होइ। उस वगे दीवान मैं पला न पकडै कोइ।—कबीर ग्र०, पृ० ४२।

**सोहरा**†[२]—वि० [सं० शोभिल, प्रा० सोहिर] शोभनेवाला। सुखी। उ०—दे इकोतरासई सवनि कौ ताही तें भये सोहरा। ऊँचौ महल रच्यौ अविनाशी तज्यौ परायौ नोहरा।—सुदर० ग्र०, भा० २, पृ० ९१४।

**सोहराना**[१]—क्रि० स० [हिं० सहलाना] दे० 'सहलाना'। उ०—कुचन्ह लिये तरवा सोहराई। भा जोगी कोउ सग न लाई।—जायसी (शब्द०)।

**सोहराना**†[२]—क्रि० स० [हिं० सोहराना] किसी वस्तु को फैलाना या नीचे तक लटकाना।

**सोहला**—सज्ञा पु० [हिं० सोहना] १ वह गीत जो घर मे बच्चा पैदा होने पर स्त्रियाँ गाती है। उ०—गौरि गनेस मनाऊँ हो देवी सारद तोहि। गाऊँ हरि जू को सोहलो मन और न आवै मोहि।—सूर (शब्द०)। २ मागलिक गीत। उ०—डोमनियो के रूप मे सारगियाँ छेड छेड सोहले गावो।—इशाअल्ला (शब्द०)। ३ किसी देवी देवता की पूजा मे गाने का गीत। जैसे,—माता के सोहले।

**सोहलो**†—सज्ञा पुं० [अ० सुहैल] तारा की आकृति का ललाट पर पहनने का एक आभूषण। उ०—भुमुहाँ ऊपर सोहलो, परि ठिउ जाँण क चग। ढोला एही मारुवी, नव नेही नव रग। ढोला०, दू० ४६५।

**सोहाइन**Ⓤ‡—वि० [हिं०] दे० 'सुहावना'। उ०—सँग गाउँ को गोधन ले सिगरो रघुनाथ भरे मन चाइन मे। नहिं जानि ये जात रहे कितको वन भीतर कुज सोहाइन मे।—रघुनाथ (शब्द०)।

**सोहाई**Ⓤ[१]—वि० स्त्री० [हिं० सोहाना का कृदत रूप] दे० 'सोहाया'।

**सोहाई**†[२]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोहना] १ खेत मे उगी घास निकालने का काम। निराई। २ इस काम की मजदूरी।

**सोहाओन**‡—वि० [हिं० सुहावन, सोहावन] [वि० स्त्री० सोहाउनी] दे० 'सुहावन'। उ०—(क) अछल सोहाओन कितए गेल, भूसन कएले दूसन भेल।—विद्यापति, पृ० ३१७। (ख) विरह सोस भेले भल हो अधर देले रोप सुहाउनि छाया।—विद्यापति, पृ० २२५।

**सोहाग**†[१]—सज्ञा पुं० [स० सौभाग्य, प्रा० सोहग्ग] १ दे० 'सुहाग'। उ०—(क) धाइ सो पूछति बातैं विनै की सखीनि सो सीखै सोहाग को रीतहिं।—देव (शब्द०)। (ख) लागि लागि पग सवनि सिय भेटति अति अनुराग। हृदय असीसहिं प्रेमबस रहिहहु भरी सोहाग।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—देना।—लेना। उ०—तुम तो ऐसा धमकाते हो जैसे हम राजा साहब के हाथो बिक गए हो। रानी रूठेगी, अपना सोहाग लेंगी। अपनी नौकरी ही न लेगे, ले जायँ।—काया०, पृ० २२२।

२ एक प्रकार का मागलिक गीत। उ०—गावत सबै सोहाग छबीली मिलि सब बृज की बाम।—भारतेदु ग्र०, भा० २, पृ० ४४४।

**सोहाग**[२] सज्ञा पु० [हिं० सुहागा] दे० 'सुहागा'।

**सोहाग**[३]—सज्ञा पु० [देश०, तुल० स० सौभाग्य] मझोले आकार का एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष।

विशेष—इस वृक्ष के पत्ते बहुत लबे लबे होते हैं। यह आसाम, बगाल, दक्षिणी भारत और लका मे पाया जाता है। इसके बीजो से एक प्रकार का तेल निकलता है जो जलाया और औषधि के रूप मे काम मे लाया जाता है। इसे हीरन हर्रा भी कहते है।

२ एक प्रकार का नमकीन पक्वान्न। दे० 'सुहाल'।

**सोहागा**[१]—सज्ञा पुं० [सं० समभाग, प्रा० सवँहाग] जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। मैंडा। हेगा।

**सोहागा**[२]—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सुहागा'। उ०—कहि सन भाउ भएउ कँठलागू। जनु कचन मो मिला सोहागू।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० ३३४।

**सोहागिन**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुहागिन] दे० 'सुहागिन'। उ०—अति सप्रेम सिय पायँ परि बहु विधि देहिं असीस। सदा सोहागिनि होहु तुम्ह जब लग महि अहि सीस।—तुलसी (शब्द०)।

**सोहागिल**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाग + इल (प्रत्य०)] दे० 'सुहागिन'। उ०—सिय पद सुमिरि सुतीय पहि तस गुन मगल जानु। स्वामि सोहागिल भागु बड पुत्र काजु कल्यानु।—तुलसी (शब्द०)।

**सोहाता**—वि० [हिं० सोहना] [वि० स्त्री० सोहाती] सुहावना। शोभित। सुदर। अच्छा। उ०—माधुरी मूरत देखे बिना पद्माकर लागै न भूमि सोहाती।—पद्माकर (शब्द०)।

**सोहान**—सज्ञा पुं० [फा०] रेतने का औजार। रेती [को०]।

**सोहाना**[१]—क्रि० अ० [स० शोभन, प्रा० सोहण] १ शोभित होना। शोभायमान होना। सुदरता के साथ होना। सजना। उ०—(क) आवहिं झुड सो पाँतिहि पाँती। गवन सोहाइ सो भाँतिहि भाँती।—जायसी (शब्द०)। (ख) गोरे गात कपोल पर अलक अडोल सोहाय।—मुबारक (शब्द०)। (ग) बन उपबन सर सरित सोहाए।—तुलसी (शब्द०)। २ रुचिकर होना। अच्छा लगना। प्रिय लगना। रुचना। जैसे,—तुम्हारी बातें हमे नहीं सोहाती। उ०—(क) भएउ हुलास नवल ऋतु माहाँ। खन न सोहाइ धूप औ छाहाँ।—जायसी (शब्द०)। (ख) पिय बिनु मनहिं अटरिया मोहि न सोहाइ।—रहीम (शब्द०)। (ग) राम सोहाता तोहि तौ तू सबहिं सोहातो।—तुलसी (शब्द०)।

**सोहाना**[२]—सज्ञा पुं० वि० सुहावना। सुदर। मनोहर। उ०—साहि तनै सिव साहि निसा मैं निसाँक लियो गढ सिंह सोहानो।—भूषण ग्र०, पृ० ७२।

**सोहाया**—वि० [हिं० सोहाना का कृदत रूप] [वि० स्त्री० सोहाई] शोभित। शोभायमान। सुदर। उ०—(क) सरद सोहाई आई राति। दस दिसि फूलि रही बनजाति।—सूर (शब्द०)। (ख) एहि प्रकार बल मनहिं देखाई। करिहउँ रघुपति कथा सोहाई।—तुलसी (शब्द०)।

**सोहायो**Ⓤ†—वि० [हिं० सोहाया] दे० 'सोहाया'।

**सोहारद**Ⓤ‡—सज्ञा पुं० [सं० सौहार्द] दे० 'सौहार्द'।

सोहारी†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाना (=रुचना) अथवा स० सु+√ स्तृ>स्तर, स्तार] पूरी। उ०—(क) मोती चूर मूर के मोदक ओदक की उजियारी जी। ममई सेव सैंजना सूरन सोवा सरस सोहारी जी।—विश्राम (शब्द०)। (ख) लुचुई पूरि सोहारी परी। एक ताती औ सुठि कोवरी।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० ३१३।

सोहाल—सज्ञा पु० [हिं० सुहाल] दे० 'सुहाल'।

सोहाली[1]—सज्ञा स्त्री० [सं० शोभावलि ?] ऊपर के दाँतो का मसूडा। ऊपरी दाँतो के निकलने की जगह।

सोहाली[2]†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुहारी] दे० 'सुहारी'।

सोहावन(पु)†—वि० [हिं० सुहावना] दे० 'सुहावना'। उ०—(क) दडक वनु प्रभु कीन्ह सोहावन। जनमन अमिति नाम किय पावन।—तुलसी (शब्द०)। (ख) कुहकहि मोर सोहावन लागा। होइ कुराहर बोलहि कागा।—जायसी ग्र०, पृ० ११।

सोहावना[1]—वि० [हिं० सुहावना] दे० 'सुहावना'।

सोहावना[2]—क्रि० अ० [स० शोभन] दे० 'सोहाना'। उ०—(क) कज्जल सो रग मोहै सज्जल जलद जोहि उज्जल बरन वर रदन सोहावने।—गोपाल (शब्द०)। (ख) वीर लै कमान हाथ मोद सा फिरावते। गावते बजावते सोहावते देखावते।—गोपाल (शब्द०)।

सोहासित(पु)—वि० [सं० सुभाषित (=सुदर वचन), अथवा हिं० सोहाना (=रुचना)] १ प्रिय लगनेवाला। रुचिकर। २ ठकुरसोहाती। उ०—राजमूय ह्वैहै नहिं तेरी। मानहु हस वात सति मेरी। वैसे कहौ सोहासित भाखै। पै मन महँ सका हठि राखै।—रघुराज (शब्द०)।

सोहि†—क्रि० वि० [हिं० सौह] दे० 'सौह'। उ०—वेदवती दशशीश ते कहयौ रहै मैं तोहि। तव पुर पैठि विनाशिहै। हेतु गई तेहि सोहि।—विश्राम (शब्द०)।

सोहिण, सोहीण(पु)†—सज्ञा पुं० [स० स्वप्न, प्रा० सुहिण, सोहण] स्वप्न। उ०—जो हूँ सोहोणइँ जाणतो साँच।—बी० रासा०, पृ० ६५।

सोहिनी[1]—वि० स्त्री० [हिं० सोहना] सुहावनी। शोभायमान सुदर। उ०—सग लोने वहु अच्छोहिनी। गज रथ तुरगन्ह सोहिनी।—गोपाल (शब्द०)।

सोहिनी[2]—सज्ञा स्त्री० करुण रस की एक रागिनी।

विशेष—यह पाडव जाति की है और इसमे पचम वर्जित है। कोई इसे भैरो राग की और कोई मेघ राग की पुत्रवधू मानते हैं। हनुमत के अनुसार यह मालकोस राग की पत्नी है। इसके गाने का समय रात्रि २६ दड से २९ दड तक है।

सोहिनी[3]—सज्ञा स्त्री० [स० शोधनी] झाडू। बुहारी।

सोहिल—सज्ञा पुं० [अ० सुहैल] एक तारा जो चदमा के पास दिखाई पडता है। अगस्त्य तारा। उ०—(क) हीर फूल पहिरे उजियारा। जनहु मरद ससि सोहिल तारा।—जायसी (शब्द०)। (ख) सोहिल सरिस उवौ रन माही। कटक घटा जेहि पाइ उडाही।—जायसी (शब्द०)।

सोहिल।—सज्ञा पु० [हिं० सोहला] दे० 'सोहला'। उ०—(क) आजु इद्र अछरी सौ मिला। सब कैलास होहि सोहिला।—जायसी (शब्द०)। (ख) सहेली सुनु सोहिलो रे।—तुलसी (शब्द०)। (ग) सदन सदन शुभ सोहिलो सुहावनी तें गाइ उठी भाइ उठी क्षण क्षिति छै गए।—रघुराज (शब्द०)। (घ) सुख सोहिले मनाउँ सदा। या व्रज यह आनद सपदा।—घनानद, पृ० ३०३।

सोही—क्रि० वि० [स० सम्मुख, प्रा० सम्मुह, हिं० सौह] सामने। आगे। उ०—उग्रसन का स्वरूप वन रानी के सोही जा बोला—तू मुझसे मिल।—लल्लू (शब्द०)।

सोहै(पु)†[1]—क्रि० वि० [हिं० सौह] दे० 'सौह', 'सौहैं'।

सोहैं(पु)†[2]—क्रि० वि० [सं० सम्मुख, प्रा० सम्मुह, हिं० सौहें] सामने। आगे। उ०—घूँघट मे सुसकै भरै सासै ससै मुख नाहके सोहैं न खोलै।—बेनी (शब्द०)।

सोहौटी—सज्ञा स्त्री० [देश०] ६ या ७ इच चौडी एक लकडी जो 'अपती' के सामने 'लेवा' के नीचे नाव की लवाई मे लगाई जाती है। (मल्लाह)।

सौदर्ज—सज्ञा पुं० [स० सौन्दर्य] दे० 'सौदर्य'। उ०—नयन कमल कल कुडल काना। वदन सकल सौदर्ज निधाना।—तुलसी (शब्द०)।

सौदर्य, सौदर्य्य—सज्ञा पुं० [स० सौन्दर्य, सौन्दर्य्य] सुदर होने का भाव या धर्म। सुदरता। रमणीयता। खूबसूरती। जैसे,—युवती का सौंदर्य, नगर का सौदर्य। उ०—उज्वल वरदान चेतना का, सौदर्य जिसे सब कहते हैं।—कामायनी, पृ० १०२।

यौ०—सौदर्यगर्विता=अपने सौंदर्य के गर्व से भरी हुई। जिसे अपनी सुदरता का अभिमान हो (स्त्री)। उ०—सौंदर्यगर्विता सरिता के अति विस्तृत वक्षस्थल मे।—अपरा, पृ० १४। सौदर्यप्रिय=जिसे सौंदर्य प्रिय हो। सौदर्यप्रेम=रमणीयता के प्रति अनुराग।

सौदर्यता—सज्ञा स्त्री० [स० सौन्दर्य+ता (प्रत्य०)] सुदरता। रमणीयता। खूबसूरती। उ०—उस समय की सौंदर्यता का क्या पूछना।—अयोध्यासिंह (शब्द०)।

विशेष—व्याकरण के नियम से 'सौंदर्यता' शब्द अशुद्ध है। शुद्ध रूप सौदर्य या सुदरता ही है।

सौदर्यबोध—सज्ञा पु० [सं० सौन्दर्यबोध] दे० 'सौदर्यानुभूति'। उ०—रवीद्र तथा सरोजनी नायडू की कविताओ से उनके भीतर एक नवीन प्रकार के अस्पष्ट सौदर्यबोध तथा माधुर्य का जन्म हुआ।—युगात, पृ० (ड)।

सौदर्यवाद—सज्ञा पुं० [सं० सौन्दर्य+वाद] वह साहित्यिक विधा जिसमे प्रकृतिसौदर्य को प्रमुखता दी गई हो। उ०—पत जी का सौदर्यवाद ही उनके प्रारभिक रचनाकाल मे उन्हें व्याकरण की कडियाँ तोडने के लिये वाध्य करता रहा है।—हिं० का० प्र०, पृ० २११।

**सौंदर्यशास्त्र**—संज्ञा पु० [सं० सौन्दर्य+शास्त्र] सौदर्यसबधी शास्त्र। (अ० एइन्थेटिक्स)। उ०—कुछ दिन पहले जब विदेश के सौदर्यशास्त्र का छायाप्रभाव हिंदी पर पडा।—आचार्य०, पृ० १३२।

**सौंदर्यानुभूति**—संज्ञा स्त्री० [सं० सौन्दर्यानुभूति] प्राकृतिक सुदरता के अवलोकन एव विवेचन से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान या अनुभव। उ०—वह अपनी सौदर्यानुभूति को बरबस कविता का रूप प्रदान कर देता है।—हिं० का० प्र०, पृ० ११५।

**सौं**ʊ**'**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंह] दे० 'सौंह'। उ०—(क) सु दर स्याम हँसत सजनी सो नद बबा की सौं री।—सूर (शब्द०)। (ख) बाभन की सौं बबा की सौं मोहन मोह गऊ की सौं गोरस की सौं।—देव (शब्द०)। (ग) मारे लात तोरे गात भागे जात हा हा खात कहै तुलसी सराषि राम की सौं टेरि कै।—तुलसी (शब्द०)।

**सौं**[२]—अव्य० [हिं०] दे० 'सा' या 'सा'। उ०—याही तै यह आदरै जगत माँहि सब कोइ। बोले जबै बुलाइए अनबोले चुप होइ। हुक्का हौं कहु कौन पै जात निबाहौ साथ। जाकी स्वासा रहत है लगी स्वास के साथ।—रसनिधि (शब्द०)।

**सौं**[१]—प्रत्य० [हिं०] दे० 'सा' या 'से' उ०—लै बाम बाहुबल ताहि राखत कठ सौं खसि खसि परै। तिमि धरे दक्षिन बाहु कोहूँ गोद मे बिच लै गिरै।—हरिश्चद्र (शब्द०)।

**सौंकारा, सौंकेरा**†—संज्ञा पुं० [सं० सकाल] प्रात काल। सबेरा। तडका।

**सौंकेरे**‡ क्रि० वि० [स० सकाल या सु+काल, पु० हिं० सकारे] १ तडके। सबेरे। २ समय से कुछ पहले। जल्दी।

**सौंघा**[१]—वि० [सं० सु+अर्घ] सस्ता।

**सौंघा**†[२]—वि० [स० सुगन्धित] सुगध युक्त। उ०—केसर सौंघे बसन, सकल उमरावन सज्जे।—ह० रासो, पृ० १२५।

**सौंघाई**—संज्ञा स्त्री० [स० समर्घता या हिं० सौंघा ?] अधिकता। बहुतायत। ज्यादती। उ०—काक कक लेइ भुजा उडाही। एक ते छीन एक लेइ खाही। एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई। सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई।—तुलसी (शब्द०)।

**सौंधी**—वि० [सं० सुभग] १ अच्छा। उ०—जौ चितवति सौंधी लगै चितइऐ सबेरे। तुलसीदास अपनाइऐ कीजै न ढील अब जीवन नित नेरे।—तुलसी (शब्द०)। २ उचित। ठीक।

**सौंचन**†—संज्ञा स्त्री० [सं० शौच] मलत्याग। शौच।

**सौंचना**†—क्रि० स० [सं० शौच] १ शौच करना। मलत्याग करना। २ मल त्याग के उपरात हाथ पैर आदि धोना।

**सौंचर**—संज्ञा पु० [स० सौवर्चल] दे० 'सोंचर नमक'। उ०—सज्जी सौंचर सैंधव सोरा। साँखाहूली सीप सकोरा।—सूदन (शब्द०)।

**सौंचर नमक**—संज्ञा पुं० [हिं० सौंचर+नमक] दे० 'सोंचर नमक'।

**सौंचाना**—क्रि० स० [हिं० सौंचना का प्रे० रूप] शौच कराना। मलत्याग कराना। हगाना। उ०—काची रोटी कुच कुची परती माछी वार। फूहर वही सँराहिए परसत टपकै लार। परसत टपकै लार झपटि लरिका सौंचावे। चूतर पोछै हाथ दोऊ कर सिर खजुवावै।—गिरिधर (शब्द०)।

**सौंज**ʊ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंज] दे० 'सौंज'। उ०—(क) हरि को दर्शन करि सुख पायो पूजा बहु विधि कीन्ही। अति आनद भए तन मन मे सौंज बहुत विधि दीन्ही।—सूर (शब्द०)। (ख) आए नाथ द्वारका नीके रच्यो माँडयो छाय। ब्याह केलि विधि रची सकल सुख सौंज गनी नहिं जाय।—सूर (शब्द०)। (ग) बिनती करत गोविंद गोसाईं। दै सब सौंज अनत लोक पति निपट रक की नाईं।—सूर (शब्द०)।

**सौंजाई**ʊ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंज+आई (प्रत्य०)] सौंज। सामग्री। उ०—स्याम भजन बिनु कौन बडाई ? बल, बिद्या, धन, धाम, रूप गुन और सकल मिथ्या सौजाई।—सूर०, १ २४।

**सौंड, सौंड़ा**†—संज्ञा पुं० [हिं० सोना+ओढना या स० शुण्ड (=सूँड की तरह लबा या भारी)] ओढने का भारी कपडा। जैसे,—रजाई, लिहाफ आदि।

**सौंडी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सौण्डी] पीपल। पिप्पली। शौडी।

**सौंण**†—संज्ञा पुं० [स० शकुन, प्रा० सउण, हिं० सगुन] शकुन। शुभ।

मु०—सौंण बँदाना=शकुन बदाना। एक रीति जिसमे सबेरे कोई पक्षी (नीलकठ आदि) लेकर सामने आते है। उ०—एक बासउँ औ (र) बाटइ बसउँ। उठी प्रभाते सौंण बदाई।—बी० रासो, पृ० १३।

**सौंतना**ʊ†—क्रि० स० [स० समावर्तन, प्रा० समावट्टण] १ जमा करना। इकट्ठा या सचित करना। २ तलवार आदि को म्यान से बाहर खीचना। दे० 'सैंतना'।

**सौंतुख**ʊ[१]—संज्ञा पु० [स० सम्मख] प्रत्यक्ष। समुख। उ०—दृग भौंर से ह्वै कै चकोर भए जेहि ठौर पै पायो बडो सुख है। लहरैं उठैं सौरभ की सुखदा मच्यो पूर्यो प्रकास चहूँ रुख है। ठगि से रहे सेवक स्याम लखे सपनो है किधौं यह सौंतुख है। बन अबर मे अरबिंद किधौ सुचि इदु कै राधिका को मुख है।

**सौंतुख**[२]—क्रि० वि० आँखो के आगे। प्रत्यक्ष। सामने। उ०—तेरी परतीति न परत अब सौंतुख हू छयल छबीले मेरी छुवै जनि छहियाँ। राति सपने मै जनु बैठि मैं सदन सूने मदन गोपाल, तुम गहि लीन्ही बहियाँ।—तोप (शब्द०)। (ख) मकु तुव भाग जागि कै जाई। सौंतुख हाथ चढ कहुँ आई।—चित्रा०, पृ० ५६।

**सौंदन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंदना] धोबियो का वह कृत्य जिसमे वे कपडो को धोने से पहले रेह मिले पानी मे भिगोते है। उ०—नैहर मे दाग लगाय आइ चुनरी। मन को कूँडी ज्ञान को सौंदन साबुन महँग बिचाय या नगरी।—कबीर० श०, भा० १, पृ० २३।

**सौंदना**—क्रि० स० [स० सन्धम् (=मिलना)] आपस मे मिलाना। सानना। ओतप्रोत करना। आप्लावित करना। उ०—(क)

ये उस अज्ञता के कीचड के बाहर न होगे, दक्षिणा के लोभ से उसी मे सौंदे पडे रहेंगे।—बालकृष्ण (शब्द०)। (ख) सत-सगत मे सौंद ज्ञान सवुन दीजै।—पलटू० बा०, पृ० १३।

**सौंघ(पु)[1]**—सज्ञा पुं० [स० सौध] दे० 'सौध'। उ०—(क) नृप सध्या विधि वदि राग वारुणी अधर रचि, मदिर गयो अनदि खड सांतये सौंध पर।—गुमान (शब्द०)। (ख) एक महातरु हेरि वहेरो। सौंध ममीप रहै नल केरो।—गुमान (शब्द०)।

**सौंघ[2]**—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्ध] सुगध। खुशबू। उ०—सौंध सी सनियै लसै विच वीच मोतिन की कली।—गुमान (शब्द०)।

**सौंघना[1]**—क्रि० स० [हिं० सौंदना] दे० 'सौंदना'।

**सौंघना[1]**—क्रि० स० [स० सुगन्ध, प्रा० सुअध, पु०हिं० सौंध+हिं० ना (प्रत्य०)] सुगधित करना। सुवासित करना। वासना।

**सौंघा[1]**—सज्ञा पु० [स० सुगन्ध, प्रा० सुअध] दे० 'सौंधा'। उ०—(क) सौंधे की सी सौंधी देह सुधा सों सुधारी पांवधारी देव-लोक ते कि सिंध ते उवारी सी।—केशव (शब्द०)। (ख) कचुकी चोवा के सौंधे सों बोरि कै स्याम सुगधन देह भरी है।—पद्माकर (शब्द०)। (ग) सौंधे सनी सुथरी बियुरी अलकै हरि के उर आली।—बेनी (शब्द०)। (घ) गधी को सौंधो नही, जन जन हाथ विकाय।—नद० ग्र०, पृ० १३३। (ङ) तिल तालिव गुल पीर मिलि सुहवति सौंधा होय।—रज्जब०, पृ० ८।

**सौंधा[1]**—वि० १ दे० 'सोंधा'। उ०—सुठि सौंधे औवर्न, जनक सुख युक्त घरी के। सकल मनोहरता वारे प्यारे सवही के।—श्रीधर (शब्द०)। २ रुचिकर। अच्छा। उ०—जौ चितवन सौंधी लगै चितइए सबेरे।—तुलसी (शब्द०)।

**सौंनमक्खि(पु), सौंनमक्खी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोनामक्खी सं० स्वर्ण-मक्षिका] दे० 'सोनामक्खी'। उ०—सौनमक्खि सखिया सुहागा। सूल सम्हालू सवरस सागा।—सूदन (शब्द०)।

**सौंनी**—सज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण] स्वर्णकार। सुनार।

**सौंपना**—क्रि० स० [सं० समर्पण, प्रा० सउप्पण] १ किसी व्यक्ति या वस्तु को दूसरे के अधिकार मे करना। सुपुर्द करना। हवाले करना। जिम्मे करना। समर्पण करना। जैसे,—(क) मैं इस लडके को तुम्हे सौंपता हूँ, इसे तुम अपनी देखभाल मे रखना। (ख) सरकार ने उन्हें एक महत्व का काम सौंपा। (ग) जहाँ लडके ने होश सँभाला, बाप ने उसे अपना घर सौंपा। (घ) लोगो ने उसे पकडकर पुलिस को सौंप दिया। उ०—(क) चितचोरन कर सौंप चित अब काहे पछताइ।—रसनिधि (शब्द०)। (ख) जब लग सीस न सौंपिए तब लग इस्क न होइ।—दादू (शब्द०)। (ग) सो सौंपि सुत को राज नृप तप करन हिमगिरि कौं गए।—पदमाकर (शब्द०)। (घ) उन हरकी हँसि कै उतै इन सौंपी मुसकाय। नैन मिले मन मिलि गयो दोऊ मिलवत गाय।—विहारी (शब्द०)। (च) सौंपे भूप रिपिहि सुत बहु विधि देइ असीस। जननी भवन गए प्रभु, चले नाइ पद सीस।—तुलसी (शब्द०)। (छ) चचल चरित्र चित चेटिकी चेटका गायो चोरी कै चितन अभि-सार सौंपियतु है।—केशव (शब्द०)। (ज) स्याम विना ये चरित करै को यह कहि क तनु सौंपि दई।—सूर (शब्द०)।

क्रि० प्र०—देना।

२ सहेजना।

**सौंफ**—सज्ञा स्त्री० [सं० शतपुष्पा] १ औषध और मसाले आदि मे प्रयुक्त होनेवाला पाँच छह फुट ऊँचा एक पौधा और उसके फल जिसकी खेती भारत मे सर्वत्र होती है।

**विशेष**—इस पौधे की पत्तियाँ सोए की पत्तियो के समान ही बहुत बारीक और फूल सोए के समान ही कुछ पीले होते हैं। फूल लबे सीको मे गुच्छो के रूप मे लगते है। फल जीरे के समान पर कुछ बडे और पीले रग के होते है। कार्तिक महीने मे इसके बीज बो दिए जाते हैं और पाँच सात दिन मे ही अकुरित हो जाते है। माघ मे फूल और फागुन मे फल लग जाते हैं। फागुन के अत या चैत के पहले पखवाडे तक, फलो के पकने पर मजरी काटकर धूप मे सुखा और पीटकर बीज अलग कर लेते हैं। यही बीज सौंफ कहलाते हैं। सौंफ स्वाद मे तेजी लिए मीठी होती है। औषध के अतिरिक्त मसाले मे भी इसका व्यवहार करते हैं। इसका अर्क और तेल भी निकाला जाता है जो औषध और सुगधि के काम मे आता है। वैद्यक मे यह चरपरी, कडुवी, मधुर, गर्भदायक, विरेचक, वीर्यजनक, अग्निदीपक, तथा वात, ज्वर, दाह, तृष्णा, व्रण, अतिसार, आम तथा नेत्ररोग को दूर करनेवाली मानी गई है। इसका अर्क शीतल, रुचिकर, चरपरा, अग्निदीपक, पाचक, मधुर तथा तृषा, वमन, पित्त और दाह का शमन करनेवाला कहा गया है।

**पर्या०**—शतपुष्पा। मधुरिका। माधुरी। मिता। मिश्रेया। मधुरा। सुगधा। तृषाहरी। शतपत्रिका। वनपुष्पा। माधवी। छत्रा। भूरिपुष्पा। तापसप्रिया। घोषवती। शीतशिवा। तालपर्णी। मगल्या। सघातपत्रिका। अवाक्पुष्पी।

२ सौंफ की तरह का एक प्रकार का जगली पौधा जो कश्मीर मे अधिकता से पाया जाता है।

**विशेष**—इस पौधे की पत्तियाँ और फूल सौंफ के समान ही होते हैं। फल झुमको मे चौथाई से तीन चौथाई इच तक के घेरे मे होते हैं। बीज गोल और कुछ चिपटे से होते हैं। हकीम लोग इसका व्यवहार करते है। इसे बडी सौंफ, मौरी, मेउडी या मौडी भी कहते है।

**सौंफिया[1]**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौंफ+इया (प्रत्य०)] सौंफ की बनी हुई शराब। २ एक प्रकार की बीडी।

**सौंफिया[2]**—वि० सौंफ के सुगध या योग से युक्त।

**सौंफी[1]**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौंफ] वह शराब जो सौंफ से बनाई जाती है। सौंफिया। २ एक तरह की बीडी जिसमे सौंफ सी सुगध रहती है।

**सौंफी[2]**—वि० सौंफ के सुगध या योग मे युक्त।

**सौंभरि(पु)[1]**—सज्ञा पुं० [स० सौभरि] दे० 'सौभरि'। उ०—वृदावन महँ मुनि रहे सौंभरि सो जल माँहु। अयुत अब्द अति तप

कियो भख विहार लखि ताहँ । करि इच्छा विवाह कहँ कीन्हा । शतमधात सुता कहँ लीन्ह ।—गिरिधर (शब्द०) ।

सौंभरि(पु)² क्रि० वि० [सं० सम्भृत] (किसी से) भरी हुई । उ०—मन के सकल मनोरथ पूरन, सौंभरि भार नई। सूरदास फल गिरिधर नागर, मिलि रस रीति ठई । सूर०, १०।१७६२ ।

सौमुँह(पु)† अव्य० [सं० सम्मुख, प्रा० सउमुंह] दे० 'सम्मुख' । उ०—जैसें देखा सपन सब, सौंमुह पाए चीन्ह । कुँअर कहा सब सुबुधि सों, जस कौतुक विधि कीन्ह ।—चित्रा०, पृ० ४० ।

सौर¹—संज्ञा पुं० [हिं० सोरी] मिट्टी के बरतन, भाँडे आदि जो संतानोत्पत्ति के दसवें दिन (अर्थात् सूतक हटने पर) तोड दिए जाते है ।

सौर²—संज्ञा स्त्री० दे० 'सोरी' ।

सौंरई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँवरा] साँवलापन । उ०—पीत पट छाँह प्रकटत मुख माँह सौंरई को भाव मोहन मोरि झलकाइयतु है । —देव (शब्द०) ।

सौंरना(पु)¹—क्रि० स० [सं० स्मरण, हिं० सुमरना] स्मरण करना । चिंतन करना । ध्यान करना । उ०—(क) सोइ अन्न तोडो भेजि लाखन जेवाँये सत सौंरि भगवत नहिं अतता को खैं गयो ।—रघुराज (शब्द०) । (ख) श्री हरि गुरुपद पकज सौंरी । सैन्य सहित वृदावन ओरी ।—रघुराज (शब्द०) । २ याद करना । स्मरण करना । उ०—कहा कहौ कछु कही न जाई । हिय सौंरत बुधि जाइ हेराई ।—चित्रा०, पृ० ४० ।

सौंरना²—क्रि० अ० [हिं० सँवरना] दे० 'सँवरना' ।

सौंरा(पु)—वि० [सं० श्यामल] साँवला ।

सौंसार(पु)‡—संज्ञा पुं० [स० ससार] दे० 'ससार' । उ०—(क) सौंसार मडल सारा मार चलाया। गरीब निवाज रघुराज मैं पाया ।—दक्खिनी०, पृ० १३५ । (ख) हमा जाय मिले करतारा । बहुरि न आवहि एहि सौंसारा ।—सत० दरिया, पृ० ६४ ।

सौंसे‡—वि० [सं० समस्त] सब । कुल । पूरा । तमाम । (पू०हिं०) ।

सौंह(पु)†¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौगद] सौगद । शपथ । कसम । किरिया । उ०—(क) जो कहिए घर दूरि तुम्हारे बोलत सुनिए टेर । तुमहिं सौंह वृषभानु बबा की प्रात साँझ एक फेर । —सूर (शब्द०) । (ख) तुलसी न तुम्ह सों राम प्रीतम कहत हौ सौंहे किए । परिनाम मगल जानि अपने आनिए धीरज हिए ।—तुलसी (शब्द०) । (ग) जब जब होत भेंट मेरी भटू तब तब ऐसी सौंहैं दिन उठि खाति न अघाति है ।—केशव । (घ) धमहि की कर सौंह कहौं हौ । तुव सुख चाहि न और चहौ हौं ।—पद्माकर (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—करना ।—खाना ।—देना ।—लेना ।

सौंह²—संज्ञा पुं० [स० सम्मुख, प्रा० सम्मुह] समुख । सामने । समक्ष । उ०—(क) लरत सौंह जो आय निधनु तेहि करत सधनु कर ।—गोपाल (शब्द०) । (ख) गहत धनुष अरि बहुत त्रास तें पास रहत नहिं । महत गर्व जो सहत सौंह सर दहत तहिं तहिं ।—गोपाल (शब्द०) ।

सौंह¹—क्रि० वि० सामने । समुख । उ०—(क) कपट नतर भौंहें करी मुख सनगैहें बैन । सहज हँसौंह जानि कै सौंहे करति न नैन ।—बिहारी (शब्द०) । (ख) सही रगीलें रति जगें जगी पगी सुख चैन । अलसौंहे सौ है किऐं कहैं हँसौंहें नैन । —बिहारी र०, दो० ५११ । (ग) प्रेमक लुबुध पियादे पाऊँ । ताकै सोह चलै कर ठाऊँ । —जायसी (शब्द०) ।

सौंहन—संज्ञा पुं० [फा० सोहान, हिं० सोहन] दे० 'सोहन' । उ०—कुदरा खुरपा बेल गुल सफा छुरा कतरनी । नहनी सौंहन परी डरी बहु भरना भरनी ।—सूदन (शब्द०) ।

सौंही¹—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का हथियार । उ०—यह सौंही केहि देशहि केरी । कह नृप अहै फिरग करेरी । सुनतहुँ नरपति मन मुसक्याई । सौंही दै बाणी यह गाई । तुव हथियारहि केवल तरै । सदा रहै हम बिन अवसरै ।—बघेलवश० (शब्द०) ।

सौंही²—क्रि० वि० दे० 'सौंह' । उ०—आठौ सिद्धि जहाँ कर जोरैं । सौंही ताकैं मुख नहिं मोरैं ।—चरण० बानी०, पृ० ६२ ।

सौ¹—वि० [सं० शत] जो गिनती मे पचास का दूना हो । नब्बे और दस । शत । २. †सख्या मे अधिक । बहुत ।

सौ²—संज्ञा पुं० नब्बे और दस की सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१०० ।

मुहा०—सौ बात की एक बात = सारांश । तात्पर्य । निष्कर्ष । निचोड । उ०—(क) सौ बातन की एकै बात । सब तजि भजो जानकीनाथ ।—सूर (शब्द०) । (ख) सौ बातन की एकै बात । हरि हरि हरि सुमिरहु दिन राति ।—सूर (शब्द०) । सौ की सीधी एक = सारांश । सब का सार । निचोड । उ०—रोम रोम जीभ पाय कहै तो कह्यो न जाय, जानत ब्रजेश सब मर्दन मथन के । सूधी यह बात जानो गिरधर ते बखानो सौ कि सीधी एक यही दायक चयन के ।—गिरधर (शब्द०) । सौ का सवाया = पचीस प्रतिशत मुनाफा । सौ कोस भागना = एक दम दूर रहना । अलग रहना । सौ जान से आशिक, कुर्बान या फिदा होना = अत्यत प्रेम करना या मुग्ध होना । पूरी तरह मुग्ध होना । उ०—और उसकी चटक मटक पर हमारा हिंदोस्तान सौ जान से कुर्बान है ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २५६ । सौ सौ बार = बहुत बार । अनगिनत मर्तबा । उ०—जो निगुरा सुमिरन करै, दिन मैं सौ सौ बार । नगर नायका सत करै, जरै कौन की लार ।—कबीर सा० स०, भा० १, पृ० १७ ।

सौ(पु)³—वि० [सं० सम (=समान) प्रा० सउ], दे० 'सा' । उ०—(क) हे सुंदरी तेरो सुकृत मेरो ही सौ हीन ।—लक्ष्मण (शब्द०) । (ख) वर वीरन जुद्ध इतौ सँपज्यौ, तिहि ठौर भयानक सौ उपज्यौ ।—पृ० रा०, २४।१६६ ।

सौक¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] किसी स्त्री के पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका । किसी स्त्री की प्रेमप्रतिद्वद्विनी । सौत । सपत्नी ।

सौक[2]—वि० [हिं० सौ + एक] एक सौ। उ०—नैन लगे निहिं लगनि सौं छूटै न छूटे प्रान। काम न आवत एकहू तेरे सौक सयान। —बिहारी (शब्द०)।

सौक[3]—सज्ञा पुं० [फा० शौक] दे० 'शौक'।

सौकन†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौक या सौतन] दे० 'सौत'।

सौकन्य—वि० [सं०] सुकन्या सबधी। सुकन्या का।

सौकर[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० सौकरी] १ सूकर या सूअर का। २ सूकर या सूअर सबधी। ३ वाराह अवतार सबधी।

सौकर[2]—सज्ञा पुं० दे० 'सौकर तीर्थ'।

सौकरक[1]—सज्ञा पुं० [सं०] सौकर तीर्थ।

सौकरक[2]—वि० सूअर सबधी। सूअर का। दे० 'सौकर'।

सौकर तीर्थ—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सौकरायण—सज्ञा पुं० [स०] १ शिकारी। शिकार करनेवाला। व्याध। अहेरी। २ वैदिक आचार्य का नाम।

सौकरिक—सज्ञा पु० [स०] १ सूअर का शिकार करनेवाला। २ शिकारी। व्याध। ३ सूअर का व्यापार करनेवाला।

सौकरीय—वि० [सं०] सूअर सबधी। सूअर का।

सौकर्य—सज्ञा पुं० [स०] १ सुकर का भाव। सुकरता। सुसाध्यता। २ सुविधा। सुभीता। ३ सूकर का भाव या धर्म। सूकरता। सुअरपन। ४ निपुणता। कुशलता (को०)। ५ किसी भोज्य पदार्थ या ओषधि की सरल तयारी (को०)।

सौकीन—सज्ञा पु० [फा० शौकीन] दे० 'शौकीन'।

सौकीनी—सज्ञा स्त्री० [फा० शौकीनी] दे० 'शौकीनी'।

सौकुमारक—सज्ञा पुं० [स०] सुकुमार का भाव या धर्म। सुकुमारता। सौकुमार्य।

सौकुमार्य[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ सुकुमार का भाव। सुकुमारता। कोमलता। नाजुकपन। २ यौवन। जवानी। ३ काव्य का एक गुण जिसके लाने के लिये ग्राम्य और श्रुतिकटु शब्दो का प्रयोग त्याज्य माना गया है।

सौकुमार्य[2]—वि० सुकुमार। कोमल। नाजुक।

सौकृति—सज्ञा पुं० [स०] १. एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम। २ उक्त ऋषि के गोत्र का नाम।

सौकृत्य—सज्ञा पुं० [स०] १ याग, यज्ञादि पुण्यकर्म का सम्यक् अनुष्ठान। २ दे० 'सौकर्म'।

सौकृत्यायन—सज्ञा पुं० [स०] वह जो सुकृत्य के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो।

सौक्ति—सज्ञा पुं० [स०] १ एक गोत्र का नाम। २ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सौक्तिक[1]—वि० [सं०] सूक्त सबधी। सूक्त का।

सौक्तिक[2]—सज्ञा पुं० वह जो सिरका आदि बनाता हो। शौक्तिक।

सौक्ष्म—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सौक्ष्म्य'।

सौक्ष्मक—सज्ञा पुं० [सं०] बारीक कीडा। सूक्ष्म कीट।

सौक्ष्म्य—सज्ञा पु० [स०] सूक्ष्म का भाव। सूक्ष्मता। बारीकी।

सौख[1]—सज्ञा पु० [स०] १ सुख का भाव या धर्म। सुखता। सुख। आराम। २ सुख का अपत्य।

सौख[2]—सज्ञा पुं० [फा० शौक] दे० 'शौक'।

सौखयानिक—सज्ञा पुं० [सं०] भाट। बदी। स्तावक।

सौखरात्रिक—सज्ञा पुं० [सं०] बदी। वैतालिक। स्तुतिपाठक। अर्थिक।

सौखशय्यिक सज्ञा पुं० [स०] वैतालिक। स्तुतिपाठक। बदी। अर्थिक।

सौखशायनिक—सज्ञा पुं० [स०] १ वैतालिक। स्तुतिपाठक। अर्थिक। बदी। २ सुखपूर्वक शयन की वार्ता पूछनेवाला। वह जो किसी से उसके सुखशयन की बात पूछे (को०)।

सौखशायिक—सज्ञा पुं० [स०] १. वैतालिक। स्तुतिपाठक। अर्थिक। बदी। २ दे० 'सौखशायनिक' (को०)।

सौखसुप्तिक—सज्ञा [स०] १ वैतालिक। स्तुतिपाठक। बदी। २ दे० सौखशायनिक' (को०)।

सौखा‡ वि० [हिं० सुख] सहज। सरल।

सौखिक—वि० [स०] १. सुख चाहनेवाला। सुखार्थी। २. सुख से सबधित। ३ आनदप्रद (को०)।

सौखी‡ सज्ञा पुं० [फा० शोख या शौकीन] गुडा। बदमाश।

सौखीन‡—सज्ञा पु० [फा० शौकीन] दे० 'शौकीन'।

सौखीय—वि० [स०] १ दे० 'सौखिक'। २ सुख या आनद सबधी। सुखदायक (को०)।

सौख्य—सज्ञा पुं० [न०] १ सुख का भाव। सुखता। सुखत्व। २. सुख। आराम। आनदमगल।

सौख्यद—वि० [स०] सुख देनेवाला। आनद देनेवाला। सुखद।

सौख्यदायक[1]—सज्ञा पुं० [स०] मूँग। मुग्द।

सौख्यदायक[2]—वि० सुख देनेवाला (को०)।

सौख्यदायी—वि० [स० सौख्यदायिन्] सुख देनेवाला। सुखद।

सौख्यशायनिक—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सौखशायनिक' (को०)।

सौगद—सज्ञा स्त्री० [सं० सौगन्ध] शपथ। कसम। सौंह। उ०—(क) नगर नारि को यार भूलि परतीति न कीजै। सो सौ सौगद खाय चित्त मे एक न दीजै।—गिरिधर (शब्द०)। (ख) वस्ताद की सौगद मुझे हम तो बावा हारे। कहत केशव गगन मगन सोइ अल्ला के प्यारे।—दक्खिनी०, पृ० १२३। (ग) प्राणधन! सच तुमको सौगद, तुम्हारा यह अभिनव है साज। —भरना, पृ० ४३।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।

सौगध[1]—सज्ञा पुं० [सं० सौगन्ध] १ सुगधित तैल, इत्र आदि का

व्यापार करनेवाला। गधी। २ सुगध। खुशबू। ३ अगिया घास। भूतृण। कतृण। ४ एक वर्णसकर जाति जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

सौगंध[1]—वि० सुगधयुक्त। सुगधित। खुशबूदार।

सौगंध[2]—सज्ञा स्त्री० दे० 'सौगद'।

सौगंधक—सज्ञा पुं० [स० सौगन्धक] नीला कमल। नील कमल।

सौगंधिक[1]—सज्ञा पुं० [स० सौगन्धिक] १ नील कमल। नील पद्म। २ लाल कमल। रक्त कमल। ३ सफेद कमल। श्वेत कमल। कह्लार। ४ गधतृण। भूतृण। रामकपूर। ५ रूसा घास। रोहिष तृण। ६ गधक। गधपाषाण। ७ पुखराज। पद्मराग मणि। ८ एक प्रकार का कीडा जो श्लेष्मा से उत्पन्न होता है। (चरक)। ९ सुगधित तेल, इत्र आदि का व्यवसाय करनेवाला। गधी। उ०—सौगधिक नव नव सुगधियाँ प्रभु के लिये निकाल रहे।—साकेत, पृ० ३७४। १० एक प्रकार का नपुसक जिसे किसी पुरुष की इद्रिय अथवा स्त्री की योनि सूँघने से उद्दीपन होता है। नासायोनि। (वैद्यक)। ११ दालचीनी, इलायची और तेजपत्ता इन तीनो का समूह। त्रिसुगधि। १२ भागवत मे वर्णित एक पर्वत का नाम। १३ हीरक। हीरा।—वृहत्सहिता, पृ० ३७७।

सौगंधिक[2]—वि० सुगधित। सुवासित। खुशबूदार।

सौगंधिक वन—सज्ञा पुं० [सं० सौगन्धिक वन] १ कमल का घना झुड। कमल का वन या जगल। २ एक तीर्थ का नाम।—(महाभारत)।

सौगंधिका—सज्ञा स्त्री० [सं० सौगन्धिका] १ एक प्रकार की पद्मिनी। २ वाल्मीकि रामायण मे वर्णित कुबेर की नगरी की नदी का नाम।

सौगंधिपत्रक—सज्ञा पुं० [स० सौगन्धिपत्रक] सफेद बर्बरी। श्वेतार्जक।

सौगंध्य—सज्ञा पुं० [स० सौगन्ध्य] सुगधि का भाव या धर्म। सुगधता। सुगधत्व।

सौगत[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ सुगत (बुद्ध) का अनुयायी। बौद्ध। २ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सौगत[2]—वि० १ सुगत सबधी। २ सुगत मत का।

सौगतिक—सज्ञा पुं० [स०] १ बौद्ध धर्म का अनुयायी। २ बौद्ध भिक्षु। ३ नास्तिक। शून्यवादी। ४ अनीश्वरवादी।

सौगम्य—सज्ञा पुं० [स०] सुगम का भाव। सुगमता। आसानी।

सौगरिया—सज्ञा पु० [हिं० सौगर + इया (प्रत्य०)] क्षत्रियो की एक जाति या वश। उ०—गौर सुगोकुल रामसिंह परताप कमठ कुल। रामचद्र कुल पाडु भेद चहुँवान खग्ग खुल। सूरत राम प्रसिद्ध कुसल तन अरु पाखरिया। पैम सिंह प्रथिसिंह अमरवाला सौगरिया।—सुजान०, पृ० २१।

सौगात—सज्ञा स्त्री० [तु० सौगात] वह वस्तु जो परदेश से इष्ट मित्रो को देने के लिये लाई जाय। भेट। उपहार। नजर। तोहफा। जैसे—हमारे लिये ववई से क्या सौगात लाए हो?

क्रि० प्र०—देना।—मिलना।—लाना।

सौगाती—वि० [हिं० सौगात + इ (प्रत्य०)] १ सौगात के लायक। उपहार के योग्य। २ उत्तम। बढिया। उमदा।

सौघा†—वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता। अल्प मूल्य का। कम दाम का। महँगा का उलटा। उ०—महँगे मनि कचन किए सौघो जग जल नाज।—तुलसी ग्र०, पृ० ९७।

सौच—सज्ञा पुं० [स० शौच] दे० 'शौच'। उ०—सकल सौच करि जाइ नहाए। नित्य निबाहि मुनिहि सिर नाए।—तुलसी (शब्द०)। (ख) मन उनमेख छुटत नहिं कबही सौच तिलक पहिरे गल माला।—भीखा० श०, पृ० ३१।

सौचि—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सौचिक'।

सौचिक—सज्ञा पु० [सं०] सूची कर्म या सिलाई द्वारा जीविका निर्वाह करनेवाला। दरजी। सूचिक। सूत्रभित्।

सौचिक्य—सज्ञा पुं० [सं०] सूचिक का कार्य। दरजी का काम। सीने का काम।

सौचित्ति—सज्ञा पु० [सं०] वह जो सुचित्त का अपत्य हो। सुचित्त का पुत्र।

सौचकि—सज्ञा पु० [सं०] यज्ञ मे एक प्रकार की अग्नि।

सौचुक—सज्ञा स० [स०] भूतिराज के पिता का नाम।

सौचुक्य—सज्ञा पुं० [स०] सूचक का भाव या कर्म। सूचकता।

सौज—सज्ञा स्त्री० [सं० शय्या, मि० फा०, साज] उपकरण। सामग्री। साज सामान। उ०—(क) कहाँ लगि समुझाऊँ सूर सुनि जाति मिलन की औधि टरी। लेहु सँभारि देहु पिय अपनी बिन प्रमान सब सौज धरी।—सूर (शब्द०)। (ख) जन पुकारे हरि पै जाइ। जिनकी यह सब सौज राधिका तेरे तनु सब लई छँडाइ।—सूर (शब्द०)। (ग) जिन हरि सौज चोरि जग खाई। बिगन दसन ते होंहि बनाई।—रामाश्वमेध (शब्द०)। (घ) अलि सुगध बस रहे लुभाई। भोग सौज सब सजी बनाई।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

सौज[2]—वि० [स० सौजस्] दे० 'सौजा'।

सौज[3]—सज्ञा पुं० [स० श्वापद, प्रा० सावज्ज, साउज] दे० 'सौजा'।

सौजना†—क्रि० अ० [हिं० सजना] शोभा देना। भला जान पडना। उ०—बरुनि बान अस ओपहँ बेधे रन बन ढाँख। सौजहिं तन सब रोवाँ पखिहि तन सब पाँख।—जायसी (शब्द०)।

सौजन्य—सज्ञा पुं० [स०] सुजन का भाव। सुजनता। भलमनसत। उ०—उसके उदार सौजन्य के अभाव मे ग्रथ का भली प्रकार से सपन्न हो सकना कठिन ही था।—अकबरी०, पृ० १०। २ उदारता। औदार्य। ३ कृपा। करुणा। अनुकपा (को०)। ४ मित्रता। सौहाद (को०)।

सौजन्यता—सज्ञा स्त्री० [सं० सौजन्य + हिं० ता (प्रत्य०)] दे० 'सौजन्य'। उ०—क्यो महाशय, यही सौजन्यता है।—अयोध्या सिंह (शब्द०)।

विशेष—शुद्ध भाववाचक शब्द 'सौजन्य' ही है। उसमे भी 'ता' प्रत्यय लगाकर जो 'सौजन्यता' रूप बनाया जाता है, वह अशुद्ध है।

**सौजस्क**—वि० [स०] दे० 'सौजा'।

**सौजा**[१]—वि० [सं० सौजस्] ओजयुक्त। ताकतवर। बलवान्। बली। शक्तिशाली [को०]।

**सौजा**[२]†—सज्ञा पुं० [स० श्वापद, प्रा० सावज्ज, साउज, हिं० सावज] वह पशु या पक्षी जिसका शिकार किया जाय। उ०—आपुहि वन और आपु पखेरू। आपुहि सौजा आपु अहेरू।—जायसी (शब्द०)। उ०—(ख) भाँति भाँति के सौजे दौरत रहत जहाँ नित।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ४६४।

**सौजात**—सज्ञा पु० [स०] सुजात के वश मे उत्पन्न व्यक्ति।

**सौजामि**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

**सौजोर**Ⓤ—वि० [फा० शहजोर] दे० 'शहजोर'। उ०—रद छद अधर न कीजिए नागर नद किसोर। सास ननद सौजोर मुख कहा कहौगी भोर।—स० सप्तक, पृ० ३७२।

**सौड़**—सज्ञा पुं० [हिं० सौंड] दे० 'सौंड'।

**सौडि**Ⓤ, **सौड़ी**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौंड] १ चादर।

**सौड़ी**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं०] रजाई। उ०—(क) ममिता मेरा क्या करै, प्रेम उघाडी पौलि। दरसन भया दयाल का, सूल भई सुखसौडि।—कबीर ग्र०, पृ० १६। (ख) गग जमुन मोरी पाटलडी रे, हसा गवन तुलाई जी। धरणि पाथरणौ नै आम पछेवडौ तौ भी सौडी न माई जी।—गोरख०, पृ० ६३। २ शय्या। सेज?

**सौडल**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन आचार्य का नाम।

**सौत**[१]—सज्ञा स्त्री० [स० सपत्नी] किसी स्त्री के पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका। किसी स्त्री की प्रेमप्रतिद्वद्विनी। सपत्नी। सौक। सवत। उ०—(क) देह दुलहेया की वढै ज्यो ज्यो जोवन जोति। त्यो त्यो लखि सौते सबै बदन मलिन दुति होति।—बिहारी (शब्द०)। (ख) काल व्याही नई हो तो धाम हू न गई पुनि आजहू ते मेरे सीस सौत को बसाई हे।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

मुहा०—सौतिया डाह = (१) दो सौतो मे होनेवाली डाह या ईर्ष्या। (२) द्वेष। जलन। सौत ला के विठाना = पत्नी के होते हुए दूसरी स्त्री को घर बैठाना या घर मे डाल लेना। उ०—मतलब यह कि कोई सौत ला के नही विठाएँगे।—सैर०, पृ० २५।

**सौत**[२]—वि० [स०] १ सूत से उत्पन्न। २ सूत सवधी। सूत का।

**सौतन**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] दे० 'सौत'। उ०—कान्ह भए वस बाँसुरी के अब कौन सखी हमको चहिहै। निस द्यौस रहै सँग साथ लगी यह सौतन तापन क्यो सहिहै।—रसखान (शब्द०)।

**सौतनि**Ⓤ—सज्ञा [स० सपत्नी] दे० 'सौत'। उ०—बाढत तो उर उरज भर भरि तरुनई विकास। बोझनि सौतनि के हिये आवत रूँधि उसास।—विहारी (शब्द०)।

**सौति**[१] सज्ञा पुं० [स०] १ सूत के अपत्य, कर्ण। २ महाभारत के प्रवक्ता एक मुनि।

**सौति**Ⓤ[२]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] दे० 'सौत'। उ०—(क) विथुरो जावक सौति पग निरखि हँसी गहि गाँस। सलज हँसौही लखि लियौ आधी हँसी उसास।—बिहारी (शब्द०)। (ख) गुर लोगनि के पग लागति प्यार सो प्यारी वहू लखि सौति जरी।—देव (शब्द०)।

**सौतिन**Ⓤ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] दे० 'सौत'। उ०—(क) चौक चौक चकई सी सौतिन की दूती चली सो तैं भई दीन अरिविंद गति मद ज्यो।—केशव (शब्द०)। (ख) नायक के नैननि मै नाइए सुधा सो सब सौतिन के लोचननि लौन सो लगाइए।—मतिराम (शब्द०)। (ग) के मोरा जाएत दुरहुक दूर, सहस सौतिनि बस माधव पुर।—विद्यापति, पद ५७४।

**सौतुक**Ⓤ—सज्ञा पुं० [हिं० सौंतुख] दे० सौंतुख। उ०—(क) देखि चकृत भई सौतुक की सपने।—सूर (शब्द०)। (ख) सौतुक सो सपनो भयो, सपनो सौतुक रूप।—मतिराम, ग्र० पृ० ३३१।

**सौतुख**Ⓤ—सज्ञा पु० [हिं० सौंतुख] दे० 'सौंतुख'। उ०—पिय मिलाप को सुख सखी कह्यो न जाय अनूप। सौतुख सो सपनो भयो सपनो सौतुख रूप।—मतिराम (शब्द०)।

**सौतुष**Ⓤ—सज्ञा पुं० [हिं० सौंतुख] दे० 'सौंतुख'। उ०—पुनि पुनि करै प्रनामु न आवत कछु कहि। देखौ सपन कि सौतुष ससि-सेषर सहि।—तुलसी (शब्द०)।

**सौतेला**—वि० [हिं० सौत + एला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सौतेली] १ सौत से उत्पन्न। सौत का। जैसे,—सौतेला लडका। २ जिसका सबध सौत के रिश्ते से हो। जैसे,—सौतेला भाई (अर्थात् माँ की सौत का लडका)। सौतेली माँ (अर्थात् माँ की सौत)। सौतेले मामा (अर्थात् नानी की सौत का लडका या सौतेली माँ का भाई)।

**सौत्य**[१]—सज्ञा पुं० [स०] सूत या सारथि का काम।

**सौत्य**[२]—वि० १ सूत या सारथि सबधी। २ सुत्य सबधी। सोमाभिषव सबधी।

**सौत्र**[१]—सज्ञा पुं० [स०] ब्राह्मण।

**सौत्र**[२]—वि० १ सूत का। २ सूत्र सबधी। सूत्र का। ३ सूत्र मे उल्लिखित या कथित। श्रौत सूत्रग्रथो से सबद्ध या उनका अनुसरण करनेवाला।

**सौत्रातिक**—सज्ञा पु० [स० सौत्रान्तिक] बौद्ध दर्शन की एक शाखा या बौद्धो का एक भेद।

विशेष—इनके मत से अनुमान प्रधान है। इनका कहना है कि बाहर कोई पदार्थ सागोपाग प्रत्यक्ष नही होता, केवल एकदेश के प्रत्यक्ष होने से शेष का ज्ञान अनुमान से होता है। ये कहते है कि सब पदार्थ अपने लक्षण से लक्षित होते है और लक्षण सदा लक्ष्य मे वर्तमान रहता है।

**सौत्रामण**[१]—वि० [स०] [वि० स्त्री० सौत्रामणी] इद्र सबधी। इद्र का।

**सौत्रामण**[२]—सज्ञा पु० एक दिन मे होनेवाला एक प्रकार का याग। एक एकाह्न यागविशेष।

सौत्रामणधनु—सज्ञा पुं० [सं० सौत्रामणधनुस्] इद्रधनुष ।

सौत्रामणिक—वि० [सं०] सौत्रामणी यज्ञ से सबद्ध या उक्त यज्ञ मे उपस्थित [को०] ।

सौत्रामणी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ इद्र के प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ । २ पूर्व दिशा का एक नाम जिसके स्वामी इद्र है (को०) ।

सौत्रि—सज्ञा पुं० [स०] ततुवाय । जुलाहा [को०] ।

सौत्रिक—सज्ञा पुं० [स०] १ जुलाहा । ततुवाय । २ वह जो बुना जाय । बुनी हुई वस्तु ।

सौत्वन—सज्ञा पुं० [स०] सुत्वन के अपत्य या वशज ।

सौदति—सज्ञा पु० [स० सौदन्ति] सुदत के अपत्य या वशज ।

सौदतेय—सज्ञा पुं० [सं० सौदन्तेय] सुदत के अपत्य ।

सौदक्ष—वि० [स०] १ सुदक्ष सबधी । सुदक्ष का । २ सुदक्ष से उत्पन्न ।

सौदक्षेय—सज्ञा पुं० [सं०] सुदक्ष के अपत्य या वशज ।

सौदत्त—वि० [सं०] १ सुदत्त सबधी । सुदत्त का । २ सुदत्त से उत्पन्न ।

सौदर्य[1]—वि० [सं०] १ सहोदर या सगे भाई सबधी । २ सोदर या भाई का सा ।

सौदर्य[2]—सज्ञा पुं० भ्रातृत्व । भाईपन ।

सौदर्शन—सज्ञा पुं० [सं०] वाहीक जाति के एक गाँव का नाम ।

सौदा—सज्ञा पुं० [अ०] १ वह चीज जो खरीदी या बेची जाती हो । क्रय विक्रय की वस्तु । चीज । माल । जैसे,—(क) चलो बाजार से कुछ सौदा ले आवें । (ख) तुम्हारा सौदा अच्छा नही है । (ग) आप क्या क्या सौदा लीजिएगा ? उ०—(क) व्योपार तो याँ का बहुत किया, अब वाँ का भी कुछ सौदा लो । —नजीर (शब्द०) । २. लेन देन । व्यवहार । उ०—(क) क्या खूब सौदा नक्द है उस हाथ दे इस हाथ ले ।—नजीर (शब्द०)। (ख) दरजी को खुरपी दरकार नही, वह गेहूँ लेना चाहता है, अत उन दोनो का सौदा नही हो सकता ।—मिश्रबधु (शब्द०) । (ग) प्राय सभी बैंके एक दूसरे से हिसाब रखती है । इस प्रकार सौदे का काम कागजी घोडो (चेको) द्वारा चलता है । —मिश्रबधु (शब्द०) । (घ) जरासुत सो और कोउ नहिं मिलै मोहि दलाल । जो करै सौदा समर को सहज इमि या काल ।—गोपाल (शब्द०) ।

मुहा०—सौदा पटना = क्रयविक्रय की बातचीत ठीक होना । जैसे,—तुमसे सौदा नही पटेगा । उ०—आखिर इसी बहाने मिला यार से नजीर । कपडे बला से फट गए सौदा तो पट गया ।—नजीर (शब्द०) ।

३ क्रय विक्रय । खरीद फरोख्त । व्यापार । उ०—और बनिज मैं नाही लाहा होत मूल मे हानि । सूर स्वामि को सौदो साँचो कहो हमारो मानि ।—सूर (शब्द०) । ४ खरीदने या बेचने की बातचीत पक्की करना । जैसे,—उन्होने पचास गाँठ का सौदा किया । उ०—राजा खुद तिजारत करता है, बिना उसकी आज्ञा के राँगा, हाथीदाँत, सौसा इत्यादि का कोई सौदा नही कर सकता ।—शिवप्रसाद (शब्द०) ।

यौ०—सौदागर = व्यापारी । सौदासुलुफ = खरीदने की चीज । वस्तु । सौदासूत = व्यवहार । उ०—सुहृद समाजु दगावाजी ही को सौदासूत जब जाको काजु तब मिले पार्य परि सो ।—तुलसी (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—करना ।—पटना ।—लेना ।—होना ।

सौदा[1]—सज्ञा पुं० [फा०] १ पागलपन । बावलापन । दीवानापन । उन्माद । २ उर्दू के एक प्रसिद्ध कवि का नाम । ३ प्रेम । मुहब्बत । इश्क (को०) । ४ यूनानी चिकित्सा शास्त्र मे कथित चार दोषो मे एक जो स्याह या काला रग का होता है (को०) ।

सौदा[2]—सज्ञा पुं० [देश०] वे काट छाँटकर साफ किए हुए पान के पत्ते जो ढोली मे सड गए हो । (तबोली) ।

सौदाई—सज्ञा पुं० [अ० सौदा + ई (प्रत्य०)] । जिसे सौदा या पागलपन हुआ हो । पागल । बावला । उ०—भाँग पड़ी कूएँ मे जिसने पिया बना सौदाई है ।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ५५१ ।

मुहा०—किसी का सौदाई होना = किसी पर बहुत अधिक आसक्त होना । सौदाई बनाना = अपने ऊपर किसी को आसक्त करना ।

सौदागर—सज्ञा पुं० [फा०] व्यापारी । व्यवसायी । तिजारत करनेवाला । जैसे,—कपडो का सौदागर, घोडो का सौदागर ।

सौदागर बच्चा—सज्ञा पुं० [फा० सौदागर + हिं० बच्चा] सौदागर अथवा सौदागर का लडका ।

सौदागरी—सज्ञा स्त्री० [फा०] सौदागर का काम । व्यापार । व्यवसाय । तिजारत । रोजगार ।

सौदामनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ बिजली । विद्युत् । २ एक प्रकार की विद्युत् या बिजली । मालाकार विद्युत् । ३ विष्णुपुराण मे उल्लिखित कश्यप और विनता की एक पुत्री का नाम । ४ एक अप्सरा का नाम । (बाल रामायण) । ५ एक रागिनी जो मेघ राग की सहचरी मानी जाती है । ६ एक यक्षिणी (को०) । ७ हाहा गधर्व की एक कन्या का नाम (को०) । ८ ऐरावत हाथी की स्त्री (को०) ।

सौदामनीय—वि० [सं०] १ सौदामनी या विद्युत् के समान । सौदामनी या विद्युत् सा । २ सौदामनी या विद्युत् सबधी ।

सौदामिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सौदामनी' । उ०—वर्षा बरनहुँ हस बक दादुर चातक मोर । केतक कज कदब जल सौदामिनि घनघोर ।—केशव (शब्द०) ।

सौदामिनीय—वि० [सं०] दे० 'सौदामनीय' ।

सौदामेय—सज्ञा पु० [सं०] सुदामा के अपत्य या वशज ।

सौदाम्नी—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सौदामनी' ।

सौदायिक[1]—सज्ञा पुं० [सं०] वह धन आदि जो स्त्री को उसके विवाह के अवसर पर उसके पिता माता या पति के यहाँ से मिले ।

विशेष—दायभाग के अनुसार इस प्रकार मिला हुआ धन स्त्री का हो जाता है। उसपर उसी का सोलहो आने अधिकार होता है, और किसी का कोई अधिकार नही होता।

२ दहेज। दायज। दाइज।

सौदायिक[2]—वि० दाय सबधी। दाय का।

सौदावी—वि० [अ०] वात के कारण उत्पन्न। वातजन्य। सौदा या उन्मादजन्य [को०]।

सौदास—सज्ञा पुं० [स०] इक्ष्वाकु वशी एक राजा का नाम। ये राजा सुदास के पुत्र और ऋतुपर्ण के पौत्र थे। इन्हें मित्रसह और कल्मषपाद भी कहते है।

सौदासि—सज्ञा पु० [स०] १ एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम। २ इन ऋषि के गोत्र का नाम।

सौदेव—सज्ञा पुं० [सं०] सुदेव के पुत्र, दिवोदास।

सौद्युम्नि—सज्ञा पुं० [स०] सुद्युम्न के अपत्य या वशज।

सौध[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ भवन। प्रासाद। अट्टालिका। महल। उ०—जहाँ विमान वनितान के श्रमजल हरत अनूप। सौध पताकनि के वसन होइ विजन अनुरूप। —मतिराम (शब्द०)। २ चाँदी। रजत। ३ दुधिया पत्थर। दुग्धपाषाण। ४ एक प्रकार का रत्न (को०)। ५ चूना (को०)। ६ चूने से धवलित गृह (को०)।

सौध[2]—वि० १ सफेदी, पलस्तर या अस्तरकारी किया हुआ। २ सुधा से युक्त (को०)। ३ सुधा सवधी (को०)।

सौधक—सज्ञा पु० [सं०] परावसु गधर्व के नौ पुत्रो मे से एक। उ०—ब्रह्म कल्प महँ हो गधर्वा। नाम परावसु तेहि सुत सर्वा। मदर मवर मदी सौधक। सुघन सुदेव महावलि नामक।—गोपाल (शब्द०)।

सौधकार—सज्ञा पुं० [स०] सौध वनानेवाला। प्रासाद या भवन वनानेवाला। राज। मेमार।

सौधतल—सज्ञा [स०] महल या प्रासाद का निचला हिस्सा [को०]।

सौधना—क्रि० स० [स० शोधन, हिं० सोधना] दे० 'सोधना'। उ०—ताते लेनौ सौधौ या कौ। तव उपाय करिहौ मैं ताकौ। —सूदन (शब्द०)।

सौधन्य—वि० [स०] सुधन से उत्पन्न।

सौधन्वन—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सौधन्वा'।

सौधन्वा—सज्ञा पु० [स० सौधन्वन्] १ सुधन्वा के पुत्र, ऋभु। २ एक वर्णसकर जाति।

सौधमौलि—सज्ञा पु० [स०] सौध का सिरा या सवसे ऊँचा भाग [को०]।

सौधम—सज्ञा पुं० [स०] जैनियो के देवताओ का निवासस्थान। कल्पभवन।

सौधर्मज—सज्ञा पुं० [स०] सौधर्म अर्थात् कल्पभवन मे उत्पन्न एक प्रकार के देवता। —(जैन)।

सौधर्म्य—सज्ञा पुं० [स०] १ सुधर्म का भाव। २ साधुता। भलमनसत।

सौधशिखर—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौधमौलि' [को०]।

सौधाकार—वि० [स०] सुधाकर या चद्रमा सवधी। चद्रमा का।

सौधात—सज्ञा पुं० [स०] ब्राह्मण और भृज्जकठी से उत्पन्न सतान।

विशेष—भृज्जकठ एक वर्णसकर जाति थी जो व्रात्य ब्राह्मण और ब्राह्मणी से उत्पन्न थी।

सौधातकि—सज्ञा पुं० [स०] सुधाता के अपत्य।

सौधार—सज्ञा पु० [स०] नाट्य शास्त्र के अनुसार नाटक के चौदह भागो मे से एक का नाम।

सौधाल—सज्ञा पु० [सं०] शिव का मदिर। शिवालय।

सौधावति—सज्ञा पुं० [सं०] सुधावति के अपत्य।

सौधृतेय—सज्ञा पुं० [स०] सुधृति के अपत्य या वशज।

सौधोतकि—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सौधातकि'।

सौनद—सज्ञा पुं० [स० सौनन्द] वलराम के मूषल का नाम।

सौनदा—सज्ञा स्त्री० [स० सौनन्दा] मार्कंडेय पुराण के अनुसार वत्सप्री की पत्नी का नाम।

सौनदी—सज्ञा पु० [सं० सौनन्दिन्] वलराम का एक नाम जो अपने पास सौनद नामक मूसल रखते थे।

सौन[1]—क्रि० वि० [स० सम्मुख] सामने। प्रत्यक्ष। उ०—व्याह कियो कुल इष्ट वसिष्ट अरिष्ट टरे घर को नृप धाए। लै सुत चार विवाहत ही घरी जानकी तात सबै समुदाए। सौन भए अपसौन सबै पथ काँप उठे जिय मे दुख पाए।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

सौन[2]—सज्ञा पु० [स०] १ कसाई। बूचड। २ वह ताजा मांस जो विक्री के लिये रखा हो।

यौ०—सौनधर्म्य = कसाई और पशु की सी शत्रुता। प्राणघातक दुश्मनी। सौनपालक = वह व्यक्ति जिसके यहाँ रक्षा के काम मे कसाई नियुक्त किए गए हो।

सौन[3]—वि० पशुवधशाला या कसाईखाने का। पशुवधशाला सवधी।

सौन[4]—सज्ञा पुं० [स० श्रवण] दे० 'स्रोन'। उ०—भर्म भूत सवही छुटेरी हेली सौन नछतर नाल।—चरण० वानी०, भा० २, पृ० १४५।

सौनक[1]—सज्ञा पु० [स० शौनक] दे० 'शौनक'। उ०—सौनक मुनि आसीन तहँ अति उदार तप रासि। मगन राम सिय ध्यान महँ, वेद रूप आभासि।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

सौनक[2]—सज्ञा पु० [स० सौन या सौनिक] कसाई। वधिक। उ०—जिहि विस्वास सुसा के तात। सौनक ज्यो मैं कीनी घात। —नद० ग्र०, पृ० २३२।

सौनन[1]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौंदना] कपडो को धोने से पहले उनमे रेह आदि लगाना। रेह की नाँद मे कपडे भिगोना। सौंदना। (धोबी)। उ०—तन मन लाय के सौनन कीन्हा धोअन जाय साधु की नगरी। कहहिं कबीर सुनो भाइ साधू, विन सतसँग कवहूँ नहिं सुधरी।—कबीर (शब्द०)।

सौनव्य—सज्ञा पु० [स०] (स्त्री० सौनव्यायनी] सुनु के अपत्य।

सौनहोत्र—सज्ञा पु० [स० शौनहोत्र] १ वह जो शुनहोत्र के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो। शुनहोत्र का अपत्य। २ गृत्समद ऋषि।

सौना(पु)[1]—पज्ञा पु० [स० स्वर्ण, हिं० सोना] दे० 'सोना'। उ०—धरि सौनै कै पीजरा राखौ अमृत पिवाइ। विष कौ कीरा रहत है विष ही मैं सुख पाइ।—रसनिधि (शब्द०)।

सौना†[2]—पज्ञा पु० [हिं० सौंदन, सौनन] दे० 'सौंदन'।

सौनाग—सज्ञा पु० [स०] वैयाकरणो की एक शाखा का नाम, जिसका उल्लेख पतजलि के महाभाष्य मे है।

सौनामि—सज्ञा पु० [स०] वह जो सुनाम के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो।

सौनि(पु)—सज्ञा पु० [स० स्वर्ण, हिं० सोना] सोने (कुदन) का लाल वर्ण। उ०—केलि की कलानिधान सुदरि महा सुजान आन न समान छवि छाँह पै छिपैए सौनि।—घनानद, पृ० १२।

सौनिक—सज्ञा पु० [स०] १ मास वेचनेवाला। कसाई। वैतसिक। मासिक। २ कौटिक। वहेलिया। व्याध। शिकारी।

सौनीतेय—सज्ञा पु० [स०] सुनीति के पुत्र, ध्रुव।

सौपथि—सज्ञा पु० [स०] सुपथ के अपत्य।

सौपना(पु)—क्रि० स० [हिं० सौंपना] दे० 'सौंपना'।

सौपर्ण[1]—सज्ञा पु० [स०] १ पन्ना। मरकत। २ सोंठ। शुठी। ३ गरुड जी के अस्त्र का नाम। गरुत्म अस्त्र। ४ ऋग्वेद का एक सूक्त। ५ गरुड पुराण।

सौपर्ण[2]—वि० सुपर्ण अथवा गरुड सबधी। गरुड का।

सौपर्णकेतव—वि० [स०] विष्णु सबधी। विष्णु का।

सौपर्णव्रत—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का व्रत। गरुडव्रत।

सौपर्णी—सज्ञा स्त्री० [सं०] पातालगारुडी लता। जलजमनी।

सौपर्णेय—सज्ञा पु० [स०] १ सुपर्णी के पुत्र, गरुड़। २ गायत्री आदि छद (को०)।

सौपर्ण्य—सज्ञा पु० [स०] सुपर्ण (वाज या चील) पक्षी का स्वभाव या धर्म।

सौपर्ण्य[2]—वि० दे० 'सौपर्ण'।

सौपर्व—वि० [स०] सुपर्व सबधी। सुपर्व का।

सौपस्तवि—सज्ञा पुं० [स० सौपस्तम्वि] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

सौपाक—सज्ञा पु० [स०] एक वर्णसकर जाति जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

सौपातव—सज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि।

सौपमायवि—सज्ञा पु० [स०] वह जो सुपामा के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो। सुपामा का गोत्रज।

सौपिक—वि० [स०] १ सूप या व्यजन डाला हुआ। २ सूप या व्यजन सबधी।

सौपिष्ट—सज्ञा पु० [स०] वह जो सुपिष्ट के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो। सुपिष्ट का गोत्रज।

सौपिष्टी—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सौपिष्ट'।

सौपुष्पि—सज्ञा पुं० [स०] वह जो सुपुष्प के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो। सुपुष्प का गोत्रज।

सौप्तिक[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ रात को सोते हुए मनुष्यो पर आक्रमण। रात्रियुद्ध। निशारण। रात्रिमारण। २ महाभारत के दसवें पर्व का नाम। सौप्तिक पर्व।

विशेष इस पर्व मे पाडवो की अनुपस्थिति मे उनके सोते हुए विजयी दल पर अश्वत्थामा की प्रधानता मे कृतवर्मा, कृपाचार्य आदि द्वारा आक्रमण करने का वर्णन है। द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न पाडवो के पाँचो पुत्र, धृष्टद्युम्न आदि और महाभारत से बचे अनेक वीर इसी युद्ध मे मार डाले गए थे।

सौप्तिक[2]—वि० सुप्त सबधी।

सौप्रजास्त्व—सज्ञा पुं० [स०] अच्छी सतानो का होना। अच्छी औलाद होना।

सौप्रतीक—वि० [स०] १ सुप्रतीक दिग्गज सबधी। २ हाथी का। हाथी सबधी।

सौफ—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौंफ] दे० सौंफ'।

सौफिया—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौंफ] रूसा नाम की घास जब कि वह पुरानी और लाल हो जाती है।

सौफियाना—वि० [हिं० सोफियाना] दे० 'सोफियाना'।

सौफी(पु)—सज्ञा पु० [हिं० सूफी, सोफी] दे० 'सूफी'। उ०—पवरि सवै लीनी नृपति, चलिय दूत निज मग्ग। आतुर पति गज्जन नमिय, सौफी वेसह जग्ग।—पृ० रा०, १६।६७।

सौबल—सज्ञा पु० [सं०] गाधार देश के राजा सुवल का पुत्र, शकुनि। उ०—(क) जात भयो ताही समय सभा भवन कुरुनाथ। विकरण, दुश्शासन, करण, सौवल शकुनी साथ। (ख) गधार धरापति सुत सुभग मगधराज हित रस रसो। भट सौवल सौबल सग लै जग रग करिवै लसो।—गोपाल (शब्द०)।

सौबलक[1]—सज्ञा पुं० [सं०] सुवल का पुत्र, शकुनि।

सौबलक[2]—वि० सौवल (शकुनि) सवधी। सौबल (शकुनि) का।

सौबली[1]—सज्ञा स्त्री० [सं०] सुवल की पुत्री, गाधारी। धृतराष्ट्र की पत्नी।

सौबली[2]—वि० सौवल (शकुनी) सवधी। सौवल।

सौबलेय—सज्ञा पुं० [स०] सुवल के पुत्र शकुनि का एक नाम।

सौबलेयी—सज्ञा स्त्री० [सं०] सुवल की पुत्री और धृतराष्ट्र की पत्नी गाधारी का एक नाम।

सौबल्य—सज्ञा पु० [स०] महाभारत मे वर्णित एक प्राचीन जनपद का नाम।

सौबिगा सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बुलबुल।

विशेष—यह बुलबुल पश्चिमी भारत को छोडकर प्राय शेष समस्त भारत मे पाई जाती और ऋतु के अनुसार रग बदलती है। यह लबाई मे प्राय एक बालिश्त से कुछ कम होती है। इसके ऊपर के पर सदा हरे रहते है। यह कीडे मकोडे खाती और एक बार मे तीन अडे देती है।

**सौवीर**—संज्ञा पु० [स० सौवीर] दे० 'सौवीर'।

**सौवर्ण**ⓤ—संज्ञा पुं० [स० सुवर्ण, प्रा० सोवण्ण] सोना। स्वर्ण। उ०—आना नरिंद अजमेर वास। सभरिय कीन सौवर्न रास।—पृ० रा०, १।६०५।

**सौभ**—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत मे वर्णित राजा हरिश्चद्र की उस कल्पित नगरी का नाम जो आकाश मे मानी गई है। कामचारिपुर। २ महाभारत मे वर्णित शाल्वो के एक नगर का नाम। ३ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम। ४ उक्त जनपद के राजा। उ०—अभिमान सहित रिपु प्रान-हर वर कृपान चमकावतो। नृप सौभ लस्यो मगधेस हित सिंह समान हिंसावतो।—गोपाल (शब्द०)।

यौ०—सौभपति, सौभराज = शाल्वनरेश।

**सौभकि**—संज्ञा पु० [सं०] द्रुपद का एक नाम।

**सौभग**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुभग होने का भाव। सौभाग्य। खुशकिस्मती। खुशनसीबी। २ सुख। आनद। मगल। ३ ऐश्वर्य। सपदा। धन दौलत। ४ सुदरता। सौदर्य। खूबसूरती। ५ भागवत मे वर्णित बृहल्लोक के एक पुत्र का नाम।

यौ०—सौभगमद = सौभाग्यगर्व। सौभाग्य का अहकार। उ०—अवधि भूप नागर नगधर कर पारस पायो। अधिक अपनपौ जानि तनक सौभगमद छायो।—नद० ग्र०, पृ० ४३।

**सौभग**[2]—वि० सुभग वृक्ष मे उत्पन्न या बना हुआ। (चरक)।

**सौभगत्व**—संज्ञा पुं० [स०] सुख। आनद। मगल।

**सौभद्र**[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ सुभद्रा के पुत्र, अभिमन्यु। २ एक तीर्थ का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है। ३ वह युद्ध जो सुभद्राहरण के कारण हुआ था।

**सौभद्र**[2]—वि० सुभद्रा सबधी।

**सौभद्रेय**—संज्ञा पुं० [स०] १ सुभद्रा के पुत्र, अभिमन्यु। २ बहेडा। विभीतक वृक्ष। ३ एक तीर्थ।

**सौभर**[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ एक वैदिक ऋषि का नाम। २ एक साम का नाम।

**सौभर**[2]—वि० सोभरि सबधी। सोभरि का।

**सौभरायण**—संज्ञा पुं० [स०] वह जो सौभर के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो। सौभर का गोत्रज।

**सौभरि**—संज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम, जो बड़े तपस्वी थे।

विशेष—भागवत मे इनका वृत्त वर्णित है। कहते है, एक दिन यमुना मे एक मत्स्य को मछलियो मे भोग करते देखकर इनमे भी भोगलालसा उत्पन्न हुई। ये सम्राट मांधाता के पास पहुँचे, जिनके पचास कन्याएँ थी। ऋषि ने उनसे अपने लिये एक कन्या माँगी। मांधाता ने उत्तर दिया कि यदि मेरी कन्याएँ स्वयवर मे आपको वरमाल्य पहना दें, तो आप उन्हे ग्रहण कर सकते हैं। सौभरि ने समझा कि मेरी बुढौती देखकर सम्राट् ने टाल-मटोल की है। पर मैं अपने आपको ऐसा बनाऊगा कि राजकन्याओ की तो बात ही क्या, देवागनाएँ भी मुझे वरण करने को उत्सुक होगी। तपोबल से ऋषि का वैसा ही रूप हो गया। जब वे सम्राट् मांधाता के अत पुर मे पहुँचे, तब राजकन्याएँ उनका दिव्य रूप देख मोहित हो गई और सब ने उनके गले मे वरमाल्य डाल दिया। ऋषि ने अपनी मत्रशक्ति से उनके लिये अलग अलग पचास भवन बनवाए और उनमे बाग लगवाए। इस प्रकार ऋषि जी भोगविलास मे रत हो गए और पचास पत्नियो से उन्होने पाँच हजार पुत्र उत्पन्न किए। वह्वृचाचार्य नामक एक ऋषि ने उन्हे इस प्रकार भोगरत देख एक दिन एकात मे बैठकर समझाया कि यह आप क्या कर रहे है। इससे तो आपका तपोतेज नष्ट हो रहा है। ऋषि को आत्मग्लानि हुई। वे ससार त्याग भगवच्चिंतन के लिये वन मे चले गए। उनकी पत्नियाँ उनके साथ ही गईं। कठोर तपस्या करने के उपरात उन्होने शरीर त्याग दिया और परब्रह्म मे लीन हो गए। उनकी पत्नियो ने भी उनका सहगमन किया।

**सौभव**—संज्ञा पुं० [सं०] सस्कृत के एक वैयाकरण का नाम।

**सौभाजन**—संज्ञा [स० सौभाञ्जन] दे० 'शोभाजन'।

**सौभागिनी**—संज्ञा स्त्री० [स० सौभाग्य] सधवा स्त्री। सोहागिन। उ०—सौभागिनी करे क्रम खोय। तऊ ताहि वडि पति की ओय।—विश्राम (शब्द०)।

**सौभागिनेय**—संज्ञा पुं० [सं०] उस स्त्री का पुत्र जो अपने पति को प्रिय हो। सबसे प्रिय परिणीता का पुत्र। सुभगा या सुहागिन का पुत्र।

**सौभाग्य**—संज्ञा पुं० [स०] १ अच्छा भाग्य। अच्छा प्रारब्ध। अच्छी किस्मत। खुशकिस्मती। खुशनसीबी। २ सुख। आनद। ३ कल्याण। कुशलक्षेम। ४ स्त्री के सधवा रहने की अवस्था। पति के जीवित रहने की अवस्था। सुहाग। अहिवात। ५ अनुराग। ६ ऐश्वर्य। वैभव। ७ सुदरता। सौदर्य। खूबसूरती। ८ मनोहरता। ९ शुभकामना। मगलकामना। १० सफलता साफल्य। कामयाबी। ११ ज्योतिष मे विष्कभ आदि सत्ताइस योगो मे से चौथा योग जो बहुत शुभ माना जाता है। १२. सिंदूर। १३ सुहागा। टकण। १४ एक प्रकार का पौधा। १५ एक प्रकार का व्रत।

यौ०—सौभाग्यचिह्न = (१) सधवा होने का चिह्न। सुहाग का बोध करानेवाली वस्तुएँ। (२) भाग्यवान होने का प्रतीक। सौभाग्यतंतु = विवाह के समय वर द्वारा कन्या के गले मे पहनाई जानेवाली सिकडी या डोरा। मगलसूत्र। सौभाग्यफल = आनदप्रदायक फल या परिणामो से युक्त। सौभाग्यमंजरी = एक देवागना। सौभाग्यशयन व्रत = एक व्रत जो फाल्गुन शुक्ल पक्ष की तृतीया को होता है। विशेष दे० 'सौभाग्य व्रत'।

**सौभाग्य चिंतामणि**—संज्ञा पु० [सं० सौभाग्यचिन्तामणि] सन्निपात ज्वर की एक औषध।

विशेष—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है। सुहागे का लावा, विष, जीर, मिर्च, हड़, बहेडा, आँवला, सेधा, कर्कच, विट,

सोंचर और सांभर नमक, अभ्रक और गधक ये सब चीजें बराबर लेकर खरल करते है फिर सँभालू (निर्गुडी), शेफालिका, भँगरा (भृंगराज), अडूसा (वासक) और लटजीरा (अपामार्ग) के पत्तो के रस मे अच्छी तरह भावना देने के उपरात एक एक रत्ती की गोली बनाते हैं। सन्निपातिक ज्वर की यह उत्तम औषध मानी गई है।

**सौभाग्य तृतीया**—सज्ञा स्त्री० [सं०] भाद्र शुक्ल पक्ष की तृतीया जो बहुत पवित्र मानी गई है। हरितालिका। तीज।

**सौभाग्यफल**—वि० [स०] जिसका फल सौभाग्य हो।

यौ०—सौभाग्यफलदायक = सौभाग्य, कल्याणरूपी फल देनेवाला।

**सौभाग्य व्रत**—सज्ञा पुं० [सं० सौभाग्यव्रत] एक व्रत जिसके फागुन शुक्ल तृतीया को करने का विधान है।

विशेष—वाराह पुराण मे इसका बडा माहात्म्य वर्णित है। यह व्रत स्त्री पुरुष दोनो के लिये सौभाग्यदायक बताया गया है।

**सौभाग्य मडन**—सज्ञा पु० [सौभाग्यमण्डन] हरताल।

**सौभाग्य मद** सज्ञा पुं० [स०] सौभाग्य, समृद्धि, कल्याण आदि के कारण उत्पन्न उल्लास या गौरव।

**सौभाग्यवती**—वि० स्त्री० [स०] १ (स्त्री) जिसका सौभाग्य या सुहाग बना हो। जिसका पति जीवित हो। सधवा। सुहागिन। २ अच्छे भाग्यवाली।

**सौभाग्यवान्**—वि० [सं० सौभाग्यवत्] [वि० स्त्री० सौभाग्यवती] १ जिसका भाग्य अच्छा हो। अच्छे भाग्यवाला। खुशकिस्मत। खुशनसीब। २ सुखी और सपन्न। खुशहाल।

**सौभाग्यविलोपी**—वि० [स० सौभाग्यविलोपिन्] सौदर्य नष्ट करनेवाला। अच्छे भाग्य या सौभाग्य को नष्ट करनेवाला [को०]।

**सौभाग्यशयन व्रत**—सज्ञा पुं० [स०] सौभाग्यदायक एक व्रतविशेष। दे० 'सौभाग्य व्रत'।

**सौभाग्य शुंठी**—सज्ञा स्त्री० [सं० सौभाग्यशुण्ठी] आयुर्वेद मे एक प्रसिद्ध पाक जो सूतिका रोग के लिये बहुत उपकारी माना गया है।

विशेष—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—घी ८ तोले, दूध १२८ तोले, चीनी २०० तोले, इनको एक मे मिला ३२ तोले सोठ का चूर्ण डाल गुडपाक की विधि से पाक करते हैं। फिर इसमे धनिया १२ तोले, सौंफ २० तोले, तेजपत्ता, वायविडग, सफेद जीरा, काला जीरा, सोंठ, मिर्च, पीपल, नागरमोथा, नागकेसर, दालचीनी और छोटी इलायची ४-४ तोले डालकर पाक करते है। 'भावप्रकाश' के अनुसार इसका सेवन करने से सूतिका रोग, तृषा, वमन, ज्वर, दाह, शोष, श्वास, खाँसी, प्लीहा आदि का नाश होता है और अग्नि प्रदीप्त होती है।

इसके निर्माण की दूसरी विधि यह है - कसेरू, सिंघाडा, कमलगट्टा, नागरमोथा, नागकेसर, सफेद जीरा, कालाजीरा, जायफल, जावित्री, लौग, भूरि छरीला (शैलज), तेजपत्ता, दालचीनी, धो के फूल, इलायची, सोया, धनिया, सतावर, अभ्रक और लोहा आठ आठ तोले, सोठ का चूर्ण एक सेर, मिश्री तीस पल, घी एक सेर और गाय का दूध आठ सेर इन सबको मिलाकर पाक विधि के अनुसार पाक करते हैं। माला एक तोला है।

**सौभासिक**—वि० [स०] चमकीला। प्रकाशवान्। समुज्वल।

**सौभासिनिक**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का समुज्वल रत्न [को०]।

**सौभिक**—सज्ञा पु० [स०] जादूगर। इद्रजालिक।

**सौभिक्ष**[1]—वि० [स०] सुभिक्ष या सुसमय लानेवाला।

**सौभिक्ष**[2]—सज्ञा पु० घोडो को होनेवाला एक प्रकार का शूल रोग जो भारी और चिकने पदार्थ खाने से होता है।

**सौभिक्ष्य**—सज्ञा पु० [स०] खाद्य पदार्थ की प्रचुरता। अन्न की अधिकता आदि के विचार से अच्छा समय। सुकाल।

**सौभेय**—सज्ञा पुं० [स०] सौभ जनपद के निवासी जन।

**सौभैषज**—वि० [सं०] जिसमे सुभैषज या उत्तम ओषधियाँ हो। उत्तम ओषधियो से युक्त।

**सौभ्रात्र**—सज्ञा पुं० [स०] सुभ्राता का भाव या धर्म। सुभ्रातृत्व। अच्छा भाईचारा।

**सौमगल्य**—सज्ञा पुं० [स० सौमङ्गल्य] १ सुमगल। कल्याण। २ मगल सामग्री।

**सौमन्त्रिण**—सज्ञा पुं० [स० सौमन्त्रिण] अच्छे मत्रियो से युक्त। अच्छे सलाहकारो से युक्त। वह जिसके अच्छा मत्री हो।

**सौम**[1]—वि० [स०] १ सोमलता सबधी। २ चद्र सबधी।

**सौम**[2]**(५)**—वि० [स० सौम्य] दे० 'सौम्य'।

**सौम**[3]—सज्ञा पु० [अ०] अरबी रमजान मास का व्रत। रोजा [को०]।

**सौमक्रतव**—सज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम।

**सौमदत्ति**—सज्ञा पु० [स०] सोमदत्त के पुत्र, जयद्रथ।

विशेष—यह दुर्योधन का बहनोई था और अभिमन्यु को मारने मे प्रमुख था। महाभारत युद्ध मे अभिमन्यु के निधन के दूसरे दिन के घमासान युद्ध मे यह अर्जुन के हाथो मारा गया।

**सौमन**—सज्ञा पुं० [सं०] १ रामायण मे वर्णित एक प्रकार का अस्त्र। उ०—ता सम सवर्तास्त्र बहुरि मौसल सौमन हूँ। सत्यास्त्रहु, मायास्त्र, त्वाष्ट्र अस्त्रहु पुनि गनहू।—रघुराज (शब्द०)। २ फूल। पुष्प।

**सौमनस**[1]—वि० [सं०] १ फूलो का। प्रसून या पुष्प सबधी। २ मनोहर। रुचिकर। अनुकूल अच्छा लगनेवाला। प्रिय।

**सौमनस**[2]—सज्ञा पु० १ प्रफुल्लता। आह्लाद। आनद। खुशदिली। २ पश्चिम दिशा का हाथी। (पुराण) ३ कर्म मास या सावन की आठवी तिथि। ४ एक पर्वत का नाम। ५ अनुग्रह। कृपा। प्रसन्नता। इनायत। ६ जातीफल। जायफल। ७ सतुष्टि। सतोष (को०)। ८ अस्त्रो का एक सहार। अस्त्र निष्फल करने का एक अस्त्र। उ०—अरु विनीद्र तिमि मत्तहि प्रसमन तैसहि सारचित्रावली। रुचिर वृत्ति मत पितृ सौमनस धन धानहु धृति माली। अस्त्रन को सहार सफल ये लीजै राजकुमार।—रघुराज (शब्द०)।

**सौमनसा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जावित्री। जातीपत्री। २ रामायण मे वर्णित एक नदी का नाम।

सौमनसायनी—सज्ञा स्त्री० [स०] जावित्री। जातीपत्री।

सौमनसी—सज्ञा स्त्री० [स०] कर्म मास अर्थात् सावन मास की पाँचवी रात।

सौमनस्य[1]—सज्ञा पु० [स०] १ प्रसन्नचित्तता। प्रसन्नता। आनद। २ श्राद्ध मे पुरोहित या ब्राह्मण के हाथ मे फूल देना। (भागवत)। ३ भागवतोक्त प्लक्ष द्वीप के अतर्गत एक वर्ष का नाम जहाँ के देवता सौमनस्य माने जाते है। ५ विवेकशीलता। सुबोधता।

सौमनस्य[2]—वि० आनद देनेवाला। प्रसन्नता देनेवाला।

सौमनस्यायनी—सज्ञा स्त्री० [स०] मालती का फूल।

सौमना—सज्ञा स्त्री० [स०] १ फूल। पुष्प। २ कली। कलिका। ३ एक दिव्यास्त्र का नाम।

सौमपौष—सज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम जिसमे सोम और पूषा की स्तुति है।

सौमापौष्ण[1]—सज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम।

सौमापौष्ण[2]—वि० सोम और पूषण का।

सौमायन—सज्ञा पुं० [स०] सोम अर्थात् चद्रमा के पुत्र बुध

सौमारौद्र—वि० [स०] सोम और रुद्र सबधी। सोम और रुद्र का।

सौमिक[1]—वि० [स०] १ सोम रस से किया जानेवाला (यज्ञ)। २ सोमयज्ञ सबधी। ३ सोम अर्थात् चद्रमा सबधी। ४. सोमायण या चाद्रायण व्रत करनेवाला। ५ सोम रस सबधी (कौ०)।

सौमिक[2]—सज्ञा पु० [स० सौमिकम] १ सोम रस रखने का पात्र। २ मदारी।—आ० भा०, पृ० २६६।

सौमिकी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक प्रकार का यज्ञ। दीक्षणीयेष्टि। २ सोम लता का रस निचोडने की क्रिया।

सौमितिक—सज्ञा पु० [स०] कौटिल्य द्वारा उल्लिखित एक प्रकार का ऊनी कपडा (कौ०)।

सौमित्र—सज्ञा पु० [स०] १ सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण। उ०—सिय दिशि मुनि कहँ जात, लखि सौमित्र उदार मति। कछुक स्वस्ति अवदात निज चित मैं आनत भए।—मिश्रबध (शब्द०)। २ लक्ष्मण के छोटे भाई शत्रुघ्न। ३ कई सामो के नाम। ४ मित्रता। मैत्री। दोस्ती।

सौमित्रा(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० सुमित्रा] दे० 'सुमित्रा'। उ०—प्रति फूले दशरथ मनही मन कौशल्या सुख पायो। सौमित्रा कैकेयी मन आनँद यह सबहिन सुत जायो।—सूर (शब्द०)।

सौमित्रि—सज्ञा पुं० [स०] १ सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण। उ०—एहि विधि रघुकुल कमल रवि मग लोगन्ह सुख देत। जाहिं चले देखत विपिन सिय सौमित्रि समेत।—तुलसी (शब्द०)। २ लक्ष्मण के भाई शत्रुघ्न। ३ एक आचार्य का नाम।

सौमित्रीय—वि० [स०] सौमित्रि सबधी।

सौमिलिक—सज्ञा पु० [स०] बौद्ध भिक्षुको का एक प्रकार का दड जिसमे रेशम का गुच्छा लगा रहता है।

सौमिल्ल—सज्ञा पु० [सं०] कालिदास द्वारा उल्लिखित एक प्रसिद्ध नाटककार।

सौमी—सज्ञा स्त्री० [स० सौम्यी] दे० 'सौम्यी'।

सौमुख्य—सज्ञा पु० [सं०] १ सुमुखता। २. प्रसन्नता। खुशी।

सौमेद्र—वि० [स० सौमेन्द्र] सोम और इद का। सोम और इद्र सबधी।

सौमेरक—सज्ञा पु० [स०] सोना। सुवर्ण।

सौमेध—सज्ञा पुं० [स०] कई सामो के नाम।

सौमेधिक[1]—वि० [स०] १ दिव्य ज्ञान से सपन्न। जिसे दिव्य ज्ञान हो। जिसकी धारणावती बुद्धि शोभन हो। उत्कृष्ट एव शोभन मेधायुक्त या तत्सबधी।

सौमेधिक[2]—सज्ञा पु० दिव्य ज्ञानयुक्त सिद्ध। मुनि।

सौमेरव[1]—सज्ञा पु० [स०] १ सुवर्ण। २ इलावृत्त खड का एक नाम।

सौमेरव[2]—वि० [वि० स्त्री० सौमेरवी] सुमेरु सबधी। सुमेरु का।

सौमेरुक[1]—सज्ञा पु० [स०] सोना। सुवर्ण।

सौमेरुक[2]—वि० [वि० स्त्री० सौमेरुकी] सुमेरु सबधी। सुमेरु का।

सौमोंती†—सज्ञा स्त्री० [स० सोमवती] सोमवती अमावस्या। उ०—सौमोंती कौ न्हाँनु परयौ ऐ, परमी न्हाइबे जाऊँ मेरी बीर। —पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ६६६।

सौम्य[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० सौम्या, सौम्यी] १ सोम लता सबधी। २ सोमदेवता सबधी। ३ चद्रमा सबधी। ४ शीतल और स्निग्ध। ठढा और रसीला। ५ गभीर और कोमल स्वभाव का। सुशील। शात। नम्र। ६ उत्तर की ओर का। ७ मागलिक। शुभ। ८ प्रफुल्ल। प्रसन्न। ९ मनोहर। प्रिय दर्शन। सुदर। १० उज्वल। चमकीला।

सौम्य[2]—सज्ञा पुं० १ सोम यज्ञ। २ चद्रमा के पुत्र, बुध। ३ ब्राह्मण। ४ भक्त। उपासक। ४ बायाँ हाथ। ६ गूलर। उदुबर। ७ यज्ञ के यूप का नीचे से पद्रह अरत्नि का स्थान। ८ लाल होने के पूर्व की रक्त की अवस्था। (आयुर्वेद)। ९ पित्त। १० मार्गशीर्ष मास। अगहन। ११ साठ सवत्सरो मे से एक।

विशेष—इस सवत्सर मे अनावृष्टि, चूहे, टिड्डो आदि से फसल को हानि पहुँचती, रोग फैलता और राजाओ मे शत्रुता होती है। १२ ज्योतिष मे सातवे युग का नाम। १३ ब्राह्मणो के पितरो का एक वर्ग। १४ एक कृच्छ्र या कठिन व्रत। १५ वृष, कर्कट, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन राशि। १६ एक द्वीप का नाम। (पुराण)। १७ सुशीलता। सज्जनता। भलमनसाहत। १८ मृगशिरा नक्षत्र। १९ बाईं आँख। वाम नेत्र। २० हथेली का मध्य भाग। २१ दिव्यास्त्र। उ०—सत्य अस्त्र मायास्त्र महाबल घोर तेज तनुकारी। पुनि पर तेज विकर्षण लीजैं सौम्य अस्त्र भयहारी।—रघुराज (शब्द०)।

सौम्यकृच्छ्र—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का व्रत जिसमे पाँच दिन क्रम से खली (पिण्याक), भात, मट्ठे, जल और सत्तू पर रहकर छठे दिन उपवास करना पडता है। २ एक व्रत जिसमे एक रात दिन खली, मट्ठा, पानी और सत्तू खाकर रहते है।

सौम्यगंधा—सज्ञा स्त्री० [स० सौम्यगन्धा] सेवती। शतपत्री।

सौम्यगधी—सज्ञा स्त्री० [स० सौम्यगन्धी] सेवती। शतपत्री।

सौम्यगिरि सज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम। (हरिवश)।

सौम्यगोल—सज्ञा पु० [स०] उत्तरी गोलार्ध।

सौम्यग्रह—सज्ञा पु० [स०] शुभ ग्रह। जैसे,—चद्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र। फलित ज्योतिष मे ये चारो शुभ माने गए है।

सौम्यज्वर—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का ज्वर जिसमे कभी शरीर गरम हो जाता है और कभी ठढा।

विशेष—चरक द्वारा यह वात और पित्त अथवा वात और कफ के प्रकोप से उत्पन्न कहा गया है।

सौम्यता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सौम्य होने का भाव या धर्म। २ शीतलता। ठढक। ३ सुशीलता। शातता। साधुता। ४ सुदरता। सौदर्य। ५ परोपकारिता। उदारता। दयालुता।

सौम्यत्व—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सौम्यता'।

सौम्यदर्शन—वि० [स०] जो देखने मे सुदर हो। प्रियदर्शन।

सौम्यधातु—सज्ञा पुं० [स०] बलगम। कफ। श्लेष्मा।

सौम्यनाम, सौम्यनामा—वि० [स० सौम्यनामन्] जिसका नाम प्रिय हो। जिसका नाम सुनने मे भला लगे [को०]।

सौम्यप्रभाव—वि० [स०] जिसका प्रभाव सौम्य हो। कोमल स्वभाववाला [को०]।

सौम्यमुख—वि० [सं०] जिसकी मुखाकृति सुदर या प्रियदर्शन हो।

सौम्यरूप—वि० [स०] १ सुदर रूप एव आकृतियुक्त। २ जिसका व्यवहार सौम्य हो।

सौम्यवपु—वि० [स० सौम्यवपुस्] जिसके शरीर की गठन या स्वरूप सुदर एव आह्लादक हो।

सौम्यवार—सज्ञा पु० [स०] बुधवार।

सौम्यवासर—सज्ञा पुं० [स०] बुधवार।

सौम्यशिखा—सज्ञा स्त्री० [स०] छद शास्त्र मे मुक्तक विषम वृत्त के दो भेदो मे से एक जिसके पूर्व दल मे १६ गुरु वर्ण और उत्तर दल मे ३२ लघु वर्ण होते हैं। उ०—आठौ यामा शभू गावो। भव फदा ते मुक्ती पावो। सिख मम धरि हिय भ्रम सब तजिकर भज नर हर हर हर हर हर हर। इसका दूसरा नाम अनगक्रीडा भी है।

सौम्यश्री—वि० [स०] श्रीसपन्न। सौदर्यशाली।

सौम्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दुर्गा का एक नाम। २ बडी इद्रायन। महेंद्रवारुणी लता। ३ रुद्रजटा। शकरजटा। ४ बडी मालकगनी। महाज्योतिष्मती लता। ५ पातालगारुडी। महिपवल्ली। ६ घुँघुची। गुजा। चिरमटी। ७ सरिवन। शालपर्णी। ८ ब्राह्मी। ९ कचूर। शटी। १० मल्लिका। मोतिया। ११ मोती। मुक्ता। १२ मृगशिरा नक्षत्र। १३ मृगशिरा नक्षत्र पर रहनेवाले पाँच तारो का नाम। १४ आर्या छद का एक भेद।

सौम्याकृति—वि० [स०] सुदर आकृति या आकार प्रकारवाला [को०]।

सौम्यो—सज्ञा स्त्री० [सं०] चाँदनी। चद्रिका।

सौयवस—सज्ञा पुं० [सं०] १ कई सामो के नाम। २, तृण या घास की प्रचुरता।

सौरभ(पु)—सज्ञा पुं० [सं० सौरभ] दे० 'सौरभ'। उ०—मनो कमल सौरभ काज, प्रति प्रीति भ्रमर विराज।—पृ० रा०, १४।१५७।

सौर[1]—वि० [स०] १ सूर्य सबधी। सूर्य का। २ सूर्य से उत्पन्न। ३ सूर्य के निमित्त अर्पित (को०)। ४ सूर्य की भक्ति या उपासना करनेवाला। सूर्योपासक (को०)। ५ मदिरा या सुरा सबधी (को०)। ६ सूर्य का अनुसारी। जैसे,—सौर मास। ७ दिव्य सुर या देवता सबधी।

सौर[2]—सज्ञा पुं० १ सूर्य के पुत्र, शनि। २ वह जो सूर्य का पूजक या उपासक हो। सूर्य का भक्त। ३ बीसवें कल्प का नाम। ४ तुवुरु नामक पौधा। ५ धनिया। ६ एक साम का नाम। ७ सौर दिवस (को०)। ८ सौर मास (को०)। ९ सूर्य के पुत्र, यम (को०)। १० सूर्य सबधी ऋग्वेद के मत्रो का सग्रह। सूर्य सबधी सूक्त (को०)। ११ दाहिनी आँख।

सौर(पु)[3]—सज्ञा स्त्री० [स० शाट, हिं० सौड] चादर। ओढना। उ०—अपनी पहुँच विचारि कै करतब करिए दौर। तेतो पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर।—रहीम (शब्द०)।

सौर[4]—सज्ञा स्त्री० [स० शफरी] सौरी मछली।

विशेष—यह मझोले आकार की होती है और इसके शरीर मे एक ही काँटा होता है। दे० 'सौरी[3]' का विशेष।

सौर[5]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौरी] सूतिकागृह। सौरी। उ०—सौर से एक तीखी चीख सुनकर एक चेतना लौट आई।—वो दुनियाँ, पृ० २१।

सौरऋण—सज्ञा पुं० [स०] वह ऋण जो मद्य पीने के लिये लिया जाय।

सौरग्रीव—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन देश का नाम। (बृहत्सहिता)।

सौरज[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ तुवुरु। तुवरू। २ धनिया। धान्यक।

सौरज(पु)†[2]—सज्ञा पुं० [सं० शौर्य] दे० 'शौर्य'। उ०—सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ ध्वजा पताका।—मानस, ६।७९।

सौरठवाल—सज्ञा पुं० [सं० सौराष्ट्र, हिं० सोरठ+वाला] वैश्यो की एक जाति।

सौरण—वि० [स०] सूरन सबधी।

सौरत[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ रतिक्रीडा। केलि। सभोग। २ वीर्य। रेतस् (को०)। ३ धीमी हवा। मद वायु। मद समीरण (को०)।

सौरत[2]—वि० सुरत सबधी। रतिक्रीडा सबधी।

सौरतीर्थ—सज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ [को०]।

सौरत्य—सज्ञा पु० [सं०] रतिसुख। सभोग।

सौरथ—सज्ञा पुं० [स०] वीर। योद्धा [को०]।

सौर दिन, सौर दिवस—सज्ञा पुं० [स०] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। ६० दड का समय।

सौर द्रोणि—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटी तलैया।

सौरध्री—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का तबूरा या सितार।

सौरनक्त—सज्ञा पुं० [सं०] एक व्रत जो रविवार को हस्त नक्षत्र होने पर सूर्य के प्रीत्यर्थ किया जाता है। (नरसिंह पुराण)।

**सौरपत**—सज्ञा पुं० [स०] सूर्योपासक। सूर्यपूजक।

**सौरपरिकर**—सज्ञा पु० [स०] सूर्य के चारो ओर भ्रमण करनेवाले ग्रहो का मडल। सौर जगत्।

**सौरपि**—सज्ञा पु० [स०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि।

**सौरभ**[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ सुरभि का भाव या धर्म। सुगध। खुशबू। महक। उ०—त्रिविध समीर सुगन सौरभ मिलि मत्त मधुप गुजार।—सूर (शब्द०)।

यौ०—सौरभवाह=पवन। उ०—नही चल सकते गिरिवर राह। न रुक सकता है सौरभवाह।—पल्लव० पृ० १२। सौरभश्लथ=सुगध की अधिकता से थकित। उ०—सौरभश्लथ हो जाते तन मन, बिछते झर झर मृदु सुमन शयन।—युगात, पृ० ३५।

२ केसर। कुकुम। जाफरान। ३ तुवरु नामक गधद्रव्य। तुवरु। ४ धनिया। धान्यक। ५ बोल। हीराबोल। बीजाबोल। ६ एक प्रकार का मसाला। ७ आम। आम्र। उ०—सौरभ पल्लव मदन विलोका। भयउ कोप कपेउ त्रयलोका।—तुलसी (शब्द०)। ८ एक साम का नाम। ९ मदगध (को०)।

**सौरभ**[2]—वि० १ सुगधित। सुगधयुक्त। खुशबूदार। २ सुरभि (गाय) से उत्पन्न।

**सौरभक**—सज्ञा पु० [सं०] एक वर्णवृत्त का नाम जिसके पहले चरण मे सगण, जगण, सगण और लघु, दूसरे मे नगण, सगण, जगण और गुरु, तीसरे मे रगण, नगण, भगण और गुरु तथा चौथे मे सगण, जगण, सगण, जगण और गुरु होता है। उ०—सब त्यागिये असत काम। शरण गहिए सदा हरी। दु ख भौ जनित जायँ टरी। भजिए अहो निशि हरी हरी हरी।

**सौरभमय**—वि० [सं०] सौरभयुक्त। सुगधयुक्त। सुगधित।

**सौरभित**—वि० [सं० सौरभ+इत] सौरभयुक्त। महकनेवाला। सुगधित। खुशबूदार।

**सौरभी**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ धेनु। गाय। २ सुरभि गाय की पुत्री (को०)।

**सौरभुवन**—सज्ञा पु० [स०] सूर्यलोक।

**सौरभेय**[1]—सज्ञा पु० [स०] १ सुरभि का पुत्र, साँड। वृषभ। २ पशुओ का झुड (को०)।

**सौरभेय**[2]—वि० १ सुरभि सबधी। सुरभि का। २ महक। सुगध। खुशबू (को०)।

**सौरभेयक**—सज्ञा पुं० [स०] साँड। वृष।

**सौरभेयी**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ गाय। गो। २ महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम। ३ सुरभि गाय की पुत्री (को०)।

**सौरम्य**—सज्ञा पु० [स०] १ सुगध। खुशबू। २ मनोज्ञता। सुदरता। खूबसूरती। ३ गुण गौरव। कीर्ति। प्रसिद्धि। नेकनामी। ४ सदाचरण। सद्व्यवहार। ५ कुबेर का एक नाम।

**सौरम्यद**—सज्ञा पुं० [स०] सुगधित द्रव्य। एक गधद्रव्य (को०)।

**सौरमास**—सज्ञा पु० [स०] वह महीना जो सूर्य के किसी एक राशि मे रहने तक माना जाता है। उतना काल जितने तक सूर्य किसी राशि मे रहे। एक सक्राति से दूसरी सक्राति तक का समय।

विशेष—सूर्य एक वर्ष मे क्रम से मेष, वृष आदि बारह राशियो का भोग करता है। एक राशि मे वह प्राय ३० दिन तक रहता है। प्राय इतने दिन का ही एक सौरमास होता है। दे० 'दिन' शब्द का विशेष।

**सौरवर्ष**—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौर सवत्सर'।

**सौरसवत्सर**—सज्ञा पुं० [सं०] उतना काल जितना सूर्य को मेष, वृष आदि बारह राशियो पर घूम आने मे लगता है। एक मेष सक्राति से दूसरी मेष सक्राति तक का समय।

**सौर सहिता**—सज्ञा स्त्री० [स०] ज्योतिष विद्या का सिद्धातग्रथ (को०)।

**सौरस**[1]—सज्ञा पु० [स०] १ वस्तु, पदार्थ आदि जो सुरसा नामक पौधे से निकला या बना हुआ हो। २ सुरसा का अपत्य या पुत्र। ३ जूँ। ४ नमकीन रसा या शोरवा।

**सौरस**[2]—वि० सुरसा सबधी। सुरसा नामक पौधे का (को०)।

**सौरसा**—सज्ञा स्त्री० [स०] जगली बेर। पहाडी बेर (को०)।

**सौर सिद्धात**—सज्ञा पुं० [स० सौर सिद्धान्त] ज्योतिष विद्या का एक सिद्धातग्रथ।

**सौरसूक्त**—सज्ञा पु० [स०] ऋग्वेद के एक सूक्त का नाम जिसमे सूर्य की स्तुति है। सूर्यसूक्त।

**सौरसेन**—सज्ञा पु० [स० शूरसेन] दे० 'शूरसेन' और 'शौरसेन'।

**सौरसेनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक भाषा। विशेष दे० 'शौरसेनी'।

**सौरसेय**—सज्ञा पु० [स०] स्कद का एक नाम। कार्तिकेय।

**सौरसैधव**[1]—वि० [सं० सौरसैन्धव] १ गगा का। गगा सबधी। २. गगा से उत्पन्न। (जैसे, भीष्म)।

**सौरसैधव**[2]—सज्ञा पु० सूर्य का घोडा।

**सौरस्य**—सज्ञा पु० [स०] सुरसता। रसीला होने का भाव।

**सौराज्य**—सज्ञा पुं० [स०] अच्छा राज्य। सुराज्य। सुशासन।

**सौराटी**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक रागिनी। (सगीत)।

**सौराव**—सज्ञा पु० [स०] नमकीन रसा या शोरवा।

**सौराष्ट्र**[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ गुजरात काठियावाड का प्राचीन नाम। सूरत (सुराष्ट्र) के आसपास का प्रदेश। सोरठ देश। २ उक्त प्रदेश का निवासी। ३ कुदुरु नामक गधद्रव्य। शल्लकी निर्यास। ४. काँसा। कास्य। ५ एक वर्णवृत्त का नाम।

**सौराष्ट्र**[2]—वि० सोरठ प्रदेश का।

**सौराष्ट्रक**[1]—सज्ञा पु० [स०] १ सौराष्ट्र या सोरठ प्रदेश का रहनेवाला। २ पचलोह। ३ एक प्रकार का विष।

**सौराष्ट्रक**[2]—वि० १ सौराष्ट्र या सोरठ प्रदेश सबधी। २ सोरठ देश मे उत्पन्न।

**सौराष्ट्र मृत्तिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] गोपीचदन।

**सौराष्ट्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] गोपीचदन।

**सौराष्ट्रिक**[1]—वि० [स०] सौराष्ट्र या सोरठ देश सबधी। गुजरात काठियावाड सबधी।

**सौराष्ट्रिक**[2]—सज्ञा पु० १ सोरठ देश का निवासी। २ काँसा नाम की धातु। ३ एक प्रकार का विषैला कद।

विशेष—इसके पत्ते पलाश के पत्तो से मिलते जुलते होते हैं। यह कद काले अगर के समान काला और कछुए की तरह चिपटा और फैला हुआ होता है।

सौराष्ट्री—सज्ञा स्त्री० [स०] गोपी चदन।

सोरा ट्रय—वि० [स०] सोरठ प्रदेश का। गुजरात काठियावाड का।

सौरास्त्र—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का दिव्यास्त्र। उ०—सोमास्त्रहु सौरास्त्र सु निज निज रूपनि धारै। रामहि सौ कर जोरि सबै बोले इक बारै।—पद्माकर (शब्द०)।

सौरिध्र—सज्ञा पु० [स० सौरिन्ध्र] [स्त्री० सौरिध्री] १ बृहत्सहिता के अनुसार ईशान कोण मे स्थित एक प्राचीन जनपद। २ उक्त जनपद का निवासी।

सौरि¹—सज्ञा पुं० [स०] १ (सूर्य के पुत्र) शनि। २ विजैसार। असन वृक्ष। ३ हुलहुल का पौधा। आदित्यभक्ता। ४ एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि। ५ बृहत्सहिता के अनुसार दक्षिण का एक प्राचीन जनपद। ६ यम का नाम (को०)। ७ कर्ण का एक नाम (को०)। ८ सुग्रीव का एक नाम (को०)।

सौरि²—सज्ञा पुं० [स० शौरि] कृष्ण। दे० 'शौरि'। उ०—अत पुर मे तुरत ही भयो सोर चहुँ ओर। बैठायो पर्यंक मे रकहि सौरि किशोर।—रघुराज (शब्द०)।

सौरि³—सज्ञा स्त्री० [हि० साँवरि] श्यामा। रात्रि। रात। (लाक्ष०)। उ०—भूख न मानै लावन सेती। नीद न मानै सौरि सपेती।—चित्रा०, पृ० २७।

सौरि⑤‡—सज्ञा स्त्री० [हि० सौर] लिहाफ। रजाई। दे० 'सौर²'। उ०—भैंना कू सौरि भरावैगी, लाला कू टोपा भरावैगी।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ६२५।

सौरिक¹—सज्ञा पुं० [स०] १ शनैश्चर ग्रह। २ स्वर्ग। ३ शराब बेचनेवाला। कलाल (को०)।

सौरिक²—वि० १ स्वर्गीय। २ सुरा या मद्य सबधी (ऋण)। शराब के कारण होनेवाला (कर्ज)। ३ सुरा या मदिरा पर लगनेवाला कर (को०)।

सौरिकीर्ण—सज्ञा पुं० [स०] बृहत्सहिता के अनुसार दक्षिण का एक प्राचीन जनपद।

सौरिरत्न—सज्ञा पुं० [स०] नीलम नामक मणि।

सौरी¹—सज्ञा स्त्री० [स० सूतिका] वह कोठरी या कमरा जिसमे स्त्री बच्चा जने। सूतिकागार। जापा। जच्चाखाना।

सौरी²—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सूर्य की पत्नी। २ सूर्य की पुत्री और कुरु की माता तपती। तापती। वैवस्वती। ३ गाय। गौ। ४ हुलहुल पौधा। आदित्यभक्ता।

सौरी³—सज्ञा स्त्री० [स० शफरी] एक प्रकार की मछली। शफुली मत्स्य। उ०—मारत मछरी सहरी अरु सौरी गगरिन भरि।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ४८।

विशेष—भावप्रकाश के अनुसार इसका मास मधुर, कसैला और हृद्य है।

सौरीय¹—वि० [स०] सूर्य सबधी। सूर्य का।

सौरीय²—सज्ञा पु० १ एक वृक्ष जिसमे से विषैला गोद निकलता है। २ इस वृक्ष से निकला हुआ विष।

सौरेय, सौरेयक—सज्ञा पुं० [स०] सफेद कटसरैया। श्वेत भिंटी।

सौर्य¹—वि० [स०] सूर्य सबधी। सूर्य का।

सौर्य—सज्ञा पुं० १ सूर्य का पुत्र, शनि। २ एक नगर का नाम। ३ एक सवत्सर का नाम। ४ हिमालय के दो शृगो का नाम।

सौर्यपृष्ठ—सज्ञा पुं० [स०] एक साम का नाम।

सौर्यप्रभ—वि० [स०] सूर्य की प्रभा या दीप्ति सबधी (को०)।

सौर्यभगवत्—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन वैयाकरण का नाम जिनका उल्लेख पतजलि के महाभाष्य मे है।

सौर्ययाम—सज्ञा पु० [स०] सूर्य और यम सबधी। सूर्य और यम का।

सौर्यी—सज्ञा पु० [स० सौर्यिन्] हिमालय का एक नाम।

सौर्योदयक—वि० [स०] सूर्योदय सबधी।

सौर्वल—सज्ञा पु०, वि० [स०] दे० 'सौवर्चल'।

सौलकी—सज्ञा पु० [हि०] दे० 'सोलकी'।

सौल, सौला—सज्ञा पुं० [हि० साहुल] १ राजगीरो का शाकुल। साहुल। २ हल के जूए के ऊपर की गाँठ।

सौलक्षण्य—सज्ञा पुं० [स०] शुभ या अच्छे लक्षणो का होना। सुलक्षणता।

सौलभ्य—सज्ञा पुं० [स०] सुलभता। प्राप्ति की सुविधा।

सौल्विक—सज्ञा पु० [स०] ठठेरा। ताम्रकुट्टक।

सौव¹—सज्ञा पुं० [स०] अनुशासन। आदेश।

सौव²—वि० १ अपने सबध का। अपना। निज का। २ स्वर्गीय।

सौवग्रामिक—वि० [स०] [स्त्री० सौवग्रामिकी] अपने निजी गाँव से सबध रखनेवाला (को०)।

सौवर—वि० [स०] स्वर सबधी। किसी ध्वनि या सगीत के स्वर से सबध रखनेवाला (को०)।

सौवर्चल¹—सज्ञा पुं० [स०] १ सोचर नमक। २ सज्जी मिट्टी। सर्जिका क्षार।

सौवर्चल²—वि० सुवर्चल नामक देश सबधी।

सौवर्चला—सज्ञा स्त्री० [स०] रुद्र की पत्नी का नाम।

सौवर्ण¹—सज्ञा पुं० [स०] १ एक कर्ष भर सोना। २ सोने की बाली। ३ सोना। सुवर्ण।

सौवर्ण²—वि० [वि० स्त्री० सौवर्णी, सौवर्णा] १ सोने का। सोने का बना। २ तौल मे कर्ष भर। १६ माशे भर।

सौवर्णकड्यका—सज्ञा स्त्री० [स०] कौटिल्य के अनुसार एक प्रकार के सिल्क का परिधान।

सौवर्णपर्ण—वि० [स०] जिसके पख स्वर्णिम हो (को०)।

सौवर्णभेदिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] फूलफेन। फूलप्रियगु। प्रियगु।

सौवर्णहर्म्य—सज्ञा पुं० [स०] रजत का हर्म्य या सभामडप (को०)।

सौवर्णिक¹—सज्ञा पुं० [स०] सुनार। स्वर्णकार।

**सौवर्णिक[2]**—वि० एक सुवर्ण भर। १ एक कर्ष या १६ माशे भर। २ सोने का बना हुआ। स्वर्णनिर्मित।

**सौवर्णिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का विषैला कीडा। (सुश्रुत)।

**सौवर्ण्य**—सज्ञा पु० [स०] १ सोना होने का भाव। २ वर्णो या अक्षरो का शुद्ध शुद्ध उच्चारण। ३ वह सुदर रग जिसमे ताजापन हो (को०)।

**सौवश्व्य**—सज्ञा पु० [स०] घुडदौड।

**सौवस्तिक[1]**—सज्ञा पु० [स०] १ पुरोहित। कुलपुरोहित। २ दे० 'स्वस्त्ययन'।

**सौवस्तिक[2]**—वि० स्वस्ति कहनेवाला। मगल चाहनेवाला। मगलाकाक्षी।

**सौवाध्यायिक**—वि० [स०] जो स्वाध्याय करता हो। वेदपाठ करनेवाला। स्वाध्यायी।

**सौवास**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की सुगधित तुलसी।

**सौवासिनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुवासिनी'।

**सौवास्तव**—वि० [स०] १ सुवास्तुयुक्त। भवननिर्माण की कुशलता से युक्त। अच्छी कारीगरी का (मकान)। २ अच्छे स्थान पर बना हुआ (मकान)।

**सौविद**—सज्ञा पुं० [स०] अत पुर या रनिवास का रक्षक। कचुकी। सुविद।

**सौविदल्ल**—सज्ञा पु० [स०] १ राजा का वह प्रधान कर्मचारी जिसके पास राजा की मुद्रा आदि रहती हो। २. कचुकी। अत पुर का रक्षक (को०)।

**सौविदल्लक**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सौविदल्ल'।

**सौविष्टकृत्**—वि० [स०] स्विष्टकृत् नामक अग्नि सबधी। (गृह्यसूत्र)।

**सौवीर**—सज्ञा पुं० [स०] १ सिंधु नद के आस पास के एक प्राचीन प्रदेश का नाम। उ०—सिंधु और सोवीरहु सोरठ जे भूपत रनधीरा। न्योति पठावहु सकल महीपन, बाकी रहै न बीरा।—रघुराज (शब्द०)। २ उक्त प्रदेश का निवासी या राजा। ३ बेर का पेड या फल। बदर। ४ जौ को सडाकर बनाई हुई एक प्रकार की काँजी।

विशेष—वैद्यक मे यह अग्निदीपक, विरेचक तथा कफ, ग्रहणी, अर्श, उदावर्त, अस्थिर शूल आदि दोषो मे उपकारी माना जाता है।

५ अजन। सुरमा (को०)।

**सौवीरक**—सज्ञा पुं० [स०] १ दे० 'सौवीर'। २ जयद्रथ का एक नाम।

**सौवीरपाण**—सज्ञा पु० [स०] बाहलीक देशवासी। बाह्लीक।

विशेष—उक्त देशवासी जौ या गेहूँ की काँजी बहुत पिया करते थे, इसी से उनका यह नाम पडा है।

**सौवीरभक्त**—वि० [सं०] सौवीरो द्वारा बसा हुआ। जहाँ सौवीर लोग रहते हो।

**सौवीरसार**—सज्ञा पुं० [स०] सुरमा। स्रोतोजन।

**सौवीराजन**—सज्ञा पु० [स० सौवीराञ्जन] सुरमा।

**सौवीरा**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सौवीरी'।

**सौवीराम्ल**—सज्ञा पु० [स०] जौ या गेहूँ की काँजी।

**सौवीरिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] बेर का पेड या फल।

**सौवीरी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सगीत मे एक प्रकार की मूर्छना जिसका स्वरग्राम इस प्रकार है—म, प, ध, नि, स, रे, ग, नि, स, रे, ग, म, प, ध, नि, म, रे, ग, म। २ सोवीर की राजकुमारी।

**सौवीर्य**—सज्ञा पु० [स०] १ सौवीर का राजा। २ महान् वीरता। बहुत अधिक पराक्रम।

**सौवीर्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] सौवीर की राजपुत्री।

**सौव्रत्य**—सज्ञा पु० [स०] १ सुव्रत का भाव। एकनिष्ठा। भक्ति। २ आज्ञापालन।

**सौशब्द, सौशब्द्य**—सज्ञा पु० [स०] सज्ञा और क्रिया के रूपो की व्याकरणसमत रचना (को०)।

**सौशल्य**—सज्ञा पुं० [स०] महाभारतवर्णित एक प्राचीन जनपद का नाम। २ उक्त जनपद का निवासी।

**सौशाम्य**—सज्ञा पु० [स०] सुशमता। सुशाति।

**सौशील्य**—सज्ञा पु० [स०] सुशीलता। सच्चरित्रता। साधुता।

**सौश्रवस[1]**—सज्ञा पु० [स०] १ सुश्रवा के अपत्य, उपगु। २ सुयश। सुकीर्ति। ३ दौडने की प्रतिस्पर्धा (को०)। ४ दो सामो के नाम।

**सौश्रवस[2]**—वि० जिसका अच्छा नाम या यश हो। कीर्तिमान्। यशस्वी।

**सौश्रिय**—सज्ञा पु० [स०] ऐश्वर्य। वैभव।

**सौश्रुत[1]**—सज्ञा पु० [स०] वह जो सुश्रुत के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो। सुश्रुत का गोत्रज।

**सौश्रुत[2]**—वि० १ सुश्रुत का रचा हुआ। २ सुश्रुत सबधी।

**सौषाम**—सज्ञा पुं० [स०] एक साम का नाम।

**सौषिर**—सज्ञा पुं० [स०] १ मसूडा का एक रोग।

विशेष—इसमे कफ और पित्त के विकार से मसूडे सूज जाते है, उनमे दर्द होता ह और लार गिरती ह।

२ वह यत्र जो वायु के जोर से बजता हो। फूककर या हवा भरकर बजाया जानेवाला बाजा। जैसे,—बसी, तुरही, शहनाई आदि।

**सौषिर्य**—सज्ञा पुं० [स०] पोलापन।

**सौषुम्ण**—सज्ञा पुं० [स०] सूर्य की किरणो मे से एक।

**सौष्ठव**—सज्ञा पुं० [स०] १ सुडौलपन। उपयुक्तता। २ सुदरता। सौंदर्य। ३ तेजी। फुरती। क्षिप्रता। लाघव। ४ नृत्य मे शरीर की एक मुद्रा। ५ नाटक का एक अग। ६ चातुर्य। परम कौशल (को०)। ७ बाहुल्य। अधिकता (को०)। ८ लचक। हल्कापन (को०)।

**सौसन**—सज्ञा पु० [फा०] दे० 'सोसन'।

**सौसनी**—सज्ञा पुं० [फा०] दे० 'सोसनी' उ०—पहिरौ री बेहूनरी सुरँग चूनरी ल्याय। पहिरे सारी सौसनी कारी देहु दिखाय।—शृगारसतसई (शब्द०)।

**सौसुक**—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन स्थान का नाम जिसका उल्लेख महाभाष्य मे है।

सौसुराद—सज्ञा पु० [स०] विष्ठा मे होनेवाला एक प्रकार का कीडा।

सौस्थित्य—सज्ञा पु० [स०] १ अच्छी स्थिति। २ ग्रहो का शुभ स्थान मे होना।

विशेष—बृहत्सहिता मे लिखा है कि ग्रहो का सौस्थित्य, अर्थात् शुभ स्थान मे स्थिति, देखकर राजा यदि आक्रमण करे तो वह अल्प पौरुषवाला होन पर भी पराया धन पाता है।

सौख्य—सज्ञा पुं० [स०] कुशल। क्षेम। कल्याण।

सौस्नातिक—वि० [स०] यह प्रश्न कि यज्ञ के उपरात स्नान सफल हुआ या नही।

सौस्वर्य—सज्ञा पु० [स०] सुस्वर या उत्तम स्वर होने का भाव। सुस्वरता। सुरीलापन।

सौंह[१]—सज्ञा स्त्री० [स० शपथ, प्रा० सवह या स० सौगन्ध] शपथ। कसम। उ०—हम रीझे मनभावते लखि तव सुदर गात। दीठ रूप वर लाल सिर नैना सौंह खात।—रसनिधि (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—खाना।

सौंह[२]—क्रि० वि० [स० सम्मुख, प्रा० सम्मुह] सामने। आगे। उ०—रग भरे अग अरसौंहैं सरसौंहैं सोहै सौहै कोर भौंहै रस भावनि भरत है।—देव (शब्द०)

सौहन—सज्ञा पु० [देश०] पैसे का चौथाई भाग। छदाम। दुकडा। (सुनार)।

सौहनी(५)—वि० [हिं० सुहावनी] सोहनी। शोभन। अच्छी। सुदर। उ०—अति आछी तनक कनक की दौहनी सौहनी गढाइ दै री मैया।—नद ग्र०, पृ० ३४०।

सौहर—सज्ञा पुं० [अ० शौहर] दे० 'शौहर'।

सौहरा—सज्ञा पु० [हि ससुर] ससुर। (पश्चिम)।

सौहविष—सज्ञा पुं० [स०] कई सामो के नाम।

सौहॉग—सज्ञा पु० [देश०] दो भर का बाट या बटखरा। (सुनार)।

सौहार्द—सज्ञा पुं० [स०] १ सुहृद का भाव। मित्रता। मैत्री। सख्य। दोस्ती। २ सुहृद या मित्र का पुत्र। ३ मन की ऋजुता। हृदय की सरलता (को०)। ४ सद्भाव (को०)।

सौहार्दनिधि—सज्ञा पु० [स०] राम का एक नाम।

सौहार्दव्यजक—वि० [स० सौहार्दव्यञ्जक] सौहार्द को व्यक्त करनेवाला। मैत्री प्रकट करनेवाला (को०)।

सौहार्द्य—सज्ञा पु० [स०] सौहार्द। मित्रता। बधुत्व। दोस्ती।

सौहित्य—सज्ञा पु० [स०] तृप्ति। सतोष। २ मनोरमता। मनोज्ञता। सुदरता। ३ पूर्णता। ४ कृपालुता। सद्भावना (को०)।

सौही—सज्ञा स्त्री० [फा० सोहन] १ एक प्रकार की रेती। २. एक प्रकार का हथियार।

सौहीं—क्रि० वि० [हि० सौहँ] सामने। आगे। उ०—कहि आवति हे जु कहावत हौ तुम वाही तौ ताकि सके हम सौहीं। तेहि पैंडे कहा चलिये कबहूँ जिहि काटो लगै पग पीर दुखौहीं।—केशव (शब्द०)।

सौहृद[१]—सज्ञा पु० [स०] १ मित्रता। स्नेहसबध। सख्य। दोस्ती। २ सुहृद्। मित्र। दोस्त। ३ एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)। ४ रुचि।

सौहृद[२]—वि० सुहृद या मित्र सबधी।

सौहृदय, सौहृदय्य—सज्ञा पु० [स०] सौहार्द। मित्रता। दोस्ती।

सौहृद्य—सज्ञा पु० [स०] सौहार्द। मित्रता। बधुता। दोस्ती।

सौहोत्र—सज्ञा पुं० [स०] सुहोत्र के अपत्य अजमीड और पुरुमीड नामक वैदिक ऋषि।

सौह्य—सज्ञा पु० [स०] सुह्म देश का राजा।

—० —